भूमिका॥



देखो इस असारसंसारमें उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, षट् शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमें एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमें नियत करके आयुर्वेदसंहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमें उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोष और निघण्टुको मुख्य रक्खा; और सम्पूर्ण कर्म्मोंमें चतुर बुद्धिविशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसंहिता विस्तारपूर्वक पढाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तेंतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोडा, देवताओंको अंग जोड व्रणरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनिकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोंको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढनेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करनेलगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढाथा उसीप्रकार आयुर्वेदसंहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान आत्रेयको पढाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी; और शरीरमें बलभी अधिकहोताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योंकी बुद्धिभी विपरीत होगई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक बढने लगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी बडे बडे ऋषि मनुष्योंको रोगोंसे दुःखी देख मनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहां दैवयोगसे बहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, अंगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ,

पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय कपिञ्जल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काम्य, कात्यायन, कांकायन, बैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल वैखानस; और वालखिल्यादिक अनेक महर्षि-लोगथे, वह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुंजः आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीरहै, यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताहै और जो यह शरीरही रोगग्रसित रहै तो कदापि नहीं साधसक्ता।

रोगाःकार्श्यकराबलक्षयकरादेहस्यचेष्टाहराः।
दृष्ट्याद्यीन्द्रियशक्तिसंक्षयकराःसर्वाङ्गपीडाकराः॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषुमहाविघ्नस्वरूपाबलात्।
प्राणानाशुहरन्तिसन्तियदितेसौख्यंकुतःप्राणिनाम्॥
तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः।
योग्यैरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजंमुनिंतेऽब्रुवन्॥

अर्थ-रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करतेहैं, बलका क्षय करतेहैं, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते हैं, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करतेहैं, सब अंगोंमें पीडाको उत्पन्न करते हैं, धर्म, अर्थ, अखिल काम; और मोक्षके, लिये तो महाविघ्नकारी हैं; अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहैं, जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके प्राणोंकी कुशल कहां? इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो। इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, तालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवान्! आपही इस कार्य करनेके योग्यहैं, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहितहों. भयसे छूटें इसप्रकार जब सब मुनियोंने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनि-पुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और

सब ऋषियोंके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महाभयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीयें, भारद्वाजने थोडेही दिनमें आयुर्वेद पढ़ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेयमुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेयसंहिता रच अग्निवेश, भेड, जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि और हारीतको पढाई, इन छहोंने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण कीं, और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहों संहिता आजतक संसारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तंत्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यातहै, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टांगमयी नवीन संहिता आठ भागोंमें विभाग कीगई, उस संहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीनभागोंमें विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके, उद्भिज्जोंको वनस्पतिवृक्ष वीरुध औषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योंको जीवनादिक पंचांशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पञ्चनदपुरवासी दृढबलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें लिखा है:—

"अखण्डार्थंदृढबलोजातःपञ्चनदेपुरे ।
कृत्वाबहुभ्यस्तंत्रेभ्यो विशेषाञ्चबलोच्चयम् ॥
सप्तदशौषधाध्यायैःसिद्धकल्पैरपूरयत् ।"

अर्थ—इस संहिताके सम्पूर्ण करनेकेलिये दृढबल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्यायोंमें सिद्धकल्पको पूर्ण

किया । सुश्रुतसंहिता–इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यतंत्रके उपदेशसे प्रधान अष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है. इसमें काशीराजरूप धारणकिये हुए भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परमरासायनिक सिद्धनागार्जुन संस्कारकर्ता हैं, सूत्रादिपञ्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमें चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन, वाजीकरणतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतंत्रको प्रधानतासे वर्णन कियाहै। कल्पमें चिकित्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, वाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमें शालाक्यकायचिकित्सा; कौमार, भृत्य, भूतविद्या वर्णन की है ।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहां वानप्रस्थ आश्रममें स्थित, देवताओंमें श्रेष्ठ, अनेक मुनि जिनकी स्तुति कररहे, उन सर्वानन्ददायक धन्वतंरि काशीनरेश दिवोदासको विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया, अनन्तकीर्तिस्वरूपद्रव्यवाले दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खडा देखकर बोले कि, हे ऋषियो ! तुम कुशलपूर्वक हो ? किसकारण आगमन हुआ. तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया, कि हे भगवन् ! रोगोंसे भयभीत हाहाकार करते और मरते हुए प्राणियोंको देखकर हमारे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है, इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं, सो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ. तब काशीनरेशने सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढाना आरम्भ किया, उस व्याख्याको वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजको आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो, आपकी सदा जयहो, यह कह सब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना ऐसा स्फुट तंत्र रचा, जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ; और ऋषिपुत्रोंनेभी पृथक् पृथक् अपने तंत्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तंत्रको बहुत लोगोंने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत संसारमें प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह वडा भारी सन्देह है किसुश्रुत नामके दो आचार्य्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत; इनमें यह निश्चय नहीं होसक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसंहिताका कर्त्ता कौनहै ? जब बौद्धोंने प्रबल होकर वाद विवादसे पण्डितोंका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका प्रारम्भ किया, उस बौद्धसंग्राम समयमेंही (विक्रमके संवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) संसारमें प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागार्ज्जुन सुश्रुतनाम तंत्रको संस्कारमुखसे सूत्रादि पञ्चकस्थानोंमें अर्थवशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तंत्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा। वह सुश्रुतसंहिता संसारमें प्रचलितहै, यह उल्वणाचार्य्यका मतहै. इसकी भाषा प्राचीनहै, रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय; और व्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है, अधिक क्या ? बडे बडे विदेशीय वैद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशंसा की है.

वाग्भटसंहिता–कुछ कालोपरान्त चिकित्सकोंमें परमोत्तम धन्वन्तरिके समान भूमण्डलमें वाग्भट भिषक् उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्यसिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामें सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था उसने जगत्के उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमें अष्टांगहृदयसंहिता सब संसारमें प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमें सूर्यके समान प्रकाशमान है। चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मथकर संसारके हितार्थ बडे प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी संहिताका संग्रह किया। इस संहितामें और इसकी औषधियोंमें उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्य्यता प्रगट कीहै। वह और ग्रन्थोंमें नहीं दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमें बीस पच्चीस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस संहिताके तीनही चार श्लोकोंमें दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होंने सब संसारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसंहिताकी बृहत्त्रयीमें वैद्योंने गणना कर रक्खी है। यथा–

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः।
नाधीतश्चरको येन स वैद्यो यमकिङ्करः॥

अर्थ–जिस वैद्यने सुश्रुत सुना नहीं, वाग्भट कण्ठाग्र किया नहीं और चरक पढा नहीं वह वैद्य नहीं है, वह साक्षात् यमका दूत है। इसीलिये बृहत्त्रयीपाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होताहै; और जो अठारह १८ संहिताहैं वह औरही और युगोंके निमित्त हैं, परन्तु अष्टांगहृदयसंहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित्त हुईहै। यथा–

अत्रिः कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मतः ।
द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसंहिता ॥

अर्थ–सत्ययुगके लिये अत्रिसंहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसंहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत; और कलियुगके लिये वाग्भटसंहिता बनीहै । और जो किसीके चित्तमें संदेह हो कि, वह अठारह संहिता कौनसी हैं जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई हैं, इसलिये उनके नामभी लिखे देताहूं वह अठारह संहिताओंके नाम हारीतसंहितामें इसप्रकार हैं:–

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृग्वग्निवेशचरकाश्च्यव-
नोऽप्यगस्तिः । वाराहवाग्भटनरायणनारसिंहाआ-
त्रेयकात्रिशशिनःशिवभास्करौच ॥ सन्त्यष्टादशशि-
क्षाधन्वन्तरेर्वाग्भटंबहिष्कृत्य ॥

अर्थ–हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेंसे वाग्भटको छोडकर अठारह संहिता आयुर्वेदकी वर्णन कीहैं । इस संहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारसहित लिखताहूं, अत्रिसंहिता पञ्चनदादि प्रदेशमें प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राचीनहै, यह संहिता न बहुत संक्षिप्तहै न बहुत विस्तृतहै, यही आदिमें प्रामाणिक और स्मृतिसंहिताकार थी, वाग्भटसंहिताका वृत्तान्त वाग्भटसंहितामें इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसंहितादि आत्रेयसंप्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्सातंत्रोंसे आदिमेंही स्वयंसंगृहीत अष्टांगहृदयसंग्रहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै । जैसा उसमें लिखाहै–

अष्टांगवैद्यकमहोदधिमन्थनेन
योऽष्टांगसंग्रहमहामृतराशिराप्तः ।
तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां
प्रीत्यर्थमेतदुदितंपृथगेवतंत्रम् ॥ वा.उ.४०अ.

अर्थ–अष्टांगवैद्यक समुद्रके मथनेसे जो अष्टांगसंग्रह बडे अमृतकी राशि प्राप्त हुई,उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अनल्प फल तंत्र पृथक् ही कहा

है, इसीप्रकार यह अलंकारादि सहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचता हुआ ऐसा सुनाजाताहै कि, यह आदिमें ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करताथा, उसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्म्मके तत्त्वको जाननेके लिये किसी बौद्धाचार्य्यको गुरु किया, इसप्रकार बहुतकालतक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्त्ततारहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्तकरके उसमें बडी श्रद्धा करतारहा, फिर वह अपने गुरुके पास आया उस धर्म्मके अनुरागको धारणकरता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे उसी धर्म्मके अवलम्बनके लिये उपदेश दिया, इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोंका कथनहै. और बहुतलोग इस वाग्भटको अमरसिंहकृत कहतेहैं, परन्तु काश्मीरराजतरंगिणीकी समालोचनासे यही विदित होताहै कि, सिंहगुप्तसुत परबौद्ध वाग्भटाचार्य्य काश्मीर नरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमें (संवत् विक्रम ११५३ शके ११९८) में वर्त्तमान था, तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमें माधवने अपने ग्रन्थमें वाग्भटका उद्धार कियाहै इसकोभी९००नौसौ वर्ष वीते, इसके उपरान्त उसी समयमें वाग्भटने अपनी संहिता रची. बहुतसे वैद्योंका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहतेहैं वाग्भटसंहिता बहुत प्राचीनहै. चरक, सुश्रुतसे पीछेकी रची अनुमान कीजातीहै, उसमें सब प्रकारकी चिकित्साओंके अंग समान हैं, इसके सुष्टियोग रोगलक्षणादिक और इसकी भाषाप्रणाली अत्यन्तशुद्ध और परम प्रशंसनीयहै, वाग्भटका „जन्म लोग कईप्रकारसे कहते हैं, कोई उसको धन्वन्तरि बतलातेहैं, कोई उसको समुद्रके मथनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहतेहैं, कोई उसको कलियुगका प्रधान बुद्ध गौतमऋषि कहतेहैं, अपने रचे हुए अष्टांगहृदयसंग्रहमें उसने सिन्धुदेशमें अपना उत्पन्न होना लिखाहै, । जैसे कि–

"भिषग्वरोवाग्भटइत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य ।
सुतोऽभवत्तस्यचसिंहगुप्तस्तस्याप्यहंसिन्धुषुजातजन्मा ॥"

अर्थ–मेरे पितामह वाग्भट वैद्यवर हुए जिनका मैं नाम धारण कररहाहूं (मैंनेभी वही वाग्भट नाम अपना रक्खाहै) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैंभी उसी अनुपम विद्यालयासिन्धुमें उत्पन्न हुआ।

अरुणदत्त वैद्यवर मृगांकदत्तका पुत्र वैद्यवंशमें उत्पन्नहुआ, उसने सुप्रसिद्धा वाग्भटसंहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की।

हेमाद्रि बडा प्रसिद्ध ग्रन्थकारहै, उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्थानकी आयुर्वेदरसायनटीका रची, चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसंग्रहभी उसीका कहते हैं ।

भावप्रकाश–वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृतहै, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोंका निश्चय करनेवाला चिकित्साका संग्रह है, अनेक प्राचीन संहितासंग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोंके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक, जारण, मारण, शोधनादिकोंका संग्रह करके लिखाहै, इन भावमिश्रने वैदेशिक पूर्टगीज व ईरानसे लायेहुए उपदंशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगको अपने ग्रंथमें चिकित्सासहित वर्णन कियाहै और नवीन चोबचीनी, छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमें मिलायेहैं, उसमें उपदंशनाशक चोपचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीनसौ ३०० वर्षसे अधिक पहिले संवत् १५९६ में लाया, यह बुइलसन् साहेबका मत है ।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमें वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसंग्रहको वैद्यलोग सब देशोंमें अधिक मानतेहैं.और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानतेहैं, इसीसे यह भावप्रकाश सब संसारमें प्रसिद्ध है ।

माधवनिदान–माधवकरका रचाहुआहै, इसमें माधवकरने अनेक प्रकारके प्राचीन तंत्र, वैद्यकसंहितादिकोंसे, कहीं आदर्शके उद्धारसे, कहीं अपनी रचीहुई भाषासे, कहीं सारसंग्रहसे और कहीं पर्य्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोंके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासी चिकित्सकोंके पढनेके लिये बडा उपकार सिद्ध कियाहै यह ग्रन्थ माधवाचार्य्यकृत है, ऐसा बहुत विद्वानोंका मतहै. परन्तु वह ठीक नहीं जानपडता, क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्रचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, संसारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोंकी अनुक्रमणिकाके अनुसार अपने ग्रन्थको निर्माणकिया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञात होताहै, और यह चक्रपाणि बारहसौ १२०० संवत्में गौड राज्यकी पाठशालाके अध्यक्षहोनेको अपने ग्रन्थमें लिखताहै. और यहभी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविन्द पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमें सातवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, उसके रचेहुए सूक्तिकरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समान समयानुसार, वा उसके पीछे इस रसग्रन्थको अनुपम

प्रतिपादन करताहै, उसका निदान आठवीं शताब्दीमें अरवी भाषामें अनुवाद हुआ और "एदान" नामरक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामें प्रसिद्धहै यह पहिले तत्त्वविद् उइलसनसाहेबका मतहै ।

व्याख्यामधुकोष-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचाहै (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभीहै, वह टीका कुसुमावली नामसे प्रसिद्धहै) इसकी भाषा पं० दत्तराम चौबेने अच्छी कीहै ।

शार्ङ्गधरसंग्रह-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृतहै, यह ग्रन्थ न अति संक्षिप्त न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रंथको अधिक पढतेहैं, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध संस्कृतव्याख्या आढमल्लीहै. और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने कियाहै ।

रसेन्द्रसारसंग्रह-प्रमाणिक रसग्रंथ गोपालभट्टने रचाहै, इसमें रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोंके सम्पूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह कियेहैं, इस ग्रंथको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने अपने ग्रंथोंमें संग्रह करतेहैं यह ग्रन्थकार विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने कीहै ।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योंके मुखसे सुननेमें आयाहै, इस ग्रन्थमें रसोंका जारण मारणादिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है । और एक रसेन्द्रचिन्तामणि ढुण्ढनाथकृतभी है, उसमें भी रसोंके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमें उसका प्रचार नहीं, वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

चक्रदत्तसंग्रह-चक्रपाणिदत्तविरचित रोगोंकी चिकित्साका संग्रह है, इसमें माधवकरप्रणीत रोगोंका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोंका अनुक्रम और ज्वरादिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमें रोगोंके तत्प्रणीत सिद्ध योग हैं, वह परम दृष्ट फल हैं, इसप्रकार यह संग्रह सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण कियाहुआ संसारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोध्रवलनाम दत्तकुलमें उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तका शिष्यथा

वह विद्याकुलसम्पन्न. वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडराज्यकी पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पडता है, यह भी सुननेमें आया कि, उसकी जन्मभूमिमें उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कार्य्यसे उसका धर्म्म शैव जान पडता है ।

"गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्रं
नारायणस्यतनयःसुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रबलीकुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिहकर्तृपदाधिकारी ॥
यःसिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैवनिक्षिपतिकेवलमुद्धरेद्वा" ॥

अर्थ-गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोंमें पात्र नारायणका पुत्र नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रबली कुलीन श्रीचक्रपाणि कर्त्ता-पदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्धि योगोंको उसमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है.

सिद्धयोग-वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थहै, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमें इस ग्रन्थका समुल्लेखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला समझना चाहिये ।

रसकौमुदी-वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसघटिक दृष्ट फल औषधियोंको अनेक रस ग्रन्थोंसे लेकर अपने रचे हुए ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा औषधसंग्रह किया, और बहुत रोगोंमें अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानका कर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परन्तु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नहीं कर सक्ता, क्योंकि माधवकरके समयमें अहिफेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था ।

रसरत्नाकर-नित्यनाथकृत बडा रसोंका संग्रह है उसने रसोंका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और संग्रह कियेहुए तैल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये हैं, नित्यनाथ वङ्गदेशवासी न था, परन्तु पश्चिम देशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैंने इसकी हिन्दीभाषामें टीका की जो जगत्में सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो।

योगचिन्तामणि-श्रीहर्षसूरिकृत है, इसमें सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग हैं उसका समय ग्यारहसौ ११०० अथवा साढे ग्यारहसौ ११५० संवत् विक्रममें रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमंजूषा नाम पण्डित दत्तराम चौबेने निर्माण की है।

योगतरंगिणी-वैद्यक रसोंका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत यह ग्रन्थ हमारे देशमें अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनही त्रिमल्लभट्टके बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण, योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ हैं, इसी द्रव्यगुणशतककी भाषाटीका मैंने लिखी है।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द-भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नहीं है, यह ग्रन्थकार संवत् १८५० में विद्यमान था।

वैद्यजीवन-वैद्यवर श्रीलिम्बराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नहीं है, उसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है।

सारकौमुदी-आनन्दवर्म्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचाश १५० वर्षके लगभगमें रचागया है. इस ग्रन्थका बङ्गदेशमें अधिक प्रचार है।

भैषज्यरत्नावली-१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोविन्ददाससेनने रची है, हमारे देशमें इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है.

वैद्यरहस्य-वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत, यह ग्रन्थ आज कलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग हैं, इस कविके बनाये और भी चिकित्साञ्जनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं।

चिकित्सासारसंग्रह-भिषग्वर क्षेमशर्म्माआचार्य्यकृत सर्वोपयोगी है, इन्होंने सब रोगोंका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है।

हारीतसंहिता-महर्षि आत्रेय और हारीत मुनिके संवादमें रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्योंने लिखाहै, परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता, क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देतेहैं, हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पना की है।

प्रयोगामृत–यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य चिन्तामणिकृतहै, यह ग्रन्थकार श्रीखण्डसमाजके अन्तर्गत नीरोल ग्राममें १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ।

नाडीप्रकाश–नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमें उत्पन्न शङ्करसेनने रचाहै, वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रन्थभी उसी कविकृतहैं।

अर्कप्रकाश–यह चिकित्सासंग्रह रावणकृतहै, परन्तु हमको रावणकृत होनेमें सन्देहहै क्योंकि, इस ग्रन्थमें नवीन औषधि बहुत लिखी हैं जैसे कि, गुलदाउदी, गुलाब, इससे रावणकृत नहीं जानपडता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रचदिया है, इसका भाषानुवाद मैंने कियाहै।

चिकित्साक्रमवल्ली–यह अर्वाचीन ग्रन्थ काशीनाथद्विवेदीप्रणीतहै, अभीतक विशेष प्रसिद्धि नहीं पाई, कविता और प्रयोग अत्यन्त उत्तम हैं।

निघण्टुरत्नाकर–यह नवीन ग्रंथ विष्णु वासुदेव गोडबोलेकृत है, परन्तु गणेश रामचन्द्र शास्त्रीदातार, भास्करानन्दशास्त्री तामनकर, कृष्णशास्त्री महाबल, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचागयाहै और यह ग्रन्थ एक लाख श्लोकोंमें समाप्त हुवा है, अकारादिकोष, द्रव्यगुणदोष, शारीरक अष्टविध परीक्षा निदानसहित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यंत्राध्याय, पुटविधि; और अजीर्णमञ्जरी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्णहै, इसमें अनेक औषधि द्वीपान्तरकी लाई हुई लिखीगई हैं, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष, संस्कृत और मराठी भाषामें लिखे हैं, इसमें नाना प्रकारके विषय अंग्रेजी और फारसीसे लेकर सन्निवेशित कियेहैं, आज कल इस ग्रन्थके समान दूसरा ग्रन्थ विदित नहीं होता, किसी ग्रंथमें केवल चिकित्साही है, किसीमें रोगोंके लक्षण, किसीमें निदानसहित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमें परिभाषा, किसीमें निघण्टु, किसीमें मानपरिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें कोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पथ्यापथ्य, किसीमें चर्या और किसीमें धात्रीचिकित्साहै परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित करदियाहै, जो विषय कहीं नहीं पायेजाते वह सब इस ग्रन्थमें विद्यमानहैं इसलिये विष्णु वासुदेव गोडबोलेको हम वारंवार धन्यवाद देतेहैं कि, जिसने अनेक ग्रन्थोंको संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्यवंशीय श्रीरघुराजभूषण रामचन्द्रसूनु लववंशचूडामणि सेठ हंसराज करमसीको धन्यवाद देतेहैं कि, जिन्होंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर संवत् १९२४ में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिकेथे ।

अमरकोष–अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुवा, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये यह अमरसिंह किसके समयमें हुवा, इसमें अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइल् फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैं, उन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुममें) परमाधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोंने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्नथे ।

धन्वंतरिःक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः । ख्यातोवराहमिहिरोनृपतेःसभायांरत्नानिवैवररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

(काव्यसंग्रह)

अर्थ–धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामें यह नवरत्न थे ।

धारानगराधिपति दूसरे वृद्ध भोजकी सभामें किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजकी सभामें उसी प्रकारके रत्नोंमें अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनों कल्पोंमें कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसक्ता, हमें तो संवत् प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके संवत् तीनमें था, ऐसा विश्वासहै, अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी था, यह बात सब संसारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सब कोषोंमें श्रेष्ठ होनेसे सब जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमें विभाग करके बीच बीचमें वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचताहुआ ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमें–

मथुरेश प्राचीनहै, शाकेशालिवाहनके ६०० वर्षमें उत्पन्न हुआ, वह किसी मुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइल्सन् साहिबका मत है, यही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था ।

क्षीरस्वामी–काश्मीरपति ललितादित्यके राज्यसमयमें उत्पन्न हुआथा,

जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पढकर अन्तमें ललितादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०५ । ७३१ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट-(सन् १४३०) में हुआथा, राजतरंगिणी ।

गौरांगमल्लिका पुत्र भरतमल्लिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है. यह वर्द्धमान देशके पातिल पल्लिग्राममें कुलीन वैद्यवंशमें एकसौ पचाश १५० वर्षके लगभग पहिले उत्पन्न हुवाथा, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोल्लासका रचनेवाला और रघुवंश आदि काव्य कुमारसंभवादिकोंका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्त्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहैगी.

धन्वन्तरिनिघण्टुभी-अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे वैसाही पायाजाताहै. वह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान-अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उत्तमरीतिसे विशेष करके दो भागोंमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्य्यने रचा है, उसमें पहिला स्वर्गादिक छः भागोंमें विभाग किया है, शब्दोंकी श्रेणीका विभाग अन्ततक क्रमसे किया है,दूसरा नानार्थघटित है, परन्तु हेमचन्द्र अवतरणिकामें अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनाप्रणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नहीं लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पडती, इसमे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमें वैद्य लोग सन्देह करतेहैं कि, महेश्वरकृतनानार्थवर्ग इसमें मिलादियाहै, "विद्वान् लोग ऐसी तर्कना करते हैं"

हेमचन्द्र वा हेमाचार्य्ययति-प्राचीन जैनग्रन्थलेखक और जैनधर्म्मावलम्बी था, यह संवत् १२३० में हुवा. और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था, इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकी रचनासे व्यतीतकरके अन्तिमअवस्थामें गुजरातदेशकी ओर जाकर वहां जैनधर्म्मकी समालोचनासे बडी प्रतिष्ठा पाई. और वहां प्रकृतिसहित राजत्व और जैनधर्म्मको ग्रहण किया, सुनाजाताहै कि, जैनधर्म्मावलम्बी हेमाचार्य्य यतिने उसीसमयमें राजपूत नरपति गुणमर-पालकोभी जैनधर्म्ममेंही दीक्षित करलिया, इसप्रकार प्रसिद्धिहै, जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणसेनकी सभामें था (संवत् १२३०) ऐसा उइलसन् साहिबका मत है ।

शब्दमाला-रामेश्वरशर्म्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषकी शेषभूत बंगभाषामें कहीगईहै, यह मेदिनीकोषसे पहिलाहै यह उइलसन् साहबका मत है ।

नाममाला-धनञ्जयकृत है, उसमें श्रेणीविभागके असद्भाव होनेसे यह प्राचीन अनुमान कीजातीहै, महर्षि जैनधर्म्मावलम्बी मानतुंगाचार्य्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखाहै ।

भूरिप्रयोग-दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपद्म व्याकरणकार पद्मनाभदत्तने रची है और तीनभागोंमें विभाग की है, पद्मनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वयं अपने ग्रन्थमें मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है ।

शब्दरत्नावली-मूँसेखाँ नाम किसी मुसल्मान वीरके आश्रयसे अमरटीकाकार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रची है, उसमें शब्दोंके भिन्न रूप पाठ किये गये हैं ।

जटाधरकोष-चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरको विना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्राचीन अनुमान नहीं कियाजाता।

अभिधानरत्नमाला-हलायुधकृत है, यह संक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमें विभाग की गई है, हलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्म्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमें वर्त्तमानथा,उसके कोषमें उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची वंग भाषासे व्याख्यान कीगई, ऐसा सुना जाताहै कि, हलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामें पण्डित था ।

शब्दचन्द्रिका-नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचा हुआ प्रसिद्ध है, यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पथ्यापथ्यादिकोंके कार्य्योपयोगी होनेके संग्रहसे सर्वत्र प्रशंसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम वंग भाषामें कहे हैं, यह वंगदेशहीके रहनेवाले थे ।

विश्वप्रकाश-यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमें विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने संवत् १०६६ में संग्रह किया, उस समय शाके १०३३ थे, महेश्वर गाधिपुरनिवासी साहसांक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वंशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उइल्सन् साहब का मत है ।

अजयपालकृतसंग्रह-संक्षिप्तहै, परन्तु बहुत प्रमाणोंसे बडा है, अजयपाल मेदिनीकरसे पीछे हुआ और जैनमतावलम्बी था यहभी उइल्सन् साहबका मतहै।

धरणीकोष-कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निर्माण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उइल्सन् साहबका मत है ।

त्रिकाण्डशेष–परम जैन पुरुषोत्तम देवकृत तीन अध्यायमेंही यह ग्रन्थ अमरादिकोष परिशिष्टमात्र प्रसिद्धशब्दोंसे पूर्ण है ।

हारावलिकोष–संक्षिप्त प्रसिद्ध सामान्यशब्दोंसे ग्रन्थित दो भागोंमें विभाग किया हुआहै. उनमें पहिला भाग नामपर्य्यायसंग्रह, दूसरा भाग नानार्थसंग्रहहै, यह ग्रन्थकार नववीं वा दशवींशताब्दीमें हुआ, ऐसा डइल्सन् साहबका मत है।

मेदिनीकोष–प्राणकरके पुत्र मेदिनीकरका रचाहुआ है, और यह अभिधान रत्नमालाके नामसे संसारमें प्रसिद्ध है, मेदिनीकर महेश्वरसे पीछे चौदहवींशताब्दीके अन्तमें और महेश्वर, रायमुकुट इन दोनोंके मध्यवर्ती समयमें हुआ, यह कोष अन्त्यादि क्रमसे सुलभ समझने योग्य और प्रशंसनीय है "कर" उपाधिसे अनुमान कियाजाता है कि, यह वैद्य वङ्गवासी है ।

इत्यादि अनेक कोष देखनेमें आये और वनस्पतियों सम्बन्धक वहुधा प्राचीन ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें वर्णन किये हैं, इसके अतिरिक्त निघण्टु नामक स्वतंत्र ग्रंन्थभी है, निघण्टु शब्दका अर्थ कोष वा संग्रह है, निघण्टु और निघण्ट इन दोनों शब्दोंका अर्थ एकही है, प्राचीन निघण्टुओंकी पुस्तकोंमें वनस्पतियोंके नाम, गुण, दोष, उपयोग, किस रोगपर कौन औषधि देनीचाहिये इत्यादि बातें लिखी हैं ।

आत्रेय, हारीत, चरक, सुश्रुत, वाग्भट और भावप्रकाशादि अनेक ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें निघण्टुका वर्णन लिखाहै, परन्तु ज्यों ज्यों शास्त्रका विचार बढतागया त्यों त्यों एक एक विषयपर अनेक अनेक ग्रन्थ वनने लगे, और इसी वनस्पतिशास्त्रपर बहुतसे निघण्टु नामक ग्रन्थ वनगये, जितने निघण्टु आजतक निर्माण हुए हैं, उनमें कुछ कुछ मतभेद है, एक गुडूच्यादि निघण्टु है इसीको बहुत लोग धन्वंतरिनिघण्टु मानते हैं, परन्तु यह बात निश्चय नहीं है, गुडूच्यादिनिघण्टु व धन्वन्तरिनिघण्टु दोनों धन्वन्तरिजीके बनाये हैं, गुडूच्यादिनिघण्टु बहुत दिन हुए कि, छपगया, परन्तु वह दूसरा धन्वन्तरिनिघण्टु कहीं नहीं मिलता जहांतक मुझसे वनपडा मैंने बहुत अनुसन्धान किया ।

एक राजनिघण्टु नरहरि पण्डित प्रणीतहै, जिसको छपे बहुत दिनहुए, इस निघण्टुका दूसरा नाम "चूडामणि" है, वहुतसे लोग कहतेहैं कि, राजनिघण्टु एकही है, परन्तु काशीराजप्रणीत भी एक निघण्टुहै काशीराजका नाम दिवोदासभीथा, इसकोही धन्वंतरिका अवतार मानतेहैं इसमें यह संशय होता है

कि, पहिला कहाहुआ धन्वंतरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होताहै कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्नथे उनहींमें एक धन्वंतरिजी भी थे आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वंतरि नामक निघण्टु रचाहो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुए ग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचारहै, इसलिये यहभी कहाजासक्ताहै कि, धन्वंतरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचाहुआहै।

धन्वंतरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपंडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघंटु भी कहते हैं, चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वन्तरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अबतक नहीं जानते, पंडित शंकरदास शास्त्रीने लिखा है कि, एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मंगलाचरणमें लिखता है।

प्रारम्भिभैषजहितायनिघण्टुराजः।

और समाप्तिमें भी ऐसा लिखा है।

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसतिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानस्थितश्रीनान्दिस्फोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्य्यवंशोद्भवचतुर्द्दशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजवैराग्ययोग्यश्रीपरमहंसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रगिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारद्दासविशारदमानसंहतारिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसूनुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपण्डितविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूडामणौचैकार्थाद्यभिधानस्त्रयोविंशो वर्गः॥

इससे ज्ञात हुआ कि, ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रक्खे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि, दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रखदिया ?।

इसप्रकार चार निघण्टु हुए. पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञातहोताहै निघण्टुप्रकाशमें लिखाहै कि, चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टुहै जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते हैं, यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदननिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ छपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराजनिघण्टु और शेषराजनिघण्टु दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमानथे

यह प्रमाण पायाजाता है इन तीनों निघण्टुओंका आजतक कहीं पता नहीं लगता, और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशंसनीय है, यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वैद्यने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है, विद्यार्थियोंमें इसका अधिक प्रचार है, क्योंकि इसमें नाम, द्रव्य, गुण विस्तारपूर्वक वर्णन कियेहैं ।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवां वोपदेव "हृदयदीप" निघण्टु है, नवां मुद्गलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवां कैयदेवकृत "कैयदेवरत्नाकर निघण्टु" ग्यारहवां "केशवकृत सिद्धमंत्र" यह चारों निघण्टु अभी कहीं छपे नहीं हैं,केवल विश्वनाथसेनकृत पथ्यापथ्यनिघण्टु छपाहै, और वडे खोजसे एक त्रिमल्लभट्टविरचित "द्रव्यगुणशतश्लोकी" निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद कियाहै ।

राजवल्लभीयद्रव्यगुण–यह परमोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृतहै, परन्तु श्रीनारायणदास कविराजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके इस ग्रन्थका संस्कार कियाहै, राजवल्लभ वैद्य परम्परासे सुनते आतेहैं कि, सम्वत् १७६० सत्रहसै साठमें वर्त्तमानथा, यह ग्रन्थ छः परिच्छेदोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्योंको उपयोगीहै, इस ग्रन्थका नामही सुनाजाताथा परन्तु कहीं देखनेमें नहीं आताथा, मैंने अपने मित्रोंके पास देशदेशांतरोंमें राजवल्लभके लिये पत्र भेजे परंतु कहींसे प्राप्त न हुआ, वहुतदिन पश्चात् कलकत्तेसे एक मेरे मित्रने भलीभाँति खोज करके इसग्रन्थकी एक प्रति मेरे पास भेजी वास्तवमें यह संक्षिप्त ग्रन्थ जैसा सुनाथा वैसाही निकला, मैंने अत्यंत हर्षसहित भाषानुवाद करके वैश्यवंशअवतंस श्रेष्ठी खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्पण किया ।

निघण्टुसंग्रह–जूनागढ निवासी वैद्यशिरोमणि रघुनाथजी इन्द्रजी उपनामकताभटरचितहै, अनेक ग्रन्थोंका संग्रह कियाहुआ तो है परन्तु आज कलके समयमें यह निघण्टु सब निघण्टुओंका शिरमौरहै इसकी प्रणाली धन्वन्तरिनिघण्टुकी सदृशहै, यह शके १८१९ में रचागयाहै ।

वैद्यकशब्दासिंधु–बाबू उमेशचन्द्रकृत नवीन कोषोंमें वहुत उत्तमहै ।

जब इन प्राचीन ग्रन्थोंको मैंने देखा, तो विचार किया कि, देखो पृथ्वीपर कैसे कैसे विद्वान् और बुद्धिमान् हुए, कि जिन्होंने यह अनुपम ग्रन्थ निर्माण कियेहैं, परन्तु सब वैद्योंने वैद्यकमें कोष और निघण्टुहीको मुख्य समझा, कि वैद्यककी मूल यही दोहैं, उन वैद्योंको सर्वज्ञ और गुणज्ञ जानकर

वारम्वार धन्यवाद देताहूं, जो महादुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका बनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन कठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका काय ठीक ठीक सिद्ध न हुआ; और ठीक ठीक औषधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और संस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया, पंसारियोंकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभीहै तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं हैं, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान, यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे, उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका वृथा आलस्यरूपी वारिधिमें डूबीजाती हैं इनक बचानेका कोई उपाय होना चाहिये। यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोंकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन कोष रचा" जिसमें प्रथम संस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जब यह पूर्ण होगया, तो फिर चित्तमें विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु संसारके उपकारके लिये एक निघण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि बिना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं जाने जाते यथा–

निघण्टुनाविनावैद्योविद्वान्व्याकरणंविना ।
अनभ्यासेनधानुष्कस्त्रयोहास्यस्यभाजनम् ॥ १ ॥
वैद्येनपूर्वंज्ञातव्याद्रव्यनामगुणागुणाः ।
तदायत्तंहिभैषज्यंयज्ज्ञानेस्यात्क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

अर्थ–बिना निघण्टुके वैद्य, बिना व्याकरण विद्वान् (पण्डित) और बिना अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेवाले हैं ॥१॥ इसलिये प्रथम वैद्यको औषधियोंका गुण अवगुण विचारनाचाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योंके आधीन सब ओषधादिकका बनाना है, और बुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जानेजाते हैं ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सब निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आज कल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, शोरा, सत्वगिलोय, सनाय, कालादाना, चाय, सालमामिश्री, कलमीआम,

नासपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलूबुखारा, माजु, ब्रह्मदण्डी, रेवटचीनी, तमाखू, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अंडखरबूजा, शकरकन्दी, घुँइयाँ, सलजम, बेला, चँवेली, मोतिया, हारसिंगार, गुलाब, महँदी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, विहारीनिम्बू, मक्का, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके उसमें लिखे। फिर उनके नाम, गुणा-गुणका विचार और लक्षण लिखे, पच्चीस वर्गोंमें यह ग्रन्थ पूर्णकिया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमें ओषधियोंके नाम, और ब्राकट (कोष्ठ) में अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके परर्याय, फिर प्रत्येक ओषधिका प्रसिद्ध संस्कृत-नाम, पश्चात् हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कर्णाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी, अरबी, और कहीं कहीं औत्कली, द्राविडी, लुसाई, ब्रह्मी, पंजाबी, तुरकी, फरहंगी, और यूनानी आदि भाषाओंमें नाम लिखेहैं, फिर अनेक ग्रन्थोंसे उसके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखाहै, किसी किसी ओषधिकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकीभी विधि लिखीहै।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमें सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥१॥

दूसर हरीतक्यादिवर्गमें, हरडसे आदि लेकर चूकपर्यंत औषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमें नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमें चम्पा, चँवेली, मालती, माधवी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, शोभाका वर्णन ॥ ४ ॥

पञ्चम फलवर्गमें आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटादिवर्गमें वड, पीपल, पाकर इत्यादि वडे वडे शाखीवृक्षोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवें धातूपधातुवर्गमें सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीत-पर्य्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवें रत्नोपरत्नवर्गमें वज्र, विद्रुम, वैदूर्य्य, नीलमणि आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमें सबप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवें धान्यवर्गमें शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योंका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमें बथुवा, कुल्फा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवें वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैंस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवें दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका विस्तारसहित वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी छाँछ, मट्ठेका सम्पूर्ण वर्णन किया है ॥ १५ ॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीघी) का भलीभाँति वर्णन कियाहै॥ १६ ॥

सत्रहवें घृतवर्गमें सबप्रकारके घृतोंका भिन्न भिन्न वर्णन किया है ॥ १७ ॥

अठारहवें मूत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोंका सम्पूण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवें तैलवर्गमें तिल, सरसों, लाही, इत्यादिके तेलका वर्णन ॥ १९ ॥

वीसवें अर्कवर्गमें सब ओषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवें इक्षुवर्गमें सब प्रकारकी ईखोंका वर्णन ॥ २१ ॥

वाईसवें सन्धानवर्गमें सब प्रकारकी काँजी, अचार, सिरका मदिरा (शराब) आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें संख्यावर्गमें त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन ॥ २३ ॥

॥ इति पूर्वार्द्ध ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।



चौबीसवें (प्रथम अनूपादि वर्ग) में अनूपदेश जांगल देश और साधारण देशके लक्षण, ब्राह्मणक्षेत्र, क्षत्रियक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र, शूद्रक्षेत्र इन चार क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली ओषधियोंके गुण, उन चारों क्षेत्रोंके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोंका वर्णन करके फिर उन पांचोंक्षेत्रोंमें उत्पन्नहोनेवाले द्रव्योंके गुण, फिर उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद, उनके देनेकी विधि, चारप्रकारसे ओषधियोंका निर्णय, जंगम, पार्थिव, औद्भिज्ज द्रव्योंके पांच भेद, वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोंकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकोंमें पञ्चमहाभूतात्मकत्व, फिर उन वृक्षोंके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अश्विन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमें त्यागना, फिर विंध्याचल और हिमालयकी ओषधियोंके गुण, ओषधियोंके लानेमें मुहूर्त्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मंत्र, और समय, दुष्ट ओषधियोंका त्यागन; और श्रेष्ठ ओषधियोंके रखनेकी विधि, स्वभावमें हितकारी ओषधियोंका वर्णन, उनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध ओषधि लेनेमें संकेत, प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुरादि रसोंका वर्णन, वीर्य्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पच्चीसवें (दूसरे मिश्रवर्गमें) उत्थानकालनिर्णयादि—हाथ पांव और मल मार्गको स्वच्छ रखनेके गुण, सूर्य्योदयसे पहले जलपीनेके गुण, नासिकासे जल पीनेके गुण, दतौन करनेकी विधि, दतौनमें वृक्षोंका निषेध, दतौन करनेके समय दिशाका निर्णय, किन किन रोगियोंको दतौनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण, चक्षुधावनविधि, गण्डूष (कुल्ला) करनेका गुण, मुखप्रक्षालनगुण, अञ्जन लगानेका गुण, किस किस रोगीको अञ्जन न लगाना चाहिये, कंघीसे बाल स्वच्छ करनेका गुण, पगडी शिरपर बांधनेके गुण, श्मश्रु (दाढी मूछ क्षौरकर्म और नख) कटवानेके गुण, नाकके बाल उखाडनेके दोष, प्रातःकाल उठकर क्या देखना चाहिये, अग्निसे तापनेके गुण, धुएँ और हिमको सेवनके गुण, ओसके गुण, कुहरके गुण, छत्री

लगानेके गुण, दृष्टिक गुण, आतपके गुण, छायाके गुण, लाठी धारणके गुण, व्यायाम (कसरत) करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण, शरीर घिसनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नंगे पांव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पाँव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पुर्वाई) के गुण, अग्निकोणकी पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैर्ऋत कोणकी पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी (पछाहियां) पवनके गुण, वायव्यकोणकी पवनके गुण, उत्तर दिशाकी (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणकी पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बबूलेके गुण, खजूरके पंखेकी पवनके गुण, ताड, केला, बांस, खस, मोरपंख, वाल, वस्त्र, और फूलोंके पंखेकी पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यंग (पाँवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यंग वर्जित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमें तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखप्रलेपके गुण, स्नानके गुण, गरमजलसे स्नान करनेके गुण, आंवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण, स्नानवर्जित रोगी, किसरोगमें स्नान करना नहीं चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्र धारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारणके गुण, गुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि, दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण, पुष्पादिधारण गुण, भोजनकी आदिमें लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण, क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय, भोजनादि करनेका परिमाण, आचमनके गुण, भाजनके अन्तमें कर्त्तव्यता, भोजनके अन्तमे शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानेके गुण, अध्ययनादिकके गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक षट्क, तत्काल प्राणहारक षट्क, आयुके भेदसे स्त्रियोंकी बाल्यादि संज्ञा, बालास्त्रीसंसर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय, सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण, पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण, चांदनीके गुण, अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण, रात्रिमें जागने और दिनमें सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिरकृत्य, वसंतकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य, शरत्कृत्य ॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

परिशिष्टमें, माजूफल, समुद्रफल, रेवदचीनीसे आदि लेकर अण्ड खरबूजेतक नवीन नवीन ओषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखाहै ।

जिन जिन ग्रन्थोंसे यह निघण्टुभूषण संग्रह कियाहै उनके चिह्न एक एक अक्षरसे लिखेहैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखताहूं ।

नि०	र०	निघण्टुरत्नाकर	भा०	प्र०	भावप्रकाश
रा०	नि०	राजनिघण्टु	वै०	नि०	वैद्यकनिघण्टु
म०	नि०	मदनपालनिघण्टु	ध०	नि०	धन्वंतरिनिघण्टु
म०	वि०	मदनविनोद	वि०ति०भा०		विकारतिमिरभास्कर
रा०	व०	राजवल्लभ	कै०	दे०	कैयदेव
ग०	नि०	गणनिघण्टु	नि०	चू०	निघण्टुचूडामणि
सो०	नि०	सोढलनिघण्टु	लंकेश०		अर्कप्रकाश
आ०	सं०	आत्रेयसंहिता	ड०	मि०	डल्लनमिश्र
चं०	नि०	चंद्रिकानिघण्टु	र०	चं०	रसचंद्रिका
भै०	चि०	भैषज्यचिन्तामणि	र०	सं०	रसेन्द्रसारसंग्रह
सु०	सं०	सुश्रुतसंहिता	नि०	सं०	निघण्टुसंग्रह
च०	सं०	चरकसंहिता ।			

और जिस परिश्रमसे वृक्षोंके चित्र एकत्र किये मेराही जी जानताहै, मेरी इच्छा तो यहथी कि, जिस जिस पृष्ठमें द्रव्योंके नाम गुणहैं, वहीं २ वृक्षोंके चित्रभी हाने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमें विलम्ब होनेके कारण चित्र एकही जगह लगाये गये हैं ।

अब सब आयुर्वेदरसरसिकोंसे मेरी यह प्रार्थनाहै कि, इस परिश्रमका ध्यान करें कि, मैंने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातको वैद्यलोगही पहिंचानैंगे, सैकडों पुस्तकें देश देशान्तरोंसे संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, महाराष्ट्री, बंगला इत्यादिकी मँगाईं, उनमेंसे एक एक शब्द ढूंढ ढूँढकर निकाला तब यह ग्रन्थ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ तो "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" इसका नाम रक्खा. और वैद्यजनोंके हितार्थ इस निघण्टुको श्रीमान् वैश्यकुलदिवाकर, सकलगुणभाण्डागार, परमोदार, गोब्राह्मणहितकारी, सत्यव्रतधारी, सर्वविद्याविभूषित, श्रीमद्रत्ना-

करसन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठिखेमराज श्रीकृष्णदासजीको पूर्णप्रतापी जानकर मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" उनको समर्पण किया, और उनको कोटिशः धन्यवाद हैं कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण "को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयमें मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मेरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी श्लाघा करेंगे, यह मुझको पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना प्रगट करेंहींगे, यहभी मुझे दृढ आशा है, जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपरहै तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते.

इति प्रथमावृत्ति भूमिका ।

वि० संवत् १९५२
आषाढपूर्णिमाया भृगौ ।

आपका कृपाभिलाषी-
आयुर्वेदोद्धारक-शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद.

श्रीः।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औषधिशास्त्र आयुर्वेदका मुख्य अंग और वैद्यकका प्रथम आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियाक्रमोंकी मूल चिकित्साहै और चिकित्साकी मूल औषधिशास्त्र अर्थात् निघण्टु इसी कारण सर्वत्र लिखाहै कि–"विना निघण्टुके वैद्य नहीं होता है" जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेहैं औषधिकल्पको नहीं जानते उनकी संसारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती । और न वह वैद्यके योग्यही कहे जासक्ते हैं । हमारे पूर्वज महर्षियोंने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औषधिशास्त्रके ग्रन्थ निर्म्माण किये । अनुमान आठसौ वर्ष पूर्व उन समस्त आर्षग्रन्थोंके पढनेका इस देशमें अधिकतासे प्रचार था पश्चात् वारंवार मुसल्मानवद्शाहोंके चढनेपर सब विद्याओंकी अवनतिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनति होतीगई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनति होनेसे सम्पूर्ण औषधिशास्त्रके ग्रन्थोंके पठन पाठन और औषधिशिक्षाका एकसाथ प्रचार उठसागया । यहांतक आयुर्वेदीय चिकित्साकी दुर्दशाहुई कि, आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुइ और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औषधियें भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होतीं । बडे कष्टका विषयहै कि–यूनानी और डाक्टरी विदेशी औषधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गांवोंमें सुगमतासे प्राप्त होजातीहैं और आयुर्वेदीय औषधियें हमारी कहलानेपर भी हमको ठीक ठीक किसी स्थानपर भी नहीं मिलतीं । यदि किसी पसारीसे पूंछते हैं कि, तुम्हारे पास अमुक औषधि है ? तब प्रथम तो वह नाहीं कहदेताहै और जो कहीं विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गईं तो गली, सडी वर्षोंकी पडीहुई होंगी ।

इत्यादि उपर्युक्त आयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उसको वारंवार लिखनेकी यहां आवश्यकता नहींहै किंतु इतना अवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनति रहनेपर तुम्हारी कदापि उन्नति नहीं होगी । क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारस सिद्ध होचुकी है कि, हमारे लिये हमारेही देशकी औषधि सात्म्य होसक्तीहै ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव देखपडताहै यद्यपि इस नवीन शताब्दीके आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और

औषधिशास्त्रकी उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकताहै उसका सोलहवां भाग नहींहै । यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, धन्वन्तरि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखंड छपचुकाहै तथा मदनपाल, राजनिघण्टु, धन्वंतरिनिघण्टु, शोंढलनिघण्टु, निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेक निघण्टुके स्वतंत्र ग्रन्थ भी छपचुकेहैं किन्तु ऐसा ग्रंथ कहीं भी नहीं छपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औषधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय। इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण कराहै । इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औषधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभव हो सक्ताहै । यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखाहै किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमें कितनी एक त्रुटि रहगईथीं सो अबकीबार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटियां पूर्ण करदी गई हैं ।

इस आवृत्तिमें बनप्सा, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गांठगोभी, गुलेबनप्सा, झाऊ, झिल, देशीबादाम आदि अनुमान २०–२९ अर्वाचीन औषधियोंके गुण दोष, विवरण आदि संस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिखदी गई हैं। पहली बारमें सम्पूर्ण औषधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नहीं लिखेगये थे सो अबकीबार अनुमान ३००–४००औषधियोंके विशेष विवरण परिवर्द्धित करदिये गयेहैं । इसके अतिरिक्त २०० चित्र औषधियोंके बढादिये हैं । तथा अकारादि क्रमकी बंगला, मराठी और गुजराती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगादीगई हैं । इसमें प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रहगई हों उनको पाठक महाशय क्षमा करें अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेजदेंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक करदी जायँगी ।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका ।

तारीख–४–४–१९०४.

भवदीय–कृपाकांक्षी–
वैद्य–शंकरलाल हरिशंकर,
"आयुर्वेदोद्धारक–कार्य्यालय"
मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणग्राहकतासे इसका तीसरा संस्करणभा शीघ्र होगया। शीघ्रताके कारण अबकीबार कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया जासका, तथापि ग्राहकोंके संतोषार्थ इस वार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन संशोधन कियागयाहै। पहले और दूसरे संस्करणोंमें वनौषधियोंके सब चित्र ग्रन्थकी आदिमें एकत्र लगाये गयेथे, प्रत्येक औषधिके चित्रको अलग अलग ढूंढनेमें तब बहुत देरलगतीथी। अबकीबार इसी दिक्कतको दूर करनेके लिये प्रत्येक औषधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थानमें लगादियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथासाध्य संशोधन कियागयाहै।

तारीख १ मई सन् १९१२

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर.
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्य्यालय"
मुरादाबाद. U.P.

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी-

विषयानुक्रमणिका ।



हरीतक्यादिवर्गः।

फलवर्गः ।

वटादिवर्गः ।

इति.



श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणकी अकारादिक्रमसे हिन्दी-अनुक्रमणिका ।



इति शालिग्रामनिघण्टुकीअकारादि हिन्दी अनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत-वंगभाषाकेशब्दोंकीअकारादि-अनुक्रमणिका.

इति.

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची

अकारादि अनुक्रमणिका.

इति।



शालिग्रामनिघण्टुभूषणने-गुजरातीशब्दोनीअकारादि-अनुक्रमणिका.

इति ।

R

S



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।

नत्वा सिद्धिविनायकं च विविधा भाषाः समालोच्य ताः
आयुर्वेदमहोदधिं विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शालिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्चकर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशुः शीतांशुश्चंद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ-ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चंद्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, हनु, हिमाह्वय, वेधक, रेणुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, जैवातृक, ग्लौ, कुमुदबान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम, क्षपाकर, हिमाह्व, क्षपापति, सिताभ, शीत, घनसारक, शीतकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिका, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चंद्र, नाकतुषार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ॥

हिन्दीभाषामें	कपूर.
बंगभाषामें	कर्पूर.
महाराष्ट्रभाषामें	कापूर.
गुर्जरभाषामें	कपुर, कर्पूर.
कर्णाटकीभाषामें	कर्पूर.

तैलङ्गीभाषामें	कर्पूरामु.	
अँग्रेजीभाषामें	कैम्फर.	Camphor.
लैटिन्भाषामें	केम्फोरा.	Camphora.
फारसीभाषामें	कापूर.	
अरबीभाषामें	काफूर कहतेहैं.	

कर्पूरभेद ।

पोतास, भीमसेन, सितकर, शङ्करावाससंज्ञ, पांशु, पिञ्ज, अब्दसार, हिमवालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य यह १३ भेद हैं ।

कर्पूरगुणाः ।

सतिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः ।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः ॥ (सुश्रुत)

अर्थ-कर्पूर-कडुवा, सुगंधि, शीतल, हलका, लेखन तथा तृषा, मुखशोष और विरसताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः ।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः ।
आक्षेपशमनोनिद्राजननोधर्मवर्द्धनः ।
वेदनाहारकःकामशान्तिकृच्छुक्रमेहकृत् ॥
कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तःपक्वापक्वप्रभेदतः ॥
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कपूर-शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलका, सुगंधि, मधुर और कडुवा है तथा कफ, पित्त, विष, दाह, तृष्णा, मुखकी विरसता (स्वादबिगडजाना), मेदरोग और दुर्गन्धिका नाश करैहै ॥ पक्व और अपक्व इन भेदोंसे कपूर दो प्रकारका है । पक्व कपूरसे अपक्व (कच्चे) कपूरके अधिक गुण हैं ॥

अपिच ।

कर्पूरोमधुरस्तिक्तःशीतलःसुरभिर्लघुः ।
नेत्र्योलेखनकृद्वृष्यःकटुःप्रीतिकरोमृदुः ॥

मदकारीचसंप्रोक्तःकफदाहतृषापहः ।
रक्तपित्तंकण्ठरोगं नेत्ररोगंविषंतथा ॥
पित्तंचमुखवैरस्यंदौर्गन्ध्यमुदरंतथा ।
मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहञ्चमलगन्धंचनाशयेत् ॥
सएवनूतनःस्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्चदाहकृत् ।
सोपिजीर्णोदाहशोषनाशनःपरिकीर्त्तितः ॥
सोपिधौतोगुणैःश्रेष्ठःप्रोक्तोवैद्यैःपुरातनैः ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गुण । कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्रोंको हितकारी,लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा)करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विष,पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गंध, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और मलकी दुर्गंधको दूर करैहै. वही नवीन कपूर, स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनक है । वही पुराना कपूर दाह और शोषनाशक है और धुलाहुआ कपूर गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥

कर्पूरलक्षणम् ।

शिरोमध्यंतलंचेतिकर्पूरस्त्रिविधःस्मृतः ।
शिरस्तम्भाग्रजंमध्ये मध्यंपर्णतलेतलम् ॥
भास्वद्विदर्शंपुलकंशिरोजातंतुमध्यमम् ।
सामान्यपुलकंस्वच्छंतलेचूर्णंतुगौरवम् ॥
स्तम्भगर्भस्थितंश्रेष्ठंस्तम्भबाह्येचमध्यमः ।
स्वच्छमीषद्धरिद्राभंशुभंतन्मध्यजंस्मृतम् ॥
सदृढंशुभ्ररूक्षञ्चपुलकंबाह्यजंवदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिर, मध्य और तल इन भेदोंसे कपूर तीन प्रकारके हैं, स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूर शिरसंज्ञक है, मध्यमें होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसंज्ञक कहलाताहै, प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूलाहुआ स्वच्छ मध्यम है और तलेमें होनेवाला चूर्णस्वरूप

भारीहै, स्तम्भके गर्भमें स्थित कपूर श्रेष्ठ है, स्तम्भके बाहर होनेवाला मध्यम है, निर्मल और कुछ हलदीके रंगके सदृश रंगवाला श्रेष्ठ कपूर मध्यमें होनेवाला है, कडा, सपेद, रूक्ष और फूलाहुआ बाह्य कपूर कहलाता है ॥

अपिच ।

स्वच्छंभृङ्गारपत्रंलघुतरविशदंतोलनंसिक्तकंचे-
त्स्वादेशैत्यंसुहृद्यंबहलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि ।
निःस्नेहंदार्ढ्यपत्रंशुभतरमितिचेद्राजयोग्यंप्रशस्तं
कर्पूरंचान्यथाचेद्बहुतरसमलस्फोटदायिव्रणाय ॥

(रा० नि०)

अर्थ-स्वच्छ भाँगरेके पत्तोंके समान, छोटे २ टुकडे बहुत हलके और तोलमें बहुत चढे, स्वादमें तिक्त हो, ठण्ढा, हृदयको प्रिय, जो अत्यन्त सुगन्धिका प्रवाह देनेवाला, तेलरहित, दृढ पत्रवाला ऐसा कपूर अत्यन्त उत्तम राजाओंके योग्य है । इससे दूसरे प्रकारका कपूर विशेष करके फोडे और घावको उत्पन्न करनेवाला है ॥

पोतास-भीमसेनी-वरास कर्पूरगुणाः ।

पोताश्रयःस्वादुशीतोवृष्यस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
तृड्दाहरक्तपित्तानांकफस्यचविनाशकः ॥
त्रयोप्येतेतुकर्पूराःपक्वापक्वविभेदतः ।
द्विप्रकारःसउद्दिष्टःपक्वोतिगुणदःस्मृतः ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-(पोतास भीमसेनी और वरास कपूर) स्वादिष्ठ, शीतल, शुक्रजनक, तिक्त, कटु तथा तृषा, दाह, रक्तपित्त और कफका नाश करेहै, यह तीनों कपूर पक्व और अपक्व इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं, इनमें पक्व कपूर गुणोंमें अधिक है ॥

शङ्करावासकर्पूरगुणाः ।

ईशावासश्चकर्पूरोभेदीवृष्योमदापहः ।
अतिशुभ्रोन्मादतृषाश्रमकासकृमिक्षयान् ।
स्वेदंचैवांगदाहञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ–शंकरावास कपूर–दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र है तथा उन्माद, पियास, श्रम, खाँसी, कृमि, क्षईरोग, पसीना और अंगके दाहको दूर करैहै ॥

हिमकर्पूरगुणाः ।

हिमकर्पूरकःशुभ्रोवृष्यःशीतोरसेकटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानांनाशकःपरमोमतः ॥ (नि० र०)

अर्थ–हिमकपूर–शुभ्र, वीर्य्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, दाह,मोह और पसीनेको दूर करैहै ॥

उदयभास्करकर्पूरगुणाः ।

कर्पूरोदयभास्करोनिगदितःपीतःसरःस्वच्छकः
सप्रोक्तःकठिनःकटुःसमुदितःस्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥
श्रीदःपित्तकरःकफक्रिमिविषान्वातश्चनासास्रुतिं
लालास्रावगलग्रहौचशमयेज्जिह्वाजडत्वापहः ॥
(नि० र०)

अर्थ–उदयभास्कर कपूर–(पक्क सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत, दस्तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका, लक्ष्मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि, विष, वात, नाकसे पानी-गिरना, मुखसे लार गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जडता इनको दूर करैहै ।

पर्णकर्पूरगुणाः ।

पर्णकर्पूरकस्तिक्तःशुद्धश्चुन्मादकरोमतः ।
मूत्रकृत्पीनसंदाहंनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ–पानकपूर–कडवा, शोधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्र रोग, पीनस और दाहनिवारक है ॥

चीनकर्पूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलःकटुः ।
मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजःस्मृतः ॥

अर्थ–चीनक चीनकपूर, कृत्रिम, धवल,कटु, मेघसार,तुषार,द्वीपकर्पूरज॥

चीनकर्पूरगुणाः ।

चीनकः कटुतिक्तोष्णईषच्छीतः कफापहः ।
कण्ठदोषहरोमेध्यः पाचनः कृमिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चीनियाकपूर-चरपरा, कडवा, गरम, किंचित् शीतल, कफनाशक, कंठरोगनिवारक, मेधाजनक, पाचक और कृमिनाशक है ॥

अपिच ।

चीनाकसंज्ञः कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चीनियाकपूर, कफ, कोढ, कण्डू और वमनको हरनेवाला है तथा तिक्तरसान्वित है ॥

विवरण ।

कपूरके वृक्ष चीन और जापानदेशमें होतेहैं, यह वृक्ष तजकी जातिमंही गिनेजाते हैं । इनकी शाखाओंकी छाल ऊपरसे खरदरी और भीतरसे चिकनी होतीहै, इस वृक्षके ऊपर मौर आताहै. फल मटरकी समान होतेहैं फलके बीजोंमें कपूरकी समान सुगंधि आतीहै और इस वृक्षकी छाल गोदनेसे दूध निकालताहै उस दूधका कपूर बनताहै । कपूर की अनेक जाति हैं जैसे भीमसेनी, पिञ्ज, पोतास, हिम, सित, पांशु, शङ्करावाससंज्ञ, अव्दसार. जूतिका, तुषार, पत्रिकारूप, शीतल और पर्णकपूर इत्यादि । दूसरे चीनिया कपूर और कृत्रिम कपूर होतेहैं ।

कस्तूरीनामानि ।

गन्धधूलिश्चकस्तूरीमदाह्वामृगनाभिजा ।
कस्तूरिकाण्डजानाभिर्मिश्रायोजनगन्धिका ॥
(रा० नि०)

अर्थ-गन्धधूलि, कस्तूरी, मदाह्वा, मृगनाभिजा, कस्तूरिका. अण्डजा, नाभि, मिश्रा, योजनगन्धिका, (गन्धशेखर, मृगनाभि, मृगमद, मृग, मृगीनाभि, मदलता, योजनगन्धा, मार्गी, गन्धवोधिका, कालाङ्गी, धूपसञ्चारी, गन्धपिशाचिका, वातामोद, मदनी, गन्धकेलिका, वेधमुख्या, मार्जारी, सुभगा, बहुगन्धदा, सहस्रवेधी, श्यामा, कामान्धा, मृगाण्डजा, कुरङ्गनाभि, ललिता, श्यामला, मोदिनीसहस्रभित्) ॥

हिन्दीभाषामें	कस्तूरी.	
बङ्गभाषामें	मृगनाभी.	
महाराष्ट्रभाषामें	कस्तूरी.	
गुर्जरभाषामें	कस्तूरी.	
कर्णाटकीभाषामें	कस्तूरी.	
तैलङ्गभाषामें	कास्तूरी.	
अंग्रेजीभाषामें	मस्क.	Musk.
लैटिन्भाषामें	मोस्कस्	Moscus.
फारसीभाषामें	मुष्क.	
अरबीभाषामें	मिस्क.	

कस्तूरीभेदाः ।

कपिलापिङ्गलाकृष्णाकस्तूरीत्रिविधाक्रमात् ।
नेपालिकाचकाश्मीरेकामरूपेचजायते ॥ (रा०नि०)
कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानैपालीमध्यमाभवेत् ।
काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरीह्यधमाभवेत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ-कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है । जैसे कपिल वर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण, तहां नेपालमें उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरंगकी होतीहै, काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होतीहै और कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली काले रंगकी होतीहै किन्तु भावमिश्रने नेपाल देशकी कस्तूरी नीले रंगकी और काश्मीरकी कपिलरंगकी लिखीहै । कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमें उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होतीहै ॥

कस्तूरीपञ्चभेदाः ।

साप्येकाखरिकाततश्चतिलकाज्ञेयाकुलित्थापरा
पिंडान्यापिचनायिकेतिचपरायापंचभेदाभिधा ॥
(रा० नि०)

अर्थ-खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इस भांति पांच प्रकारकी है ॥

चूर्णाकृतिस्तुखरिकातिलकातिलाभा
कौलित्थबीजसदृशाचकुलत्थकाच ।
स्थूलाततःकियदियंकिलपिण्डकाख्या
तस्याश्चकिंचिदधिकायदिनायिकाख्या ॥

(रा० नि०)

अर्थ–चूर्णके सदृश खरिका, तिलके सदृश तिलका, कुलथीके बीजोंके समान कुत्था, कुलथाकस्तूरीसे कुछ मोटी पिण्डिका और पिण्डिकासे किंचित् अधिक स्थूल नायिका कस्तूरी होतीहै ॥

कस्तूरीपरीक्षा ।

स्वादेतिक्तापिञ्जराकेतकीनांगन्धंधत्तेलाघवंतोलनेन ।
याप्सुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात्कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता ॥

(रा० नि०)

अर्थ–स्वादमें कडवी, पीतवर्ण, केतकीके फूलकी समान सुगंधिवाली तोलमें हलकी और पानीमें गेरनेसे जिसका रंग न बदले, वह कस्तूरी राजाओंके सेवने योग्यहै ॥

अपिच ।

यागन्धंकेतकीनांहरतिपरिमलैर्वर्णतःपिञ्जराभा
स्वादेतिक्ताकटुर्वालघुरथतुलितामर्दिताचिक्कणास्यात् ॥
दाहंयानैतिवह्नौचिमिचिमिकुरुतेचर्मगन्धाहुताशे
साकस्तूरीप्रशस्तावरमृगतनुजाराजतेराजभोग्या ॥

(रा० नि०)

अर्थ–जो केतकीके फूलकी सदृश गंधवाली हो, रंगमें हाथियोंके मदको हरै, स्वादमें कडवी तथा चरपरी हो, तोलमें हलकी, मलनेसे चिकनी होजाय, आगमें डालनेसे नहीं जलै, परंतु वहुत कालतक चिम चिम शब्द करै और चमडा जलनेके समान गंध आवे, वो मृगके तनसे उत्पन्न हुई कस्तूरी राजाओंके भोगने योग्यहै ॥

कस्तूरिकागन्धभेदलक्षण ।

बालेजरतिचहरिणेक्षीणेरोगिणिचमंदगन्धयुता ।

कामातुरेचतरुणेकस्तूरीबहलपरिमलाभवति ॥

(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीलक्षण।

यास्निग्धाधूमगंधावहतिविनिहितापीततांयावसोंत-
र्निःशेषंयानिविष्टाभवतिहुतवहेभस्मसादेवसद्यः।
याचन्यस्तातुलायांकलयतिगुरुतांमर्दितारूक्षणंच
ज्ञेयाकस्तूरिकेयंखलकृतमतिभिःकृत्रिमानैवसेव्या ॥

(रा० नि०)

अपिच।

शुद्धोवामलिनोस्तुवामृगमदःकिंजातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्चमत्कृतिनिधिःसौरभ्यएकोगुणः।
येनासौस्मरमण्डनैकवसतिर्भालेकपोलेगले
दोर्मूलेकुचमण्डलेचकुरुतेसंगंकुरङ्गीदृशाम् ॥

(रा० नि)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा।

करतलजलमध्येस्थापनीयामहद्भिः
पुनरपितदवस्थंचिंतनीयंमुहूर्त्तम्।
यदिभवतिचरक्तंतज्जलंपीतवर्णं
नभवतिमृगनाभिःकृत्रिमोऽयंविकारः ॥ (का०)

अर्थ-बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मंद गंधवाली होतीहै। कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त सुंगधिवाली होतीहै। जो कस्तूरी छूनेमें चिकनी हो और धुयेंकेसी गंध आवै, वस्त्रमें रखनेसे वस्त्र पीतवर्ण होजाय, आगमें रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तराजूमें रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चढै और मलनेसे रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी समझकर सेवन करना नहीं चाहिये शुद्ध व मलिन जातिकी कस्तूरी नपुंसक मृग और मृगी की होतीहै, इसके अतिरिक्त और कोई दूसरीकी पहिचान नहीं, इसमें केवल एक सुगंधही बडा चमत्कृत गुण

है। जो कि यह कामका शृंगार मस्तक, कपोल, कण्ठ, भुजा और कुचमण्डलमें स्त्रियोंके लगाई जातीहै हथेलीमें जल रखकर एक मुहूर्त्तमात्रतक उसमें कस्तूरी पडी रहनेदे यदि उसका जल लाल व पीला होजाय तो वोह कस्तूरी असल नहीं है कृत्रिम अर्थात् बनावटी विकारहै ॥

कस्तूरीगुणाः ।

कस्तूरीछर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापहा ॥ (रा० व०)

अर्थ-कस्तूरी छर्दि, दुर्गन्ध, रक्तपित्त और कफरोगकी नाशकहै ॥

अपिच्च ।

कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः ।
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी, कडवी, खारयुक्त, गरम, शुक्रकारक, भारी तथा कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धता और शोषनाशक है ॥

अन्यच्च ।

कस्तूरिकातुचक्षुष्याकटीतिक्तासुगंधिका ।
उष्णाशुक्रप्रदागुर्वीवृष्याक्षाररसायनी ॥
किलासकुष्ठमुखरुक्कफदौर्गन्ध्यनाशिनी ।
अलक्ष्मीमलवाततृट्छर्दिशोषविषापहा ॥
शीतश्चकासरोगश्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-कस्तूरी-नेत्रोंको हितकारी, चरपरी, कडवी, सुगंधित. गरम. शुक्रजनक, भारी, वृष्य, क्षार, रसायन तथा किलास. कोढ. मुखरोग. कफ, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी, मल, वात. तृषा. छर्दि शोष, विष, खांसी और शीतका नाश करैहै ॥

विवरण। कस्तूरी हिरनकी नाभिमें होती है. उस हिरनको मारकर उसकी नाभिको काटलेते हैं, उसको कस्तूरीका नाभा कहते हैं, वह नाभा तोल में तीन ३ तथा चार ४ तोलेका होताहै और उसका आकार गोल होताहै उसके ऊपर छोटे छोटे बाल होते हैं, रंग भूरा होताहै, एक ओरसे कटेहुएका चिह्न होताहै, देखनेमें आडूकी बराबर होताहै, उस नाभेको चीरकर कस्तूरी निकालते हैं, किसीमें मक्काके चूनकी समान निकलतीहै, किसीमें तिलके समान निकलती है, किसीमें कुल्थीके बीजके समान निकलतीहै, किसीमें

मटरके दानेके समान निकलतीहै, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल और कामरूदेशमें होतेहैं।

गंधमार्जारवीर्यं (जवादिकस्तूरी अर्थात्गौरासार व वेदअंजीर)

माार्जारीवान्तिमाद्यंतेचक्षुष्याकफवातजित् ॥

(मदनपालनि०)

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य-वान्तिको उत्पन्न करे है, नेत्रोंको हितकारीहै और कफ वातको जीतेहै ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यंतुवीर्यकृत्कफवातहृत् ।
कण्डूकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धिस्वेदगंधनुत् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य-वीर्यको उत्पन्न करेहै,कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढको दूर करेहै,नेत्रोंको हितकारी, सुगंधित और पसीनेकी वासको हरेहै ॥

अन्यच्च ।

ओतूद्भवाकस्तुरिकाचक्षुष्योष्णासुखावहा ॥
सुगंधिकाचसुस्निग्धावातेशस्ताचवान्तिदा ॥
शुक्रवृद्धिकरीवृष्याअङ्गकांतिकरीमता ॥
कण्डूकिटिभकुष्ठञ्चघर्मगंधंविषंतथा ॥
कण्ठरोगञ्चकुष्ठञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गन्धमार्जारवीर्य-नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक, सुगन्धित, वात रोगमें हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्द्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गंध, विष, कण्ठरोग और कोढ़का नाश करनेवाली है ।

लताकस्तूरीगुणाः ।

लताकस्तूरिकास्वादुर्वृष्याशीतालघुःस्मृता ॥
नेत्र्यातिक्ताछेदनीचतीक्ष्णावस्तिविशोधिनी ॥
वस्तिरोगंकफंतृष्णांमुखरोगञ्चनाशयेत् ।

लालास्रावंवमिंवातंदौर्गंध्यंचमदंजयेत् ॥
अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेद्देशेचदक्षिणे ॥ नि० र०)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुष्कदाना) स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण वस्तिशुद्धिकरनेवाली तथा वस्तिरोग, कफ, तृषा, मुखरोग, लालास्राव, वान्ति, वात, दुर्गंध, मद और अलक्ष्मीका नाश करनेवाली है ॥

अपिच ।

लताकस्तूरिकातिक्ताहृद्याशीतास्यरोगनुत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लताकस्तूरी-(मुष्कदाना) कडवी, हृदयको हितकारी, शीतल और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण । लताकस्तूरीकी वेल दक्षिणदेशमें होतीहै, ऐसा निघण्टुरत्नाकरमें लिखाहै । किन्तु कहीं देखनेमें नहीं आती, संस्कृतमें लताकस्तूरी और दक्षिणदेशजा कहते हैं । हिंदी भाषामें लताकस्तूरी और मुष्कदाना कहते हैं । बङ्ग, गुर्जर, महाराष्ट्र, कर्णाटकादि देशोंमें लताकस्तूरीही नामसे प्रसिद्ध है । तैलङ्ग देशमें तक्कोल कलमु कहतेहैं । तामिलदेशमें कठेकस्तूरी कहते हैं । द्राविडदेशमें कस्तूरवेण्ड कहते हैं ।

व्यवहार-बीज मात्रा सात मासेकी ।

कुंकुमनामानि ।

काश्मीरजंकुङ्कुमञ्चबाह्लिकंशोणिताह्वयम् ॥
कुसुमात्मकसंकोचंपीतनंरक्तचंदनम् ॥ (केचित्)

अर्थ-काश्मीरज, कुंकुम, बाह्लीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, सङ्कोच, पीतन, रक्तचन्दन, (पीतक, घस्र, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिशुन, हरिचंदन, खल, रज, दीपक, लोहित, सौभर, चन्दन, कश्मीरजन्म, अग्निशिख, वर, रक्त, पिशुन, वीर, लोहित, चंदन, चारु, कश्मीरजन्म, बाह्लीक, वरबाह्लीक, अग्निशेखर, असृक्, काश्मीर, रुचिर, शठ, शोणित, घुसृण, वरेण्य, अरुण, कालेयक, जागुड, कान्त, वह्निशिख, केसर, गौर, केशर, धीर, अस्र, रुधिर,) ॥

हिन्दीभाषामें	केसर.
वङ्गभाषामें	कुंकुम-केशर.
मराठीमें	केशर.

गुजरातीमें	केसर.	
कर्णाटकीमें	कुंकुम.	
तैलङ्गीमें	कुंकुमपुवु.	
अंग्रेजीमें	सेफ्रन्	Saffron
लैटिन्में	क्रोकस्सेटिवस्	Crocussativios.
द्राविडीमें	कुंकुमपूव	Cracistimata
फारसीमें	लरकीमास.	
अरबीमें	जाफरान.	

कुङ्कुमभेदाः ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् ।
सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातंकुङ्कुमंपाण्डुरंभवेत् ।
केतकीगन्धयुक्तंतन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम् ॥
कुङ्कुमंपारसीकेयंमधुगन्धितदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमें उत्पन्न होनेवाली बाह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होनेवाली और पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होनेवाली । जो केशर काश्मीरके खेतोंमें उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे युक्त कुछेक ललाई लिये और कमलकी सदृश सुगंधियुक्त होतीहै, यह सब केशरोंमें श्रेष्ठ है ॥ जो केशर बाह्लीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होतीहै, वह पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगंधीयुक्त होतीहै, और सूक्ष्मभी होतीहै यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होतीहै, वह मधुकी गन्धयुक्त, कुछेक पीली और बडे केशवाली होतीहै, उसको अधमकेशर जानना ।

कुङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदिमर्दनात्कर्णिकात्मकम् ।
स्थिररागंकरेलग्नंभग्नंकुङ्कुमसुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीरंगरंपाण्डुरकेशरम् ॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-जिसमें अप्रगट लाली हो, और सुगंधवाली हो, तथा मलनेसे कर्णिकाकी समान हाथमें लगकर उसका रंग स्थिर रहे, वह केशर उत्तम है और जो केशर अग्निके रंगकी समान, विषयुक्त, पीले रंगकी केशरसे युक्तहो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुङ्कुमगुणाः ।

कङ्कुमंसुरभितिक्तकटूष्णंकासवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।
मूर्द्धशूलविषदोषनाशनंरोचनंचतनुकान्तिकारकम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-केशर-सुगंधित, कडवी, चरपरी, गरम, रोचक, शरीरकी शोभा बढानेवाली, तथा कास, वात, कंठरोग, मस्तकपीडा और विषके विकारोंका नाश करे है ॥

अपिच ।

कुङ्कुमंकटुकंस्निग्धंशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमिनाशक है, कड़वी है, वमनको हरेहै, शरीरके रंगको सुंदर करेहै, व्यङ्ग अर्थात् झांई और त्रिदोषका नाश करेहै ॥

अन्यच्च ।

कुङ्कुमं रेचकंप्रोक्तंकण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् दस्त करानेवाली है, तथा खुजली और विवर्णताको दूरकरे है ॥

अपिच ।

कुंकुमंकटुकंसिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णंहास्यकरंबल्यंव्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम, हँसीको करनेवाली, बलको उत्पन्न करनेवाली तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण, कृमि, व्यंग और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुंकुमंतीक्ष्णमुष्णञ्चप्रियंवर्ण्यंसुगन्धिकम् ।
कटूष्णंकफवातघ्नंत्वग्दोषस्वेदपित्तजित् ॥ (केचित्)

अर्थ-केशर-तीक्ष्ण, गरम, प्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वैद्यक चिकित्साकी अपेक्षा ईरानी चिकित्सामें अधिक वर्त्तावमें आती है ।

तैलादि सुगन्ध और रंगके लिये अधिकतासे काममें लीजाती है । ईरान देशमें इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होताहै, आनन्दपूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरायुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलियें अंचलमें बाँध रखतीहै ।

होमियोपैथिकके मतसे रजसंबंधीय रोगोंमें इसका प्रयोग देखा जाता है।

मात्रा चार रत्तीकी ।

तृणकुङ्कुमनामानि ।

तृणकुंकुमंतृणास्रंगन्धितृणंशोणितञ्चतृणपुष्पम् ।
गन्धाधिकंतृणोत्थंतृणगौरंलोहितञ्चनवसंज्ञम् ॥

अर्थ-तृणकुंकुम, तृणास्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्यगुणाः ।

तृणकुंकुमंकटूष्णंकफमारुतशोफनुत् ।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नंभास्करंपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तृणकेशर-चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सूजन, कण्डू, पामा, कोढ और आमको दूर करेहै और दीप्ति करेहै ॥

चन्दननामानि ।

श्रीखंडंचन्द्रकान्तञ्चगोशीर्षंभोगिवल्लभम् ।
भद्रसारंमलयजंगन्धसारञ्चचन्दनम् ॥

अर्थ-श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष, भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्धसार, चन्दन, (भद्रश्री, एकांग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, ग्राम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक, चन्द्रद्युति, भद्रश्रिय, सिताहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य) ॥

(क) (ख)


चंदन


लालचंदन.

हिन्दीभाषामें द्राविडमे	चंदन.	
वंगला-मराठी-तैलङ्गीमें	चंदन.	
कर्णाटकीभाषामें	गन्ध.	
गुजरातीभाषामें	सुखड.	
अँग्रेजीभाषामें	सेंडल वुड्	Saudal wood
लेटिन्भाषामें	सेन्टेलम्-आलबुम्	Santalum album
फारसीभाषामें	संदल सुफेद.	
अरबीभाषामें	संदले अबीयद	

चन्दनलक्षणम् ।

स्वादेतिक्तंकषेपीतंछेदेरक्ततनौसितम् ।
ग्रंथिकोटरसंयुक्तंचन्दनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-स्वादमें कडवा हो, घिसनेमें पीलाहो, तोडनेमें लाल हो, देखनेमें श्वेतहो, और गांठ तथा कोटर करके संयुक्त हो, ऐसा चन्दन श्रेष्ठ होता है ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनंशीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु ।
हृद्यंवर्ण्यंविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥
(मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-चंदन-शीतल, रूक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको हितकारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त और दाहको दूर करे है ॥

अपिच ।

श्रीखण्डोयंद्वितीयःस्यादतिशीतश्चतिक्तकः ।
दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥
रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नःकासांश्चैवविनाशयेत् ॥
(गणनिघण्टु)

अर्थ-दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चंदन, अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, पित्त, ज्वर, छर्दि, मोह और तृषाको दूर करेहै ॥ तथा रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और खांसीका विनाश करेहै ॥



चंदन. (सफेत)

अन्यच्च ।

श्रीखण्डःकटुकस्तिक्तोवृष्यःशीतकषायकः ।
कान्तिकृत्कामजनकोहृद्यश्चसुरभिर्मतः ॥
आह्लादनोलघूरूक्षःपित्तभ्रान्तज्वरापहः ।
छर्दितृट्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः ॥
मुखरोगंरक्तदोषंशोपञ्चैवविनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-श्रीखण्ड चंदन-चरपरा, कड़वा, वीर्यजनक, शीतल, कषेला, कान्तिदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, आल्हादजनक, हलका, रूखा तथा पित्त, भ्रम, ज्वर, वान्ति, पियास, कृमि, सन्ताप, दाह, श्रम, मुखरोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे है ॥

चन्दनभेदाः ।

चन्दनंद्विविधंप्रोक्तंवेट्टसुक्कडिसंज्ञिकम् ।
वेट्टन्तुसार्द्रविस्फोटंस्वयंशुष्कंतुसुक्कडि ॥

अर्थ-चंदन, वेट्ट और सुक्कडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां गीला और छिद्ररहित वेट्ट चंदन है और स्वयं शुष्क सुक्कडि है ।

मलयाद्रिसमीपस्थाःपर्वतावेट्टसंज्ञिकाः ।
तज्जातंचंदनंयत्तुवेट्टवाच्यंक्वचिन्मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वतहैं, उनको वेट्ट कहते हैं उन वेट्ट नामवाले पहाडोंमें चंदन उत्पन्न होता है, इसी कारण किसीके मतसे वह चंदन वेट्ट नामवाला कहलाता है ।

वेट्टचन्दनगुणाः ।

वेट्टचंदनमतीवशीतलंदाहपित्तशमनंज्वरापहम् ।
छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनंचतिक्तकम् ॥
(नि० र०)

अर्थ-वेट्ट चंदन-अत्यन्त शीतल है, तथा दाह, पित्त, ज्वर, वमन, मोह, तृषा, कुष्ठ, तिमिररोग, खांसी और रक्त रोगको दूर करेहै, और कडवा है।

सुक्कडिचन्दनगुणाः ।

सुक्कडिश्चंदनंतिक्तंकृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यंसुगंधिदंचार्द्रंशुष्कंलेपेतदन्यथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-सुक्कडि चंदन-कडवा तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको दूरकरे है शीतल और सुगंधिदायक है । यह गुण गीले चंदनके हैं और सूखे चंदनके गुण और प्रकारके हैं ।

शम्बरचन्दननामानि ।

कैरातंबहलगन्धंबल्यंशम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ--कैरात, वहलगन्ध, वल्य, शम्वर, चंदन, (गंधकाष्ठ, कैरातक, शैलगन्ध) ।

शम्बरचन्दनगुणाः ।

कैरातकंशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलघ्नंश्रमपित्तहारि ।
विस्फोटपामादिकनाशनंचतृषापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ--शम्वरचंदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है ।

पीतचन्दननामानि ।

नारायणप्रियं पीतं पीताभं हरिचन्दनम् ।
कालीयकं पीतकाष्ठं जायकं कांतिदायकम् ॥

अर्थ--नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जावक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हिं० कलम्वक, पीलाचंदन । वं० कलम्बा । लैटिन्में० सेन्टेलम् फ्लवं ।

अस्य गुणाः ।

पीतश्चचंदनःशीतस्तिक्तःकांतिकरोमतः ।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविषापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ--पीलाचंदन--शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका, कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु, विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर और दाहको दूर करे है ।

रक्तचन्दननामानि ।

ताम्राभंताम्रसारंचरञ्जनंरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारंताम्रसारंरक्तबीजंकुचन्दनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ--ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचंदन, रक्तसार, ताम्रसार, रक्तवीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चंदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, क्षुद्रचंदन, अर्कचंदन, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग, पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

हिन्दीभाषामें	लाल चंदन.
बंगभाषामें	रक्तचंदन.
मराठीभाषामें	रक्तचन्दन.
गुजरातीभाषामें	रतांजली.
कर्णाटकीभाषामें	रक्तचन्दन.
तैलङ्गीभाषामें	एर्रगन्धपुचेक्क-रक्तचन्दनम्
तामिलीभाषामें	सेन् शाण्डनम्
अँग्रेजीभाषामें	रेडसांडलवुड् Redsandal wood
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पससेन्टेलम् Teracarpus Santalum.
फारसीभाषामें	संदले सुर्ख.
अरबीभाषामें	संदलेअहमर.

अस्यगुणाः ।

रक्तचन्दनमतीवशीतलंतिक्तलक्षणगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकाससंज्वरभ्रांतिजंतुवमथुतृषापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचंदन-अत्यन्त शीतल, कडवा, रक्तरोगनाशक, वात, पित्त, कफ, कासज्वर, भ्रान्ति, कृमि, वमन और तृषाको शान्त करे है ।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यंचक्षुष्यंरक्तचन्दनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालचंदन-रक्तपित्तनाशक, बलकारक और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-लाल चंदन-शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, तृष्णाको शान्त करनेवाला, कड़वा, नेत्रोंको हितकारी, वीर्यजनक तथा ज्वर, व्रण और विषको दूर करे है ।

पतङ्गनामानि ।

पतङ्गंरक्तसारञ्चसुरङ्गंरञ्जनंतथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरञ्चकुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग, रञ्जन, पट्टरञ्जक, पत्तूर, कुचन्दन, (पत्राङ्ग,

रक्तकाष्ठ, सुरङ्गद, पत्राण्य, पट्टरङ्ग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरङ्गकाष्ठ, रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी—पतङ्ग, पतङ्गवृक्ष।

बंगला—	बकम् काष्ठ।
तैलङ्गीमें—	औकनु कट्टु।
तामिलीमें—	वट्टङ्गी।
इंग्रेजीमें—	सेप्पनवुड्। Sappan wood
लैटिनमें—	सिसालपिनियासेप्पन्। Coesalpinia Sappan
फारसी—अरबीमें—	बकम्।

पतङ्गगुणाः।

पत्राङ्गंकटुकंरूक्षंमालंशीतंतुगौल्यकम्।
वातपित्तज्वरघ्नंचविस्फोटोन्मादभूतहृत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—पतंग—चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है॥

अपिच।

पत्राङ्गस्तिक्तकःशीतोरूक्षोम्लोमधुरःकटुः।
व्रणशुद्धिकरोवर्ण्यःसुगन्धिर्वातपित्तहृत्॥
उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत्।
कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारणः॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ—पतङ्ग—कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रणशोधक, वर्ण कारक, सुगंन्धि तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतबाधाको दूर करे है॥

अपिच।

हरिचन्दनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पतङ्गके गुण और पीले चंदनके गुण समान जानने किन्तु विशेष करके दाहको दूर करे है।

बर्बरचन्दननामानि।

बर्बरोत्थंबर्बरकंश्वेतबर्बरकंतथा।
शीतंसुगन्धिपित्तारिःसुरभिश्चेतिसप्तधा।

अर्थ-वर्वरोत्थ, वर्वरक, श्वेतवर्वरक, शीत, सुगन्धि, पित्तारि, सुरभि, (वर्वरोद्भव)

वर्वरगुणाः ।

वर्वरंशीतलंतिक्तंकफमारुतपित्तजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिविशेषाद्रक्तदोषजित् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वर्वरचन्दन-शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, पित्त, कुष्ठ. कण्डू और व्रणनाशक है । विशेषकरके रुधिर विकारको दूर करैहै ।

हरिचन्दननामानि ।

हरिचन्दनंसुरार्हं हरिगन्धंचन्द्रचंदनंदिव्यम् ।
दिविजंचमहागन्धंनन्दनजंलोहितजंनवसंज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध. चन्द्रचंदन, दिव्य, दिविज, महागन्ध, नन्दनज, लोहितज ।

हरिचन्दनगुणाः ।

हरिचन्दनंतुदिव्यंतिक्तहिमंतदिहदुर्लभंमनुजैः ।
पित्ताटोपविलेपिचन्दनवच्छ्रमहरंचशोषहरम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ-हरिचन्दन-दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त. आटोप, भ्रम [वमन, मन्दाग्नि, मेदोदोष] नाशक है ॥ और सामान्य चंदनकी समान, श्रम तथा शोषको दूरकरै है । यह चन्दन मनुष्योंको मिलना दुर्लभ है ।

चन्दनानिसमानानिरसतोवीर्यतस्तथा ।
भिद्यन्तेकिन्तुगन्धेनतत्राद्यंगुणवत्तरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सर्वप्रकारके चन्दन रस और वीर्यमें समान हैं । किन्तु आदिका अर्थात् श्रीखण्ड चंदन सब चंदनोंकी अपेक्षा सुगन्धिमें अधिक गुणवाला है;

विवरण-चन्दनकी अनेक जाति हैं, सफेतचंदन १ पीलाचन्दन २ शवर चन्दन ३ लालचंदन ४ पतंगचन्दन ५ वर्वरचन्दन ६ और हरिचंदन ७ । इन सात जातिके चंदनोंमें सफेद चंदन सर्वोत्कृष्ट है ।

अगरुनामानि ।



अगरुक्रिमिजंलोहंराजार्हंवंशिकंलघु ।
लोहाख्यंजोङ्गकञ्चापिकृष्णंवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अगरु, कृमिज, लोह, राजार्ह, वंशिक, लघु, लोहाख्य, जोङ्गक, कृष्ण, वर्णप्रसादन, (कृमिज, अगरु, वंशक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, अनार्यज, असार, अग्निकाष्ठ, कृमिन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज) हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तामिली इत्यादि सब भाषाओंमें "अगर" नामसेही प्रसिद्ध है ।

तेलङ्गीभाषामें	हरुगुहचेट्टु ।	
इंग्रेजीभाषामें	इगल्वुड ।	Eagle wood
लेटिन्भाषामें	एक्वीलेरिया । एगेलोका ।	Aquilaria Agallocha
अरबीभाषामें	उदगरकी ।	
फारसीभाषामें	कशवेववा ।	

अगुरुगुणाः ।

अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णंचपित्तलम् ।
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगर-गरम, चरपरी, त्वचाको हितकारक, कडवी, तीक्ष्ण, पित्तजनक, हलकी तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

अगुरुस्तुसुगंधिःस्यादुष्णस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
स्निग्धोमंगलदोरुच्योधूपयोग्यश्चपित्तलः ॥
तीक्ष्णोवातकफौहन्तिकर्णनेत्ररुजापहः ॥
कुष्ठनाशकरःप्रोक्तोलेपेचोद्वर्त्तनेशुभः ॥ (नि० र०)

अर्थ-अगर-सुगंधि, गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगलदायक, रुचिकारी, धूपके योग्य, पित्तजनक, तीक्ष्ण तथा वात, कफ, कर्णरोग और कोढका नाश करैहै । लेपमें और लगानेमें श्रेष्ठ है ।

अगरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः ।

अर्थ-अगरका तेल कृष्णागुरुके समान गुणवाला है ।

कृष्णागरुनामानि ।

कृष्णागरुस्याद्वसुकंमंगल्यंविश्वरूपकम् ॥

अर्थ-कृष्णागरु-वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक, (काकतुण्ड, अगरु, शृङ्गारशीर्ष, कालागरु, केश्य, कृशाकाष्ठ, धूपार्ह, वल्लर, मिश्रवर्ण, गन्ध, राजार्ह, शीतमलिन, जोंगक, कृमिजग्ध और अलक्तक)

कृष्णागरुगुणाः ।

कृष्णागरुकटुष्णञ्चतिक्तंलेपेचशीतलम् ।
पानेपित्तहरंकैश्चित्रिदोषघ्नमुदाहृतम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालागरु-कटु, उष्ण, कडवी, लेपमें शीतल, पीनेमें पित्तनाशक और किसीके मतसे त्रिदोषनाशक है ।

काष्ठागरुगुणाः ।

काष्ठागरुकटुष्णञ्चलेपेरूक्षंकफापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काष्ठागरु, चरपरी, गरम, लेपमें रूखी और कफनाशक है ।

दाहागरुनामानि ।

दाहागरुदहनागरुदाहककाष्ठञ्चवह्निकाष्ठञ्च ।
धूपागरुतैलागरुपुरञ्चपुरमथनवल्लभंचैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु, पुर और पुरमथनवल्लभ ।

दाहागरुगुणाः ।

दाहागरुकटुकोष्णंकेशानांवर्द्धनञ्चवर्ण्यञ्च ।
अपनयतिकेशदोषानातनुतेसंततञ्चसौगन्ध्यम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु-चरपरी, गरम, केशवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, केशोंके दोषोंको हरनेवाली और निरन्तर सुगंधिदायक है ।

मङ्गलागरुनामानि ।

मङ्गल्यामल्लिकागन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ-मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितने अगरके नामहैं, सब इसके भी जानने ।

मङ्गलागरुगुणाः ।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मङ्गलागरु-शीतल, गन्धवाली और योगवाही है ।

विवरण । आसामके पहाडी जंगल और प्रशांत सागरके टापुओंमें इसका वृक्ष होता है, शाखा कभी सीधी उत्पन्न नहीं होती ।

अगर अनेक प्रकारकी होतीहै, उनमें काली अगरही उत्तम और वैद्यकमें कहीहुई औषधियोंके साथ व्यवहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमें डूबजातीहै और नरम ऐसी होतीहै कि, दांतोंमें रखकर खानेसे चिपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै, काली अगरकी समान और अगरोंमें ऐसी सुगन्धि नहीं आती ॥

व्यवहार । इसका झांदरा अनेक प्रकारके तेलोंमें व्यवहार किया जाताहै और इसके वृक्षका गोंद वातरोगमें लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम में लातेहैं ।

देवदारुनामानि ।

सुरदारुद्रुकिलिमंभद्रदारुसुराह्वयम् ।

देवकाष्ठञ्चपित्तद्रुदेवदारुचभद्रवत् ॥

अर्थ-सुरदारु, द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुराह्वय, देवकाष्ठ, पित्तद्रु, देवदारु, भद्रवत्,(शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ, कल्पपादप, किलिम, दारुक, स्निग्धदारु, अमरदारु, शिवदारु, शाम्भव, भूतहारि, भवदारु, शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, सुराह्वय, दारुभद्र, इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुरभूरुह, स्नेहवृक्ष, सुरद्रुम, सुरदारु और सुरकाष्ठ)

हिन्दीभाषामें	देवदारु।
वङ्गभाषामें	देवदारु।
मराठीभाषामें	तेल्यादेवदारु।
गुजरातीभाषामें	देवदार।
कर्णाटकीभाषामें	चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु।
तैलङ्गीभाषामें	देवदारुचेका।
लैटिनभाषामें	सिड्रसदेवडोरा Cedrus Deodara
फारसीभाषामें	देवदार।
अरबीभाषामें	शजर तुलजीन।
इंग्रेजीभाषामें	पाइन्सडीपोदर।

देवदारुगुणाः।

देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-देवदारु-हलका, स्निग्ध, कडवा, गरम, पचनमें चरपरा, तथा विवन्ध, अफारा, शोथ, आम, तन्द्रा, हुचकी, ज्वर, रक्तविकार, प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी कण्डू और वातनाश करनेवालाहै।

देवदारुभेदाः।

देवदारुद्विधाज्ञेयंतत्राद्यंस्निग्धदारुकम्।
द्वितीयंकाष्ठदारुस्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः॥ (निरुक्तरत्नाकर)

अर्थ-देवदारु दो प्रकारका है, पहिला स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठदारु।

स्निग्धदारुगुणाः।

स्निग्धदारुःकटुःपाकेस्निग्धोष्णस्तिक्तकोलघुः।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥
ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डूविनाशकः ।
हिक्कांतंद्रांरक्तदोषंपीनसंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-स्निग्धदेवदारु-पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कडवा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, बवासीर; मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा, श्वास, खांसी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर करैहै ।

काष्ठदारुगुणाः ।

देवकाष्ठंमतंचोष्णंतिक्तंरूक्षंकफापहम् ।
वातंचभूतबाधांचलेपाद्व्यङ्गविनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काष्ठदारु-गरम, कडवा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूतबाधाको दूर करैहै । इसका लेप करनेसे व्यङ्ग (झाई) दोष दूर होताहै ।

विवरण-बडा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें तेलकेसमान चिकनाईसी होतीहै, दूसरेमें रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारपंचांग)

चीडानामानि ।

चीडाचदारुगन्धागन्धवधूर्गंधमादनीतरुणी ।
ताराचभूतमारीमङ्गल्याख्याकपाटिनीग्रहजित् ॥
(राजनिघंटु)

अर्थ-चीडा-दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित् ।

चीडागुणाः ।

चीडाकटूष्णाकासघ्नीकफजिद्दीपनीपरा ।
अत्यन्तंसेवितासातुपित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चीड-गरम, कासनाशक, चरपरी, कफको दूर करे, अग्निको दीपन करे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होताहै ।

सरलनामानि ।

सरलःपूतिकाष्ठञ्चमनोज्ञोधूपवृक्षकः ।

अर्थ-सरल, पूतिकाष्ठ, मनोज्ञ, धूपवृक्षक, (पीतद्रु, धूपवृक्षक, पीतदारु,

भद्रदारु, धूपवृक्ष, पीत, स्निग्धदारुसंज्ञक, स्निग्ध, मरिचपत्रक, पीतवृक्ष, सुरभिदारुक)

हिन्दीभाषामें	धूपसरल ।
वङ्गभाषामें	सरलगाछ, तार्पिनतैलेरगाछ, सरलकाष्ठ ।
कर्णाटकीभाषामें	सरलीदेवदारुविशेष ।
तैलङ्गीभाषामें	सरलदेवदरि चेट्टु ।
तामिलभाषामें	सरलदेवदारी ।
गुजरातीभाषामें	सरलदेवदार ।
मराठीभाषामें	सरलदेवदार ।
इंग्रेजीभाषामें	लोंग लिवु पाईन । Long leved pine
लैटिनभाषामें	पाईनस-लोंगि फोलिया । Pinus longifolia

सरलगुणाः ।

सरलोमधुरस्तिक्तःकटुपाकरसोलघुः ।
स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः ॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सरल-मधुर, तिक्त, पाक और रसमें कटु, हलका, स्निग्ध, उष्ण तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, नेत्ररोग, कफ, वात, पसीना, दाह, कास, मूर्च्छा और व्रणको दूर करैहै ।

अपिच ।

सरलःकटुतिक्तोष्णःकफवातविनाशनः ।
त्वग्दोषशोफकण्डूतिव्रणघ्नःकोष्ठशुद्धिदः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, कफ वात नाशक, तथा त्वचाके रोग, सूजन, कण्डू और व्रणका, नाश करैहै । और कोठेको शुद्ध करैहै ।

अन्यच्च ।

सरलःकटुतिक्तोष्णोरूक्षःश्लेष्मानिलापहः ।
भूतदोषापहोरक्तोलिप्तोङ्गेषुसुकांतिदः ॥ (क्वचित्)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, रूक्ष तथा कफ, वात, भूतबाधा और रक्तविकारको दूर करैहै । इसका शरीरमें लेप करनेसे कान्ति बढतीहै ।

अपिच ।

सरलोमधुरस्तिक्तोरसेपाकेकटुर्लघुः ।
स्निग्धश्चोष्णःकर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशनः ॥
कफंवातञ्चयूकाञ्चकासंस्वेदंव्रणंतथा ।
रक्षोबाधामलक्ष्मींचनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सरल-मधुर, कडवा, रसमें तथा पाकमें चरपरा, हलका, स्निग्ध, गरम तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूएँ, खांसी, पसीना, घाव, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै।

विवरण । इसका बडा वृक्ष हिमालयमें होताहै, उसके भीतरसे गोंदकी समान रस निकलताहै, उसको चंद्ररस कहतेहैं ।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यंतगरंकुटिलंलघुषंनतम् ।
अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तिचबर्हणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुष, नत । (जिह्म, दीपन, कालानुसारिवा, वक्र, कुञ्चिन, चक्र, शठ, महोरग, दीपन, तगर, पादिक, विनम्र, नहुषाख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह हैं । पिण्डतगर, दण्ड, हस्ति, बर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, कालानुसारक, क्षत्र)

हिन्दीभाषामें	तगर ।
वङ्गभाषामें	तगरपादुका ।
मराठीभाषामें	गोडेतगर ।
गुजरातीभाषामें	तगर ।
कर्णाटकीभाषामें	तगर ।
तैलङ्गीभाषामें	गन्धितगरपु चेट्टु, नंदिवर्द्धनचेट्टु ।
उत	पाणिफलरा ।
नेपालीभाषामें	चम्मा ।
लैटिनभाषामें वेलिरीआना ।	हार्डविकिआई । Vreleriana Hardwicitrii
अरवीभाषामें	अशारुन ।

तगरगुणाः ।

तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम् ।

विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-दोनों प्रकारकी तगर-गरम, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, हलकी तथा विष, अपस्मार, शिरोरोग, नेत्ररोग और त्रिदोषको दूर करेहै ।

अपिच ।

तगरंशीतलंतिक्तंदृष्टिदोषविनाशनम् ।
विषार्तिशमनंपथ्यंभूतोन्मादभयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तगर, शीतल, कडवी, दृष्टिके विकारको दूर करे, विषके विकारकी शान्ति करे, पथ्य तथा भूतोन्माद और भयनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

तगरंकुष्ठजित्प्रोक्तंदृक्छीर्षव्याधिजिल्लघु ॥ (शो० नि०)

अर्थ-तगर-कोढ, नेत्ररोग और मस्तकरोगको दूर करे, तथा हलकी है।

अपिच ।

तगरंशीतलंपथ्यंतिक्तंमधुलघुस्मृतम् ।
स्निग्धंपाकेचकटुकंतुवरंविषनाशकम् ॥
नेत्रमस्तकरोगंचरक्तदोषंत्रिदोषकम् ।
भूतोन्मादमपस्मारंभूतबाधांचनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तगर-शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कषेली, विषनाशक, तथा नेत्ररोग, मस्तकरोग, रुधिरविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद, मृगी और भूतबाधाको दूर करे है ।

पद्मकनामानि ।

पद्मकंमलयश्चारुःपीतरक्तश्चसुप्रभः । (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ, (पीत, पीतक, मालेय, शीतल, हिम, शुभ, केदारज, रक्त, पाटलापुत्रसन्निभ, पद्मवृक्ष, पद्मगन्धि, पद्माह्वय, पद्मकाष्ठ, कैदार, शीतवीर्य, पाटलापुष्पवर्णक)

हिन्दीभाषामें	पद्माक (ख)
वंगभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
मराठीभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	पद्मकतुलाकड्डुं ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्मक ।

तैलङ्गीभाषामें पद्मपुचेका । (एणुगुसहदेवि)
लैटिनभाषामें प्रनसपदम । (Prunus Padam)

पद्मकगुणाः ।

पद्मकंशीतलंतिक्तंरक्तपित्तविनाशनम् ।
मोहदाहज्वरभ्रांतिकुष्ठविस्फोटशांतिकृत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—पद्मक—शीतल, कडवा, रक्तपित्तनाशक तथा मोह, दाह, ज्वर, भ्रान्ति कोढ और विस्फोटकको दूर करैहै ॥

अपिच ।

पद्मकंतुवरंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ।
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनंरुच्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत् ॥

अर्थ—पद्मक—कषेला, कडवा, शीतल, वादी, हलका, तथा विसर्प, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ और रक्तपित्तका नाश करैहै, गर्भको स्थापन करैहै, रुचिको उत्पन्न करैहै, वमन, घाव और पियासको दूर करैहै ।

विवरण । इसका वडा वृक्ष केदार और हिमालय पर्वतमें उत्पन्न होताहै, इसमें फल नहीं होते, इसकी लकडी औषधीमें लीजातीहै इसको घिसकर पीनेसे गर्भ न रहताहो तो गर्भ रहजाता है । और गर्भ गिरताहो तो स्थिर होजाता है ।

गुग्गुलुनामानि ।

गुग्गुलुःकालनिर्यासोमहिषाक्षःपलङ्कषः ।
जटायुःकौशिकोधूर्तोदेवधूपःशिवःपुरः ॥ (मदनविनोद)

अर्थ—गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलङ्कष, जटायु, कौशिक, धूर्त्त, देवधूप, शिव, पुर, (कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, कुम्भोलूखलक, गुग्गुलु, सर्वसह, उष, उलूखलक, कुम्भी, कुन्ती, उद्दीप्र, पवनाद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशाढक, जटाल, पुट, भूतहर, शाम्भव, दुर्ग) वायुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुद्विष्ट, रक्षोहा, पलङ्कषा, रूक्षगन्धक, दिव्य ।

हिन्दीभाषामें गूगल. (र.) भैंसागूगल ।
वंगभाषामें गुग्गुलु ।
गुजरातीभाषामें गुगुल । भैंसो गुगुल ।

मराठीभाषामें	म्हशागुगुळ. गुगुळ ।
कर्णाटकीभाषामें	इडवोल ।
तैलङ्गीभाषामें	गुग्गिलमुचेट्टुमहिषाक्षी ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन् डेलियम् । Endian Dellum
लैटिनभाषामें	वालसमेडिन्ड्रन एक्स बुर्घिआई । वालस मोडेड्रनमुकुल Walsams Raxburghi B. Makkul
फारसीभाषामें	बोएजहुदान ।
अरबीभाषामें	मुष्किलेअर्जक

गुग्गुलोःप्रकारभेदलक्षणगुणाः ।

महिषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि ।
हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः ॥
भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः ।
महानीलस्तुविज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।
कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपंचानांलिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ ।
हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥
विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः ।
कदाचिन्महिषाक्षश्चमतःकश्चिन्नृणामपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भेदोंसे गूगल पांच प्रकारका है । उनमें महिषाक्ष गूगल-भौंरेके रंगकी समान कोयले और अञ्जनके सदृश वर्णवाला होताहै । महानीलगूगल-अत्यन्त नीले रंगका होता है। कुमुद गूगल-कुमुदके फूलकी समान वर्णवाला होता है। पद्मगूगल-माणिकरत्नके समान लाल रंगका होताहै । हिरण्याक्षगूगल-हेमके समान रंगवाला होता है। महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी है, घोडोंको आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगूगल है और मनुष्योंके लिये हिरण्याक्ष गूगल अत्यन्त उपकारी है । कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि, मनुष्योंके लिये, कहीं कहीं महिषाक्ष गूगलभी हितकारी है ।

गुग्गुलुगुणाः ।

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्योष्णः पित्तलःसरः ।
कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघुःपरः ॥
भग्नसन्धानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः ।
दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिडकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ॥
माधुर्य्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्त्वेनगुग्गुलुःसर्वदोषहा ॥
सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धःकाञ्चनसंकाशःपक्वजम्बूफलोपमः ॥
नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः ।
शुष्कोदुर्गन्धकश्चैवत्यक्तःप्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणःसतुविज्ञेयोगुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः ।
अम्लंतीक्ष्णाम्लजीर्णंश्चव्यवायंश्रममातपम् ॥
मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः । (भा०प्र०)

अर्थ–गूगल–विशद, कडवा, उष्णवीर्य्य, पित्तजनक, दस्तावर, कषेला, पाकमें चरपरा, चपरा, रूखा, हलका, भग्नास्थिसंयोजक, वीर्य्य उत्पन्न करने वाला, सूक्ष्म, स्वरको शुद्ध करनेवाला, उत्तम रसायन, अग्निदीपक, पिच्छिल, बलकारक तथा कफ, वात, व्रण अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वातव्याधि, क्लेद, कोढ, आमवात, पिडका, ग्रन्थिरोग, सूजन, बवासीर, गण्डमाला और कृमिरोगका नाश करेहै ।

यह मधुररसयुक्त होनेसे वातको, कषायरसान्वित होनेसे पित्तको और तिक्तरसयुक्त होनेसे कफको नष्ट करेहै । इसकारण गूगल त्रिदोषनाशक है ।

नवीनगूगल–वीर्य्यजनक और बलकारक है । पुराना गूगल शरीरको अत्यन्त दुर्वलतादायक है । जो गूगल चिकना हो, सुवर्णके समान निर्मल हो,

सुगन्धित हो, पकी जामुनके समान स्वरूपवाला हो और पीला हो, ऐसा गूगल नवीन होताहै । पुराना गूगल, सूखा, दुर्गन्धवाला, स्वाभाविक वर्ण-हीन और वीर्यवर्जित होता है । गुणाभिलाषी गूगलको सेवन करनेवाले मनुष्य अम्ल (खटाई) तीक्ष्ण (मिरचादि) अजीर्ण-(कच्चे पदार्थ) मैथुन करना, परिश्रम करना, धूपमें फिरना, मदिरा पीना और क्रोधका करना इनको छोडदे ।

अस्योत्पत्तिः ।

जायन्तेपुरपादपामरुभुविग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः
शीतर्त्तौशिशिरेपिगुग्गुलरसंमुञ्चन्तितेपञ्चधा ।
हेमाभंमहिषाक्षितुल्यमपरंसत्पद्मरागोपमं
भृङ्गाभंकुमुदद्युतिंचविधिनाग्राह्यापरीक्षाततः (रा० नि०)

अर्थ-गूगलके वृक्ष मारवाडकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी गरमीसे संतापित हो, शीतऋतुमें सरदी पाकर उन वृक्षोंमेंसे पांच प्रकारका रस निकलताहै, १ सुवर्णवर्णवाला, दूसरा भैंसके नेत्रोंकी समान, तीसरा पद्मरागकी समान चौथा भौंरेकी सदृश काला और पांचवाँ कुमुदके फूलकी कान्तिके समान होताहै, इसी रसका नाम गूगल है । इसको लेकर उत्तम-विधिसे परीक्षा करनी ।

अस्य परीक्षा ।

वह्नौज्वलंतितपनेविलयंप्रयान्तिक्लिद्यंतिकोष्णसलिले
पयसःसमानाः ॥ ग्राह्याःशुभाःपरिहरेच्चिरकालजाता
न्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ (प्रयोगामृत)

अर्थ-जो आगमें गिरनेसे जलजाय, गरमीमें रखनेसे पिघलजाय, उष्ण जलमें डालनेसे गलकर जलके समान होजाय, ऐसा गूगल श्रेष्ठ होता है, इसीको औषधीके काममें लेना । और जो क्षारके समान रंगवाला हो, तथा जिसमें राधके समान गन्ध आती हो, पुराना हो, ऐसा गूगल कभी भी ग्रहण नहीं करना, इसका पूर्ण वीर्य्य तीन मासपर्यन्त रहताहै ।

अस्यशोधनविधिर्यथा ।

गुडूचीत्रिफलाक्वाथेक्षीरेचैवविशेषतः ।
पक्वाचखण्डशःशुद्धंगृह्णीयान्मृदुगुग्गुलम् ॥

अर्थ-गिलोय और त्रिफलेके काढेमें और विशेष करके दूधमें टुकडे करके पकाना चाहिये वह गूगल मृदु और शुद्ध होताहै, उसे ग्रहण करना चाहिये ।

अपिच ।

क्वाथेहिदशमूलस्यकोष्णेप्रक्षिप्यगुग्गुलम् ।
आलोड्यवस्त्रपूतं तं चण्डातपविशोषितम् ॥
घृताक्तंपिण्डितंकुर्य्याच्छुद्धिमायातिगुग्गुलुः । (आ०सं०)

अर्थ-किंचित् उष्ण दशमूलके काढेमें गूगल डालकर वस्त्रसे छानकर उसे मिलाकर तेज धूपमे सुखावै, फिर घीमें मिलाकर गोली करले तो गूगल शुद्ध होजाताहै ।

अन्यच्च ।

अमृतायाःकषायेणशोषयित्वाऽथगुग्गुलुम् ।
गृह्णीयादातपेशुष्कंतथाऽवकरवर्जितम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-गिलोयके रसमें गूगलको मिलाय धूपमें सुखाकर ग्रहण करले और धूलादिकसे रहित रक्खे ।

अन्यच्च ।

दुग्धेवात्रिफलाक्वाथेदोलायन्त्रेविपाचितः ।
वाससागालितोग्राह्यःसर्वकर्म्मसुगुग्गुलुः ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-दूधमें अथवा त्रिफलाके काढेमें रखकर दोलायन्त्रमें पचावे फिर कपडेसे छानकर ग्रहण करले, सर्व काममें इसप्रकार शोध करलेवे ।

विवरण-इसका वृक्ष रेतली और पर्वतीभूमिमें होताहै. पत्ते अनीरहित छोटे छोटे नीमके पत्तीके समान होतेहैं. फूल लालरंगका अतिसूक्ष्म पांच पखडीवाला मंजरीके बीचमें निकलताहै फल छोटे बेरकी समान और तीनधारवाला होताहै, इसके फलोको गूगलिया कहतेहैं, यह फल उदरकी पीडाको दूर करते हैं । इस वृक्षके गोंदकोही गूगल कहतेहैं । व्यवहारमें शुद्ध किया हुआ गूगल लेना ।

गन्धराजगुग्गुलुनामानि ।

गन्धराजःस्वर्णकणःसुवर्णःकणगुग्गुलुः ।
कनकोवंशपीतश्चसुरभिश्चपलङ्कषः ॥

अर्थ-गन्धराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुल, कनक, वंशपीत, सुरभि और पलङ्कष ।

गन्धराजगुग्गुलुगुणाः ।

कणगुग्गुलुःकटूष्णःसुरभिर्वातनाशनः ।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्चरसायनः ॥

अर्थ-कणगूगंल, चरपरा, गरम, सुगन्धि, वातनाशक तथा गुल्म, उदर-रोग आध्मान और कफको दूर करेहै और रसायन है ।

भूमिजगुग्गुलुनामानि ।

गुग्गुलुश्चतृतीयोन्यो भूमिजो दैत्यमेदजः ।
दुर्गाह्वोदाइडाजात आशादिपुरसम्भवः ।
मज्जाजोमेदजश्चैवमहिषासुरसम्भवः ॥

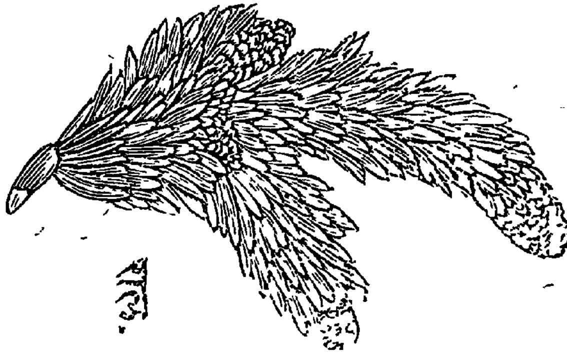
अर्थ-भूमिज गुग्गुलु, दैत्यमेदज, दुर्गाह्व, दाइडाजात, आशादिपुरसम्भव, मज्जाज, मेदज, महिषासुरसम्भव ।

अस्यगुणाः ।

गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तःकटूष्णःकफवातजित् ।
उमाप्रियश्चभूतघ्नोमेध्यःसौरभ्यदःसदा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भूमिजगूगल-कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, उमाको प्यारा, भूतका नाश करे, मेधाजनक और सदा सुगंधिदायक है ।

रालनामानि ।



रालस्तुसालनिर्यासस्तथासर्ज्जरसःस्मृतः ।
देवधूपोयक्षधूपोविरूपोवह्निवल्लभः ॥

अर्थ–राल–सालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप, विरूप, वह्निवल्लभ; (कलकल, काल, कलयज, सर्वरस, बहुरूप, धूपन, सालज, शालनिर्यास, सर्ज्य, धूनक, शालसार, शाल, शालवेष्ट, सालवेष्ट, अग्निवल्लभ, सर्ज्जमणि, साल, कलकलोद्भव, ललत, देवेष्टशीतल, सालरस, सुरभि, सर्जनिर्यासक, सुरधूप, कलकलल्लज, महारूप, क्षण और शालरस)

हिन्दीभाषामें	राल ।
वङ्गभाषामें	धूना-धूनो ।
मराठीभाषामें	राळ पिंवळी ।
गुजरातीभाषामें	राल ।
कर्णाटकीभाषामें	सर्ज्जरस ।
तैलिङ्गीभाषामें	सर्ज्जरसमु–सर्ज्ज ।
पंजाबीभाषामें	रालअर्छु ।
इंग्रेजीभाषामें	यल्लेरिझिन् । Yollew Risin
लैटिन्भाषामें	रिफिमाफ्लेवा । Risina Flena
फिरङ्गीभाषामें	नारुस ।
फारसीभाषामें	रालमगरेवी ।
अरबीभाषामें	किकहर

रालगुणाः ।

रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत् ।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ।
ग्रहभग्नाग्निदग्धांश्चशूलातीसारनाशनः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–राल–शीतल, भारी, कडवी, कषेली, ग्राही तथा रुधिरदोष, पसीना, वीसर्परोग, ज्वर, व्रण, विपादिका, ग्रह, भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल और अतिसारको दूरकरैहै ।

अपिच ।

रालस्तुशिशिरःस्निग्धःकषायस्तिक्तसंग्रहः ।
वातपित्तहरःस्फोटकण्डूतिव्रणनाशनः॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–राल–शीतल, स्निग्ध, कषेली, कडवी, संग्राही तथा वात, पित्त, स्फोट, कण्डू और व्रणनाशक है ।

अन्यच्च ।

सर्जनिर्यासकःशीतःस्निग्धश्चतुवरोगुरुः ।
ग्राहकःस्तम्भनस्तिक्तःस्वादुश्चव्रणरोपणः ॥
भग्नसन्धानकरणोमधुरोवातपित्तहा ।
त्रिदोषरक्तरुक्कण्डूविस्फोटव्रणशूलनुत् ॥
स्वेदज्वरविसर्पाणांग्रहबाधाविनाशनः ।
विपादिकाग्निदग्धस्यभूतबाधाविषस्यच ।
अतिसारस्यशमनऋषिभिःपरिकीर्तितः ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-राल-शीतल, चिकनी, कषेली, भारी, मलरोधक, स्तम्भन, कडवी, स्वादिष्ठ, व्रणरोपण, टूटी अस्थिको जोडनेवाली, मधुर तथा वातपित्त, त्रिदोष, रुधिरविकार, खुजली, विस्फोट, घाव, शूल, पसीना, ज्वर, विसर्प, ग्रहबाधा, विपादिका, अग्निदग्ध, भूतबाधा, विष और अतिसारको दूर करे है।

विवरण-रालका बडा वृक्ष होताहै, उसके गोंदको राल कहतेहैं, उसमें मिश्री मिलाकर खानेसे अतिसार दूर होताहै, इसके लेपसे और इसको पीनेसे प्रदररोग दूर होताहै । मात्रा सात रत्तीकी है ।

रालतैलगुणाः ।

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-रालका तेल-(तार्पिनतेल) विस्फोट, घाव, कोढ, पामा, क्रिमि, वात और कफका नाश करे है ।

कुन्दुरुनामानि ।

पालङ्क्याकुन्दुरुःकुन्दुःसौराष्ट्रीशिखरीवली ।

अर्थ-पालंक्या, कुन्दुरु, कुन्दु, सौराष्ट्री, शिखरीवली, (मुकुन्द, पालंकी, मुकुंदु, कुन्दु, कुन्दुर, तीक्ष्णगन्ध, कुन्दुरुक, कुन्दक, तीक्ष्णगोपुरक, बहुगन्ध, पालिन्द, भीषण, सुगन्ध, कुन्दारु, बिडालाक्ष, पालंक, खपुर, स्वाक्ष, नागवधूप्रिय और शल्लकीनिर्य्यास)

हिन्दीभाषामें कुन्दुरु । गुदवरोसा ।

वङ्गभाषामें	कुन्दुरुखोटी ।
मराठीभाषामें	अवलगुन्दर । सालईडीक ।
गुजरातीभाषामें	किन्दुरु, शेषगुन्दर ।
कर्णाटकीभाषामें	इडवोल ।
इंग्रेजीभाषामें	ओलिबेनम् । Olibanum
लैटिनभाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा, विस्टेशिया, टरैविथस् ।
फारसीभाषामें	कन्दुररूमी । खोटीमस्तकी ।
अरबीभाषामें	कुन्दुरेजकर । विस्तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	कुन्दुरुमु ।

कुन्दुरुगुणाः ।

कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यःकटुर्हरेत् ।
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानिलान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—कुन्दुरु—मधुर, कडवा, तीक्ष्ण, त्वचाको हितकारी, चरपरा तथा ज्वर, पसीना, ग्रहबाधा, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कुंदुरुर्मधुरस्तीक्ष्णस्तिक्तोरुच्यःकटुःस्मृतः ।
स्निग्धस्त्वच्यस्तथाचोष्णोज्वरस्वेदकफापहः ॥
रक्तरुक्प्रदरंवातमलक्ष्मींग्रहपीडनम् ।
रक्तातिसारंयूकाश्चनाशयेदितिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ—कुन्दुरु—मधुर, तीक्ष्ण, कडवा, रुचिकारक, चरपरा, स्निग्ध, त्वचाको हितकारक, गरम तथा ज्वर, पसीना, कफ, रक्तविकार, प्रदर, वायु, अलक्ष्मी, ग्रहबाधा, रक्तातिसार और जूओंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शर्करासहितंमेहंवृषणस्यव्यथांहरेत् । (शोढलनिघंटु)

अर्थ—कुन्दुरु-शर्करायुक्त प्रमेहरोग और अण्डकोषोंकी पीडाको दूर करेहै ।

विवरण—शल्लकीके गोंदको कुन्दुरु कहतेहैं । इसका रंग सफेद और कुछ सुगंधियुक्त होताहै । कुन्दुरुको घिसकर बदपै लगानेसे बद बैठ जातीहै, इसके मरहमसे घावको आराम होताहै ।

श्रीवासनामानि ।



श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः ।
वेष्टसारोरसावेष्टःश्रीपिष्टःपद्मदर्शनः ॥

अर्थ-श्रीवास-सरलस्राव, श्रीवेष्ट, वृक्षधूपक, वेष्टसार, रसावेष्ट, श्रीपिष्ट, पद्मदर्शन (पायस, वृकधूप, सरलद्रव, रक्तशीर्षक, रसाह्व, यास, यवास, घृताह्वय, दध्याह्वय, क्षीराह्वय, क्षीरश्री, वायस) (वृक्षधूप, चितागन्ध, रसायक, श्रीरस, वेष्ट, लक्ष्मीवेष्ट, वेष्टक, क्षीरशीर्ष, सुधूपक, धूपांग, तिलपर्ण, सरलांग, तैलपर्णी)

हिन्दीभाषामें-सरलका गोंद, सरलका रस, चन्द्रस, गन्धविरोजा ।	
वङ्गभाषामें	टार्पिनतेल-नवनीत, खोटी-गन्ध विरजा ।
मराठीभाषामें	सरलाडीक, चन्द्रुस ।
गुजरातीभाषामें	चन्द्रस । जनार्जन । गन्धवेरीजो ।
कर्णाटकीभाषामें	श्रीवेष्टक ।
तामिलीभाषामें	पिनैमारु ।
इंग्रेजीभाषामें	गमकोपल । संडरेक Gomeopal Sandazack
लैटिनभाषामें	ट्रेकिलोविअमहोर्निमेनिएनमूकोलिट्रिसकेड्रिवालविस् । Trachiloam Horniman mon Colutris Quapriawalvis

फारसीभाषामें संदरुस । काइरुवा ।
अरबीभाषामें संदरुस ।

श्रीवासगुणाः ।

श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णतुवरः सरः ।
पित्तलोवातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥
रक्षोघ्नःस्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–मधुर–कडवा, स्निग्ध, गरम, कषैला, दस्तावर, पित्तजनक तथा वायु, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, कफ, राक्षसबाधा, पसीना, दुर्गंध, जूएं, खुजली और घावको दूर करेहै ।

अपिच ।

श्रीवेष्टःकटुतिक्तश्चकषायःश्लेष्मपित्तजित् ।
योनिदोषरुजाजीर्णव्रणाध्मानप्रदोषजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–कटु, तिक्त, कषाय, कफ पित्तनाशक तथा योनिरोग, अजीर्ण, व्रण और आध्मान रोगका नाश करे है ।

अपिच ।

चन्द्रुसःकटुकः स्वादुः स्निग्धश्चोष्णश्चशुक्रलः ।
लघुर्वृष्यः कांतिकरः कंडुस्वेदज्वरापहः ॥
ग्रहपीडाकुष्ठदाहान्नाशयेदितिकीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ–चंद्रुस–चरपरा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, उष्ण, शुक्रकारक, हलका, वृष्य, कान्तिको करनेवाला तथा खुजली, पसीना, ज्वर, ग्रहकी पीडा, कोढ और दाहको दूर करे है ।

श्रीवाससारगुणाः ।

श्रीवाससारःकफनुन्मूत्रलोज्वरसंहरः ।
शोफविम्लापनोलेपात्क्रिमिहृद्वेदनापहः ॥ (आत्रेयसं०)

अर्थ–श्रीवाससार अर्थात् गन्धविरोजा कफनाशक, मूत्रवर्द्धक, ज्वरसंहारक और शोफको दूर करेहै, इसका लेप करनेसे कृमिरोग और वेदनाकी शान्ति होतीहै ।

सिह्लकनामानि ।

कपिनामाकपितैलंकृत्रिमंकपिशश्चलः ।
तुरुष्कोमुक्तिमुक्तश्चपिण्डितःसैंहिकारसः ॥

अर्थ-कपिनामा, कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चल, तुरुष्क, मुक्तिमुक्त, पिण्डित, सैंहिकारस (कपि, तैल, कपिल, चला, पिण्डातवर, सिह्लपिण्डक, सिद्ध, पावन, पवन, धूम्र, धूम्रवर्ण, सुगन्धिक, सिह्लक, सिह्लसार, पीतसार, कपि, पिण्याक, कपिज, कल्क, पिण्डितैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, शल्लकीद्रव, पिष्टक, तैलपर्णी, वृकधूप, कपिचञ्चल, यावल, तैलाख्य, पिण्डक, याव, यावन, जाव, यवनदेशज, अश्मपुष्प और चञ्चलतैलक)

हिन्दीभाषामें	शिलारस ।
वङ्गभाषामें	शिलारस ।
मराठीभाषामें	शिलारस ।
गुजरातीभाषामें	शेलारस ।
कर्णाटकीभाषामें	पिण्डतैल ।
इंग्रेजीभाषामें	लिक्विडूएम्बर । Liquid amber
लैटिनभाषामें-	लिक्विडेम्बर ओरि एन्टेटिस् । Liquidambr Onenteis
फारसीभाषामें	सलारस ।
अरबीभाषामें	उसारेकमिया, मिथास साइला ।
दक्षिणीभाषामें	कपितेल ।

अस्यगुणाः ।

तुरुष्कःसुरभिस्तिक्तःकटुःस्निग्धश्चकुष्ठजित् ।
कफपित्ताश्मरीमूत्रघातभूतज्वरार्त्तिजित् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिलारस-सुगन्धि, कडवा, चरपरा, स्निग्ध तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, मूत्राघात, भूत और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

सिह्लकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःशुक्रकान्तिकृत् ।
वृष्यःकंडूस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ (भावप्रकाश)

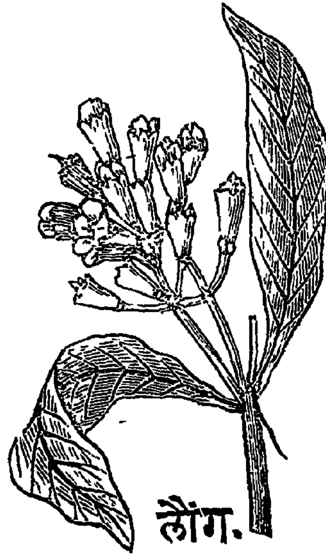
अर्थ-शिलारस-स्वादु, चरपरा, स्निग्ध, गरम, शुक्रजनक, कान्तिकारक, वृष्य तथा कण्डू, पसीना, कोढ, ज्वर, दाह और ग्रहकी पीडाको दूर करह.

अन्यच्च ।

तुरुष्करःकान्तिकरोवृष्योष्णःस्वादुशुक्रलः ।
वर्ण्यःसुगन्धिःकटुकस्तिक्तःस्निग्धश्चकुष्ठहा ॥
कफपित्ताश्मरीभूतबाधाज्वरविनाशनः ।
मूत्राघातस्वेदकण्डूदाहहाचत्रिदोषजित् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–शिलारस–कान्तिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, वर्णको सुंदरतादायक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, चिकना तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, भूतबाधा, ज्वर, मूत्राघात, पसीना, खुजली, दाह और त्रिदोषका नाश करेहै.

लवङ्गनामानि ।



लवङ्गंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंकलिकोत्तमम् ।
भृङ्गारंसुषिरंतीक्ष्णंवारिजंशेखरंलवम् ॥

अर्थ–लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ, कलिकोत्तम, भृङ्गार, सुषिर, तीक्ष्ण, वारिज, शेखर, लव (प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, दिव्य, श्रीपुष्प, रुचिर, ग्रहणीहर, तोयाधिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, चंदनपुष्प, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक)

हिन्दीभाषामें	लौंग ।
वङ्गभाषामें	लवङ्ग ।

मराठीभाषामें	लवंग ।
गुजरातीभाषामें	लवींग ।
कर्णाटकीभाषामें	लवङ्गकलिका ।
तैलिङ्गीभाषामें	लवङ्गलु ।
तामिलीभाषामें	किरम् वेर ।
द्रा०	लवङ्ग ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लोवस् । Cloves
लैटिन्भाषामें	करियो फाइलस, एरोमेटिकस् ।
फारसीभाषामें	मेहक् ।
अरबीभाषामें	करनफूल (फूल)

अस्यगुणाः ।

लवङ्गंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ।
दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् ॥
तृष्णांछर्दिंतथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ।
कासंश्वासञ्चहिक्काञ्चक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-लौंग-चरपरी, कडवी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, रुचिकारक तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, तृषा, छर्दि, आध्मान, शूल, कास, श्वास, हुचकी और क्षयरोगका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

आनाहवातशूलघ्नंमुखदौर्गन्ध्यनाशनम् ।

अर्थ-आनाह, वायु, शूल और मुखकी विरसताको दूर करैहै ।

अपिच ।

लवङ्गंशीतलंतिक्तंचक्षुष्यंभुक्तरोचनम् ।
वातपित्तकफघ्नंचतीक्ष्णंमूर्द्धरुजापहम् ॥ (क्वचित्)

अर्थ-लौंग, शीतल, तिक्त, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तरोचन, तथा वात, पित्त, कफनाशक, तीक्ष्ण और मस्तकरोगको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

लवङ्गंसोष्णकंतीक्ष्णंविपाकेमधुरंहिमम् ।
वातपित्तकफामघ्नंक्षयकासास्यदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लौंग-गरम, तीक्ष्ण, पाकके समय मधुर, शीतवीर्य्य, तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ,) आम, क्षय और कासरोगका नाश करे ।

अन्यच्च ।

लवङ्गंविशदंतीक्ष्णंचक्षुष्यंभुक्तपाचनम् ।
वातपित्तहरंहृद्यंस्निग्धंमूर्द्धरुजापहम् ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-लौंग-विशद, तीक्ष्ण, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तपाचक, वातपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और शिरोरोगको हरेहै ।

लवङ्गतैलगुणाः ।

देवपुष्पोद्भवंतैलमग्निकृद्वातनाशनम् ।
दन्तवेष्टकफार्तिघ्नंगर्भिण्यावमनापहम् ॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-लौंगका तेल-अग्निजनक, वातनाशक तथा दन्तवेष्ट, कफ और गर्भिणीकी वमननाशक है ।

विवरण-इसके वृक्ष जंगवारमें अधिक उत्पन्न होते हैं, देखनेमें सुंदर और इसके पत्तोंमें अत्यन्त सुगन्ध आता है, इसके फूलकी कली लौंग है, लौंग मलवारमेंभी होतीहै, यह मुखकी दुर्गन्धको दूर करतीहै और मसालेमेंभी पडतीहै । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

जातीफलनामानि ।



जातीफलंफलंजातिःकोषकंसुमनःफलम् ।

अर्थ-जातीफल, फलजाती, कोषक, सुमनःफल, (जातीकोष, फल, जाती, कोश, कोष, जातिकोष, राजभोग्य, जातीकोश, जातिफल, जातिशस्य, शालूक, मालतीफल, मज्जसार, जातिसार, पुट और मदशौंड)

हिन्दीभाषामें	जायफल ।
वङ्गभाषामें	जायफल ।
मराठीभाषामें	जायफळ ।
गुजरातीभाषामें	जाईफल ।
कर्णाटकीभाषामें	जाईफल ।
तैलङ्गीभाषामें	जाजिकाया ।
तामिलीभाषामें	जोदिकराय ।
ब्रह्मीभाषामें	जादिक्षु ।
इंग्रेजीभाषामें	नट्मेग । Nutmeg
लैटिन्भाषामें	मिरिस्टिका-ओफिसिनेलिस मिरिस्टिकामोस्केटा Myristica officinalis M. Maschata
फारसीभाषामें	जोभोवुवा ।
अरबीभाषामें	जोझउतलीव ।

जातीफललक्षणम् ।

जातीफलंसशब्दञ्चस्निग्धंगुरुचशस्यते ।
लघुकंशब्दहीनंचरूक्षाङ्गमतिनिंदितम् ॥(भैषज्यचिकित्सा)

अर्थ-जातीफल-जिसमें शब्द होताहो, चिकना हो और भारी हो ऐसा जायफल उत्तम होताहै । और जो तौलमें हलका हो, शब्दहीन हो रूखे अंगवाला हो, ऐसा जायफल निंदनीय है ।

जातीफलगुणाः ।

जातीफलंरसंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु ।
कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्य्यंश्लेष्मानिलापहम् ॥
निहन्तिमुखवैरस्यंमलदौर्गन्ध्यकृष्णताम् ।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः । (भावप्रकाश)

अर्थ-जायफल-रसमें कडवा, तीक्ष्ण, गरम, रोचक, हलका, चरपरा, अग्निको दीपनकरनेवाला, मलरोधक, स्वरको सँभालनेवाला तथा कफ, वात,

मुखकी विरसता, मलकी दुर्गन्ध और कालापन, कृमि, खांसी, वमन, शोष, पीनस और हृदयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

जातीफलंजातिकोशंतृष्णाशूलविनाशनम् ।(केचित्)

अर्थ–जायफल–तृषा और शूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

जातीफलंकषायोष्णंकटुकण्ठामयार्तिहृत् ।
वातातीसारमेहघ्नंवृष्यं दीपनदं लघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–जायफल–कषैला, गरम, चरपरा, कण्ठरोगहारक, वातातिसारनिवारक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला और हलका है ।

अस्यतैलगुणाः ।

तैलंजातीफलोद्भूतंसमुत्तेजनमग्निदम् ।
जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत् ॥
आमवातहरंबल्यंदन्तवेष्टव्रणार्तिनुत् । (आत्रेयसंहिता)

अर्थ–जायफलका तेल–उत्तेजक, अग्निजनक, जीर्णातिसारनिवारक, आध्मानहर्ता, आक्षेपनाशकर्त्ता, शूलनाशक, आमवातहारक, बलकारक तथा दन्तवेष्ट और व्रण रोगको दूर करे है ।

विवरण–गुल्म होताहै, फल जामुनके समान होताहै, इसकी छालके भीतर लाल गुच्छा होताहै । उसको जावित्री कहते हैं, कुछ कालमें उसका वर्ण पीला पडजाताहै, उसके भीतर कठिन वल्कलका बीज होताहै, तोडनेसे जायफल कहते हैं, इसकी उत्पत्ति जावा बताविया और पिनाङ्गके टापुओंमें होतीहै इसका चित्र ऊपर दिखलाया है ।

जातीपत्री नामानि ।

जातीकोषाजातिपत्रीसुमनःपत्रिकापिच ।

अर्थ–जातीकोषा, जातिपत्री, सुमनःपत्रिका (जातीकोषी, सुरमनःपत्री, मालती, पत्रिका, सौमनसायिनी और जातीफलत्वक्)

हिन्दीभाषामें	जावित्री ।
वंगभाषामें	जैत्री, जयित्री ।
मराठीभाषामें	जायपत्री ।

गुजराती भाषामें	जावंत्री ।
कर्णाटकी भाषामें	जायपत्री ।
तैलंगी भाषामें	जाजिपत्री ।
इंग्रेजी भाषामें	मेस Mace
लैटिनभाषामें	मिरिष्टिका फ्रेग्रन्स् Myristica Fragrans
फारसी भाषामें	जवित्री । वजवार ।
अरबी भाषामें	विसवासा ।

अस्या गुणाः ।

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः ।
जातीपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वैद्यलोक जायफलकी त्वचाको जावित्री कहतेहैं ।

गुण । जावित्री-हलकी, स्वादिष्ठ, चरपरी, गरम, रुचिजनक, वर्णकारक तथा कफ, खांसी, वमन, श्वास, तृष्णा, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

जातीपत्रीकटुस्तिक्तासुरभिःकफनाशिनी ।
वक्त्रवैशद्यजननीजाड्यदोषनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-जावित्री-चरपरी, कडवी, सुगन्धि, कफनाशक वक्त्रवैशद्यजनक अर्थात् मुखको स्वच्छ करनेवाली और जडताको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

जातिपत्रीकटुःस्निग्धाग्निकृद्दुर्गन्धनाशिनी । (केचित)

अर्थ-जावित्री, चरपरी, स्निग्ध, अग्निजनक और दुर्गंधनाशक है ।

विवरण-जावित्री और जायफल एकही वृक्षसे होतेहैं । सुमात्रासिंहल, पिनाङ्गआदि देश और हिन्दोस्तानी महासमुद्रके टापुओंमें जायफल अधिकतासे होताहै । देखनेमें सुंदर हरे रंगका होताहै । आजकल दक्षिण देशमें भी इसकी कापन् होती है, जायफलके ऊपरकी छाल फटकर जो कुछ लाल लाल नाजसा निकलताहै, उसीको जावित्री कहते हैं । इस फलके बीजको जायफल कहते हैं । सुगन्धिवाली होनेसे जावित्री पानके साथ खाई जातीहै । बीजसे तेल निकलताहै ।

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लियाजाताहै इस अर्कसे हैजेकी पियास दूर होतीहै ।

जावित्रीकी मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकीहै ।

स्थूलैलानामानि ।



एलास्थूलैलाबहुलामालेयाताडकीफलम् ।

अर्थ–एला, स्थूलैला, वहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभित्वक्, महिला, कन्या–कुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्काटि, चर्मसम्भवा, बाला, वलवती, एलीका सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ और महैला)

हिन्दीभाषामें	बडी इलायची, इलायची, पूर्वी इलायची, लालइलायची ।
वंगभाषामें	एलाइच । वड इलाइच ।
मराठीभाषामें	थोरवेला । वेलदोडे ।
गुजरातीभाषामें	मोठी एलची । एलचा ।
कर्णाटकीभाषामें	परड्डूलक्की ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्द एलक्कुलु । एलुकचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	एलम् ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्ज–कोर्डामोम् । Large Cardamom
लैटिन्भाषामें	एमोमं सुक्युलेटम् । Amomum Sukhulatum
फारसीभाषामें	हलै कलां ।
अरबीभाषामें	काकले किवार ।

स्थूलैलागुणाः ।

स्थूलैलारक्तपित्तघ्नीवमिशुक्राश्मजिद्धिमा ।
तृष्णाहल्लासकण्डूघ्नीपित्तश्लेष्मामयापहा॥(ग० नि०)

अथ-बडीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, शुक्रनाशक, पथरीको दूर करनेवाली, शीतल तथा तृषा, हृल्लास, कण्डू, पित्त और कफरोगको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

स्थूलैलारोचनीतीक्ष्णालघूष्णाकफवातजित् ।
सुगंधिःपाचिकाशीताचाग्निदीप्तिकरीमता ॥

अर्थ-बडी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हलकी, गरम, कफवातनाशक, सुगन्धि, पाचक, शीतल और अग्नि दीपन करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः ।
रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ (भा०)

अर्थ-बडीइलायची-पाक और रसमें चरपरी है । अग्निजनक है हलकी है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, तृषा, हल्लास, विष, वस्तिरोग, मखरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है ॥

अन्यच्च ।

स्थूलैलाकटुकारूक्षाकोष्ठबन्धतृट्शूलनुत् । (क्वचित्)

अर्थ-बडी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबद्धता, पियास और शूलको निर्मल करे है ।

सूक्ष्मैलानामानि ।



वयःस्थातीक्ष्णगंधाचसूक्ष्मैलाद्राविडिस्त्रुटिः ।

अर्थ-वयःस्था, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, (उपकुञ्चिका,

कोरंगी, भृंगपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुत्था, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिका-रिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रबाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरांगी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि, चन्द्रिका और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामें	छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद-इलायची ।
वंगभाषामें	छोटएलाच-गुजराती एलाइच ।
मराठीभाषामें	वेलची ।
गुजरातीभाषामें	एलचीकागदी ।
तैलिंगीभाषामें	एलाकु, चिल्लयालकुलु-एल्लकप ।
द्राविडीभाषामें	एलोकुल्लकापु ।
इंग्रेजीभाषामें	शिलिसर, कार्डामोम् । Sheleser, Cardamo
लैटिन्भा०	इलेटिरिया कार्डामोम् Eleteria, Cardamomam
फारसीभाषामें	हैल, हिल, हाल ।
अरबीभाषामें	काकिलेसिगार ।

अस्यागुणाः ।

एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ।
रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरामता ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची-कफ, कास, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाशकरे है, रसमें चरपरीहै, शीतलहै, हलकीहै और वातविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

त्रुटिस्तिक्ताचशीताचरसेकट्वीलघुःस्मृता ।
सुगंधिःपित्तलाचैवमुखमस्तकशोधिनी ॥
गर्भपातकरीरूक्षावातश्वासकफापहा ।
कासार्शःक्षयविषरुग्वस्तिकंठरुजंहरेत् ।
मूत्राश्मरींव्रणंकण्डूंनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमें चरपरी, हलकी, सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिराने-वालीहै, रूखीहै तथा वात, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षयरोग, विषविकार, वस्तिरोग, कण्ठरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव, और खुजलीका नाशकरेहै ।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयंशीतलतिक्तमुष्णंसुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारि ।
करोतिहृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्रस्थविरोगुणाढ्यः ॥
(रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी इलायची-शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि, पित्तरोगको शांतिकरै, कफका नाशकरै, हृदयरोगको उत्पन्नकरै, तथा मल, वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बडी इलायची अधिक गुणवाली है ।

विवरण-छोटी इलायचीका क्षुप अदरखकी समान होताहै, फूल सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होतेहैं । इसके बीज काले और रसभरे होतेहैं ।

मात्रा बडी इलायचीकी १॥। मासे, छोटी इलायचीकी १ मासे ।

कङ्कोलनामानि ।



कङ्कोलकंकोषफलंकोलकंतैलसाधनम् ।

अर्थ-कङ्कोलक, कोषफल, कोलक, तैलसाधन, (कङ्कोल, कोशफल, फल, कोरक, काकोल, गन्धव्याकुल, कृतफल, कटुकफल, द्वेष्य, स्थूलमरिच,

कंकोल, माधवोचित, कट्फल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मारिच, मागधोषित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामें	शीतलचीनी-कवावचीनी, चिनीकवाव, कंकोला ।
वंगभाषामें	कांकला ।
मराठीभाषामें	कंकोळ, कापुरचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चणकबाव ।
कर्णाटकीभाषामें	कक्कोलद्दय ।
तैलिङ्गीभाषामें	कवाकचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	क्युबेब पैपर । Cubeb Pepper
लैटिनभाषामें	क्यूबेबा ऑफिसिनेलिस । Cubeba, Officinalis
फ़ारसीभाषामें	कवावह ।
अरबीभाषामें	कवास, हेबुल, ऊरस, कवाबा ।

अस्य गुणाः ।

कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा०प्र०)

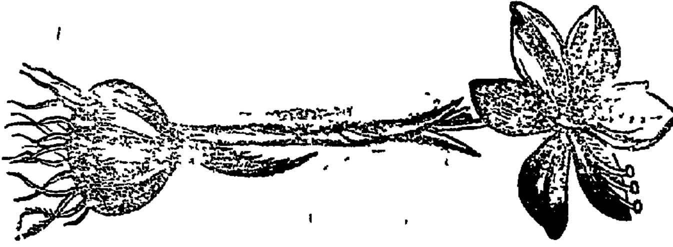
अर्थ—शीतलचीनी—हलकी, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी, रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको दूर करेहै ।

अपिच ।

कंकोलंकटुकंतिक्तमुष्णंदीपनपाचकम् ।
रुच्यंसुगन्धिहृद्यंचलघुचकफनाशकम् ॥
मुखजाड्यंवातरोगंहृद्रोगंचकृमींस्तथा ।
अन्धत्वंमुखदौर्गन्ध्यमामंचैवाग्निमांद्यकम् ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तमृषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ।
एतेगुणास्तुसुबृहत्कंकोलस्यसमीरिताः ॥

अर्थ—शीतलचीनी—चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी, सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हलकी, कफनाशक तथा मुखकी जडता, वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मंदाग्निको नाश करेहै, बडी शीतलचीनीके गुण इसीके समान जानने ।

नागकेशरनामानि ।



चाम्पेयःकेसरोनागकेशरःकनकाह्वयः ।
महौषधंराजपुष्पःफलकःस्वरघातनः ॥

अर्थ—चाम्पेय, केसर, नागकेशर, कनकाह्वय, महौषध, राजपुष्प, फलक, स्वरघातन (केशर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य, भुजङ्गाख्य, षट्पदप्रिय, इभाख्य, पुष्परेचन, नागाख्य, सुवर्णाख्य, नागकेशर, केसरी, किञ्जल्क, नागकिञ्जल्क, नागीय, काञ्चन, सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क, रुक्म, हेम, पिञ्जर, फणिकेशर, पुन्नागकेशर, नागपुष्प, नाग)

हिन्दी भाषामें	नागकेशर ।
वंग भाषामें	नागेश्वर ।
मराठी भाषामें	नागकेशर । तांवडा नागकेसर ।
गुजराती भाषामें	नागकेशर ।
कर्णाटकीभाषामें	नागकेशर ।
तैलिंगीभाषामें	नागकेशराडु ।
तामिली भाषामें	नांगल ।
वमू०	नागचम्प ।
लैटिनभाषामें	ओक्रोकार्पस लौंगिफोलियम् मेस्यूआफेरिया Ocrocorpuslingifolium Mesuoferrea
अरबीभाषामें	नारसुष्क ।

अस्यगुणाः ।

नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् ।
ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ—नागकेशर—कषैली, गरम, रूखी, हलकी, आमपाचक तथा ज्वर, खुजली, पियास, पसीना, वमन, उबकाई, दुर्गन्ध, कोढ, विसर्प, कफ, पित्त और विषको दूर करेहै ।

अपिच ।

नागकेशरकंतिक्तंकषायंचामपाचकम् ।
किञ्चिदुष्णंलघुरूक्षंपित्तच्छर्दिकफापहम् ॥
खुडवातंरक्तरुजंवातंकण्डूंचहृद्व्यथाम् ।
स्वेददौर्गन्ध्यविषतृट्कुष्ठवीसर्पनाशनम् ॥
वस्तिपीडावातरक्तकण्ठमस्तकशूलनुत् । (नि० र०)

अर्थ–नागकेशर–कडवी, कषेली, आमपाचक, किञ्चित् गरम, रूखी, हलकी तथा पित्त, वान्ति, कफ, खुडवात, रुधिररोग, वात, कण्डू, हृदयकी पीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ, विसर्प, वस्तिपीडा, वातरक्त, कण्ठरोग और मस्तकशूलका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

केसरंविषवीसर्परक्तार्शोवमिकुष्ठहृत् ।
हृल्लासखुडदौर्गन्ध्यतृष्णापित्तबलासजित् ॥ (ग० नि०)

अर्थ–नागकेशर–विष, विसर्प, रक्तरोग, अर्श, वमन, कुष्ठ, हृल्लास, वातरक्त, दुर्गन्ध, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुन्नागवृक्षकी केशरको और नागचंपाकी कलीको नागकेशर कहतेहैं, इसकी दो जाति हैं, कोकण, गोवाकी ओरसे आतीहै ।

त्वचगुडत्वङ्नामानि ।



भृङ्गंवरांगंरामेष्टंविज्जुलंत्वचमुत्कटम् ।
चोलंगुडत्वचंपत्रंचोचंसुरभिवल्कलम् ॥

अर्थ-भृंग, वराङ्ग, रामेष्ट, विज्जुल, त्वच, उत्कट, चोल, गुडत्वच, पत्र, चोच, सुरभिवल्कल (सूतकट, त्वक्पत्र, वरांगक, त्वचा, हृद्य, त्वक्, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंहल, बल्य, सुरस, कामवल्लभ, बहुगन्ध, वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल, वर, शीत, त्वक्पत्र, सैंहल, रामवल्लभ, तनुत्वक्. दारुसिता)

हिन्दीभाषामें	तज-दालचीनी ।
वंगभाषामें	दारुचिनी ।
मराठीभाषामें	दालचिनी ।
गुजरातीभाषामें	तज ।
कर्णाटकीभाषामें	तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सनलिंगु । डालचीनी, सनाल् लींगपुता ।
तामिलीभाषामें	कारुवा करु उपट्टाई ।
इंग्रेजीभाषामें	सिन्नामल वार्क Cinnamon Bark
लैटिन्भाषामें	सिन्नामोमी कोर्टेक्स । [छाल]
	सिनामोमं । ओफि सिलिस । [वृक्ष]

Cunnamomi Cartex C. officinalis Cinnomomuw Cylnmcuw

फारसीभाषामें	दार्चिनी ।
अरबीभाषामें	सालीखा ।
ब्रह्मीभाषाम	मिट्ख्यावो ।
लुसाईभाषामें	थ्वाक, थ्विन ।

दारुसितागुणाः ।

उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिलपित्तहृत् ।
सुरभिःशुक्रलावण्यामुखशोषवृषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दालचीनी-स्वादिष्ठ, कडवी, वात पित्तनाशक, सुगन्धि, शुक्रजनक, शरीरको सुंदर करनेवाली तथा मुखशोथ और तृषाको हरनेवाली है ।

अपिच ।

त्वचंतुकटुकंशीतंकफकासविनाशनम् ।
शुक्रामशमनंचैवकण्ठशुद्धिकरंलघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तज-चरपरी, शीतल, तथा कफ और खांसीको दूर करे शुक्र और आमको शान्ति करे और हलकी है ।

अपिच ।

त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तंचरूक्षकम् ।
पित्तलंकफवातघ्नंकण्डामरुचिनाशनम् ॥
हृद्बस्तिरोगवातार्शःक्रृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-तज-हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रूखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृदयरोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ॥

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वीपित्तलास्वाद्वीकण्ठशुद्धिकरीलघुः ।
रूक्षातिक्तावस्तिशुद्धिकारिणीचोष्णदामता ॥
कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।
आमंचवस्तिरोगञ्चपीनसंचविषंतथा ॥
शुक्रंचार्शःकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्तिता ।
तनुत्वक्सुरभिस्तिक्तास्वाद्वीबलकरीमता ॥
धातुवृद्धिकरीवातपित्ततृण्मुखदोषनुत् ।

अर्थ-तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ठ, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रूखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, हुचकी, वात, खांसी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विष, शुक्र, बवासीर और कृमिरोगका नाश करेहै । दालचीनी-सुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ठ, बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात, पित्त, तृषा और मुखरोगको दूर करेहै ।

त्वचतैलगुणाः ।

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनंसंग्राहिदशनार्तिहृत् ॥
त्वाचंतैलंरजःस्रावितोयेक्षिप्तंनिमज्जति । (आ० सं०)

अर्थ-तजका तेल-मंदाग्नि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है,

तथा वान्ति और उत्क्लेशको शान्ति करे है, संग्राहीहै, दन्तरोगको दूर करे है, रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेसे इसको पानीमें डालकर लगाना चाहिये ।

विवरण–छोटा पेड होताहै । सिंहल, मलबार, कोचीन, चीन, सुमात्रा, बजाभा आदि देशोंमें अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रकी समान होतेहैं, पत्तोंको सुखानेपर उनमेंसे लौंगकी समान सुगन्धि आतीहै । वृक्षकी डंडीके ऊपर सफेद फूल आताहै; फूलमें गुलाबकी समान सुगन्धि आतीहै । फल करोंदेके समान होतेहैं, इनमेंसे तेल निकलताहै, इसके फूलोंका अर्क और इत्र बनातेहैं । सिंहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होतीहै । वृक्षकी पतली छालकोही दालचीनी कहतेहैं ।

तेजपत्रनामानि ।

तेजपत्रं गन्धजातं पत्रकं पाकरञ्जनम् ।

अर्थ–तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाह्वय, राम, गोमेद, वसनाह्वय, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, दल, पालाश, अंकुश, वास, तापस, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वसन तमाल, सुरनिर्गन्ध, तमालपत्र, इष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

हिन्दी भाषामें	तेजपात ।
वङ्ग भाषामें	तेजपाता । तेजपत्र ।
मराठी भाषामें	तमालपत्र । संभारपान ।
गुजराती भाषामें	तमालपत्र ।
कर्णाटकी भाषामें	पत्रक ।
तैलिङ्गी भाषामें	आकुपत्री ।
इंग्रेजी भाषामें	फोलिया मालाबाथी । Folia Malabathy
लैटिन् भाषामें	सितामोमं टमाला । Cuinamodmam Tamala
फारसी भाषामें	सादरसू ।
अरबी भाषामें	साजिज ।

अस्यगुणाः ।

पत्रमुष्णंलघुश्लेष्महृल्लासार्शोनिलापहम् ।
हृद्रोगंपीनसंचापित्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–तेजपात–गरम, हलका तथा कफ, उबकाई, बवासीर, वात, हृदय-रोग, पीनस और त्रिदोषनाशक है ॥

अपिच ।

पत्रकंलघुतिक्तोष्णंकफवातविषापहम् ।
वस्तिकण्डूत्रिदोषघ्नंमुखमस्तकशोधनम् ॥ (राजनि०)

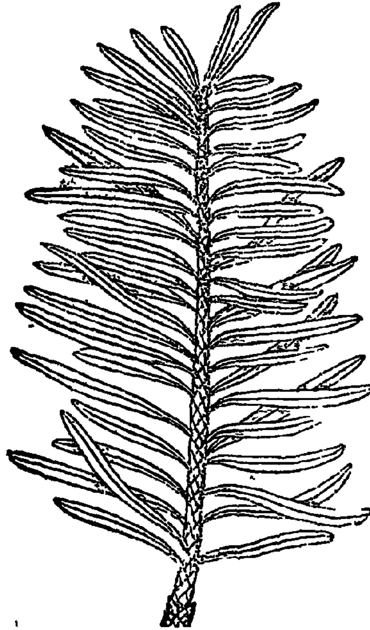
अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विष, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोषनाशकहै, मुख और मस्तकशोधक है ।

अन्यच्च ।

पत्रकंमधुरंकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलंलघु ।
निहंतिकफवाताशोंहृल्लासारुचिपीनसान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र(तेजपात)-मधुर, कुछेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका तथा कफ, वात, बवासीर, हृल्लास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है । तेजपत्र तजके पत्तोंकी समान होतेहैं, सुगन्धिके लिये मसालेमें डाले जातेहैं । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

तालीसपत्रनामानि ।



तालीसपत्रंतालीसंधात्रीपत्रंशुकोदरम् ।
अपरंग्रंथिकापत्रंपत्राढ्यंतुलसीछदम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढय, तुलसीछद, (पत्रारव्य, अर्कवंध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र, अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और घनच्छद)

हिन्दीभाषामें	तालीसपत्र-तालिशपत्र ।
वंगभाषामें	तालीशपत्र ।

मराठीभाषामें	लघुतालीसपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	तालीसपत्र ।
तैलिङ्गीभाषामें	तालीशपत्री ।
गुजरातीभाषामें	तालीसपत्र ।
वम्०	ताम्बठ ।
द्राविडीभाषामें	पनिअल ।
लैटिन्भाषामें	टेकसस् बेकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामें	जरनव ।
अरबीभाषामें	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ।
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण, गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, अरुचि, गुल्म, आम, मंदाग्नि और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रंतिक्तोष्णंमधुरंकफवातनुत् ।
कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोषविनाशकृत् ॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-तालीसपत्र-कडवे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खांसी, हुचकी क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्रंमधुरंतिक्तंचोष्णंलघुस्मृतम् ॥
तीक्ष्णंस्वर्यंचहृद्यञ्चअग्निदीप्तिकरंमतम् ॥
श्वासंकासंकफंवातंक्षयगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोषंवमिंचाममग्निमांद्यंचनाशयेत् ।
मुखरोगञ्चपित्तञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तालीसपत्र, मधुर, कडवे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको सँभालनेवाले, हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुखरोग और पित्तका नाश करेहै ।

विवरण-वृक्ष अत्यन्त बडा होताहै, देखनेमें अधिक तरफाऊसे मिलजाता है, इसके लठेके तखते चीरकर चौकी वक्तोंमें लगाये जातेहैं । व्यवहारपत्र ।

जटामांसीनामानि ।

जटामांसीजटीपेषीलोमशाजटिलामिसिः ।
मांसीतपस्विनीहिंस्रामिषिकाचक्रवर्तिनी ॥

अर्थ-जटामांसी, जटी, पेषी, लोमशा, जटिला, मिसि, मांसी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वह्निनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मांसिनी, जटाला, नलदा, मेषी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामांसी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिषि)

गन्धमांसीनामानि ।

द्वितीयागन्धमांसीचकेशीभूतजटास्मृता ।
पिशाचीपूतनाचैवभूतकेशीच लोमशा ॥
जटालालघुमांसीचख्याताअंकाभिधाह्वया ।

अर्थ-गन्धमांसी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमांसी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि ।



आकाशमांसीसूक्ष्मान्यानिरालम्बाखसम्भवा ।
सेवालीसूक्ष्मपत्रीचगौरीपर्वतवासिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमांसी, सूक्ष्मजटामांसी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवाली, सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिंदीभाषामें	जटामांसी, बालछड, कनुचर ।
वंगभाषामें	जटामांसी ।
मराठीभाषामें	जटामांसी ।
गुजरातीभाषामें	वालछड ।
कर्नाटकीभाषामें	बहुलगन्धजटामांसी आकाशजटामांसी ।
तैलिंगीभाषामें	जटामांसी ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पिकनार्ड Spikenard
लैटिन्भाषामें	नार्डोस्टेकिस् जटामांसी । Nordastochyo
फारसीभाषामें	सुबूल् ।
अरबीभाषामें	सुवलुत्तीव ।

जटामांसीगुणाः ।

मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बालछड, कडवी, कषेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, वलदायक, स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह, विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करैहै ।

अपिच ।

सुरभिस्तुजटामांसीकषायाकटुशीतला ।
कफहद्भूतदाहघ्नीपित्तघ्नीमोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामांसी (बालछड)-कषेली, चरपरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कांतिको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपनज्वरहृद्रूक्षतांचैवनाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप करनेसे ज्वर और रूक्षता दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणाः ।

गन्धमांसीतिक्तशीताकफकण्ठामयापहा ।
रक्तपित्तहरावर्ण्याविषभूतज्वरापहा ॥

अर्थ-गन्धमांसी,कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त, पित्त, विष, भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करेहै ॥

आकाशमांसीगुणाः ।

अभ्रमांसीहिमाशोफव्रणनाडीरुजापहा ।
लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ-आकाशमांसी-शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यच्च ।

जटामांसीतुतुवराशीतलाकांतिकारका ।
बल्याकट्वीस्वादुतिक्ताकफांतर्दाहपित्तहा ॥
विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।
दाहंत्रिदोषंवातंचरक्तदोषंविषंहरेत् ॥
कृष्णासुगंधामांसीतुकेश्यासुरभितिक्तका ।
वर्ण्याचशीतलाप्रोक्ताकफकण्ठरुजाहरा ॥
भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।
विषवातहराचान्येगुणामांसीवदीरिताः ॥
आकाशमांसीवर्ण्यातुशीतलाव्रणशोथहा ।
जालगर्दभकंलूताविस्फोटंचमसूरिकाम् ॥
नाडीव्रणंविसर्पादिनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-जटामांसी (वालछड)-कषेली, शीतल, कान्तिकारक, बलकारक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी तथा कफ, अन्तर्दाह, पित्त, विसर्प, कोढ, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामांसी-केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगन्धि, कडवी, वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस-

बाधा, ज्वर, विष और बादीका नाश करेहै ॥ आकाशजटामांसी-शरीरके रंगको शोभायमान करनेवाली, शीतल तथा व्रण, शोथ, जालगर्दभरोग, लूता, विस्फोटक, मसूरिका (शीतलामाता) नाडीव्रण (नासूर) और विसर्पादि अनेक रोगोंको दूर करेहै ।

विवरण-जटामांसी गुल्मजातिकी वनस्पति है, इसके पत्ते सरजीवनकी समान होतेहैं, यह हिमालयके जंगलमें उत्पन्न होतीहै । इसकी जडपर धूसर रंगके रुँएँ जमे रहतेहैं, फूल गुलाबी आभा और गुच्छोंमें लगतेहैं ॥

व्यवहार-रुँवोंसे ढकी हुई जड बाजारमें जो जटामांसी अर्थात् बालछड बिकतीहै वह कृत्रिम बनीहुई होतीहै इस कारण देख भालके काममें लाना उचित है । मात्रा चार ४ मासेकी है ।

बहुतदिनोंसे जटामांसीका व्यवहार सुगन्धि तैलादिकके बनानेमें होताहै और सागनेसि आदि अंग्रेज डाक्टरलोग इसको भेलिरिन नामक इंग्रेजी औषधिकी तुल्य गुणवाली समझतेहैं, स्नाय्वादिकी दुर्बलतामें विशेष उपकारी होनेसे यह बहुत औषधियोंके अनुपानमें दीजातीहै, वैद्यलोक, उदरामय, श्वास, खांसी मूर्च्छादिरोगमें उसका व्यवहार करतेहैं । दक्षिणदेशमें जटामांसीसे एक प्रकारका तेल निकालकर केशोंमें लगाया जाताहै ।

प्रियंगुनामानि ।

प्रियंगुःफलिनीश्यामागन्धफलागोवन्दनी ।
विष्वक्सेनाकृष्णपुष्पीकृशाङ्गीमहिलाह्वया ॥

अर्थ-प्रियङ्गु, फलिनी, श्यामा, गन्धफला गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृशाङ्गी, महिलाह्वया, लता (कान्ता, गुन्द्रा, कारम्भा, प्रियक, कट्ठ, गोवर्णा, भेदिनी, मिथवल्ली, फलप्रिया, गौरी, वृत्ता, कङ्गु, कंगुनी, भंगुरा, गौरवल्ली, सुभंगा, पर्णभेदिनी, शुभा, पीता, मङ्गल्या, प्रेयसी, अङ्गनाप्रिया, वनिता, नारिवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	प्रियंगुः ।
हिन्दीभाषामें	फूलप्रियंगू प्रियंगु, फूलफेन,
वंगभाषामें	प्रियंगु, गन्धप्रियंगुः ।
मराठीभाषामें	गहूला ।
गुजरातीभाषामें	घडला ।
कर्णाटकीभाषामें	नेर्पिलगु ।

तैलिङ्गीभाषामें — प्रेंकणपुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें — प्रियंगु ।
वम् — गहुली ।
लैटिनभाषामें — प्रुनस्–महालिव् । Psunesma hdleb

अस्यगुणाः ।

प्रियंगुःशीतलातिक्तातुवरानिलपित्तहृत् ।
रक्तातिसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥
गुल्मतृड्विषमेहघ्नीतद्वद्गन्धप्रियंगुका ।
तत्फलंमधुरंरूक्षंकषायंशीतलंगुरु ॥
विबन्धाध्मानबलकृत्संग्राहीकफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ–प्रियंगू–शीतल, कडवा, कषेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा और प्रमेहको दूर करैहै, इसीके सदृश गन्धप्रियंगुके गुण हैं ।

प्रियंगुका फल–मधुर, कषाय, भारी, शीतल तथा विबन्ध, आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

प्रियंगुःशीतलोवांतिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
मुखकांतिप्रजननोगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥(मदनविनोद)

अर्थ–प्रियंगु–शीतल है वान्ति, दाह, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करैहै तथा मुखकी शोभाको बढावैहै और शरीरकी दुर्गन्धको हरैहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियंगुस्तुवरस्तिक्तोवृष्यश्चशीतलः ।
केश्योवांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृषा हरेत् ।
वातंगुल्मंविषंमोहंमेदंचैवविनाशयेत् ॥
रक्तपित्तंनाशयतिबीजमस्यकषायकम् ।
मधुरंशीतलंरूक्षं तुवरं ग्राहकं गुरु ॥

मलस्तम्भकरंबल्यंपित्तघ्नंकफनाशनम् ।
आध्मानकारकंचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥

अन्यसुगन्धप्रियङ्गुः ।

सुगन्धफलिनीशीतासुगन्धिःकुष्ठदाहनुत् ।
ज्वरंरक्तविकारञ्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (रा० नि०)

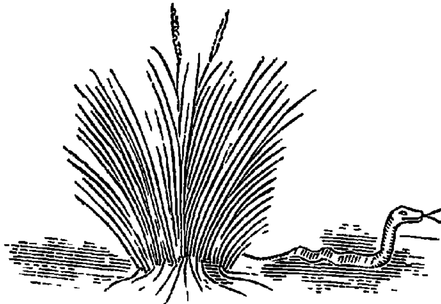
अर्थ-प्रियंगु-कषेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, केशोंको उज्ज्वल करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, पसीना, कोढ, मुखकी जडता, पियास, वात, गुल्म, विष, प्रमेह, मेदरोग और रक्तपित्तका नाश करेहै ॥

इसके बीज-कषेले, मधुर, शीतल, रूखे, ग्राही, मलको स्तम्भन करनेवाले, बलकारक, पित्तका नाश करनेवाले, कफको दूर करनेवाले और अफारेको करनेवाले हैं ।

सुगन्धप्रियङ्गु [दूसरे प्रकारका प्रियङ्गु अर्थात् फूलप्रियंगु] शीतल, सुगन्धि तथा कोढ, दाह, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करे हैं ।

उशीरनामानि ।

खस.



वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत् ।
अमृणालंचसेव्यञ्चसमगन्धिकमित्यपि ॥

अर्थ-वीरण (गाँडर) घासकी जडको उशीर अर्थात् खस कहतेहैं । सं० उशीर. नलद, अमृणाल, सेव्य, समगन्धिक, (अभय, अवदाह, जलाशय, लामज्जक, लघुभय, अवदाह, इष्टकापथ, उशीर, मृणाल, लघुलय, अवदात, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रगुप्त-उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीर, वीरण,

रणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, गन्धाढ्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्भु, वीरण, कटायन वीरतर, वीरभद्र, वीर और बहुमूलक)

हिन्दीभाषामें	खस, वीरन, गाँडर ।
वंगभाषामें	व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणमूल–खस ।
मराठीभाषामें	काळावाळा ।
गुजरातीभाषामें	कालोवालो. मोथ्यतावालाजिनांगीणमूल ।
कर्णाटकीभाषामें	वालदेवस ।
तैलिंगीभाषामें	अवरुगट्टि, नल्ल वट्टिवेर्लु ।
तामिलीभाषामें	वेत्तेवेर ।
वम्र्	खसखस ।
उत्	विणा, गन्दविणा, वाधिवेरु ।
लैटिनभाषामें	अन्ड्रोपागन मूरिकेटम् । Andropagon Muricatum

उशीरगुणाः ।

उशीरंशीतलंतिक्तंदाहश्रमहरंपरम् ।
पित्तज्वरार्तिशमनंजलसौगंध्यदायकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–खस–शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरकी शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै ।

अपिच्च ।

उशीरंस्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्त्ररोगजित् । (रा०व०)

अर्थ–खस–पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरेहै ।

अन्यच्च ।

उशीरंस्वेदपित्तास्त्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
क्लमतृष्णाविषध्वंसिसतिक्तंमधुरंहिमम् ॥

अर्थ–खस–स्वेद, पित्त, रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध, क्लम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

उशीरंपाचनंशीतंस्तम्भनंलघुतिक्तकम् ।
मधुरंज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्त्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-खस-पाचक, शीतल, स्तम्भन, हलकी, कडवी, मीठी तथा ज्वर, वमन, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष, विष, वीसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र और व्रणरोगका नाश करैहै ।

गांडरके भी गुण इसीके समान हैं ।

विवरण-यह गांडर घासकी जड है ।

गोरोचननामानि ।

गोरोचनातुगोपित्तंवन्दनीयामनोरमा ।

अर्थ-गोरोचना-गोपित्त, वन्दनीया, मनोरमा (वन्द्या, रोचनारुचि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, शिवा, पीता, गौतमी, गव्या, चन्दनीया, काञ्चनी, मेध्या, श्यामा, रामा, भूतविद्राविणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नन्दिनी, पाविनी, गोरुचि)

हिन्दीभाषामें	गोरोचन. गोलोचन ।	
वंगभाषामें	गोरोचना ।	
मराठीभाषामें	गोरोचन ।	
गुजरातीभाषामें	गोरोचन्दन, गोरोचन ।	
कर्णाटकीभाषामें	गोरोचन ।	
तैलिङ्गीभाषामें	गोरोचनमु ।	
इंग्रेजीभाषामें	गोलस्टोन बिझोर	Gollstone Bijoor
लैटिनभाषामें	बेस्टोरस ।	Bastarous
फारसीभाषामें	गयरोहन ।	
अरबीभाषामें	हजरुलवक्र ।	

गोरोचनागुणाः ।

गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामङ्गलकांतिदा ।
विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोरोचना-शीतल, कडवी, वशीकरण, मङ्गलजनक. कान्तिदायक तथा विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव. क्षत और रक्तदोषनाशक है ।

अपिच ।

गोरोचनाचशिशिराविषदोषहन्त्रीरुच्याचपाचनक-
रीकृमिकुष्ठहन्त्री । भूतग्रहोपशमनंकुरुते च पथ्या
शृङ्गारमङ्गलकरीजनमोहिनीच ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–गोलोचन–शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और कुष्ठको नष्ट करनेवाला, भूतग्रहको शान्ति करनेवाला, पथ्य, शृंगार और मंगलको करनेवाला तथा मनुष्योंको मोह करनेवाला हैं।

अपिच।

गोरोचनंचातिशीतंरुच्यंमंगलदायकम्।
वशीकरंकांतिकरंवृष्यंतिक्तंसमीरितम्॥
पिशाचग्रहपीडाश्चविषंकुष्टंकृमींस्तथा।
अलक्ष्म्युन्मादशमनंगर्भस्रावहरंपरम्॥
क्षतंरक्तविकारश्चनेत्ररोगश्चनाशयेत्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–गोरोचन–अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मंगलदायक, वश करनेवाला, कान्तिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचबाधा, ग्रहकी पीडा, विषविकार, कोढ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगका नाश करैहै।

गोरोचन–गायके मस्तकका पित्त होताहै, इसका रंग पीला होताहै यह अधिक व्यवहारमें आताहै, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाताहै इसका मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै। मात्रा दोरत्ती की।

नखनामानि।

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रायुधंतच्चक्रकारकम्।
नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी॥ (भावप्र०)

अर्थ–नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रायुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करज, कूटस्थ, नखाङ्क, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रनायक, चक्री, चक्रनख, त्र्यस्रफल, द्वीपिनख, खपुर, व्यालपाणिज, व्यालायुध, व्यालबल, व्यालखड्ग) दूसरा छोटा नख जिसको नखी कहतेहैं, उसके पर्य्याय यह हैं हनु, हट्टविलासिनी [शुक्ति, शंख, खुर, कोलदल, व्यालायुध, शंखनख, नखरी, करजाख्य, अपचखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुह, शिम्बी, शफ, चलकोशी, करज, हनु, नागहनु, पाणिज, वदरीवच, रूप्य, पण्यविलासिनी, सन्धिनाल, पाणिरुह] यह नाम साधारण नखके हैं।

हिन्दीभाषामें	दोनों नख, नख, नखी।
वंगभाषामें	नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखी।

मराठीभाषामें	नखला, वाघनख ।
गुजरातीभाषामें	नखला सावजना नख ।
कर्णाटकीभाषामें	नख, वाघनख ।
उत्	नख, वाघनख ।
इंग्रेजीभाषामें	शेल । Shell
लैटिनभाषामें	हेलिकासस्पेरा ।
फारसीभाषामें	ताखुनपर्या; ग्राहकसर ।
अरबीभाषामें	अजफारुतिव, इकालिलुल्मुलुक ।

नखपञ्चभेदाः ।

नखीपञ्चविधाज्ञेयागन्धार्थागन्धवत्परैः ।
क्वचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदलामता ॥
काचिदश्वखुराकारागजकर्णसमापरा ।
वराहकर्णसंकाशापञ्चमेपरिकीर्तिता ॥ (च० चि०)

अर्थ-गन्ध अर्थवाली और गन्धयुक्त नखी पांच प्रकारकी होती है. कोई वेरीके पत्तोंकी समान, कोई कमलके पत्तेकी समान, कोई घोडेके खुरकी आकारवाली, कोई हाथीके कानकी समान और पांचवी सूअरके कानकी समान होतीहै ।

अस्याःशुद्धिर्यथा ।

पञ्चपल्लवतोयेनगन्धानांक्षालनंतथा ।
शोधनंचापिसंस्कारोविशेषश्चात्रवक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेनयदिवातिन्तिडीजलैः ।
नखंसंस्कारयेदेभिरलाभेमृण्मयेनतु ॥
पुनरुद्धृत्यप्रक्षाल्यभर्जयित्वानिषेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुनाह्येवंशुध्यतेनात्रसंशयः ॥ (च०)

अर्थ-पञ्चपलव (आमके पत्ते, जामुनके पत्ते, वेजोरेके पत्ते, कैथके पत्ते और वेलके पत्ते) के जलसे तथा गन्धोंके पुटसे इसका शोधन और संस्कारविशेष यहाँ कहतेहैं भैंसके गोवरके जलसे अथवा इमलीके पानीमें नख औषधीका संस्कार करे और यदि उपरोक्त द्रव्य. न मिलें तो मट्टीसेही शोधे, फिर निकालकर और धोकर गुड और हरडके जलसे सींचै, इसप्रकार शुद्ध होजायगा, इसमें संशय नहीं है ।

द्विविधनखगुणाः।

नखद्वयंग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत्।
लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम्॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटु। (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके नख-ग्रहकी पीडाको दूर करे हैं तथा कफ, वातरक्त, ज्वर, कोढ, व्रण, विष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेहै, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है।

नखगुणाः।

नखःस्वादूष्णकटुकोविषंहन्तिप्रयोजितः।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चभूतविद्रावणःपरः॥

अर्थ-नख-स्वादिष्ठ, गरम, चरपरा तथा कोढ, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है।

व्याघ्रनखगुणाः।

व्याघ्रनखस्तुतिक्तोष्णःकषायःकफवातजित्।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्चवर्ण्यःसौगन्ध्यदःपरः॥ (रा०नि०)

अर्थ-व्याघ्रनख-कडवा, गरम, कषेला, कफ, वातनाशक तथा कोढ, खुजली और घावको दूर करेहै, शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै और सुगन्धिदायक है।

अपिच-द्विविधनखगुणाः।

नखंसुगन्धिचोष्णंचकटुमेध्यञ्चशुक्रलम्।
लघुवर्ण्यंस्वादुहृद्यंकफवातविषप्रणुत्॥
दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम्।
मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्नंभूतग्रहनिवारणम्॥
व्याघ्रस्यचनखस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्णःकषायकः।
सुगन्धिःकुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत्॥
गुणास्त्वन्येतुनखवन्मुनिभिःपरिकीर्तिताः। (नि०र०)

अर्थ-नख-गरम, सुगन्धि, चरपरा, मेधाकारक, शुक्रजनक, हलका, वर्णकारक, स्वादिष्ठ, हृदयको हितकारी तथा कफ, वादी, विष, दुर्गन्ध, पसीना, कोढ, ज्वर, अलक्ष्मी, घाव, मुखकी दुर्गन्धि, खुजली, भूतबाधा, ग्रहकी पीडा वातरक्त और पित्तका नाश करेहै । व्याघ्रनख-कडवा, वर्णको सुंदर करनेवाला, उष्ण, कषेला, सुगन्धि तथा कोढ, खुजली, कफ, वात और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । शेष गुण नखके समान जानने ।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जीवोंका नख होताहै, यह सुगन्धि पदार्थ है धूपमें और सुगन्धि तैलादिकके वनानेमें पडताहै । घोडे हाथियोंके नख अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लिये जातेहैं ऐसा चरकाचार्यने लिखाहै ।

वालकनामानि ।

वालकंवारिदंवालंह्रीबेरंकेशनामकम् ।
कचामोदवरंपिङ्गंकुन्तलोवारिनामकम् ॥

अर्थ-वालक, वारिद, वाल, ह्रीवेर, केशनामक, कचामोद, वरपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, (बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामा, अम्बुनामक, ह्रीवेर, बर्हिष्ठ, केश, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवेरक, वारि, तोय, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंकेहैं सो सब इसके भी जानने ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धवाला ।
वंगभाषामें	वाल्य, गन्धवाला ।
मराठीभाषामें	वाळा ।
गुजरातीभाषामें	वालो ।
कर्णाटकीभाषामें	वालदवेरु, खससुष्टिवाल ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाट्टिवेर्ल्ड ।
दक्षिणीभाषामें	करंवाल ।
वम्ब	वाला ।
लैटिनभाषामें	एन्ड्रोगमोगन् । Andro Pogon म्यूरिकेटस् (Muricatus)
फारसीभाषामें	असारुं ।

वालकगुणाः ।

वालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा ह्लास (उबकाई), अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमातिसारको दूर करे है।

अपिच ।

वालकःशीतलस्तिक्तःकेश्यःपाचनकृन्मधुः ।
दीपनोलघुरूक्षश्चकफपित्तवमीहरः ॥
तृषाकुष्ठातिसारघ्नोज्वरश्वासारुचीहरः ।
व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरोमतः ॥
रक्तदोषंरक्तपित्तंकण्डूंदाहंचनाशयेत् ॥ (नि०रत्ना०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, कडवा, केशोंको सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वान्ति, तृषा, कोढ, अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि, व्रण, विसर्प, हृदयरोग, लालास्राव, रक्तविकार, रक्तपित्त, कण्डू और दाहका नाश करे है। मात्रा एक मासेकी ।

मुस्तकनामानि ।

मेघाख्यंमुस्तकंमुस्तंवालेयंपरिपेलवम् ।

अर्थ-मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, वालेय, परिपेलव, (कुरुबिन्द, मेघनामा, मुस्त, अम्बुवाह, अम्बुभृत, तडित्वान्, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्नु, तोयद, तोयधर, अभ्रनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा, भद्रक, भद्रा, राजकसेरू, कसेरुक, कुरुविन्द)

नागरमुस्तकनामानि ।



नागरमोथा.

नागरमुस्तानादेयीवृषध्मांक्षीकच्छरुहा ।
चूंडालापिण्डमुस्ताचनागरोत्थाकलापिनी ॥

अर्थ-नागरमुस्ता, नादेयी, वृषध्मांक्षी, कच्छरुहा, चूडाला, पिण्डमुस्ता नागरोत्था, कलापिनी, (नागरादि घनसंज्ञका, चक्रांक्षा, शिशिरा, चारुकेसरा, उच्चटा, पूर्णकोष्ठसंज्ञा)

भद्रमुस्तकनामानि ।

गांगेयंकुरुबिल्वंचभद्रमुस्तंकुटन्नटम् ।

अर्थ-गांगेय, कुरुबिल्व, भद्रमुस्त, कुटन्नट, (भद्रमुस्ता, भद्रमुस्तक, गुन्द्रा, कक्षोत्था, वराही, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कशेरु, क्रोडेष्टा, कुरुविन्दाख्या, सुगन्धिग्रन्थिला, हिमा, बल्या, कच्छोला, अर्णोद, वारिद, अब्द,)

हिन्दीभाषामें	मोथा, नागरमोथा, भद्रमोथा ।
वंगभाषामें	मुताथा, नागरमुता, मादलामुथा ।
मराठीभाषामें	मोथें, नागरमोथें, भद्रमोथें ।
गुजरातीभाषामें	मोथ्य, नागरमोथ्य, भद्रमोथ्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुस्ता, नागरमुस्ता, भद्रमुस्ता ।
तैलिंगीभाषामें	तुंगमुस्त (स्ता) सकहतुंग, विरु; तुंगगहुलविम ।
तामिलीभाषामें	कोरय, मुदहकाच ।
द्राविडीभाषामें	गरमोटा ।
लैटिनभाषामें	साइपरस् रोटंडस्, साइपरस्परटेन्यूइटिस् । Cyprusrotondous Cypruspertenuitis
फारसीभाषामें	शादकफी ।
अरबीभाषामें	मुष्कजमीन ।

श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् ।

अनूपदेशेयज्जातंमुस्तकंतत्प्रशस्यते ।
तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तंवरंनागरमुस्तकम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अनूपदेश (सजलस्थान) में उत्पन्न होनेवाला मोथा श्रेष्ठ होताहै तोभी मुनियोंने नागरमोथेकोही उत्तम कहे हैं ।

तच्छुद्धिर्यथा ।

मुस्तकंतुमनाक्क्षुण्णंकाञ्जिकेत्रिदिनोषितम् ।
पञ्चपल्लवतोयेनस्विन्नमातपशोषितम् ॥

गुडाम्बुनासिच्यमानंभर्जयेच्चूर्णयेत्ततः ।
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेतिशुद्ध्यति ॥

अर्थ-मोथेको लेकर तीन दिन कांजीमें डाले, फिर पंचपल्लवके जलमें भिजोकर धूपमें सुखावे, फिर गुडके जलसे सींचकर भूनकर उसका चूर्ण करे, बकरीका दूध और सैंजिनेके जलकी भावना देनेसे शुद्ध होताहै ॥

भद्रमुस्तकगुणाः ।

मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ।
कषायंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-भद्रमोथा-चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचक, कषेला तथा कफ, रक्तपित्त, तृषा ज्वर, अरुचि और कृमिरोगका नाश करे है ।

मुस्तकगुणाः ।

क्षुद्रमुस्तातुकटुकामेध्याकान्तिप्रदाहिमा ।
सुगन्धिकातुतुवराकटीरक्तरुजापहा ॥
कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी ।
रक्तरुग्व्रणदाहघ्नीकण्डूामशूलघर्महा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-मोथा-चरपरा, मेध्य, कान्तिदायक, शीतल, सुगन्धि, कषेला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पसीनेको दूर करे है ।

नागरमुस्तकगुणाः ।

तिक्तानागरमुस्ताकटुःकषायाचशीतलाकफनुत् ॥
पित्तज्वरातिसारारुचितृष्णादाहनाशिनीश्रमहृत् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-नागरमोथा-चरपरा, कषेला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा, दाह और श्रमका नाश करेहै ।

अपिच भद्रमुस्तागुणाः ।

भद्रमुस्तातुतुवराशीतातिक्ताचपाचका ।
कटुग्निदीपनीग्राहीचाम्लपित्तकफापहा ॥
अतिसारंरक्तदोषंज्वरंचैवविनाशयेत् ।

अरुचिंचतृषांचैवकृमीनपिविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-भद्रमोथा-कषेला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, अग्निदीपक, ग्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पियास और कृमिरोगका नाश करे है।

मोथेकी अनेक जाति हैं, कोई पानीमें होताहै, कोई मोटीडण्डीवाला और कोई छोटी डण्डीका होता है। किन्तु सर्वप्रकारके मोथोंमें नागरमोथा उत्तम होताहै।

व्यवहार-जड। मात्रा साढतीन ३॥ मासेकी।

कैवर्तमुस्तकनामानि।

कैवर्त्तीमुस्तकंवन्यंकुटंनटंकुटन्नटम्।
सितपुष्पंदासपूरंवालेयंपरिपेलवम् ॥

अर्थ-कैवर्त्तीमुस्तक, वन्य, कुट, नट, कुटन्नट, सितपुष्प, दासपूर, वालेय, परिपेलव, (कैवर्त्तमुस्त, दशपूर, प्लव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्त्ती, दाशपूर, दशपुर, परिपेल, पारिपेल, कैवर्तिमुस्तक. कैवर्त्तमुस्तक, वनसम्भव, धान्य, शीतपुष्प, जीर्णबुध्नक)

अस्यगुणाः।

वितुन्नकंहिमंतिक्तंकषायंकटुकांतिदम्।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केवटीमोथा-शीतल, कडुवा, कषेला. चरपरा, कान्तिदायक तथा कफ, रक्त, पित्त, वीसर्प, कोढ, खुजली और विषविकारको दूर करेहै।

अपिच।

परिपेलंकटूष्णंचकफमारुतनाशनम्।
व्रणदाहामशूलघ्नंरक्तदोषहरंपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-केवटीमोथा-चरपरा, गरम, कफवातनाशक तथा व्रण, दाह, आम, शूल और रक्तविकारको हरेहै।

विवरण-इसकी तृणजातिहै, इसकी जडमें सुगन्धि आतीहै, संस्कृतमें इसको कैवर्त्तीमुस्तक कहते हैं, हिन्दीमें केवटीमोथा, बंगलेमें केउदमुथा, केशुरीआमुथा, मराठीमें, केवडीमोथा, गुजरातीमें कैवर्त्तमोथा कहतेहैं।

व्यवहार-जड। मात्रा एक मासेकी।

शैलेयनामानि ।

शैलाख्यंशैलेयंवृद्धंसुभगंगिरिपुष्पकम् ।

अर्थ–शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन, शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अश्मपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुसार्यक, शिलोत्थ, शिलदद्रु, शिलाप्रसून, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें	भूरिछरीला, पत्थरका फूल ।
वङ्गभाषामें	शैलज ।
मराठीभाषामें	दगडफूल ।
गुजरातीभाषामें	पत्थरफूल ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहू, कलहू ।
तैलिङ्गीभाषामें	शैलेयमने द्रव्यमु ।
लैटिनभाषामें	पारमेलिया परलेटा । परमेलिया वरकोरेटा Parmaliar perletaP. Perforatas
फारसीभाषामें	दहाल ।
अरबीभाषामें	आशीना ।

अस्यगुणाः ।

शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु ।
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–छरीला–शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त गिरनेको दूर करै है ।

अपिच ।

शैलेयंशिशिरंतिक्तंसुगन्धिकफपित्तजित् ।
दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम् । (रा० नि०)

अर्थ–छरीला–शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन, श्वास और व्रणदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शैलेयंकटुकंशीतंसुगंधिलघुहृद्यकम् ।
रुच्यंचकफपित्तघ्नंदाहतृष्णावमिप्रणुत् ॥

श्वासंव्रणंचकण्डूंचकुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।
रक्तदोषंवातरोगंरक्तार्शंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–भूरिछरीला–चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग और रक्त, ववासीरका नाश करेहै।

मात्रा छै ६ मासे की ।

रेणुकाकपिलाकौन्तीहरेणुर्भस्मगन्धिका ।
कृतान्ताराजपुत्रीचनन्दिनीखरनादिनी ॥

अर्थ–रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा, अभीष्टा, वरत्करी, वरसुखी, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, धर्म्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	संभालूके बीज, रेणुका ।
वंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।
गुजरातीभाषामें	हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामें	रेणुका ।
तामिलीभाषामें	येट्टी ।
लैटिन्भाषामें	विटेक्सस्पेश्योझा । Vitex Speciosa

अस्यगुणाः ।

रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघुः ।
पित्तलादीपनीमेध्यापाचनीगर्भपातिनी ॥
बलासवातवैक्लव्यतृट्कण्डूविषदाहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ–रेणुका पचनमें चरपरी, कडवी, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, हलकी, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरानेवाली तथा कफ, वात, विकलता तथा कण्डू, विष और दाहका नाश करे है ।

अपिच ।

रेणुकातुकटुःशीताखर्जूकण्डूतिहारिणी ।
तृष्णादाहविषघ्नीचमुखवैमल्यकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी; शीतल तथा खर्जू, कण्डु, तृषा, दाह और विष-नाशक है और मुखको विमल करेहै ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकटुकाशीतामुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताचपित्तलालघ्वीचाग्निमेधाकरीमता ॥
पाचनीगर्भपातस्यकारिणीदद्रुकण्डुहा ।
तृष्णादाहविषक्लैब्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल, मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुंसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुकाकफवातघ्नीदीपनीपित्तलालघुः । (रा० व०)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है । रेणुकाको कोई वैद्य निर्गुण्डी अर्थात् संभालुके बीज कहते हैं, और कोई मेंहदीके बीज कहतेहैं । सो मेंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अंतर है ।

ग्रन्थिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णबर्हिपुष्पंस्थौणेयंग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ-ग्रन्थिपर्ण, बर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रन्थिपर्णक (शुक, कुकुर, बर्हिपुष्प, बर्ह, शुकबर्ह, विशीर्णाख्य, स्वारामगुच्छक, बर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, गुत्थक, बर्हिकुसुम, ग्रन्थिक, काकपुष्प, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रन्थिपर्णलक्षणम् ।

ग्रंथिकःपाण्डुरःकिञ्चित्कनिष्ठःसर्वसम्मतः ।
उत्तमःकृष्णवर्णोयःस्थूलोऽतीवचनिन्दितः॥(ड०मि०)

अर्थ-कुछ पाण्डुरंगका गंठिवन कनिष्ठ होताहै, काले रंगका उत्तम होताहै और स्थूल अत्यन्त निन्दित है ।

ग्रंथिपर्णगुणाः ।

ग्रंथिपर्णतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघु ।
कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गठिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका तथा कफ, वात, विष, श्वास, कण्डु और दुर्गन्धका नाश करेहै। यह सुगन्धिपदार्थ है, यह शरीरपर लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे है, तथा अलक्ष्मी, ज्वर और राक्षसबाधाको हरे है इसको हिन्दीभाषामें गठिवन कहतेहैं, वंगभाषामें गेंटेला, मराठीभाषामें गठोना और कर्णाटकीभाषामें गाठिवन कहतेहैं।

स्थौणेयकनामानि।

स्थौणेयंविकीर्णसंज्ञंहरितंशुकपुच्छकम्।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णसंज्ञ, हरित, शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, बर्हिशिख, शुकच्छद, मयूरचूड, विकीर्णरोम, कीरवर्णक, बर्हिचूड, शुकपिच्छ, शुकबर्ह, विकच, शीर्णरोमक, बर्हिबर्ह, कुक्कुर, शीर्णरोम)

स्थौणेयकगुणाः।

स्थौणेयंकफपित्तघ्नंसुगंधिकटुतिक्तकम्।
पित्तप्रकोपशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-थुनेर-कफ, पित्तनाशक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, पित्तके कोपको शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच।

स्थौणेयकंकटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत्।
मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजन्तुजित्॥
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान्।(भा०प्र०)

अर्थ-थुनेर-चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, शुक्रकारक, रुचिकारी तथा राक्षसबाधा, ज्वर, कृमि, कोढ, रुधिरविकार, पियास, दाह, दुर्गन्ध और शरीरके तिलोंको दूर करनेवाला है।

इसके अधिक गुण देखनेकी अभिलाषा हो तो भारतभैषज्यभास्करमें देखो। यह सुगन्धि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामें थुनेर कहतेहैं, वंगभाषामें ग्रन्थिपर्णभेद कहतेहैं, मराठीभाषामें थुणोर, कर्णाटकी भाषामें स्थौणज और लैटिन्भाषामें क्लेरोडेन्ड्रम् कहतेहैं।

चोरकनामानि।

तस्करश्चोरकश्चण्डाकितवःक्रोधमूर्च्छितः।

अर्थ-तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्च्छित (दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शङ्कित, खड्ग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पट्ट, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रंथिल, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रन्थिपर्ण, ग्रन्थिदल, ग्रन्थिपत्र, धनहर)

अस्य गुणाः ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तोवातकफावहः ।
नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशनः ॥

अर्थ-चोरक सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कडवा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है ।

अपिच ।

चोरकोमधुरस्तिक्तःकटुःपाकेकटुर्लघुः ।
तीक्ष्णोहृद्योहिमोहंतिकुष्ठकण्डूकफानिलान् ॥
रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगन्धविषव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-चोरक, मधुर, तिक्तरसयुक्त, पचनेमें चरपरा, चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कोढ, खुजली, कफ, वात, राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिरविकार, मेदरोग, ज्वर, गन्ध, विष और व्रणका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णोमधुस्तिक्तोलघुःस्मृतः ।
पाकेकटुश्चतीक्ष्णश्चहृद्योवातविकारहा ॥
कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशनः ।
व्रणंमेदंरक्तदोषंमुखनासारुजंजयेत् ॥
कृमीनजीर्णदौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनंविदुः ।
क्रव्यादबाधांशमयेदितिवैद्यैर्निरूपितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-चोरक-तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर, तिक्त, लघु, पाकके समय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्डू, कोढ, कफ, मेद, त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नासारोग, कृमि, अजीर्ण, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी और राक्षसबाधाको दूर करे है ।

यह सुगन्धि द्रव्य गठिवनहीका भेद है। इसको नैपाल देशमें भटेउर और पार्वती देशादिकोंमें चौरा कहतेहैं। मात्रा २ मासेकी।

कुष्ठनामानि।

कुष्ठंव्याधिःपारिभाव्यंव्याप्यंपाकलमुत्पलम्।

अर्थ-कुष्ठ, व्याधि, पारिभाव्य, व्याप्य, पाकल, उत्पल (कदाख्य, दुष्ट, व्याप्य, गदाख्य, आप्य, जरण, कौबेर, भासुर, गदाह्व, गदाह्वय, कुठिक, काकल, नीरुज, आमय, रुजा, गद, वाणीराज, पारिभद्रक, राम, कुत्सित, पावन, पद्मक, रोग, रोगाह्वय, किञ्जल्क, हरिभद्रक)

हिन्दी भाषामें	कूठ
वंग भाषामें	कुड
मराठी भाषामें	कोष्ठ
गुजराती भाषामें	कुठ, उपलेट।
कर्णाटकी भाषामें	कोष्ठ।
तैलङ्गी भाषामें	चंगल कुष्ठ। चेंगलिकोष्ठ।
इंग्रेजी भाषामें	कोस्टसरूट Costusroot
लेटिन् भाषामें	सौसुरीआलेप्पा Sausurealappa ओकलेंडियाकोस्टस
फारसी भाषामें	कोश्नह।
आरबी भाषामें	कुस्तबेहेरी

अस्य गुणाः।

कुष्ठंकटूष्णतिक्तंस्यात्कफमारुतकुष्ठजित्।
विसर्पविषकण्डूतिखर्जूदद्रुघ्नकान्तिकृत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-कूठ-चरपरा, गरम, कडवा तथा कफ, वात, कोढ, विसर्प, विष, खुजली, खर्जू और दादोंको दूर करेहै और कान्ति करेहै।

अपिच।

कुष्ठंश्वासंकासकुष्ठंज्वरंहिक्कांचनाशयेत।

अर्थ-कूठ-गरम, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, कडवा, हलका तथा वातरक्त, वीसर्प, खांसी, कोढ और वात, कफका नाश करेहै।

अपिच।

कोष्ठमुष्णंकटुस्तिक्तंस्वादुवृष्यंचशुक्रलम्।

रसायनं कान्तिकरं लघुवातकफापहम् ॥
कुष्ठंविषंविसर्पञ्च कण्डूं दद्रूं त्रिदोषकम् ।
पामारक्तविकारं च कासं वान्तितृषांतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तंलेपनाद्वातव्याधिजित् । (नि०र०)

अर्थ-कूठ-उष्ण, कटु, तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुक्रजनक, रसायन, कान्तिजनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विसर्प, कण्डू, दद्रू, त्रिदोष, पामा, रुधिरदोष, खाँसी और वान्तिको दूर करेहै, इसका लेप करनेसे वातव्याधि दूर होतीहै, यह वृक्षकी सुगन्धियुक्त जड है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके तीरपै है. मात्रा ६ रत्तीकी ।

कर्चूरनामानि ।

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविडःकल्पकःशठी ।

अर्थ-कर्चूर वेध्य, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी, (कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दी भाषामें	कचूर, काली हलदी ।
वंग भाषामें	एकाङ्गी ।
मराठी भाषामें	कचोरा । नरकचोग । काचरी ।
गुजराती भाषामें	कचूरी ।
कर्णाटकी भाषामें	कचोरा ।
तैलिङ्गी भाषामें	काचोरालु । ओकातो कचेट्टा ।
इंग्रेजी भाषामें	लॉंग झेडीआरो Longzedearo
लैटिन् भाषामें	कर्क्यूमाझरंबेट Curcumazerumbat
फारसी भाषामें	जरंबाद ।
अरबी भाषामें	एरकुलकाफुर ।

कर्चूरगुणाः ।

कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च
सुगन्धिःकटुपाकःस्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ॥
उष्णोलघुर्हरेच्छ्वासं गुल्मवातकफक्रिमीन् । (भा०प्र०)

अर्थ-कचूर-अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, कडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा कोढ, बवासीर, घाव और

खांसीको दूर करेहै। गरम, हलका और श्वास, गुल्म, वात, कफ तथा कृमिरोगका नाश करेहै।

अपिच।

कर्चूरःकटुतिक्तोष्णःकफकासविनाशनः।
मुखवैशद्यजननोगलगण्डादिदोषनुत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कचूर-चरपरा, कडवा, गरम, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा कफ, खांसी और गलगण्डादि रोगोंका नाश करे है।

अन्यच्च।

शठीतिक्ताचकटुकाचोष्णातीक्ष्णाग्निदीपनी।
सुगन्धिरुचिरालघ्वी मुखस्वच्छकरी मता॥
कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिरोगहा।
कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा॥
त्रिदोषक्रिमिवातानांज्वरप्लीहादिनाशकृत्। (नि०र०)

अर्थ-कचूर-कडवा, चरपरा, गरम, तीक्ष्ण, अग्निमें प्रदीपक, सुगन्धि, रुचिकारक, हलका, मुखको स्वच्छ करनेवाला, रक्तपित्तको कुपित करनेवाला तथा गलगण्ड, मंडलादिकोढ, बवासीर, घाव, खांसी, श्वास, गोला, कफ, त्रिदोष, कृमि, वात, ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश करनेवाला है।

अपिच।

"कर्चूरोमरुदामघ्नोदीपनोरक्तपित्तकृत्।
अजीर्णजरणश्वासेष्वपस्मारेपिपूजितः॥"

अर्थ-कचूर-वात तथा आमनाशक है, दीपन है. रक्त. पित्त, रोगको उत्पन्न करनेवाला है, अजीर्ण रोगको दूर करनेवालाहै. तथा मृगीरोगमें और श्वास रोगमेंभी इसको प्रयोगमें लेतेहैं।

विवरण-कचूरका क्षुप होताहै, पत्ते हलदीके समान होतेहैं, इसके तले आंबिया हलदीके समान गांठ होतीहै। उस गांठको सुखालेतेहैं और उसी गांठको कचूर कहतेहैं. मात्रा ४ मासेकी।

गन्धपलाशीनामानि।

शठीपलाशीषड्ग्रन्थासुव्रतागन्धमूलिका।
गन्धारिकागन्धवधूर्वधूःपृथुपलाशिका॥ (भा० प्र०)

अर्थ–शठी, पलाशी. षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका, गन्धारका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रंथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, षटी, गन्धशटी, कर्बुर, कर्चुर, सुगन्धासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, सुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल, गन्धपलाशी, जीमूतमूल, कच्छोरा, हिमजा, हैमी, षड्ग्रन्थि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तूणी, दूर्वा, गन्धा, पृथुपलाशिका, सठी, अम्लहरिद्रा, सौम्या, हिमोद्भवा, गन्धवधू.)

हिन्दीभाषामें	गन्धपलाशी, कचूरभेद, कपूरकचरी ।
बङ्गभाषामें	शटी, आम, आदा, गन्धशठी ।
मराठीभाषामें	कापूरकचरी ।
गुजरातीभाषामें	कपूरकाचरी ।
कर्णाटकीभाषामें	गन्धशटी ।
तैलङ्गभाषामें	किचलिरागड्डल ।
लैटिन्भाषामें	हिडिक्यम् स्पिकेटम् । Hedychum Specatum
अरबीभाषामें	जरंबाद ।
वम्	आंबेहलद ।

अस्य गुणाः ।

—भवेद्गन्धपलाशी तु कषायाग्राहिणीलघुः ।
तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी ॥
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा । (भा० प्र०)

अर्थ–गन्धपलाशी–कषेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास, शूल, हिध्म और ग्रहनाशक है ।

अपिच ।

ससुगन्धः कर्चुरकस्तीक्ष्णोदाहीकटुःस्मृतः ।
तिक्तश्चतुवरश्चैव शीतवीर्यो लघुःस्मृतः ॥
किञ्चित्पित्तंकोपयतिकासश्वासज्वरापहः ।
शूलहिक्कागुल्मरक्तरुजंवातंत्रिदोषकम् ॥
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा । (नि० र०)

अर्थ-कपूरकचरी-(छोटाकचूर), तीक्ष्ण, दाहजनक, चरपरी. कडवी, कषेली, शीतवीर्य्य, हलकी, किंचित् पित्तकारक तथा खांसी, श्वास,-ज्वर, शूल, हुचकी, गोला, रुधिररोग, बादि, त्रिदोष, मुखकी विरसता. दुर्गन्ध, घाव, आम, वमन और हिध्मरोगको नष्ट करेहै ।

विवरण । वेल होतीहै, इसकी, जड सुगन्धियुक्त कन्दकी समान होतीहै, उसके टुकडे कर सुखालेतेहैं, उसीको गन्धपलाशी अर्थात् कपूरकचरी कहतेहैं.

मुरानामानि ।

गंधिनीतालपर्णीतुदैत्यागन्धकुटीमुरा ।

अर्थ-गन्धिनी, तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, (पुरागन्धवती, दिव्या, गन्धाढ्या, गन्धमादिनी, सुरभि, भूरिगन्धा, कुटी, गन्धिनी. भूतगन्धा, तालपर्णिका और मुरामांसी)

हिन्दीभाषामें	एकांगी मुरा ।
वंगभाषामें	मुरामांसी ।
मराठीभाषामें	एकांगीमुरा । मोरमांसी ।
कर्णाटकी भाषामें	मुरे ।
गुजराती भाषामें	मोरमांसी ।

अस्यागुणाः ।

मुरातिक्ताहिमास्वाद्वीलघ्वीपित्तानिलापहा ।
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नीकुष्ठकासविनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-एकाङ्गी-कडवी, शीतल, स्वादिष्ठ, लघु तथा पित्त. वात, ज्वर, रुधिरदोष, भूत, राक्षस, कोढ और कासरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

एकांगीकटुकातिक्ता तुवराशीतला मता ।
लघुस्वादुसुगन्धास्यादिंद्रियाणांचहर्षदा ॥
कफपित्तश्वासवातरक्तदोषविषापहा ।
दाहभ्रमतृषामूर्च्छाज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥
पिशाचराक्षसालक्ष्मीबाधानाशकरीमता । (नि०र०)

अर्थ-एकाङ्गी-चरपरी, कडवी, कषेली, शीतल, हलकी. स्वादिष्ठ, सुगन्धि. इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली तथा कफ, पित्त, श्वास, वात, रुधिरविकार. विषवि-

कार, दाह, भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, कोढ, पिशाचबाधा, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करैहै ।

लामज्जकनामानि ।

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलयंलघु ।
इष्टकापथिकंसेव्यंनलदंचावदातकम् ॥

अर्थ-लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय लघु, इष्टकापथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, जलाशय और अवदाहक)

हिन्दी भाषामें	लामज्जक ।
वंगभाषामें	गन्धवेणा ।
मराठीभाषामें	लावज, पिंवळावाळा ।
गुजराती भाषामें	सुगंधिपीलु, खडजल, जलवालो ।
तैलंगी भाषामें	तेल्लवट्टिवेरु ।

श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ।

दीर्घमूलंदृढंसूक्ष्ममुत्तमंगन्धसंयुतम् ।
देशेसाधारणेजातंलामज्जंभद्रकंभवेत् ॥ (भै० चि०)

अर्थ-जिसकी वडी जड हो, दृढ हो, सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमें उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होताहै ।

अस्य गुणाः ।

लामज्जकंहिमंतिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, हलका, त्रिदोषनाशक तथा रक्तदोष, त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे है ।

अपिच ।

लामज्जकंहिमं तिक्तंमधुरं वातपित्तजित् ।
तृड्दाहश्रममूर्च्छार्त्तिरक्तपित्तज्वरापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा, दाह, श्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

लामज्जकन्तुमधुरंतिक्तं शीतञ्चपाचकम् ।

स्तम्भनंलघुपित्तघ्नंवाततृड्दाहनाशनम् ॥
त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवांतिविनाशनम् ।
ज्वरश्च रक्तदोषश्च स्वेदकृच्छ्रं मदंकफम् ॥
व्रणंविषंविसर्पंश्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-लामज्जक-मधुर, तिक्त (कडवा), शीतल, पाचन, स्तम्भन, हलका, पित्तनाशक तथा वात, तृषा, दाह, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त, शूल, वमन, ज्वर, रुधिरविकार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, घाव, विष और विसर्प इनको दूर करे है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि तृण नदीके तीर वंगदेशमें होताहै ।

मात्रा २ मासेकी ।

स्पृक्कानामानि ।

स्पृक्कालताकोटिवर्षामरुन्माला लतामरुत् ।
लङ्कारिकासमुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्का-लता, कोटिवर्षा, मरुन्माला, लतामरुत्, लङ्कारिका, समुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, (देवपुत्री, देवी, पृक्का, पिशुना, लघु, वधू, लङ्कायिका, लंकापिका, ब्राह्मणी, मनु, मालालिका, भालानी, लघ्वी, पञ्चगुसिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत्, माला, कोटी, वर्षा, लङ्कोपिका, वर्षालङ्कायिका, तस्कर, चोरक, चण्ड, असृक्)

हिन्दीभाषामें	असवरग, अस्परक पुरी ।
वङ्गभाषामें	पिडिङ् शाक ।
मराठीभाषामें	स्पृक्का, गगौना कापूरी, शाक ।
कर्णाटकीभाषामें	हिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	स्पृक्कुथनेड्डद्रव्यमु ।
उत्	फिरिकिशाक ।

अस्या गुणाः ।

स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-असवरग-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, कडवा, संपूर्ण दोषनाशक तथा कोढ, खुजली, विष, पसीना, दाह, रक्त, ज्वर और रक्तविकारको हरेहै ।

अपिच ।

स्पृक्काकटुःकषायाचतिक्ताश्लेष्मार्तिकासजित् ।
श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनीचसुगंधिदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—असवरग—चरपरा, कषेला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा-खांसी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धि, दायक है ।

अन्यच्च ।

स्पृक्कातुमधुरापाकेहृद्याचकफपित्तनुत् । (रा० व०)

अर्थ—असवरग—पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी और कफपित्तनाशक है)

अपिच ।

गगौनाकटुकातिक्तातुवरास्वादुशीतला ।
वृष्याचैवसुगंधिश्चकासतृण्मेहनाशिनी ॥
कण्डूंत्रिदोषंकुष्ठंचविषदोषंज्वरं कफम् ।
स्वेदंदाहंरक्तदोषंदौर्गन्ध्यञ्चतथाश्मरीम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं च शूलञ्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ—असवरग—चरपरा, कडवा, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, सुगन्धि तथा खांसी, पियास, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ । कोढ, विषविकार, ज्वर, कफ, पसीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करेहै ।

एलावालुकनामानि ।

एलावालुकमैलेयंसुगन्धिहरिवालुकम् ।

अर्थ—एलावालुक—ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, (वालु, वालुक, एलवालुक, एलवालु, आलुक, एल्ववालुक, कपित्थत्वक्, गन्धत्वक्, कुष्ठगन्धी, कपित्थ, गन्धात्वक्, एलालु, एल्वालु)

अस्य गुणाः ।

एलालु कटुकंपाके कषायंशीतलं लघु ।
हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगुदक्रिमीन् । (भा० प्र०)

अर्थ-एलुआ-पचनेमें चरपरा, कषेला, शीतल, हलका तथा खुजली, घाव, छर्दि, पियास, खांसी, अरुचि, हृदयरोग, कफ, विष, रक्त, पित्त, कोढ, मूत्ररोग और कृमिरोगको नष्ट करैहै ।

अपिच ।

एलावालुकमत्युग्रंकषायंकफवातनुत् ।
मूर्च्छार्तिज्वरदाहांश्चनाशयेद्रोचनंपरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-एलुआ-अतिउग्र, कषेला, कफवातनाशक तथा मूर्च्छा, ज्वर और दाहको दूर करैहै, और अत्यन्त रुचिको उत्पन्न करैहै ।

अन्यच्च ।

ऐलेयंतुवरं रुच्यमत्युग्रं शीतलं लघु ।
पाकेकटुसुगन्धिस्यात्तिक्तंशुद्धिकरंमतम् ॥
कफमूर्च्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान् ।
छर्दितृट्कासहृद्रोगपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
वध्मरुक्कृमिकुष्ठानिह्यरुचिंचविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-एलुवा-कषेला, रुचिकारक, अति उग्र, शीतल, हलका, पाकमें चरपरा, सुगन्धि, कडवा, शुद्धिकारक तथा कफ, मूर्च्छा, वात, दाह, ज्वर, खुजली, विष, व्रण, वमन, तृषा, खांसी, हृद्रोग, रक्तपित्तरोग, वध्मरोग, कृमि, कोढ और अरुचिको दूर करैहै ।

एलुआ-सुगन्धि पदार्थ है, इसमें कूठकी समान सुगंधि आतीहै ।

संस्कृतमें	एलावालुक ।
हिन्दीमें	एलुवा ।
बङ्गलेमें	एलवालुका ।
तैलिङ्गीमें	कुतुखुडम ।
मराठीमें	वेलची ।

प्रपौण्डरीकनामानि ।

श्रीपुष्पंपुण्डरीशीतंपौण्डर्यंपुण्डरीयकम् ।
प्रपौण्डरीकंचक्षुष्यंपुण्डर्यंपौण्डरीयकम् ॥

अर्थ-श्रीपुष्प-पुण्डरी, शीत, पौण्डर्य, पुण्डरीयक, प्रपौण्डरीक चक्षुष्य, पुण्डर्य, पौण्डरीयक, (पुण्डरीक, पौण्डरीक, पौण्डर्य्य, तालपुष्पक, सालपुष्प, हष्टिकृत, स्थलपद्म, सुपुष्प, सानुज, अनुज)

अस्य गुणाः ।

प्रपौण्डरीकंचक्षुष्यंमधुरंतिक्तशीतलम् ।
पित्तरक्तव्रणान्हन्तिज्वरदाहतृषापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पुण्डरिया-नेत्रोंको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर, दाह और तृष्णाकी शान्ति करेहै ।

अपिच ।

पौण्डर्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम् ।
चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफास्रनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पुण्डरिया-मीठा, कडवा, कषेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमेंभी मीठा, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला, तथा पित्त कफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगंधि वृक्ष है, इसके रसको आंखमें लगानेसे आंखके रोग दूर होतेहैं, इसको हिन्दीभाषामे पुण्डेरी, पुण्डरिया वंगभाषामें पुण्डरिया । मराठीमें पुण्डरीक वृक्ष। तैलिङ्गीमें पुंडरीक मनुगे विध्मानमु । गुजरातीमें पाण्डेरवा । कर्नाटकी भाषामें पुंडरीक कहते हैं ।

पर्पटिनामानि ।



पनडी

जतुकारञ्जनीकृष्णापर्पटीचक्रवर्तिनी ।
जतुकृज्जनिसंस्पर्शाजनेष्टाजननीतथा ॥

अर्थ-जतुका, रञ्जनी, कृष्णा, पर्पटी, चक्रवर्त्तिनी, जतुकृत्, जनि, जनेष्टा, जननी, (जतुकारी, तिर्यक्फला, निशान्धा, सुपत्रिका, बहुपुत्री, राजवृक्षा, कपिकच्छु, फलोपमा, सूक्ष्मवल्ली, भ्रमरी, कृष्णवल्लिका, विज्जुलिका, कृष्णरुहा, ग्रन्थिपर्णा, सुवर्चिका, तरुवल्ली, दीर्घफला, रजनी, जतूका, जनिजन्तुका)

अस्या गुणाः ।

पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघुः ।
विषव्रणहरीकण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पर्पटी-कषेली, कडवी, शीतल, वर्णकारक, लघु तथा विष, घाव, खुजली, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

जन्तुकाशिशिरातिक्तारक्तपित्तकफापहा ।
दाहतृष्णावमिघ्नीचरुचिकृद्दीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जनी-शीतल, कडवी तथा रक्तपित्त, कफ, दाह, तृषा और वमन-निवारक है तथा रुचिकारक और अग्निदीपक है ।

अपिच ।

पर्पटीशीतलावर्ण्या तुवरातिक्तका लघुः ।
अग्निदीप्तिकरीरुच्यारक्तपित्तकफाञ्जयेत् ॥
पित्तं च रक्तदोषं च कुष्ठंदाहं वमिं तृषाम् ।
कुष्ठरोगंकण्डुरोगंव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-पर्पटी-शीतल, वर्णकारक, कषेली, कडवी, हलकी, अग्निदीपक, रुचिकारक तथा रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार, कोढ, दाह, वमन, तृषा, कोढ, विष, खुजली और व्रणका विनाश करे है । यह मालवदेशमें प्रसिद्ध है ।

नलिका नामानि ।

नलिकाविद्रुमलता कपोतचरणानटी ।
धमन्यंजनकेशीचनिर्मध्याशुषिरानली ॥

अर्थ–नलिका–विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अञ्जनकेशी, निर्मध्या, शुषिरा, नली (कपोतांघ्रि, विद्रुमलतिका, कपोतबाणा, नलिनी, अध्मानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्त्तकी)

अस्यागुणाः ।

नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ–नलिका–शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ, कण्डू और ज्वरको नष्ट करे है ।

अपिच ।

नलिकाकटुकातिक्तातीक्ष्णा च मधुरासरा ।
लघ्वीशीताचसंप्रोक्ताचक्षुष्यावातपित्तहा ॥
रक्तपित्तक्रिमिविषकफवातोदरापहा ।
शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषतृषाहरा ॥
कण्डूकुष्ठज्वरव्रणदुर्नामानं चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ–नलिका–चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल. नेत्रोंको हितकारी तथा वातपित्त, रक्तपित्त, कृमि, विष, कफ, वातोदर, शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार. तृषा, खुजली, कोढ, ज्वर, घाव और बवासीरको दूर करे है ।

यह सुगंधिद्रव्य उत्तरखण्डमें नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरूप मूँगेके समान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है । कर्णाटकमें वेसनलिके कहते हैं । और तैलिङ्ग देशमें पकेसुक सुगंधि द्रव्यसु कहते हैं ।

पुदिनानामानि ।

व्यञ्जनोवान्तिहारीचरुचिश्यःशाकशोभनः ।

अर्थ–व्यञ्जन–वान्तिहारी, रुचिश्य, शाकशोभन,(सुगन्धिपत्र, अजीर्णहर)

हिन्दी भाषामें	पोदीना ।
वङ्ग भाषामें	पुदिना ।
मराठी भाषामें	पुदिना ।
गुजराती भाषामें	फोदिनो ।
इंग्रेजीभाषामें	टोल् रेड्मिंट् । Tallrednment

लैटिन्भाषामें	मेन्थासिल्वेसट्रिस। Mentha Sylnestris
फिरंगीभाषामें	ओड टोलाव ।
फारसीभाषामें	नोअना ।
अरबीभाषामें	हवा ।

अस्य गुणाः ।

पुदिनस्तुगुरुःस्वादूरुच्योहृद्यःसुखावहः ।
मलमूत्रस्तम्भकरः कफकासमदापहः ॥
अग्निमांद्यविसूचिघ्नः संग्रहण्यतिसारहा ।
जीर्णज्वरंकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-पोदीना-भारी, स्वादिष्ठ, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, सुखावह-(सुखका देनेवाला), मल और मूत्रको रोकनेवाला तथा कफ, खांसी, मंदाग्नि, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार जीर्णज्वर और कृमिरोगका नाश करे है ।

विवरण-इसका छोटा क्षुप होताहै, मनुष्य घर और बागोंमें लगालेते हैं पोदीना प्राचीन नहीं है, कारण यह है कि, अतिरिक्त निघण्टुरत्नाकरके (जो कि थोडे दिनोंसे बनाहै) और किसी ग्रन्थमें नहीं देखा जाता, पोदीनेका अर्क निकालते हैं, वह अर्क वमनादिक अनेक रोगोंको दूर करताहै, पोदीनेकी चटनी खानेसे अत्यन्त भूंख लगती है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे कर्पूरादिवर्गः ।



हरीतक्यादिवर्गः।

दक्षंप्रजापतिंस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः।
कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः॥
रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाः स्मृताः।
नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासांचलक्षणम्॥
केचवर्णगुणाःके च का च कुत्रप्रयुच्यते।
केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति॥
प्रश्नमेतद्यथापृष्टं भगवन्वक्तुमर्हसि।
अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत्॥
पपातबिंदुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम्।
ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी॥

अर्थ–प्रसन्नचित्त बैठेहुए दक्षप्रजापतिसे अश्विनीकुमारोंने पूछा कि, हे भगवन्! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहां उत्पन्न हुई? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ? कितने प्रकारकी है? इसमें कितने रस और उपरस रहतेहैं, सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या हैं? उनके लक्षण क्या हैं? उनके रंग और गुण क्या क्या हैं? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमें आसकतीहै? और हरीतकी किसकिस द्रव्यके योगसे कौन कौनसे रोगोंका नाश करतीहै; इसप्रकार दोनों अश्विनीकुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापतिने उत्तर दिया कि, जिस समय देवराज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमेंसे एक बूंद पृथ्वीपर गिरपडी, उस अमृतकी बूंदसे सातप्रकारसे हरीतकी उत्पन्न हुई।

हरीतकीनामानि।

हरीतक्यभयापथ्याकायस्थापूतनामृता।
हैमवत्यव्यथाचापिचेतकीश्रेयसीशिवा॥
वयस्थाविजयाचापिजीवन्तीरोहिणीति च।

अर्थ-हरीतकी-अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी, (सुधा, बल्या, रसायनफला, पाचनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, वनतिक्ता, शक्रसृष्टा, सुधोद्भवा, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवनिका, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या, देवी, दिव्या, हिमजा, गिरिजा)



संस्कृतभाषामें	हरीतकी, बालहरीतकी ।
हिन्दीभाषामें	हरड, हर्र, हर्ड ।
वंगभाषामें	हरीतकी ।
मराठीभाषामें	हर्त्तकी । बाळहरडी ।
गुजरातीभाषामें	हरडे । हिमज ।
कर्णाटकीभाषामें	अणिलेय, प्रशसे ।
तैलिङ्गीभाषामें	करक्कायि, करकचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कडकै ।
उत्	हरिडा । करेडा ।
द्रा०	कलूरा ।
इंग्रेजीभाषामें	मेरोवेलेन्स् । Myrobalons [हिमजा]
	ब्लाकमाइरोनेलन्स् । Black Myronelans
लटिन्भाषामें	टरमिनेलिया, केबुला । Terminalia chebula

फारसीभाषामें हलैले कलांजीरेजवी अस्फर हलैले जर्द ।
अरबीभाषामें एहलीलज, कावली, अहलीजअस्फर, अहलीज असवद ।

हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैवपूतना चामृताभया ।
जीवन्तीचेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ॥

अर्थ–विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, इन भेदोंसे हर्ड सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ताविजयावृत्तासारोहिणीस्मृता ।
पूतनास्थिमतीसूक्ष्माकथितामांसलाऽमृता ॥
पंचरेखाभयाप्रोक्ताजीवन्तीस्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखाचेतकीज्ञेयासप्तानामियमाकृतिः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–विजयाहरड–तोमडीके समान गोल और लम्बी होतीहै, रोहिणी हरड गोल होतीहै, पूतना हरड छोटीगुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली हरड मोटीहोतीहै, पांचरेखावाली अभया हरड होतीहै, जीवन्ती हरड स्वर्णके समान पीलेरंगकी होतीहै, और चेतकी हरड तीनरेखावाली होतीहै ।

जन्मस्थानम् ।

विंध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपूतना
सिंधौस्यादथरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिस्थानके ।
चम्पायाममृताभया च जनितादेशे सुराष्ट्राह्वये
जीवन्तीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदा बुधैः ॥
(नि० र०)

अर्थ–विजयाहरड विंध्याचल पर्वतमें उत्पन्न होतीहै । पूतना और चेतकी हरड हिमालय पर्वतपै होतीहै । रोहिणी हरड सिंधु नदीके तीरपै होतीहै । और विजया हरड प्रतिस्थानमें होतीहै, अमृता और अभया हरड चम्पादेशमें अत्यन्त होतीहै । और जीवन्ती हरड सौराष्ट्रदेशमें उत्पन्न होतीहै ।

सप्तानां प्रयोगभेदाः ।

विजयासर्वरोगेषुरोहिणीव्रणरोहिणी ।

प्रलेपेपूतनायोज्याशोधनार्थेऽमृताहिता ॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ताजीवन्तीसर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थेचेतकीशस्तायथायुक्तंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-सर्व प्रकारके रोगोंमें विजया हरड देनी चाहिये, व्रणको भरनेके लिये रोहिणी हरड उत्तम है, लेपमें पूतना लेनी चाहिये, विरेचनके अर्थ अमृता हरड हितकारी है, नेत्ररोगमें अभया हरड श्रेष्ठ है, जीवन्ती हरड सर्व रोगोंको हरनेवाली है और चूर्णमें चेतकी हरड डालनी चाहिये ।

दोप्रकारकी चेतकी हरडका स्वरूप ।

चेतकीद्विविधाप्रोक्तासिताकृष्णाचवर्णतः ।
षडंगुलायताशुक्लाकृष्णात्वेकांगुलास्मृता ॥

अर्थ-चेतकी हरड-सफेद और काली इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां सफेद रंगकी हरड छै अंगुल परिमाण लंवी होती है और काले रंगकी चेतकी हरड एक अंगुल परिमाण लम्बी होतीहै ।

सर्वप्रकारकी हरडोंके रेचनगुण ।

काचिदास्वादमात्रेणकाचिद्गन्धेनभेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेनदृष्टान्याचतुर्धाभेदयेच्छिवा ॥

अर्थ-कोई हरड खानेसे, कोई सूंघनेसे, कोई स्पर्श करनेसे, और कोई दर्शनमात्रसेही दस्त लातीहै, ऐसे चार प्रकारकी होतीहै ।

चेतकी हरडके रेचनगुण ।

चेतकीपादपच्छायामुपसर्पन्तियेनराः ।
भिद्यन्तेतत्क्षणादेवपशुपक्षिमृगादयः ॥
चेतकीतुधृताहस्तेयावत्तिष्ठतिदेहिनः ।
तावद्भिद्येतवेगैस्तुप्रभावान्नात्रसंशयः ॥
नधार्यासुकुमाराणांकृशानांभेषजद्विषाम् ।
चेतकीपरमाशस्ताहितासुखविरेचनी ॥

अर्थ-चेतकी हरडके वृक्षकी छायामें जो मनुष्य, पशु, पक्षी, मृगादिक गमन करतेहैं, उन जीवोंको उसीसमय दस्त होनेलगतेहैं जबतक जो प्राणी

चेतकी हरडको हाथमें धारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हरडके प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और जो मनुष्य औषधिसे शत्रुता रखतेहैं, उनको कभीभी धारण नहीं करना चाहिये। चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त करानेवाली है।

विजयाहरडकी प्रशंसा।

सप्तानामपिजातीनांप्रधानाविजयास्मृता।
सुखप्रयोगा सुलभासर्वरोगेषु शस्यते॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सातप्रकारकी हरडोंमें विजया नामवाली हरड सर्वमें प्रधान है, प्रयोगभी सुखकारक है। सुलभ अर्थात् सब स्थानोंमें मिलती है और सर्व रोगोंमें दी जातीहै।

हरीतकीगुणाः।

कषायाम्लाचमधुरातिक्ताकटुरसान्विता।
इति पंचरसा पथ्या लवणेनविवर्जिता॥

अर्थ-कषाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके अतिरिक्त पांच रसवाली है।

रूक्षोष्णादीपनीमेध्यास्वादुपाकारसायनी।
चक्षुष्यालघुरायुष्याबृंहणीचानुलोमनी॥
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरक्रिमीन्।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान्॥
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान्।
कामलांशूलमानाहंप्लीहानंचयकृत्तथा॥
अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंचनाशयेत्॥

अर्थ-हरड-रूखी, उष्णवीर्य्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, पाकमें स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, हलकी आयुवर्धक, बृंहण, (बलकारक) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ, सूजन, उदररोग, कृमी, स्वरभंग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान (अफारा), तृषा, वमन, हुचकी, कण्डू, हृदयरोग,

कामला, शूल, आनाह, यकृत्, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका नाश करेहै ।

अम्लभावाज्जयेद्वातंपित्तंमधुरतिक्ततः ।
कफंरूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नीततोभया ॥

अर्थ-हरड-अम्लरससंयुक्त होनेसे वातका नाश करतीहै, मधुर और तिक्तरसयुक्त होनेसे पित्तका नाश करतीहै और कषाय तथा रूक्षतासे कफका नाश करतीहै, इसप्रकार हरडे त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृच्चसा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥

अर्थ-हरड-स्वादु, तिक्त, कषेलेपनसे पित्तको हरतीहै, कटु, तिक्त और कषेलेपनसे कफको हरतीहै और अम्लपनसे वातका नाश करतीहै ।

अन्यच्च ।

हरीतकीतुसंप्रोक्तापंचभिस्तुरसैर्युता ।
लवणेनचसाहीनायोगवाहीरसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरीलघ्वीसरामेध्याचलेखना ।
वातानुलोमनीहृद्याचक्षुष्यास्मृतिकारका ॥
वयसःस्थापनीबल्याबुद्धिदाकुष्ठनाशिनी ।
विवर्णतानाशिनीवैचेंद्रियाणांप्रसादनी ॥
शिरोरोगंनेत्ररोगंवैस्वर्यंविषमज्वरम् ।
पुराणंचज्वरंपाण्डुंहृद्रोगंकामलांतथा ॥
शोषंशोथंमूत्रघातंग्रहणींचातिसारकम् ।
अश्मरींचज्वरंमेहंक्रिमिंश्वासंविषोदरम् ॥
कासंघर्ममलस्तम्भमानाहंकर्णरोगकम् ।
अर्शःप्लीहांत्रिदोषञ्चगुल्मंहिक्कांव्रणंतथा ॥
ऊरुस्तम्भञ्चशूलञ्चनाशयेदरुचिंतथा ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-हरड-पांच रसोंसे युक्तहै और लवणरसकरके वर्जितहै । योगवाही, रसायन, अग्निप्रदीपक, हलकी, दस्तावर, मेधाजनक, लेखन, वातको अनुलोमन करनेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, अवस्थास्थापक, बलकारक, कोढका नाश करनेवाली, विवर्णतानाशक, इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेवाली तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, विषमज्वर, पुराना ज्वर, पाण्डु, हृदयरोग, कामला, शोष, सूजन, मूत्राघात, संग्रहणी, अतिसार, पथरी, वमन, प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग, खाँसी, पसीना, मलस्तम्भ, आनाह, कर्णरोग, बवासीर, प्लीहा, त्रिदोष, गुल्म, हुचकी, व्रण, ऊरुस्तम्भ, शूल और अरुचिका नाश करैहै ।

हरीतक्याः पञ्चरसावस्थितिनिर्णयः ।

पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नाय्वामम्लोव्यवस्थितः ।
वृन्तेतिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मधुर रस, नसोंमें अम्लरस, डंठलमें तिक्तरस, छालमें कटुरस और अस्थियोंमें कषेला रस रहताहै ।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवास्निग्धाघनावृत्तागुर्वीक्षिताचयांभसि ।
निमज्जेत्साप्रशस्ताचकथितातिगुणप्रदा ॥
नवादिगुणयुक्तत्वंतथैकत्रद्विकर्षता ।
हरीतक्याःफलेयत्रद्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, घन, गोल, भारी और पानीमें डालनेसे डूबजावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होतीहै अथवा जो हरड पूर्वोक्त गुणयुक्तहो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुणवाली जानना ।

चर्वितादिहरीतकीगुणाः ।

चर्वितावर्द्धयत्यग्निंपेषितामलशोधिनी ।
स्विन्नासंग्राहिणीपथ्याभृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् ।

अर्थ-हरड दातोंसे चबाकर खानेसे अग्निको बढातीहै, पीसकर खानेसे मलको शोधन करैहै, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करतीहै पकाईहुई खानेसे मलको रोकतीहै और भुनी हुई हर्ड त्रिदोषका नाश करैहै ।

भक्तान्वितहरीतकीगुणाः ।

उन्मीलिनीबुद्धिबलेंद्रियाणांनिर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम्।
विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन ॥

अर्थ-हरड भोजनके साथ भक्षणकीहुई बुद्धि और बलको बढातीहै तथा इन्द्रियोंको प्रकाशित करती है और पित्त, कफ, वातका नाश करतीहै तथा मल, मूत्र, और मलोंको निकालतीहै ।

भुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणाः ।

अन्नपानशतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकीहरत्याशुभुक्तस्योपरियोजिता ॥

अर्थ-भोजनके पीछे भक्षण कीहुई हरड अन्नपानके दोष और वात, पित्त, कफसे उत्पन्न हुये दोषोंको दूर करती है ।

हरीतक्या विशेषगुणाः ।

लवणेनकफंहन्तिपित्तंहन्तिसशर्करा ।
घृतेनवातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अर्थ-हरड-लवणके साथ कफको, मिश्रीके साथ पित्तको, घीके साथ वातसे उत्पन्न हुए रोगोंको और गुडके साथ खानेसे संपूर्ण रोगोंको नाश करती है ।

ऋतुहरीतकीगुणाः ।

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैःक्रमात् ।
वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हरड-वर्षाऋतुमें सैन्धव लवणके साथ, शरदृऋतुमें पीपलके साथ, वसंतऋतुमें मधुके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ रसायन गुणोंकी चाहनावालोंको सेवन करनी चाहिये ।

हरीतक्याःश्रेष्ठगुणत्वम् ।

हरीतकीमनुष्याणांमातेवहितकारिणी ।
कदाचित्कुप्यतेमातानोदरस्थाहरीतकी ॥ (राजवल्लभ)

---

१ चैत्र वैशाख-वसन्तऋतु ॥ ज्येष्ठ आषाढ-ग्रीष्मऋतु ॥ श्रावण भाद्रपद-वर्षाऋतु ॥ आश्विन कार्तिक-शरदृतु ॥ मार्गशिर पौष-हेमन्तऋतु ॥ माघ फाल्गुन-शिशिरऋतु ॥

अर्थ-हरड़ मनुष्योंको माताकी समान हित करनेवालीहै, माता तो कभी २ कुपितभी होजातीहै, परंतु उदरमें स्थित अर्थात् खाईहुई हरड कभी भी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकीगुणाः ।

द्राक्षांनियोज्यविधिनाद्विगुणंशिवायाः
संचूर्ण्यचाक्षफलमानमितांप्रभाते ।
कल्याणिकाञ्चगुकृतांगुटिकामिमांयः
संसेवतेभवतितस्यहिपित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानिकासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवाविकाराः
सर्वेचतेविलयमाशुसुखेनयान्ति ॥

अर्थ-हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके बहेडेके फलकी समान गोली बनावे उस कल्याणकारी-गोलीका प्रातःकालमें जो मनुष्य सेवनकरताहै, उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोष, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खांसी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते हैं ।

भुक्तेपथ्याऽभुक्तेपथ्याभुक्ताभुक्तेपथ्यापथ्या ।
जीर्णेपथ्याऽजीर्णेपथ्याजीर्णाजीर्णेपथ्यापथ्या ॥

अर्थ-हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनों समयमें पथ्यहै, तथा जीर्णमें और अजीर्णमें भी पथ्यहै ।

हरीतकीसेवननिषेधः ।

"अध्वातिखिन्नोबलवर्जितश्च रूक्षःकृशोलंघनकर्षितश्च ।
पित्ताधिकोगर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयांनखादेत्" ॥

अर्थ-मार्गमें चलनेसे थकाहुआ, वलहीन, रूक्ष, कृश, लंघन करनेसे दुर्वल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकाला गया हो अर्थात् फस्त खुलीहोय, नवीनज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोषयुक्त इत्यादि कहेहुये मनुष्योंको हर्ड खानी निषेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिः ।

हरस्यभवनेजाताहरिताचस्वभावतः ।
हरेत्तुसर्वरोगांश्चतेनप्रोक्ताहरीतकी ॥ (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ–हर (महादेव) के भवनमें उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे रंगवाली और सर्व रोगोंको हरतीहै, इसीकारण इसका नाम हरीतकी है ।

अस्य बीजगुणाः ।

हरीतक्याःस्मृतंबीजंचक्षुष्यंगुरुवातनुत् ।
पित्तनाशकरंचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–हरडके बीज नेत्रोंको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी हैं ।

विवरण–इसका बडा वृक्ष होताहै, पञ्जाब, शरद् और काबुल देशमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै । इसके पत्ते अडूसेकी समान होतेहैं, इसका फूल महीन आमके मौरकी समान होताहै, इस वृक्षको संस्कृतमें "नाभक" कहतेहैं । हरडकी अनेक जाति हैं । व्यवहार–हरडके फलकी छाल । मात्रा ६ मासेकी ।

विभीतकीनामानि । (बहेडेके नाम)



कलिद्रुमः कल्पवृक्षःसंवर्ताक्षौबिभीतकी ।

अर्थ-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, बिभीतकी, (विभीतक, विभीत, तुष, कर्षफल, भूतवास, कलि, कुशिक, बहुवीर्य्य, तैलफल, भूतावास, संवर्त्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, बहेडुक, हार्य, विषघ्न, कलिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

संस्कृतभाषामें	बिभीतक।
हिन्दी भाषामें	बहेडा।
बंग भाषामें	वयडा-वहेडा।
मराठी भाषामें	बेहेडा-घाटिंगवृक्ष।
गुजराती भाषामें	वेडां।
कर्नाटकीभाषामें	तोरे।
तैलिङ्गी भाषामें	वल्ला-तांडेचेट्टु।
तामिली भाषामें	तनि, तण्डि, तोअण्डि।
इंग्रेजीभाषामें	मेरोवेलन्-बेलिरिक Myrovallan Bellirıkı
लैटिन भाषामें	टरमिनेलिया-बेलिरिका Terumalia Bellırica
फारसी भाषामें	वलेले।
अरबी भाषामें	वलेलज।

अस्यगुणाः।

बिभीतकःकटुस्तिक्तोकषायोष्णःकफापहः।
चक्षुष्यःपलितघ्नश्चविपाकेमधुरोलघुः॥ (रा० नि०)

अर्थ-वहेडा-कटु, तिक्त, कषेला, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमें मधुर और हलका है।

अपिच।

बिभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत्।
उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम्॥
रूक्षंनेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्य्यनाशनम्।
बिभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघु॥
कषायोमदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः। (भावप्रकाश)

अर्थ-वहेडा-स्वादुपाकी, कषेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें

शीतल, भेदक, कासनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुंदरतादायक, कृमि और स्वरभंगको नष्ट करेहै।

बहेडेकी मींग-तृषा, वमन, कफ और वातनाशकहै। हलकी, कषेली और मदकारकहै। आमलेकी मज्जाके गुण भी इसकी समान जानने।

अन्यच्च।

बिभीतकःकटुस्तिक्तस्तुवरोष्णोलघुःसरः।
पाकेचमधुरोरूक्षश्चक्षुष्यःकेशवृद्धिकृत॥
हिमस्पर्शोभेदकश्चपलितस्वरभङ्गजित्।
नासारोगंरक्तदोषंकण्ठरोगंचनेत्ररुक्॥
जन्तूनांकासहृद्रोगनाशकोमुनिभिःस्मृतः। (नि०र०)

अर्थ-बहेडा-चरपरा, कडवा, कषेला, हलका, दस्तावर, पाकके समय मधुर, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा पलित, स्वरभंग, नासारोग, रुधिरदोष. कण्ठरोग, नेत्ररोग, खांसी, हृदयरोग और कृमिका नाश करेहै।

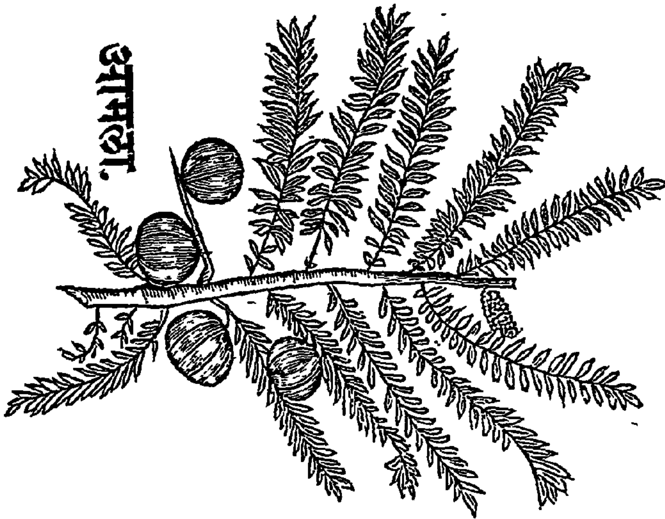
अपिच्च।

"बिभीतकोलघुःशीतःपाकेस्वादुःकफास्त्रजित्।
कासहृत्क्षयकुष्ठघ्नःकेशवृद्धिकरःपरः॥
परंकेश्यस्तुतन्मज्जानेत्रपुष्पहरोंजनात्।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरोलघुः॥
अक्षवृक्षभवःकल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः।"

अर्थ-बहेडा-हलका, शीतल, तथा पाकमें स्वादिष्ठ, कफ रुधिरविकार, खांसी, क्षयीरोग और कुष्ठको नष्ट करेहै, केशवर्द्धक, नासारोग, नेत्ररोग, कृमि और शुक्रको हरेहै, हलका और केशोंको हितकारीहै, इसकी मींग नेत्रके फूलेको दूर करेहै, इसके वृक्षकी छालका काढा, च्त्रिकोढ और पाण्डुरोगको दूर करेहै।

विवरण-इसका बडा वृक्ष जंगल और पर्वतोंमें उत्पन्न होताहै, पत्ते वडके पत्तोंके समान होतेहैं, फूल अत्यन्त सूक्ष्म होताहै, फल बरनाके फलकी समान और झुमकोंमें आतेहैं। व्यवहार-फलकी छाल। मात्रा ३ मासेकी।

आमलकीनामानि।



आमलकीपंचरसाश्रीफलीधात्रिकाशिवा।
अकरामृतावयस्थाचवृष्यातिष्यफलातथा॥

अर्थ–आमलकी, पंचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृतावयस्था, वृष्या, तिष्यफला, (वयःस्था, कायस्था, बहुफली, शान्ता, धात्री, अमृतफला, वृत्तफला, रोचनी, कर्षफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृतफल, शिव, आमलक, जातीफल)

संस्कृतभाषामें	आमलकी।
हिन्दीभाषामें	आमला।
वंगभाषामें	आम्ला।
मराठीभाषामें	आंवळा।
गुजरातीभाषामें	आंवला।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लि।
तैलिङ्गीभाषामें	उसर काय।
उत्	अंडा।
इंग्रेजीभाषामें	एंब्लि कमिरो वेलन्। Emblie myrobalan
लैटिनभाषामें	फिलेखस एंबलका Phylakhus Amblica
फारसीभाषामें	आम्लझं।
अरबीभाषामें	अमूलज्।

अस्यागुणाः ।

आमलंकषायाम्लंमधुरंशिशिरंलघु ।
दाहपित्तवमीमेहशोषघ्नंचरसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आमला-कषेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पित्त, वमन, प्रमेह और शोषका नाशकरे है और रसायन है ।

आमलक्याःफलंकिंचित्कटुकंस्वादुतिक्तकम् ।
अम्लंचतुवरंशीतंजराव्याधिविनाशनम् ॥
वृष्यंकेश्यंसारकञ्चहितंचारुचिनाशकम् ।
रक्तपित्तंप्रमेहञ्चविषजूर्तिं वमिं तथा ॥
आध्मानंबद्धविट्कत्वंशोथंशोषंतृषांतथा ।
रक्तस्यविकृतिंचैवत्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥
अम्लत्वाद्वातहंप्रोक्तंमाधुर्याच्चैवशीततः ।
पित्तनाशकरंचोक्तंरूक्षत्वाच्चकषायतः ॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्वैर्विद्याविशारदैः ।

अर्थ-आमला-किञ्चित् कटु, स्वादिष्ठ, कडवा, अम्ल, कषेला, शीतल, जरा व्याधिनाशक, वीर्यजनक, केशोंको हितकारी, दस्तावर, हितकारक, अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मान-(अफारा) मलबद्धता, सूजन, शोष, पियास, रक्तविकार और त्रिदोषका नाश करेहै ।

आमला-खट्टेपनसे वातका, मधुरपन और शीतलतासे पित्तका और कषेलेपनसे तथा रूक्षतासे कफका नाशकरेहै, इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशकहै ।

शुष्कामलकगुणाः ।

आमलस्यफलंशुष्कंतिक्तमम्लंकटुस्मृतम् ।
मधुरंतुवरंकेश्यं भग्नसन्धानकारकम् ॥
धातुवृद्धिकरंनेत्र्यंलेपनात्कांतिकारकम् ।
पित्तंकफंतृषांघर्ममेदोरोगंविषंतथा ॥
त्रिदोषंनाशयत्येवंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-सूखा आमला-कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कषेला, केशोंको हितकारी, भग्नसन्धानकारक, धातुवर्द्धक और नेत्रोंको हितकारी है । इसका लेप करनेसे देहकी कांति बढती है, तथा पित्त, कफ, तृषा, पसीना, मेद, विष और त्रिदोषनाशक है ।

अस्य मज्जागुणाः ।

तन्मज्जाप्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।
कषायामधुरावृष्याश्वासकासनिबर्हणा ॥

अर्थ-इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त और ज्वरको दूर करेहै । तथा कषेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खांसीको नष्ट करेहै ।

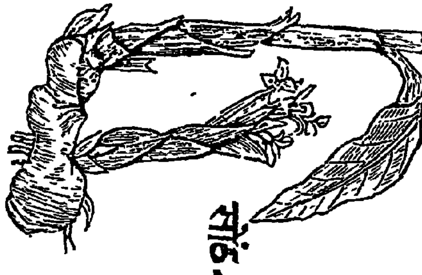
यस्ययस्यफलस्येहवीर्यंभवतियादृशम् ।
तस्यतस्यैववीर्य्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेंभी जानना ।

विवरण-इसका बडा वृक्ष वाग और जगलमें होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहैं, इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लाईके दानेकी समान पीले फूल होतेहैं, फल तेंदूकी समान गोल और झुमकोंमें लगते हैं । फलके ऊपर छः रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती हैं ।

व्यवहार-फलकी छाल । मात्रा ४ मासेकी ।

शुण्ठीनामानि ।



शुण्ठीमहौषधीविश्वाशुष्कार्द्रंविश्वभेषजम् ।
भेषजंशृङ्गबेरञ्चविश्वंकफारिनागरम् ॥

अर्थ-शुण्ठी, महौषधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेषज, भेषज, शृंगवेर,

विश्व, कफारि, नागर (महौषध, शुण्ठि, इन्द्रभेषज, विश्वौषध, कटुग्रन्थि, कटुभद्र, शुण्ठच, कटूत्कटक, कदूषण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागराह्व, आर्द्रज, औषध)

संस्कृत भाषामें	शुंठी।
हिन्दी भाषामें	सौंठ, शुंठी।
वङ्गभाषामें	शुंट-ठ।
मराठीभाषामें	सुंठ।
गुजरातीभाषामें	शुण्ठच।
कर्णाटकीभाषामें	शुंठि।
तैलिङ्गीभाषामें	शोंठी।
इंग्रेजीभाषामें	डाइजञ्जर। Dyginger
फारसीभाषामें	जंजवील।

अस्या गुणाः।

शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः।
स्निग्धोष्णामधुरापाकेकफवातविबन्धनुत्॥
वृष्यासर्पावमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
हन्तिश्लीपदशीतार्शआनाहोदरमारुतान्॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशपरिशोषियत्।
संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयोयथा॥
विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत्।
शक्तिर्विबन्धभेदेस्याद्यतोनमलपातने॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सौंठ-रुचिकारी, आमवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी, स्निग्ध, उष्णवीर्य्य, पाकमें मधुर, कफ वात और विवन्धको दूर करैहै। वीर्य्यवर्द्धक, सारक तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयरोग, श्लीपद, शोक, ववासीर-अफारा, उदररोग और वातके रोगोंका नाश करैहै। जो द्रव्य आग्नेयगुण, विशिष्ट है और जलांशशोषक है, मलका ग्रहण करताहै जिसप्रकार सौंठ आदि पदार्थ ग्राही हैं, कोई कहै कि जो विवन्धको भेदन करनेवाली है वह कैसे ग्राही होसकती है तो कहतेहैं कि सौंठमें विवन्धभेदकी शक्ति है, परन्तु मलपातकी नहीं।

अन्यच्च ।

नागरं कफवातघ्नंविपाकेमधुरं कटु ।
वृष्योष्णंरोचनंहृद्यंसस्नेहंलघुदीपनम् ॥
पाण्डुंसंग्रहणींपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–सोंठ–कफ वातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग, संग्रहणी और पित्तका नाश करे है ।

आर्द्रकनामानि ।



आर्द्रकंशृङ्गबेरंस्यात्कटुभद्रंकटूत्कटम् ।

अर्थ–आर्द्रक, शृङ्गबेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुल्ममूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सैकतेष्ट, अनूपम, अपाकृष्णक, चन्द्राख्य, राहुच्छत्र, सुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका)

संस्कृतभाषामें	आर्द्रक ।
हिन्दीभाषामें	अदरख–क ।
वंगभाषामें	आदा ।
मराठीभाषामें	आलें ।
गुजरातीभाषामें	आदु ।
कर्णाटकीभाषामें	अल्ल ।
तैलिङ्गीभाषामें	अल्लं ।
इंग्रेजीभाषामें	जिंजिरुट् । Gingerroot
अरबीभाषामें	जिंजिबिलतर ।

लैटिन्भाषामें जिंजिवर ओफिसिनेली Gingiber Officinale
फारसीभाषामें जिंजिविलरतव ।

अस्य गुणाः ।

आर्द्रिकाभेदनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ।
कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अदरख-भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपरा, पाकमें मधुर, रूक्ष, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

शृंगबेरंरसेपाकेशीतलंमधुरंलघु ।
कटुकोष्णञ्चहृद्यञ्चभेदकंचाग्निदीपकम् ॥
रूक्षंरुचिप्रदंवृष्यंपाचकंसारकंमतम् ।
कण्ठ्यमग्रेमांद्यहरंशोथारुचिकफापहम् ॥
वातंकण्ठरुजंकासंश्वासमानाहवातकम् ।
मलबंधंवमिंशूलंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
तस्यांकुरारसाभावात्कफवातकरामताः ।
रक्तदोषस्यशमनास्तेवृद्धाःकफनाशकाः ॥
काञ्जिकासैन्धवंचार्द्रंपाचकंचाग्निदीपनम् ।
मलबाधामवातानांकफवातविनाशकम् ॥
केवलंलवणेनाथमिश्रितंचाग्निदीपनम् ।
रुच्यंप्रियंसरंप्रोक्तंशोथवातकफापहम् ॥
भोजनात्पूर्वपश्चात्तुकण्ठजिह्वाविशोधकम् ।
जम्बीरसैन्धवयुतंरुचिदंमुखशुद्धिकृत् ॥
मूत्रकृच्छ्रंपाण्डुरोगंरक्तपित्तंव्रणंतथा ।
मूत्राश्मरींज्वरंदाहंपित्तंग्रीष्मेशरद्यपि ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तंशेषाविश्वासमागुणाः ।

अर्थ-अदरख रसमें और पाकमें शीतल, मधुर, चरपरा, गरम, हृदयको

हितकारी, भेदक (दस्तावर) अग्निको दीपनकरनेवाला, रूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्य्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मंदाग्नि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खाँसी, श्वास, आनाह, वात, मलबन्ध, वमन और शूलका नाश करेहै।

कांजी और सैन्धवलवणयुक्त अदरख-पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मलबन्ध और आमवातका नाश करेहै।

केवल लवणमिश्रित अदरख-अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वात और कफका नाशक है।

भोजनके प्रथम भक्षण कियाहुआ अदरख-कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करेहै। जंभीरी नींबू और सैंधानोनके साथ अदरख मुखको शुद्धि करेहै तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मूत्ररोग, पथरी, ज्वर, दाह और पित्तको शरदृऋतुमें तथा ग्रीष्मऋतुमें नष्ट करे है, शेष गुण सोंठकी समान जानने।

द्रव्यगुणाः।

वातपित्तकफेभानांशरीरवनचारिणाम्।
एकएवनिहंत्यत्रलवणार्द्रककेसरी॥

अर्थ-वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमें विचरण करते हैं उनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह है।

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम्॥

अर्थ-भोजनके आदिमें अर्थात् प्रथम लवणसहित अदरखका सेवन करना सदा पथ्यहै।

निषेधः।

कुष्ठपाण्ड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तव्रणज्वरे।
दाहेनिदाघेशरदिनैवपूजितमार्द्रकम्॥

अर्थ-अदरख-कोढमें, पाण्डुरोगमें, मूत्रकृच्छ्रमें, रक्तपित्तमें, व्रणरोगमें, ज्वरमें, दाहरोगमें, ग्रीष्मऋतुमें और शरदृऋतुमें अपथ्य है। ऐसा भावमिश्रने लिखाहै।

विवरण। अदरखका गुल्म होताहै, रेतली भूमि और सजल स्थानमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै, पत्ते छोटी इलायचीके समान होते हैं, इसके

कन्दकोही अदरख कहते हैं। उसी कन्दको सुखाकर सोंठ बनाते हैं, सोंठकी अनेक जातीहैं।

मरिचनामानि।



मरिचंपवितंश्यामंवेणुजंयवनप्रियम्।
वल्लीजंवेल्लजंशुद्धंकोलकंधर्मपत्तनम्॥

अर्थ-मरिच-पवित, श्याम, वेणुज, यवनप्रिय, वल्लीज. वेल्लज, शुद्ध, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, (ऊषण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल, शाकाङ्ग, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, मृष्ट, सर्वहित, कृष्ण)

सितमरिचनामानि।

सितमरिचंशीतोत्थंसितवल्लीजंचवालकंबहुलम्।
धवलंचन्द्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकंचवश्यकरम्॥

अर्थ-सितमिरच-शीतोत्थ, सितवल्लीज, वालक, वहुल, धवल, चन्द्रक, (सिताख्य)

संस्कृतभाषामें	मरिच, सितमरिच।
हिन्दीभाषामें	कालीमिरच, सफेद मिरच। दक्षिणी मिरच।
वंगभाषामें	- मरिच, गोलमरिच, सादामरिच।
मराठीभाषामें	मिरें-पांढरें, मिरीं।
गुजरातीभाषामें	मरी, तीखा. धोलांमरी।
कर्णाटकीभाषामें	मेणसु, विलेयमेणसु।
तैलिङ्गीभाषामें	मरिया, मिरियन॥
तामिलीभाषामें	मिलगु, मिलाओ।

अँग्रेजीभाषामें ब्लाक्पेपर Black Pepper
लैटिन्भाषामें पाईपर नैग्रम्। Piper Nigrum
फारसीभाषामें पिल पिले अस्वद् हल पिलेगिर्द।
अरवीभाषामें फिल फिलेअवीद्।

अस्यगुणाः।

मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित्।
उष्णंपित्तकरंरूक्षंश्वासंशूलकृमीन्हरेत्॥
तथार्द्रं मधुरंपाके नात्युष्णं कटुकंगुरु।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणंश्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम्॥ (भा.प्र.)

अन्यच्च।

अर्थ-कालीमिरच-चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करेहै। कच्ची कालीमिरच-पाकमें मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भारी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकारक नहींहै।

सितमरिचगुणाः।

कटूष्णंलघुतच्छुष्कमवृष्यंकफवातजित्।
नात्युष्णंनातिशीतञ्चवीर्यंतोमरिचंसितम्॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्चचक्षुष्यञ्चविशेषतः॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, हलकी, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरमहै और न अत्यन्त शीतलहै, इसके गुण काली मिरचके समान हैं, परन्तु विशेषकरके नेत्रोंको हितकारी है।

अपिच।

कटूष्णंश्वेतमरिचंविषघ्नंभूतनाशनम्।
अवृष्यंदृष्टिरोगघ्नंयुक्तंचैवरसायनम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिरोगविनाशक और किसीके साथ रसायनहै।

अन्यच्च-मरिचगुणाः।

मरिचंकटुकंतिक्तंलघुचोष्णंरुचिप्रदम्।
अग्निदीप्तिकरंतीक्ष्णमवृष्यंछेदिशोषकम्॥

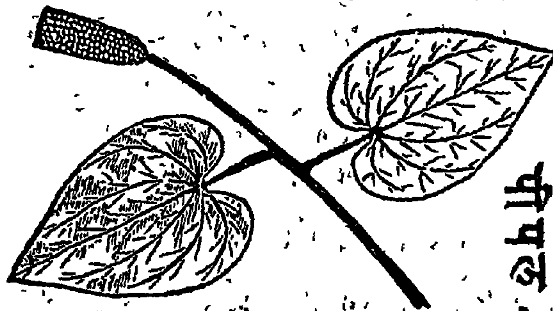
रूक्षंपित्तकरश्चैवकफवातंक्रुमीञ्जयेत् ।
श्वासंकासंचहृद्रोगंशूलंचैवविनाशयेत् ॥
प्रमेहंचार्शरोगञ्चपथ्यंप्रोक्तंपुराविदैः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कालीमिरच-कडवी, चरपरी, हलकी, गरम, रुचिदायक, अग्निप्रदीपक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रूक्ष, पित्तकारक, तथा कफ, वात, कृमि, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, शूल, प्रमेह और बवासीरका नाश करेहै।

कच्चीमिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होतीहै, गायकेघीके साथ पिसीहुई मिरचका व्यवहार करनेसे अर्शरोगका वियोग होताहै। एक मिरचको सुईके नोंकपर वेधकर उसको अग्नि अथवा दीपकी लोहपै जलावै; उसका धुआँ सूँघनेसे हिचकी और शिरकी पीडा शान्त होतीहै ॥ मिरचमें घी मिश्रितकर खानेसे अनेक प्रकारके नेत्ररोग विध्वंस होतेहैं।

विवरण। मिरच लता दक्षिणदेशके त्रिवांकुर मलवारादिकी खादर उपजाऊ भूमिमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, वहाँके रहनेवाले इसलताके छोटे छोटे टुकडे करके बडे बडे वृक्षोंकी जडमें लगादेतेहैं तीनवर्षमें लतापै फल आताहै फल पककर लाल होजाते हैं, परन्तु सूखजानेपर कालारंग आजाताहै। शाक इत्यादिमें कालीमिरच मसाला होगईहै। लाल मिरचके पर्य्याय आगे लिखेहैं।

पिप्पलीनामानि।



पिप्पलीमागधीकृष्णाचपलाचञ्चलाकणा।
उपकुल्याचकोल्याचवैदेहीतिक्ततण्डुला ॥

अर्थ-पिप्पली-मागधी, कृष्णा, चपला, चञ्चला, कणा, उपकुल्या, कोल्या, वैदेही, तिक्ततण्डुला (उष्णा, शौण्डी, कोला, कटी, एरण्डा, मगधा,

ऊषणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कौरङ्गी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पीपल, (र).
बंगभाषामें	पिपुल ।
मराठीभाषामें	पिंपळी ।
गुजरातीभाषामें	लिंडिपीपल ।
कर्णाटकीभाषामें	हिप्पली ।
तैलिंगीभाषामें	पिप्पलु ।
तामिलीभाषामें	पिंपिलि
वम	बङ्गालिपिम्परि ।
इंग्रेजीभाषामें	लॉंगपीप्पर । Long pepper
लैटिन्भाषामें	पाइपर लॉंग । Piper Longuw
फारशभाषामें	पिल्पिल् दराज ।
अरबीभाषामें	डारफिल, फिल् ।

अस्या गुणाः ।

पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी ।
अनुष्णा कटुका स्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ॥
पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलामभारुतान् ॥
आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः ।
पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिनी ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्धिनी॥
जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥
द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजामतः । (भा०प्र०)

अर्थ-पीपल अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, पाकमें स्वादिष्ठ, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, स्निग्ध, वात-कफनाशक, हलकी, दस्त लानेवाली तथा श्वास, कास, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, (क्षयरोग) बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवातका नाश करेहै ।

कच्ची पीपल-कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी, पित्तको शान्त करनेवाली, और सूखी पीपलें, पित्तको कुपित करनेवालीहै ।

मधुयुक्त पीपल-मेदरोग, कफ, श्वास, खाँसी और ज्वरनाशकहै, वीर्यवर्द्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक है, गुड़मिश्रित पीपल जीर्णज्वर, हृदयरोग, मंदाग्नि खाँसी, अजीर्ण, अरुचि श्वास, पाण्डुरोग और कृमिरोगका नाश करेहै ।

पीपलका चूर्ण और सोंठका चूर्ण गुड़ मिलाकर खानेसे आम, शूल, अजीर्ण और सूजन दूर होती है ।

पीपलको नीमके रसमें उबालकर नास देनेसे अपस्माररोग दूर होताहै ।

पीपलके काढेमें सहत मिलाकर खानेसे वातज्वर और कफज्वर दूर होताहै ।

सहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छारोग दूर होताहै ।

विवरण-पीपलकी वेल जंगवार और मगधदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, इसके पत्ते नागवल्ली अर्थात् पानके समान होतेहैं ।

पिप्पलीमूलनाम.नि ।

मूलंतुपिप्पलीमूलंग्रन्थिकंचटकाशिरः ।
कणामूलंकोलमूलंचटिकासर्वग्रन्थिकम् ॥

अर्थ-मूल-पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटकाशिर, कणामूल, कोलमूल, चटिका, सर्वग्रन्थिक, (ग्रंथीक, षड्ग्रन्थि, शिर, कटुग्रन्थि, कटुमूल, कटूषण, सर्वग्रन्थि, पत्राढ्य, विरूप, शोषसम्भव, सुगन्धि, ग्रंथिल, ऊषण, मागध, मागधीजटा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पीपरा (ला) मूल ।
वंगभाषामें	पिपुलमूल
मराठीभाषामें	पिंपळमूल ।

गुजरातीभाषामें	पीपरीमूलना गंठोडा।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पलियवेरु।
तैलिङ्गीभाषामें	पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्प।
इंग्रेजी भाषामें	पाईपररूट Piper root
लैटिन्भाषामें	पाइपर ओफिसिनेरं Piper officinarum
फारसीभाषामें	फिल्फिल् मोया।
आरबीभाषामें	असलुल् फिलफिल।

अस्यगुणाः।

दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णं पाचनंलघु।
रूक्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम्॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम्। (भा० प्र०)

अर्थ-पीपरामूल-जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलका, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच।

भेदनंपिप्पलीमूलंकासामशूलनाशनम्।
पित्तप्रकोपितीक्ष्णोष्णंरूक्षंपाचनरोचनम्॥

अर्थ-पीपरामूल-दस्तावर, खांसी, आम और शूलनाशकहै। पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है।

चविकानामानि।

चव्यंचवणमुच्छिष्टंचविका:कोलवल्लिका।

अर्थ-चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक, चवी, चवि, पुरन्दर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उषणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, वल्ली, कोलवल्लि, कोल, कुक्कुटमस्तक, तीक्ष्णकरिकणावल्ली, कृकर, कुटिलसप्तक, कटुका, कटुपाकिनी)

संस्कृतभाषामें	चविका, चव्य।
हिन्दीभाषामें	चव्य।

बंगभाषामें	चई गाच्छ ।
मराठीभाषामें	मिरवेलीचे मूळ, चवळ ।
गुजरातीभाषामें	चवक ।
कर्णाटकीभाषामें	चव्य ।
तैलिंगीभाषामें	सेवासु, चैकार्ण ।
लैटिन्भा०	चविका, एक्स वर्धी आइ पाइपरचव । Chavica Exwhrdhi Aye Piper Chava

अस्यागुणाः।

चव्यंस्यादुष्णकटुकंलघुरोचनदीपनम् ।
जन्तूद्रेकापहंकासश्वासशूलार्तिकृन्तनम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निप्रदीपक तथा कृमि, खांसी, श्वास और शूलविनाशक है ।

अपिच ।

पिप्पलीमूलवत्तस्याविशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पंगरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ (म०नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोगोंको दूर करे है ।

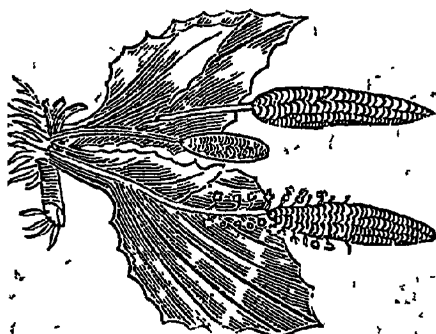
इसका फूल-विष, श्वास, खाँसी और क्षय रोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

चवककटुकंचोष्णंरुच्यंचाग्नेश्चदीपनम् ।
लघूक्तंचकृमिश्वासकासवातकफापहम् ॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिःपरिकीर्तितम् ।
अन्येगुणास्तुविज्ञेयाःपिप्पलीमूलवद्बुधैः ॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खाँसी, वादी, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे है । शेष गुण पीपलामूलकी समान जानने. चव्यकी वेल मलवारमें होतीहै, इसके फलको गजपीपर कहते हैं ।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकायाःफलंप्राज्ञैःकथितागजपिप्पली ।
कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्चसा ॥

अर्थ–चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं । कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्तुली, स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामें	गजपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	गजपीपल ।
वंगभाषामें	गजपिपुल ।
मराठीभाषामें	मोरवेलीला पिंपळ्या येतात ती ।
कर्णाटकीभाषामें	गजहिप्पली ।
गुजरातीभाषामें	गजपीपर ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दापिप्पलु ।
लैटिन्भाषामें	प्लैंटेगोएँप्लक्सिकोलिस् सन्डापसस् जोफिसीनेलिस् 'Plantago Amplexicaulis Scandapans Officinalis

अस्यागुणाः ।

गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्मह्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णानिहंत्यतीसारंश्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ–गजपीपल–चरपरी, वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करैहै ।

अपिच ।

गजोषणाकटूष्णाचरूक्षामलविशोधिनी ।
बलासवातहन्त्रीचस्तनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (राजनि०)

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, गरम, रूखी, मलशोधक, कफ वातनाशक, स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

गजोषणाकटूष्णाचतीक्ष्णामलविशोषिणी ।
बलासवातहंत्री च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपर-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, मलशोषक तथा कफ, वातनाशक स्तन और लिंगवर्द्धकहै ।

सैंहलीपिप्पलीनामानि ।

सैंहलीसर्पदण्डाचसर्पाङ्गीब्रह्मभूमिजा ।
पार्वतीशैलजामूलंलम्बबीजातथोत्कटा ।
अद्रिजासिंहलस्थाचलम्बदन्ताचजीवला ।
जीवालाजीवनेत्राचकुरवीषोडशाह्वया ॥

अर्थ-सैंहली, सर्पदण्डा, सर्पाङ्गी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजामूल, लम्बबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा, कुरवी ।

अस्या गुणाः ।

सैंहलीकटुरुष्णाचजन्तुघ्नीदीपनीपरा ।
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनीकोष्ठशोधिनी॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-सिंहलीपीपल-चरपरी, गरम, कृमिनाशक, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा कफ, श्वास और वातकी पीडाकी शान्ति करनेवाली और कोठेको शुद्ध करेहै ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिप्पल्यभिधानमेतत्।
क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम्॥

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्मपिप्पली, क्षुद्रापिप्पली, वनकणा ।

अस्या गुणाः ।

वनपिप्पलिकाचोष्णातीक्ष्णारुच्याचदीपनी ।
आमाभवेद्गुणाढ्यातुशुष्कास्वल्पगुणास्मृता॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-वनपीपल-गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है, कच्ची वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्प गुणवाली है ।

मर्कटीपिप्पलीगुणाः ।

मर्कटीपिप्पलीतिक्तातुवरासुरसास्मृता ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ-वानरीपीपल-कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै ।

चित्रकनामानि ।



चित्रकोऽनलनामाचपाठीव्यालस्तथोषणः ।

अर्थ-चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊषण, (कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, बर्हि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वह्नि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, शूर, पाठीन, दारुण, अग्निक, वल्लरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतभुक्, माली, वह्नि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रकनामानि ।

कालोव्यालःकालमूलोतिदीप्योमार्जारोग्निर्दाहकःपावकश्च ।
चित्राङ्गोयंरक्तचित्रोमहाङ्गःस्याद्रुद्राह्वश्चित्रकोन्योगुणाढ्यः॥

अर्थ-काल, व्याल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्जार, अग्नि, दाहक, पावक, चित्राङ्ग, रक्तचित्र, महाङ्ग, (रक्तचित्रक, उषर्बुधाह्वय, द्व्याग्नि, पाठी, ह्रस्वाग्नि)

संस्कृतभाषामें	चित्रक-रक्तचित्रक ।
हिन्दीभाषामें	चीता, लालचीता ।
वंगभाषामें	चितेगाछ, एडचिते, चिता ।
मराठीभाषामें	चित्रक, रक्तचित्रक ।
कर्णाटकीभाषामें	चित्रमूल, केंपिनचित्रमूल ।
तैलङ्गीभाषामें	चित्रमूलमु एरचित्र ।
तामिलीभाषामें	शिवपु, चित्रिर ।
उर्दू	ध्रुवचिता, रक्तचिता ।
गुजरातीभाषामें	चित्रो ।
लैटिन्भाषामें	प्लंबेगोरोझिया-प्लंबेगोझिलेनिका । Plumbago rosea Plumbago Zeylanica
फारसीभाषामें	बेखबरंदा ।
अरबीभाषामें	शितरज्ञ ।
इंग्रेजीभाषामें	पलंबिगोकौरुलेऐसो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रकःकटुकःपाकेवह्निकृत्पाचनोलघुः ।
रूक्षोष्णोग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासनुत् ॥
वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शःश्लेष्मपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चीता-पाकमें चरपराहै, अग्निकारक, पाचक, हलका, रूखा, गरम तथा संग्रहणी, कोढ, सूजन, ववासीर, कृमि, खाँसी और वात कफका नाश करेहै । ग्राही है तथा वादीकी ववासीर, और कफपित्तको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

चित्रकःपाचकोरूक्षोलघुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पाकेकटुर्ग्राहकश्चतिक्तोष्णोरुचिदोमतः ॥
रसायनोग्निसदृशःशोथकुष्ठार्शकासहा ।
कृमीन्वातोदरंकण्डूंयकृतंग्रहणींतथा ॥

आमंक्षयंचोदरंचनाशयेदितिकीर्तितः ।
कटुत्वात्कफहृत्प्रोक्तस्तिक्तत्वात्पित्तनाशकः ॥
उष्णत्वाद्वातहृत्प्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥(नि०र०)

अर्थ-चीता-पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निकी समान पराक्रमी तथा सूजन कोढ, बवासीर, खांसी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत, संग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करैहैं।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करैहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशकहै ।

रक्तचित्रकगुणाः।

स्थूलकायकरोरुच्यःकुष्ठघ्नोरक्तचित्रकः ।
रसेनियामकोलोहेवेधकश्चरसायनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचीता-देहको स्थूल करनेवाला, रुचिकारी, कुष्ठनाशक, पारेको बांधनेवाला, लोहेमें वेध करनेवाला, रसायन, और शरीरको नूतन करैहै।

कृष्णचित्रकगुणाः।

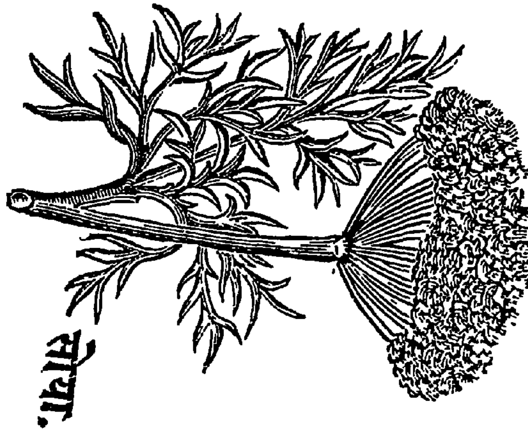
केशाःकृष्णाःप्रजायन्तेकृष्णचित्रकभक्षणात् ।
कृष्णकृष्णंसमुत्पाटचगोभिराघ्रातमेवच ॥
क्षीरमध्येक्षिपेद्वापिक्षीरंकृष्णंप्रजायते ।

अर्थ-कालेचीतेको भक्षण करनेसे केश काले होजातेहैं, गायके सूँघेहुए काले चीतेको लाकर दूधमें डालनेसे दूध काला होजाताहै ।

विवरण। क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीहैं सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमें सफेद फूलका सर्वस्थानोंमें होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनेमें बहुत कम आतेहैं।

व्यवहार-मूल, मूलकी छाल, छाल मात्रा ४ मासेकी ।

शतपुष्पानामानि ।



शताह्वाशतपुष्पाचशताक्षीशतपुष्पिका ।
कारवीतालपर्णीचमाधवीशोफकामिसिः ॥

अर्थ-शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी, शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोफका, मिसि (घोषा, शिफा, अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, छत्रा, संघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, वहला, पुष्पाह्वा, शतपत्रिका, शालेय, मिशी, सालेय, मिसी, पोति, अहिच्छत्रा, संघातपत्रिका, छत्रा, तालपर्णी, मिषी, शालेया, शीताशिवा, शालीना, वजना और अतिच्छत्रा)

संस्कृतभाषामें	शतपुष्पा ।
हिन्दीभाषामें	सोया-सोयेके बीज ।
वंगभाषामें	शुलूफा ।
मराठीभाषामें	वाळंतशोप ।
गुजरातीभाषामें	शुवानी भाजी-शूवादाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	सब्जासिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दसदापचेट्टु-सदापा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिलसीड् । Dillsee l
लैटिन्भाषामें	एनिथं ग्रेवीयोलेन्स. Aurthum Graveoelus
फारसीभाषामें	शुत-तुरूमेशूत ।
अरबीभाषामें	शीतव्वत वजरुल सीव्वत ।

शतपुष्पागुणाः ।

शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ।
उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपरा, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगोंको हरेहै ।

अपिच ।

शतपुष्पाकटुस्तिक्तातीक्ष्णोष्णादीपनीलघुः ।
पित्तलाकफवातघ्नीविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ--सोया--चरपरा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, हलका, पित्तकारक, कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

शताह्वापित्तलालघ्वीतिक्ताकट्वग्निदीपनी ।
उष्णामेध्यावस्तिकर्मप्रशस्ताकफनाशिनी ॥
वातंज्वरञ्चशूलञ्चयोनिशूलञ्चनाशयेत् ।
आध्मानंचक्षूरोगञ्चव्रणंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ--सोया--पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपरा, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्ममें प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाशकरेहै ।

अस्या आकृतिः ।

शतपुष्पासूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका ।
प्रसिद्धाक्षेत्रविख्यातादीपनोक्तामहर्षिभिः ॥

अर्थ--सोयेके पत्ते सूक्ष्म होतेहैं, फूल पीला होताहै, छत्र बहुत होतेहैं, खेतमें उत्पन्न होतीहै और प्रसिद्धहै तथा दीपनहै ।

मधुरिकानामानि ।

सितामधुरिकाचापिमाधुरीतापसप्रिया ।
गन्धाधिकाघोषवतीसुगन्धाचतृषाहरा ॥

अर्थ--सिता--मधुरिका, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती, सुगन्धा, तृषाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी,

शीतशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा, पोतिका, अहिच्छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अशाकपुष्पी, तालपर्णी, मङ्गल्या, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी और शतपुष्पा)

संस्कृतभाषामें	मधुरिका, शतपुष्पा, मिश्रेया ।
हिन्दीभाषामें	सौंफ ।
वंगभाषामें	मौरी ।
मराठीभाषामें	बडीशोफ ।
गुजरातीभाषामें	वरियाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कासंछसिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दाजिल कुरह सौफ ।
तामिलीभाषामें	सोहि किरे ।
इंग्रेजीभाषामें	फेनल्सीड् । Feual seed
लैटीन्भाषामें	फेनिक्युलं वल्गोरी । Forniculum Vulgore.
फारसीभाषामें	बादियान ।
अरबी भाषामें	एजियानज, असलुल् एजियानज ।

अस्या गुणाः ।

शतपुष्पातुमधुरावातपित्तहरागुरुः । (राजवल्लभ)

अर्थ-सौंफ-मधुर, वात-पित्तनाशक और भारीहै ।

अपिच ।

शतपुष्पात्रिदोषघ्नीमेध्यापथ्यारुचिप्रदा । (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सौंफ--त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, पथ्य और रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

माधुरीकटुकापाकेस्त्रीणांगर्भप्रदासरा ।
तिक्ताकटुचमधुरावृष्याचाग्निप्रदीपनी ॥
वातंज्वरंचशूलंचदाहंनेत्ररुजंतृषाम् ।
व्रणंवान्तिमतीसारमामंचैवविनाशयेत् ॥ (वै०नि०)

अर्थ-मधुरिका अर्थात् सौंफ पचनेमें चरपरी, गर्भदायक, सारक, कडवी, चरपरी, मधुर, वीर्य्यजनक, अग्निप्रदीपक तथा वात, ज्वर, शूल, दाह, नेत्ररोग, पियास, घाव, अतिसार और आमका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

मिश्रेयामधुरास्निग्धाकटुःकफहरापरा ।
वातपित्तोत्थदोषघ्नीप्लीहजन्तुविनाशिनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–सौंफ--मधुर, स्निग्ध, चरपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, प्लीहा और कृमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

मिश्रेयारोचनीवृष्यादाहपित्तास्रनाशिका ।

अर्थ--सौंफ--रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाशकरे है ।



अस्या जलगुणाः ।

तज्जलंशीतलंरुच्यंकटुदीपनपाचनम् ।
मधुरंतृड्वद्भान्तिपित्तंदाहंचनाशयेत् ॥ (वि०ति०भा०)

अर्थ–सौंफका अर्क--शीतल, रुचिकारक, चरपरा, अग्निको दीपन करने वाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करे है । इसके क्षुप सोयेकी समान खेत और बागोंमें होते हैं ।

मेथिकानामानि ।

मेथिकामेथिनीमेथीदीपनीबहुपत्रिका ।
वेधनीगन्धबीजाचज्योतिर्गन्धफलातथा ।
वल्लरीचन्द्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी ।
कुञ्चिकाबहुपर्णीचपीतबीजामुनीन्द्रिका ॥

अर्थ–मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्धबीजा,

ज्योति, गन्धफला, वल्लरी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुञ्चिका, बहुपर्णी, पीतबीजा, मुनीन्द्रिका ।



संस्कृतभाषामें	मेथिका ।
हिन्दीभाषामें	मेथी ।
बंगभाषामें	मेथी ।
मराठीभाषामें	मेथी ।
गुजरातीभाषामें	मेथी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेथपक ।
तैलिङ्गीभाषामें	मेतुलु ।
तामिलीभाषामें	वेन्डयम् ।
इंग्रेजी भाषामें	फेनुग्रीक् । Fenugreek
लैटिन्भाषामें	ट्रापगोनेला फेनंग्रिक Trigonella Falnum graecum
फारसीभाषामें	तुख्मे शमपीत ।
अरबीभाषामें	बजरुल् हुल्बा ।

अस्यागुणाः ।

मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी ।
ततःस्वल्पगुणावल्यावाजिनां सातुपूजिता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मेथी-वातको शांति करै, कफ और ज्वरका नाश करैहै, वनमेथी इसकी अपेक्षा स्वल्प गुणवाली है और घोडोंकेलिये अत्यन्त हितकारकहै ।

अपिच ।

मेथिकाकटुरुष्णाचरक्तपित्तप्रकोपिनी ।
अरोचकहरादीप्तिकरीवातप्रदीपिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तनाशक, अरुचिहारक, दीप्तिकारक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

मेथिकाकटुकाचोष्णारक्तपित्तप्रकोपनी ।
दीपनीचरसेतिक्तामलावष्टम्भिकालघुः ॥
रूक्षाहृद्याबलकरीज्वरारोचकवान्तिहा ।
वातरक्तंकफंकासंवातमर्शःकृमीन्क्षयम् ॥
शुक्रंचनाशयत्येषाप्रोक्तापूर्वचिकित्सकैः । (नि०र०)

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन, रसमें कडवी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी, बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खाँसी, वादी, बवासीर, कृमि और शुक्रका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

मेथिकावातशमनीवेजिकावातलामता ।

अर्थ-मेथी-वातको शान्त करेहै और वनमेथी वातको उत्पन्न करेहै मेथी खेतोंमें बोईजाती है, फूल पीला होताहै और कली आती हैं ।

चन्द्रशूरनामानि ।

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका ।
नंदिनीकारवीभद्रावासुपुष्पासुवासरा ॥

अर्थ-चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेषा, दरकृष्ण, दीर्घवीज, रक्तराजी, सिद्धप्रयोजना)

संस्कृत भाषामें	चन्द्रशूर, अहालिम ।
हिन्दी भाषामें	हालो हालिम ।
मराठी भाषामें	आहाळींव ।
गुजराती भाषामें	अशेलियो ।
वंग भाषामें	हालिम ।
इंग्रेजी भाषामें	कामन्, क्रेस् । Common cress
लैटिन् भाषामें	लेपिडियं, सेटीवं । Lepibum Sativum

फारसी भाषामें हालमतुख्मतरातेजक ।
अरबी भाषामें हब्बुररशाद, हाकम, बजरुलजिरजिर ।

अस्यागुणाः ।

चन्द्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ।
असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हालो-वात, कफ, अतिसार और वातरोगका नाश करैहै, तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

दरकृष्णोवातशूलगुल्मघ्नःस्तन्यपुष्टिकृत् ।
बल्योवाजीकरःपानाल्लेपाच्छोणितशूलनुत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-हालो-वात, शूल और गुल्मनाशक है, स्तनोंमें दूध बढानेवाला है, बलकारक, वाजीकरणकारक, इसको पानीमें पीसकर पीनेसे तथा इसका लेप करनेसे रुधिरविकार और शूल नष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

अहालिमंमतंचोष्णंतिक्तंत्वग्दोषनाशनम् ।
वातंगुल्मंनाशयतीत्येवंप्रोक्तंचिकित्सकैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-हालो-गरम, कडवा, त्वचाके दोषोंका नाश करै तथा वात और गुल्मनाशक है ।

अपिच ।

अभिघातरुजंहन्तिसदुग्धोहरकृष्णकः ।
त्वग्दोषान्वातरोगांश्चनेत्ररोगान्सशोणितान् ॥ (वै०नि०)

अर्थ-दुग्धयुक्तहालो-अभिघातरोग, त्वचाके रोग, वातरोग, नेत्ररोग और रुधिरविकारोंको दूर करे है इसका सरसोंकी समान क्षुप होताहै, फूल नीले रंगका होताहै । मात्रा ६ मासेकी ।

यवानीनामानि ।



यवानीदीप्यकोदीप्योभूतिकश्चयवानिका ।
यवाग्रजोग्रगन्धाचयवाह्वाभूकदंबकः ॥

अर्थ–यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्व, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवजदीपनीय, शूलहंत्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामें	यवानी ।
हिन्दीभाषामें	अजवाइन । अजमान ।
वंगभाषामें	यमानी योयान् ।
मराठीभाषामें	ओंवा ।
गुजरातीभाषामें	अजमा ।
कर्णाटकीभाषामें	ओंड, उंडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वासु । ओममी ।
तामिलीभाषामें	अमन ।
इंग्रेजीभाषामें	बिशप्स विडसीड Bishops Weed Seed
लैटिन्भाषामें	केरं कोपटिकम् टेकोटिसअजवान् । Carum Copticum Ptychotis
फारसीभाषामें	नानुखा ।
अरबीभाषामें	कमूनमुलूकी ।

यवानीगुणाः ।

यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णाकटुकालघुः ।
दीपनी च तथा तिक्तापित्तलाशुक्रशूलहृत् ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहक्रिमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ–अजवायन–पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, दीपन, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक्र, शूल, वात, कफ, उदररोग, आनाह, गुल्म, प्लीहा और कृमिका नाश करेहै ।

अपिच ।

यवानीकटुतिक्तोष्णावातार्शःश्लेष्मनाशिनी ।
शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनीदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, गरम तथा वातकी बवासीर, कफ, शूल, आध्मान, कृमि और वमनको दूर करेहै और परम दीपनहै ।

अन्यच्च ।

यवानीकुष्ठशूलघ्नीहृद्यापित्ताग्निवर्द्धिनी ।

अर्थ-अजवायन-कोढ और शूलनाशकहै, हृदयको हितकारीहै, पित्त तथा अग्निवर्द्धकहै ।

अपिच ।

यवानीकटुकातिक्तारुच्याचोष्णाग्निदीपनी ।
पाचनीपित्तलातीक्ष्णालघुहृद्याचसारिका ॥
वृष्यावातार्शकफरुक्शूलाध्मानवमिकृमीन् ।
शुक्रदोषोदरानाहहृद्रोगप्लीहगुल्मकान् ॥
द्वंद्वरोगामवातांश्च नाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम अग्निप्रदीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, सारक, वीर्यजनक तथा बादीकी बवासीर, कफ, शूल, अफारा, वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, आनाह, हृदयरोग, प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वजरोग और आमवातका नाश करेहै ।

अजमोदानामानि ।

अजमोदाखराश्वाचमयूरोदीप्यकस्तथा ।
तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ताकारवीलोचमस्तकः ॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, लोचमस्तक, (खराह्वा, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, हस्तिकावरी, अन्धपत्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाली, हयगन्धा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या और विशल्या)

संस्कृतभाषामें	अजमोदा ।
हिन्दीभाषामें	अजमोद ।
वंगभाषामें	वनयमानी, वनयुयान, वनयोयान्, वनजैन ।
मराठीभाषामें	अजमोदा ।

गुजरातीभाषामें	बोडीअजमोद ।
कर्णाटकीभाषामें	अजमोदा ।
तैलिङ्गीभाषामें	आजमौदा, वामं ।
लैटिन्भाषामें	एप्यंग्रेवियोलेन्स Apium Gravoolens
इंग्रेजीभाषामें	सेलेरीसीड Celery seed
फारसीभाषामें	करपस ।
अरबीभाषामें	हबुलकर्त्रुकेरफस ।

अस्या गुणाः ।

अजमोदाकटुस्तीक्ष्णादीपनीकफवातनुत् ।
उष्णाविदाहिनीहृद्यावृष्याबलकरीलघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजोहरेत् (भा० प्र)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी और वस्तिरोगका नाश करैहै ।

अपिच ।

अजमोदाकटुरुष्णारूक्षाकफवातहारिणीरुचिकृत् ।
शूलाध्मानारोचकजठरामयनाशिनीचैव ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफारा, अरोचक और उदररोगका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

अजमोदोरुचिकरोदीपकःकटुरूक्षकः ।
उष्णोविदाहीहृद्यश्चवृष्योबलकरोलघुः ॥
तिक्तोमलस्तम्भकरोग्राहकःपाचकःस्मृतः ।
आध्मानशूलकफहृद्वातोरोचकनाशनः ॥
उदराग्निकृमींश्चैववान्तिनेत्ररुजंजयेत् ।
वस्तिशूलंदन्तरोगंगुल्मशुक्ररुजंतथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-अजमोद-रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कडवा, मलस्त-

ध्मक, उदरके रोग, कृमि, वमन, नेत्ररोग, वस्ति, शूल, दन्तरोग, गुल्म और (वीर्यके विकारको दूर करेहै ।)

पारसीकाजमोदानामानि ।

यवानीयायवानीस्याच्चौहारोजन्तुनाशनः ।
पारसीयावनीगन्धा छारश्चखरपुष्पिका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चौहार, जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, गन्धा, छार, खरपुष्पिका ।

संस्कृतभाषामें	पारसी ।
हिन्दीभाषामें	छुहरी अजवाइन, छुहारी अजमोद ।
मराठीभाषामें	किरमाणीओंवा, खूरवंदीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	छुवारी अजमोद, करमाणी दीनेची ।
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या, मेरिटिमा Artimisia Maritema
फारसीभाषामें	तुख्मइप्स ।

अस्या गुणाः

पारसीकयवानीतुतिक्तोष्णाकटुतीक्ष्णा ।
अग्निदीप्तिकरीवृष्यालघ्वीचैवप्रकीर्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णकृमिनुच्छूलामस्यचनाशिनी ।
विशेषात्तुगुणास्त्वन्येयवानीवत्प्रकीर्तिताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-छुहारी-अजवायन, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्य्यजनक, हलकी तथा त्रिदोष, अजीर्ण, कृमि, शूल और आमको नष्ट करे है, शेषगुण अजवानयकी समान हैं । इसका वृक्ष होताहै । पत्ते गुलदाउदीकी समान होतेहैं । फूल बारीक होताहै ।

खुरासानी यवानीनामानि ।

यवानीयावनीतीव्रातुरुष्कामदकारिणी ।
दीप्यःश्यामःकुबेराख्योमादकोमदकारकः ॥

अर्थ-यवानी, यावनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी, दीप्य, श्याम, कुबेराख्य, मादक, मदकारक ।



संस्कृतभाषामें	खुरसानी, पारसीक यवानी ।
हिन्दीभाषामें	खुरासानी, अजवायन ।
बंगभाषामें	खुराशानी, योयान् (यमानी)
मराठीभाषामें	खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
गुजरातीभाषामें	खुरसाणी, अजमा ।
तैलिङ्गीभाषामें	खुरसाण वामु ।
बो०	खोरसनी, उभा ।
तामिलीभाषामें	खोरसनी, ओनाम शिट्टासुट्टि ।
इंग्रेजीभाषामें	हेनबेन । Henbane
लैटिन्भाषामें	हायो श्यामस्, नाईजर HyoscyamusNiger
फारसीभाषामें	वंज, तुख्मवंजे ।
अरबीभाषामें	बजरुल वंज, अबींद शीकरान् ।

अस्या गुणाः ।

खुरासानीयवानीतुयवानीसदृशागुणैः ।
विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–खुरासानी अजवायनके गुण अजवायनके समानहैं; किन्तु विशेष करके पाचकहै, रुचिकारीहै, ग्राही मदकारक और भारी है ।

अपिच ।

खुरासानीयवानीतुकटुरूक्षाचपाचिका ।
ग्राहिकोष्णामादिकाचगुर्वीवातकरीमता ॥
कफनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येयवानिवत् ।

अर्थ-खुरासानी अजवायन-चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेषगुण अजवायनके समानहैं ।

विवरण । इसका क्षुप यूरोप और ऐशियाके महादेशोंमें उत्पन्न होताहै, आजकल सहारनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी खेती होतीहै पत्ते पीले होतेहैं । व्यवहार-पत्ते और बीज ।

यह बीज ½ ड्राम १ ड्रामपोस्त, मधु और जलके साथ मिलाकर शरदी वातादि रोगोंमें दिये जातेहैं । काबुलमें इसके बीज घोडीके दूधके साथ पीसकर भैंसके चमडेमें लगाकर पेटके ऊपर बांधले तो गर्भ बंद होजाताहै, यह कहावत यहांपर बराबर चली आतीहै ।

इसके पत्तोंका अर्क जौके आटेमें मिलायकर उसकी पुटली करे तो छाला तथा उसकी पीडा दूर होजायगी । एक बूंद इसको आँखमें लगानेसे आँखकी पीडा जातीरहतीहै ।

साधारणजीरकनामानि ।



अजाजीजीरकोजीरोदीप्यकोजरणाकणा ।

अर्थ-अजाजी; जीरक, जीर, दप्यिक, जरणा, कणा (जीर्ण दीप्य, जीरण, अजाजिका वह्निसख, मागध, दीपक)

गौरजीरकनामानि ।

शुक्लाजाजीकणाख्याताद्दीर्घकःकणजीरकः ।

अर्थ–शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, मितदीप्य, दीर्घकणा, मिताजाजी, गौराजाजी)

संस्कृतभाषामें	जीरक, सितजीरक ।
हिन्दीभाषामें	जीरा, सफेदजीरा ।
वंगभाषामें	जीरे, सादाजीरे ।
मराठी भाषामें	जिरें, पांढरें जिरें ।
गुजराती भाषामें	शाकनु जीरुं । सादुजीरुं ।
कर्नाटकीभाषामें	जिरिगे, बिलियजीरिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	जिलकारा, जील करर ।
इंग्रेजीभाषामें	क्युम्मिन्, सीड । Cummin seed
लैटिन्भाषामें	क्युमिनम् सेमिनम् Cumminum Cyminum
फारसीभाषामें	जीरा ।
अरबीभाषामें	कमुन् ।
यूनानीभाषामें	खामुन् ।

सामान्यजीरकगुणाः ।

जीरकःकटुरुष्णश्चवातहृद्दीपनःपरः ।
गुल्माध्मानोतिसारघ्नोग्रहणीकृमिहृत्परः ॥ (रा०नि०व०)

अर्थ–साधारणजीरा–चरपरा, गरम, वातनाशक, दीपन तथा गुल्म, अफारा, अतिसार, संग्रहणी और कृमिको दूर करे है ।

श्वेतजीरकगुणाः ।

गौराजाजीहिमारुच्याकटुर्मधुरदीपनी ।
कृमिघ्नीविषहन्त्रीचचक्षुष्याध्मानाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ–सफेदजीरा–शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे है ।

अपिच ।

शुभ्रजीरंकटुग्राहिपाचनंदीपनंलघु ।
किञ्चिदुष्णंचमधुरंचक्षुष्यंरुचिकृन्मतम् ॥
गर्भाशयशुद्धिकरंरूक्षंबल्यंसुगन्धिकम् ।

तिक्तंवमिक्षयाध्मानवातंकुष्ठंविषंज्वरम् ॥
अरोचकंरक्तदोषमतीसारंकृमींस्तथा ।
पित्तञ्चगुल्मरोगञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेदजीरा-चरपरा, मलरोधक, पाचक, जठराग्निका दीपन करनेवाला, हलका, किञ्चित् उष्ण, मधुर, नेत्रोंको हितकारक, रुचिकारी, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाला, रूखा, बलकारक, सुगन्ध, कडवा तथा छर्दि, क्षय, आध्मान, वात, कोढ़, विषविकार, ज्वर, अरुचि, रक्तविकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुलमरोगका नाश करे है ।

कृष्णजीरकनामानि ।



कृष्णाजाजीतुजरणासुगन्धाकालजीरकः ।
वर्षाकालीचहृद्याचतथाचोद्गारशोधिनी ॥ (धन्वंतरि)

अर्थ-कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृद्या, उद्गारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, बहुगन्धा, भेदिनी, पटु, भेदनिका, रुच्या, नीला, नीलकणा, काश्मीरजीरका, वान्तिशोधिनी, कालमेषी, सुगन्धा, सुगन्ध, कृष्णजीर, कृष्णजीरक और उद्गारशोधक.)

संस्कृतभाषामें	कृष्णजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरा ।
वंगभाषामें	कालजीरे ।

मराठीभाषामें	शहाजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शाजीरु ।
कर्णाटकीभाषामें	करिजीरके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लजीर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्कारावे सीड् । Black Caravay seed
लैटिन्भाषामें	केरंनैग्रम् । Carum Nigrum
फारसीभाषामें	जीरेश्याह ।
अरबीभाषामें	कमुन् किरमानी ।

अस्यगुणाः ।

जरणाकटुरुष्णाचकफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याजीर्णज्वरघ्नीचचक्षुष्याग्रहणीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–कालाजीरा–चरपरा, गरम, कफ और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक, नेत्रोंको हितकारक और ग्राहकहै ।

अपिच ।

कृष्णजीरञ्चचक्षुष्यंरुच्यंसोष्णंसुगन्धिकम् ।
ग्राहकंकटुकंरूक्षंदीपकंजीर्णज्वरतिनुत् ॥
कफंशोथंशिरोरोगंकुष्ठंचैवविनाशयेत् ।(नि० र०)

अर्थ–कालाजीरा–नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ. सूजन, मस्तकरोग और कुष्ठको दूर करैहै ।

पीतजीरकगुणाः ।

पीताजाजीदीपनीचकट्वीचोष्णातिसारहा ।
आध्मानवातगुल्मंचग्रहणींचकृमीञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–पीलाजीरा–जठराग्निको दीपन करै, चरपरा, गरम तथा अतिसार, आध्मान, वायु, गुल्म, संग्रहणी और कृमिका नाश करैहै ।

द्विविधजीरकगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णंकटुकंपाकेरुच्यंपित्ताग्निवर्धनम् ।
कटुश्लेष्मानिलहरंगन्धाढ्यंजीरकद्वयम् ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-दोनों प्रकारकेजीरे-तीक्ष्णोष्ण, पचनेमें चरपरे, रुचिको उत्पन्न करनेवाले, पित्त तथा जठराग्निको बढानेवाले, चरपरे, कफ, वातनाशक और अत्यन्त गन्धवाले हैं ।

स्थूलजीरकनामानि ।

कालाजाजीपृथिवीचपृथ्वीचपृथुकापृथुः ।
कुञ्जिकाकुञ्चिकाकुञ्चीकारवीस्थूलजीरकः ॥

अर्थ-कालाजाजी, पृथिवी, पृथ्वी, पृथुका, पृथु, कुञ्जिका. कुञ्चिका, कुञ्ची, कारवी, स्थूलजीरक, (दिव्या, उपकुञ्चिका, काला, स्थूलकणा, मनोज्ञा, जारिणी, जीर्णा, तरुणी, सुषवी, पृथ्वीका, पतिवरा, सुषवा, उपकुञ्ची, सुषवी, भेषज, कृष्णा, जरणा, शाली, बहुगन्धा, कालिका, उपकोलिका, उपकुञ्ची, बृहज्जीरक.)

संस्कृतभाषामें	स्थूलजीरक, कालाजाजी ।
हिन्दीभाषामें	कलौंजी, मगरेला ।
बंगभाषामें	मोटाकेलेजीरें ।
मराठीभाषामें	कलौंजीजिरें ।
गुजरातीभाषामें	कलौंजी जीरुं ।
कर्णाटकीभाषामें	करिदोड्डुजीरिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लाजीरा कारा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्मॉल फेनल, फ्लॉवर । Small Fenel Flower
लैटिन्भाषामें	निगेल्लासेटिवा । Nigella Satva
फारसीभाषामें	शोनिझ, श्यादाने ।
अरबीभाषामें	हवतुस्सोदा ।

अस्य गुणाः ।

उक्तोपकुञ्चिकातिक्ताकट्वीचोष्णाचदीपनी ।
वृष्याचाजीर्णशमनीगर्भाशयविशोधिनी ॥
आध्मानवातगुल्मश्चरक्तपित्तंक्रमींस्तथा ।
कफंपित्तंचामदोषंवातंशूलञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-कलौंजी-कडवी, चरपरी, गरम, जठराग्निदीपक, वीर्यवर्धक, अजी-

र्णनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान, वात, गुल्म, रक्तपित्त, कृमि, कफ, पित्त, आमदोष, बादी और शूलको नष्ट करे है ।

त्रिविधजीरकगुणाः ।

जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ।
संग्राहिपित्तलंमेध्यंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥
ज्वरघ्नंपाचनंबल्यंवृष्यंरुच्यंकफापहम् ।
चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–तीनोंप्रकारके जीरे–(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे, चरपरे, गरम, दीपन, हलके, मलरोधक, पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशय-शोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्धक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा वात, आध्मान, गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे है ।

अरण्यजीरकनामानि ।

बृहन्यालीक्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ–बृहन्याली–क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

संस्कृतभाषामें	वनजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरी ।
वंगभाषामें	वनजीरे ।
मराठीभाषामें	कडूजिरें ।
कर्णाटकीभाषामें	काजीरगे ।
गुजरातीभाषामें	कालीजिरी । कडवीजीरी ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल फ्लीबेन । Purpalo Fleabane
लैटिन्भाषामें	वरनोनिया ऐंथेल मेंटिका । Vernonia Anthelmentica
अरबीभाषामें	कमून वहरी कमून रुमी ।

अस्यागुणाः ।

वनजीरःकटुःशीतोव्रणहापञ्चनामकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–कालाजीरी–चरपरी, शीतल और व्रणनाशक है ।

अपिच ।

अरण्यजीरकंचोष्णंतुवरंकटुकंमतम् ।

स्तम्भंवातंकफंचैवव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कालाजीरी-गरम, कषेली, चरपरी तथा स्तम्भक, वात, कफ और घावको दूर करेहै ।

इसका क्षुप होताहै, इसके ऊपरके भागमें रुंआ और वीचमें कालाजीरी होतीहै, यह घोडीके मशालेमें पडतीहै.

धन्याकनामानि ।



धन्याकंधनिकंधन्यंधान्यकञ्चधनीयकम् ।
कुस्तुम्बुरीछत्राधन्यातुम्बुरुंचवितुन्नकम् ॥

अर्थ-धन्याक, धनिक, धन्य, धान्यक, धनीयक, कुस्तुम्बुरी, छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, वितुन्नक, (कुस्तुम्बरु, धान्याक, धनेयक, धानक, धान्य, धानेय, धनिका, छत्रा, धान्य, सुगन्धि, शाकयोग्य, सूक्ष्मपत्र, जनप्रिय, धान्यवीज, वीजधान्य, अववीका, वेधक, धाना, कुनटी धेन्निका, धना, अल्लका, हृद्यगन्धा, वेशण, धानी और निःसार) ।

संस्कृतभाषामें	धन्याक ।
हिन्दीभाषामें	धनिया ।
वंगभाषामें	धने ।
मराठीभाषामें	धने, कोथिंवीर ।
गुजरातीभाषामें	धाणा, कोथमीर ।
कर्णाटकीभाषामें	कोथुंबुरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कोथमिल्ल, धाणीपापु ।
तामिलीभाषामें	कोतमल्लि ।

इंग्रेजीभाषामें कोर्यांडिरूसीड् । Coriander seed
लैटिन्भाषामें कोरीराङ्गम् सेटाईवम् । Corianbrnm Sativum
फारसीभाषामें तुख्मे कशीज़ ।
अरवीभाषामें कजबुरा ।

धन्याकगुणाः ।

धान्यकंमधुरंशीतंकषायंपित्तनाशनम् ।
ज्वरकासतृषाछर्दिकफहारि च दीपनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–धनिया–मधुर, शीतल, कषेला, पित्तनाशक तथा ज्वर, खांसी, तृषा, वमन और कफका नाश करैहै, तथा अग्निको दीपन करैहै ।

अपिच ।

धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु ।
तिक्तंकटुष्णवीर्य्यञ्चदीपनंपाचकंस्मृतम् ॥
ज्वरघ्नंरोचकंग्राहिस्वादुपाकत्रिदोषनुत् ।
आर्द्रन्तुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यक्रुमिप्रणुत् ।

अर्थ–धनिया–कषेला, स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रजनक, हलका, कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, ज्वरनाशक, रोचक, पाकके समय स्वादिष्ठ है, तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खांसी, कृशता और कृमिरोगका नाश करै है ।

कच्चे धनियेके भी धनियोंके समान गुण हैं, स्वादिष्ठ है और विशेष करके पित्तका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

आर्द्राकुस्तुम्बरीकुर्य्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम् ।
भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषुविविधेष्ववचारिता ॥ (शोडलनि०)

हिंगुनामानि ।

हिंगुशूलद्विड्रमठंबाह्लीकंजतुकंजतु ।
सहस्रवेधिजन्तुघ्नंसूपाङ्गंसूपधूपनम् ॥

अर्थ–हिंगु–शूलद्विट्, रमठ, वाह्लीक, जतुक, जतु, सहस्रवेधि, जन्तुघ्न,

सूपाङ्ग, सूपधूपन (हिंगुक, रामठ, वाह्लीक, पिण्याक, बाह्ली, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रमठध्वनि, शूलहृत्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन, रक्षोघ्न, उग्रवीर्य, अगूढगन्ध, जरण, भेदन, दीप्त, शूलनाशक) ।



संस्कृतभाषामें	हिंगु ।
हिन्दीभाषामें	हींग ।
वंगभाषामें	हिंगु ।
मराठीभाषामें	हिंग ।
गुजरातीभाषामें	वघारणी ।
कर्णाटकीभाषामें	लेसु ।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगुरा
लैटिन्भाषामें	फेरुलानर्थिक्स, नार्थेक्स, आस्सा, फिटिड़ा । Feru'a Narthex, Narthex rssafoetida
फारसीभाषामें	अंगुज्ञ दर्खते अगज्ञु खालीस ।
इंग्रेजीभाषामें	अस्साफेटीड़ा ।
अरबीभाषामें	हिलसीत ।

हिंगुगुणाः ।

लघूष्णंपाचनंहिंगुदीपनंकफवातजित् ।
कटुस्निग्धसरंतीक्ष्णंशूलाजीर्णविबन्धनुत् (सु०सं०)

अर्थ-हींग-हलकी, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक, चरपरी, स्निग्ध, सारक, तीक्ष्ण तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है ।

अपिच ।

हृद्यांहिंगुकटूष्णंचक्रिमिवातकफापहम् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नंचक्षुष्यंगुल्मनाशनम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-हींग-हृदयको हितकारी, चरपरी, गरम तथा क्रिमि, वात, कफ, विबन्ध, आध्मान, शूल और गुल्मका नाश करेहै और नेत्रोंको हितकारीहै ।

अन्यच्च ।

हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नंपित्तवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हींग-गरम, रुचिकारी, तीक्ष्ण, वात कफनाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह (अफारा) और कृमिको दूर करे है तथा पित्तवर्धक है ।

अपिच ।

हिंगूष्णंवह्निमांद्यघ्नंपाचनंकफवातजित् ।
कटुस्निग्धरसंतीक्ष्णंभूतघ्नंपित्तकोपनम् ॥

अर्थ-हींग-गरम, मंदाग्निनाशक, पाचक, कफवातविनाशक, चरपरी, स्निग्ध, तीक्ष्णरसवाली, भूतको दूर करे है और पित्तको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

बाह्लीकंपित्तलंचोष्णंहृद्यंतिक्तंपरंकटु ।
लघुतीक्ष्णंरुचिकरंपाचकंचाग्निदीपकम् ॥
स्निग्धंमलस्तम्भकरंश्वासकासकफापहम् ।
आनाहाध्मानगुल्मघ्नंशूलहृद्रोगनाशनम् ॥
वातश्चाजीर्णकंजन्तूनुदरंचैवनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-हिंग-पित्तजनक, गरम, हृदयको हितकारी, कडवी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपन, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खांसी, कफ, आनाह, अर्थात् (अफारा) आध्मान, गुल्म, शूल, हृदयरोग, वादी, अजीर्ण. कृमि और उदररोगका नाश करे है ।

हींग इरान तथा पंजावमें होतीहै ।

अस्य शोधनविधिः ।

अङ्गारस्थेलोहपात्रेसघृतेरामठंक्षिपेत् ।
चालयेत्किञ्चिदारक्तवर्णंयोगेषुयोजयेत्॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-घृतसहित हींगको लोहेके पात्रमें कर अंगारेके ऊपर रखदे, फिर चलावे, जब कुछेक लाल होजाय, तब उतारकर औषधीके काममें लावै ।

हिंगुपत्रीनामानि ।

त्वक्पत्रीहिंगुपत्री च कर्बरीपृथुलापृथुः ।
बाष्पीकाबाष्पिकाबाष्पीदीर्घिकादारुपत्रिका ॥

अर्थ-त्वक्पत्री-हिंगुपत्री, करबरी, पृथुला, पृथु, बाष्पीका, बाष्पिका, बाष्पी, दीर्घिका, दारुपत्रिका, (कारवी, करवी, पृथ्वी, पृथ्वीका, बाष्पका, बाष्पा, पत्री, तन्वी, दारुपत्री, बिल्वा और पृथुका)

अस्यागुणाः ।

हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः ।
हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, चरपरी, तथा हृदय रोग, वस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातका नाश करे है ।

अपिच ।

हिंगुपत्रीकटुस्तीक्ष्णातिक्तोष्णापाचिकामता ।
रुच्यापथ्यादीपनीचहृद्यासौगन्धकारिणी ॥
तुवराकफवातामवस्तिपीडांचनाशयेत् ।
बद्धविट्कार्शगुल्मादिप्लीहामेदोपचीविषान् ॥ (नि०र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-चरपरी, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, पाचक, रुचिकारक, पथ्य, दीपन, हृदयको हितकारी, सुगंधि, कषेली तथा कफ, वात, आमदोष, वस्तिकी पीडा, मलबद्धता, बवासीर, गुल्म, प्लीहा, मेद, अपची और विषका नाश करेहै ।

इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके पत्तोंसे मिलतेहैं । जैसे हिंगुके पत्तोंको संस्कृतमें कवरी और कर्वरी कहतेहैं, सो इसकोभी कर्वरी कवरी कहतेहैं और गुणभी हींगसे मिलतेहैं । निघण्टुरत्नाकरकी मराठी भाषामें "वाफली" लिखीहै सो " वाफली" अक्कलकरेके शाककूं कहते हैं ।

नाडीहिङ्गुनामानि ।

नाडीहिंगुपलाशाख्याजन्तुकारामठीचसा ।
वंशपत्रीचपिण्डाह्वासुवीर्याहिंगुनाडिका ॥

अर्थ-नाडीहिंगु, पलाशाख्य, जंतुका, रामठी, वंशपत्री, पिण्डाह्वा, सुवीर्या, हिंगुनाडिका(वेणुपत्री, पिण्डा, हिंगु, शिवादिका) ।

संस्कृतभाषामें	नाडीहिंगु ।
हिन्दीभाषामें	कलः पतिहीङ्ग, डिकामाली ।
वंगभाषामें	हिंगुविशेष ।
मराठीभाषामें	डिकेमाली ।
गुजरातीभाषामें	डिकामाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहन्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिभहिंगवा कारु इंगवा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिकेमालीगम्, गम्भीगार्डिनिया । Dika mallegum Gummy Gardinia
लैटिन्भाषामें	गार्डित्यायुसिडा गार्धिन्यागम्मिफेरा । Gard niu Ceeda Gardinua Gummefera
अरवीभाषामें	कनखाभ

अस्या गुणाः ।

नाडीहिंगुःकटुष्णाचकफवातार्तिशान्तिकृत् ।
विष्टाविबन्धदोषघ्नीचानाहामापहारिणी । (राजनिघण्टु)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाली तथा विष्ठा, विबन्ध और आनाह रोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

नाडीहिंगुस्तुकटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चदीपकः ।
कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशनः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, मलबन्ध, मनका मोह और आमको दूर करेहै ।

विवरण । वडा वृक्ष होता है, फूल सफेद होताहै, फल पोसतके डोरेकी समान होतेहैं, पत्ते वटमोगराके समान होतेहैं इसको नाडीहिंगु कहतेहैं ।

वचानामानि ।

वचोग्रगन्धाषड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका ।
मङ्गल्याजटिलातीक्ष्णागालिनीलोमशातथा ॥

अर्थ–वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला, तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा (विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी, वच्या, काङ्गा, भद्रा,

क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, श्लेष्मघ्नी, तीक्ष्णपत्रा, जलजा, इक्षुपत्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा ।

अर्थ–खुरासानी वच सफेद होतीहै, उसको संकृतमें हैमवती (शतपर्वा, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, दीर्घपत्रा, कर्षिणी) कहतेहैं ।

संकृतभाषामें	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामें	वच, खुरासानीवच, सफेदवच ।
वंगभाषामें	वच, खोरासानी वच, श्वेतवच ।
मराठीभाषामें	वेखंड, पांढरें वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरसाणीवच, बालावज ।
कर्णाटकीभाषामें	वच बिलीयवजे ।
तैलिङ्गीभाषामें	वासा, वडज, नल्लवस ।
तामिलीभाषामें	वशम्बु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्फ्लारूट् । Sweet Flogroot
लैटिन्भाषामें	एकोररा, केलेमस् । Aehoras Calumus
पारसीभाषामें	सोसन जर्द अगर तुरकी ।
अरबीभाषामें	उदलबुज ।

वचागुणाः ।

वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत् ।
दीपनीवाक्प्रदाकण्ठ्याशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नीशोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत् ॥(ग०नि०)

अर्थ–वच–उग्रगन्धयुक्त, चरपरी, कडवी, गरम, वमनकारक, अग्निजनक, दीपन, वाणीदायक, कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, शोफ, वातज्वर, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, कृमि और वातका नाश करेहै ।

अपिच ।

वातातीक्ष्णाकटूष्णाचकफामग्रन्थिशोफनुत् ।

वातज्वरातिसारघ्नीवान्तिकृन्मादभूतहृत्॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरैहै । वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है ।

अन्यच्च ।

वचायुष्यावातकफतृष्णाघ्नीस्मृतिवर्द्धिनी । (रा०व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक, और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

शुक्लवचागुणाः ।

वचाश्वेतामतिर्मेधाचाग्निदीप्तिकरीमता ।
आयुष्यदागुणाढ्याचवृष्याकफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरात्वितरेपूर्ववद्गुणाः ।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायकहै, जठराग्निप्रदीपकहै, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करैहै । शेषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीवचागुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है । विशेषकरके कफ तथा खांसीको दूरकरै है स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है ।

वचाद्भुतगुणाः ।

अद्भिर्वापयसाज्येनमासमेकन्तुसेविता ।
वाचाकुर्य्यान्नरंप्राज्ञंश्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहेपीतंपलमेकंपयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणंकुर्य्यान्महाप्रज्ञान्वितंनरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा चन्द्रग्रहणके समय

अथवा सूर्यग्रहणके समय एक पल वचके चूर्णको दूधके साथ भक्षण करनेसे उसी समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धियुक्त करतीहै । वच सजल स्थान और रेतली भूमिमें उत्पन्न होती है ।

कुलिञ्जननामानि ।

कुलञ्जोगन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलञ्जनः ।

अर्थ-कुलञ्ज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलञ्जन ।

संस्कृतभाषामें	कुलञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	कुलींजन ।
वंगभाषामें	कुलञ्जन ।
मराठीभाषामें	कोळिञ्जन । थोर कोळिञ्जन ।
गुजरातीभाषामें	कुलिञ्जन नानु । कुलिञ्जन मोटे ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटर गैलं गाल । Greater Galangal
लैटिन्भाषामें	आलिपानिया,आफिसिनेरं । Alpinia officinarum
फारसीभाषामें	खिरद्दारु ।
अरबीभाषामें	ईर्के खोलिञ्जान् ।

अस्य गुणाः ।

कुलञ्जःकटुतिक्तोष्णोदीपनोमुखदोषनुत् । (रा० नि०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, दीपन और मुखदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुलिञ्जनंकटुस्तिक्तमुष्णंचाग्निप्रदीपनम् ।
रुच्यंस्वर्य्यंचहृद्यंचमुखकण्ठविशुद्धिकृत ॥
मुखदोषंकफंचैवकासंवातंकफंहरेत् । (नि० र०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, अग्निदीपक, रुचिकारक, स्वरको सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला तथा मुखदोष, कफ, खांसी, वात और कफको नष्ट करेहै ।

बडे कुलींजनका बडावृक्ष होताहै, देखनेमें दाखकी वेलके सदृश होताहै, इसकी जडको कुलींजन कहतेहैं । कितनेही मनुष्य पानकी जडको कुलींजन कहतेहैं, सो पानकी जड नहीं है ।

चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् ।



फिरंगदेशसम्भूताचीनदेशेथविश्रुता ।
नामतश्चोपचीनीस्यादश्वगन्धसमाभवेत् । (शि०प्र०)

अर्थ–फिरंग देशमें उत्पन्न होतीहै, चीनदेशसे आती है और इसका नाम चोपचीनी है और असगन्धकी समान होतीहै ।

संस्कृतभाषामें	द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता ।
हिन्दीभाषामें	चोवचीनी ।
वंगभाषामें	तोपचीनी ।
मराठीभाषामें	चोपचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चोपचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	चाईनारूट् । China root
लैटिन्भाषामें	स्माइलाक्स चाइना । Smilax China
फारसीभाषामें	एवन ।
अरबीभाषामें	एवन ।
फिरंगीभाषामें	चक्का ।
यूनानीभाषामें	खसिलियर आशासिनी ।

अस्या गुणाः ।

द्वीपान्तरवचाकट्वीतिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् ।
व्यपोहतिविशेषेणफिरंगामयनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-द्वीपान्तरवचा-अर्थात् चोवचीनी, चरपरी, (मधुर) कडवी, गरम, मलमूत्रकी शोधन करनेवाली तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद और अंगकी वेदनाको दूर करेहै और विशेष करके फिरंगरोगका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

द्वीपान्तरवचातिक्ताचोष्णाचाग्निप्रदीपिनी ।
धातुवृद्धिकरीबल्यामलमूत्रविशोधिनी ॥
तारुण्यदापौष्टिकीचवृष्याचैवरसायनी ।
गर्भप्रदाबद्धविट्कमाध्मानोन्मादनाशिनी ॥
वातंशूलमपस्मारधातुक्षयविनाशिनी ॥
अङ्गग्रहंफिरंगोपदंशंमांद्यंकटिग्रहम् ॥
पक्षाघातमुरुस्तम्भंराजयक्ष्मव्रणौतथा ।
गण्डमालांनेत्ररोगंशुक्रशोणितदोषकम् ॥
सर्वांगकम्पवातञ्चकुब्जवातञ्चनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-चोपचीनी-कडवी, गरम, अग्निप्रदीपक, धातुवर्धक, बलकारक, मल और मूत्रकी शोधन करनेवाली, तारुण्यदायक, पुष्टिकारक, वीर्यजनक, रसायन, गर्भदायक तथा बद्धविट्क, आध्मान, उन्माद, वात, शूल, अपस्मार, धातुक्षय, अंगग्रह, फिरंग, उपदंश, मांद्य, कटिग्रह, पक्षाघात, ऊरुस्तम्भ, क्षय, व्रण, गण्डमाला, नेत्ररोग, शुक्रदोष, रक्तविकार, सर्वांगवात, कम्पवात और कुब्जवातका नाश करेहै ।

अपिच ।

फिरंगरोगान्कुष्ठांश्चविसर्पांश्चविनाशयेत् ।

क्षीणानांपुष्टिकारिणींचाग्निमान्द्यंनियच्छति॥ (द्रव्यनि०)

अर्थ—चोपचीनी—फिरंगरोग, कोढ और विसर्परोगका नाश करेहै, क्षीण मनुष्योंको पुष्ट करनेवाली और मंदाग्निका नाश करनेवाली है ।

निषेधः ।

मद्यंत्यजेत्तथातैलंकाञ्जिकंशाकमेवच ।
क्षारमम्लरसंचैवलवणंतिक्तभोजनम्॥ (अनंगतिमिरभा०)

अर्थ—चोवचीनीके सेवन करनेवाले मनुष्य मदिरा, तेल, कांजी, शाक, क्षाररसवाले पदार्थ, अम्लरसवाले पदार्थ, लवण और तिक्त भोजन त्यागदें ।

अस्यालक्षणम् ।

अश्वगन्धासमंपत्रमौषधीग्रन्थिसंयुता ।
वर्णतःपाटलाभाचदृढाचमधुरारसे ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ—इसके पत्ते असगन्धकी समान होतेहैं, औषधी गांठे युक्त होती है, इसका रंग किञ्चित् पीला और सफेद होताहै, दृढ होतीहै और रस मीठा होताहै ।

प्राचीन वैद्यकके ग्रंथोंमें इसका प्रयोग नहीं देखनेमें आता, सबसे प्रथम महात्मा भावमिश्रने अपने ग्रन्थमें इसका वृत्तांत लिखा और इसका द्वीपान्तरीय नाम रक्खा । ऐसा अनुमान होताहै कि, विदेशीय लताका मूलविशेष समझकर इसका चोपचीनी नाम रक्खा गया है । व्यवहार—मूल ।

आकारकरभनामानि ।

आकारकरभश्चैवाकल्लकोथह्यकल्लकः ।

अर्थ—आकारकरभ, आकल्लक, अकल्लक (आकरकरा)

संस्कृतभाषामें	आकारकरभ ।
हिन्दीभाषामें	अकरकरा ।
वंगभाषामें	अकोरकोरा ।
मराठीभाषामें	अक्कलकरा ।
गुजरातीभाषामें	अक्कलकरो ।
कर्णाटकीभाषामे	अक्कलकरा ।
इंग्रेजीभाषामें	पेलेटरी रूट् । Pallatory root
लैटिन्भाषामें	एनेसाई क्लसपेरे थ्रम् । Anacy clus pere thrum
अरबीभाषामें	आकरकरहा ।

अस्य गुणाः ।

अक्कलकरोष्णोवीर्येणबलकृत्कटुकोमतः ।
प्रतिश्यायश्चशोथश्चवातश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अकरकरा-उष्णवीर्य, बलकारक, चरपरा तथा प्रतिश्याय, सूजन और वातका विनाश करैहै ।

हपुषानामानि ।

हपुषावपुषाविस्त्रापराश्वत्थफलास्मृता ।
मत्स्यगन्धाप्लीहहन्त्रीविषघ्नीध्मांक्षनाशिनी ॥

अर्थ-हपुषा, वपुषा, विस्त्रा, (हबुषा, विस्त्रगंगा, विगन्धिका, यह नाम प्रथम प्रकारके हाउबेरकेहैं) अश्वत्थफला, मत्स्यगन्धा, प्लीहहन्त्री, विषघ्नी, ध्मांक्षनाशिनी, (स्वल्पफला, कच्छुघ्ना, प्लीहशत्रु, कफघ्नी, अपराजिता)

संस्कृतभाषामें	हपुषा ।
हिन्दीभाषामें	हाऊवेर ।
वंगभाषामें	हबूषा ।
मराठीभाषामें	होश ।
कर्णाटकीभाषामें	परडुहव्वे ।
लैटिन्भाषामें	थेवेटियानेरिफोलिया । Thevetia nerifoli

हाऊवेर दो प्रकारका है, तिसमें प्रथम फल मछलीके समान और आमकी सदृश गन्धवाला होताहै ।

हपुषागुणाः ।

हपुषाकटुकातिक्ताग्रुरूष्णादीपनीमता ।
तुवराग्रहणीशूलगुल्मार्शोवातनाशिनी ॥
गुल्मोदरकफामाग्निमांद्यकृमिकपीनसान् ।
मलावष्टम्भकंचैवप्रदरंचैवनाशयेत् ॥

अर्थ-हाऊवेर-चरपरा, कडवा, भारी, गरम, दीपन, कषेला तथा संग्रहणी, शूल, गुल्म, बवासीर, वात, उदररोग, कफ, आम, मन्दाग्नि, कृमि, पीनस, मलावष्टंभ और प्रदररोगका नाश करैहै ।

स्वल्पहपुषागुणाः ।

स्वल्पफलामूत्रकृच्छ्रप्लीहाविषकफाञ्जयेत् ।

गुणाह्यस्याःपूर्ववज्ज्ञेयाःसुज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ–दूसरेप्रकारका हाऊवेर, मूत्रकृच्छ्र, प्लीहा, विष और कफको नष्ट करैहै। शेष गुण प्रथमकी समान जानने।

विडंगनामानि।

क्रिमिघ्नंभस्मकंमोघाविडंगकृमिकण्टकम्।
कैरालंकेवलंवेल्लंतण्डुलंचित्रतण्डुला ॥

अर्थ–क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, विडङ्ग, कृमिकण्टक, कैराल, केवल, वेल्ल, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोघा, तंडुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकंटक, रसायन, पावक, तंडुल, क्रिमिरिपु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहा, चित्रा, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कैराली, गहरा, कापाली, वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतन्दुला, शूद्रतंदुला, चित्रबीजा और घोषा)

संस्कृत भाषामें	विडङ्ग।
हिन्दीभाषामें	वायविडङ्ग।
वंग भाषामें	विडङ्ग
मराठी भाषामें	वावंडिग।
गुजराती भाषामें	वावढींग।
कर्णाटकी भाषामें	वायुविडङ्ग
तैलिङ्गी भाषामें	वायु विडंघमु।
तामिली भाषामें	वायविलं।
इंग्रेजीभाषामें	बेब्रंग्। Babreng
लेटिन् भाषामें	ऍंबेलिया रिबीस् Embrelia ribes
फारसी भाषामें	वरंगकावली।
अरबी भाषामें	वरंज कावली।

अस्य गुणाः।

विडंगंकटुतिक्तोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ (मद०नि०)

अर्थ–वायविडङ्ग–चरपरी, कडवी, गरम, रूखी, अग्निकारक, हलकी तथा गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबन्धको दूर करे है।

अपिच ।

विडंगंकटुकंपाकेलघुवातकफापहम् ।
तिक्तमीषद्विषंहन्तिरूक्षोष्णंकृमिनाशनम्। (शोडलनि०)

अर्थ-वायविडंग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक, किंचित् कडवी, विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

विडंगंकटुकंतिक्तमुष्णंरुच्यंलघुस्मृतम् ।
दीपनंवातकफहृदग्निमांद्यारुचीर्जयेत् ॥
भ्रान्तिकृमिश्चशूलंचआध्मानमुदरंतथा ।
प्लीहाजीर्णश्वासकासौहृद्रोगंविषदोषकम् ॥
आमंमलावष्टम्भञ्चमेदोमेहञ्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, शूल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

तुम्बुरुनामानि ।

तुम्बुरुःसौरभःसौरवनजःसानुजोद्विजः ।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रोमहामुनिः ॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्धक, गन्धालु, स्फुटितफल)

अस्य गुणाः ।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तःकटूष्णःकफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नोवह्निदीपनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तुम्बुरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तुम्बुरुग्रथितंतिक्तंकटुपाकेपितत्कटु ।

रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥

अर्थ–तुम्बुरु– कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामें -	चिरफळ ।
कोंकणभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरीशुभावांशीत्वक्क्षीरीवंशलोचना ।

अर्थ–तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशजा, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्म्मरी, श्वेता, कर्पूररोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, बॉशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामें	धीसिलिस्यस् कंक्रिशन् । Thesiliceous Concretion
लैटिन्भाषामें	बबुसाए रंडिनेइया । Bambusaatundineoeca
फारसीभाषामें	तवाशीर ।
अरबीभाषामें	तवाशीर ।

अस्यागुणाः ।

वंशजाबृंहणीवृष्याबल्यास्वाद्वीचशीतला ।
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥
हरेत्कुष्ठंव्रणंपाण्डुंकषायावातकृच्छ्रजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-वंशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, स्वादिष्ट, शीतल तथा तृषा, खाँसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त, पित्त, कामला, कुष्ठ और पाण्डु-रोगको दूर करेहै, कषायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

वांशीस्वादुर्हिमारूक्षाशोषकासक्षयापहा ।
भ्रमश्वासहराचैवतवक्षीरश्चतद्गुणम् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-वंशलोचन-स्वादिष्ठ, शीतल, रूखा तथा शोष, खाँसी, क्षय, भ्रम और श्वासको दूर करेहै । तवक्षीरके भी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

तुगारूक्षातुवरामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताशुभावहाग्राहीवृष्याधातुविवर्धिनी ॥
बल्याक्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।
रक्तपित्तंज्वरंकुष्ठंकामलांपाण्डुरोगकम् ॥
दाहंतृषांव्रणंमूत्रकृच्छ्रंदाहञ्चनाशयेत् ।
वातघ्नीचैवविज्ञेयावैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वंशलोचन-रूखा, कषेला, मधुर, रक्तको शुद्ध करनेवाला, शीतल, शुभावह, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, बलकारक तथा क्षय, श्वास, खाँसी, रुधिरविकार, अपची, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह आर वातका विनाश करेहै ।

तवक्षीरनामानि ।

तवक्षीरंपयःक्षीरंयवजंगवयोद्भवम् ।
अन्यद्गोधूमजंचान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥
अन्यच्चतालसम्भूतंतालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ—तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्भव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।



संस्कृतभाषामें	तवक्षीर ।	
हिन्दीभाषामें	तवाखीर ।	
वंगभाषामें	तवक्षीर ।	
मराठीभाषामें	तवकील ।	
गुजरातीभाषामें	तवखार ।	
इंग्रेजीभाषामें	आरारोट ।	Arrotwrot
कर्णाटकीभाषामें	तवक्षीर ।	
लैटिन् भाषामें	कर्क्युमाणास्टिफोलिया ।	Curcuma-angustifolia
फारसीभाषामें	तवाशीर ।	

अस्य गुणाः ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशिशिरंदाहपित्तनुत ।
क्षयकासकफश्वासनाशनंचास्रदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—तवाखीर—मधुर, शीतल, तथा दाह, पित्त, क्षय रुधिरविकार, खांसी, कफ और श्वासको दूर करेहै ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तुमधुरंशुभंशीतंसुगन्धिकम् ।
बल्यंवृष्यंपौष्टिकञ्चधातुवृद्धिकरंलघु ॥
सुस्निग्धक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।
कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्ठहम् ॥

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरंचान्यंजातंस्वल्पगुणंमतम् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–तवाखीर–मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धी, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त, दाह, अरुचि, खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ़, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

तवाखीर पांच प्रकारकी होतीहै, जौ, गेहूं, चावल, तालवृक्ष और वनगायके दूधकी, इसप्रकार तवाखीर अनेक जातिकी होतीहै, सिंगाडेके चूनकी भी बनतीहै, । इन सबमें वनगायके दूधकी और जौकी उत्तम होतीहै ।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेनःफेनश्चडिण्डिरोब्धिकफस्तथा ।

अर्थ–समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अब्धिकफ, (अर्णवजमल, अर्णवज, सिन्धुकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल, श्वेतधामा, लवणोदधिसम्भव, वार्द्धिफेन, पयोधिजसुफेन, अब्धिडिण्डीर, सामुद्र, शुष्काशुष्क, विंध्याह्व, दधिफेन, सारमल)

संस्कृतभाषामें	समुद्रफेन ।	
हिन्दीभाषामें	समुद्रफेन ।	
वंगभाषामें	समुद्रफेना ।	
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।	
गुजरातीभाषामें	समदर फीण ।	
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।	
तैलिंगीभाषामें	सामुद्रनालिके ।	
इंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन ।	Cattlefishbone
लैटिन् भाषामें	सेपिया ओपिसिनेलीस्त ।	Sepia officinalis
फारशीभाषामें	कफेदरिया	
अरबीभाषामें	जुबदुल्लेहेर ।	

अस्य गुणाः ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलस्तथा ।
कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-समुद्रफेन-नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कषेले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करेहै । और हलका है ।

अपिच ।

समुद्रफेनंशिशिरंकषायंनेत्ररोगनुत् ।
कफकण्ठामयघ्नश्चरुचिकृत्कर्णरोगहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग, और कर्णरोगका नाश करेहै और रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

अब्धिफेनोरुचिकरोलेखनस्तुवरोलघुः ।
चक्षुष्यःशीतलश्चैवपटलादिरुजाहरः ॥
सारश्चविषदोषघ्नःकर्णशूलहरःपरः ।
कफश्चकण्ठरोगंचपित्तंचैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-समुद्रफेन-रुचिकारक, लेखन, कषेले, हलके, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, पटलादिरोगनाशिक, सारक, विषनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनंशिशिरंतुवरंवान्तिकृत्परम् ।

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला और अत्यन्त वान्तिकारक है । मात्रा २ मासेकी ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिर्वर्गः ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।



जीवकनामानि ।

जीवकःक्ष्वेडह्रस्वांगो दीर्घायुःशृङ्गकःप्रियः ।

अर्थ-जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायु, शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूर्च, शीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक, चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, भृङ्गाह्व, चिरंजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्यगुणाः ।

जीवकोमधुरःशीतोरक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

क्षयदाहज्वरान्हन्तिशुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त. पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरको दूर करेहै। शुक्र (वीर्य) और कफको बढावेहै।

अपिच।

जीवकोमधुरःशीतःशुक्रलःकफकृन्मतः।
रक्तपित्तहरोबल्योवातपित्तज्वरापहः ॥
कृशताक्षयदाहानांरक्तदोषस्यनाशकः। (नि० र०)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल. शुक्रजनक, कफकारक, रक्त पित्तनाशक, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता. क्षय, दाह और रुधिरविकारको दूर करे है।

अस्य स्वरूपं यथा।

जीवन्तीसदृशैःपत्रैर्जीवकोगुल्मकःस्मृतः।
कण्टीक्षीरीतथानूपेभवतीत्यब्रवीन्मुनिः ॥ (इतिकैयदेव)

अर्थ-जीवक औषधिका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होताहै, पत्ते जीवन्तीके समान होते हैं, कांटे सूक्ष्म होते हैं और इसमें दूध होताहै।

अपिच।

जीवकोह्रस्वविटपःकूर्चशीर्षश्चदक्षिणे।
देशेसंजायतेकन्दोनिःसारःसूक्ष्मपत्रकः ॥(शिवनिघण्टु)

अर्थ-विटप छोटा है, इसका आकार कुराहीके समान होता है, इस कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है। पत्ते सूक्ष्म सारहीन होते हैं। व्यवहार-कन्द।

ऋषभकनामानि।

ऋषभोदुर्द्धरोद्राक्षामातृकोवल्लुरोनृपः ॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, वल्लुर, नृप, (ऋषभक, वृषभ, वृष, वीर, पृथिवीपति, गोपति, धीर, विषाणी: ककुद्मान, पुङ्गव, बोडी, शृङ्गी, धुर्य्य, भूपति, कामी, रुक्षप्रिय, उक्षा, लाङ्गली, गौ. बन्धुर, बन्धूर, गोरक्ष, वनवासी, ऋषिप्रिय, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणाः।

ऋषभकोमधुःशीतोगर्भसन्धानकारकः।

शुक्रधातुकफानाञ्चकारकोबलदायकः ॥
वृष्यःपुष्टिकरःप्रोक्तःपित्तरक्तातिसारजित् ।
रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऋषभक-मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक, शुक्रवर्द्धक, कफकारक, बलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिसार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्षभकगुणाः ।

जीवकर्षभकौबल्यौशीतौशुक्रकफप्रदौ ।
मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक-बलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, मधुर, पित्त, दाह, रुधिरविकार, वायु और क्षयरोगको नाश करेहै ।

ऋषभोजीवकगुणोकामदःसविशेषतः । (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-ऋषभक औषधीके गुण जीवककेही समान हैं । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्षभकस्वरूपम् ।

जीवकर्षभकौज्ञेयौहिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौनिःसारौसूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक यह दोनों औषधि हिमालय पर्वतके शिखर पर उत्पन्न होतीहैं, इनका कंद लहसनके कंदकी समान होताहै साररहित बारीक पत्ते होते हैं ।

जीवक कुहरीके आकार और ऋषभक वृषभ(बैल)के सिंगके आकार होताहै ।

मेदानामानि ।

मेदाधीरामणिच्छिद्रामधुराजीवनीरसा ।

अर्थ-मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा, जीवनी, रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, विभावरी, वसा, शल्यपर्णिका, मेदसारा, स्नेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, द्रवा, साध्वी, शल्यदा, बहुरन्ध्रिका, मेदोवती, पुरुषदन्तिका, शल्यपर्णी छिद्रबहुला, भव्या, जीवनिका, अध्वरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणाः ।

मेदातुमधुराशीतापित्तदाहार्त्तिकासनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरावातदोषकरीचसा ॥(निघण्टुचूडामणि)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खांसी, राजयक्ष्मा और ज्वरको नाश करैहै और वातको उत्पन्न करे है ।

अपिच ।

मेदातुमधुराशीतावृष्यास्वाद्वीगुरुःस्मृता ।
शुक्रवृद्धिकरीस्तन्यास्निग्धाचश्लेष्मलास्मृता ॥
वातंपित्तंरक्तदोषंक्षयञ्चैवविनाशयेत् ।
ज्वरंदाहञ्चकासंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल, वीर्यजनक, स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तविकार, क्षय, ज्वर, दाह और खांसीको दूर करे है ।

मेदालक्षणम् ।

शुभ्रकन्दोनखच्छेद्योमेदधातुरिवस्रवेत् ।
यःसमेदेतिविज्ञेयोजिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥

अर्थ-जिसका सफेद कन्द हो और जिसमें नखसे छेदनेसे मेदा धातुकी समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जानना ।

महामेदानामानि ।

महामेदादेवमणिर्वसुच्छिद्राविपाण्डुरा ।

अर्थ-महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विपाण्डुरा (जीवनी, पांशुरोगिणी, महामेद, पुरोद्भवा, देवेष्ट, सुरमेदा, दिव्या, देवगन्धा, वृक्षार्हा, त्रिदन्ती, देवतामणि, सोमा, देवेष्टा, सुरामेदा और मेदोद्भवा)

महामेदागुणाः ।

महामेदाहिमारुच्याकफशुक्रप्रवृद्धिकृत् ।
हन्तिदाहास्रपित्तानिक्षयंवातंज्वरंचसा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-महामेदा-शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको वढानेवाली तथा दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करनेवाली है ।

महामेदा-मेदागुणाः ।

मेदायुग्मंपरंस्निग्धंशुक्रमेदःप्रवर्द्धनम् ।
मधुरंरसपाकाभ्यांजीवनंवातपित्तजित् ॥

अर्थ-मेदा और महामेदा-स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है ।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिधःकन्दोमोरंगादौप्रजायते ।
शुभ्रार्द्रकनिभःकन्दोलताजातःसुपाण्डुरः ॥

अर्थ-महामेदा-नामवाला कन्द मौरंगादि देशोंमें उत्पन्न होताहै यह कन्द देखनेमें सफेद अदरखकी समान होताहै, इसकी वेल चलती है और पाण्डुरंगका होताहै ।

ऋद्धिनामानि ।

ऋद्धिःप्राणप्रियावृष्याप्राणदासम्पदाह्वया ।

अर्थ-ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य, सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रथाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

अस्या गुणाः ।

ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नीशुक्रलामधुरागुरुः ।
प्राणैश्वर्यकरीमूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ (भा०प्र)

अर्थ-ऋद्धि-बलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राणप्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

ऋद्धिस्तुमधुरास्निग्धामेधाकृच्छीतलास्मृता ।
कफंशुक्रंवर्धयन्तीप्राणैश्वर्यबलप्रदा ॥
रक्तशुद्धिकरीरुच्यागुर्वीकुष्ठापहामता ।
क्रिमित्रिदोषमूर्च्छास्रपित्ततृट्क्षयपित्तहा ॥
वातंरक्तरुजंजूर्तिंनाशयेदितिकीर्तिता । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-ऋद्धि-मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीतल, कफकारक, शुक्रवर्द्धक, प्राणदायक, ऐश्वर्यजनक, बलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोढ, कृमिदोष, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरका नाश करेहै ।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्बोधनिकाचैवप्रियासिद्धिःसुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, बोधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, ऋद्धि, लक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मङ्गल्या, श्री, सम्पत्, आशी, जनेष्टा, भूति, मुत्, सुख, जीवभद्रा)

वृद्धिगुणाः ।

वृद्धिर्गर्भप्रदाशीताबृंहणीमधुरास्मृता ।
वृष्यापित्तास्रशमनीक्षतकासक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तकी शान्ति करनेवाली तथा उरःक्षत, खांसी और क्षयरोगका नाश करेहै।

ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकन्दौचभवतःकोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितःकन्दोलताजातःसरन्ध्रकः ॥
सएवऋद्धिर्वृद्धिश्चभेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रंथिसमाऋद्धिर्वामावर्तफलाचसा ॥
वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनों कन्द कोशलपर्वतमें उत्पन्न होतेहैं, यह दोनोंही कन्द लताजातिके होतेहैं और इनके ऊपर सफेद रोम होतेहैं और छिद्रयुक्त होतेहैं ।

ऋद्धि और वृद्धिमें केवल इतनाही अंतर है कि, ऋद्धि कपासकी गांठके समान आकृतिवाली बांएभागमें आवर्तशील फलयुक्त होतीहै, वृद्धि दक्षिण भागमें आवर्तमय फलसहित होतीहै ।

काकोलीनामानि ।

काकोलीशीतपाकीचपयस्यावायसोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयस्या, वायसोलिका, (वायसोली, क्षीरा, वीरा, धीरा, शुक्का, मेदुरा, ध्मांक्षोली, ध्मांक्षिका स्वादुमांसी; वयस्था, जीवंती, मधुरा, शुक्कक्षीरा, पयस्विनी, कायास्थिका, जीवनीया)

काकोलीगुणाः ।

काकोलीमधुरास्निग्धाक्षयपित्तानिलार्तिनुत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नीचकफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काकोली-मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष, दाह और ज्वरको नाशकरे है, कफ और शुक्रको बढावेहै ।

अन्यच्च ।

काकोलीशीतलावृष्यामधुराशुक्रकारिणी ।
तिक्ताकफकरीगुर्वीक्षयपित्ततृषाहरा ॥
रक्तदोषंरक्तपित्तंपित्तंदाहंज्वरंविषम् ।
वातपित्तरुजंचैवनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ-काकोली-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, धातुवर्द्धक, कडवी, कफकारक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृषा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विषवायु और पित्तरोगको दूर करेहै ।

क्षीरकाकोलीनामानि ।

पयस्याक्षीरकाकोलीमहावीरापयस्विनी ।

अर्थ-पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुक्ला, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविषाणिका, जीववल्ली, जीवशुक्ला, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्था, क्षीरमधुरा, दुग्धाढ्या)

क्षीरकाकोलीगुणाः ।

क्षीरकाकोलिकावृष्यास्तन्यवृद्धिकरीलघुः ।
रसवीर्य्यविपाकेषुकाकोलीसदृशाचसा ॥ (ग०नि०)

अर्थ-क्षीरकाकोली-वीर्य्यजनक, स्तनोंमें दूधवढानेवाली, हलकी और रस, वीर्य्य और विपाकमें काकोलीकी समानहै ।

द्विविधकाकोलीगुणाः ।

काकोलीयुगलंशीतंशुक्रलंमधुरंगुरु ।
बृंहणंवातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-शीतल, वीर्यजनक, मधुर, भारी, पुष्टिकारक तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष और ज्वरको दूरकरेहै ।

अन्यच्च ।

काकोलिकाद्वयंवृष्यमवस्थास्थापनंपरम् ।
स्वादुपाकरसंबल्यंशीतवीर्य्यञ्चजीवनम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-वृष्य, अवस्थास्थापक, पाक और रसमें स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवीर्य्य और जीवन है ।

काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम् ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ।
यत्रस्यात्क्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते ॥
पीवरीसदृशःकन्दःक्षीरंस्रवतिगन्धवान् ।
सप्रोक्तःक्षीरकाकोलीकाकोलीलिङ्गमुच्यते ॥
यथास्यात्क्षीरकाकोलीकाकोल्यपितथाभवेत् ।
एषाकाचिद्भवेत्कृष्णाभेदोऽयमुभयोरपि ॥

अर्थ-जिस स्थानमें महामेदा उत्पन्न होतीहै, उसीस्थानमें काकोली और क्षीरकाकोली उत्पन्न होतीहै । क्षीरकाकोलीका कन्द सतावरके समान होता है और इसमें एक प्रकारका सुगन्धि युक्त दूध निकलताहै । जैसी क्षीरकाकोली होतीहै, वैसेही काकोली होतीहै, इन दोनोंमें केवल इतनाहीं अंतरहै कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित् कृष्णवर्ण होतीहै ।

अष्टवर्गनामानि ।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके ।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेहुए आठ द्रव्योंको अष्टवर्ग कहतेहैं ।

अष्टवर्गगुणाः ।

अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहणःशुक्रलोगुरुः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यःशरीरकफवर्द्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ठ, पुष्टिजनक, बलकारी, शरीर और कफवर्द्धकहै । वीर्यजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक तथा वात, पित्त, रक्त तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय रोगका नाश करे है ।

राज्ञामप्यष्टवर्गस्तुयतोऽयमतिदुर्लभः ।
तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणंभिषक् ॥

अर्थ—यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके बदले इन्हींके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतस्य प्रतिनिधीनाह ।

मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वन्द्वेपिचासति ।
वरीविदार्यश्वगन्धावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ।

अर्थ-मेदा और महामेदाके अभावमें सतावर लेनी, जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध लेनी, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकंद लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋषभक, २ काकोली, ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द हैं । इनके नाम गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखेहैं, परन्तु उनका ठीक निश्चय नहीं होता कि, उनका कैसा रूप है, वह कैसी हैं सो 'भावमिश्र' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुकेहैं कि "यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभहै, इनके नाम संस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामें आजपर्यन्त नहीं सुने, किन्तु किसी-किसी ग्रन्थकारने बंगाला, कर्णाटकी, तैलङ्गी, तामिली और लैटिन्भाषामें इनके नाम लिखे हैं, सो उन देशोंमें प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पडते हैं"।

मधुयष्टिनामानि ।



मधुयष्टी यष्टिमधूर्यष्ट्याह्वा क्लीतका स्मृता ।
मधुकंयष्टिमधुकंयष्टिकामधुयष्टिका ॥

अर्थ-मधुयष्टी, यष्टिमधू, यष्ट्याह्वा, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुक, यष्टिका,

मधुयष्टिका, (यष्टिमधु, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिमधुका, यष्टयाह्व, यष्ट्याह्वक, क्लीतक, यष्टि, मधुस्रवा, मधुयष्टिक)

(क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुम, मधुवली, मधूली, मधुररसा, अतिरसा, मधुरनाम, शोषापहा, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	यष्टीमधु, जलयष्टी, स्थलयष्टी, यष्टिरसक्रिया।
हिन्दीभाषामें	मुलहटी, मीठीलकरी, मुलैठिका।
वंगभाषामें	यष्टीमधु।
मराठीभाषामें	ज्येष्ठमध।
गुजरातीभाषामें	जेठोमधनो मूल, जेठीमधनो शीरो।
कर्णाटकीभाषामें	यष्टिमधु, वल्लियष्टिमधु।
तैलिङ्गीभाषामें	यष्टीमधुकमु।
इंग्रेजीभाषामें	लिकरिसरूट्। Liquorice root
	कामन् लिकरिस् Liquorice Extract
लैटिन्भाषामें	ग्लिसिरिझारेदिक्सग्लिसिरिझाग्लेब्रा। Glycyrrhizaglabra
फारसीभाषामें	वेखमेहेकूमझु
अरबीभाषामें	असलुसूसमुकस्सररुब्यसूस।

अस्यगुणाः।

मधुरंयष्टिमधुकंकिञ्चित्तिक्तञ्चशीतलम्।
चक्षुष्यंपित्तहृद्रुच्यंशोषतृष्णाव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मुलैठी-मधुर, किंचित् कड़वी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पित्त-नाशक, रुचिकारी तथा शोष, तृषा और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

यष्टिर्हिमागुरुःस्वाद्वीचक्षुष्याबलवर्णकृत्।
सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्यास्वर्यापित्तानिलास्रजित्।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा।
तस्यारसक्रियास्वाद्वीयष्टेःसातुगुणाधिका ॥

अर्थ-मुलैठी-शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, स्निग्ध, वीर्यजनक, केशोंको सुशोभित करनेवाली, स्वरको सुधारनेवाली तथा पित्त, वात, रक्त, घाव, सूजन, विष, वमन, तृषा,

ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है । इसका सत्त (रुब्बसूस) मीठाहै और मुलैठीकी अपेक्षा अधिक गुणवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुवल्लीद्विप्रकाराजलजाचस्थलोद्भवा ।
सावृष्यामधुरारुच्याबल्यागुर्वीचशीतला ॥
चक्षुष्यावर्णदास्वर्य्यास्निग्धाकेशहितामता ।
शुक्रलारक्तपित्तघ्नीव्रणशुद्धिकरीमता ॥
शोथंविषंवातरक्तंव्रणंवान्तिंतृषांतथा ।
ग्लानिंक्षयंरक्तदोषंरक्तपित्तञ्चपित्तकम् ॥
सद्योव्रणंवातपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मुलैठी-[एक जलमें उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमें उत्पन्न होनेवाली] वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी, बलकारक, भारी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्रजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मूत्रवर्द्धक] रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त, घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करेहै ।

जलयष्ट्यर्कगुणाः ।

वार्यष्ट्यर्कोविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः । (लंकेश)

अर्थ-जलमें उत्पन्न होनेवाली मुलैठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करेहै ।

विवरण-मुलैठीका क्षुप होताहै, इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होतेहैं इसमें छोटी और बारीक फली लगतीहैं, फूल लाल आताहै, इसकी जड प्रयोगमें लीजातीहै । दूसरी वेलवाली मुलैठी होतीहै ।

कम्पिल्लनामानि ।

कम्पिल्लःकर्कशश्चन्द्रोरक्ताङ्गोरोचनोऽपिच ।

अर्थ-कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचन, (कम्पिल्लक, कंपिल्ल, काम्पील, काम्पिल्य, कम्पिल्य, रेचनी, काम्पिल्लका, रेचना, पिकाक्ष,

रोचनी, लघुपत्रक, कम्पीलक, रेची, रेचन, रञ्जक, लोहिताङ्ग, रक्तचूर्णक, रक्तफल, नदीवास, बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें	काम्पिल्ल, कम्पिल्लक ।
हिन्दीभाषामें	कवी (म्वी) ला ।
वंगभाषामें	कमलागुंडि, गुण्डारोचनी ।
मराठीभाषामें	कपिला ।
गुजरातीभाषामें	कपीलो ।
कर्णाटकीभाषामें	कम्पिल्लकं ।
इंग्रेजीभाषामें	केमिला राटलीरा । Kamila Rottlera
लैटिन्भाषामें	मल्लोटस्फिलिपाइनसिस (वृक्ष) Mellotusphilippinesis Rottleratinctoria
फारसीभाषामें	कन्विलाय ।
अरबीभाषामें	किन्वीर ।

अस्य गुणाः

कम्पिल्लकोविरेचीस्यात्कटूष्णोव्रणनाशनः ।
कफकासहारीचजन्तुकृमिहरोलघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कवीला-दस्तावर, चरपरा, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, खांसी, जन्तु और कृमिको दूर करे है । और हलका है ।

अपिच ।

कम्पिल्लःकफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्तिरेचीकटूष्णंचमेहानाहविषाश्मनुत् ॥

अर्थ-कवीला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उदररोग और घावको दूर करे है, दस्त करानेवालाहै, चरपराहै, गरम है और आनाह, विष तथा पथरीका नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

कम्पिल्लकःसरश्चाग्निदीपकःकटुकःस्मृतः ।
व्रणस्यरोपणश्चोष्णोलघुर्भेदीकफापहः ॥
व्रणगुल्मोदराध्मानकासपित्तप्रमेहहा ।
आनाहश्चविषश्चैवमूत्राश्मारिरुजापहः ॥

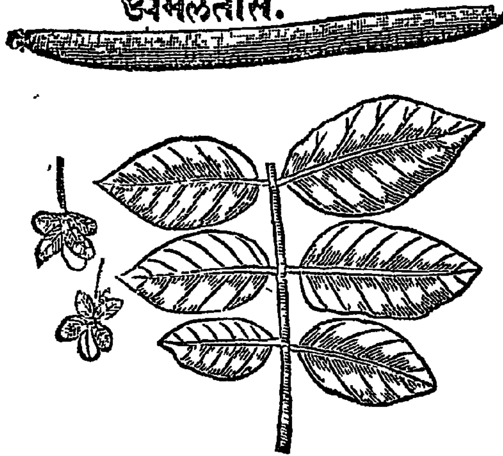
कृमिंचरक्तदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तितः ।
तच्छाकंशीतलंतिक्तंवातलंग्राहिदीपनम् ॥

अर्थ-कबीला-सारक, अग्निदीपक, चरपरा, व्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा व्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खांसी, पित्तप्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै ।

इसके पत्तोंका शाक, शीतल, कडवा, वादी, मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटेबेरकी समान होतेहैं । उनके ऊपर लाललाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोंको तोड टोकरियोंमें डाल पैरोंसे मलतेहैं, जो रज छूटकर नीचे झड जाती है उसीको कबीला कहतेहैं । मात्रा ६ रत्तीकी ।

आरग्वधनामानि ।



आरग्वधोराजवृक्षोव्याधिघातोजठरनुत् ।

अर्थ-आरग्वध, राजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत् (चक्रपरिव्याध, सम्पक, चतुरंगुल, शम्याक, आरेवत, कृतमाल, सुवर्णक, मन्थान, रोचन, दीर्घफल नृपद्रुम, प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, कण्डूघ्न, महाकर्णिकार, ज्वरान्तक, अरुज, स्वर्णपुष्प, स्वर्णद्रु, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार स्वर्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण, आरोग्यशिम्बी, शम्याक, व्यथान्तक, आमहा,

स्वर्णस्थाली, रेचन, कुण्डली, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल, स्वर्णवृक्ष, सारफल, कुष्ठघ्न, द्रुमोत्पल)

संस्कृतभाषामें	आरग्वध ।
हिन्दीभाषामें	अमलतास, घनवहेडा ।
वंगभाषामें	सोनालु, शोंदाल, एखालनडी, वानरनाडी ।
मराठीभाषामें	वाहवा, बाव्याच्याशेंगांतील गर ।
गुजरातीभाषामें	गरमालो । गरमालोनो गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	हेगाके ।
तैलङ्गीभाषामें	रेलकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	पुडिंगपाईपट्री, पर्जिङ्गकाश्या, काश्यापल्प Pudding pipetree, Purgingcassia Cassia pulp
लेटिन्भाषामें	केश्याकिसचुला । Cassiafistula
अरबीभाषामें	ख्यारेशम्बर ।

आरग्वधगुणाः ।

आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलोमृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ-अमलतास-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, मृदु, रेची तथा ज्वर, हृदयरोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त और शूलको निर्मूल करे है ।

एतत्फलगुणाः ।

तत्फलंस्रंसनंरुच्यंकुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरेतत्सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलतासकी कली-स्रंसन, रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, ज्वरमें सर्वदा पथ्य है और कोठेको अतीव शोधे है ।

एतत्पत्रगुणाः ।

पत्रमारग्वधस्यापिकफमेदोविशोषणम् ।
ज्वरेचसततंपथ्यंमलदोषसमन्विते ॥

अर्थ-अमलतासके पत्ते-कफ और मेदाशोषक हैं, ज्वरमें सदा पथ्य हैं और मलको ढीला करे हैं ।

एतत्पुष्पगुणाः ।

पुष्पाणिस्वादुशीतानितिक्तानिग्राहकाणिच ।

तुवराणिवातलानिकफपित्तहराणिच ॥

अर्थ—अमलतासके फूल—स्वादिष्ठ, शीतल, कडुवे, ग्राहक, कषेले, वातवर्द्धक फक, और पित्तको दूर करे हैं ।

एतन्मज्जागुणाः ।

मज्जातुमधुरापाकेस्निग्धाचाग्निविवर्द्धिनी ।
रेचिकापित्तवातानांनाशिकासमुदाहृता ॥

अर्थ—अमलतासकी मज्जा—पाकमें मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्धक, रेचक तथा पित्त और बादीका नाश करे है

एतन्मूलगुणाः ।

कृतमालस्यमूलन्तुदुग्धेनसहपाचयेत् ।
वातरक्तंनिहंत्याशुदद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ—अमलतासकी जड—दूधमें औटाई हुई—वातरक्तनाशक, दाह और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारःसरस्तिक्तःकटूष्णःकफशूलहा ।
उदरक्रिमिमेहघ्नोव्रणगुल्महरोनृप ॥ (नि०र०)

अर्थ—कर्णिकार—(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथा कफ, शूल,उदररोग, क्रिमि,प्रमेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है।

गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रु, खुजली, विचर्चिकादि रोगोंपर अमलतासके पत्तोंको पीस उसमें कांजी मिलाकर लेप करते हैं ।

गण्डमाला रोगमें अमलतासकी जडको चावलोंके पानीमें पीसकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं ।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते लाल चंदनके पत्तोंकी समान होते हैं. फूल पीले, तरवट आमलेकी सदृश होते हैं । फली गोल और १–१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलताहै, उस गूदेका जुलाव लगताहै । व्यवहार—गूदा, पत्ते, फूल, मूल । मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है ।

कटुकानामानि ।

तिक्ताकाण्डेरुहारिष्टाचक्राङ्गीशकुलादनी ।

तिक्तरोहणिकाचैवकटुकाकटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता-काण्डेरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरोहणिका, कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपित्ता, नकुलासादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णा, कृष्णभेदा, कृष्णभेदी, महौषधी, कट्वी, अंजनी, कटु, केदारकटुका, वामघ्नी, धन्वन्तरिग्रंथा, वान्तिदा, कटंवरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, तिक्तिका, चित्राङ्गी, मत्स्यशकला)



संस्कृतभाषामें	कटुका ।
हिन्दीभाषामें	कुटकी ।
वंगभाषामें	कट्की ।
मराठीभाषामें	कुटकी, काळी कुटकी ।
गुजरातीभाषामें	कडु ।
कर्णाटकीभाषामें	केदार कटुकी ।
तैलिङ्गीभाषामें	काटकरोहिणी, नल्लकोलकर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्हल्लोबोरलीस् । Black Hellebore
लैटिन्भाषामें	हेल्लोवोरी नैग्रीरै दिक्स पिक्रोहिंजा कुरोंआ । PicrorrihiZa Kurroa
फारसीभाषामें	खर्वके सियाह ।
अरवीभाषामें	खर्वक अस्वद खर्वके अवीयद ।

अस्या गुणाः ।

कटीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ।
भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् । (भा.प्र.)

अर्थ–कुटकी–पाकमें कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ और क्रिमिका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

कटुकीशीतलातिक्ताकटीचाग्निप्रदीपनी ।
भेदिकाचसरारूक्षालघ्वीरक्तरुजापहा ॥
शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराञ्जयेत् ।
प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥
कामलाविषहृद्रोगनाशिनीतिप्रकाशिता ।

अर्थ–कुटकी–शीतल, तीखी, कडवी, अग्निदीपक, भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ, विषमज्वर, खाँसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करैहै ।

अस्याः शोधनविधिः ।

कटुकीमुष्णदुग्धेनप्रक्षाल्यग्राहयेदपि ।

अर्थ–कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममें लावे ।

विवरण । बडी जडवाली गुल्म है, झाझरा छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बडा और बगल खण्डित होतीहै, फूल नीला और गुच्छोंमें होताहै, हिमालयकें निकट पर्वतोंके जंगलमें उत्पन्न होतीहै । कुटकी कृष्णा और पीत इनभेदोंसे दो प्रकारकीहै इनमें पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करतीहै । व्यवहार मूल । मात्रा ६ रत्तीसे लेकर ७ मासेतक है ।

चिरतिक्तनामानि ।

चिरतिक्तश्चभूनिम्बःकिरातंरामसेनकः ।

अर्थ-चिरतिक्त, भूनिम्ब, किरात, रामसेनक (अनार्यतिक्त, किरातक, चिरातिक्त, तिक्तक, सुतिक्तक, चिराटिका, कटुतिक्ता, कैरात, काण्डीतिक्तक, हैम, काण्डतिक्त)

नेपालनिम्बनामानि ।

नेपालनिम्बोनैपालस्तृणनिम्बोज्वरान्तकः ।
नाडीतिक्तोर्धतिक्तश्चनिद्रारिःसन्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नैपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा ।

संस्कृतभाषामें	चिरतिक्त ।
हिन्दीभाषामें	चिरायता ।
वंगभाषामें	चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब ।
मराठीभाषामें	किराईत, काडेकिराईत, फूलेकिराईत,
गुजरातीभाषामें	करियातु ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलबंउचु ।
तैलङ्गीभाषामें	नेलानेमु ।
लैटिन् भाषामें	स्विर्टियाचिरेटा । Sovirtia Chirata Aphelia Chirata
इंग्रेजीभाषामें	चिरेटा ।
फारसीभाषामें	नेनिहाद
अरबीभाषामें	कस्बुझ्, झारिरा ।

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बोवातलस्तिक्तोव्रणरोपणकारकः ॥
सरःशीतःपथ्यकरोलघूरूक्षस्तृषापहः ।
कफंपित्तंज्वरंकुष्ठंकण्डूंशोथंक्रमींस्तथा ॥
सन्निपातज्वरंदाहंशूलंमेहंव्रणंतथा ।
श्वासंकासंचप्रदरंशोषंचाशोंरुचिंजयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-चिरायता-वातकारक, कडवा, व्रणरोपक, दस्तावर, शीतल, पथ्य, हलका, रूखा तथा तृषा, कफ, पित्त, ज्वर, कोढ़, कण्डु, सूजन, कृमि, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, प्रमेह, व्रण, श्वास, खाँसी, प्रदर, शोष, बवासीर और अरुचिको दूरकरे है ।

नेपालनिम्बगुणाः ।

नेपालतिक्तंकिञ्चिदुष्णयोगवहंलघु ।
तिक्तंपित्तंकफंशोथंरक्तरुक्तृड्ज्वराञ्जयेत ॥

अर्थ-नेपालीनीम-किंचित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे है। शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालःसन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो० नि०)

अर्थ-नेपालीनीम-सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूरकरे है। चिरायतेका क्षुप होताहै। मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजःशक्रपर्य्यायोवत्सकोगिरिमल्लिका ॥

अर्थ-कुटज, शक्रपर्य्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्वय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पाण्डुरद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामें	कुटज, श्वेतकुटज ।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरैया ।
वंगभाषामें	कुडचिगाछ, कुटराज ।
मराठीभाषामें	काळा कुडा, सफेद कुडा ।
गुजरातीभाषामें	कडी-दुधला ।
कर्णाटकीभाषामें	कोड़सिगेयमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अंकुटुचेटु अंगिशचेटु, तुम्भिकचेटु, अंकेलु, चराल कुष्ठ ।
औत्क०भाषामें	कुडिया ।
इंग्रेजीभाषामें	ओवल्लिवडरोझबे । Ovalleaved Rose Bay
लैटिन् भाषामें	राइटियाएंडिसेनटेरिका । Wrightia antidysenterica
अरबीभाषामें	तिवाज ।

कुटजगुणाः ।

कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोहिमः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुडा-कटु, रूक्ष, दीपन, कपाय, शीतल तथा ववासीर, अतिसार, रक्त, पित्त, कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है।

अपिच ।

कुटजःकटुकःप्लीहकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो० नी०)

अर्थ-कुडा-कटु, प्लीहा, कफ, पित्त और अतिसारका नाशकरे है।

अन्यच्च ।

कुटजःकटुतिक्तोष्णःकपायश्चातिसारजित् ।
तत्रासितश्चपित्तघ्नस्त्वग्दोषार्शनिकृतन्तनः॥(रा०नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, तिक्त, गरम, कपाय और अतिसारनाशक है, और काला कुडा पित्त, त्वचाके दोप और ववासीरको दूर करे है।

श्वेतकुटजगुणाः ।

श्वेतस्तुकुटजस्तिक्तःकटुश्चोष्णोग्निदीपकः ।
पाचकस्तुवरोरूक्षोग्राहकोरक्तदोपहा ॥
कुष्ठातिसारपित्तार्शःकफतृट्कृमिहामतः ।
ज्वरंचामश्चदाहंचनाशयेदितिकीर्तितः॥ (नि०र०)

अर्थ-सफेद कुडा-कडवा, तीखा, गरम, अग्निप्रदीपक, पाचक, कपेला, रूखा, मलरोधक तथा रक्तविकार, कोढ़, अतिसार, पित्त, ववासीर, कफ, तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे है।

अस्य पुष्पगुणाः ।

पुष्पंतुवत्सकस्योक्तंतुवरंचाग्निदीपकम् ।
तिक्तंशीतंवातलंचलघुपित्तातिसारनुत् ॥
रक्तदोषंकफंपित्तंकुष्ठंचैवातिसारकम् ।
कृमींश्चैवहरेदेतदुक्तंपूर्वैश्चसूरिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुडेके फूल-कषेले, जठराग्निको दीपन करनेवाले, कडवे, शीतल, वातकारक, हलके तथा पित्तातिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिका नाश करे हैं।

अस्य शिम्बीशाकगुणाः ।

तस्यशिम्बीभवं शाकंव्यंजनंचामवातजित् ।
रुच्यंकफघ्नंरक्तातीसारकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ–कुडेकी फलियोंका शाक–आमवातनाशक, रुचिकारक तथा रक्तातिसार, कोढ़ और कृमिको दूर करे है ।

त्वग्गुणाः ।

कुटजस्यत्वचा तिक्तासर्वातीसारनाशिनी ।

अर्थ–कुडेकी छाल–कडवी और सर्वातिसारनाशक है ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै, पत्ते रामफलके पत्तोंकी समान बडे बडे होते हैं, फूल सफेद होताहै, इसमें फली होती हैं ।

सफेद कुडेके दूधमें विष होताहै, उस दूधको खानेसे मनुष्य मरजाते हैं ।

इन्द्रयवनामानि ।

उक्तंकुटजबीजन्तुयवमिंद्रयवंतथा ।
कलिंगंचापिकालिंगंतथा भद्रयवंस्मृतम् ॥

अर्थ–कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग, भद्रयव, (कलिंगक, शक्राह्व, शक्रबीज, वत्सक, वत्सकबीज, कलिंगबीज, कुटज, भद्रज)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रयव ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रजौ ।
गुजरातीभाषामें	इंदरजव ।
बंगलेमें	इन्द्रयव ।
मराठीभाषामें	कुडयाचें बीज, इन्द्रजव ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेय बीज ।
फारसीभाषामें	जवान कुञ्श्किक ।
अरबीभाषामें	लेसानुत् असाकीर ।
लैटिन्भाषामें	होलरहेनाएंटिडिसेंटेरिका । Holarrhena antidysenterica

अस्यगुणाः ।

इन्द्रयवाकटुतिक्ताशीताकफवातरक्तपित्तहरा ।
दाहातिसारशमनीनानात्वग्दोषशूलमूलघ्नी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-इन्द्रजौ, कटु, तिक्त, शीतल तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करेहै ।

अपिच ।

वत्सकस्यतुबीजंचकटुतिक्तञ्चशीतलम् ।
ग्राहकंपाचनंचोष्णंचाग्निदीप्तिकरंपरम् ॥
वातरक्तंकफंदाहंपित्तंनानाज्वरांस्तथा ।
शूलमर्शश्चातिसारंत्रिदोषंगुदकीलकम् ॥
कुष्ठंकृमिविसर्पामरक्तार्शोस्त्ररुजभ्रमान् ।
श्रमंचैवनिहंत्याशुकथितंमुनिपुंगवैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-इन्द्रजौ-तीखे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्निप्रदीपक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, ववासीर, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोढ, कृमि, विसर्प, आम, रक्तार्श, रक्तरोग, भ्रम और श्रमको दूर करेहैं ।

विवरण । कुडेके बीजोंको इन्द्रजौ कहतेहैं । इन्द्रजौ दोप्रकारके होतेहैं, एक मीठे दूसरे कडवे, इसमें सफेद कुडेके इन्द्रजौ मीठे होतेहैं और काले कुडेके इन्द्रजौ कडवे होतेहैं । मात्रा ३ मासेकी ।

मदनफलनामानि ।



मदनश्छर्द्दनःपिण्डीनटःपिण्डीतकस्तथा ।
करहाटोमरुबकःशल्यकोविषपुष्पकः ॥

अर्थ–मदन, छर्द्दन, पिण्डीतक, पिण्डीतक, करहाट, मरुवक, शल्यक, विषपुष्पक, (पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छर्द्दनक, रामाच्छर्द्दनक, कैटर्य्य, धाराफल, तगर, राठ, गाल्ल, ग्रन्थिफल, घण्टाल, बस्तिशोधन)

संस्कृतभाषामें	मदन ।
हिन्दीभाषामें	मैनफल, करहर ।
वंगभाषामें	मयनाकांटा ।
मराठीभाषामें	गेळ ।
गुजरातीभाषामें	ढोल ।
कर्णाटकीभाषामें	वोनगरे रणय वोनगरे एरंडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वसन्तकडिमिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मडुकक्करय ।
औत्क०	पातर ।
नेपालीभाषामें	मैदल ।
प०	मिण्डकोल्ल ।
दक्षिणीभाषामें	मेणाहल ।
इंग्रेजीभाषामें	बुशीगार्डिनीया । Bushy gardenia
लैटिन्भाषामें	रेन्डियाडद्युमेटोरम् । Randiadumetorum
अरबीभाषामें	जोज़ुल्कै ।

अस्य गुणाः ।

मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्योष्णोलेखनोलघुः ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥
रूक्षकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ–मैनफल–मधुर, कडवा, उष्णवीर्य्य, लेखन, हलका, वमनकारक, विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ, आनाह, सूजन, गुल्म और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

राठोवमनकृद्वदीपकामाशयशुद्धिकृत् ।
त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविषप्रशमनःस्मृतः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मैनफल-वमनकारक, भेदक, पक्काशय और आमाशयशोधक तथा त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करेहै ।

अपिच ।

मदनःकटुकस्तिक्तोमधुश्चोष्णश्चलेखनः ।
लघूरूक्षोवान्तिकारीवस्तिकर्म्मणिचोत्तमः ॥
कफंवातंव्रणंशोथमानाहंविद्रधींस्तथा ।
गुल्मंकुष्ठंप्रतिश्यायंविषंचार्शोज्वरंजयेत् ॥

अर्थ-मैनफल-कटुरसयुक्त, तिक्तरसान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, रूक्ष, वमनकारक, वस्तिकर्ममें उत्तम तथा कफ, वात, घाव, सूजन, आनाह, विद्रधि, गुल्म, प्रतिश्याय, (जुकाम) विष, ववासीर और ज्वरको हरे है ।

कृष्णःश्वेतश्चमदनःशीतलोमधुरःस्मृतः ।
कटुस्तिक्तश्चतुवरोवान्तिकृत्कफनाशनः ॥
पक्कामाशयशुद्धेश्चकारकःपित्तनाशकः ।
हृद्रोगनाशकश्चैवपूर्वस्मादुत्तमोगुणैः ॥ (नि० र०)

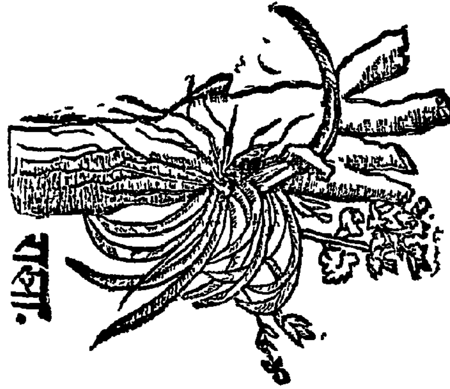
अर्थ-दूसरे प्रकारके दोनों मैनफल-(एक काले रंगका दूसरा सफेद रंगका) शीतल, मधुर, कटु, तिक्त, कषेले, वान्तिकारक, कफनाशक, पक्काशय और आमाशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले हैं। यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले हैं ।

विवरण । मैनफलका वृक्ष होताहै, पित्ते चिरचिटेकी समान होते हैं, फूल सफेद पांच पखडीके कुछेक पीलापन लिये होतेहैं, फल अखरोटके आकार होते हैं, यह वमन करानेमें एकही औषधी है ।

रास्नानामानि ।

नाकुलीसुरसारास्नासर्पगन्धापलङ्कषा ।

अर्थ-नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलंकषा (द्रोणगन्धिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, छत्राकी, सुवहा, रस्या, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाढ्या, अतिरसा, मुक्तरसा, युक्तरसा)



संस्कृतभाषामें	रास्ना ।
हिन्दीभाषामें	रासन, रायसन, रहसनी, रास्ना ।
वंगभाषामें	रास्ना ।
मराठीभाषामें	नावळीच्या मुळ्या ।
गुजरातीभाषामें	रासना
कर्णाटकीभाषामें	रसनाकेदारे प्रसिद्धा ।
तैलिंगीभाषामें	रासनापुडका, किरम्मिचक्क अन्तर दामर ।
लैटिन्भाषामें	वेडा रोक्स बुर्ध्दि आई । Vanda roxburghie
इंग्रेजीभाषामें	प्लुचियालेन्सिओलेटा । Pluchialanceolata
फारसीभाषामें	रासुन ।
अरबीभाषामें	जंजबील शामी ।

रास्नाभेदाः ।

रास्नातुत्रिविधाप्रोक्तामूलंपत्रंतृणंतथा ।
ज्ञेयौमूलदलौश्रेष्ठौतृणरास्नातुमध्यमा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–रास्ना–जड, पत्ते और तृण इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । तिनमें जड रास्ना और पत्र रास्ना श्रेष्ठ होती है और तृण रास्ना अधम गिनी जाती है ।

रास्नागुणाः ।

रास्नाऽऽमपाचनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् ।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्मजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-रास्ना-आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, तथा सूजन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विषविकार, ८० अस्सी प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है ।

अपिच ।

रास्नोष्णावातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शोडलनि०)

अर्थ-रास्ना-गरम है, वात, सूजन, आमवात और वातरोगोंको नष्ट करेहै।

अन्यच्च ।

रास्नातिक्ता गुरुश्चोष्णापाचन्यामविनाशिनी ।
वातरक्तंविषंश्वासंकासंचविषमज्वरम् ॥
शोथंहिक्कांचामवातंकफंशूलंविनाशयेत् ।
ज्वरंकम्पंचोदरञ्चसर्वान्वातांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, रक्त, विष, श्वास, खांसी, विषमज्वर, सूजन, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, ज्वर, कम्प, उदररोग और सर्व प्रकारके वातका विनाश करे है ।

विवरण । वंगदेशके प्राचीन आम्रादि वृक्षोंपर उत्पन्न होती है, इसकी जड वृक्षकी छालके ऊपर जमीरहती है, फूल पीला वेंगनी छींटेदार होता है, जड सहित रास्नाका क्षुप लायकर सुन्दरी काष्ठके ऊपर नारियलकी टट्टीकी छायामें रखकर पानी दे, वृक्ष बढ़ेगा और फूलेगा । व्यवहार-जड । मात्रा २ तोलेकी ।

नाकुलीनामानि ।

नाकुलीसुरसानागसुगन्धागन्धनाकुली ।
नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्पाङ्गीविषनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विषनाशिनी, (सर्वगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, सुरसा, सर्पादिनी, व्यालगन्धा)

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली ।
सर्पाक्षीफणिहंत्रीचनकुलाढ्याहिभुक्चसा ॥
विषमर्दनिकाचाहिमर्दनीविषमर्दनी ।
महाहिगन्धाहिलताज्ञेयास्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ–महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्द्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्द्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता)

संस्कृतभाषामें	नाकुली, गन्धनाकुली।
हिन्दीभाषामें	नाई, नाकुलीकन्द, नकुलकन्द, हरकाईचन्दा।
वंगभाषामें	नाकुली, सुगन्धनाकुली।
मराठीभाषामें	मुंगुसवेल, नाई सापसंद।
कर्णाटकीमें	विषमुंगरीद्वय।
तैलिङ्गीभाषामें	पाम्रपुचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	रोवोल्फिया सर्वेंटिना। Rauwolfia Serpentina
फारसीभाषामें	छोटा चांदा।

नाकुलीगुणाः।

नाकुलीकटुकातिक्तातथोष्णाक्रुमिरोगहृत्।
वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषंनाशयतिक्षणात्॥
तुवराचात्रिदोषघ्नीकन्देप्येतेगुणाःस्मृताः। (ग०नि०)

अर्थ–नाकुली–चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, विच्छू, मूषा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कषेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने।

अन्यच्च।

नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत्॥
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान्। (भा०प्र०)

अर्थ–नाकुली, कषेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, विच्छू और मूषा इनका विष, ज्वर, कृमि और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

नाकुलीयुगलंतिक्तंकटूष्णंचत्रिदोषनुत्।
अनेकविषविध्वंसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठंद्वितीयकम्॥(रा०नि०)

अर्थ–दोनों प्रकारकी नाकुली–(नाकुली, सुगन्धनाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित् श्रेष्ठ है।

नाकुलीकी वेल जंगलमें होती है, पत्ते पानकी समान होते हैं, नीचे कन्द होता है।

माचिकानामानि ।

माचिकाप्रस्थिकाम्बष्ठातथाचाम्बालिकाम्बिका ।
मयूरविदलाकेशीसहस्रावातमूलिका ॥ (भा०प्र०)

अर्थ--माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, अम्बिका, मयूर-विदला, केशी, सहस्रवातमूलिका, (बालिका, बाला, शठाम्बा, अम्बा, दृढवल्का, मयूरिका, गन्धपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, मुखवाचिका, छिन्न-पत्री, भूरिमल्ली)

अस्या गुणाः ।

अम्बष्ठासाकषायाम्लाकफकृच्छ्ररुजापहा ।
वातामयबलासघ्नीरुचिकृद्दीपनीपरा ॥ (राजनि०)

अर्थ-मोईया-कषेला, खट्टा तथा कफरोग, कर्णरोग, वातरोग और कफ-नाशक है, रुचिको उत्पन्न करेहै और जठराग्निप्रदीपक है ।

अन्यश्च ।

माचिकाम्लारसेपाकेकषायाशीतलालघुः ।
पक्कातिसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मोईया-अम्लरसान्वित, पचनेमें कषेला, शीतल, हलका तथा पक्का-तिसार, रक्त, पित्त, कफ और कण्ठ रोगका नाश करे है ।

तेजोवतीनामानि ।

तेजस्विनीतेजवतीतेजन्यालघुवल्कला ।
महौजसीपारिजाताशीतातिक्तातितेजनी ॥

अर्थ-तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता, अतितेजनी (तेजोह्वा, तेजनी, अश्वघ्ना, वल्कली, सुवर्णना-कुली, बिडालघ्नी, सुतेजसी)

संस्कृतभाषामें	तेजोवती ।
हिन्दीभाषामें	तेजवल ।
वंगभाषामें	तेजबल ।
मराठीभाषामें	तेजवल, तिर्फानी ।
गुजरातीभाषामें	तेजवल ।
दक्षिणीभाषामें	जलधरी ।

इंग्रेजीभाषामें - टुथएकट्री । Toothachetree
लैटिन् भाषामें झैंथोक सिलोन होसटिली । zanthozylon Hostile

अस्यागुणाः ।

तेजनीकफहृद्रोगमुखदंतादिरोगजित् ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसिकण्ठरोगस्यनाशिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ—तेजवल—कफ, हृदयरोग, मुखरोग, दन्तादिरोग, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और कण्ठरोगका नाशकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तेजस्विनीकफश्वासकासशूलामवातजित ।
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपनी ॥ (म० नि०)

अर्थ—तेजबल—कफ, श्वास, खाँसी, शूल और आमवातविनाशक है । पाचक, गरम, चरपरा, कडवा, रुचि और जठराग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तेजोवतीकटूष्णाचतिक्ताचाग्निप्रदीपनी ।
पाचकारुचिदाकण्ठ्याकफवातविनाशिनी ॥
कण्ठशुद्धिकरीपित्तकासश्वासविषापहा ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसिमुखरोगस्यनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ—तेजबल—चरपरा, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, पाचक, रुचिकारक, कंठको हितकारी, कफ वात नाशक, कण्ठशोधक, तथा पित्त, खाँसी, श्वास, विष, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर, और मुखरोगका नाशकरे है ।

विवरण । तेजबलके वृक्ष हरिद्वार बद्रीनाथके ओर वनोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छाल लालमिर्चकी समान चरपरीहै, कहीं कहीं इसकी जडको लालमिर्चकी जगह डालते हैं । व्यवहार छाल, मूल । मात्रा २ मासेकी ।

ज्योतिष्मतीनामानि ।

ज्योतिष्मतीपूतितैलालगणास्फुटबन्धनी ।
पारावतपदीपिण्यापीततैलाचकंगुणी ॥

अर्थ—ज्योतिष्मती, पूतितैला, लगणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्या, पीततैला, कंगुणी (परावतांघ्रि, कटभी, ज्योतिष्का, निष्फला, इंगुदी, स्वर्णलता, अनलप्रभा, ज्योतिर्लता, सुपिङ्गला, दीप्ता, मेध्या, गतिदा, दुर्जरा,

सरस्वती, अमृता, कंगुनी, सुवर्णलतिका, अग्निभाषा, दुर्मदा, लवणा, किंशुका, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीडचा)

महाज्योतिष्मतीनामानि ।



महाज्योतिष्मतीतीक्ष्णाकङ्गुनीबृहत्कंगुनी ।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कंगुनी, बृहत्कंगुनी (तेजोवती, वहुरसा, कनकप्रभा, सुवर्णनकुली, लवणा, अग्निदीप्ता, तेजस्विनी, सुरलता, अग्निफला, अग्निगर्भा, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, वायसादनी, गीर्लता, श्रीलता, सौम्या, ब्राह्मी, लवणकिंशुका, पारावतपदी, पीता, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती, धीरा)

संस्कृतभाषामें	ज्योतिष्मती, महाजोतिष्मती ।
हिन्दीभाषामें	मालकांगुनी, वडीमालकांगुनी, उमिजिनी ।
वंगभाषामें	लताफट्की, वडलताफट्की ।
गुजरातीभाषामें	मालकांगणी ।
मराठीभाषामें	मालकांगोणी (को०) पिंगवी ।
कर्णाटकीभाषामें	कौगुएरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वावजी (वेङ्कुडुतोगे)
इंग्रेजीभाषामें	स्टाफ़्ट्री । Stafftree
लैटिन्भाषामें	सिलेस् ट्रस्पेनिक्युलेटा । Celastruspaniculata
फारसीभाषामें	काल ।

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

ज्योतिष्मतीतिक्तरसाचरूक्षाकिञ्चित्कटुर्वातकफापहाच ।

दाहप्रदादीपनकृच्चमेध्याप्रज्ञांचपुष्णातितथाद्वितीया॥ रा.नि.

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफनाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारकहै, दूसरीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अपिच ।

ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित् ।
अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा॥ (म०नि०

अर्थ-मालकाङ्गुनी-चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त गरम,वमनजनक,तीक्ष्ण तथा जठराग्नि,बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

ज्योतिष्मतीतुकटुकातिक्ताचाग्निप्रदीपनी ।
अत्युष्णादाहकामेध्याप्रज्ञापुष्टिकरीमता ॥
वृष्यावान्तिकरीतीक्ष्णावर्ण्याचतुवरामता ।
उदरस्य हरेत्पीडांव्रणपाण्डुविसर्पहा ॥ (गणनि०)

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहकारक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कषेली तथा उदरकी पीडाको हरतीहै, घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करेहै ।

विवरण । इसकी वेल होतीहै, पत्ते गोल कुछ अनीदार होतेहैं । फलोंका झुमका होताहै, कच्चे फल नीले होतेहैं और पकनेपर पीले पडजातेहैं उनमेंसे लाल वीज निकलताहै, उन बीजोंमेंसे पीला तेल निकलताहै, वह तेल अनेकप्रकारके वातरोगोंको और खुजलीको दूर करताहै ।

पुष्करमूलनामानि ।

पौष्करंपुष्करमूलंपुष्करंपद्मवर्णकम् ॥

अर्थ-पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक, (पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल, पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कराह्वया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुण्य, सागर, शूर, वृक्षरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृत भाषामें पुष्करमूल ।

हिन्दी भाषामें	पोहकरमूल ।
वंग भाषामें	कुष्ठविशेष, पुष्करमूल ।
गुजरातीभाषामें	पोकरमूल ।
मराठी भाषामें	पुष्करमूल ।
कर्णाटकीभाषामें	पुष्करमूल ।

अस्यगुणाः ।

पुष्करंकटुतिक्तोष्णंकफवातज्वरापहम् ।
श्वासारोचककासघ्नंशोफघ्नंपाण्डुनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पोहकरमूल-चरपरा, कडवा तथा कफ, वात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खांसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्करंपार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।
श्वासोर्ध्ववातपाण्डुघ्नंहिक्कादोषनिवारणम् ॥

अर्थ-पोहकरमूल-पार्श्ववेदना, वात, खांसी, सूजन, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्ववात, पाण्डुरोग और हिक्कारोगनिवारक है ।

पोहकरमूल उत्तम कहीं नहीं मिलता, इसलिये इसके वदलेमें कूट लेना ।

स्वर्णक्षीरी नामानि ।



स्वर्णक्षीरीहेमशिखापट्टपर्णीहिमावती ।
हैमवतीपीतपुष्पातन्मूलंचोकउच्यते ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी, हेमशिखा, पट्टपर्णी, हिमावती, हैमवती, पीतपुष्पा,

(स्वर्णदुग्धा, स्वर्णाह्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेमक्षीरी, काञ्चनी, कटुपर्णी, हेमाह्वा, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी; कर्बिणी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिंचा, हिमोद्भवा, हैमी, हिमजा) इसकी जडको चोक कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी ।
हिन्दीभाषामें	सत्यानासी, कटेरी (चोक) भरेबंद पिसोला ।
बंगभाषामें	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई-(चोक)।
मराठीभाषामें	कांटेधोत्रा, फिरंगीधोत्रा ।
गुजरातीभाषामें	दारुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	चिक्कणिकेयभेद ।
तामिलभाषामें	ब्रह्मदण्डुविरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	गेंबोझ थिसल् । Gamboge Thistld
	मेकसिकन् आर्गिमोन् । Maxican Argemon
लैटिन्भाषामें	आर्गिमनी मेक्सी केना ।

अस्या गुणः ।

हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारणी ।
कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-रेचक, कडवी, भेदक, उत्क्लेशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

क्षीरिणीकटुकातिक्तारेचनीशोफतापनुत् ।
कृमीदोषकफघ्नीचपित्तज्वरहराचसा ॥

अर्थ-काञ्चनक्षीरी-चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है ।

अपिच ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्ताकृमिपित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरापरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सूजन तथा दाहज्वरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

स्वर्णक्षीरीहिमातिक्तासराकण्डूविनाशिका ।

वातंरक्तंकृमीन्पित्तंकफंकृच्छ्रञ्चनाशयेत् ॥
जूत्यंश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।
मूलंचास्यचोकइतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृताः॥ (राजनि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली,वात रक्त, कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) सूजन, दाह, ज्वर और कोढ इनका नाश करेहै, इसकी जडको चोक कहते हैं, उसके गुणभी इसकी समान जानने ।

अपिच ।

तस्याःक्षीरंबिन्दुमात्रंनेत्रेक्षिप्तंघृतप्लुतम् ।
शुक्लञ्चह्यधिमांसंचनेत्रांध्यञ्चैवनाशयेत् ॥ (ग० नि०)

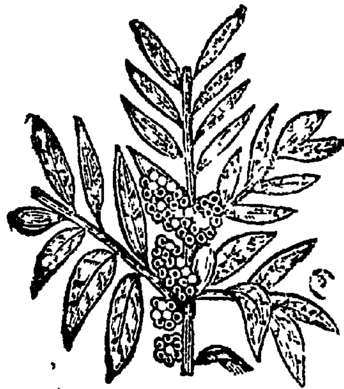
अर्थ-इसके दूधकी एक बूंद घीके साथ आंखमें लगानेसे शुक्लनेत्ररोग, अधिमांसनेत्ररोग और नेत्रांध्यरोग दूर होते हैं ।

अस्याः स्वरूपम् ।

कण्टकीकण्टपत्राचपीतपुष्पाक्षुपाभवेत् ।
स्वर्णक्षीरीकण्टफलाकृष्णबीजाचसुस्थिरा॥ (शिवनि०)

अर्थ-इसका क्षुप कांटोंवाला होताहै, पत्तोंके ऊपर कांटे होते हैं, फूल पीला होताहै, दूधका रंग सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै, फलोंपर कांटे होतेहैं, उनमेंसे काले रंगके बीज निकलते हैं । उन बीजोंका तेल निकलताहै, वह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोंको हरताहै ।

कर्कटशृङ्गीनामानि ।



(काकडाशिंगी)

कर्कटशृङ्गिकाशृङ्गीकुलिङ्गीकासनाशिनी ।
महाघोषाचचक्राङ्गीकर्कटीवनमूर्द्धजा ॥

अर्थ–कर्कटशृङ्गिका, शृङ्गी, कासविनाशिनी, कुलिंगी, महाघोषा, चक्रांगी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृंगी, घोषा, चक्रा, शिखरी, कर्कटाख्या, कौलिरा, विषाणिका, चन्द्रास्पदा, नवांगा, कुलीर-विषाणिका, नतांगी, वक्रा, अजशृंगी, कर्कटशृंगी)

संस्कृतभाषामें	कर्कटश्रृङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	काकडाशिंगी ।
वंगभाषामें	कांकडाशृंगी ।
मराठीभाषामें	कांकडशिंगी ।
गुजरातीभाषामें	काकडाशिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	कर्कटिश्रृङ्गी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कर्कटाश्रृङ्गी ।
लैटिन्भाषामें	पेस्टाशिया इंटिग्रेरिवा । Pistaciaintagrirriwa

अस्यागुणाः ।

कर्कटशृङ्गीकातिक्ताचोष्णाचतुवरागुरुः ।
वातहिक्कातिसारघ्नीबालानांचहितावहा ॥
कासंश्वासंरक्तदोषंपित्तंजूर्तिकफंक्षयम् ।
वान्तिहिध्मांचोर्ध्ववातंकृमितृष्णाक्षतक्षयान् ॥
अरुचिंनाशयत्येवऋषिभिःपरिकीर्त्तिता । (निघण्टु०)

अर्थ–काकडासिंगी–कड़वी, गरम, कषेली, भारी तथा वात, हुचकी और अतिसारको हरे है, बालकोंको हितकारी और खांसी, श्वास, रुधिर-विकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वमन, हिध्मा, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृषा, क्षत-क्षय तथा अरुचिको दूर करे है ।

कट्फलनामानि ।

कट्फलंत्वक्फलंकुम्भीकुमुदिकाश्रीपर्णिका ॥

अर्थ–कट्फल, त्वक्फल, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैटर्य, काफल, कुम्भिपाकी, पुरुष, कुमुदी, सोमवल्क, सोमवृक्ष, रोहिणी, नासानु, अरण्य,

कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, महाकुम्भी, रामसेनक, कुमुदा, उग्रगन्ध, भद्राञ्जनक, लघुकाश्मर्य्य, श्रीपर्णी, भद्रा, कायफल)

संस्कृतभाषामें	कट्फल ।
हिन्दीभाषामें	कायफल ।
वंगभाषामें	कायफल, कायशाल ।
मराठीभाषामें	कुंभ्याची शाल, वा फळ ।
गुजरातीभाषामें	कायफल ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुसिवन्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापर वुडम ।
लैटिन्भाषामें	मिरिका सापिडा, (छाल) । केरिया आर्वोरिया Creya arboria मेरिस्टिका मेलबेरिका (फल) Myristica Myricasapida Malbarice
अरबीभाषामें	दार शीशवान ।
फारसीभाषामें	उदुलवर्क ।

अस्या गुणाः ।

कट्फलंतुवरंतिक्तंकटुवातकफज्वरान् ।
हन्तिश्वासंप्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥
उग्रदाहहरंरुच्यंमुखरोगशमप्रदम् ।
तीक्ष्णंक्षुतकरंचोष्णंहन्तिगुल्मामयानपि ॥

अर्थ—कायफल—कषेला, कडवा, चरपरा तथा वात, कफ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कण्ठरोग, अरुचि और उग्रदाहको दूर करे है, रुचिकारक, मुखरोगको शमन करे, तीक्ष्ण, छीक लानेवाला, गरम और गुल्मरोगविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कट्फलंरुचिदंचोष्णंतुवरंकटुतिक्तकम् ।
कासंश्वासंचोग्रदाहंमुखरोगंज्वरंतथा ॥
कफवातप्रमेहार्शोरुचिगुल्मगलामयान् ।
अग्निमांद्यंपाण्डुरोगंग्रहणींचैवनाशयेत् ॥

अर्थ-कायफल-रुचिदायक, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा तथा खांसी, श्वास, उग्रदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, गुल्म, कण्ठ-रोग, अग्निमांद्य, पाण्डुरोग आर संग्रहणी इनका नाश करे है । व्यवहार-छाल । मात्रा १ मासेकी ।

भार्ङ्गीनामानि ।

भारङ्गीब्राह्मणीपद्माभृङ्गजाङ्गारवल्लरी ।
मुखधौतादूर्वाफञ्जीभार्ङ्गीब्राह्मणयष्टिका ॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, दूर्वा, फञ्जी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, (गर्दभशाक, गर्दभशाका, फञ्जिका, बर्ब्बर, वालेयशाक, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, वालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित्, स्वरूपा, भ्रमरेष्टा, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हञ्जिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कालिंगवल्ली)

संस्कृतभाषामें	भार्ङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	भारङ्गी, ब्रह्मनेटी ।
वंगभाषामें	वामुनहाटी ।
मराठीभाषामें	भारंगी ।
गुजरातीभाषामें	भारंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	किर्हदेगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	भण्टभारङ्गी ।
नेपालीभाषामें	चूया ।
लैटिन्भाषामें	क्लेरोडेण्ड्रान्सारटम Clero-dendronserratum
	क्लेरोडेंड्रन् सिफोन्याथस् । Clerodendron siphonanthus

भार्ङ्गीगुणाः ।

भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः ।
दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगी-रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कषेली तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खांसी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

भार्ङ्गीतुकटुतिक्तोष्णाकासश्वासविनाशिनी ।
शोफव्रणक्रिमिघ्नाचदाहज्वरनिवारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भारंगी-चरपरी, कडवी, गरम तथा खांसी, श्वास, सूजन, घाव, क्रिमि, दाह और ज्वरको दूर करेहै ।

अपिच ।

वातज्वरप्रहन्त्रीचगुणेहिक्काविनाशिनी ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नीक्षयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ-भारंगी-वातज्वर, हिक्का, गुल्म, ज्वर, वातरक्त, क्षय, और पीनसरोगका नाशकरेहै ।

अस्याःपत्रगुणाः ।

पर्णमस्यज्वरंदाहंहिक्कांदोषत्रयंहरेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-इसके पत्ते ज्वर, दाह, हुचकी और त्रिदोपनाशकहैं । इसका, वृक्ष मनुष्यके समान ऊँचा होताहै, पत्ते महुवेके पत्तोंकी समान, होतेहैं, फूल, सफेद होताहै, इसके कोमलपत्तोंका शाक बनाते हैं । व्यवहार-मूल, पत्ते । मात्रा १॥ मासेकी ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोश्मघ्नःशिलाभेदोश्मभेदकः ।
सचैवोपलभेदश्चनगभिच्छैलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-अश्मघ्न, शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभित्, शैलगर्भज, (अश्मभित्, अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेदन, पाषाणभेदी (न) श्वेता, उपलभेदी, उपलभित्, शिलागर्भज, गिरिभित्, भिन्नयोजनी)

संस्कृत भाषामें	पाषाणभेद ।
हिन्दीभाषामें	पाखानभेद ।
वंग भाषामें	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा ।
मराठी भाषामें	पाषाणभेद ।
गुजराती भाषामें	पाखाणभेद ।
कर्णाटकी भाषामें	आलेलगया, पाषाणभेदी ।
तैलिङ्गी भाषामें	तेलनुरुपिण्डी ।
इंग्रेजीभाषामें	आइरिस्स्प । Irissp

लैटिन् भाषामें — कोसियस् एरोमेटिकम् Cocius aromaticum
फारसी भाषामें — गोशाद् ।
अरबी भाषामें — जिंतियाना ।

पाषाणभेदगुणाः ।

अश्मभिद्वस्तिरुङ्मूत्रकृच्छ्रतोदाहवातनुत् ।
शीतवीर्योगुरुःस्निग्धस्तथातीसारनाशनः ॥ (शो० नि०

अर्थ-पाखानभेद-वस्तिरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वात और अतिसारको दूर-करे है, शीतवीर्य्य है, भारी और चिकनाहै ।

अन्यच्च ।

अश्मभेदोहिमस्तिक्तःकषायोवस्तिशोधनः ।
भेदंहन्तित्रिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान्प्रमेहांश्चप्लीहशूलव्रणानिच ॥

अर्थ-पाखानभेद-शीतल, कड्वा, कषेला, वस्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगका विनाश करे है ।

क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः ।

क्षुद्रपाषाणभेदश्चव्रणकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-क्षुद्रपाषाणभेद-व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे है । पाखान-भेदवाली लकडी, परदेशसे आती है, वह क्याहै यह कोई नहीं जानता । इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते हैं और देशी पाषाणभेदके गुण इस पाषाणभेदसे सब मिलतेहैं । मात्रा १ मासेकी ।

धातकीनामानि ।

धातकीताम्रपुष्पीचधात्रीचधातृपुष्पिका ॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातृपुष्पिका, (धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बहुपुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मद्यवासिनी, गुच्छपुष्पी, संघपुष्पी, रोध्रपुष्पिणी, तीव्रज्वाला, वह्निशिखा, मद्यपुष्पा)



संस्कृतभाषामें	धातकी।
हिन्दीभाषामें	धायके फूल, धवईके फूल।
वङ्गभाषामें	धाइफूल।
मराठीभाषामें	धायटी।
गुजरातीभाषामें	धावणी।
कर्णाटकीभाषामें	धाविफूल।
तैलिङ्गीभाषामें	धातुकी पुड, और पुव्वु, जार्गि।
उ०	जातिको।
लैटिन्भाषामें	वुडफोर्डिया, फ्लोरिबंडा। Woodfordia floribunda
इंग्रेजीभाषामें	गीसलीआटोमेण्ठोजा।

धातकीगुणाः।

धातकीकटुकाशीतामदकृत्तुवरालघुः।
तृष्णातिसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, मदकारक, कषेली, हलकी, तथा, तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोगोंको जीते है।

अन्यच्च।

धातकीकटुकाशीतातुवरामदकारिणी।
तिक्तालघ्वीचसंप्रोक्तागर्भस्थापनकारिणी ॥

रक्तप्रवाहिकापित्ततृड्विसर्पव्रणापहा ।
कृम्यतीसारहननीरक्तदोषरुजापहा ॥
पुष्पमस्याःस्वादुरूक्षंरक्तपित्तातिसारजित् ।
विषनाशकरंचोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ—धातकी—चरपरी, शीतल, कषेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करेहै ।

धायकेफूल—स्वादिष्ठ, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करेहैं । धायके वृक्षकी अपेक्षा धायके फूलोंके अधिक गुण हैं ।

विवरण । इसका वृक्ष होताहै, पत्ते अनारके समान होतेहैं, अनारके पत्ते अधिक नीले होतेहैं, धायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होतेहैं । फूल लाल होतेहैं, इस फूलमें कली नहीं होती । धायके फूलोंका काढा तीन दिन देनेसे प्रदररोग दूर होताहै ।

दन्तरोगोंमें धायके फूल अत्यन्त हितकारीहैं । व्यवहार—फूल, छाल । मात्रा २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि ।



मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमङ्गाकालमेषिका ।
मण्डूकपर्णीभण्डीरीकालयोजनवल्लिका ॥
योजनवल्लीमण्डूकाकाण्डीरावस्त्ररञ्जनी ।
रक्ताङ्गीरक्तयष्टिश्चरक्तायोजनपर्णिका ॥

अर्थ—मञ्जिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी,

भण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, काण्डारा, वस्त्ररञ्जनी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (भण्डी, लतायष्टि, हेमपुष्पी, भिण्डीरी, काण्डीरी, जिङ्गी, भण्डिल, भण्डिरी, भण्डिका, भण्डि, भण्डितकी, रसायनी, गण्डीरी, हरिणी, गौरी, वमा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा, चित्राङ्गी, जननी, विजया, मंजूषा, रक्तयष्टिका, क्षत्रिणी, रागाढ्या, कालभण्डिका, अरुणा, ज्वरहन्त्री, छत्रा, नागकुमारिका, भण्डीरलतिका, रागांगी, वस्त्रभूषणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता और ताम्रवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
हिन्दीभाषामें	मजीठ ।
वंगभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
मराठीभाषामें	मंजिष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	मजीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मंजिष्ठा ।
तैलिङ्गीभाषामें	मंजिष्ठतीठी, ताम्रवल्ली ।
तामिलीभाषामें	मञ्जिट्टी ।
इंग्रेजीभाषामें	मेडररुट् । Maddertroot
लैटिन्भाषामें	रुविआ कोर्डि फोलिया । Rubia-cordifolia
फारसीभाषामें	रुनास ।
अरबीभाषामें	फुवहतु सिवग उरु कुस्सु वागीन ।

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् ।
गुर्वीचोष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥
रक्तातिसारकुष्ठास्रविसर्पव्रणमेहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ—मजीठ—मधुर, कडवा, कषेला, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, भारी, गरम तथा विष, कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरविकार, विसर्प, व्रण और प्रमेहरोगका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठातुवराचोष्णावर्ण्यास्वर्य्यागुरुःस्मृता ॥
तिक्तालघ्वीचमधुराव्रणमेहकफापहा ।

विषंनेत्ररुजंशोफंयोनिदोषंज्वरंतथा ॥
शूलंकर्णरुजंचैवकुष्ठंचार्शःकृमीञ्जयेत् ।
रक्तातिसारवीसर्पनाशिनीचप्रकीर्तिता ॥

अर्थ-मजीठ-कषेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला, भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा घाव, प्रमेह, कफ, विष, नेत्ररोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, ववासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

अस्याः शाकगुणाः ।

शाकेस्यान्मधुरालघ्वीस्निग्धादीप्तिकरीमता ।
वातपित्तहरीचोक्ताऋषिभिःसत्यवादिभिः ॥(नि०र०)

अर्थ-मजीठके पत्तोंका शाक--मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवालाहै ।

फलंयकृद्दोषहरंमूलंचम्मविवर्णताहरंतिलकालकघ्नञ्च(का०नि)

अर्थ-मजीठका फल--प्लीहाको नाश करनेवालाहै, मजीठकी जड--चर्मरोग और, तिलकालक (शरीरके तिल) को दूरकरे है ।

कुसुम्भानामानि ।



स्यात्कुसुम्भंवह्निशिखंलोहितंग्राम्यकुंकुमम् ॥

अर्थ-कुसुम्भ--वह्निशिख, लोहित, ग्राम्यकुंकुम (कमलोत्तम, महारजन, कुक्कुटशिख, पापक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, वस्त्ररञ्जन, अग्निशिख)

संस्कृतभाषामें कुसुम्भ, कुसुम्भवीज ।
हिन्दीभाषामें कसुम (कर्र)

वंगलामें	कुसुमफूल । कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कर्डीचिफळ, कडया ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बो, करड, कुसुंवाना वी ।
कर्णाटकीभाषामें	कसुम्भ ।
तैलिंगिभाषामें	लत्तुक, लक्क वंगारसु ।
इंग्रेजीभाषामें	ऑफिसिनल कार्थेमस । Officinal Carthamus
लैटिन् भाषामें	कार्थेमस टिङ्कटोरियस । Carthamustinctorious
फारसीभाषामें	गुलेमास्कर । (तुख्मकायशा)
अरवीभाषामें	अखरीज, हवुलअस्फर ।

कुसुम्भगुणाः ।

कुसुम्भंवातलंकृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूम-वातकारक, तथा, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफनाशकहै ।

कुसुम्भपुष्पगुणाः ।

कुसुम्भपुष्पंस्वादुस्त्रिदोषघ्नञ्चभेदकम् ।
रूक्षमुष्णंपित्तलञ्चकेशरंजनकारकम् ॥
कफनाशकरंचैवलघुप्रोक्तंमनीषिभिः ।

अर्थ-कसूमके फूल-स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, गरम, पित्तजनक, केशरंजक, कफनाशक और हलके हैं ।

कुसुम्भपत्रशाकगुणाः ।

कुसुम्भपत्रंमधुरंनेत्र्यमुष्णंकटुस्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचातिरुच्यंरूक्षंगुरुस्मृतम् ॥
सरंपित्तकरंचाम्लंगुदरोगकरंमतम् ।
कफविण्मूत्रमेदानांनाशकंपरमंमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर, नेत्रोंको हितकारी, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, अत्यन्त रुचिकारक, रूखा, भारी, सारक, पित्तजनक, अम्ल, गुदाके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, तथा कफ, मल, मूत्र और मेदाको दूर करनेवालाहै ।

इसके शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

कुसुम्भबीजगुणाः ।

सुम्भबीजंमधुरंस्निग्धंशीतंकषायकम् ।
अवृष्यंगुरुचप्रोक्तंकफवातास्रपित्तनुत् ॥

अर्थ—कसूमके बीज-(करं) मधुर, स्निग्ध, शीतल, कषेले, भारी तथा कफ, वात और रक्तपित्त इनका नाश करेहै ।

इसके अधिकगुण धान्यवर्गमें देखो ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुंभतैलमुष्णंतुविपाकेकटुकंगुरु ।
विदाहकंविशेषेणसर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ—कसूमका तैल—गरम, पाकमें चरपरा, भारी, दाहजनक और विशेष करके त्रिदोषको कुपित करेहै ।

इसके अधिक गुण तैलवर्गमें, देखो ।

विवरण । कसूमका क्षुप होताहै, इसके कांटे कटाईके कांटोकी समान होतेहैं, पत्तेभी कटाईके समान होते हैं, इसके फूलोंकोही कसूम कहतेहैं । व्यवहार—पत्ते, फूल, बीज, तेल, झांदरा ।

लाक्षानामानि ।

लाक्षातुकीटजाराक्षाशतघ्नीरक्तमातृका ।

अर्थ—लाक्षा, कीटजा, राक्षा, क्षतघ्नी, रक्तमातृका (जतु, याव, अलक्त, द्रुमामय, गराषिका, खदिरका, रक्ता, रङ्गमाता, पलङ्कषा, क्रिमिहा, द्रुमव्याधि, अलक्तक, पलाशा, मुद्रिणी, दीप्ति, जन्तुका, गन्धमादिनी, नीला, द्रवरसा, पित्तारि, कृमिजा, क्रिमिजा, जतुका, क्रमिजा, गर्णधका, क्षतघ्नी)

संस्कृतभाषामें	लाक्षा ।
हिन्दीभाषामें	लाख, लाही ।
वंगभाषामें	लाहा ।
मराठीभाषामें	लाख ।
गुजरातीभाषामें	लाख ।
कर्णाटकीभाषामें	अरगु ।
तैलङ्गभाषामें	लाका ।
इंग्रेजीभाषामें	शेललाक । Shell lac
लैटिन्भाषामें	कोकसलाका । Cocuslaeca

फारसीभाषामें	लाक ।
अरबीभाषामें	लुक् धोएल लाखलुकमसुल ।

लाक्षागुणाः ।

लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः ।
अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।
विषरक्तप्रशमनीविषमज्वरनाशिनी । (निघण्टुसंग्रह)

अर्थ-लाख-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खांसी, ज्वर, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, क्रिमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लाक्षातुतिक्तातुवराभग्नसन्धानकारिका ।
स्निग्धालघ्वीचबल्याचशीतावर्णप्रदामता ॥
कफंपित्तञ्चशोषञ्चविषंरक्तविकारकम् ।
हिक्कांकासंज्वरंचैवविषमञ्चविनाशयेत् ॥
उरःक्षतंचवीसर्पनासारोगकृमींस्तथा ।
कुष्ठव्रणञ्चत्वग्दोषंदाहञ्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

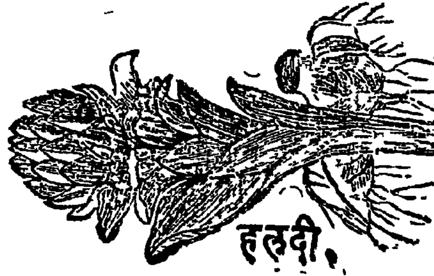
अर्थ-लाख, कडवी, कषेली, भग्नसन्धानकारक, स्निग्ध, हलकी, बलकारक, शीतल, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, शोष, विष, रक्तविकार, हिचकी, खांसी, ज्वर, विषमज्वर, उरःक्षत, विसर्प, नासारोग, कृमि, कोढ, व्रण, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है ।

अलक्तकगुणाः ।

अलक्तकोरजोरोधीरक्तपित्तक्षयापहः ।
प्रदरञ्चाप्यतीसारंसरक्तंक्षपयेद्ध्रुवम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-महावर-रजोरोधक, रक्तपित्त, क्षय, प्रदर और रक्तातिसारको दूर करनेवाली है, इसके अधिक गुण आगे लिखे हैं । पीपल, वेरी, सीसम इत्यादि अनेक वृक्षोंमें होतीहै, सबमें श्रेष्ठ पीपलकी लाख गिनीजाती है ।

हरिद्रानामानि ।



हरिद्रानिशाह्वापीतायुवतीहेमरागिणी ।
काञ्चनीक्षणदागौरीमेहघ्नीवरवर्णिनी ॥

अर्थ–हरिद्रा, निशाह्वा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेदघ्नी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमासिनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलप्रदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवालुका, हेमरागी, रभङ्गवासा, घर्षणी, पीतिका, रंजनी, निशा, बहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित्, रञ्जनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विषघ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, कृमिघ्नी, हृद्विलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हलदी)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	हलदी ।
बंगलामें	हलुद ।
मराठीभाषामें	हळद ।
गुजरातीभाषामें	हलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	अर्शिना ।
तैलिङ्गभाषामें	पसुपु ।
द्रा०	इलद ।
इंग्रेजीभाषामें	टर्मेरिक । Turmeric
लैटिन्भाषामें	करक्युमालोंगा । Curcumalonga
फारसी भाषामें	जरदचोब ।
अरबीभाषामें	उरुकुस्सुफर ।

अस्यागुणाः ।

हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णकफवातनुत् ।
वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा ॥ (भावप्रकाश)

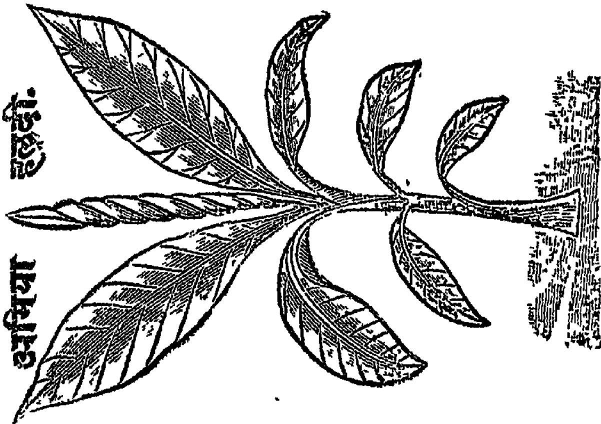
अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कफ, वातनाशक, वर्णको सुंदरतादायक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग और व्रणको नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

हरिद्राकटुकातिक्तादेहवर्णविधायिका ।
उष्णारूक्षाशोधनीचस्त्रीणांविभूषणंमता ॥
कफंवातंरक्तदोषंकुष्ठंकण्डूंप्रमेहकम् ।
त्वग्दोषंचव्रणंशोफंपाण्डुरोगंकृमीन्विषम् ॥
पीनसंचारुचिंपित्तमपचींचैवनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, देहके रंगको करनेवाली, उष्ण, रूखी, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ,वात, रुधिरदोष, कोढ, खुजली, प्रमेह, त्वचाके दोष, घाव, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, विष, पीनस, अरुची, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है ।

कर्पूरहरिद्रानामानि ।



दार्वीमेदाम्रगन्धाचसुरभीदारुदारुच ।
कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरभिःसुरनायिका ॥

अर्थ-दार्वीमेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका ।

संस्कृतभाषामें	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	कपूरहलदी, आम्बीयाहलदी ।
बंगलामें	आमआदा ।
मराठीभाषामें	आंबेहळद ।
गुजरातीभाषामें	आंबाहलद्र ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलीअर्शिना ।
तैलिंगीभाषामें	कारुपसुपु ।
इंग्रेजीमें	मेंगोजिंजर । Mangojinger
लैटिन्में	कर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica

अस्यागुणाः ।

आम्रगन्धिहरिद्रायासाशीतावातलामता ।
पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, वांतकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुकानाशकहै ।

अपिच ।

अम्लारुचिप्रदालध्वीदीपनीचवरासरा ।
कफंचोग्रव्रणंकासंश्वासंहिक्कांज्वरंजयेत् ॥
अभिघातभवंशोथंलेपाच्छीघ्रंविनाशयेत ॥(केचित)

अर्थ- कपूरहलदी-(अम्बिया हलदी, वात, रक्त और, विषनाशक है, वीर्य वर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै ।

वनहरिद्रानामानि ।

शोलीवनहरिद्रास्याद्वनारिष्टाचशोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका, (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामें	वनहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	वनहलदी, जंगलीहलदी ।

वंगभाषामें	बनहलुद ।
मराठीभाषामें	शोली, रानहळद ।
गुजरातीभाषामें	वनहलदर ।
तैलिङ्गीमें	अडविपसुपु ।
तामिलीमें	कस्तूरि मंजल ।
इंग्रेजी भाषामें	W
लैटिन्भाषामें	O

अस्या गुणाः ।

शोलिकाकटुकागौल्यारुच्यातिक्ताग्निदीपिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-वनहलदी-गौल्य, रुचिकारक, कडवी और जठराग्निदीपकहै ।

अपिच ।

अरण्यहलदीकन्दःकुष्ठवातास्रनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जंगली हलदी-कोढ और रक्तवातनाशक है ।

दारुहरिद्रानामानि ।

दार्वीदारुहरिद्राचद्वितीयाभाकपीतकम् ।

अर्थ-दार्वी, दारुहरिद्रा, द्वितीयाभा, कपीतक, (पीतद्रु, कलियक, हरिद्रु, पचम्पचा, पर्जनी, हरिद्रा, काष्ठा, मर्म्मरी, पीतिका, पीतदारु, स्थिररागा, कामिनी, कटङ्कटेरी, पर्जन्या, पीता, दारुनिशा, कालीयक, कामवती, दारुपीता, कर्कटिनी, हेमकान्ती, पीतत्वक्, पीतचंदन, निर्दिष्टा, काष्ठरजनी, हैमवती, हेमकान्ता)

संस्कृतभाषामें	दारुहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	दारुहलदी ।
वंगभाषामें	दारुदरिद्रा ।
मराठीभाषामें	दारुहळद ।
गुजरातीभाषामें	दारुहलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	मरदर्शिना ।
तैलिङ्गीभाषामें	मनिपसुपु ।
तामिलीभाषामें	मरमञ्जिल ।
लैटिन्भाषामें	बरबेरीस एरीसूटेटा । Berberis aristata

फारसीभाषामें	दारचोव ।
अरवीभाषामें	दारहलद ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तादारुहरिद्रातुकटूष्णाव्रणमेहनुत् ।
कण्डूविसर्पत्वग्दोषविषकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–दारुहलदी–कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, त्वचाके दोष, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करैहै ।

अपिच ।

दार्वीतद्वद्विशेषेणकफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा० व०)

अर्थ–दारुहलदीके गुण हलदीके समान हैं विशेषकरके कफ और अभिष्यन्दको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दार्वीनिशागुणाकिन्तुनेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ–दारुहलदीके गुण हलदीकेही समान हैं,तोभी विशेषकरके, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगनाशक है ।

दार्विक्काथोद्भवरसाञ्जननामानि ।

रसाञ्जनंतार्क्ष्यशैलंरसगर्भश्चतार्क्ष्यजम् ।

अर्थ–रसाञ्जन, तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ, तार्क्ष्यज (दार्वीक्काथोद्भव, बालभैषज्य, तार्क्ष्य, रसोद्भूत, रसाग्रज, कृतक, रराज [?] वीर्य्याञ्जन, रसनागर्भ, अग्निसार)

संस्कृतभाषामें	रसाञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	रसोत ।
मराठीभाषामें	रसांजन ।
वंगभाषामें	रसवत ।
गुजरातीभाषामें	रसवती ।
कर्णाटकीभाषामें	रसांजन ।
तैलिङ्गीभाषामें	रसाञ्जनमु ।
इंग्रेजीभाषामें	एक्स्ट्राक्ट आफ् इंडियन बर्बेरि । Extract of Indian Berbery
लैटिन्भाषामें	एक्स्ट्राक्टवर्बेरिस् । Axtracum Berberis
अरबीभाषामें	हुजुज ।

अस्याः कषायः ।

दार्वीक्काथसमंशीरंपादंपक्कायथाघनम् ।
तदारसाञ्जनाख्यंतन्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥

अर्थ-दारुहलदीका काढा बनाकर उस काढेमें उसकी बराबर दूध मिलाकर औटावै, जब औटकर काढा होजावे तो उतारले, उसको रसोत कहतेहैं। और वह रसोत नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है ।

अस्या गुणाः ।

रसाञ्जनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णंरसायनंतिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रसोत, चरपरा, गरम, रसायन, कडवा, छेदक तथा कफ, विष, नेत्रविकार और व्रणको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

रसाञ्जनंहिमंतिक्तंहिक्काशोंविषनाशनम् ।
कर्णनेत्रभवान्रोगान्योजितंसाधुसाधयेत् ॥ (ग०नि०)

अर्थ-रसोत-शीतल, कडवा तथा हुचकी, ववासीर, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगोंको हरैहै ।

अपिच ।

दार्वीक्काथोद्भवंतीक्ष्णंकटुकञ्चरसायनम् ।
छेदनंचरसेचोष्णंचक्षुष्यंकफनाशनम् ।
वृष्यंविषंरक्तपित्तच्छर्दिहिक्काविनाशनम् ।
श्वासघ्नंमुखरोगघ्नंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रसोत-तीक्ष्ण, कटु, रसायन, छेदक, रसमें गरम, नेत्रोंको हितकारी, कफनाशक, वीर्य्यजनक तथा रक्तपित्त, वमन, हुचकी, श्वास और मुखरोगका नाश करैहै ।

अस्यशोधनविधिः ।

तोयेत्युष्णेपरिक्षिप्यद्रवीकुर्याद्रसांजनम् ।
वाससास्रावयित्वाचशोधनंभानुरश्मिना ॥
एवंविशोधितंसर्वकर्मसुपरियोजयेत् ।

विशुद्धंनाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धंकदाचन ॥

अर्थ–रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमें घोलदे, फिर वस्त्रमें छानकर धूपमें सुखादे, इसप्रकार शोधाहुआ रसोत सर्वकामोंमें ले शोधन कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं । मात्रा १॥ मासेकी।

बाकुचीनामानि ।



सोमराजीकृष्णफलाबाकुचीकुष्ठनाशिनी ।
सोमवल्लीपूतिफलीवेजानीकालमेषिका ॥

अर्थ–सोमराजी, कृष्णफला, बाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वेजानी, कालमेषिका (अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेषी, वांगुजी, बाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगन्धा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, कालमेषी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगंधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी और असिततवचा) ।

संस्कृतभाषामें — वाकुची, सोमराजी ।
हिन्दीभाषामें — वायची, वावची, बकुची, (बाकुचीके दाने).
वंगभाषामें — हाकुच, सोमराल (ज) ।
मराठीभाषामें — बावची ।
गुजरातीभाषामें — बावची, वावचीनावी ।
कर्णाटकीभाषामें — वाउचिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें — तिप्पतोगे, नेलवयलिये ।
तामिलिभाषामें — वोगिविट्टुलु ।
इंग्रेजीभाषामें — एसक्यूलंट्फ्लाकुर्शा । Esculent Flacourtia
लैटिन्में सोरेलिया–कोरेलिफोलिया, सोरेलिया, स्पाईके ।
Psoralia Corylifolia P. Spicata

वाकुचीगुणाः ।

बाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमिप्रणुत् ।
तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरं कटु ॥
केश्यंत्वच्यंकृमिश्वासकासशोथामपाण्डुहृत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-बावची-मधुर, कडवी, पचनेमें चरपरी, रसायन, विष्टम्भको दूर करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सारक, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाली, रूखी, हृदयको हितकारी तथा श्वास, कोढ, प्रमेह, ज्वर और क्रिमिका, विनाश करेहै ।

बावचीका फल-पित्तजनक, कुष्ठनाशक, कफघ्न, वातविनाशक, कटु, केशोंको, उत्तम करनेवाला, त्वचाको सुंदरतादायक तथा वमन, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, खांसी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

बाकुचीपाकेकटुकातिक्ताशीतारसायनी ।
मधुरारुचिदारूक्षाहृद्याग्राह्यग्निदीपनी ॥
बल्याचतुवरालघ्वीमेध्यावैरक्तपित्तजित् ।
कफकुष्ठकृमिश्वासकासमेहज्वरव्रणान् ॥
त्रिदोषवातत्वग्दोषविषकण्डूश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-बावची-पाकमें चरपरी, कडवी, शीतल, रसायन, मधुर, रुचिदायक, रूखी, हृदयको हितकारी, ग्राही, अग्निप्रदीपक,बलकारक, कषेली, हलकी, मेधाजनक तथा रक्त, पित्त, कफ, कोढ, कृमि, श्वास, खांसी, प्रमेह, ज्वर, व्रण, त्रिदोष, वात, त्वचाके विकार, विष, कण्डू और खर्ज्जू अर्थात् खुजलीका नाश करेहै ।

बाकुचीभेदबाकुचीगुणाः ।

श्वित्रारिर्बाकुचीभेदःकुष्ठदोषत्रयास्रजित् ।
वातरक्तहरोलेपात्सिध्मश्वित्रविनाशनः ॥ (आ०सं०)

अर्थ–श्वित्रारि यह बाकुचीका भेद है, यह कोढ, त्रिदोष, रक्तविकार, वातरक्त, सिध्मरोग और श्वित्र कोढको दूर करेहै।

बाकुचीस्वरूपम्।

क्षुपोबाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशोभवेत्।
कृष्णपुष्पोगुच्छफलोदुर्गंधःकृष्णबीजकः॥ (शो० नि०)

अर्थ–बाकुचीका, क्षुप होताहै, पत्ते ग्वारकी समान होतेहै, फूल काला होताहै, फल गुच्छोंमें आतेहैं, उनमेंसे काले बीज निकलते हैं और इसमें दुर्गन्ध आतीहै। व्यवहार–बीज, लकडी। मात्रा १॥ मासेकी।

चक्रमर्द्दनामानि।

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः।
पद्माटःस्यादेडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि॥

अर्थ–चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एडगज, चक्री, पुन्नाट, (तर्किण, तर्किल, प्रपुन्नड, मेषाक्षि, कुसुम, प्रपुन्नाल, अडगज, गजाख्य, मेषाह्वय, एडहस्ती, व्यावर्त्तक, चक्रगज, पुन्नाड, विमर्द्दक, तर्वट, चक्राह्व, शुकनाशन, दृढबीज, प्रपुन्नाड, खर्ज्जूघ्न, चक्रमर्द्दक, उरणाख्यक, प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दृढबीज)

संस्कृतभाषामें	चक्रमर्द,
हिन्दीभाषामें	चकवड, पवाड, पमाड (र)।
बंगभाषामें	चाकुन्दा, एडांचि।
मराठीभाषामें	टांकाळा, तरोटा।
गुजरातीभाषामें	कुवाधियो।
कर्णाटकीभाषामें	चगचे
तैलिंगीभाषामें	तांट्यसु।
इंग्रेजीभाषामें	ओवललीव्ड केशिया। Ovalleaved Cassia
लैटिन्भाषामें	केशिया टोरा। Cassia Tora
फारसीभाषामें	संजीस वोया।

अस्य गुणाः।

चक्रमर्दोलघुःस्वादूरूक्षःपित्तानिलापहः।
हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत्॥

हन्त्युष्णंतत्फलंकुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ॥ (भां०प्र)

अर्थ-चकवड-हलका, स्वादिष्ठ, रूखा, पित्तवातनाशक, हृदयको हितकारी, शीतल तथा कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु और कृमिको नाश करनेवालाहै। चकवडका फल-गरम है और कुष्ठ, कण्डू, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि तथा श्वासको दूर करनेवाला है और कटु-रसान्वित है।

अन्यच्च ।

प्रपुन्नाटःस्वादुरूक्षोलघुस्तिक्तःकटुःस्मृतः ।
हृद्यःशीतःपटुश्चैववातपित्तकफापहः ॥
दद्रुकुष्ठकृमिश्वासाशिरोरुग्व्रणनाशनः ।
मेदोरोगंचपामांचत्रिदोषंचारुचिंज्वरम् ॥
मलमूत्रस्तम्भनश्चमेहंकासञ्चनाशयेत् ।
प्रपुन्नाटस्यबीजंतुग्राहिचोष्णंकटुस्मृतम् ॥
कफकुष्ठश्वासकासदद्रुकण्डुविषापहम् ।
शोथंगुल्मंवातरक्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
चक्रमर्द्दकपर्णानांशाकालघ्वीचपित्तला ।
अम्लोष्णाकफवातघ्नीदद्रुकुष्ठापहामता ॥
पामांकण्डूंचकासंचश्वासञ्चैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-पमार-(चकवड), स्वादिष्ठ, रूखा, हलका, कडवा, चरपरा, हृदयको हितकारी, शीतल, खारी तथा वात, पित्त, कफ, दाद, कोढ, कृमि, श्वास, शिरोरोग (ववासीर) घाव, मेदोरोग, पामा, त्रिदोष, अरुचि, ज्वर, मल और मूत्रका रुकजाना, प्रमेह और खांसीको दूर करैहै । पमाडके बीज-मलरोधक, गरम, चरपरे तथा कफ, कोढ, श्वास, खांसी, दाह, खुजली, विष, सूजन, गुल्म और वातरक्तका नाश करनेवाले हैं ।

पमाड (चकवड) के पत्तोंका शाक-हलका, पित्तजनक, अम्ल, गरम तथा कफ, वात, दाद, कोढ, पामा, कण्डू, खांसी और श्वासको हरनेवाला है। इस शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमें गिर पडतीहै जो बीज उपज निकलतेहैं ।

विवरण । पमाडका क्षुप होता है, पत्ते गोल और एक २ डंडीमें पांच पांच होते हैं, फूल पीला होता है, उसपै फली लगती हैं । व्यवहार-बीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि ।

काश्मीरातिविषाश्वेताविषाप्रतिविषारुणा ॥

अर्थ-कश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, विषा, प्रतिविषा, अरुणा, (प्रविषा, उपविषा, घुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, शृङ्गी, महौषध, श्वेतकन्दा, भृङ्गी, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, अमृता, श्वेतवचा, शुक्लकन्द, भंगुरा, मृद्वी, शिशुभैषज्य, शोकापहा, अतिसारघ्नी)

संस्कृतभाषामें	अतिविषा ।
हिन्दीभाषामें	अतीस ।
वंगभाषामें	आतइच ।
मराठीभाषामें	अतिविष ।
गुजरातीभाषामें	अतलसनी कली ।
कर्णाटकीभाषामें	अतिविषा ।
तैलिङ्गीभाषामें	अतिवासा ।
लैटिन्भाषामें	एकोनैटम् हिटरोफाइलम् । Acconitum Heterophyllum

अस्या गुणाः ।

विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत् ।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अतीस-गरम, चरपरा, कडवा, पाचक, जठराग्निको दीपन करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार, आम, विष, खांसी, वमि और कृमिरोगको, दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

विषात्रयंचदोषघ्नंपाचनंग्राहितिक्तकम् ।
बालानांसर्वदापथ्यंवमिशोफविमर्दनम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-त्रिदोषनाशक, पाचक, मलरोधक, कडवे, बालकोंको सर्वकालमें पथ्य हैं और वमन तथा सूजनको दूर करे हैं ।

अपिच ।

त्रिप्रकारंचातिविषंकिञ्चिदुष्णंचतिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकरंग्राहित्रिदोषाणांचपाचकम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषांचैवकृमीनर्शांश्चपीनसम् ॥
पित्तोदरंचातिसारंहर्षव्याधिहरंमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-कुछेक उष्ण, कडवे, अग्निप्रदीपक, ग्राही, त्रिदोषपाचक तथा कफ, पित्त, ज्वर, आमातिसार, कास, विष, यकृत्, वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और सर्व प्रकारकी व्याधि-विनाशक है ।

अतिविषाभेदाः ।

अतिविषात्रिधाज्ञेयाशुक्लाकृष्णातथारुणा ।
रसवीर्य्यविपाकेषुनिर्विषेवगुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे, तीन प्रकारका, है, यह तीनों रस, वीर्य्य और विपाकमें समान हैं, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक है । मात्रा ३ मासेकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटकंचैवशाबरोगालवस्तथा ।
द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकःस्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध्र, तिरीटक, शावर, गालव, (लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लक्तकर्म्मा, शुक्ल, शवरलोध्र, महालोध्र, मार्जन, वलिप्रिय, वानराघात, वलभद्र, रोध्र, भिल्लतरु, तिल्लक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलोध्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शावरक, तिरीट, यह नाम साधारण लोधके हैं । दूसरा पठानी लोध होताहै, उसकी पर्य्याय यह है पट्टिकालोध्र-क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी, लाक्षाप्रसादन, पट्टिकाख्य, पट्टिका, पट्टिलोध्र पट्टिलोध्रक, वल्कलोध्र, बृहद्दल, जीर्णबुध्न, बृहद्वल्क, शीर्णपत्र, अक्षिभेषज, शावर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच, लाक्षाप्रसाद, वल्क)

संस्कृतभाषामें	लोध्र, पट्टिकालोध्र ।
हिन्दीभाषामें	लोध, पठानीलोध ।
वंगभाषामें	लोधकाष्ठ, पाटियालोध ।
मराठीभाषामें	लोध ।
गुजरातीभाषामें	लोद्र, पठाणीलोद्र ।
कर्णाटकीभाषामें	लोध ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्ललोद्दुगचेट्टुग ।
लैटिन्भाषामें	सिंप्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोकोस्क्रेटिगोइडिस् (छाल) Syjmplocosracemosa, S. Cratac goides
अरबीभाषामें	मुगाम् ।

लोध्रगुणाः ।

लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत् ।
कषायोरक्तपित्तासृग्रक्तातीसारशोथहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–लोध–मलरोधक, हलका, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूरकरेहै ।

अन्यच्च ।

रोध्रद्वयंकषायंस्याच्छीतंवातकफास्रनुत् ।
चक्षुष्यंविषहृत्तत्रविशिष्टोवल्करोध्रकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–दोनोंप्रकारके लोध–कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोंको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले इन दोनोंमें पठानी लोध श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

लोध्रद्वयंतुतुवरंचक्षुष्यंशीतलंलघु ।
ग्राहकंवातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत् ॥
अतिसारारुचिविषप्रदराणिविनाशयेत् ।
रक्तपित्तहरंप्रोक्तंपुष्पंपाकेकटुस्मृतम् ॥
तुवरंमधुरंशीतंतिक्तञ्चग्राहकंमतम् ।
कफपित्तहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्तितम्॥ (निघण्टुरत्ना०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके लोध-कषेले, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलके, ग्राही तथा वात, कफ, रक्तदोष, शोफ, पित्त, अतिसार, अरुचि, विष, प्रदर और रक्तपित्तका नाश करनेवाले हैं ।

लोधका फूल-पचनेमें चरपरा, कषेला, मधुर, शीतल, कडवा, ग्राहक और कफपित्तनाशक है ।

भल्लातकनामानि ।

भल्लातकोऽरुष्करश्च भल्लातः शोथहृत्तथा ।
वह्निनामा वीरतरुर्व्रणकृद्भूतनाशनः ॥

अर्थ-भल्लातक, अरुष्कर, भल्लात, शोथहृत्, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत्, भूतनाशन, (भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, अह्नला, अन्तःसत्त्वा, भल्लिका, अर्शोहिता, भल्ली, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलवीज, वातारि, स्फोटवीजक, पृथग्वीज, धनुर्वृक्ष, वीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्णा, अग्निक, स्फोटहेतु, शोफनुत, स्नेहवीज, रक्तहर)

संस्कृतभाषामें	भल्लातक ।
हिन्दीभाषामें	भिलावा ।
बंगलाभाषामें	भेला ।
मराठीभाषामें	बिबवा, बिब्वा, बिब्बे ।
गुजरातीभाषामें	भिलामां ।
कर्णाटकीभाषामें	केरवीज ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लाजीडी, जीडीविट्टलु ।
औत्कलीभाषामें	भल्लिप ।
तामिलीभाषामें	शनकोट्टइ ।
द्रा०	भिलवना ।
इंग्रेजीभाषामें	मार्किंगनट् । Markingnut मलाकाविन Malaccabean
लैटिन्भाषामें	सोमिकार्पस्एनेकार्डियम् । Semecarpus anacardium
फारसीभाषामें	बिलादुर ।
अरबीभाषामें	हबुल्कल्व ।

भल्लातकगुणाः ।

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीमदान् ॥
हन्तिगुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणान् । (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावा-कषेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हलका तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, अग्निमांद्य (-प्रमेह-) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है ।

भल्लातकफलगुणाः ।

भल्लातकफलंस्निग्धंक्रिमिदुर्नामनाशनम् ।
दन्तस्थैर्यकरंग्राहिकषायंमधुरञ्चतत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेंका फल-स्निग्ध, क्रिमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दांतोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कषेला और मधुर है ।

पक्कभल्लातकगुणाः ।

भल्लातकफलंपक्कंस्वादुपाकरसंलघु ।
कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंछेदिभेदनम् ॥
मेध्यंवह्निकरंहंतिकफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावेंका पक्का फल-मधुर, पाकमें मधुर, हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेधाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और कृमिरोगोंको दूर करे है

अपिच ।

भल्लातस्यफलंकषायमधुरंकोष्णंकफार्तिभ्रम-
श्वासानाहविबन्धशूलजठराध्मानक्रिमिध्वंसनम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भिलावेंका फल-कषेला, मधुर, गरम तथा कफ, भ्रम, श्वास, आनाह, विबंध, शूल, उदररोग, आध्मान और क्रिमिको नाश करनेवाला है ।

अस्य फलत्वग्गुणाः ।

फलत्वचासुमधुरास्निग्धालघुकषायका ।
रसेकट्वीपाचिकाचलघुतीक्ष्णाचभेदिका ॥
उष्णाछेदनकर्त्रीचदीपनीकफनाशिनी ।

मेध्यावातञ्चकुष्ठञ्च व्रणं चोदरमेवच ॥
अर्शःसंग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तामुनिभिःसत्यवादिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-भिलावेंके फलकी छाल-मधुर, स्निग्ध, हलकी, कषेली, रसमें चरपरी, पाचक, तीक्ष्ण, भेदक, गरम, छेदक, दीपन, कफनाशक, मेधाजनक तथा वात, कुष्ठ, व्रण, उदररोग, ववासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, अनाह, ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

अस्य मज्जागुणाः ।

तथास्यफलजामज्जामधुराबृंहणीस्मृता ।
वृष्यादीपनकर्त्रीचतर्पणीशोकनाशिनी ॥
अरोचकञ्चदाहञ्चपित्तंवातञ्चनाशयेव् । (नि० र०)

अर्थ-इसके फलकी मज्जा-मधुर, बृंहण, वीर्यजनक, जठराग्निदीपक, तर्पण, शोफनाशक तथा अरुचि, दाह, पित्त और वातको दूर करनेवाली है ।

अस्य वृन्तगुणाः ।

भल्लातवृन्तंमधुरंकषायंवातकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेंका डंठल-मधुर, कषेला और वातको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

वृन्तमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमग्निकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-भिलावेंका डंठल-स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वालोंलो हितकारी और जठराग्निदीपक है ।

भल्लातकशोधनविधिः ।

भल्लातकानिपक्कानिसमानिप्रक्षिपेज्जले ।
मज्जन्तियानितत्रैवशुद्ध्यर्थंतानियोजयेत् ॥
इष्टकाचूर्णनिचयैर्घर्षणान्निर्विषंभवेत् । (आ० सं०)

अर्थ-पके भिलावें लेकर जलमें छोडदे, जितने भिलावें जलमें डूवजायँ, उनको, शुद्ध करनेके लिये उतनेही जलमें भिगोदे, फिर इष्टका अर्थात ईंटके चूर्णसे उनको घिसे तो वोह शुद्धहों ।

नदीभल्लातकनामानि ।

वृषांकःस्याद्गोजनकोनदीभल्लातकःस्मृतः ॥

अर्थ-वृषांक, गोजनक, नदीभल्लातक ।

अस्य गुणाः

वृषांकस्तुभवेत्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः ।
संग्राहीवातलश्चैवकफरक्तादिपित्तहा ॥
व्रणहेतिभिषक्श्रेष्ठैःप्रोक्तःकेयनिघण्टके । (नि०र०)

अर्थ-नदीभिलावा-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, वातकारक तथा कफपित्त, रक्तपित्त, और व्रणविनाशक है ।

इसका वृक्ष बडा होताहै, पत्ते गूमाकी समान होतेहैं, फल लाल होता है ।

विजयानामानि ।

शक्राशनन्तुविजयात्रैलोक्यविजयाजया ॥

अर्थ-शक्राशन, विजया, त्रैलोक्यविजया, जया (मत्कुणारि, भङ्गा, इन्द्राशन, वीरपत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, भृङ्गी, धूर्त्तवधू, मातुलानी, मातुली, नीली, मनोहरा, हरा, उन्मत्तिनी, योगिनी, धूर्तपत्नी, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी, वीरपत्री, शिवा, माया, शिवप्रिया, मत्ता, ज्ञानवल्लिका)

संविदामञ्जरीगञ्जामादिनीहर्षिणीतथा ॥

अर्थ-संविदामञ्जरी, गञ्जा, मादिनी, हर्षिणी ।

संस्कृतभाषामें	भङ्गा, विजया, गंजा, चरस ।
हिन्दीभाषामें	भॉग, भंग, गॉजा ।
वंगभाषामें	सिद्धि, भाङ्ग, गांजा ।
मराठीभाषामें	भांग, गांजा ।
ब्रह्मीभाषामें	बिन ।
गुजरातीभाषामें	भांग्य, गांजो, चरस ।
तैलिङ्गीभाषामें	जनपरितुल्ल गांजाई ।
इंग्रेजी भाषामें	इण्डियनहेंप । Indian Hemp
लैटिन्भाषामें	केनाबिस् सेटाईवा । Cannabis Sativa
फारसीभाषामें	किन्नाविष वरकुलख्याल शवनवंग ।
अरबीभाषामें	किन्नवकेन बुर्वारंरु रुहुल्वंज ।

भङ्गागुणाः ।

भङ्गाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघुः ।

तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-भंग-कफनाशक, कडवी, ग्राहक, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढानेवाली है।

अन्यच्च।

शक्राशनन्तुतीक्ष्णोष्णंमोहकृत्कुष्ठनाशनम्।
बलमेध्याग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारिरसायनम् ॥

अर्थ-भाँग-तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलवर्द्धक, मेधाजनक, अग्निकारक, कफनाशक और रसायन है।

अपिच।

भृंगीतुदीपनीरुच्याग्राहिणीपाचनीलघुः।
निद्रापित्तप्रदोष्णाचकामदाकफवातजित् ॥

अर्थ-भंग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मलको रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राजनक, पित्तकारक, कामजनक और कफ तथा वातको जीतनेवाली है।

गञ्जागुणाः।

आग्नेयीतर्षिणीबल्यामन्मथोद्दीपनीचला।
निद्रासंजननीगर्भपातिनीचविकाशिनी ॥
वेदनाक्षेपहरिणीज्ञेयाचमदकारिणी। (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-गांजा-पाचक, तृष्णाकारक, बलकारक, मन्मथोद्दीपक चित्तको चलायमान करनेवाला, निद्राजनक, गर्भको गिरानेवाला, विकाशी, वेदनाको हरनेवाला, आक्षेपको दूर करनेवाला और मदकारक है।

भंगोत्पत्तिः।

जातामन्दरमन्थनाज्जलनिधौपीयूषरूपापुरा
त्रैलोक्येविजयप्रदेतिविजयाश्रीदेवराजप्रिया ॥
लोकानांहितकाम्ययाक्षितितलेप्रापानरैःकामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी वै सेवितासर्वदा ॥

अर्थ-पहिले समयमें जब मंदराचल पर्वतसे समुद्र मथागयाथा, तब उस समय अमृतरूपसे भंगकी उत्पत्ति हुई। त्रिलोककी विजय देनेवाली होनेसे

इसका नाम विजया हुवा, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है । हितकी अभिलाप करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण—यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होतेहैं, इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कंगूरदार होतेहैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पांच अथवा सात पत्ते होतेहैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भंग दोप्रकारकी होतीहै, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जातेहैं और स्त्री जातिके क्षुपसे गांजेकी उत्पत्ति होती है, वंगदेशके राजशाही जिलेमें गांजेकी खेती होती है । दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जटा नहीं बांधीजासकती, वह यही कारण है कि भंगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहां पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं, उन सबको बहुत छोटे छोटेपनसे उखाड डालतेहैं मुंगेर पञ्जाव और रामपूरके जिलेकी भंग उत्तम होती है । क्षुप छेः फुटसे ऊंचा नहीं होता पत्ते एक इंच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भंग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमें यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भंगेडी कहते हैं, कि भंगही इस संसारमें मनभावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि—

सवैया ।

भीजत ही सब रीझत हैं जब घोय धरी शिवके मनमानी ।
मिर्च मसालो मिलाय दियो तव घोटकरी वाकी रस धानी ॥
साफी सुरपतिरायवनी यह ब्रह्म कमण्डलुके जल छानी ।
गंगते दूनी तरङ्ग उठैं जब अंगमें आवत भंग भवानी ॥ १ ॥

कोई बोला यह ठीक नहीं बरन यों है—

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतनघोटम घोटके छानी ॥
याहिके वीच अनेकन तीरथ याहिमें गंग तरंगके पानी ।
कोटिन रंग दिखावति है जव अंगमें आवति भंग भवानी ॥ २ ॥

एकने कहा भाई यह भी नहीं ऐसेहै-

खायेते ज्ञानकि खान खुले बिन खाये गमन नहीं होतहै बानी।
चाहतहैं सब योगी यती अरु देवनमें महादेवहु मानी॥
याके समान न और कछू हमें जान परी यह मुक्तिनिसानी।
कोटिन रंग दिखावतिहै जब अंगमें आवति भंग भवानी॥ ३॥

किसीने कहा भाई ऐसे कहो। कवित्त-

देखत हरी है गुण अमित भरी है सिद्ध साधन धरी है ज्ञान भरी सम शेषकी। ध्यानकी पुरी है कवितान ईश्वरी है मति देवत खरी है बुद्धि करन गणेशकी॥ जिन्होंने गही है ताय प्रभुता करी है कविलाल वरणी है ये निकाई परदेशकी। सुरईश्वरी है नरनागधीश्वरी है जल थलमें भरी है यह लाडिली महेशकी॥ ४॥

मिरच मसाला सौंफ कासनी मिलाये भंग खायेते अनेकरंग अंगको उबारती। जारती जलोदर कठोदर भगंदरको सन्निपात ववासीर वावन विदारती॥ सुकवि शिवराम दाद खाजको खराव करै क्षयी छींक छंजन नसूरको निकारती। पीनस प्रमेह वीस वावन तरहकी पीर कमर दरदको गरद करडारती॥ ५॥ इत्यादि.

व्यवहार-वैद्यक शास्त्रोंमें भंग और भंगके वीजोंके अतिरिक्त इसके और किसी अंशका व्यवहार नहीं देखा जाता; परंतु गांजाभी किसी किसी प्रयोगमें किया जाताहै।

समुद्र मथनेके समय अमृतके साथ यह उत्पन्न हुईथी, देवेंद्र चतुरताके साथ इसका सेवन करताहै। संग्राममें जानेके समय संपूर्ण देवसेना इसको पी निडरहो दैत्योंके साथ युद्ध करती। वस इसी कारणसे इसका नाम विजया हुआहै। फिर देवराजने अत्यन्त प्रसन्न होकर मनुष्योंको शोक दुःख दूर करनेके लिये इसे मृत्युलोकमें भेजा।

आयुर्वेद शास्त्रमें दोप्रकारके रोगोंकी औषधियोंमें इसका व्यवहार किया जाताहै। उदरामय परिपाक और रतिशक्ति वढानेके लिये जो औषधी बनाई जाती हैं उनमें भंग अधिक डाली जातीहै। आजकलभी परीक्षा करनेसे भंगका एक अद्भुत गुण प्रगट हुआहै, धनुस्तम्भ रोगमें इसका धुंआ पिलानेसे शनैः शनैः आक्षेप कम हो जाता है। और रोगीको भी अधिक दुर्बलता नहीं होती, बार बार भंगका धुंआ पीनेसे रोग छूट जाताहै।

जिसप्रकार डाक्तर कास्तागिरने भंगका धुंआ पिलाकर धनुस्तम्भके कई

रोगियोंको आरोग्य किया है उसका वृत्तान्त नीचे लिखतेहैं, उन्होंने छै रोगियोंको धुंवापिलाकर आराम किया। सात रत्ती भंग तमाखूके साधारण पत्तोंमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुक्केके द्वारा रोगीको पिलायाथा आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान कराया-गया। धुंआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र बंदकर साधारण रीतिसे सोगया। आक्षेप होनेका ध्यान होतेही इसप्रकारसे बार बार धुंआ पिला-कर उन सब रोगियोंको आराम किया गया।

बम्बई देशके डॉक्टर जि. सि. (G C) लूकसने परीक्षा करके देखा है कि धुंआ पीनेसे (१) आक्षेप थोडी देरतक ठहरता है (२) धीरे धीरे आक्षेप बहुत समयके पीछे हुआ करताहै (३) आक्षेपका तेजभी धीरे धीरे कम होजाता है (४) आक्षेपके किये रोगीको अत्यन्त कृश (दुबला) होना नहीं पडता (५) वारंवार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ उडजाताहै।

डाक्टर ओसागनसीने अनेक प्रकारके रोगोंमें भंगका प्रयोग करके परीक्षा की थी। उनकी राय है। धनुःस्तम्भ, जलान्तक, वातरस, तडका और विषूचिका रोगकी यह औषधी है, उनके पीछे अंगरेज डाक्टर लोग भंगको धनुस्तम्भ और विषूचिकाकी श्रेष्ठ औषधी समझतेहैं।

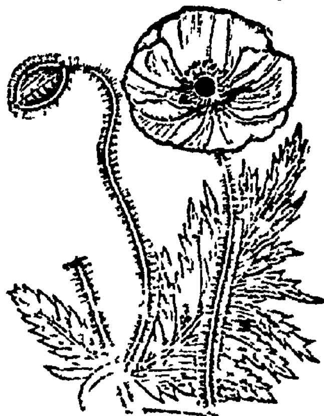
डाक्टर डाईमक (Dymac) ने धनुःस्तम्भके बहुतरोगियोंको केवल भं-गसे आराम-किया और निश्चय करदियाहै कि धनुःस्तम्भके लिये उत्तम औषधी है यह विषूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है, रोग-की सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होताहै। इन रोगोंके अतिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अंत्रवृद्धिके रोगमें भंगका प्रयोग होताहै। दूधमें भंग पीसकर लेप करनेसे बवासीरीको आराम होताहै। भुनीहुई भंग-का चूर्ण संहतके साथ खानेसे अतिसार, संग्रहणी और मंदाग्नि दूर होतीहैं। भंगका पूरा क्षुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आराम होताहै। और चोटकी पीडा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेष उपकार होताहै।

मात्रा २–४ रत्ती व्यवहार–बीज, पत्ते, जड।

खाखसफलनामानि।

खसफलेखाखसफलमुल्लसत्फलमित्यपि।





संस्कृतभाषामें	खसफल, खाखसफल, उल्लसरफल ।
हिन्दीभाषामें	पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोरे ।
बंगलाभाषामें	पोस्तदानारगाच्छ, पोस्तटेंडि, खाकसी ।
मराठीभाषामें	पोस्त, अफूचीं बोंडें ।
गुर्जरातीभाषामें	अफीणना डोडवां ।
इंग्रेजीभाषामें	पोपिकाप्स्युलस् । Poppycapsules
लैटिन् भाषामें :	पापावरीसकायस्युली । Papaveris Capsulae
फारसीभाषामें	कोकनार ।
अरबीभाषामें	अबुनास ।

अस्यगुणाः ।

स्याद्वाखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलंलघु ।
ग्राहितिक्तंकषायञ्चवातकृत्कफकासहृत् ॥
धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ।
मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पोस्तका डोरा-शीतल, मलरोधक, कडवा, कपेला, वातकारक, कफनाशक, कासनिवारक, धातुशोषक, रूखा, मदको करनेवाला, वाणीको बढानेवाला, वारंवार मोहको उत्पन्न करनेवाला, रुचिको करनेवाला और इसको बहुत सेवन करनेसे पुरुषता नाश होतीहै ।

अपिच ।

खसखसंग्राहकंबल्यंगुरुवृष्यंकफप्रदम् ।
पाकेचमधुरंवीर्य्यंकान्तिदंबलदंमतम् ॥
वातपित्तंनाशयतिफलंरूक्षञ्चग्राहकम् ।
रक्तशोषकरंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (नि० र०)

अर्थ–पोस्तका वृक्ष–ग्राही, बलकारक, भारी, वृष्य, कफकारक, पाकमें मधुर, वीर्यदायक, कान्तिजनक, बलदायक, वातपित्तको शमन करनेवाला, इसका फल रूखा, ग्राही, रक्तशोषक है ।

अफेननामानि ।

अफेनंखसखसरसंनिफेनंचाहिफेनकम् ॥

अर्थ–अफेन, खसखसरस, निफेन, अहिफेनक (खसफलक्षीर, आफूक, नागफेन, पोस्तोद्भव, पोस्तरस, भुजंगफेन)

संस्कृतभाषामें	अहिफेन ।
हिन्दीभाषामें	अफीम ।
वंगभाषामें	आफिंग ।
मराठीभाषामें	अफू, अपू, कडवी ।
गुजरातीभाषामें	अफेण ।
कर्णाटकीभाषामें	अफेन ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लामंदु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओपियम् । Opium
लैटिन्भाषामें	आप्पम् । Opium
फारसीभाषामें	अफयून तिर्य्याक ।
अरबीभाषामें	लवनुल खसखास ।

अस्यगुणाः ।

जारणोमारणश्चैवधारणःसारणस्तथा ।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तोगुणांस्तस्यब्रवीमिते ।
वृष्योबलकरोग्राहीसप्तधातुविशोषकः ॥
वातपित्तकृदानंदकारकोनेत्रमादकः ।
वीर्य्यस्तम्भकरस्तिक्तोमधुरश्चप्रकीर्तितः ॥

सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः ।
मेहादीन्श्वासकासौचप्लीहांधातुक्षयंतथा ॥
नाशयेदितिचप्रोक्तोविशेषस्तस्यकथ्यते ।
श्वेतवर्णोजारणःस्याद्भुक्तमन्नंचजारयेत् ॥
मृतिप्रदःकृष्णवर्णोमारणस्तुप्रकीर्तितः ।
जरानाशकरःपीतोधारणःसंप्रकीर्तितः ॥
चित्रवर्णःसारणःस्यान्मलसारणकार्यतः । (नि०र०)

अर्थ--अफीम-जारण, मारण, और सारण, इन भेदोंसे चारप्रकारकी है।
गुण-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, सप्तधातुशोषक, वातपित्तकारक, आनंदकारक, नशेको करनेवाली, वीर्यको स्तम्भनकरनेवाली, कडवी, मधुर तथा सन्निपात, कृमि, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, प्रमेह, श्वास, खांसी, प्लीहा और धातुक्षयको क्षय करेहै। सफेदरंगकी अफीम अन्नको जारण (जीर्ण) करे है, इसकारण इसको जारण कहते हैं।

काले रंगकी अफीम मृत्युकारक है इसकारण इसको मारण कहतेहैं। पीले रंगकी जरानाशकहै इसको धारण कहतेहैं। चित्र वर्णकी अफीम मलको सारण करतीहै, इसको सारण कहतेहैं।

खसखसनामानि।

उच्यन्तेखसबीजानितेखाखसतिलाअपि ॥

अर्थ-खसवीज, खाखसतिल, (सूक्ष्मतण्डुल, सूक्ष्मवीज, सुवीज, तिलभेद, खसतिल)

संस्कृतभाषामें	खसवीज, खसतिल।
हिन्दीभाषामें	खसखस, खसखसके दाने।
बंगलामें	पोस्तदाना।
तै० ता०	गसगस।
मराठीभाषामें	खसखस।
गुजरातीभाषामें	खरखस।
इंग्रेजीभाषामें	पोपीसीड्स् Poppy seeds
लैटिन्भाषामें	पापावरसोम्निफरम्। Papavar somuiferum
नु०	कसकसे।

मला० कशकश ।
फारसीभाषामें तुख्मेकोकनार ।
अरबीभाषामें हबुलकोकनार ।

अस्य गुणाः ।

खसबीजानिबल्यानिवृष्याणिमधुराणिच ।
जनयन्तिकफंतानिशमयन्तिसमीरणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–खसखस–बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वातविनाशक है ।

विवरण । पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमें अधिकतासे होतीहै। इसका क्षुप चारफूटका होताहै, फूल सफेद, लाल, और काले रंगके अतीव सुन्दर गुल्लालेकी समान आते हैं, उसपै डोडे लगतेहैं उन डोडोंको छुरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करलेतेहैं उसको पकाकर अफीम बनातेहैं और डोडेके भीतर जो बीज होतेहैं उनको खसखस कहतेहैं ।

यवक्षारनामानि ।

पाक्यंक्षारोयावशूकोयवक्षारोयवाग्रजः ।

अर्थ–पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवलास, यवशूक, सारक, रेचक, यवनालक, तिर्य्य, तीक्ष्णरस, यवनालज, यवज, यवशूकज, यवाह्व, यवापत्य)

संस्कृतभाषामें यवक्षार ।
हिन्दीभाषामें जवाखार)
वंगभाषामें यवक्षार, सोरा ।
मराठीभाषामें जवखार ।
गुजरातीभाषामें जवखार ।
कर्णाटकीभाषामें यवक्षार ।
तैलङ्गीभाषामें यवखारं ।
इंग्रेजीभाषामें कार्बोनेट ऑफ़ पोटाश । Carbonate of Potash
लैटिन्भाषामें पोटाश्यं कार्ब्बोनास् । Potassium Carbonass
अरबीभाषामें नुतरुन ।

अस्य गुणाः ।

यवक्षारोलघुःस्निग्धःससूक्ष्मोवह्निदीपनः ।
निहन्तिशूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् । (भा० प्र०)

अर्थ-जवाखार-हलका, स्निग्ध, सूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, वात, आम, कफ, श्वास, गलरोग, पाण्डुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृदयरोगको हरेहै ।

अन्यच्च ।

यवक्षारोहिमःश्रेष्ठःशर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।
निहन्तिशूलवातामपुंस्त्वगुल्मादिजन्तुजित् ॥ (गणनि.)

अर्थ-जवाखार-शीतल, श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्मरीरोग, शूल, वात, आम, पुरुषता, गुल्मादिरोग और क्रिमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

यवक्षारःसरश्चोष्णःकटुरग्निप्रदीपकः ।
सूक्ष्मोलघुर्वातकफशूलाश्मरिरुजापहः ॥
वातरोगंकण्ठरोगमामशूलाश्मरीहरः ।
यकृत्प्लीहामूत्रकृच्छ्रगुल्मश्वासार्शनाशनः ॥
आनाहवातंहृद्रोगमामंपण्डुरुजंतथा ।
ग्रहणींनाशयत्येवंपूर्वाचार्यनिरूपितम् (नि० र०)

अर्थ-जवाखार-सारक, उष्ण, चरपरा, अग्निदीपक, सूक्ष्म, लघु, तथा वात, कफ, शूल, अश्मरी, वातरोग, कण्ठरोग, आमशूल, यकृत्, प्लीहा, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म, श्वास, अर्श, आनाह, वात, हृदयरोग, आम, पाण्डुरोग और संग्रहणीका नाश करनेवालाहै ।

विवरण । कच्चे जौओंके पञ्चांगको अग्निमें जलाकर राख करलेवे फिर उस राखकी कशूमकी भांति रैनी टपकालेवे फिर उसको अग्निपर कढाईमें चढाकर उसका पानी जलादेवे जब वह जमजाय तो उसको कढाईमेंसे खुरचकर एक कांचेके पात्रमें रखदेवे इसको जवाखार कहते हैं ।

स्वर्जिकाक्षारनामानि ।

कपोतस्वर्जिकास्वर्जिःशूलघ्नीसुखवर्चकः ॥

अर्थ–कपोत, स्वर्जिका, स्वर्जि, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृज्जिकाक्षार, सर्जिका, क्षार, सुनार्चिक, सुघ्नी, योगवाही, स्वर्जका, सुखवर्चक, सुघ्निका, सर्जि, सर्जिक्षार, स्वर्जिक, सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वर्जिक्षार, सुवर्चि, सुवर्चा, स्वर्जिकाक्षार)

संस्कृत भाषामें	स्वर्जिक्षार।
हिन्दीभाषामें	सज्जी।
वंग भाषामें	साजिखार, साजिमाटि।
मराठी भाषामें	सज्जीखार।
गुजराती भाषामें	साजीखार।
कर्णाटकी भाषामें	साजीखारु।
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेटऑफ् सोडा। Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	आर्थोक्नेमम्इंडिकम्, केरोक्सीलन्फिटिडं। Arthrocnemem Indicum, Caroxylon foetidum
फारसीभाषामें	संजारकलीया।
अरबीभाषामें	कलीवशव्वुलअसफर।

अस्यगुणाः।

स्वर्जिक्षारःकटुश्चोष्णस्तीक्ष्णोगुल्मविनाशकः।
शूलंवातंकफंचैवकृमीनाध्मानवातकम्॥
उदरस्यचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितः। (नि० र०)

अर्थ–सज्जी–चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है।

विवरण। वृक्षोंके पञ्चाङ्गके तुकडेकरके मलवार प्रांतकी ओर वडी वडी खाई बनाकर उनमें भरदेतेहैं और उसमें आगलगातेहैं पीछे वह अपने आप जलकर जमजाते हैं इसको खारी कहते हैं। यह खारी जमीनमें वनाई जातीहै।

टङ्कणक्षारनामानि।

लोहद्रावीटङ्कणश्चसुभगोधातुवल्लभः॥

अर्थ–लोहद्रावी, टङ्कण, सुभग, धातुवल्लभ, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी, रसघ्न, वर्त्तुल, कनकक्षार, मालिन, टङ्कण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्गद, स्वर्णपाचक, टङ्ग, धातुसन्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्कण)

संस्कृतभाषामें	टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सुहागा ।
वंगभाषामें	सोहागा ।
मराठीभाषामें	स्वागीखार, टांकणखार ।
गुजरातीभाषामें	टंकणपाढियो, टंकनफूलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	टंकणखारु, विलीयटंकणु ।
तैलिङ्गीभाषामें	एलिगारम् ।
इंग्रेजीभाषामें	वोराक्स, वायवोरेट् ऑफ् सोडा । Borax Roborate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडासूवाइंवोरास् । Sodas Biboras
फारसीभाषामें	तीगार ।
अरबीभाषामें	बुरग ।

अस्य गुणाः ।

कथितष्टंकणक्षारःकटूष्णःकफनाशनः ।
स्थावरादिविषघ्नश्चकासश्वासापहारकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सुहागा-कटु, उष्ण तथा कफ, स्थावरादि विप, खांसी और श्वासको हरनेवालाहै ।

अपिच ।

टंकणंवह्निकृद्रूक्षंकफहृद्वातपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक,रूखा,कफनाशक और वातपित्तको करनेवाला है।

अन्यच्च ।

टंकणोद्रावणोभेदीविषहारीज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनोवातश्लेष्महरःपरः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सुहागा-द्रावण, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विप, ज्वर, गुल्म, आम, शूल, वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजःक्षारस्तीक्ष्णोवह्निप्रदीपकृत् ।
विरूक्षणोनिलकरःश्लेष्मघ्नःपित्तदूषकः ॥

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, जठराग्निको दीपन करनेवाला, विरूक्ष, वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ—सुहागा—अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टङ्कणोभेदकोरूक्षःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णोवातकरस्तिक्तस्तीक्ष्णःपटुःस्मृतः ॥
धातुद्रावीज्वरंवातंकफंजंगमजंविषम् ।
स्थावरञ्चविषंवांतिंवातरक्तञ्चनाशयेत् ॥
कासंश्वासंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ—सुहागा—भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जंगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावीतीक्ष्णोष्णश्चबलवह्निविवर्द्धनः॥(शोडलनि०)

अर्थ—सुहागा—तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढानेवालाहै ।

श्वेतटंकणगुणाः ।

सुश्वेतंटंकणंस्निग्धंकटूष्णंकफवातनुत् ।
आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—सफेद सुहागा—स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टंकणशोधनविधिः ।

आदौटंकणमादायकाञ्जिकाम्लेविनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्यरौद्रयन्त्रेविभावयेत् ॥
नरमूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा ।
दिनान्तेतत्समुद्धृत्यजम्बीराम्लगतंकुरु ॥
जम्बीराम्लात्समुद्धृत्यनारिकेलस्यपात्रके ।

मरीचचूर्णसंयुक्तंक्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥
एवंटंकणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् ।

अन्यच्च ।

टंकणंवह्नियोगेनस्फुटितंशुद्धतांव्रजेत् ॥ (रसेंद्रसारसं०)

अर्थ-प्रथम सुहागेको लेकर कांजीमें छोड दे, एक रात्रि पीछे निकालकर रौद्रयन्त्रमें पचावे, फिर मनुष्यके मूत्रमें डालकर गोमूत्रमें डाले फिर सायंकालको निकालकर जम्भीरीनींबूके रसमें डाले, उसमेंसे निकालकर नारियलके पात्रमें गेरकर कालीमिर्चके चूर्णयुक्त शीतल जलसे धोवे, इस प्रकार सुहागेको शोधकर सर्व रोगोंमें दे । सुहागा अग्निके संयोगसे खिलकर शुद्ध होता है ।

विवरण । सुहागेकी खान विशेष करके उत्तरखण्डमें पाई जाती है, प्रायः भोटानदेशसे भोटिये लोग इसको खोद खोदकर बकरोंमें भरलातेहैं । इसको कहीं कहीं पकातेहैं ।

सैन्धव नामानि ।

सिन्धूद्भवंमाणिमन्थंनादेयंलवणोत्तमम् ॥

अर्थ-सिन्धूद्भव, माणिमन्थ, नादेय, लवणोत्तम (सितशिव, सितसिव, शितशिव, शीतसिव, सिन्धूज, सिन्धूपल, वशिर, सिन्धूदेशज, माणिबन्ध, सिन्धुमन्थज, सिन्धुलवण, सिंधुभव, सिन्धुसम्भव, नादेय, शिव, सिद्ध, शिवात्मज, पथ्य, माणिमन्थ, शुद्ध, शीतशिव)

संस्कृतभाषामें	सैन्धव ।
हिन्दीभाषामें	सैंधानोंन ।
वङ्गभाषामें	सैन्धवलवण ।
मराठीभाषामें	सेंधेलोण ।
गुजरातीभाषामें	सिंधालुण ।
कर्णाटकीभाषामें	सैंधवं ।
तैलिङ्गीभाषामें	सिंधुउपु ।
इंग्रे-	क्लोराइड्ऑफ्सोडियं Chloride of sodium
लैटि०	सोडियाइक्लोरिडं । Sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमकेसंग, बिलोरी, नमकेसंध ।
अरबीभाषामें	मिलहेहिन्दी ।

अस्य गुणाः ।

सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सैंधानोंन-स्वादिष्ठ, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

सैन्धवंरुचिदंवृष्यंचक्षुष्यंचाग्निदीपनम् ।
शुद्धंस्वादुलघुस्निग्धंपाचनंशीतलंमतम् ॥
अविदाहितुसूक्ष्मञ्चहृद्यञ्चैवत्रिदोषहम् ।
व्रणदोषंमलस्तम्भंहृद्रोगंचैवनाशयेत्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सैंधानोंन-रुचिदायक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी अग्निप्रदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ठ, हलका, स्निग्ध, पाचक, शीतल, अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाशकरेहै ।

सेंधानोंन-सिंधकी ओरसे आताहै, सैंधानोंन आंखके लिये अत्यन्त हितकारीहै, जिसमनुष्यका मल सूखगयाहो और दस्त न आताहो, उसको घीके साथ सैधानोंन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैधानोंन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे बंधीहुई नसोंको छुडादेताहै । सब प्रकारके नमकोमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलवणनामानि ।

शाकम्भरीयंवसुकंरौमलवणंरौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रोमक, गडाख्य, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेशज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्बरोद्भव)

संस्कृतभाषामें	शाकम्भरीय ।
हिन्दीभाषामें	साँभरनोंन ।
वंगभाषामें	सामरलुण ।
मराठीभाषामें	साम्बरलोण, साम्भरमीठ ।
गुजरातीभाषामें	वडागरुंमीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	गाढलवण, सम्भरदेशज ।
फारसीभाषामें	मिलहेअवकीर ।

अस्य गुणाः ।

शाम्भरंदीपनंचोष्णंकोष्ठशुद्धिकरंलघु ।
किञ्चिदम्लमभिष्यंदिपाकेचकटुकंमतम् ॥
तीक्ष्णंपित्तकरंभेदिव्यवायिकफनाशकम् ।
सूक्ष्मंचार्शःकफानाहमलवातांश्चनाशयेत्॥ (रा०नि०)

अर्थ-सामर-दीपन, गरम, कोष्ठशोधक, हलकी, किञ्चित्अम्ल, अभिष्यन्दि, पाकमें कटु, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवायि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूरकरेहै । सामरनमक मारवाड देशके प्रसिद्ध सामर सरोवरमें उत्पन्न होताहै ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकंत्रिकूटश्चवशिरंलवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, वशिर, लवणाब्धिज (वासर, कडक, शिव, सागरज, अक्षीर, सामुद्रज, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रिक)

संस्कृतभाषामें	समुद्रलवण ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रनोंन, पांगा ।
वंगभाषामें	करकचनुन ।
मराठीभाषामें	मीठ ।
गुजरातीभाषामें	मीठूं ।
कर्णाटकीभाषामें	वडागर लवण ।
तैलिङ्गीभाषामें	उपुं ।
इंग्रेजीभाषामें	साल्ट् । Salt
लैटिन्भाषामें	सोडिआ इम्पुरास् । Sodii Muras
फारसीभाषामें	नमक ।
अरबीभाषामें	मिलह शोरी ।

अस्य गुणाः ।

सामुद्रंलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच ।
भेदनंमधुरंस्निग्धंशूलघ्नंनातिपित्तलम् ॥ (रा० वि०)

अर्थ-समुद्रनोंन-किंचित् उष्ण, अविदाहि, भेदक, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रंमधुरंपाकेसतिक्तंमधुरंगुरु ।
नात्युष्णंदीपनंभेदिसक्षारमविदाहिच ॥
श्लेष्मलंवातनुत्तिक्तंसरूक्षंनातिशीतलम् । (भा० प्र०)

अर्थ–समुद्रनोंन–पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रंरुचिदंहृद्यमग्निदीप्तिकरंमतम् ।
केशशौक्ल्यकरंभेदिह्यविदाहिबलासकृत् ॥
पाकेतुमधुरंप्रोक्तंकटुतिक्तंगुरुस्मृतम् ।
किञ्चिदुष्णंपित्तलञ्चक्षारंस्निग्धंचशूलनुत् ॥
वातनाशकरंस्वादुऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–समुद्रनोंन–रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बालोंको धवल करनेवाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक, वातविनाशक और स्वादिष्ठ है ।

विवरण । समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोंन बनातेहैं ।

विड्लवणनामानि ।

विडंविड्लवणंधूर्तंविड्गन्धंकृतकंतथा ॥

अर्थ–विड, विड्लवण, धूर्त, विड्गन्ध, कृतक, (काललवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट) ।

संस्कृतभाषामें	विड्लवण ।
हिन्दीभाषामें	विरियासंचरनोंन, कटीलानोंन ।
वंगलाभाषामें	विट्नुन, ।
मराठीभाषामें	विडूलोण ।
गुजरातीभाषामें	विडूलवण ।

अस्य गुणाः ।

विडंलवणमुत्क्लेदिवह्नेर्बलविवर्द्धनम् ।
मलवातामविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् (राजवल्लभ)

अर्थ-विरियासंचरनोंन-उत्क्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल, आटोप और विबन्धको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

विडंक्षारोलघुश्चोष्णोरुच्यस्तीक्ष्णोग्निदीपनः ।
वातानुलोमनोरूक्षोव्यवायीशूलनाशनः ।
वातनाशकरोमेहगुल्माजीर्णविनाशनः ।
मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशनः ॥
जाड्यंकफञ्चदद्रूंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-विरियासंचर-हलका, गरम, रुचिकारक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, वातानुलोमन, रूक्ष, व्यवायि तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म, अजीर्ण, मलावष्टम्भ, आनाह, वात, हृदयरोग, जडता, कफ और दादको दूर करनेवालाहै ।

विवरण । विडूलवण प्रसारणीके क्षारका बनाया जाताहै ।

सौवर्चललवणनामानि ।

अक्षंसौवर्चलंरुच्यंदुर्गन्धंशूलनाशनम् ॥

अर्थ-अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, शूलनाशन, (रुचक, कृष्णलवण, तिलक, हृद्यगन्ध, कोद्रविक, पाक्य, मेचक और मन्थपाक)

संस्कृतभाषामें	सौवर्चल ।	
हिन्दीभाषामें	कालानोंन, चौहारकोडा, सोंचरनोंन ।	
बंगलाभाषामें	सचल लवण ।	
मराठीभाषामें	पादेलोण ।	
गुजरातीभाषामें	संचल ।	
कर्णाटकीभाषामें	सौवर्चल ।	
तैलिङ्गीभाषामें	नालुउपु ।	
इंग्रेजीभाषामें	अनाकासोडि अंक्लोराईड ।	Unaqua Sodium Chloride
लैटिन्भाषामें	अनाका सोडिआई क्लोरेइडम्	Unaqua sodii Chloredum
फारसीभाषामें	नमक शिया ।	
अरबीभाषामें	मला अस्वद ।	

अस्यगुणाः ।

कृष्णलवणंवीर्योष्णंरुचिदंनिर्मलंकटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंकिंचित्पित्तकरंलघु॥(वि०ति०भा०)

अर्थ–कालानोंन–उष्णवीर्य्य, रुचिदायक, निर्मल, कटु तथा गुल्म, शूल और विबन्धका नाश करे है। किंचित् पित्तजनक और हलकाहै।

अन्यच्च ।

सौवर्चलंकटुक्षारंवीर्य्योष्णंविशदंलघु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नंहृद्यंसुरभिरेचनम् ॥
आनाहारोचकंजन्तूनूर्द्ध्ववातंचनाशयेत् । (ध०नि०)

अर्थ–कालानोंन–कटुरसयुक्त क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करेहै।

अन्यच्च ।

रुचकंरोचनंभेदिदीपनंपाचनंपरम् ।
सस्नेहंवातनुन्नातिपित्तलंविशदंलघु ॥
उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मंविबन्धानाहशूलहृत् । (भा. प्र.)

अर्थ–कालानोंन–रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हलका, डकारको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है।

विवरण । यह सज्जी और मीठे नोंनसे बनाया जाता है।

काचलवणनामानि ।

काचंत्रिकूटंपाक्याह्वंलवणंकाचसम्भवम् ॥

अर्थ–काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णवलण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, काललवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीककाचोद्भव)

संस्कृतभाषामें	काचलवण ।
हिन्दीभाषामें	कचियानोंन ।
वंगभाषामें	कालालोण ।
मराठीभाषामें	बांगडखार ।
गुजरातीभाषामें	बंगडीखार ।

अस्य गुणाः ।

काचंदीपनमत्युष्णंरक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-कचियानोंन-अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण और रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

काचादिलवणंरुच्यंकिञ्चित्क्षारंचपित्तलम् ।
दाहकंकफवातघ्नंदीपनंगुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-कचियानोंन-रुचिकारी, कुछेक खारी, पित्तजनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूलका नाश करैहै और दीपन है ।

विवरण । काचलवण काँचसे वनायाजाताहै ।

औद्भिदनामानि ।

औद्भिदंपांशुलवणंयज्जातंभूमितःस्वयम् ।

अर्थ-औद्भिद, पांशुलवण यह उसके नाम हैं, जो स्वयं (आपही) पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

हिन्दीभाषामें रेहगवानोंन ।

अस्य गुणाः ।

क्षारंगुरुकटुस्निग्धंशीतलंवातनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-रेहगवानोंन-खारी, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वातनाशकहै ।

अन्यच्च ।

औद्भिदंतीक्ष्णमुत्क्लेदिसक्षारंकटुतिक्तकम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-रेहगवा-तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, क्षारगुणयुक्त, चरपरा और कडवा है ।

विवरण । रेहगवां नमक प्रायः जंगलदेशकी खारी जमीनमें उत्पन्न होताहै इसको रेह भी कहतेहैं ।

औषरलवणनामानि ।

औषरकंसार्वगुणंसार्वसंसर्गलवणमूषरजम् ।
साम्भारंबहुलगुणंचमिश्रकंनवधा (?)॥

अर्थ- औषरक, सार्वगुण, सार्वसंसर्गलवण, ऊषरज, साम्भार, वहुलगुण, मिश्रक ।

संस्कृतभाषामें औषरलवण ।
हिंदीभाषामें खारीनोंन ।

वंगभाषामें	खारीनुन।
मराठीभाषामें	खारादिमीठ, उषर भूमीवर पिकतें तें।
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट आफ् सोडा। Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडीयंकार्बोनास् Sodium carbonas
फारसीभाषामें	बोरे अर्मनी।
अरबीभाषामें	बोदकवहलोज।

अस्य गुणाः।

औषरंतुपटुक्षारंतिक्तंवातकफापहम्।
विदाहिपित्तकृद्ग्राहिमूत्रसंशोषकारिच॥ (रा० नि०)

अर्थ–खारीनोंन–पटु, क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावे है।

विवरण। खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै।

रोमकलवणगुणाः।

रोमकंतीक्ष्णमत्युष्णंपटुतिक्तञ्चदीपनम्।
दाहशोषकरंग्राहिपित्तकोपकरंपरम्॥

अर्थ–रोमकलवण–तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे है।

द्रोणीलवणनामानि।

द्रौणेयंवार्द्धेयंद्रोणीजवारिजंचवार्द्धिभवम्।
द्रौणीलवणंद्रौणंत्रिकटुलवणंचवसुसंज्ञम्॥

अर्थ–द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकटु लवण।

अस्य गुणाः।

द्रौणेयंलवणंपाकेनात्युष्णमविदाहिच।
भेदनंस्निग्धमीषच्चशूलघ्नंचाल्पपित्तलम्॥ (रा० नि०)

अर्थ–द्रोणीलवण–पचनेमें किञ्चित् उष्ण, अविदाही, भेदक, कुछेक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक है।

नरसारनामानि।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः।
सादरोनरसारश्चवज्रक्षारोविदारणः॥

अर्थ-क्षारश्रेष्ठ, अमृतक्षार, चूलिकालवण, सादर, नरसार, वज्रक्षार, विदारण।

संस्कृतभाषामें	नरसार।
हिन्दीभाषामें	नवसादर।
वंगभाषामें	निशादल।
मराठीभाषामें	नवसागर।
गुजरातीभाषामें	नवसार।
इंग्रेजीभाषामें	आमोन्यं, क्लोरिडम्। Ammonium Chloridum
लैटिन् भाषामें	आमोन्यम्मूरिआस। Ammonium Muriaus
अरबीभाषामें	नवसादर खुराशानी।

अस्य गुणाः।

पटुप्रवृत्तिशालीनां (?) स्रावणःशोथहृद्धिमः।
यकृद्दोषेज्वरेप्लीहेशिरःशूलेऽर्बुदादिषु॥
स्तनरोगेरक्तपित्तेकासेभग्नामयेतथा।
योनिव्यापत्सुचज्ञेयोनरसारःसुखावहः॥

अर्थ-नवसादर-शोथनाशक, शीतल तथा यकृत् रोगमें, प्लीहारोगमें, ज्वरमें, शिरके शूलमें, अर्बुदादिकमें, स्तनरोगमें, रक्तपित्तमें, खांसीमें, भग्नरोगमें और योनिव्यापद्रोगमें सुखदायकहै।

अन्यच्च।

नरसागरकस्तीक्ष्णःसरोव्रणविदारणः।
रसजारणकारीस्यादतिचोष्णश्चगुल्मनुत्॥
मलस्तम्भंचोदरंचशूलंप्लीहाञ्चनाशयेत्।

अर्थ-नवसादर-तीक्ष्ण, सारक, व्रणविदारक, रसजारणकारक, अत्यन्त उष्ण, गुल्मनाशक तथा मलस्तम्भ, उदररोग, शूल और प्लीहाका नाश करनेवालाहै।

अस्य प्रस्तुतकरणंयथा।

औष्ट्रंवामाहिषंगव्यंपुरीषंभस्मतांगतम्।
क्षारपाकविधानेननृसारःसिद्धउच्यते (भा० प्र०)

अर्थ-ऊंट, भैंस और गायके गोबरकी क्षार पाकविधिसे भस्म करने पर नरसार सिद्ध होताहै।

अस्य शोधनविधिर्यथा ।

नरसारोभवेच्छुष्कश्चूर्णतोयेविपाचितः ।
दोलायन्त्रेणयत्नेनभिषग्भिर्योगसिद्धये ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ–सूखेनौमादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमें पचावे, इस प्रकार वैद्योंनें इसकी शुद्धि कही है ।

विवरण । नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दोप्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र, पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाताहै उसको अकृत्रिम कहते हैं, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाताहै उसको कृत्रिम कहते हैं ।

सूर्यक्षारनामानि ।

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्चतार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा ।
सुवर्चिकासर्वसहोह्यौरिणश्चशिलाजतुः ॥

अर्थ–सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु ।

संस्कृतभाषामें	सूर्यक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सोरा, सूर्याखार, वाजी ।
मराठीभाषामें	सोरा ।
गुजरातीभाषामें	सुरोखार ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिट्लुभस्मसु ।
इंग्रेजीभाषामें	नाइटर Nitre साल्ट पिटर Saltper
लैटिन् भाषामें	पोटेश्यंनैट्रास् Potaossum Nitras
फारसीभाषामें	शोरा ।
अरबीभाषामें	अबकेर ।

अस्य गुणाः ।

औद्भिदंलवणंतीक्ष्णमत्युष्णंरेचकंकटु ।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरंसूक्ष्मंक्षारंलघुस्मृतम् ॥
दाहकृच्छोषकृद्ग्राहिवातनुत्पित्तकोपनम् ।
प्लीहमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत् ॥

कुम्भकामलनुत्कासनासापाकश्वपीटिकाम् ।
शिरःपाकंचशूलंचआध्मानंचैवनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सूर्यक्षार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, कटु, अग्निप्रदीपक, सूक्ष्म, क्षार, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राहक, वातनाशक, पित्तकारक तथा प्लीहा, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग, वातरक्त, कुम्भकामला, श्वास, नासापाक, पिटिका, शिरःपाक, शूल और आध्मानको दूरकरेहै ।

विवरण । सोराक्षार सज्जीका वनाया जाताहै ।

सर्वक्षारगुणाः ।

सर्वक्षारोवस्तिशुद्धिकारकोमलशोधनः ।
वस्त्रशुद्धिकरश्चैवचक्षुष्यःकृमिनाशकः ॥
उदावर्त्तहरश्चैवमुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्नेहक्षार-(साबुन) वस्तिशोधक, मलशोधक, वस्त्रोंको निर्मल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक और उदावर्त्तरोगका नाश करेहै । साबुन समस्त संसारमें प्रसिद्ध है ।

लवणक्षारगुणाः ।

लोणारक्षारमत्युष्णंतीक्ष्णंपित्तप्रवृद्धिदम् ।
क्षारलवणमीषच्चवातगुल्मादिदोषनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लोणारक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तवर्धक, क्षारसंयुक्त, किंचित् लवणरससंयुक्त तथा वात और गुल्मादि दोषविनाशकहै ।

चणकाम्लगुणाः।

चणकाम्लकमत्यम्लंदीपनंदन्तहर्षणम् ।
लवणानुरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चनाखार-अत्यन्त अम्लरसान्वित, दीपन, दन्तहर्षक, कुछ लवणरसयुक्त, रुचिकारी तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करेहै ।

विवरण । चनेखारके बनानेकी विधि सब ग्रंथोंमें लिखी है ।

चुक्रगुणाः ।

चुक्रमत्यम्लमुष्णञ्चदीपनंपाचनंपरम् ।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरंपरम् ॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत् ।

अर्थ—चूक—अत्यन्त खट्टा, गरम, दीपन, पाचक, तथा शूल, गुल्म, विबन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा और मंदाग्निको दूर करैहै। चूक—खट्टे अनार, नींबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका बनाया जाताहै।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतशालिग्रामनिघण्टुभूषणे भाषानुवादविभूषिते अष्टवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ गुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ गुडूच्या उत्पत्तिः ।

अथलंकेश्वरोमानीरावणोराक्षसाधिपः ।
रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः ॥
ततस्तंबलवान्रामोरिपुंजायापहारिणम् ।
युतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥
हतेतस्मिन्सुरारातौरावणेबलगर्विते ।
देवराजःसहस्राक्षःपरितुष्टस्तुराघवे ॥
तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे ।
तानिन्द्रोजीवयामाससिंचित्वामृतवृष्टिभिः ॥
ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः ।
पीयूषबिन्दवःपेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका ॥

अर्थ—एक समय राक्षसाधिप लंकेश्वर अभिमानी मदोन्मत्त रावण रामचन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरनेवाले अपने रिपु रावणको वानरोंके सेनाके द्वारा रणस्थलमें जीतताभया जब वह बलगर्वित देवताओंका वैरी रावण मारागया, तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलमें जो बंदर असुरोंके हाथसे मारेगयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया उस समय उन वानरोंके शरीरसे उछलकर अमृत जिसजिस स्थानमें गिरा, वहीं वहीं यह गिलोय उत्पन्न हुई। इस कारण इसका नाम अमृता हुआ।

गुडूचीनामानि ।



गुडूच्यमृतवल्लीचकुण्डलीचक्रलक्षणा ।
मधुपर्णीसोमवल्लीविशल्यातंत्रीनिर्जरा ॥

अर्थ-गुडूची-अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, गुडूची, वातरक्तारि, पामरोद्धारा, पित्तघ्नी, उद्धारा, गुडूची, वारा, ज्वरारि, श्यामा, सुरकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलतिका, भिषक्प्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छद्मिका, चन्द्रहासा, अमृतसम्भवा, अमृतवल्लरी, जीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणिका, धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी)

संस्कृतभाषामें	गुडूची ।
हिन्दीभाषामें	गिलोय ।
बंगलाभाषामें	गुलंच ।
मराठीभाषामें	गुळवेल ।
गुजरातीभाषामें	गलो ।
कर्णाटकीभाषामें	अमरदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	तिप्पतिगा, तियातिज, गोधूचि ।
तामिलीभाषामें	सिन्दी, लकोदि ।
बो०	गिरुली ।
मा०	गिलवे ।
प०	गलाह्न ।
कान्यकुब्ज	गुरूंची ।
इंग्रेजीभाषामें	गुलांचा ।

लैटिन्भाषामें काक्युलस कार्ड फीलयिस। Coculuscordifolious
टिनोस्पोरा कार्डि फोलिया। Tisnosporad Corifolia
फारसीभाषामें गिलाई।
अरबीभाषामें गिलोई।

कन्दगुडूचीनामानि।

अन्याकन्दोद्भवाकन्दामृतापिण्डगुडूचिका।
बहुच्छिन्नाबहुरुहापिण्डालुःकन्दरोहिणी॥

अर्थ-कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी।

गुडूचीगुणाः।

ज्ञेयागुडूचीगुरुरुष्णवीर्य्यातिक्ताकषायाज्वरनाशिनीच।
दाहार्त्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणीच॥(रा.नि.)

अर्थ-गिलोय-भारी, उष्णवीर्य्य, कडवी, कषेली तथा ज्वर, दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु और भ्रमको हरनेवालीहै।

अन्यच्च।

गुडूचीग्राहिणीबल्यात्रिदोषघ्नीरसायनी।
दीपनीज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत्॥

अर्थ-गिलोय-मलरोधक, बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है।

अन्यच्च।

गुडूचीतुवरातिक्तावीर्येचोष्णाचऊषणा।
ग्राहीरसायनीबल्यामधुराचाग्निदीपनी॥
लघ्वीहृद्यायुःप्रदाचज्वरदाहतृषाहरी।
रक्तदोषंवमिंवातंभ्रमंपाण्डुंप्रमेहकम्॥
त्रिदोषंकामलांचामंकासंकुष्ठंतथाकृमीन्।
रक्तार्शंवातरक्तंचकण्डूंमेदंविसर्पकम्॥
पित्तंकफंनाशयतिघृतेनसहवातहा।
गुडेनबद्धविट्कत्वंसितयापित्तनाशिका॥

मधुनाकफहाप्रोक्तावातवातारितैलके ।
शुंठ्यामवातशमनीमुनिभिःपरिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिलोय-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य्य, उष्ण, मलरोधक, रसायन, वलकारक, मधुर, अग्निप्रदीपक, हलकी, हृदयको हितकारी, आयुप्रद तथा ज्वर, दाह, तृषा, रक्तदोष, वमन, वात, भ्रम, पाण्डुरोग, प्रमेह, त्रिदोष, कामला, आम, खांसी, कोढ, कृमि, रक्तार्श (खूनीववासीर) वातरक्त, कण्डू, मेद, विसर्प, पित्त, और कफको दूर करैहै । गिलोय घृतके साथ वातको, गुडके साथ मलवद्धताको, खांडके साथ पित्तको, मधुके साथ कफको अण्डीके तेलके साथ वायुको और सोंठके साथ आमवातको दूर करैहै ।

अपिच ।

गुडूचीमधुरातिक्ताकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मधुर, कडवी, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वातविनाशक है ।

अस्याः पत्रशाकगुणा ।

गुडूचीपर्णशाकातुतुवरोष्णालघुस्मृता ।
कटुस्तिक्तापाककालेमधुराचरसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरीबल्याग्राहिणीचत्रिदोषहा ।
वातरक्तंतृषांदाहंमेहंकुष्ठंचकामलाम् ॥
पांडुरोगंनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् । (नि० र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-कषेला, गरम, हलका, चरपरा, कडवा, पचनेके समय मीठा, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाला, वलकारक, मलरोधक, त्रिदोषनाशक तथा वातरक्त, तृषा, दाह, प्रमेह, कुष्ठ, कामला और पाण्डुरोगका नाश करनेवाला है ऐसा आचार्योंनें कहाहै, इसके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

गुडूचीसत्त्वगुणाः ।

गुडूचिसत्त्वंसुस्वादुपथ्यंलघुचदीपनम् ।
चक्षुष्यंधातुकृन्मेध्यंवयःस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तंत्रिदोषञ्चपाण्डुंतीव्रज्वरंतथा ।
वमिंजीर्णज्वरंपित्तंकामलांचप्रमेहकम् ॥

अरुचिंश्वासकासौचहिक्कांचार्शक्षतथा ।
सदाहंमूत्रकृच्छ्रञ्चप्रदरंसोमरोगकम् ॥
नाशयेदितिसंप्रोक्तंपित्तंमेहंसशर्करम् । (रा०र०)

अर्थ-गिलोयका सत्त्व-स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खांसी, हिचकी, बवासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै ।

कन्दगुडूचीगुणाः ।

कन्दोद्भवागुडूचीचकटूष्णासन्निपातहा ।
विषघ्नीज्वरभूतघ्नीवलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ-कन्दगिलोय-कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है ।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि ।

गिलोयके छोटे छोटे टुकडे करके कूट डाले और पानीमें दोदिनतक भिजोये रक्खे फिर चलनीसे छानले । दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढा जल रहजाय, उसको धूपमें सुखाले । वह सत्त्व बनजायगा ।

विवरण-गिलोयकी वेल होतीहै और वृक्षोंपर फैलजाती है । गाठोंसे दो दो भाग निकलतेहैं । धीरेधीरे उनकी झांदरी और उनकीही जड होजातीहै । पत्ते कुछ कुछ पानकी समान और अधिक नीले होतेहैं. फूल छोटा गुच्छोंमें आताहै, फल मटरकी समान होतेहैं और पकनेके समय लाल पड जातेहैं । व्यवहार-पत्ते, झांदरा । मात्रा २ तोले ।

नागवल्लीनामानि ।

ताम्बूलीनागवल्लीचनागिनीनागवल्लिका ।
दिवाभीष्टापर्णलताताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ-ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्लरी (नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजंगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णग्रहाशया, सुखभूषण, ताम्बूल)

संस्कृतभाषामें	ताम्बूलवल्ली, ताम्बूल ।
हिन्दीभाषामें	नागरवेल, पान ।
वंगभाषामें	पान ।
मराठीभाषामें	नागवेल ।
कोकणीभाषामें	पानवेल ।
गुजरातीभाषामें	नागरवेल्य, पान ।
कर्णाटकीभाषामें	नागरवल्ली, पर्ण ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामलपाकु ।
तामिलीमें	वेट्टिली ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटल्लीफ् । Betel leaf
लैटिन्भाषामें	पाईपरबिटल् । Piper Betel
फारसीभाषामें	वर्गतबोल ।
अरबीभाषामें	कान ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंकषायान्वितं
वातघ्नंकृमिनाशनंकफहरंदुःखस्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणंधृतिकरंकामाग्निसंदीपनं
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, मधुर, क्षारगुणयुक्त, कषायरसान्वित तथा वात, कृमि, कफ और दुःखको हरनेवालाहै । स्त्रीसम्भाषणके विषयमें अलंकारकी समानहै तथा धारणाशक्ति और कामाग्निवर्द्धकहै । पानमें यह जो तेरह गुण विद्यमानहैं, सो स्वर्गमें भी दुर्लभहैं ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम् ।
वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु ॥
बल्यंश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ।(भा०प्र०)

अर्थ-पान-विशद, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेला, सारक, वशीकरण, कडवा, चरपरा, क्षार, रक्तपित्तकारक, हलका, बलकारक तथा कफ, मुखकी दुर्गन्ध, मल, वात और श्रमको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

नागवल्लीकटुस्तीक्ष्णातिक्तापीनसवातजित् ।
कफकासहरारुच्यादाहकृद्दीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पान-चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खांसीको दूर करैहै, दाहजनक और अग्निप्रदीपकहै ।

श्रीवाटीपर्णगुणाः ।

श्रीवाटीमधुरातीक्ष्णावातपित्तकफापहा ।
रसाढ्यासुरसारुच्याविपाकेशिशिरास्मृता ॥

अर्थ-श्रीवाटीपान-मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरसयुक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतलहै ।

अम्लवाटीपर्णगुणाः ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री ।
विदाहपित्तास्रविकोपनीचविष्टम्भदावातनिबर्हिणीच ॥

अर्थ-अम्लवाटीपान--चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारकहै ।

सातसीपर्णगुणाः ।

सातसीमधुरातीक्ष्णाकटुरुष्णाचपाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरारुचिकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ-सातसीपान--मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उदररोग और आध्मानको दूर करनेवालाहै, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है ।

जीर्णपर्णगुणाः ।

तत्पर्णजूर्णातिरसातिरुच्यासुगन्धितीक्ष्णामधुरातिहृद्या ।
संदीपनापुंस्त्वकरातिबल्याविरेचनीवक्त्रसुगन्धिकारिणी ॥

अर्थ-पुरानापान-अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुंस्त्वदायक, बलकारक, दस्तावर और मुखको शुद्ध करनेवाला है ।

मालवोद्भवांगरापर्णगुणाः ।

नाम्नान्याम्लसरासुतीक्ष्णमधुरारुच्याहिमादाहनु-

त्पित्तोद्रेकहरासुदीपनकरीबल्यासुखामोदिनी ।
स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनीमदकरीराज्ञांसदावल्लभा
गुल्माध्मानविबन्धजिच्चकथितासामालवेतुस्थिता ॥

अर्थ-मालवेका अंगरापान-अम्ल, सारक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, अग्निको दीपन करनेवाला, बलको देनेवाला, मुखमें सुगन्ध करनेवाला स्त्रियोंके सौभाग्यको बढानेवाला, नशा करनेवाला, राजाओंको सदा वल्लभ तथा गुल्म, आध्मान और विबन्धको दूर करनेवाला।

अन्ध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः ।

अन्ध्रेपटुलिकानामकषायोष्णाकटुस्तथा ।
मलापकर्षाकण्ठस्यपित्तकृद्वातनाशिनी ॥

अर्थ-अन्ध्रदेशका पोटकुली पान-कषेला, गरम, चरपरा, कण्ठके मलको निकालनेवाला, पित्तकारक और वातनाशक है ।

ह्वेसणीयापर्णगुणाः ।

ह्वेसणीयाकटुस्तीक्ष्णाहृद्यादीर्घदलाचसा ।
कफवातहरारुच्याकटुर्दीपनपाचनी ॥

अर्थ-समुद्रदेशका पान-चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, दीर्घपत्तोंवाला, कफवातनाशक, रुचिकारक, चरपरा, दीपन और पाचक है ।

नवीनप्राचीनपर्णगुणाः ।

सद्यस्त्रोटितभक्षितंमुखरुजाजाड्यापहंदोषकृ-
द्दाहारोचकरक्तदायिमलकृद्विष्टम्भिवान्तिप्रदम् ।
यद्भूयोजलपानपोषितरसंतच्चेच्चिरात्त्रोटितं
ताम्बूलीदलमुत्तमंचरुचिकृद्वर्ण्यंत्रिदोषार्तिनुत् ॥

अर्थ-तत्कालके तोडेहुए पानका भक्षण करना मुखरोग और जडताको दूर करे है, त्रिदोषकारक, दाहजनक, अरुचिकारक रक्तरोगको उत्पन्न करनेवाला, मलकारक, विष्टम्भ और वमनदायक है, वही पान, बहुत दिनोंतक जलसे सींचाहुआ श्रेष्ठ है, रुचिको उत्पन्न करनेवाला है, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला है और त्रिदोषनाशक है ।

कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः ।

कृष्णंपर्णतिक्तमुष्णंकषायंधत्तेदाहंवक्त्रजाड्यंमलञ्च
शुभ्रंपर्णश्लेष्मवातामयघ्नंपथ्यं रुच्यंदीपनंपाचनं च ॥

अर्थ-काला पान-कडवा, गरम, कषेला, दाह, मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है । सफेद पान-कफ वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है ।

पर्णशिरादिगुणाः ।

शिरापर्णस्यशैथिल्यंकुर्य्यात्तस्यास्रहृद्रसः ।
शीर्णंत्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तुसितासितम् ॥

अर्थ-पानकी शिरा-(नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवालाहै । गले और सूखे पान-त्वचाके रोगोंको, दन्तरोगोंको और मुखरोगोंको उत्पन्न करेहैं ।

पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसञ्चयः ।
चूर्णपर्णंहरेदायुःशिराबुद्धिविनाशिनी ॥
आयुरग्रेयशोमूलेमध्येलक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।
तस्मादग्रञ्चमूलञ्चमध्यंपर्णस्यवर्ज्जयेत् ॥
चूर्णाधिकंहरतिगन्धमथादिपूगंपूगंतथाधिकद-
लंचसुगन्धिकारि । ताम्बूलमुत्तममिदंरसनाग्रभि-
न्नपर्णंनिशास्वधिकखण्डितपर्णमह्नि ॥ (वि०ति०भा०)

भावार्थ-पानकी जडके भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होतीहै, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होताहै, पानका चूर्ण आयुको हरताहै, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करतीहै, अधिक चूना सुगंधिको हरताहै, अधिक सुपारी रागको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवालाहै। चोच टूटा हुआ पान रात्रिमें और अधिक टूटा पान दिनमें भक्षण करना उत्तमहै ।

अस्य फलगुणाः।

नागवल्लीफलंहृद्यंसुगन्धिकफवातजित् ॥ (आ०सं०)

अर्थ-नागरवेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वातविनाशक है ।

पर्णरहितपूगगुणाः ।

अनिधायमुखेपर्णंयःपूगंखादतेनरः ।

मतिभ्रंशोदरिद्रीस्यादन्तेनस्मरतेहरिम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य विनापान सुपारी खातेहैं, उनकी बुद्धि बिगडजाती है और दरिद्री होजातेहैं तथा अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करते ।

अन्यच्च ।

विनापर्णंमुखेदत्त्वाशुवाकंभक्षयेद्यदि ।
तावद्भवतिचाण्डालोयावद्गंगांनगच्छति ॥

अर्थ-जो मनुष्य विना पानके सुपारी खातेहैं, वो मनुष्य जवतक गंगाजीमें स्नान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जातेहैं ।

पर्णभक्षणनिषेधः ।

ननेत्ररोगेनचरक्तपित्तेक्षतेनवातेनविषेनशोषे ।
मदात्ययेनापिचमोहमूर्च्छाश्वासेषुताम्बूलमुशन्तिवैद्याः ॥
(सुषेणदेव)

अर्थ-नेत्ररोग, रक्तपित्त, उरःक्षतरोग, वातरोग, विषरोग, शोष, मद्यपानजनितरोग, मोह, मूर्च्छारोग और श्वासरोगमें पानका भक्षण करना निषेध है ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलमहितम्प्रोक्तंशरीरेरूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-ताम्बूल-रूखे शरीर, दुर्बल, ज्वररोग, मुखशोष, रक्तपित्तरोग, मदरोग, मूर्च्छा और नेत्ररोगवालेको अहितकारी कहाहै ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलंविधवास्त्रीणांयतीनांब्रह्मचारिणाम् ।
तपस्विनाञ्चविप्रेन्द्रगोमांससदृशंध्रुवम् ॥ (ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे)

अर्थ-पान-विधवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वीको गोमांसकी समान है ।

विवरण-पानकी वेल अत्यंत शोभायमान और मनोहर होतीहै । इसकी कईक जातींहैं जैसे वंगला, मौहुवा, महाराजपुर, विलौआ, कपूरी, कुलवा इत्यादि । उपरोक्त मौहुवा आदि देशोंमें पान अधिकतासे होतेहैं । इसकी वेली कोठहीओंपर तथा अगस्तियाके वृक्षोंपर चढादेतेहैं ।

बिल्वनामानि।



बिल्वोमहाकपित्थाख्यःश्रीफलोगोहरीतकी।
पूतिवातोऽथमङ्गल्योमालूरत्रिशिखावपि॥

अर्थ—बिल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मंगल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलूष, मालुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमंगल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह्व, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवद्रुम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, सितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, सोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामें	बिल्व।
हिन्दीभाषामें	बेल।
बंगलामें	बेल, बिल्व।
मराठीभाषामें	बेल, बेलफळ।
गुजरातीभाषामें	बिलोंबिलु।
कर्णाटकीभाषामें	बेललु।
तैलिङ्गीभाषामें	मारेडीपंडुबिल्व।
तामिलीभाषामें	बिल्वपाझाम।
इंग्रेजीभाषामें	बेंगालकिन्स्। Bengal kins
लैटिन्भाषामें	इगलमारमेलाझ। Aragle Marmelos

अस्य गुणाः।

श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोग्निपित्तकृत्।

वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बेल-कषेला, कडवा, मलरोधक, रूखा, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, वातकफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है ।

अन्यच्च ।

बिल्वस्तुमधुरोहृद्यःकषायोष्णोरुचिप्रदः ।
दीपनोग्राहकोरूक्षःपित्तलस्तिक्तकःकटुः ॥
गुरुःपाचनकर्त्ताचवातातीसारजूर्तिहा ।
बालंबिल्वफलंस्निग्धंगुरुरुच्यंचदीपनम् ॥
ग्राहकंपाचकंतिक्तंलघुचोष्णञ्चतूवरम् ।
शूलामवातग्रहणीकफातीसारनाशनम् ॥
तरुणंतुफलंबैल्वंग्राहितूवरमम्लकम् ॥
स्निग्धंचकटुतीक्ष्णञ्चउष्णंचलघुदीपनम् ।
पाचकंकफवाय्वोश्चनाशकंहृदयप्रियम् ॥
पक्वंबैल्वंदाहकरंमधुरंगुरुतूवरम् ।
विष्टम्भकारितिक्तोष्णंग्राहकंकटुदोषलम् ॥
दुर्जरंवातलंचाग्निमांद्यकृद्दषिभिर्मतम् ।
बिल्वमूलंतुमधुरंत्रिदोषच्छर्दिशूलनुत् ॥
लघुकृच्छ्रहरंवातकफपित्तस्यनाशकम् ।
पर्णानिग्राहकाणिस्युर्वातनाशकराणिच ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेल- मधुर, हृदयको हितकारी, कषेला, गरम, रुचिकारक, दीपन, ग्राही, रूखा, पित्तकारक, कडवा, चरपरा, भारी, पाचक, तथा वातातिसार और ज्वरनाशक है । बेलका कच्चाफल स्निग्ध, भारी, रुचिकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, पाचक, कडवा, हलका, गरम, कषेला तथा शूल, आमवात,संग्रहणी, और कफातिसारका नाशक है। बेलका तरुणफल-ग्राही, कषेला, खट्टा, स्निग्ध, चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, हलका, दीपन पाचक, हृदयको हितकारी, कफ और वातविनाशक है । बेलका पका फल-दाहजनक, मधुर, भारी, कषेला, विष्टम्भकारक, कडवा, गरम, ग्राही,

कटु, त्रिदोषकारक, दुर्जर, वातकारक और मंदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है। बेलकी जड–मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हलकी तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है । इसके. पत्ते ग्राही और वातनाशक हैं ।

अन्ये च पत्रगुणाः ।

तत्पत्रंकफवातामशूलघ्नंग्राहिरोचनम् ॥

अर्थ–बेलके पत्ते–कफ, वात, आम, और शूलनाशक हैं, ग्राही और रोचक हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निहन्याद्बिल्वजंपुष्पमतिसारंतृषांवमिम् ॥

अर्थ–बेलके फूल–अतिसार, तृषा और वमननिवारक हैं ।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः ।

बिल्वमज्जाभवंतैलमुष्णंवातहरंपरम् ॥

अर्थ–बेलका तेल–गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तैल-वर्गमें देखो ।

बिल्वपेषिकागुणाः ।

कफवातामशूलघ्नीग्राहिणीबिल्वपेषिका ॥

अर्थ–बिल्वपेशिका–(बेलका सूखा गूदा) कफ, वात, आम और शूलनाशक है तथा मलरोधक है । ॥ ६४ ॥

कांजिकस्थितबिल्वगुणाः ।

काञ्जिकेसंस्थितंबिल्वमग्निसंदीपनंपरम् ।
हृद्यंरुचिकरंप्रोक्तमामवातविनाशनम् ॥

अर्थ–काञ्जीमें रक्खा हुआ बेल–अग्निको दीपन करेहै, हृदयको हितकारी है, रुचिकारी है और आमवातनाशक है ।

पक्वबिल्वस्य दोषोक्तिः।

फलेषुपरिपक्वेषुयेगुणाःसमुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्रविज्ञेयाबिल्वमामंगुणोत्तरम् ॥ (रा०व०)

अर्थ–सर्वप्रकारके पकेहुएही फल गुणवाले होते हैं, किन्तु बेल तो कच्चाही, गुणवाला होता है और पक्का बेल, अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

विवरण-बेलका वृक्ष बडा होता है,शाखाओंमें कांटे होते हैं। पत्ते त्रिदल एक डंडीमें तीन (त्रिशूलकार) होते हैं । फूल सफेद और सुगंधित होते हैं। फल गोल स्वादिष्ठ और कडे छिलकेसे ढका होताहै, फलमें बहुतसे बीज होतेहैं। बीजोंमें गोंद होता है। ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं। और इसकी लकडी बहुत पवित्र होती है, चंदनकी समान मानीजातीहै और मूलकी छाल दशमूलके काढेमें एक प्रधान औषधीहै, इसके पत्तोंको पीसकर आंखमें लगानेसे नेत्ररोग आराम होता है। जलमें पकाकर अरिष्ट पीनेसे ज्वरादिका नाश होता है। पत्तोंका अर्क बालकोंके लिये दस्तावर और कफका नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोंके अनुपानमें इसका व्यवहार होता है। हिन्दोस्थानके प्रत्येक खण्डमें बेलका वृक्ष पायाजाताहै। और इसमें एक बडा भारी गुण है कि, जो कोई इन पत्तोंको शिवके ऊपर चढाता है, उससे शिव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इसके अधिक गुण आगे फलवर्गमें देखो।

गम्भारीनामानि।

गम्भारीसर्वतोभद्राकाश्मरीमधुपर्णिका।
श्रीपर्णीभद्रपर्णीचभद्राचगोपभद्रिका॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका (काश्मर्य्य, काश्मरी, काश्वरी, कम्भारिका, कुमुदा, सदाभद्रा, कृष्णफला, कट्फला, कृष्णवृन्तिका, हीरा, सर्वतोभद्रिका, स्निग्धपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी, विदारिणी, महाभद्रा, मधुभद्रा, स्वरुभद्रा, कृष्णा, अश्वेता, रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती, सुफला, मोदिनी, महाकुमुदा, सुदृढत्वचा, काश्मीरी, पीतरोहिणी, मधुरसा, महाकुमुदिका, पीतफला और वातहा)

संस्कृतभाषामें	कम्भारी, गंभारी।
हिन्दीभाषामें	कुम्भेर, खम्भारी।
बंगलामें	गाम्भारी, गाभार।
मराठीभाषामें	शिवणगम्भारी।
गुजरातीभाषामें	शवन्य।
लैटिन् भाषामें	मीलाइनाआर्बोरिया। Gmclina arboria
	द्रिवियान्युंडिलफोरा। Trebia unbiflora

कर्णाटकीभाषामें सीवनी ।
तैलिंगीभाषामें साल्लागुंबुटीचेट्टु ।

अस्याः गुणाः ।

काश्मरीतुवरातिक्तावीर्योष्णामधुरागुरुः ।
दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।

अर्थ–कुम्भेर–कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्तलानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, बवासीर, विष, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

अस्याः फलगुणाः ।

तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धहृत् ॥
स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लंविशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कुम्भेरका फल–पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन तथा वात, पित्त, तृष्णा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कषेला, खट्टा, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करैहै ।

अन्यच्च ।

गाम्भारिकाफलंग्राहिसतिक्तमधुरंगुरु ।
केश्यंरसायनंमेध्यंशीतलंदाहपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ–कुम्भेरका फल–मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है ।

गम्भारीगुणाः ।

श्रीपर्णीमारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीञ्जयेत् ।

अर्थ–कुम्भेर–वात, कफ, शोफ, प्रमेह और कृमिनाशक है ।

अस्या पुष्पगुणाः ।

तत्पुष्पंमधुरंशीतंतिक्तंसंग्राहिवातलम् ॥

कषायंमधुरंपाकेपित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-कुम्भेरका फूल-मधुर, शीतल, कडवा, ग्राही, वातकारक, कषेला, पचनेमें भी मधुर तथा रक्तपित्त और रक्तरोगको दूर करे है ।

अस्या मूलगुणाः ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितंमानुषेषुतत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कुम्भेरकी जड-अत्यन्त गरम और मनुष्योंका अहित करनेवाली है

अन्यच्च ।

काश्मरीकटुकातिक्तास्वाद्व्युष्णातुवरागुरुः ।
मधुरादीपनीमेध्यापाचनीभेदिकामता ॥
हृद्यातृषामशूलघ्नीकफशोफत्रिदोषहा ।
विषदाहज्वरारक्तदोषार्शोभ्रमनाशिनी ॥
शोषनाशकरीप्रोक्ताफलंवृष्यंगुरुस्मृतम् ।
धातुवृद्धिकरंकेश्यंस्वादुशीतंरसायनम् ॥
स्निग्धंबुद्धिप्रदंचाम्लंतुवरंमूत्रलंगुरु ।
मूत्रकृच्छ्रंरक्तपित्तंरक्तदोषामवातकम् ॥
तृषांदाहंक्षयंवातंरक्तपित्तंक्षतक्षयम् ।
प्रदरंनाशयत्येवफलमज्जातुशीतला ॥
मधुराग्राहिणीतिक्तावातलातुवरामता ।
बल्यावृष्यारक्तदोषकफपित्तहरामता ॥
प्रदरंवाशयत्येवमृषिभिःपरिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-कुम्भेर-चरपरी, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, कषेली, भारी, मधुर, दीपन, मेधाजनक, पाचक, भेदक, हृदयको हितकारी, तथा तृषा, आमशूल, कफ, सूजन, त्रिदोष, विष, दाह, ज्वर, रक्तविकार, बवासीर, भ्रम और शोषको दूर करनेवालीहै। इसका फल वीर्यजनक, भारी, धातुवर्धक, केशोंको हितकारी, स्वादिष्ठ, शीतल, रसायन, स्निग्ध, बुद्धिप्रद, अम्ल, कषेला, मूत्रजनक, गुरु तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त, रक्तदोष, आमवात, तृषा, दाह,

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदररोगका नाश करनेवालाहै । कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कषेली, बलकारक, वीर्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवालीहै ।

विवरण-कुम्भेरका वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते समुद्रशोष और पीपलके पत्तोंसे कुछ, कवडे २ होतेहैं, फूल पीले रंगके और फलभी पीले होतेहैं। छाल सुफेद और इसमें दूध निकलताहै ।

पाटलानामानि ।

पाटलाकर्बुरामोघाफलेरुहाम्बुवासिनी । कृष्णवृन्ताकालवृन्ताकुम्भीतोयाधिवासिनी ॥

अर्थ-पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोया, तोयाधिवासिनी (पाटली, काचस्थाली, कुबेराक्षी, तोयपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती, कामदूती, अलिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, वसन्तदूती, कोकिला)

श्वेतपाटला-काष्ठपाटलानामानि ।

द्वितीयापाटलाश्वेतानिर्दिष्टाकाष्ठपाटला ॥

अर्थ-श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी, श्वेतकुबेराक्षी, श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुबेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषामें	पाटला, श्वेतपाटला ।
हिन्दीभाषामें	पाडरि, पाढल, सफेदपाडर, कठपाडर ।
बंगलाभाषामें	पारुल, घण्टापारुल ।
मराठीभाषामें	रक्तपाडल ।
गुजरातीभाषामें	रातांफूलना पाडल, श्वेतपाडर, कांकच ।
कर्णाटकीभाषामें	हादरी, विलियहादरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कलगोरु, कलिगोट्टुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	पड्रि ।
उत्०	पाट्टुड़ि ।
लैटिन्भाषामें	विगनोनिया सुवियोलेन्स् Vignonia suaviolens
	स्टिरियोस्परंगकेलोनोइडिस् Seriospemrum Chelonoides

पाटलागुणाः ।

पाटलातुरसेतिक्ताकटूष्णाकफवातजित् ।
शोफाध्मानवमिश्वासशमनीसन्निपातनुत्॥ (रा०नि०)

अर्थ-पाढल-तिक्तरसान्वित, कटुरसयुक्त, उष्ण, कफवातनाशक तथा सूजन, अफारा, वमन, श्वास और सन्निपातनिवारक है।

अन्यच्च ।

पाटलारुचिशोथास्रश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ।
नात्युष्णंतुवरंस्वादुतत्पुष्पंकफवातनुत् ॥
पित्तातिसारदाहघ्नंफलंहिक्कास्रपित्तनुत् । (ध०नि०)

अर्थ-पाढल-अरुचि, सूजन, रुधिरविकार, श्वास, तृषा और वमननिवारक है। किंचित् उष्ण, कषाय, स्वादिष्ठ, इसका फूल कफ, वात, पित्तातिसार और दाहनाशक, है इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको दूरकरैहै।

अन्यच्च ।

पाटलाकफपित्तास्रच्छर्दितृण्मारुतापहा ।
पुष्पंकषायमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-पाडर- कफ, रक्तपित्त, वमन, तृषा और वातको हरनेवालीहै। इसका फूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको हरैहै।

अपिच ।

रक्तपाटलिकातिक्ताकट्वीचोष्णाकफापहा ।
सन्निपातश्वासवमिशोफाध्मानानिनाशयेत् ॥
पुष्पाणिपाटलायास्तुस्वादूनितुवराणिच ।
हृद्यानिशीतवीर्य्याणिरक्तदोषहराणिच ॥
दाहंकफंपित्तरोगंपित्तातीसारहानिच ।
फलानिपाटलायास्तुशीतलानिगुरूणिच ॥
तुवराणिचतिक्तानिमधुराणिबुधाजगुः ।
मूत्रकृच्छ्रंरक्तपित्तंहिक्कावातहराणिच ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पाड़ल-कडवी, चरपरी, गरम, कफनाशक तथा सन्निपात, श्वास

(त्रिदोष) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है. पाडलके फूल–स्वादिष्ठ, कषेले, हृदयको हितकारी, शीतवीर्य्य तथा रक्तदोष, दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं। पाडलके फल–शीतल, भारी, कषेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं।

श्वेतपाटलागुणाः।

सितपाटलिकातिक्तागुर्व्युष्णावातदोषजित्।
वमिहिक्काकफघ्नीचश्रमशोषापहारिका॥ (ध० नि०)

अर्थ–सफेदपाडर–कडवी, भारी, वातनाशक तथा वमन, हिचकी, कफ, श्रम और शोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

श्वेतातुपाटलाचोष्णातिक्तागुर्वीसुगन्धिका।
रक्तदोषारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी॥
हिक्कांकफंचवातञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम्।(नि० र०)

अर्थ–सफेदपाडर–गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, तृषा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है।

भूमिपाटलागुणाः।

भूपाटलाकटूष्णाचबल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी।

अर्थ–भुईपाडर–चरपरी, गरम, बलजनक, और वीर्यवर्द्धक है।

क्षुद्रपाटलागुणाः।

क्षुद्रातुपाटलाश्वेतास्निग्धाचव्रणशोधिनी।
कफमेदःकुष्ठविषमण्डलानिविनाशयेत्॥

अर्थ–क्षुद्रपाडर–सफेद, स्निग्ध, व्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विष और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है।

वल्लीपाटलागुणाः।

वल्लीपाटलिकाचोष्णावातारोचकपित्तहा।
रक्तदोषंचशोफंचनाशयेदितिकीर्तितम्॥

अर्थ–वल्लीपाडर–गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करेहै।

(प्र०)-पाडरके पत्तोंका रस निकालकर उसमें छः मासे सोंठ और दो तोले खांड मिलाकर देनेसे अम्लपित्त दूर होताहै ।

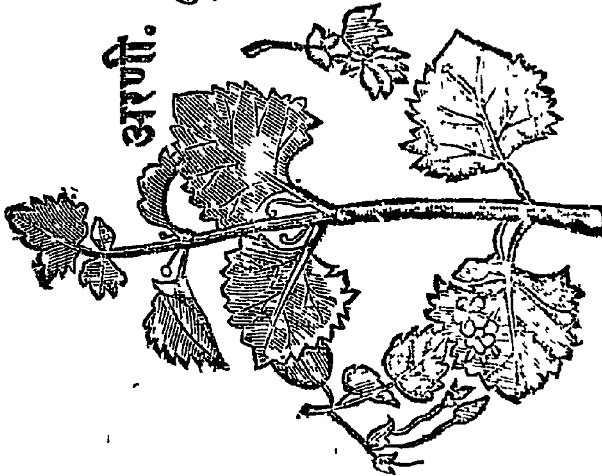
विवरण। पाडरका फूल लाल होताहै और दूसरी पाडरका फूल सफेद होताहै। पत्ते वेलकी समान होतेहैं ।

अग्निमन्थनामानि ।

अग्निमन्थोहविर्मन्थःकर्णिकागिरिकर्णिका ।
जयाजयन्तीतर्कारीनादेयीवैजयन्तिका ॥

अर्थ-अग्निमन्थ, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका (श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, आरणि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारणि, अग्निमथन, तर्कारी, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा, तनुत्वक्, पित्तमाता, वह्निमूल, अग्निवीजक)

क्षुद्राग्निमन्थनामानि ।



क्षुद्राग्निमन्थोविजयानादेयीचाग्निमंथिनी ।
जयाचगन्धपत्राचगन्धपुष्पाकृशानुगा ॥

अर्थ-क्षुद्राग्निमन्थ, विजया, नादेयी, अग्निमन्थिनी, जया, गन्धपत्रा, गन्धपुष्पा, कृशानुगा (तपन, गणिकारिका, अरणि, लघुमन्थ, तेजोवृक्ष, तनुत्वचा)

संस्कृतभाषामें	अग्निमन्थ, अरणी, गणिकारिका, क्षुद्राग्निमन्थ ।
हिन्दीभाषामें	अरणी, अगेथु, गणिवारी, छोटअरणी ।
वंगभाषामें	गणिर, आगगन्त, छोटीगणिरी ।

मराठीभाषामें	थोरऐरण, लघुऐरण, टहांकळी, नरवेल्य ।
गुजरातीभाषामें	अरणी, ऐरण ।
कर्णाटकीभाषामें	नरुवल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलिचेट्ट ।
उत्कलिभाषामें	अगिवथ ।
लैटिन्भाषामें	क्लोरेड्रनफ्लोमोईडिस् । Clorodrudron Phlomodes

अग्निमन्थगुणाः ।

तर्कारीकटुकातिक्तातथोष्णानिलपाण्डुजित् ।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यार्शोविड्बन्धामविनाशिनी॥(ध० नि०)

अर्थ–अरणी–कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, अर्श, मलबद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थोगुरुस्तिक्तोवातशोफामजित्सरः॥(शो० नी०)

अर्थ–अरणी–भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहै, तथा सारकहै ।

अपिच ।

अग्निमन्थोबृहत्प्रोक्तःकटुश्चोष्णोमधुःस्मृतः ।
तिक्तस्तुतुवरश्चाग्निदीपकोवातनाशनः ॥
प्रतिश्यायंकफंशोथमर्शश्चैवामवातकम् ॥
मलरोधंचाग्निमांद्यंपाण्डुरोगंविषंतथा ॥
आमंचमेदोरोगंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ–अरणी–कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, बवासीर, आमवात, मलरोध, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है ।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः ।

लघ्वग्निमन्थस्यगुणाःप्रोक्तावृद्धाग्निमन्थवत् ।
विशेषाल्लेपनेचोपनाहेशोफेचकीर्तिताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटी अरणीके गुण अरणीके समानहैं, किन्तु विशेष करके इसका लेप उपनाहके विषय हितकारक है और यह सूजनको दूर करनेवाली है ।

तेजोमन्थगुणाः ।

तेजोमंथगुणाःप्रोक्ताश्चाग्निमंथसमाबुधैः ।
विशेषाद्वातशोफेचप्रोक्ताःपूर्वैश्चसूरिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजोमन्थ-(अरणीका भेद) इसके गुण अरणीकी समानहैं, परन्तु विशेष करके यह वातशोफका नाश करेहै ।

विवरण-इसका वृक्ष होताहै, पत्ते गोल और सूक्ष्म करकरयुक्त होतेहैं. फूल सफेद होताहै, फल छोटे करोंदेकी समान होतेहैं ।

श्योनाकनामानि ।

श्योनाकःशुकनासश्चकट्वङ्गोथकटम्भरः ।
मयूरजंघोरलुकःप्रियजीवीकुटन्नटः ॥

अर्थ-श्योनाक-शुकनास, कट्वङ्ग, कटम्भर, मयूरजंघ, अरलुक, प्रियजीवी, कुटन्नट (मण्डूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटाङ्ग, टुण्टक, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, शोनक, अरल, स्योनाक, विषनुत्, अध्वान्तशात्रव, पूतिवृक्ष, भण्टुक, भण्डूक, भूतपुष्प, शोण, अरट्ठु, दीर्घवृन्तक, वट्ठु, ध्वान्तशात्रव, स्वर्णवल्कल, पृथुशिम्ब, शल्लक, शोषण, प्रियजीव, कुर्कट, भल्लूक, कन्दर्प, पादवृक्ष, भूताटक, पारिपादप)

श्योनाकभेदनामानि ।

टुण्टुकोदीर्घवृन्तश्चटिण्टुकोकीरनाशनः ।
पूतिवृक्षोपूतिनागोभूतिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥

अर्थ-टुण्टुक, दीर्घवृन्त, टिण्टुक, कीरनाशन, पूतिवृक्ष, पूतिनाग, भूतिपुष्प और मुनिद्रुम (श्योनाक, पृथुशिम्ब, भल्लूक, टेण्टुक, पीतवृक्ष, भूतसार, निःसार, फलवृन्ताक, पूतिपत्र, वसन्तक, मण्डूकपर्ण, पीताङ्ग, जम्बूक, पीतपादप, वातारि, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ट, जंघनेत्र) ।

संस्कृतभाषामें	श्योनाक, अरलु, टुण्टुक ।
हिन्दीभाषामें	सोनापाठा, अरलु, टेंटु ।
बंगलामें	सोना, सोनालु ।
मराठीभाषामें	टेटु ।
गुजरातीभाषामें	अरडूशो, मरमटच ।

कर्णाटकीभाषामें	शोणा, शोडिलमर ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दामानु ।
औत्कलीमें	फणफणा ।
पञ्जाबीमें	मुलिन ।
नेपालीमें	करुमकन्द ।
तामिलीमें	पन ।
लैटिन्भाषामें	ओरोक्‌ सिलं ईंडिकम्‌ (Orocylnm indicum

श्योनाकगुणाः ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तःकटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहकःशीतलोवृष्योबलदोवातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोषारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसारनाशनः ॥
तृष्णांकुष्ठंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ–शोनापाठा–कषेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वलदायक तथा वात पित्त, सन्निपातज्वर, कफ, त्रिदोष, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खांसी, अतिसार, तृषा और कुष्ठको नष्ट करैहै ।

अन्यच्च ।

टिण्टुकोवातजिद्रूक्षःशोफहाग्निबलप्रदः ।
तुवरःशीतलस्तिक्तोवस्तिरोगहरःपरः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारिःश्वासकासारुचीर्जयेत् ।

अर्थ–टेंटु–वातविनाशक, रूक्ष, शोफनिवारक, जठराग्निवर्द्धक, वलदायक, कषाय, शीतल, तिक्त, वस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास, कास और अरुचिनिवारकहै ।

अस्य कोमलफलगुणाः ।

कोमलंतुफलंचास्यतुवरंमधुरंलघु ।
हृद्यंरुच्यंपाचकञ्चकण्ठचश्चाग्निप्रदीपकम् ॥

उष्णञ्चकटुकंक्षारंगुल्मवातकफार्शनुत् ।
अरुचिंचकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-इसका कच्चा फल कषेला, मधुर, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निप्रदीपक, गरम, कटु, क्षार तथा गुल्म, वात, कफ, ववासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है ।

अस्य तरुणफलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलंचामंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसका तरुण फल-भारी और वातको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पुटपाकविधानेनरसोनिष्कास्यभक्षितः ।
चिरंतनमतीसारंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शोनाकका रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको पीनेसे वहुत दिनोंका पुराना अतिसार दूर होता है ।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलंतिक्तंशीतलञ्चत्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नंसन्निपातज्वरापहम् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-दोनों प्रकारके श्योनाक-कडवे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण-श्योनाकका वृक्ष वहुत ऊंचा होताहै, फली लम्वी लम्वी तलवारकी समान दो दो फुटकी होतीहैं, फलीके भीतर रुई और दाने निकलतेहैं एक दूसरे प्रकारका श्योनाक होताहै । उसका फूल लाली लिये समुद्रशोषकी समान होताहै ।

शालिपर्णीनामानि ।

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा ।
विदारिगन्धादीर्घांघ्रिर्दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगन्धा, दीर्घांघ्रि, दीर्घपत्रा, अंशुमती (सुदला, सुपत्री, कुमुदा, ध्रुवा, सुपर्णिका, दीर्घमूला, दीर्घपत्रिका, वातघ्नी, पीतिनी, तन्वी, सुधा, सर्वानुकारिणी, शोफघ्नी, सुभगा, देवी, शोथघ्नी. निश्चला, व्रीहिपर्णिका, सुमूला, सुरूपा,

शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	शालिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	सरिवन ।
वंगभाषामें	शालपान, शालपानी ।
मराठीभाषामें	सालवण ।
गुजरातीभाषामें	शालिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुरुलुवोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
औत्कलीभाषामें	शारपाणि ।
लैटिन्भाषामें	डेस्मोडियंगेंजेटिकम्। Desmodium Gangetcum डेस्मोडियम् ट्रायलफोरम् ।

अस्याः गुणाः ।

शालिपर्णीगरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ।
तिक्ताविषहरीस्वाद्वीक्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ–सरिवन–विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोषनाशकहै तथा पुष्टिजनक, रसायन, कडवी, विषनाशक, स्वादिष्ठ, क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

शालिपर्णीरसेतिक्तागुर्व्युष्णाधातुवर्धिका ।
रसायनीस्वादुवृष्याविषमज्वरवातहा ॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।
त्रिदोषशोपच्छर्दिघ्नीक्षतकासातिसारहा ॥ (नि०र०)

अर्थ–सरिवन–तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह, बवासीर, सूजन, सन्तापज्वर, श्वास, विष, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खांसी और अतिसारको दूर करेहै ।

विवरण-शालिपर्णीका क्षुप होताहै, एक एक दंडीमें तीन २ पत्ते होतेहैं और उसमें बहुत छोटीफलियें होतीहैं ।

पृश्निपर्णीनामानि ।



पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीतन्वीक्रोष्टुकपुच्छिका ।
त्रिपर्णीपूर्णपर्णीचकलसीसिंहलांगुली ॥

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलाङ्गुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, कोष्टुकमेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घष्टिला, चित्रपर्णिका, कलसि, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, कंकशत्रु, चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लांगुलिका, ब्रह्मपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामें	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	पिठवन, पिठौनी, डावडा, दौला, पृश्निपर्णी ।
वंगभाषामें	चाकुले, चाकुलिया ।
मराठीभाषामें	पीठवण ।
गुजरातीभाषामें	पृष्टिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामें	तोरेमोड, नरियलवोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	कोलाकुपन्न ।
औत्कलीमें	क्रष्टपर्णी ।
लैटिन्‌भाषामें	उरेरिया लेगोपोईडिस् । उरेरियापिक्टा । Uraria lagopoides Uraria picts

पृश्निपर्णीगुणाः ।

पृश्निपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा ।
हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–पिठवन– त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, सारक तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमननिवारकहै ।

अन्यच्च ।

पृश्निपर्णीकटूष्णाचतिक्तातीसारकासजुत् ।
वातरक्तज्वरोन्मादव्रणदाहविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ–पिठवन–कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खांसी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, व्रण और दाहनाशकहै ।

शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालपर्णीपृश्निपर्णीग्राहिणीकफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ–शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक हैं ।

विवरण । पिठवन पश्चिममें और वंगदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिण देशमें दिखाई नहीं देती । पत्ते गोल वेलदार होते हैं, फूल गोल सपेद कुछ नीले जटायुक्त होतेहैं, । मात्रा तीन आनेभारि ।

व्यवहार–जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमें इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

बृहतीमहतीसिंहीप्रसहाहिंगुलीकुली ॥
अक्रान्ताक्षुद्रवार्ताकीरक्तापाकीलतातथा ।

अर्थ–बृहती-महती, सिंही, प्रसहा, हिंगुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवार्त्ताकी, रक्तापाकी, लता (बृहतिका, क्रान्ता, वार्त्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, क्षुद्रभण्टा, भण्टाकी, महोटिका, वहुपत्री, कण्ठतनु, कण्ठालु, कटुफला, डोवडी, वनवृन्ताकी, बृहतिका, पारावेदी)

संस्कृतभाषामें	बृहती, वार्त्ताकी ।
हिन्दीभाषामें	कटाई, वरहंटा ।
वंगभाषामें	व्याकुड, तितवेगुन ।
मराठीभाषामें	थोरडोरली ।

गुजरातीभाषामें	उभीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गुल्लु ।
तैलिंगीभाषामें	पेद्दामुलंगा, कुकमाची ।
तामिलीभाषामें	चेरुचुण्ट ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनमजेक्कीनीआई । Solanum iequinii
	सोलेनमइंडिकम् । Solanum Indicum
फारसीभाषामें	उस्तरगार, वादंजान्जंगली ।
अरबीभाषामें	वाढुंजान्जंगली ।

बृहतीगुणाः ।

बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् (भा०प्र०)

अर्थ-खटाई-मलरोधक, हृदयको हितकारी, पाचक, कफवातनाशक, कटु, तिक्त तथा मुखकी विरसता, मल और अरुचिनाशक है, गरम है और कोढ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी और मंदाग्निको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बृहतीकटुतिक्तोष्णावातजिज्ज्वरहारिणी ।
अरोचकामकासघ्नीश्वासहृद्रोगनाशिनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कटाई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वात, ज्वर, अरुचि, आम, खांसी, श्वास और हृदयरोगका नाश करनेवाली है ।

अपिच्च ।

बृहतीकटुकाचोष्णातिक्ताहृद्याचपाचिका ।
ग्राहिण्यग्नेर्दीप्तिकरीकफवातज्वरापहा ॥
कुष्ठंचारोचकंछर्दिंश्वासंकासंक्रमींस्तथा ।
मुखवैरस्यहृल्लासंकण्डूशूलामदोषहा ॥
हृद्रोगंचाग्निमांद्यंचनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ-कटाई-कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, ज्वर, कुष्ठ, अरोचक, वमन, श्वास, कास, कृमि,

मुखकी विरसता, हल्लास, कण्डू, शूल, आमदोष, हृदयरोग और अग्निमांद्यका नाश करै है।

अस्याः फलगुणाः।

फलानिबृहतीनांचकटुतिक्तलघूनिच।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानिकफवातहराणिच॥

अर्थ-बृहतीके फल-कटु, तिक्त, लघु, कण्डू, कुष्ठ, कृमि, कफ और वातनाशक हैं।

क्षुद्रबृहतिकागुणाः।

लघ्वीबृहतिकावातश्वासशूलकफापहा।
अग्निमांद्यंज्वरंछर्दिंहृद्रुगामंचनाशयेत्॥

अर्थ-क्षुद्रबृहती-वात, श्वास, शूल, कफ, मंदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग और आमनाशक है।

श्वेतबृहतीगुणाः।

श्वेताबृहतिकारुच्याकफवातविनाशिनी।
अंजनान्नेत्ररोगघ्नीगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत्॥

अर्थ-सफेदबृहती-रुचिकारक, कफवातविनाशक और अंजनके योगसे अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करतीहै। शेष गुण बृहतीकी समान जानने।

बृहतीभेदगुणाः।

अन्याबृहतिकातिक्ताकट्वीचोष्णाचपित्तला।
रूक्षारुच्याभेदिकाचपाचिन्यग्निप्रदीपनी॥
कफवातहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः। (नि०र०)

अर्थ-दूसरे प्रकारकी कटाई-कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी, रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशकहै।

विवरण। बृहतीका क्षुप जंगलमें होताहै इसमें कांटे बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते वैंगुनकेसे होते हैं, फल बडे बडे आमलेकी समान चितले और पीले होतेहैं।

कण्टकारीनामानि।

कण्टकारीकुलीक्षुद्राकासघ्नीकण्टकारिका।
स्पृहीधावनिकाव्याघ्रीदुःस्पर्शादुष्प्रधर्षिणी॥



अर्थ-कण्टकारी, कुली, क्षुद्रा, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनिका, व्याघ्री, दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी (कण्टश्रेणी, निदिग्धिका, बृहती, प्रचोदिनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही, कुलि, कण्टकिनी, निदिग्धा, धावनी, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, कण्टालिका, चित्रफला)

संस्कृतभाषामें	कण्टकारी ।
हिन्दीभाषामें	कटेरी, लघुकटाई, भटकटैया, रेंगनी ।
वंगभाषामें	कण्टकारी ।
मराठीभाषामें	रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी ।
गुजरातीभाषामें	बेठीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलगुल्लु ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेवटीसुलंगा, व्राकुडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कण्टमारिष ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनंझेंथोकार्प Solenum Xunthocurpum

कण्टकारीगुणाः ।

कण्टकारीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः ।
रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान् ॥
निहन्तिपीनसंरोगंपार्श्वपीडाहृदामयान् । (भा०प्र०)

अर्थ-कटेरी-सारक, कडवी, चरपरी, अग्निप्रदीपक, हलकी, रूखी, गरम,

पाचक तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पार्श्वपीडा और हृदयरोगका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीकटूष्णाचदीपनीश्वासकासजित् ।
प्रतिश्यायार्त्तिदोषघ्नीकफवातज्वरार्तिनुत्॥ (रा०नि०)

अर्थ–कटेरी–चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, कफ, वात और ज्वर नाशक है ।

अपिच्च ।

कटेरीकटुकाचोष्णादीपन्यग्नेश्चभेदिका ।
कटीरूक्षापाचनीचलघ्वीतिक्ताचसारिका ॥
श्वासंकासंकफंवातंपीनसंचज्वरंजयेत ।
हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नीपार्श्वशूलस्यनाशिनी ॥
आमंकृमींश्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ–कटेरी–चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक, हलकी, तिक्त, सारक तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, पीनस, ज्वर, हृदयरोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश करनेवाली है ।

फलंतस्याः कटुः पाके रसेचकटुकंभवेत् ।
शुक्रस्यरेचनंभेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु ॥

अर्थ–कटेरीके फल–पचनेमें चरपरे और रसमें भी चरपरे हैं, शुक्रको दूर करनेवाले, भेदक, कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीफलंतिक्तंकटुकंभेदिपित्तलम् ।
हृद्यंचाग्नेर्दीप्तिकरंलघुवातकफापहम् ॥
कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम् ॥

अर्थ–कटेरीके फल–कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि, प्रमेह और वीर्यविनाशक हैं ।

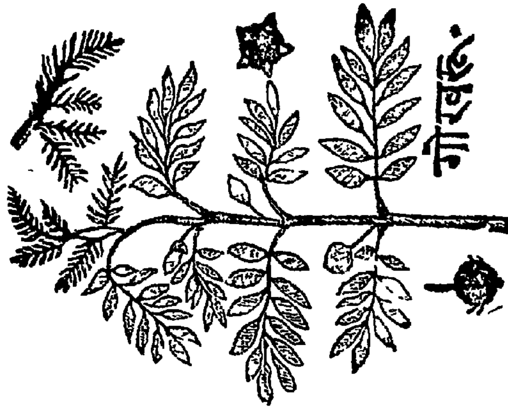
श्वेतकण्टकारीगुणाः ।

लक्ष्मणाकटुकाचोष्णाचक्षुष्याचाग्निदीपनी ।
गर्भस्थापनकर्त्रीचपारदस्यनियामिका ॥
रुचिकृत्कफवातानांनाशिनीपरमामता ।
शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापिचपूर्ववत् ॥

अर्थ–सफेद कटेरी–चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, गर्भस्थापक, पारेको बांधनेवाली, रुचिकारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवालीहै । इसके शेष गुण और इसके फलके शेष गुण कटेरीके समान जानने । व्यवहार–मूल, फल । मात्रा १ मासेकी ।

विवरण । कटेरीके क्षुप छत्तेसे पृथ्वीपर सर्वत्र होतेहैं । फूल बैंजनी और केशर पीले रंगकी होती है । पत्ते चितले और अत्यंत कांटेदार होते हैं । फल चितले कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले पडजातेहैं । दूसरी सुफेद फूलकी कटेरीभी इसीमाफिक होती है ।

गोक्षुरनामानि ।



पलङ्कषात्विक्षुगन्धाश्वदंष्ट्रास्वादुकण्टका ।
गोकण्टकोगोक्षुरकोवनशृङ्गाट इत्यपि ॥

अर्थ–पलङ्कषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टका, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट, त्रिकण्ट (स्थलशृङ्गाट, गोकण्ट, त्रिकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षर, गोक्षर, गोखुरि, विकण्टक, गोखुर, त्रिकट, त्रिक, इक्षुर, क्षुरक, भक्ष्यकण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुराङ्ग, श्वदंष्ट्रक, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, षडङ्ग, कण्ठी)

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगोक्षुरकस्त्रिकण्टकःकण्टीषडंगोबहुकण्टकःक्षुरः ।
गोकण्टकःकण्टफलःपलंकषाक्षुद्रक्षुरोभक्षटकश्चणद्रुमः ॥
स्थलशृङ्गाटकश्चैववनशृङ्गाटकस्तथा ।
इक्षुगन्धःस्वादुकण्टःपर्य्यायाःषोडशस्मृताः ॥

अर्थ-क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट, कण्टी, षडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर, गोकण्टक, कण्टफल, पलंकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणद्रुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट यह सोलह नाम क्षुद्रगोखुरुके हैं ।

संस्कृतभाषामें	गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।
हिन्दीभाषामें	गोखुरु, छोटे गोखरु ।
वंगभाषामें	गोखरि ।
मराठीभाषामें	सराटे, लहान गोखरु ।
गुजरातीभाषामें	गोखरु, उभो बेठो बेजातनो छे ।
कर्णाटकीभाषामें	वेडितीसराटीदोड्डनेग्गिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पालेरु ।
औत्कलीभाषामें	गोखरा ।
लैटिन्भाषामें	पेडेल्यंम्युरेक्स (बडा) ट्रिव्युलसटेरेसट्रीस (छोटा) Pedalum Murew Terrebulus Terrestris
	ट्रिव्युलसऐलटस (सिन्धुकागोखरू) Tribulas alatus
फारसीभाषामें	तुख्मेखार खस्क ।
अरबीभाषामें	वजरुल खस्क, वकलतलखार, खसूक ।

द्विविधगोक्षुरगुणाः ।

स्यातामुभौगोक्षुरकौसुशीतलौबलप्रदौतौमधुरौचबृंहणौ ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौरसायनौतत्रबृहद्गुणोत्तरः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके गोखुरु-शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहनाशक हैं, रसायन हैं, इनमें बडा गोखुरु अधिक गुणवाला है ।

अन्यच्च ।

गोक्षुरःशीतलोबल्योमधुरोबृंहणोमतः ।
वस्तिशुद्धिकरोवृष्यःपौष्टिकश्चरसायनः ॥
अग्निदीप्तिकरःस्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
दाहमेहश्वासकासहृद्रोगार्शोविनाशनः ॥
वस्तिवातंत्रिदोषञ्चकुष्ठंशूलंचनाशयेत् ।

अर्थ-गोखरु-शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, श्वास, खांसी, हृदयरोग, बवासीर, वस्तिवात, त्रिदोष, कुष्ठ और शूलको नष्ट करे है ।

अपिच ।

गोक्षुरोमूत्रकृच्छ्रघ्नोबल्योवृष्योनिलापहः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गोखुरु-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलकारक, वीर्य्यजनक और वातविनाशक है ।

अस्य शाकगुणाः ।

तिक्तंगोक्षुरकंवृष्यंशाकंस्रोतोविशोधनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-गोखरुके पत्तोंका शाक-तिक्तरसान्वित, वीर्यजनक और स्रोतविशोधकहै ।

अस्य बीजगुणाः ।

बीजंगोक्षुरकंशीतंमूत्रलंशोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

गोक्षुरके बीज-शीतल, मूत्रजनक, शोथनिवारक, वृष्य, आयुवर्द्धक तथा शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले हैं ।

अस्य क्षारगुणाः ।

क्षारस्तुगोक्षुराणान्तुमधुरःशीतलोमतः ।
स्रोतोविशोधनश्चैववातघ्नोवृष्यएवच ॥ (नि० र०)

अर्थ-गोखुरुओंका खार-मधुर, शीतल, स्रोतोविशोधन, वातनाशक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

विवरण । गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा देशी । पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते हैं, फलके चार कोनोंके ऊपर एक कांटा होता है। देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है, पत्ते चनेकी समान होते हैं, फूल पीला होताहै, इसके फलमें छः कांटे होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

पञ्चमूलगुणाः ।

पञ्चमूलमिदंह्रस्वंबृंहणंबलवर्द्धनम् ।
कषायंतिक्तकंनातिशीतोष्णंसर्वदोषजित् ॥

अर्थ–ह्रस्वपञ्चमूल–पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषायरसान्वित, तिक्तरससंयुक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है ।

बृहत्पंचमूलगुणाः

पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत् ।
मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ–बृहत्पंचमूल–तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वासनिवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक हैं ।

दशमूलगुणाः ।

दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–दशमूल–त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, अनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै । अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमें देखो ।

जीवन्तीनामानि ।

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवदाचसुखंकरी ।
रक्ताङ्गीप्राणदाभद्रामङ्गल्यामृगराटिका ॥

अर्थ–जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, स्रवा, मधुस्रवा मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपृष्ठा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुत्रभद्रा, मधुश्वासा जीववृषा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

संस्कृतभाषामें	जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	जीवन्ती (डोडी)
वंगभाषामें	जीवई, जीयाती, जीवन्ती ।
मराठीभाषामें	जीवंती ।
गुजरातीभाषामें	राडारुडी, वाछंटी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरियाहलि ।

अस्या गुणाः ।

जीवन्तीमधुराशीतारक्तपित्तानिलापहा ।
क्षयदाहज्वरान्हन्तिकफवीर्य्यविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जीवन्ती-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह, और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्य्यको बढानेवालीहै ।

अन्यच्च ।

चक्षुष्यासर्वदोषघ्नीजीवन्तीमधुराहिमा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-जीवन्ती-नेत्रोंको हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है ।

अपिच्च ।

जीवन्तीश्वासकासघ्नीस्वर्य्याचक्षयनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-श्वास और खांसीको दूर करनेवालीहै, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

जीवन्तीशीतलामाध्वीस्निग्धास्वाद्वीरसायनी ।
चक्षुष्याग्राहकाबल्यालघ्वीधातुविवर्द्धिनी ॥
वृष्याकफकरीसूतबंधिनीरक्तपित्तहा ।
वातंक्षयंज्वरंदाहंनेत्ररोगंत्रिदोषकम् ॥
रक्तदोषंभूतबाधांपित्तंचैवविनाशयेत् ।
फलंचास्याधातुवृद्धिकारकंमधुरंगुरु ॥

अर्थ-जीवन्ती-शीतल, मधुर, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, बलकारक, हलकी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पारेको बांधनेवाली तथा रक्तपित्त, वात, क्षय, ज्वर, दाह, नेत्ररोग, त्रिदोष,

रक्तविकार, भूतबाधा और पित्तका नाशकरे है। इसका फल-धातुवर्धक मधुर और भारी है।

बृहज्जीवन्तीनामानि।

जीवन्त्यन्याबृहत्पूर्वापुत्रभद्राप्रियंकरी ॥
मधुराजीवपुष्पाचबृहज्जीवायशस्करी।

अर्थ-बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी।

संस्कृतभाषामें	बृहज्जीवन्ती।
हिन्दीभाषामें	बडीजीवन्ती।
वंगभाषामें	भडजीवइ।
गुजरातीभाषामें	मोटीखरखोडी तृणधारनी।
कर्णाटकीभाषामें	किरियहाले।
इंग्रेजीभाषामें	शार्शप्रेरला। Sasapralla

अस्या गुणाः।

एवमेवबृहत्पूर्वारसवीर्य्यबलान्विता।
भूतविद्राविणीज्ञेयावेगाद्रसनियामका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-बडी जीवन्ती-रसवीर्य्य और बलमें जीवन्तीके समान है भूतविद्रावक और पारेको बांधनेवाली है।

स्वर्णजीवन्तीनामानि।

हेमपूर्णास्वर्णलतास्वर्णजीवन्तिकाचसा।
हेमवल्लीहेमलताहेमक्षीरीसुमङ्गला ॥

अर्थ-हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी, सुमङ्गला (हेमाह्वा, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, तृणग्रन्थि, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णा, सुजीवन्ती, सुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमवती, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णजीवंती।
हिन्दीभाषामें	पीलीजीवन्ती, सुनहरीजीवन्ती।
वंगलामें	स्वर्णजीवन्ती।
मराठीभाषामें	हरणवेल, हेमहरणवेल।
गुजरातीभाषामें	खरखोडी, मीठीखरखोडी।

कर्णाटकीभाषामें	होणहाले ।
लैटिन्भाषामें	ड्रेजिआवोल्युविलिस् ।

अस्या गुणाः ।

स्वर्णजीवन्तिकावृष्याचक्षुष्यामधुरातथा ।
शिशिरावातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्द्धिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्वर्णजीवन्ती-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, शीतल तथा वात, रक्त, पित्त और दाहको दूर करनेवाली है और बलवर्द्धक है ।

तिक्तजीवन्तीनामानि ।

तिक्तजीवन्तिकातिक्तभद्रातिक्तप्रियङ्करी ॥

अर्थ-तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियङ्करी (विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, रणमुष्टिक, डोडीक्षुप)

संस्कृतभाषामें	विषमुष्टि, तिक्तजीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	डोडी ।
मराठीभाषामें	विषदोडी ।
गुजरातीभाषामें	कडवोखरखोडो ।
कर्णाटकीभाषामें	दोडीकर्गसगे ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तजीवन्तिकावातकफाजीर्णज्वरापहा ।
शोफघ्नीविषहन्त्रीचलेपादाखुविषापहा ।

अर्थ-तिक्तजीवन्ती-वात, कफ, अजीर्ण, ज्वर, सूजन और विषविनाशक है । इसका लेप करनेसे मूषेका विष दूर होता है ।

अन्यच्च ।

विषडोडीभवेत्तिक्ताकट्वीचाग्निप्रदीपनी ।
मलस्तम्भकरीग्राहीपित्तलोष्णास्रपित्तजित् ॥
लघ्वीवृष्याचरुच्याचदाहकारीकफापहा ।
कण्ठरुग्वातगुल्मार्शःकृमिकुष्ठविषापहा ॥
श्वासभ्रमेहाखुविषनाशिनीपरिकीर्तिता ।

अर्थ-डोडी-तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, मलस्तम्भक, ग्राही, पित्तजनक, गरम, रक्तपित्तनाशक, हलकी, वीर्य्यजनक, रुचिकारक, दाहकारक, कफ-

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वास, प्रमेह और मूषेके विषको दूर करनेवाली है ।

विषमुष्टिगुणाः ।

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तोदीपनःकफवातनुत् ।
कण्ठामयहरोरुच्योरक्तपितार्तिदाहनुत् ॥

अर्थ–विषमुष्टि–चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोगनाशक, रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूरकरे है ।

विवरण । जीवन्ती अनेक जातिकी होतीहै, इसकी वेल चलतीहै, फल डोडोंमें आते हैं इसमें आककी समान दूध निकलताहै ।

मुद्गपर्णीनामानि ।

मुद्गपर्णीकाकमुद्गासहाचशिम्बिपर्णिका ।
शिम्बीपर्णीक्षुद्रसहाशिम्बीमार्ज्जारगन्धिका ॥

अर्थ–मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्ज्जारगन्धिका (वनजा, रिङ्गिणी, ह्रस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या, कराञ्जिका)

संस्कृतभाषामें	मुद्गपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मुगवन ।
बंगलाभाषामें	मुगानि ।
मराठीभाषामें	रानमूग ।
गुजरातीभाषामें	अडवाउ मगवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कोहसरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुपेसारा ।
लैटिन्‌भाषामें	फेशिपोलंस् ट्रायलो बेटस् । Phasiolous Tulobetus

अस्या गुणाः ।

मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वाद्वीचशुक्रला ।
चक्षुष्याक्षयशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥
दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोतिसारजित् । (भा० प्र०)

अर्थ–मुगवन–शीतल, रूखी, कडवी, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, नेत्रोंको हित-

कारी, क्षयघ्न, शोथनाशक, मलरोधक तथा ज्वर, दाह और त्रिदोषनाशक, हलकी और संग्रहणी, बवासीर और अतिसारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मुद्गपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा ।
पित्तदाहज्वरान्हन्तिचक्षुष्याशुक्रवृद्धिकृत् ॥(रा॰नि॰)

अर्थ-मुगवन-शीतल तथा खांसी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

अपिच ।

मुद्गपर्णीहिमाकासवातरक्तज्वराञ्जयेत् ।
स्वाद्वीलघ्वीत्रिदोषघ्नीग्रहणीकृमिनाशिनी ॥
अतिसारकफार्शोघ्नीपित्तनाशकरीमता ॥
रक्तस्तम्भकरारूक्षाचोक्तावैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ-मुगवन-शीतल तथा खांसी, वात, रक्त और ज्वरका नाश करे है । स्वादिष्ठ, हलकी, त्रिदोषनाशक तथा संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, बवासीर और पित्तको दूर करैहै । रक्तस्तम्भक और रूखा है ।

विवरण । मुद्गपर्णी मूंगकी समान वेल होतीहै, पत्ते मूंगकी समान हरे होतेहैं, फूल पीले रंगके होते हैं और फलीभी मूंगकी समान आती है ।

माषपर्णीनामानि ।

माषपर्णीकृष्णवृन्तापर्णिनीपाण्डुलोमशा ।
ऋषिप्रोक्ताहयपुच्छीकाम्बोजीसिंहपुच्छिका ॥

अर्थ-माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका (महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डु, लोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा, अश्वपुच्छी, माषपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारणी, आत्मोद्भवा, वहुफला, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशाम्बिका, सूर्यपर्णी, पाण्डुरा)

संस्कृतभाषामें	माषपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मषवन, वनउर्दी, जंगलीउडद ।
वंगभाषामें	माषाणी ।

मराठीभाषामें	रानउडीद ।
गुजरातीभाषामें	अडवाड, अडदवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	रानोंडिडुका उद्दु ।
तैलङ्गीभाषामें	कारुमीनुरु ।
लैटिन्भाषामें	ग्रेंजिआमद्रासपटना । Crangea madrass Patana

अस्याः गुणाः ।

माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलासकृत् ।
मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मषवन-शीतल, कडवी, रूखी, शुक्रजनक, कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सूजन, वात, पित्त, ज्वर और रूधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

माषपर्णीरसेतिक्तावृष्यादाहज्वरापहा ।
शुक्रवृद्धिकरीबल्याशीतलापुष्टिवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मषवन-तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह ज्वरनाशक शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

माषपर्णीमहावृष्याबृंहणीबलवर्णकृत् ।
स्तन्यकेशहितास्निग्धावातपित्तापहाहिमा॥(शो॰नि॰)

अर्थ-मषवन-महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, वलवर्द्धक, वर्णको सुंदरतादायक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, केशोंको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, वातपित्तनाशक और शीतलहै ।

अन्यच्च ।

माषपर्णीशुक्रवृद्धिकरावृष्याचतिक्तका ।
बलदापौष्टिकाशीतारूक्षाकफकरीमता ॥
रक्तरुङ्नाशिनीग्राहीत्रिदोषज्वरपित्तहा ।
रक्तपित्तंक्षयंकासंवातंशोषञ्चदाहकम् ॥
वातपित्तंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-मषवन-शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक. पुष्टिकारक, शीतल, रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोष, ज्वर, पित्त,

रक्तपित्त, क्षय, खांसी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है। माषपर्णीकी वेल उड़दकी समान होतीहै। व्यवहार-सर्वांग। मात्रा २ मासेकी।

एरण्डनामानि।



एरण्डोव्याघ्रपुच्छःस्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफलः।
पञ्चांगुलःशूलशत्रुर्वातारिर्दीर्घदन्तकः॥

-अर्थ-एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पंचांगुल, शूलशत्रु, वातारि, दीर्घदन्तक (रुवूक, गन्धर्वहस्तक, उरुवुक, रुवुक, चंचुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडत्वक्, एरण्डक, इष्ट, अमङ्गल, तुच्छद्रु, व्रणहा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुवूक, रुवूक, रुवुक, रूवक, वुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुक्र, दीर्घपत्रक (दीर्घदण्डक) चित्रवीज और स्नेहप्रद)

रक्तैरण्डनामानि।



रक्तोपरोहस्तिकर्णोव्याघ्रोव्याघ्रकरोरुबुः ।
त्रिबीजश्चरुबूकश्चारुत्तानपत्रकः ॥

अर्थ–रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुबु, त्रिबीज, रुबूक, उत्तानपत्रक, (उरुबुक, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रबल, रक्तक, चिरवीर्य्य, हस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि ।

स्थूलैरण्डोमहैरण्डोमहापञ्चाङ्गुलादिकः ॥

अर्थ–स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापञ्चांगुल ।

हिन्दीभाषामें	अण्ड, सफेद अण्ड, लाल अण्ड, वडा अण्ड ।
वंगलाभाषामें	भेराण्डा, शादारेडी, लालभेण्डा, बडभेराण्डा ।
मराठीभाषामें	एरंड, एरण्डोली ।
गुजरातीभाषामें	धोलोएरंडो, रातोएरण्डो ।
कर्णाटकीभाषामें	एरंडुआंडलके ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमुडामु, आमिदपुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	कास्टर ओईल प्लाट Casteroil Plant Castor seed कास्टरसीड्
लैटिन्भाषामें	रिसिनस्कॉम्युनिस् । Ricinus Communis
फारसीभाषामें	बेदंजीर, सुरूमेवेदजीर ।
अरबीभाषामें	खिरवा, हबुलखिरुवा ।
तुरकीमें	करचक ।

द्विविधैरण्डगुणाः ।

एरण्डयुग्मंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ।
शूलशोथकटीवस्ति शिरःपीडोदरज्वरान् ॥
वध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ–दोनोंप्रकारके अण्ड–मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कमर, वस्ति (पेडू) और शिरोरोग, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक हैं ।

अस्य पत्रगुणाः ।

एरंडपत्रंवातघ्नंकफक्रिमिविनाशनम् ।

मूत्रकृच्छ्रहरंचापिपित्तरक्तप्रकोपनम् ॥
वातार्यग्रदलंगुल्मवस्तिशूलहरंपरम् ।
कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफघ्न, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाले और पित्तरोगको कुपित करनेवाले हैं। अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वस्ति, शूल, कफवात, कृमि और सातप्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं।

अस्य फलगुणाः।

एरण्डफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदराशोंघ्नंकटुकंदीपनंपरम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, वात, यकृत, प्लीहा, उदररोग और बवासीरको दूर करे हैं।

अस्य मज्जागुणाः ।

एतन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-इसकी मींग-मलभेदक तथा वात,कफ और उदररोगका नाशकरे है।

अस्य मूलगुणाः।

एरण्डमूलंशूलघ्नंवृष्यंवातकफापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-इसकी जड-शूल, वात और कफको निमूर्ल करेहै, तथा वीर्यजनक है।

अस्य पुष्पगुणाः।

पुष्पंहन्त्यस्यवध्मानिलकफगुदजान्गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका फूल-वध्म (बद) वात, कफ, गुदजरोग, गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको, दूर करे है।

श्वेतैरण्डगुणाः।

श्वेतोरुवूकस्तुकटुस्तीक्ष्णश्चोष्णोगुरुःस्मृतः ।
मधुरस्तिक्तकोवृष्योगुरुःस्वादुःसरःस्मृतः ॥
वातोदावर्तकफहृज्ज्वरकासोदरापहः ।
शोथशूलकटीवस्तिशिरोरुङ्नाशनःस्मृतः ॥

श्वासानाहकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रावर्धनप्रणुत् ॥
अस्यभेदोबृहत्स्थूलोरसेपाकेगुणाधिकः ।

अर्थ-सफेद अण्ड-कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कडवा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ठ और दस्तावर है । तथा वात, उदावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सूजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अफारा, कोढ, वर्ध्मरोग (बद) गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमेह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अंत्र-वृद्धिरोगका नाश करेहै । इसका भेद-स्थूल एरण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमें और पाकमें अधिक गुणवाला है ।

रक्तैरण्डगुणाः ।

रक्तोरुवूकस्तुवरोरसेकटुर्लघुःस्मृतः ।
तिक्तोवातकफश्वासकासकृम्यर्शवर्ध्महा ॥
रक्तदोषंपाण्डुरुजंभ्रांत्यरोचकनाशनः ।
प्रायस्त्वन्येगुणाश्चास्यश्वेतवच्चसमीरिताः ॥
पर्णद्वयोस्तुसंप्रोक्तंवातपित्तस्यवर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रंवातकफंकृमींश्चैवविनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरोगुल्मवस्तिशूलकफक्रिमीन् ।
वातंसप्तप्रकारंतुवृद्धिरोगंविनाशयेत् ॥
पुष्पंतुवातकफहृतिपित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्तंवर्धयतिफलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णाकटुकास्वादुःपटुःस्निग्धासरास्मृता ।
मलभेदकरालघ्वीगुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्धातोदरप्लीहावातार्शानांविनाशिनी ।

अर्थ-लाल अण्ड-कषेला, रसमें चरपरा, हलका, कडवा, वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, बवासीर, बद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग भ्रान्ति और अरुचिको दूर करे है । शेष गुण सफेद अण्डकी समान जानने । इन दोनोंके

पत्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ, और कृमिरोगका नाश करे हैं। इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल-वात, कफ, पित्त और मूत्रकृच्छ्रादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे हैं। इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत्, वात, उदररोग, प्लीहा और वादीकी बवासीरको दूर करे है।

अस्य तैलगुणाः।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैलंमधुरंसरंचोष्णंगुरुस्मृतम्।
अरुच्यंचस्मृतंस्निग्धंतिक्तंवध्मोदरापहम्॥
गुल्मवातकफांश्चैवशोथश्चविषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरंपरम्॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्निग्ध, तिक्त तथा, बद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कमर, पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलंमधुरमुष्णंतीक्ष्णञ्चदीपनम्।
रसेकटुकषायञ्चसूक्ष्मंस्रोतोविशोधनम्॥
योनिशूलविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत्।
स्मृतिस्थैर्य्यंबलकरंवृष्यंमधुरमेवच॥
वयःस्थापनकंहृद्यंवातश्लेष्महरंपरम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निप्रदीपक है। कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और श्रोतविशोधक है। योनि (वीर्य्य)

शूलको शोधनेवाला है। आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है। स्मरणशक्ति बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्य्यको उत्पन्न करेहै। अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करेहै।

अपिच।

एरण्डतैलंकृमिदोषनाशनंवातामयध्वंसकलाङ्गशूलहृत्
कुष्ठापहंस्वादुरसायनोत्तमंपित्तप्रकोपंकुरुतेतिदीपनम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है। आगे इसके गुण तलवर्गमें देखो।

विवरण-इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी वाडपर लगाये जाते हैं, इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं, इसके फलपर, कोमल कांटे होते हैं, फलमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होताहै, उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुलाब होता है। इसके पत्तोंको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर होताहै। व्यवहार-मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मींग और तैल।

अर्कनामानि।





क्षीरदलंशुकफलंतूलार्कश्च सदासुमः ॥

अर्थ-क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप, क्षीरकाण्डक, विक्षीर, भास्कर, हरिदश्व, विवस्वान्, अहर्मणि, अहर्बान्धव, अर्यमा, अहर्पति, उष्णरश्मि, भानु, विकर्त्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु, विवस्वान्, सप्ताश्व, सविता, सूनु, आस्फोत, वसुक, हिमाराति, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खर्ज्जूघ्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विकोरण, सदापुष्प, सूर्य्याह्व, आस्फोतक, भास्कर, आस्फोटक. रवि, कीरतनुफल और क्षीराङ्ग)

श्वेतार्कनामानि।

श्वेतार्कोऽलर्कराजार्कोमन्दारोगणरूपकः ॥

अर्थ-श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, मन्दार, गणरूपक, (तपन, श्वेत, दीर्घपुष्प, शिवाह्वय, प्रताप, शीतार्कक, शर्करापुष्प, काष्ठील, वसुक, सदापुष्प, वृत्तमल्लिका, वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्तार्क, बिम्बोर, सदापुष्पी, रूपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क, रक्तपुष्प और शुक्लफल)

हिन्दीभाषामें	लाल आक, सफेद आक, मंदार ।
वंगभाषामें	आकन्द, श्वेतआकन्द ।
मराठीभाषामें	रुई, पांढरीरुई ।
कर्णाटकीमें	पक्के, मंदारपक्के ।
तैलिङ्गीभाषामें	नीलजिल्लेडेघोली, तेलाजिल्लीडे, जिल्लेट्टचेट्टु ।
गुजरातीभाषामें	आकडो, भोलोआकडो ।
इंग्रेजीभाषामें	जाईगोंटिक्स्वोलोवर्ट् । Gigantic Swallow wort
लैटिन्भाषामें	केलोट्रोपीस् जाईगेंठिया । Calotropis Jigantea
	कलोट्रोपिसप्रोसिरा । G Procera
फारसीभाषामें	खुर्क, दुध ।
अरबीभाषामें	उषर ।

अर्कगुणाः।

अर्कःकृमिहरस्तीक्ष्णःसरोर्शःकफनाशनः ।
तत्पुष्पंकृमिदोषघ्नंहन्तिशूलोदराणिच ॥ (धन्वन्तरीनि०)

अर्थ-आक-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर, ववासीर और कफनाशक है। इसके फूल कृमिदोष, शूल और उदररोगका नाशकरे हैं।

रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तंकुष्ठक्रिमिघ्नंकफनाशनञ्च ।
आखोर्विषंहंतिचरक्तपित्तंसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥

अर्थ–लाल आकका फूल–मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूषेका विष, रक्तपित्त, गुल्म, और सूजनको दूर करे है ।

अर्कक्षीरगुणाः ।

क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–आकका दूध–तिक्त, उष्ण, स्निग्ध, लवणरस संयुक्त, हलका, कोढ, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे, इसका विरेचनदेना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते हैं ।

अर्कमूलस्य त्वग्गुणाः ।

अर्कमूलत्वचास्वेदकरीश्वासनिबर्हणी ।
उष्णाचवामिकाचैवह्युपदंशविनाशिनी ॥

अर्थ–आकके जडकी छाल–पसीनेको उत्पन्न कर, श्वासको दूरकरे गरम है और उपदंशरोगका नाश करे है ।

अर्कस्तुकटुरुष्णश्चवातजिद्वह्निदीपकः ।
शोफव्रणहरःकण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–आक–कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निप्रदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्डू, कुष्ठ और कृमिरोगका नाशकरे है ।

द्विविधार्कगुणाः ।

अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहंतिप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्कृमीन् ॥
अलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥

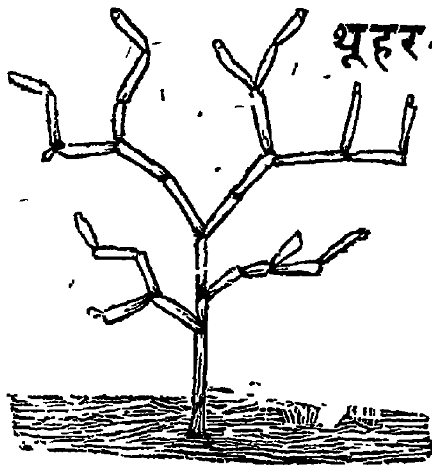
अर्थ–दोनों प्रकारके आक–रेचक तथा वात, कोढ, कण्डू, विष, व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत् और कृमि रोगको दूर करे हैं । सफेद आकका फूल–बलकारक, हलका, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना) बवासीर कास और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोत्युष्णस्तिक्तोमलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान्हन्तिकृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
राजार्कःकटुतिक्तोष्णःकफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान्हंतिशोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और अत्यन्त दारुण क्रिमिरोगको दूर करैहै । राजार्ककटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, मेद, विष, वातकुष्ठ, व्रण, शोफ, कण्डू और विसर्परोगका नाशकरे है ।

विवरण । आकके वृक्ष जंगल और भूडोंमें अधिकतासे होतेहैं । लकडी निःसार होतीहै, पत्ते वडके समान होतेहैं, फल तोतेकी समान । उसके भीतर तीन रुई निकलतीहैं, आकके पंच अङ्गका क्षार करतेहैं, वो क्षार कफको दूर करैहै । इसके पत्तोंको गरम कर पेटपर बांधनेसे पेटका दर्द दूर होताहै ।

स्नुहीनामानि ।



स्नुहीसमन्तदुग्धाचनागद्रुर्बहुदुग्धिका ।
महावृक्षःसुधावज्राशीहुण्डोदण्डवृक्षकः ॥ (शोडलनि०)

अर्थ-स्नुही, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहुदुग्धिका, महावृक्ष, सुधा, वज्रा, शीहुण्डा, दण्डवृक्षक, (सीहुण्ड, सिहुण्ड, स्नुक्, स्नुषा, स्नुहा, स्नुही, वज्र,

वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, वहुशाल, कृष्णसार, निस्त्रिंशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

हिन्दीभाषामें	थूहर, सेहुंड ।
वंगभाषामें	मनसागाछ, सिजवृक्ष ।
मराठीभाषामें	निवडुंग, कांटेनिवडुंग, फणीचें निवडुंग, विकांडी, वईनिवडुंग ।
गुजरातीभाषामें	थोर दांडलियो, कटाली, कंटालोथोर । हाथलो तरधारी, नानो परदेशी ।
कर्णाटकीभाषामें	निवडिगु, कालि, मुंडुकालि ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेंमुडु ।
देशान्तरीभाषामें	सावर ।
इंग्रेजी भाषामें	मिल्कसहेज्ज । प्रिक्लीपीयर । MilKs hedge Prickly pear
लैटि०	युफोर्विया ट्रायगोना । Euphorbia Trigona युफोरवियानिरिफोलीया । Euphorbia Nirifolia
फारसीभाषामें	लादनाम्
अरबीभाषामें	जकुम, फर्युंन ।
लैटिन्भाषामें	युफोर्विया टिरुकालाइ । युफोर्विया पेण्टागोता ।
तु०	कोडकलि । ता० कलि । मला० तिरुकल्लि ।

स्नुहिगुणाः ।

स्नुहिरुष्णःपित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् ।
क्षीरंवातविषाध्मानगुल्मोदरहरंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ—थूहर—गरम, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात, और प्रमेहनाशकहै । थूहरका दूध—वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है ।

अपिच

सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः ।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥

उन्मादमोहकुष्ठार्शशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषंहरेत् ॥

अर्थ-सेहुण्ड-रेचक, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी तथा शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्च्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मेदोरोग, पथरी, पाण्डुरोग, व्रण, शोथ, ज्वर, प्लीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है ।

अस्य दुग्धगुणाः ।

उष्णवीर्य्यंस्नुहिक्षीरंस्निग्धञ्चकटुकंलघु ।
गुल्मिनांकुष्ठिनांचापितथैवोदररोगिणाम् ।
हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥

अर्थ-सेहुण्डका दूधउष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपरा और हलकाहै तथा गुल्म, कुष्ठ (उपदंशरोग) उदर इनरोगवालोंको और बहुत कालके रोगियोंकोभी इसका जुल्लाब हितकारीहै ।

अस्य पत्रगुणाः ।

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंभवेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्ते तीक्ष्ण अग्निको दीपन करनेवाले अत्यन्त रुचिकारक तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करे हैं ।

अपिच ।

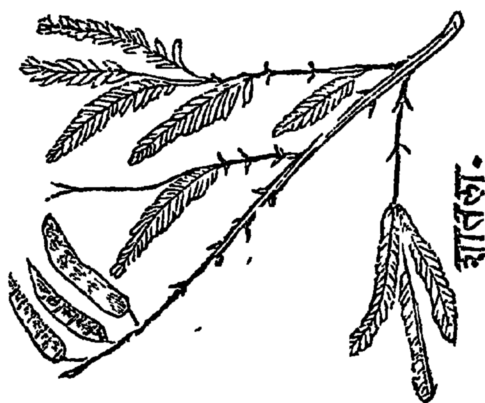
सेहुण्डःकटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णःप्रदीपनः ।
सरोगुरुर्वांतिकरःकुष्ठोदरविनाशकः ॥
प्लीहवातप्रमेहघ्नःशूलामकफशोथनुत ।
गुल्माष्ठीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥
उन्मादवातंमेदश्चवृश्चिकस्यविषंहरेत् ।
दूषीविषार्शोश्मरीघ्नोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-थूहर. वा सेहुण्ड-कटु, तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, जठराग्निदीपक, दस्तावर, भारी, वान्तिकारक तथा कुष्ठ, उदर, प्लीहा, वात, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कफ, उदरव्रण, ज्वर,

उन्माद,वायु,मेद, विच्छूका विष, दूषीविष, बवासीर और पथरीको दूरकरैहै।

विवरण। थूहर और सेंड दोनों एकही जातिके वृक्ष हैं सेहुंडकी डंडी कांटेदार और मोटी होतीहै, पत्ते कोमल पत्थरचटेकी समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेमें होताहै थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीमिर्चकी समान लम्बे होते हैं इसके सब अंगोंमें दूध निकलताहै। थूहरकी अनेक जातिहैं। जैसे कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरासानी थूहर, विलायती थूहर, इत्यादि। खुरासानी थूहरका दूध विषैला होताहै। इसके दूधको बादीके रोगमें तथा सन्धियोंकी पीडामें चुपडनेसे तुरंत पीडा दूर होतीहै। थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमें चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडबेरकी समान गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उपदंश तथा फिरंगरोग दूरहोताहै। थूहरकी राख कर उसका खार निकाल अनेक औषधियोंमें डालतेहैं। कांटेवाले थूहरके पत्तोंका शाक बनाकर खाते हैं। उससे उदरके रोग दूर होतेहैं। इसके डंडोंकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है। नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खांसी दूर होती है।

सातलानामानि।



सातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा।
तथानिगदिताभूरिफेनाचर्म्मकषेत्यपि॥

अर्थ–सातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकषा, (अमला, बहुफेना, फेना, दीप्ता, विषाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना)

हिन्दीभाषामें	सातला ।
वंगभाषामें	सिजविशेष ।
मराठीभाषामें	निवडुंगाचा भेद ।
गुजरातीभाषामें	साथेर ।
लैटिन् भाषामें	ओरिगेनं वल्गेरीस- Origanm Valgoris
कर्णाटकीभाषामें	वडीलसोतुली, हिरीयचट, कनख ।
फारसीभाषामें	एशन् ।
अरवीभाषामें	सातर ।

सातलागुणाः ।

सातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः ।
तिक्ताशोफककफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हलका, तिक्त तथा शोफ, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त और रक्तदोषको दूर करेहै ।

अपिच ।

सातलाकफपित्तघ्नीलघ्वीतिक्ताकषायिका ।
विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, व्रण और शोफनाशकहै ।

अन्यच्च ।

सातलामुखपाकघ्नीजठरव्रणहृत्सरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक है ।

अपिच ।

सातलातुविसर्पघ्नीरेचनीवातशोफनुत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करानेवाला, वात तथा सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

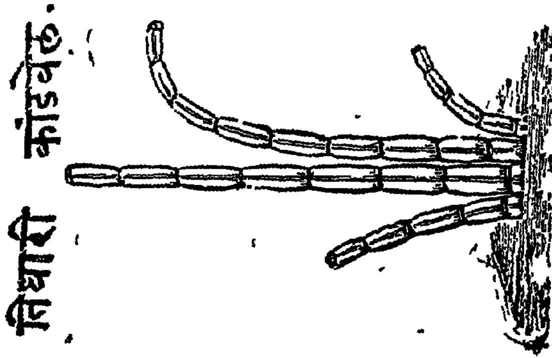
सातलाशीतलातिक्तातीक्ष्णापाकेकटुर्लघुः ।
हृद्यानिलंप्रकुरुतेहरतेस्रद्रुजंकफम् ॥

पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतंविषम् ।
आनाहकृमिशोफामंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सातला-शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु, लघु, हृदयको हितकारी, अग्निजनक तथा हृद्‌यरोग, कफ, पित्त, उदावर्त, कुष्ठ, ववासीर, गुल्म, उदरविष, आनाह, कृमि, शोफ और आमको दूर करैहै ।

विवरण । सातलेकी वेल जंगल और वनोंमें होतीहै, पत्ते खैरके पत्तोंकी समान छोटे छोटे होते हैं । फूल पीलाहोता है । उसमें पतली तथा चपटी फली लगतीहैं । उसमें काले बीज निकलते हैं । इसमें पीले रंगका दूध निकलताहै ।

अस्थिसंहारिनामानि ।



वज्रवल्लचस्थिसंहारीकुलिशंचशिरालकः ॥

अर्थ-वज्रवल्ली, अस्थिसंहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थिमान्, अमर, वज्राङ्गी, अस्थिशृंखला, अस्थिसंहारक, क्रोष्टुघण्टिका)

हिंदीभाषामें	हडसंहारी, हडजोड, हडसंकरी ।
वंगभाषामें	हाडभाङ्गा ।
गुजरातीभाषामें	हाडसांकला, वेधारी, तरधारी, चोधारी ।
मराठीभाषामें	कांडवेल, त्रिधारी, चौधारी,
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लेह ।
लैटिन् भाषामें	विटिस्क्रोंड्रेग्युलारिस् । Vitisquodron gularis साइसस् काड्रेग्युलोरिस् ।

अस्थिसंहारिगुणाः ।

अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोस्थियुक् ।

उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोक्षिरोगजित् ॥
रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनःपित्तलःस्मृतः ।
कांडत्वग्विरहितमस्थिशृंखलाया
माषार्द्धद्विदलमकंचुकंतदर्द्धम् ।
संपिष्टंसुतनुततस्तिलस्यतैले
संपक्वंवटकमतीववातहारि ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–हडसंहारी–वातकफनाशक, टूटी हड्डीको जोडनेवाली, उष्ण, सारक, कृमिघ्न, बवासीरको दूर करनेवाली, आंखके रोगका नाशकरनेवाली, रूखी, स्वादिष्ठ, हलकी, वीर्य्यजनक, पाचक और पित्तकारक है। हडसंहारीकी लकडीका एक टुकडा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण करले, पश्चात् उस चूर्णमें गीले उडदोंकी छिलकारहित दाल चूर्णसे आधी मिलावे दोनोंको सिलपर महीन पीस तिलके तैलमें वडी बनावे, यह वडी अत्यन्त वातका नाश करेहै।

अन्यच्च ।

वज्रवल्लीसरारूक्षाकृमिदुर्नामनाशिनी ।
दीपन्युष्णाविपाकेम्लास्वाद्वीवृष्याबलप्रदा ॥
अर्शसांतुविशेषेणहिताचैवाग्निदीपनी ।
चतुर्धाराकाण्डवल्लीभूतोपद्रवशूलहा ॥
अत्युष्णाध्मानवातांश्चतिमिरंवातरक्तकम् ।
अपस्मारंवातरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
त्रिधाराकाण्डवल्लीतुसरालघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णामधुरावातकृम्यर्शःकफनाशिनी ॥
काण्डवल्लीतुकटुकातिक्ताचोष्णासरामता ।
पित्तलाचकफंगुल्मंलूतांदुष्टव्रणंतथा ॥
प्लीहोदराग्निमांद्यानिशूलंवातंचनाशयेत् ।
मलस्तम्भहराचैवकीर्त्तितामुनिभिःपुरा ॥ (नि० र०)

अर्थ-वज्रवल्ली-दस्तावर, रूखी, कृमि, बवासीरनाशक, पचनेमें अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, बलदायक, विशेषकरके बवासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है। चौधारा काण्डवेल-भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशकहै। त्रिधारी काण्डवेल-दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, बवासीरऔर कफनाशक है। काण्डवल्ली-कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, लूता, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, मंदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूरकरेहै।

विवरण। इसकी वेल थूहरकी जाति होतीहै, इस वेलमें चार छै अंगुलपै गांठ होतीहै, यह द्विधार, तिधार, चारधार इनमेंसे एक हडसंघारीकी जाति होती है। काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमें काण्ड होतीहै इसकारण संस्कृतमें इसको काण्डवल्ली कहतेहैं, यह शंकलके समान होतीहै, इसलिये इसको हडशङ्करी कहते हैं।

कलिकारीनामानि।

कलिकारीलाङ्गलिकीदीप्ताचगर्भघातिनी।
अग्निजिह्वावह्निशिखावह्निवक्त्राचलांगुली॥

अर्थ-कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहृत्, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लांगलिका, गर्भनुत्)

संस्कृतभाषामें	कलिकारी।
हिन्दीभाषामें	कलिहारी, कलियारी।
बंगलामें	विषलाङ्गला, ईशलाङ्गला।
मराठीभाषामें	खड्यानाग, चगमोड्या, कळलावी।
गुजरातीभाषामें	डुधियो, वछनाग, कलगारी।
को०	कलई।
कर्णाटकीभाषामें	राडागारी।
मला०	मेहोन्नि, कांडल।
इंग्रेजीभाषामें	वुलफसबेन। Wolfs bane
लैटिन्भाषामें	ग्लोरीओझासुपर्बा। Gloriosa superba
	एकोनाइटमूनेपिलस्। Aconitum napellus

अस्या गुणाः ।

कलिकारीसरातीक्ष्णाकुष्ठदुष्टव्रणापहा ॥ (वि० ति० भा०

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥
तीक्ष्णोष्णाकृमिहृल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी। (भा० प्र०)

अर्थ-कलिहारी, सारक, कुष्ठ, शोफ, बवासीर, व्रण और शूलका नाश करेहै । क्षाररसयुक्त, कफनाशक, कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमिहारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिरानेवाली है ।

अन्यच्च ।

कलिकारीसरातीक्ष्णागर्भशल्यव्रणापहा ।
शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेल्लेपमात्रतः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणनाशक है । शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारीसरातिक्ताकट्वीपट्वीचपित्तला ।
तीक्ष्णोष्णातुवरालघ्वीकफवातकृमिप्रणुत् ॥
वस्तिशूलंविषंचार्शःकुष्ठंकण्डूंव्रणंतथा ।
शोथंशोषञ्चशूलञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥
शुष्कगर्भञ्चगर्भञ्चपातयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, कडवी, चरपरी, खारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेली, हलकी तथा कफ, वात, कृमि, वस्ति शूल, विष और कोढ, बवासीर, कण्डू, व्रण, सूजन, शोष, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है।

विवरण । कलिहारीका क्षुप बच्छनागकी वेलकी समान वडकी आकृतिवाला होताहै, पत्ते अंधाहुली समान होतेहैं । फूल-लाल और पीले मिश्रितरंगके अत्यन्त सुंदर होतेहैं । फल-तीनरेखावाले मिरचके समान होते हैं,

उसके भीतर लाल छालवाले इलायचीके बीजोंके समान बीज होतेहैं, इसकी बेलके नीचे गांठ होतीहै, उसकी ऊपरकी छाल पिलाई लिये होतीहै, इसगांठको बच्छनाग कहते हैं इसमें विष होताहै ।

करवीरनामानि ।



कनेर.

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डालोलगुडस्तथा ॥

अर्थ-करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तुरङ्गारि, रङ्गारि, शातकुम्भ, प्रचण्ड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक, वीरक, कुन्द, शंकुद्र, तुङ्गारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह्व, अश्वनाशक, स्थलकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरीपुष्प और सिद्धपुष्प, यह नाम श्वेतकरवीरके हैं । रक्तपुष्प, चण्डात, लगुड, रक्तप्रसव, गणेशकुसुम, चण्डीकुसुम, क्रूर, भूतद्रावी, रविप्रिय)

संस्कृतभाषामें	करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।
हिन्दीभाषामे	सफेदकनेर, लालकनेर, पीलीकनेर, काले फूलकी कनेर ।
बंगलाभाषामें	करवी, लालकरवी ।
मराठीभाषामें	कह्लेर, पांढरी, तांवडी, पिंवळी ।
गुजरातीभाषामें	कणेर, धोलांफुलनी, रातांफुलनी, गुलावीफूलनी, पीला फूलनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वाकणलिंगे, केगणलिंगे ।

तैलिङ्गीभाषामें कानेरचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें स्वीट्सेन्टेड् ओलियंडर Sweet scnted oleander
लैटिन्भाषामें नीरीयं ओडोरम् Nirum odorum नीरीयम् ओलियंडर Nerrum obander सर्वेराथिविटिया Cerbera Thevetia
फारसीभाषामें खरजेहरा ।
अरबीभाषामें सुसुल, हिमारदकली ।

श्वेतादिकरवीरगुणाः ।

हयारिःपञ्चधाप्रोक्तःश्वेतोरक्तश्चपाटलः ।
पीतःकृष्णःसमुद्दिष्टःश्वेतस्यैतान्गुणाञ्छृणु ॥
कटुस्तिक्तश्चतुवरस्तीक्ष्णोवीर्येणचोष्णदः ।
ग्राहीमेहकृमीन्कुष्ठव्रणार्शोवातनुत्परः ॥
भक्षितोविषवज्ज्ञेयोनेत्र्योलघुविषापहः ।
विस्फोटकुष्ठकृमिनुत्कण्डूव्रणकफापहः ॥
ज्वरंनेत्ररुजंचैवहयप्राणांश्चनाशयेत् ।

अर्थ-कनेर-सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली इसप्रकार फूलोंके भेदसे पांच प्रकारकी है । इनमें सफेद कनेर कटु, तिक्त, कषेली, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोढ, घाव, बवासीर और वातनाशक है, यह भक्षण करनेमें विषके समानहै, और नेत्रोंको हितकारी, हलकी तथा विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कण्डू व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोग और घोडेके प्राणोंको हरनेवाली है ।

रक्तकरवीरगुणाः ।

रक्तवर्णःशोधकःस्यात्कटुःपाकेचतिक्तकः ।
कुष्ठादिनाशकोलेपादथपाटलवर्णकः ॥
शीर्षपीडांकफंवातंनाशयेदितिकीर्तितः ।
रक्तादिचतुरोभेदागुणाः श्वेतहयारिवत् ॥ (नि०र०)

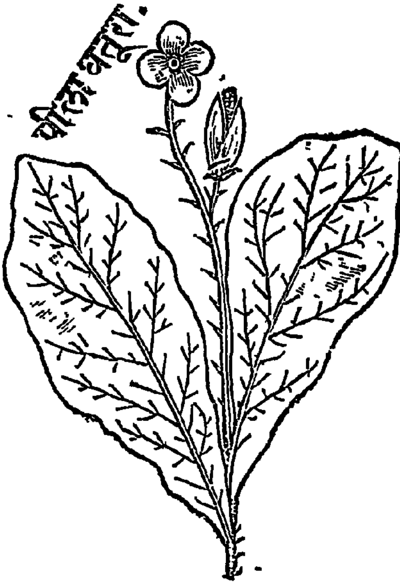
अर्थ-लाल कनेर-शोधक, चरपरी, पचनेके समय कडवी और इसका लेप करनेसे कोढ दूर होताहै । गुलाबी कनेर-मस्तकशूल, कफ, वात,

इनका नाश करैहै, इसके और गुण तथा पीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने।

विवरण। कनेरके वृक्ष, वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें लगाये जातेहैं। इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आते हैं लाल, पीले और सुफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होतीहै।

कनेरमें विष होता है। इसको विना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते हैं इसकारण इसको विना विचारे कभी भक्षण करना नहीं चाहिये। इसका घी बनाते हैं, वह घी अत्यन्त नसीला होताहै। मात्रा दोरत्तीसे लेकर चाररत्तीतककी।

धुस्तूरनामानि।





धुस्तूरोमदनोन्मत्तःकितवःकनकाह्वयः।
शिवप्रियोमहामोही देविकाखरदूषणः॥

अर्थ-धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाह्वय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खरदूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोह, धूर्तकृत, धत्तूर, घण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, खर्जूघ्न, काहलापुष्प, खल, कण्टफल, मोहन, कलम, मत्त, शैव, तूरी, धुस्तुर, धुत्तुर, उन्मत्तक, मदनक, हरवल्लभ, कण्ट-

फल, कनक, सविष, मोहन, मदकर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें	धतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा ।
मराठीभाषामें	धोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषामें	धंतुरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदकुणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लाउम्मीति, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	उमतताई, कारुउमते ।
पाह्लीभाषामें	सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नआपल स्ट्रामोनियं Thorn apple Stramonium
लैटिन्भाषामें	डाटुरा स्ट्रामोनियं डाटुराआल्वा, डा॰फेस्टुओसा Detura stramonm D. albo D. Fosnosa
अरबीभाषामें	जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । (भा॰ प्र॰)

अर्थ-धतूरा-मद,वर्ण,अग्नि और वात इनको करनेवाला,ज्वरको दूर करनेवाला,कोढका नाश करनेवाला,कषेला, मीठा,कडवा जुयें और लीखोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

धत्तूरःकटुरुष्णश्चकांतिकारीव्रणार्तिनुत ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारीभ्रमप्रदः । (रा॰ नि॰)

अर्थ-धतूरा-कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग, खर्जू, कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है ।

अन्यच्च ।

धत्तूरोदुष्टरक्तघ्नोव्रणहाविषपित्तकृत् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-धतूरा-दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, विष और पित्तको दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौचसविषौतिक्तोग्रौमोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौकामलार्शोविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ–दोनोंप्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, ववासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरःकांतिकृच्चोष्णःकटुकश्चाग्निदीपकः ।
तुवरोमधुरस्तिक्तोमदकृद्वांतिकृद्गुरुः ॥
वर्ण्यःकुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एषुकृष्णोगुणैःश्रेष्ठोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः (नि० र०)

अर्थ–धत्तूरा–कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, मदकारक, वान्तिकरनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफ-ज्वर, कण्डू, कृमि, जुंआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाशकरेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमें काला गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धुस्तूरोमूर्च्छाजनकोवह्निपित्तञ्चनाशयेत् (रा० व०)

अर्थ–धतूरा–मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाशकरेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकःसिद्धः कनकःसचिवःशिवः ।
कृष्णपुष्पोविषारातिःक्रूरधूर्त्तश्चकीर्त्तितः ॥ (रा० व०)

अर्थ–कृष्णधत्तूरक–सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामें	कालाधतूरा ।
वंगलाभाषामें	धुत्तुरा, कनकधुत्तुरा ।
कर्णाटकीभाषामें	करीयमदगणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्योराजधूर्त्तोमहाशठः ।

निश्रैणिपुष्पकोभ्रान्तोराजस्वर्णःषडाह्वयः ॥

अर्थ-राजधत्तूरक, राजधूर्त्त, महाशठ, निश्रैणिपुष्पक, भ्रान्त, राजस्वर्ण और षडाह्वय ।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्चसंतिधत्तूराः ।
सामान्यगुणोपेतास्तेषुगुणाढ्यस्तुकृष्णकुसुमःस्यात् ॥

अर्थ-धतूरे-सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके होतेहैं, इन सबोंमें सामान्यही गुण हैं, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणवाला है।

प्रयोग

श्वासके रोगमें बढेहुएश्वासको रोकनेके लिये इसके सूखे डंठल और पत्तोंका धुआं पिलावे । वातादिरोग और चोटलगीहुई दर्दकी जगहमें धतूरेका रस गायका घी और सैंधानोंन मिलाकर दर्दके स्थानमें लगावे। धतूरोंके बीजसे वातजनित शिरोरोग आराम होताहै ।

विवरण । धतूरा फूलोंके भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४-५ प्रकारका होताहै । प्रायः जंगलमें उत्पन्न होताहै । काले और सुनहरी फूलका धतूरा बागादिमें होताहै, पत्ते मध्यमाकार होतेहैं, फूल घण्टेके आकार होताहै । फूलका रंग बीचमें सफेद और ऊपर सफेद, नीला, काला पीला, होताहै, जिसके पांच भाग होतेहैं, फूलकी बाहिरी पांच पखाडियाँ नीलेरंगकी होती हैं। फल-गोल, कांटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताहै । जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला और दण्डी, पत्ते, फल, फूल तथा सर्वांग काला हो, उस धतूरेमें विष अधिक होताहै और उसके गुणभी अधिकहैं, फल सूखनेपर कठोर होजातेहैं इसके बीजोंमें विष अधिक होताहै, उन बीजोंको मात्रासे अधिक खानेसे मृत्यु होतीहै, बंधेजादिक धातुपुष्टिकी औषधिमें इसके बीजोंका व्यवहार ग्रन्थोंमें लिखा है, इसके बीज प्रमेहको दूर करनेवालेहैं, काले धतूरेके पंचांगकी धूपसे खांसी दूर होतीहै । धतूरेके मदको दूर करनेके लिये धतूरेकी मींगका नास लेना चाहिये, धतूरेका नास धतूरेके विषको दूर करनेवाला है । अथवा धतूरेके विषमें उसको पीसकर पिलावे, तथा तत्कालका दुहा हुआ दूध और घी मिलाकर पीजाय ।

व्यवहार-मूल, पत्ते, बीज । मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्तीतक ।

वासकनामानि ।





वासकोवासिकावासासिंहिकारामरूपकः ।
मातृसिंहीवैद्यमाताकसनोत्पाटनोवृषः ॥

अर्थ–वासक, वासिका, वासा, सिंहिका, रामरूपक, मातृसिंही, वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, वृष, (अटरुष, सिंही, वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, अटरूष, वासक, वास, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, भिषङ्-

माता, रसादनी, सिंहमुखी, कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नासा, पञ्चमुखी, सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटरूख, अटरूष सिंहानन)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष ।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा, विसौंटा ।
वङ्गभाषामें	वाकस, छोट वाकस ।
मराठीभाषामें	अडुळसा ।
गुजरातीभाषामें	अरडुशो ।
कर्णाटकीभाषामें	आडसोगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आडासारं, आडापाकु ।
तामिलीभाषामें	अधडोडे ।
लैटिन्भाषामें	आधाटोढा वासीका । Adhatoda vasica

अस्य गुणाः ।

वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडार्तिहृत् ॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमोहकुष्ठक्षयापहः । (भा. प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, कडवा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, शीतल तथा तृषा, श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह, कोढ और क्षयरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

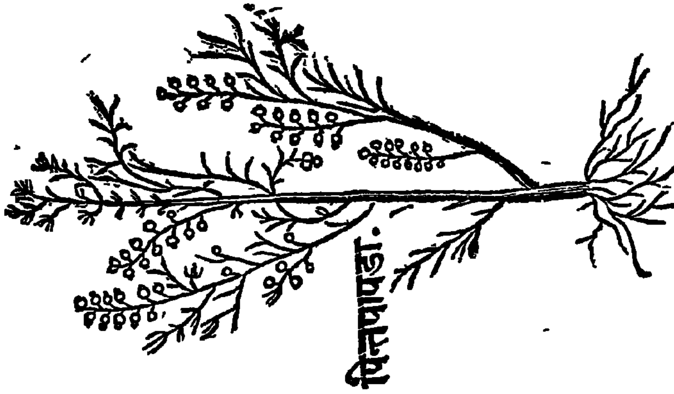
वासातिक्ताकटुःशीताकासघ्नीरक्तपित्तजित् ।
कामलाकफवैक्लव्यज्वरश्वासक्षयापहा ॥ (राजनि०)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, कफविकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अडूसेका क्षुप होताहै, पत्ते लम्बे अनीदार, अमरूदकी समान होतेहैं, फूल सफेद लगताहै, दूसरा एक और लाल फूलका अडूसा होता है, अडूसा सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

पर्पटनामानि ।

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः ।
कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥



अर्थ-पर्पट, वरातिक्त, पर्पटक, पांशुपर्य्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु, तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पांशु, कलपाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारी, कटुपत्र, नक्र, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामें	पर्पट ।
हिन्दीभाषामें	पित्तपापडा, दवन पापरा ।
वंगभाषामें	क्षेत पापडा ।
मराठीभाषामें	सिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमरें ।
वमू०	पित्तपापडा ।
गुजरातीभाषामें	पितपापडो, खडसलियो ।
	क्षेत्रपर्पट, धातो ।
कर्णाटकी भाषामें	पर्पाटक ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापार्टकमु ।
औत्कलीभाषामें	जडपॉपुडा ।
इंग्रेजीभाषामें	जस्टिसयाप्रोकंबेन्स । Justici Procorahens
लैटिन् भाषामें	फुमेरियापार्वीफ्लोरा । Eumeria Parviflora
	फुमेरियाओफिसिनेलीस । Fumcria officinalis
फारसीभाषामें	शातरा ।
अरबीभाषामें	बकलतल मलीक ।

अस्य गुणाः ।

पर्पटःशीतलस्तिक्तःसंग्राहीवातकोपनः ।

लघुःपाकेचकटुकोहरेत्पित्तकफज्वरान् ॥
रक्तदोषारुचिर्दाहग्लानिभ्रममदाञ्जयेत् ।
प्रमेहवान्तितृड्रक्तपित्तानांचविनाशकः ।
अस्यशाकातुसंग्राहीशीतावातकरालघुः ।
तिक्तारक्तरुजंपित्तंज्वरंतृष्णाञ्चनाशयेत् ।
कफंभ्रमंचदाहञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-पित्तपापडा-शीतल, कडवा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हलका, पचनेमें चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविकार, अरुचि, दाह, ग्लानि, भ्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है । इसका शाक-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, कडवा, रक्तरोग, पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करेहै ।

विवरण । इसका क्षुप होताहै, इसकी दो जाती हैं एकमें नीला और दूसरेमें लाल फूल आताहै, इन दोनोंमें लालफूलका अधिक गुणवाला है ।

निम्बनामानि ।



नीम.

निम्बोनियमनोनेतापिचुमंदःसतिक्तकः ।
अरिष्टःसर्वतोभद्रःसुभद्रःपारिभद्रकः ॥
शुकप्रियःशीर्षपर्णोयवनेष्टोवरत्वचः ।
छर्दनोहिंगुनिर्यासःपीतसारोरविप्रियः ॥

अर्थ–निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमंद, सतिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वरत्वच, छर्दन, हिंगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालक, पिचुमंद, पक्वकृत, पूयारि, अर्कपादप, पूकमालक, कीटक, विबन्ध, निम्बक, कैटर्य्य, छर्दिघ्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्णपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें	निम्ब ।
हिन्दीभाषामें	नीम ।
वंगलाभाषामें	निमगाछ ।
मराठीभाषामें	कडूनिंब ।
गुजरातीभाषामें	लिंबडो ।
कर्णाटकीभाषामें	बेड बेवु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेया, टोयचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	वेप्पूमरम ।
इंग्रेजीभाषामें	निंबट्री । Nunbtree
लैटिन्भाषामें	एकाडिरेकटा इंडिका । Azadiracta Indica
	मेलियाएकाडिरेकटा । Meli Aoadziracta
फारसीभाषामें	नेनवूनीम दरख्तहक ।

अस्य गुणाः ।

प्रभद्रकःप्रभवतिशीततिक्तकःकफव्रणक्रिमिवमिशोफशांतये ।
बलासभिद्बहुविधपित्तदोषजिद्विशेषतोहृदयविदाहशांतिकृत् ।

अर्थ–प्रभद्रक-(नीम) शीतल, कडवा तथा कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, वलास, बहुविध पित्तदोष और विशेषकरके हृदयकी दाहको शान्तकरैहै ।

अन्यच्च ।

निम्बवृक्षोलघुःशीतस्तिक्तोग्राहीकटुःस्मृतः ।
अग्निमांद्यकरश्चैवव्रणशोधनकारकः ॥
शोथपाककरोबालेहितोरुच्योमतोबुधैः ।
कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापहः ॥
वातंकुष्ठञ्चहृद्दाहंश्रमंकासंज्वरंतृषाम्
अरुचिंरक्तदोषञ्चमेहञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीम-हलका, शीतल, कडवा, ग्राही, कटु, मन्दाग्निकारक, व्रण-शोधक, शोफको पकानेवाला, बालकोंको, हितकारक तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, खांसी, ज्वर, तृषा अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाशकहैं।

अस्य कोमलपल्लवगुणाः।

कोमलःपल्लवश्चास्यग्राहकोवातकारकः।
रक्तपित्तंनेत्ररोगंकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-ग्राही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशकहैं।

अस्य सामान्यपत्रगुणः।

निम्बपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत्।
वातलंकटुपाकञ्चसर्वारोचककुष्ठनुत्। (भा० प्र०)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी, कृमि, पित्त और विषविनाशकहैं। बादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरुचि और कुष्ठनाशक हैं।

अस्य जीर्णपत्रगुणाः।

जीर्णपर्णंविशेषेणव्रणनाशकरंमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके पुराने पत्ते-विशेष करके व्रणको दूर करनेवाले हैं।

अस्य पुष्पगुणाः।

निम्बवृक्षस्यपुष्पाणिपित्तघ्नानिविशेषतः।
तिक्तानिचकृमिघ्नानितथाकफहराणिच ॥

अर्थ-नीमके फूल-पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफको हरनेवाले हैं।

अस्य सूक्ष्मशाखादिगुणाः।

निम्बस्यसूक्ष्मशाखातुकासश्वासार्शगुल्महा।
कृमिमेहहराप्रोक्ताफलंचामंलघुस्मृतम् ॥
स्निग्धञ्चभेदकंचोष्णंमेहकुष्ठविनाशकम्।

अर्थ-इसकी सूक्ष्मशाखें-खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली हैं, इसके अपक्व फल (कच्चीनिंबोली) लघु, स्निग्ध, भेदक, गरम, प्रमेह और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च ।

आमंफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुकंमतम् ।
स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥

अर्थ-कच्ची निंबोली-रसमें कडवी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म और बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

निम्बस्यपक्वंमधुरंसुतिक्तंस्निग्धंफलंशोणितपित्तरोगे ।
कफेप्रशस्तंनयनामयघ्नंक्षतक्षयघ्नंगुरुपिच्छलञ्च ॥

अर्थ-पक्की निंबोली-मधुर, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छलहै ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणाः ।

निम्बबीजस्यमज्जातुकुष्ठघ्नीकृमिनाशिनी ।

अर्थ-निंबोलीकी मींग-कुष्ठ और कृमिनाशक है ॥

अस्य तैलगुणाः ।

निम्बतैलन्तुकुष्ठघ्नंतिक्तंकृमिहरंपरम् ॥

अर्थ-नीमके वीजोंका तेल-कडवा कुष्ठ और कृमिनाशक है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणाः ।

निम्बवृक्षस्यपञ्चांगंरक्तदोषहरंमतम् ।
पित्तंकण्डूंव्रणंदाहंकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नीमका पंचांग-(छाल, पत्ते, फूल, फल, जड) रुधिरविकार, पित्त, कण्डू, व्रण, दाह और कुष्ठको दूर करैहै ।

विवरण । नीमका वृक्ष बडा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें अधिकतासे पाया जाताहै । वसंतऋतुके आरम्भमें नये पत्ते और अन्तमें फूल आतेहैं । वमिरोगमें पत्तोंको पानीमें पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और कुष्ठरोग बंद होजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमें इसका व्यवहार होता है । मसूरकी दालको इसके पत्तोंमें मिलाकर चैत्र महीनेमें देनेसे अत्यन्त विषेले सांपकाभी विष नहीं चढताहै । व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल, तेल, जड । मात्रा १ पल ।

महानिम्बनामानि।

महानिम्बःस्मृतोद्रेकाकार्मुकोविषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्चरम्यकःक्षीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, क्षीर, (काकाण्ड, बृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रेष्क, हिमद्रुम, पार्वत, गैरिक, शुक्रसारक, सक्कालेयक, गिरिपत्र, पवनेष्ट, कैटर्य्य)

संस्कृतभाषामें	महानिम्ब ।
हिन्दीभाषामें	वकायन ।
वंगलाभाषामें	वोडानिम, महानिम ।
मराठीभाषामें	वकाणीनिंव, कडुनिंव ।
गुजरातीभाषामें	वकान्य ।
कर्णाटकीभाषामें	महावेड ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेदवेया, गंगराविचेट्टु, तुरकवयक, काण्डवेय ।
तामिलीभाषामें	मालाइवेतुवावेप्पम ।
लैटिन् भाषामें	मेलिया एझेडेरक । Melia Azedarach
फारसीभाषामें	आजाददरख्त ।
अरवीभाषामें	वान (वृक्ष) हवुल, (वीज)

अस्य गुणाः ।

महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः ।
कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् (ध०नि०)

अर्थ-वकायन-शीतल, रूक्ष, कडवी, मलरोधक, कषेली, तथा कफ, पित्त, क्रिमि, वमन, कोढ, हल्लास (उबकाई) और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

महानिम्बःकटुस्तिक्तःशीतश्चतुवरोमतः ।
रूक्षोग्राहीकफंदाहंव्रणंरक्तरुजंतथा ॥
पित्तंकृमींश्चविषमज्वरंचहृदयव्यथाम् ।
सर्वकुष्ठानिछर्दिंचप्रमेहंचविषूचिकाम् ॥
मूषिकायाविषंगुल्मंशीतपित्तञ्चनाशयेत् ।
कोठरोगंचार्शरोगंश्वासञ्चविनिवारयेत् ॥

अर्थ-वकायन--कटु, तिक्त, शीतल, कषाय, रूक्ष, ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकारके कुष्ठ, वमन, प्रमेह, विषूचिका, मूषेका विष, गुल्म, शीतपित्त, कोढरोग; अर्शरोग और श्वासरोगको निवारण करनेवालीहै ।

विवरण--वकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होतेहैं, पत्ते किंचित् वडे होतेहैं, बकायनके फूल भी नीमकी समान होतेहैं परन्तु कुछ नीले रंगके होतेहैं फल गोल गोल होते हैं ।

कैडर्य्यनामानि ।

कैडर्य्योऽन्योमहानिम्बोरामणोरमणस्तथा ।
गिरिनिम्बोमहारिष्टःशुक्रसारोऽलकाह्वयः ॥

अर्थ-कैडर्य्य--महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्रसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, प्रियसाल, शुक्रसार, वरतिक्त)

संस्कृतभाषामें	कैडर्य ।
हिन्दीभाषामें	मीठानीम, कृष्णनिम्ब, वरसंग ।
वंगभाषामें	घोडानिम्विशेष ।
मराठीभाषामें	कढ्यानिंब, धाणेरानिंब ।
गुजरातीभाषामें	मोठोलीवडो ।
कर्णाटकीमें	कयाहैवेड ।
तैलिङ्गीमें	कारीवेया ।
लैटिन्भाषामें	मरेयाकोनिजिआई । Muryaya Korınjıı
इंग्रेजीभाषामें	सर्जदकरखी कुनाह ।

अस्य गुणाः ।

कैडर्यःकटुकस्तिक्तःकषायःशीतलोलघुः ।
सन्तापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मीठा नीम--कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, लघु तथा सन्ताप, शोष, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कैडर्यःशीतलस्तिक्तःकटुश्चतुवरोलघुः ।
दाहार्शःकृमिशूलघ्नःसन्तापविषनाशनः ॥
शोफकण्डूभूतबाधानाशयेदितिकीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ-मीठानीम-शीतल, कडवा, चरपरा, कषेला, हलका तथा दाह, बवासीर, कृमि, शूल, संताप, विषनाशक, सूजन, कण्डू, और भूतबाधाको हरनेवाला है।

विवरण। मीठेनीमका वृक्ष होताहै, पत्ते नीमकी समान किन्तु कोरें रहित होतेहैं, निंबोली झुमखेमें आतीहै और पकनेके समय निंबोलीका रंग लाल पड जाताहै।

पारिभद्रनामानि।

पारिभद्रश्चपालाशोरक्तपुष्पःप्रभद्रकः।
कण्टकीपारिजातःस्यान्मन्दारःकण्टकिंशुकः॥

अर्थ-पारिभद्र, पालाश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार, कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, क्रिमिशत्रु, रक्तकुसुम, कृमिघ्न, बहुपुष्प, रक्तकेशर)

संस्कृतभाषामें	पारिभद्र।
हिन्दीभाषामें	फरहद।
वंगभाषामें	पालतेमान्दार।
मराठीभाषामें	पानरो (को०) पारिंगा।
गुजरातीभाषामें	पांडेरवो।
कर्णाटकीभाषामें	हरिवाल। (भरुकमरम)
तैलिङ्गीभाषामें	मुल्लमोतिचेट्टु मोदुगु, वारिदेचेट्टु।
द्राविडीभाषामें	पंजीर।
तामिलीभाषामें	मुराक।
लैटिन्भाषामें	एरिथ्रिनाइंडिका Erythrina inbica एरिथ्रिनासुवरोझा Erythrina Subrosa

अस्य गुणाः।

पारिभद्रःकृमिश्लेष्ममेदःकफानिलापहः॥ (म०नि०)

अर्थ-फरहद-कृमि, कफ, मेद और कफवातविनाशक है।

अपिच।

पारिभद्रःकटूष्णःस्यात्कफवातनिकृन्तनः।
अरोचकहरःपथ्योदीपनश्चापिकीर्त्तितः॥ (रा०नि०)

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है ।

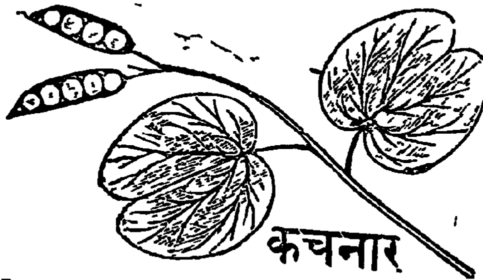
अन्यच्च ।

पारिभद्रःकटूष्णश्चपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
अरोचकःकफकृमिमेहशोफहरःस्मृतः ॥
पुष्पंपित्तरुजंहन्तिकर्णव्याधिंविनाशयेत् ।

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करेहै, इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक हैं ।

विवरण । इसके वृक्ष जंगल और सडकोंपर होतेहैं, पत्ते ढाककी समान एक डालीमें तीन तीन होते हैं, फूल लाल और सुन्दर होताहै, इसपर फली आतीहैं, इसकी शाखाओंमें सूक्ष्म कांटे होते हैं। व्यवहार, छाल, पत्ते, फूल । मात्रा २ मासेकी ।

काञ्चनारनामानि ।



काञ्चनोरक्तपुष्पश्चकान्तारःकनकप्रभः ।
सुवर्णारोथगिरिजःकरकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ-काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युग्मपत्र, महापुष्प, गण्डारि, यमलच्छद, काञ्चनार, काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुद्दार, रक्तकाञ्चन, चम्पविदल, यमलच्छद)

कोविदारनामानि ।

कोविदारोथकुद्दालःकुद्दारःकुण्डलीकुली ।
आस्फोतोद्दालकःस्वल्पकेसरश्चमरीमतः ॥

अर्थ-कोविदार, कुद्दाल, कुद्दार, कुण्डली, कुली, आस्फोत, उद्दालक, स्वल्पकेसर, चमरी, (काञ्चनाल, कर्बूदार, पाकारी, अश्मन्तक)

संस्कृतभाषामें	काञ्चनार (ल), कोविदार ।
हिन्दीभाषामें	कचनार, सफेद्कचनार ।
बंगभाषामें	काञ्चन. सफेद्काञ्चन ।
मराठीभाषामें	कोरल, काञ्चनवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	चम्पाकाटी, चम्पोकांचनार जेना पाद्डाने चम्पाभाजी कहे छे ।
कर्णाटकीभाषामें	कोचाले कचनार ।
तैलङ्गीभाषामें	देवकाञ्चन ।
लैटिन्भाषामें	वोहिनिया, वेरिएगेटा । Banheria Yariegata
	वोहिनिया परपुरिआ B. Purpuria

काञ्चनारगुणाः ।

काञ्चनारोहिमोग्राहीतुवरःश्लेष्मपित्तनुत् ।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कचनार-शीतल, मलरोधक, कषेला, पित्त, कफनाशक तथा कृमि, कोढ, गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रणका नाशकरे है।

अन्यच्च ।

रक्तस्तुकाञ्चनःशीतःसरोह्यग्निप्रदीपनः ।
संप्रोक्तस्तुवरोग्राहीकफपित्तव्रणक्रिमीन् ॥
गण्डमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्चनाशयेत् ।
गुदभ्रंशंरक्तपित्तंनाशयेत्पुष्पमस्यच ॥
शीतलं तुवरंरूक्षंसंग्राहिमधुरं लघु ।
पित्तंक्षयञ्चप्रदरंकासंरक्तरुजंहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-लालकचनार-शीतल, सारक, अग्निप्रदीपक, कषेला, ग्राही तथा कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ, वात, गुदभ्रंश और रक्तपित्तको दूर करे है । इसके फूल-शीतल, कषेले, रूखे, ग्राही, मधुर, हलके तथा पित्त, क्षय, प्रदर, खांसी और रक्तरोगको दूर करे हैं ।

श्वेतकाञ्चनगुणाः ।

श्वेतस्तुकाञ्चनोग्राहीतुवरोमधुरःस्मृतः ।
रुच्योरूक्षःश्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥
क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तोगुणाश्चान्येतुरक्तवत् ।

अर्थ-सफेदकचनार, ग्राही, कषेला, मधुर, रुचिकारक, रूक्ष, श्वास, खांसी, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदररोगनाशक है। शेष गुण लाल कचनारकी समान जानने ।

कोविदारगुणाः ।

कोविदारोदीपनःस्यात्कषायोव्रणरोपणः ।
संग्राहीसारकःस्वादुःपर्णशाकेषुचोत्तमः ॥
मूत्रकृच्छ्रंत्रिदोषञ्चशोषंदाहंकफंतथा ।
वातंहरेत्पुष्पगुणारक्तकाञ्चनपुष्पवत् ॥

अर्थ-कोविदार-(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, कषेला, व्रणको भरनेवाला, मलरोधक, सारक, स्वादिष्ठ यह पत्रशाकोंमें उत्तम है । तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, शोष, दाह, कफ और वातनाशक है । इसके फूलोंके गुण लालकचनारके समान जानने ।

पीतकाञ्चनारगुणाः ।

पीतस्तुकाञ्चनोग्राहीदीपनोव्रणरोपणः ।
तुवरोमूत्रकृच्छ्रस्यकफवाय्वोश्चनाशनः ॥

अर्थ-पीला कचनार-ग्राही, दीपन, व्रणरोपण, कषेला, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वातनाशक है ।

काञ्चनीगुणाः ।

काञ्चन्युक्ताशीर्षरुजंत्रिदोषंचविनाशयेत् ।
स्तन्यस्यवर्द्धनकरीऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-काञ्चनी-(छोटाकचनार) शिरोरोग और त्रिदोषनाशकहै । तथा स्तनोंमें दूध बढानेवालीहै ।

विवरण । कचनार लाल और सुफेद इनमें दोसै दोप्रकारका होता है । यह वृक्ष जंगल और पहाडोंमें अधिक होतेहैं । पत्ते एक एक शाखामें बरावर दोदो होते हैं, सुफेद फूल आतेहैं, और फलियें लगतीहैं, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसाही होताहै परन्तु फूल लाल रंगके होतेहैं ।

शोभाञ्जननामानि ।

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णान्धकाक्षीबसुभाञ्जनः ॥

अर्थ-शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णान्धक, अक्षीब, सुभाञ्जन, (तीक्ष्णान्धक, अक्षीव, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विद्रधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतशाक, शाकपत्र, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, बहुमूल, दंशमूल, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कालीबक, मेचक, आक्षीब, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, तिलशिग्रु, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चलुषा, रुचिराञ्जन)

श्वेतशिग्रुनामानि ।

श्वेतशिग्रुःसुतीक्ष्णश्चमुखभङ्गःसिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, मुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतमरिच, रोचन, सुमूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि ।

रक्तोऽसौमधुशिग्रुःस्यात्सुरंगीचशुभाञ्जना ॥

अर्थ-रक्तशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरंगी, शुभाञ्जना, (कृष्णबीज, गर्भपातक, रक्तक, मधुर, बहुलद, सुगंध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतभाषामें	शोभाञ्जन, श्वेतशिग्रु । रक्तशिग्रु ।
हिन्दीभाषामें	सैंजिना, सफेदसैंजिना, लालसैंजिना ।
वंगभाषामें	सजिने, सादासजिने, लालसजड़ो ।
मराठीभाषामें	शेगट, शेवगा ।
गुजरातीभाषामें	शरघवो ।
कर्णाटकीभाषामें	विलिपतुग्गि, कंपनेयनुगि ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुलंगा ।
तामिलीभाषामें	मोरंग ।
दक्षिणीभाषामें	सेगत ।
इंग्रेजीभाषामें	होर्सरेडीशट्रि Horse Rabish Tree
लैटिन्भाषामें	मोरिंगा टेरिगोस्परमा Moringapterygooperma

शोभाञ्जनगुणाः ।

शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः ।

दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारतिक्तोविदाहकृत् ॥
संग्राहीशुक्रलोहृद्यःपित्तरक्तप्रकोपनः ।
चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ॥
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सैंजिना-चरपरा, पचनेमेंभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिकारक, रूखा, क्षारयुक्त, कडवा, दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपित करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णकटुःस्वादूष्णःपिच्छिलस्तथा ।
जन्तुवातार्त्तिशूलघ्नश्चक्षुष्योरोचनःपरः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सैंजिना-तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पिच्छिल तथा कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल करेहै । नेत्रोंको हितकारी और परम रोचनहै ।

श्वेतशिग्रुगुणाः ।

श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ।
प्लीहानंविद्रधिंहन्तिव्रणघ्नःपित्तरक्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सफेदसैंजिनेके गुणभी सैंजिनेकी समान हैं, विशेषकरके दाह उत्पन्न करेहै । तथा प्लीहा, विद्रधि और व्रणको दूरकरेहै तथा पित्तरक्तकारकहै ।

अन्यच्च ।

श्वेतशिग्रुःकटुस्तीक्ष्णःशोफानिलनिकृन्तनः ।
अङ्गव्यथाहरोरुच्योदीपनोमुखजाड्यनुत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-सफेदसैंजिना-चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाशक, वातविनाशक, अंगव्यथानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपनकरनेवाला और मुखकी जडताको दूरकरनेवाला है ।

रक्तशिग्रुगुणाः ।

रक्तशिग्रुर्महावीर्योमधुरश्चरसायनः ।

शोथंवातञ्चपित्तञ्चआध्मानञ्चकफंजयेत् ॥

अर्थ-लालसैंजिना-महावीर्य्यवाला, मधुर, रसायन तथा सूजन, वात, पित्त, आध्मान और कफको हरनेवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः॥

अर्थ-मधुशिग्रु-(लालसैंजिना) विशेष करके दीपन और सारकहै ।

शिग्रुवल्कलपत्राणांस्वरसःपरमार्तिहृत् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी छाल और पत्तोंका स्वरस अत्यन्त पीडाको दूरकरेहै ।

शिग्रुबीजगुणाः ।

चक्षुष्यंशिग्रुबीजंचतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ।
अवृष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ-सैंजिनके बीज-नेत्रोंको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, विषविनाशक, अवृष्य, कफघ्न, वातनाशक और इसके नास लेनेसे शिरकी पीडा दूर होतीहै।

शिग्रुशाकगुणाः ।

शिग्रुशाकंहिमंस्वादुचक्षुष्यंवातपित्तहृत् ।
बृंहणंशुक्रकृत्स्निग्धंरुच्यंमदकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-सैंजिनेका शाक-शीतल, स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्त-नाशक, बृंहण, तेजवर्द्धक, शुक्रजनक, स्निग्ध, रुचिकारक तथा मद और कृमिनाशक है ।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथनुत् ।
कृमिकृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥

अर्थ-सैंजिनेके फूल-चरपरे, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुरोग और शोथनाशक हैं, कृमिजनक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मका नाशकरेहैं।

शिग्रुफलगुणाः ।

शोभाञ्जनफलंस्वादुकषायंकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनंपरम् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी फली-स्वादिष्ठ, कषेली, कफपित्तनाशक तथा शूल,

कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करेहै तथा दीपन है ।

विवरण । सैंजिनेके वृक्ष बाग, वन और जंगलमें होतेहैं । इसकी फूलोंके लौटफेरसे तीन जातीहैं, फूल सफेद, नीले और लाल आतेहैं, इनमेंसे सफेद फूलका सैंजिना अधिकतासे होताहै, इसकी फलियोंको दालमें डालकर खाते हैं, सैंजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करताहै ।

अपराजितानामानि ।

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्भूमिलग्नापराजिता ।
नगपर्य्यायकर्णीचगवाक्षीगिरिशालिनी ॥

अर्थ-आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, अपराजिता, नगपर्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी, सितपुष्पा, श्वेतस्यंदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, सुपुष्पी. विषहंत्री, सुपुत्री, सिंहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी) –

नीलापराजितानामानि ।



नीलपुष्पीमहानीलास्यान्नीलागिरिकर्णिका ।
गवादिनीव्यक्तगन्धाविष्णुक्रान्ताविभाण्डिका ॥

अर्थ-नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका, गवादिनी, व्यक्तगन्धा, विष्णुक्रान्ता, विभाण्डिका ।

संस्कृतभाषामें	अपराजिता, नीलापराजिता ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकोयल, नीलीकोयल ।
वंगलाभाषामें	अपराजिता, नीलपराजिता ।
मराठीभाषामें	गोकर्णी काळी, पांढरी ।

गुजरातीभाषामें	गरणी ।
कर्णाटकीभाषामें	विलीयगिरिकर्णिके, नीलगिरिकर्णिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नीलगंटुना ।
लैटिन्भाषामें	क्लीटोरिआ टरनेटिया Cletorea Ternatea
लै०	मेजोरिअन् Megorian
अं०	मजीरयुतएहिंदी ।

अपराजितागुणाः ।

श्वेतागोकर्णिकाकट्वीशीतातिक्ताचबुद्धिदा ।
चक्षुष्यातुवराचैवसराविषविनाशिनी ॥
त्रिदोषंशीर्षशूलञ्चदाहंकुष्ठञ्चशूलकम् ।
आमंपित्तरुजंचैवशोथंजन्तून्व्रणंकफम् ॥
ग्रहपीडाशीर्षरोगंविषंसर्पस्यनाशयेत् ।

अर्थ-सफेद कोयल-चरपरी, शीतल, कडवी, बुद्धिदायक, नेत्रोंको हितकारी, कषेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक-शूल, दाह, कोढ, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, व्रण, (घाव), कफ, ग्रहपीडा, मस्तकरोग और सर्पके विषको दूर करेहै ।

कृष्णगोकर्णिकागुणाः ।

कृष्णगोकर्णिकातिक्तारसेस्निग्धात्रिदोषहा ।
शीतवीर्य्यावातपित्तज्वरदाहभ्रमापहा ॥
पिशाचबाधारक्तातिसारोन्मादमदापहा ।
अतिकासश्वासकफकुष्ठजंतुक्षयापहा ॥
अन्येगुणास्तुसुश्वेतगोकर्णीसदृशामताः ।

अर्थ-नीलीकोयल-कडवी, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, शीतवीर्य्य तथा वात, पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचबाधा, रक्तातिसार, उन्माद, मद, अत्यन्त-खांसी, श्वास, कफ, कोढ, जन्तु, और क्षयरोगको दूर करेहै । शेष गुण सफेद अपराजिताकी समान जानने ।

विवरण-कोयल सफेद और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकीहै यह खेत बाग और उपवनोंमें होतीहै पत्ते छोटे गुलाबकी समान होतेहैं इसपर फली लम्बी आतीहैं ।

सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसोनिर्गुण्डीसिन्धुवारकः ॥

अर्थ-इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निर्गुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धुवारक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिष, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शक्राणी, काशनाशिनी, सुरसा, सिन्धु, शुक्लपृष्ठक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक, अनन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।





नीलिकानीलनिर्गुण्डीसिन्दुकोनीलसिन्दुकः ॥

अर्थ-नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, नीलसिन्दुक, (नीलसिन्दुवार, पीतसहा, निर्गुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलिका, कपिका, शोफालिका, शीतभीरु, नीलिका, नीलमञ्जरी, कर्त्तरीपत्रा, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री, वनेंद्राणी)

संस्कृतभाषामें	सिन्दुवार, नीलसिन्दुवार, निर्गुण्डी, निर्गुण्डीभेद ।
हिन्दीभाषामें	सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, नीलसम्हालु, सिहरु, सम्हालुके बीज ।
बंगभाषामें	निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ।
मराठीभाषामें	निर्गुण्डी-पांढऱ्याफुलांची, काळ्याफूलांची, लिंगुर, निर्गुण्डीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	नागडच, नागडचनावी ।

कर्णाटकीभाषामें	करियल्लाक्किमेउडी विलीयलोके ।
तामिलीभाषामें	नोक्चि, निनोंचि, मनजाप ।
वम्०	निर्गुण्डी, कार्ट्रि, कल अडल्लुसा ।
द्रा०	सान्वालि, कालिसुम्बालि ।
पञ्जाबीभाषामें	वणा, लहरि ।
कोकणीभाषामें	नगूड, सेन्दुवार ।
इंग्रेजीभाषामें	काईवलिव्ड चेष्ट्री । Fiveleaveb Chostetee
लैटिन्भाषामें	वाईटेक्सनिगण्डु । Vitex Negunbo
तैलिङ्गीभाषामें	तेलावाविली, नाविलिचेट्टु, तेल्लव, नल्लवविले वविली
फारसीभाषामें	परंगुष्ट, तुरुमेपञ्जंगुष्ट-मिसवान ।
अरवीभाषामें	असलुक, हड्डुलफुक्का, बजरुल, असलुक ।

सिन्दुवारगुणाः ।

सिन्दुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः ।
केश्योनेत्रहितोहंतिशूलशोथाममारुतान् ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीला सिता द्विधा ।
सिन्दुवारदलंजन्तुवातश्लेष्महरंलघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सम्हालु-और नीलसम्हालु दोनों स्मरणशक्तिदायक; कषेले, चरपरे, हलके बालोंको सुन्दरतादायक, नेत्रोंको हितकारी तथा शूल, सूजन, आमवात, कृमि, कोढ, अरुचि, कफ और ज्वरको दूर करेहैं । सम्हालुके पत्ते-कृमि, वात और कफनाशक हैं तथा हलकेहैं ।

कटूष्णानीलनिर्गुण्डीतिक्तारूक्षाचकासजित् ।
श्लेष्मशोफसमीरार्तिप्रदराध्मानहारिणी॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलनिर्गुण्डी-कटु (चर्परी) उष्ण (गरम) तिक्त (कडवी), रूक्ष (रूखी) तथा कास (खांसी) कफ, शोफ (सूजन), वातकी वेदना, प्रदररोग और आध्मान (अफारा) को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

निर्गुण्डीकटुकातिक्तारूक्षोष्णाचकषायका ।
स्मृतिप्रदानेत्रहिताकेश्यालघ्वग्निदीपनी ॥
मेध्यावर्ण्याचसंप्रोक्तागुदवातक्षयापहा ।

सन्धिवातश्चवातश्चशोफंवामंकृमींस्तथा ॥
कुष्ठंकफंव्रणंप्लीहांगुल्मंकण्ठरुजंतथा ।
विषशूलंचारुचिंचज्वरमेदोरुजंतथा ॥
गृध्रसींचप्रतिश्यायंकासंश्वासंचनाशयेत् ।
पित्तनाशकरीप्रोक्तापर्णमस्यालघुस्मृतम् ॥
कृमिनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः ।

अर्थ—निर्गुण्डी—चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कषेली, स्मरणशक्तिदायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक, हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, वर्णकारक तथा गुदवात, क्षय, सन्धिवात, सूजन, आम, कृमि, कोढ, कफ, घाव, प्लीहा, गोला, कण्ठरोग, विष, शूल, अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना) खांसी, श्वास और पित्तको दूर करेहै । इसके पत्ते—हलके और कृमिरोगनाशक हैं ।

कर्तरीनिर्गुण्डीगुणाः ।

निर्गुण्डीकर्त्तरीयुक्ताकट्वीतिक्ताकफापहा ।
वातंक्षयश्चशूलश्चकण्डूंकुष्ठंचनाशयेत् ॥

अर्थ—कर्तरी, निर्गुण्डी—चरपरी, कडवी, कफनाशक तथा वात, क्षय, शूल, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः ।

प्रोक्ताचारण्यनिर्गुण्डीपथ्यापित्तज्वरंहरेत् ।
विषंचगृध्रसीवातंनाशयेद्वर्णकारिणी ॥
पर्णंचास्यास्तुकटुकंचाग्निदीप्तिकरंलघु ।
कृमीन्कफश्चवातश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
कटु चोष्णं पुष्पमस्यास्तिक्तंकृमिकफापहम् ।
प्लीहांगुल्मश्चवातश्चकुष्ठंशोथश्चनाशयेत् ॥
अरुचेर्नाशकंप्रोक्तंकण्डूंचैवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ—वननिर्गुण्डी—पथ्य तथा पित्तज्वर, विष और गृध्रसीवातनाशक

है और वर्णकारक है। इसके पत्ते—चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले, हलके तथा कृमि, कफ और वातनाशकहैं। इसके फूल—चरपरे, गरम, कडवे, तथा कृमि, कफ, प्लीहा, गोला, वात, कोढ, सूजन, अरुचि और कण्डू तथा खुजलीका नाश करेहै।

विवरण। निर्गुण्डीके वृक्ष बाग और वनोंमें होते हैं। पत्ते अरहरकी समान होतेहैं। एक दंडीपै पांच पांच होतेहैं। पत्ते नीले और नीचे सपेद होतेहैं। निर्गुण्डी अनेक जातिकी होतीहै किसीपै काले और किसीपै सपेद फूल आते हैं। फल आमके मौरकी समान गुच्छेदार और केशरी रंगके होतेहैं व्यवहार। मूल। मात्रा ३ मासेकी।

कुटजनामानि।



कुटजोमल्लिकापुष्पःशक्राशोवरतिक्तकः॥

अर्थ—कुटज, मल्लिकापुष्प, शक्राश, वरातिक्त, (शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका, पाण्डुर, कटुक, कुटक, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक वृक्षक, शक्राह्वय, शक्रपर्याय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिका, पुष्प, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पाण्डुद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रशाखी)

संस्कृतभाषामें	कुटज।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरैया।
वंगभाषामें	कुडाचि, कुरचि।
मराठीभाषामें	कुडा।
गुजरातीभाषामें	कडो।

कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेयमहनु ।
तैलिंगीभाषामें	अंकेलु चंगलकुष्ठ ।
तामिलीभाषामें	वेप्याले
तु०	कोडंजि ।
इंग्रेजीभाषामें	ओवल्लालिव्ड रोझबे । Ovalleaved Rose Bay
लैटिन् भाषामें	राइटियाएंटिडिसेन्टारिका । Wrightia antidy terica
अरबीभाषामें	तिवाज ।

अस्य गुणाः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोतिसारपित्तास्रकफतृष्णामपित्तनुत् ॥
तत्पुष्पं शीतलं तिक्तं कषायं लघु दीपनम् ।
वातलं कफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित् ॥
तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यंजनं चामवातजित् ।
रुच्यं कफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत् ॥ (म० वि०)

अर्थ—कुडा—चरपरा, रूखा, दीपन, कषेला, हलका तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करैहै । कुडेके फूल—शीतल, कडवे, कषेले, हलके, दीपन, वातकारक तथा कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करैहैं । इसकी फलियोंका शाक—व्यञ्जन, आमवातनाशक, रुचिकारक, कफनाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करैहै, इसकी विशेष पर्य्याय और गुण एवं विवरणादिक सब हरीतक्यादिवर्गमें देखो ।

करंजनामानि ।


करंज.

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकःपूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्जःकैडर्यःकलिमारउदाहृतः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, पूतिपत्रक, पूतिकरञ्ज, कैडर्य्य, कलिमार, (पूतिपर्ण, वद्धफल, रोचन, करज, करञ्जर्क, उदकीर्य)

अपिच ।

चिरबिल्वःकरञ्जोन्यःप्रकीर्योगौरएवच ।
उदकीर्योथषड्ग्रन्थोवृत्तपर्णःप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-चिराविल्व, प्रकीर्य, गौर, उदकीर्य, षड्ग्रन्थ, और वृत्तपर्ण ।

अन्यच्च ।

करञ्जोनक्तमालश्चपूतिकश्चिरबिल्वकः ।
पूतिपर्णोवृत्तफलोरोचनोगुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरविल्वक, पूतिपर्ण, वृत्तफल, रोचन, गुच्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तथाच

उदकीर्यस्तृतीयोन्यःषड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी ।
अंगारवल्लीशार्गष्ठाकाकघ्नीकरभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्य-षड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गष्ठा, काकघ्नी, करभण्डिका ।

महाकरञ्जिकाचैवमदहस्तिनिकाचसा ॥

अर्थ-महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (काकघ्नी, मदहस्तिनी)

संस्कृतभाषामें	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, षड्ग्रन्थ, महाकरञ्ज,
हिन्दीभाषामें	करञ्ज, करञ्जभेद ।
वंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	चापडाकरञ्ज, घाणेराकरञ्ज, वावला ।
गुजरातीभाषामें	करञ्ज, चरेलकणसे ।
कर्णाटकीभाषामें	नापसीयमरनु, वारुवहुलिगिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानुगचेट्टु, कंज ।
मला०	पोन्नं ।
तामिलीभाषामें	पुंगामारं ।

इंग्रेजीभाषामें स्मूथ्लिव्ड पोनगेमिया। Smooth leaved Pongamia
लैटिन्भाषामें पोनगेमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमस्
इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolia

करञ्जगुणाः ।

करंजःकटुकःपाकेनेत्र्योष्णस्तिक्तकोरसे ।
कषायोदावर्त्तवातानांयोनिदोषापहःस्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहृत्कण्डूकफविषापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्चसंप्रोक्तःफलमुष्णंलघुस्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णपाकेकटूष्णंस्याद्भेदकंपित्तलंलघु ।
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणंशोथञ्चनाशयेत ॥
पुष्पमुक्तंचोष्णवीर्य्यंपित्तवातकफापहम् ।
अस्यांकुरारसेपाकेकटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाःकफवातार्शःकुष्ठकृमिविषापहाः ।
शोथनाशकराःप्रोक्ताऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि.र.)

अर्थ–करंज–पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कडवी, कषैली तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, बवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवालीहै । करंजके फल–गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ, बवासीर और प्रमेहको दूर करै हैं ।

इसके पत्ते–पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हलके तथा कफ, वात, बवासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करै हैं । इसके फूल–उष्णवीर्य्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करै हैं । इसके अंकुर–रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले, पाचक, तथा कफ, वात, बवासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजनको दूर करनेवालेहैं ।

अपिच ।

करञ्जोज्वरत्वग्दोषनाशनोदंतदार्ढ्यकृत् ।

कटुकोभेदनस्तस्यफलंनयनपुष्पहृत् ॥
पित्तश्लेष्मण्युदासीनंविष्टम्भनविबन्धकृत्।(शो० नि०)

अर्थ-करंज-ज्वर और त्वचाके दोषको दूर करैहै, दाँतोंको दृढ करै है, चरपरी और दस्तावरहै। इसके फल-आंखके फूलेको दूर करै हैं। तथा पित्त और कफको हरै हैं, विष्टम्भ और विबन्धकारकहैं।

करञ्जतैलगुणाः।

करञ्जतैलंतीक्ष्णोष्णंकृमिहृद्रक्तपित्तकृत्।
नयनामयवातार्त्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत् ॥
वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्म्मदोषनुत्। (आ०सं०)

अर्थ-करञ्जका तेल-तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक तथा नेत्ररोग, वातकी वेदना, कोढ, कण्डू (खुजली) घाव आर वातका नाश करैहै, किञ्चित् पित्तकारक और इसका लेप करनेसे त्वचाके विकार दूर होते हैं।

महाकरञ्जगुणाः।

महाकरंजकस्तीक्ष्णःकटुचोष्णश्चतिक्तकः।
कण्डूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्रुग्विषव्रणापहा ॥

अर्थ-महाकरंज-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम, कडवी तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचाके रोग, विष और व्रणनाशकहै।

घृतकरंजगुणाः।

प्रोक्तोघृतकरंजस्तुकटुकोष्णोव्रणापहः।
वातंचसर्वत्वग्दोषंविषंचार्शोविनाशयेत् ॥
करञ्जइवसंप्रोक्तागुणास्त्वन्येभिषग्वरैः।

अर्थ-घृतकरञ्ज-चरपरी, गरम तथा व्रण (घाव), वात, सर्वप्रकारके त्वचाके रोग, विषरोग और अर्श (बवासीर) को दूर करैहै। शेष गुण करंजकी समान जानने।

गुच्छकरंजगुणाः।

गुच्छनामाकरंजःस्यादुष्णस्तिक्तःकटुःस्मृतः।
विचर्चिकावार्त

त्वग्दोषनाशकश्चैवऋषिभिःपरिकीर्तितः ।

अर्थ-गुच्छकरंज-गरम, कडवी, चरपरी तथा विचर्चिका, वात, विष, कण्डू, कुष्ठ, ववासीर और त्वचाके रोगोंका नाश करैहै ।

पूतिकरंजगुणाः ।

पूतिकरञ्जकःप्रोक्तोगुच्छपूर्वकरंजवत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरंजकी समानहैं ।

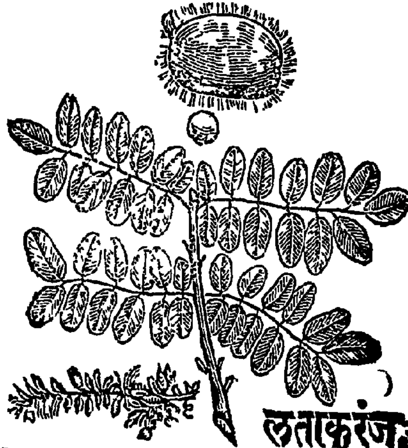
पूतिकरंजपत्रगुणाः ।

पूतिकरंजजंपत्रंलघुवातकफापहम् ।
भेदनंकटुकंपाकेवीर्य्योष्णंशोफनाशनम् ॥

अर्थ-पूतिकरंजके पत्ते-हलके, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर), पचनेमें चरपरे, उष्णवीर्य्य और शोफ (सूजन) नाशक हैं ।

विवरण । करंजके बहुत बडे २ वृक्ष वनमें होतेहैं, पत्ते-पाखरके पत्तोंकी समान गोल और ऊपरके भागमें चमकदार होतेहैं । इसमे फूल आसमानी रंगके आतेहैं और फलभी नीले २ झुमकेदार लगते हैं, पत्तोंमें दुर्गन्ध आती है । करंज छै सातप्रकारकी होती है ।

कण्टकरंजनामानि ।



कुबेराक्षीक्रकचिकाकरञ्जातिणगच्छिका ।
वारिणीतीरिणीवल्लीज्ञेयाकण्टकिनीतिच ॥

अर्थ-कुबेराक्षी, क्रकचिका, करंजा, तिणगच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी ।

संस्कृतभाषामें	कण्टकरंज।
हिन्दीभाषामें	करंजा, करंजुवा।
वंगभाषामें	काँटाकरंज।
मराठीभाषामें	सागरगोटा।
गुजरातीभाषामें	कांकच, तेनांफल-कांकचिया।
कर्णाटकीभाषामें	करञ्जभेदु।
तैलङ्गीभाषामें	कचकाई, गुच्चेपिक्का।
इंग्रेजीभाषामें	बोण्डकनट् Banducnut
लैटिन्‌भाषामें	सिसाल पिनिया बोण्डुसेला Caesalpinia Bondaeella
फारसीभाषामें	खाय, इवलीस।
अरबीभाषामें	अक्तमक्त।

कण्टकरंजगुणाः।

कण्टयुक्तःकरञ्जस्तुपाकेचतुवरःकटुः।
ग्राहकश्चोष्णवीर्य्यःस्यात्तिक्तःप्रोक्तश्चमेहहा॥
कुष्ठार्शोव्रणवातानांकृमीणांनाशनःपरः।
पुष्पंतुचोष्णंवीर्यंस्यात्तिक्तंवातकफापहम्॥

अर्थ-कञ्जा-पाकके समय चरपरा, कषैला, ग्राही (मलरोधक) उष्णवीर्य्य, कडवा तथा प्रमेह, कोढ, बवासीर, घाव, वात और कृमिनाशकहै। इसके फूल उष्णवीर्य्य, कडवे तथा वात और कफनाशकहैं।

विवरण। कंटककरंज अर्थात् करञ्जवेके वृक्ष मालीलोग पुष्पवाटिकाओंकी वाडोपर रक्षाके लिये लगादेतेहैं। और जंगलोंमें भी होजातेहैं परन्तु वह पेड लताकी सदृश होतेहैं और परस्पर गठ जातेहैं। उन झाड झांकडोंमें कांटे अधिक होतेहैं पत्ते-सिरसकी समान डालीमें आमने सामने लगे होतेहैं। फल-कचौरीके समान लगतेहैं परन्तु कांटोंसे ऐसे परिपूर्ण होतेहैं कि, तिलरखनेको ठौर नहीं होता उसमेंसे चार पांच बडी कौडीकी बराबर दाने निकलतेहैं। उनको करंजवा कहतेहैं ऊपरसे उनकी छाल राखके रंगके समान होतीहै भीतरसे सपेद गिरी निकलतीहै।

गुञ्जानामानि।

रक्तिकागुञ्जिकागुञ्जाकाकजंघाशिखण्डिनी।

कृष्णलाकाकिनीकक्षाकनीचिःक्काकणन्तिका ॥

अर्थ–रक्तिका, गुञ्जिका, गुञ्जा, काकजंघा, शिखंडिनी, कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणन्तिका (काकचिंची, शांगुष्ठा, काकादनी, काकतिक्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, काञ्ची, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिञ्चिका, काकपीलु, काकणन्ती, काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्तशल्या, ध्वांक्षनख, दुर्मोघा वायसादनी, चटकी, तुलाबीजा, अंगारवल्लरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीयाश्वेतकाम्बोजीश्वेतगुञ्जाभिरिण्टिका ।
श्वेतोच्चटाश्वेतबीजाश्वेतपूर्वाचसास्मृता ॥

अर्थ–श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, भिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतबीजा, श्वेतरक्तिका और श्वेतगुञ्जिका इत्यादि (चक्रशल्या, चूडाला)

संस्कृतभाषामें	गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा ।
हिन्दीभाषामें	घुँघुर्ची, चौंटली, चिरमिटी, सपेद घुँघची ।
वंगभाषामें	कुँच, सादाकुँच ।
मराठीभाषामें	गुंजा, को०–माडलवेल ।
गुजरातीभाषामें	चणोठी राती, चणोठीधोली ।
कर्णाटकीभाषामें	गुलगुंजे, एरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुलविंदे ।
तामिलीभाषामें	करिन ।
तु०	गोजी ।
म० –	कुन्नि गुंजा ।
उत्	रुंज ।
इंग्रेजीभाषामें	बिड्ट्री । Bead tree
लैटिन्भाषामें	एब्रेस् प्रिकेटोरियस् । Abrus precatorius
फारसीभाषामें	चश्मेखरूस् ।
अरबीभाषामें	हब सुर्ख, हब सुफेद ।

गुञ्जागुणाः ।

गुञ्जानुष्णारसेतिक्ताकषायाकफपित्तहा ।

चक्षुष्याशुक्रलाकेश्यात्वच्यारुच्याबलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरीतीव्रासविषामदमोहकृत् ।
यक्षग्रहविषंहन्तिकण्डूकुष्ठव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-घुँघची-अनुष्णा (गरमनहीं) कडवी, कषैली, कफघ्न, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको सुंदरतादायक, त्वचाको हितकारक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गंज) रोगनाशक, तीव्रविषयुक्त, मदकारक, मोहजनक तथा यक्ष, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ, घाव और कृमिरोगको नष्ट करैहै ।

द्विविधगुञ्जागुणाः ।

गुञ्जाद्वयंस्वादुतिक्तंबल्यंचोष्णंकषायकम् ।
त्वच्यंकेश्यञ्चरुच्यंचशीतंवृष्यंमतंबुधैः ॥
नेत्ररोगंविषंपित्तमिंद्रलुप्तंव्रणंकृमीन् ।
राक्षसग्रहपीडांचकण्डूंकुष्ठंकफंज्वरम् ॥
मुखशीर्षरुजंवातंभ्रमंश्वासंतृषंतथा ।
मोहंमदंनाशयतिबीजंवान्तिकरंमतम् ॥
शूलनाशकरंमूलंपर्णंचविषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जाविशेषेणवशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी (लाल और सफेद) घूँघची, स्वादिष्ठ, कडवी, बलकारक, गरम, कषैली, त्वचाको उत्तम करनेवाली, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग, विष, पित्त, इन्द्रलुप्त, व्रण, कृमि, राक्षस, ग्रहपीडा, कण्डू, कुष्ठ, कफ, ज्वर, मुखरोग, शीर्षरोग, वात, भ्रम, श्वास, तृषा, मोह और मदका नाशकरैहै । इसके बीज वान्तिकारक और शूलहारक हैं । इसकी जड और पत्ते-विषनाशकहैं । सफेद घूँघची-विशेषकरके वशीकरण है ।

विवरण । घूँघचीकी वेल जंगलमें अधिकतासे होतीहै । पत्ते इमलीके समान होतेहैं । और खानेमें मीठे लगतेहैं । फूल सेमकी समानहोतेहैं । और फली भी सेमकी सदृश गुच्छेवाली होतीहै । उन फलियोंमें घूँघची (चोंटली) होतीहैं इनमें लाल रंगकी चोंटलीके मुखपै कुछ कालापन होताहै और सफेद

रंगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रंगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमें मिलाकर रवडी करले वह रवडी धातुको बढानेवालीहै । चोंटलीका तेल त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको बढानेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार–मूल और बीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्य्यन्त है ।

कपिकच्छुनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ताशुकशिम्बाकपिप्रभा ।
शुकपिण्डीस्वयंगुप्ताकण्डूराशूकशिम्बिका ॥

अर्थ–कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी स्वयंगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बा (जडा, अध्यण्डा, प्रावृषायणी, शुकशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्यःशोथा, शूका, शूकवती, गात्रभंगा, कच्छूमती, कच्छुरा, ऋषभी, कपिकच्छुरा, ऋषभ, जटा, स्वगुप्ता, अजाह्वा, कण्डुरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, शूकपिण्ड, शुकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता, दुःस्पर्शा, अजडा, प्रावृषेण्या, बदरी, गुरु, आर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमाङ्ग, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामें	कौंछ, किवाँच ।
वंगभाषामें	आलकुशि, धुनारगुंड, दया, शुयाशिम्बी ।
मराठीभाषामें	कुहिलीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	कउचों, भेरवनी शीगनां बी ।

कर्णाटकीभाषामें	नसुगुन्नी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिल्लिअडुगु ।
तामिलीभाषामें	पुनाइक, कालि ।
मद्रासीभाषामें	नायिकरुणा, चोरिवाल्लि ।
गोमंतकी	खवल्यावालि ।
वमू०	कुहिला ।
इंग्रेजीभाषामें	कौहेज Cowhage
लैटिन् भाषामें	म्युक्युना प्रुरिपेन्स । Mucua Pruriens

कपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुःस्वादुरसावृष्यावातक्षयापहा ।
शीतपित्तास्रहन्त्रीचविकृताग्रणनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौंछ-स्वादु, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षय, शीतपित्त, रुधिरविकार और दुष्टव्रणको नष्ट करैहै ।

अन्यच्च ।

कपिकच्छुर्भृशंवृष्यामधुराबृंहणीगुरुः ।
तिक्तावातहरीबल्याकफपित्तास्रनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कौंछ-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मधुर, बृंहण (पुष्टिजनक) भारा, कडवी, वातनाशक, बलकारक तथा कफ और रक्तपित्तनाशकहै ।

कपिकच्छुबीजगुणाः ।

तद्बीजंवातशमनंस्मृतंवाजीकरंपरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछके बीज-वातनिवारक और वाजीकरण करनेवालेहैं ।

लघुकपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुर्लघुःशीतावृष्यापित्तानिलापहा ।
सिध्मातिसारहन्त्रीचवंध्यानांचाप्यपत्यदा॥(शो०नि०)

अर्थ-छोटीकौंछ-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, वात, सिध्म और अतिसारको दूर करै है । तथा वंध्या स्त्रियोंको संतान उत्पन्न करनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

कच्छुरातुवरातिक्तायोनिदोषापहामता ।
कुष्ठव्रणंरक्तकोपंनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटीकौंछ-कषैली, कडवी तथा योनिदोष, कोढ व्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै।

विवरण। कौंछकी वेल होतीहै, फूल सेमकी समान होतेहैं और फलियें भी सेमकी समान होतीहैं, और फलियोंके ऊपर सूक्ष्म रुँआ अधिक होताहै, इसका रुँआ शरीरमें लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै। फलियोंके भीतरसे सेमके बीजोंकी समान बीज निकलतेहैं, छोटी कौंछका क्षुपहोताहै।

मांसरोहिणीनामानि।

मांसरोहिण्यतिरुहावृत्ताचर्मकषावसा।
महारवल्लीविकशावीरवत्यपिकथ्यते (भा० प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा, महावल्ली, विकशा, वीरवती, (अग्निरुहा, मांसरोही, कशामांसी, महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी।
हिन्दीभाषामें	मांसरोहिणी, रोहिणी।
मराठीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी।
गुजरातीभाषामें	रोण्य।
कर्णाटकीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी।
इंग्रेजीभाषामें	रेड्वुडट्री। Redwood Tre
लैटिन् भाषामें	सोयमीडा फेब्रीफ्युगा। Soymiba Febrifiga

मांसरोहिणीगुणाः।



स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहा॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-वीर्यवर्द्धक, सारक, (दस्तावर) और त्रिदोषनाशकहै।

अपिच।

मांसरोहिणिकाव्रण्याचोष्णाचरक्तपित्तजित् ।
सर्वासंग्रहणींहंतिनात्रकार्याविचारणा ॥ (नि० र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-व्रणको हितकारी, उष्ण, तथा रक्तपित्त और सर्वप्रकारकी संग्रहणी दूर करैहै ।

रोहिणीगुणाः ।

रोहिणीवातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी ॥ (अ०भा०नि०)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कासनिवारक, श्वासहारक और रुधिरविकारविनाशकहै ।

द्विविधरोहिणीगुणाः ।

रोहिणीयुगलंशीतंकषायंकृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकरंरुच्यंवातदोषनिषूदनम् (रा० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी रोहिणी-शीतल, कषेली, कृमिनाशक, कण्ठशोधक, रुचिकारक और वातनिवारक है ।

विवरण । रोहिणीके वृक्ष जंगलमें अधिक होते हैं, पत्ते खिरनीके समान होते हैं और एक २ डालीमें सात २ आते हैं, फल अत्यन्त बारीक होते हैं ।

चिल्हकगुणाः ।

चिल्हकोवातनिर्हारःश्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् ।
आग्नेयोविषवद्यस्यफलंमत्स्यनिषूदनम् ॥

अर्थ-चिल्हक-वातनाशक, कफघ्न, धातुपुष्टिकारक, आग्नेय, (अत्यन्त गरम) और इसका फल विषकी समान गुणकारक है तथा मछलीको नष्ट करैहै ।

विवरण । चिल्हकके वृक्ष, छोटे २ होतेहैं, विशेषकरके पर्वत अथवा पथरीली भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-हरे और फूल नीलेरंगके होतेहैं । इसके फल-रीठेके समान गोल २ होतेहैं ।

टंकारीगुणाः ।

टंकारीवातजित्तिक्ताश्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः ।
शोथोदरव्यथाहंत्रीहितापीठविसर्पिणोः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-टंकारी-वातनाशक, कडवी, कफनाशक, अग्निको दीपन करनेवाली

हलकी तथा सूजन और उदररोगको हरनेवालीहै । और पीठ तथा विसर्प रोगवालोंको हितकारीहै ।

विवरण । टंकारीके क्षुप वन और जंगलमें अधिक होतेहैं । पत्ते–लम्बे और गोल आतेहैं, फूल––लाल, गुलावी, कईप्रकारके आतेहैं । फल–छोटे २ झुमकेदार लगते हैं ।

वेतसनामानि ।

वेतसोनिचुलःप्रोक्तोवंजुलोदीर्घपत्रकः ।
कलनोमंजरीनम्रोवानीरोविदुलस्तथा ॥

अर्थ–वेतस, निचुल, वंजुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर, विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वञ्जुलप्रिय, गन्धपुष्प, रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि ।

निकुञ्चकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः ॥

अर्थ–निकुञ्चक, परिव्याधे, नादेय, जलवेतस, (शाखाढ्य, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलप्रिय, नीरप्रिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

संस्कृतभाषामें	वेतस, जलवेतस ।
हिन्दीभाषामें	बेंत, जलबेंत ।
वंगभाषामें	वेत, वयसा, जलवेत ।
मराठीभाषामें	थोरवेत, वेत ।
गुजरातीभाषामें	नेतर ।
कर्णाटकीभाषामें	वेडिसु, वेतसु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पीपारुवा, जीतयुरल्लुकी ।
इंग्रेजीभाषामें	रोटा केन । Cane
लैटिन्भाषामें	केलेमस रोटन् । Calamus
फारसीभाषामें	वेत ।
अरवीभाषामें	खलाफ ।

वेतसगुणाः ।

वेतसःशीतलोदाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्तिवीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–वेत–शीतल तथा शोफ (सूजन) अर्श (ववासीर) योनिरोग,

व्रण (घाव) विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, अश्मरी (पथरी) कफ और वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

वेतसःकटुकःस्वादुःशीतोभूतविनाशनः ।
वातप्रकोपनोरुच्योविज्ञेयोदीपनःपरः ॥
रक्तपित्तोद्भवंरोगंकुष्ठंदोषञ्चनाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वेत-चरपरा, स्वादिष्ठ, शीतल, भूतनाशक, वातको कुपित करनेवाला, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला तथा रक्तपित्त और कोढको दूर करे है ।

अपिच ।

वेत्रस्तुतुवरःशीतस्तिक्तःकटुकफापहः ।
वातंपित्तंचदाहंचशोफार्शोश्मरिकृच्छ्रकान् ॥
विसर्पातिस्रतंरक्तंयोनिरोगंतृषांजयेत् ।
रक्तदोषंव्रणंमेहंरक्तपित्तञ्चकुष्ठकम् ॥
विषंवैनाशयत्येवांकुरःक्षारोलघुःस्मृतः ।
कटूष्णःकफवातघ्नःपर्णंभेदकरंमतम् ॥
तुवरंलघुशीतञ्चतिक्तंकटुचवातलम् ।
रक्तदोषंकफंपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥
वेत्रबीजन्तुतुवरंस्वाद्वम्लंरूक्षपित्तलम् ।
रक्तदोषंकफंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वेंत-कषैला, शीतल, कडवा, चरपरा, कफ, वात, पित्त, दाह, सूजन, ववासीर, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, अतिसार, रुधिरविकार, योनिरोग, तृषा, रक्तकोप, व्रण, प्रमेह, रक्तपित्त, कुष्ठ और विषका नाश करनेवाला है । इसके अंकुर-खारी, हलके, चरपरे, गरम तथा कफवातनाशक हैं । इसके पत्ते-भेदक (दस्तावर) कषेले, हलके, शीतल, कडवे, चरपरे, वातकारक तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तको हरे हैं । इसके बीज-कषेले, स्वादिष्ठ, खट्टे, रूखे, पित्तजनक तथा रक्तविकार और कफका नाश करे हैं ।

जलवेतसगुणाः ।

जलजोवेतसःशीतःसंग्राहीवातकोपनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जलवेंत-शीतल, मलरोधक और वातको कुपित करैहै ।

अन्यच्च ।

वानीरःशीतलस्तिक्तोव्रणशुद्धिकरोमतः ।
तुवरोवातकृद्ग्राहीरूक्षःपित्तहरोमतः ॥
रक्तदोषव्रणकफक्रव्यादग्रहनाशनः । (नि० र०)

अर्थ-जलवेंत-शीतल, कडवा, व्रणशोधक, कषेला, वातकारक, मलरोधक, रूखा, पित्तनाशक तथा रुधिरदोष, व्रण, कफ, राक्षसबाधा और ग्रहकी पीडाको दूर करैहै ।

द्विविधवेतसगुणाः ।

वेतसस्यद्वयंशीतंरूक्षंचव्रणशोधनम् ।
रक्तपित्तहरंतिक्तंसकषायंकफापहम् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारके वेंत-शीतल, रूखे, व्रणशोधक, रक्तपित्तनाशक, कडवे, कषेले और कफनाशक हैं ।

बृहद्वेत्रगुणाः ।

बृहद्वेत्रस्तुशीतःस्याद्भूतपित्तामकंपहा ।
अन्येगुणाःपूर्ववेत्रसदृशाः समुदाहृताः ॥

अर्थ-बडा वेंत-शीतल तथा भूतबाधा, पित्त आम और कम्पको दूर करे है । शेष गुण वेंतकी समान जानने ।

बृहज्जलवेत्रगुणाः ।

स्थूलवानीरकःशीतोरूक्षोव्रणविशोधनः ।
तिक्तस्तुतुवरोरक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बडा जलवेंत-शीतल, रूखा, व्रणशोधक, कडवा, कषेला, तथा रक्तविकार, पित्त और कफको दूर करे है ।

विवरण । वेंत और जलवेंत इसकी दो जाति हैं, यह वेंत जलके निकटकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । इसके पेडभी लताके आकार होतेहैं, पत्ते-वांसके समान, फल फूल आतेही नहीं, वेंतकी जड वहुत लम्बी २ होतीहैं । वेंतके

ऊपरका वक्कल बहुत पकाहोताहै । कुर्सी विंच इत्यादि इसीसे बुनी जातीहैं, वेंत जलमेंभी उत्पन्न होताहै । उसके गुण वेतहीके समान होतेहैं ।

हिज्जलनामगुणाः ।

इज्जलोहिज्जलश्चापिनिचुलश्चाम्बुजस्तथा ।
जलवेतसवद्वेद्योहिज्जलोऽयंविषापहः ॥

अर्थ-इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (शोष) के नाम हैं । इसके गुण जलवेतकी समान हैं, विशेषता यह है कि विषविनाशक है ।

अङ्कोटनामानि ।

अङ्कोटःकोलकोरेचीविषघ्नोदीर्घकीलकः ।
पीतसारस्ताम्रफलोगन्धपुष्पोनिकोचकः ॥

अर्थ-अंकोट, कोलक, रेची, विषघ्न, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, निकोचक, (अङ्कोटक, अंकोठ, अंकोल, निकोठक, अंकोलक, बोध, नेदिष्ठ, दीर्घकीलक, रामठ, कंकरोल, घलन्त, दृढकण्टक, कोठर, गूढपत्र, मदन, गुप्तस्नेह, गूढवल्लिका, पीत, दीर्घकील, गुणाढ्यक, लम्बकर्ण, रोचन, विशालतैलगर्भ, निकोठक, कठोर, वामक, लम्बपर्णक, भूषित)

संस्कृतभाषामें	अंकोट (ठ) ।
हिन्दीभाषामें	ढेरा, टेरा ।
वंगभाषामें	आंकड, घला आंकड, आँकोड ।
मराठीभाषामें	अंकोली वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	अंकोल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	अंकुले ।
तैलिङ्गीभाषामें	उडीके ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीलीव्ड सल्युरिटीस् ।
लैटिन्भाषामें	एलेनूजेयं लेमार्कि आई । Alangums Lamarehii
	एलेनूजियम् हेक्सापेटेलम् ।

अङ्कोटगुणाः ।

अङ्कोटस्तुवरस्तिक्तोरसशुद्धिकरोलघुः ।
किंचित्कटुःसरःस्निग्धस्तीक्ष्णश्चोष्णश्चरूक्षकः ॥
रसोवान्तिकरश्चास्यविषदोषकफापहः ।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
रक्तदोषविसर्पघ्नःश्वानाखुविषनाशनः ।
ओतोर्विषकटीशूलमतिसारंचनाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनोबीजंचास्यतुशीतलम् ।
धातुवृद्धिकरंस्वादुचाग्निमांद्यकरंगुरु ॥
रसेपाकेतुमधुरंबलकृत्कफकृत्सरम् ।
स्निग्धंवृष्यश्चदाहघ्नंवातपित्तक्षयापहम् ॥
रक्तदोषंकफंपित्तंविसर्पञ्चैवनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-ढेरा-कषेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा है । इसका रस-वान्तिजनक तथा विषविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, मूसेका विष, विलावका विष, कटिशूल, अतिसार, और पिशाचपीडा इनका नाश करेहै । इसके वीज-शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मंदाग्निकारक, भारी, रसमें और पाकमें मधुर, वलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्य्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहैं ।

अन्यच्च ।

अङ्कोटकःकटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरोलघुः ।
रेचनःकृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूपकाहिविषापहः ।
तत्फलंशीतलंस्वादुश्लेश्मघ्नंबृंहणंगुरु ॥
बल्यंविरेचनंवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कषेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिर-विकार, मूषेके विष और सांपके विषको दूर करेहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, बृंहण (वाजीकरण), भारी, वलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

विवरण। ढेरेके वृक्ष वनमें अधिकतासे होतेहैं । इसके पत्ते-एक अंगुल चौंडे और पांच छै अंगुल लम्बे होतेहैं, फूल-सफेद होताहै, फल-कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर लाल होजातेहैं । उनके ऊपर कालापन झलकता रहताहै । इस वृक्षपर कांटे होतेहैं ।

बलानामानि ।

वाट्यपुष्पीसमांशाचविललाबलिनीबला ।

अर्थ-वाट्यपुष्पी, समांशा, विलला, बलिनी, बला (वाट्यालक, ओदनी, समंगा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, खरककाष्ठिका, कल्याणिनी, भद्रबला, मोटापाटी, बलाढ्या, शीतपाकी, वाट्यवाटी । निलया, वाट्याली, वाटिका, वाट्यालिका, खरयष्टिका, ओदनाह्वा, वातघ्नी, कनका, रक्ततन्दुला, क्रूरा, महासा, वारिगा, फणिजिह्विका, जयन्ती, कठोरयष्टिका, बलाढ्या)

संस्कृतभाषामें	बला ।
हिन्दीभाषामें	खिरैंटी, वरियारा (ला), बीजवन्द ।
वंगभाषामें	वेडेला ।
मराठीभाषामें	लघुचिकणा, खिरहंटी, थोरचिकणा ।
गुजरातीभाषामें	बलड़ाणा, खरेटी ।
कर्णाटकीभाषामें	वेणेगरग ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुर्पिडी ।
इंग्रेजीभाषामें	होर्न विमलीव्डसिडा।हार्टलिव्डसिडा।Hornbeam Heart leaved Sida leaved sida.
लैटिन् भाषामें	सिडा कार्पिनीफोलिया । Sida carpinifolia सिडाकोर्डिफोलिया । Cardifolia

बलागुणाः ।

स्निग्धारुच्याबलावृष्याग्राहिणीवातपित्तजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-खिरैंटी-स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य (वीर्यवर्द्धक), ग्राही तथा वात और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बलातिक्तातिमधुरापित्तातीसारनाशिनी ।
बलवीर्यपुष्टिदात्रीकफरोधविशोधनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-खिरैंटी-कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, बलवीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधविशोधक है ।

अपिच ।

बलामूलत्वचश्चूर्णपीतंसक्षीरशर्करम् ।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्नसंशयः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खिरैंटीकी-जडकी छालका चूरण मिश्रीमिलेहुए दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है ।

बलाबीजगुणाः ।

बलाफलस्वादुपाकेकषायमधुरंरसे ।
हिमवीर्यंगुरुगुणंस्तम्भनंलेखनंभृशम् ॥
विबन्धाध्मानपवनकारिपित्तकफास्रनुत् । (वै० नि०)

अर्थ-खिरैंटीका फल-पचनेमें स्वादिष्ट, कषेला, मधुर, शीतवीर्य्य, भारी, स्तम्भन, लेखन, विबन्धकारक, आध्मानजनक, वातवर्द्धक, तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करैहै ।

माहाबलानामानि ।

महाबलापीतपुष्पीसहदेवीचसास्मृता ॥

अर्थ-महाबला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठबला, करम्भरा, केशरुहा, केसरिका, मृगादनी, वर्षपुष्पा, केशवर्द्धिनी, प्रसादनी, देवबला, सारिणी, पीतपुष्पा, देवार्हा, गन्धवल्लरी, मृगा, मृगरसा, वर्षपुष्पी, वाट्या, वाट्यायनी, सहदेवा, देवसहा, बृहद्बला, गन्धावल्ली, महागन्धा, मङ्गलार्थप्रसादनी)

संस्कृतभाषामें	महाबला, सहदेवी ।
हिंदीभाषामें	सहदेई ।
बंगलाभाषामें	पीतपुष्प, बेडेला ।
मराठीभाषामें	भांबुर्डी ।
गुजरातीभाषामें	सहदेवी ।
तामिलीभाषामें	नेच्चिट्टी ।
म०	पिरिना ।
कर्णाटकीभाषामें	बेळुदुरुवे ।
लैटिन् भाषामें	सिडारोंफिफोलिया । Sida rhomfifolia

महाबलागुणाः ।

हरेन्महाबलाकृच्छ्रंभवेद्वातानुलोमनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सहदेई-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमकहै ।

अन्यच्च ।

महाबलातुमधुराधातुवृद्धिकरीमता ।
बल्यावृष्यात्रिदोषघ्नीज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥
वातार्शःशोफविषमज्वरान्मेहगणंतथा ।
बहुमूत्रंनाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

अर्थ-सहदेई-मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा ज्वर, हृदयरोग, दाह, वादीकी बवासीर, सूजन, विषमज्वर, सर्वप्रकारके प्रमेह और मूत्रातिसारनिवारक है ।

अतिबलानामानि ।



बलिकातिबलाबल्याविकंकतावाट्यपुष्पिकाघण्टा ।
शीताचशीतपुष्पाभूरिबलावृष्यगन्धिकादशधा ॥

अर्थ-बलिका, अतिबला, बल्या, विकंकता, वाट्यपुष्पिका, घंटा, शीता, शीतपुष्पा, भूरिबला, वृष्यगन्धिका (कंकती, ऋषिप्रोक्ता, वृष्यगन्धा)

संस्कृतभाषामें	अतिबला ।
हिन्दीभाषामें	कंगही, कंघी, ककहिया ।
मराठीभाषामें	विकंकती, आककई, कांसुली ।

गुजरातीभाषामें	खपाट्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुद्दुदुर्वे ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनमेलो । Indian Malow
लैटिन् भाषामें	एब्युटिलनइंडिकम् । Aputilon indicum

अतिबलागुणाः ।

तिक्ताकटुश्चातिबलावातघ्नीकृमिनाशिनी ।
दाहतृष्णाविषच्छर्दिक्लेदोपशमनीपरा ॥

अर्थ-कंघई-कडवी, चरपरी तथा वात, कृमि, दाह, तृषा, विष, वमन और क्लेदको शान्तकरेहै ।

अन्यच्च ।

बलिकामधुराचाम्लाहितादोषत्रयप्रणुत् ।
युक्त्याबुद्ध्याप्रयोक्तव्याज्वरदाहविनाशिनी॥(ग० वि०)

अर्थ-कंघी (ककहिया)-मधुर, अम्ल (खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हन्यादतिबलामेहंपयसासितयासह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कंघीको दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होताहै ।

त्रिविधबलागुणाः ।

बलात्रयंस्वादुशीतंस्निग्धंवृष्यंबलप्रदम् ।
आयुष्यंवातपित्तघ्नंग्राहिमूत्रग्रहापहम् ॥

अर्थ-खिरैंटी, सहदेई और कंघी यह तीनों स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, मलरोधक, मूत्ररोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

नागबलानामानि ।

गाङ्गेरुकीनागबलाझषाह्रस्वगवेधुका ॥

अर्थ-गांगेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका, (खरगन्धिनी, गोरक्षतण्डुला, भद्रौदनी, खरगन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा, महाशाखा, महाफला, विश्वदेवा, अनिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, खरवल्लरिका, विश्वदेवी)

संस्कृतभाषामें	नागबला ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरन, गुलसकरी ।
बंगलाभाषामें	गोरख, चाकुले, पानसांडा ।
मराठीभाषामें	गांगेटी, गांडे धामण ।
कोकणीभाषामें	तुपकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बट्टगरुके ।
लैटि०	सिडास्फमोझा । Sida spmosa

अस्या गुणाः ।

मधुराम्लानागबलाकषायोष्णागुरुस्तथा ।
कटूष्णाकफवातघ्नीव्रणपित्तविनाशिनी (ग० नि०)

अर्थ-गंगेरन-मधुर, अम्ल, कषेली, गरम, भारी, चरपरी, कफवातनाशक, व्रणनिवारक और पित्तहारक है ।

अन्यच्च ।

तद्वन्नागबलात्यर्थंकृच्छ्रेक्षीणक्षतेहिता ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गंगेरनके गुणभी खिरैंटीकी समान हैं, विशेषकरके मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणरोगमें हितकारी है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयानागबलाचाम्लामधुरातुवरागुरुः ।
कटवत्युष्णाव्रणंवातंपित्तंकुष्ठञ्चनाशयेत् ॥
कण्डूञ्चनाशयत्येवंमुनिभिः परिकीर्तिताः । (निघण्टुर०)

अर्थ-गंगेरन-अम्ल, मधुर, कषेली, भारी, चरपरी, गरम तथा व्रण, वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको हरनेवाली है ।

अस्या फलगुणाः ।

गांगेरुकीफलंरूक्षंकषायंस्वादुवातलम् ।
लेखनंस्तम्भनंशीतंविबन्धाध्मानकृद्गुरु ॥ (शो०नि०)

अर्थ-गुलशकरीके फल-रूखे, कषेले, स्वादु, वादी, लेखन, स्तम्भन, शीतल, विबन्ध और आध्मानकारक, तथा भारी हैं ।

बृहन्नागबलागुणाः ।

बृहन्नागबलाचाम्लामधुराचत्रिदोषहा ।

दाहज्वरहराप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः (नि० रा०)

अर्थ-बडीगंगेरन-अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वर-निवारकहै ।

चतुर्विधवलागुणाः ।

बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकान्तिकृत् ।
स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ-चारोंप्रकारकी खिरैंटी (खिरैंटी, सहदेई, कंघी, गंगेरन) शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है ।

विवरण । बला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरैंटी, कंघी, गंगेरन, गंगेटी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि । इनमें खिरैंटीके भी कई भेद हैं । एक प्रकारकी खिरैंटी वह होतीहै कि, जिसके वृक्ष डेढहाथ ऊंचे होतेहैं । इसके पत्ते-तुलसीके पत्तोंकी समान होतेहैं । फूल-पीला आताहै । फल-छोटे २ आतेहैं और इसमें बहुतसे बीज निकलतेहैं । इसके पत्तोंका शाक बनाते हैं ।

२ दूसरे प्रकारकी खिरैंटीका वृक्ष पुरुषकी बराबर ऊंचा होता है । इसके पते-अनीदार होतेहैं । फूल-सफेद रंगके आतेहैं, फल बारीक और गोल आतेहैं । उनमेंसे जो बीज निकलताहै उनको बलाबीज अथवा बीजबंद कहतेहैं ।

३ कंघीके वृक्षभी दोढाई हाथ ऊंचे होतेहैं । फूल-पीला, फल-चक्रकी समान और गोल होतेहैं । उनको प्रायः बालक छापाकरते हैं । इसके बीजभी खिरैंटीकी समान होतेहैं ।

४ गंगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होताहै किन्तु, इसके पत्ते-कुछ अधिक मोटे और दो अनिवाले होतेहैं । फूल-गुलाबी रंगका होताहै, फलभी सहदेईसे बडे होतेहैं, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पांच भाग होजाते हैं ।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और बडे दोप्रकारके होतेहैं, इसके पत्ते पतले और खरखरे होतेहैं । इसका फल फूल पीलेरंगका आताहै, फल छोटे २ गोल आतेहैं और इसमें कांटे होतेहैं ।

लक्ष्मणानामानि ।

लक्ष्मणापुत्रजननीनागपत्रीचपुत्रदा ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रकन्दा, पुच्छदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपुत्री, तूलिनी, मञ्जिका, अस्रबिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणागुणाः।

लक्ष्मणाकन्दकःशीतोमधुरश्चरसायनः।
गर्भप्रदश्चवृष्यश्चत्रिदोषव्रणवातहा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-शीतल, मधुर, रसायन. गर्भप्रद, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक और व्रणविनाशकहै।

विवरण। लक्ष्मणा औषधि बहुत कम मिलतीहै। यह कहीं २ पर्वत इत्यादिमें उत्पन्न होतीहै। इसके पत्ते-चौंडे होतेहैं उनपर लाल २ चन्दनकी समान बूंदेसी होतीहैं। इसके नीचे सफेद रंगका कंद निकलता है)

स्वर्णवल्लीनामानि।

स्वर्णवल्लीरक्तफलाकाकायुःकाकवल्लरी॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकवल्लरी (हरणीपीतिका)

अस्या गुणाः।

स्वर्णवल्लीशिरःपीडांत्रिदोषान्हन्तिदुग्धदा॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली-शिरपीडा और त्रिदोषनाशक है, तथा स्तनोंमें दूध बढानेवाली है।

विवरण। स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनवेल प्रायः पर्वत, बाग, और वनोंमें अधिक होतीहै। पत्ते-गोल अनीदार होतेहैं, फल-लाल लगतेहैं इस लताका रंग सम्पूर्ण पीला होताहै इसी कारण इसका नाम स्वर्णलताहै।

हिन्दीभाषामें	स्वर्णवल्ली।
मराठीभाषामें	सोनवेल।
गुजरातीभाषामें	स्वर्णवल्ली।

कर्पासीनामानि।

कार्पासीतुण्डिकेरीचसमुद्रान्ताचकथ्यते॥

अर्थ-कर्पासी, तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, (बदरा, पटद, वादरा, सूत्रपुष्पा, बदरी, कार्पासिका, कर्पासी, कर्पाससारिणी, चव्या, तुला, गुड, तुण्डकेरिका, मरूद्भवा, पिचु, वादर, कार्पास, पटलुन, छादन)



वनकार्पासनामानि ।

त्रिपर्णावनकार्पासीभारद्वाजीयशस्विनी ॥

अर्थ–त्रिपर्णा, वनकार्पासी, भारद्वाजी, यशस्विनी (वनसरोजिनी, बहुमूर्त्ति, वनकार्पासिका, वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पास, अरण्यकार्पासिका, अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि ।

कालाञ्जनीचकृष्णाभाकृष्णाञ्जनीशिलाञ्जनी ॥

अर्थ–कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी, (अंजनी, रचनी नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषामें	कार्पासी, वनकार्पासी, कालाञ्जनी ।
हिन्दीभाषामें	कपास, वनकपास, नरमावाडी, कापच्छी, [विनोले] कालीकपास, [रुई]
वङ्गभाषामें	कार्पास, वेनकार्पास, कालिकर्पासिकिनी [तुला]
मराठीभाषामें	कापशी, कापूस, सरकी, काळी कापशी ।
गुजरातीभाषामें	वणरु कपास, हिरवणी कपाशिया ।
कर्णाटकीभाषामें	हत्ति काडहत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	पत्तिचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें काटन् । Cotten plant
लैटिन्भाषामें गोसिपीयं अरपेइयं । Gossypium herpaceum
फारसीभाषामें कुतुन, पुंवेदना ।
अरबीभाषामें कुतन, हवुल कुतन ।

कार्पासीगुणाः ।

कार्पासीमधुराशीतास्तन्यापित्तकफापहा ।
तृष्णादाहश्रमभ्रान्तिमूर्च्छाहृद्बलकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कपास-मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, बलकारक तथा पित्त, कफ, तृषा, दाह, भ्रम, भ्रांति और मूर्च्छाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कार्पासकीलघुश्चोष्णामधुरावातनाशिनी ।
तत्पलाशंसमीरघ्नंरक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥
तत्कर्णपिडिकानादपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजंस्तन्यदंवृष्यंस्निग्धंकफहरंगुरु ॥ ((भा० प्र०)

अर्थ-कपास-हलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है । कपासके पत्ते-वातनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको बढानेवाले, तथा कानडी पीडा, कर्णनाद और कानसे राधके बहनेको दूर करनेवाले हैं । कपासके बीज-स्तनोंमें दूध बढानेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारी और भारीहैं ।

वनकार्पासीगुणाः ।

भारद्वाजीहिमारुच्याव्रणशस्त्रक्षतापहा ॥

अर्थ-वनकपास-शीतल, रुचिकारक, तथा घाव और शस्त्रके घावको दूर करे है ।

कालांजनीगुणाः ।

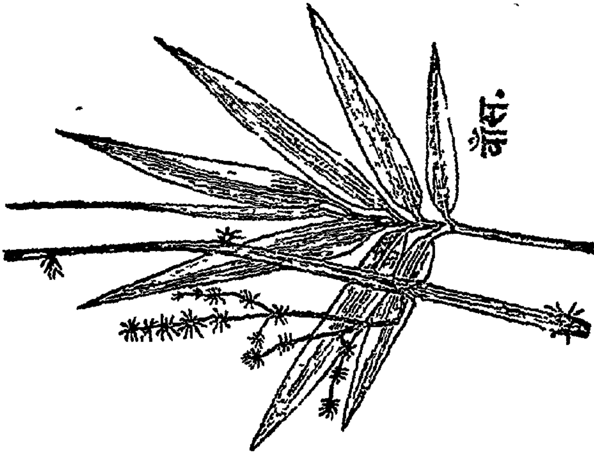
कालाञ्जनीकटूष्णास्यादम्लामक्रिमिशोधिनी ।
अपानावर्तशमनी जठरामयहारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कालीकपास-चर्परी, गरम, खट्टी, आमनाशक, कृमिशोधक, अपानावर्त्तशामक, और उदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । कपासके पेड़ सब हिन्दोस्तानमें बहुत होते हैं । इसकी बडी खेती होतीहै, इसका बहुत बड़ा व्यापार होताहै, उत्तम २ वस्त्रादिक कपा-

सहीके बनते हैं । कपासके फूल-पीले और बीचमें लाल होतेहैं उसमें गूलरकी समान तिकोने फूल आते हैं । उसके भीतर कपास निकलतीहै, वह कपास चरखीमें ओटी जातीहै उसमेंसे जो बीज निकलतेहैं उनको विनौले कहतेहैं । इसके पत्तेमें पांच अनी होतीहैं जैसे, एरण्डके पत्तोंमें । परन्तु उनसे बहुत छोटे होतेहैं । एक काली कपास होतीहै जिसके फूल काले और विनौले भी काले होतेहैं । एक नरयावाडी होतीहै जिसके पेड बडे २ होते हैं, फल फूल बारह महीने आतेहैं, रुई नरम होतीहै, विनौले हरे होतेहैं, यह सब कपासहीके भेदहैं ।

वंशनामानि ।



वंशत्वक्सारकर्म्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

अर्थ-वंश, त्वक्सार, कर्म्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन, (किलाटी, पुष्पघातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, सुपर्वा, तृणकेतुक, कण्टालु, कण्टकी, महाबल, दृढग्रन्थि, दृढपत्र, धनर्द्रुम, धातुष्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज, वादनीय, फलान्तक, तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामें	वंश ।
हिन्दीभाषामें	बाँस ।
बंगलामें	बाँस ।

मराठीभाषामें	वेळू, पोकळवेळु, भरींववेळू ।
गुजरातीभाषामें	वांश ।
कर्णाटकीभाषामें	यरड्डविदीरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कच्चिकई यदुरु, वेन्नेमुक, वेन्नुर्शाणि, वेत्तु ।
तामिलीभाषामें	मनगिल ।
वर्मा०	माण्डगय ।
इंग्रेजीभाषामें	वेंबूकेन । Camboo cane
लैटिन् भाषामें	वेंबुसावलगेरिस् Bambsusa Vlgares
फारसीभाषामें	कसव ।

वंशगुणाः ।

वंशोम्लस्तुवरस्तिक्तःशीतलःसारकोमतः ।
वस्तिशुद्धिकरःस्वादुश्छेदनोभेदकोमतः ॥
कफंरक्तरुजंपित्तंकुष्ठंशोथंव्रणंतथा ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शान्दाहश्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वाँस-खट्टा, कषेला, कडवा, शीतल, सारक, वस्तिशोधक, स्वादिष्ठ, छेदक, भेदक तथा कफ, रक्तविकार, पित्त, कोढ, सूजन, घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, ववासीर, और दाहको दूरकरे है ।

अस्याः करीरगुणाः ।

तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः ।
कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बाँसके अंकुर-पचनेमें चरपरे, रूखे, भारी सारक (दस्तावर), कषेले, कफकारक, स्वादु, दाहजनक और वातपित्तकारकहैं ।

अपिच ।

करीरंकटुतिक्ताम्लंकषायंलघुशीतलम् ।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नंरुचिकृत्पर्वनिर्गुणम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वांसके अंकुर-चरपरे, कडवे, खट्टे, कषेले, हलके, शीतल, तथा रक्तपित्त, दाह और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरेहैं । इसके पर्व (गांठे) निर्गुणहैं ।

वंशयवगुणाः ।

वेणोर्यवस्तुतुवरो रूक्षश्च मधुरोमतः ।

पुष्टिकृद्वीर्यकृद्बल्यःकफपित्तहरोमतः ।
विषप्रमेहशमनोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बाँसके चावल-कषेले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विष और प्रमेहको दूर करेहैं ।

अपिच ।

तद्यवास्तुसरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।
वातपित्तकराउष्णाबद्धमूत्राःकफापहाः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बाँसके चावल-सारक (दस्तावर), रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक हैं ।

द्विविधवंशगुणाः ।

वंशौत्वम्लौकषायौचकिञ्चित्तिक्तौसुशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तुदीपनोऽजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनोहृद्यःशूलघ्नोगुल्मनाशनः॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके वांस-(वांस और रन्ध्रवांस) खट्टे, कषेले, किञ्चित् कडवे, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, ववासीर, पित्त, दाह और रक्तविकारोंको हरे हैं । रन्ध्रवंश-विशेषकरके अग्निको दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक, रुचिकारक, पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है ।

विवरण । बाँस वन जंगल और पर्वतोंकी तलेटियोंमें उत्पन्न होते हैं, फूल सफेद आता है, बाँसमें वंशलोचन निकलता है, कभी २ बाँसपै जौ आते हैं उन जौओंमेंसे चावल निकलते हैं उनका भात करते हैं ।

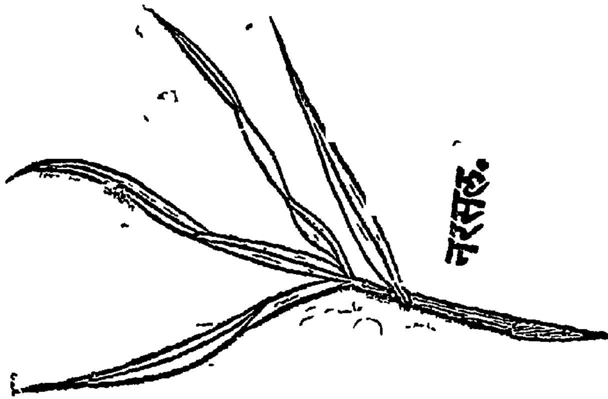
नलनामानि ।

नलःपोटगलःशून्यमध्यश्चधमनस्तथा ॥

अर्थ-नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, नड, कुक्षिरन्ध्र, कीचक, दीर्घवंश, विभीषण, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदुच्छद, लालवंश, नट, नटी, नड, नर्त्तक, मृत्युपुष्प)

देवनलनामानि ।

अन्योमहानलोवन्योदेवनालोनलोत्तमः ।
स्थूलनालःस्थूलदण्डःसुरनालःसुरद्रुमः ॥



अर्थ-महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदण्ड, सुरनाल, सुरद्रुम।

संस्कृतभाषामें	नल, महानल।
हिन्दीभाषामें	नरसल, नल, वडानरसल।
वंगभाषामें	नल, वडनल।
मराठीभाषामें	नळ, देवनळ, थोरदेवनळ।
गुजरातीभाषामें	नाली।
कर्णाटकीभाषामें	देवनाल, कर्हेरियदेवनाल।
तैलिङ्गीभाषामें	भुंगुण्डुरु, किकेशगड्डि।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन रोबेका। Indian robacoo
लैटिन्भाषामें	लोबिलीया, निकोटिया, निफोलिया। Lobelia Nicotia naefolia
कच्छीभाषामें	आंची।

नलगुणाः।

नलस्तुमधुरस्तिक्तःकषायःकफरक्तजित्।
उष्णोहृद्वस्तियोन्यार्तिदाहपित्तविसर्पहृत्॥ (भा.प्र.)

अर्थ-नल-मधुर, कडवा, कषेला, कफनाशक, रक्तविकारविनाशक, गरम, तथा हृद्यरोग, वस्तिकी पीडा, योनिरोग, दाह, पित्त और विसर्पका नाशकरे है।

अन्यच्च।

ज्ञेयोविभीषणःशीतोरुच्यश्चतुवरोमधुः।
वीर्य्यवृद्धिकरस्तिक्तोदीपनोमूत्रशोधनः॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोपपित्तकफान्हरेत् ।
हृद्रोगवस्तिशूलौघयोनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-नल (नरसल)-शीतल, रुचिकारक, कषेला, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कडवा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक, तथा विसर्प मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्तका नाशकरे है)

देवनलगुणाः ।

देवनलोतिमधुरोवृष्यईषत्कषायकः ।
नलाधिकश्चवीर्य्येतुशस्यतेरसकर्मणि ॥

अर्थ-वडा नरसल-अत्यन्त मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला, और नलकी अपेक्षा वीर्य्यमें अधिक है तथा रसकर्ममें उत्तम है ।

विवरण-नरसल अर्थात् नल वांसके समान जलाशयके निकट जंगलोंमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-ईखके पत्तोंके समान होतेहैं इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै । जिस प्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार इसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊंचावमें ईखसे तिगुना ऊंचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै ।

भद्रमुञ्जनामानि ।

भद्रमुञ्जःशरोबाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ।
मुञ्जोमुंजातकोबाणःस्थूलदर्भः सुमेखलः ॥

अर्थ-भद्रमुञ्ज, शर, वाण, तेजन, और चक्षुवेष्टन, यह नाम रामशरके हैं । मुञ्ज, मुञ्जात, वाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, तृणाख्य, ब्रह्मण्य, तेजनाह्वय, वानीरक, मुञ्जनक, शीरी, दर्भाह्वय, दुर्मूल, दृढतृण, दृढमूल, वहुभज, रञ्जन, शक्रभंग) यह नाम मूँज अर्थात् सेंटेके हैं ।

संस्कृतभाषामें	भद्रमुञ्ज, मुञ्ज ।
हिन्दीभाषामें	रामसर, मूँज ।
मराठीभाषामें	मोळ ।
वंगभाषामें	मुँज, रामशर, सरपत ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुंजगड्डि अनिस्फुलिग ।

द्विविधमुञ्जगुणाः ।

मुञ्जद्वयन्तुमधुरंतुवरंशिशिरंतथा ।

दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रवस्त्यक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरंवृष्यंमेखलासूपयुज्यते । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मूँज (मुञ्ज और रामशर) मधुर, कषेली, शीतल तथा दाह, तृषा, विसर्प, रुधिरविकार, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषनाशक है। तथा वीर्य्यवर्द्धक है।

अन्यच्च मुञ्जगुणा. ।

मुञ्जस्तुमधुरः शीतःकफपित्तजदोषजित् ।
ग्रहरक्षासु दीक्षासु पावनो भूतनाशनः ॥

अर्थ-मूँज-मधुर, शीतल, कफपित्तजदोषनाशक, ग्रहरक्षा और दीक्षामें पवित्र तथा भूतनाशक है।

विवरण-मुंज और भद्रमुंजके झुण्डभी नलके समान जलाशयके समीप या रेतेमें वहुत होतेहैं इसको वीणभी कहतेहैं, यह वास्तवमें वीरण शब्द था अव विगडकर वीण होगया इसके वक्कलको मूंज कहतेहैं। फूल फल लम्बे २ सफेद रंगके होतेहैं।

काशनामानि ।

काशः सुकाण्डःकासेक्षुर्नादेयोनीरजस्तथा ।
काकेक्षुर्वायसेक्षुश्चसस्यादिक्षुरसः शिरिः ॥

अर्थ-काश, सुकाण्ड, कासेक्षु, नादेय, नीरज, काकेक्षु, वायसेक्षु, इक्षुरस, शिरि, (इक्षुगन्धा, पोटगल, काश, कर्म्ममूल, इक्षुरम्लिका, इषीका, अश्वबाल, चामरपुष्प, चामरपुष्पक, काशी, काशा, काण्डेक्षु, अमरपुष्पक, काशक, वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, इक्षुकाण्ड, शारद, सितपुष्पक, दर्भपत्रक, लेखन, काण्ड, काण्डक, कच्छलकारक, दर्भपत्र)

संस्कृतभाषामें	काश ।
हिन्दीभाषामें	कांस ।
वंगभाषामें	केशेघास ।
मराठीभाषामें	कसई, लघुकसई, थोर कसई ।
कोकणीभाषामें	कसाड ।
गुजरातीभाषामें	कांसडो ।
कर्णाटकीभाषामें	किरीयकागळ्ळु, काडसु, काजळ्ळु ।

तैलिङ्गीभाषामें रेल्लु ।
लैटिन्भाषामें कुइक्स बारवेटा । Coxbarbata

काशगुणाः ।

काशस्तुतपर्णःशीतोगौल्योरुचिकरोमतः ।
बलकृन्मधुरोवृष्यस्तिक्तःपाकेमधुःस्मृतः ॥
सरःस्निग्धःपित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापहः ।
मूत्राश्मरींरक्तदोषंरक्तपित्तंक्षतक्षयम् ॥
पित्तरोगंनाशयतीत्येवंपूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ-कास तृप्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेंभी मधुर, सर, (दस्तावर) स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, मूत्राश्मरी, रुधिरविकार, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्त-रोगको दूर करे है ।

विवरण । कास-नदियोंके किनारे कीचडमें उत्पन्न होतीहै, पत्ते बाभरके समान, वरन एकप्रकारकी देशी बाभरभी होतीहै, फूलसफेद अधिक शोभायमान मंजरीके समान आतेहैं ।

गुन्द्रनामानि ।

गुन्द्रःपटेरकोरच्छःशृङ्गवेराभमूलकः ॥

अर्थ-गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक ।

संस्कृतभाषामें गुन्द्र ।
हिन्दीभाषामें गोंदपटेर ।
मराठीभाषामें पाणगवत, लह्वा ।
गुजरातीभाषामें पान्यवाडाडी ।
इंग्रेजीभाषामें एलिफंटग्रास । Elephant gross
लैटिन् भाषामें टाइफा एलिफण्टाइना । Typha Elephantma

अस्य गुणाः ।

गुन्द्रःकषायोमधुरःशिशिरःपित्तरक्तजित् ।
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ-पटेर-कषेली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोंके दूधको तथा शुक्र, रज, मूत्रको शुद्धकरेहै । एवं मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है ।

विवरण। गुंद्रपटेर-अर्थात् गौंदपटेर पानीमें होतीहै, पत्ते-बहुत लम्बे चार पांच फुटके और एकइंच चौंडे होतेहैं, पत्तेमें पत्ते निकलतेहैं पत्ते मोटे बहुत होतेहैं, वरन बीचसे चिरजातेहैं, उनके ऊपर एक बाल बाजरेके समान होतीहै, बालऊपर एक पतलीसी लकडी होतीहै। इनकी चटाई इत्यादि अनेक पदार्थ बनतेहैं।

एरकानामानि।

एरकागुन्द्रमूलाचशिम्बिगुन्द्राशरीतिच ॥

अर्थ-एरका, गुन्द्रमूला, शिम्बि, गुन्द्रा, शरी। यह नामहैं।

हिन्दीभाषामें	मोथीतृण।
बंगलाभाषामें	होंगला।
मराठीभाषामें	एरका, पाणलह्याळा।
गुजरातीभाषामें	एरका।

अस्य गुणाः।

एरकाशिशिरावृष्याचक्षुष्यावातकोपनी।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ-एरका-(मोथीतृण) शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी वातको कुपित करनेवाली, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण। मोथीतृण-जलमें उत्पन्न होताहै, पत्ते-बडे २ लम्बे होते हैं।

कुशनामानि।

कुशोदर्भस्तथाबर्हिःसूच्यग्रोयज्ञभूषणः।
ततोन्योदीर्घपत्रःस्यात्क्षुरपत्रस्तथैवच ॥

अर्थ-कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र, यज्ञभूषण (कुरव, पवित्र, याज्ञिक, ह्रस्वगर्भ, कुतुप) यह नाम कुशाके हैं। दीर्घपत्र और क्षुरपत्र यह दूसरे प्रकारके कुशाके हैं।

संस्कृतभाषामें	कुश, दर्भ।
हिन्दीभाषामें	कुशा, दाभ, डाभ।
बंगभाषामें	कुश।
मराठीभाषामें	लघुदर्भ, थोरदर्भ।
कोकणीभाषामें	दाभ।
गुजरातीभाषामें	दरभ, डाभ।

कर्णाटकीभाषामें   विलीप बुदकुशि उद्दाकुशि ।
तैलिङ्गीभाषामें   कुशदर्वोळ, दुभ ।
लैटिन्भाषामें   एंड्रोपोगन नारडे इडिस । Andropogon nordaides

द्विविधदर्भगुणा ।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी दाभ-त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दर्भस्तुमधुरःशीतोगर्भस्थापनकारकः ।
पित्तदाहश्रमरजोदोषञ्चैवविनाशयेत् (ध० नि०)

अर्थ-डाभ-मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम और रजोदोषनाशक है ।

अपिच ।

दर्भःशीतोरुचिकरोमधुरस्तुवरोमतः ।
स्निग्धः कफकरःशुक्ररक्तशुद्धिकरोमतः ॥
कफंरक्तंरक्तपित्तंपित्तंश्वासंतृषांतथा ।
मूत्रकृच्छ्रंवस्तिशूलंकामलांप्रदरंतथा ॥
रक्तदोषंविसर्पञ्चछर्दिंमूर्छांतथाश्मरीम् ।
नाशयेदितिचप्रोक्तोमूलंतस्यतुशीतलम् ॥
रुच्यंचमधुरंरक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम् ।
पित्तञ्चनाशयत्येवंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ-कुशा तथा दाभ-शीतल, रुचिकारक, मधुर, कषेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पथरी) रोगको नष्ट करे है । इसकी जड शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, तृषा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है ।

दर्भौद्वौचगुणैस्तुल्यौतथापिचसितोधिकः ।
यदिश्वेतकुशाभावस्त्वपरंयोजयेद्भिषक् ॥

अर्थ-यद्यपि कुशा और दाभमें गुण समानही है तथापि कुशा अधिक गुणवाली है । जो कुशा न मिले तो उसके अभावमें दाभ लेनी ।

विवरण । कुशा और दर्भ-दोनों एकही जातिके तृणहैं । यह रेतली भूमिमें भूंडों और जंगलोंमें उत्पन्न होतीहै । पत्ते-इसके कासहीके समान होते हैं ।

कत्तृणनामानि ।

कत्तृणंरौहिषंदेवजग्धंसौगन्धिकंतथा ।
भूतिकंध्यामपौरञ्चश्यामकंधूपगन्धिकम् ॥

अर्थ-कत्तृण, रौहिष, देवजग्ध (क) सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक, धूपगन्धिक, (सुगन्ध, तृणशीत, सुशीतल, रोहिषतृण, कातृण, भूति, ध्यामक, पूतिसुद्गल)

संस्कृतभाषामें	कत्तृण, रौहिषतृण ।
हिन्दीभाषामें	रोहिषसोंधिया, गंधेजघास, मिरचियागन्ध, रसघास ।
बंगलाभाषामें	रामकर्पूर ।
मराठीभाषामें	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुगंजणी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कामंचिगड्डि, तुरिकूर ।
औत्कलीभाषामें	पालखरि ।
फारसीभाषामें	खबालमामून ।
अरबीभाषामें	अजस्वर ।

कत्तृणगुणा ।

रौहिषंतुवरंतिक्तंकटुपाकेव्यपोहति ।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-कत्तृण-कषेले, कडवे, पचनेमें चरपरे, तथा हृदयरोग, कण्ठरोग, रक्तपित्त, शूल, खांसी, कफ और ज्वरको हरे हैं ।

अन्यच्च ।

कत्तृणंदशनामाढयंकटुतिक्तकफापहम् ।
शस्त्रशल्यादिदोषघ्नंबालग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-कत्तृण-(रोहिषतृण) चरपरे, कडवे, कफनाशक तथा शस्त्रशल्यादि दोष और बालग्रहनिवारक हैं ।

दीर्घरोहिषनामानि ।

अन्यद्रौहिषकंदीर्घंदृढकाण्डोदृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टंदीर्घनालश्चतिक्तसारश्चकुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, तिक्तसार, कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिषकंतिक्तंकटूष्णंकफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नश्चव्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषतृण-कडवे, चरपरे, गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह और विषनाशक हैं । तथा व्रण और क्षतको भरनेवाले हैं ।

विवरण । रोहिष तृण-लम्बे और सुगंन्धित मालवे और राज पूतानेके जंगलमें बहुत होतेहैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिषतृणके कुछ वडे क्षुप होतेहैं । इसका तेल निकलता है, उसमें बहुत सुगन्धि होतीहै ।

भूतृणनामानि ।

गुह्यबीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम् ।
भूतृणन्तुभवेच्छत्रामालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यवीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूतृण, छत्रा, मालातृणक (रोहिष, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, समालम्बी, छत्र, अहिच्छत्रक, गुच्छाल, पुंस्त्वविग्रह, वधिर, अतिगन्ध, शृङ्गरोह, गुण्डरोह, करेन्दुक, गोच्छालक, पूतिगन्ध, बधिरध्वनिबोधन)

संस्कृतभाषामें	भूतृण ।
हिन्दीभाषामें	भूतृण ।
गुजरातीभाषामें	भूत्रण ।
कर्णाटकी भाषामें	परिमलदगंजीणं ।
लैटिन्भाषामें	ऍडोपोगन, साईट्रेटस । Andropogan Citratus

अस्य गुणाः ।

भूतृणंकटुकंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ।

विदाहिदीपनंरूक्षमनेत्र्यंमुखशोधनम् ॥
अवृष्यंबहुविट्कंचपित्तरक्तप्रदूषणम् । (भा०प्र०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, तीक्ष्ण, गरम, दस्तावर, हलके, दाहजनक, अग्निको दीपनकरनेवाले, रूखे, नेत्रोंको अहितकारी। मुखशोधक, अवृष्य, बहुमलवर्धक और रक्तपित्तको दूषित करे है।

अन्यच्च।

भूतृणंकटुतिक्तञ्चवातसन्तापनाशनम्।
हन्तिभूतग्रहावेशान्विषदोषांश्चदारुणान् ॥ (राजनि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, वातसन्तापनाशक, भूत, ग्रहआवेशनिवारक और विषके दारुण विकारोंको हरे है।

अपिच।

भूतृणःकटुतिक्तोष्णःपुंस्त्वघ्नोवक्त्रशोधनः।
कृमिकासानिलश्वासश्लेष्मदद्रुविनाशनः॥ (शो०नि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, गरम, पुरुषत्वनाशक, मुखशोधक, तथा कृमि, खांसी, वात, श्वास, कफ, और दादोंको दूरकरे है

सुगन्धभूतृणनामानि।

रौहिषंसुगन्धभूतृणंभूतृणंगोमयप्रियम् ॥

अर्थ-रौहिष, सुगन्धभूतृण, भूतृण, गोमयप्रिय, (गन्धवीरण, सुरस, सुरभि, सुगन्धि, मुखवास।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धभूतृण।
मराठीभाषामें	पुदनी गवत, सुगन्ध गवत।
कर्णाटकीभाषामें	सुगंध तृण।
गुजरातीभाषामें	सुगन्धतृण।

अस्य गुणाः।

गन्धतृणंसुगन्धिस्यादीषत्तिक्तंरसायनम्।
स्निग्धंमधुरशीतञ्चकफपित्तभ्रमापहम् ॥

अर्थ-सुगन्धभूतृण-सुगन्धित, किंचित् कडवे, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल तथा कफ, पित्त और भ्रमनाशक है।

विवरण-भूतृण जंगल और बागादि स्थानोंमें अधिक उत्पन्न होते हैं, इसमें गुच्छेसे लगतेहैं और बीज बहुत छोटे २ होतेहैं।

बल्वजातृणनामानि।

बल्वजादृढपत्रीचतृणेक्षुस्तृणबल्वजा।
मौञ्जीपत्रादृढतृणापानीयाश्रादृढक्षुरा॥

अर्थ-बल्वजा, दृढपत्री, तृणेक्षु, तृणबल्वजा, मौञ्जीपत्रा, दृढतृणा, पानीयाश्रा, दृढक्षुरा।

अस्याः गुणाः।

बल्वजामधुराशीतापित्तदाहतृषापहा।
वातप्रकोपनीरुच्याकंठशुद्धिकरीपरा॥

अर्थ-बल्वजातृण-मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, तृषानाशक, वातको कुपित करनेवाले, रुचिकारक, और कण्ठकी शुद्धिकरे है।

ऊषलतृणनामानि।

ऊषलोभूरिपत्रश्चसुतृणश्चतृणोत्तमः॥

अर्थ-ऊषल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम।

अस्य गुणाः।

ऊषलोबलदोरुच्यःपशूनांसर्वदाहितः॥

अर्थ-ऊषलतृण-बलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदा हितकारीहै।

इक्षुदर्भानामानि।

इक्षुदर्भासुदर्भाचपत्रालुस्तृणपत्रिका॥

अर्थ-इक्षुदर्भा, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका।

अस्याः गुणाः।

इक्षुदर्भासुमधुरास्निग्धाईषत्कषायिका।
कफपित्तहरारुच्यालघुःसन्तर्पणीस्मृता॥

अर्थ-इक्षुदर्भ-मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कषेला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, हलका, और सन्तपर्ण है।

गोमूत्रिकातृणनामानि।

गोमूत्रिकारक्ततृणाक्षेत्रजाकृष्णभूमिजा।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा।

अस्य गुणाः।

गोमूत्रिकातुमधुरावृष्यागोदुग्धदायिनी॥

अर्थ-गोमूत्रतृण-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और गौओंके दूध बढानेवाला है।

शिल्पिकातृणनामानि।

शिल्पिकाशिल्पिनीशीताक्षेत्रजाचमृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिल्पिका, शिल्पिनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा।

अस्याः गुणाः।

शिल्पिकामधुराशीतातद्बीजंबलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिल्पिकातृण-मधुर और शीतल है। इसके बीज बल और वीर्य्यवर्द्धक हैं।

निःश्रेणिकानामानि।

निःश्रेणिकाश्रेणिबलानीरसावनवल्लरी ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिबला, नीरसा, वनवल्लरी।

अस्याः गुणाः।

निःश्रेणिकानीरसोष्णापशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणितृण-नीरस अर्थात् रसहीन, गरम, और पशुओंको निर्बलतादायक है।

जर्डीतृणनामानि।

गरमोटिकासुनीलाचजरडीचजलाश्रया।

अर्थ-गरमोटिका, सुनीला, जरडी, जलाश्रया।

अस्य गुणाः।

जरडीमधुराशीतासारिणीदाहहारिणी।
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जरडीतृण-मधुर, शीतल, सारक, दाहहारक, रक्तविकारविनाशक, रुचिकारक, तथा पशुओंके दूध बढानेवाले हैं।

मज्जरतृणनामानि।

मज्जरः पवनः प्रोक्तः सुत्रणः स्निग्धपत्रकः ॥

अर्थ-मज्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रक, (मृदुग्रन्थि)।

अस्य गुणाः।

मृदुग्रन्थिश्चमधुरोधेनुदुग्धकरश्चसः ॥

अर्थ-मज्जरतृण-मधुर, और गौओंके दूध बढानेवाले हैं।

तृणाख्यनामानि।

तृणाख्यंचपर्वतृणंपत्राढ्यंचमृगप्रियम् ॥

अर्थ-तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय ।

अस्य गुणाः ।

बलपुष्टिकरंरुच्यंपशूनांसर्वदाहितम् ॥

अर्थ-पर्वतृण-बल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

वंशपत्रीतृणनामानि ।

वंशपत्रीवंशदलाजीरिकाजीर्णपत्रिका ॥

अर्थ-वंशपत्री, वंशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका ।

अस्या गुणाः ।

वंशपत्रीसुमधुराशिशिरापित्तनाशिनी ।
रक्तदोषहरारुच्यापशूनांदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-वंशपत्रीतृण-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोषनिवारक, रुचिकारक, और पशुओंके स्तनोंमें दूध बढानेवाले हैं ।

मन्थानकतृणनामानि ।

मन्थानकस्तुहरितोदृढमूलस्तृणाधिपः ॥

अर्थ-मन्थानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप ।

मन्थानकतृणगुणाः ।

स्निग्धोधेनुप्रियोदोग्धामधुरोबहुवीर्य्यकः ॥

अर्थ-मन्थानकतृण-स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और बहुवीर्य्यदायक है ।

पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च ।

पल्लिवाहोदीर्घतृणःसुपत्रस्ताम्रवर्णकः ।
अदृढःशाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ-पल्लिवाह-दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण-पशुओंको निर्बल करनेवाले हैं ।

लवणतृणनामानि ।

लवणतृणंलोणतृणंतृणाम्लंपटुतृणंचअम्लकाण्डश्च ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पटुतृण, अम्लकाण्ड ।

अस्य गुणाः ।

पटुतृणकंक्षाराम्लंकषायस्तन्यवृद्धिकरम् ॥

अर्थ-लवणतृण-खारी, अम्ल, कषेला, और दूधनाशक है ।

पण्यन्धातृणनामानि ।

पण्यन्धाकंगुणीपत्रापण्यध्वापणधाचसा ॥

अर्थ-पण्यन्धा, कंगुणीपत्रा, पण्यध्वा, पणधा ।

अस्याः गुणाः ।

पण्यन्धासमवीर्य्यास्यात्तिक्ताक्षाराचसारिणी ।
तत्कालशस्त्रघातस्यव्रणसंरोपणीपरा ॥
दीर्घामध्यातथाह्रस्वापण्यन्धात्रिविधास्मृता ।
रसवीर्य्यविपाकेषुमध्यमागुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्धातृण-समवीर्य्य, तिक्त, क्षार और सारक है तथा तत्काल शस्त्रके घातसे उत्पन्न हुये घावको भरेहै पण्यन्धा तृणदीर्घ, मध्य और ह्रस्व इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं । इन तीनोंमें रस वीर्य्य और विपाकमें मध्यम गुणदायक है ।

गुण्डतृणनामानि ।

गुडःसुकांडोगुण्डःस्याद्दीर्घकाण्डस्त्रिकोणकः ।
छत्रगुच्छोसिपत्रश्चनीलपत्रस्त्रिधारकः ॥

अर्थ-गुड, सुकाण्ड, गुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र, त्रिधारक ।

वृत्तगुण्डनामानि ।

वृत्तगुण्डोपरोवृत्तोदीर्घनालोजलाश्रयः ।
तत्रस्थूलोलघुश्चान्यस्त्रिधायंद्वादशाभिधः ॥

अर्थ-वृत्तगुण्ड, दीर्घनाल, जलाशय । यह लघु और स्थूल इनभेदोंसे दो प्रकारके हैं ।

अस्य गुणाः ।

गुण्डस्तुमधुरःशीतःकफपित्तातिसारहा ।
दाहरक्तहरस्तस्यमन्येस्थूलांतराधिका ॥

अर्थ-गुण्डतृण-मधुर, शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारको दूर करैहै । इन दोनोंमें स्थूल गुण्डतृण अधिक गुणवालाहै ।

चणिकातृणनामानि ।

चणिकादुग्धदागौल्यासुनालाक्षेत्रजाहिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धदा, गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा ।

अस्या गुणा ।

वृष्याबल्यातिमधुराबीजैःपशुहितातृणैः ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्तमधुर और तृण, पशुओंको हितकारीहैं ।

गुण्डासिनीतृणनामानि ।

गुण्डासिनीतुगुण्डालागुडालागुच्छमूलिकाचिपिटा ।
तृणपत्रीजलवासापृथुलासुविष्टराचनवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवासा, पृथुला, सुविष्टरा ।

अस्या गुणा ।

गुण्डासिनीकटुःस्वादुःपित्तादाहश्रमापहा ।
तिक्तोष्णाचपशुघ्नीचव्रणदोषनिबर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनीतृण-चरपरे, स्वादु, पित्तनाशक, दाहको दूर करनेवाले श्रमको हरनेवाले, कडवे, गरम, पशुनाशक और व्रणदोषनिवारकहैं ।

शूलीतृणनामानि ।

शूलीतुशूलपत्रीस्यादशाखाधूम्रमूलिका ।
जलाश्रयामृदुलतापिच्छिलामहिषीप्रिया ॥

अर्थ-शूली, शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका, जलाश्रया, मृदुलता, पिच्छिला, महिषीप्रिया ।

अस्या गुणा ।

शूलीतुपिच्छिलाकोष्णागुरुर्गौल्याबलप्रदा ।
पित्तदाहहरारुच्यादुग्धवृद्धिप्रदायका ॥ (नि० रा०)

अर्थ-शूलीतृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है ।

नीलदूर्वानामानि ।



नीलदूर्वास्मृताशष्पंशाद्वलंहरितंतथा ।
शतपर्वाशीतकुम्भीशीतलावामिनीतथा ॥

अर्थ-नीलदूर्वा, शष्प, शाद्वल, हरित, शतपर्वा, शीतकुम्भी, शीतला, वामिनी (हरिता, शाम्भवी, श्यामा, शीता, शतपर्विका, अमृता, धूर्ता, शतग्रन्थि, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, भूतहन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, गौरी, शान्ता, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, सहस्रवीर्य्या, शतवल्ली, गुणा, नन्दा, महावरी, हरसालिका तिक्तपर्वा, दुर्मरा, वहुवीर्य्या, हरिता, हरिताली, कच्छरुहा, अमरी, सौम्या, शीतली, अमरा, असितालता)

श्वेतदूर्वानामानि ।

श्वेतदूर्वाशतवीर्य्यागण्डालीशकुलाक्षकः ।
गोलोमीसितदूर्वाचशतपर्वासितालता ॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, शतवीर्य्या, गण्डाली, शकुलाक्षक, गोलोमी, सितदूर्वा, शतपर्वा, सितालता, (सिता, श्वेता, सिताख्या, चण्डा, भद्रा, भार्गवी, दुर्मरा, गौरी, विघ्नेशानकान्ता, अनन्ता, विद्या, श्वेतकाण्डा, प्रचण्डा, सहस्रवीर्य्या, सहस्रकाण्डा, सहस्रपर्वा, सुरवल्लभा, शुभा, सुपर्वा, सितच्छदा, स्वच्छा, कच्छान्तरुहा)

गण्डदूर्वानामानि ।

गण्डदूर्वातुगण्डालीतीव्रामत्स्याक्षिकापिच ।
जलस्थाग्रन्थिपर्णीचबाह्लीचशकुलादनी ॥

अर्थ-गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रन्थिपर्णी, वाह्ली, शकुलादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपर्णी, वारुणी, मतिनेत्रा, श्यामग्रन्थि, सूचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा और शकुलाक्षक)

संस्कृतभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	दूब, हरीदूब, सफेददूब, गांडरदूब ।
वंगभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटदूर्वा ।
मराठीभाषामें	दूर्वा, नील श्वेत हरळी, गण्डूरदूर्वा, गाटीहरळी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो ।
कर्णाटकीभाषामें	हसुगरुके, विलिपकरुके, मीनगत्ते, होन्नगुंदे ।
तैलिंगीभाषामें	दूर्वाछ्रु, गरिकेगड्डि, गरिककसुवु, पोन्नगंडी ।
तामिलीभाषामें	अरुगम् पुल्लु ।
औत्कलीभाषामें	दुब् ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रीपिंग् साई नोडन् । Creeping Cynodon
लैटिन्भाषामें	साई नोडन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon

सामान्यदूर्वागुणाः ।

दूर्वाकषायामधुराचशीतापित्तंतृषारोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदाच। (रा०नि०)

अर्थ-दूब कषेली, मधुर, शीतल, तथा पित्त, तृषा, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वागुणाः ।

दूर्वातुरक्तपित्तघ्नीकण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-हरीदूब-रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यच्च ।

नीलदूर्वातुमधुरातिक्ताशीतारुचिप्रदा ।
संजीवनीचतुवरारक्तशुद्धिकरीमता ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नीज्वरपित्तवमीहरा ।
कफंरक्तरुजंतृष्णांविसर्पञ्चविनाशयेत् ॥
दाहञ्चचर्म्मदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ।

अर्थ-हरीदूब-मधुर, कडवी, शीतल, रुचिकारक, संजीवन, कषेली, रक्तशोधक तथा रक्तपित्त, अतिसार, ज्वर, पित्त, वमन, कफ, रक्तरोग, तृषा, विसर्प, दाह और त्वचाके विकारोंको दूर करेहै।

श्वेतदूर्वागुणा।

श्वेतातुदूर्वामधुरारुच्याचतुवरामता।
तिक्तातिशीतलावान्तिविसर्पतृट्कफापहा ॥
पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तहरामता।
कासञ्चनाशयत्येवंपूर्ववैद्यैर्निरुपिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सपेद दूब-मधुर, रुचिकारक, कषेली, कडवी, शीतल तथा वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करे है।

गण्डदूर्वागुणाः।

गण्डदूर्वातुमधुरावातपित्तज्वरापहा।
शिशिराद्वंद्वदोषघ्नीभ्रमतृष्णाश्रमापहा ॥ (राजनि०)

अर्थ-गाडरदूव-मधुर, शीतल तथा वात, पित्त, ज्वर, द्वन्द्वदोष, भ्रम, तृषा और श्रमको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणीलघुः।
तिक्ताकषायामधुरावातकृत्कटुपाकिनी ॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा (भावप्रकाश)

अर्थ-गाण्डरदूव-शीतल, लोहेको पिघलानेवाली, मलको रोकनेवाली, हलकी, कडवी, कषेली, मधुर, वातकारक, पचनेमें चरपरी तथा दाह, तृषा, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ, पित्त और ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। नीलीदूब जंगलमें हुत होतीहै भूमिहीमें दूबकी वेलसी चलती है और गांठपर जडभी पकडतीहै जातीहैं उसको दूबके नाले कहतेहैं, ऊपरको नहीं उठती और पृथ्वीपरही छत्तेसी फैलजाती है। पत्ते-नालोंपर छोटे २ और लम्बे २ लगे होतेहैं और इसके नाल लम्बे २ फैलते चले जातेहैं विशेषकरके दूब पशुओंके भक्षणके लिये है, इसकारण यह सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।

२ सपेद दूबभी नीलीदूब अर्थात् हरीदूबहीकी जगह कहीं कहीं कोई छत्ता होजाता है वह बहुत सफेद होती है, परन्तु सब आकृति हरीही दूबकेसी होतीहै।

३ गांडर एकप्रकारकी घास होती है इसके क्षुप दो दो तीन २ फुट ऊँचे होजातेहैं जलाशयके स्थानमें कोसोंतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कांसके समान लम्बे होतेहैं, घरोंके छप्पर आदि उसीके तृणोंसे छाये जाते हैं, इसीकी जड खस होतीहै।

विदारीनामानि।

विदारीवृष्यकन्दाचक्षीरशुक्लासितास्मृता।
इक्षुगन्धात्रिपर्णाचशुक्लागजवाजिप्रिया॥

अर्थ–विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (क्रोष्ट्री, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, विडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्लभा, गन्धफला, क्षीरवल्ली पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकूष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लयपि।
क्षीरकन्दाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी॥

अर्थ–क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, क्षीरकंदा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, इक्षुवल्लरी, क्षीरकन्द, क्षीरलता, पयःकन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और दुग्धविदारी।

संस्कृतभाषामें	विदारी, क्षीरविदारी।
हिन्दीभाषामें	विल्लैयाकन्द विलाई कन्द, विदारीकन्द, विलारी, कन्द, दूधविदारी।
वंगभाषामें	भूंईकुमडा (ड), श्वेतभूंईकुमड, कालभूंईकुमड।
मराठीभाषामें	भूंईकोहळा, वेन्द्रिचा वेल।
गुजरातीभाषामें	फगवेलानो कन्द, भोकोलु।
कर्णाटकीभाषामें	नेलकुंवल।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलगुंबुड्ड, मट्टमलतिग।
औत्कलिभाषामें	भूइकखारु।

लैटिन्‌भाषामें आईपोमिया डिजिटेटा । Ipomoeadijitata
प्युरेरियाट्यवरोझा Puraria tuberosa
वटाटास पेनिक्युलेटा Batataspeniculata

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारीमधुराशीतागुरुःस्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्यविवर्धिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यवर्धक है

अन्यच्च ।

विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा
शीतास्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा ॥
गुरुःपित्तास्रपवनदाहान्हन्तिरसायनी । (भावप्रकाश)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, बृंहण, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवर्धक, संजीवन, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

विदारीवातपित्तघ्नीवृष्याबल्यारसायनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक,वीर्यवर्द्धक,बलकारक और रसायन है।

अन्यच्च ।

विदारीमधुराशीतावृष्यास्निग्धाचपौष्टिका ।
धातुवृद्धिकरीबल्याकफदुग्धप्रदागुरुः ॥
रसायनीमूत्रलाचस्वर्य्यारूक्षाचगर्भदा ।
पित्तवातहरास्वादूरक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥
ज्ञेयाह्येतेगुणाःकन्देपुष्णंवृष्यञ्चशीतलम् ।
रसेपाकेचमधुरंकफकृद्वातलंगुरु ॥
पित्तनाशकरंह्येतदुक्तंमुनिवरैःपुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक, धातु-

वर्धक, वलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ, तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है। इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्त-नाशक हैं ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

प्रोक्ताक्षीरविदारीतुमधुराम्लाकषायका ।
वृष्याचशुक्रजननीपुष्टिदुग्धप्रदाकटुः ॥
रसायनीचबल्याचशीतामूत्रकफप्रदा ।
स्निग्धावर्ण्यागुरुःस्वर्य्यापित्तरुग्रक्तदोषहा ॥
पित्तशूलहरावातदाहजिन्मूत्रमेहजित् ।
ज्ञेयाकंदगुणाह्यस्याःसदृशावल्लिवद्गुणैः ॥

अर्थ-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, दूधवर्द्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफकारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदरकरनेवाला, भारी, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह और मूत्रमेहको दूर करनेवालाहै, इसके कंदके गुण वेलकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

कन्दःक्षीरविदार्य्यास्तुस्वादुर्वृष्योरसायनः ।
मधुरोबृंहणोहृद्यःशीतवीर्य्योहिमूत्रलः ॥

अर्थ-क्षीरविदारीकन्द-स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मधुर, बृंहण, हृदयको हितकारी, शीतल और मूत्रवर्द्धक है ।

अपिच ।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयःस्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारकाहै, तहां विनानालका रोगोंको हरनेवालाहै और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवालाहै ।

विवरण-विदारीकंदकी वेल-अनूप देशके जंगलोंमें होतीहै कोई २ उसको चर्मकारालुकभी कहतेहैं, यह कन्द वराहके समान रोमयुक्त उत्पन्न होताहै, पत्ते-वड़े वडे घुइयांके समान होतेहैं, इसके नीचे जडमें वहुत वड़ा कन्द निकलताहै, उसका रंग लालीलिये होताहै दूसरे क्षीरविदारी कन्दकीभी वेलही चलतीहै इसका कन्दभी मूलीके समान होताहै, पत्ते-एक एक शाखामें सात २ आठ २ होतेहैं, कन्दका रंग लाल और सफेद होता है।

मुसलीनामानि।

मुसलीतालमूलीचखलनीतालमूलिका ॥

अर्थ-मुसली, तालमूली, खलनी, तालमूलिका, (तालिका, अर्शोघ्नी, ताली, सुवहा, तालपत्रिका, गोधापदी, हेमपुष्पी, भूताली, दीर्घकन्दिका, मुशली, तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृष्या, वृष्यकन्दा, खर्जूरी)

संस्कृतभाषामें	मुसली, तालमूली।
हिन्दीभाषामें	कालीमुसली, सफेदमुसली। (श्याममुसली)
बंगलाभाषामें	तालमूली।
मराठीभाषामें	काळी मुसळी, पांढरी मुसळी।
गुजरातीभाषामें	काली मुसली, धोली मुसली।
कर्णाटकीभाषामें	नेलताडी।
तैलिङ्गीभाषामें	निलयतलि गड्डु, नेलतारु।
लैटिन् भाषामें	हाइपोक्सिस् आर्चिओइडिस् Hypoxis Orchioides
	एस्पेरेगस् सारमेंटोसस Asparagus Sarmentosus

अस्याः गुणाः

मुसलीमधुरावृष्यावीर्योष्णावृंहणीगुरुः।
तिक्तारसायनीहन्तिगुदजन्यानिलांस्तथा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्यवर्द्धक, उष्णवीर्य, बृंहण, भारी, कडवी, रसायन तथा ववासीर और वातनिवारक है।

अपिच।

मुसलीरसपाकाभ्यांस्वादुःशीताग्निवर्द्धिनी।
वातपित्तहरावृष्यास्थैर्यमार्दवदायिनी ॥ (शा० नि०)

अर्थ-मुसली-रस और पाकमें मधुर, शीतल, अग्निवर्द्धक, वातनाशक, पित्तनिवारक, वीर्यवर्द्धक तथा स्थिरता, और मृदुतादायक है।

अन्यच्च ।

मुसलीमधुरावृष्याधातुवृद्धिकरीगुरुः ।
तिक्तापुष्टाबलकरीपिच्छिलाश्लेष्मलामता ॥
रसायनाशीतलाचपित्तदाहहरीमता ।
रक्तदोषंश्रमश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥
कृष्णाधिकगुणाप्रोक्ताश्वेताचाल्पगुणामता ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवृद्धिकारक, भारी, कडवी, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, पिच्छिल, कफजनक, रसायन, शीतल, तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार और श्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । काली मुसली और सफेद मुसली इन भेदोंसे मुसली दो प्रकारकी है, इनमें सफेद मुसलीकी अपेक्षा काली मुसलीके अधिक गुणहैं, काली मुसलीके क्षुपका ऐसा स्वरूप होताहै जैसा ४-५ पत्तोंवाला खजूरका नवीन वृक्ष होताहै, इसमें बहुत छोटे २ पीले फूल आतेहैं, क्षुपके नीचे उँगलीके समान मूल होताहै उसके ऊपरकी छाल भूरेरंगकी होतीहै भीतरका गर्भ सफेद रंगका होताहै ।

शतावरीमहाशतावरीनामानि ।



शतमूलीमहाशीताभीरुपत्रीशतावरी ।
महाशतावरीत्वन्याशतवीर्य्यामहोदरी ॥

अर्थ-शतमूली, महाशीता, भीरुपत्री, शतावरी, (बहुसुता, भीरु,

इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभीरुपत्री, महापुरुषदन्ता, रङ्गिणी, द्वीपिशत्रु, ऋषगता, काञ्चनकारिणी, मदभञ्जिनी, शतपदी, पीवरी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा, सूक्ष्मपत्रिका, सुपत्रा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताह्वा, लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटा, मूला, शतवीर्य्या, महौषधी, मधुरा, कैशिका, शतपत्रिका, विश्वस्था, वैष्णवी, कार्ष्णी, वासुदेवप्रियंकरी, दुर्मना, तैलवल्ली, अर्धकण्टका, सुपत्रिका और शतवीर्य्या)। महाशतावरी, शतवीर्य्या-महोदरी, (सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुषदन्तिका, वीरा, तुरङ्गिणी, बहुपत्रिका, ऊर्ध्वकण्ठी, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्य्या, महती, अर्द्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपुत्रिका, स्वादुरस्या)।

संस्कृतभाषामें	शतावरी, महाशतावरी।
हिन्दीभाषामें	सतावर, बडीसतावर।
बंगभाषामें	शतमूली।
मराठीभाषामें	लघुशतावरी, शतमूली, आसवली, बडीशतावरी, सहस्रमूली।
गुजरातीभाषामें	शतावरी, एकलकण्टो, शापनाशुवा।
कर्णाटकीभाषामें	किरिपआसडी, परडुआसडी।
तैलिङ्गीभाषामें	एदुमट्टीटेङ्गाचल्ल, चल्लगड्डल्ल।
इंग्रेजीभाषामें	एस्पेरेगस् रेसिमोसस्। A racemosus
लैटिन्भाषामें	एस्पेरेगस्,सतवर वा एडसेंडेन्स् Asparogus satavar orA. adscendens
फारसीभाषामें	गुर्जदस्ति।
अरबीभाषामें	शकाकुलमिश्री।

शतावरीगुणाः।

शतावरीगुरुःसीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी।
मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित्॥
शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित्॥(भा०प्र०)

अर्थ-सतावर-भारी, शीतल, कडवी, मधुर, रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्द्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, गुल्मनाशक, अतिसारनिवारक, शुक्रजनक, स्तनोंमें दूधवर्द्धक, बलकारी तथा वात, रक्तपित्त और सूजनको दूर करे है।

अन्यच्च ।

शतावर्यौहिमेतिक्तेमधुरेपित्तजित्परे ।
कफवातहरेवृष्येमहाश्रेष्ठेरसायने ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सतावर--शीतल, कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवातनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ हैं ।

अन्यच्च ।

शतावरीतुमधुराशीतावृष्याचतिक्तका ।
रसायनीगुरुःस्वादुःस्निग्धादुग्धप्रदामता ॥
अग्निदीप्तिकरीबल्यामेध्याशुक्रकरीमता ।
चक्षुष्यापुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा ॥
रक्तदोषगुल्महंत्रीशोथातीसारनाशिनी ।
तैलेघृतेप्रयोगार्थंप्रशस्तामुनिभिर्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ--शतावर--मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, रसायन, भारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, वलकारक, मेधाजनक, शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफ, वात क्षय, रुधिरविकार, गुल्म, सूजन और अतिसारको हरनेवाली है ।

महाशतावरीगुणा ।

महाशतावरीहृद्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी ।
शुक्रलाशीतवीर्य्याचबल्यावृष्यारसायनी ॥
अर्शस्संग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी ।
गुणाह्यस्यास्तुविज्ञेयाः पूर्वायाःसदृशागुणैः॥ (नि०र०)

अर्थ--वडीशतावर--हृदयको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्य्यवलकारक, वीर्य्यवर्धक, रसायन तथा ववासीर, संग्रहणी और नेत्ररोगको हरेहै । शेष गुण उसके शतावरकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

महतीकफवातघ्नीतिक्ताश्रेष्ठारसायने ॥ (रा० नि०)

अर्थ--वडीशतावर--कफ वातनाशक, कडवी और रसायनकार्य्यमें श्रेष्ठ है ।

द्विविधशतावरीगुणाः ।

शतावरीद्वयंवृष्यंमधुरंपित्तजिद्धिमम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी शतावर--वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्यङ्कुरगुणाः ।

शतावर्याह्यंकुरस्तुतिक्तोवृष्योलघुःस्मृतः ।
हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नोवातरक्तार्शसांहरः ॥
क्षयसंग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तकोलघुः ॥ (नि०र०)

अर्थ-शतावरके अंकुर-कडवे, वीर्य्यवर्द्धक, हलके, हृदयको हितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, बवासीर, क्षय और संग्रहणीरोगका नाश करे हैं ।

विवरण । शतावरकी बेल जंगलोंमें होती है, बेलका रंग सफेदी लिये होता है; पत्ते अत्यन्त छोटे २ सोयेके पत्तोंके समान होते हैं; उसकी बेलको कोई २ वैद्यलोग एकलकण्ठी कहते हैं; इसमें कांटे बहुत होतेहैं; फूल सफेद छोटे होतेहैं; बडी शतावरीभी इसीप्रकारकी होतीहै; इससे कुछ अधिक बडी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती हैं और शतावर और इसमें कुछ भेद नहीं होता । शतावरी वर्षाके आरम्भमें हरी होतीहै और फूल आतेहैं; एक वृक्षके नीचे सैकडों जड होतीहैं उसेही शतावरी कहते हैं ।

अश्वगन्धानामानि ।

अश्वगन्धावाजिगन्धाकटुकाश्वावरोहकः ।
वाराहकर्णीतुरगीबल्यावाजिकरीहया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कटुका, अश्वावरोहक, वाराहकर्णी, तुरगी, बल्या, वाजिकरी, हया, (अश्वकान्दिका, काम्बुका, अश्वारोहा, अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका. बलजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिपीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वाराहपत्री, बलदा, वरदा, कुष्ठगन्धिनी, वरगात्रकरी, पुण्या, कुष्ठगन्धा) ।

संस्कृतभाषामें अश्वगन्धा ।
हिन्दीभाषामें असगन्ध ।

वंगभाषामें	अश्वगन्धा ।
मराठीभाषामें	आसकंद, असन्ध ।
गुजरातीभाषामें	आखसंध ।
कर्णाटकीभाषामें	आसादु, अङ्गुर ।
तैलङ्गीभाषामें	पिल्लिआंगा ।
इंग्रेजी भाषामें	विंटरचेरी । Winter cherry
लैटिन् भाषामें	फाइसेलिस् सोम्निफेरा । Physalis Somnifero
	विथानीआ सोम्निफेरा । Withania Sommfea
फारसीभाषामें	मेंहेमन् व्ररी ।

अस्याः गुणाः ।

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ॥(भा०प्र०)

अर्थ–असगन्ध–वात, कफ, सूजन, श्वित्रकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बलकारक, रसायन, कडवी, कषेली, गरम और अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धकहै।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धाकटूष्णास्यात्तिक्ताचमदगन्धिका ।
बल्यावातहराहन्तिकासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–असगन्ध–चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बलकारक, वातनाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और व्रण (घाव) दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धोजराव्याधिनाशकस्तुवरःस्मृतः ।
धातुवृद्धिकरःकिञ्चित्कटुकोबलदःस्मृतः ॥
कान्तिप्रदश्चसंप्रोक्तस्तथाचमधुगन्धिकः ।
शरीरपुष्टिकारीचवृष्यश्चोष्णोलघुःस्मृतः ॥
वातंक्षयंश्वासकासौव्रणंश्वेतञ्चकुष्ठकम् ।
फंविषकृमीञ्छोथंतथाचैवक्षतक्षयम् ॥
कण्डूंनाशयतीत्येवंपूर्वाचार्यैर्निरूपितम् (नि० र०)

अर्थ–असगन्ध–रसायन अर्थात् जराव्याधिनाशक, कषेली, धातुवर्द्धक,

किञ्चित् चरपरी, बलवर्द्धक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पुष्टिकरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, गरम, हलकी तथा श्वास, खांसी, घाव, श्वेतकुष्ठ, कफ, विष, कृमि, सूजन, क्षतक्षय और कण्डू (खुजली) को दूर करे है।

अपिच।

अश्वगन्धापत्रलेपोग्रन्थिगण्डापचीन्हरेत्॥ (शो० नि०)

अर्थ-असगन्धके पत्तोंका लेप-ग्रन्थि, गण्डमाला और अपचीको दूर करनेवाला है।

विवरण-असगन्धका क्षुप होता है। फल-पनसोखाकी समान गोल होते हैं। इस क्षुपके नीचे छोटी मूलीकी समान कंद होताहै, उस कंदको निकाल कर सुखा लेते हैं, उसको असगन्ध कहते हैं।

पाठानामानि।



पाठाम्बष्ठापापचेलीकुचेलाछिन्नवेशिका॥

अर्थ-पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेशिका (अम्बष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी, श्रेयसी, विद्धकर्णिका, एकाष्ठीला, कुचेली, दीपनी, वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, बृहतिक्ता, शिशिरा, वृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, विद्धकर्णी, रसा, अविद्धकर्णी, पाटिका, अविद्धकर्णा, पाठिका, सुस्थिरा, प्रतानिनी, वत्सादनी, मालवी, त्रिशिरा, त्रिवृत, वृत्तपर्णी, रक्तघ्नी, विषहन्त्री, महौजसी, रुचिष्या, दीपनी, वीरा, वल्लिका)

संस्कृतभाषामें	पाठा।
हिन्दीभाषामें	पाढ।
वंगभाषामें	आकनादी, निमुक, आंखाँदि।

मराठीभाषामें	पहाडमूळ ।
गुजरातीभाषामें	कालीपाट, करेटीमूल ।
कर्णाटकीभाषामें	पाठा ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाढचेट्टु ।
औत्कलिभाषामें	पाकन्र बिन्धि ।
इंग्रेजीभाषामें	परेराग्रुट ।
लैटिन्भाषामें	सिसांपिलोस् परिरा । Cissampelos pareiro

अस्या गुणाः ।

पाठोष्णाकटुकातिक्तावातश्लेष्महरीलघुः ।
हन्तिशूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मोदरव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-पाढ-गरम, चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका, तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठातिक्ताकटूष्णाचभग्नसन्धानकारका ।
तीक्ष्णालघ्वीपित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥
वातपित्तज्वरच्छर्दिविषाजीर्णत्रिदोषकान् ।
हृद्रोगरक्तकुष्ठातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥
गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकरीमता । (नि० रा०)

अर्थ-पाढ-कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (टूटे हुये स्थानको जोडनेवाला) तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त, ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

लघुपाठागुणाः ।

लघुपाठातिक्तरसाविषघ्नीकुष्ठकण्डुनुत् ।
छर्दिहृद्रोगगरजिन्त्रिदोषशमनीमता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लघुपाढ-कडवा तथा विष, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण। पाढकी बेल होतीहै, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमेंसे श्वेत और सूक्ष्म मौरकी समान फूल निकलता है। फलमकोयकी समान लालरंगके होते हैं और वांगकी जडको लघुपाठा कहते हैं तथा वांगकी भी बेल होतीहै, पत्ते-फंजीकी समान होते हैं, फंजीके पत्ते ऊपर नीले और नीचे सफेद होते हैं, किन्तु वांगके ऐसे नहीं होते; आकार गोलफञ्जीकी समान और कुछेक पिलाई लिये होता है, फूल-सूक्ष्म और सफेद होते हैं, फल-पीलुकी सदृश होते हैं।

त्रिवृन्नामानि।



त्रिवृत्सुवहात्रिपुटात्रिभण्डीरेचनीसरा॥

अर्थ-त्रिवृत्-सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा (सर्वानुभूति, त्रिवृता, सरसा, सरणा, सहा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मसूरी, अर्द्ध-चन्द्रा, विदला, सुषेणी, कालिङ्गिका, कालमेषी, काली, त्रिवेला, त्रिवृत्तिका, सारा)

संस्कृतभाषामें	त्रिवृत्।
हिन्दीभाषामें	निसोत, पनिलर।
वंगभाषामें	तेड्डी।
मराठीभाषामें	निशोत्तर, तेंड।
गुजरातीभाषामें	नसोतर।
कर्णाटकीभाषामें	तिगडे।
तैलिङ्गीभाषामें	आलतेगडा।
तामिलीभाषामें	शिवदइ।
इंग्रेजीभाषामें	टरवीथरूट *Turbithroot*

लैटिन्भाषामें	आईपोमियां टरपीथम् । Ipomoeaturpethum
फारसीभाषामें	निसोथ ।
अरबीभाषामें	तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृन्नामानि ।

श्यामात्रिवृन्मालविकामसूरविदलाचसा ।
कालार्द्धचन्द्रपालंदीसुषेणीकालमेषिका ॥

अर्थ-श्यामा-त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्द्धचन्द्रा, पालंदी, सुषेणी, कालमेषिका (पालिन्धी, कालमेशिका)

हिन्दीभाषामें	कालानिसोथ, श्यामनिलर ।
बंगभाषामें	कालतेउडी ।
कर्णाटकीभाषामें	केप्पनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृन्नामानि ।

शुक्लभण्डीत्रिभण्डीस्यात्काकाक्षीसरलात्रिवृत् ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटात्र्यस्राकोटरवाहिनी ॥

अर्थ-शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत्, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्रा, कोटरवाहिनी (व्याघ्रपादी, त्रिसूत्रा, वृकाक्षी, चोरनासिका, सुवहा, निशोत्रा, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)

हिन्दीभाषामें	सफेदनिसोत ।
बंगभाषामें	श्वेततेउडी ।
मराठीभाषामें	पांढऱ्या फुलांचा निशोत्तर ।
गुजरातीभाषामें	धोलाफुलनुं नसोतर ।

रक्तत्रिवृन्नामानि ।

रक्तपुष्पारक्तमूलाकलिङ्गापरिपाकिनी ।
त्रिवृतानिःसृतारुणासूत्रमध्याचसास्मृता ॥

अर्थ-रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिंगा, परिपाकिनी, त्रिवृता, निःसृता, अरुणा, सूत्रमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा, कालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका, कुलवर्णा, मसूरी, अमृता, काकनासिका, और रक्तत्रिवृत् ।

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिक्ताकटूष्णाचक्रिमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित् ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्तिप्रशस्ताचविरेचनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-निसोत-कडवा, चरपरा, गरम, तथा क्रिमि, कफ, उदररोग, कुष्ठ, कण्डू और व्रणको दूर करेहै, इसका जुलाब प्रशंसायोग्यहै ।

अन्यच्च ।

त्रिवृत्तुमधुरंरूक्षंतीक्ष्णंवातकरंमतम् ।
तुवरंचरसेतिक्तंकटुपाकञ्चरेचकम् ॥
हितकृन्मलस्तम्भञ्चग्रहणीञ्चकफोदरम् ।
शोथंपाण्डुंकृमीन्प्लीहांज्वरंपित्तंकफंतथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तंहृद्रोगञ्चविनाशयेत् । (रा०नि०) .

अर्थ-निसोत-मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कषेला, तिक्तरसान्वित, कटुपाकी; इसका रेचक (जुलाब), हितकारी तथा मलस्तम्भ, संग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग, कृमि, प्लीहा, ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोगको हरनेवाला है ।

श्यामत्रिवृद्गुणाः ।

श्यामात्रिवृत्ततोहीनगुणातीव्रविरेचनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ-श्यामपनिलर (काला निसोथ)-सफेद निसोथकी अपेक्षा हीनगुणावाला है, किन्तु विरेचन गुण इसमें तीव्रहै, तथा मूर्च्छा दाह, मद, भ्रान्ति और कण्ठको उत्कर्षण करनेवाला है ।

श्वेतत्रिवृद्गुणाः ।

श्वेतात्रिवृद्रेचनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् ।
रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा० प्र०)

अर्थ-सफेद निसोथ-रेचक, स्वादिष्ठ, गरम, वातनाशक, रूखा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन और उदररोगको दूर करेहै ।

रक्तत्रिवृद्गुणाः ।

अरुणात्रिवृतास्वादुःकषायामृदुरेचनी ।
रूक्षाचकटुकाचैवपाकेतिक्ताकफापहा ॥ (राजवल्लभ०)

अर्थ-लाल निसोथ-मधुर, कषेला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, पचनेमें कडवा और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

रक्तात्रिवृत्कटुस्तिक्ताकटूष्णारेचनीचसा ।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणीहितकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-लालनिसोथ-कडवा, चरपरा, गरम, रेचक तथा संग्रहणी, एवं मलविष्टम्भहारक और हितकारक है ।

विवरण । सफेद निशोथकी वेल जंगलमें होतीहै, सफेद फूल आतेहैं, गोल २ फल आतेहैं, उनमें चार २ वीज होतेहैं, पत्ते-नोकदार गोल होतेहैं, इसकी वेलकी लकडीमें तीन धारें होतीहैं, निसोथ तीन प्रकारका होताहै, परन्तु सफेद सवसे उत्तम है ।

२ काले निसोथकीभी लता होतीहै, फूल कालापनलिये वैंजनीसे होतेहैं, पत्ते-गोल २ नोंकदार उसीप्रकार होतेहैं; परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फलभी कुछ छोटे होतेहैं और सव आकार इकसार होताहै; परन्तु वैद्योंने सफेदकी अधिक प्रशंसा करीहै ।

मात्रा सफेद निसोथकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा काले निशोथकी १ मासेसे लेकर ३ मासेपर्य्यन्त है । मात्रा लाल निसोथकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है

दन्तीनामानि ।

उदुम्बरपर्णीदन्तीप्रत्यक्पर्णीचदन्तिका ।
श्वेतघण्टानिकुम्भीचनिःशल्यानिष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ-उदुम्वरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निष्कुम्भ (निकुम्व, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुखेती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्वरदला, विशल्या, उदुम्वरपर्णी, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वराहाङ्गी, निकुम्भ और मकूनक यह नाम छोटी दन्तीके हैं) (द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपाचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी, आखुकर्णी)

संस्कृतभाषामें	दन्ती ।
हिन्दीभाषामें	दन्ती, तिरिफल ।
वंगभाषामें	दन्तीगाछ ।
मराठीभाषामें	लघुदन्ती ।

गुजरातीभाषामें	दांतएटले नेपालनां मूळ ।
कर्णाटकीभाषामें	दंती ।
तैलिङ्गीभाषामें	दन्तीचेट्टु, कोण्ड अमुदुम् ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रोटन् सीडस् । Crotenseeds
लैटिन् भाषामें	क्रोटनटिग्लियम् । Crotentiglium
फ़ारसीभाषामें	दंद ।
अरबीभाषामें	हबुलं मुलुक ।

दन्तीगुणाः ।

दन्तीवह्निसमापाकेशोफदद्रुविनाशिनी ।
कण्डूपामाहराकुष्ठध्वंसिनीकृमिहृत्सरा ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दन्ती-पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोफ, ववासीर, कण्डू, पामा, कोढ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

दन्तीकटूष्णाशूलामत्वग्दोषशमनीचसा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनीदीपनीपरा ॥ (रा० नि०)

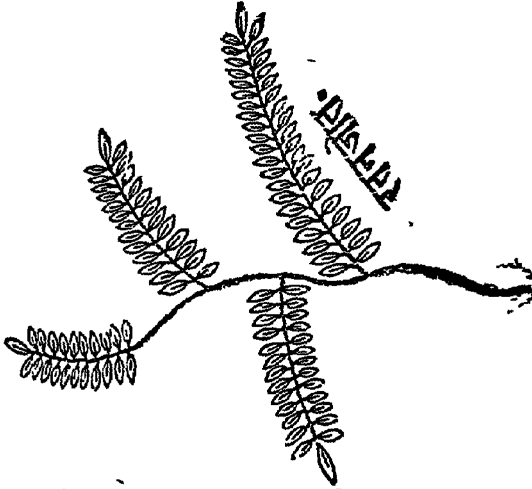
अर्थ-दन्ती-चरपरी, गरम, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके दोष, ववासीर, घाव, पथरी और शल्यनिवारक है ।

अपिच ।

दन्तीद्वयंसरंपाकेरसेचकटुदीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णंहन्तिपित्तास्रकफशोफोदरकृमीन् ।
क्षुद्रदन्तीफलंतुस्यान्मधुरंरसपाकयोः ॥
शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी दन्ती-दस्तावर, रस और पाकमें चरपरी जठराग्निको दीपन करनेवाली, तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदांकुर, पथरी, शूल, ववासीर, कण्डू, कोढ, दाह, पित्तकारक, कफ, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश करे है । छोटी दन्तीका फल-रस और पाकमें मधुर, शीतल, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला, विष, शोथ और कफनाशक है ।

बृहद्दन्तीनामानि ।



बृहद्दन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी ।
विषभद्राभद्रदन्तीज्योतिष्काचजयावहा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा ।

संस्कृतभाषामें	बृहद्दन्ती ।
हिन्दीभाषामें	मुगलाई अण्ड ।
मराठीभाषामें	थोरदन्ती ।
गुजरातीभाषामें	रतनजोत ।
कर्णाटकीभाषामें	एरण्डनेदन्ती ।
इंग्रेजीभाषामें	दिफिझिकनट् । The physicient
लैटिन्भाषामें	करकस मल्टीफीडस् । Curcas Multifidus
	जेट्रोफापरगन्स्, Jatrophapurgans
फारसीभाषामें	शकारदुजुवा ।
अरवीभाषामें	अबुखलसा ।

बृहद्दन्तीगुणाः ।

बृहद्दन्तीकटूष्णाचजठरामयशोधिनी ।
अर्शोव्रणाश्मरीशूलत्वग्दोषशमनीचसा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती-चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पथरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

बृहद्दन्तीबीजगुणाः ।

तिक्तैरण्डस्यबीजन्तुरसपाकेगुरुमधु ।
स्निग्धंचरेचकंवृष्यंबृंहणञ्चबलप्रदम् ॥
कफपित्तप्रदंचैववामकंवातदाहकृत् ।
नविषंविषमित्याहुर्जैपालोविषमुच्यते ॥
शोधितश्चविरेकेषुचमत्कृतिकरःपरः ।

अर्थ-बृहद्दन्तीका बीज-रस और पाकमें भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, वीर्यवर्द्धक, बृंहण, बलदायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और दाहकारकहै । जो विषहै वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विषहै । यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरमें चमत्कार करता है ।

भद्रदन्तीनामानि ।

भद्रदन्तीकेशरुहाभिषग्भद्राजयावहा ॥

अर्थ-भद्रदन्ती, केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आवर्त्तकी, ज्वराङ्गी, जयाह्वा, भद्रदन्तिका)

अस्या गुणाः ।

भद्रदन्तीकटूष्णाचरेचनीकृमिहापरा ।
शूलकुष्ठामदोषघ्नीतुंदामयविनाशिनी ॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक तथा शूल, कोढ, आमदोष और उदररोगनाशक है ।

जयपालनामानि ।



जयपालश्चजैपालःसारकस्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ-जयपाल, जैपाल, सारक, तिन्तिडीफल, (दन्तीवीज, मलद्रावि, निकुम्भाख्यवीज, रेचक, वीजरेचन, कुम्भीवीज, कुंभिनीवीज, घण्टावीज, घण्टिनीवीज, शोधनीवीज, चक्रदन्तीवीज)

संस्कृतभाषामें	जयपाल ।
हिंदीभाषामें	जमालगोटा ।
वंगभाषामें	जैपाल ।
मराठीभाषामें	जेपाळ ।
गुजरातीभाषामें	नेपालो ।
कर्णाटकीभाषामें	जेपाल ।
इंग्रेजीभाषामें	पार्जिगब्रोटन । Parging Broton
लैटिन् भाषामें	औलियम, कोटोनिस ।
अरवीभाषामें	हबुससलातीन ।
फारसीभाषामें	तुखमेवेंदं जीरखताई ।

अस्य गुणाः ।

जयपालःकटुरुष्णःकृमिहारीविरेचकः ।
दीपनःकफवातघ्नोजठरामयशोधनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-चरपरा, गरम, कृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवात नाशक और उदरामयशोधक है ।

अन्यच्च ।

जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचीपित्तकफापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जमालगोटा-भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

सारकंकफनुत्क्लेदितीक्ष्णमुष्णंविरेचनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जमालगोटा-कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है ।

अस्य बीजशोधनविधि. ।

निस्तुषंजयपालञ्चद्विधाकृत्वाविचक्षणः ।
एतद्बीजस्यमध्येतुपत्रवत्परिवर्ज्जयेत् ॥

अष्टमांशेनचूर्णेनटङ्कणस्यतुमेलयेत् ।
केशयन्त्रेणतद्भाव्यंपाच्यंदुग्धेनसंप्लुतम् ॥
त्रिवारंशुद्धिमायातिजयपालोमृतोपमम् । (इतिरसच०)

अर्थ-बुद्धिमान् वैद्य बक्कल रहित जमालगोटेके दो भागकरके इसके बीजके मध्यमें पत्तेकी समान जो वस्तुहै उसको निकाल डाले और जमालगोटेकी दालमें अष्टमांश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे । केशयन्त्रके द्वारा भावना दे, फिर दूधमें भिजोकर मिलावे; इसप्रकार तीन वार करनेसे जमालगोटा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्नंगोमयतोयेवादुग्धेवाजयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्टंतन्निःस्नेहंशुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोबरके जलमें तथा दूधमें भिजोकर फिर कोमल खीपडेमें भूनलेवे जब उसमें चिकनाई न रहे तब शुद्ध होजाता है ।

अस्य बीजतिलगुणाः ।

तैलंनिकुम्भबीजोत्थमत्युग्ररेचनंपरम् ।
आनाहमुदरंहन्तिसंन्यासञ्चशिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भंज्वरोन्मादंगदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातञ्चशोथञ्चमर्द्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युग्र रेचक तथा आनाह (अफारा) उदररोग, संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गसंज्ञक रोग, आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूरकरे है ।

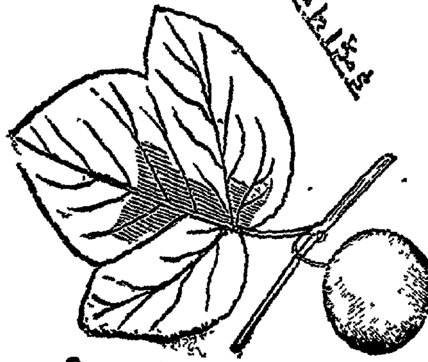
विवरण-दन्तीका क्षुप होताहै, पत्ते-गूलरकी समान होते हैं, फूल महुवेकी समान होता है इसका फल जमालगोटा है । वडी दन्तीका वडा वृक्ष होता है, फल-अण्डकी समान होते हैं, उसमेंसे अंडीकी समान बीज निकलते हैं, उन बीजोंका जुल्लाव होता है, तथा इसके दूधकाभी थूहरके दूधकी समान जुल्लाव दियाजाता है ।

इन्द्रवारुणीनामानि ।

इन्द्रवारुणिकाचित्राविशालागजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारुःक्षुद्रसहा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ-इन्द्रवारुणिका, चित्रा विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, पिटङ्कोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, वालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्ष्णा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।



महेन्द्रवारुणीकायाविशालाचमहाफला ।
आत्मरक्षाचित्रफलातुंवसीत्रपुसीचसा ॥

अर्थ-महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुंवसी, त्रपुशी (रम्या, महेन्द्री, त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, बृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिरा)

संस्कृतभाषामें	इद्रवारुणी, महेंद्रवारुणी ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रायण, फरफंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।
वंगभाषामें	राखालशशा, राखालताड्ड, कुंदरुकी, वडमाकाल ।
मराठीभाषामें	लघुइंद्रवण, कांवडळ, थोरकावँडळ ।
गुजरातीभाषामें	इंद्रवाणीयुँ, गावसुकणु ।
रा०	तसतुम्वो, गडतुम्वो ।
दे०	घोडइन्द्रावण, घुलेइन्द्रावण ।
कर्णाटकीभाषामें	हामेके, हिरियाहामेके ।
तैलिङ्गीभाषामें	एतिपुच्छा ।

इंग्रेजीभाषामें कोलोसिंथ । Colocynth
लैटिन्भाषामें सिट्रलस् कोलोसिंथिस् । Citrullus Colocynhis
क्युक्युमिस् स्युडोकोलो सिंथिस् । Cucumispo colocynthis
फारसीभाषामें खुर्यजातलख ।
अरबीभाषामें हंजल ।

इन्द्रवारुणीगुणाः ।

इन्द्रवारुणिकातिक्ताकटुःशीताचरेचनी ।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मक्रिमिकुष्ठज्वरापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-इन्द्रायण-कडवी, चरपरी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, क्रिमि, कोढ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लघ्वीन्द्रवारुणीप्रोक्तापाकेकट्वीचतिक्तका ।
शीतासरोष्णवीर्य्याचलघ्वीचैवप्रकीर्तिता ॥
गुल्मपित्तोदरकफक्रिमिकुष्ठज्वरव्रणान् ।
श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भककामलाः ॥
प्लीहानंशुष्कगर्भश्चगलगण्डंविषंतथा ।
आनाहंवातमपिचचामंदुष्टोदरंतथा ॥
सर्वोदराणिपाण्डुश्चनाशयेदितिकीर्त्तिता । (नि० र०)

अर्थ-इंद्रायण-पचनेमें चरपरी, कडवी, शीतल, सारक, उष्णवीर्य्य, हलकी तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, श्वास, खाँसी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, शुष्कगर्भ, गलगण्ड, विष, आनाह, वात, अपची, आम, दुष्टोदर, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाशकरनेवाली है ।

महेन्द्रवारुणीगुणाः ।

अन्येन्द्रवारुणीकफरुजश्चश्लीपदंतथा ।
नाशयेदितिसंप्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्ववत् ॥
रसेवीर्येचपाकेचाधिकाचोक्तागुणैरियम् । (नि० र०)

अर्थ-बडी इन्द्रायण-कण्ठरोग और श्लीपद रोगको दूर करनेवालीहै,

रस, वीर्य्य और विपाकमें इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवाली है, शेष गुण इन्द्रायणकी समान जानने ।

विवरण । इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमें उत्पन्न होतीहै, फल-सूक्ष्म कांटेयुक्त लालरंगका होताहै, फूल-पीलेरंगका होताहै । पत्ते-लम्बे वीचवीचमें कटेहुवे होतेहैं, दूसरी रेतली भूमिमें होतीहै, उसका फल-पीलेरंगका होताहै । इन दोनों जातिकी इन्द्रायणके फल तथा मूलके द्वारा जुल्लाव दियाजाताहै ।

स्वर्णपत्रीनामानि ।

कल्याणीहेमपत्रीचरेंचनीस्वर्णपत्रिका ।

अर्थ-कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णिनी और मलहारिणी)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णपत्री ।
हिन्दीभाषामें	सनाय ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
वंगभाषामें	सोनामुखी, सोनापाता ।
इंग्रेजीभाषामें	टिनेवेलीसिना ।
लैटिनभाषामें	सिनाइंडिका ।

अस्या गुणाः ।

विट्बन्धंवह्निमान्द्यञ्चयकृदाद्युदरंतथा ।
प्लीहोदरंबद्धगुदमजीर्णंविषमज्वरम् ॥
कामलांपाण्डुरोगञ्चकल्याणींक्षपयेद्ध्रुवम् । (आ० सं०)

अर्थ-सनाय-मलबद्ध, मंदाग्नि, यकृत्, उदररोग, प्लीहोदर, बद्धगुद, अजीर्ण, विषमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाशकरेहै ।

कृष्णबीजनामानि ।



कृष्णबीजंश्यामबीजंस्मृतंश्यामलबीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीजक ।

संस्कृतभाषामें	कृष्णबीज ।
हिन्दीभाषामें	कालादाना ।
वंगभाषामें	नीलकलमी ।
इंग्रेजीभाषामें	पेलब्लुइपोमिया ।
लैटिन्भाषामें	फारवटिसनील ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णबीजंसरंस्निग्धंशोथोदरहरंपरम् ।
ज्वरविष्टम्भहारीचमस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्तकफेनाहेप्रयोज्यंबुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना तथा सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, कफ, और आनाह रोगको दूरकरेहै ।

विवरण । जमालगोटेके अभावमें इसका व्यवहार किया जाताहै, क्योंकि जमालगोटेकी समान यह इतना भयंकर दस्तावर नहींहै । आजकल बहुतसे आलोपैथिकडाक्तर सरकारी सफाखानेमें इसका व्यवहार करतेहैं । व्यवहार-बीज । मात्रा ६ मासेकी ।

नीलिकानामानि ।

नीलीतुनीलिनीनीलामेघवर्णाचकुत्सला ।
दूलीक्रीतकिकाकालानीलिकानीलपुष्पिका ॥

अर्थ-नीली, नीलिनी, नीला, मेघवर्णा, कुत्सला, दूली, क्रीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, तूणी, दोला, दूलिका, द्रोणिका, अक्लिका, ग्रामणी, ग्रामिणी, तूली, द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलपत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, श्यामा, शोधिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, महाफला, असिता, क्लीतनी, केशी, चारटिका, गन्धपुष्पा, श्यामलिका, रङ्गपत्री, महावला, स्थिररंगा, रंगपुष्पी, वृन्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, विजया, गन्धपुष्पी, और स्थिररागा)

संस्कृतभाषामें	नीली ।
हिन्दीभाषामें	नील, लील ।

वंगभाषामें	नीलगच्छी नीलगाछ।
मराठीभाषामें	गुळी, लघुनीळी।
गुजरातीभाषामें	गळी।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीपनीली।
तैलिङ्गीभाषामें	निलीजेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	इंडिगो। Indigo
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफेरा कोर्डिफोलिआ। Indigofera cordifolia

अस्याः गुणाः।

नीलीतुकटुकातिक्ताकेश्याचोष्णासरामता।
व्यंगंश्लेष्मोदरंमोहंहृद्रोगंचभ्रमंतथा॥
वातरक्तमुदावर्त्तमामवातंकफञ्जयेत्।
मदंकासंविषंचामंवातंगुल्मंज्वरंतथा॥
कुष्ठंकृमींश्चोदरञ्चप्लीहाञ्चैवविनाशयेत्। (नि०र०)

अर्थ–नील–चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यंग, श्लेष्म, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विष, आम, वात, गुल्म ज्वर, कोढ, कृमि, उदर और प्लीहाका नाशकरे है।

अन्यच्च।

नीलीकेश्याशिरोरोगव्रणकुष्ठापहासरा॥ (शो० नि०)

अर्थ–नील–केशोंको सुंदरकरनेवाला तथा मस्तकरोग, घाव और कोढको दूर करेहै, तथा दस्तावर है।

विवरण। नीलके क्षुप छोटे २ किसानलोग खेतीमें बोतेहैं, पत्तेसरफोंकके समान नीले और कुछेक कालापन लिये होतेहैं। इसकी फली–टेढी और गोल होतीहै, इसकी डाली और पत्तोंकी कुट्टीकर कुण्डोंमें पानीभर उसमें गलातेहैं, तब इसका नील बनातेहैं वह नीले रंगके काममें आताहै, दूसरा इसीका भेद बडा नील है।

महानीलीनामानि।

अन्याचैवमहानीलीअमराराजनीलिका।
तुत्थाश्रीफलिकामेलाकेशार्हाभत्सपत्रिका॥

अर्थ-महानीली, अमरा राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलिका, गेला, केशार्हा, भर्त्सपत्रिका ।

हिन्दीभाषामें	वडानील ।
वंगभाषामें	वडनील ।
मराठीभाषामें	थोरनीली ।
गुजरातीभाषामें	मोटीगली ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीपनील ।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोकेरा टिंकटोरिया । Indigotcra tinctoria

अस्या गुणाः ।

महानीलीगुणाढ्यास्याद्रंगश्रेष्ठासुवीर्य्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषासगुणासर्वकर्मसु ॥

अर्थ-वडानील-गुणाढ्य, उत्तमरंगवाला, वीर्य्यजनक, नीलकी अपेक्षा यह सर्व गुणोंमें उत्तम है ।

शरपुंखानामानि ।



शरपुंखाकालशाकंप्लीहारिः कालिकामता ॥

अर्थ-शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारि, कालिका (प्लीहशत्रु, नीलवृक्षाकृति, काण्डपुंखा, बाणपुंखा, इषुपुंखिका, सायकपुंखा, इषुपुंखा, शरपुंखा)

श्वेतशरपुंखानामानि ।

शराभिधाचपुंखास्याच्छ्वेताद्यासितसायका ।
सितपुंखाश्वेतपुंखाशुभ्रपुंखाचपञ्चधा ॥

अर्थ-श्वेतशरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा, शुभ्रपुंखा ।

कंठपुंखानामानि ।

अन्यातुकंठपुंखास्यात्कंठालुःकंठपुंखिका ॥

अर्थ-कण्ठपुंखा, कंठाळु, कण्ठपुंखिका ।

संस्कृतभाषामें	शरपुंखा, श्वेतशरपुंखा, कण्ठपुंखा ।
हिन्दीभाषामें	सरफोंका, सफेद सरफोंका, कण्ठपुंखा ।
वंगभाषामें	वननील, सादवननील ।
मराठीभाषामें	उन्हाळी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरडुकोगिग, मल्लुकोगिग ।
तैलिङ्गीभाषामें	मांपोराचेट्टु, तेल्लवेंपल्लिंचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कोल्लुकवकेल्लपिं ।
द्रा०	जंलिकुलथि ।
इंग्रेजीभाषामें	परपलटेफ्रोझिया । Purple tephrosia
लैटिन्भाषामें	टेफ्रोझियापरपूरिया । Tephrosia Purpurea

शरपुंखागुणाः ।

शरपुंखायकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तःकषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरफोंका-यकृत्, प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक, है । तथा कडवा कषेला, हलका, और खांसी, रुधिरविकार, श्वास तथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

शरपुंखाकटूष्णाचक्रिमिवातरुजापहा ।
श्वेतात्वेषागुणाढ्यास्यात्प्रशस्ताचरसायने ॥(रा.नि.)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, गरम, क्रिमि और वातनाशक है सफेद सरफोंका सरफोंकेकी, अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्य्यमें उत्तम है ।

अन्यच्च ।

शरपुंखातुकटुकातिक्तोष्णातुवरालघुः ।
यकृत्कृमिप्लीहगुल्मव्रणकासविषापहा ॥
श्वासार्शरक्तदोषघ्नीहृद्रोगकफजूर्तिहा ।
वातंकफोदरंव्यंगंगलत्कुष्ठञ्चनाशयेत् ॥
श्वेतायाश्शरपुंखायारक्तातोह्यधिकागुणाः । (नि०र०)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, हलका, तथा यकृत्, कृमि, प्लीहा, गुल्म, व्रण, खांसी, विष, श्वास, ववासीर, रुधिरविकार, हृद्यरोग, कफ, ज्वर, वात, कफोदर, व्यङ्ग (झाँई) औरगलत्कुष्ठको नष्ट करे है । रक्त शरफोंकेसे सफेद अधिक गुणवाला है ।

कंठपुंखागुणाः ।

कंठपुंखाकटूष्णाचक्रिमिशूलविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कंठपुंखा-चरपरा, गरम तथा कृमि और शूलविनाशकहै ।

विवरण । सरफोंकेका क्षुप होता है, पत्ते-नीलके समान होतेहैं, फूल-लाल और वारीक होते हैं, फलियोंके ऊपर रुँआ होता है, दूसरे प्रकारकी फलियोंपै रुँआ नहीं होता । सफेद सरफोंकेका क्षुप, पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोंकेसे कुछेक छोटे होते हैं, फूल-सफेद होताहै । शरफोंकेकी जड-चिलममें रखकर पीनेसे खांसी और श्वास दूर होता है । सरफोंकेकी मात्रा ४ मासे । कंठपुंखेकी मात्रा ५ मासे ।

दुरालभानामानि ।

दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी ।
गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता, रोदिनी, गांधारी, कच्छुरा, अनन्ता, कषाया, दुरभिग्रहा (दुःस्पर्शा, कुनाशक, रोदनी, धनुर्यास, युवस, कच्छुरा, धन्वयवास, विकण्टक, आत्ममूली, पद्मसुखी, इदंकार्य्या, धन्वयास, ताम्रमूला, कच्छुरा, धन्वी, धन्वयवासक, प्रबोधिनी, सूक्ष्मदला, विरूपा, दुर्लभा, दुष्प्रधर्षा, ताम्रमूली, मरुज्जन्मा, उष्ट्रभक्ष्या, मृदुपर्णा, कषायका, आह्लादनी, विरूपा, फणिहारी, विशारदा, रविग्रहा, अजाभक्ष्या, ग्राहिणी, सूक्ष्मदला)

संस्कृतभाषामें	दुरालभा ।
हिन्दीभाषामें	धमासा, हिंगुणा ।
वंगलाभाषामें	दुरालभा ।
मराठीभाषामें	धमासा ।
गुजरातीभाषामें	धमासो ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिदुरुवे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिलरेगटि, दुलगोंडि ।

लैटिन्‌भाषामें फगोनियाएरेविका । Fogonia-arabica
फारसीभाषामें वादावर्द ।
अरवीभाषामें शुकाई ।

अस्या गुण...

उष्ट्रभक्ष्यामरुछासविषघ्नीबोधकृत्परा ।
कषायाज्वरहृच्छीतातथातीसारनाशिनी ॥ (ध० नि०)

अर्थ-धमासा-वोधकारक, कपेला, शीतल तथा वात, श्वास, विष, ज्वर और अतिसारनाशक है ।

अन्यच्च ।

दुरालम्भाकटुस्तिक्तासोष्णाक्षाराम्लिकातथा ।
मधुरावातपित्तघ्नीज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धमासा, चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा वात, पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरैहै ।

अपिच ।

दुरालभाकटुस्तिक्तामधुरारक्तशुद्धिकृत् ।
शीताचोष्णाविसर्पघ्नीविषमज्वरनाशिनी ॥
तृट्च्छर्दिमेहगुल्मघ्नीमोहरक्तरुजापहा ।
वातंपित्तंकफंकुष्ठंज्वरंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-धमासा-चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल, गरम, तथा विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त, कफ, कोढ और ज्वरको दूर करे है ।

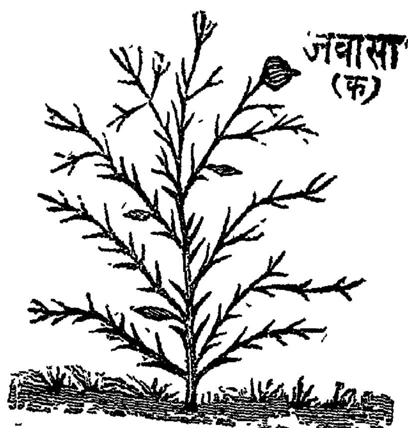
विवरण । धमासेका, रेतली भूमिमें छत्ता होता है, कांटे वारीक होते हैं, पत्ते-सूक्ष्म और फलभी वहुत छोटे २ होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

यवासनामानि ।

यासोयवासकोनन्तावालपत्रोधिकंटकः ।
दूरमूलःसमुन्द्रान्तोदीर्घमूलोमरुद्भवः ॥

अर्थ-यास, यवासक, अनन्ता, वालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरूद्भव (यवास, कण्टकी, वहुकण्टक, क्षुद्रंगुदी, रोदनिका, विपन्न,

कण्टकालुक, त्रिपर्णिका, गन्धारी, वासन्त, वनदर्भ, विवर्णक, तीक्ष्णकण्टक, सूक्ष्मपत्र)





संस्कृतभाषामें	यवास।
हिन्दीभाषामें	जवासा, दुलाह।
वंगभाषामें	यवासा।
मराठीभाषामें	कांटेचुबुक, तांबडा धमासा।
गुजरातीभाषामें	जवासो।
कर्णाटकीभाषामें	तोरे इंगलु।
लैटिन्भाषामें	अल्हेजाई मरोरम। Alhagimaurorum
फारसीभाषामें	फराक्नुन।
अरबीभाषामें	अल्गुल हाज।

अस्य गुणाः।

यासःस्वादूरसस्तिक्तस्तुवरःशीतलोलघुः।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित्॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः। (धन्वन्तरिनि०)

अर्थ–जवासा–स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, शीतल, हलका, तथा कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, रक्तपित्त, कोढ, खाँसी, तृषा, विसर्प, वातरक्त, वमि और ज्वरको दूर करैहै।

अन्यच्च।

यासस्तुमधुरस्तिक्तोबल्यश्चाग्निप्रदीपकः। सरःशीतोल-

घुश्चैवतुवरःकफपित्तजित् ॥ रक्तरुक्कुष्ठवीसर्पमेदभ्रममदा- पहः। वातरक्ततृषांछर्दिकासंदाहंज्वरंहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जवासा-मधुर, कडवा, बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, सारक, शीतल, हलका, कषेला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ, विसर्प, मेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, खाँसी, दाह और ज्वरका नाश करे है।

विवरण। जवासा-धमासेकी समान होता है, और यह भी जलाशयके समीपकी भूमिमें अधिक उत्पन्न होताहै। इसके काँटे धमासेसे कुछेक वडे होते हैं, और पत्ते भी किञ्चित् वडे होते हैं। प्रायः जवासेके गुण धमासेसे मिलते हैं। वर्षाऋतुके आदि अंतमें यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमें तो आपसे आपही जलजाता है।

मुण्डीनामानि।

श्रावणीश्रवणामुण्डीभूतघ्नीचपलङ्कषा ॥

अर्थ-श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, पलङ्कषा, (कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला, भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, प्रव्रजिता, परिव्राजि, तपोधना)

महामुण्डीनामानि।

महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका।
कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥

अर्थ-महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी, (महामुण्डी,लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा मुण्डाख्या, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीलकदम्बिका, वोडा)

संस्कृतभाषामें	मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका।
हिन्दीभाषामें	मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, वडीमुण्डी।
बंगलाभाषामें	मुंडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, वडथुलकुडी।
मराठीभाषामें	वरसवोडी, वोडथरा।
गुजरातीभाषामें	मुंडी, गोरखमुंडी, वोडियोकलार।
कर्णाटकीभाषामें	कीपोवोडतर, हिरीपवोडतर।
तैलिङ्गीभाषामें	वोडसरपुचेट्टु।
ता० वमू०	कोट्टक।

लैटिन्भाषामें स्फिरैंथस् इंडिकस् (Sphoeranthus indicus
अरबीभाषामें कमादर युस् ।

मुण्डीगुणाः ।

मुण्डीतिक्ताकटुःपाकेवीर्य्योष्णामधुरालघुः ।
मेध्यागंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुनुत् ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिनुत् । (ग० नि०)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमें, चरपरी, उष्णवीर्या, मधुर, हलकी, मेधाजनक, तथा गलगंड, अपंची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, पाण्डुरोग, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदाकी वेदनाको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

श्रावणीतुकषायोष्णापाकेतिक्ताचतीक्ष्णका । मधुराभेदकालघ्वीमेध्याबल्यारसायना ॥ गलगंडंगंडमालामपचीं कफवातकम् । प्लीहामेदमथोन्मादंश्लीपदंपाण्डुरोगकम् ॥ अरुचिंयोनिशूलञ्चकासमर्शंचकृच्छ्रकम् । पित्तंचाममपस्मारंकृमिंश्वासञ्चकुष्ठकम् ॥ विषदोषंचातिसारंछर्दिंचैव विनाशयेत् ।

अर्थ-गोरखमुण्डी-(मुण्डी) कषेली, गरम, पचनेमें चरपरी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, मेधाजनक, बलकारक, रसायन, तथा गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, कफ, वात, प्लीहा, मेदोरोग, उन्मादरोग, श्लीपद, पाण्डुरोग, अरुचि, योनिशूल, खाँसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पित्त, आमदोष, मृगी, कृमि, श्वास, कोढ, विषविकार, अतिसार और वमनको दूर करनेवाली है ।

महाश्रावणिकागुणाः ।

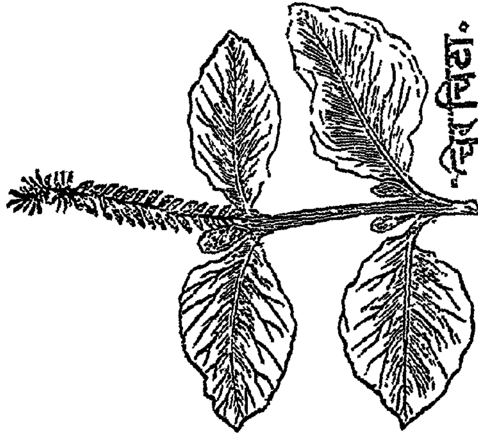
महामुण्डीतुमधुरातिक्ताचोष्णारसायनी ।
रुच्यास्वर्याप्रमेहघ्नीवातनाशकरीमता ॥
अन्येगुणास्तुमुण्डीवज्ज्ञेयावैद्यैश्चसूरिभिः । (नि० र०)

अर्थ-महामुण्डी-मधुर, कडवी, गरम, रसायन, रुचिकारक, स्वरको

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है । शेष गुण मुण्डीकी समान जानने ।

विवरण । मुण्डी और महामुण्डी तृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, पत्ते-अंगुलीकी समान लम्बे २ होतेहैं फल-कदम्बके समान अथवा मरंटीके तुल्य किंवा घुण्टीसदृश होतेहैं ।

अपामार्गनामानि ।



अपामार्गःशैखरिकोधामार्गवमयूरकौ ।
प्रत्यक्पर्णीकीशपर्णीकिणिहीखरमञ्जरी ॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्गक, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अधामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य, अधोघण्टा, शिखरी, दुर्ग्रह, अध्वशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वासिर, पराक्पुष्पी, कण्टी, कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरिका, अघाट, क्षुरक, पाण्डुकण्टक, तालाकंट, कुब्ज, मालाकण्ट, अघाट)

संस्कृतभाषामें	अपामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	चिरचिटा, लटजीरा, ओंगा ।
वंगभाषामें	आपाङ्ग ।
मराठीभाषामें	अघाडा ।
गुजरातीभाषामें	अघेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	उत्तरणे, चिचिरा ।
तैलिङ्गीभाषामें	दुच्चीणिके ।

इंग्रेजीभाषामें रफ़्चेफ्ट्री । Roughchafftree
लैटिन् भाषामें एचिरेंथिस् एस्पिरा । Achyranthis aspera
ओकिरेंथस् आल्टर निफोलिया । A. Alternifolia
फारसीभाषामें खारवास्गोता ।
अरबीभाषामें अत्कम ।

अपामार्गगुणाः ।

अपामार्गःसरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तकःकटुः ।
पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोनिलापहः ॥
निहन्तिहृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापचीः । (भा०प्र०)

अर्थ-चिरचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कडवा, चरपरा, पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात, हृदयरोग, आध्मान, बवासीर, कण्डू, शूल, उदररोग और अपचीको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अपामार्गस्तुतिक्तोष्णःकटुश्चकफनाशनः ।
अर्शःकण्डूदरामघ्नोरक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चिरचिरा-कडवा, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदररोग, आम और रुधिरविकारको दूर करे है, तथा मलरोधक और वमन कारक है ।

अपिच्च ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णःक्लेदनःस्रंसनःसरः ॥ (रा.व.)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकी समान तीक्ष्ण, क्लेदक, स्रंसन और सारक है ।

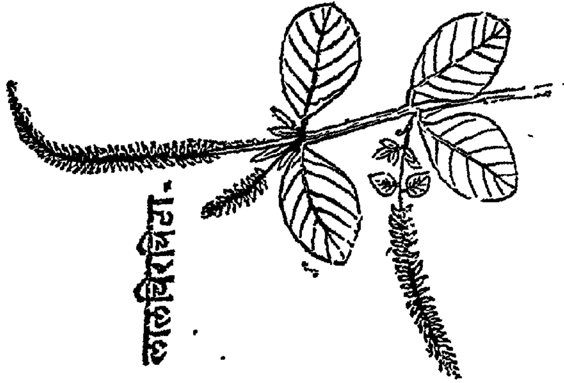
अन्यच्च ।

अपामार्गोऽग्निकृत्तीक्ष्णोनस्याच्छीर्षकृमीञ्जयेत् ।
वामकोरक्तसंग्राहीरक्तातीसारनाशनः ॥
नस्येवान्तौप्रशस्तःस्याद्दद्रुकण्डूकफापहः । (शो०नि०)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नास-शिरके कीडोंको दूर करे है । वमनकारक, रक्तविकारनाशक, और रक्तातिसारनिवारक है, चिरचिरा-नास और वमनकर्म्ममें प्रशंसायोग्य है, तथा, दाद, खुजली और कफनाशक है ।

विवरण। चिरचिटेका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल होते हैं, पत्तोंके वीचमेंसे एक वाल निकलती है, उस वालमें सूक्ष्म और मृदु काँटेयुक्त बीज होते हैं उन, बीजोंको पीसकर पीनेसे ववासीर दूर होती है । चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमें देखो ।

रक्तापामार्गनामानि ।



रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोपि च ।
प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली ॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कापिपिप्पली, (क्षुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुग्धनिका, रक्तविट, कल्पपत्रिका, क्षव, अधामार्गव, प्रत्यक्छ्रेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुब्ज और दुरभिग्रह)

संस्कृतभाषामें	रक्तापामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	लालचिराचिरा ।
बंगभाषामें	रांगाआपांग ।
मराठीभाषामें	लालअघाडा ।
गुजरातीभाषामें	झिपटो ।
कच्छीभाषामें	केंपिगुत्तरणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	उबरायणी-केंपिगुत्तरणे ।
लै०	एकीरेंथिसलेपारिया ।

अस्य गुणाः ।

रक्तापामार्गकः किञ्चित्कटुकः शीतलः स्मृतः । मलावष्टम्भ-

वमिकृद्वातविष्टम्भकारकः ॥ रूक्षोव्रणंविषंवातंकफंकण्डूं-चनाशयेत् । बीजमस्यरसेपाकेदुर्जरंस्वादुशीतलम् ॥ मलावष्टम्भकंरूक्षंवान्तिकृद्रक्तपित्तजित् । कासनाशकरं-प्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-लाल चिरचिरा-किंचित् चरपरा, शीतल, मलावष्टंभक, वमनजनक, वात, और विष्टम्भकारक, रूखा तथा व्रण, विष, वात, कफ और खुजलीको दूर करनेवाला है। इसके बीज-रस और पाकमें दुर्जर, स्वादिष्ठ, शीतल, मलावष्टम्भक, रूखे, वमनकारक, रक्तपित्तनाशक और खांसीको हरनेवाले हैं।

द्विविधापामार्गगुणाः ।

अपामार्गद्वयंतिक्तंतीक्ष्णोष्णंकफवातनुत् ।
सिध्मोदरापचीदद्रुकण्डुर्शोघ्नातिवान्तिकृत् ॥ (म० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, तीक्ष्ण, गरम, कफ, वातनाशक तथा सिध्म, उदररोग, अपची, दाद, खुजली और ववासीरको दूर करे हैं और वमनजनक हैं।

अपिच ।

अपामार्गद्वयंतिक्तंकृमिशीर्षविशोधनम् ।
वातकंरक्तसंग्राहिरक्तातीसारनाशनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, कृमि और शीर्षशोधक, वमनकारक, रक्तरोध और रक्तातिसारनाशक हैं।

विवरण। लाल चिरचिटाभी उसीप्रकार होता है, इसके पत्ते-कुछ २ गोल और लाल होतेहैं, फूल-पीले और फल-लाल २ वालपर लगे होतेहैं, परन्तु उनके ऊपर कांटेभी होतेहैं, इसप्रकार लाल और सफेद दो जातिका चिरचिटा होताहै।

कोकिलाक्षनामानि ।

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरः क्षुरकःक्षुरः ।
भिक्षुकाण्डेक्षुरप्युक्तइक्षुगन्धेक्षुवालिका ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, (कोकिलाक्षक, कोकिलनयन, शृगाली, शृंखलि, शूरक,

शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृंखला, वज्रकण्टक, वज्र, शृंखलिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला,) (वीरतरु, त्रिक्षुर, क्षुरक, शुक्रपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके हैं) (छत्रक और अतिछत्र यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)



संस्कृतभाषामें	कोकिलाक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तालमखाना–कैलया ।
वंगभाषामें	कुलियाखाडा, कुलेकाँटा, कुलक, शूलमर्दनइत्यादि
मराठीभाषामें	विखरा ।
कोकणीभाषामें	कोलिस्ता ।
गुजरातीभाषामें	एखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कुलुगोलिके ।
तैलिङ्गीभाषामे	गोवी । गोलिमिडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कुइलिरखा, माखुरेण ।
इंग्रेजीभाषामें	लांगलिव्ड वार्लेरिया । Longleaved Barlaria
लैटिन् भाषामें	एष्टकैंथा लौंजिफोलिया । Astercantha Lorgifolia

अस्य गुणाः ।

कोकिलाक्षोमधुःशीतोरुच्योबल्योगुरुःस्मृतः । वृष्योम्लस्तर्पणस्तिक्तःस्वादुःस्निग्धश्चचिक्कणः ॥ आमवातामवातातिसारतृष्णाश्मरीरुजः । वातास्रमेहशोथामरक्तरुङ्नाशनोमतः ॥ पित्तञ्च दृष्टिरोगञ्च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।

अस्य पत्रगुणाः ।

पर्णञ्चस्वादुतिक्तंस्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवात-मुदरंपाण्डुरोगञ्चनाशयेत् ॥ बन्धञ्चमलमूत्राणांवातमेवंच नाशयेत् । वृद्धस्यकोकिलाक्षस्यगुणास्त्वस्यसमामताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मधुर, शीतल, रुचिकारक, बलकारक, भारी, वीर्य्य-वर्द्धक, खट्टा, तर्पण (तृप्तिकारक), कडवा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, चिक्कण, तथा आमवात, आम, वातातिसार, तृषा, पथरीरोग, वातरक्त, प्रमेह, सूजन, आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे है । तालमखानेके पत्ते-स्वादिष्ठ, कडवे, तथा सूजन, शूल, विष, आनाहवात, उदररोग, पाण्डुरोग, मलरोध, मूत्ररोध और वातावष्टंभको हरनेवाले हैं, बडे तालमखानेके गुण इसीकी समान जानने ।

अस्य बीजगुणाः ।

कोकिलाक्षस्यबीजन्तुशीतंस्वादुकषायकम् । तिक्तंवृष्यं-गुरुर्बल्यंग्राहकंगर्भस्थापनम् ॥ कफवातकरञ्चैवमलस्त-म्भकरंतथा । रक्तदोषञ्चदाहञ्चपित्तञ्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-तालमखानेके बीज-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, बलकारी, गर्भस्थापक, कफवातकारक, मलस्तम्भक तथा रुधिरविकार, दाह, और पित्तको हरनेवाले हैं ।

विवरण । कोकिलाक्ष अर्थात् कैलयाके क्षुप प्रायः जलके निकट तथा चौमासेकी ताल, और तलैयोंमें उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते-लम्बे होते हैं, क्षुपपै काँटे होते हैं, गूमेकी समान गांठें होती हैं, उन गाठोंमेंसे बीज निकलता है, उसको तालमखाना कहते हैं ।

घृतकुमारीनामानि ।

सहाघृतकुमारीचकुमारीदीर्घपत्रिका ।
अफलासुरसाकन्याम्रृदुर्घृतकुमारिका ॥

अर्थ-सहा, घृतकुमारी, दीर्घपत्रिका, अफला, सुरसा, कन्या, मृदुघृत-कुमारिका, (तरणि, सुवहा, बहुपत्री, कन्या, स्थलेरुहा, बहुपत्री, अमरा, अजरा, कण्टकप्रावृता, विपुलस्रवा, ब्रह्मघ्नी, वीरा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, रामा,

कपिला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला, माता, अतिपिच्छिला, रसायनी, कण्टकिनी)

संस्कृतभाषामें	घृतकुमारी ।
हिन्दीभाषामें	घिगुवार, ग्वारपाठा, कुवारपाठा ।
वंगलाभाषामें	घृतकुमारी ।
मराठीभाषामें	कोरफड, कोरफांटा ।
गुजरातीभाषामें	कुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	लोयिसर ।
तैलङ्गीभाषामें	पिन्नगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे ।
इंग्रेजीभाषामें	वार्वेडोझ्आलोझ् । Barbadoesaloes
लैटिन्भाषामें	आलाइवार्वडेन्स । Aloebarbadense
फारसीभाषामें	दरखतेसिन्न ।
अरवीभाषामें	मुसवर ।

अस्या गुणाः ।

कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी । मधुराबृंहणीब-ल्याविष्यावातविषप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरह-रीभवेत् । ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान् ॥ भा. प्र.

अर्थ-घीकुवार-भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, बृंहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा, यकृत्, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके रोगोंको दूर करे है । अन्यच्च ।

गृहकन्याहिमातिक्तामदगन्धिःकफापहा ।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नीचरसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-घीकुवार, शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक, तथा पित्त, खांसी, विष, श्वास और कुष्ठको नष्टकरे है, और रसायन है ।

अस्य दण्डादिगुणाः ।

तन्मध्यदण्डोमधुरःकुमारीसदृशोगुणैः ।
विशेषात्कृमिपित्तघ्नःपुष्पमस्यगुरुस्मृतम् ॥
वातंपित्तंकृमींश्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-इसके वीचका डंडा-घीकुवारकी समान गुणवाला है विशेषकरके मधुर तथा कृमि और पित्तनाशक है। इसके फूलभारी तथा वात, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले हैं।

विवरण। घीकुवारका क्षुप-खारी पृथ्वी, रेतली भूमि तथा नदीके तटके निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं; पत्ते-लम्बे और मोटे होते हैं। पत्तोंकी दोनों ओर काँटे होते हैं; इनके भीतर घीके समान गूदा निकलता है; पत्तोंके छोर अनीदार होते हैं, घीकुवारके वीचसे डंडा निकलता है, उसमें लाल फूल आता है। घीकुवारके रससे एलुआ बनाया जाता है।

एलीयकनामानि।

एलीयकःकृष्णबोलःकुमारीसारतोद्भवः॥

अर्थ-एलीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव।

संस्कृतभाषामें	एलीयक।
हिन्दीभाषामें	एलवा।
मराठीभाषामें	कालाबोळ, एल्याबोळ।
गुजरातीभाषामें	एलियो, शिकोतरी एलियो।
तैलङ्गीभाषामें	भोलं।
इंग्रेजीभाषामें	सौकोट्रन आलोझ। Socotrine aloes
लैटिन्भाषामें	आलोसोकोट्रीना। Aloe socotrina
फ़ारसीभाषामें	मुसब्बीर।
यु०	फेकरा।
अरबीभाषामें	सीबरसुकुतरे।

अस्य गुणाः।

कृष्णबोलःकटुःशीतोभेदकोरसशोधनः।
शूलाध्मानकफान्वातंकृमिगुल्मौचनाशयेत्॥(र०नि०)

अर्थ-एलुवा, चरपरा, शीतल, दस्तावर, पारेको शोधनेवाला तथा शूल, अफारा, कफ, वात, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है।

क्षुद्रकेतकीनामानि।

काककेतकिकाक्षुद्रकेतकीतृणकेतकी।
रज्जुदात्रीमध्यदण्डापृथक्पुष्पाचसास्मृता॥

अर्थ-काककेतकी, क्षुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्यदण्डा, पृथक्पुष्पा ।

हिन्दीभाषामें रामबाँस (न)

गुजरातीभाषामें केतकी ।

लैटिन्भाषामें एलोअमेरिकाना । Aloe Americana

विवरण-रामबाँसके-वृक्ष प्रायः बाग और खेतोंकी वाडोंपर अधिकतासे होतेहैं; यह घीकुवारकी समान होते हैं, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और बडे तथा पतले होते हैं, इसपर लाल और सफेद रंगके गुच्छेदार फूल आते हैं ।

अस्या गुणाः ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता । विषंकफंनाशयतिपुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्णं वातकफापहम् । केशदुर्गन्धितापघ्नंकेसरः सिध्मकण्डुहा॥ किञ्चिदुष्णंफलंस्वादुवातमेहकफापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रामबाँस-चरपरा, स्वादु, कडवा, हलका, तथा विष और कफनाशक, है । इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम, वातकफनाशक, केशोंकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है । इसके फूलका जीरा-सिध्म और कण्डूनाशक है । इसका फल किंञ्चित्, उष्ण, स्वादिष्ठ, तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है ।

पाण्डुफलीनामानि ।

पाटलीस्यात्पाण्डुफलीधूसरावृत्तबीजका ।
पाण्डुफलाभूरिफलातथासप्ताह्वयाभिधा ॥

अर्थ-पाटली, पाण्डुबली, धूसरा, वृत्तबीजका, पाण्डुफला, भूरिफला ।

हिन्दीभाषामें पाटली ।

मराठीभाषामें पांढरफली ।

गुजरातीभाषामें शौणवी ।

कर्णाटकीभाषामें पाटॆरफल मणमंडं ।

लै० फ्लुजिया ल्युकोपाईरस् Flujia leucopyrus

अस्याः गुणाः ।

पाण्डुफलीतुमधुराबल्यावृष्याचशीतला ।
मूत्राघातंपित्तरोगंमूत्रकृच्छ्रास्रुग्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पाण्डुफला-मधुर, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, तथा मूत्राघात, पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, और रुधिरके विकारोंको दूरकरेहै।

अन्यच्च।

शिशिरापाण्डुरफलीगौल्याकृच्छ्रार्तिदोषहा।
बल्यापित्तहरावृष्यामूत्राघातनिवारणी॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-पाण्डुफली-शीतल, गौल्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है।

पनसीनामानि।

पनस्यांरोपणीचोक्तातथाचकपिकच्छुकः॥

अर्थ-पनसी, रोपणी, कपिकच्छुक।

अस्या गुणाः।

पनसीकाभवं मूलं व्रणरोपणभेदनम्॥

अर्थ-पनसीकी जड-व्रणको भरनेवाली और दस्तावर है।

गङ्गाटीनामानि।

गंगाट्या गंगटी चैव पित्तव्रणप्रसादनी॥

अर्थ-गंगाटी, गंगटी, पित्तव्रणप्रसादनी।

अस्या गुणाः।

गंगेटीबहुविण्मूत्राकषायाशीतलागुरुः॥ (शो॰ नि॰)

अर्थ-गांगेटी-मलमूत्रवर्द्धक, कषेली, शीतल और भारी है। तथा व्रण और पित्तनाशकहै।

श्वेतपुनर्नवानामानि।



श्वेतपुनर्नवा.

पुनर्नवाश्वेतमूलाकठिल्लश्चचिराटिका।

अर्थ-पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल्ल, चिराटिका, (वृश्चीरा, श्वेतपुनर्नवा, सितवर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, विशाख, शशिवाटिका, पृथ्वी, धनपत्र, कठिल्लक, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका।

रक्तपुनर्नवानामानि।



रक्तपुनर्नवाप्युक्ताशोथघ्नीरक्तपत्रिका।
रक्तकाण्डावर्षकेतुर्वर्षाभूःप्रावृषायणी॥

अर्थ-रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिल्लक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, क्रूरा, मण्डलपत्रिका, लोहिता, वैशाखी, रक्तवर्षाभू शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विषघ्नी, प्रावृषेण्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि।



नीलापुनर्नवानीलाश्यामानीलपुनर्नवा।
कृष्णाख्यानीलवर्षाभूर्नीलिनीस्वाभिधान्विता॥

अर्थ-नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नीलवर्षाभू, नीलिनी।

संस्कृतभाषामें	पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, नीलपुनर्नवा ।
हिन्दीभाषामें	विषखपरा, साँठ, गदहपूर्णा, नीलीसांठ, गदहपुरेना इत्यादि ।
बंगभाषामें	श्वेतगांदावन्ने, श्वेतपुण्या, गादापुण्या, नीलगॉदावन्ते, राङ्गागॉदावन्ते ।
मराठीभाषामें	घेंटुली पांढरी, खरपऱ्या, रक्तवसु ।
गुजरातीभाषामें	साटोडी ४ छे खेतरी लांबां पाननी राता फूलने निचे घोलाकंद डोला पानने चोमासानी ।
कर्णाटकीभाषामें	विलीयदुवेल्लड्किलु कॆंपिनवेल्लड किलु करीयवेल्लडकिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गाल्जेरु, अतिकममेदि ।
तामिलीभाषामें	मुकरत्तेकिरे ।
बम्०	पुनर्नरा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्प्रेडिंग् होगूनीड् । Spreading Hogneed
लैटिनभाषामें	बौरहावियाडिफ्यूझा । Boerhavia Diffusa बोर, हेबियाप्रोकंबेन्स । B. procumbens ट्रिरोंथेमा ओब्कार्डाटा । Trironthema-Obcardata
अरबीभाषामें	हंदकूकी ।

श्वेतपुनर्नवागुणाः ।

श्वेतापुनर्नवासोष्णातिक्ताकफविषापहा ।
कासहृद्रोगशूलास्रपाण्डुशोफानिलार्त्तिनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा (विषखपरा)-गरम, कडवा तथा कफ, विष, खाँसी, हृदयरोग, शूल, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, सूजन और वातकी, वेदनाको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

कटुःकषायारुच्यर्शःपाण्डुहृद्दीपनीपरा ।
शोफानिलगरश्लेष्महरीब्रध्नोदरप्रणुत् (भा०प्र०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-चरपरा, कषेला, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, तथा पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, वात, विष, कफ, ब्रध्न और उदररोगको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पुनर्नवातुवीर्य्योष्णाभेदिनीचरसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ, वात, ववासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरातिक्ताकषायाकटुकासरा ।
क्षारोष्णादीपनीरूक्षाशोफानिलकफापहा ॥
हृद्यारुच्याजयेदर्शोव्रणपाण्डुगरोदरम् । (ग० नि०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-मधुर, कडवा, कषेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा ववासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूरकरैहै ।

अपिच ।

श्वेतापुनर्नवोतिक्ताचोष्णाकट्वीचतूवरारुच्याग्निदीपनी-रूक्षामधुरापटुसारका ॥ हृद्याशोफंकफंवातंकासमर्शोव्रणं-जयेत् । पाण्डून्विषोदरंशूलंहृद्रोगोरःक्षतापहा ॥ घृतेनमू-लकंचास्याह्यंजितंहन्तिपुष्पकम् । मधुनासहमूलंतुह्यंजितं स्रावनाशकम् ॥ अंजितंमार्कवरसैर्नेत्रकण्डूनिवारणम् । केवलेनजलेनैवह्यंजितंतिमिरापहम् । जलेनगोशकृताचपि-प्पल्याचांजितंयदा ॥ रात्र्यांध्यंनश्यतेतेनचोष्णःपर्णरसः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-कडवा, गरम, चरपरा, कषेला, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी, तथा सूजन, कफ, वात, खाँसी, ववासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उरःक्षत रोगको दूर करे है । इसकी जडको पीसकर घीमें मिलाकर अंजन करे, वह अंजन आँखोंके फूलेको दूर करता है । इसकी जडमें मधु-मिलाकर अंजन करे वह अंजन रक्तस्रावनाशक है । इसकी जडको भांगरेके रसके साथ नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी खुजली दूर होती है । इसकी जडको

केवल जलके साथ आंखोंमें लगानेसे तिमिररोग दूर होता है। गायके गोवरके रसमें इसकी जड और पीपल उबालकर अंजन करलेवे वह अंजन रतौंधेको दूर करनेवाला है, इसके पत्तोंका रस गरम है।

रक्तपुनर्नवागुणाः।

पुनर्नवारुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः।
वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी (भा०प्र)०

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना) कडवा, पचनेमें चरपरा, शीतल, हलका, वातकारक, मलरोधक, तथा कफ, पित्त और रक्तविकारोंको दूरकरैहै।

अन्यच्च।

रक्तपुनर्नवातिक्तासारिणीशोफनाशिनी।
रक्तप्रदरदोषघ्नीपाण्डुपित्तप्रमर्दिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना साँठ) कडवा, सारक, शोथनाशक तथा रक्त, प्रदररोग, पाण्डुरोग और पित्तको दूर करनेवाला है।

नीलपुनर्नवागुणाः।

नीलापुनर्नवातिक्ताकटूष्णाचरसायनी।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलपुनर्नवा-कडवा, चरपरा, गरम, रसायन तथा हृदयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, श्वास, वात और कफनाशक है।

अस्य पत्रशाकगुणाः।

पौनर्नवीपर्णशाकाचातिरूक्षाकफापहा।
वाताग्निमांद्यगुल्मघ्नीप्लीहाशूलविनाशिका। (नि०र०)

अर्थ-पुनर्नवेके पत्तोंका शाक-अत्यन्त रूक्ष, तथा वात, मंदाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको दूर करैहै।

विवरण। साँठ-तीन चार जातिकी होतीहै, फूल-लाल, सपेद जुदे २ रंगके होते हैं। इनमें सपेद रंगके फूलका विषखपरा है और लाल रंगकी साँठ अर्थात् गदपुरेना जानना। १-विषखपरेका क्षुप-पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है। पत्ते-गोल और लाल किनारेदार होतेहैं, फूल सपेद होताहै। २-साँठ-ककरीली पृथ्वीमें अधिकतासे होतीहै, पत्ते-चौलाईकी समान होते हैं, फूल-लाल होता है।

प्रसारणीनामानि ।



प्रसारणीराजबलागन्धालीचकटम्भरा ।
गन्धाढ्यागन्धभद्राचसारणीसरणीतथा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजबला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रबला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रवला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, वल्या)

संस्कृतभाषामें	प्रसारणी ।
हिंदीभाषामें	गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी ।
वङ्गभाषामें	गन्धभादला, गॉधाली, गन्धभादुलिया ।
मराठीभाषामें	प्रसारणी, चांदवेल ।
गुजरातीभाषामें	प्रसारणवेल्य (नारी)
कर्णाटकीभाषामें	हेसरणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेलचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	पिडेरिया फिटीडा Paederia foetida
	मेकारंगा टोमेंटोसा। Macaranga-tomentosa

अस्या गुणाः ।

प्रसारिणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा ।
वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, सन्धानकारक, उष्ण-वीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणीगुरूष्णाचतिक्तावातविनाशिनी ।
अर्शःश्वयथुहन्त्रीचमलविष्टम्भहारिणी ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-पसरन-भारी, गरम, कडवी तथा वात, सूजन, बवासीर, और मलकी विष्टम्भताको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

वातपित्तहरासोष्णाबल्यावृष्याप्रसारिणी ॥ (राजवल्लभ)

अपिच ।

अर्थ-गन्धप्रसारिणी वातपित्तनाशक, गरम, बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सारणीवातरक्तघ्नीसोष्णावृष्याबलप्रदा ।
कट्वीचलघुचक्षुष्यास्वर्य्याज्वरनिशान्ध्यहृत् ॥ (शो.नि)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-वातरक्तनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, चरपरी हलकी, नेत्रोंको हितकारी, स्वरको उत्तम करनेवाली तथा ज्वर और रतौंधेको दूरकरेहै ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणीगुरुश्चोष्णातिक्ताबल्यासरामता । भग्नास्थिसन्धानकरीकान्तिकृद्धातुवर्द्धका ॥ वातार्शःशोफकफहामलस्तम्भकरीमता । वातरक्तंत्रिदोषञ्चनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि॰र॰)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, गरम, कडवी, बलकारक, सारक, टूटे हुये हाडको जोडनेवाली, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, तथा वादीकी बवासीर, सूजन, और कफको दूर करनेवाली है, मलस्तम्भकारक और वातरक्त तथा त्रिदोषनाशक है ।

प्रसारणीको संस्कृतमें राजवला कहते हैं, परन्तु अभीतक यह किसीने निश्चय नहीं किया कि, प्रसारणी क्याहै, इसको कोई कोई ग्रन्थकार मराठीमें चांद्वेल और गुजरातीमें नारी कहतेहैं, लैटिन्में चांदवेलके और प्रसारणीके नाम, लक्षण और गुण अलग २ हैं, सो वह नाम, लक्षण और गुण, इससे कुछभी मिलते नहीं, क्योंकि चांद्वेल मलरोधक है, और प्रसारणी मलको निकालनेवाली अर्थात् दस्तावर है इसमें बडा अन्तर है ।

सारिवानामानि ।

सारिवाशारिवानन्तागोपीचोत्पलशारिवा ।
भद्रवल्लीनागजिह्वाकरालाभद्रवल्लिका ॥

अर्थ–सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, धवलशारिवा, कृशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।



श्यामलताचपालिन्दीगोपिनीकृष्णशारिवा ॥

अर्थ–श्यामलता, पालिन्दी,: गोपिनी, कृष्णशारिवा, (चिह्नधारिणी, दृढबन्धिनी, गोपी, गोपवल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा. अनन्ता, शारिवा, श्यामा, कालपेषी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसूरविदला, कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा,चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली)

संस्कृतभाषामें	सारिवा, कृष्णसारिवा ।
हिन्दीभाषामें	गोरीसर, कालीसर, करियासाउ, गौरियासाउ, सालसा, सारिवन इत्यादि ।
वंगभाषामें	अनन्तमूल, श्यामालता, कलघण्टि इत्यादि ।
मराठीभाषामें	श्वेतउपलसरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी ।
गुजरातीभाषामें	कपरी, कालीवेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	सारिवा ।
तैलङ्गीभाषामें	नीलतिग ।

औत्कलिभाषामें गुपापानमूल ।
इंग्रेजी भाषामें इंडियन् सारसापरिला । Indian sarsaparilla.
लैटिन् भाषामें हेमिडेस्नेस् इंडिकस् । Hsmid-eisnus indicus.

श्वेतसारिवागुणाः

श्वेतातुसारिवाशीतामधुराशुक्रलागुरुः । स्निग्धातिक्तासुगन्धिश्चकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ देहदौर्गन्ध्याग्निमांद्यश्वासकासारुचीहरा । आमत्रिदोषविषहृद्रक्तरुक्प्रदरापहा ॥ कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरापरा । वातनाशकरीप्रोक्ता-ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-गौरियासाउ-शीतल, मधुर, शुक्रजनक, भारी, स्निग्ध, कडवी, सुगन्धि तथा कोढ, कण्डू, ज्वर, देहकी दुर्गन्धता, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, आम, त्रिदोष, विष, रुधिरविकार, प्रदररोग, कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्तपित्त और वातको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनन्ताग्राहिणीरक्तपित्तप्रशमनीहिमा ॥

अर्थ-गौरीसर-मलरोधक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है ।

कृष्णशारिवागुणाः ।

शारिवावातपित्तासृक्तृट्च्छर्दिज्वरनाशिनी ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-कालीसर (करियावासाउ)-वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, वमन और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कृष्णातुसारिवाशीतावृष्याचमधुरामता ।
कफघ्नीचैवसंप्रोक्तागुणाश्चान्येतुपूर्ववत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कालीसर-शीतल, वीर्यवर्द्धक, मधुर और कफनाशक है, शेष गुण श्वेतसारिवाकी समान जानने ।

द्विविधसारिवागुणाः ।

सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु ।
अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥

दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी सारिवा-स्वादिष्ठ, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी तथा मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, खांसी, आम, विष, त्रिदोष, रक्तप्रदर और ज्वरातिसारको हरनेवाली है ।

विवरण । कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली वेल होती है, पत्ते-अनारकी समान होते हैं, उन पत्तोंमें सफेद छोटे होते हैं, वेलकी जडमें कपूरकचरीकी, समान सुगन्धि आती है, और इसमें दो २ फली आती हैं, कितनेक मनुष्य इसकी जडको सालसापरेला कहते हैं ।

भृङ्गराजनामानि ।

मार्कवोभृङ्गराजश्चभृङ्गाह्वःकेशरञ्जनः ।
पितृप्रियोरंगकश्चकेश्यःकुन्तलवर्द्धनः ॥

अर्थ-मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रगक, केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार, परु, भृङ्गसोदर, अङ्गारक, एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, अजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक. भेकराज. पंकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि ।

पीतोन्यःस्वर्णभृङ्गारोहरिवासोहरिप्रियः ।
देवप्रियोवन्दनीयःपावनश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ-पीतभृङ्गराज-स्वर्णभृङ्गार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन ।

नीलभृङ्गराजनामानि ।

नीलस्तुभृङ्गराजोन्योमहानीलः सुनीलकः ।
महाभृङ्गोनीलपुष्पः श्यामलश्चषडाह्वयः ॥

अर्थ-नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल यह छे नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	भृंगराज, केशराज ।
हिंदीभाषामें	भांगरा, भंगरा, भेगरिया, भगरैया, कुकुरभांगरा ।
वंगलाभाषामें	भीमराज, केशुरे ।
मराठीभाषामें	माका ।

गुजरातीभाषामें	भांगरो ।
कर्णाटकीभाषामें	गरुगसुरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुण्टकलगरचेट्टु, भृंगराजयुचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कलाकेशदुरा ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रेलिंगइक्लिप्टा । Traling Eclipta
लैटिन्भाषामें	इक्लिप्टाप्रोस्ट्रेटा । Eclipta Prostrata इकलिप्टा आलबा E. alba
फारसीभाषामें	जमर्दर ।
अरबीभाषामें	हजीज ।

भृङ्गराजगुणाः ।

भृङ्गराजस्तुचक्षुष्यस्तिक्तोष्णः केशरञ्जनः ।
कफशोफविषघ्नश्चतत्रनीलोरसायनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भांगरा-नेत्रोंको हितकारी, कडवा, गरम, केशरञ्जक (केशोंको काला करनेवाला) तथा कफ, सूजन, और विषविनाशक है, इनमें नीला भांगरा रसायन है ।

अन्यच्च ।

भृङ्गराजःकटुस्तिक्तोरूक्षोष्णःकफवातहृत् ।
रसायनोज्वरान्हन्तिकुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ॥ (म० नि०)

अर्थ-भांगरा-चरपरा, कडवा, रूखा, गरम, कफवातनाशक, रसायन तथा ज्वर, कोढ, नेत्ररोग, और शिरकी पीडाको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मार्कवस्तिक्तकश्चोष्णश्चक्षुष्यःकेशरञ्जनः । त्वच्योरूक्षश्च तीक्ष्णश्चदन्त्योमेध्योरसायनः॥ शोफंकामंचांत्रवृद्धिंशिरो-नेत्ररुजंतथा । कफंवातंचकासञ्च श्वासकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥ आमंचपांडुरोगञ्चहृद्रोगंत्वग्रुजंतथा । विषञ्चनाशयत्येव कण्डूनाशकरो मतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-भांगरा-कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, केशरञ्जक, त्वचाको हितकारी, रूखा, तीक्ष्ण, दाँतोंको हितकारक, मेधाकारक रसायन तथा, सूजन, कामदेव, अंत्रवृद्धि, शिरोरोग, नेत्ररोग कफ, वात, खाँसी, श्वास,

कोढ, कृमि, आम, पाण्डुरोग, हृदयरोग, त्वचाके रोग, विष, और कण्डूको दूर करनेवाला है ।

विवरण–भांगरेका क्षुप–प्रायः गीली पृथ्वीमें होता है, पत्ते खरखरे होते हैं, पत्तोंका रस काला होताहै, सपेद, पीले और काले इन फूलोंके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शणपुष्पीनामानि ।

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः ॥

अर्थ–शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्पसमाकृति (बृहत्पुष्पी, शणिका, शणघण्टिका, शणपुष्पिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, लोमशा, माल्यपुष्पिका और घण्टारवा)

द्वितीयान्यासूक्ष्मपुष्पास्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका ।
विष्टिकासूक्ष्मपर्णीचबाणाह्वासूक्ष्मघंटिका ॥

अर्थ–दूसरी–सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी, बाणाह्वा और सूक्ष्मघण्टिका ।

तृतीयान्यावृत्तपर्णीश्वेतपुष्पामहासिता ।
सामहाश्वेतघण्टीचसामहाशणपुष्पिका ॥

अर्थ–तीसरी–वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघण्टी, महाशणपुष्पिका ।

शणनामानि ।



शणस्तुमाल्यपुष्पःस्याद्वामकःकटुतिक्तकः ।
निशादनोदीर्घशाखस्त्वक्सारोदीर्घपल्लवः ॥

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्लव ।

संस्कृतभाषामें	शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी । शण ।
हिंदीभाषामें	झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शणई, घागही इत्यादि । सन ।
वंगभाषामें	वनशणइ, झनझने, शोणोरगाछ ।
मराठीभाषामें	ताग ।
कोकणीभाषामें	खुळखुळा ।
गुजरातीभाषामें	शण ।
द्राविडभाषामें	जनवकनर ।
कर्णाटकीभाषामें	गिल्लिगिच्चि, चिक्कगिल्ल, मतेकाडविट्टि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शणमतुवेल्ल, जेनपनर, रेल्लचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जेनष्पनर ।
ब्रह्मीभाषामें	पन ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लाक्सहेंप् । Flax Hemp
लैटिन्भाषामें	क्रोटेलेरिया जुनाशिया । Crotalaria-juncia
फारसीभाषामें	लादनां ।

शणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-बनशन (झुनझुनिया)-चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शणपुष्पीरसेतिक्ताकषायाकफवातजित् ।
अजीर्णज्वरदोषघ्नीवामनीरक्तदोषनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषेली, कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है ।

अपिच ।

शणघण्टारसेतिक्तातुवरावामनीस्मृता ।
अजीर्णकफवातघ्नीरक्तदोषज्वरंजयेत् ।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत् ॥

अर्थ-वनशन-तिक्तरसान्वित, कषेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग, पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे है।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणाः।

शणपुष्पीक्षुद्रतिक्तावम्यारसनियामिका ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक, और पारेको बांधनेवाली है।

महाश्वेतागुणाः।

महाश्वेतातुतुवराचोष्णासूतनियामिका।
मोहनेस्तम्भनेचैवप्रशस्ताऋषिभिःस्मृता ॥ (नि०र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कषेली, गरम, पारेको बांधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है।

शणगुणाः।

शणस्त्वम्लःकषायश्चमलपातकरोमतः। गर्भपातंरक्तपातं वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णोवातकफघ्नश्चअंगमर्दरुजापहः। अस्यप्रसूनंप्रदरंरक्तदोषहरंस्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टी), कषेली, मलको पतित करनेवाली; गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, कफ और अंगके टूटनेको दूर करे है। इसका फूल-प्रदर और रुधिरविकारको हरे है।

शणबीजगुणाः।

शीतलंशणबीजंस्याद्ग्राहकञ्चगुरुस्मृतम्।
इतरेतुगुणाःसर्वेशणवत्परिकीर्त्तिताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सनके बीज-शीतल, ग्राही और भारी हैं, गुण सनकी समान जानने। विवरण। शनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतासे होती है; झांदरा अंडकी समान पत्ता-फलाकार। फूल-पीले होते हैं। फल लम्बा और खुरूल होताहै। व्यवहार-बीज और पत्ते।

त्रायमाणानामानि।

त्रायमाणासुभद्राणीत्रायन्तीबलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, बलभद्रिका (वार्षिक; बलदेवा,

भद्रनाभिका, कुलत्रा, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुकामा, वार्षिका, गिरिजा, अनुजा, मंगल्याहा, देवबला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा)

संस्कृतभाषामें त्रायमाणा ।

हिन्दीभाषामें त्रायमान ।

वंगभाषामें वडाडुसुर, वला, वहुला, वनभादुलिया इत्यादि ।

मराठीभाषामें त्रायमाण ।

गुजरातीभाषामें त्राहिमान् ।

कर्णाटकीभाषामें त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा ।

लैटिन् भाषामें थेलिक्ट्रम् फोलियो लोझम्। Thalictrum Faliolosum

फारसीभाषामें अस्प्रक ।

अस्या गुणाः ।

त्रायमाणातुवराशीतलामधुरासरा । तिक्तापित्तरुजंछर्दिं-ज्वरंगुल्मंकफंविषम्॥शूलंभ्रमंरक्तरुजंक्षयंग्लानिंतृषांतथा। हृद्रोगंरक्तपित्तञ्चदुर्नामानंविनाशयेत् ॥ त्रिदोषनाशिनी प्रोक्तापूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-त्रायमान-कषेली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कडवी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है ।

विवरण । त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुये होते हैं, और बीचमें दोदण्डीसी निकलतीहैं, उसके बीजोंको त्रायमान कहते हैं । किन्तु कितनेक मनुष्य भ्रमसे त्रायमानको गुलवनपसा कहते हैं ।

यवतिक्तानामानि ।

यवतिक्तामहातिक्तादृढपादाविसर्पिणी । नाकुलीनेत्रमीला चशंखिनीपत्रतण्डुली ॥ तंदुलीचाक्षपीडाचसूक्ष्मपुष्पी-यशस्विनी । माहेश्वरीतिक्तयवायावीतिक्तेतिषोडश ॥

अर्थ-यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शंखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली, अक्षपीडा, सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तिक्तयवा, यावी, तिक्ता ।

संस्कृतभाषामें यवतिक्ता ।

हिन्दीभाषामें शंखिनी ।
वंगभाषामें यवेची, श्वेतवोना (कालमेघ)
मराठीभाषामें यवोची, टीटवी ।
को० शांखवेल्य ।
गुजरातीभाषामें शंखहेल्य आरुगुकुटामाणा, भगलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें शंखिनी ।
लैटिन्भाषामें एंड्रोग्राफिस पेनिक्युलेटा । Andrograph-is-paniculata
ब्रायोनियास्का ब्रेला Bryoniascabrella

अस्या गुणाः ।

यवतिक्तासतिक्तास्याद्दीपनीरुचिकृत्परा ।
आमकुष्ठक्रिमिविषदोषघ्नीरेचनीचसा ॥ (रा० नि०)

अर्थ—शंखिनी—कडवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दस्तोंको लानेवाली, तथा आम, कोढ, कृमि और विषदोषको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तामहातिक्तासाग्निकृद्बलवर्द्धिनी ।
तिक्ताज्वरातिसारघ्नीबालानांशुभदासदा ॥ (आ०सं०)

अर्थ—शंखिनी—जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और सदैव बालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनीकटुतिक्तोष्णागुरुःस्निग्धाविशोधिनी ।
त्रिदोषशमनीकुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (का० नि०)

अर्थ—शंखिनी—चरपरी कडवी, गरम, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ, क्षय और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्तातुकटुकारुचिराचाग्निदीपनी ।
सराम्लाकटुकातीक्ष्णास्निग्धोष्णाचत्रिदोषहा ॥
कुष्ठामविषदोषघ्नीरक्तदोषंक्रमींस्तथा ।
शोफंजयेच्चोपरश्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०रा०)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है।

विवरण। शंखिनीकी बेल-शिवलिंगीकी समान होतीहै, फल भी शिवलिंगीकी समान होतेहैं, शंखिनीके बीज-शंखकी सदृशहोतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छींटे होतेहैं, किन्तु शंखिनीके फलके ऊपर छींटे नहीं होते।

लिङ्गिनीनामानि।

लिङ्गिनीबहुपत्रास्यादीश्वरीशैवमल्लिका। स्वयम्भूर्लिंगसम्भूतालिंगीचित्रफलाऽमृता॥ पंडोलीलिंगजादेवीचण्डापस्तम्भिनीतथा। शिवजाशिववल्लीचविज्ञेयाषोडशाह्वया॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पंडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा, शिववल्ली (शिवमल्लिका, बकपुष्पा, और तुत्थिनी)

संस्कृतभाषामें	लिंगिनी।
हिन्दीभाषामें	शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी।
बंगभाषामें	शिवलिंगिनी।
मराठीभाषामें	शिवलिंगी वाडुवल्ली।
गुजरातीभाषामें	शिवलिंगी।
कर्णाटकीभाषामें	पचगुरिया ईश्वरलिंगी।
लैटिन्भाषामें	ब्रायोनिया लेसिनियोसा। Bryonia laciniosa.

अस्या गुणाः।

लिंगिनीकटुरुष्णाचदुर्गन्धाचरसायनी।
सर्वसिद्धिकरीदिव्यावश्यारसनियामिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-शिवलिंगी-चरपरी, गरम, दुर्गन्ध, रसायन, सर्वसिद्धिकारक, दिव्य, वशीकरण और पारेको बांधनेवाली है।

अपिच।

लिंगिनीकटुकाचोष्णादुर्गन्धाचरसायनी।
सर्वसिद्धिप्रदालोहस्तम्भिनीसूतबन्धिनी॥

सिध्मनाशकरीवश्यकारिणीचप्रकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ-शिवलिङ्गी-चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको बांधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण । शिवलिंगीकी वेल होतीहै, फल-नीले और गोल होतेहैं, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेंसे बीज निकलतेहैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका, आकार होताहै ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वामधुरसादेवीगोकर्णीदृढसूत्रिका ।
तेजनीपीलुपर्णीचधनुर्मालाधनुर्गुणा ॥

अर्थ-मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुःमाला, धनुर्गुणा (मोरटा, स्रवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्म्मकरी, धनुःशाखा, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	चूर्णहार, मुर्हरी, चुरनहार ।
वंगभाषामें	मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, वोडाचक्र इत्यादि ।
मराठीभाषामें	मोरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	मुडुरासि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पागचेट्टु, सग, चग, सांगा ।
तामिलीभाषामें	मरूल ।
का०	मोरहरी ।
लैटिन् भाषामें	क्लिमेटिस् ट्राईलोवा । Clomatistriloba

अस्या गुणाः ।

मूर्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत् ।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा ॥ (धन्वन्तरि)

अर्थ-चूर्णहार-सारक (दस्तावर), स्वादिष्ठ, कडवी तथा रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मूर्वातिक्ताकषायोष्णाहृद्रोगकफवातहृत् ।

वमिप्रमेहकुष्ठघ्नीविषमज्वरहारिणी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चूर्णहार-कडवी, कषेली, गरम तथा हृदयरोग, कफ, वात, वमन, प्रमेह, कोढ और विषमज्वरको दूर करनेवाली है ।

अपिच ।

मोरटातुवरातिक्तास्वाद्वीचोष्णागुरुःस्मृता । पाककालेतु कटुकासारकाचत्रिदोषहा ॥ रक्तदोषंमेदरोगंकुष्ठंमेहंज्वरंतथा । वान्तिंचमुखशोषञ्चभ्रमंकण्डूंतृषांतथा ॥ हृद्रोगंचकफंपित्तंवातञ्चविषमज्वरम् । नाशयेदितितैरुक्तंकन्दोस्याः कृमिनाशकः ॥ कृमिकीलकरोगञ्चविषदोषञ्चनाशयेत् ।

अर्थ-चूर्णहार-कषेली, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, भारी, पचनेमें चरपरी, दस्तावर, त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग कोढ, प्रमेह, ज्वर, वमन, मुखशोष, भ्रम, कण्डू, तृषा, हृदयरोग, कफ, पित्त, वात और विषमज्वरको दूर करनेवाली है । इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विषविकारको दूर करेहै ।

विवरण । मूर्वाकी बेल वनमें होतीहै, इसमें छोटे २ और मधुर २ फल लगते हैं, पत्ते-घीकुआरकी समान चिकने और कुछ मोटे २ होते हैं ।

काकमाचीनामानि ।



मकोय.

काकमाचीध्वांक्षमाचीवायसीचघनाघना ॥

अर्थ–काकमाची, ध्वांक्षमाची, वायसी, घनावना, (काकमाचिका, काका, वायसाह्वा, सर्वतिक्ता, बहुफला, कटुफला, रसायनी, गुच्छफला, काकमाता, स्वादुपाका, सुन्दरी, तिक्तिका, बहुतिक्ता, जवनेफला, काकिनी और कुष्ठघ्नी,

संस्कृतभाषामें	काकमाची ।
हिन्दीभाषामें	मकोय, कवैया ।
वंगभाषामें	मदन, मधुनि, गुडकामाइ ।
मराठीभाषामें	लघुकावळी, कामोनि ।
गुजरातीभाषामें	पीलुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कावईकाके ।
इंग्रेजीभाषामें	नाइट्सेड ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनम् नाइग्रम् । Solanum nigrum
फारसीभाषामें	रोवातरीख ।
अरबीभाषामें	एनवुस्सालव ।

अस्या गुणाः ।

काकमाचीत्रिदोषघ्नीस्निग्धोष्णास्वरशुक्रदा ।
तिक्तारसायनीशोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥
कटुनेत्रहिताहिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी । (भा० प्र०)

अर्थ–मकोय–त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, कडवी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारी तथा सूजन, कोढ, ववासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीकटुस्तिक्तरसोष्णाकफनाशिनी ।
शूलार्शःशोफदोषघ्नीकुष्ठकण्डूतिहारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–मकोय–चरपरी, तिक्तरसान्वित, गरम, कफनाशक तथा शूल, बवासीर, सूजन, कोढ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

काकमाचीसरास्वर्य्यावृष्यादोषत्रयापहा ।
नात्युष्णाशीतलानातिकुष्ठहन्त्रीरसायनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है, कुष्ठनाशक और रसायन है । अपिच ।

काकमाचीरसेतिक्ताचोष्णाकटीरसायनी । वृष्यास्निग्धाच स्वर्य्याचहृद्याधातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्यारुच्यासरालघ्वीकफशूलार्शशोफहा । त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्णकीटातिसारहा ॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमेहहा । (नि० र०)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, बवासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

विवरण । मकोयका-क्षुप होताहै, पत्ते-गोल और लम्बे । फूल-सफेद रंगका छोटा । फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोंमें आते हैं । फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजातेहैं ।

काकजंघानामानि ।



काकजंघाचकाकाश्चीकाकांगीकाकनासिका ॥

अर्थ-काकजंघा, काकाश्ची, काकांगी, काकनासिका (काका, काकनासा, काककला; कृषीबल, काकाङ्गा, ध्वांक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, सुरंगी)

संस्कृतभाषामें काकजंघा ।
हिन्दीभाषामें काकजंघा, मसी ।

वंगभाषामें	केउयाठेङ्गां कांटागुडकाउली ।
मराठीभाषामें	कांगाचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	अघेडी ।
कर्णाटकीभाषामें	जीरीचिलेच ।
तैलिंगीभाषामें	नालादुच्चीणीके ।
लैटिन्भाषामें	हेंपलेथिस् हैटेक्युलेरीस् । Leea Hirta.

अस्या गुणाः ।

काकजंघातुतिक्तोष्णाकृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याजीर्णजित्कट्वीविषमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ-काकजंघा (मसी)-कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव,,कफ, बधिरता, अजीर्ण और विषम ज्वरको दूर करनेवाली है ।

विवरण। काकजंघाके क्षुप-जंगलमें और वनोंमें वहुत होतेहैं, पत्ते-लम्बे २ हरे और काले रंगके होते हैं, फूल-छोटे २ और काले रंगके होते हैं। पत्तोंपर खरखरापन और वारीक २ रुआंसा होता है, शाखा गांठेदार होती है और उनमें थोडी २ दूरपर ऐंडावैंडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजंघाहिमातिक्ताकषायाकफपित्तनुत् ।
निहन्तिज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविषक्रिमीन् ॥ (भा०प्र०)
"क्षतोपयोगिकाचैवबाधिर्य्यञ्चविनाशयेत् ।"

अर्थ-काकजंघा (मसी)-शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विष, और कृमिका नाश करेहै। तथा क्षतरोगमें हितकारी. और बधिरताको दूर करे है ।

काकनासानामानि ।

काकनासातुकाकांगीकाकतुण्डफलाचसा ।

अर्थ-काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वांक्षनासा, काकतुण्डी, वायसी, सुरंगी, तस्करस्नायु, ध्वांक्षतुण्डा, सुनासिका, वायसाह्वा, ध्वांक्षनखी, काकाक्षी, ध्वांक्षनासिका, काकप्राणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोवला)

संस्कृतभाषामें	काकनासा ।
हिन्दीभाषामें	कौआठोडी ।
वंगभाषामें	केउयाठुंटी ।

मराठीभाषामें	श्वेतकावळी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीयकागे डोले वडिलि कट्टुरली ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेल्लुमसन्दिचेट्टु, पुसगुलिविन्दचेट्टु, काकिदोंडचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	जिम्निमासिल्वेस्ट्रि । Gymurbma Sylvestre

अस्या गुणाः ।

काकनासाकषायोष्णाकटुकारसपाकयोः ।
कफघ्नीवामनीतिक्ताशोफार्शःश्वित्रकुष्ठनुत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ–कौआठोडी–कषेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कडवी, तथा सूजन, ववासीर और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

काकनासातुमधुराशिशिरापित्तहारिणी ।
रसायनीदार्ढ्यकरीविशेषात्पलितापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ–कौआठोडी–मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढताकारक और विशेषकरके पलित (बालोंका धवल होजाना) को दूर करे है । कौआठोडी,–विशेषकरके जंगल और कठैरकी भूमिमें होतीहै, पत्ते–गुलाबके पत्तोंसे छोटे, फूल-नीले और सुफेद रंगके कौवेकी नासिकाकी समान होतेहैं, इसपर फली आतीहै बीज लोवियेकी समान निकलते हैं ।

नागपुष्पीनामानि ।

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका ॥

अर्थ–नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका ।

अस्या गुणाः ।

नागिनीरेचनीतिक्तातीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत् ।
विनिहन्तिविषंशूलंयोनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–नागपुष्पी–दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ, पित्त, विष, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

विवरण । नागपुष्पीकी बेल चलतीहै, वनके वृक्षोंपर फैलजातीहै, फूल–सफेद और काले होतेहैं, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होताहै, इसके नीचे कंद होताहै ।

मेषशृङ्गीनामानि ।

मेषशृङ्गीमेषवल्लीचक्षुर्मेषविषाणिका ॥

अर्थ-मेषशृंगी, मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्वहल, मेढ्रशृंगी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृंगिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृंगी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

संस्कृतभाषामें	मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	मेढाशींगी ।
बंगलाभाषामें	मेडाशिंगे, गाडलशिंगी, छागलबेंटे ।
मराठीभाषामें	मेंडफळी, केवणीच्या शेंगा ।
गुजरातीभाषामें	मडाशिंगी आटडींनी शींग ।
कर्णाटकीभाषामें	उरियमर ।
इंग्रेजीभाषामें	स्क्रूट्री । Scren tree
लैटिन् भाषामें	हेलीक् टेरीस् इसोरा । Helicteris isora
	जिमनेगा सिलवेसट्री । Gymneruasylves-tree
फ़ारसीभाषामें	किस्त ।
अरबीभाषामें	बर्किस्त ।

अस्या गुणाः ।

अजशृंगीरसेतिक्तारूक्षापाकेकटुःस्मृता । चक्षुष्याशीतला स्वाद्वीबल्याभेदकरीमता ॥रसायनातुतुवरादाहपित्तकफापहा । रक्तरुक्कासतिमिरश्वासव्रणविषापहा॥ कृम्यर्शःशूलहृद्रोगनाशिनीशोथहास्मृता। कुष्ठंवातंनाशयतिफलमस्यास्तुतिक्तकम् ॥ कटूष्णंदीपनंहृद्यंरुच्यंचाम्लंपटुस्मृतम् । स्रंसनंकुष्ठमेहघ्नंकासक्रिमिकफप्रणुत् ॥ विषदोषंव्रणंवातंनाशयेदितिकीर्त्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-मेढाशिंगी-रसमें कडवी, रूखी, पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी शीतल, स्वादिष्ठ, बलकारक, भेदक, रसायन, कषेली तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, खांसी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग, सूजन, कोढ और वातको विनाश करनेवाली है । इसका फल-कडवा, चर-

परा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, खट्टा, खारा, स्रंसन, तथा कोढ, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, व्रण, और वातको दूर करनेवाली है ।

विवरण । मेढाशिंगीका वडा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान, और फूल-लाल होते हैं, इसकी फली गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर बहुत होतेहैं ।

हंसपादीनामानि ।



हंसपादीकीरमातात्रिपादीचमधुस्रवा ।

अर्थ-हंसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हंसपदी, गोधांघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हंसवती, चित्रपदा, हंसपदिका, हंसांघ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपदिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रह्लादी, कीरपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें	हंसपादी, गोधापदी ।
हिन्दीभाषामें	हंसपादी, हंसपगी ।
वंगभाषामें	गोयालेलता ।
मराठीभाषामें	लाल लाजाळु ।
गुजरातीभाषामें	हंसराज कालीडांडलीनो ।
कर्णाटकीभाषामें	नविलडि ।
तैलिंगीभाषामें	हंसपादमु ।
इंग्रेजीभाषामें	मैडन्हेर । Maiden hair
लैटिन्भाषामें	एडिएन्टम् ल्युन्युलेटम् । Adiantum Lunulatum
फारसीभाषामें	परस्या उशान ।
अरबीभाषामें	शारुलजीन् शारुलअर्द ।

अस्या गुणाः ।

हंसपादीगुरुःशीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हंसपादी-भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विष, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हंसपादींतुकटुकाचोष्णाप्रोक्तारसायनी ।
भूतबाधांविषंचैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-हंसपादी-चरपरी, गरम, रसायन तथा भूतबाधा, विष, अपस्मार और भ्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । हंसपदीके क्षुप-जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोंमें, होते हैं, विशेष करके कुँएँ बावडी इत्यादि स्थानोंमें बहुत होते हैं, इसको इस देशमें हंसराज कहते हैं, इसकी जड लाल और कोमल होतीहै, पत्ते-हरे २ बहुत छोटे २ होते हैं ।

सोमलतानामानि ।

सोमलतासोमवल्लीसोमक्षीरीद्विजप्रिया ॥

अर्थ-सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुलेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभाषामें	सोमवल्ली ।
हिन्दीभाषामें	सोमवल्ली, सोमलता ।
वंगभाषामें	सोमलता ।
मराठीभाषामें	सोमवल्ली ।
कर्णाटकीभाषामें	सोमवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	पल्लटीजी, टिगटसुम्मुडु, पुल्लतोगे ।
लैटिन्भाषामें	सारकोष्टिमा ब्रेवीस्टिग्मा Sarcostemma Brevistigma

अस्या गुणा. ।

सोमवल्लीत्रिदोषघ्नीकटुतिक्तारसायनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सोमलता-त्रिदोषनाशक, चरपरी, कडवी और रसायन है ।

अन्यच्च ।

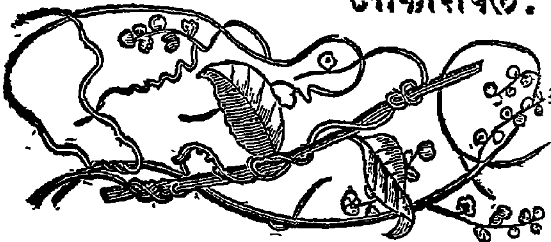
सोमवल्लीकटुःशीतामधुरापित्तदाहनुत् ।
तृष्णाविशोषशमनीपावनीयज्ञसाधनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सोमलता-चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृषा और विशोषको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है ।

विवरण । थूहरकी जो कोई प्रकारकी जातिहैं उनमेंसे सोमलता भी एकभांतिकी वेल है, इसमें शुक्ल पक्षके दिनोंमें क्रमवार प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पत्ता प्रतिवार निकलताहै, पन्द्रहतिथियोंमें पन्द्रह पत्ते होजातेहैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पत्ता प्रतिदिन गिरता जाताहै, पन्द्रहदिनमें एक पत्ताभी नहीं रहता, इस लताका चन्द्रमासे अधिक स्नेहहै, इसकारण इस अद्भुतलताका नाम सोमलताहै ।

आकाशवल्लीनाम।नि ।

आकाशवल.



आकाशवल्लीतुवुधैःकथिताऽमरवल्लरी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली, अमरवल्लरी, (खवल्ली, दुःस्पर्शा, व्योमवल्लिका)

संस्कृतभाषामें	आकाशवल्ली ।
हिंदीभाषामें	आकाशवेल, अमरबेल ।
वंगभाषामें	आलोकलता, आकाशवेल ।
मराठीभाषामें	आकाशवेल, अमरवेल ।
गुजरातीभाषामें	अमरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	नेदमुदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	इन्द्रजाल ।
लैटिन्भाषामें	कसकुटारी फ्लेक्सा । Cuscutareflexa
	केसिथाफिलिफोर्मिस् । Cassythafilliformis
अरबीभाषामें	अफतिमून ।

अस्या गुणाः ।

खवल्लीग्राहिणीतिक्तापिच्छिलाक्ष्यामयापहा ।
तुवराग्निकरीहृद्यापित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-आकाशवेल-ग्राही, कडवी, पिच्छल, अक्षिरोगनाशक, कषेली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, तथा पित्त, कफ और आमवातनाशक है ।

अन्यच्च ।

आकाशवल्लीकटुकामधुरापित्तनाशिनी ।
वृष्यारसायनीवल्यादिव्यौषधिपरास्मृता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-आकाशवेल-चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, बलकारक और दिव्यौषधि है ।

विवरण । आकाशवेल-डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रंग-पीला होताहै, फूल-सफेद आताहै, और इसकी जड नहीं होती । व्यवहार सर्वांश । मात्रा २ तोले ।

पातालगरुडीनामानि ।



छिलिहिण्डोमहामूलः पातालगरुडाह्वयः ॥

अर्थ-छिलिहिण्ड, महामूल, पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, तिक्तांगा, मोचकाभिधा, तार्क्षी, सौपर्णी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, महाबला, दीर्घवल्ली, दृढलता)

संस्कृतभाषामें	पातालगरुडी ।
हिंदीभाषामें	छिरेटा ।
वंगभाषामें	शिलिन्दा ।

मराठीभाषामें	तानीचा वेल, भुयपाड ।
गुजरातीभाषामें	वेवडीओलप ।
तैलिङ्गीभाषामें	दूसरतोगे ।
लैटिन्भाषामें	कोक्युलस् विलोसस् । Cocculus villosus ।

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्डः परं वृष्यः कफघ्नः पवनाह्वयः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—छिरेटा—अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

वत्सादनी तु मधुरा पित्तदाहास्रदोषनुत् ।
वृष्या सन्तर्पणी रुच्या विषदोषविनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—छिरेटा—मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, सन्तपर्ण, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषदोषविनाशक है ।

विवरण । पातालगरुडकी अर्थात् छिंरेटीकी वेल होतीहै, यह बहुत मोटी और दृढ होती है, इसके तंतुभी बहुत पक्के होतेहैं, इसके फल छोटे २ और गुच्छोंमें लगतेहैं, तरुण अवस्थामें हरे और पकनेपर काले होजाते हैं, इसके पत्ते सीसमके पत्तोंकी समान होते हैं, उसका रस निकालकर जलमें डालनेसे जल जमजाता है ।

वंदानामानि ।



वंदा वृक्षादनी सेव्या परपुष्टा पराश्रया ॥

अर्थ-वंदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वन्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्ध्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शैखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादनी, कामिनी, तरुभुक्, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें	वन्दा ।
हिन्दीभाषामें	वन्दा, वन्दाल, वदाक, वांदा ।
वंगलाभाषामें	वॉदु, परगाछा, मान्दडा ।
मराठीभाषामें	वादांगुल, कामरुख ।
गुजरातीभाषामें	वांदो ।
कर्णाटकीभाषामें	वन्दणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाजिनीके ।
लैटिन् भाषामें	लोरेन्थस लोंगिफोलियस् । Loranthus Longifolious

अस्या गुणाः ।

वन्दाकःकफवातास्त्रस्नायुव्रणविषापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ-वांदा-कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विषविनाशक है।

अन्यच्च ।

वंदाकःस्याद्धिमस्तिक्तःकषायोमधुरोरसे ।
मांगल्यःकफवातास्त्ररक्षोव्रणविषापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वन्दा-शीतल, कडवा, कषेला, मधुररसान्वित, मङ्गलजनक तथा कफ, वात, रुधिरविकार, राक्षसवाधा, व्रण और विषविनाशक है ।

अपिच ।

वन्दाकस्तिक्तशिशिरःकफपित्तश्रमापहः ।
वश्यादिसिद्धिदोवृष्यःकषायश्चरसायनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वन्दा-कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादिसिद्धिकर्ता, वीर्यवर्द्धक, कषेला और रसायन है। वन्दा, वृक्षोंकी शाखोंपै होता है।

विवरण। वन्दा विविधप्रकारका वृक्षोंपर वृक्षसरीखा होजाता है, उसकी जड अलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा लाकर वृक्षपर रखदेतेहैं, उसीमें

पत्ते निकल आते हैं और वही फल फूलकर वन्दा हो जाता है, किसीमें लाल किसीमें पीला, किसीमें सफेद, और किसीमें नीला फूल होता है, और पत्तेभी भिन्न २ जातिकेसे होते हैं ।

वटपत्रीनामानि ।

वटपत्रीतुकथितामोहन्यैरावतीबुधैः ॥

अर्थ-वटपत्री, मोहनी, ऐरावती (इरावती, इनानी, गोधावती, श्यामा, खट्वाङ्गनासिका)

संस्कृतभाषामें	वटपत्री ।
हिन्दीभाषामें	वडपत्री ।
मराठीभाषामें	वडवती ।
वंगभाषामें	वडपाथरकुचि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिण्डि, वण्डचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	लैकोपेडियम् ।

अस्या गुणाः ।

वटपत्रीकषायोष्णायोनिमूत्रगदापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वडपत्री-कषेली, गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगको दूर करे है।

अपिच ।

वटपत्र्यश्मभिच्छीतामधुरातुबलप्रदा ।
किञ्चिदग्नेर्दीप्तिकरीव्रणकृच्छ्रप्रमेहजित् ॥
अश्मरींमूत्रघातञ्चभगन्दरंविनाशयेत्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वडपत्री-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करनेवाली, तथा घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पथरी, मूत्रघात और भगन्दररोगको दूर करनेवाली है ।

विवरण । वटपत्री पाषाणभेदहीका भेद है, इसके पत्ते-वडके समान होते हैं, इसीसे इसका नाम वटपत्री है ।

मत्स्याक्षीनामानि ।

मत्स्याक्षीबालिकामत्स्यगन्धामत्स्यादनीति च ॥

अर्थ-मत्स्याक्षी, वालिका, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादनी ।

अस्या गुणाः ।

मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटुविपाकिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-मछेछी-ग्राही, शीतल, हलकी, कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ, पचनेमें चरपरी, तथा कोढ, पित्त, कफ, और रुधिरविकारको दूर करे है।

विवरण। मत्स्याक्षी-अर्थात् मछेछीके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते उडदके पत्तोंके समान होते हैं, फूल-सफेद और पीले रंगके होते हैं, इसमें मछलीके समान गंध आती है।

सर्पाक्षीनामानि।

सर्पाक्षीस्यात्तुगण्डालीतथानाडीकलापकः ॥

अर्थ-सर्पाक्षी, गण्डाली, नाडीकलापक।

अस्या गुणाः।

सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिनिकृन्तनी।
वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी, गंडनी)-चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा विच्छू, मूसा और साँपके विषको दूर करनेवाली है।

विवरण। सर्पाक्षी-सरफोंकेका भेदहै, सरफोंकेमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है।

शंखपुष्पीनामानि।



शंखपुष्पी (शंखाहूली)

मेध्याचण्डाशंखपुष्पीसुपुष्पीकम्बुमालिनी।

अर्थ-शंखपुष्पी, मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (शंखाहा,

पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शंखकुसुमा, भूलग्ना, शंखमालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा,सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी)

संस्कृतभाषामे	शंखपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	शंखाहुली, कौडियाली ।
वंगलाभाषामें	शंखाहुली, डानकुनी ।
मराठीभाषामें	शंखावळी, शंखोनी ।
गुजरातीभाषामें	शंखावली ।
कर्णाटकीभाषामें	शंखपुष्पी ।
लैटिन्भाषामें	इवोल्व्युलस् इरेक्टा (सफेद) Evolvulus Ereeta
	इवोल्व्युलस् आलसिनोइडिस् (लाल) E.Alsindoies
	इवोल्व्युलस् हर्सटस् (काली) E hirsutus

अस्या गुणाः ।

शंखपुष्पीतुतीक्ष्णोष्णामेध्याकृमिविषापहा ॥ (रा०व०)

अर्थ-शंखाहुली-तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक, तथा क्रिमि और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पीसरामेध्यायुष्यामानसरोगहृत्। रसायनीकषायोष्णास्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुकाशीतलास्वर्य्याकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् । पाचकायुःस्थिरकरीमांगल्यापित्तनाशिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नीग्रहदोषस्यनाशिनी। सर्वोपद्रवहाप्रोक्तापुष्पैर्भेदागुणैःसमाः ॥

अर्थ-शंखाहुली-सारक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रसायन, कषेली, गरम, स्मरणशक्तिवर्द्धक, कान्तिजनक, बलवर्द्धक, अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वरको उत्तम करनेवाली, मंगलकारक, अवस्थास्थापक, पाचक, तथा कोढ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्रहदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी शंखपुष्पी गुणोंमें समान है ।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पीकषायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।
रसायनीसरादिव्या लालाहृल्लासजूर्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीनां वर्द्धिनीकथिताबुधैः ।

अर्थ-शंखपुष्पी-कषैली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई, और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है ।

श्वेतशंखपुष्पीगुणाः ।

शुभ्राचशंखिनीमेध्याशीतलावश्यसिद्धिदा । रसायनीसरास्वर्य्याकिञ्चिदुष्णाचतूवरा ॥ स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनीकटुकामता ॥ पाचकायुःस्थिरकरीमाङ्गल्यापित्तनाशिनी ॥ विषदोषमपस्मारंकफंकृमिविषंहरेत् । कुष्ठलूतात्रिदोषघ्नीग्रहदोषस्यनाशिनी ॥ सर्वोपद्रवहाप्रोक्तारक्तानीलागुणैःसमा । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सफेद शंखाहुली-मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कषेली, तथा स्मरणशक्ति, कांति और अग्निको बढानेवाली है । चरपरी, पाचक अवस्थास्थापक, मंगलकारक, तथा पित्त और विषदोष, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विष, कोढ, लूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोंको दूर करे है । लाल शंखपुष्पी और नीली शंखपुष्पीके गुणभी इसकी समान जानने ।

विवरण । शंखपुष्पीका छत्ता प्रायः ऊपर भूमिमें होता है, पत्ते छोटे और धूसर रंगके सूक्ष्म होते हैं, फूल-ऽपहरियासे मिलता हुवा होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शंखाहुली कहते हैं, लाल रंगके फूलवालीको लाल शंखाहुली कहते हैं, नीले रंगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते हैं ।

अर्कपुष्पीनामानि ।

पयस्याह्यर्कपुष्पीचसूर्य्यवल्लीकुटुम्बिनी ॥

अर्थ-पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवल्ली, कुटुम्बिनी (जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, सिरिण्टिका, शीता, प्रहरकुटवी, शीतला, जलेरुहा, सितपर्णी, शीतपर्णी और अर्कपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अर्कपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अंधाहुली, अर्कहुली, दधियार, क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी ।
मराठीभाषामें	शिरडोरि ।
गुजरातीभाषामें	खरणेर ।
लैटिनभाषामें	होलोस्टेमा हिडिआई । Holostema rheedii

अस्या गुणाः ।

कुटुम्बिनीतुमधुराग्राहकाचरसायनी ।
शीतलाचव्रणंपित्तंकफंरक्तरुजंतथा ॥
कृमिंचकण्डुदोषञ्चकुष्ठञ्चैवविनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ–अर्कपुष्पी–मधुर, ग्राही, रसायन, शीतल तथा व्रण, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कृमि, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करे है ।

विवरण । अर्कपुष्पी जीवन्तिकाका भेद है, इसकी बेल नागरवेलकी समान होती है, पत्ते–गिलोयके समान छोटे २ होते हैं, फूल सूर्यमुखीके समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है ।

लज्जालुनामानि ।



लज्जालुःस्याच्छमीपत्रासमंगाञ्जलिकारिका ।
रक्तपादीनमस्कारीताम्राखदिरकेत्यपि ॥

अर्थ–लज्जालु, शमीपत्रा, समंगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी, ताम्रा, खदिरका, (कन्दिरी, स्पृक्का, खदिरपत्रिका, संकोचिनी, समङ्गा,

प्रसारिणी, सप्तपर्णी, खदिरी, गण्डमालिका, लज्जा, लज्जिका, स्पर्शलज्जा, अस्त्ररोधनी रक्तमूला, ताम्रमूला, स्वगुप्ता, महाभीता, वशिनी, महौषधी)

संस्कृतभाषामें	लज्जालु ।
हिन्दीभाषामें	लज्जावन्ती, छुईमुई, शर्मानी, लाजवती इत्यादि ।
वंगभाषामें	लाजुक, लज्जावती ।
मराठीभाषामें	लाजालु लाजरी, संकोरणी ।
गुजरातीभाषामें	रिशामणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुदिद्रेसुरुत्व ।
लैटिन्‌भाषामें	माईमोंसासेनसिटाईवा । Mimosaensitiva
	मा०पुण्डिका । M Pudica

अस्या गुणाः ।

लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–लज्जावती (छुईमुई) शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तापादीकटुःशीतापित्तातीसारनाशिनी ।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्त्रनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–लज्जावती (छुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सूजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्याअल्पक्षुपबृहद्दला ॥

अर्थ–विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहद्दल ।

अस्या गुणाः ।

वैपरीत्याचलज्जालुर्ह्यभिधानेप्रयोजयेत् ।
लज्जालुवैंपरीत्याह्वःकटुरुष्णःकफप्रणुत् ॥
रसेनियामकश्चैवनानाविज्ञानकारकः । (राजनिघण्टु)

अर्थ–विपरीतलज्जालु–चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको बांधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण। लज्जावन्ती अर्थात् छुईमुईके क्षुप बेलके समान होतेहैं, पत्ते-छोंकर अथवा खैरके समान होतेहैं, फूल-गुलाबी नीले मिश्रित रंगके होते हैं, इसकी जड लाल होती है; इसको स्पर्श करे तो ये लज्जाके मारे सर्माकर सुकड जाती है, पश्चात् विस्तृत होजाती है, यह दो प्रकारकी होती है, एक कांटेवाली, एक विना कांटेकी, हाथके लगतेही सुकड सुकडाकर नीचेको झुक जाती है। इसीलिये इसका नाम लज्जावंती (छुईमुई) रक्खा है।

अलम्बुषानामानि।

अलम्बुषाखरत्वक्चतथामेदोगलास्मृता ॥

अर्थ-अलम्बुषा, खरत्वक्, मेदोगला।

अस्या गुणाः।

अलम्बुषालघुःस्वादुःकृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुका भेद) हलका, स्वादिष्ठ तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है।

दुग्धिकानामानि।

दुग्धीक्षीरात्मिकाक्षीरीक्षीरावीचमरुद्भवा ॥

अर्थ-दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्भवा, (स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीराविका, ग्राहिणी, कच्छरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धफेनीनामानि।

दुग्धफेनीपयःफेनीफेनीदुग्धापयस्विनी।
लूतारिर्व्रणकेतुश्चगोजापर्णीचसप्तधा ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पयःफेनी, फेनीदुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु, गोजापर्णी।

नागार्जुनीनामानि।



दुद्धी. (क)



दुद्धी. (ख)

नागार्जुनीपयोवर्षायोगिनीलघुदुग्धिका ।

अर्थ—नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

संस्कृतभाषामें	दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी ।
हिन्दीभाषामें	दुद्धी, दूधिया, दूधीकलव ।
वंगभाषामें	दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरइ, खिरुइ इत्यादि ।
मराठीभाषामें	लघुदुधी, थोरदुधी ।
गुजरातीभाषामें	दुधेलीमोटी, थोरदुधी ।
कर्णाटकीभाषामें	मरिजवणीगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिलपालचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	युफोर्बियाहिर्टा । Eupharbia hirta यूपार्विफ्लोरा Euparviflora युटाईमिफोलिया Eu. thymefolia
फारसीभाषामें	निशाशत ।

दुग्धिकागुणा ।

दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भकारिणी ।
स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् । (भा.प्र.)

अर्थ—दुद्धी—गरम, भारी, रूखी, वादी, गर्भकारक स्वादिष्ठ क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्य्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ, और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणा ।

दुग्धफेनीकटुस्तिक्ताशिशिराविषनाशिनी ।
व्रणापसारणीरुच्यायुक्त्याचैवरसायनी ॥ (रा०नि)

अर्थ—दुग्धफेनी—चरपरी, कडवी, शिशिर, विषनाशक, व्रणनिवारक, रुचिकारक और किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनीगुणाः ।

नागार्जुनीतुमधुरावृष्यारूक्षाचग्राहिणी । तिक्ताचवातला गर्भस्थापनीकटुकापटुः॥ धातुवृद्धिकरीहृद्याचोष्णापारदबन्धिनी । मलस्तम्भकरीमेहकफकुष्ठकृमीन्हरेत् ॥

अर्थ—नागार्जुनी (एकप्रकारकी दुद्धी)—मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चरपरी, खारी, धातुवर्द्धक हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बांधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा प्रमेह, कफ, कोढ और कृमिको दूर करेहै ।

विवरण । दुद्धीका क्षुप छत्तासा होताहै, ऊपरको कम उठताहै, क्षितिमें फैलताहै, दुद्धी तीनप्रकारकी होतीहै, एक नोकदार लाल पत्तोंकी, एक गोलपत्तोंकी और एक मूंगोंके दानोंकी समान छोटे २ पत्तोंकी होतीहै, तीनोंप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है ।

भूम्यामलकीनामानि ।



भूम्यामलीशिवातालीक्षेत्रामलीचझारिका ॥

अर्थ-भूम्यामली-शिवा, ताली, क्षेत्रामली, झारिका (बहुपुष्पी, जडा, अध्यण्डा, तालि, तामलकी, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झढा, अफला, अमला, अजुटा, झाटा, माला, झाटामला, अमलजुटा, तमाली, तमालिका, तामलकी, उच्चटा, दृढपादी, वितुन्ना, वितुन्तिका, भूधात्री, चारटी, वृष्या, विषघ्नी, बहुपत्रिका, बहुवीर्य्या, अहिमपदा, वीरा, विश्वपर्णी, हिमालया, अरुहा, भूम्यामलकिका, बहुपत्रा, बहुफला, भूपर्वा, दलस्पर्शिनी, बहुपुत्रा, सूक्ष्मदला, दृढपादा, विश्वपर्णी, अमली, तमालिनी, पुत्रश्रेणिका, आमलकी, हिलोलिका, चोरटा)

संस्कृतभाषामें	भूम्यामलकी ।
हिन्दीभाषामें	भुँईआमला, भद्रआँवला, पतालआंवरा, भोमिआँवरा
वंगभाषामें	भुँईआमला ।
मराठीभाषामें	भुईआंवळी ।
गुजरातीभाषामें	भोंआंवली ।

कर्णाटकीभाषामें आर्डनेल्लि ।
तैलिङ्गीभाषामें नेलाउसीरीके ।
लैटिन्भाषामें फाईलेन्थस् निरुरी Phyllanthusniruri
फाईलेन्थस् युरिनेरिया P. urinaria

अस्या गुणाः ।

भूधात्रीचकषायाम्लापित्तमेहविनाशिनी ।
शिशिरामूत्ररोघार्त्तिशमनीदाहनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भुँईआमला-कषेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेहनाशक, मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-भुँईआमला-वातकारक, कडवा, कषेला, मधुर, शीतल तथा पियास, खाँसी, रक्तपित्त, कफ, पांडुरोग और क्षननाशक है ।

अन्यच्च ।

भूधात्रीतुविशेषेणविषघ्नीपुत्रदायिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ-भुईआमला-विशेषकरके विषनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्रीतुहिमातिक्ताकषायामधुरालघुः ।
रोचनीपाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा ॥
जयेच्छ्वासंतृषांदाहंहिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग०नि०)

अर्थ-भुईआमला-शीतल, कडवा, कषेला, मधुर, हलका, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ, विष, श्वास, तृषा, दाह, हिचकी, खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करेहै ।

विवरण । भुईआमलेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्तोंके नीचे राईके दानेके समान फलोंकी शाखा होती है ।

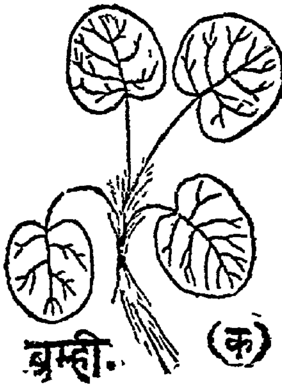
ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मीवयस्थामत्स्याक्षीसुरसाब्रह्मचारिणी ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी (सोमवल्लरी, मत्स्याक्षी, सरस्वती, सोम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा, वैधात्री, दिव्य-

तेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, भारती, वरा, परमेष्ठिनी, दिव्या, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि ।





मण्डूकपर्णीमण्डूकीभेकीमण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ-मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका (माण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, सुप्रिया, दर्दुच्छदा)

संस्कृतभाषामें	ब्राह्मी, माण्डूकी, ब्रह्ममाण्डूकी ।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मी, ब्रह्ममाण्डूकी, बरंभी, चरेली ।
वंगभाषामें	ब्रह्मीशाक, अधविर्णी, थुलकुडि, थालकुनि ।
मराठीभाषामें	ब्राह्मी ।
गुजरातीभाषामें	ब्राह्मी, विद्याब्राह्मी, खडभरामी ।
कर्णाटकीभाषामें	ऑदेलग ।
तैलिङ्गीभाषामें	शम्ब्रनीचेट्टु, मण्डूकब्रम्मी ।
तामिलीभाषामें	वीमी, वल्लरीकेरी ।
वम्०	वाम, ब्रह्मी ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन् पेनीवर्ट । Indian penny wort
लैटिन्भाषामें	हाइड्रो कोटाईल एश्याटीका Hydrocotyle Assiatica
फारसीभाषामें	जरनब ।

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघ्वीमेध्याचशीतला । कषायामधु-

रास्वादुपाकायुष्यारसायनी ॥ स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्त्रकासजित् । विषशोथज्वरहरीतद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ब्रह्मी-हिम, सारक (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल, कषेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुर्वर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, खांसी, विष, सूजन और ज्वरको हरनेवाली हैं, इसकेही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुभेदिनीगुर्वीमेध्यापित्तकफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-ब्रह्मी-भेदक, भारी, मेधाजनक, तथा पित्त और कफनाशकहै ।

अपिच ।

ब्राह्मीशीताकषायाचतिक्ताबुद्धिप्रदामता । मेध्यायुरग्निजननीसारकास्वादुलालघुः ॥ कण्ठशुद्धिकरीहृद्यास्मृतिदाचरसायना । हृद्यामेहंविषंकुष्ठंपांडुंकासंज्वरंजयेत् । शोफकण्डूप्लीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत् । श्वासंशोषंसर्वदोषंकफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेप्येतेगुणाब्रह्ममण्डूक्यामपिसंस्थिताः । (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मी-शीतल, कषेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हलकी, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ, पाण्डुरोग, खांसी, ज्वर, सूजन, कण्डु, प्लीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ और वातको दूर करनेवाली है । ब्रह्ममाण्डूकीकेभी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मीतुपिच्छिलायुष्यासरोन्मादविमर्दिनी ।
वयसःस्थापनीमेध्यावाक्स्वरस्मृतिदापरा ॥
तिक्ताहृद्याकटुःपाकेश्वासश्लेष्मनिकृन्तनी । (ग०नि०)

अर्थ-ब्रह्मी-पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक, अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है । कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेमें चरपरी और श्वास तथा कफनाशक है ।

मण्डूकपर्णीगुणाः ।

मण्डूकपर्णिकालघ्वीस्वादुपाकासराहिमा ॥ (रा०व०)

अर्थ-ब्रह्ममाण्डूकी-हलकी, पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर और शीतल है ।

अस्यार्कगुणाः ।

ब्रह्ममण्डूकिकापाण्डुविषशोथज्वरान्हरेत् ॥ (इतिदशा०)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग, विषदोष, सूजन और ज्वरको दूर करनेवाला है ।

विवरण । ब्राह्मीके क्षुपका छत्तासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमें होता है, पत्ते-छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होते हैं, दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होती है, उसके पत्ते-छोटे होते हैं ।

द्रोणपुष्पीनामानि ।

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता ॥

अर्थ-द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (क्षवपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुप, कुरुम्बा, सुपुष्पी, चित्रपत्रिका, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक)

संस्कृतभाषामें	द्रोणपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	गूमा, गोमा ।
बंगालीभाषामें	द्रोणपुष्पी (घलघसे)
मराठीभाषामें	कुम्भा, तुम्बा ।
गुजरातीभाषामें	कुबो ।
कर्णाटकीभाषामें	तुम्ब ।
तैलिंगीभाषामें	लतुगतुम्मि ।
लैटिन्भाषामें	ल्युकास्सिफेलोटस् Leucas cephalotus

अस्याः गुणाः ।

द्रोणपुष्पीगुरुःस्वाद्वीरूक्षोष्णावातपित्तकृत् ।
सतीक्ष्णालवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी ॥
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-भारी, स्वादिष्ठ, रूखी, गरम, वातपित्तकारक, तीक्ष्ण और लवणरसयुक्त, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, चरपरी, दस्तावर तथा कफ, आम, कामला, सूजन, तमकश्वास और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पीकफार्शोघ्नीकामलाकृमिशोथजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-कफ, बवासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

द्रोणपुष्पीकटुःसोष्णारुच्यावातकफापहा ।
अग्निमांद्यहराचैवपक्षाघातस्यनाशिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ-गूमा-चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मंदाग्नि और पक्षाघात रोगनाशक है ।

अस्याः पत्रगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत् ।
भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गूमाके पत्ते-स्वादिष्ठ, रूखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण । गूमाका क्षुप होता है, गुच्छे गांठ २ में होते हैं, उन गुच्छोंमें सफेद फूल होता है । और फूलके ऊपर दो पत्ते होते हैं । इसके भीतर वीज होते हैं । मात्रा २ मासेकी ।

आदित्यभक्तानामानि ।

आदित्यभक्तावरदार्कभक्तासुवर्चलासूर्यलतार्ककान्ता ।
मण्डूकपर्णीसुरसंभवाचसौरिस्सुतेजार्कहितारवीष्टा ॥
मण्डूकीसत्यनाम्नीस्यादेषामार्तण्डवल्लभा ।
विक्रान्ताभास्करेष्टाचभवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ-आदित्यभक्ता-वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरसम्भवा, सौरि, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा (सूर्य्यावर्त्ता, रविप्रीता) और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला इसीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	आदित्यभक्ता, सुवर्चला, ब्रह्मसुवर्चला ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुज, ब्रह्मसोंचली, सोंचली ।
वंगभाषामें	हुडहुडे, वनशलते ।

मराठीभाषामें	सूर्यफूल ।
गुजरातीभाषामें	सूरजमुखी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुरहुर, आदित्यभक्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	सूर्यकान्तिमु ।
इंग्रेजीभाषामें	संफ्लावर । Sunflower
लैटिन्भाषामें	हेलिएंथस् एन्युअस् । Helianthus annus
फारसीभाषामें	गुलेआफ्तावपरस्त ।
अरबीभाषामें	अरद्‌सून ।

आदित्यभक्तागुणाः ।

आदित्यभक्ताशिशिरासतिक्तापटुस्तथोग्राकफहारिणीच । त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनीच ॥ (रा०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (हुरहुज)-शीतल, कडवी, खारी, उग्र, कफनाशक तथा त्वचाके विकार, कण्डू, व्रण, कुष्ठ, भूत, और उग्रशीतज्वरनाशक है ।

अन्यच्च ।

आदित्यभक्ताकटुकाशीतातिक्तातिपित्तला । रूक्षास्वाद्वी चकट्वीचकफवातव्रणापहा । शीतज्वरंभूतबाधांग्रहपीडांविनाशयेत् ॥ मेहंकृमींश्चकुष्ठञ्चत्वग्दोषञ्चविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (हुरहुज)-चरपरी, शीतल, कडवी, अत्यन्त पित्तकारक, रूखी, स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ, वात, व्रण, शीतज्वर, भूतबाधा, ग्रहपीड़ा, प्रमेह, कृमि, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सुवर्चलाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवातजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हुरहुज-शीतल, रूखा. पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर, भारी, पित्तकारक नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ, कफ,और वातको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

सुवर्चलागुरुःशीतामूत्रलाकर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-हुरहुज-भारी, शीतल, मूत्रजनक और कर्णशूलनाशक है ।

ब्रह्मसुवर्चलागुणाः ।

अन्यातिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः ।

निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥

अर्थ-ब्रह्मसुवर्चला (ब्रह्मसोचली)-कषेली, गरम, सारक (दस्तावर), हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, श्वास, खांसी, अरुचि, ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णाकुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरालघुः ॥ (म० नि०)

अर्थ-ब्रह्मसोंचली-गरम, हलकी तथा कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्रागुणाः ।

आदित्यपत्रावीर्योष्णाकट्वीसंदीपनीमता । स्वर्यारसायनी तिक्तातुवराचसरामता ॥ रूक्षालघ्वीचसंप्रोक्ताकफवातविनाशिनी । रक्तदोषंज्वरंश्वासंकासंविस्फोटकंतथा ॥ कुष्ठं मेहंचारुचिंचयोनिशूलंतथाश्मरीम् । मूत्रकृच्छ्रंपाण्डुरोगं गुल्मञ्चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यपत्रा-उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कषेला, दस्तावर, रूखा, हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खांसी, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुल्मका नाश करेहै ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला-अर्थात् हुरहुरकी बेल तथा क्षुप होतेहैं, यह विशेषकरके बागोंमें बोये जाते हैं, प्रायः इसपर सूर्योदयके होनेपर फूल प्रफुल्लित होजाते हैं, बेलवाले हुरहुरमें जो फूल आते हैं वह नीले रंगके होते हैं, और क्षुपवाले हुरहुरके फूल सफेद होते हैं, बहुत सुन्दर और सूर्य्याकार होते हैं, परन्तु बहुत छोटे २ होते हैं ।

वन्ध्याकर्कोटकीनामानि ।

वन्ध्याकर्कोटकीदेवीकान्तायोगेश्वरीतिच ।
नागारिर्भक्तदमनीविषकण्टकिनीतथा ॥

अर्थ-वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विषकण्टकिनी (नागाराति, वन्ध्या, नागहन्त्री, मनोज्ञा, पथ्या, दिवा, पुत्रदा,

सकन्दा कन्दवल्ली, ईश्वरी, श्रीकन्दा, सुगन्धा, सर्पदमनी, विषकन्दकिनी, वरा, नक्रदमनी, कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वौषधी, विषमोहप्रशमनी, महायोगेश्वरी)

संस्कृतभाषामें	वन्ध्याकर्कोटकी।
हिन्दीभाषामें	वांझखखसा, वनककोडा, वांझककोडा।
वंगभाषामें	तित्कॉंकरोल, तित्कांकडी।
मराठीभाषामें	वांझकटोंली।
गुजरातीभाषामें	वांझकण्टोलो।
कर्णाटकीभाषामें	वंजेमडुवागलु।
लैटिन्‌भाषामें	मोमोंडिका डायोइकामेल। Momodic a dioicamale

अस्या गुणाः।

वन्ध्याकर्कोटकीतिक्ताकटूष्णाचकफापहा।
स्थावरादिविषघ्नीचशस्यतेसाररसायने॥ (रा. नि.)

अर्थ-वांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विषविनाशक और पारेको बांधनेवाला है।

अन्यच्च।

वन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी।
सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वनककोडा-हलका, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पके विषको हरनेवाला, तीक्ष्ण तथा विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

अपिच।

वन्ध्याकर्कोटकीतिक्ताकट्वीचोष्णालघुःस्मृता। रसायनी शोधिनीचस्थावरादिविषापहा॥ कफनेत्रशिरोरोगव्रणवीसर्पकासहा। रक्तदोषंसर्पविषंनाशयेदितिकीर्त्तिता॥ (नि.र.)

अर्थ-वनककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हलका, रसायन, शोधक, स्थावरादिविषनाशक तथा कफ, नेत्ररोग, मस्तकरोग, व्रण, विसर्प, खांसी, रुधिरविकार और सांपके विषको दूर करनेवालाहै।

विवरण-वन्ध्याकर्कोटकी अर्थात् वांझककोडेकी वेल ककोडेके समान जंगलके वृक्षोंपर फैलजातीहै, परन्तु इसमें फल नहीं आते, इसलिये इसको वांझककोडा कहते हैं, फलके स्थानमें खाली एक कोष होताहै और इसकी जडके नीचे खोदनेसे एक कन्द निकलताहै।

अस्याःकन्दगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दोहन्तिश्लेष्मविषद्वयम् ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-वनककोडेका कन्द-कफ और दोनों प्रकारके विष, (स्थावर और जंगम) को दूर करनेवाला है ।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिकाभूमिचरीमार्कण्डीमृदुरेचनी ॥

अर्थ-मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीतपुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामें	मार्कण्डिका ।
हिन्दीभाषामें	भुईखखसा । (सनाय)
वंगभाषामें	कांकरोलभेद् ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
द॰	सोनामुखी ।
दे॰	आहुली ।
गुजरातीभाषामें	मीठीआवल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	तलाडवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामें	नेलतंघडी ।
इंग्रेजीभाषामें	आलेक्झाण्ड्रियन-सेना । Alexandrian-sena
लैटिन्भाषामें	सेन्नेफोलिआ । Sennafolia
	केसियाएगस्टिफोलिआ । Cassia augustifolia
फारसीभाषामें	सना ।
अरबीभाषामें	सना ।

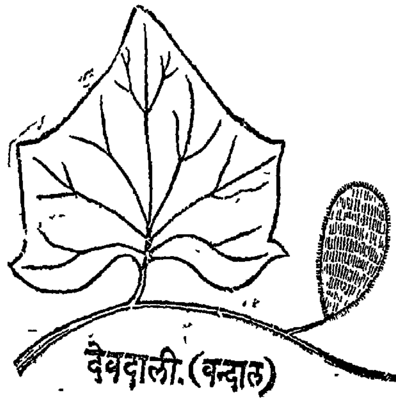
अस्या गुणाः ।

मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्द्ध्वाधःकायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ (भा॰प्र॰)

अर्थ-भुईखखसा-कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करनेवाला, तथा विष, दुर्गन्ध, खांसी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है ।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होतीहै, पत्ते-परवलकी समान होतेहैं और फूल पीले रंगके होतेहैं ।

देवदालीनामानि।



देवदाली. (बन्दाल)

जीमूतकःकण्टफलागरागरीवेणीसहाकोषफलाचकट्फला।
घोराकदम्बाविषदाचकर्कटीस्याद्देवदालीखलुसारमूषिका॥
वृत्तकोषाविषघ्नीचदालीलोमशपत्रिका।
तुरंगिकाचतर्कारीनाम्नामेकोनविंशतिः॥

अर्थ-जीमूतक, कण्टफला, गरागरी, वेणी, सहा, कोषफला, कट्फला, घोरा, कदम्बा, विषहा, कर्कटी, देवदाली, सारमूषिका, वृत्तकोषा, विषघ्नी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तर्कारी (देवताड, गरनाशिनी, घोषा, आखुविषहा, चतुरंगका, देवदालिका, पीता, खरस्पर्शा)

संस्कृतभाषामें	देवदाली।
हिन्दीभाषामें	सोनैया, घघरबेल, बिदाली घुसरान बंदाल।
वंगभाषामें	घोषकलताविशेष, देयाताडा।
मराठीभाषामें	देवदाली, देवडंगरीफल।
गुजरातीभाषामें	कुकडवेल्य।
तैलिङ्गीभाषामें	डातरगण्डि, लताविशेषमु।
कर्णाटकीभाषामें	देवडंगर।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिस्टलि-ल्युफा। Bristly-lufia
लैटिन् भाषामें	ल्युफाएकिनेटा। Luffa Echinata
या०	बंदाल।

अस्या गुणाः।

देवदालीरसेपाकेतिक्तातीक्ष्णाविषापहा।

वामनीहन्तिगुदजकफशोफामकामलाः ॥
ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयक्रिमीन् । (रा.नि.)

अर्थ–देवदाली (घघरबेल)–रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विषनाशक, वमनकारक, तथा गुदजरोग, कफ, शोफ, आम, कामला, ज्वर, खांसी, अरुचि, श्वास, हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

देवदालीवमिकरातिक्ताचोष्णाचऊष्मणा।तीक्ष्णापाण्डुक-
फश्वासकासार्शःक्षयनाशिनी ॥ कामलाकृमिहिक्काघ्नीज्वर
शोथविषापहा । भूतबाधारुचिहरा चोंदुरोर्विषनाशिनी ॥
फलमस्याःसरंतिक्तंगुल्मक्रिमिकफापहम् । शूलार्शःकाम-
लावातनाशकंपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–देवदाली (घघरबेल)–वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतबाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है । इसका मूल–सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, बवासीर और कामला वातको हरनेवाली है । अन्यच्च ।

देवदालीत्रयंश्वासज्वरकासकफापहम् ।
आखोर्विषंनिहन्त्याशुवामकञ्चविरेचकम् ॥
श्वेतारक्ताचपीताचदेवदालीगुणैःसमा । (शो० नि०)

अर्थ–तीनों प्रकारकी देवदाली–श्वास, ज्वर, खांसी, कफ और मूषेके विषको दूर करेहै तथा वमनकारक और विरेचक है । सफेद, लाल और पीली इन तीनों देवदालीके गुण समान हैं ।

विवरण । देवदाली, बन्दाल, घघरबेल, सुनैया और खखसाके फलवाली बडीबेल होतीहै, खेतकी बाडोंपर किसान लोग बहुत लगादेतेहैं, फूल–सफेद पीले और लाल तीन रंगके होते हैं, फलोंके ऊपर बहुत छोटे २ कांटे होतेहैं, इसका फल छोटी तुराईकेसा होताहै ।

जलपिप्पलीनामानि ।

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकुलादनी ।

मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गलीत्यपिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली (महाराष्ट्री, तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणशीता, बहुशिखा)

संस्कृतभाषामें	जलपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पनिसिगा, गंगतिरिया, जलपीपर ।
वंगभाषामें	कॉंचडाघास, पनिसिगा ।
मराठीभाषामें	जलपिंपळी ।
गुजरातीभाषामें	रतवेलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	होमुगुल्लु ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल् लिप्पा । Purple Lippla
लैटिन्भाषामें	लिपियानोडिफ्लोरा । Lippia Nodiflora
फारसीभाषामें	पीपलआवी ।
अरबीभाषामें	फिलफिलमाय ।

अस्या गुणाः ।

जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः ।
संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी । (भा०प्र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, मलरोधक, शीतल, रूखी, पचनेमें और रसमें चरपरी, रुचिकारक, कषेली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

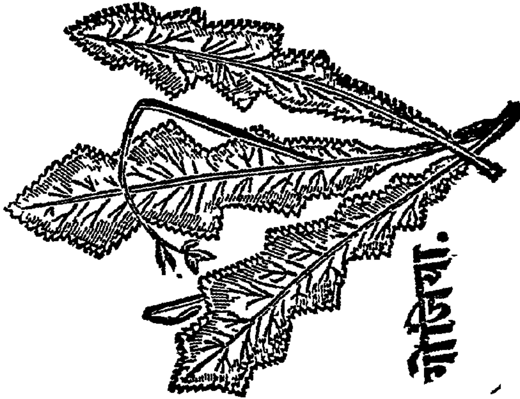
जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशीतलामता । रसकालेचकटुकाग्राहिणीशुक्रलालघुः ॥ रूक्षातीक्ष्णाचतुवरामुखशुद्धिकरीमता । रुच्याग्निदीपनीवातकारिणीरक्तदोषहा ॥ रसदोषंकृमीन्दाहंव्रणंश्वासंकफंतथा । वातंविषंभ्रमंमूर्च्छांतृषांपित्तज्वरंहरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, कटुरसान्वित, ग्राही, शुक्रजनक, हलकी, रूखी, तीक्ष्ण, कषेली, मुखको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, वातकारक तथा रुधिरविकार, रस-

दोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करै है।

विवरण। जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते-बड़ी नोनियाके समान और नोंकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक बाल निकलती है।

गोजिह्वानामानि।



गोजिह्वादार्विकागोभीकुरसादार्विपत्रिका॥

अर्थ-गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनडुज्जिह्वा, दर्विका, दर्वी, दार्वी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी।

संस्कृतभाषामें	गोजिह्वा।
हिन्दीभाषामें	गोजिया, गोभी।
बंगभाषामें	दाडिशाक।
मराठीभाषामें	पाथरी।
गुजरातीभाषामें	भोपाथरी।
तैलिङ्गीभाषामें	येदुनाछकचेट्टु, भरीलिकचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	एलिफेण्टोपस् स्केबर। Elophuntopus Scabar
फारसीभाषामें	कलमरूमी।

अस्या गुणाः।

गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत्।
हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः॥
कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकारसास्मृता। (भा०प्र०)

अर्थ-गोभी-वातकारक,शीतल,ग्राही, कफपित्तनाशक,हृदयको हितकारी, हलकी तथा प्रमेह, खाँसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको हरनेवाली है, तथा कोमल, कषेली, कडवी, पचनेमें और रसमें स्वादिष्ठ है ।

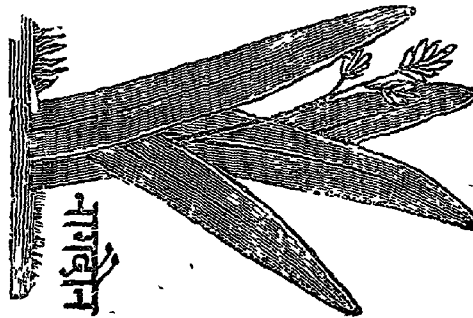
अन्यच्च ।

गोजिह्वाकटुकातिक्ताशीतलाव्रणरोपिणी ।
पित्तंसर्वविषंहन्तिकासारुचिविनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सर्व-प्रकारके विष, खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । गोभीका क्षुप होताहै, पत्ते-लम्बे और खरखरे होते हैं, फूल-सुवर्णके वर्णके समान चक्राकार होताहै, पत्तोंके बीचमें एक बाल निकल-तीहै । इसको शाकरी गोभी नहीं समझना चाहिये ।

नागदमनीनामानि ।



विज्ञेयानागदमनीबलामोटाविषापहा ।
नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच ॥

अर्थ-नागदमनी, बला, मोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायो-गेश्वरी, (जम्बु, जाम्बवती, चूक्का, रक्तपुष्पी, जाम्बवी, मलघ्नी, दुर्धर्षा, दुःसहा, वृत्ता, वृत्तपुष्पा, मदघ्नी, विषमर्दिनी, विफला, वनकुमारी, विषारी, श्रीकन्दा, कंदशालिनी, विषविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	नागदमनी ।
हिन्दीभाषामें	नागदमन, नागदौन ।
वंगलाभाषामें	नागदना ।
मराठीभाषामें	नागदवणी ।
गुजरातीभाषामें	नागडमण ।
कर्णाटकीभाषामें	नागदमनी ।

तैलङ्गीभाषामें	ईश्वरिचेट्टु दरणमु ।
तामिलीभाषामें	माचिपत्री ।
नेपालीभाषामें	तितापात ।
लैटिन्‌भाषामें	आरटिमसियावुलगेरिस् साइन. ए. इण्डियन । Artımsia vulgoris Syn A Indian

अस्या गुणाः ।

वलामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणा-
न्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनीविशेषविषना-
शिनी । जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–नागदौन–चरपरी, कडवी, हलकी, तथा पित्त, कफ, मूत्र, कृच्छ्र, घाव, राक्षसवाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है । सर्वग्रहोंको शान्ति करनेवाली और विशेषकरके विषनाशकहै, सर्वत्र जयकारक, धन और सुमतिदायक है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयाजम्बूस्त्रिदोषघ्नीतीक्ष्णोष्णाकटुतिक्तका ।
उदराध्मानदोषघ्नीकोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–नागदौन–त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके अफारेको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवालीहै ।

अपिच ।

प्रोक्तानागदमन्युष्णातिक्तालघ्वीरुचिप्रदा ।
कोष्ठशुद्धिकरीतीक्ष्णाकटुकायोनिदोषजित् ॥
लूतासर्पविषंवातंकफंवान्तिंकृमीन्व्रणम् ।
मूत्रकृच्छ्रंचोदरञ्चजालगर्दभकंतथा । त्रिदोषञ्चप्रमेहञ्चका-
संकण्ठरुजंतथा । शूलंगुल्मंरक्तदोषंज्वरंसर्वविषाणिच ।
आध्मानंग्रहपीडाञ्चनाशयेदितिकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ–नागदौन–गरम, कडवी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकरनेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकडी और सॉपका विष, कफ, वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खांसी,

कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिरविकार, ज्वर, सर्वविष, आध्मान और ग्रहपीडाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नागदमनको कितनेक वैद्य तो दौना कहते हैं और कितनेक भिषग्वर सुदर्शन कहते हैं; सो हमको ठीक २ निश्चय नहीं होता कि, नागदमन क्या वस्तु है ।

छिक्कनीनामानि ।



नकछिकनी.

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा ।

अर्थ-छिकनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, (उग्रा, उग्रगन्धा, क्षवक, क्रूरनासा, संवेदनापटु)

संस्कृतभाषामें	छिकनी ।
हिंदीभाषामें	नाकछिकनी ।
वंगभाषामें	हॉचुटी, छिक्नी, हेंचेतागाछ ।
मराठीभाषामें	नाकशिकणी ।
गुजरातीभाषामें	नाकछीकणी ।
लैटिन्भाषामें	सेंटिपीडा ऑर्बिक्युलेरीस् । Sentipeda Orbiculeris
फारसीभाषामें	वेरगाउजवां ।
अरबीभाषामें	उफरककुदुश ।

अस्या गुणाः ।

छिक्कनीकटुकारूक्षातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत् ।
वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रूखी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निजनक, पित्तकारक, तथा वातरक्त, कोढ, कृमि, वात, और कफनाशक है ।

अपिच ।

छिक्कनीकटुकारुच्यापित्तलाचाग्निदीपनी ।
लघ्व्युष्णातुवरातीक्ष्णगन्धात्वग्दोषनाशिनी ॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा।
ग्रहपीडांभूतबाधांदृष्टिश्चैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रुचिकारक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कषेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेत-कुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है।

विवरण। नाकछिकनीका क्षुप छोटा होताहै, पत्ते छोटे होतेहैं। इसके नीचे कंद होताहै, इसके पत्तोंको वा डंडीको सूँघनेसे छीकें आतीहैं।

अन्यच्च।

छिक्कनीश्वासकासासृग्विषघ्नीवामनीमता। (शो॰नि॰)

अर्थ-नाकछिकनी-श्वास, खांसी, रुधिरविकार, और विषविनाशक है। तथा वमनकारक है।

कुकन्दरनामानि।

कुकुन्दरस्ताम्रचूडःसूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः।

अर्थ-कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुक्कुरद्रु)।

संस्कृतभाषामें	कुकुन्दर, कुक्कुरद्रु।
हिन्दीभाषामें	कुकुरौंदा।
वंगभाषामें	कुकुरशोंका, कुक्कुरसुता।
मराठीभाषामें	कुकुरवंदा।
गुजरातीभाषामें	कोकरुंदा।
लैटिन्भाषामें	ब्ल्युमियाओडोरेटा। Blumea Odorata
फारसीभाषामें	कमाकिसुस।
अरबीभाषामें	सनौवरुल् अर्द।

अस्या गुणा।

कुकुन्दरःकटुस्तिक्तोज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मतः।
रक्तरुक्कफदाहानांतृषायाश्चैवनाशनः ॥
अस्यार्द्रमूलञ्चमुखेधारितंमुखदोषनुत्। (नि॰र॰)

अर्थ-कुकरौंदा-चरपरा, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह, और तृषाको दूर करनेवाला, है। इसकी कच्ची जडको मुखमें रखनेसे मुखके रोग दूर होतेहैं।

विवरण । कुकरौंदेके क्षुप, लम्बे लम्बे होते हैं । विशेष करके शरदीके स्थानोंमें उत्पन्न हो जातेहैं; पत्ते तम्बाकूकी समान बडे बडे होतेहैं, इनके ऊपर लाल शिखा होतीहै ।

सुदर्शननामानि ।

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्गीमधुपर्णिका ।

अर्थ-सुदर्शना-सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका (चक्राह्वा, दध्यानी, वृषकर्णी, चक्राह्वा) ।

हिन्दीभाषामें सुदर्शन ।

वंगभाषामें सुदर्शनगुलञ्ज, पञ्जगु० ।

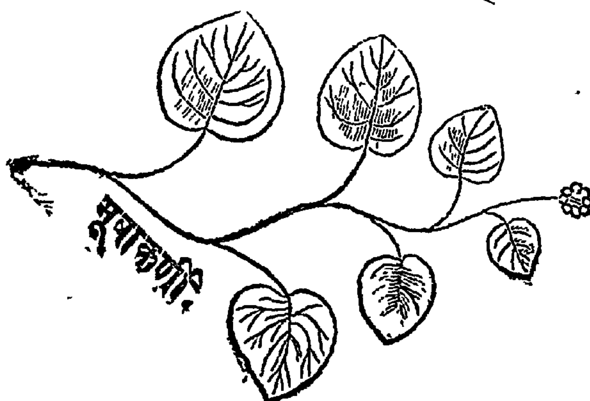
अस्या गुणाः ।

सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्त्रवातजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-सुदर्शन-स्वादिष्ठ, गरम, तथा कफ, सूजन, और वातरक्तको हरनेवाला है ।

विवरण । सुदर्शनका क्षुप चक्रकी समान होताहै, पत्ते लम्बे लम्बे ईखकी समान होतेहैं कभी कभी किसीपर सुफेद रंगका फूलभी आताहै ।

आखुकर्णीनामानि ।



मूषाकर्ण्याखुपर्णीचवृषपर्ण्याखुकर्णिका ।
भूमिचरीद्रवन्तीचशम्बरीभूधराश्रया ॥

अर्थ-मूषाकर्णी-आखुपर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, भूधराश्रया (कृशिका, उन्दुरकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, वृश्चिककर्णी, बहुकर्णिका, माता, भूमिचरी, चण्डा, बहुपादिका, प्रत्यक्श्रेणी, वृषा, पुत्रश्रेणी, आदिभू, चित्रा, सुवर्णी, शतमूलिका, आखुपर्णिका, मूषि-

कपर्णी प्रतिपर्णशिफा, सहस्रमूषी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, भूदरीभवा, उपचित्रा, मूषिकाह्वया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फञ्जिपत्रिका, मूषिपर्णिका, सचित्रा मूषीकर्णी, सुकर्णिका, न्यग्रोधी) ।

संस्कृतभाषामें	आखुकर्णी, मूषाकर्णी; द्रवन्ती ।
हिंदीभाषामें	मूसाकानी ।
वंगलाभाषामें	उन्दुरकानीपाना ।
मराठीभाषामें	उंदिरकानी भोपनी ।
गुजरातीभाषामें	उंदरकनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिहहें ।
तैलङ्गीभाषामें	एलुकचेविचेट्टु ।
लैटिनभाषामें	आईपोमिया रेनिफोर्मिस्, Ipomoea Renniformis.
	लेक्ट्कारिमोटीलफोरा । Lectcaremotiflora
फारसीभाषामें	गोरोसुष, सतर ।
अरवीभाषामें	अजानुलफार ।
गु०	शरदस् ।

अस्या गुणाः ।

आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः ।
विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी; कषेली, शीतल, हलकी, पचनेमें चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

द्रवन्तीकृमिहृत्तीक्ष्णायोनिदोषहरासरा । (शो०नि०)

अर्थ-मूसाकानी-कृमिनाशक, तीक्षण; सारक और योनिदोषहारक है ।

अपिच ।

लघ्व्याखुकर्णीकटुकातिक्ताचोष्णाचशीतला । रसायनीरसालघ्वीकषायाकफपित्तनुत् ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थिमूत्रकृच्छ्रप्रमेहहृत् ॥ अनाहोदरहृद्रोगविषपाण्डुभगन्दरान् । कुष्ठानिनाशयेदेवंपूर्ववैद्यैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी, गरम, शीतल, रसायन, सारक, हलकी,

कषेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, आनाह, उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है।

बृहदाखुकर्णीगुणाः।

आखुकर्णीबृहत्युक्ताशीतलामधुरास्मृता ।
रसबन्धकरीनेत्र्यारसायन्यथशूलनुत् ॥
ज्वरंकृमीन्व्रणंचाखुविषंचैवविनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-बडी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको बांधनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, व्रण और मूषेके विष हरनेवाली है।

विवरण। मूषाकर्णीका छत्ता पृथ्वीपर फैला हुआ होताहै, पत्तेमूसेके कानकी समान होते हैं, हरेकपत्तेके नीचे जड होती है, डाली सूक्ष्म और लालीलिये होती हैं और फल बहुत लगते हैं।

मयूरशिखानामानि।

बर्हिचूडातुशिखिनीशिखालुःसुशिखाशिखा ।
शिखिबलाकेकिशिखामयूराद्याभिधाशिखा ॥

अर्थ-बर्हिचूडा, शिखिनी, शिखालु, सुशिखा, शिखा, शिखिबला, केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरचूडा)

संस्कृतभाषामें	मयूरशिखा।
हिंदीभाषामें	मोरशिखा (लालमुर्गा)
वङ्गभाषामें	मयूरशिखा।
मराठीभाषामें	मयूरशिखा।
गुजरातीभाषामें	मोरशिखा।
कर्णाटकीभाषामें	होरेयसूसुव।
तैलिङ्गीभाषामें	मयूरशिखियने क्षुपविशेषमु।
लैटिन्भाषामें	सिलोसिया क्रिस्टाटा। Celosia Cristata
फारसीभाषामें	असनाने, असलान।

अस्या गुणाः।

नीलकण्ठशिखालघ्वीपित्तश्लेष्मातिसारजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-मोरशिखा-हलकी तथा पित्त, कफ और अतिसारको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

बर्हिचूडारसेस्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।
बालग्रहादिदोषघ्नीवश्यकर्म्मणिशस्यते ॥

अर्थ-मोरशिखा-स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, बालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममें प्रशंसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वाशिखाशीताकषायाम्लाम्लपाकिनी ।
लघ्वीपित्तकफंपित्तमतीसारंविनाशयेत् ॥ (के०चि०)

अर्थ-मोरशिखा-शीतल, कषेली, खट्टी, पचनेमेंभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे क्षुप होते हैं, यह प्रायः खुस्क भूमिमें उत्पन्न होती है, पत्ते-कटीले होते हैं, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते हैं, कितनेक वैद्य मोरशिखाको लज्जावंतीका भेद कहते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे गुडूच्यादिवर्गः ॥ ३ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

स्त्रियःसुमनसःपुष्पंप्रसूनंकुसुमंसुमम् ॥

अर्थ-सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव, सुमन)

पुष्परसनामानि ।

पुष्पद्रवःपुष्पसारःपुष्पस्वेदश्चपुष्पजः ।
पुष्पनिर्य्यासकश्चैवपुष्पाम्बुजषडाह्वयः ॥

अर्थ-पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पांबुज ।

संस्कृतभाषामें	पुष्प, पुष्पद्रव ।
हिन्दीभाषामें	फूल, पुष्पका अर्क, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।
बंगलाभाषामें	फुल, फुलेरस, गोलापजलप्रभृति वा मधु ।
मराठीभाषामें	फूल ।
गुजरातीभाषामें	फुल ।

कर्णाटकीभाषामें हुविनयसरु ।
तैलङ्गीभाषामें पुबु ।
इंग्रेजीभाषामें फ्लावर । Flower
लैटिन् भाषामें फ्लोस् Flos फ्लोरिस् Flores
फारसीभाषामें गुल ।
अरबीभाषामें वर्द ।

पुष्पधारणगुणाः ।

पुष्पस्यधारणंकान्तिवर्द्धनंकामकारकम् ।
ओजःश्रीवर्द्धकंचैवपापग्रहविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पको धारण करनेसे-कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है तथा पापग्रहका नाश होताहै ।

पुष्पद्रवगुणाः ।

पुष्पद्रवःसुरभिशीतकषायगौल्यो दाहभ्रमार्तिवमिमोहमुखामयघ्नः । तृष्णार्तिपित्तकफदोषहरःसरश्च सन्तर्पणश्चिरमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ-पुष्पद्रव-(पुष्पका अर्क तथा मधु)-सुगन्धित, शीतल, कषेला, गौल्य तथा दाह, भ्रम, वमन, मोह, मुखरोग, तृषा, पित्त, कफ और बहुत कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अन्यच्च ।

पुष्पद्रवःसरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नोमुखरोगविनाशनः ॥ (ग्रन्थान्तर)

अर्थ-पुष्पद्रव-सारक (दस्तावर), शीतल, कषेला तथा श्रम, वमन, तृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जातीनामानि ।

सुमनामालतीजातीचेतकीचसुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमना-मालती-जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुरभिगन्धा, सुकुमारी, सन्ध्यापुष्पी, मनोहरा, राजपुत्री, मनोज्ञा, तैलमालिनी, जनेष्टा, हृद्यगन्धा, जाति, राजपुत्रिका, जातिका, प्रियंवदा, मालिनी, वासन्ती, प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, वार्षिका) (२ स्वर्णजातिका, स्वर्णजाती,

प्रियंवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा,. जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके हैं ।

संस्कृतभाषामें	जाती, स्वर्णजाती ।
हिन्दीभाषामें	जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई ।
वंगभाषामें	जाती (चामिली) स्वर्णजाती ।
मराठीभाषामें	पांढरी जाई, पिंवळीजाई ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजि ।
तैलङ्गीभाषामें	जाईपुष्पालु ।
तुर्कीभाषामें	जाजिपु ।
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं फ्लेक्साईलिस् ।

अस्या गुणाः।

जातीतुतुवरातिक्ता लघ्वीचोष्णाकटुःस्मृता । मुखपाकंकफं वातंमुखदन्तशिरोरुजम् ॥ अक्षिरोगंविषंकुष्टंरक्तदोषंव्रणं तथा। पित्तंकृमीन्नाशयति कलिकास्यात्रणापहा ॥ विस्फोटनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीतिबुधाजगुः। पुष्पंसुगन्धिसंप्रोक्तंमनोज्ञंकफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जाती-कषेली, कडवी, हलकी, गरम, चरपरी, वमनकारक तथा मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, विष, कुष्ठ, रुधिरदोष, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है। इसकी कली-व्रण, विष्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है। इसका फूल-सुगन्धित, मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है।

स्वर्णजातीगुणाः।

स्वर्णजातीचसंप्रोक्तादन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषञ्चपूयञ्चकर्णशूलञ्चनाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्येतुजातीवज्ज्ञेयाःपूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ-पीलीजाती-दन्तशूल, रुधिरविकार, पूय (राध, पीप) और कर्णशूलको दूर करनेवाली है। इसके शेष गुण जातीकी समान जानने।

विवरण। जातीकी-वेल-प्रायः चौमासेमें अधिकतासे होतीहै, फूल-सफेद और वारीक पँखडीका होता है।

उपजातिनामानि ।



उपजातिःसुवर्षाचसुरूपाश्रीमतीतथा ।
वर्षापुष्पाचचम्बेलीवलिह्रासाचवेशिका ॥

अर्थ-उपजाति, सुवर्षा, सुरूपा, श्रीमती, वर्षापुष्पा, चम्बेली, वलिह्रासा; वेशिका ।

संस्कृतभाषामें	उपजाति ।
हिंदीभाषामें	चमेली ।
वंगभाषामें	चामिली ।
मराठीभाषामें	चमेली ।
गुजरातीभाषामें	चंवेली ।
कर्णाटकीभाषामें	मोगराचाभेदु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पॅनिश् जास्मीन । Spanish Jamine
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं ग्रान्डिफ्लोरं । Jasminumgrandi florum
फारसीभाषामें	यासमोन ।
अरबीभाषामें	यासमन् ।

अस्या गुणाः ।

चम्बेलीतुवरातिक्ताव्रणकुष्ठविषास्रजित् ।
शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिहरात्वग्दोषनाशिनी ॥

अर्थ-चमेली-कषेली, कडवी, तथा घाव, कोढ, विष, रुधिरविकार,

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण। चमेलीकी वेल-वन, उपवन, बाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डंडीकी होतीहै, फूलका रंग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है, चमेलीके फूलोंमें तिलोंको वसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमे पिरवाते हैं, तब उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते हैं; वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है ।

वार्षिकी-मल्लिकामुद्गरनामानि ।

वार्षिकीशीतभीरुश्चमदयन्तीप्रमोदनी ।
भद्रवल्लीप्रियासौम्यामल्लिकावनचन्द्रिका ॥
मुद्गरकोगन्धराजःसप्तपत्रश्चविट्प्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, भूपदी, वार्षिकी, अष्टापदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, षट्पदानन्दा, मुक्तबन्धना, दलकोषका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, शीतभीरु, तृणशून्य, तृणशून्या, गौरी, वनचन्द्रिका, नारीष्टा, गिरिजा, सिता, मल्ली) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र, विट्प्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, वर्तुल, षट्पद, प्रिया, गन्धसार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट)

संस्कृतभाषामें	१ वार्षिकी, २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।
हिन्दीभाषामें	वेला, मोतिया, घुघुरुमोतिया, वनमोगरा, मोगरा ।
वंगभाषामें	वेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलरेगाछ, मल्लिकाभेद ।
गुजरातीभाषामें	वेल्य, डोलर; जंगलीचिरवलयो; रानमोगरो ।
मराठीभाषामें	मोगरी, रानमोगरी, सोटईमोगरा ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिमल्लिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	मल्लिपुष्पालु, मल्लेचेट्टु, कुलक्रान्ताचेट्टु ।

लैटिन्भाषामें जेस्मिनंपुविसेन्स । J. जेस्मिलसॅवॅक् । Jasminum Savibac

वार्षिकीगुणाः ।

वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

अर्थ-वेला-शीतल, हलका, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा कर्ण, नेत्र और मुखरोगको दूर करनेवाला है। इसके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने।

मल्लिकागुणाः।

मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत्।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान्॥

अर्थ-मल्लिका (एकप्रकारका मोतिया)-गरम, हलका, वीर्यजनक, कडवा, चरपरा, तथा वात, पित्त, नेत्ररोग, कोढ, अरुचि, विष और व्रणको नष्ट करे है।

मुद्गरगुणाः।

मुद्गरोमधुरःशीतःसुरभिःसौख्यदायकः।
मनोजमधुपानन्दकारीपित्तप्रकोपहृत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोतिया-मधुर, शीतल, सुगन्धि, सुखदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, भौंरोंको आनन्दजनक; और पित्तके कोपको दूर करे है।

अन्यच्च।

वार्षिकीशिशिराहृद्यासुगन्धिःपित्तनाशिनी।
कफवातविषस्फोटकृमिदोषामनाशिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-वेला-शीतल, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, पित्तनाशक, तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और कामको दूर करनेवाला है।

अपिच।

मल्लिकाकटुतिक्तास्याच्चक्षुष्यामुखपाकहृत्।
कुष्ठविस्फोटकण्डूतिविषव्रणहरापरा॥

अर्थ-मल्लिका (मोतियाभेद)-चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, मुखपाकनाशक, तथा कुष्ठ, विस्फोट, कण्डू, विष और व्रणको हरनेवाला है।

मल्लिकासम्भवंपुष्पंतिक्तंजयतिमारुतम्॥ (शो० नि०)

अर्थ-मल्लिकाके फूल-कडवे और वातको जीते हैं।

विवरण। मोतिया, वेला, घुघुरमोतिया और मोगरा, यह सब एकसेही होते हैं। पत्ते-वेरीके पत्तोंसे कुछेक छोटे और विशेष रेखावाले होते हैं, फूल-अत्यंत सुगन्धित सुपेद रंगके आते हैं। मोतियाके फूल अधिक गोल होते हैं, मोगराके फूल कुछ कम गोल होते हैं।

नेपालीवनमल्लिकानामानि ।

वासन्तीप्रहसन्तीचसुवसन्तावसन्तजा ।
सुकुमाराशिखरिणीनेपालीवनमल्लिका ॥

अर्थ–वासन्ती–प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, सुकुमारा, शिखरिणी, नेपाली, वनमल्लिका, (नेपाली, मधुगन्धा, गुच्छपुष्पा, ग्रैष्मिका, राजादनदला, वनजा, सूक्ष्मपुष्पिका, सप्तला, नवमालिका, भद्रवर्म्मा, देवलता, गन्धनिलया, मालिका, ग्रीष्मभवा, अतिमोदा, ग्रैष्मी, ग्रीष्मोद्भवा, सुकुमारी, सुरभि, शुचिमल्लिका, सुगन्धा, नेवाली, ग्रीष्मी, वनवासिनी, कान्ता, अतिसुरभि, नैपाली, नेमाली)

संस्कृतभाषामें	नेपाली, वासन्ती ।
हिन्दीभाषामें	नेवारी, वासन्ती ।
वंगभाषामें	नेपाली, नेओयार, वासन्ती ।
गुजरातीभाषामें	नेवरी ।
मराठीभाषामें	नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति ।
कर्णाटकीभाषामें	विरवन्तिगे, विरवन्तिभेद् ।
लैटिन्भाषामें	इक्सोरा पार्विफ्लोरा । Ixora parviflora

अस्या गुणाः ।

नेपालीकटुकातिक्ताशीताचसुरभिर्लघुः ।
त्रिदोषनेत्ररोगघ्नीकर्णाननरुजापहा ॥
सर्वरोगहराप्रोक्तागुणज्ञैःपूर्वकोविदैः ।

अर्थ–नेवारी–चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोष, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है ।

विवरण । नेवारीके वनमें बडे बडे वृक्ष होते हैं, पत्ते–लम्बे कुछ गोल होतेहैं, फूल-आमके बोरकी समान गुच्छोमें आते हैं ।

यूथिकानामानि ।

यूथिकायूथिवासन्तीबालपुष्पीशिखण्डिनी ।
सापीतास्वर्णयूथीचहेमपुष्पीमनोहरा ॥

अर्थ–यूथिका, यूथि, वासन्ती, वालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्बष्ठा, मागधी, प्रहसन्ती, वालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा, गुणउवला,

चारुमोदा, शिखण्डी, हरिणी, शंखयूथिका, सुगन्धिका, यूथितरुणी, सुगन्धा, मोदनी बहुगन्धा, गजाह्वया) यह जुहीके नाम हैं। स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूथी, हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, युवतीष्टा, रक्तगन्धा, शिखण्डी, नागपुष्पिका, पीतयूथी, पीतिका, कनकप्रभा, हैमा, गन्धाढ्या, हेमपुष्पिका, सुवर्णाह्वा, व्यक्तगन्धा, पीतयूथी) यह पीलीजुहीके नामहैं।

संस्कृतभाषामें	यूथिका, यूथी।
हिंदीभाषामें	जुही, पीलीजुही।
वंगभाषामें	जुइ, स्वर्णजुई।
मराठीभाषामें	पांढरी लहान जुई, पिंवळी जुई।
गुजरातीभाषामें	जुईजिंगरी, पीली जुई।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुमोल्ले।
तैलिङ्गीभाषामें	जुईपुष्पालु।
लैटिन्भाषामें	जस्मिनं ओरिक्युलेटम्। Jasminum Aurieculatum

द्विविधयूथिकागुणाः।

यूथिकायुगलंस्वादुशिशिरंशर्करार्त्तिनुत्। पित्तदाहतृषाहारिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ सर्वासांयूथिकानान्तुरसवीर्य्यादिसाम्यता। सुरूपञ्चसुगन्धाढ्यंस्वर्णयूथ्यांविशेषतः॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी जुही-स्वादिष्ठ, शीतल, तथा शर्करारोग, पित्त, दाह, तृषा आर नानाप्रकारके त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी जुही रस, वीर्य्य और विपाकमें समानही है, परन्तु पीली जुही सुरूपमें और सुगन्धिमें अधिक है।

अन्यच्च।

यूथियुग्मंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु।
मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् ॥
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम्।

अर्थ-दोनोंप्रकारकी जुही-शीतल, कडवी, पचनेमें चरपरी, हलकी, मधुर, कषेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक, कफ और वातकारक तथा

व्रण, रुधिरविकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, मस्तकरोग, और विषको नाश करनेवाली है।

विवरण। जुहीकी वेल–वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें होतीहै, फूलकी पँखडी सपेद रंगकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होतीहै, उसके फूल पीलेरंगके होतेहैं; पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है।

माधवीनामानि ।

अतिमुक्तामाधवीचसुवसन्तापराश्रया ।
अतिमुक्तःकामुकश्चमण्डपोभ्रमरोत्सवः ॥

अर्थ–अतिमुक्ता, माधवी, सुवसन्ता, पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक, मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गप्रिया, भद्रलता, भूमिमण्डप, भूषणा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवीलता, वसन्तदूती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामें	माधवी ।
हिन्दीभाषामें	माधवी ।
वंगभाषामें	माधवीलता ।
गुजरातीभाषामें	माधवीलता, रक्तपित्ति ।
मराठीभाषामें	पीतवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	इन्दगोच्चे, विरवन्तिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	माधवतोगे, पुष्पुलगुरिविंद ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लस्टर्ड हिप्टेज । Clustered Hiptage.
लैटिन्भाषामें	हिप्टेजमेडेब्लोटा Hiptage Madablota

अस्या गुणाः ।

माधवीकटुकातिक्ताकषायामदगन्धिका ।
पित्तकासव्रणान्हन्तिदाहशोषविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ–माधवीलता–चरपरी, कडवी, कषेली, मदगन्धवाली, तथा पित्त, खाँसी, व्रण, दाह और शोषको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा। (भा०प्र०)

अर्थ–माधवीलता–मधुर, शीतल, हलकी, और त्रिदोषनाशकहै।

विवरण। माधवी लताकी वडी बेल होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फूल-तिलके फूलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें आते हैं।

मालतीनामानि।

मालतीसुमनाजातिर्वासन्तीयुवतीतथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वासन्ती, युवती।

संस्कृतभाषामें	मालती।
हिन्दीभाषामें	"
वंगभाषामें	"
मराठीभाषामें	"
गुजरातीभाषामें	"
लैटिन्भाषामें	एकाईटिस् कोर्योफाइलेटा। Echies Corophyllate

अस्या गुणाः।

मालतीकफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित्।
चक्षुष्यंकुसुमं तस्याःपत्रंतत्कफपित्तजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-मालतीलता कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, क्रिमि, और कुष्ठनाशक है। मालतीके फूल-नेत्रोंको हितकारी हैं। मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले हैं।

अन्यच्च।

मालतीकफपितास्त्रत्वग्दोषकृमिकुष्ठनुत्।
वामनीव्रणशोथघ्नीपूतिकर्णास्यपाकहृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है, वमनकारक, तथा व्रण, सूजन, और कानसे राधके वहनेको दूर करे है।

विवरण। मालती लताकीभी वेल होती है, फल झुमखोंमें आते हैं, पत्ते-जीवन्तीकी समान होते हैं।

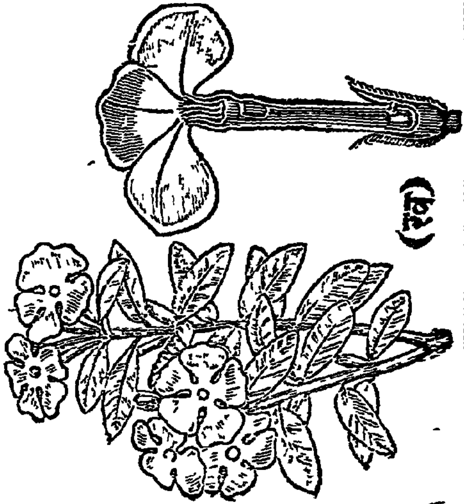
तरुणी-शतपत्री-कुब्जकनामानि।

सेवंतीरामतरुणीकर्णिकाचारुकेसरा।
शतपत्रीसौम्यगन्धासवृत्ताशतपत्रिका ॥
कुब्जकोभद्रतरुणीवृत्तपुष्पोतिकेसरः।

अर्थ-सेवंती, रामतरुणी, कर्णिका, चारुकेसरा (कुमारी, सहा, शत-

पत्री, गन्धोढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, वहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुल-संकुल, वृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)





संस्कृतभाषामें	तरुणी, शतपत्री, कुब्जक ।
हिन्दीभाषामें	सेवती, गुलाव, कूजा, सदागुलाव ।
वंगभाषामें	सेउती, गोलाप, कूजा, श्वेतगोलाप ।
मराठीभाषामें	गुलावाचें फूल, शेवंती, कांटेशेवन्ती ।
गुजरातीभाषामें	शेवती, गुलाव, मोशमीगुलाव ।
कर्णाटकीभाषामें	सेवतिगे, चेवडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुलावीपुवु, चेमण्डिचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	केवेजरोस Cabbagerose गुलकंद कनफेशन् Confection ऑफरोस of rose
लैटिन् भाषामें	रोसा सेण्टिफोलिया Rosa Centifolia रोसाडेमेसेना Rosa damascene
फारसीभाषामें	गुले, गुलसुर्ख, गुलेमुशकी ।
अरवीभाषामें	वर्दअहमरनसरीन, जरंजवीन, गुलकंद, माउलवर्द, अर्क ।

शतपत्रीगुणाः ।

शतपत्रीहिमातिक्ताकषायाकुष्ठनाशिनी ।
मुखस्फोटहरारुच्यासुरभिःपित्तदाहनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गुलाब-शीतल, कडवा, कषेला, कुष्ठनाशक, मुखके मुहासोंको दूर करनेवाला, रुचिको करनेवाला, सुगन्धि, तथा पित्त और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शतपत्रीहिमातिक्तासरारुच्यानिलप्रणुत् ।
दाहज्वरास्रपित्तघ्नीकुष्ठविस्फोटनाशिनी ॥ (आ० सं०)

अर्थ-गुलाब शीतल, कडवा, दस्तावर, रुचिकारक, वातनाशक, तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, कुष्ठ, और विस्फोटविनाशक है ।

तरुणीगुणाः ।

शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी ॥

अर्थ-सेवती-शीतल, हृदयको हितकारी, मलरोधक, शुक्रजनक, हलकी, त्रिदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक, कडवी, चरपरी और पाचक है ।

अन्यच्च ।

शतपत्रीसरावृष्याशीताहृद्याचशुक्रला ।लघ्वीचतुवरास्वाद्वीसुरभिर्ग्राहिणीमता ॥ वर्ण्याकट्वीचतिक्ताचरुच्याचाग्निप्रदीपनी । त्रिदोषंमुखपाकञ्चरक्तपित्तंकफंतथा ॥ पित्तंरक्तविकारञ्चदाहञ्चैवविनाशयेत् । पुष्पन्तुशीतलंवर्ण्यंवातपित्तविदाहनुत् ॥

अर्थ-सेवती-सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, कषेली, स्वादिष्ट, सुगंधित, मलरोधक, वर्णको सुंदर करनेवाली, चरपरी, कडवी, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा त्रिदोष, मुखपाक, रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करनेवाली है । इसका फूल-शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, तथा वात, पित्त और दाहनाशक है ।

रक्तकुब्जकगुणाः ।

रक्तस्तुकुब्जकोरक्तविकृतेर्नाशकोमतः ।

वृश्चिकाणांविषंचैवत्रिदोषश्चैवनाशयेत् ॥
अन्येगुणाःसमुद्दिष्टाःश्वेतकुब्जकवद्बुधैः । (नि० र०)

अर्थ-रक्तकुब्जक (गुलाव)-रक्तविकार, विच्छूका विष, और त्रिदोष-नाशक है। और इसके गुण सदागुलावकी समान जानने ।

कुब्जकगुणाः ।

कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः ।
त्रिदोषशमनोवृष्यःपित्तघ्नश्चेतरस्तथा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कूजा (सदागुलाव)-सुगन्धित, स्वादिष्ठ, किञ्चित् कषेला, सारक (कुछ दस्तावर) त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, और पित्तनाशक है। अपिच।

कुब्जकःसुरभिःशीतोरक्तपित्तकफापहः ।
पुष्पन्तुशीतलंवर्ण्यंदाहघ्नंवातपित्तजित् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कूजा (सदागुलाव)-सुगन्धि, शीतल, तथा रक्तपित्त और कफ नाशक है। इसका फूल-शीतल, वर्णको सुंदरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है।

विवरण। सेवती, गुलाव और कूजा यह तीनों क्षुपजातिके वृक्ष-वन उपवन और पुष्पवाटिकामें होतेहैं, तहां सेवती सपेद फूलवाली और प्राचीन है, गुलाव, लाल फूलका, पीलेफूलका, सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था, कूजेपै भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमें गुलाव और सेवतीकी अपेक्षा अल्प सुगन्धि होतीहै। एक मोशमी गुलाव, दूसरा वारहमासी होताहै, मोशमी गुलाव चैत्र वैशाखमें खिलताहै और इसमें सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, वारहमासी गुलावपै सदैव फूल आते हैं। गुलाव और सेवतीके फूलोंका गुलकन्द तथा पाक वनताहै, वह पाक पुष्टिकारी, वलदायक और दस्तावर है। मारवाडकी ओर गुलावके वन होतेहैं। गुलावका अर्क अत्यन्त गुणकारी है। औषधिके प्रयोगमें सेवती और मोशमी गुलाव लेना चाहिये।

चम्पकनामानि।

चम्पकःसुकुमारश्चसुरभिःशीतलश्चसः ।
चाम्पेयोहेमपुष्पश्चकाञ्चनःषट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन, षट्पदातिथि, (कुसुमाधिराट्, हेमाह्व, सुभग, शीतलच्छद, कुसुमाधिप, वरलब्ध, उग्रगन्ध, कटु, हेमपुष्पक, पुण्यगन्ध, नागपुष्प, स्वर्णपुष्प, भृङ्गमोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध, अतिगन्धक, पीतपुष्प, सुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य कलिकानामानि ।

एतस्य कलिकागन्धफलीतिकथिताबुधैः ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (बहुगन्धा, गन्धमोदिनी, चंपककोरक कहते हैं)

संस्कृतभाषामें	चम्पक ।
हिन्दीभाषामें	चम्पा (आकीन, दे०)
वंगभाषामें	चांपा ।
मराठीभाषामें	सोनचांफा, पिंवळाचांफा ।
गुजरातीभाषामें	रायचंपो, पीलोचंपो ।
कर्णाटकीभाषामें	संपगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंपागी पुवुलु ।
ता०	चंवकं । नु० संपेडो ।
लैटिन्भाषामें	मिचेलिया चम्पेका । Michelia Champaca

अस्या गुणाः ।

चम्पकःकटुकस्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः ।
विषक्रिमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, कषेली, मधुर, शीतल, तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

चम्पकःकटुकस्तिक्तःशिशिरोदाहनाशनः ।
कुष्टकण्डूव्रणहरोगुणाढ्योराजचम्पकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणको हरनेवाली है । इससे राजचम्पा अधिक गुणवाली है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

चम्पकंरक्तपित्तघ्नंशीतोष्णंकफनाशनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ—चम्पाके फूल—रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चाम्पेयंकुसुमंशीतंकषायंस्वादुपाकिच ।
कफपित्तहरंतद्वत्पुन्नागस्यचसम्भवम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ—चम्पाके फूल—शीतल, कषेले, पचनेमें स्वादिष्ठ, तथा कफ और पित्तनाशक हैं ।

अपिच्च ।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तःशीतलस्तिक्तकःकटुः । तुवरोमधुरोवृष्योहृद्यश्चैवसुगन्धिदः ॥ भ्रमराणांघातकरोदाहपित्तकफापहः । रक्तदोषंमूत्रकृच्छ्रंवातंकुष्ठंविषंतथा ॥ कृमिकण्डूव्रणांश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—चम्पा—कडवी, चरपरी, शीतल, कषेली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, भौरोंका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डु और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । चम्पाका वडा वृक्ष होताहै, पत्ते—रामफलकी समान होतेहैं, फूल—पीले अत्यंत सुगंधियुक्त होते हैं ।

चम्पकभेदाः ।

श्वेतस्तुचम्पकःप्रोक्तोनागादिश्चम्पकस्तथा ।
सुलतानचम्पकश्चान्योनीलश्चभूमिचम्पकः ॥

संस्कृतभाषामें	श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचम्पक, (नागपुष्प, नागकेशरक) ३ सुलतानचम्पक, ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर) ५भूमिचम्पक ।
हिन्दीभाषामें	१ सपेदचंपा, २ नागचम्पा, ३ सुलतानचम्पा, ४ नीलचंपा, भुँईचंपा ।
मराठीभाषामें	१ खुरचांफा, २ नागचांफा, ३ सुलतानचांफा, ४ निळाचांफा, ५ भुईचांफा ।
गुजरातीभाषामें	१ धोलोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुलतानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचंम्पो ।

कर्णाटकीभाषामें १ नागचम्पगे ।
तैलङ्गीभाषामें १ गणेरचेट्टु ।
लैटीन्‌भाषामें १ प्ल्युमेरिया एक्युटिफोलिया । Plumieria acutifolia मेस्युआफेलिआ Mesuaferrea केलोफैलं इनोफैलं Calophyllum Inobhllum स्वाटसेन्टेडकेलोफिलं, (इं०) Sweet scentedca lophyllum. आर्टे बोट्रिस् ओडोरेटिसिमा । Artabotys Odoratissima केम्फेरिया रोटंडा । Kaempheria rotunda

श्वेतादिचम्पकगुणाः ।

श्वेतस्तुचम्पकःप्रोक्तःसरस्तिक्तःकटुःस्मृतः । तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः॥ वातंचोदररोगञ्चआध्मानंचैवनाशयेत् । नागनामाचम्पकस्तुवर्ण्यश्चोष्णःकटुःस्मृतः॥ व्रणरोपणकारीचचक्षुष्यःकफवातहा ।बस्त्वंतरस्यसंयोगादग्निस्तम्भकरोमतः ॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्णःकटुःशोथरुजापहः । गलगण्डंव्रणञ्चैवनाशयेदितिकीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद चम्पा-सारक (कुछेकदस्तावर) कडवी, चरपरी, कषेली, गरम, तथा कुष्ठ, कण्डू, व्रण, शूल, कफवात, उदररोग और आध्मान रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, तथा कफ और वातनाशक है । और वस्तुओंके संयोगसे अग्निस्तम्भक है । भुईचम्पा-गरम, चरपरी, तथा शोथरोग, गलगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सफेद चम्पाका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-लम्वे और तोडनेसे दूध निकलता है, फूल-सफेद और थोडे भागमें पीला होताहै । नीलीचम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-रामफलीकी समान होतेहैं, फूल-नीले रंगका होताहै, उस फूलहीको नागकेसर कहते हैं, नागकेसरके गुण सुगन्धिवर्गमें लिखचुकेहैं । सुलतानचम्पाके फूलकोभी नागकेसर कहते हैं, नागकेसरकी दो जाती हैं इसको आगे लिखेंगे । भूमिचम्पाका फूल जैसे पृथ्वीमेंसे निकलेहैं ऐसा होता है, पत्ते-गुलवाँसकी समान होते हैं । फूल-सफेद आता है और सुगन्धिभी गुलवाँसकेसी आती है ।

वकुलनामानि ।

वकुलःकेशरःकण्ठस्तैलाङ्गोमधुपञ्जरः ॥

अर्थ-वकुल, केशर, कण्ठ, तैलांग, मधुपञ्जर (सिंहकेशर, केशर, मुकुल, वकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्ममोद, चिरपुष्प)

संस्कृतभाषामें	वकुल ।	
हिन्दीभाषामें	मौलसिरी, वकुल ।	
वंगभाषामें	वकुलगाछ ।	
मराठीभाषामें	वकुळ ।	
गुजरातीभाषामें	बोलसरी, वरशोली ।	
कर्णाटकीभाषामें	करक ।	
तैलिंगीभाषामें	पाघडा, पोगडचेट्टु ।	
औत्कलीभाषामें	वउडकुडि ।	
तामिलीभाषामें	मोगदम् ।	
द्रा०	धोलसरी ।	
इंग्रेजीभाषामें	सुरीनामभेडलर ।	Surinam medlar
लैटिन्भाषामें	माईमुसोप्सइलंजीआई ।	MimusopsEleng

वकुलगुणाः ।

वकुलःशीतलोहृद्योविषदोषविनाशनः ।
मधुरश्चकषायश्चमदाढ्योहर्षदायकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मौलसिरी-शीतल, हृदयको हितकारी, विषदोषनाशक, मधुर, कषेली, मदाढ्य, और हर्षदायक है ।

अन्यच्च ।

बकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः ।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मौलसिरी-कषेली, अनुष्ण, पाक और रसमें चरपरी, भारी, तथा कफ, पित्त, विष, श्वित्रकुष्ठ, कृमि और दन्तरोगोंको दूर करनेवाली है।

वकुलपुष्पगुणाः ।

बकुलजकुसुमंरुच्यंक्षीराढ्यंसुरभिशीतलंमधुरम् ।

स्निग्धंकषायंकथितंमलसंग्रहकारकंचैव ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-रुचिकारक, क्षीराढ्य, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कषेले और मलको संग्रह करनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

पुष्पंकषायमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ मौलसिरीके फूल-कषेले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिरविकारोंको दूर करनेवाले हैं।

बकुलफलगुणाः ।

मधुरश्चकषायश्चस्निग्धंसंग्राहिबाकुलम् ।
स्थिरीकरश्चदन्तानांविशदंफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, कषेले, स्निग्ध, मलको सञ्चित करनेवाले, दाँतोंको स्थिर करनेवाले और विशद हैं।

अन्यच्च ।

तत्फलंमधुरंस्निग्धंकषायंविशदंहिमम् ।
कफपित्तहरंदन्त्यंविबन्धाध्मानवातकृत् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-मधुर, स्निग्ध, कषेले, विशद, शीतल, कफपित्त नाशक, दांतोंको स्थिर करनेवाले, तथा विबन्ध,आध्मान और वातकारक हैं।

अपिच ।

बकुलस्यफलंरूक्षंविशदंस्तम्भनंगुरु । कषायंमधुरंशीतंले-खनंकफपित्तहृत्॥ दन्तदार्ढ्यकरंग्राहिविबन्धाध्मानवात-कृत् । तद्बीजंदन्तचालघ्नंनस्याच्छीर्षरुजापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-रूखे, विशद, स्तम्भन, भारी, कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, कफपित्तनाशक दांतोंको दृढकरनेवाले, मलरोधक, तथा विबन्ध, आध्मान और वातकारक हैं। मौलसिरीके बीज दांतोंके हिलनेको दूर करें अर्थात् दांतोंको स्थिरतादायक हैं, और मौलसिरीके बीजोंका नास लेनेसे शिरोरोग नाशको प्राप्त होता है।

वृद्धबकुलनामानि ।

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोबुकोवसुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, सुव्रत, वसुक, शिवांग, शिवेष्ठ, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें	शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामें	वनहुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामें	थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामें	वरशोली, मोटीवालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामें	वगेटाहु ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥

अर्थ-वडी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, कडवी, तथा कफ, पित्त, विष, योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बुकःशीतोविषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत् ।

अर्थ-बृहन्मौलसिरी (वनहुला,)-शीतल, तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

स्थूलपुष्पश्चबकुलोदीपनोमधुरःकटुः ।
पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥
अश्मरींनाशयत्येवमदगन्धिश्चविद्यते (नि० र०)

अर्थ-वडीमौलसिरी-अग्निप्रदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मदगन्धियुक्त है ।

विवरण-मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होते हैं, पत्ते-राजजामुनके समान होते हैं, फूल-सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते हैं, फूलमें अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती; मौलसिरीकी नर नारी दो जाती हैं । एकमें फल आते हैं, और दूसरेमें नहीं आतेहैं जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फूल कुछ वडा और सपेद होता है और जिसपर सिन्दूरी रंगका फूट आता

है उसका फल कुछ लाली लिये और छोटा होताहै । जिसमौलसिरीपै फल नहीं आता उसको मौलसिरा कहते हैं और जिसपर फल आताहै उसको मौलसिरी कहते हैं । मौलसिरीका अर्क तथा अत्तरभी निकलता है ।

मुचुकुन्दनामानि ।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ॥

अर्थ-मुचुकुन्द, छत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक, (दीर्घपुष्प, बहुपत्र, सुदल, मुण्डीवृक्षानुकारक, हरिवल्लभ, सुपुष्प, अर्घ्यार्हलक्षणक, रक्तप्रसव)

संस्कृतभाषामें	मुचुकुन्द ।
हिन्दीभाषामें	मुचकुन्द ।
वंगभाषामें	मुचकुन्द ।
मराठीभाषामें	मुचकुन्द ।
गुजरातीभाषामें	मुचकुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	मुचकुन्द ।
तैलङ्गीभाषामें	लोलगु ।
तामिलीभाषामें	टड्डो ।
औत्कलीभाषामें	वइलो ।
लैटिन्भाषामें	टेरोस्परमम् सुबेरीफोलियम् । Pterospermum Suberifolium

अस्य गुणाः ।

मुचुकुन्दः कटुतिक्तः कफकासहरश्च कण्ठदोषघ्नः ।
त्वग्दोषशोफशमनो व्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, कडवा तथा कफ, खाँसी, कण्ठरोग, त्वचारोग, सूजन, व्रण और पामारोग-विनाशकहै ।

अन्यच्च ।

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः । (म० पा० नि०)

अर्थ-मुचकुन्द-शिरकी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है ।

अपिच ।

मुचुकुन्दः कटुश्चोष्णस्तिक्तः स्वर्यः कफापहः ।
कासत्वग्दोषशोफघ्नः शीर्षपीडानिवारकः ॥
त्रिदोषरक्तपित्तघ्नः पित्तरक्तविकारनुत् । (नि० र०)

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, गरम, कडवा, स्वरको सुंदर करनेवाला, कफनाशक तथा खाँसी, त्वचाके विकार, सूजन, शिरकी पीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त, पित्त और रुधिरविकारको दूर करे है।

विवरण। मुचकुन्दका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-बडे और अखरोटकी समान होते हैं, फूल-बडा आताहै और उसमें अत्यंत सुगंध होती है, फल-लम्बे और गोल काष्ठकी समान होते हैं। औषधिमें केवल फूल लियेजाते हैं।

कुन्दनामानि।

कुन्दन्तुकथितंमाघ्यंसदापुष्पञ्चतत्स्मृतम् ॥

अर्थ-कुन्द, माघ्य, सदापुष्प, (शुक्लपुष्प, दलकोष, वरट, वोरट, मकरन्द, महामोद, मनोहर, मुक्तापुष्प, तारपुष्प, अट्टपुष्पक, दमन, वनहास, मनोज्ञ, भृङ्गवन्धु, मनोरम, अट्टहास, भृङ्गसुहृत्,)

संस्कृतभाषामें	कुन्द।
हिन्दीभाषामें	कुंदेकावृक्ष, कुंदेका फूल।
वंगभाषामें	कुन्द।
मराठीभाषामें	कुन्द।
कर्णाटकीभाषामें	सुरागि।
तैलिंगीभाषामें	मोल्ल।

अस्य गुणाः।

कुन्दंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हलका; तथा कफ, शिरोरोग, विष और पित्तका नाश करनेवाला है।

अन्यच्च।

कुन्दोतिमधुरःशीतःकषायःकेशभावनः।
कफपित्तहरश्चैवसरोदीपनपाचनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त-मधुर, शीतल, कषेला, केशभावन, सारक (कुछेक दस्तावर), अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है।

अपिच।

कुन्दःशीतोतिमधुरस्तुवरःसारकोलघुः। पाचकोदीपको हृद्यःकटुकस्तिक्तकःस्मृतः॥ पित्तरोगशिरोरोगविषशो-

थामनाशनः । रक्तदोषञ्चवातञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।
(नि० र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, अत्यन्तमधुर, कषेला, सारक, हलका, पाचक, दीपन, हृदयको हितकारी, चरपरा, कडवा तथा पित्तरोग, मस्तकरोग, विष, सूजन, आम, रुधिरविकार और वातको हरनेवाला है ।

विवरण । कुन्दके वृक्ष-छोटे छोटे होते हैं, फूल-अतीव सुन्दर सफेद रंगके आते हैं ।

तिलकनामानि ।

तिलकःक्षुरकःश्रीमान्पुरुषश्छिन्नपुष्पकः ।

अर्थ-तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, पुरुष, छिन्नपुष्पक (मुखमण्डनक, विशेषक, पुण्ड्र, पुण्ड्रक, स्थिरपुष्पी, छिन्नरुह, दग्धरुह, मृतजीव, तरुणीकटाक्षकाम, वासन्तसुन्दर, दुग्धरुह, भालविभूषणसंज्ञ, पुन्नाग, रेचक, शतपत्रक)

संस्कृतभाषामें	तिलकपुष्पवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तिलकपुष्प ।
गुजरातीभाषामें	तिलकवृक्ष ।
मराठीभाषामें	तिलपुष्पक ।
कर्णाटकीभाषामें	तिलकपुष्पविशेष ।

अस्य गुणाः ।

तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ।
कफकुष्ठकृमीन्वस्तिमुखदन्तगदान्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तिलकपुष्पवृक्ष-पचनेमें चरपरा, रसमें भी चरपरा, गरम, रसायन तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग, मुखरोग और दन्तादिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तिलकोमधुरःस्निग्धोवातपित्तकफापहः ।
बलपुष्टिकरोहृद्योलघुर्मेदोविवर्द्धनः ॥

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, वलवर्द्धक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, हलका, मेदजनक तथा वात, पित्त और कफनाशक है ।

अपिच ।

तिलकोमधुरःस्निग्धःपौष्टिकोबलमेदकृत् । हृद्योलघूरसे-

त्युष्णःपाकेचोष्णकरःस्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षोदन्तरुक्कृमिकुष्टहा॥वातपित्तकफघ्नश्चविषकण्डूव्रणापहः॥रक्तरुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजांनाशकरःस्मृतः । तिलकःक्षारयोगेन गुल्मशूलोदरापहः।त्वगस्यतुवराचोष्णापुंस्त्वघ्नी दन्तदोषहा॥ रक्तदोषकृमिव्रणशोफानांचविनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ–तिलक–मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयको हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा, तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, विष, कण्डू, व्रण, रुधिरविकार, दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है । यह किसी क्षारके योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करेहै । इसकी छाल–कषेली, गरम, तथा पुरुषता, दन्तरोग, रुधिरविकार, कृमि, व्रण और सूजनको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तिलक वृक्षका फूल–तिलके फूलकी समान होताहै और इस फूलमें सुगन्धि आतीहै, फल–पीपलकी समान तथा मधुर होता है ।

कदम्बनामानि ।

कदम्बःसुरभिर्नीपःप्रावृषेण्योहरिप्रियः ।

अर्थ–कदम्ब, सुरभि, नीप, प्रावृषेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय, प्रियक, हारिद्र, अशोकारी, नीप, कादम्ब, षट्पदेष्ट, जाल, वृत्तपुष्प, कादम्बर्य्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाढ्य, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि ।

नीपोमहाकदम्बःस्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ–नीप, महाकदम्ब, धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब, धाराकदम्बक, भ्रमरप्रिय, षट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ, प्रियक, केशराढ्य, बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि ।

भूमिकदम्बोभूनीपोभूमिजोभृङ्गवल्लभः ।
लघुपुष्पोवृत्तपुष्पोविषघ्नोव्रणहारकः ॥

अर्थ–भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विषघ्न, व्रणहारक ।

संस्कृतभाषामें	कदम्ब, धाराकदम्ब, भूमिकदम्ब ।
हिन्दीभाषामें	कदमका पेड, धाराकदम्ब ।
वंगभाषामें	कदमगाछ, केलिकदम ।
मराठीभाषामें	राजकदम्ब, धूलिकदम्ब, कळंब, भूमिकदम्ब ।
गुजरातीभाषामें	कदम्ब, कलम ।
कर्णाटकीभाषामें	कडउ, धूलिकडउ, धारेयकडउ, भूमिकडउ ।
तैलिङ्गीभाषामें	कडिमिचेट्टु, कदम्बचेट्टु, मोगुलुकडिमि ।
लैटिन्भाषामें	एंथोसिफालस्केडंबा Anthocephalus cadumba
	नोक्लियापार्विफ्लोरा । Nauclea parviflora
अरबीभाषामें	कदम्ब ।

कदम्बगुणाः ।

कदम्बःकटुकस्तिक्तोमधुरस्तुवरःपटुः । शुक्रवृद्धिकरःशीतोगुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ रूक्षःस्तन्यप्रदोग्राहीवर्णकृद्योनिदोषहा ॥ रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रञ्चवातपित्तंकफंव्रणम् ॥ दाहंविषंनाशयतिह्यंकुराश्चास्यतूवराः । शीतवीर्य्यादीपकाश्चलघवोऽरोचकापहाः ॥ रक्तपित्तातिसारघ्नाःफलंरुच्यंगुरुस्मृतम् । उष्णवीर्य्यंकफकरंतत्पक्वंकफपित्तजित् ॥ वातनाशकरंप्रोक्तमृपिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।

अर्थ-कदम-चरपरी, कडवी, मधुर, कषेली, खारी, शुक्रवर्धक, शीतल, भारी, विष्टम्भकारक, रूखी, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, मलरोधक, वर्णकारक, तथा योनिरोग, रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, वात, पित्त, कफ, घाव, दाह और विषको दूर करनेवाली है । इसके अंकुर-कषेले शीतवीर्य्य, अग्निदीपक, हलके तथा अरुचि, रक्तपित्त और अतिसारको दूर करनेवाले हैं । इसके फल-रुचिकारक, भारी, उष्णवीर्य्य और कफकारक हैं । इसके पक्के फल-कफ, पित्तकारक और वातविनाशक हैं ।

राजकदम्बगुणाः ।

नीपस्तुचाम्लस्तुवरोमधुरःशीतलःस्मृतः । विषंरक्तरुजं पित्तंकफञ्चैवविनाशयेत् ॥ फलन्तुमधुरंचास्यशीतलंगुरु पित्तहृत् । रक्तदोषहरंप्रोक्तमृपिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-राजकदंब-अम्ल, कषेली, मधुर, शीतल तथा विष, रुधिरविकार, पित्त और कफको दूर करनेवालीहै । इसका फल-मधुर, शीतल, भारी, तथा पित्त और रुधिरके दोषोंको दूरकरेहै ।

धाराकदम्बगुणाः ।

धाराकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकषायकः ।
कटुकोवीर्य्यकृच्छोथविषपित्तकफव्रणान् ॥
वातंनाशयतीत्येवमुक्तश्चऋषिभिःकिल ।

अर्थ-धाराकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कषेली, चरपरी, वीर्य्यकारक तथा सूजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातका विनाश करनेवाली है ।

धूलिकदम्बगुणाः ।

धूलीकदम्बकस्तिक्तस्तुवरःकटुकोहिमः ।
वीर्य्यवृद्धिकरोवर्ण्योविषशोथविनाशकः ॥
वातंपित्तंकफंरक्तदोषञ्चैवविनाशयेत् ।

अर्थ-धूलीकदम्ब-कडवी, कषेली, चरपरी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वर्णको सुंदर करनेवाली तथा विष, सूजन, वात, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको हरनेवाली है ।

कदम्बिकागुणाः ।

कदम्बिकातुमधुराशीतलातुवरागुरुः । मलस्तम्भकरीक्षाराऽरूक्षास्तन्यकफप्रदा॥ वातलामुनिभिःप्रोक्ताफलंत्वस्यास्तुशीतलम् । तुवरंमधुरंपित्तरक्तदोषहरंमतम् ॥

अर्थ-कदम्बिका (कदम्बी)-मधुर, शीतल, कषेली, भारी, मलस्तम्भकारी, खारी, रूखी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफकारक और वातवर्द्धक है । इसके फल-शीतल, कषेले, मधुर तथा पित्त और रक्तविकारनाशक हैं ।

भूमिकदम्बगुणाः ।

भूमेःकदम्बकस्तिक्तोवर्ण्यःशीतःकटुःस्मृतः ।

वीर्य्यवृद्धिकरश्चैवतुवरोविषशोथहा ॥
पित्तंकृमींश्चसर्वांश्चमेहान्नाशयतीरितः । (नि० र०)

अर्थ-भूमिकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, चरपरी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली तथा विष; सूजन, पित्त, कृमि और सर्वप्रकारके प्रमेहरोगोंको दूरकरनेवाली है ।

द्विविधकदम्बगुणाः ।

कदम्बयुगलंवर्ण्यंविषशोथहरंहिमम् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, बडीकदम्ब)-वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल, तथा विष और सूजनको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । कदम्बके वृक्ष-नगरके निकट होते हैं, पत्ते-लम्बे और गोल तथा महुवेकी समान होते हैं, फल-गोल नीम्बूकी समान, फूल फलके ऊपर तथा सुगन्धयुक्त और छोटे होते हैं, राजकदम्ब तथा नीपको स्त्रीकदम्ब कहते हैं । कदमकी अनेक जाति हैं ।

कर्णिकारनामानि ।

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ-कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं ।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ।
रञ्जनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कर्णिकार-चरपरा, कडवा, कषेला, शोधक, हलका, रञ्जन, सुखदायक तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, व्रण और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

विवरण । कर्णिकारके वृक्ष-प्रायः पर्वत और वनोंमें अधिक होते हैं । पत्ते-ढाकके पत्तोंकी समान होते हैं, फूल-लाल और अत्यन्त मनोहर लगते हैं ।

किंकिरातनामानि ।

किङ्किरातःकिङ्किराठःपीठंकःपीतभद्रकः ।
हेमगौरोविप्रलम्बीषट्पदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ-किंकिरात, किंकिराठ, पीतक, पीतभद्र, हेमगौर, विप्रलम्बी, षट्पदानन्दवर्द्धन (विप्रलोभी, पीताम्लान)



संस्कृतभाषामें	किंकिरात ।
हिन्दीभाषामें	किंकिरात ।
मराठीभाषामें	देववाभूळ ।
गुजरातीभाषामें	रामवावल ।
फारसीभाषामें	माथिलान ।

अस्य गुणाः ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः ।
विषक्रिमिहरःशोथश्लेष्मश्रवणकुष्ठजित् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-किंकिरात-शीतल, कडवा, कषेला, शोधक, हलका तथा विष, कृमि, सूजन, कफ, वधिरता और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातोहिमस्तिक्तः कषायश्चहरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिक्रि[illegible]

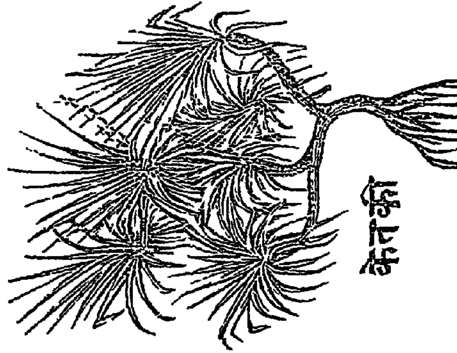
अर्थ-किंकिरात-शीतल, कडवा, कषेला तथा [illegible] समान [illegible] पियास, रुधिरविकार, दाह, सूजन, वमन और कृमिरोगको दूर [illegible]

अपिच ।

किङ्किरातंतुवरंतिक्तंशीतोष्णंदंमतम्।कफपित्ततृषारक्तदोषदाहज्वरान्वमिम्॥ मोहंविषंनाशयतीत्येवमुक्तंभिषग्वरैः।

अर्थ-किंकिरात-कषेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विषका नाश करे है ।

केतकीनामानि ।



केतकःसूचिकापुष्पोजम्बुकःक्रकचच्छदः ।

अर्थ-केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद (सूचिपुष्प, हलीन, जम्बुल, चामरपुष्पा, केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, विफला, धूलिपुष्पिका, मेध्या, कण्टदला, शिवद्विष्टा, नृपप्रिया, क्रकचा, दीर्घपत्रा, स्थिरगन्धा, गन्धपुष्पा, इंदुकलिका, दलपुष्पा, पांशुला ।

सुवर्णकेतकीनामानि ।



सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगन्धिनी ॥

अर्थ-सुवर्णकेतकी लघुपुष्पा, सुगंधिनी (स्वर्णकेतकी, हेमकेतकी, कनकप्रसवा, पुष्पं., हमी, छिन्नरुहा, विष्ठारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला)

संस्कृतभाषामें	केतकी, स्वर्णकेतकी ।
हिन्दीभाषामें	केवडा, केतकी, पीलीकेतकी ।
वंगभाषामें	केयागाछ, सोणाकेया ।
मराठीभाषामें	श्वेतकेवडा, केतकी ।
गुजरातीभाषामें	केवडो ।
कर्णाटकीभाषामें	केदगे ।

तैलिङ्गीभाषामें मुगलीपुवु, मोगिलिचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें पेन्डनसूओडोरेटिसिमस् । Pandanus Odoratissimus
फारसीभाषामें करज ।
अरबीभाषामें कादी ।

केतकी-सुवर्णकेतकीगुणाः ।

केतकीकटुकास्वाद्वीलघ्वीतिक्ताकफापहा ।
उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥

अर्थ-केवडा-चरपरा, स्वादिष्ठ, हलका, कडवा, और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी-गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

श्वेतातुकेतकीकट्वीस्वाद्वीतिक्तालघुःस्मृता । विषंकफंनाशयति पुष्पमस्यालघुस्मृतम् ॥ कटुतिक्तंकान्तिकरमुष्णवातकफापहम् । केशदुर्गन्धतापघ्नंकेसरःसिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णंफलं स्वादुवातमेहकफापहम् । सुवर्णकेतकीतिक्ता नेत्र्याचोष्णालघुःस्मृता ॥ कटुकामधुराचैवविषरुक्कफनाशिनी । अस्याःपुष्पंसुखकरंकामोद्दीपनकारकम् ॥ किञ्चिदुष्णञ्चकटुकंतिक्तंनेत्र्यंसुगंधिकम् । स्तनश्चास्यातिशिशिरोदेहदार्ढ्यकरःपटुः ॥ बल्योरसायनःपित्तकफस्यचविनाशकः । फलकेसरयोश्चैवगुणाःपूर्वोक्तवन्मताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-श्वेतकेतकी (केवडा)-चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, हलका तथा विष और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और बालोंकी दुर्गन्धको दूर करे है । इसकी केसर-सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है । इसका फल-स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी (केतकी)-कडवी, नेत्रोंको हितकारी, हलकी, चरपरी, मधुर, विषविकार और कफनाशक है । इसका फूल-सुखकारी, कामको दीपन करनेवाला, किञ्चित् गरम, चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी और सुगन्धित है । इसके स्तन-अत्यन्त-शीतल, देहको दृढकरनेवाले निमकीन, बलकारक, रसायन तथा

पित्त और कफनाशक हैं । और इसके फलके तथा केसरके गुण सपेद केतकीके फलकी और केसरकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

केतकीवातलावृष्यातन्द्रानिद्राकरीमता ॥ (आ० सं०)

अर्थ-केतकी-वातकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है ।

विवरण । केवडेके वृक्ष बाग और जलके निकट अधिकतासे होते हैं, वृक्षके भीतर बारीक कांटे और पत्ते लम्बे होते हैं, पत्तेके कोनेपर कांटे होते हैं । दूसरी सुवर्णकेतकी होती है, उसका क्षुंप पीला और विशेष सुगंधवाला होता है ।

अशोकनामानि ।

अशोकःशोकनाशश्चविचित्रःकर्णपूरकः ।
कङ्केलिर्हेमपुष्पश्चपिण्डपुष्पस्तथैवच ॥

अर्थ-अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, कङ्केली, हेमपुष्प, पिण्डपुष्प, (अङ्गनाप्रिय, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जुल, मधुपुष्प, अपशोक, कङ्केलि, केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, कर्णपूर, सुभग, दोहली, ताम्रपल्लव, रोगितरु, वामांकयातन, पिण्डीपुष्प, नट, रामा, पल्लद्रु, कान्ताङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, चक्रगुच्छ, गन्धपुष्प, स्त्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्त्ता, स्मराधिवास, दोषहारी प्रपल्लव, वामांघ्रिघातक)

संस्कृतभाषामें अशोक ।
हिंदीभाषामें अशोक (अशोगि)
वंगभाषामें अस्पाल ।
मराठीभाषामें.....अशोक ।
गुजरातीभाषोंकी आशुपालो देशी पीलाफुलनो, आशुपालो रातांफुलनो ।
लैटिन्भाषामें ग्वेटेरिया लोंजिफोलिया । Guatterera Longifolia
जोनेशिया अशोका । Jonasia asoka

अशोकगुणाः ।

अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यः कषायकः ।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-अशोक-शीतल, कडवा, मलरोधक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला,

कषेला, तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, विष और रक्तदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अशोकोमधुरःशीतश्चास्थिसन्धानकृन्मतः।प्रियःसुगन्धिः कृमिकृत्तुवरोष्णश्चतिक्तकः॥ शरीरकान्तिकृच्चैवस्त्रीणामु-च्छोकनाशनः । ग्राहीपित्तहरोदाहश्रमगुल्मोदरापहः ॥ शूलाध्मानेविषंचाशोंव्रणंसर्वातृषंतथा। शोथापचीतृषश्चैव नाशयेद्रक्तजांरुजम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-अशोक-मधुर, शीतल, हड्डीको जोडनेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिहारक, कषेला, गरम, कडवा, देहकी कान्ति वढानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान, विष, ववासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सूजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है ।

अपिच्च ।

अशोकस्यत्वचारक्तप्रदरस्यविनाशिनी ॥ (शो०नि०)

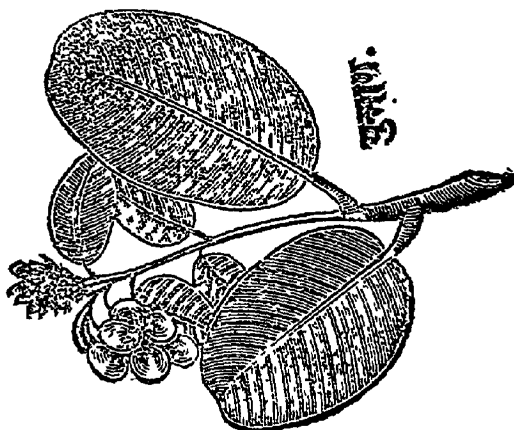
अर्थ-अशोककी छाल-रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । अशोक वृक्षकी दोजाती हैं, एकके पत्ते रामफलकी समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमें खिलतेहैं और दूसरे अशोकके पत्ते आमकी समान होते हैं, फूल-सफेद कुछेक साधारण पीले रंगका होताहै; इसपै फल चौमासेके आरम्भमें आतेहैं । इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल होजाता है, इसके फल खानेके योग्य नहीं हैं और इन फलोंमेंसे जो वीज निकलतेहैं वह बीजभी किसी औषधिके प्रयोगमें नहीं लिये जाते, फूल जिसका नारंगकी समान है ऐसे अशोक-को "जोनेशिआ" अशोक कहते हैं और दूसरेको "ग्वेटेरीआ लोंजिफो-लिआ" कहते हैं ।

पुन्नागनामानि ।

पुरुषाख्योरक्तवृक्षःपुन्नागोदेववल्लभः ॥

अर्थ-पुरुषाख्य, रक्तवृक्ष, पुन्नाग, देववल्लभ (पूरुष, तुङ्ग, केशर, केशव, केसरी, काम्बोज, नागपुष्प, कुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तरेणु, अरुमा ।



संस्कृतभाषामें	पुन्नाग ।
हिन्दीभाषामें	पुन्नाग, पुलाक (के) सुलतानचम्पक ।
वंगभाषामें	पुन्नांगाछ, राजचम्पक ।
गुजरातीभाषामें	पुन्नाग, सुरपुन्नाग ।
मराठीभाषामें	गोडी उंडीण, कडवी उंडीण ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरहोन्तेथभेद ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुरपोन्नचेट्टु ।
औत्क०	पुंणां ।
तामिलीभाषामें	पिन्नप ।

लैटिन्भाषामें ओक्रोकार्यसलोजिफोलियम् । Ochrocarpus Songifolium

अस्य गुणाः ।

पुन्नागोमधुरःशीतःसुगन्धिःपित्तनाशकृत् । देवप्रसादजनकोरक्तरुग्रक्तपित्तजित् ॥ कफंपित्तंभूतबाधांनाशयेदिति कीर्तितम् । पुष्पंवृष्यंवातशूलकफदोषाञ्जयत्यलम् ॥ नमेरुस्तिक्तपुन्नागादधिकश्चगुणैःस्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-पुन्नाग-मधुर, शीतल, सुगान्धि, पित्तनाशक, देवताओंको प्रसन्नकरनेवाला तथा रक्तदोष, रक्तपित्त, कफ, पित्त और भूतबाधाको दूर करैहै । इसके फूल-वीर्यवर्द्धक, वातशूल और कफनाशक हैं. सुरपुन्नाग-कडवा और पुन्नागकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पुन्नागका वृक्ष बडा-होताहै; पुन्नागके फूलकी कलीको सुखालेते हैं । उसको नागकेशर कहते हैं. नागकेशरके गुण प्रथम सुगंधिवर्गमें

लिख आये हैं । इसके फल बृहद्दन्तीकी समान होते हैं उन फलोंका तेल निकलता है ।

सैरेयकनामानि ।

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयंकटसारिका ।
सहाचरःसहचरःसचभिंद्यपिकथ्यते ॥

अर्थ-सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी (मृदुकण्ट, महासह, बाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्टकुरण्ट, झिण्टिका, झिण्टी)

कुरण्टकनामानि ।

किङ्किरातोकुरण्टश्चकनकःपीतपुष्पकः ।
पीताम्लानःसहचरःपीतसैरेयकश्चसः ॥

अर्थ-किङ्किरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीतसैरेयक (कुरण्टक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरुण्टक, पुर)

नीलझिण्टी (आर्त्तगल) नामानि ।

नीलपुष्पीनीलझिण्टीदासीचार्तगलश्चसः ।

अर्थ-नीलपुष्पी, नीलझिण्टी, दासी, आर्त्तगल (बाणा, अर्त्तगल, बाण, सहचर, नीलकुरुण्टक, शैरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुसुमा, बाला, कण्टार्तगला)

कुरबकनामानि ।

रक्ताम्लानोरक्तपुष्पोरामालिङ्गनकामुकः ।
रागप्रसवकश्चैवसुभगःशोणझिण्टिकः ॥

अर्थ-रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणझिण्टिक, (कुरबक, रक्तझिण्टी, रक्ताझिण्टिका, शोणझिण्टी) ।

रक्तपुष्पःकुरबकःपीतपुष्पःकुरण्टकः ।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलःसैरेयःश्वेतपुष्पकः ॥

अर्थ-लालफूलकी कटसैयाको "कुरबक" पीलेफूलवालीको "कुरण्टक" नीलेफूलवालीको "आर्त्तगल" और सफेदफूलकी कटसैयाको "सैरेय(क)," कहतेहैं ।



संस्कृतभाषामें	सैरेयक, कुरण्टक, आर्त्तगल, कुरवक ।
हिन्दीभाषामें	कटसरैया, पियावासा ।
वंगभाषामें	झाँटि, कुलझाँटि, पीतझांटि, नीलझांटि, लालझांटि ।
मराठीभाषामें	पिंवळाकोरंटा, तांवडाकोरंटा, नीळाकोरंटा पांढराकोरंटा ।
गुजरातीभाषामें	कांटा अशेलीयो, पीलांफुल, रातांफुलनो, कालां फुलनो, धोलाफुलनो ।
कर्णाटकीभाषामें	होवणदगोरटे, वणदगिड, करियगोरटे, सरसुल्ल गोरटे गल्लु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोरेंडु ।
लैटिन्भाषामें	वार्लेरिया प्रायोनिटस् । Barleria Prionitis

सैरेयकगुणाः ।

सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ—सफेद फूलकी कटसरैया—कडवी, गरम, मधुर, दांतोंको हितकारी, सुस्निग्ध, केशरञ्जक तथा कोढ, वात, रुधिरविकार, कफ, कण्डू और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

श्वेतः कुरण्टकस्तिक्तः केश्यः स्निग्धोमधुः स्मृतः । कटुश्चोष्णोदन्तहितोवलीपलितनाशनः ॥ कुष्ठंवातंरक्तदोषंकफं कण्डूंविषं तथा । नाशयेद्दारुणंचैवऋषिभिः परिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, केशोंको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दांतोंको हितजनक तथा वलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, कफ, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवालीहै ।

कुरण्टकगुणाः ।

पीतःकुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्चतुवरःस्मृतः ।
अग्निदीप्तिकरोवातकफकण्डूहरःस्मृतः ।
शोथंरक्तविकारञ्चत्वग्दोषञ्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ-पीलेफूलकी कटसरैया,-गरम, कडवी, कषेली, अग्निदीपक तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

आर्तगलगुणाः ।

नीलःकुरण्टकस्तिक्तःकटुर्वातकफापहः ।
शोथकण्डूशूलकुष्ठव्रणत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ-नीलेफूलकी कटसरैया-कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू, शूल, कोढ, व्रण और त्वचाके विकारोंको दूर करे है ।

नीलझिण्टीगुणाः ।

नीलझिण्टीतुकटुकातिक्तात्वग्दोषनाशिनी ।
दन्तरोगंकफंशूलंवातंशोथञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-कालेफूलकी कटसरैया-चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनकों दूर करनेवाली है ।

कुरबकगुणाः ।

रक्तःकुरण्टकस्तिक्तोवर्ण्यश्चोष्णःकटुःस्मृतः ।
शोथंज्वरंवातरोगंकफंरक्तरुजंतथा ॥
पित्तमाध्मानकंशूलंश्वासंकासञ्चनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-लालफूलकी कटसरैया-कडवी वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास, और खांसीको हरनेवाली है ।

विवरण । पियावांसा अर्थात् कटसरैयाके क्षुप वन और बागोंमें बहुत होते हैं, इसकी चार प्रकारकी जाति हैं इसके फलोंका रंग भी चार प्रकारका

होता है-सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियावांसेमें कांटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे २ एकसेही होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

वन्धूकनामानि ।



दुपहरियाकाफूल.

बन्धूकोबन्धुजीवश्चरक्तोमाध्याह्निकोपिच ।

अर्थ-वन्धूक, वन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, वन्धुजीवक, वन्धुक, वन्धु, वन्धुल, वन्धूजीव, वन्धूलि, वन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्य-भक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यांदिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, शरत्पुष्प, ज्वरघ्न, सुपुष्प)

संस्कृतभाषामें	वन्धूक ।
हिन्दीभाषामें	दुपहरिया, गेजुनिया ।
वंगभाषामें	वान्धुलिफुलेरगाछ ।
मराठीभाषामें	दुपारीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	बपोरियो ।
कर्णाटकीभाषामें	बंदुरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, वेगसिनचेट्टु ।
वमू०	दुपारि ।
पञ्जा०	गुलदुफारिया ।
लैटिन् भाषामें	पेरोटपिटिस् फिनिश्या । Pentapets Phorincea

अस्य गुणाः ।

स्याद्बन्धुजीवकोग्राहीकिञ्चिदुष्णोगुरुर्मतः ।
कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्तेचैवविनाशयेत् ॥
पिशाचग्रहबाधांचनाशयेदितिकीर्त्तितः ।

अर्थ-दुपहरिया-मलरोधक, किञ्चित् गरम, भारी, कफकारक, ज्वरनाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है ।

विवरण । दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमें बोदेते हैं, फूल सफेद, सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, इसीसे इसको दोपहरिया कहते हैं ।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्चसिद्धाख्यःसिद्धनाथःप्रकीर्त्तितः ।

अर्थ-सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ।

संस्कृतभाषामें	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुर्रा ।
वंगलाभाषामें	कृष्णचूड ।
गुजरातीभाषामें	संधेशरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कोमरी ।
लैटिन्भाषामें	सिसालपिनियालकेरिमा । Caesalpina pulcherrima

अस्य गुणाः ।

सिद्धेश्वरोहिमःस्निग्धःग्रन्थिनाडीव्रणापहः ।
वातव्याधिहरश्चैवत्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ-सिद्धेश्वर-शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और त्रिदोषनाशक है ।

शंखोदरीनामानि ।

शंखोदरीबर्हपुष्पाचिञ्चापत्राल्पकण्टकी ।
श्लाखापत्रीसुपुष्पाचवनवासीसुशिम्बिका ॥

अर्थ-शंखोदरी, बर्हपुष्पा, चिञ्चापत्रा, अल्पकण्टकी, श्लाखापत्री, सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका ।

संस्कृतभाषामें	शंखोदरी ।
दे०	गुलतोरा, गुलपरी ।
गुजरातीभाषामें	राशंगडी, नहानी, गुलमोर ।
मराठीभाषामें	शंखासुर, धाकटीगुल, कुंकुमकेशर ।
तैलङ्गीभाषामें	सामिडीतांघेड्डु ।
लैटिन्भाषामें	पोईनसियाना रिजाइना Poinoeana rigina पोईनसियाना पलकेरिमा P Pulcherrima

शंखोदरीगुणाः ।

शंखोदरीमताचोष्णाकफवातविनाशिनी ।
शूलामवातशमनीनेत्ररोगनिवारिणी ॥

अर्थ-शंखोदरी-गरम तथा कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग-निवारक है ।

झण्डूकनामानि ।

झण्डुःस्यात्स्थूलपुष्पातुझण्डूकोझण्डुकस्तथा ।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

संस्कृतभाषामें	झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।
हिन्दीभाषामें	मखमली, गुलतोरा, कलगा, लालमुरगा ।
मराठीभाषामें	झेंडू, मखमाल ।
गुजरातीभाषामें	मुखमल ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्रेंचमेरीगोल्ड French mary gold
लैटिन्भाषामें	टेजिटिस् इरेक्टा Tagetes erecta
	मिलेस्याक्रेस्रोटा Celasiacrestota
फारसीभाषामें	काजेखरूस ।
अरबीभाषामें	हमाहम ।

अस्य गुणाः ।

झण्डुःकटुःकषायःस्याज्ज्वरभूतग्रहापहा । (रा० नि०)

अर्थ-लालमुरगा-चरपरा, कषेला तथा ज्वर, भूत और ग्रहकी पीडाको दूर करनेवाला है ।

सिन्दूरपुष्पीनामानि ।

सिन्दूरपुष्पीसिन्दूरीतृणपुष्पीसुकोमला ।

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला (रक्तबीजा, रक्तपुष्पी वीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी) ।

संस्कृतभाषामें	सिन्दूरपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूरिया, जाफर, लटकण ।
मराठीभाषामें	शेंद्री ।
गुजरातीभाषामें	सिन्दूरी ।
कर्णाटकीभाषामें	सिन्दूरी ।

इंग्रेजीभाषामें आरनाटो Crnott
लैटिन्‌भाषामें विक्साओरमाना Bixa Oimana

अस्या गुणाः ।

सिन्दूरीविषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरीहिमा (भा०प्र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-विष, रक्तपित्त, तृषा और कान्तिनाशक तथा शीतलहै ।

अन्यच्च ।

सिन्दूरीकटुकातिक्ताकषायाश्लेष्मवातजित् ।
शिरोर्तिशमनीभूतनाशीचंडीप्रियाभवेत् ॥

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-चरपरी, कडवी, कषेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशकहै तथा चण्डीको प्यारीहै ।

अपिच ।

सिन्दूरीपुष्पिकातिक्ताकटुःशीतलघुःस्मृता । तुवरारक्तदोषघ्नीवातरक्तंतृषञ्जयेत् ॥ विषदोषञ्चपित्तञ्चवातपित्तंवमिंतथा । कफंमस्तकशूलञ्चभूतदोषञ्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-कडवी, चरपरी, शीतल, हलकी, कषेली तथा रक्तविकार, वातरक्त, तृषा, विषदोष, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल और भूतवाधाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सिन्दूरियाके क्षुप उपवनोंमें होते हैं, पत्ते बेलके समान होतेहैं, फूल लाल २ सिन्दूरकी समान होते हैं उसके बीजभी लाल रंगके होते हैं, इनको जलमें डालनेसे जल लाल होजाताहै ।

प्राजक्तनामानि ।



प्राजक्तःपारिजातश्चहारशृङ्गारपुष्पकः ।
नालकुङ्कुमकोरागपुष्पीचखरपत्रकः ॥

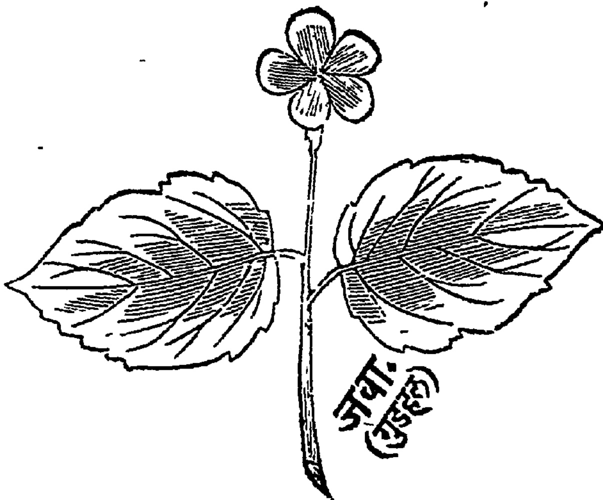
संस्कृतभाषामें - प्राजक्त, पारिजात, हारशृङ्गारपुष्पक, नालकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक ।
हिंदीभाषामें हारसिंगार, प्राजक्त ।
मराठीभाषामें प्राजक्त, पारिजात ।
गुजरातीभाषामें शीयाली, हारशणगार ।
इंग्रेजीभाषामें स्कैरस्टोकड निक्टेंथिस । Square Stalked Nytnacthes
लैटिन्भाषामें निकटेन्थिस् अर्वोद्रिस्टिस् । Nycranthes Arbotristis

हारशृङ्गारगुणाः ।

रसःप्राजक्तपत्रस्यज्वरघ्नस्तिक्तकःस्मृतः ।
पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचाकासविनाशनः ॥

अर्थ–हारशृंगारके पत्तोंका रस–ज्वरनाशक और कडवा है । इसकी छाल पानमें रखकर खानेसे खांसी दूर होतीहै ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते हैं, इसके फूल अत्यन्त सुंदर होते हैं, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडिओंको पीसकर वस्त्र रंगते हैं, इसके फल चपटे और छोटे होते हैं और पत्ते ओडहुलकी समान तथा खरखरे होते हैं । ॥जपापुष्पनामानि॥



ओड्रपुष्पंजपाचाथप्रातिकाहरिवल्लभा ।

संस्कृतभाषामें ओंड्रपुष्प, जपा, प्रातिका, हरिवल्लभा (जवा, ओंड्राख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओंड्रपुष्पी, त्रिसन्ध्या, अरुणा.)

हिंदीभाषामें ओडहुल, जवा, गुडहर ।

वंगभाषामें जवाफूलेरगाछ ।

मराठीभाषामें जासवंद ।

गुजरातीभाषामें जासुम ।

कर्णाटकीभाषामें दासनल ।

तैलिङ्गीभाषामें मंदारपु ।

इंग्रेजीभाषामें शुफ्लावर । Shoe flower

लैटिन्भाषामें हिबिस् स्कस् रोझासाई नेनसिस् । Hibiscus Rosasinensis

अस्य गुणाः ।

जपाशीताचमधुरास्निग्धापुष्टिप्रदामता । गर्भवृद्धिकरीग्राहीकेश्याजन्तुप्रदामता ॥ वान्तिजन्तुकरादाहप्रमेहार्शविनाशिनी । धातुरुक्प्रदरंचेंद्रलुप्तश्चैवविनाशयेत् ॥ जपापुष्पंलघुग्राहितिक्तंकेशविवर्द्धनम् । (नि० र०)

अर्थ-जपा (ओडहुल, गुडहर)-शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, गर्भवृद्धिकारक, ग्राही, बालोंको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, ववासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रलुप्त रोगको हरनेवाली है । इसके फूल-हलके, मलरोधक, कडवे और केशवर्द्धक हैं ।

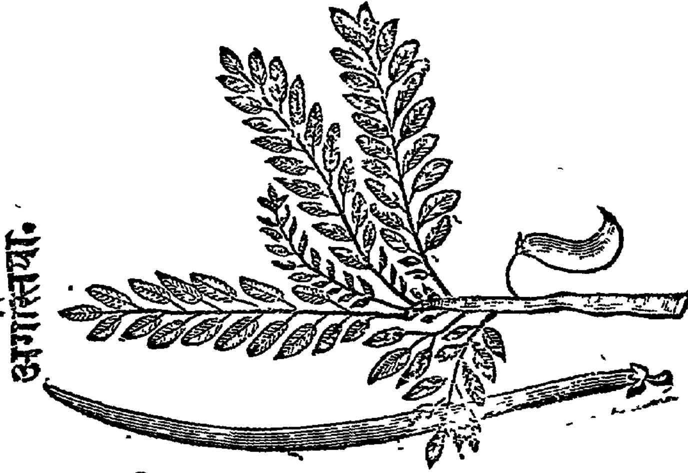
विवरण । जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्रायः वाग और उपवनोंमें वोयेजाते हैं, पत्ते अडूसेकी समान वडे वडे और फूल वहुत वडा अत्यन्त लालरंगका आताहै । प्रयोगमें फूल लिये जातेहैं इसके फूलमें अनेक गुण हैं विशेषकरके रुधिरके विकार और स्त्रियोंके रजके विकारोंमें व्यवहार किये जाते हैं ।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणाः ।

घृतेनभर्जितजपास्त्र्यार्त्तवंकुरुतेसुखम् ।

अर्थ-घीमें भुनाहुवा गुडहरका फूल-स्त्रियोंके सुखपूर्वक रजोधर्म करानेवाला है ।

अगस्त्यनामानि ।



अगस्त्योवङ्गसेनश्चमुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ।

अर्थ-अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प, मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, व्रणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, सुरप्रिय, शुक्लपुष्प, व्रणापह, खरध्वंसी, पवित्र, मुनिप्रिय, मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, सुरप्रिय)

संस्कृतभाषामें	अगस्त्य ।
हिंदीभाषामें	अगस्तिया, हथिया, हदगा ।
वंगभाषामें	वक ।
मराठीभाषामें	अगस्ता, हदगा ।
गुजरातीभाषामें	अगथियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अगसेधमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अनीसे, अविसि ।
तामिलीभाषामें	अगंति ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्जफ्लावर्ड एगेटी ।
लैटिन्भाषामें	एगाटी ग्लांडी फ्लोरा ।

अस्य गुणाः ।

अगस्तिःपित्तकफजिच्चातुर्थिकहरोहिमः ।
रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः । (भा०प्र०)

अर्थ-अगस्तिया-शीतल, रूखा, वातकारक, कडवा तथा पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और प्रतिश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च ।

अगस्तिशिशिरंगौल्यंत्रिदोषघ्नंभ्रमापहम् ।
बलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नञ्चबलावहम् ॥

अर्थ-हथिया-शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, बलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और बलनाशक है ।

अस्यपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारकम् ।
नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ।

अर्थ-अगस्तियाके फूल-शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतोंधेको दूर करनेवाले, कडवे, कषेले, पचनेमें चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक हैं ।

अस्यपत्रगुणाः ।

पर्णन्तुमुनिवृक्षस्यकटुतिक्तंगुरुस्मृतम् ।
मधुरंकिञ्चिदुष्णञ्चस्वच्छंकृमिकफापहम् ॥
कण्डूंविषंरक्तपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ-अगस्तियाके पत्ते-चरपरे कडवे, भारी, मधुर, किञ्चित्गरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवाले हैं ।

अस्यशिम्बीगुणाः ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाककालेतु मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पांडुरोगविषापनुत् । शोषगुल्महराप्रोक्तासापकारूक्षपित्तला ।(नि.र.)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक (कुछेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक है । इसका शाक रूखा- और पित्तकारक है ।

विवरण-अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोद्यानोंमें अधिक होतेहैं, पत्ते सैंजिनेकेसे होते हैं विशेषकरके इसपर नागरवेल अर्थात् पानोंकी वेल चढा करतीहै, इसलिये

इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी फली अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि, जब अगस्त्यमुनिका उदय होताहै तबही अगस्तियाके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसीवैष्णवीवृंदासुगन्धागन्धहारिणी ।
अमृतापत्रपुष्पाचपवित्रासुरवल्लरी ॥

अर्थ-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरसा, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक, पुण्या, माधवी, सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी, मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णातुलसीनामानि ।

कृष्णातुकृष्णतुलसीकृष्णपर्णीकरालकः ।

अर्थ-कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी, करालक ।

संस्कृतभाषामें	तुलसी ।
हिन्दीभाषामें	तुलसी ।
वंगभाषामें	तुलसी ।
मराठीभाषामें	तुळस, तुलसी ।
गुजरातीभाषामें	तुलसी ।
कर्णाटकीभाषामें	एरेडतुलसी ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुलसी ।
इंग्रेजीभाषामें	ह्वाईटबेझिल White Basil परपल् स्टाक्ड बेझिल् Purple stalked Basil
लैटिन्भाषामें	ओसिनं आल्बं Ocimum Album ओसिम सैंक्टं Ocimum sanctum
फारसीभाषामें	रेहान् ।
अरबीभाषामें	उलसीबदरुत ।

तुलसीगुणाः ।

तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ।

दीपनीकुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥
शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ।

अर्थ-तुलसी-चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है। सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं।

अन्यच्च ।

श्वेताकृष्णाचतुलसीकटूष्णाचोषणाजगुः । दाहपित्तकरी हृद्यातुवराह्यग्निदीपिका। लघ्वीवातकफश्वासकासहिध्माक्रमीञ्जयेत् । वान्तिदौर्गन्ध्यकुष्ठानिपार्श्वशूलविषापहा ॥ मूत्रकृच्छ्रंरक्तदोषंभूतबाधांचनाशयेत् । शूलंज्वरंचहिक्कांचनाशयेदितिकीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद और काली तुलसी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कषेली, अग्निदीपक, हलकी तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, भूतबाधा, शूल, ज्वर और हुचकीको दूर करनेवाली है।

विवरण । तुलसीके क्षुप जंगलमें और बागोंमें बहुत होते हैं और बहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमें लगा लेते हैं इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं और उनमें सुगन्धीभी आती है, इसकी डाली २ में बाल निकलती है उसको मंजरी कहते हैं। दूसरी श्याम पत्तोंकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोंकी एकसीही है।

मरुवकनामानि ।



मरुवा. (क)



मरुवा. (ख)

मरुत्तकोमरुबकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ।
फणीफणिज्जकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः ॥

अर्थ-मरुत्तक, मरुवक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प, समीरण (खरपत्र, गन्धपत्र, बहुवीर्य्य, शीतलक, सुराह्व, जम्बीर, प्रस्थकुसुम, मरिच, आजन्मसुरभिपत्र, कुलसौरभ) ।

संस्कृतभाषामें	मरुबक ।
हिन्दीभाषामें	मरुवा, मरुआ, गेदरेत ।
वंगभाषामें	मरुया ।
मराठीभाषामें	सवजा, मर्वा ।
गुजरातीभाषामें	मरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	मरुवा ।
तैलङ्गीभाषामें	रुद्रजाड ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्मार्जोरन् । Sweet marjoran
लैटिन्भाषामें	ओरिग्येनं मार्जोराना । Origanum marjorana
फिरंगीभाषामें	शाहस् ।
फारसीभाषामें	मर्जगुस् ।
अरबीभाषामें	मर्जंजुस् ।

अस्य गुणाः ।

मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥
कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगन्धिकः ।

अर्थ-मरुवा-अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक,हलका तथा विच्छू इत्यादिका विष, कफ, वात, कुष्ठ और कृमिनाशक है । पाक और रसमें चरपरा, रुचिकारी, कडवा, रूखा और सुगन्धित है ।

अन्यच्च ।

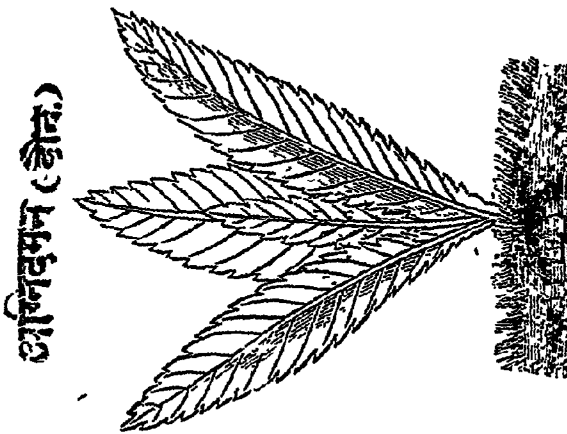
मरुबकःकटूष्णश्चदीपनस्तिक्ततीक्ष्णकः । हृद्यःपित्तकरो रुच्योरूक्षोलघुसुगन्धिकः ॥ पाचकःपित्तकफहृद्रक्तदोषविषज्वरान् । कुष्ठकण्डरुचीवातश्वासशोफकृमीञ्जयेत् ॥ हृद्रोगवृश्चिकविषवि ाध्मानशूलहा । मांद्यत्वग्दोषशम-

नः श्वेतकृष्णविभेदतः ॥ श्वेतस्त्वौषधकृत्येषुयोग्यःप्रोक्तः पुरातनैः । (नि० र०)

अर्थ—मरुवा—चरपरा, गरम, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, पित्तकारक, रुचिकारी, रूखा, हलका, सुगन्धि, पाचक तथा पित्त, कफ, रक्तविकार, विषज्वर, कोढ, कण्डू, अरुचि, वात, श्वास, सूजन, कृमि, हृदयरोग, विच्छूका विष, मलवद्धता, पेटका फूलना, शूल, मन्दाग्नि और त्वचाके विकारोंको दूर करे है । मरुवा, श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है इनमें सफेद मरुवा औषधीके प्रयोगमें लियाजाता है ।

विवरण—मरुवेके क्षुप वागोंमें अधिक होते हैं, पत्ते लम्वे २ अंगुलीकी समान अत्यन्त सुगन्धित होते हैं इसमें तुलसीके समान बहुतसी वालें निकलती हैं, मरुवेके सव अंगोंमें सुगन्धि आती है ।

दमणकनामानि ।



उक्तोदमनकोदान्तोमुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकुलपत्रकः ॥

अर्थ—दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कुलपत्रक, (पुष्पचामर, मदनक, दमन, मुनि, जटिला, दण्डी, पाण्डुराग, ब्रह्मजटा, पुण्डरीक, तापसपत्री, पत्री, पवित्रक, देवशेखर, कुलपत्र, तपस्विपत्र)

संस्कृतभाषामें दमनक ।
हिन्दीभाषामें दौना, दवना ।

वंगभाषामें	दोना, दुना ।
मराठीभाषामें	दवणा, रानदवणा ।
गुजरातीभाषामें	डमरो ।
कर्णाटकीभाषामें	दवना ।
इंग्रेजीभाषामें	वर्मुवुड । Worm wood
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या इन्डिका । Artemefial ndica
	आर्टिमिस्या सिवर्सियाना । A. Sieversian

दमनकगुणाः ।

दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिकः ।
ग्रहणाद्विषकुष्टास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दौना-कषेला, कडवा, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित, इसका सेवन करनेसे विष, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, कण्डू और त्रिदोषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

दमनःशीतलस्तिक्तःकषायकटुकश्चदोषहरः ।
द्वन्द्वत्रिदोषशमनोविषस्फोटविकारहरणःस्यात् । (रा०)

अर्थ-दौना-शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा, तथा, द्वन्द्वज दोष, त्रिदोष, विष और विस्फोटनाशक है ।

वनदमनकगुणाः ।

वनजोदमनःप्रोक्तोवीर्यस्तम्भनकारकः ।
बलप्रदश्चामदोषनाशकःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ-वनदौना-वीर्यस्तम्भक, बलदायक व आमदोषनाशक है ।

अग्निदमनकगुणाः ।

अग्नेर्दमनकश्चोष्णःकटूरूक्षोग्निदीपनः ।
रुच्योहृद्योवातकफगुल्मप्लीहविनाशकः ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला है ।

विवरण-दौनेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते हैं, पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँसा होता है, फूलोंके छत्तेसे होते हैं ।

अर्जकनामानि ।

अर्जकःक्षुद्रतुलसीक्षुद्रपर्णोसुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तुजम्बीरःकुठेरस्तुकठिञ्जरः ॥

अर्थ-अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, सुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्वीर, कुठेर, कठिञ्जर ।

श्वितार्जकनामानि ।

सितार्जकस्तुवैकुंठोवटपत्रःकुठेरकः ।
जम्बीरोगन्धबहुलःसुमुखःकटुपत्रकः ॥

अर्थ-सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्वीर, गन्धवहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्रार्जक, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि ।

कृष्णार्जकःकाममालोमालुकःकृष्णमालुकः ।
स्यात्कृष्णमल्लिकाप्रोक्तागरघ्नोवनबर्बरः ॥

अर्थ-कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका, गरघ्न, वनवर्वर (कृष्णवर्णी, कालपर्णी, करालक, कृष्णपर्णी, सुरभिमालक, कालमालक)।

वर्वरीनामानि ।

बर्बरीकबरीतुङ्गीखरपुष्पाजगन्धिका ।

अर्थ-वर्वरी, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (असुरसा, वर्वा, अजगन्धा, कवरा, खरपुष्पिका, सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अपेतराक्षसी)।

वनवर्वरीनामानि ।

वनबर्बरिकान्यातुसुगन्धिःसुप्रसन्नकः ।
दोषाक्लेशीविषघ्नश्चसुमुखःसूक्ष्मपत्रकः ॥
निद्रालुःशोफहारीचसुवक्रश्चदशाह्वयः ।

अर्थ-वनबर्वरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोषाक्लेशी, विषघ्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोकहारी, सुवक्र ।

संस्कृतभाषामें अर्जक, वर्वरी, वनवर्वरी ।
हिंदीभाषामें बर्वरी, वनतुलसी ।

वङ्गभाषामें	वाबुइतुलसी, वनवाबुइतुलसी ।
मराठीभाषामें	रानतुळस ।
गुजरातीभाषामें	रानतुलसीभेद ।
कर्णाटकीभाषामें	कगोरले–करीयकगोरले ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुतुलसी ।
सि०	तोक्वलाम्बा ।
लैटिन्‌भाषामें	ओसिमम् ग्रेटिसिमं । Ocimum gratissimum
फारसीभाषामें	पलंगमुष्क ।
अरबीभाषामें	फरंजमुष्क ।

अर्जकसितार्जक-कृष्णार्जकगुणाः ।

अर्जकास्त्रिकटूष्णाःस्युःकफवातामयापहाः ।
नेत्रामयहरारुच्याःसुखप्रसवकारकाः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–तीनोंप्रकारकी अर्जक–चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वातरोग और नेत्ररोगनाशक है तथा सुखपूर्वक प्रसव करानेवाली है ।

अन्यच्च ।

बर्बरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ।
तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच ॥
पित्तलंकफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ।

अर्थ–तीनोंप्रकारकी बर्बरी–रूखी, शीतल, चरपरी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, दीपन, पचनेमें हलकी, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाद, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है ।

अपिच्च ।

आरण्यतुलसीक्षुद्राकट्वीचोष्णाचतिक्तका । रुच्याग्निदीपनीहृद्याविदाहीलघुपित्तला॥ रूक्षाकण्डूविषच्छर्दिकुष्ठज्वरविनाशिनी । वातंकृमीन्कफंदद्रुंरक्तदोषञ्चनाशयेत् । बीजंचास्यादाहशोषनाशकंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–सर्वप्रकारकी बर्बरी–चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृदयको हितकारी, दाहकारक, हलकी, पित्तजनक, रूखी तथा कण्डू, विष, वमन, कुष्ठ, ज्वर, वात, कृमि, कफ, दाद और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवालीहै । इसके बीज–दाह और शोषनाशक हैं ।

वनबर्वरिकागुणाः।

वनबर्बरिकाचोष्णासुगन्धाकटुकाचसा।
पिशाचवान्तिभूतघ्नीघ्राणसन्तर्पणीपरा॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनवर्वरी-गरम, सुगन्धित, चरपरी, नासिकाइन्द्रियको तृप्ति करनेवाली तथा पिशाचबाधा, वमन और भूतबाधाको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

आरण्यतुलसीचोष्णाकटुकाचसुगन्धिका।
वातत्वग्दोषवीसर्पविषंचैवविनाशयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ-वनतुलसी-गरम, चरपरी, सुगन्धित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विषके विकारोंको हरनेवाली है।

अपिच।

निद्राहरःशोफहारीदाहकारीचसस्मृतः।
सुमुखंचातिकृच्छ्रघ्नंवातश्लेष्महरंपरम्॥

अर्थ-वनवर्वरी-निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक, दाहकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है।

विवरण-बर्वरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्रायः जंगल और वनोंमें अधिक होतीहै, पत्ते पियावाँसेके समान छोटे होतेहैं उनमें नीमके पत्तोंकेसे कंगूरे होतेहैं, फूल पिलावनलिये होताहै सुगन्धिभी बहुत आती है।

अथ पङ्कजनामानि।



पङ्कजंकमलंपद्ममब्जंनलिनमम्बुजम् ।
कुशेशयञ्चराजीवमरविन्दंसरोरुहम् ॥

अर्थ-पंकज, कमल, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री (:) अम्बुरोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कज, शतपत्र, विसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरोह, सरसिज, सलिलज, पंकेरुह, विसप्रसून, वारिज, कवार, आस्यपत्र, वनशोभन, जलजन्म, जलरुट्, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुट्, पंकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कंज; नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अब्ज, सारज, सरसीरुह, कुटप,)

श्वेतकमलनामानि ।

पुण्डरीकंमहापद्मंश्वेतपद्मंसिताम्बुजम् ।
हशोपमंहरिनेत्रंशारदंशम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ-पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बु, हशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (सिताम्भोज, शतपत्र, शुक्लपद्म, सिताब्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म)।

रक्तकमलनामानि ।

रक्तोत्पलंकोकनदंरक्तवर्णंरविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अल्पपत्र, रक्तकमल, रक्त कम्बल, आलोहित, अलिप्रिय, कृष्णकन्द, रक्ताम्भोज, शोणपद्म, अरुणकमल, चारुनालक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलकमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्मनीलाब्जंनीलपद्मंमृदूत्पलम् !

अर्थ-नीलम्बुजन्म, नीलाब्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलपङ्कज-नीलकमल,)

नीलोत्पलनामानि ।

इन्दीवरंकुवलयंकन्दोटंनीलपत्रकम् ।

अर्थ-इन्दीवर, कुवलय, कन्दोट, नीलपत्रक, (उत्पलक, कन्दोत्थ, सौगन्धिक, सुगन्ध, कुड्मलक, असितोत्पल, इंदिरावर, इन्दीवार, नीलपत्र,)

संस्कृतभाषामें कमल, पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलोत्पल ।

हिन्दीभाषामें	कमल, सफेद्कमल, लालकमल, नीलकमल, नील-कमोद्नी ।
वंगभाषामें	पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलशुन्दि,
मराठीभाषामें	कमळ, पांढरेंकमळ, तांबडेंकमळ, नीळेंकमळ, ।
गुजरातीभाषामें	कमल, धोलाकमल, रातागडघेडेते रातांकमल, जेना नालमां कांटाहोय, नीलकमल, सुगन्धीनेतान॥
कर्णाटकीभाषामें	विलीयतावरे, केदावरे, करियतावरे, नेइदिछु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कालावा, नालावाकालावा, एराकालावा, तम्मि, तास्मियुब्बु, नेल्लनामर, नल्लकुलवु ।
तामिलीभाषामें	अम्वल ।
इंग्रेजीभाषामें	लोटस् । Lotus
लैटिन् भाषामें	लीलंवियम् स्पेसीयोझम् । Nelumbium Speciosum नीलंवीयं केरुलियम् । Nelumbium Carruleum नीलवीयं प्युवेसिन्स । N -pubeseins
फारसीभाषामें	नीलुफर, गुलनीलोफर ।
अरवीभाषामें	करंबुलमा, वर्द नीलोफर ।

कमलगुणाः ।

कमलंशीतलंवर्ण्यंमधुरंकफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-साधारणकमल-शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा कफ, पित्त, तृपा, दाह, रुधिरदोष, विस्फोट, विष और विसर्परोगनाशक है।

अन्यच्च ।

पद्मंकषायंमधुरंशीतंपित्तकफास्रजित् । (राजवल्लभ)

अर्थ-कमल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करे है।

अपिच ।

कमलंशीतलंस्वादुसुगन्धिभ्रान्तितापहम् । वर्ण्यंतृप्तिकरंचैवरक्तपित्तश्रमापहम् ॥ कफंपित्तंतृषांदाहंविस्फोटंरक्तदोषकम् । विसर्पश्चविषश्चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-कमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, भ्रान्तिहारक, तापनिवारक,

वर्णकारक, तृप्तिजनक तथा रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है ।

श्वेतकमलगुणाः ।

धवलंकमलंशीतंमधुरंकफपित्तजित् । (भा. प्र.)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशकहै ।

अन्यच्च ।

श्वेतंतुकमलंशीतंस्वादुतिक्तंकषायकम् । मधुरंवर्णकृन्नेत्र्यं रक्तदोषतृषाहरम् ॥ कफंपित्तंश्रमंदाहंतृष्णांशोथंव्रणंज्वरम् । सर्वविस्फोटकञ्चैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेदकमल, शीतल, स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी तथा रुधिरविकार, तृषा, कफ, पित्त, श्रम, दाह, तृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वप्रकारके विस्फोटकोंको हरनेवाला है ।

रक्तकमलगुणाः ।

कोकनदंकटुतिक्तंमधुरंशिशिरञ्चरक्तदोषहरम् ।
पित्तकफवातशमनंसन्तर्पणकारणंवृष्यम् (राजनिघण्टु)

अर्थ-लालकमल-चरपरा, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला, संतर्पण तथा शुक्रवर्द्धक है ।

नीलकमलगुणाः ।

नीलाब्जंशीतलंस्वादुसुगन्धिपित्तनाशकृत् ।
रुच्यंरसायनेश्रेष्ठंकेश्यंचदेहदार्ढ्यकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलकमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनकर्ममें उत्तम, देहको, दृढ करनेवाला और बालोंको बढानेवाला है ।

नीलोत्पलगुणाः ।

नीलोत्पलमतिस्वादुशीतंसुरभिसौख्यकृत् ।
पाकेतुतिक्तमत्यन्तंरक्तपित्तापहारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलोत्पल (फा०नीलोफर)-अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, सुगन्धि, सुखकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है ।

पद्मिनीनामानि ।

मूलनालदलोत्फुल्लःफलैःसमुदितापुनः ।

पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्विसिन्यादिश्चसास्मृता ॥

अर्थ-मूल, नाल, पत्र और वीजादिसंयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (विसिनी, नलिनी, कुन्दिनी, मृणालिंनी, कमलिनी, पुटकिनी, पंकजिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, अब्जिनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्वालिनी यह सव पद्मिनीके पर्य्याय हैं) ।

पद्मिनीगुणाः ।

पद्मिनीमधुरातिक्ताकषायाशिशिरापरा ।
पित्तक्रिमिशोषवान्तिभ्रांतिसन्तापशान्तिकृत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, कडवी, कषेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वांति, भ्रांति और संतापकी शांति करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पद्मिनीशीतलागुर्वीमधुरालवणाचसा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कमलिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, रूखी और वातविष्टम्भकारक है ।

अपिच ।

पद्मिनीमधुराशीतातिक्ताचतुवरागुरुः । वातस्तम्भकरीरूक्षास्तनदार्ढ्यकरीमता ॥ कफंपित्तंरक्तरुजंविषंशोषंवमिंकृमीन् । सन्तापंमूत्रकृच्छ्रञ्चनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, शीतल, कडवी, कषेली, भारी, वातस्तम्भकारक रूखी, स्तनोंको दृढ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, संताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

पद्मसंवर्त्तिकादिनामानि ।

संवर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका ।
किञ्जल्कःकेसरःप्रोक्तोमकरन्दोरसःस्मृतः ॥
पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाविसमितिस्मृतम् ।

अर्थ-कमलके नये पत्तोंको संवर्त्तिका, वीजकोश (कमलगट्टेका घर) को कर्णिका, केसर (जीरा) को किञ्जल्क रसको मकरन्द और नालको मृणालकंद तथा विस (कमलकंद) कंद कहते हैं ।

संवर्तिकागुणाः ।

संवर्त्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृट्प्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-कमलके कोमलपत्ते-शीतल, कडवे, कषैले तथा दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र गुदरोग और रक्तपित्तको दूर करनेवाले हैं ।

कर्णिकागुणाः ।

पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा ।
मुखवैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कर्णिका (बीजकोष)-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, हलका तथा मुखकी विरसता, तृषा, रक्तविकार, कफ और पित्तका नाश करे है ।

पद्मकेसरनामानि ।

किञ्जल्कंमकरन्दश्चकेसरंपद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्जल्क, मकरंद, केसर, पद्मकेसर (किञ्ज, पीतपराग, तुङ्ग, चाम्पेयक, केशर, चाम्पेय, आपीत, काञ्चन)

पद्मकेसरगुणाः ।

किञ्जल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहिकोऽपिसः ।
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली, मलरोधक तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तार्श (रुधिरकी ववासीर), विष और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

किञ्जल्कोमधुरोरूक्षःकटुरास्यव्रणापहः ।
शिशिरोरुच्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहविषापहः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कमलकेसर-मधुर, रूखी, चरपरी, मुखरोग, तथा व्रणरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, तृषा, दाह और विषको दूर करने-वाली है ।

अपिच ।

किञ्जल्कःशीतलोग्राहीकान्तिदस्तुवरोमधुः । कटूरूक्षोरुचिकरोगर्भस्थैर्य्यकरोमतः ॥ व्रणंपित्तंतृषांदाहंमुखरोगंक्ष-

यंकफनु। विषंरक्तार्शसंशोषंज्वरंवातञ्चनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, मलरोधक, कान्तिजनक, कषेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी, गर्भको स्थिर करनेवाली तथा व्रण, पित्त, तृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विष, रक्तार्श, शोष, ज्वर और वातका नाश करनेवाली है।

पद्मवीजनामानि।

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोडयंपद्मकर्कटी।

अर्थ-पद्मवीज, पद्माक्ष, गालोडच, पद्मकर्कटी (कन्दली, भेण्डा, क्रौञ्चादनी, क्रौञ्चा, श्यामा)।

संस्कृतभाषामें	पद्मवीज।
हिन्दीभाषामें	कमलगट्टा।
वंगभाषामें	पद्मवीचि।
मराठीभाषामें	कमलाक्ष।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरकाडा।
गुजरातीभापामें	कमलकाकडी।
कर्णाटकीभाषामें	पद्माक्ष।
अरवीभाषामें	वालकेकुवति।

अस्य गुणाः।

पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु।
विष्टम्भिवृष्यंरूक्षञ्चगर्भस्यस्थापकंपरम् ॥
कफवातहरंबल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत्। (भा० प्र०)

अर्थ-कमलगट्टा-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक, वलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवालाहै।

अपिच।

कमलाक्षःस्वादुरुच्यःपाचनःकटुकःस्मृतः। शीतलस्तुवरस्तिक्तोगुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ गर्भस्थितिकरोरूक्षोवृष्योवातकरोमतः। कफक्लेखनोग्राहीबल्यःपित्तविनाशकः ॥ रक्तरुग्वमिदाहास्रपित्तनाशकरोमतः। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पाचक, चरपरा, शीतल, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, वातवर्द्धक, कफकारक, लेखन, मलरोधक, वलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवालाहै । पूर्वदेशमें कमलगट्टेकी गिरी (मींग) को भूनकर मखाना बनाते हैं । मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमें लिखे हैं ।

मकरन्द-पद्ममधुगुणाः ।

अरविन्दहृतःशीतोमकरन्दोतिबृंहणः ।
त्रिदोषशमनःसर्वनेत्रामयनिषूदनः ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकारक, त्रिदोषनाशक और सर्वप्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवालाहै ।

कमलिनीपत्रगुणाः ।

कमलिन्याश्छदःशीतस्तुवरोमधुरोमतः ।
तिक्तःपाकेतिकटुकोलघुर्वैग्राहकोमतः ॥
वातकृत्कफपित्तानांनाशकोमुनिभिःस्मृतः ॥ (नि.र.)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शीतल, कषेले, मधुर, कडवे, पचनेमें चरपरे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक हैं ।

पद्मनालनामानि ।

मृणालंपद्मनालञ्चकोमलंबिसिनीबिसम् ।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, विसिनी, विस (विस, कोरक, कोमलक, तन्तुर, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह, तन्तुल)

संस्कृतभाषामें	मृणाल, पद्मनाल ।
हिंदीभाषामें	कमलकी नाल, कमलकी दंडी ।
वंगभाषामें	पद्मेरडांटा ।
मराठीभाषामें	कमळाचा देंट ।
कर्णाटकीभाषामें	कमलदनूळु ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरतुंड, तामरतोगे ।

मृणालगुणाः ।

मृणालंशिशिरंतिक्तंकषायंपित्तदाहजित् ।
मूत्रकृच्छ्रविकारघ्नंरक्तवान्तिहरंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–कमलकी नाल–शीतल, कडवी, कषेली तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार और वमनको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मृणालंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रजिद्गुरु ।
दुर्जरंस्वादुपाकञ्चस्तन्यानिलकफप्रदम् ॥
संग्राहिमधुरंरूक्षंशालूकमपितद्गुणम् । (भावप्रकाश)

अर्थ–कमलकी नाल–शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, दाहहारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर पचनेमें, स्वादिष्ठ, स्तनोमें दूध उत्पन्न करनेवाली, वातवर्द्धक, कफकारक, मलरोधक, मधुर और रूखी है इसीकी समान भसीडेके गुण जानने ।

पद्मकन्दनामानि ।

पद्मादिकन्दश्शालूकंकरहाटश्चकथ्यते ।
मृणालमूलंभिस्साण्डंजालालूकश्चकथ्यते ॥

अर्थ–कमलादिकके कन्दको–शालूक, करहाट (पद्ममूल, कटाह्वय, शालूक और जालालूक) कहते हैं । मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जलालूक, (पंक शूरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	पद्मकन्द, भिस्साण्ड ।
हिन्दीभाषामें	कमलकन्द, भसीडा ।
बंगभाषामें	पद्मेर गेंडों, शालुक ।
तैलिङ्गीभाषामें	जाजिकाय ।

शालूकगुणा ।

शालूकंकटुविष्टम्भिरूक्षंरुच्यंकफापहम् ।
कषायकासपित्तघ्नंतृष्णादाहनिवारणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–शालूक (कमलकंद, भसीडा)–कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचिकारक, कफनाशक, कषेला तथा खाँसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है ।

अपिच ।

शालूकःकटुकश्चोक्तस्तुवरोमधुरोगुरुः । मलस्तम्भकरोरूक्षोनेत्र्योवृष्यश्चशीतलः ॥ दुर्ज्जरोग्राहकोरक्तपित्तंदाहंतृषांकफम् । पित्तवातश्चगुल्मश्चपित्तंकासंक्रमींस्तथा ॥ मुखरोगंरक्तदोषंनाशयेदितिचस्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा)-कटु, कषेला, मधुर, भारी, मलस्तम्भक, रूखा नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोधक तथा रक्तपित्त, दाह, तृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, खाँसी, कृमि, मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है।

विवरण। कमल-लाल, नीले और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते हैं, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवर और तालोंमें उत्पन्न होतेहैं पत्ते बडे २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु न ठहरै इसप्रकारके अद्भुत और शोभायमान होते हैं. उन पत्तोंको पुरैनके पातभी कहते हैं, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल अर्थात् कमलकी नाल कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो पीला २ जीरा होता है उसको कमल केशर कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो स्वरस रस लगा होता है उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं कमलमें जो फल लगते हैं उसको पद्मकोष कहते हैं, उनमें जो बीज निकलते हैं उनका नाम कमलगट्टे हैं कमलकी जडको भसीडे कहते हैं।

कुमुदनामानि ।

कैरवंचन्द्रकान्तश्चगर्दभंकुमुदंकुमुद् ।

अर्थ-कैरव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद् (सौगन्धिक, कन्दोत, कच्छ, कुव, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, कह्लार, शीतलक, शशिकान्त, चन्द्रिकाम्बुज, इन्दुकमल, कुवलय)

संस्कृतभाषामें	कुमुद ।
हिन्दीभाषामें	कोई, कमोदनी, बघोला, बबूला ।
बंगभाषामें	हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुद्धि ।
मराठीभाषामें	पांढरें उत्पल ।
गुजरातीभाषामें	पोयणा ।
कर्णाटकीभाषामें	विलियेते इल्लि ।

कुमुदगुणाः ।

कुमुदंशीतलंस्वादुपाकेतिक्तंकफापहम् ।
रक्तदोषहरंदाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (कमोदनी)-शीतल-स्वादिष्ठ पचनेमें कडवी, कफनाशक तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शान्ति करे है।

अन्यच्च ।

कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धंमधुरंह्लादिशीतलम् ।

अर्थ-कुमुद-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है ।

कुमुदबीजगुणाः ।

भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु ।

अर्थ-कुमुदके बीज अर्थात् घंघोलके दाने-स्वादिष्ठ, रूखे, शीतल और भारी हैं ।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णंचोत्पलंचैवरात्रिपुष्पंजलाह्वयम् ।
हिमाब्जंशीतजलजंनिशाफुल्लञ्चसत्तधा ॥

अर्थ-अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवल, कुवलय कुवेल) ।

उत्पलगुणा ।

उत्पलंशिशिरंस्वादुपित्तरक्तार्त्तिदोषनुत् ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरंपरम् ॥

अर्थ-उत्पल-शीतल, स्वादिष्ठ तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे है ।

रक्तकुमुदनामानि ।

हल्लकंरक्तकुमुदंसोमाख्यंरक्तकैरवम् ।

अर्थ-हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तसन्ध्यक, रक्तकह्लार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि ।

उत्पलिनीकैरविणीकुमुद्वतीकुमुदिनीचचन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणीनीलोत्पलिनीचविज्ञेया ॥

अर्थ-उत्पलिनी, कैरविणी कुमुद्वती, कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी ।

उत्पलिनीगुणाः ।

उत्पलिनीहिमातिक्तारक्तामयहारिणीचपित्तघ्नी ।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनीचविज्ञेया ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कुमुदिनी, उत्पलिनी, शीतल, कडवी तथा रक्तरोग, पित्त, ताप, कफ, खांसी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है।

विवरण। कुमुदनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे हो जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके फूलोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्य्यका प्रकाश होतेही वन्द होजाते हैं, इसके पत्ते फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जावित्रीके समान कोष होताहै, उस कोषका फल होजाताहै, कच्ची अवस्थामें तो उसके भीतर लालदाने निकलते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड जातेहैं उस फलको घंघोल कहते हैं, उसकी जडको चाच अथवा सालक कहते हैं।

स्थलपद्मिनीनामानि।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथापद्माचसारदा।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिटी,पद्माह्वा, सुगन्धमूला, अम्बुरुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, सुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्थलरुहा, पुष्करिणी, पुष्करपर्णिका, पुष्करनाडी)।

संस्कृतभाषामें	स्थलपद्मिनी।
हिन्दीभाषामें	स्थलकमलिनी।
वंगभाषामें	स्थलपद्म।
मराठीभाषामें	स्थलकमलिनी।
कर्णाटकीभाषामें	कल्लुदावरे।
लैटिन् भाषामें	आयोनीडयं फ्रुटिकोसं। Ionidiuam Suffiruticosum

अस्य गुणाः।

शीतातिक्ताचतुवरास्तनदार्ढ्यकरीमता। लघ्वीकट्वीचविज्ञेयाकफपित्तस्यनाशिनी॥ मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रवातशूलातिसारहा। वान्तिदाहंमोहमेहौरक्तरुग्श्वासहामता॥ अपस्मारंविषंकासंनाशयेत्पद्मचारिणी। (नि० र०)

अर्थ-पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी, शीतल, कडवी, कषेली, स्तनोंको, दृढ करनेवाली, हलकी, चरपरी तथा कफ, पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिसार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और खांसीको दूर करनेवाली है।

विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होताहै, परन्तु इसमें विशेषता यह है कि, पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै, आकृति तो सब कमलकीसीही होतीहै किन्तु पत्ते और फूल, फल सब कमलसे छोटे होते हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेपुष्पवर्गः ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।

आम्रनामानि ।



आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गोमधुदूतश्चमाकन्दःपिकवल्लभः ॥

अर्थ-आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, अम्र, फलश्रेष्ठ, फलोत्पत्ति, मृषालक, चूत, षट्पदातिथि, वसन्तद्रु, पिकप्रिय, स्त्रीप्रिय, गन्धबन्धु, अलिप्रिय, श्रेष्ठ, मदिरासख, पिकबन्धु, केशवायुध, कोपी, परपुष्टमहोत्सव, कामशर, कामवल्लभ, कामांग, कीरेष्ट, माधवद्रुम, भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस, माधूली, कोकिलोत्सव, वसन्तदूत, मोदाख्य, मन्मथालय, मध्वावास, सुमदन, पिकराग, नृपप्रिय, प्रियम्बु, कोकिलावास, वसन्तपादप, भ्रमरप्रिय, मनोज्ञ, मन्मथावास, शुकप्रिय, वनोत्सव, मदाढ्य, मञ्जरी) ।

संस्कृतभाषामें आम्र।

हिन्दीभाषामें आम ।

वंगभाषामें	आम ।
मराठीभाषामें	आंवा ।
गुजरातीभाषामें	आंबो ।
कर्णाटकीभाषामें	माविनफल ।
तैलिङ्गीभाषामें	माविडि ।
इंग्रेजीभाषामें	मङ्गोट्री । Mangotree
लैटिन्भाषामें	मॅंगीफराइंडिका । Mangifera Indica
फारसीभाषामें	आंबा ।
अरबीभाषामें	अम्बज ।

आम्रपुष्पगुणाः ।

आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-आमका मौर-अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है। तथा शीतल, रुचिकारक, मलरोधक और वातकारक है।

अन्यच्च ।

आम्रपुष्पंशीतलंस्याद्वातलंग्राहकंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंरुच्यंकफपित्तप्रमेहनुत् ॥
प्रदरंचातिसारञ्चनाशयेदितिमेमतम् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मौर-शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिसारनिवारक है।

बालतरुणाम्रगुणाः ।

बालाम्रकंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत् ।
तरुणंतुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बालाम्र अर्थात् कच्ची अँबिया-कषैली, खट्टी रुचिकारक तथा वात और पित्तकारक है, विनापकाहुआ बडा आम-अत्यन्त खट्टा, रूखा तथा त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

बालाम्रकंरक्तपित्तकरंमध्यन्तुपित्तलम् । (रा. व.)

अर्थ-कच्ची अँबिया-रक्तपित्तकारक और तरुण आम पित्तजनक है।

अपिच ।

बालाम्रस्तुवरश्चोष्णःसुगन्धिश्चाम्लकःस्मृतः । क्षारस्ययोगाद्रुचिदोग्राहीरूक्षश्चकान्तिदः ॥ पित्तवातकफान्रक्तदोषांश्चैवकरोतिसः । कण्ठरुग्वातमेहञ्चयोनिदोषव्रणंतथा ॥ अतिसारंप्रमेहञ्चनाशयेदितिकीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-कच्ची अँविया-कषेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रूखी तथा कान्ति, पित्त वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है ।

आम्रपेशीगुणाः ।

आम्रमामंत्वचाहीनमातपेतिविशोषितम् ।
आम्लस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर उसके टुकडे करके धूपमें सुखादेवे उसको अमचूर कहतेहैं; वह अमचूर-खट्टा, स्वादिष्ट, कषेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है ।

पक्वाम्रगुणाः ।

पक्वंतुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम् ।
गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥
कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । (भा०प्र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलवर्द्धक, सुखदायक, भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कषेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

पक्वंत्वाम्रफलंसुगन्धिमधुरंस्निग्धंपरंबृंहणं रुच्यंवातहरञ्चहृद्यलघुग्राहीप्रमेहप्रणुत् । शीतंवर्ण्यमपित्तलंव्रणहरंश्लेष्मास्त्ररोगापहं यद्दृक्षासनउल्लसत्यपिमुनेःकिंवर्णनंभूतले ॥

अर्थ-पकाहुवा आम-सुगन्धि, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक, रुचि-

कारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोंको दूर करनेवाला है।

अपिच।

पक्काम्रोमधुरःशुक्रवर्द्धकःपौष्टिकःस्मृतः।
गुरुःकान्तितृप्तिकरःकिञ्चिदम्लोरुचिप्रदः॥
हृद्योमांसबलस्तावर्द्धकःकफकारकः।
तुवरश्चतृषावातश्रमग्लानिनाशकः स्मृतः॥ (नि० र०)

अर्थ-पकाहुवा आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तृप्तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, बल और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है।

वृक्षपक्काम्रगुणाः।

तदेववृक्षसंपक्कंगुरुवातहरंपरम्।
मधुराम्लरसंकिंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वही वृक्षपै पकाहुआ आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है।

कृत्रिमपक्काम्रगुणाः।

आम्रंकृत्रिमपक्कञ्चतद्भवेत्पित्तनाशनम्। रसस्याम्लस्यहीनन्तुमाधुर्य्याच्चविशेषतः॥ उषितंतत्परंरुच्यंबलवीर्य्यकरं लघु। शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमें पकायाहुवा आम-पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुररसपूरित है। वही वासित-परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, हलका, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है।

आम्ररसगुणाः।

तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः।
अहृद्यस्तर्पणोतीवबृंहणःकफवर्द्धनः॥

अर्थ-आमका निचोडाहुवा रस-बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीवबृंहण और कफवर्द्धक है।

सैवदुग्धेनसंयुक्तकान्तिदःस्वाददःस्मृतः ।
वृष्यश्चान्येगुणाश्चोक्तारसेनसदृशाःस्मृताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक, स्वाददायक और वीर्य्यवर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोषिताम्रगुणाः ।

चोषिताम्रोबलरुचिवीर्य्यवृद्धिकरःपरः ।
लघुताशीततताशीघ्रपाकतावातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैवपूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम-वल, रुचि और वीर्य्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलवन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः ।

पक्वःस्याच्छस्त्रछिन्नाम्रोजाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्चधातुवृद्धिंकरोतिसः ॥
बलकर्त्तावातपित्तनाशनःपरिकीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और वलकारक है तथा वातपित्त-नाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः ।
घर्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तइतिस्मृतः ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर बिछाकर धूपमें सुखालेवे उसको आम्रावर्त्त (ऑवट) कहतेहैं ।

आम्रावर्त्तगुणाः ।

आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः ।
रुच्यःसूर्य्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्त्तितः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-आम्रावर्त्त (ऑवट)-तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, कुछेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणोंसे पाक होनेसे हलका है ।

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्यखण्डंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ।

मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम् ॥

अर्थ-आमका टुकडा-भारी, रुचिकारी, देरसे पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारक, शीतल और वातविनाशक है ।

अतिशयाम्रभक्षणगुणा ।

मन्दानलत्वंविषमज्वरञ्चरक्तामयंबद्धगुदोदरञ्च । आम्राति-योगेनयनामयंवाकरोतितस्मादतितानिनाद्यात् ॥ एतद-म्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु । मधुरस्यपरंनेत्रहितत्वाद्या गुणायतः ॥ शुण्ठ्यम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे । जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्चलेनच ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अधिक आमका खाना मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिरविकार, बद्धगुदोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न करे है, इसकारण अधिक आमका खाना वर्जित है, यह जितने दोष आमके कहे हैं सो सब खट्टे आमके जानने; परन्तु मीठे आमके भक्षण करनेसे यह दोष नहीं होते हैं, मधुर आम तो अधिकतर नेत्रोंको हितकारी और अधिक गुणवाला है । अधिक आम खानेके पीछे सोंठका जल पीवे तथा जीरा कालानोन खाना उचित है ।

मधुयुक्ताम्रगुणाः ।

मधुनातत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरंपरम् ।

अर्थ-मधुयुक्त आम-क्षय (राजयक्ष्मा,) प्लीहा, वात और श्लेष्मनाशक है ।

घृतयुक्ताम्रगुणाः ।

सघृतंवातपित्तघ्नंदीपनंबलवर्णकृत् । (राजवल्लभ०)

अर्थ-घृतयुक्त आम-वातपित्तनाशक, दीपन, बलवर्द्धक और वर्णकारक है ।

दुग्धयुक्ताम्रगुणाः ।

वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ।
वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दुग्धयुक्त आम्र-वातपित्तहारक, रुचिकारक बृंहण, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी और शीतल है ।

आम्रास्थिगुणाः ।

आम्रबीजंतुमधुरंकिञ्चिदम्लंकषायकम् ।
वान्त्यतीसारहृद्दाहनाशनञ्चबुधैर्मतम् ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा वमन; अतिसार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है ।

आम्रास्थितैलगुणाः ।

आम्रतैलंतुतुवरंस्वादुरूक्षञ्चतिक्तकम् ।
सुगन्धिमुखरोगस्यनाशनंकफवातनुत् । (नि० र०)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, रूखा, कडवा, सुगन्धि तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक है ।

आम्रत्वचादिगुणाः ।

आम्रत्वचाकषायाचमूलंसौगन्धिताहशम् ।
रुच्यंसंग्राहिशिशिरंपुष्पंतुरुचिदीपनम् ॥

अर्थ-आमकी छाल-कषेली, आमकी जड-कषेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है । आमका फूल-रुचिको दीपन करे है ।

आम्रान्तस्त्वग्गुणाः ।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणीतुतुवरादाहकारिणी ।
पित्तमेहकफानाञ्चनाशिनीयोनिशुद्धिकृत् ॥

अर्थ-आमकी अन्तरकी-छाल-मलरोधक, कषेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है । तथा योनिको शुद्धि करे है ।

आम्रमूलगुणाः ।

आम्रमूलंतुतुवरंग्राहिशीतंरुचिप्रदम् ।
सुगन्धिकफवातानांनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-आमकी जड-कषेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है ।

आम्रपल्लवगुणाः ।

आम्रच्छदस्तुतुवरोग्राहकोरुचिकारकः ।
वातपित्तकफान्हन्तीत्येवञ्चपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-आमके कोमल पत्ते-कषेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात, पित्त और कफको हरनेवाले हैं ।

राजाम्रनामानि ।

राजाम्रोन्योराजफलःस्मराम्रःकोकिलोत्सवः ।

मधुरःकोकिलानन्दःकामेष्टोनृपवल्लभः ॥

अर्थ-राजाम्र, राजफल, स्मराम्र, कोकिलोत्सव, मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (टंक, आम्रात, कामाह्व, राजपुत्रक)

बालंराजफलंकफास्रपवनंश्वासातिपित्तप्रदं मध्यंताद्दशमेवदोषबहुलंभूयःकषायाम्लकम् । पक्कंचेन्मधुरंत्रिदोषशमनंतृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचकंगुरुहिमंवृष्यातिभूपाह्वयम् ॥

अर्थ-कच्चा कलमी आम, कफ, वातरक्त, श्वास और अत्यन्त पित्तजनक है। तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमकी समान हैं । अनेक दोषकारक, कषेला और खट्टाहै। पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, श्वास और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है ।

विवरण । आमके वृक्ष प्रायः भारतवर्षके समस्त प्रदेशोंमें अधिकतासे होते हैं, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते हैं। आमकी अनेक जाति हैं, किन्तु आकृति सबकी एकसी होती है । पत्ते जामुनकी समान कुछ विशेष लम्बे होते हैं। फूल छोटा छोटा मौर आताहै, वसन्तऋतुके प्रारम्भम फूल आने लगता है। और वसन्तऋतुके अन्तमें चनेकी बराबर फल आते हैं, पश्चात् बढकर १०-१० तोले तकके होजाते हैं । अपक्क अवस्थामें हरा रंग होताहै और पकनेपर पीला पडजाता है और कोई हरेही रहते हैं । फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर मींग निकलती है उसको बिजली कहते हैं ।

दूसरे कलमी, मालदये, विलायती, अनेकप्रकारके दूसरे द्वीपोंसे आये हुये आम हैं । वह इनकी अपेक्षा अधिक बडे और विशेष मधुर होते हैं। परन्तु अनेकप्रकारके कार्य्योंमें यह देशीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते हैं ।

आम्रातकनामानि ।

आम्रातकःपीतनकःकपिचूतोम्लवाटकः ।
वर्षपाकीकपिचूडातनुक्षीरीकपिप्रियः ॥

अर्थ-आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक, वर्षपाकी, कपिचूड, तनुक्षीरी, कपिप्रिय (पीतन, कपीतन, मधुराम्लक, आम्रवाटिक, भृङ्गीफल,

रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्बरातक, अम्बरीष, आम्रात, अम्रात, अम्रातक, अध्वगभोग्य, मर्कटाम्र और तुङ्गी)



संस्कृतभाषामें	आम्रातक ।
हिंदीभाषामें	अंबाडा ।
वंगभाषामें	आमडा ।
मराठीभाषामें	अंबाडा ।
कर्णाटकीभाषामें	आंबोडेयकायि ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमाटम् ।
गुजरातीभाषामें	अंभेडा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पोन्डिआस् मिनट् । Spondias minute
लैटिन्भाषामें	स्पोन्डिआस मैंगिफरा । Spondias mangifera

अस्यफलगुणाः ।

आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम् । पक्कंतुतुवरंस्वादु रसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भि बृंहणम् । गुरुबल्यंमरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—कच्चा अम्बाडा—खट्टा, वातनाशक, भारी, गरम, रुचिकारक और सारक है । पक्का अम्बाडा, कषेला, स्वादु, पाकमेंभी स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी, बलकारी तथा वात पित्त, क्षत, दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

आम्रातकोगुरुश्चोष्णस्तुवरोम्लोरुचिप्रदः । सरःकंठ्यःपि-

त्तकफरक्तकारीचसंस्मृतः ॥ आमवातस्यवातस्यचामस्य चविनाशनः । सपक्वस्तुवरःशीतोगुरुर्वृष्योबलंकरः॥ मधुरस्तृप्तिकफकृत्स्निग्धोधातुविवर्धकः । मलस्तम्भकरोवातकफपित्तविनाशनः ॥ रक्तरुग्दाहक्षतरुक्क्षयनाशकरो मतः । पर्णंतुकोमलंचास्यरुच्यंग्राह्यग्निदीपनम् ॥(नि०र०)

अर्थ-अम्बाडा-भारी, गरम, कषेला, खट्टा, रुचिकारक, सारक, कंठको हितकारी तथा पित्त, कफ और रक्तकारक है तथा आमवात, वात और आमनाशक है। पक्का अंबाडा-कषेला, शीतल, भारी वीर्य्यवर्द्धक, वलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक तथा वात, कफ, पित्त, रक्तविकार, दाह, क्षतरोग और क्षयरोगका नाश करे है। इसके कोमल पत्ते-रुचिकारक, ग्राही और अग्निप्रदीपक हैं।

विवरण। आम्रातक अर्थात् अम्बाडेके वृक्ष प्रायः पर्वत और वनोंमें वहुत होते हैं, पत्ते झिंगनीके पत्तोंके समान एक शाखामें वरावर दोनों ओर होते हैं, इसपर आमके तुल्य मौर आता है, फल कन्दूरीकी समान छोटे २ होते हैं, उनको अम्बाडा कहते हैं, इनका अचार डालते हैं, यह स्वादमें खट्टे होते हैं।

कोशाम्रनामानि।

कोशाम्रश्चघनस्कन्धोवनाम्रोजन्तुपादपः ।
क्षुद्राम्रश्चेतिरक्ताम्रोलाक्षावृक्षःसुरक्तकः ॥

अर्थ-कोशाम्र, घनस्कन्ध, वनाम्र, जन्तुपादप, क्षुद्राम्र, रक्ताम्र, लाक्षावृक्ष, सुरक्तक (कोषाम्र, कृमिवृक्ष, सुकोशक)।

हिन्दीभाषामें	कोशंभ।
वंगलाभाषामें	केओडा, जलपाई।
मराठीभाषामें	कोशाम्र।
गुजरातीभाषामें	कोशम।
कर्णाटकीभाषामें	जूरिमावु।
लैटिन्भाषामें	स्लीचराट्रिजगा।

अस्य गुणाः।

कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।

अर्थ-कोशाम्रवृक्ष-कुष्ठ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफका नाश करे है।

अस्य-अपक्कफलगुणाः ।

तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोष्णंगुरुपित्तलम् ।

अर्थ-इसका कच्चा फल-मलरोधक, वातनाशक, खट्टा, गरम, भारी और पित्तकारी है ।

अस्य पक्कफलगुणा. ।

पक्कंतुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-इसका पक्का फल-अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलका, गरम तथा कफ और वातका नाशक है ।

अन्यच्च ।

कोशाम्रमम्लमनिलापहरंकफार्त्तिपित्तप्रदंगुरुविदाहविशोफकारि । पक्कंभवेन्मधुरमीषदपारमम्लंपक्काऽदियुक्तरुचिदीपनपुष्टिदायि ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कोशंभ-खट्टा, वातविनाशक, कफकारक, पित्तजनक, भारी तथा दाह और शोफकारी है । पक्का कोशंभ-मधुर और कुछेक खट्टा है । लवणयुक्त कोशंभ- दीपन, रुचि और पुष्टिकारकहै ।

अन्यच्च ।

कोषाम्रंकफवातघ्नंदीपनंग्राहितत्परम् ॥ (रा० व० द० चं०)

अर्थ-कोशंभ-कफ और वातनाशक, अग्निप्रदीपक और मलरोधक है ।

कोशाम्रमज्जागुणाः ।

स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धःपित्तानिलापहः । (सु०सं०)

अर्थ-कोशंभकी मींग-पाकमें स्वादिष्ठ, अग्निकारक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, पित्त और वातनाशक है ।

अस्य तैलगुणा ।

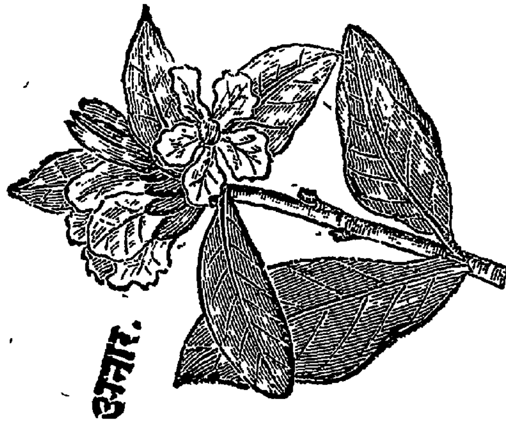
सरंकोशाम्रजंतैलंकृमिकुष्ठव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

तिक्ताम्लमधुरंबल्यंपथ्यंरोचनपाचनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कोशंभका तेल-सर (कुछेकदस्तावर), कृमिनाशक, कुष्ठघ्न, व्रणविनाशक, कडवा, खट्टा, मधुर, बलकारक, पथ्य, रोचन और पाचक है।

विवरण । कोशाम्र-जंगली आमको कहतेहैं उसके वृक्षभी आमके समान होतेहैं और पत्ते, फल छोटे छोटे देखनेमें आतेहैं।

दाडिमनामानि ।



दाडिमोदाडिमीसारःकुट्टिमःफलषाडवः । करकोरक्तबीज-श्चसुफलोदन्तबीजकः ॥ मधुबीजःकुचफलोरोचनःशुकव-ल्लभः । मणिबीजस्तथावल्कफलोवृत्तफलस्तथा ॥

अर्थ-दाडिम, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलषाडव, करक, रक्तबीज, सुफल, दन्तबीजक, मधुबीज, कुचफल, शुकवल्लभ, मणिबीज, वल्कफल, वृत्तफल, (पिण्डपुष्प, दाडिम्ब, पर्वरुट्, स्वाद्वम्ल, पिण्डीर, फलशाडव, मुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुकादन, फलसाडव, सुनील, मीलपत्र, नीलपत्रक, दन्तबीज और लोहितपुष्पक) ।

संस्कृतभाषामें	दाडिम ।
हिन्दीभाषामें	अनार ।
वंगलाभाषामें	दाडिम, डालिम् ।
मराठीभाषामें	डाळिंब ।
गुजरातीभाषामें	दाडयम ।
कर्णाटकीभाषामें	दाळिंब ।
तैलङ्गीभाषामें	डानिम्बचेट्टु, दाळिंबकाया ।
तामिलीभाषामें	मादळइ चेहेड्डि ।
औत्क०	दाळिंब ।
इंग्रेजीभाषामें	पमूग्रानेट । Pulmgranite
लैटिन्भाषामें	प्युनिकाग्रानेटम् । Punica granatum
फारसीभाषामें	अनार तुरस, अनारसीरी ।
अरबीभाषामें	रुमानहामीज, रुमानहुलु ।

अस्य गुणाः ।

दाडिमंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम् । तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखरोगघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु । कषायानुरसंग्राहिस्निग्धमेधाबलावहम् ॥ स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिंचित्पित्तकरंलघु । अम्लंतुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अनार–तीन प्रकारका होता है, एक मीठा दूसरा मीठा और खट्टा, तीसरा केवल खट्टा । तहां मीठा अनार–त्रिदोषनाशक, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कण्ठरोग और मुखरोगको दूर करे है । तृप्तिकारक, शुक्रजनक, हलका, किञ्चित् कषेला, मलरोधक स्निग्ध, मेधाजनक और वलवर्द्धक है । मीठा और खट्टा अनार–दीपन, रुचिकारक, किंचित् पित्तकारक और हलका है । खट्टा अनार–पित्तकारक, खट्टा तथा वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

दाडिमंहृद्यमम्लोष्णंवातघ्नंग्राहिदीपनम् ।
कषायानुरसंप्रोक्तंकफपित्ताविरोधिच ।

अर्थ–अनार–हृदयको हितकारी, खट्टा, गरम, वातनाशक, मलरोधक, अग्निदीपक, कषेला तथा कफ और पित्तको दूर करे है ।

द्विविधंतत्तुविज्ञेयंमधुरंचाम्लमेवच ।
मधुरंतुत्रिदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ॥
ज्वरघ्नंरोचनंपथ्यंपाकेलघ्वग्निदीपनम् । (रा.व.द्र.च.)

अर्थ–अनार–मधुर और अम्ल इन भेदोंसे दोप्रकारका है, तहां मधुर अनार–त्रिदोषनाशक है और खट्टा अनार–वातकफनाशक, ज्वरनिवारक, रोचक, पथ्य, हलका और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

स्वाद्वम्लंमधुरंचाम्लंत्रिविधंदाडिमीफलम् ।
मधुरंतुत्रिदोषघ्नंस्वाद्वम्लंवातपित्तजित् ।
असृक्पित्तकरंचाम्लंसंग्राहिसर्वमुच्यते । (नि०भै०)

अर्थ–अनार–तीनप्रकारका होताहै । एक खट्टा और मीठा, दूसरा मीठा

और तीसरा खट्टा, तहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है। और मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार-रक्तपित्तकारक और सर्व प्रकारके अनार मलरोधक हैं।

अन्यच्च ।

बल्यंपित्तानिलघ्नंलघुशिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी ।
मिष्टंविष्टम्भिशुक्रप्रदमकफकरंदाडिमंचातिपक्वं
हीनंतस्मादपक्वंतुवरमथमरुन्माथिरुच्यंयदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पक्का अनार-बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पियास, भ्रान्ति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है। मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्रवर्द्धक और कफकारक है। तरुण अनार-कषेला, वातनाशक, रुचिकारक और खट्टा है।

अपिच ।

दाडिमंतुवरंचाम्लंमधुरंतृप्तिकारकम् । स्निग्धंचदीपनंग्राहिहृद्यंचोष्णंरुचिप्रदम्॥ लघ्वग्निदीपकंप्रोक्तंकफकासश्रमापहम् । मुखकंठरुजंपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ मधुरंतच्चतृप्तिकरंधातुवृद्धिकरंलघु । तुवरंग्राहकंस्निग्धंमेध्यंबल्यञ्चमाधुरम् ॥ पथ्यंत्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम् । मुखरोगंकंठरोगंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ मधुराम्लंतत्तुरुच्यंदीपनंचमतंलघु । वातपित्तप्रशमनंतदम्लंपित्तलंमतम्॥ रक्तपित्तकरंचैवकफवातविनाशकम् । शुष्कंबालञ्चतत्प्रोक्तंरुच्यंचहृदयप्रियम् ॥ वातानुलोमनकरंमुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-अनार-कषेला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक, स्निग्ध, दीपन, मलरोधक, हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, हलका, अग्निप्रदीपक तथा कफ, खांसी, श्रम, मुखरोग, कंठरोग और पित्तको दूर करनेवाला है। मधुर

अनार-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, हलका, कषेला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, वलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कंठरोगको दूर करेहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है । कच्चा-सुखाया हुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादिगुणाः ।

तत्पुष्पञ्चपुनर्ज्ञेयंनासासृग्गतिनावनात् ।
दाडिमत्वक्कृमिघ्नाचग्राहीरक्तातिसारहा ॥ (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करेहैं । अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरेहैं ।

विवरण । अनार-मध्यमाकारका वृक्षहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पंजावी और कावुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं । जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूंघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै । वीज और छिलका खाँसीको खोतेहैं । इसकी जड कीडोंको नाश करतीहै ।

कदलीनामानि ।



कदलीसुफलारंभामोचावारणवल्लभा ।

सुकुमाराचर्म्मण्वतीतत्पत्रीनगरौषधिः ॥

अर्थ-कदली, सुफला, रंभा, मोचा, वारणवल्लभा, सुकुमारा, चर्म्मण्वती, तत्पत्री, नगरौषधि (वारणबुसा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, कदल, वारबुषा, वारणबुषा; सकृत्फला, गुच्छफला, हस्तिविषाणी, गुच्छदन्तिका, निःसारा, राजेष्टा, बालकप्रिया, ऊरुस्तम्भा, भानुफला, वनलक्ष्मी, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, वारवृषा, आयतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अम्बुसारा)।

संस्कृतभाषामें	कदली ।
हिन्दीभाषामें	केला ।
बंगभाषामें	कला ।
मराठीभाषामें	केळ, सोनकेळ, मुठेळी, लोखंडीं, चवई ।
गुजरातीभाषामें	केलय ।
कर्णाटकीभाषामें	कदली, मरवालेकाष्ठ, कावालेतब ।
तैलङ्गीभापामें	चक्राकेली, आरटीकाया, अरटिचेट्टु, बुरुगचेट्टु, दोंडतोंडे ।
तामिलीभाषामें	वाळे ।
पाह्लवी०	तल, तलमपज ।
लुसाई०	वाह्ला ।
बरमी०	हगापी ।
इंग्रेजीभाषामें	प्लेंटेन् । Plantain
लैटिन् भाषामें	मुसासेपियेन्टम् । Musasapientum मुसोपेरेडिस्याका । M. paridisiaca
फारसीभाषामें	मावज़, मोझ ।
अरबीभाषामें	तनां ।

अस्य साधारणफलगुणाः ।

कदलंमधुरंवृष्यंकषायंनातिशीतलम् ।
रक्तपित्तहरंहृद्यंरुच्यंश्लेष्मकरंगुरु ॥ (रा० व०)

अर्थ-केलेकी साधारणफली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित् कषेली, शीतल, रक्तपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, कफकारक और भारी है ।

अन्यच्च ।

कदलीशीतलागुर्वीवृष्यास्निग्धामधुःस्मृता ।

पित्तरक्तविकारश्चयोनिदोषंतथाश्मरीम् ॥
रक्तपित्तंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-कदली-शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पथरी और रक्तपित्तको दूर करे है ।

कोमलकदलीफलगुणाः ।

कोमलंकदलंशीतंमधुरंचकषायकम् ।
रुच्यमम्लंसमुद्दिष्टंपित्तनाशकरञ्चतत् ॥

अर्थ-केलेकी कोमल फली-शीतल, मधुर, कषेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक है ।

मध्यमकदलीफलगुणाः ।

तृड्रक्तपित्तादिगदप्रमेहान्फलंकदल्यास्तरुणंनिहन्ति ।
संग्राहिकंतिक्तकषायरूक्षंरक्तातिसारंशमयेज्ज्वरञ्च ॥

अर्थ-केलेकी तरुणफली-तृषा, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरको दूर करनेवाली है, ग्राही, कडवी, कषेली और रूखी है ।

अन्यच्च ।

मध्यमंकदलंकिञ्चित्तुवरंमधुरंगुरु ।
अग्निमांद्यकरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-केलेकी तरुण (कुछ कच्ची और कुछ पक्की) फली-किञ्चित् कषेली, मधुर, भारी और मन्दाग्निकारक है ।

अपक्वकदलीफलगुणाः ।

संग्राह्यपक्वञ्चसुशीतलञ्चकषायकंवातकफंकरोति ।
विष्टम्भिबल्यंगुरुदुर्जरञ्चआरण्यरम्भाफलमेवचैतत् ॥

अर्थ-कच्ची केलेकी फली-मलरोधक, शीतल, कषेली, वातकफकारक, विष्टम्भकारक, बलवर्द्धक, भारी, दुर्जर और जंगली केलेकेभी गुण इसीके समान जानने ।

पक्वकदलीफलगुणाः ।

रम्भापक्वफलंकषायमधुरंबल्यञ्चशीतंतथापित्तंचास्रविमर्द्द-
नंगुरुतरंपथ्यंनमंदानले । सद्यः शुक्रविवर्द्धनंक्लमहरंतृष्णा-
पहंकान्तिदं दीताग्नौसुखदंकफामयकरंसन्तर्पणंदुर्जरम् ॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-कषेली, मधुर, बलकारक, शीतल, रक्तपित्त-नाशक, भारी, मंदाग्निवाले मनुष्यको अहितकारी, तत्काल शुक्रवर्द्धक, क्लमहारक, तृष्णानिवारक, कान्तिजनक, अग्निदीपनवाले मनुष्यको हितकारी, कफरोगनाशक, तृप्तिकारक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

अपिच ।

कदलीवरपक्कफलंमधुरंरुचिरंमृदुवातहरंशिशिरम् ॥
क्षतजक्षयदाहनिवार्य्यस्त्रजायुतपित्तविकारनिवृत्तिकरम् ।
प्रदराश्मगदंनिहरेल्लघुचप्रतिबंधकरंबलदंनसरम् ।
अशनात्प्रथमंयदिभुक्तमिदंनशुभंशुभदंत्वशनाविरतौ ॥

अर्थ-केलेकी पक्कीफली-मधुर, रुचिकारक, कोमल, वातनाशक, शीतल तथा क्षतज, क्षय, दाह, रक्तपित्त, प्रदर और पथरीरोगको दूर करे है, हलकी, विबन्धकारक, बलवर्द्धक, सारक नहीं, और भोजनसे प्रथम खाई हुई केलेकी फली शुभ नहीं है और भोजन करते समय हित है ।

अन्यच्च ।

पक्कन्तुकदलंबल्यंतुवरंमधुरंगुरु । शीतंवृष्यंशुक्रवृद्धिकरं सन्तर्पणंमतम् ॥ मांसकान्त्यरुचीनाञ्चवर्द्धनंदुर्जरंमतम् । कफकृच्चतृषाग्लानिपित्तरक्तरुजस्तथा । मेहक्षुधानेत्ररोगनाशकंपरमंमतम् । मन्दाग्नीनांविकृतिदमृषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०रा०)

अर्थ-केलेकी पक्कीफली-बलकारक, कषेली, मधुर, भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य, सन्तर्पण तथा मांस, कान्ति और रुचिको बढानेवाली है, दुर्जर, कफकारक तथा ग्लानि, पित्त, रक्त, प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोगका नाश करे है और मन्दाग्नियुक्त मनुष्योंके विकार उत्पन्न करनेवाली है ।

अपिच ।

सामान्यकदलीफलगुणाः ।

हृद्यंमनोज्ञंकफवृद्धिकारिक्षान्तञ्चसन्तर्पणमेवबल्यम् ।
रक्तंसपित्तंश्वसनञ्चदाहंरम्भाफलंहन्तिसदानराणाम् ॥ आ.सं.

अर्थ-केलेकी फली-हृदयको हितकारी, मनोज्ञ, कफकारी, शान्तिकारक, तृप्तिदायक, बलवर्द्धक तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

सामान्यंकदलंप्रोक्तंकफकृन्मधुरंगुरु । स्निग्धंविष्टम्भिवृष्यं-चरुच्यंकिंचिच्चशीतलम् ॥ रक्तपित्तञ्चपित्तञ्चतृषांदाहंक्षत-क्षयम् । वातञ्चनाशयत्येववल्कंतिक्तंलघुःकटुः॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेकी फली-कफकारक, मधुर, भारी, स्निग्ध, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, किञ्चित् शीतल तथा रक्तपित्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षतक्षय और वातनाशक है । इसकी छाल-कडवी, हलकी और कटुरसान्वित है ।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याः कुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत्॥

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्तनाश, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

पुष्पंकदल्याःसुस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु । ग्राहितिक्तञ्चाग्निदीप्ति-करंवातविनाशनम् । किञ्चिदुष्णञ्चवीर्येस्याद्रक्तपित्तंक्षयंकृ-मीन् । पित्तंकफंनाशयतीत्येवञ्चऋषिभिर्मतम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, मलरोधक, कडवा, अग्निप्रदीपक, वातनाशक, किञ्चित् उष्णवीर्य्य तथा रक्तपित्त, क्षय, कृमि, पित्त और कफका नाश करनेवाला है ।

कदलीमोचकगुणाः ।

कदलीमोचकंहृद्यंकफघ्नंक्रिमिनाशनम् ।
तृष्णाप्लीहज्वरंहन्तिदीपनंवस्तिशोधनम् ॥ (रा०व०)

अर्थ-केलेका मोचा-हृदयको हितकारी, कफनाशक, क्रिमिनाशक, तृष्णानिवारक, प्लीहानाशक, ज्वरहारक, दीपन और वस्तिशोधक है ।

कदलीजलगुणाः ।

रम्भातोयंशीतलंग्राहितृष्णाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान् ।
अस्रस्रावंस्फोटकान्रक्तपित्तंदाहंहन्यादस्रयोनिंचशोषान् ॥

अर्थ-केलेका जल-शीतल, मलरोधक तथा तृषा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्णरोग, अतिसार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिरविकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है ।

कदलीकन्दगुणाः ।

बल्यःकदल्याःकन्दःस्यात्कफपित्तहरोगुरुः ।
वातलोरक्तशमनःकषायोरूक्षशीतलः ॥
कर्णशूलंरजोदोषंसोमरोगंनियच्छति ।

अर्थ-केलेका कन्द-बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्तविकारको दूर करनेवाला, कषेला, रूखा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कन्दःकदल्यारूक्षःस्याद्वातलस्तुवरोगुरुः । शीतोबल्योमधुःकेश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारकः ॥ कर्णशूलंचाम्लपित्तंदाहंरक्तरुजंतथा। सोमदोषंरजोदोषंकृमीन्कुष्ठञ्चनाशयेत्॥ नि.र.

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, कषेला, भारी, शीतल, बलवर्द्धक, मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि और कुष्ठको नष्ट करे है ।

कदलीसारगुणाः ।

सारंकदल्याःसंग्राहिचाप्रियंगुरुशीतलम् ॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्रातिसारमेहांश्चसोमकम् ।
अस्थिस्रावंरक्तपित्तंविस्फोटांश्चैवनाशयेत् ॥

अर्थ-कदलीसार-मलरोधक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, प्रमेह, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त और विस्फोटनाशक है ।

आरण्यकदलीगुणाः ।

आरण्यकदलीशीतामधुराबलवर्द्धिनी । वीर्य्यवृद्धिकरीरुच्यादुर्जराचगुरुःस्मृता । तृड्दाहशोषपित्तानांनाशिनीचप्रकीर्तिता । फलंतुतुवरंचास्यामधुरञ्चगुरुस्मृतम् ।

अर्थ-वनकदली अर्थात् जंगलीकेली-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, वीर्य-

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी तथा तृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है । इसका फल कषेला, मधुर और भारी है ।

काष्ठकदलीगुणाः ।

काष्ठस्यकदलीग्राहीहृद्यारुच्याचशीतला । अग्निमांद्यकरी गुर्व्वीदुर्जराचातिमाधुरी ॥ तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणांरक्तपित्तस्य नाशिनी । विस्फोटंचास्थिरोगंचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-काष्ठकदली (काठकेला)-ग्राही, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है ।

सुवर्णकदलीगुणाः ।

सुवर्णकदलीशीतामधुराचाग्निदीपनी ।
बल्यावृष्याचगुर्वीचतृड्दाहकफनाशिनी ॥ (नि०र०)

अर्थ-सोनकेला-शीतल, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह और कफका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तदेवचम्पकाख्यंतुवातपित्तहरंगुरु ।
वृष्यश्चैवातिशीतश्चमधुरंरसपाकयोः ॥ (रा०व०)

अर्थ-चम्पककेला, वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमेंभी मधुर है ।

अन्यच्च ।

सुवर्णमोचाकफवातहारिणीविष्टम्भिनीदीपनकारिणीच ।
सुदुर्जरादाहविघातिनीचरक्तञ्चपित्तंशमयेतनिश्चितम् ।

अर्थ-चम्पैकेला-पीलाकेला-कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक, दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है ।

महेन्द्रकदलीगुणाः ।

महेन्द्रकदलीचोष्णावातस्यचविनाशिनी ।
प्रदरंपित्तरोगंचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-महेन्द्रकदली-गरम तथा वात प्रदर और पित्तरोगका नाश करे है ।

कृष्णकदलीफलगुणाः।

कृष्णातुकदलीरुच्यातुवरामधुरालघुः।
वायोर्धातोर्वृद्धिकरीमेहपित्ततृषाहरा ॥ (नि० र०)

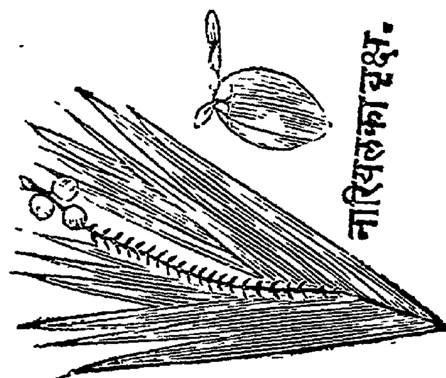
अर्थ-कालाकेला-रुचिकारक, कषेला, मधुर, हलका, वातकारक, धातुवर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

माणिक्यमुक्तामृतचम्पकाद्याभेदाःकदल्याबहवोपिसन्ति। उक्तागुणास्तेषुचिराद्भवन्तिनिर्दोषता स्याल्लघुताचतेषाम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-केलेकी माणिक्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं; उन सर्वोंमें उपरोक्तही गुण हैं किन्तु निर्दोष और हलकापन अधिक होता है

विवरण। केला सम्पूर्ण भारतवर्षमें और उत्तर खण्डके वन और पहाडोंमें अधिकतासे होता है, केलेकी अनेक जाति हैं, जैसे पहाडी केला-चम्पककेला, जंगली केला, वडा केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमें सब समान हैं, केलेका वृक्ष बहुत ऊंचा होता है, पत्ते दो चार गजतक लम्बे और आध आध गज चौडे होते हैं, यह वृक्ष खम्भके समान होता है और पत्तेमें पत्ते निकलते चले आते हैं, सिवाय पत्तोंके और कोई शाखा इसमें नहीं होती. केवल पत्तोंहीसे वेष्टित होता है, उसमें वक्कलके भीतर वक्कलही निकलता है कुछ सार नहीं होता, उसके वीचमें एक दण्डा निकलता है उस डण्डेपर एक हजार फली आती हैं वीचमें सबसे ऊपर कमलकलीसेभी वडा लाल रंगका एक फूल नोकदार बुरजीके तुल्य आताहै फली कच्ची अवस्थामें लाल होती हैं उसको तोडकर रखनेसे पीले रंगकी होजाती हैं पहाडमें मुनियोंके भोजनके लिये यह उत्तम पदार्थ है।

नारिकेलनामानि।



नारिकेलो दृढफलो लाङ्गली कूर्च्चशीर्षकः ।
जुङ्गः स्कन्धफलश्चैव तृणराजः सदाफलः ॥

अर्थ–नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकेलि, नारीकेली, नारीकारी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, शिरःफल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल, सुतुङ्ग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्य, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, मुत्कुण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, त्र्यक्षफल) ।

संस्कृतभाषामें	नारिकेल ।
हिन्दीभाषामें	नारियल, नरियल, खोपरा ।
वंगभाषामें	नारिकेल, नारकोल ।
मराठीभाषामें	श्रीफल, नारळ ।
गुजरातीभाषामें	नालीयर ।
कर्णाटकीभाषामें	तेंगिनकायि ।
तैलिंगीभाषामें	टेंकाया, नारिकदम ।
तामिलीभाषामें	टेन्ना, तेङ्गायि ।
औत्कलीभाषामें	नड़िया ।
इंग्रेजीभाषामें	कोकोनट् पाम । Coconut palm
लैटिन्भाषामें	कोकोसन्युसिफेरा । Coecsnusifera
फारसीभाषामें	जोजहिन्दी नारीगल ।
अरबीभाषामें	नारजिल् ।

नारिकेलसाधारणगुणा ।

नारीकेलं सुमधुरं गुरु स्निग्धञ्च शीतलम् ।
हृद्यं संबृंहणं वस्तिशोधनं रक्तपित्तनुत् ॥ (आ० सं०)

अर्थ–साधारण नारियल–मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारिकेलं गुरु स्निग्धं शीतं वृष्यं च दुर्जरम् । वस्तिशुद्धिकरं बल्यं बृंहणं कफकारकम् ॥ स्वादु विष्टम्भकृत्प्रोक्तं शोषतृट्पि-

त्तनाशनम् । वातपित्तंरक्तदोषंदाहञ्चैवविनाशयेत् ॥ क्षत-
क्षयंनाशयतीत्येवमुक्तंकृपालुभिः । (नि० र०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कठिनतासे पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्वादिष्ठ, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है।

अपिच।

स्निग्धंस्वादुरसंविपाकमधुरंहृद्यंजडंदुर्ज्जरंपित्तघ्नंकृमिवर्द्धनं
मदकरंवातामयध्वंसनम्। आमश्लेष्मविपाककोपशमनंव-
ह्नेःश्रमध्वंसनंकन्दर्पस्यबलंददातिनितरांतन्नारिकेलंफलम्।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हितकारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वातरोगनाशक, सारक, आम और कफके कोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, आमनाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है।

कोमलनारिकेलगुणाः।

विशेषतःकोमलनारिकेलंनिहन्तिपित्तज्वरमस्रदोषान्।
तृट्छर्द्दिदाहामयमाशुहन्यात्सरक्तपित्तप्रभवांश्चरोगान्॥
(रा० व०)

अर्थ-कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्नहुए रोगोंका शीघ्रही नाशकरे है।

पक्वनारिकेलगुणाः।

पक्वंचनारिकेलंतुदाहकंपित्तलंगुरु॥
वृष्यंमलस्तम्भकरंरुचिदंमधुरंमतम्।
दीपनंबलकृत्प्रोक्तंवीर्य्यस्यचविवर्द्धकम्॥ (नि० र०)

अर्थ-पक्वनारियल-दाहकारक, पित्तजनक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, मलस्तम्भक, रुचिदायक, मधुर, दीपन, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है।

शुष्कनारिकेलगुणाः।

नारिकेलफलंशुष्कंदुर्ज्जरंदाहकंगुरु।

स्निग्धंमलस्तम्भकरंबलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ-शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला-कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक, भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्नकरनेवाला है।

नारिकेलजलगुणाः।

स्निग्धंस्वादुहिमंहृद्यंदीपनंबस्तिशोधनम्।
वृष्यंपित्तपिपासाघ्नंनारिकेलोदकंगुरु॥ (सु०मु०)

अर्थ-नारियलका जल वा दूध-स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, बस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यासनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

दुग्धंतुनारिकेलस्यबल्यंरुच्यंगुरुस्मृतम्।
पाकेस्वादुसमुद्दिष्टंस्निग्धंवृष्यञ्चदाहकम्॥
किञ्चिदुष्णंवातकफगुल्मकासविनाशकम्। (नि०र०)

अर्थ-नारियलका दूध-बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है।

अपिच।

नारिकेलाम्बुतरुणंतृष्णाघ्नंपित्तनाशनम्। बालस्यनारिकेलस्यजलंप्रायोविरेचनम्॥शीतंवमथुमूर्च्छाघ्नंपित्तज्वरविनाशनम्।नारिकेलोदकंजीर्णंविष्टम्भिगुरुशीतलम्॥(रा०व०)

अर्थ-तरुण-नारियलका जल-तृष्णा और पित्तनाशकहै। बाल नारिकेल अर्थात्-कच्चे नारियलका जल-विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है। पकेनारियलका जल-विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है।

नारिकेलपुष्पगुणाः।

नारिकेलस्यपुष्पन्तुशीतंरक्तातिसारहृत्॥
रक्तपित्तंप्रमेहञ्चसोमरोगञ्चनाशयेत्।
मलस्तम्भकरंचापिप्रोक्तंपूर्वमनीषिभिः (नि० र०)

अर्थ-नारियलका फूल-शीतल तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोमको दूर करैहै और मलस्तम्भक है।

नारिकेलपुष्पजलगुणाः।

नारिकेलपुष्पजलंगुरुवृष्यंप्रकीर्तितम् ॥
तत्कालमदकृत्प्रोक्तंचातिस्निग्धमुदीरितम्।
तच्चेदम्लंकफकरंपित्तलंकृमिवातनुत् (नि० र०)

अर्थ-नारियलके फूलका जल-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल मदकारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है।

नारिकेलताडीगुणाः।

नारिकेलतरुतोयमतीवस्निग्धमाशुमदकृद्गुरुवृष्यम्।
साम्लभावमुपयात्यपराह्णेश्लेष्मपित्तजनकञ्चकृमिघ्नम् ॥

अर्थ-नारियलके पेडका जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल, मदकारक, भारी और वीर्य्यवर्द्धक है। और वही जल दोपहरके पीछे अम्लभावयुक्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है।

नारिकेलफलतैलगुणाः।

नारिकेलफलोद्भूतंतैलंवाजीकरंगुरु। पोषणंक्षीणधातूनांवा-
तपित्तप्रणाशनम् ॥ मूत्राघातेप्रमेहेचश्वासेकासेचयक्ष्मणि।
मेधालोपेचहितदंक्षतानांभरणंतथा ॥

अर्थ-नारियलका तेल-वाजीकर, भारी, क्षीणधातुवाले मनुष्योंको पुष्टिकारक, वातपित्तनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और मेधाके लोपमें हितकारी है तथा क्षतरोगको हरनेवाला है।

मधुनारिकेलगुणाः।

मोहजातीयकंनामनारिकेलंचशीतलम्।
मधुरंपुष्टिकृद्बल्यंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजंतुकरंस्निग्धंकफस्यामस्यकोपनम्।
कामवृद्धिकरंदेहस्थैर्य्यकृद्दाहनाशनम्।
तृषांपित्तंश्रमंवातमतिसारंचनाशयेत्।

अर्थ-मधुनारियल-शीतल, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, रुचिकारक,

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक, कामवर्द्धक, देहको स्थिर करनेवाला, दाहनाशक, तृषा, पित्त, श्रम, वात और अतिसारको दूर करनेवाला है।

विवरण। नारियलका वहुत वडा वृक्ष होता है आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा वम्बईमें वहुत हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं, इनमें शाखा नहीं होती, इनके ऊपरके भागमें खजूरकेसे पत्ते होते हैं, उनहीं पत्तोंके वीचमें नारियल लगते हैं, उन नारियलको फोडकर जो रस निकलताहै उसको नारियलका दूध कहते हैं, जव वे नारियल सूख जाते हैं, तव उनकी भीतरकी मींगको गोला अथवा खोपडा कहते हैं, यह फल मंगलादि कार्योंमें वहुत लिये जाते हैं।

ग्राम्यखर्ज्जूरीनामानि।

भूमिखर्ज्जूरिकास्वाद्वीदुरारोहामृदुच्छदा।
तथास्कन्धफलाकाककर्कटीस्वादुमस्तका॥

अर्थ-भूमिखर्ज्जूरिका-स्वादिष्ठ, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काककर्कटी, स्वादुमस्तका (खर्ज्जु, खर्ज्जू, खर्ज्जूरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रधर्षा, दुरारुहा, कषायी, निःश्रेणी, यवनेष्टा, हरिप्रिया)

पिण्डखर्ज्जूरिकानामानि।

पिण्डखर्ज्जूरिकात्वन्यासादेशेपश्चिमेभवेत्।

अर्थ-पिण्डखर्ज्जूरिका (पिण्डखर्ज्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिमदेशमें प्रसिद्ध हैं।

छोहारानामानि।



खर्ज्जूरीगोस्तनाकारापरद्वीपादिहागता ।
जायतेपश्चिमेदेशेसाछोहारेतिकीर्त्यते ॥

अर्थ-छुहारा गोस्तनाकारखर्ज्जूरी यह दो नाम छुहारेके हैं, छुहारा गौके थनोंकी समान आकारवाला होता है और दूसरे द्वीपसे आया है ।

संस्कृतभाषामें	खर्ज्जूरी, पिण्डखर्ज्जूरी, छोहारा ।
हिन्दीभाषामें	खजूर, पिंडखजूर, छुहारा ।
वंगभाषामें	खेजूर, पिण्डखेजूर, छोहारा ।
मराठीभाषामें	शिंदी, खजूरी ।
गुजरातीभाषामें	खजूरी, खजूर, खारक ।
कर्णाटकीभाषामें	इंचिल्ल, सिंहइंचिल्ल, करांइंचिल्ल ।
तैलिंगीभाषामें	इंटाचेट्टु, खजुरपुपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	डेट पाम । Date plam
लैटिन्भाषामें	फिनिक्स मोंटेना । Phoenix montena
	फिनिक्स डेकटिलिफेरा । P. Dactylifera
	फिनिक्स० सिल्वेस्ट्रिस् । P. Sylvestris
फारसीभाषामें	तमररुतव ।
अरवीभाषामें	खुर्मातर, खुर्माखुश्क ।

त्रिविधखर्ज्जूरीगुणाः ।

खर्ज्जूरीत्रितयंशीतंमधुरंरसपाकयोः । स्निग्धंरुचिकरंहृद्यं क्षतक्षयहरंगुरु ॥ तर्पणंरक्तपित्तघ्नंपुष्टिविष्टम्भशुक्रकम् । कोष्ठमारुतकृद्बल्यंवान्तिवातकफापहम् ॥ ज्वराभिघातक्षुत्तृष्णाकालश्वासनिवारकम् । मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत् ॥ महतीभ्यांगुणैरल्पास्वल्पखर्ज्जूरिकामता । तस्मादल्पगुणंज्ञेयमन्यत्खर्ज्जूरिकाफलम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी खर्जूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, भारी, तृप्तिकारी, पुष्टिकारक, विष्टंभकारक, शुक्रवर्द्धक, वलवर्द्धक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, कोठरोग, वातज्वर, अभिघात, वमन, वात, कफ, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, वातपित्त और मद्यपानजनितरोगोंको दूर करनेवाली है । दोनों वडी खजूरोंसे छोटी खजूरके गुण अल्प हैं और खजूरें छोटी खजूरकी अपेक्षा हीनगुणवाली हैं ।

अन्यच्च।

अपक्वखर्ज्जूरफलंत्रिदोषाणांप्रकोपनम्।
पक्वमेवहितंश्रेष्ठंत्रिदोषशमनंपरम्॥ (आ० सं०)

अर्थ-कच्चीखजूर-त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली। पक्की खजूर-हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है।

खर्ज्जूरीताडीगुणाः।

खर्ज्जूरीतरुजंतोयंमदपित्तकरंभवेत्।
वातश्लेष्महरंरुच्यंदीपनंबलशुक्रकृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खजूरकी ताडी-मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक और शुक्रवर्द्धक है।

खर्ज्जूरादिमस्तकगुणाः।

खर्ज्जूरिकादितालानांनारिकेलस्यमस्तकम्।
स्वादुपाकरसंप्रोक्तंरक्तपित्तहरंतथा॥

अर्थ-खजूर, ताड और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च।

गुवाकतालखर्ज्जूरनारिकेलशिरांसिच।
स्वादुतिक्तकषायाणिमूत्रातङ्कहराणिच॥
बलप्राणकराण्याहुःशुक्रवृद्धिकराणिच। (रा० ज०)

अर्थ-सुपारी, ताड, खजूर और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादु, कडवा, कषेला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है।

पिण्डखर्ज्जूरीगुणाः।

दाहघ्नीमधुरास्रपित्तशमनीतृष्णार्त्तिदोषापहाशीतश्वासक-
फश्रमोदयहरासन्तर्पणीपुष्टिदा॥ वह्नेर्मांद्यकरीगुरुर्विषह-
राहृद्याचधत्तेबलं स्निग्धावीर्य्यविवर्द्धिनीचकथितापि-
ण्डाख्यखर्ज्जूरिका॥

अर्थ-पिण्डखजूर, दाहनाशक, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, तृषानाशक, शीतल, श्वासनाशक, कफघ्न, श्रमहारक, तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मंदाग्निकारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक, स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है।

सुलेमानीखर्जूरीनामानि ।

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा ।

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला यह नाम सुलेमानी खजूरके हैं ।

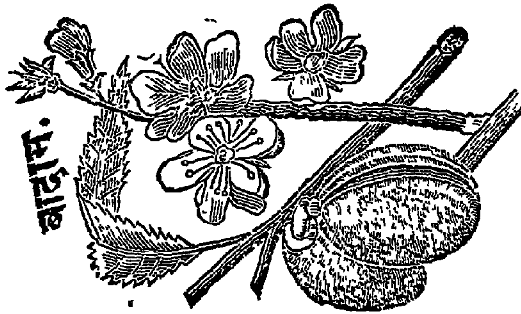
अस्या गुणाः ।

सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाम्लपित्तहृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-सुलेमानीखजूर-श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और अम्लपित्तनाशक है ।

विवरण । खजूर-पिण्डखजूर और छुहारेके वृक्ष सीधे लम्बे २ चले जाते हैं, उनमें पत्ते लम्बे और शाखाभी लम्बी होती है, वृक्षपर खपटेसे दो सरीफेके समान बक्कल जमा रहता है, ऊपर शाखाओंमें फल लगते हैं वह खानेमें उत्तम नहीं होते हैं, बखसे २ होते हैं इसलिये उनको धनाढ्य लोग नहीं खाते, दीनलोग खाते हैं. दूसरी पिण्डखजूर होती है उसके फूल तोडकर बोरियोंमें भर देते हैं, तीसरा छुहारा होता है यह दोनों खजूरके समान आकारवाला होते है ।

बादामनामानि ।



वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

अर्थ-वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, (सुफल, बादाम, वाताम, वातवैरी)

संस्कृतभाषामें	वाताद ।
हिंदीभाषामें	बदाम मीठे, बदाम कडवे ।
वंगभाषामें	बादाम ।
मराठीभाषामें	गोडे बदाम, कडु बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम मीठी, बदाम कडवी ।
तैलङ्गीभाषामें	वेदम ।
तामिलीभाषामें	नटवडुम ।

इंग्रेजीभाषामें	स्वीट् अलमंड ।	Sweet almond
	बीटर अलमंड ।	Bitter almond
लैटिन्भाषामें	एमिग्डेलस्ककम्युनी ।	Amigdahalus Communis
	एमिग्डेलस् एमेर ।	Amigdalus amarr
अरबीभाषामें	लोजलहलु, लोजलमुर ।	
फारसीभाषामें	बदामशीरी, बदामतल्ख ।	

बदामगुणाः।

वातादउष्णः सुस्निग्धोवातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः ।
वातादमज्जामधुरावृष्यापित्तानिलापहा ।
स्निग्धोष्णाकफकृन्नेष्टारक्तपित्तविकारिणाम्॥ (भा.प्र.)

अर्थ-बदाम-गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक और भारी है। बदामकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है।

अपिच ।

बादामःसारकश्चोष्णोगुरुरम्लःकफप्रदः। स्निग्धः स्वादुस्तुवरश्चशुक्रलोवातनाशनः ॥ उष्णवीर्यंचामफलंसारकंगुरुपित्तलम् । कफपित्तकरञ्चैववातनाशकमुत्तमम् ॥ तत्पक्वंमधुरंवृष्यं सुस्निग्धंपौष्टिकंमतम्। शुक्रलंकफकारीचरक्तपित्तंव्यपोहति ॥ शामकंवातपित्तस्यपूर्ववैद्यैरुदीरितम् । शुष्कञ्चतत्फलंप्रोक्तंमधुरंधातुवर्द्धकम्॥ स्निग्धंवृष्यञ्चबल्यञ्चपौष्टिकं कफकारिचावातपित्तस्यशमनंप्रोक्तंगुणविशारदैः॥(नि०र०)

अर्थ-बदाम-सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु, कषेला, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है। कच्चा बदाम-सारक, भारी, पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है। पक्का बदाम-मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्तपित्त और वातपित्तका नाश करे है। सूखा बदाम-मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है।

बदामतैलगुणाः ।

वातादतैलंमृदुरेचनंस्याद्वाजीकरंमूर्द्धगदंप्रहन्यात् ।

पित्तानिलघ्नंलघुदाहनाशिलावण्यदंमेहकरंसुशीतम् ॥

(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-बदामका तेल। मृदुरेची, वाजीकर, मस्तकरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हलका, दाहनाशक, लावण्यतादायक, प्रमेहकारक और शीतल है।

विवरण। बदामके बडे २ वृक्ष, काबुल और मलवारमें होते हैं। पत्ते लम्बे और गोल होते हैं, फूल मौरसे छोटा आता है। फलके बीज बदाम कहलातेहैं।

सेवफलनामानि।

मुष्टिप्रमाणंबदरंसेवंसिञ्चितिकाफलम्।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (सेवित, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर।	
हिन्दीभाषामें	सेव।	
वंगभाषामें	सेउ।	
मराठीभाषामें	मोठें बोर।	
गुजरातीभाषामें	शेव।	
इंग्रेजीभाषामें	ॲपल्।	Apple
लैटिन्भाषामें	पाइरस् मेलस्।	Pyrus malus
फारसीभाषामें	सेव।	
अरबीभाषामें	तुफाह।	

अस्य गुणाः।

सेवंसमीरपित्तघ्नंबृंहणंकफकृद्गुरु।

रसेपाकेचमधुरंशिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सेव। वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारी, भारी, रस और पाकमें मधुर, शीतल, रुचि और शुक्रकारक है, सेव प्राचीन नहीं है, क्योंकि सिवाय भावप्रकाशके और किसी ग्रंथमें नहीं देखाजाता।

अमृतफलगुणाः।

अमृतस्यफलंधातुवर्द्धकंमधुरंगुरु।

रुच्यंचाम्लंवातहरंत्रिदोषस्यचशामकम् ॥

अर्थ-नासपाती-धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रुचिकारी, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको शांति करनेवाली है।



विवरण। सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जातिहै, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै। सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें वहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दोस्थानमें भी वहुत होतीहैं, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षकी वरावर होतेहैं, पत्तेभी अमरूदके वरावर कुछ चौडे होतेहैं, काश्मीरका सेव वहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरश होता है, काश्मीरकी नासपातीभी वहुतही मधुर होती है, जिसे नाक कहतेहैं, वीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और वलदायक होताहै।

पेरुकफलनामानि।



पेरुकंदृढबीजंचमांसलंचापृथक्त्वचम्।
मृदुपीतंवर्तुलञ्चतुवरंमधुराम्लकम्॥

अर्थ-पेरुक, दृढवीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्त्तुल, तुवर, मधुराम्लक।

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, वीह, अमरूद ।
मराठीभाषामें	पांढरे पेरू, तांबडे, (गुलावी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामें	झामिपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guavá white Guava red
लैटिन्भाषामें	सिडियं पोमिफरं पाईरस कोम्बुनीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरबीभाषामें	कमशरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकंतुवरंप्रोक्तंस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
शुक्रलंवातपित्तघ्नंशीतलंचरसंमतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है ।

अन्यत्र ।

ततोमृतफलंस्वादुतुवरंचातिशीतलम् ।
तीक्ष्णंगुरुकफकरंवातदंमादनाशकम् ॥
वृष्यंरुचिशुक्रकरंत्रिदोषघ्नंप्रकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कषेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष वागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछेक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आतेहैं, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरंगनामानि ।

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक्, मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गन्ध, इरावत, वक्रवास, योगरंग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ)



नारंगी.

संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारंगी ।
बंगभाषामें	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामें	नारिंग ।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	माधवळ ।
तैलङ्गीभाषामें	दयाकाया, गजनिम्म, नारंजिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	किचिलि ।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी ।
इंग्रेजीभाषामें	ऑरेंज । Orange
लैटिन्भाषामें	साईट्रस् औरेंटियम् । Citrus aurantium
फारसीभाषामें	नारंज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्यफलगुणाः ।

नागरङ्गन्तुसुरभिविपाकेदुर्ज्जरंगुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरंवृष्यंवातविनाशनम् ॥

अर्थ–नारंगी–सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित्, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगंकफपित्तामकारकंदुर्ज्जरंसरम् । अत्यम्लंवातहरकंचा-

त्युष्णंचसतंबुधैः ॥ मधुरंतच्चामधुरंहृद्यमम्लंबलप्रदम् । विशदंगुरुरुच्यञ्चसरंचोष्णसुगन्धिकम् ॥ स्वादुचामंकृमीन्वातंश्रमंशूलञ्चनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-नारंगी (मधुर और अम्ल) दोनों प्रकारकी-कफ, पित्त और आमकारक है । कठिनतासे पचनेवाली, कुछेक दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक, अत्यन्त उष्ण और मधुर है । खट्टी नारंगी-हृदयको, हितकारी, अम्ल, बलवर्द्धक, विशद, भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण, सुगंधि, स्वादु तथा आम, कृमि, वात, श्रम और शूलका नाश करैहै ।

विवरण-नारंगीके वृक्ष मध्यमजातिके बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते नींबूके समान होतेहैं फूल अत्यन्त सुगन्धित, और सफेद रंगके आते हैं,फल गोल२ होतेहैं, कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल सिंदूरिया रंगके होजातेहैं, बागेश्वरकी नारंगी सर्वत्र स्थानोंमें प्रसिद्ध है ।

वीजपूरनामानि ।



वीजपूरोमातुलङ्गोरुचकःफलपूरकः ॥

अर्थ-वीजपूर, मातुलुंग, रुचक, फलपूरक (अम्लकेशर, वीजपूर्ण, पूर्णवीज, सुकेशर, वीजक, मातुलङ्ग, सुपूर, वीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामें	वीजपूर ।
हिन्दीभाषामें	विजोरा नींबु ।
वंगभाषामें	टावालेवु ।
मराठीभाषामें	महाळुंग ।

गुजरातीभाषामें	बीजोरुलिंबु ।
इंग्रेजीभाषामें	साईट्रस् । Citrus
लैटिन्भाषामें	साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
	साईट्रस मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामें	तुरंज ।
अरबीभाषामें	उत्तरंज ।

अस्य फलगुणाः ।

बीजपूरफलंस्वादुरसेऽम्लंदीपनंलघु ।
रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरंहृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् । (भा०प्र०)

अर्थ–विजोरानींबू–स्वादिष्ठ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलंचाम्लमुष्णंकंठविशोधकम् । तीक्ष्णंलघुप्रियं चाग्निदीपकंरुचिकारकम् ॥ स्वादुश्चजिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्हिक्काश्चैवविनाशयेत् ॥ अरुचिंरक्तपित्तंचनाशयेदितिकीर्तितम् । तच्चबालंमातुलुङ्गंपित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकंचैतेमध्यमस्यापिते गुणाः । पक्वंमहावर्णकरंहृद्यंबल्यञ्चपौष्टिकम् ॥ शूलाजीर्णविबन्धघ्नंवातंश्वासंकफञ्जयेत् । अग्निमांद्यञ्चशोफञ्चकासारोचकनाशकम् ॥ फलत्वग्दुर्जरातिक्तातीक्ष्णोष्णास्निग्धकागुरुः । कृमिवातकफान्हन्तित्वग्द्रवःसाधुशीतलः ॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः । वातपित्तहरः प्रोक्तःप्रोक्तोन्तर्भागकोमधुः ॥ वातंशूलंकफंछर्दिंमरोचस्यचनाशकः । केसरंदीपनंमेध्यंलघुग्राहिरुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरंश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविबन्धार्शो-

वांतीश्चनाशयत्यलम् । केसरस्यरसःपार्श्ववस्तिशूलकफा-रुचीः । वातंचश्वासकासंचछर्दिंश्चैवविनाशयेत् ॥ बीजंतु मातुलुंगस्यगर्भदंदुर्जरंगुरु । उष्णंतिक्तंदीपनंचबल्यमर्शो-रुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदितिकीर्तितम् । फलमज्जागुरुःशीतास्वाद्वीस्निग्धाबलप्रदा ॥ वातपित्तेना-शयेच्चमूलमर्शःकृमीहरम् । विषूचीमलबन्धश्चशूलंचैवविनाशयेत् ॥ पुष्पन्तुमातुलुंगस्यदीपनंग्राहिशीतलम् । लघुवातंरक्तपित्तंनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ—विजोरा नींबू—खट्टा, गरम, कंठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, प्रिय, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खाँसी, हिचकी, अरुचि और रक्तपित्तको दूर करेहै । कोमल विजोरा—पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करेहै । मध्यम—अवस्थाके विजोरेकेभी कोमल अर्थात् कच्चे विजोरेकी समान गुण हैं । पक्का विजोरा—देहको सुंदर करनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारक, पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विवन्ध, वात, श्वास, कफ, मंदाग्नि, सूजन, खाँसी और अरुचिको हरनेवाला है । विजोरेका वक्कल—दुर्जर, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर करे है । विजोरेके वक्कलका रस—स्वादु, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारक और वातपित्तनाशक है । विजोरेके वक्कलके अन्तरका भाग—मधुर तथा वात, शूल,कफ, वमन और अरुचिको दूरकरेहै । विजोरेकी केशर-दीपन, मेधाकारक, हलकी, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदररोग, श्वास, खाँसी, हुचकी, वात, मदात्यय, उन्माद, शोष, विवन्ध, अर्श और वमनको दूर करनेवाली है । विजोरेकी केसरका रस—पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अरुचि, वात, श्वास, खाँसी और वमनका नाश करे है । विजोरेके वीज—गर्भदायक, अतिकाठिनतासे पचनेवाले, भारी, गरम, दीपन, बलवर्द्धक तथा बवासीर, वात, पित्त, सूजन और कफका नाशकरेहै । विजोरेके बीजकी मींग—भारी, शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश करे है । विजोरेके वृक्षकी जड—अर्शरोग, कृमि, विषूची, मलबंध और शूलका

नाशकरेहै । विजोरेके फूल दीपन, मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे हैं ।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणा ।

सिन्धूत्थेनघनागमेचसितयाकालेशरत्संज्ञके हेमन्तेलवणार्द्र- हिंगुमरिचैःसिद्धार्थतैलान्वितैः ॥ एतैस्तैः शिशिरेमधावपि युतैर्ग्रीष्मेगुडेनान्वितंवैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदितंसर्वत्रसाधारणम्

अर्थ-विजोरेको-वर्षाऋतुमें सैन्धवलवणके साथ, शरदृऋतुमें मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमें लवण, अदरख, हींग और मिर्चके साथ, शिशिरऋतुमें और वसंतऋतुमें सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये ।

वनवीजपूरगुणाः ।

अम्लःकटूष्णोवनबीजपूरोरुचिप्रदोवातविनाशनश्च ।
स्यादामदोषक्रिमिनाशकारीकफापहःश्वासनिषूदनश्च (रा.नि.)

अर्थ-वनविजोरानींबु-खट्टा, चरपरा, गरम, रुचिदायक, वातविनाशक तथा आमदोष, कृमि, कफ और श्वासको दूरकरे है ।

मधुरमातुलुङ्गगुणाः ।

मधुरंमातुलुंगन्तुशीतंरुचिकरंमधु । गुरुवृष्यंदुर्जरञ्चस्वा- दिष्टंचत्रिदोषनुत् । पित्तंदाहंरक्तदोषान्विबन्धश्वासकास- कान् ॥ क्षयंहिक्कांनाशयेच्चपूर्वैरेवमुदाहृतम् ।

अर्थ-मधुरमातुलुंग-शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ट तथा त्रिदोष, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलबंध, श्वास, खांसी, क्षय और हुचकीको दूर करे है ।

विवरण । विजोरेके वृक्ष बागोंमें होते हैं, इसके पत्ते नींबुके पत्तोंसेही मिलते हैं, परन्तु लम्बाई चौडाईमें इससे आठ दशगुने होते है, फूल सपेद आता है, फल लम्बा और गोल होता है, किसी किसी देशमें जंगली विजोरा होता है, दूसरा मीठा विजोरा होता है ।

निम्बूकनामानि ।

निम्बूकंस्यादम्लजम्बीरकाख्यंवह्निदीप्योवह्निबीजोम्लसारः ।
दन्ताघातःशोधनोजन्तुमारीनिम्बूकःस्याद्रोचनोरुद्रसंज्ञः ॥

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निबीज, अम्लसार, दन्ताघात, शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन ।

जम्बीरनामानि ।





जम्बीरोदन्तशठोजम्भजम्भीरजम्भलश्चैव ।
रोचनकोमुखशोधीजाड्यारिर्जंतुजिन्नवधा ॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, दन्तकर्षण, गम्भीर, जम्भिर, रेवत, वक्रशोधी, दन्तहर्षक, जम्भी)

संस्कृतभाषामें	निम्बूक, जम्बीर ।
हिन्दीभाषामें	नींबु, कागजीनींबु, जम्भीरीनींबु, विहारीनींबु, कन्नानींबु, मीठानींबु ।
वंगभाषामें	कागजीलेबु, जामीरलेबु, पातीलेबु, कमलालेबु ।
मराठीभाषामें	कागदीलिंबु, ईडलिंबु, मोठेईडलिंबु, साखरलिंबु ।
गुजरातीभाषामें	कागदीलिंबु, दोडिंगालिंबु, मीठालिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	कचिले, कनिले ।
तैलिङ्गीभाषामें	निम्मपंडु, जंभिरम् ।
इंग्रेजीभाषामें	लेमन्स । Lemons
लैटिन्भाषामें	लेमोनं एसिडं । Lemonum acidum

लेमोनिस्कोर्टिक्स ।

फ़ारसीभाषामें लिमुनेतुर्श, लिमुनेशिरि ।

अरबीभाषामें लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणाः ।

निम्बूकमम्लंवातघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
निम्बुकंकृमिसमूहनाशनंतीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।
वातपित्तकफशूलिनेहितंकष्टनष्टरुचिरोचनंपरम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नीम्बु-खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हलका, कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमें हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानांदोषाश्रितानाञ्चस्रवज्जलानाम् ।
मलग्रहेबद्धगुदेहितञ्चविषूचिकायांमुनयोवदन्ति॥ (आ०स०)

अर्थ-नींबू-त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर, अनेक प्रकारके मंदाग्निके रोग, मुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदबद्धता और विषूचिकारोगमें अत्यंत हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलंरोचनमग्निवृद्धिंकरोतिपित्तञ्चसवातरक्तम् ।
अचाक्षुपंश्लेष्मकरंविशेषाद्भुक्तस्यपाकंकुरुतेचसद्यः ॥(सुषेण)

अर्थ-नींबू-रोचन, अग्निदीपक, पित्तजनक, वातरक्तकारक, नेत्रोंको अहितकारी,कफकारक और विशेष करके खायेहुए भोजनको पचानेवाला है।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानांविषविह्वलानाम्।
मंदानलेबद्धगुदेचदेयंविषूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥

अर्थ-नीम्बु-त्रिदोष, वह्नि, क्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योंको तथा विषसे विह्वल कियेहुए मनुष्योंको और मंदाग्नि, कोष्ठरोध तथा विषूचिका रोगमें देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

निम्बूर्णंपाचकंचाम्लंदीपनंनेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यञ्चक-

टुकंतुवरंचमतंलघु ॥ कफंवातंवमिंकासंकण्ठरोगंक्षयंतथा। पित्तंशूलंत्रिदोषञ्चमलस्तम्भंविषूचिकाम् । बद्धोदरंचाम- वातंगुल्मञ्चैवकृमीञ्जयेत् । तत्पक्कंचगुणैःश्रेष्ठंप्रोक्तंवैद्यवि- शारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नींबू-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कषेला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खाँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्त, शूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषूचिका, बद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का निम्बु गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

जम्वीरगुणाः ।

जम्बीरंमधुरंकिञ्चिदत्यम्लंपित्तकृद्गुरु ।
सुगन्धिदुर्जरंवह्निकफवातविवन्धनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-जम्भीरीनींवू--किञ्चित् मधुर, अत्यन्तखट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्जर तथा अग्नि, वायु और कफकी विवन्धताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

जम्बीरस्यफलंरसेम्लमधुरंवातापहंपित्तकृत्पथ्यंपाचनरोचनं बलकरंवह्नेर्विवृद्धिप्रदम् । पक्कंचेन्मधुरंकफार्तिशमनंपित्तास्र- दोषापनुद्वर्ण्यंवीर्य्यविवर्द्धनंरुचिकरंपुष्टिप्रदंतर्पणम् (रा०नि०)

अर्थ-जम्भीरीनींवू--अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचक, रोचन, वलकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्काजम्भीरीनींवू--मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टिकारक और तृप्तिदायक है ।

अपिच ।

जम्बीरमुष्णंगुर्वम्लंवातश्लेष्मविबन्धनुत्। शूलंकासकफो- त्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवैरस्यहृत्पीडांव- ह्निमान्द्यंकृमीन्हरेत् । स्वल्पजम्बीरिकातद्वत्तृष्णाछर्दिनि- वारिणी ॥ (रा०)

अर्थ-जम्भीरनिंबू-गरम, भारी, अम्ल; वातकफनाशक, विवन्धनिवारक

तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मंदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी वडीकी समान जानने, विशेषकरके यह तृषा और वमनको दूर करे है ।

लिम्पाकगुणाः ।

लिम्पाकंसुरभिस्वादुनात्यम्लंभक्तरोचनम् ।
वातश्लेष्महरंहृद्यंछर्दिघ्नंनातिपित्तकृत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक,हृदयको हितकारी,वमननिवारक और कुछेक पित्तकारक है ।

करुणगुणाः ।

करुणंकफवातास्रमेदोघ्नंपित्तकोपनम् । (रा० व०)

अर्थ–कन्नानींबू–कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

निम्बूकसाधारणगुणाः ।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत् ।
अरोचकंविषूचिकांकृमीश्चनिंबुनाशयेत् ॥

अर्थ–साधारणनींबू पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विषूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है ।

बृहज्जम्बीरगुणाः ।

बृहज्जम्बीरकंचाम्लंतुवरंतिक्तकंसरम् ।
उष्णंपित्तकफघ्नश्चपाचनंपरिकीर्त्तितम् ॥
येगुणालघुजंबीरेतेवृद्धेसन्तिचाखिलाः ।

अर्थ–वडाजम्भीरीनींबू–खट्टा, कषेला, कडवा, सारक, गरम, पित्तकफनाशक, पाचक । जो गुण वडे जम्भीरीनींबूमें हैं वही गुण छोटे जम्भीरीनींबूमें जानने ।

मधुकुक्कुटिगुणाः ।

मधुकुक्कुटिकाशीताश्लेष्मलास्यप्रसादनी ।
रुच्यास्वादुर्गुरुःस्निग्धावातपित्तविनाशिनी॥(रा०व०)

अर्थ–मीठाजम्भीरीनींबू–शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, भारी, स्निग्ध तथा वात और पित्तनाशक है ।

मिष्टनिम्बुगुणाः ।

मिष्टनिम्बूफलंस्वादुगुरुमारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसिकफोत्क्लेशघ्नरक्तहृत् ॥
शोषारुचितृषाछर्द्दिहरंबल्यञ्चबृंहणम् । (भा० प्र०)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विषविनाशक तथा कफ, उत्क्लेश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करेहै, वलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणाः ।

मधुकर्कटिकास्वाद्वीरोचनीशीतलागुरुः ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणाः ।

पत्रंजम्बीरजंतीक्ष्णंकृमिवातकफापहम् ।
सुरभिदीपनंरुच्यंमुखवैशद्यकारकम् ॥

अर्थ-जम्भीरीनींबूकेपत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले हैं ।

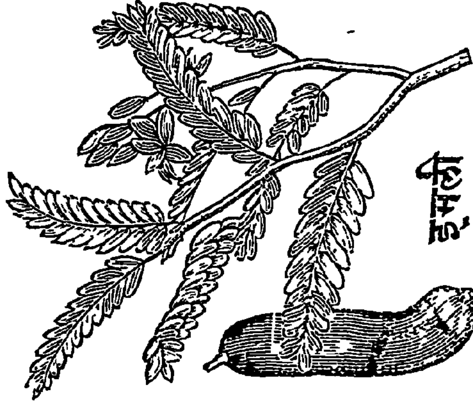
विवरण । नींबूके वृक्ष, वागोंमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमें वनमें भी देखपडते हैं, पत्ते सर्व प्रकारके नींबुओंके गोल होते हैं निंबुओंके पत्तोंमें केवल छोटे वडेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके वडे होते हैं, सर्वप्रकारके नींबुओंके फूल सफेद और सुगान्धियुक्त होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर पीले पडजाते हैं, नींबू, जम्भीर, कागजी, विहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, संतरा, विजोरा इत्यादि अनेक जातिके होते हैं ।

तिन्तिडीनामानि ।

अम्लिकाचुक्रिकाम्लीचचुक्रादंतशठापिच ।
अम्लाचचिंचकाचिंचातिन्तिडीकाचतिन्तिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचका, चिंचा, तिन्तिडीका, तिन्तिडी । (तिन्तिडीक, तिन्तिलिका, वृक्षाम्ल,

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका, आन्दिका, चुक्र, अत्यम्ला, मुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिडी, पंक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)



संस्कृतभाषामें	तिन्तिडी ।
हिन्दीभाषामें	इमली ।
वंगभाषामें	तेंतुल ।
मराठीभाषामें	चिंच ।
गुजरातीभाषामें	आंवली ।
कर्णाटकीभाषामें	हुणिसे, हुणिसेहण्णु, हुणिसिनयले ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिंताचेट्टु, चिण्ट ।
औत्कलीभाषामें	कंआं ।
तामिलीभाषामें	पुळि ।
वम्०	टिन्ट्ज ।
इंग्रेजीभाषामें	टेमेरिंड्ट्री । Tamarind Tree
लैटिन्भाषामें	टेमेरिंडस् इंडिकस् । Tamarindus Indicus
अरबीभाषामें	तमरहिंदी ।

अस्य फलगुणाः ।

अम्लिकाम्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्रकृत् ।
पक्वातुदीपनीरूक्षासरोष्णाकफवातनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची इमली-भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दूषित करेहै । पक्की इमली-दीपन, रूखी, कुछेक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अम्लिकायाःफलंबालंवातघ्नंकफपित्तकृत् ।
तत्पक्वंदीपनंरुच्यमत्युष्णंकफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पक्की इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीतेहै ।

अपिच ।

चिंचावृक्षोगुरुश्चोष्णश्चाम्लःपित्तकफप्रदः । रक्तकोपनकारीचवातनाशकरोमतः ॥ चिंचापुष्पन्तुतुवरंस्वाद्वम्लंच रुचिप्रदम् । विशदंचाग्निजनकंलघुवातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नंसमुद्दिष्टंपर्णंशोथहरंमतम् । रक्तदोषहरंचैवफलं चास्यतुकोमलम् ॥ अत्यम्लंग्राहकंचोष्णंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्यपित्तस्यकफरक्तस्यकोपनम् ॥ वातनाशकरंप्रोक्तंतत्पक्वंवातलंमतम् । कफपित्तकरंचैवतत्पक्वंमधुरंसरम् ॥ अम्लंहृद्यंभेदकश्चमलस्तम्भकरंमतम् । दीपनंरुचिदंचोष्णंरूक्षंवस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषं कफंवातंजन्तूंश्चैवविनाशयेत् । शुष्कंचिंचाफलंहृद्यंलघुभ्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृषाहरंक्लमहरंकृमिनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है । इमलीके फूल-कषेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हलके तथा वात, कफ, और प्रमेहको दूर करे हैं । इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं । कच्ची इमली-अत्यन्तखट्टी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, पित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है । तरुण इमली-बादी, कफ और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है । पकीहुई इमली मधुर, सारक, खट्टी, हृदयको हितकारी, दस्तावर, मलस्तम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रूखी, वस्तिशोधक तथा व्रण दोष, कफ, वात और कृमिनाशकरनेवाली है, सूखी इमली-हृदयको हितकारी, हलकी तथा श्रम, भ्रान्ति, तृषा, क्लम और कृमिका नाश करे है ।

चिंचातुनूतनावातकफस्यकारिणीमता ।
सावार्षिकीवातपित्तनाशिनीपरिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-नवीन इमली-वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली-वात-पित्तनाशक है ।

चिंचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरोमतः ॥

अर्थ-इमलीका क्षार-मंदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्वचिंचारसश्चाम्लोमधुरोरुचिकृन्मतः ।
व्रणनाशकरश्चैवलेपनाच्छोथपंक्तिहृत् ॥

अर्थ-पक्कीइमलीका रस-अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे-सूजन और पंक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिंचासारंदाहकफकारकंचातिअम्लकम् ।
वातनाशकरंप्रोक्तंसमानशर्करायुतम् ॥
दाहंपित्तंकफंचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-इमलीका सार-दाह और कफकारक, अत्यन्तखट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमे वरावरकी खॉड मिलालीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाताहै ।

विवरण । इमलीके वृक्ष वहुत वडे २ ऊँचे और सघन जंगल तथा नगरके निकट घर वाहर सर्वत्र स्थानोंमें होते हैं, पत्ते चौंटलीके समान डालियोंमें दोनों ओर वरावर लगे होते हैं, और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोंमें लगे होते है, रंगपीला २ उनमें कुछ लाल लाल विन्दुसे पडे होते हैं; फलियें कटोरके समान तिरछी और लम्वी होती हैं, उसको भी कटारा कहते हैं, उन कटारोंपर सूखे हुए छिलके होते हैं, छिलकोंको छीलनेसे गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी वीज निकलते हैं उनको चोइये कहते हैं, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदेकी दूसरी सपेद गूदेकी ।

आलुकनामानि ।

आरुकंवीरसेनश्चवीरंवीरारुकंतथा ।
तच्चविद्याच्चतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदतः ॥

अर्थ-आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आलूक, मल्ल, भल्लूक भल्ल, रक्तफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति हैं ।

आलूबुखारा.



संस्कृतभाषामें	आरुक ।
हिन्दीभाषामें	आलुबुखारा ।
मराठीभाषामें	वीरारुक ।
गुजरातीभाषामें	आलु ।
कर्णाटकीभाषामें	आरुक ।
इंग्रेजीभाषामें	चेरिप्लम् । CherryPlum प्रुन Prune
लैटिन्भाषामें	प्रुनस् बूखेयेन्नसिस् । Prunus bookhariensis
	प्रुनस् कोम्युनीस् । Prunus Communis
फारसीभाषामें	आलुस्या ।
अरबीभाषामें	इज्जास् ।

आलुकगुणाः ।

आरुकोग्राहीतुवरोहृद्यः शीतोगुरुःस्मृतः । मलावष्टम्भको ग्राहीभेदीचोष्णःकफापहः ॥ पित्तहृत्पाचकश्चाम्लोमधुरश्च मुखप्रियः। मुखस्वच्छकरश्चैवमेहगुल्मार्शनुत्परः॥रक्तवात-रुजांहन्तासपक्वोमधुरोगुरुः।कफपित्तकरश्चोष्णोरुच्योधातु-विवर्द्धकः॥ प्रियश्चैवतथाप्रोक्तोमेहार्शज्वरवातहा । (नि०र०)

अर्थ—आलुबुखारा—मलरोधक, कषेला, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, मलस्तम्भक, ग्राही, दस्तावर, गरम तथा कफपित्तनाशक, पाचक, अम्ल, मधुर, मुखप्रिय, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा प्रमेह, गुल्म, बवासीर और रक्तवातका नाश करनेवाला है । पकाहुवा आलुबुखारा—मधुर, भारी, कफकारक, पित्तजनक, गरम, रुचिकारक, धातुवर्द्धक, प्रिय तथा प्रमेह, बवासीर, ज्वर और वातको हरनेवाला है ।

विवरण। आलुबुखारेके वृक्ष प्रायः बलख बुखारे और सिंहल द्वीपमें विशेष होते हैं। एक देशी आलुबुखारा इस देशमें होने लगा है।

भव्यनामानि।

भवंभव्यंभविष्यञ्चभावनंवक्रशोधनम्।
तथापिच्छलबीजञ्चतच्चलोमफलंस्मृतम्॥

अर्थ-भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्रशोधन, पिच्छलबीज, लोमफल (आविक, संपुटांग, कुसुमोदर)

संस्कृतभाषामें	भव्य।
हिन्दीभाषामें	ओट।
वङ्गभाषामें	चालते।
मराठीभाषामें	ओंटीचें झाड, ओंटीचें फळ।
गुजरातीभाषामें	ओंटफल, करमल।
फारसीभाषामें	चकी।
लैटिन्भाषामें	गारसीनिया झैंथोचाईमस् Garcinia Znathochymus

अस्य गुणाः।

भव्यमम्लकटूष्णंचबालंवातकफापहम्।
पक्वन्तुमधुराम्लञ्चरुचिकृच्छ्रमशूलहृत्॥ (रा०नि०)

अर्थ-कच्चा भव्यफल-अम्ल, चरपरा, गरम तथा वात और कफनाशक है। पक्का भव्यफल-मधुर, अम्ल, रुचिकारक तथा श्रम और शूलनाशक है।

अन्यच्च।

भव्यंस्वादुकषायाम्लंहृद्यमास्यविशोधनम्।
तदेवपक्वंदोषघ्नंगुरुग्राहिविषापहम्॥ (रा० व०)

अर्थ-भव्यफल-स्वादिष्ठ, कषेला, खट्टा, हृदयको हितकारी और मुखको शुद्धकरनेवाला है। पकाहुआ भव्यफल-त्रिदोषनाशक, भारी, मलरोधक और विषनाशक है।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होताहै, फूल सपेद और पीले रंगके वर्षाऋतुमें आतेहैं, उनमें सुगन्धि आतीहै, कलकत्ते और जगन्नाथकी ओर अधिक होताहै, फल ताडके फलके आकारका होताहै, फलके भीतरका गूदा चिकना होताहै। इसको खटाई इत्यादिकी जगह दालमें डालतेहैं।

वृक्षाम्लनामानि ।

वृक्षाम्लंतिन्तिडीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् ।

अर्थ—वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुक्राम्ल, तित्तिडीफल, शाकाम्ल अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, बीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्लफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लवीज, चुक्रफल)

संस्कृतभाषामें	वृक्षाम्ल ।
हिन्दीभाषामें	विषाम्विल । तत्तडीक ।
वंगभाषामें	महादा, (भ.) अम्लकुटा, (सार०सु-) चुका. (भा० दी०) तेंतुल, (सु) ।
मराठीभाषामें	आमसोल (को०) कोकंवसोल ।
गुजरातीभाषामें	कोकम ।
कर्णाटकीभाषामें	तित्तीडिक ।
इंग्रेजीभाषामें	कोकंवटरट्री । Kokum Butqs tree
लैटिन्भाषामें	ग्यारसीनिया परप्यूरिआ । Oarcinia Purpurea
गोवा०	ब्रिडोओ ।

अस्य गुणाः ।

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम्। पक्वन्तुगुरुसंग्राहिकटुकंतुवरंलघु ॥ अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत् । तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित् ।

अर्थ—कच्चा विषांविल—खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पक्का विषांविल भारी, मलरोधक, चरपरा, कषेला, हलका, खट्टा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्द्धक तथा तृषा, ववासीर, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है ।

विवरण । विषांविलके वृक्ष गोवाकी ओर होतेहैं देखनेमें अत्यन्त सुन्दर और झांदेदार होतेहैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आतेहैं और वसन्तऋतुमें फल लगते हैं, फल नारंगीके समान होतेहैं इसके सब अंग खट्टे होतेहैं ।

अम्लवेतसनामानि ।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रःशतवेधीसहस्रजित् ।

अर्थ–अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित् (अम्ल, वोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लांकुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शंखद्रावी, मांसद्रावी, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामें	अम्लवेतस ।
हिन्दीभाषामें	अमलवेंत ।
वंगभाषामें	थैकड़्, अम्लवेतस ।
मराठीभाषामें	चुका ।
गुजरातीभाषामें	अमलवेत ।
इंग्रेजीभाषामें	कामन् सोरेल । Common Soral
लैटिन् भाषामें	आसीडो झेफोलिया । AcidoZeyfolia
फारसीभाषामें	तुर्षक ।

अस्यफलगुणाः ।

अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् । हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् ॥ रूक्षंविण्मद्यदोषघ्नंप्लीहोदावर्त्तनाशनम् । हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत्॥कफवातामयध्वंसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् । चणकाम्लगुणंज्ञेयं लोहसूचिद्रवत्वकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–अमलवेंत–अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफ और वातरोगको हरनेवाला है । वकरेके मांसको गलानेवाला । जैसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसीप्रकार इसके रसमें सुई गेरनेसे गलजातीहै ।

अन्यच्च ।

अम्लवेतसमत्यम्लंकषायोष्णंचवातजित् ।
कफार्शःश्रमगुल्मघ्नमरोचकहरंपरम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्तखट्टा, कषेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, बवासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित् ।
तदेवसिद्धंदोषघ्नंश्रमघ्नंग्राहिगुर्व्वपि ॥ (रा० व०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है । पक्का अमलवेंत-त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है ।

विवरण । अम्लवेंतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होतेहैं, एक अम्लवेंत, दूसरी वेंती, यह छोटे होतेहैं यह पेड मालियोंके बागोंमें बहुत होतेहैं, फूल सफेद रंगके, फलगोल खर्बूजेके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पडजाताहै और चिकना होताहै ।

पनसनामानि ।



पनसःकंटकिफलः फणसोऽतिबृहत्फलः ।
अपुष्पःफलदश्चैवस्थूलकण्टफलस्तथा ॥

अर्थ-पनस, कंटकिफल, फणस, अतिबृहत्फल, अपुष्प, फलद, स्थूलकण्टफल, (कण्टाफल, आशय, मुरजफल, पलस, फलस, चम्पकालु, चम्पा, कोष चम्पालु, मृदङ्गफल, पानस, महासर्ज्ज, फलिन, फलवृक्षक, स्थूल, कण्टीफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल)

संस्कृतभाषामें	पनस ।
हिन्दीभाषामें	कटहर, कटहल, फटैल ।
वंगभाषामें	कांटाल ।

मराठीभाषामें फणस ।
गुजरातीभाषामें पणस ।
कर्णाटकीभाषामें हलसिनहण्णु ।
तैलिङ्गीभाषामें पनसकायि ।
औ० फणस ।
तामिलीभाषामें वला ।
लैटिन्भाषामें आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया । Artocorpus Lutergrifolia

अस्यफलगुणाः ।

पनसंशीतलंपक्कंस्निग्धंपित्तानिलापहम् । तर्पणंबृंहणंस्वादु मांसलंश्लेष्मलंभृशम् ॥ बल्यंशुक्रप्रदंहन्तिरक्तपित्तक्षतक्षयान् । आमंतदेवविष्टम्भिवातलंतुवरंगुरु ॥ दाहकृन्मधुरंबल्यंकफमेदोविमर्दनम् । पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच ॥ गुरूणिबद्धवर्चांसिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् । मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पक्का कटहर-शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षयकरे है । कच्चा कटहल-विष्टम्भकारक, वादी, कषेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक है । कठैलके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बाँधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं । कठैलकी मींग-वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कण्टाफलंसुमधुरंबृंहणंगुरुशीतलम् । दुर्ज्जरंवातपित्तघ्नंश्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्कन्तुकषायंस्वादुशीतलम् । कफपित्तहरञ्चैवतत्फलास्थ्यपितद्गुणम् ॥ तद्बीजंसर्पिषायुक्तंस्निग्धंहृद्यंबलप्रदम् । (रा० व०)

अर्थ-पक्का कटहल-मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्ज्जर, वात और पित्तनाशक तथा कफ,शुक्र और बलवर्द्धक है । कच्चा कठैल और उसके बीज-

कषैले, स्वादिष्ठ, शीतल तथा कफ और पित्तनाशक हैं । इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं ।

अपिच ।

पनसस्यफलंचाममलावष्टम्भकृन्मतम् । मधुरंदोषलंबल्यं तुवरंगुरुवातलम् ॥ कोमलंतच्चमधुरंगुरुबल्यंकफप्रदम् । मेदोवृद्धिकरंचैवदाहवातप्रपित्तनुत् ॥ तत्पक्वंशीतलंदाहिस्निग्धंवैतृप्तिकारकम् । धातुवृद्धिकरंस्वादुमांसलञ्चकफप्रदम् ॥ बल्यंपुष्टिकरंजन्तुकारकंदुर्जरंवृषम् । वातंक्षतक्षयंरक्तपित्तं चाशुव्यपोहति ॥ तस्यबीजन्तुमधुरंवृष्यंविष्टम्भकंगुरु । तस्यपुष्पंगुरुस्तिक्तंमुखशुद्धिकरंमतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कषेला भारी और बादी है । कोमल कठैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफकारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है । पक्का कठैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है । इसके बीज-मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं । इसके फूल-भारी, कडवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं ।

विवरण । कटहरके वृक्ष बहुत बडे २ होते हैं, प्रायः बागोंमें माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फूल आतेही नहीं, कटहल बहुत बडा फल होता है और वह गूलरके समान लकडीको फोडकर निकलता है, फल हरे रंगका निकलता है, ऊपर कडे २ कांटे होते हैं, कटहरपर हेमन्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है ।

लकुचनामानि ।

लकुचःक्षुद्रपनसोलिकुचोडहुरित्यपि ।

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु (लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कषायी, दृढवल्कल, कार्श्य, शाल, शूर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल)

संस्कृतभाषामें	लकुच ।
हिंदीभाषामें	बडहर ।

वंगलाभाषामें डेओ, मादार ।
मराठीभाषामें वटार, फल, क्षुद्रफणस ।
गुजरातीभाषामें लकुच ।
लैटिन्भाषामें आर्टोकार्पस्लकुचा । ArtocarpusLacooeha

अस्य गुणाः ।

आमंलकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा । मधुरञ्चतथाम्लञ्चदोषत्रितयरक्तकृत् ॥ शुक्राग्निनाशनञ्चापिनेत्रयोरहितंस्मृतम् । सुपक्वंतत्तुमधुरमम्लंचानिलपित्तहृत् ॥ कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टम्भकञ्चतत् । (भा. प्र.)

अर्थ–कच्चा वडहर–गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोषकारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंको अहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक है । पक्का वडहर–मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वह्निवर्द्धक, रुचिकारी, वीर्य्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है ।

अन्यच्च ।

लकुचंगुरुविष्टम्भिस्वाद्वम्लंरक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारिसमीरघ्नमुष्णशुक्राग्निनाशनम् ।

अर्थ–वडहर–भारी विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफकारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है ।

अपिच ।

लिकुचंगुरुविष्टम्भित्रिदोषंशुक्रदूषणम् ।

अर्थ–वडहर–गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोषवर्द्धक और शुक्रको दूषितकरे है ।

विवरण । वडहरके वृक्ष–वहुत ऊंचे २ और झांदेदार होतेहैं प्रायः वागोंमें वहुत देखनेमें आतेहैं, पत्ते–पाखरके समान और फल–गांठदार गोल २ कैथके वरावर होतेहैं, कच्ची अवस्थामें हरे २ होतेहैं । इनको पेडपरसे तोडकर पालमें रखकर पकालेतेहैं, इसके भीतर दश वीस सफेद रंगके वीज निकलतेहैं, यहभी कटहरका भेदहै, इसके फूलको लकुच कहतेहैं, यह पीलेरंगके होतेहैं ।

तिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोनिलसारश्चकालस्कन्धोतिमुक्तकः ।

स्फूर्जकःस्फर्जनः सृष्टः स्यंदनोरावणोरवः ॥
कृष्णत्वक्कृष्णसारश्चसुसारश्चविरूपकः ।

अर्थ-तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शितिसारक, स्फूर्जक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुकी, नीलसार, स्वर्ग्यक, रावण, स्यन्दनाह्वय)

संस्कृतभाषामें	तिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	तेंदू ।
वंगभाषामें	गाव, तेंद ।
मराठीभाषामें	टेंभुर्णी, आपन ।
गुजरातीभाषामें	टिंवरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	तुंबुरु ।
तैलङ्गीभाषामें	तमिक ।
तामिलीभाषामें	तुम्बिक ।
इंग्रेजीभाषामें	एवनी । Edony
लैटिन्भाषामें	डायोस्पायीईरोस् एंब्रिओप्टेरिस् । Dtospyros Embryoperis
फारसीभाषामें	अवनुसुझाड ।

अस्य गुणाः ।

तिन्दुकस्तुवरस्तिक्तःस्निग्धोष्णोव्रणवातहा। संग्राहीदुर्जरोजिह्वाजाड्यकारीजडोगुरुः ॥ आमंचास्यफलंस्निग्धंकषायंलेखनंलघु। संग्राहिशीतलंरूक्षंविबन्धारुचिवातकृत्॥ पक्कंपित्तप्रमेहास्रह्यश्मघ्नंमधुरंगुरु । स्वादुपाकरसंस्निग्धं दुर्ज्जरंवातनाशकम् ॥

अर्थ-तेंदू-कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, वातहारक, मलरोधक, अतिकाठिनतासे पचनेवाला, जिह्वाको जडताकारक, जड और भारी है। इसका कच्चाफल-स्निग्ध, कषेला, लेखन, हलका, मलरोधक, शीतल, रूखा तथा विबन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है। इसका पक्का फल-पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार और अश्मरीनाशक है। स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध, दुर्जर और वातनाशक है।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णंलघुसंग्राहिस्निग्धंपित्ताग्निवर्द्धनम् ।
आमंकषायंसंग्राहितिन्दुकंवातकोपनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ—तेंदू—खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है । कच्चा तेंदू—कषेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है ।

अपिच ।

तिंदुकस्तुवरस्तिक्तःस्निग्धश्चोष्णोमधुःस्मृतः । वायुव्रणं हरत्यस्यफलंचामंकषायकम् ॥ लेखनंग्राहकंशीतंस्वादुरूक्षंलघुस्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकरंवातकृत्तिक्तकंमतम् ॥ तत्पक्वञ्चगुरुस्वादुमधुस्निग्धञ्चदुर्जरम् । कफकृन्मेहपित्तघ्नंरक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्ठस्यसारस्तुपित्तरोगहरोमतः । (नि० र०)

अर्थ—तेंदु—कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है । इसका कच्चा फल—कषेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हलका, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है । इसका पक्का फल—भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है । तेंदूकी लकडीका सार, पित्तरोगनाशक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-अत्यन्त ऊंचे २ होते हैं, पत्ते—गोल २ नोकदार सीसमकेसे होते हैं, छाल—काली २ होती है, उसमें खार होता है, इसकी लकडी स्थानादिकोंके बनानेके काममें आती है, इसके भीतरका सार काला और वजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको आवनूस कहते हैं, तेंदूके फल गोल और शोभायमान नींबूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड जाते हैं ।

काकतिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रकः ।
काकेंदुकेतिविख्यातःकुपीलुःकाकपीलुकः ॥

अर्थ—काकेन्दु, जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकड, काकतिन्दु, काकस्फूर्ज, काकाह्व, काकवीजक, कुलक)

संस्कृतभाषामें	काकतिन्दुक ।
हिंदीभाषामें	मकरतेंदुआ, काकतेंदु ।
वंगभाषामें	केंद, माकडागाव, माकडातेंदु ।
मराठीभाषामें	काकटेंभुर्णी ।
गुजरातीभाषामें	काकटिंबरवो ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुमि, तुमुकि ।
तामिलीभाषामें	तुम्बि ।

अस्य गुणाः ।

स्यात्काकतिन्दुकंतिक्तंशीतलंवातलंलघु ।
विपाकेकटुकंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् ॥

अर्थ-मकरतेंदुवा-कडवा, शीतल, वादी, हलका, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है ।

अन्यच्च ।

काकतिन्दुःकषायाम्लोगुरुर्वातविकारनुत् ।
पक्वस्तुमधुरःकिञ्चित्कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

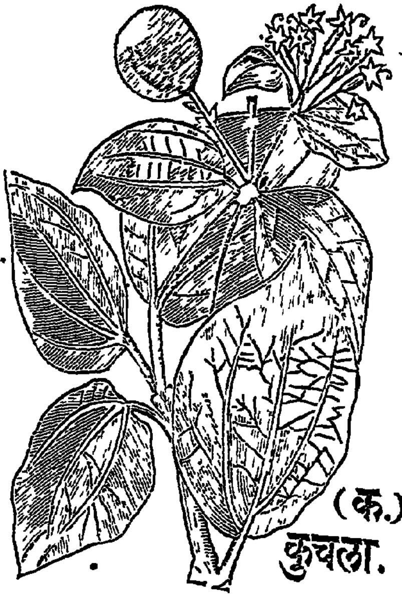
अर्थ-काकतेंदू (मकरतेंदुआ)-कषेला, खट्टा, भारी, वातविकारनाशक । पक्वातेंदू-किञ्चित् मधुर, कफकारक और पित्तवातहारक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष-जंगलमें होते हैं, इसकी छाल काली और छालमें खार होता है, वृक्षके भीतरका सार वजनदार और काले सीसमकी समान होता है, उसको देशीभाषामें आवनूस कहते हैं, फल-गोल नींबूकी समान होते हैं । दूसरा काकतेन्दू कांटेयुक्त होता है, फल-तेंदूके फलसे छोटे होते हैं ।

कारस्करनामानि ।

कारस्करस्तुकिंपाकोविषतिन्दुर्विषद्रुमः ।
गरद्रुमोरम्यफलःकुपाकःकालकूटकः ॥

अर्थ-कारस्कर, किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, कुपाक, कालकूटक (कुपीलु, मर्कटतिन्दु, कचीर, वर्तुल, चिपिट)





संस्कृतभाषामें	कारस्कार।
हिन्दीभाषामें	कुचला।
वंगभाषामें	कुंचिले।
मराठीभाषामें	काजरा, कोरस्कार, कुचला।
गुजरातीभाषामें	झेरकोंचलां।
कर्णाटकीभाषामें	कांजिवार।
तैलिङ्गीभाषामें	मुंष्ठिगिंजा।
इंग्रेजीभाषामें	पाईझननट। Poison nut
लैटिन्भाषामें	स्टिकनास् नक्सवामिका Strychnos Nuxvomica
फारसीभाषामें	इफराकी।
अरवीभाषामें	कातिलुलकल्क फलूजमाही।

अस्य गुणाः।

विषतिन्दुर्महातिक्तः कफवातविषापहः ॥

अर्थ–कुचला–अत्यन्त कडवा तथा कफ, वात और विषविनाशक है।

अपिच।

कारस्करःकटूष्णश्चतिक्तःकुष्ठविनाशनः।
वातामयास्रकण्डूतिकफकार्श्यव्रणापहः ॥

अर्थ-कुचला-चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधिरदोष, कण्डू, कफ, कार्श्य, बवासीर और व्रणको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

कचिरःकटुकस्तिक्तोरूक्षोष्णोदीपनोलघुः।
भेदनस्तूदनोहन्तिपाण्डुरोगंचकामलाम् ॥

अर्थ-कुचिला-चरचरा, कडवा, रूखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक, तूदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवालाहै।

अपिच।

कारस्करोमदकरस्तुवरोग्राहकःस्मृतः । कटुस्तिक्तोलघुश्चोष्णःकुष्ठरक्तविकारहा ॥ कण्डूंकफंवातरोगंव्रणंचार्शो ज्वरंजयेत्। अस्यचामफलंग्राहितुवरंवातकृल्लघु ॥ शीतलंचसमुद्दिष्टंतत्पक्वंविषदंगुरु।पाकेचमधुरंप्रोक्तंकफंवातंप्रमेहकम् ॥ पित्तंरक्तविकारंचनाशयेदितिकीर्त्तितम्।(नि०रा०)

अर्थ-कुचिला-मदकारक, कषेला, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका, गरम तथा कोढ, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और ज्वरको दूर करेहै। इसका कच्चा फल-मलरोधक, कषेला, वातकारक, हलका और शीतल है। इसका पक्का फल-विषद, भारी, पाकमें मधुर तथा कफ, वायु, प्रमेह, पित्त और रक्तदोषनाशक है।

विवरण। कुचलेके वृक्ष-मध्यम आकारके होतेहैं, प्रायः वनोंमें बहुत देखनेमें आतेहैं, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर होतेहैं, इसके बीजोंको कुचला कहतेहैं।

मधूकनामानि।

मधूकोमधुवृक्षश्चमधुष्ठीलोमधुस्रवः। गुडपुष्पोरोध्रपुष्पो वानप्रस्थोथमाधवः ॥ मध्वगस्तीक्ष्णसारश्चडोलाफलोमहाद्रुमः। मधूकोन्योद्वितीयस्तुजलजोदीर्घपत्रकः ॥ ह्रस्वपुष्पफलःस्वादुर्गौलिकास्यान्मधूलिका:।

अर्थ-मधूक, मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प, वानप्रस्थ, माधव, मध्वग, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महाद्रुम (मधुक, मधु, मधुवार,

मध्वल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम हैं जलज, (दीर्घपत्रक, ह्रस्वपुष्पफल, स्वादु, गौलिका, मधूलिका, क्षौद्रप्रिय, पतंग, कीरेष्ट, गौरिकाक्ष, मंगल्य, मधुपुष्प, गैरिकाख्य)

संस्कृतभाषामें	मधूक, जलमधूल ।
हिन्दीभाषामें	महुआ, जलमहुआ ।
वंगभाषामें	मौल, मउल, मौया, जलमउल ।
मराठीभाषामें	मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ।
गुजरातीभाषामें	महुडो, जलमहुडो ।
कर्णाटकीभाषामें	महूइप्पे, जलमह्वे, तोरेइप्पे, यरडुइप्पे ।
तैलिङ्गीभाषामें	इपा, पिन्ना ।
तामिलीभाषामें	कट्टइलुपि ।
इंग्रेजीभाषामें	इलूपाट्री । Elloopatree
लैटिन्भाषामें	वेसिया लाटिफोलिया । Bassia latifolia
फारसीभाषामें	चकां ।

अस्य गुणा ।

मधूकोमधुरःशीतःश्लेष्मलोवीर्य्यदःस्मृतः । पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्तःपित्तदाहव्रणश्रमान् ॥ क्रिमिदोषंचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् । पुष्पंचमधुरंशीतंधातुवृद्धिकरंगुरु ॥ स्निग्धंविकाशिहृद्यंचदाहपित्तमरुत्प्रणुत् । फलमस्यगुरुशीतमहृद्यंशुक्रलंमतम् ॥ स्निग्धंरसेचपाकेचमधुरंधातुवर्द्धकम् । मलावष्टम्भकंबल्यंरक्तरुग्वातपित्तकम् ॥ तृषांदाहंश्वासकासंक्षतयक्ष्मापहंस्मृतम् । तदेवपक्वंबलदंपित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–महुवेका वृक्ष–मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कषेला, कडवा तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है । इसका फूल–मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवालाहै। इसका फल-भारी, शीतल, हृदयको अहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रस और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, बलवर्द्धक, रुधिरदोष, वात, पित्त,

तृषा, दाह, श्वास, खाँसी, क्षतक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पक्का फल-बलवर्द्धक तथा वात और पित्तनाश करे है।

अस्य त्वग्गुणाः।

मधूकंरक्तपित्तघ्नंव्रणशोधनरोपणम्।

अर्थ-महुवेकी छाल-रक्तपित्तनाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपण है।

अस्य तैलगुणाः।

मधूकतैलंमधुरंपिच्छलंतुवरंमतम्॥
कफपित्तज्वरंचैवदाहपित्तंचनाशयेत्।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छल, कषेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करेहै।

अस्य सारगुणाः।

मधूकसारोनस्येनभूतादिकफवातजित्॥

अर्थ-महुवेके सारकी नास लेनेसे-भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होताहै।

जलमधूकगुणाः।

ज्ञेयोजलमधूकस्तुमधुरोव्रणनाशनः।
वृष्योवान्तिहरःशीतोबलकारीरसायनः॥

अर्थ-जलमहुवा-मधुर, व्रणनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वमननाशक, शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है।

विवरण। महुएके वृक्ष-वनमें और पर्वतोंमें बडे २ ऊंचे होतेहैं पत्ते-बदाम अथवा वडके पत्तोंकी समान होतेहैं। फूलमें शहदके समान गन्ध आतीहै और इसमेंसे शरीफेके समान बीज निकलते हैं, इसके फलोंमें तेल निकलता है।

पीलुनामानि।

पीलुःशीतसहःस्रंसीधानीगुडफलस्तथा।
विरेचनफलःशाखीश्यामः करभवल्लभः॥

अर्थ-पीलु, शीतसह, स्रंसी, धानी, गुडफल, विरेचनफल, शाखी, श्याम, करभवल्लभ (पीलुक, कलभवल्लभ)

महापीलुनामानि।

अन्यश्चैवबृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः।

राजपीलुर्महावृक्षोमधुपीलुःषडाह्वयः ।

अर्थ—बृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु महावृक्ष, मधुपीलु ।

संस्कृतभाषामें	पीलु, बृहत्पीलु ।
हिन्दीभाषामें	पीलु, वडापीलु ।
वंगभाषामें	पीलुगाछ ।
मराठीभाषामें	लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मिरियेऊगनि, दोड्डुपीलु ।
तैलङ्गीभाषामें	गोलुगुचेट्टु, पिन्नवरगोण्ड ।
तामिलीभाषामें	कोकु ।
देशीभाषामें	झल ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रीपूचर Mustard tree of scripure
लैटिन्भाषामें	सालवेडोरेरापर्सिका Salvadora persica
	सालवेडोराओलिओइडिस Salvadora Oleoides
फारसीभाषामें	दरख्तेमिस्वाक् ।
अरबीभाषामें	ईराक ।

पीलुगुणाः ।

लघुपीलुस्तुकटुकःफषायोमधुरोऽम्लकः । सरःस्वादुर्दीप-
नश्चतिक्तस्तीक्ष्णश्चभेदकः ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णोविदाही-
चार्शगुल्मनुत् । स्निग्धःकफंवातरक्तंप्लीहानाहरुजंतथा ॥
उदरंविषबाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ।

अर्थ—लघुपीलु-चरपरा, कषेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ठ, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक, स्निग्ध, तथा बवासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर, और विषके दोषोंको दूर करेहै ।

बृहत्पीलुगुणाः ।

बृहत्पीलुस्तुमधुरोवृष्यःपित्तविषापहः ।
आमहादीपनोरुच्यस्तैलंचास्यलघुस्मृतम् ॥
कफवातरुजंहन्तिचेतिपूर्वबुधैःस्मृतम् । (नि०र०)

अर्थ-वृहत्पीलु-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विपघ्न, आमनाशक, दीपन, रुचिकारी है । इसका तेल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है ।

विवरण । पीलुके वृक्ष दो जातिके होते हैं एक छोटा और एक वडा, छोटे पीलूपर वहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पडजाते हैं, दूसरा वडा पीलू होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं ।

अखरोटनामानि ।

अखरोटःपार्वतीयःफलस्नेहोगुडाशयः ।
कीरेष्टःकर्परालश्चस्वादुमज्जःपृथक्छदः ॥

अर्थ-अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट,अक्षोटक, अखोट, आखोट, आक्षोट, आक्षोड, कन्दराल और आस्फोटक)

संस्कृतभाषामें	अक्षोट ।
हिंदीभाषामें	अखरोट ।
वंगभाषामें	आक्रोट ।
मराठीभाषामें	अक्रोड ।
गुजरातीभाषामें	अखोड ।
कर्णाटकीभाषामें	आखोट ।
द्रा०	उव्वकाई ।
इंग्रेजीभाषामें	वाल्नट् । Walnut वेलगाम वाल्नट् । Belgaum welnut
लैटिन्भाषामें	एल्युराइटीस् ट्रायलोवा । Aleurites triloba
	एल्युराइटीस् मोलक्काना । A. moluccana
फारसीभाषामें	चार्तगज ।
अरवीभाषामें	जोझअक्रुपम् मगज, जोझगीर्द गांवचार ।

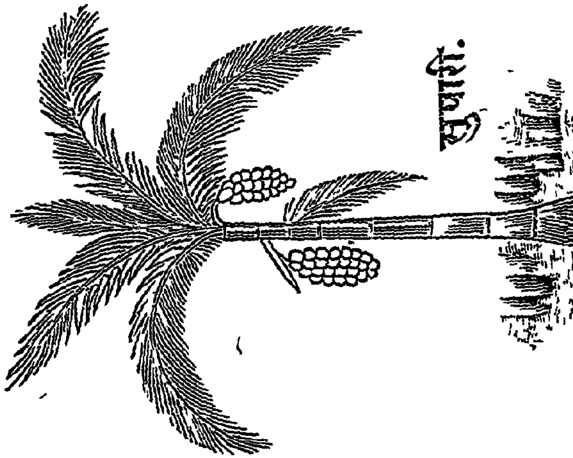
अस्य गुणाः ।

अखरोटोमधुरःकिञ्चिदम्लःस्निग्धश्चशीतलः । वीर्य्यवृद्धिकरश्चोष्णोरुचिदःकफपित्तकृत् ॥ गुरुःप्रियोबलकरःकफकृन्मलबद्धकृत् । वातपित्तंक्षयंवातंहृद्रोगंरक्तदोषकम् ॥ रक्तवातंचदाहंचनाशयेदितिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-अखरोट-मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, बलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय, वात, हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है ।

विवरण । इसके वृक्ष-काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल-सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते-गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल-गोल और मैनफलकी समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है । वह मींग बदामकी मींगकी समान मधुर होती है ।

गुवाकनामानि ।



गुवाकः खपुरः पूगी पूगश्च क्रमुकोऽस्य तु ।
फलं पूगीफलं प्रोक्तं सुद्वेगश्च तदीरितम् ॥

अर्थ-गुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, दृढवल्कल, वल्कतरु, चिक्कण, अकोट, तन्तुसार, सुरंजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, सुद्वेग और घोण्टाफल, कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	पूगीफल ।
हिन्दीभाषामें	सुपारी ।
वंगभाषामें	शुपारी ।
मराठीभाषामें	सुपारी ।
गुजरातीभाषामें	शोपारी ।
कर्णाटकीभाषामें	अडकेमर ।

तैलिङ्गीभाषामें	पाककाया।
औत्क०	गुया।
इंग्रेजीभाषामें	बिटलनट् पाम्। Betelnut Palm
लैटिन्भाषामें	एरिका केटेचु। Areca cate chu
फारसीभाषामें	पोपिल।
अरबीभाषामें	फोफिल।

अस्य गुणाः।

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तजित्। मोहनंदीपनंरुच्य-मास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आर्द्रंतद्गुर्व्वभिष्यन्दिवह्निदृष्टिहरं स्मृतम्। स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यंतदुत्तमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–सुपारी–भारी, शीतल, रूखी, कषेली, कफपित्तनाशक, मोहकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसताको दूर करेहै। कच्ची सुपारी भारी, अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्तिनाशक, औटाकर बनाई हुई सुपारी, जिसका मध्यभाग दृढ होवे ऐसीसुपारी उत्तम और त्रिदोषनाशक है।

पक्कपूगफलगुणाः।

पक्कन्तुवातलंरूक्षंभेदनंकफनाशनम् ॥

अर्थ–पक्की सुपारी–वादी, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है।

शुष्कफलगुणाः।

शुष्कमग्निकरंपूगंकषायंमधुरंपरम् ॥

अर्थ–सूखीसुपारी–अग्निवर्धक, कषेली और मधुर है।

अपक्कपूगफलगुणाः।

गुर्वभिष्यन्दिमधुरंतोयधृग्वह्निनाशनम् ॥

अर्थ–कच्ची सुपारी–भारी, क्लेदजनक, मधुर और अग्निनाशक है।

पूगस्य बालमध्यादिभेदमाह।

पूगमादौविषंघोरंद्वितीयेभेदिदुर्जरम्।
तृतीयादिषुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम् ॥

अर्थ–सुपारी–प्रथम अर्थात् कच्ची अवस्थामें विषकी समान अपकारी है। मध्यम अवस्थामें भेदक और दुर्जर है। और शुष्क अवस्थामें अमृतकी समान उपकारी और रसायन है। इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोड-कर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये।

अपिच।

पूगीफलंमोहकरंस्वादुरुच्यंकषायकम्। रूक्षंसरंचमधुरंगुरुपथ्यंचदीपनम्॥ किञ्चित्कटुचसम्प्रोक्तंमुखवैरस्यनाशकम्। वमिंक्लेदंत्रिदोषघ्नंमलंवातंकफंतथा॥ पित्तंदुर्गंधतांचैवनाशयेदितिकीर्तितम्। आर्द्रंपूगीफलंप्रोक्तंतुवरंकंठशुद्धिकृत्॥ अभिष्यन्दिसरंचैवगुरुदृष्ट्याग्निमांद्यकृत्। रक्तदोषंमुखमलंपित्तंचामंकफंतथा॥ आध्मानमुदरं चैवनाशयेदितिकीर्त्तितम्। शुष्कंपूगीफलंरुच्यंपाचकंरेचकंतथा॥ स्निग्धंचवातलंचैवकण्ठरुग्घ्नत्रिदोषनुत्। पर्णं विना केवलंतुभक्षितंशोफपाण्डुकृत्॥ पक्वंचार्द्रंपूगफलंछेदकंचत्रिदोषहृत्। शुष्कंपक्वीकृतंतत्तुस्निग्धंवातकरंमतम्॥ त्रिदोषनाशकंचैवतद्बालंसर्वदोषहृत्।

अर्थ-सुपारी साधारण-मोहकारक, स्वादिष्ठ, रुचिजनक, कषेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपरी, मुखकी विरसताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और दुर्गंधको दूर करनेवाली है। कच्ची सुपारी-कषेली, कंठशोधक, अभिष्यन्दि, सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मंदाग्निकारक तथा रक्तविकार, मुखमल, पित्त, आम. कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करेहै। सूखी सुपारी-रुचिकारी, पाचक, रेचक, स्निग्ध, वादी तथा कंठरोग और त्रिदोषका नाश करनेवाली है। विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न होताहै। पकाईहुई कच्ची सुपारी-छेदक और त्रिदोषनाशक है। पकाई हुई सूखीसुपारी-स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है। कोमलसुपारी-सर्वदोषनाशक है।

आंध्रोद्भवंपूगफलंपाकेतुमधुरंमतम्। किञ्चिदम्लश्चतुवरंकफवातविनाशकम्। मुखजाड्यकरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्॥

अर्थ-आन्ध्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-पचनेमें मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा कफवातनाशक और मुखको जडतादायक है।

चम्पावतीभवंपूगंपाचनंचाग्निदीपनम् ।
बलप्रदंरसाढ्यञ्चकफनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-चम्पापुरकी सुपारी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (बलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है ।

रोंठसंज्ञंपूगफलंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
कटुकंतुवरंचोष्णंपित्तलंमलरोधकृत् ॥

अर्थ-रोंठनामवाली सुपारी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कषेली, गरम, पित्तजनक और मलरोक है ।

वल्गुलग्रामजंपूगंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् ।
पाचनंचत्रिदोषघ्नंमलस्तम्भाममेदहृत् ॥

अर्थ-वल्गुलग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, पाचक, त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ, आम और मेदनाशक है ।

चन्दापुरभवंपूगंरसेचमधुरंमतम् ।
कटुकंतुवरंरुच्यंस्वादुचाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनंमुनिभिःप्रोक्तंकफनाशकरंमतम् ।

अर्थ-चंदापुरीसुपारी-रसमें मधुर, चरपरी, कषेली, रुचिकारी स्वादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है ।

गुहागरोद्भवंपूगंमधुरंतुवरंलघु ।
कटुकंद्रावकंचैवपाचकंविशदंमतम् ॥
मलस्तम्भंतथाध्मानवातंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-गुहागरीसुपारी-मधुर, कषेली, हलकी, चरपरी, द्रावक, पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ और आध्मान, वातनाशक है ।

नैलवद्ग्रामसंभूतंक्रमुकंकंठशुद्धिकृत् ।
पाचनंमधुरंरुच्यंसरंकान्तिकरंलघु ॥
त्रिदोषनाशकंचैवरसाम्लंचनिगद्यते ।

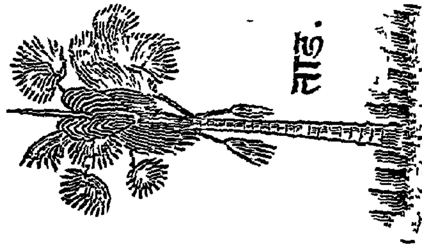
अर्थ-नैलवतग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-कंठशोधक, पाचक, मधुर, रुचिकारक, सारक, कान्तिकारक, हलकी, त्रिदोषनाशक और रसाम्ल है ।

पूगवृक्षस्यनिर्य्यासोमोहनः शीतलोगुरुः।
पाकेचोष्णःपित्तलश्चपटुश्चाम्लःप्रकीर्त्तितः॥
वातनाशकरश्चैवमुनिभिःपरिकीर्तितः।

अर्थ-सुपारीके पेडका गोंद-मोहजनक, शीतल, भारी, पाकके समय उष्ण, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशकहै।

विवरण। सुपारीके वृक्ष-ताड़ और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें बहुत होतेहैं, इसका वृक्ष खम्भके समान सीधा चलाजाताहै, इसके पत्ते-बडे २ नारियलकेसे होतेहैं, इसके ऊपर बडे २ बेरके शिरके सदृश फल कुछ लम्बाईलिये गोल २ आतेहैं, उसको छीलनेमें भीतरसे सुपारी निकलतीहै, सुपारीकी अनेक जातिहैं, जिहाजी, श्रीवर्धनी, मानगचन्दी, और अनेक प्रकारकी होतीहै।

तालनामानि।



तालस्तुलेख्यपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः॥

अर्थ-ताल, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तल, भूमिपिशाच, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, करपत्रवान्, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्य्यास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा)

श्रीतालनामानि।

श्रीतालोमधुतालश्चलक्ष्मीतालोमृदुच्छदः॥

अर्थ-श्रीताल, मधुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विशालपत्र, लेखाई, समीलेख्यदल, शिरालपत्रक, याम्योद्भूत)

हिन्तालनामानि।

हिन्तालःस्थूलतालश्चवल्कपत्रोबृहद्दलः॥

अर्थ-हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, बृहद्दल (पूगरोट, स्थिरांघ्रिक,

हिमहासक, हिन्ताल, स्थिरपत्र, शिरापत्र, अस्थिरांघ्रिक, गर्भस्त्रावी, मीनताल, भीषण, बहुकण्टक, अम्लसार, वृहत्ताल)

संस्कृतभाषामें	ताल, श्रीताल, हिन्ताल ।
हिन्दीभाषामें	ताड, श्रीताड; हिन्ताल ।
वंगभाषामें	ताल, श्रीताल, हेंताल ।
मराठीभाषामें	ताड, कांटेताड, काळाताड ।
गुजरातीभाषामें	ताड, श्रीताल, हिन्ताल ।
तामिलीभाषामें	पनम ।
इंग्रेजीभाषामें	पालमाईपाम Palmyra palm
लैटिन्भाषामें	बोरेसस फ्लेबेलिफोर्मिस BaralsusəFlabelle formis
फारसीभाषामें	ताल ।
अरबीभाषामें	तार ।

तालगुणाः ।

तालवृक्षस्तुमधुरःशीतलोमदकृद्गुरुः । पुष्टिकृच्छुक्रकफकृन्मेदकृद्बलकारकः ॥ वृष्यश्चसारकःपित्तदाहशोषविषश्रमान् । विषकुष्ठकृमीरक्तदोषवातांश्चनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-तालवृक्ष-मधुर, शीतल, मदकारक, भारी, पुष्टिकारक, शुक्रजनक कफकारक, मेदकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, सारक, तथा, पित्त, दाह, शोष, विष, श्रम, विषकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोष और वातका नाश करनेवाला है ।

अस्य फलगुणाः ।

वातहाबृंहणोबल्यः क्रिमिहाकुष्ठनाशनः ।
रक्तपित्तहरःस्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-ताडका फल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, क्रिमिनाशक, कुष्ठनाशक, रक्तपित्तहारक और स्वादुरसवाला है ।

अस्यामफलगुणाः ।

आममस्यफलंप्रोक्तंस्निग्धंस्वादुगुरुस्मृतम् । मलावरोधकंबल्यंशीतलंधातुवर्द्धकम् ॥ वृष्यंतृप्तिकरंमांसकफोत्पत्तिकरंस्मृतम् । वातंश्वासंरक्तपित्तंव्रणंदाहंक्षतंतथा ॥ पित्तक्षयंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-ताडका कच्चाफल-स्निग्ध, स्वादिष्ठ, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्य्यजनक, तृप्तिकारक, मांसवर्द्धक, कफकारक तथा वात, श्वास, रक्तपित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला है ।

अस्यपक्वफलगुणाः ।

पक्वंतालफलंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्जरंबहुमूत्रंचतन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तपित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिष्यन्दि और शुक्रदायक है ।

अस्यार्द्रफलबीजगुणाः ।

आर्द्रंतुफलबीजंचमूत्रलंशीतलंस्मृतम् ।
रसेपाकेचमधुरंकफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है ।

अस्य प॰ मज्जागुणाः ।

तालमज्जातुतरुणाकिंचिन्मदकरीलघुः ।
श्लेष्मलावातपित्तघ्नासस्नेहामधुरासरा ॥ (भा॰प्र॰)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और सारक है ।

तालफलोद्भवजलगुणाः ।

तालाम्बुपित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरंगुरु ॥ (रा.व.)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला है ।

तालमण्डिकागुणाः ।

श्लेष्मदोषकरीवृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणीतालमण्डिका ॥ (आ॰सं॰)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक बादी, श्लेष्मवर्द्धक, कासनाशक और उबकाईको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तालजंतरुणंतोयमतीवमदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतंतदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-नवीन ताडी-अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है ।

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथातालप्रलम्बश्चरूक्षंक्षतरुजापहम् ।

अर्थ-तालप्रलम्ब-रूक्ष और क्षतरोगनाशक है ।

तालपञ्जरगुणाः ।

तालवृक्षस्यशीर्षस्थःपंजरोधातुवर्द्धनः ।
वातपित्तहरश्चैववस्तिशुद्धिकरःपरः ॥

अर्थ-ताडके मस्तकका पंजर-धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और वास्तिशोधक है ।

तालवृन्तवायुगुणाः ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः । राजवल्लभ

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है ।

तालमूलगुणाः ।

तन्मूलंतुभवेत्स्वादुपाकेचरक्तपित्तहम् ।

अर्थ-ताडकी जड-स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ और रक्तपित्तनाशक है ।

श्रीतालगुणाः ।

श्रीतालोमधुरोत्यंतमीषच्चैवकषायकः ।
पित्तजित्कफकारीचवातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-श्रीताल-अत्यन्त मधुर, किञ्चित्कषेला, पित्तनाशक, कफकारक और कुछ २ वातको कुपित करनेवाला है ।

विवरण-ताडके बडे२ वृक्ष होते हैं, पत्ते बडे बडे लम्बे खजूरकी अनीकी समान कटीले लम्बे चौडे चार चार फूटके होते हैं, इनके पंखे आदि कितनेक पदार्थ बनाये जाते हैं । पहिले यहां ताडके पत्तोंपर समस्त ग्रन्थ लिखे जाते थे ताडकी नर और नारी यह दो जाति हैं नर जातिके वृक्षमें फल नहीं आते और नारीके वृक्षमें फल लगते हैं । नरमें शाखा नहीं होती । वृक्षके रसको ताडी कहेते हैं ।

हिन्तालगुणाः ।

हिन्तालोमधुराम्लश्चकफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारीचशिशिरोवातदोषनुत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक तथा श्रम और तृषाको दूर करे है ।

कपित्थनामानि ।



कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः ।
कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥

अर्थ-कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कपित्थ, कवित्थ, देवपादाढच, मालूर, मङ्गल्य नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल, कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, करञ्जफलक, अम्लसस्य)

संस्कृतभाषामें कपित्थ ।
हिन्दीभाषामें कैथ ।
वङ्गभाषामें कयेत्बाछ, कत्बेल ।
मराठीभाषामें कॅवठ, कविठ ।
गुजरातीभाषामें कोंट, काठ, कोठवडी ।
कर्णाटकीभाषामें वेललु ।
तैलङ्गीभाषामे एलांगाकाया ।

इंग्रेजीभाषामें वुडएपल एलिफंटएपल । Wood apple Elephant apple
लैटिन्भाषामें फेरोनिया एलिफेंटिनम् । Feronia Elephantnum

कपित्थफलसाधारणगुणाः ।

कपित्थमम्लंमधुरंकषायंविशदंगुरु ।
कासातिसारहृद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम् ॥ (आ०सं०)

अर्थ-कैथ-खट्टा, मधुर, कषेला, विशद, भारी तथा खाँसी, अतिसार, हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है ।

अपक्वकपित्थफलगुणाः ।

कपित्थमामंकण्डूघ्नंविषघ्नंग्राहिवातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्चरुचिप्रदम् (रा.)

अर्थ-कच्चाकैथ-कण्डूनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक । यह मधुर, अम्ल, कषाय और सुगंधयुक्त होनेके कारण रुचिकारक है ।

पक्वकपित्थफलगुणाः ।

तदेवपक्वंदोषघ्नंगुरुग्राहिविषापहम् । (राज)

अर्थ-पक्का कैथ-त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

कपित्थंमधुरंचाम्लंतुवरंग्राहिशीतलम् । वृष्यंतिक्तंपित्तवातव्रणनाशकरंमतम् ॥ फलमामंकपित्थस्यग्राहिचोष्णंचरूक्षकम् । लघ्वम्लंतुवरंचैवलेखनंवातपित्तकृत् ॥ जिह्वाजाड्यकरंरुच्यंविषस्वरकफप्रणुत् । तत्पक्वंरुचिदंचाम्लंकषायंग्राहिमाधुरम् ॥ कंठशुद्धिकरंशीतंगुरुवृष्यंचदुर्जरम् । श्वासंक्षयंरक्तरुजंवान्तिवातंश्रमंतथा ॥ हिध्मानंचविषंग्लानिंतृषांदोषत्रयंतथा । हिक्कांकासंनाशयतिबीजंचहृद्रुजापहम् ॥ शीर्षव्यथांविषंचैवविसर्पंचैवनाशयेत् । बीजतैलञ्चतुवरंग्राहकंस्वादुपित्तनुत् ॥ आखोर्विषंकफञ्चैवहिक्कांवान्तिचनाशयेत्। विषनाशकरंपुष्पंपर्णंवान्त्यतिसारनुत्॥ हिक्कांनाशयतीत्येवंप्रोक्तंपूर्वैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-कपित्थ-मधुर, खट्टा, कषेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है। इसका कच्चा फल-ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कषेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जडता कारक है, रुचिजनक तथा विष, स्वर और कफका नाश करे है, इसका पक्का फल-रुचिकारक, खट्टा, कषेला, ग्राही, मधुर, कंठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है। तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हुचकी और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करेहैं, इसके बीजोंका तेल-कषेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा मूसेका विष, कफ, हुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फूल-विषनाशक हैं। इसके पत्ते-वमन, अतिसार और हुचकीको दूर करे हैं।

विवरण। इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानमें पाये जाते हैं, फल वेलसे छोटे और सफेद रंगके लगते हैं, पत्ते छोटे और चिकने होतेहैं, फूल छोटे और सफेद रंगके आते है, वर्षाऋतुमें इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमें फल पकजाते हैं, कैथमें एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमें कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गूदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा।

कर्मरंगनामानि।



कारुकः कर्म्मरंगः स्याच्छिरालस्तुशुकप्रियः।

अर्थ-कारुक, कर्म्मरंग, शिराल, शुकप्रिय (बृहद्दल, रुजाकर, कर्म्मार, कर्म्मरक, पीतफल, कर्म्मर सुद्दर, धाराफल, कर्म्मारक)

संस्कृतभाषामें कर्म्मरङ्ग ।
हिन्दीभाषामें कमरख ।
वंगभाषामें कामराङ्गा ।
मराठीभाषामें कर्मरें ।
गुजरातीभाषामें कमरकखाटां मीठांवेछे ।
इंग्रेजीभाषामें करंबोला । Carambola
लैटिन्भाषामें एवरहोया करंबोला । Averrhoa Carambola

अस्य गुणाः ।

कर्मरङ्गन्तुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकेम्लपित्तकृत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कमरख-तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारकहै ।

अन्यच्च ।

कर्म्मारस्यफलंचामंग्राह्यम्लंवातनाशकम् ।
उष्णंपित्तकरंचैवतत्पक्वंमधुरंमतम् ॥
अम्लश्चबलपुष्टीनांरुचेश्चैवतुवर्द्धकम् । (नि०र०)

अर्थ-कच्ची कमरख-मलरोधक, खट्टी, वातनाशक, गरम और पित्तकारक है, पक्की कमरख मधुर, खट्टी तथा बल, पुष्टि और रुचिवर्द्धक है ।

विवरण । कमरखका वृक्ष अत्यन्त सुन्दर होताहै, पत्ते हरफारेवडीकी समान होतेहैं, फल चार पांच धारवाले होतेहैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जाते हैं ।

लवलीफलनामानि ।



सुगंधमूलालवलीपाण्डुःकोमलवल्कला

अर्थ-सुगंधमूला, लवली, पाण्डु, कोमलवल्कला (घना, स्निग्धा, स्कन्धफला)

संस्कृतभाषामें लवली ।

हिन्दीभाषामें हरफारेवडी ।
वंगभाषामें नोयाड, नोयाल, लोओयाड ।
मराठीभाषामें काथआंवळे, रायआंवळे रानआंवळे ।
गुजरातीभाषामें खाटीआंवली ।
लैटिन् भाषामें साईकाडिस्टिका । Ciceodist.cha

अस्य गुणाः-।

लवलीफलमस्रार्शः कफपित्तहरंगुरु ।
विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लन्तुवरंरसे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हरफारेवडी-रुधिरविकार, ववासीर और कफपित्तनाशकहै । भारी, विशद, रोचन, रूखी, स्वादिष्ठ, खट्टी और कषेली है ।

अन्यच्च ।

कषायंकफपित्तघ्नंकिञ्चित्तिक्तंरुचिप्रदम् ।
हृद्यंसुगन्धिविशदंलवलीफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-हरफारेवडी-कफपित्तनाशक, किंचित्कडवी, रुचिदायक, हृदयको हितकारी, सुगंधि और विशद है ।

अपिच ।

रायामलंतुतुवरंरुचिप्रदंप्रियंचाम्लम् । तिक्तंरूक्षंविशदंस्वा-
दुसुगंधिवातलंचोक्तम् ॥ स्वादिष्ठंलघुचोक्तंकफपित्तहरंच-
वातपित्तघ्नम् । मूत्राश्मर्य्यर्शोघ्नमृषिभिश्चोक्तंचपूर्वजैर्ग्रन्थे ॥
(नि० र०)

अर्थ-हरफारेवडी-कषेली, रुचिकारक, प्रिय, खट्टी, कडवी, रूखी, विशद. स्वादु, सुगंधित, वातवर्द्धक, स्वादिष्ठ, हलकी तथा कफ, पित्त, वातपित्त, मूत्राश्मरी और अर्शरोगनाशक है ।

विवरण । हरफारेवडीका वृक्ष अत्यन्त सुंदर होता है, पत्ते कसोंदीकी समान होतेहैं । फल गूलरके सदृश शाखाओंमेंसे निकलतेहैं ।

प्राचीनामलकनामानि ।

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम् ।

अर्थ-प्राचीन आमलकको-लोकमें पानीयामलक कहते हैं (वारीवदर)
संस्कृतभाषामें प्राचीनामलक ।

हिन्दीभाषामें पानीआमला ।
वंगभाषामें पानीआमला ।
मराठीभाषामें पाणआंवळे ।
गुजरातीभाषामें पाणिआंवला ।
इंग्रेजीभाषामें फ्लाकुर्श्या काटाफ्राक्टा । Flacourtia Cataphracta
फ्लारोमोंचिआई । F. Romontchi

अस्य गुणाः ।

प्राचीनामलकंदोषत्रयजिज्ज्वरघातिच ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पानीआमला-त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर करे है ।

अपिच ।

पानीयामलकंग्राहिस्वाद्वम्लंमुखशोधनम् । (रा०नि०)

अर्थ-पानीआमला-मलरोधक, स्वादु, अम्ल और मुखशोधक है ।

अन्यच्च ।

"प्राचीनामलकंरुच्यंस्निग्धंगुरुगरापहम् ।
वातघ्नंपित्तकफहृद्दुष्णंगुरुसमीरजित्" ॥ (म०पा०)

अर्थ-पानीआमला-रुचिकारी, स्निग्ध, भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारीहै ।

अपिच ।

पर्णामलकंमधुरंरुचिप्रदंगुरुचोष्णम् ।
विषत्रिदोषशमनंकफतृष्णावातहंप्रोक्तम् ॥
सुतरांतदेवपक्वंकफपित्तकरंविशेषतश्चोक्तम् ॥(नि०र०)

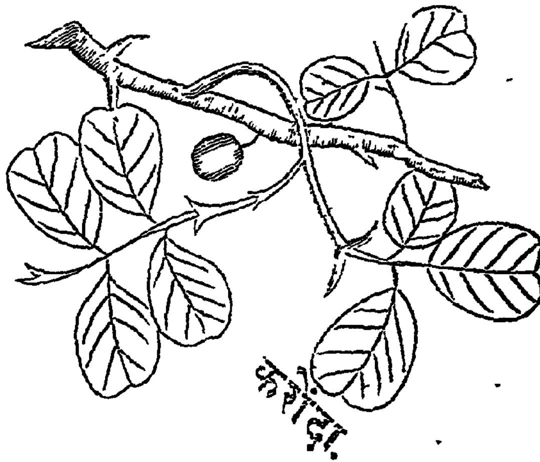
अर्थ-पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक, तथा कफ, तृषा और वातका नाश करनेवाला है । वही पकाहुवा विशेष-करके कफ और पित्तकारक है ।

विवरण-पानीआमलेके वृक्ष जलाशयके समीप होते हैं, इसमें कांटेभी होते लम्बे और फल लाल लाल बेरके समान कठिया होते हैं ।

करमर्द्दकनामानि ।

करमर्दोवनेक्षुद्राकराम्लःकरमर्द्दकः ।
तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्दिका ॥

अर्थ-करमर्द, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमर्द्दक, (कृष्णपाकफल, अविघ्न, सुषेण, करामर्द, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्णफलपाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, वोल, वश, करमर्दी, कराम्लक, पाणिमर्द, कण्टकी, अविघ्न, सुपुष्प, दृढकण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम्र-डिम, गुच्छी, क्षीरी, चहुदल) इससे छोटीको करमर्दिका कहतेहैं ।



संस्कृतभाषामें करमर्दक ।
हिंदीभाषामें करोंदा, करौंदा ।
वंगभाषामें करमूचा ।
मराठीभाषामें गोडाकरवंदा, कडूकरवंदा ।
गुजरातीभाषामें करमदी, करमदां ।
कर्णाटकीभाषामें करिजिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें वाका, पारिकचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें जास्मिन्फ्लावर्डकेरिसा । Jasmine flowered carisa
लैटिन्भाषामें केरिसा कोरंदास Carissa Corandas

अस्य गुणाः ।

करमर्द्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम् ।
उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् । (भा०प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पके, मधुर, रुचिकारी, हलके तथा पित्त और वातको जीतेहैं।

अन्यच्च।

करमर्द्दपिपासाघ्नमम्लंरुच्यंचपित्तकृत्। (रा०व०)

अर्थ-करोंदा-पिपासानाशक, खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारीहै।

अपिच।

करमर्दफलंचामंतिक्तंचाग्निप्रदीपकम्। गुरुपित्तकरंग्राहि चाम्लमुष्णंरुचिप्रदम्॥ रक्तपित्तंकफंचैववर्द्धयेत्तृड्विनाशकम्॥ तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुशीतंचपित्तहम्। रक्तपित्तं त्रिदोषश्चविषंवातंचनाशयेत्। तच्छुष्कंपक्वसदृशंगुणज्ञेयंविचक्षणैः॥ अत्यम्लस्यगुणाश्चैवज्ञेयाआमकराम्लवत्॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके कच्चे करोंदे-कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तकारक, कफजनक और तृषानाशक हैं। वही दोनों पकेहुये-मधुर, रुचिकारी, हलके, शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वातविनाशक हैं। सूखे करोंदेके गुण पके करोंदेकी समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेकी समान जानने।

अन्यच्च।

करमर्द्दफलंचार्द्रमम्लंपित्तकफप्रदम्।
भेदनंचोष्णवीर्य्यंचवातप्रशमनंगुरु॥
पक्वंतुक्तेल्पपित्तोचतन्मूलंकृमिनुत्सरम्। (शो०नि०)

अर्थ-कच्चाकरोंदा-खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, भेदक, उष्णवीर्य्य, वातनिवारक और भारी है। पक्का करोंदा-पित्तनाशकहै। इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है।

विवरण-करोंदेके वृक्ष बागोंमें बहुतहैं, फूल सफेद और सुगन्धित जुहीके समान आतेहैं, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगतेहैं, परन्तु वे दो जातिके होतेहैं, एक सफेद नोकोंपर लालीलिये अत्यन्त मनोहर होते हैं, दूसरे कच्चे हरे आधेलाल और पकनेपर काले पडजाते हैं।

बदरीनामानि ।

वदरीदृढबीजाचकण्टकीसुफलापिच ।
नखीव्याघ्रनखीघोण्टाकोलीगुडफलापिच ।

अर्थ-वदरी, दृढवीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

फलंतुबदरंकोलंसौवीरंफेनिलंकुहम् ।
कर्कन्धुःकोलिकुवलंपिच्छलाबदरीच्छदा ।

अर्थ-वदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, वदरीच्छदा, (सौवीरक, वालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, वादिर, गूढफल, दृढवीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, वदर, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामें	वद्री, वदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि,
हिंदीभाषामें	वेरीका पेड, वेर, छोटेवेर, पैमदी, वडे वेर ।
वंगभाषामें	कुलगाछ, कुलफल, वडकुलगाछ, वरुई, शियाकुल ।
मराठीभाषामें	वोरीचें झाड, वोर, रायवोर, लघुवोर ।
गुजरातीभाषामें	मोटीवोरडी, नानीवोडी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेगुचेट्टु, रंघ ।
औत्क०	कुडि ।
तामिलीभाषामें	रेयन्ति ।
इंग्रेजीभाषामें	जुजव । Jujob
लैटिन्भाषामें	झिझिफस् जुजुवा । Zizyphu-fujujba
फारसीभाषामें	कुनार ।
अरवीभाषामें	सीदरनवंक ।

वदरलक्षणानिगुणाश्च ।

पच्यमानंसुमधुरंसौवीरंवदरंमहत् । सौवीरंवदरंशीतंभेदनं-गुरुशुक्रलम् ॥ बृंहणंपित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवारणम् । सौ-

वीराह्वघुसंपक्कंमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुबदरंदाहिरुच्यमुष्णञ्चवातहृत् । कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धूःक्षुद्रबदरंकथितंपूर्वसूरिभिः । अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचतिक्तंचवातपित्तापहंस्मृतम्।शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित्॥(भा.प्र.)

अर्थ-बडा और पककर मीठा पडगयाहो ऐसे बेरको सौवीर कहतेहैं, सौवीरबेर-शीतल, भेदक, भारी, शुक्रजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, क्षय और तृषानिवारक है । सौवीरसे छोटे अर्थात् सामान्य बेर और पककर मीठे होगये हों ऐसे बेरोंको कोल कहते हैं । कोलबेर-दाह जनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भारी, और सारक हैं । छोटे बेरोंको कर्कन्धू, कहते हैं । कर्कन्धू-खट्टे, कषेले, मधुर, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक हैं । सर्वप्रकारके सूखेहुए बेर-भेदक, अग्निजनक, हलके तथा तृषा, क्लम और रुधिरदोषोंको दूर करते हैं ।

अन्यच्च ।

कर्कन्धूःकोलबदरमामंपित्तकफावहम् । पक्वंपित्तानिलहरं स्निग्धंसमधुरंसरम् ॥ तच्छुष्कंकफवातघ्नंनचपित्तेविरुध्यते । पुराणंतृट्प्रशमनंश्रमघ्नंदीपनंलघु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-छोटे, बडे और सामान्य कच्चे बेर-पित्त और कफवर्द्धक हैं वही पक्के-पित्तवातनाशक, स्निग्ध, मधुर और सारक हैं, वही सूखे-कफ और वातनाशक हैं और पित्तवर्द्धक नहीं हैं और वही पुराने तृषा--और श्रमनाशक, हैं, अग्निप्रदीपक और लघुपाकी हैं ।

अन्यच्च ।

अपक्वंश्लेष्माणंविरचयतिवातंवितनुते ततोमध्यावस्थं किमपिमधुराम्लंपवनहृत् । सुपक्वंपित्तघ्नंश्रममदवमिच्छेदि बलदं सरंतृष्णाजित्तद्बहबदरमश्नन्तिधनिनः ॥

अर्थ-अपक्व अर्थात् कच्चे बेर-कफकारक और वातनिवारक हैं । मध्यम अवस्थाके बेर-किञ्चित् मधुर, अम्ल और वातनाशक हैं । पक्के बेर-पित्तनाशक, श्रमहारक, वमननिवारक, बलवर्द्धक, सारक और तृषानाशक हैं ।

अपिच ।

बदरीशीतलारूक्षातिक्तापित्तकफापहा । फलमस्यास्तुमधुरंतुवरंचाम्लमीरितम् ॥ तच्चपक्कंतुमधुरमम्लमुष्णकफप्रदम् । ग्राहकंलघुरुच्यश्ववाय्वतीसारशोषहृत् ॥ रक्तश्रमहरंप्रोक्तंपंडितैश्चरकादिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-वेरीका वृक्ष-शीतल, रूक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है । इसका कच्चा फल-मधुर, कषेला और खट्टा है । इसका पक्का फल मधुर, खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हलका रुचिकारी तथा वात, अतिसार; शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है ।

हस्तिकोलिगुणाः ।

गजकोलंदुर्जरंस्याच्छीतंस्वादुगुरुस्मृतम् ।
ग्राहकंलेखनंस्निग्धंपौष्टिकंमलबद्धकृत् ॥
आध्मानकारकंचैवपित्तवातविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हस्तिकोलिवेर-दुर्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निग्ध, पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकारक तथा पित्त और वातनाशक है ।

राजबदरगुणा ।

राजबदरःसुमधुरःशिशिरोदाहार्तिपित्तवातहरः ।
वृष्यश्ववीर्य्यवृद्धिंकुरुतेशोषश्रमंहरते ।

अर्थ-राजवेर-मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोप और श्रमनाशक है ।

भूवदरीगुणाः ।

भूबदरीमधुराम्लाकफवातविकारहारिणीपथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्रीकिंचित्पित्तास्रकारिणीरुच्या ॥ (नि०र०)

अर्थ-झडवेर-मधुर, आम्ल, कफनाशक, वातविकारनिवारक, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक और किंचित् रक्तपित्तको कुपित करैहै ।

बदरीफलमज्जागुणाः ।

बदरीफलमज्जातुतुवरामधुरामता ।

शुक्रदाबलदावृष्याकासश्वासतृषापहा ।
वातघ्नीछर्दिदाहघ्नीपित्तहामुनिभिर्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेरकी मींग-कषेली, मधुर, शुक्रजनक, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक तथा खाँसी, श्वास, तृषा, वात, वमन, दाह और पित्तको दूर करैहै ।

बदरस्यपत्रगुणाः ।

बदरस्यपत्रलेपोज्वरदाहविनाशनः ।
त्वचाविस्फोटशमनीबीजंनेत्रामयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बेरीके पत्तोंका लेप-ज्वर और दाहका नाशकरे है । बेरीकी छाल फोडेको दूर करनेवाली है । बेरीके बीज अर्थात् गुठलीकी मींग नेत्ररोगनिवारक है । बेरीके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानके स्थानोंमें प्रसिद्ध हैं ।

विवरण-बेरके वृक्ष अनेक जातिके होतेहैं और यह सब स्थानोंमें होतेहैं, इसके वृक्ष कांटेदार मध्यम भागके होतेहैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लिये होतेहैं, फूल मौरहीमें छोटे २ सफेद रंगके होतेहैं फल अपनी२ जातिके आतेहैं, छोटे बडे लम्बे, गोल, पैवन्दी, कठा, पौडा और रामपुरी इत्यादि । एक झरबेर कहलातेहैं उनके क्षुप छोटे २ पृथ्वीपर फैले हुए होतेहैं उनका एक वनही है जिसका नाम बदरिकाश्रमहै, और दिल्लीसे आगे बढकर जो देखा तो कोसोंतक बेरकेही वृक्ष देखनेमें आये, उनहीं क्षुपोंको काट काटकर और उनके पत्ते झाड झाडकर बडे बडे ऊँचे ढेर लगादेतेहैं, उनको पाला कहतेहैं, उसीसे गाय भैंसोंकी उदरपूर्णता होतीहै उन क्षुपोंपर छोटे २ बेरभी लगतेहैं प्रथम हरे होतेहैं, मध्यम अवस्थामें पीले और अंतसमय लाल पडकर सुकड जातेहैं ।

विकङ्कनामानि ।

विकङ्कतःस्रुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः ।
सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि ॥

अर्थ-विकङ्कत, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद् (वैकङ्कत, वृतिकर, कण्टकारी, स्रुवावृक्ष, किंकिरी, स्रग्दारु, कण्टपत्र, स्रुग्दारु, मधुपर्णी,कण्टपाद, बहुफल, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल, दन्तकाष्ठ, यज्ञिय, ब्रह्मपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिंकिणी, पृथुबीज, सुधावृक्ष, पादरोहिण, रावण)

संस्कृतभाषामें	विकंकत ।
हिन्दीभाषामें	कंटाई, किंकिणी, वंज ।
वंगभाषामें	वईचिगाछ ।
मराठीभाषामें	वेहडचाचें फळ ।
गुजरातीभाषामें	विकलो ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलुमाणिका मालेगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानवेगुचेट्टु ।
औत्क०	वइचकुडि ।
पं०	कुकोया ।
लैटिन्भाषामें	सिलस्ट्रस् मोंटैना । Selstrus Montana

अस्य गुणाः ।

विकंकतोम्लमधुरःपाकेतिमधुरोलघुः ।
दीपनःकामलास्रघ्नःपाचनःपित्तनाशनः (रा० नि०)

अर्थ–कंटाई–अम्ल, मधुर, पाकमेंभी मधुर, लघु, दीपन, कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतोमधुश्चाम्लःकषायःशीतलोजयेत् । बलासपित्त-
शोफास्रविकारान्कामलान्तथा ॥ पाककालेतिमधुरोदाहं
शोषंचनाशयेत् । दीपनःपाचनश्चैवव्रणलूतार्शनाशनः ॥

अर्थ–विकंकत–मधुर, अम्ल, कषेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है । पचनेमेंभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, व्रण, लूता और बवासीरको दूर करे है ।

अपिच ।

विकंकतफलंपक्कंमधुरंसर्वदोषजित् । (भावप्रकाश)

अर्थ–विकंकतका पका फल–मधुर और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतंचनात्युष्णंदोषहृन्नेत्रपुष्पजित् ।

अर्थ–विकंकत–अत्यन्तगरम नहीं है, त्रिदोषनाशक और आंखके फूलेको दूर करे है । विकंकतके वृक्ष–जंगल और वनोंमें होते हैं, वृक्षपै कांटे होते हैं ।

विवरण। कटाईके वृक्ष जंगल और वनोंमें बहुत बडे २ होते हैं उनके पत्ते छोटे २ और डालियोंमें कांटे होते हैं, इसमें बहुत अच्छे २ बेरके समान गोल २ फल लगते हैं।

प्रियालनामानि।

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोबहुलवल्कलः॥
राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्धनुष्पटः॥

अर्थ–प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, धनुष्पट (अखट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षवीर्य्य, द्रुसल्लक, राजातन, वियल, धनु, पट, हसन्नक, धनुःपट, पियालक)

संस्कृतभाषामें प्रियाल, पियाल।
हिन्दीभाषामें चिरोंजी।
वंगभाषामें चिरोंजी, पियाल।
मराठीभाषामें चारोळी (को०) चारवृक्षवीज।
गुजरातीभाषामें चारोली।
कर्णाटकीभाषामें चारवीज।
तैलिंगीभाषामें सारुपपु।
तामिलीभाषामें काटमरा।
औ० चरु।
पं० चिरोली।
लैटिन्भाषामें बुकेननिया लेट्रिफोलिआ। Buchanania Latrifolia
फारसीभाषामें बुकलेखाजा।
अरवीभाषामें हबुस्समाना।

अस्य गुणाः।

चारोलीमधुरावृष्याचाम्लागुर्वीसरामता। मलस्तम्भकरी स्निग्धाशीतलाधातुवर्धिनी॥ कफकृद्दुर्जराबल्याप्रियावातविनाशिनी। पित्तदाहज्वरतृषाक्षतरुग्रक्तदोषनुत्॥क्षतक्षयंनाशयतितन्मज्जामधुरामता। वृष्याचदाहपित्तघ्नीतत्तैलंमधुरंगुरु॥किञ्चिदुष्णंकफकरंपित्तवातविनाशनम्॥(नि०र०)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, धातुवर्द्धक, कफकारक, दुर्जर, बलवर्द्धक, प्रिय, वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करैहै। चिरौंजीकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, दाह और पित्तनाशक है। चिरौंजीका तेल मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक और पित्तवातको दूर करैहै।

अपिच।

प्रियालंमधुरंस्निग्धंबृंहणंवातपित्तजित्। (रा० नि०)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातपित्तनाशक है।

प्रियालमूलादिगुणाः।

चारमूलंतुतुवरंरक्तरुक्कफपित्तहम्। चारमज्जातुमधुरावृष्यास्निग्धाचशीतला॥ मलस्तम्भकरीचामवर्द्धकादुर्जरा मता। हृद्याचशुक्रलावातपित्तनाशकरीमता॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरौंजीके वृक्षकी जड-कषेली तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है। चिरौंजीवृक्षकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल, मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर, हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वातपित्तनाशक है।

विवरण-चिरौंजीके वृक्ष कोंकण आदि देशमें अधिक होते हैं, पत्ते छोटे २ नोकदार खरखरे होते हैं, पत्ते छोटे २ बेरके समान नीलेरंगके होते हैं उसमेंसे जो मींग निकलती है, उसको चिरौंजी कहते हैं।

राजादननामानि।

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका (राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्ववीज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्ल)

संस्कृतभाषामें	राजादन।
हिन्दीभाषामें	खिन्नी, खिरनी।
वंगभाषामें	क्षीरिणी, राजणी।
मराठीभाषामें	खिरणी।
गुजरातीभाषामें	रायण।

कर्णाटकीभाषामें खेणे मारिले ।
तामिलीभाषामें पल्ल ।
इंग्रेजीभाषामें ओबट्युसलीव्ड माईमुसोप्स । Obtuse leaved Mimusops
लैटिन्भाषामें माईमुसोप्स हेग्झान्ड्रा । Mimnsops hezrandra

अस्य गुणाः ।

क्षीरीवृक्षाफलंशीतंस्निग्धंगुरुबलप्रदम् ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, बलवर्द्धक तथा तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय और त्रिदोषको दूर करे है ।

अपिच ।

राजादनीतुमधुरापित्तहृद्गुरुतर्पणी ।
वृष्यास्थौल्यकरीहृद्यासुस्निग्धामेहनाशकृत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक, भारी, तृप्तिकारक, वीर्यजनक, देहको स्थूल करनेवाली, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और प्रमेहको हरनेवाली है ।

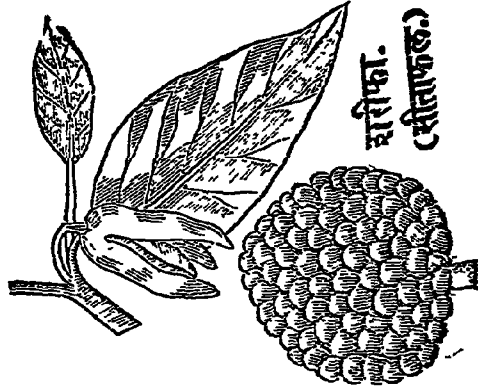
अन्यच्च ।

राजादनंहिमंस्निग्धंकषायंमधुरंगुरु । स्वाद्वम्लपाकंसंग्राहि वृष्यंविष्टम्भिबृंहणम् ॥ रोचनंमांसलंहन्तिदोषत्रयमदभ्रमान् । मूर्च्छामोहतृषादाहंरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-खिरनी, शीतल, स्निग्ध, कषेली, मधुर, भारी, स्वादु, अम्लपाकी, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, रोचन, मांसवर्द्धक तथा त्रिदोष, मद, भ्रम, मूर्च्छा, मोह, तृषा, दाह, रक्तपित्त और क्षतक्षयको दूर करे है ।

विवरण । खिरनीके वृक्ष बडे २ ऊंचे होतेहैं, पत्ते नेवाडीके समान होतेहैं, इसमें शीतऋतुमें मौर आताहै और वसन्त ऋतुमें फल आतेहैं, फल निंबौलीके समान गुच्छे लगतेहैं, वे कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जातेहैं और कोई २ पकनेपरभी हरे ही रहतेहैं, उनको हरियल कहतेहैं, उन फलोंमेंसे दूधभी निकलता है ।

आतृप्यनामानि ।



सीताफलंगंडगात्रंवैदेहीवल्लभंतथा ।
कृष्णबीजंचाग्रिमाख्यमातृप्यंबहुबीजकम् ॥

अर्थ-सीताफल-गंडगात्र, वैदेहीवल्लभ, कृष्णवीज, अग्रिमाख्य, आतृप्य, वहुवीजक ।

संस्कृतभाषामें	आतृप्य ।
हिन्दीभाषामें	सरीफा, सीताफल ।
वंगभाषामें	आता ।
मराठीभाषामें	सीताफळ ।
तैलिङ्गीभाषामें	सीताफल ।
इंग्रेजीभाषामें	कस्टर्डएपल Custerd ypple
लै०	एनोना स्केमोसा Annona Sqamosa
फारसीभाषामें	काज ।
अरवीभाषामें	सरीफा ।

अस्य गुणाः ।

तर्पणंरक्तकृत्स्वादुशीतलंहृद्यमेवच ।
बलदंमांसकृद्दाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत् ॥

अर्थ-सीताफल-तृप्तिजनक, रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, वलवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

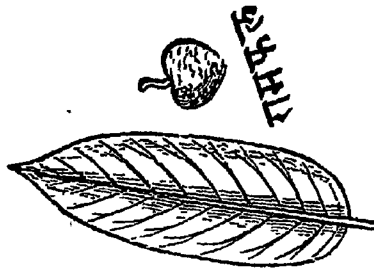
सीताफलंतुमधुरंशीतंहृद्यंबलप्रदम् ।

वातलंकफकृत्स्वादुपुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सीताफल (सरीफा) मधुर, शीतल, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, वातकारक, कफकारक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक और पित्तनाशक है ।

विवरण ।: सरीफेके वृक्ष प्रायः सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमें पाये जातेहैं । व्यवहार फल, पत्र, छाल, मूल, । इसके बीजोंको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूएँ दूर होतीहैं ।

लवनीफलनामानि ।



रामस्यचफलंरामफलंरामाह्वयंतथा ।
रक्तत्वचंचवासन्तंकृष्णबीजंमृदूफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल (लवनी, ग्रीष्मजा, अंग्रिमा,)

संस्कृतभाषामें	लवनी ।
हिन्दीभाषामें	लवनी, एनोना ।
बंगभाषामें	नोना, लोना ।
मराठीभाषामें	रामफळ ।
गुजरातीभाषामें	रामफल ।
तैलिङ्गीभाषामें	रामफल ।
इंग्रेजीभाषामें	नेटेड्कस्टर्डएपल् । Nettedcustard apple
लैटिन्भाषामें	एनोना रेटिक्युलेटा । Anonareteculata
गोवा०	अनोना ।

अस्य गुणाः ।

रामफलंकषायंचस्वाद्वम्लंकफकारकम् ।
वातलंचास्रतृड्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रामफल-कषेला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, बादी तथा रुधिर-विकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है ।

अनंनासनामानि ।

अनन्नास.





अनंनासंपारवतीचामंकौतुकसंज्ञकम् ।

अर्थ-अनंनास, पारवती, आम, कौतुकसंज्ञक ।

संस्कृतभाषामें	अनंनास, कौतुलसंज्ञक ।
हिन्दीभाषामें	अनंनास ।
मराठीभाषामें	अननस ।
गुजरातीभाषामें	अनंनास ।
इंग्रेजीभाषामें	पाईनएपल । Pine apple
लैटिन् भाषामें	अननासा सेटिवा । Annassa sative

अस्यगुणाः ।

अनंनासमपक्वन्तुरुच्यंहृद्यंगुरुमतम् । कफपित्तकरंचैवप्रोक्तं चान्नमरोचकम् ॥ श्रमंक्लमंनाशयतितत्पक्वंस्वादुपित्तहृत् । रसातपविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कच्चा अनंनास-रुचिकारक-हृदयको हितकारी, भारी कफपित्त-कारक, अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशकहै । पक्का अनंनास- स्वादिष्ठ पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूरकरेहै ।

विवरण। अनंनास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होताथा क्योंकि सिवाय

निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोडेसे दिनोंसेही बनाहै) के और किसी प्राचीन निघण्टुमें नहीं देखाजाता।

निकोचकनामानि।

निकोचकंचारुफलंसकोचंजलगोजकम्।
पिस्तंमुकूलकंज्ञेयंदन्तीफलसमाकृति॥

अर्थ-निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति।

संस्कृतभाषामें	निकोचक।
हिन्दीभाषामें	पिस्ता।
वंगभाषामें	पेस्तागाछ।
मराठीभाषामें	पिस्ते।
गुजरातीभाषामें	पस्ता।
इंग्रेजीभाषामें	पिस्टेशिओनट्। Pistachionut
लैटिन्भाषामें	पिस्टेशियाव्हेरा। Pistasiavera
फारसीभाषामें	पिस्तां।
अरबीभाषामें	फिस्तक।

अस्यगुणाः।

निकोचकंगुरुस्निग्धंवृष्योष्णंधातुवर्द्धकम्।
रक्तप्रसादनंस्वादुबल्यंपित्तकरंमतम्॥
तिक्तंसरंचकफहृद्वातगुल्मत्रिदोषजित्। (नि०र०)

अर्थ-पिस्ते-भारी, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, धातुवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु, बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे, सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे हैं।

अंजीरनामानि।



अंजीरंमञ्जुलंज्ञेयंकाकोदुम्बरिकाफलम् ।

अर्थ-अंजीर, मंजुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

संस्कृतभाषामें	अंजीर ।
हिन्दीभाषामें	अंजीर ।
वंगभाषामें	आँजीर, पेयारा ।
मराठीभाषामें	अंजीर ।
गुजरातीभाषामें	अंजीर ।
कर्णाटकीभाषामें	मेडियंडु ।
इंग्रेजीभाषामे	फिग्ट्री । Fig tiee
लैटिन्भाषामें	फाईकस्कोरिका । Ficuscarie
फारसीभाषामें	तीन ।

अस्य गुणाः ।

अंजीरकंफलमतीवसुशीतलंचसद्योनिवारयतिशोणितपित्तमुग्रम् । पथ्यंविशेषमपिपित्तशिरोविकारेनासाप्रवृत्तरुधिरेंचविशेषतस्तु ॥

अर्थ-अंजीर-अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिरोरोगमें विशेष करके पथ्यहै तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंद्करे है ।

अन्यच्च ।

अंजीरकंगुरुहिमंमधुरंचवातपित्तास्त्ररोगहरणंकरणंरुचीनाम् । सुस्वादुपाकरसयोर्गुरुशीतलंचश्लेष्मामवातकरमस्त्र विकारहारि ॥

अर्थ-अंजीर-भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमेंभी स्वादु तथा श्लेष्म और आमवातकारकहै और रुधिरविकारको दूर करैहै ।

परूषकनामानि ।

परूषकंगिरिपीलुरोषणंनागदलोपमम् ।

अर्थ-परूषक, गिरिपीलु, रोषण, नागदलोपम (परावत्त, नीलचर्म्म, नीलमण्डल, परापर,-अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)



संस्कृतभाषामें	परूषक ।
हिन्दीभाषामें	फालसा, परुषा ।
वंगभाषामें	फलसा ।
मराठीभाषामें	फाळसा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेट्टहा, दागलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुटिकी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रामण ।
इंग्रेजीभाषामें	एश्याटिक् ग्रेविया । Asiatic Grewia
लैटिन्भाषामें	ग्रेविया एश्याटिका । Grewia asiatic
फारसीभाषामें	पालसा ।
अरबीभाषामें	फालसा ।

अस्यफलगुणाः ।

परूषमम्लंकटुकंकफार्तिजिद्वातापहंतत्फलमामपित्तकृत् ।
सोष्णञ्चपक्वंमधुरंरुचिप्रदंपित्तापहंशोफहरंचतर्पणम् ॥

अर्थ—कच्चा फालसा—कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है । पका फालसा—मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक शोफनाशक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

परूषकंकषायाम्लमामपित्तकरंलघु ।

तत्पक्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टम्भिबृंहणम् ॥
हृद्यंतृट्पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा०प्र०)

अर्थ–कच्चा फालसा–कषेला खट्टा, पित्तकारक, हलका। पक्का फालसा मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है।

अन्यच्च।

परूषकंकषायाम्लंलघूष्णंस्वादुपित्तलम्। रूक्षंमारुतजित्पक्वंस्वाद्वम्लंशुक्रलंहिमम् ॥ रोचनंमधुरंपाकेहृद्यंविष्टम्भि बृंहणम्। हन्तिमारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ–कच्चा फालसा–कषेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ठ, पित्तकारक रूखा व वातको दूर करनेवालाहै। पक्का फालसा–स्वादिष्ठ, खट्टा, शुक्रजनक, शीतल, रोचन, पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षयकरैहै।

अस्यत्वग्गुणाः।

परूषकत्वक्प्रमेहघ्नीयोनिमेढ्रप्रदाहनुत् ॥
मूत्रदोषप्रशमनीशीतपित्तानिलापहा ॥ (आ०सं०)

अर्थ–फालसेकी छाल–प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूरकरनेवाली, मूत्ररोगनिवारक तथा शीत, पित्त और वातविनाशकहै।

विवरण–फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होतेहैं, मालीलोग अपने बागोंमें बहुत लगादेतेहैं पत्ते बेलके समान तीन २ मिलेहुए होतेहैं, फल दो तीन एकत्र होतेहैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर ऊदे रंगके होजातेहैं।

तूतनामानि।



तूतंतूदंब्रह्मकाष्ठंब्रह्मण्यंब्रह्मदारुच ।
मृदुसारंसुपुष्पंचसुरूपंनीलरंगकम् ॥

अर्थ-तूत, तूद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरंगके (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, क्रमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, पूण, ब्रह्मनेष्ट, नूढ, पूष, ब्रह्मण्य, पलाशिक, यूष) ।

संस्कृतभाषामें	तूत ।
हिन्दीभाषामें	सहतूत, तूत ।
वंगभाषामें	तूँत (द्रु), पलाशपिपुल ।
मराठीभाषामें	तूतें ।
कों०	तूतीची फळें ।
गुजरातीभाषामें	शेतूत, तूत ।
तैलिङ्गीभाषामें	कम्बलिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मषुकट्टइचेडि ।
इंग्रेजीभाषामें	मलबेरिझ Mulberies
लैटिन्भाषामें	मोरस इण्डिका । Morus Indica
	मोरसनिग्रा । Morus nigra
	मोरसआल्वा । Morus alba
फारसीभाषामें	शाठतूत, तूततुर्श, तूतशीरि ।
अरबीभाषामें	तूत, तूतहामीज, तूतहुलु ।

अस्य गुणाः ।

तूतंपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ।
तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पक्के सहतूत-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा पित्त और वात विनाशक हैं । कच्चे सहतूत-भारी, सारक, खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक हैं ।

अपिच ।

तौतानिपक्वानिगुरुशीतानिमधुराणिच । ग्राहंकाणिरक्तदोषवातपित्तहराणिच ॥ कोमलानिचतानिस्युर्गुरुरेचकराणिच । अम्लानिचोष्णवीर्य्याणिरक्तपित्तहराणिच ॥

अर्थ-पक्के सहतूत-भारी, शीतल, मधुर, मलरोधक तथा रक्तविकार,

वात और पित्तका नाश करेहैं । कोमल सहतूत-भारी, दस्तावर, खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करेहैं । सहतूतके वृक्ष बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते अंजीरके समान तीन २ कंगूरेवाले और नीमके पत्तोंके सदृश चारों ओर आरेकेसे चिह्न होतेहैं, यह वृक्ष दोप्रकारके होतेहैं, एकपर काले सहतूत आतेहैं, और दूसरेपर सफेद सहतूत आतेहैं, इसके फल फलीके समान होतेहैं, और उनमें बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होतेहैं वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होतीहैं ।

पारेवतनामानि ।

पारेवतंश्वेतपुष्पंतिन्दुकाभफलंमतम् ।

अर्थ-पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

संस्कृतभाषामें	पारेवत ।
हिंदीभाषामें	पारेवत ।
वंगभाषामें	पेयारा ।
औ०	प्याडा ।
तैलिङ्गीभाषामें	उत्तरिगे, दोडउत्तरिगे ।

अस्य गुणाः ।

पारेवतंहिमंस्वादुगुरूष्णंवातपित्तजित् ।
तद्वन्माणवकंज्ञेयंतृष्णाघ्नंमिष्टमम्लकम् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-पारेवत-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसीके समानहैं तृषानाशक, मिष्ट और अम्ल है ।

अन्यच्च ।

पारेवतंतुवरंकृमिवातहारि वृष्यंतृषाज्वरविदाहहरंचहृद्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशोषविनाशकारि स्निग्धञ्चरुच्यमुदितंबहुवीर्य्यदंच ॥

अर्थ-पारेवत-कषेला, कृमिनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य हृदयको हितकारी तथा तृषा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम, और शोषनाशक है ।

महापारेवतगुणाः ।

महापारेवतंगौल्यंबलकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्यंमूर्च्छाज्वरघ्नश्चपूर्वोक्तादधिकंगुणैः ॥

अर्थ–महापारेवत–गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, मूर्च्छानिवारक, ज्वरनाशक यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है ।

श्लेष्मातकनामानि ।

श्लेष्मातकःकर्बुदारःपिच्छिलोलेखशाटकः ।
शेलुःशैलुर्गंधपुष्पःशापितोबहुवारकः ॥

अर्थ–श्लेष्मातक–कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाकट, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि ।



भूकर्बुदारकश्चान्यलघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ–भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक । भूकर्बुदार ।
हिन्दीभाषामें	लिसोडा, निसोरे, लभेरा ।
वंगभाषामें	बहुयार, चालतागाछ, बोहरी ।
मराठीभाषामें	भोंकर, शेळवंट, भोंकरी, गोंधणी ।
गुजरातीभाषामें	गुंदोमोटो, गुंदीनांनी ।
कर्णाटकीभाषामें	चेलु गोंदिणी ।
तैलिंगीभाषामें	नाकेरु, नुककेरु ।
तामिलीभाषामें	विडि ।
औत्कलीभाषामें	अड ।

इंग्रेजीभाषामें	नेरोलिव्ड सेपिस्टन। Narrow leaved Sepistun
लैटिन्भाषामें	कोर्डिया एंगस्टिफोलिया। Cordia angustifolia
फारसीभाषामें	सिपिस्तान्।
अरबीभाषामें	सेफिस्तान् दबक।

अस्य गुणाः।

श्लेष्मातंकटुशीतलंचतुवरंस्यात्पाचकंमाधुरं स्निग्धंकेश्यबलासदंत्वथकृमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटव्रणपित्तनाशनकरंवीसर्पसर्वविषं हन्तिह्यस्यफलंतुशीतमधुरंतिक्तंलघुस्तूवरम् ॥ वायोर्वृद्धिकरंचपित्तशमनंविष्टम्भिरुच्यं तथासृग्दृष्टिंकफनाशनंचगदितंपक्वंतथामाधुरम् ॥ स्निग्धं शीतलबृंहणंनिगदितंविष्टम्भिरूक्षंगुरु वायोर्नाशकरंचपित्तशमनंस्याद्रक्तदोषापहम् ॥ ((नि०र०)

अर्थ-श्लेष्मान्तक-कटु, शीतल, कषेला, पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, तथा कृमि, शूल, आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, व्रण, पित्त, विसर्प और सर्व प्रकारके विषोंको हरनेवाला है। इसके फल-शीतल, मधुर, कडवे, हलके, कषेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक, रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक हैं। इसके पक्के फल-मधुर स्निग्ध-शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातविनाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं।

भूकर्बुदारगुणाः।

क्षुद्रश्लेष्मातकंवातकोपनंमधुरंमतम्।
किंचिच्चशीतलंज्ञेयंकृमिघ्नंस्वर्णमारकम् ॥

अर्थ-लभेरा-वातको कुपित करनेवाला, मधुर, किंचित् शीतल, कृमिनाशक और सुवर्णको मारे है।

विवरण। लिसोडेके वृक्ष जंगल और वनमें अधिक होते हैं, पत्ते गोल कुछ लम्बाई लिये होते हैं, फल अलूचेके समान गोल रसीले गुच्छोंमें लगतेहैं, भीतरसे चिपकतेहैं इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होतेहैं, पत्तेभी इसी भाँतिके होतेहैं परन्तु फल इससे छोटे होतेहैं, कच्चे रंगमें हरे और पकनेपर कुछ गुलाबीसे होजातेहैं, फलके भीतर बीज और कुछ गोंदसा निकलताहै।

कतकनामानि ।

कतकंछेदनीयश्चश्लक्ष्णंतोयप्रसादनम् ।
कात्थंकतकरेणुश्चचक्षुष्यंशोधनात्मकम् ॥

अर्थ-कतक, छेदनीय, श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, कात्थ, कतकरेणु, चक्षुष्य, शोधनात्मक (अम्बुप्रसादनफल, रुचिष्य, लेखनात्मक, अम्बुप्रसाद, कत, तिक्तफल, रुच्य, गुच्छफल, तिक्तमरिच, तोयप्रसादफल, पयःप्रसादि)

संस्कृतभाषामें	कतक ।
हिंदीभाषामें	निर्म्मलीफल, पायपसारी ।
वंगभाषामें	निर्म्मलफल ।
मराठीभाषामें	निवळीच्या बिया, चिल्लार, गजरा ।
गुजरातीभाषामें	निर्मली ।
कर्णाटकीभाषामें	चिल्लिकापि ।
इंग्रेजीभाषामें	नट् वुइच् क्लिअर्सवाटर । Nut which clears water
लैटिन्भाषामें	स्ट्रिकनोस् पोटेटेरम् । Strychinos Potaterum

अस्यगुणाः ।

कतकःकटुकस्तिक्तोलेखनोरुचिकृल्लघुः । चक्षुष्यस्तुवरः शीतोविशदश्चविकासकः ॥ छेदनोमधुरश्चैवतृषादाहविषापहः । गुल्मशूलकृमीन्मेहंनेत्ररुग्जलजंमलम् ॥ नाशयेदितिचप्रोक्तःफलंतस्यचकोमलम् । चक्षुष्यंवातकृच्छीतंरक्तपित्तंतृषांविषम् ॥ मोहंचनाशयत्येवतरुणंतत्तुदुर्जरम् । रुचिदंकफपित्तघ्नंतत्पक्कंपित्तलंमतम् ॥ छर्दैःस्वेदस्यजनकंशोफंपाण्डुंविषंजयेत् । प्रतिश्यायंकामलांचनाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कतकस्यचबीजन्तुचक्षुष्यंतुवरंगुरु । जलप्रसादनंशीतंमधुरंचाश्मरीहरम् ॥ वातंकफंमूत्रकृच्छ्रंतृषां नेत्ररुजंविषम् । प्रमेहंशीर्षरोगंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ कतकस्यचमूलन्तुसर्वकुष्ठहरंपरम् ।

अर्थ-निर्म्मलीवृक्ष-चरपरा, कडवा, लेखन, रुचिकारक, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, शीतल, विशद, विकासी, छेदन, मधुर तथा तृषा, दाह,

विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके मैलको दूर करे है। इसका कोमलफल-नेत्रोंको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल, तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है। इसका तरुणफल-दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है। इसका पक्का फल पित्तजनक, वमनकारक, पसीनेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, विष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूरकरे है। इसके बीज-नेत्रोंको हितकारी, कषेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तकरोगको दूर करे हैं। निर्म्मलीकी जड-सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरनेवाली है।

विवरण। कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेहैं, और उसके ऊपरकी छाल कुचलेकी छालकी समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेसेही मिलती है।

द्राक्षानामानि।

द्राक्षामधुरसास्वाद्वीकृष्णाचारुफलारसा।
मृद्वीकागोस्तनीचैवयक्ष्मघ्नीतापसप्रिया॥

अर्थ-द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादुफला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला)।

कपिलद्राक्षानामानि।

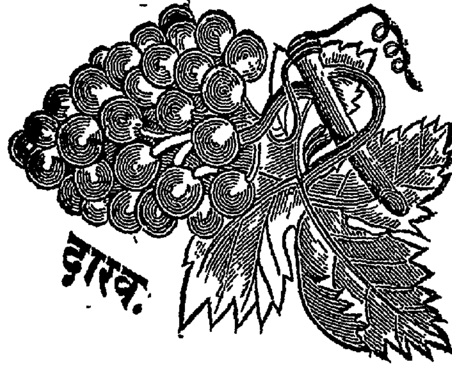
अन्याकपिलद्राक्षामृद्वीकागोस्तनीचकपिलफला।
अमृतरसादीर्घफलामधुवल्लीमधुफलामधूलिश्च॥
हरिताचहारहूरासुफलामृद्वीहिमोत्तरापथिका।
हैमवतीशतवीर्य्याकाश्मीरीगजराजमहिगणिता॥

अर्थ-कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्य्या, काश्मीरी।

काकलीद्राक्षानामानि।

अन्यासाकाकलीद्राक्षाजाम्बुकाचफलोत्तमा।
लघुद्राक्षाचनिर्बीजासुवृत्तारुचिकारिणी॥

अर्थ-काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका)।



संस्कृतभाषामें	द्राक्षा।
हिन्दीभाषामें	दाख, कालीदाख, किसमिस, अंगूर, भूरीदाख।
वंगभाषामें	किसमिस, मनेक्का, आंगुर, बेदाना, किस्‌मिस्।
मराठीभाषामें	काळें द्राक्ष, बेदाणा, किसमिस।
गुजरातीभाषामें	धराख, कालिधराख, किसमिस।
कर्णाटकीभाषामें	वेडगणद्राक्षे, चिक्कुद्राक्षे।
तैलिंगीभाषामें	द्राक्षा, किसिमिसि, पोंड्डु, द्राक्षचेट्टु।
तामिलीभाषामें	कोडिमण्डि रिप्पझाम्।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेप Grape राझिन्स। Rysins
लैटिन्भाषामें	वाइटिन्स्, वेनिफेरा। Witins Venifera
फारसीभाषामें	अंगूर, मुनक्का, दानेमबीज।
अरबीभाषामें	कीसमीस, एनब्जबीब, हबुस्‌जबीब।

द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः।स्वादुपाकरसास्वर्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा। हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्त्रकामलाः॥कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान्। आमास्वल्पगुणागुर्वी सैवाम्लारक्तपित्तकृत्॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षागुर्वीचकफपित्तनुत्। अबीजान्यास्वल्पतरागोस्तनीसदृशीगुणैः॥

द्राक्षापर्वतजालघ्वीसाम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षापर्वतजायादृक्तादृशीकरमर्दिका ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पक्कीदाख-सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कषेली, मूत्र और मलको निकालनेवाली, कोठेमें वातको करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्ययरोगको हरनेवाली है । कच्चीदाख-स्वल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है । गोस्तनी अर्थात् कालीदाख-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है । किसमिस-कालीदाखके समान गुणवाली है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करनेवाली है । करमर्दिकानामवाली दाख-पर्वतीदाखकी समान गुणवाली है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातुमधुरास्निग्धावृष्याशीतानुलोमनी ।
वल्यावृष्याक्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-दाख-मधुर, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मलभेदक, वलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा क्षत, क्षीण, वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्लाचशीतापित्तार्त्तिदाहजित् ।
मूत्रदोपहरारुच्यावृष्यासंतर्पणीपरा ॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक, दाहनाशक, मूत्रदोषहारक, रुचिकारक, वृष्य और तृप्तिकारक है ।

द्राक्षाबालफलंकटूष्णविशदंपित्तास्रदोषप्रदं
मध्यंचाम्लरसंरसान्तरगतंरुच्यातिवह्निप्रदम् ।
पक्कंचेन्मधुरंतथाम्लसहितंतृष्णास्रपित्तापहं
पक्कंशुष्कसमंश्रमार्त्तिशमनंसन्तर्पणंपुष्टिदम् ॥

अर्थ-कच्चीदाख-कटु, उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी दाख-खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्की दाख-मधुर,

खट्टी, तृषा और रक्तपित्तनाशक है। पककर सूखगई हो ऐसी दाख-श्रमनाशक, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षसैवसुधातुवृद्धिजननीसंसर्पशोषापहा
तृष्णार्त्तिव्यथनीसमीरशमनीछर्द्यामयध्वंसिनी।
पाकेम्लासुरसारसेनमधुराशीताचवीर्य्येणसा
संपक्वाविहिताज्वरेचकफजेविण्मूत्रसंशोधनी॥

अर्थ-दाख-धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यासको हरनेवाली, वातको दूरकरनेवाली, वमनरोगनाशक, पचनेमें अम्ल, सुरस, मधुर, शीतवीर्य्य, ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफलंमधुरमम्लकषाययुक्तं क्षारेणपित्तमरुतांकफहारिशीघ्रम्॥ श्रेष्ठंनिहन्तिरुधिरामयदाहशोषमूर्च्छाज्वरश्वसनकासविनाशकारि॥

अर्थ-दाख,-मधुर, खट्टी, कषेली और किसीक्षारके साथ पित्त वात और कफका नाश करेहै। उत्तम तथा रुधिररोग, दाह, शोष, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास और खाँसीको दूर करेहै।

गोस्तनीगुणाः।

द्राक्षातुगोस्तनीशीताहृद्यावृष्यागुरुर्मता। वातानुलोमनी स्निग्धाहर्षदाश्रमनाशिनी॥ दाहमूर्च्छाश्वासकासकफपित्तज्वरापहा। रक्तदोषंतृषांवातंहृद्व्यथांचैवनाशयेत्॥

अर्थ-कालीदाख-शीतल, हृदयको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, वातानुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी, कफ, पित्तज्वर रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदयकी व्यथाको हरनेवाली है।

लघुद्राक्षागुणाः।

लघ्वीद्राक्षातुमधुराशीतावृष्यारुचिप्रदा।अम्लारसालासंप्रोक्ताश्वासकासज्वरापहा॥ हृद्व्यथारक्तपित्तघ्नीक्षतक्षयविनाशिनी। स्वरभेदंतृषांवातंपित्तंचैवविनाशयेत्॥ तिक्ततांचमुखस्यापिनाशयेदितिकीर्त्तिता।

अर्थ-किसमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, रुचिप्रद, खट्टी, रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करे है ।

विवरण । दाख-काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी है, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोंमें होती है, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमेंभी होती है, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोंमें लगते हैं ।

मण्डपीनामानि ।

भूशिम्बिकारक्तबीजात्रिबीजास्नेहबीजका ।
मण्डपीभूमिजाभूस्थातथाभूचणकास्मृता ॥

अर्थ-भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामें	मण्डपी ।
हिन्दीभाषामें	मूँगफली ।
मराठीभाषामें	भुईमुगाच्याशेंगा ।
गुजरातीभाषामें	मांडवी ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राउंड्नट् पिनट् । Groundnut peanut
लैटिन्भाषामें	आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypoicea
फारसीभाषामें	मुलीयन् वेल ।
अरबीभाषामें	शेषवान ।

अस्य गुणाः ।

मण्डपीमधुरास्निग्धावातलाकफकारिका ।
ग्राहिकाबद्धवर्चाश्चतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥

अर्थ-मूँगफली, मधुर, स्निग्ध, वादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बांधनेवाली, उसके तेलके गुण इसीके समान जानने ।

काजूतकनामानि ।

काजूतकोवृत्तपत्रोगुच्छपुष्पश्चपार्वती ।
स्निग्धपीतफलश्चैवपृथग्बीजोह्यरुष्करः ॥

अर्थ-काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज, अरुष्कर (अग्निकृत्, उपपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	काजूतक ।
मराठीभाषामें	काजूचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	काजुकलिया ।
तैलङ्गीभाषामें	गतमामोड, जिडिमामेडी ।
इंग्रेजीभाषामें	केश्युनट् । Casheunut
लैटिन्भाषामें	एनाकार्डियं ओक्सिडेन्टेली । Anacordium Occedentaly
फारसीभाषामें	बादामफिरंगी ।

अस्य गुणाः ।

काजूतकस्तुतुवरोमधुरोष्णोलघुःस्मृतः । धातुवृद्धिकरोवातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमांद्यानिकुष्ठंचश्वेतकुष्ठकम् । संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि.र.)

अर्थ–काजूतक–कषेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक तथा वात, कफ, गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण, मंदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी, बवासीर और अफारेको दूर करनेवाला है।

विवरण । काजूतकके वृक्ष–दक्षिण और गुजरातमें अधिकतासे होते हैं। पत्ते–लम्बे और गोल, फूल-सफेद और लाली लिये झुमखोंमें आते हैं, फल-सफरीकी समान होता है।

जम्बूनामानि ।

जम्बूस्तुसुरभिपत्रानीलफलाश्यामलामहास्कन्धा ।
राजार्हाराजफलाशुकप्रियामेघमोदिनीचनवाह्वा ॥

अर्थ–जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बु, जम्बुल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बूःस्वर्णमातामहाफला ।
शुकप्रियाकोकिलेष्टामहानीलाबृहत्फला ॥

अर्थ–महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिलेष्टा, महानीला, बृहत्फला, (महापत्रा, फलेंद्र, नन्द, सुरभिपत्रा)

क्षुद्रजम्बूनामानि ।

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रासूक्ष्मकृष्णफलातथा ॥

अर्थ-क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि ।

काकजंबूःकाकफलानादेयीकाकवल्लभा ।
भृंगेष्टाकाकनीलाचध्वांक्षजंबूर्घनप्रिया ॥

अर्थ-काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृंगेष्टा काकनीला, ध्वांक्षजम्बू, घनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि ।

अन्याचभूमिजम्बूर्ह्रस्वफलाभृंगवल्लभाह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टापिकभक्षाकाष्ठजम्बूश्च ॥

अर्थ-भूमिजम्बू, ह्रस्वफला, भृंगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें	जम्बू, महाजम्बू, क्षुद्रजम्बू ।
हिन्दीभाषामें	जामुन, वडीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।
वंगभाषामें	जामगाछ, वडजाम, क्षुद्रेजाम, वनजाम ।
मराठीभाषामें	थोर जांभूळ, नदीजांभूळ ।
कोंकणीभाषामें	राजिले ।
गुजरातीभाषामें	राजजाम्बु, रावणां वेलरोपाजाम्बु, डुंगरिजाम्बु ।
कर्णाटकीभाषामें	निरंलु, दोडुनिरलु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दानेरडि, नीरनेरडि ।
इंग्रेजीभाषामें	जांबीरट्री Jambir tree
लैटिन् भाषामें	युजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana

सिझिझियम् जांबोलेनम् Syzyzyum Jambolanum

जम्बूगुणाः ।

जम्बूवृक्षस्तुतुवरोग्राहीमधुरपाचकः । मलस्तम्भकरोरूक्षो रुचिकृत्पित्तदाहहा ॥ अम्लःकण्ठ्यःकृमिश्वासशोषातीसारकासहा । रक्तदोषंकफंचैवव्रणंचैवविनाशयेत् ॥ फलंचतुवरंचाम्लंमधुरंशीतलंमतम् । रुच्यंरूक्षंग्राहकंचले

खनंकंठदूषकम् ॥ मलस्तम्भकरंवातकारकंकफपित्तनुत् ।
आध्मानकारकंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी छाल-कषेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, मलस्तम्भक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, खट्टी, कंठको हितकारी तथा कृमि, श्वास, शोष, अतिसार, खाँसी, रक्तदोष, कफ और व्रण इनका नाश करे है। इसके फल-कषेले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूखे, मलरोधक, कंठदूषक, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक, कफपित्तनाशक और अफारेको करनेवालेहैं।

अन्यच्च ।

जांबवंगुरुविष्टम्भिकषायंस्वादुशीतलम् ।
अग्निसंदूषणंरूक्षंवातलंकफपित्तजित् ॥ (रा०)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टंभकारक, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, अग्निदूषक, रूखा, बादी तथा कफ और पित्तनाशक है।

राजजम्बूगुणाः ।

राजजम्बूतुमधुराचोष्णाचतुवरामता। स्वर्यामलस्तम्भकरीश्वासशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नीकफकासविनाशिनी । फलंचास्यास्तुरुचिदंमधुरंस्तम्भकंगुरु ॥
दोषनाशकरंस्वादुऋषिभिःपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-राजजामुन-मधुर, गरम, कषेली, स्वरशोधक, मलस्तम्भक तथा श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडता, अतिसार, कफ, और खाँसीको हरनेवाली है। इसके फल-रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक और स्वादिष्ठ ह।

जलजम्बूगुणाः ।

जलजम्बूतुतुवराशीतातिक्तगुरुःस्मृता । पाकेचमधुराचाम्लापुष्टिकृद्ग्राहिणीमता ॥ वीर्यवृद्धिकरीबल्याश्रमदाहातिसारहा। रक्तदोषंकफंपित्तंव्रणंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-जलजामुन-कषेली, शीतल, कडवी, भारी, पाकमें मधुर, अम्ल, पुष्टिकारक, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक तथा श्रम, दाह, अतिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त और व्रणको दूर करनेवाली है।

क्षुद्रजम्बूगुणाः ।

क्षुद्रजम्बूतुवराहृद्याचमधुरामता । वीर्य्यप्रदाग्राहिणीच
पुष्टिकृत्कफपित्तहा॥हृद्रोगंकंठरोगंचदाहंचैवविनाशयेत् ॥
अस्याःफलगुणाःप्रोक्ताराजजम्बूफलैःसमाः ॥ (नि०र०)

अर्थ-छोटी जामुन-कषेली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है । इसके फलोंके गुण राजजामुनकी फलकी समान जानने ।

जम्बूफलमज्जागुणाः ।

तन्मज्जामधुराग्राहीविशेषान्मधुमेहहा ।
तदंकुराहिमारूक्षाग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ-जामुनकी मींग-मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अंकुर-शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक हैं ।

विवरण । जामुनके वृक्ष-तीन चार प्रकारके होते हैं, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते हैं उनको नदी जामुन कहते हैं, दूसरी वडी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेसे होते हैं, उसको जमुना कहते हैं, तीसरी साधारण जामुन होनी है, उसके पत्ते आमकेसे होते हैं, फल मध्यम जातिका होता है, कच्ची अवस्थामें हरी २ होती है और पकनेपर उसका रंग बैजनी हो जाताहै, फूलके स्थानमें जामुनपर मौरही आता है ।

इति फलवर्गः समाप्तः ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे फलवर्गः ॥ ९ ॥

वटादिवर्गः ।

वटनामानि ।

वटोरक्तफलःशृङ्गीन्यग्रोधःस्कन्धजोध्रुवः ।
क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पतिः ॥

अर्थ-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, वहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शृङ्ग, वृहत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्म्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, अवरोही, विटपी,

स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात्, जटिल, जटी)

संस्कृतभाषामें	वट ।
हिन्दीभाषामें	वड ।
वंगभाषामें	वट ।
मराठीभाषामें	वड ।
गुजरातीभाषामें	वड ।
कर्णाटकीभाषामें	आल ।
तैलिङ्गीभाषामें	मर्रिचेट्ट, मारि, पेडिमरि ।
तामिलीभाषामें	आल ।
औत्कलीभाषामें	वोरु ।
इंग्रेजभाषामें	वनीयन्ट्री । Banyantree
लैटिन्भाषामें	फाईकस् इन्डिकस् । Ficus indicus
फारसीभाषामें	दरखितरेशा, वडवाई, ऐशाएवगर्द ।
अरबीभाषामें	जातुद्‌बाड्वथआव ।

अस्य गुणाः ।

वटःशीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्योविसर्पदाहघ्नःकषायोयोनिदोषहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वड-शीतल, भारी, मलरोधक, कफ और पित्तनाशक, व्रणविनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाहनिवारक और योनिदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वटःकषायमधुरःशिशिरःकफपित्तजित् ।
ज्वरदाहतृषामोहव्रणशोफापहारकः ॥ (रा०ज०)

अर्थ-वड-कषेला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण, और सूजनको दूर करे है ।

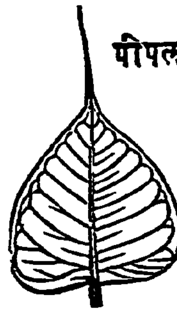
अपिच ।

वटोरूक्षोहिमोग्राहीछर्दिघ्नोयोनिदोषजित् ।
वर्ण्योमूर्च्छाविसर्पघ्नःकफपित्तहरोगुरुः ॥ (ध०नि०)

अर्थ-वड-रूखा, शीतल. मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी तथा मूर्च्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करेहै ।

विवरण । वडका वृक्ष महाविशाल होताहै, इसके पत्तेभी लम्वे चौडे होतेहैं, फल छोटे २ झडवेरके वरावर आतेहैं । इसकी शाखाओंमेंसे लाल लाल अंकुर निकलतेहैं, जव वह वढजातेहैं उसको वटकी डाढी कहतेहैं, वह इतनी वढजातीहै कि, लटकती २ पृथ्वीमें आकर जमजातीहै । जहाँ जहाँ यह डाढी जमजातीहै वहां २ वडके वृक्ष होजातेहैं, इसप्रकार एक वडकी अनेक जडें होतीहैं परन्तु यह सव वास्तवमें एकहीहैं और परस्पर मिलीहुई होतीहैं ऐसेही यह वढते २ उस वडका वीघोंमें विस्तार होजाताहै ।

अश्वस्थनामानि ।



बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः ॥

अर्थ-वोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालय, चैत्यद्रु, वोधितरु, कृष्णावास, चैत्यवृक्ष, नागवन्धु, देवात्मा, महाद्रुम, कपीतन, वोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, पवित्रक, शुभद, वोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

संस्कृतभाषामें	अश्वत्थ ।
हिन्दीभाषामें	पीपलवृक्ष ।
वंगभाषामें	अश्वत्थ, आशोतगाछ ।
मराठीभाषामें	पिंपळ ।
गुजरातीभाषामें	पीपलो ।
कर्णाटकीभाषामें	अरली ।

तैलङ्गीभाषामें	राईचेट्टु, कुल्लुज्विचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	पोप्लरलीव्ड फिग्ट्री । Poplar leaved figtree.
लैटिन्भाषामें	फाईकस् रिलिजियोझा । Ficus Religiosa
फारसीभाषामें	दरखतलरजां ।

अस्य गुणाः ।

पिप्पलोदुर्जरःशीतःपित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ।
गुरुस्तुवरकोरूक्षोवर्ण्योयोनिविशोधनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—पीपल—दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण, और रुधिरके विकारोंको दूर करैहै । भारी, कषेला, रूखा, वर्णको सुंदरतादायक और योनिशोधक है।

अपिच ।

अश्वत्थोमधुरःशीतःकषायोदुर्जरोगुरुः । रूक्षोवर्ण्यस्तिक्तकश्चयोनिशोधनकारकः ॥ योनिदोषंरक्तदोषंदाहपित्तकफाञ्जयेत् । व्रणंचनाशयत्येवफलंपक्वंचशीतलम् ॥ हृद्यंरक्तरुजंपित्तंविषंदोषंचनाशयेत् । दाहंवान्तिचशोषंचह्यरुचिंचैवनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ—पीपल—मधुर, शीतल, कषेला, दुर्जर, भारी, रूखा, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, कडवा, योनिशोधक तथा योनिदोष, रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेवाला है । इसके पक्के फल—शीतल, हृदयको हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त, विष, दाह, वमन, शोष और अरुचिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । पीपलका वृक्ष—बहुत बडा होताहै, यह वृक्ष ग्राम और नगरोंमें बहुत होतेहैं, वनोंमें बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते—गोल और अनीदार डालियोंपर लगतेहैं, यह पत्ते सदैव हिलते रहतेहैं इसपरभी छोटे अंकुर होतेहैं, फल भी पत्तोंकी जडमें छोटे झडबेरकी तुल्य लगते हैं, उनको पिपलौति कहतेहैं, इसकी शाखाओंपर लाखभी आतीहै, परन्तु सदैव नहीं कोई समय पाकर यह वृक्ष बहुत श्रेष्ठ और पवित्रहै, ऋषि मुनियोंने इसको पूजनके योग्य समझ रक्खाहै ।

पारीशपिप्पलनामानि ।

पारीशोन्योफलीशश्चकपिचूतःकमण्डलुः ।

गर्द्दभांडःकन्दरालःकपीतनःसुपार्श्वकः ॥

अर्थ-पारीश, फलीश, कपिचूत, कमण्डलु, गर्द्दभाण्ड, कंदराल, कपीतन, सुपार्श्वक ।

संस्कृतभाषामें	पारीश ।
हिन्दीभाषामें	पारिसपीपल, गजदंड ।
वंगभाषामें	गजशुंडी ।
मराठीभाषामें	पारसपिंपळ भेंड । को०मणेरवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पारसपिपलो ।
कर्णाटकीभाषामें	वंगरली ।
तैलङ्गीभाषामें	घेनगाखी, गंगरेय ।
तामिलीभाषामें	पोरिश, पूवरश, सरम् ।
इंग्रेजीभाषामें	हिबिक्सस् Hibixus
लैटिन्भाषामें	थेसपीसीया पोपलनिया । Thaspesia populnea
फारसीभाषामें	यलास वेलय ।

अस्य गुणाः ।

फलीशोदुर्ज्जरःस्निग्धःकृमिशुक्रकफप्रदः ।
फलेम्लोमधुरोमूलेकषायःस्वादुमज्जकः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-पारिसपीपल-अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक, शुक्रकारक और कफवर्द्धक है । इसके फल-अम्ल । इसकी जडमें मधुरता । इसकी मज्जामें कषेला और मीठापन है ।

अन्यच्च ।

ब्रह्मवृक्षस्तुमधुरोवृष्योम्लस्तुवरोमतः।दुर्जरःकफकृत्स्निग्धः शुक्रलोजंतुकारकः ॥ वातंपित्तंचहृद्रोगंदाहंकंठरुजंतथा । नाशयेदितिसंप्रोक्तःफलमम्लंमधुस्मृतम् ॥ मूलंतुतुवरंज्ञेयं मज्जास्वाद्वीस्मृताबुधैः । (नि० र०)

अर्थ-पारिसपीपल-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, खट्टा, कषेला, अतिकठिनतासे पचनेवाला, कफकारक, स्निग्ध, शुक्रजनक, कृमिकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, दाह और कंठरोगको दूर करे है । इसके फल-अम्ल और मधुर हैं । इसकी जड-कषेली है । इसकी मज्जा स्वादिष्ठ है ।

विवरण । पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होताहै, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होतेहैं और पारिसपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आतेहैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होतेहैं ।

नन्दीवृक्षनामानि ।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः ।
स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः ॥

अर्थ-नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति ।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष ।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल ।
तैलिङ्गीभाषामें	वट्टिचेट्टु ।

अस्य गुणाः ।

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुस्तिक्तस्तुवरउष्णकः ।
पाकेकटूरसेग्राहीविषपित्तकफास्रनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूर करेहै।

विवरण । वेलिया पीपलभी पीपलका भेदहै, इसके पत्ते-बडे २ होतेहैं इसकी शाखाओंमेंभी अंकुर होतेहैं, इसकी जड बहुत मोटी होतीहै ।

प्लक्षनामानि ।

प्लक्षोजटीपर्कटीचकर्परीचारुदर्शिनी ।
शृङ्गीवरोहशाखीचह्यश्वत्थीपिंपरीवटी ॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिंपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्द्दभाण्ड, पीतन, हृदमरोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल, कन्दराल, पर्कोटी, प्लक्षा, जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी ।
हिंदीभाषामें	पाखर, पाकर, पिलखन ।
वंगभाषामें	पाकुडगाछ ।
मराठीभाषामें	पिंपरी ।

गुजरातीभाषामें	पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें	वसुरि)
लैटिन्‌भाषामें	फाईलसविरेन्स । Fielus verauce

अस्य गुणाः ।

प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नःशोफहारक्तपित्तहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पाखर-कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

प्लक्षःकटुःकषायश्चशिशिरोरक्तदोषजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषतः ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नोह्रस्वपत्रोविशेषतः ॥

अर्थ-पाखर-कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है

विवरण । पाखरके वृक्ष-बड पीपलकी भाँतिके जंगल और ग्रामोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते-लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होताहै तब इसके गुद्देको काटकर लगादेतेहैं, उसीमेंसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहैं, पांच, छै, वर्षमें वैसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सघन वनकी प्रशंसाहै कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नहीं होतीहै ।

उदुम्बरनामानि ।



उदुम्बरःक्षीरवृक्षोहेमदुग्धःसदाफलः ।
अपुष्पफलसम्बंधोयज्ञाङ्गःशीतवल्कलः ॥

अर्थ–उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसंबंध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिमुख, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोडुम्बर, उडुम्बर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, सुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, सुप्रतिष्ठित, शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जघनेफल)

संस्कृतभाषामें	उदुम्बर ।
हिन्दीभाषामें	गूलर ।
वंगभाषामें	यज्ञडुमुर ।
मराठीभाषामें	उम्बर ।
गुजरातीभाषामें	उंबरो ।
कर्णाटकीभाषामें	अत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाडुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	किगट्री । Keg tree
लैटिन् भाषामें	फाइकसग्लोमिरेटा । Ficus glomirata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम ।
अरबीभाषामें	जमीझ ।

अस्य गुणाः ।

उदुम्बरःशीतलःस्याद्भग्नसन्धानकारकः । व्रणरोपणकृद्रूक्षोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यःकफपित्तातिसारकान् । योनिरोगंनाशयतिवल्कंचैवास्यशीतलम् ॥ दुग्धदंतुवरंगर्भ्यंव्रणनाशकरंस्मृतम् । कोमलंचास्यचफलंस्तम्भकृत्तुवरंमतम्॥ हितकारितृषापित्तकफरक्तरुजापहम्। मध्यमंकोमलंस्वादुशीतलंतुवरंमतम् ॥ पित्तंतृषामोदकंरंरक्तस्रुतिवमीहरम् । प्रहारघ्नंसमुद्दिष्टमपक्वंतुवरंमतम् ॥ रुच्यंचाम्लंदीपनंस्यान्मांसवृद्धिकरंमतम्। रक्तरुक्कारकंचैवदोषलंचजडंमतम् ॥ तत्पक्वञ्चकषायंस्यान्मधुरंक्रृमिका-

रकम् । जडंरुचिप्रदंचातिशीतलंकफकारकम् ॥ रक्तरु-क्पित्तदाहक्षुत्तृषाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरंप्रोक्तंपूर्वैःस्वे स्वेनिघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ-गूलर-शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कषेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगका नाश करे है । उसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कषेली, गर्भको हितकारी और व्रणविनाशक है । इसके कोमल फल-स्तम्भक, कषेले, हितकारी तथा तृषा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे हैं । मध्यम कोमल फल-स्वादु, शीतल, कषेले, पित्त, तृषा और मोहकारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोगनाशक हैं । इसके तरुणफल-कषेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको बिगाडनेवाले, दोषजनक और जड हैं । इसके पक्के फल-कषेले, मधुर, कृमिकारक, जड, रुचिकारक अत्यंत शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृषा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं ।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिकाचान्यालघुपत्रफलातथा ।
लघुहेमदुग्धाप्रोक्तालघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ-नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला ।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणैःसर्वैःसदृशातुमताबुधैः ।
रसवीर्य्यविपाकेषुकिञ्चिन्न्यूनाचपूर्वतः ॥

अर्थ- नदीके निकटका गूलर-गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस, वीर्य्य और विपाकमें किंचित् हीन है ।

काकोदुम्बरिकानामानि ।

उदुम्बरफलाचैवकर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिकाज्ञेयाक्षीरीचखरपत्रिका ॥

अर्थ-उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्बरिका, कुष्ठघ्नी,

फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, फल्गु, जघनेफला, वहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोडुम्बर, काकोडुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका ।
हिन्दीभाषामें	कठूमर ।
वंगभाषामें	काकडुमुर ।
मराठीभाषामें	काळाउम्बर, बोखाडा ।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरो ।
कर्णाटकीभाषामें	काअत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी वाडुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	किग्ट्री । Keg tree
लैटिन् भाषामें	फाइकस् ओपोझिटि फोलिया । Ficus opposeti folia
	फाइकस् हिस्पिडा । F Hispida
फारसीभाषामें	अंजिरेदस्ती ।
अरवीभाषामें	तनवर्रि ।

अस्या गुणाः ।

मलपूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत् ।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कठूमर-स्तम्भक, शीतल, कषेला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, ववासीर और कामलारोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

काकोदुम्बारिकाशीताकषायादद्रुघातिनी ।
रक्तातिसारहन्त्रीचमुखनासास्रघातिनी ॥ (शो०नि०)

अर्थ-कठूमर,-शीतल, कषेला तथा दाह, रक्तातिसार, मुख और नासिकासे रुधिरके गिरनेको दूर करेहै ।

अपिच ।

काकोदुम्बारिकाशीतातिक्ताम्लास्तम्भकाकटुः।तुवराग्राहिणीप्रोक्ताचेन्द्रियाणांप्रसादका ॥ त्वग्दोषकामलापित्तरक्तपित्तकफाञ्जयेत् । श्वेतकुष्ठंव्रणंपाण्डुंरक्तरोगंचशोथकम् ॥

दुर्नामानंचोर्द्धदोषंनाशयेदितिकीर्तितम् । फलमस्याःस्वादुशीतंतुवरंतृप्तिकारकम् ॥ गुरुधातुवृद्धिकरं पाके च मधुरं स्मृतम् । स्निग्धंमलस्तम्भकरंपौष्टिकंग्राहिवातलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कठूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कषेला, ग्राही, इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त, कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन, ववासीर और ऊर्ध्वगत दोषको दूर करे है । इसके फल-स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक, पुष्टिजनक और मलरोधक हैं ।

विवरण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कठूमरका वडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं,फल गोल २ अंजीरकी समान होतेहैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लभेडेकेसे होते हैं, नदी उदुम्वरके पत्ते गूलरके पत्तासे छोटे और फलभी छोटे होते हैं, कठूमरके पत्ते गूलरके पत्तोसे वडे हैं वरन् गंगेरनके पत्तोंके समान होते हैं । इसके पत्तोंको छूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगतीहै और पत्तोंमें दूध निकलता है ।

शिरीषनामानि ।

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतनः ।
शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः ॥

अर्थ-शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भण्डिर, मूर्द्धपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट, वर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुक्रतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें	शिरीष ।
हिन्दीभाषामें	सिरस ।
वंगभाषामें	शिरीषगाछ, चटूका ।
मराठीभाषामें	शिरसी ।
गुजरातीभाषामें	शिरीष, शरपडो ।
कर्णाटकीभाषामें	शिरसु ।

तैलिङ्गीभाषामें	दिरसन, शिरीषंम्रानु ।
लैटिन्भाषामें	आल्वीझियालेबेक् । Albizzia lebbek
	आल्वीयमरा । A amara
फ़ारसीभाषामें	दरखते जकरिया, तुख्मेदरखतेजकरिया ।
अरबीभाषामें	सुलतानुल् असजार, हबेसुलतानुल् असजार ।

अस्य गुणाः ।

शिरीषःकटुकःशीतोविषवातहरःपरः ।
पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्यविनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सिरस-कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शिरीषोर्शोविषस्वेदत्वग्रुक्छोफविसर्पनुत् । (शा०नि०)

अर्थ-सिरस-बवासीर, विष, पसीना, त्वचाके दोष, सूजन और विसर्पको दूर करे है ।

अपिच्च ।

शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिरस-मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषेला, हलका तथा दोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषको हरनेवाला है ।

विवरण । सिरसके वृक्ष-बडे २ ऊंचे और सघन जंगलोंमें होते हैं, पत्ते-आमलेके समान छोटे २ और डालियोंमें बराबर लगते हैं, फूल-छोटे २ तन्तुओंसे सुसज्जित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, फली पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक लम्बी पौन अंगुलसे ज्यादे चौंडी, भीतर उसके भूरे रंगके बीज होते हैं एक फलीमें दश बीजका प्रमाण है ।

शिंशपानामानि ।

शिंशपाकृष्णसाराचपिपलायुगपत्रिका ।
पिच्छलाधूम्रिकावीराकपिलागुरुशिंशपा ॥

अर्थ-शिंशपा, कृष्णसारा, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, वीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा (अगुरु, पिच्छिला, युग्मपत्रिका, कालानुसार्य्य, श्यामा, धीरा, मंडलपत्री, तीव्रधूमका)

श्वेतशिंशपानामानि ।

शिंशपान्याश्वेतपत्रासिताह्वादिश्वशिंशपा ॥

अर्थ-श्वेतशिंशपा, श्वेतपत्रा, सितशिंशपा ।

कपिलशिंशपानामानि ।



कपिलाशिंशपाचान्यापीताकपिलशिंशपा ।
सारिणीकपिलाक्षीचभस्मगर्भाकुशिंशपा ॥

अर्थ-कपिलशिंशपा, पीता, कपिला, सारिणी, कपिलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिंशपा)

संस्कृतभाषामें	शिंशपा, श्वेतशिंशपा, कपिलशिंशपा ।
हिन्दीभाषामें	सीसम, सफेदसीसो, कपिलवर्णसीसम ।
वंगभाषामें	शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।
मराठीभाषामें	काळाशिसवा ।
गुजरातीभाषामें	शिशम ।
कर्णाटकीभाषामें	करीघइविड्ड, बिलीवइविड्ड, होंवदविड्ड ।
तै०	जिट्टरेगुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जानुक्कुकट्टइ, पंशकेदर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लॉक्वुड् सीस्ट्री । Black wood Sisoo tree
लै०	डालबरजिया लेटिफोलिया । Dalbergia latifolia
अरबीभाषामें	सासम ।

शिंशपागुणाः ।

शिंशपाकटुकातिक्ताकषायाशोषंहारिणी ।
उष्णवीर्य्याहरेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिक्रमीन् ॥

वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान्गर्भपातिनी । (भा० प्र०)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोषनाशक, उष्णवीर्य्य तथा मेद, श्वित्रकुष्ठ, वमन, कृमि, वस्तिरोग, व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफको हरनेवाला है तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

शिंशपादद्रुशोफघ्नीकुष्टजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाह, सूजन, कोढ, अजीर्ण और ज्वरको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

श्यामादिशिंशपातिक्ताकटूष्णाकफवातजित् ।
कुष्ठाजीर्णहरादीप्याशोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम कडवा, चरपरा, गरम, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सूजन और अतीसारको दूर करे है ।

श्वेतशिंशपागुणाः ।

श्वेतादिशिंशपातिक्ताशिशिरापित्तदाहनुत् ।

अर्थ-सफेद सीसम -कडवा, शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है ।

कपिलशिंशपागुणाः ।

कपिलाशिंशपातिक्ताशीतवीर्य्याश्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नीचच्छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कडवा, शीतवीर्य, श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

त्रिविधशिंशपागुणाः ।

शिंशपात्रितयंवर्ण्यंहिमंशोफविसर्पजित् ।
पित्तदाहप्रशमनंबल्यंरुचिकरंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारके सीसम-वर्णको सुंदर करनेवाले, शीतल, बलवर्द्धक, रुचिजनक तथा सूजन, विसर्प, पित्त और दाहको शान्तकरें हैं ।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बडे २ जंगलमें होतेहैं, पत्ते गोल नोकदार बेरीकी बराबर होते हैं, फूल बहुत छोटे २ गुच्छोंमें लगतेहैं, फली बहुत पतली और चपटी होतीहै, उसमें छोटे २ चपटे बीज निकलतेहैं, सीसमकी लकडी कुछ श्यामता और ललाई लिये भूरेरंगकी होतीहै, दूसरा काले रंगका सीसमभी इसीप्रकारका होता है ।

सालनामानि ।



सालस्तुसर्ज्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्बरः ।

अर्थ–साल, सर्ज्जकार्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्वर, (अश्वकर्णक, शस्यशम्वर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशंख, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्य्य, अजकर्णक, वस्तकर्ण, कषायी, ललन, गन्धवृक्षक, वंश, रालनिर्य्यास, दिव्यसार सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुशिक, कौशिक)

संस्कृतभाषामें	साल, अश्वकर्ण ।
हिन्दीभाषामें	साल, सखुया, सांखु ।
वंगलाभाषामें	शालगाछ, लताशाल ।
मराठीभाषामें	राळेचा वृक्ष, साजरा ।
कर्णाटकीभाषामें	सज्जरदामर ।
तै०	एपचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कुंगिलियम् ।
इंग्रेजीभाषामें	सालट्री । Sal tree
लैटिन्भाषामें	शोरिया रोवष्टा । Shoria Robusta

अस्य गुणाः ।

अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफक्रुमीन् ।
ब्रध्नवीद्रधिवाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अश्वकर्ण साल-कषेला तथा व्रण, पसीना, कफ, कृमि, ब्रध्न, विद्रधि, बधिरता, योनिरोग और कर्णरोगको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

अश्वकर्णःकटुस्तिक्तःस्निग्धःपित्तास्रनाशनः।
उरोविस्फोटकण्डूघ्नःशिरोदोषार्त्तिकृंतनः॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-अश्वकर्ण-कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उरोविस्फोट, कण्डु और मस्तकरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

उर्जोव्रणहरश्चैवश्लेष्मरक्तप्रकोपहृत्।

अर्थ-साल-व्रणविनाशक और कफ तथा पित्तके कोपको शांति करे है।

अपिच।

अश्वकर्णःकटुस्तिक्तोरूक्षःकान्तिकरोमतः। स्निग्धोष्णः कफपाण्डर्त्तिपित्तकर्णरुजाहरः॥ रक्तरुङ्मेहकुष्ठघ्नोव्रणोरःक्षतकण्डुहा। विषदोषंवातरोगंशिरारोगञ्चनाशयेत्॥ फलंचमधुरंरूक्षंशीतंस्तम्भनकृद्गुरु।मलावष्टम्भनकरंतुवरंलेखनंमतम्॥ आध्मानशूलवातानांकारकंपित्तनाशकम्।रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम्॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-अश्वकर्ण-शाल-चरपरा, कडवा, रूखा, कान्तिकारक, स्निग्ध, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तरोग, प्रमेह कोढ, व्रण, उरःक्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करे है। इसका फल-मधुर, रूखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कषेला, लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है। पित्तनाशक और रुधिरविकार, तृषा, दाह और क्षतक्षयको दूर करे है।

अथशालभेदः।

सर्ज्जकोऽन्योऽजकर्णःस्याच्छालोमरिचपत्रकः।

अर्थ-सर्ज्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक।

लैटिन्भाषामें वेटेरियाइण्डिका।

अस्य गुणाः।

अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोव्यपोहति।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान् । (भा०प्र०)

अर्थ–अजकर्ण (सालभेद)–चरपरा, कडवा, कषेला, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह, कोढ, विष और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सर्जस्तुकटुतिक्तोष्णोहिमःस्निग्धोऽतिसारजित् ।
पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नःकण्डूविस्फोटवातजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–अजकर्ण (सालभेदक) चरपरा, कडवा, गरम, शीतल, स्निग्ध तथा अतिसार, रक्तपित्त, कोढ, कण्डू और विस्फोटका नाश करे है ।

विवरण–शालके वडे वडे वृक्ष होतेहैं पत्तेभी वहुत वडे वडे लगतेहैं, फूल कुमखोंमें आतेहैं । दूसरा अश्वकर्ण, अजकर्ण इत्यादि शालके कई एक भेदहैं । शालके गोंदको राल कहते हैं ।

शल्लकीनामानि ।

शल्लकीगजभक्षाचगजप्रियाचह्लादिनी ।
महारुहावसामोचासुरभीसुरभीरसा ॥

अर्थ–शल्लकी, गजभक्षा, गजप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभीरसा (गजभक्ष्या, शिल्लकी, सिल्लकी, सल्लकी, सिह्लकी, सिह्लभूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारणा, ह्लादिनी, अश्वमूत्री (अश्वपुत्री) कुम्भी, अस्रफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा, सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, ह्रस्वदा, वहुस्रवा, गन्धवीरा, सुस्रवा, वनकर्णिका, नागवधू, सुश्रीका, गन्धमूला, रसाला, जलतिक्तिका)

संस्कृतभाषामें	शल्लकी ।
हिंदीभाषामें	सालई, सलई ।
वंगभाषामें	शलई, शालविशेष ।
मराठीभाषामें	शालईवृक्ष, धूपशलाई ।
गुजरातीभाषामें	शालेडुं, धूपेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	तदीकु ।
तामिलीभाषामें	कुंलि ।
लैटिन् भाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा । Boswelia Therifera

अस्य गुणाः ।

शल्लकीतुवराशीताश्लेष्मपित्तातिसारजित् । रक्तपित्तव्रणह-

रीपुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलंकफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम् । पुष्पंचास्यकफंवातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-शालई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करेहै तथा पुष्टिकारक है। इसका फल-कफ, वात, बवासीर कोढ और अरुचिको दूर करे है। इसका फूल-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है।

अन्यच्च।

वृक्षस्तुशल्लकीसंज्ञःपुष्टिकारीकषायकः । शीतवीर्य्यश्च मधुरस्तिक्तोग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषंकफंवातंपित्तंचार्शंचनाशयेत् । पक्वातिसारकुष्ठश्चरक्तपित्तंविनाशयेत् ॥ निर्य्यासोस्यमतोनाम्नाकुन्दुरुःसुज्ञभाषितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-शालई-पुष्टिकारक, कषेली, शीतवीर्य्य, मधुर, कडवी, मलरोधक तथा रुधिरविकार, व्रण, कफ, वात, पित्त, बवासीर, पक्वातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाशकरेहै। इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहतेहैं।

विवरण-सल्लकी अर्थात् सालईका बहुत बडा वृक्ष होताहै पत्ते नीमके समान होतेहैं, फलमें तीनरेखा होतीहैं, इसीवृक्षका गोंद, कुन्दरु होताहै।

अर्जुननामानि।

अर्ज्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधीधनंजयः ।
वैरांतकःकिरीटी च नदीसर्ज्जोथपांडवः ॥

अर्थ-अर्जुन-फाल्गुन, पार्थ, चित्रयोधी, धनंजय, वैरान्तक, किरीटी, नदीसर्ज्ज, पांडव (वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि, करवीरक, कौन्तेय, इन्द्रसूनु, गण्डीरी, शिवमल्लक, सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, धन्वी, वीर, वीरवृक्ष, धवल)।

संस्कृतभाषामें	अर्जुन।
हिन्दीभाषामें	कोह, कौह।
वंगलभाषामें	अर्जुनगाछ।
मराठीभाषामें	सारढोल।
गुजरातीभाषामें	कडायो।
तैलङ्गीभाषामें	मद्दिचेट्टु।

कर्णाटकीभाषामें तारेमत्ति।
लैटिन्भाषामें स्टर्क्युलियायुरेन्स। Sterculia urens

अस्य गुणाः।

ककुभःशीतलोभग्नक्षतक्षयविषास्रजित्।
मेदोमेहव्रणान्हन्तितुवरःकफपित्तहृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-अर्जुन शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिरविकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करैहै।

अन्यच्च।

अर्जुनस्तुकषायोष्णःकफघ्नोव्रणशोधनः।
पित्तश्रमतृषार्त्तिघ्नोमारुतामयकोपनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त श्रम और तृषानिवारक है एवं वातरोगको कुपित करैहै।

अन्यच्च।

पार्थःपथ्येक्षतेभग्नेरक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः (रा. नि.)

अर्थ-अर्जुन-क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमें हितकारी है।

अपिच।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णमधुरःशीतलःस्मृतः। कान्तिदोबलकृच्चैवलघुर्व्रणविशोधकः॥ अस्थिभंगास्थिसंहारेहितःकफविनाशकः। पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः॥हृद्रोगं पाण्डुरोगंचविषबाधांक्षतक्षयम्।मेदोवृद्धिंरक्तदोषंवर्म्मंश्वासंक्षतंतथा॥भस्मरोगंनाशयतिपूर्वैरितिनिरूपितम्।(नि०र०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, वलकारक हलका, व्रणशोधक, तथा, अस्तिभंग, अस्तिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा, दाह प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषवाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है।

विवरण-अर्जुनके वृक्ष वडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोंमें होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमें दूध निकलता है।

असननामानि ।

बीजकःपीतसारश्चपीतसालकइत्यपि ।
बन्धूकपुष्पःप्रियकःसर्जकश्चासनःस्मृतः ॥

अर्थ-वीजक, पीतसार, पीतसालक, वन्धूकपुष्प, प्रियक, असन, (पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, परमायुध, महासर्ज, सौरि, बंधूकपुष्प, वीजवृक्ष, नीलक, प्रियसालक, असन)

संस्कृतभाषामें	असन, वीजक, पीतसाल ।
हिंदीभाषामें	आसन, विजयसार । विजयसारका गोंद ।
वंगभाषामें	पियाशाल ।
मराठीभाषामें	विवळा, बिवळ्याचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	वीयां, हीराद्खण, वीयानो गुंद ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिन्नहोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	माद्दि ।
व०	अइन ।
इंग्रेजीभाषामें	इन्डियन् किनोट्री । Inbian Kinotree
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पस मार्सुपियं । Pterocarpus Mrisupium
फारसीभाषामें	कमरकस् ।

असनगुणाः ।

असनःकटुरुष्णश्चतिक्तोवातार्तिदोषनुत् ।
सारकोगलदोषघ्नोरक्तमंडलनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-असन (विजयसार)-चरपरी, गरम, कडवी, वातार्तिदोषनाशक, सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमंडलनाशक है ।

अन्यच्च ।

बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदक्रमीन् ।
हन्तिश्लेष्मास्रपित्तंचत्वच्यःकेश्योरसायनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-विजयसार-कोढ, विसर्प, चित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमी, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, त्वचा और केशोंको हितकारी तथा रसायन है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

असनस्यतुपुष्पाणिविपाकेमधुराणिच ।

तिक्तानिपाचनीयानिवातलानिभवन्तिहि ॥

अर्थ-विजयसारके फूल-पचनेमें मधुर, कडवे, पाचक और वादी हैं ।

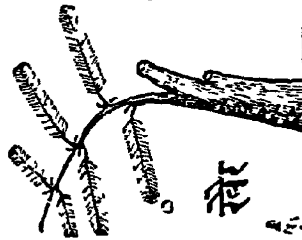
विवरण-असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोंमें बहुत बडे २ होतेहैं । पत्ते पीपलके पत्तोंसे कुछ २ छोटे होते हैं, फल पीले आमलेके समान होते हैं इसकी लकडी कालापन लिये होती है ।

खदिरनामानि ।

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः ।
कण्टकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयाज्ञिकः ॥

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य, याज्ञिक, (बालतनय, पथिद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम, मसख, युपद्रु, बालपुत्र, कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत्, बालपत्रक, यूपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञांग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, बहुसार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।



खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः ।

अर्थ-खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, (सोमवल्क, ब्रह्मशल्य, खदिरोपम, कार्म्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिवृक्ष, कण्टाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय)

संस्कृतभाषामें	खदिर, श्वेतखदिर ।
हिन्दीभाषामें	खैर, सफेदखैर, पपडियाखैर (कत्था) ।
वंगभाषामें	खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ।
मराठीभाषामें	खैर, पांढराखैर ।
गुजरातीभाषामें	खैरियो, गोरड ।
कर्णाटकीभाषामें	केंपिनखैर विलीयतत्रि ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंडचेट्टु, खासु तेल्लचंड ।
लैटिन्भाषामें	एकेश्यकिटेच्यु । Acacia catechu

खदिरगुणाः ।

खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् ।
तिक्तःकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दांतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषेली तथा कण्डू, खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ, आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ और कफको दूर करनेवाली है।

श्वेतखदिरगुणाः ।

कदरोविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ।
"हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्" ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सफ़ेद खैर-विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधिरदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रग और ग्रहवाधाको हरे है।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तुखदिरस्तिक्तःकषायःकटुरुष्णकः ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नःकफवातव्रणापहः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कडवी, कषेली, चरपरी, गरम तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतवाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है।

अस्यनिर्य्यासादिगुणाः ।

निर्य्यासस्तस्यमधुरोबल्यःशुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तुविशदोव्रण्योमुखरोगकफास्रजित् ॥ (म०वि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, वलकारक, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

खदिरसारनामानि ।

खादिरःखदिरोद्भूतस्तत्सारोरंगदःस्मृतः ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रंगद (अद्भुतसार, रंग, सतसार, खदिरशर्करा)

संस्कृतभाषामें	खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें	खैरसार, कत्था ।
वंगभाषामें	खयेर ।

मराठीभाषामें	खैराचा साड, नार, कात
गुजरातीभाषामें	खैरसार, काथो।
कर्णाटकीभाषामें	काथ।
इंग्रेजीभाषामें	केटेच्यु। Catechu
लैटिन्भाषामे	केटेच्युएक्स्ट्राकुटं। Gareebneytraeninm
फारसीभाषामें	कात।
अरबीभाषामें	कात।

अस्यगुणाः।

खादिरस्तुवरोष्णश्चतिक्तोरुचिकरोमतः। अग्निदीप्तिकरो ग्राहीदंतदाढर्यकरोमतः॥ कटुकःकफवातानांव्रणस्यच विनाशकः। कण्ठरोगंसर्वमेहंक्रुमीन्मुखरुजंतथा॥ अष्टादशैवकुष्ठानिस्थौल्यंचार्शचनाशयेत्।

अर्थ–खदिरसार तथा कत्था–कषेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, मलरोधक, दांतोंको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ, शरीरकी स्थूलता और ववासीरको दूर करे है।

विट्खदिरनामानि।

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कन्धोऽरिमेदकः।

अर्थ–इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, असिमेद, क्रिमिशात्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पूतिमेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामें	अरिमेद।
हिन्दीभाषामें	दुर्गंधिखैर।
वंगभाषामें	गुयेवाब्ला, विट्खयेर)
मराठीभाषामें	शेण्याखैर, गंधियाहिवर, घाणेराखैर।
गुजरातीभाषामें	इरिमेद, गन्धिलोखेर।
इंग्रेजीभाषामें	स्पंजट्री Sponge tree
लैटिन्भाषामें	एकेशीया फारनेशीयाना Acacia Farneisiana

अस्य गुणाः।

इरिमेदःकषायोष्णोमुखदन्तगदास्रजित्।

हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेली, गरम तथा मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, कण्डू, विष, कफ, कृमि, कोढ, विष और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

अरिमेदःकषायोष्णस्तिक्तकोभूतनाशनः।
शोफातिसारकासघ्नोविषवीसर्पनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेला, गरम, कडवा, भूतनाशक तथा सूजन, अतिसार, खाँसी, विषविकार और विसर्पको हरनेवाला है।

अस्यनिर्य्यासगुणाः।

अरिमेदस्यनिर्य्यासोमधुरस्तुबलप्रदः।
धातुवृद्धिकरश्चैवमुनिभिः संप्रभाषितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-अरिमेदका गोंद-मधुर, वलवर्द्धक और धातुवर्द्धक है।

लघुखदिरगुणाः।

लघुस्तुखदिरःप्रोक्तस्तिक्तोष्णश्चकषायकः। कटुस्तीक्ष्णश्चअम्लश्चरूक्षःकृमिकफापहः ॥ मुखरोगंदंतरोगंरक्तदोषंप्रमेहकम्। मदंकण्डूंविसर्पंचवस्तिरोगंविषज्वरम्॥ पिशाचबाधामुन्मादंकुष्ठंदाहंव्रणंतथा। आध्मानंनाशयत्येवफलंचास्यमधुस्मृतम्।स्निग्धंकटूष्णंमत्तंचकफवातविनाशकम्।

अर्थ-लघुखैर-कडवा, गरम, कषेला, चरपरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रूखा तथा कृमि, कफ, मुखरोग, दंतरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मद, कण्डू, विसर्प, वस्तिरोग, विषमज्वर, पिशाचबाधा, उन्माद, कोढ, दाह, व्रण और आध्मानको दूर करे है। इसके फल-मधुर, स्निग्ध, चरपरे, गरम तथा कफ और वातविनाशक हैं।

वल्लीखदिरगुणाः।

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णःकषायकः।
रसेम्लःश्वासकासघ्नः पित्तरक्तत्रिदोषजित् ॥ (नि०र०)

अर्थ-वल्लीखैर-कडवा, चरपरा, गरम, कषेला, खट्टा तथा श्वास, खाँसी पित्त, रक्तविकार और त्रिदोषनाशक है।

विवरण। खैरके वृक्ष वनमें वडे २ होतेहैं, इसकी छाल खरदरी और, चटकी हुई होतीहै, इसके पत्ते आमलेकेसे छोटे २ होतेहैं, इसपर महीन २ और टेढे २ कॉटे होतेहै, खैरसार और कत्था यह भी खैरहीके लकडीका बनाया जाताहै, दूसरे सफेद खैर और दुर्गन्धित खैरके वृक्ष वनमें वहुत होते हैं।

रोहीतकनामानि।

रोहीतकोरोहितकश्चरोहितःकुशाल्मलीदाडिमपुष्पसंज्ञकः॥
सदाप्रसूनःसचकूटशाल्मलिर्विरोचनःशाल्मलिकोनवाह्वयः

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोहित, कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तघ्न, प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, प्लीहघ्न, मांसदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि।

सप्ताह्वःश्वेतरोहीतः सितपुष्पः सिताह्वयः।
सितांगःशुक्लरोहीतोलक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः।

अर्थ-सप्ताह्व, श्वेतरोहीत, सितपुष्प, सिताह्वय, सितांग, शुक्लरोहीत, लक्ष्मीवान्, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामें	रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक।
हिन्दीभाषामें	रोहेडा।
वंगभाषामें	रोढा, रयना, नयना, कडार।
मराठीभाषामें	रक्तरोहिडा।
गुजरातीभाषामें	रगतरोहिडो, श्वेतरोहिडो।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुमल, मुत्तलू।
तैलिङ्गीभाषामें	मुल्लमोदुगचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	टेकोमा अण्डयुलेटा। Tecoma undulata

रोहीतकोयकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः परः (रा० व०)

अस्य गुणाः।

अर्थ-रोहेडा-यकृत्-प्लीहा, गुल्म और उदररोगनाशक है।

अन्यच्च।

रोहीतकौकटुस्निग्धौकषायौचसुशीतलौ।

कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

अर्थ-दोनों प्रकारके रोहेडे-चरपरे, स्निग्ध, शीतल, कषेले तथा कृमि-रोग, व्रण, प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोंको दूर करेहैं।

अपिच।

रोहीतकद्वयंस्निग्धंतुवरंकटुकंमतम्। रक्तप्रसादनंतिक्तंशीतलंचसरंमतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम्। विषंनेत्ररुजंगुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातंविबन्धंमांसंचमेदंशूलंचनाशयेत्।आनाहंभूतबाधांचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दोनोंप्रकाके रोहेडे-स्निग्ध, कंसेले, चरपरे. रक्तप्रसादक, कडवे, शीतल, सारक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत्, कफ, वात, विबन्ध, मांस, मेद, शूल, आनाह, और भूतबाधाको दूर करे हैं।

विवरण। रोहेडेके वृक्ष वनोंमें अधिक होते हैं, फूल अनारकी समान होताहै, लाल और सपेद इन फूलोंके भेदसे रोहेडेकी दो जाती हैं, राजनिघंटुमें लाल रोहिडे और कूटशाल्मलीके एकत्र नाम तथा गुण लिखेहैं और शोढलनिघंटुमेंभी कूटशाल्मली और लाल रोहिडा एकही लिखा है, किन्तु भावप्रकाशमें लाल रोहिडा और कूटशाल्मली भिन्न २ लिखे हैं और गुणभी अलग २ लिखे हैं सो भावप्रकाशसे कूटशाल्मलीके नाम और गुण आगे लिखे हैं।

बब्बूरनामानि।



मालाफलोथबब्बूलोयुग्मकण्टोदृढारुहः।
कण्टकीसूक्ष्मपत्रश्चपीतपुष्पःकषायकः ॥

अर्थ-मालाफल, वबूल, युग्मकण्ट, दृढारुह, कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीतपुष्प, कषाय (किंकिरात, किंकिराट, युगलाक्ष, कण्टलु, तीक्ष्णकण्टकगोशृंग, पङ्क्तिवीज, दीर्घकंटक, कफान्तक, दृढवीज, अजभक्ष, कण्टल, वब्बूल, वब्बोल, वावल, स्वर्णपुष्प, पीतक)

संस्कृतभाषामें	वर्बूर, वब्बूल ।
हिन्दीभाषामें	वबूर, कीकर, २ वबूरका गोंद ।
बंगभाषामें	वाबूगालाछ ।
मराठीभाषामें	बाभूळ, वाबूळ, कीकर, २ बाभळीचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	वावल ।
कर्णाटकीभाषामें	पुर्लई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वलवंतडु, नल्लतुम्म ।
औत्क०	गुइडा ।
वम्०	रोमकडि ।
द्राविलीभाषामें	कलिकिकर ।
इंग्रेजीभाषामें	एकस्याट्री । Acacia tree
	गम आरेबीक । Gum Arabic
लैटिन्भाषामें	एकेश्या आरेबीका Acacia Arabica
	एकेश्या गम्मि । AGummi
फारसीभाषामें	मुगिलां २ गोन् ।
अरबीभाषामें	अमुगिलां ३ सिमग ।

अस्य गुणाः ।

वर्बुरस्तुकषायोष्णःकफकासामयापहः ।
आमरक्तातिसारघ्नःपित्तदाहार्शनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बबूर-कषेला, गरम तथा कफ, खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त, दाह और, ववासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठक्रिमिविषापहः । (भा०प्र०)

अर्थ-बब्बूल-कफनाशक, मलरोधक तथा कोढ, कृमि और विषविनाशक है ।

अपिच ।

वब्बूलस्तिक्तमधुरःस्निग्धःशीतोष्णतूवरः । आमरक्ताति-

सारणांनाशनोग्राहकोमतः ॥ कफंकासंचपित्तंचदाहंरक्ता-तिसारकम् । वातंप्रमेहंशमयेत्पर्णन्तुग्रहकंमतम् ॥ रुच्यं कटूष्णकासघ्नंवातपुंस्त्वकफार्शनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बबूर-कडवा, मधुर, स्निग्ध, शीतल, गरम, कषेला, मलरोधक तथा आम, रक्तातिसार, कफ, खाँसी, पित्त, दाह, वात और प्रमेहको दूर करेहै इसके पत्ते-मलरोधक, रुचिकारक, चरपरे, गरम तथा खाँसी, वात, पुरुषता, कफ और बवासीरको हरेहैं।

अस्य फलगुणाः ।

"बब्बूलस्यफलंरूक्षंविशदंस्तम्भनंगुरु ।
कषायंमधुरंशीतंलेखनंकफपित्तहृत् ॥" (भावप्रकाश)

अर्थ-बबूरकी फली-रूखी, विशद, मलस्तम्भक, भारी, कषैली, मधुर, शीतल लेखन तथा कफ और पित्तनाशक है।

अस्यनिर्य्यासगुणाः ।

बब्बूलस्यतुनिर्य्यासोग्राहीपित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसन्धानकःशीतःशोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ०सं०)

अर्थ-बबूरका गोंद-मलरोधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे है। भग्नसन्धानकारक, शीतल और रुधिरके गिरनेको बंद करे है।

विवरण-बबूरके बहुतसे वृक्ष जलाशयके समीप जंगलादिमें एकत्र उपज खडे होतेहैं, इसमें सुईके समान महातीक्ष्ण काँटे होतेहैं और वे काँटे दो दो एकत्र खडे होतेहैं। पत्ते बहुत छोटे २ आमलेकेसे होतेहैं, फूल पीले रंगके गोल २ लगतेहैं, उसमें मिर्चके सदृश टेढी २ फली होती हैं।

अरिष्टकनामानि ।

अरिष्टकस्तुमाङ्गल्यःकृष्णवर्णोर्थसाधनः ।
रक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः ॥

अर्थ-अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, (रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य कुम्भबीजक, प्रकीर्य्य, सोमवल्कल)

संस्कृतभाषामें	अरिष्टक ।
हिन्दीभाषामें	रीठा ।
वंगभाषामें	रिटेगाछ ।
मराठीभाषामें	रिठा ।
गुजरातीभाषामें	अरिठा ।
तैलिंगीभाषामें	कुकुड ।
इंग्रेजीभाषामें	सोपबेरी सोपनट् । Soap berri Soap nut
लैटिन्भाषामें	सेपिंस्त इमार्जिनटस् । Sapintus emarginatus
	सेपिंडस् ट्रिफोलियेटस् । S Trifoliatus
फारसीभाषामें	फिंद्काहिंदी ।
अरबीभाषामें	बुंदक ।

अस्य गुणाः ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः । (भा० प्र०)

अर्थ-रीठा-त्रिदोषनाशक, ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अरिष्टकःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोलेखनोगुरुः । दोषत्रयहरोगर्भपातनोगर्भशान्तिकृत् ॥ तज्जलंवामकंपानान्नस्याच्छीर्षरुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथांहन्तिवमनाद्विषनाशनम् ॥

अर्थ-रीठा-पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है । इसके जलको पीनेसे वमन होतीहै और वमनसे विष दूर होताहै । इसके जलका नास लेनेसे मस्तकरोग और आधासीसी दूर होतीहै ।

विवरण । रीठेके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होतेहैं, पत्ते रीठेके एक डंडीमें ६।७ लगे होतेहैं, फल झुमखोंमें आतेहैं । रीठेके झागोंसे वस्त्र धोतेहैं ।

पुत्रजीवनामानि ।

पुत्रजीवःपवित्रश्चगर्भदःसुतजीवकः ।
पुत्रजीवोपत्यजीवःसिद्धिदोपत्यजीवकः ॥

अर्थ-पुत्रजीव, पवित्र, गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, सिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, श्लीपदापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्धसाधक)

संस्कृतभाषामें	पुत्रजीव ।
हिन्दीभाषामें	जियापोता, पनिजिया, जियापति, पितौंजिया ।
वंगभाषामें	जियापुँता, पुतजिया ।
मराठीभाषामें	पुत्रजीवकवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पुत्रजीवक ।
कर्णाटकीभाषामें	पुत्रजीव ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीश, कुँवरजुवि ।
लैटिन्भाषामें	पुत्रजीवा राक्सबुर्घिआई । Putrjiva Rozburghii

अस्य गुणाः ।

पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातकृत् ।
सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःकटुःपटुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीयापोता-भारी, वीर्यवर्द्धक, गर्भदायक, कफवातकारक, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, शीतल, स्वादिष्ठ, चरपरा, और खारा है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवोहिमोवृष्यःश्लेष्मदोगर्भजीवदः ।
चक्षुष्यःपित्तशमनोदाहतृष्णानिवारणः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीयापोता-शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, गर्भ और जीवदायक, नेत्रोंको हितकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृषाको हरनेवाला है ।

विवरण । पुत्रजीवक अर्थात पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण इंगुदीके वृक्षके समान होते हैं, पत्तेभी उसी आकारके, फलभी उसी आकारके होतेहैं और इसके बीजोंकी माला रुद्राक्षकी तुल्य बनती है, प्रायः साधु लोग बहुत बनालेतेहैं ।

इङ्गुदीनामानि ।

इंगुदोङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः ॥

अर्थ-इंगुद, अङ्गारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम (भल्लकीवृक्ष, इंगुदी, कण्टक, पुत्रिपत्रा, तापसतरु, इंगुल, हिंगुपत्र, विषकंटक, अनिलान्तक, गौरत्वक्, तनुपत्र, शूलारि, विषकण्टक, तीक्ष्णकण्ट, तैलफल, पूतिगन्ध, विगन्धक, क्रोष्टुफल, तिक्तमज्ज, कृशरक, जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा, तैलबीजा, दारूपमफला और अंगुलिदला)

संस्कृतभाषामें	इंगुदी ।
हिन्दीभाषामें	हिंगोट, गोंदी ।
वंगभाषामें	जियापुता, इङ्गोट ।
मराठीभाषामें	हिंगणवेट ।
गुजरातीभाषामें	इंगोरियो ।
तैलिंगीभाषामें	गरा ।
इंग्रेजीभाषामें	डेलील । Delil
लैटिन् भाषामें	वेलेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Roxburdhi
अरबीभाषामें	हिलेलजे ।

अस्य गुणाः ।

इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हन्त्युष्णश्चित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-हिंगोट-कोढ, भूतादिवाधा, ग्रहवाधा, व्रण, विष, कृमि; श्वित्रकुष्ठ और शूलको निर्मूल करै है । गरम, कडवा और पचनेमें चरपरा है ।

अन्यच्च ।

इंगुदी कफरक्तामग्रन्थिघ्नी स्याद्व्रणे हिता ।
ऐंगुदं स्वादु तिक्तं च स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित् ॥ (शा.नि.)

अर्थ-हिंगोट-कफ, रक्ताम, ग्रन्थि और व्रणविनाशक है । इसका फल श्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

अपिच ।

इंगुदीनामको वृक्षो मंदगंधिः कटुर्लघुः । तिक्तश्चोष्णः फेनिलश्च प्रोक्तश्चैव रसायनः ॥ कृमीन्वातं विषं शूलं श्वित्रं कुष्टं व्रणं कफम् । ग्रहपीडां भूतबाधां नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ अस्य पुष्पन्तु मधुरं स्निग्धं चोष्णं च तिक्तकम् । वातं कफं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-हिगोट-मदगन्धियुक्त, चरपरा, हलका, कडवा, गरम, फेनिल, (झागोंकोकरनेवाला) रसायन तथा कृमि, वात, विष, शूल, श्वित्रकुष्ठ, व्रण, कफ, ग्रहपीडा और भूतवाधाको दूर करैहै । इसके फूल मधुर, स्निग्ध, गरम, कडवे तथा वात और कफका नाशकरै हैं ।

अस्यफलमज्जागुणाः ।

इंगुद्याःफलमज्जकोजलयुतोलेपोमुखेकान्तिदः। (वै.जी.)

अर्थ-इंगुदीके फलकीमींगको जलके साथ मुखपै लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है ।

विवरण। इंगुदीके बडे २ वृक्ष जंगल और वनोंमें उत्पन्न होतेहैं, उस वृक्षमें कांटेभी होतेहैं, फूल-नींबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते हैं, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै मानों फल रसमें तर रहता है ।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनीझिंगिनीझिंगीसुनिर्यासाप्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिंगिनी, झिङ्गी, सुनिर्य्यासा, प्रमोदिनी, (कुल मंजरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें	जिंगिनी ।
हिंदीभाषामें	जिंगिणी ।
मराठीभाषामें	मोई, मोक ।
गुजरातीभाषामें	मवेडी, मोलेडु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओरीथ, मरम ।
लेटिन्भाषामें	ओडिनावोडियर । Odina wodier

अस्य गुणाः ।

जिङ्गिनीमधुरासोष्णाकषायायोनिशोधिनी ।

कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिणी-मधुर, गरम, कषेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण, हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमकीन है ।

अन्यच्च ।

जिङ्गिनीमुखदौर्गंध्यतृष्णावातकफापहा ।

कटुपाकाजयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुजः ॥ (सो० नि०)

अर्थ-जिङ्गिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमें चरपरी है ।

विवरण-जिंगनीके बडे २ ऊंचे वृक्ष जंगल और पहाडोंमें होतेहैं, पत्ते मरुवेके समान शाखाओंमें बराबर दोनों ओर लगे होते हैं, फूल सफेद और फल बेरके समान आतेहैं ।

तमालनामानि ।

तमालउक्तस्तापित्थः कालस्कन्धोमितद्रुमः ।
लोकस्कन्धोनीलध्वजोनीलतालश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज, तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महावल)

संस्कृतभाषामें	तमाल ।
हिन्दीभाषामें	स्यामतमाल ।
वंगभाषामें	तामालगाछ ।
मराठीभाषामे	तमालवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	तमाल ।
तैलिङ्गीभाषामें	तमालु ।

अस्य गुणाः ।

तमालस्तुवरः शोथदाहविस्फोटहृत्पुनः ॥ (म०नि०)

अर्थ-स्यामतमाल-कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है ।

अन्यच्च ।

कालस्कन्धश्चमधुरोबल्योवृष्योगुरुः स्मृतः ।
धातुवृद्धिकरः शीतः श्रमदाहकफापहः ॥
पित्तशोथंचविस्फोटंपित्तंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्यामतमाल-मधुर, वलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम, दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग, विस्फोट और पित्तको दूर करे है ।

विवरण-तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट वहुत होतेहैं, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होतीहैं, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल २ होतेहैं और फूल छोटे २ करौंदेके समान होतेहैं ।

तूणीनामानि ।

तूणीतुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा ।
कुठेरकः कान्तलकोनन्दीवृक्षश्चनन्दकः ॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी)

अस्य गुणाः ।

तूणीयकः कटुः पाकेकषायोमधुरोलघुः ।
तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित् (रा०नि०)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्षःकटुस्तिक्तः पीतस्तिक्तास्रदाहजित् ।
शिरोर्तिश्वेतकुष्ठघ्नःसुगन्धिः पुष्टिवीर्य्यदः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पीली, सुगन्धि, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्षःकटुस्तिक्तःपुष्टिकृच्छीतलोलघुः । वीर्य्यप्रदश्चमधुरस्तुवरोग्राहकोमतः । वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तोव्रणंकुष्ठंच नाशयेत् ॥ रक्तपित्तंश्वेतकुष्ठंशीर्षपीडांचनाशयेत् ॥ कण्डूं पित्तंरक्तदोषंदाहंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, कषेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, कुष्ठ, रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करे है ।

विवरण-तूनके वडे सघन वृक्ष जंगल और वनोंमें होतेहैं, पत्ते नीमके पत्तोंसे कुछेक वडे होतेहैं, फूल वहुत छोटे २ सफेद रंगके आतेहैं, लकडी इसकी वहुत उत्तम होतीहै ।

भूर्जपत्रनामानि ।

भूर्जपत्रः स्मृतोभूर्जचर्म्मीबहुलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र, भूर्ज, चर्म्मी, वहुलवल्कल (सुचर्म्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, भूर्ज्जपत्रक, चित्रत्वक्, विन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्म्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्म्मद्रुम, छत्रपत्र, शिवि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, दलनिर्म्मोक, पत्रकी, विद्यादल, पत्रपुष्पक, भुज, वहुपट, वहुत्वक्, मृदुच्छद)

संस्कृतभाषामें	भूर्जपत्र ।
हिन्दीभाषामें	भोजपत्र ।
वंगभाषामें	भूर्जिपत्र ।
मराठीभाषामें	भूर्जपत्र ।
गुजरातीभाषामें	भोजपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	भूर्जपत्र ।
इंग्रेजीभाषामें	जेकेमोंटी । Jacque montu
लैटिन्भाषामें	विट्युला भोजपत्रा । Betula bojaputia

अस्यगुणाः ।

भूर्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरः परः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भोजपत्र-भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त. राक्षस, मेद और विषविनाशक है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जःकटुकषायोष्णोभूतरक्षाकरः परः ।
त्रिदोषशमनः पथ्योदुष्टकौटिल्यनाशनः ॥
"पित्तरक्तरुजांहंतामंत्रकार्येषुसिद्धिदः" ।

अर्थ-भोजपत्र-चरपरा, कषेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट, कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मंत्रादि कार्य्योंमें सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जोबल्यः कफास्रघ्नः । (राजवल्लभ)

अर्थ-भोजपत्र-बलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते हैं, छाल, कागज तथा सूखे केलेके पत्तेकी समान होती है, पहिले भोजपत्रका वस्त्रके स्थानमें व्यवहार किया जाता था । भोजपत्रमें अनेक प्रकारके जंत्र मंत्र लिखे जाते हैं ।

पलाशनामानि ।

पलाशःकिंशुकःपर्णोयाज्ञिकोरक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठोवातपोथोब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, (करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, बीजस्नेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी)



संस्कृतभाषामें	पलाश ।
हिन्दीभाषामें	ढाक, टेसू , केसू, धारा, कांकरिया, पलाश ।
वंगभाषामें	पलाशगाछ ।
मराठीभाषामें	पळस ।
गुजरातीभाषामें	खाखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मुत्तलु ।
तैलङ्गीभाषामें	मातुकाचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	परशन् ।
औत्कलीभाषामें	पराशु ।
इंग्रेजीभाषामें	डाउनी ब्रांच व्युटिया । Downy branch butea
लैटिन्भाषामें	व्युटिया फ्रंडाझा (लाल) Butea frondoza
	व्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B. parvifflora

अस्य गुणाः ।

पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णोव्रणगुल्मजित्।भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ॥ कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् । तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् । तृड्दाहशमनं

वारतक्तकुष्ठहरंपरम्॥ फलंलघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफाप-
हम् । विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–ढाक–अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा, स्निग्ध, टूटे हाडको जोडनेवाला तथा गुदजरोग, संग्रहणी, ववासीर. कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है। इसके फूल–स्वादुपाकी, कटु, तिक्त. कषेले, वातवर्द्धक तथा कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त और कुष्ठको नष्टकरेहैं. तथा शीतल, मलरोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले हैं। इसके फल–हलके, गरम, पचनेमें चरपरे, रूखे तथा प्रमेह, ववासीर, कृमि, वात, कफ, कुष्ठ. गुल्म और उदररोगको दूरकरे हैं।

अन्यच्च।

पलाशस्तुकषायोष्णःकृमिदोषविनाशनः ।तद्बीजंपामक-
ण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत् ॥ तस्यपुष्पंचसोष्णंचकण्डूकु-
ष्ठार्त्तिनाशनम् ।रक्तःपीतःसितोनीलःकुसुमैस्तुविभज्यते॥
किंशुकेगुणसाम्येपिसितोविज्ञानदःस्मृतः ।

अर्थ–ढाक–कषेला, गरम और कृमिदोषनाशक है। इसके वीज पामा, कण्डू, दाद और त्वचाके दोषोंको दूर करेहैं। इसके फूल–गरम तथा कण्डू और कुष्ठको नष्टकरे हैं। टेसू–लाल, पीले, सफेद और नीले इन फूलोंके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोंके समानही हैं, किन्तु सफेद फूलका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है।

अन्यच्च।

पालाशमूलस्वरसोनेत्रच्छायांध्यपुष्पजित् ।
तद्बीजंकृमिविध्वंसिकांडोरसायनेहितः ॥(शो०नि०)

अर्थ–पलाशकी जडका स्वरस–नेत्रच्छाया, रतोंधी और नेत्रके फूलोंको दूर करे है। इसके वीज–कृमिनाशक हैं। इसकी कांड रसायनकर्म्ममें उत्तम है।

अपिच।

उष्णःपलाशस्तुवरोवृष्योदीप्तिकरःसरः। तिक्तःस्निग्धोग्रा-
हकश्चभग्नसन्धानकारकः ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासंग्रहण्य-

र्शवातहा ।कफंयोनिरुजंपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् । पुष्पभेदादयंरक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणिस्वादुतिक्तानि उष्णानितुवराणिच॥वातलानिग्राहकाणिशीतलान्यूषणानिच । तृषादाहपित्तकफास्त्रदोषंचकुष्ठकम् ॥ मूत्रकृच्छ्रं घातयन्तिफलंरूक्षंलघुस्मृतम् । उष्णंचकटुकंपाकेकफवातोदरकृमीन् ॥ कुष्ठगुल्मप्रमेहार्शःशूलानांचैवनाशकम् । फलबीजंचस्निग्धोष्णंकटुकृमिकफाञ्जयेत् ॥ नूतनाःपल्लवाश्चास्यकृमिवातविनाशकाः । (नि०र०)

अर्थ-ढाक-कषेला, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, सारक, कडवा, स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, प्लीहा, संग्रहणी, ववासीर, वात, कफ. योनिरोग और पित्तको दूर करे है । यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन फूलोंके भेदसे चारप्रकारका । इसके फूल-स्वादिष्ठ, कडवे, गरम. कषेले, वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल; चरपरे तथा तृषा, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूरकरे हैं । इसके फल-रूखे, हलके; गरम, पचनेमें चरपरे तथा कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, ववासीर और शूलको निर्मूल करेहैं । इसके फलके बीज-स्निग्ध, गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश करेहैं । इसके कोमल पत्ते-कृमि और वातका नाशकरे हैं ।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

पलाशभवनिर्य्यासोग्राहीचक्षपयेद्द्रवम् ।
ग्रहणीमुखजान्कासाञ्जयेत्स्वेदातिनिर्गमम् (आ०सं०)

अर्थ-ढाकका गोंद-मलरोधक तथा संग्रहणी, मुखरोग, खाँसी और पसीनेको दूरकरे है ।

विवरण । पलाश अर्थात् ढाकके वडे २ वृक्ष प्रायः नदीकी तलेटी और जांगल प्रदेशमें होते हैं, पत्ते-गोल २ एक एक डंडीमें तीन तीन आते हैं, प्रथम लाल निकलते हैं फिर हरे रंगके होजाते हैं । फूलकी डंडी काली और रंग अत्यन्त सुन्दर, लाल रंगके होते हैं । फली लम्बी २ लगती हैं, बीज गोल और चपटे निकलते हैं, इसके बीजोंको ढकपन्ना कहते हैं ।

हस्तिकर्णपलाशनामानि ।

तद्भेदेस्यात्किंशुलुकःकिञ्चुलोहस्तिकर्णकः ॥

अर्थ—इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह हैं किंशुलुक और हस्तिकर्णक ।

अस्य गुणाः ।

हस्तिकर्णःपरंवृष्योमेधायुर्बलवर्द्धनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ—हस्तिकर्णपलाश—अत्यन्तवीर्यवर्द्धक तथा मेधा, आयु और बलवर्द्धक है ।

शाल्मलीनामानि ।

शल्मलिःस्याच्छाल्मलिश्चशाल्मलीशल्मलीतथा ॥

अर्थ—शल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुक्कुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूल, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक, तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुक्कुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, वहुवीर्य्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि ।

निर्य्यासःशाल्मलेःपिच्छोशाल्मलीवेष्टकोपिच ।
मोचस्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यासइत्यपि ॥

अर्थ—शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचस्राव, मोचरस, मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रुत, मोचस्रुत, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाह्व, वेश्मरस, शाल्मल)

संस्कृतभाषामें	शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस ।
हिन्दीभाषामें	सेमल [र], २ सेमरका गोंद, मोचरस ।
वंगभाषामें	शिमुल, २ शिमुलेरआठा ।
मराठीभाषामें	सांवरी, शेंवरी २ सांवरीचा डीक ।
गुजरातीभाषामें	शेमलो २ शेमलानो गुंद, मोचरस ।
कर्णाटकीभाषामें	यवलवदमर ।
तैलङ्गीभाषामें	रुगचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	वोनूरो ।

तामिलीभाषामें पुला ।
इंग्रेजीभाषामें सिल्ककाटनट्री Silkcottyn tree
लैटिन् भाषामें बोंबेक्समेलेबेरिकम् Bombaxmalabaricum
सालमेलिया, मेलबेरिका Salmalia malabarica

शाल्मलीगुणाः ।

शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी ।
श्लेष्मलास्निग्धवृष्याचबृंहणीरक्तपित्तजित् (भा०प्र०)

अर्थ-सेमल-शीतल, स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादिष्ठ, रसायन, कफकारक, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

शाल्मलीपिच्छलावृष्याबल्यामधुरशीतला ।
कषायाचलघुःस्निग्धाशुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥ (रा० नि)

अर्थ-सेमल पिच्छिल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, शीतल, कषेला, हलका, स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है ।

अपिच ।

शाल्मलीमधुरावृष्याबल्याचतुवरामता । शीतलापिच्छिलालघ्वीस्निग्धास्वाद्वीरसायना ॥ शुक्रलाश्लेष्मलाचैवधातुवृद्धिकरीमता । रक्तपित्तंचपित्तंचरक्तदोषञ्चनाशयेत् ॥ त्वग्रसोस्याग्राहकःस्यात्तुवरःकफनाशनः । पुष्पन्तुशीतलं पित्तंगुरुस्वादुकषायकम् ॥ वातलंग्राहकंरूक्षंकफपित्तपिनाशकम् । रक्तदोषहरंचैवगुणाह्येतेफलस्यच ॥ कन्दोस्या मधुरःशीतोमलस्तम्भकरोमतः । शोफंदाहंचपित्तंचसन्तापंचैवनाशयेम् (नि०र०)

अर्थ-सेमल-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कषेला, शीतल, पिच्छिल, हलका, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, शुक्रजनक, कफकारक, धातुवर्द्धक, तथा रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै । इसकी छाल-कषेली और कफनाशक है, इसके फूल-शीतल, कडवे, भारी, स्वादिष्ठ, कषेले, बादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरकें दोषोंको दूर

करे हैं। इसके फलके गुणभी इसीकी समान जानने। इसका कंद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सूजन, दाह, पित्त और सन्तापको हरनेवाला है।

अस्यपुष्पशाकगुणाः।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसैन्धवसाधितम्।
प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः॥
कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितः।

अर्थ-घृत और सैंधवनोंनसे बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक, असाध्य प्रदररोगको हरे है, कफ और रक्तपित्तको दूर करे है, मलरोधक और वादी है।

मोचरसगुणाः।

मोचारसस्तुतुवरोग्राहीबलकरः स्मृतः। पुष्टिकृद्धातुकृद्व-र्ण्योबुद्धिदःशीतलः स्मृतः॥ वयसस्थापनोवृष्योगुरुस्वा-दूरसायनः। स्निग्धःकफकरोगर्भस्थापकोवातनाशनः॥ अतिसारप्रवाहघ्नोरक्तरुक्पित्तदाहहा। आमातीसारशम-नोरक्तातीसारनाशनः॥ "पारदस्यविकारघ्नोसेवनान्मास-मात्रतः। केचिन्मोचरसस्थानेपूगपुष्पंचनिक्षिपेत्"॥(नि.र.)

अर्थ-मोचरस-कषेला, मलरोधक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वातनाशक तथा अतिसार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पित्तदाह, आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवाला है। इसको एक मासपर्यन्त सेवनकरनेसे पारेके विकार दूर होतेहैं, कोई २ वैद्य मोचरसके स्थानमें सुपारीका फूल गेरतेहैं।

विवरण। सेमलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमें अधिक होतेहैं एक डंडीमें आठ दश पत्ते लगतेहैं इसमें कांटे होतेहैं। फूल कमलकी समान लालरंगके होतेहैं। फल आकके समान लगतेहैं। भीतरसे रुई निकलतीहै। इसके गोंदको मोचरस कहते हैं।

कूटशाल्मलीनामानि।

कुत्सितः शाल्मलिः प्रोक्तोरोचनः कूटशाल्मलिः॥

अर्थ-कुत्सितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्मलि।

कूटशाल्मलीगुणाः ।

कूटशाल्मलिकरितक्तः कटुकः कफवातनुत् ।
भेद्युष्णःप्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः ॥
भूतानाहविबंधास्त्रमेदःशूलकफापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ–कूटशाल्मली–कडवा, चरपरा, कफवातनाशक, भेदक, गरम तथा प्लीहा, उदररोग, गुल्म, विष, भूत, आनाह, विबंध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है । कूटशाल्मलिके वृक्ष जंगलमें विशेष करके होते हैं, पत्ते जिंगिनीकी समान, फूल अत्यंत लालरंगके आतेहैं । एकसफेद रंगका होताहै ।

धवनामानि ।

धवःपिशाचवृक्षश्चशकटाख्योधुरन्धरः ॥

अर्थ–धव, पिशाचवृक्ष, शकटाख्य, धुरन्धर, (शाकटाख्य, दृढतरु, गौर, कषाय, मधुरत्वंक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच्)

संस्कृतभाषामें	धव ।
हिन्दीभाषामें	धौं, धावा ।
बंगभाषामें	धाऊयागाछ ।
मराठीभाषामें	धावडा ।
गुजरातीभाषामें	धावडो ।
कर्णाटकीभाषामें	सिरिवरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	नारिंजचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	एनोजिसस् लाटिफोलिया । Anogisus Latifolia
	कोनोकार्पस लाटिफोलिया । Conocorpus Latifolia

अस्य गुणाः ।

धवःकटुःकषायःस्यात्कफवातविनाशनः ।
पित्तप्रकोपनोरुच्यःदीपनःपाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ–धव–चरपरा, कषेला, कफवातनाशक, पित्तको कुपितकरनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

धवस्तुतुवरःशीतोमधुरःकटुकोमतः ।

दीपनोरुचिकृच्चैवपाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥

कफपित्तार्शवातानांनाशकःपरिकीर्तितः । फलंचास्यहिमं स्वादुरूक्षंचतुवरंमतम् ॥मलस्तम्भकरंचैववातलंकफपित्त-जित् । "मूलंकटुकषायंचपित्तकृद्दीपनंपरम्" ॥ (नि.र.)

अर्थ-धौं-कषेला, शीतल, मधुर, चरपरा, दीपन, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, प्रमेह, कफ, पित्त, ववासीर और वातको दूर करैहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, कषेला, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक तथा कफ-पित्तनाशक है । इसकी जड-चरपरी, कषेली, पित्तकारक और परम दीपनहै ।

विवरण । धवके वृक्ष जंगलमें अधिक होतेहैं, इसके पत्ते अमरूदकी समान और छाल सफेद रंगकी होतीहै, फल वहुत छोटे होतेहैं इसकी लकडीके हल और मूसल वनतेहैं ।

धन्वंगनामानि

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः ॥

अर्थ-धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन ।

अस्य गुणाः ।

धन्वङ्गःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः ।
वृंहणोबलकृद्रूक्षःसन्धिकृद्व्रणरोपणः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धन्वंगवृक्ष-कफ, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करैहै, कषेला, हलका, वृंहण, वलकारक, रूखा, संधिकारक और व्रणको भरनेवाला है ।

धन्वननामानि ।

धन्वनःपिच्छिलत्वक्चधनुर्वृक्षोमहावलः ।

अर्थ-धन्वन, पिच्छिलत्वक्, धनुर्वृक्ष, महावल, (रक्तकुसुम, रुजासह, पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्य गुणाः ।

धन्वनस्तुवरोवृष्योमधुरःकटुकोमतः । बल्योरूक्षोलघुश्चैवधातुवृद्धिकरोमतः ॥ किंचिदुष्णश्चसंप्रोक्तोव्रणरोपणकारकः । कफमातहरोदाहशोषकण्ठरुजापहः ॥ रक्तरुक्पि-

त्तकासघ्नःपीनसस्यविनाशकः। फलंचास्यस्वादुशीतंतुवरंकफवातहम् ॥

अर्थ–धामिनवृक्ष–कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, बलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ, वात, दाह, शोष, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है। इसका फल–स्वादिष्ठ, शीतल, कषेला, कफ और वातविनाशक है।

विवरण। धामिनके वृक्ष–बहुत बडे और लम्बे होतेहैं, पत्तेबेरके पत्तोंसे कुछ बडे होतेहैं, इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममें आतीहै।

करीरनामानि।

करीरंगूढपत्रंचशाकपुष्पंकटूफलम्।
ग्रन्थिलंतीक्ष्णसारंचकण्टकीमरुभूरुहम् ॥

अर्थ–करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, करिर, करक, तीक्ष्णकण्टक, मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदाहिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णसुंदर, विष्वक्पत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें	करीर।
हिंदीभाषामें	करील।
वंगभाषामें	करील (मथुरादिमें) कचडा।
मराठीभाषामें	नेवती।
गुजरातीभाषामें	केर।
कर्णाटकीभाषामें	तिप्पतिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	कवरकुराक एनुगदंत सुमोदतु।
इंग्रेजीभाषामें	केपर Caper.
लैटिन्भाषामें	केपरिस् स्पाइनोझा Cappuris spinosa.
फारसीभाषामें	कबार।

अस्य गुणाः।

करीरमाध्मानकरंकषायंकटूष्णमेतत्कफहारिभूरि।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोषहारि।

अर्थ–करील–आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खर्ज्जू और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च ।

करीरः कटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा ववासीर. कफ, वात, आम तथा विष, सूजन, और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

करीरस्तुवरश्चोष्णः कटुश्चाध्मानकारकः । रुच्योभेदकरः स्वादुःकफवातामशोथजित्॥ विषाशोव्रणशोथघ्नःकृमिपामाहरोमतः । अरोचकंसर्वशूलंश्वासंचैवविनाशयेत् ॥ फलंचास्यकटुस्तिक्तमुष्णंचतुवरंमतम् । विकासिमधुरंग्राहिमुखवैशद्यकारकम् । । हृद्यंरूक्षंकफंमेहंदुर्नामानंचनाशयेत् । पुष्पंवातकरंप्रोक्तंतुवरंकफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक, रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, सूजन, विष, ववासीर, व्रण, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै । इसका फल-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, विकासि, मधुर, मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

करीरोव्रणशोफार्शोरक्तहृत्कफवातजित् । कटुपाकरसोत्युष्णोयकृत्प्लीहापहोग्निकृत् ॥ तत्पुष्पंकफवातघ्नंकटुपाकरसंलघु । मृष्टमूत्रपुरीषंचसदापथ्यंरुचिप्रदम् ॥ बालंचास्यफलंपाकेकटुकंश्लेष्मशोथजित् । कषायंवातलंतिक्तंतत्पक्वंकफपित्तजित् ॥ (शो०नि)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, ववासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत् और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमें चरपरा, अत्यंत गरम और अग्निवर्द्धक है । इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमेंभी चरपरे, हलके, मूत्र और मलको करनेवाले, सदैव पथ्य और रुचिकारक हैं ।

इसके कच्चे फल-पचनेमें चरपरे, कफनाशक, शोथनिवारक, कषेले, बादी, कडवे और पक्के फल-कफ तथा पित्तनाशक हैं ।

विवरण-करीलके वृक्ष भूडके ऊपर तथा मारवाडकी भूमिमें अधिकतासे होते हैं, इसकी डंडी नीले रंगकी और फूल गुलावी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमें इसके ऊपर फल फूल आते हैं, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमें फूलही फूल दीखते हैं ।

शाखोटनामानि ।

शाखोटः पीतफलकोभूतावासःखरच्छदः ।

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतावास, खरच्छद (पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शंखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गवाक्षी, धूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कैशिक्योज, क्षीरनाश)

सं०	शाखोट ।	गु०	साहोडा ।
हिं०	सहोडा (रा) ।	क०	आखोडमरणु ।
वं०	शेओडा, शांडा ।	तै०	भारिणिकेचेट्टु वरनूकी ।
म०	सहोड ।	लै०	स्ट्रेप्ल्यूसासूपर । Streplusasper

अस्य गुणाः ।

शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ।

अर्थ-सहोडा-रक्तपित्त, बवासीर,वात, कफ और अतिसारको दूर करे है ।

विवरण । सिहोडेके वृक्ष अत्यंत गँठीले झाड झंकाडसे मध्यम कदके होतेहैं, पत्ते छोटे छोटे और चिकने चिकने होतेहैं, फूल सफेद रंगके और लकडीमें कांटेसे प्रतीत होतेहैं ।

शाकनामानि ।

शाकः क्रकचपत्रःस्यात्खरपत्रोतिपत्रकः ।
महीरुहःश्रेष्ठकाष्ठः स्थिरसारोगृहद्रुमः ॥

अर्थ-शाक, क्रकचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, द्वारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलफल, योगी, हलीमक. गन्धसार, स्थिरसार, स्थिरक, ध्रुवसाधन)

संस्कृतभाषामें	शाक ।
हिन्दीभाषामें	सागोन, सागवन ।
वंगभाषामें	शेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	साग, सागवान ।
गुजरातीभाषामें	शाग ।
कर्णाटकीभाषामें	नैगु ।
तैलङ्गीभाषामें	टेकुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	टेक ।
औत्क०	सिंगुरु ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटीकट्री । Indian teak tree
लैटिन्भाषामें	टेकटोना ग्रांडीस् । Tectona Grandis.
फारसीभाषामें	फिलगोस् ।
अरबीभाषामें	फिल्जोश् उजनुलफिल ।

अस्यगुणाः ।

शाकस्तुसारकःप्रोक्तःपित्तदाहश्रमापहः ।
कफघ्नंमधुरंरूक्षंकषायंशाकवल्कलम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शाक (सागोन)-सारक तथा पित्त, दाह और श्रमनाशक है । सागोनकी छाल-कफनाशक, मधुर, रूखी और कषेली है ।

अन्यच्च ।

भूमिसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सागवन-शीतल और रक्तपित्तको शुद्धकरनेवाला है ।

अपिच ।

शाकःश्लेष्मानिलामघ्नोगर्भसन्धानदोहिमः ।(म०पा०नि०)

अर्थ-सागोन-कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

शाकवृक्षस्तुतुवरःशीतलोरक्तपित्तहा । गर्भस्थैर्य्यकरश्चैव गर्भसन्धानकारकः॥ वातपित्तंतथार्शांसिकुष्ठंचातिसृतिंजयेत् । अस्यपुष्पंतुतुवरंतिक्तंचविशदंलघु ॥ वातप्रकोपनं रूक्षंकफपित्तप्रमेहनुत् । वल्कलंचास्यमधुरंरूक्षंचमधुरंमतम् ॥ कफनाशकरंचैवमुनिभिः परिकीर्त्तितम् । (नि.र.)

अर्थ-शाकवृक्ष-कषेला, शीतल, रक्तपित्तनाशक, गर्भको स्थिरकरनेवाला, गर्भसन्धानकारक तथा वात, पित्त, बवासीर, कोढ और अतिसारको दूर करेहै। इसके फूल-कषेले, कडवे, विशद, रूखे हलके, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहैं। इसकी छाल-मधुर, रूखी, कषेली और कफनाशक है।

विवरण। शाकके बडे वृक्ष जंगलमें होतेहैं, पत्ते बडे और खरखरे होतेहैं इसके पत्तोंको हाथसे मलनेसे हाथ लाल होजाते हैं सागके फूल छोटे और सफेद होतेहैं।

वरुणनामानि।

वरुणोबर्हपुष्पश्चतिक्तशाकःकुमारकः।
उरुमाणःसेतुवृक्षःश्वेतद्रुर्मारुतापहः॥

अर्थ-वरुण, वर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, (वरण, कुमार, अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल)

संस्कृतभाषामें	वरुण।
हिन्दीभाषामें	वरना (विलि)।
वंगभाषामें	वरुणगाछ।
मराठीभाषामें	वायवरणा, (कों०) भाटवरणा।
गुजरातीभाषामें	वरणो।
कर्णाटकीभाषामें	मदवसले।
तैलिंगीभाषामें	उरुमाट्टि, जाजिचेट्टु, उलिमिरिचेट्टु।
तामिलिभाषामें	मरलिंगम्।
लैटिन्भाषामें	क्रेटिवा, रोक्सबुर्घिआई। Crateava. Roxburghii
	क्रेटिवा, रिलिजिओसा। Crataeva. C. Religiosa.

अस्य गुणाः।

वरुणःपित्तलोभेदीश्लेश्मकृच्छ्राश्ममारुतान्।
निहन्तिगुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णाग्निदीपनः॥
कषायोमधुरस्तिक्तः कटुकोरूक्षकोलघुः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वरना-पित्तकारक, भेदक, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म, वातरक्त

और कृमिका नाश करेहै । गरम, अग्निप्रदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है ।

अन्यच्च ।

वरुणःकटुरुष्णश्चरक्तदोषहरः परः ।
शीतवातहरःस्निग्धोदीप्योविद्रधिवातजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरना-चरपरा, गरम, रुधिरविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

वरुणोऽनिलशूलघ्नोभेदीचोष्णोऽश्मरीहरः ।
पुष्पंवरुणजंग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ॥ (रा० ज०)

अर्थ-वरना-वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करेहै । वरनाके फूल-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करेहैं ।

अपिच ।

वरुणोष्णःकटुःस्निग्धोदीपनोमधुरःस्मृतः । लघुस्तिक्त-
स्तुवरःपित्तलोभेदकःस्मृतः ॥ वातंकफंविद्रधिंचमूत्रकृ-
च्छ्रंचनाशयेत् । अश्मरींवातरक्तंचगुल्मंरक्तरुजंकृमीन् ॥
रक्तदोषंशीर्षवातंमूत्राघातंचहृद्रुजम् ॥ हृद्रोगंनाशयत्येव
पुष्पंचास्यचग्राहकम् ॥ रक्तदोषहरंचैवफलंचास्यसरंगुरु ।
पाकेतुमधुरंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशकम् ॥ पित्तंकफंना-
शयतीत्येवंचमुनिभिर्मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वरना-गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कषेला, पित्तजनक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मूत्राघात, हृदयरोग और उरःशूलको नष्ट करे है । इसका फूल-मलरोधक, रक्तविनाशक । इसके फल-सारक, भारी, पचनेमें मधुर, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त और कफको हरे हैं ।

विवरण । वरनेका वडा वृक्ष होता है, पत्ते वेलकी समान तीन २ लगते

हैं, फल बेलकी समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फूल गुलतुरेंकी सदृश होता है ।

कटभीनामानि ।

कटभीनाभिकाशौण्डीपाटलीकिणिहीतथा ।
मधुरेणुःक्षुद्रश्यामाकैडर्य्यश्यामलानवा ॥

अर्थ-कटभी, नाभिका, शौण्डी, पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्भर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि ।

सितादिकटभीश्वेताकिणिहीगिरिकर्णिका ।
शिरीषपत्रीकालिन्दीशतपादाविषघ्निका ॥
महाश्वेतामहाशौण्डीमहादिकटभीदश ॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपादा, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौंडी और महाकटभी)

संस्कृतभाषामें	कटभी, श्वेतकटभी ।
हिन्दीभाषामें	करही, कटभी, हरिमल ।
मराठीभाषामें	वाकुंभा ।
गुजरातीभाषामें	वाघुंगा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लाल ।
इंग्रेजीभाषामें	केरीसट्री । Careys. tree
लैटिन्भाषामें	केरिया आर्बोरिया । Careya arborea

कटभीगुणाः ।

कटभीचेत्कटुरुष्णागुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी ।
वातकफाजीर्णरुजांशमनीश्वेताचतत्रगुणयुक्ता॥(रा.नि.)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान शूल, वात, और अजीर्णरोगको दूर करेहै और श्वेतकटभी गुणयुक्तहै ।

अन्यच्च ।

कटभीतुप्रमेहार्शोनाडीव्रणविषक्रृमीन् ।
हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता ।
तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रजित् ॥ ((भावप्रकाश)

अर्थ-कटभी-प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चरपरी और रूखी है । इसका फल-कपेला और विशेषकरके कफ तथा शुक्रनाशक है ।

विवरण । कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होतेहैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गोल होते हैं, फल अंड खर्बूजेकी समान छोटे छोटे लगतेहैं ।

मुष्ककनामानि ।

मुष्ककोमोक्षकोमुष्टिर्मूर्खकोमोचकस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः ॥

अर्थ-मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गौलिक, मेहन, पाटली विषापह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीढ, गोलिह, क्षारोष्ण, शिखरी, वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुंचक, जटालु, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्कक, पाटली, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें	मुष्कक, मोक्षक ।
हिन्दीभाषामें	मोषा, मोखा, फरवाह ।
वंगभाषामें	घण्टापारुल ।
मराठीभाषामें	मोकडी, मोखावृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	मरखो ।
कर्णाटकीभाषामें	मोखद्लाई ।
तैलिङ्गीभाषामें	मोक्कपुचेट्टु, मुष्कतुण्डुचेट्टु ।

लैटिन्भाषामें स्क्रीवीरास्वीटे निओइविस् । Schrc bera swiete nioides

अस्य गुणाः ।

मुष्ककःकटुकोम्लश्चरोचनःपाचनःपरः ।
प्लीहगुल्मोदरार्त्तिघ्नोद्विधातुल्यगुणान्वितः (रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके मोखावृक्ष-चरपरे, खट्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥

अर्थ-मोखा-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, विष, मेद, गुल्म, कण्डू, वस्तिरोग, कृमि और शुक्रको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

मोक्षकःकफवातघ्नोग्राहीगुल्मविषकृमीन्।
हन्त्युष्णोवस्तिरुक्कण्डूतत्पुष्पंकफपित्तजित्॥
निर्य्यासोस्यपरंवृष्यःशोषपित्तानिलापहः। (म.नि.)

अर्थ-मोखा-कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम, वस्तिरोग और कण्डूको दूर करे है। इसका फूल कफपित्तनाशक है। इसका गोंद-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा शोष, पित्त आर वात-विनाशक है।

अन्यच्च।

मुष्ककःकटुकश्चाम्लोरुचिकृत्पाचनःस्मृतः। ग्राहकोष्णः पटुस्तिक्तःप्लीहगुल्मोदरापहः॥ विषदोषंकफंवातंमेदरुग्ब-स्तिशूलहा। शुक्रदोषंकर्णरुजंपित्तंकण्डूंकृमीञ्जयेत्॥ पुष्पं कुष्ठहरंज्ञेयंवातपित्तकफप्रणुत्। फलमग्नेर्दीप्तिकरंभेदकंरो-चकंमतम्॥ गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नंशुक्रदोषोदरञ्जयेत्। (नि.र.)

अर्थ-मोखावृक्ष-चरपरा, खट्टा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम, निमकीन, कडवा तथा प्लीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार, कफ, वात, मेद-रोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करेहै। इसका फूल-कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करेहै। इसका फल-अग्निप्रदीपक, दस्तावर, रोचक तथा गुल्म, प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करै है।

विवरण। मोखके वृक्ष सफेद और काले इनभेदोंसे दोप्रकारके होतेह, पत्ते बडे बडे होतेहैं। उनमें आककी समान दूध निकलता है। फल घंटा-कारके लगतेहैं।

अम्बुशिरीषिकानामानि।

शिरीषिकाढिंढिणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका।

अर्थ-शिरीषिका ढिंढिणिका दुर्बला, अम्बुशिरीषिका।

संस्कृतभाषामें	अम्बुशिरीषिका ।
हिन्दीभाषामें	जलसिरस, ढाढोन ।
मराठीभाषामें	जलशिरसी ।

अस्य गुणाः ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका ।

अर्थ–जलसिरस (ढाँढोन)–त्रिदोष, कफ, कोढ और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

ढिंढिणीकफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ (म०नि०)

अर्थ–जलसिरस–कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात और विषको दूर करैहै।

विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुछ छोटे जलमें होतेहें ।

शमीनामानि ।

शमीशक्तुफलीशान्ताकेशहन्त्रीशिवाफला ।
मङ्गल्याशुभदालक्ष्मीःपवित्रापापनाशिनी ॥

अर्थ–शमी, शक्तुफली, शान्ता, केशहन्त्री, शिवाफला, मङ्गल्या, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी (सक्तुफली, शक्तुफला, सक्तुफला, शिवा, काननारि, तुंगा, कचरिफला, केशमथनी, ईशानी, तपनतनया, इष्टा शुभकरी, हविर्गन्धा, मेध्या, दुरितदमनी, शक्तुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर, ईशान, सुरभी, पापशमनी, भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशाना, शंकरा. शंकुफलिका, सुभद्रा)

संस्कृतभाषामें	शमी ।
हिन्दीभाषामें	छोंकर (रा) समी, सफेदकीकर, छिकुर ।
वंगभाषामें	शाँइ, छुँइवाव्ला ।
मराठीभाषामें	थोरशमी, लघुशमी ।
गुजरातीभाषामें	खिजडी, नानी खिजडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बनि, कावन्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शमीचेट्टु ।
औत्क०	शुमि ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पंजट्री । Spnng tree
लैटिन् भाषामें	प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा । Prosopis spicigera

अस्य गुणाः ।

शमीरूक्षाकषायाचरक्तपित्तातिसारजित् ।
तत्फलंतुगुरुस्वादुरूक्षोष्णंनखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोंकर) रूखा, कषेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारनाशकहै । इसका फल भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम तथा नख और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारोचनीलघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥
"तत्फलंपित्तलंरूक्षंमेध्यंकेशविनाशनम्" । (भा०प्र०)

अर्थ-छोंकर-कडवा, चरपरा, शीतल, कषेला, रोचन, हलका तथा कफ, खाँसी, भ्रम, श्वास, कोढ, ववासीर और कृमिको दूर करे है । इसका फल -पित्तजनक, रूखा, मेधाकारक और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमीतुतुवरारूक्षाशीतालघ्वीचतिक्तका । कटुकारेचनीचैवरक्तपित्तातिसारनुत्॥कुष्ठार्शःश्वासकासघ्नीकफभ्रमकृमीन् हरेत् । कम्पश्रमानांशमनीफलंतीक्ष्णञ्चपित्तलम् ॥ मेध्यंगुरुस्वादुरूक्षमुष्णंकेशहरंपरम् ।

अर्थ-शमी (छोकर)-कषेला, रूखा, शीतल, हलका, कडवा, चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त, अतिसार, कुष्ठ, ववासीर, श्वास, खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम और केशोंको दूर करेहै ।

विवरण । वडा वृक्ष होताहै, पत्ते छोटे, खैरकी समान और फली सेंगरीकी समान होतीहै । यहभी एक ववूरकी जातीमेंसे है ।

सप्तपर्णनामानि ।

सप्तपर्णोविशालत्वक्छारदोविषमच्छदः ।

अर्थ-सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विषमच्छद (विद्ध, विनद, विन्याक, सारद, देववृक्ष, दलेगन्धि, शिरोरुजा, ग्रहनाश, सुतिपत्र, ग्रहाशी, ग्रहनाशन,

गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुक्छद, अयुग्मच्छद, गुच्छपुष्प, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, वहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सप्तच्छद, छत्रपर्ण, शरदिपुष्प)

संस्कृतभाषामें	सप्तपर्ण ।
हिंदीभाषामें	छतिवनं, सतवन, सतोना, छातियान् ।
वंगभाषामें	छातिमगाछ, छेतेन ।
मराठीभाषामें	सात्विण ।
गुजरातीभाषामें	सप्तपर्ण ।
व०	छातविण ।
कर्णाटकीभाषामें	एलेलेग ।
तैलिङ्गीभाषामें	ऐडाकुल, अरिटाकु ।
लैटिन्भाषामें	आल्स्टोनिया स्कोलेरिस् । Alstonia schlaris

अस्य गुणाः।

सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्टास्रजन्तुजित् ।
दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः (भा०प्र०)

अर्थ-सतवन-व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और गुल्मका नाश करेहै। दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुछ २ दस्तावर है।

अन्यच्च।

सप्तपर्णःकषायोष्णस्तिक्तोदीतिकरः सरः।
स्निग्धोहृद्यः कृमिश्वासकुष्ठगुल्मव्रणास्रजित् ॥
मदगन्धिस्त्रिदोषघ्नःशूलरक्तरुजापहः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सतवन-कषेला, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, सारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ, गुल्म, व्रण, रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करेहै।

विवरण। वडा वृक्ष है, पत्ते शेमलकी समान और एक २ डालीमें सात २ लगतेहैं।

तिनिशनामानि।

तिनिशः स्पंदनोनेमीसर्वसारोऽश्मगर्भकः।

अर्थ-तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगर्भक (तिनाशक, स्पन्द-

नद्रुम, अक्षक, चित्रकर्म्मा, रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत्, चक्री, शतांग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, स्पंदनि)

संस्कृतभाषामें	तिनिश ।
हिंदीभाषामें	तिरिच्छ, (-) तिनसुना ।
वंगभाषामें	तिनाश, सादन, जारुलगाछ ।
मराठीभाषामें	तिवस ।
गुजरातीभाषामें	हम्मों, मिणोहम्मों । [bergia oides.
लैटिन् भाषामें	युजिनियाडाल वर्जिया ओईडिस् Ougenia da

अस्य गुणाः ।

तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरः श्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ-तिरिच्छ-कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णोग्राहकः कफवातहा । रक्तातिसारंकुष्ठंचमेहंमेदंव्रणंतथा ॥ रक्तदोषंचपित्तंचश्वित्रकुष्ठंकृमींस्तथा । दाहंचपाण्डुरोगंचनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-तिरिच्छ कषेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिसार, कोढ, प्रमेह, मेद व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डुरोगका नाश करे ।

विवरण । तिनिसके वडे वडे वृक्ष होतेहैं, पत्ते छोटे छोटे छोंकरकी समान होतेहैं, इसकी आकृति खैर अथवा लकिरकी समान होतीहै ।

हरिद्रुनामानि ।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान्गौरद्रुमोवरः ।

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गौरद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीतकाष्ठ, [illegible] तक, कदम्बक, सुपुष्प, सुराह्व, पीतकद्रुम)

संस[illegible]भाषामें	[illegible]रद्रु ।
हिन्दीभाषामें	[illegible]दिवा, हलदवा, हलदू ।
वंगभाषामें	वृक्षविशेष ।
मराठीभाषामें	हळदिवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामें हलदरवो ।
कर्णाटकीभाषामें विलिलु ।
लैटिन्भाषामें नोक्लिया कोर्डिफोलिया । Nauclea cordifolia
एडिना कोर्डिफोलिया । Adina cordifolia

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुःकटुकःपाकेवीर्योष्णस्तुवरः कटुः ।
लघुःकफहरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः ॥
तिक्तोबल्यःकान्तिदश्चत्वग्दोषांश्चविनाशयेत् ।

अर्थ-हलदुवा-पचनेमें चरपरा, उष्णवीर्य्य, कषेला, चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, व्रणशोधक, व्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपिच ।

हरिद्रुःशीतलस्तिक्तोमंगल्यःपित्तवान्तिजित् ।
अंगकान्तिकरोबल्योनानात्वग्दोषनाशनः॥(रा०नि०)

अर्थ-हलदुवा-शीतल, कडवा, मंगलकारक, पित्तनाशक, वमननिवारक, बलवर्द्धक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण। हलदुके बडे बडे वृक्ष पर्वत और वनोमें होतेहैं, इसकी छाल पीले रंगकी होतीहै। पत्ते दोनों ओर शाखामें बराबर लगे होतेहैं ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्षंचशिवाक्षंचसर्वाक्षंभूतनाशनम् ।
पावनंनीलकंठाक्षंहराक्षंचशिवप्रियम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष, शिवप्रिय.(तृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)

हिन्दी, बंग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तैलिगी-रुद्राक्ष ।
लैटिन् भाषामें इलीओकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णंचवातघ्नंकफनाशनम् ।
शिरोर्तिशमनंरुच्यंभूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूरकरनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरैहै। रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमें होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं। इसके बीजोंको रुद्राक्ष कहतेहैं।

माडनामानि।

माडोमाडद्रुमोदीर्घोध्वजवृक्षोवितानकः।
मद्यद्रुमोमोहकारीमद्यद्रुरज्जुरप्यथा॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रुरज्जु।

संस्कृतभाषामें	माड।
हिन्दीभाषामें	माड।
मराठीभाषामें	माड।
गुजरातीभाषामें	माड, भेर्लिमाड।
कर्णाटकीभाषामें	वैनो।
इंग्रेजीभाषामें	टोर्नलिव्ड। Tornleaved
लैटिन्भाषामें	केर्युटायुरेन्स कार्गोट। Caryota Urens Cargota

अस्यगुणाः।

माडस्तुशिशिरोरुच्यःकषायःपित्तदाहकृत्।
तृष्णापहोमरुत्कारीश्रमहृच्छ्लेष्मकारकः॥(रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषेला, पित्तदाहकारक, तृष्णानिवारक, वादी, श्रमनाशक और कफकारक है।

विवरण। माडके वृक्ष वन जंगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बडे बडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल सफेद और लाल रंगके आतेहैं।

साजडनामानि।

साजडोवनजोवृक्षःकृष्णत्वक् श्यामसारकः।
धाराफलोथनिस्सारबलकोवीरवृक्षकः॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक्, श्यामसारक, धाराफल, निस्सारफलक, वीरवृक्षक।

हिन्दीभाषामें कौहा (ह)।

मराठीभाषामें - आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें साजड ।
तैलिङ्गीभाषामें नल्लमद्दि ।
लैटिन्भाषामें टरमिनेलिया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणाः ।

"पार्थःक्षतेनिलेभग्नेरक्तस्तम्भेकफेहितः" ॥

अर्थ-साजड-क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है । विवरण-साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुनवृक्षकी समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणाः ।

ढोलसमुद्रिकाप्रोक्ताकीटादीनांविषप्रणुत् ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वटादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् ।
चामीकरंशातकौम्भंद्राविणंभूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकरशातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्व्बूर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, करहाटक, ऋक्थ, सानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रैकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कर्चूर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, भरु, चन्द्र, कलधौत, अभ्रक, अग्निबीज, लोहवर, ऊर्ध्व, सारुक, स्पर्शमणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य्य, अग्नि, भास्कर, पिञ्जान, आपिञ्जर, तेज, दिप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सौमेरुक, भृङ्गार, जाम्बव, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चंड, अय, पेश, कृशन, लोह, अमृत, मरुत्, दत्र, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सूर्य्यनामक)

संस्कृतभाषामें	सुवर्ण, स्वर्ण ।	तैलिङ्गीभाषामें	भङ्गारं ।
हिन्दीभाषामें	सोना ।	इंग्रेजीभाषामें	गोल्ड् । Gold
वंगभाषामें	सोना ।	लैटि०	ओरं । Aurum
मराठीभाषामें	सोनें ।	फारसीभाषामें	तिला ।
गुजरातीभाषामें	सोनु ।	अरबीभाषामें	जहब् ।
कर्णाटकीभाषामें	चिन्ना, स्वर्ण ।		

स्वर्णगुणाः ।

स्वर्णस्निग्धंकषायंचतिक्तंमधुरमेवच ।
स्वादुशीतंत्रिदोषघ्नंरसायनंसुरोचकम् ॥
चक्षुष्यमायुष्यप्रज्ञावीर्य्यबलस्मृतिप्रदम् ॥

अर्थ-सोना-स्निग्ध, कषेला, कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल, त्रिदोषनाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोंको, हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रज्ञाजनक, वीर्यदायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

सुवर्णपरीक्षा ।

दाहेरक्तंसितंछेदेनिकषेकुंकुमप्रभम् । तारशुल्वोज्झितं स्निग्धंकोमलंगुरुहेमतत् ॥ तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् ॥ दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् ।

अर्थ-तपानेमें लालहो, तोडनेमें सफेदहो, कसौटीके ऊपर रखनेसे केशरी रंगका होजाय, चांदी और तांबे करके रहितहों, स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा सोना उत्तम होता है। सफेदरंगका कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, परतयुक्त, तपाने और तोडनेमें सफेद हो, कसौटीके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय, हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा सोना त्याज्य है।

अन्येच गुणाः ।

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् । स्वादुतिक्तञ्चतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥ पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥ विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषहृत् ।

अर्थ-सोना (सोनेकी, भस्म)-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, भारी,

रसायन स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, पचनेमें स्वादु. पिच्छिल, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोंका हितकारी तथा मेधा, स्मरण शक्ति और बुद्धिजनक है, हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिरकरनेवाला, तथा स्थावरविष, जंगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे है।

असम्यङ्मारितस्वर्णगुणाः।

असम्यङ्मारितंस्वर्णबलंवीर्य्यंचनाशयेत्।
करोतिरोगान्मृत्युश्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः॥

अर्थ-अविधिसे मारा सुवर्ण-बल, और वीर्य्यनाशक है, रोगजनक और मृत्युकारक है। इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे।

अशुद्धस्वर्णस्यदोषाः।

बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजंपोषयतीहकाये।
असौख्यकार्य्येवसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात्॥
(भा०प्र०)

अर्थ-अशोधित सुवर्ण-बल और वीर्य्यनाशक, शरीरमें अनेकप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर, असुखकारक और मरणको करनेवाला है।

दह्यंतेधातवोवह्नौमणिरत्नाभ्रकादयः। नक्षीयतेनम्रियतेसुवर्णमजरामरम्॥ अपक्वहेमसंघृष्टंशिलायांजलयोगतः। द्रवरूपंतुतत्पेयंमधुनागुणदायकम्॥ मध्वामलकचूर्णंचवरकश्चेतितत्त्रयम्। प्राश्यारिष्टग्रहितोपिमुच्यतेप्राणसंकटात्॥ तस्मान्मृतोत्थितंचापिभक्षयन्तद्विचारयेत्। मृतंहाटकंदिव्यकांतितनोतिक्षतंश्वासकासौक्षयंपित्तवातौ। प्रमेहंग्रहण्यातिसारौचकुष्ठंज्वरंहन्तिवाषंढकंदर्पदंच॥

अर्थ-धातु, मणि, रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजातेहैं। किन्तु, सोना नतो मरताहै और न कम होताहै; इसकारण यह अजर और अमरहै। कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर घिसे, फिर उसमें सहत डालकर पिये तो अत्यन्त गुण होताहै।

सहत-आमलेका चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर. चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसंकटहोने परभी आरोग्य होजाता है ।

सोनेकी भस्म-दिव्य कांतिजनक तथा क्षत, श्वास, खाँसी, क्षय, पित्त, वात, प्रमेह, संग्रहणी, अतिसार, कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुंसकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है ।

स्वर्णस्योत्पत्तिः ।

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम्।मरीचिरंगिरा अत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः ॥ वसिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः । पत्नींविलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाम् ॥ कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः।पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तु हेमतामगात्॥कृत्रिमंचापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः॥(भा.प्र.)

अर्थ-पूर्वकालमें मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेथे । इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके वाणोंसे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमें गिरा उससे सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होताहै, जिसको पारेके वेधसे वनाते हैं ।

विवरण-लंका, चीन, अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमें सोनेकी अनेक खानें हैं । प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी धूलसा मिलाहुवा रेता निकलताहै उसको अनेकप्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है ।

रूप्यकनामानि ।

रूप्यंदुर्वर्णकंश्वेतंखर्जूरंलोहराजकम् ।
अकुप्यंरजतंसौधंविमलंचन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, खर्जूर लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौध, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ, रुधिर, श्वेतक, महाशुभ्र, तप्तरूपक, चन्द्रभूति, सित, तार, कलधूत, इन्द्रलोहक, रौप्य, धौत, चन्द्रहास, राजरंग, दुर्वर्ण, रंगबीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महावसु, बाष्कल, महाधन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

सं०	रूप्यक, रौप्य, रजत।	तै०	ऍंडी।
हिं०	चांदी, रूपा।	इं०	सिल्वर। Silver
वं०	रूप।	लै०	आर्गेन्टम्। Argentum
म०	रुपें, चांदी।	फा०	नुकरा।
गु०	रुपुं।	अ०	फिद्दा।
क०	वेल्लि।		

रौप्यपरीक्षा।

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहेच्छेदेघनक्षमम्। वर्णाढ्यंचन्द्रव-त्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम्॥ कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तपीतद-लंलघु। दाहेछेदेघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम्॥

अर्थ-तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमें सफेद, घनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै। कठोर, वनावटी, रूखा, लाल, पीलेपत्तरवाला, हलका, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होताहै।

रौप्यगुणाः।

रौप्यंस्निग्धंकषायाम्लंविपाकेमधुरंसरम्।
वयसःस्थापनंशीतंलेखनंवातपित्तजित्॥

अर्थ-रूपा-स्निग्ध कषेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सारक, आयुवर्द्धक, शीतल लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

तारंचतारयतिरोगसमुद्रपारंदेहस्यपौष्टिककरंहरतेमलंच।
वर्ण्यंविषघ्नममलंहरतिप्रमेहंवृष्यंपुनर्नवकरंकुरुतेचिरायुः॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मैलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान् करनेवाला और आयुको वढानेवाला है।

अपिच।

सितयाहन्तिदाहाद्यंवातपित्तंफलत्रिकात्।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्त्रजतंहंत्यसंशयम्॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ-दाहादिरोगोंको, त्रिफलेके साथ-वातपित्तादिकोंको और त्रिसुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ-प्रमेहादिक रोगोंको हरनेवाला है ।

अशोधितरौप्यगुणाः ।

तारंशरीरस्यकरोतितापंविध्वंसनंयच्छतिशुक्रनाशम् ।
वीर्य्यंबलंहन्तितनोश्चपुष्टिंमहागदान्पोशयतिह्यशुद्धम् ।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको करनेवाला, शरीरको शिथिल करनेवाला, शुक्रनाशक, वीर्य्यविनाशक, पुष्टिनाशक, वलहारक और महारोगोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

रौप्यस्योत्पत्तिः ।

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्न्निमेषैर्विलोचनैः । निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् । ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात् । तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत् ॥ कृत्रिमञ्चभवेत्तद्धिवंगादिरसयोगतः

(भा० प्र०)

अर्थ-त्रिपुरासुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अंत्यत क्रोधित हुये तब उस त्रिपुरासुरको पलकरहित देखते हुये उसीसमय महादेवके एकनेत्रसे अग्नि निकली; जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और बाँयें नेत्रसे जो आंसूकी बूँद गिरी उससे चांदीकी उत्पत्ति हुई । एक कृत्रिम चांदी वंग और पारेके योगसे बनती है ।

विवरण । चांदीकी खानें अमेरिका, सिलोन आदि देशोंमें अधिकहैं ।

ताम्रनामानि ।

ताम्रंम्लेच्छमुखंद्विष्टंवरिष्ठञ्चकनीयसम् ।

अर्थ-ताम्र, म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुल्व, व्यष्ट, उडुम्बर, शुल्ल, उदम्बर, औदुम्बर, औडुम्बर, उदुम्बर, रविसंज्ञक, मुनिपित्तल, अर्क, सूर्य्याह्व, लोहितायस, लोहिताप, तपनेष्ट, अम्बक, अरविन्द, रविलोह, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु, सर्वलोह, पवित्र, ब्रह्मवर्च्चस, भासुर)

सं०	ताम्र ।	तै०	रागी ।
हिं०	तॉबा ।	ता०	तांब्रम्, शेप्पु ।
बं०	तामा ।	ई०	कापर । Copper
म०	तांबें ।	लै०	क्युप्रम् । Cuprum
गु०	त्रांबो ।	फा०	मिस ।
क०	ताम्र ।	अ०	नुहास ।

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंमृदुघनंक्षमम् ।
लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥

अर्थ-जो जपाके फूलकी समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटको सहलेवे और जिसमें लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा तांबा मारणकर्म्ममें उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतंचापिघनासहम् ।
लोहनागयुतंचेतिशुल्बंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-जो काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा तांबा दुष्ट होता है । यह मारणकर्म्ममेंत्याज्य है ।

ताम्रगुणाः ।

ताम्रंसुपक्वंमधुरंकषायंतिक्तंविपाकेकटुशीतलंच ।
कफापहंपित्तहरंविबन्धशूलघ्नपाण्डूदरगुल्मनाशि ॥ (रा.नि.)

अर्थ-तांबा-मधुर, कषेला, कडवा, पाकमें कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तनिवारक तथा विबंध, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुल्मरोग-नाशक है ।

अन्यच्च ।

गुल्मञ्चकुष्ठंचगुदामयंचशूलानिशोफोदरपांडुरोगम् ।
उत्क्लेशमेदभ्रमदाहहीनंनिहन्तिसम्यङ्मृतमेवशुल्वम् ॥

अर्थ-औरभी तॉबा-गुल्म, कोढ, गुदारोग, शूल, सूजन, उदररोग, पांडुरोग उत्क्लेश, मेद, भ्रम और दाहको हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्रंकषायंमधुरंसतिक्तमम्लंचपाकेकटुसारकंच ।

पित्तापहंश्लेष्महरंचशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनंच ॥
पाण्डूदराशोंज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् ।
शोफकृमीञ्छूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधाबृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ–तांबा–कषेला, मधुर, कडवा, अम्ल, पाकमें कटु, सारक, पित्तनाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, लेखन तथा पाण्डुरोग, उदररोग, बवासीर; ज्वर, कोढ, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पबृंहण है ।

असम्यङ्मारिततामस्य दोषाः ।

एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यङ्मारितेष्टते ।
दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥

अर्थ–विषमें तो केवल एकही दोष है, परन्तु कुविधिसे मारे हुये तांबेमें दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद भेद (दस्तोंका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं ।

ताम्रोत्पत्तिः ।

शुक्रंयत्कार्त्तिकेयस्यपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥

अर्थ–कार्त्तिकेयका वीर्य्य पृथ्वीमें पतित हुवा उससे तांबेकी उत्पत्ति हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं ।

विवरण । वङ्गदेशमें तांबेकी अनेक खानें हैं ।

रंगनामानि ।

रंगंवंगंचक्रसंज्ञंस्वर्णजंनागजीवनम् ।

अर्थ–रंग, वंग, चक्रसंज्ञ, स्वर्णज, नागजीवन, (मृद्वङ्ग, गुरुपत्र, तमर, नागज, कस्तीर, आलीमक, सिंहल, स्ववेत, नाग, त्रपु, त्रपुष, आप, मधुर, हिम, कुरूप्य, पिच्चट, पूतिगन्ध, चिप्पट)

सं०	रंग, वंग ।	ते०	तगरमु ।
हिं०	रांग, रांगा, कलई, वंग ।	इं०	टीन् । Tin
वं०	राङ्ग, वंग ।	लै०	स्टेन्नम् । Stannum.
म०	कथील ।	फा०	अरजीज ।
गु०	कलई, कथीर, खारिपारी ।	अ०	रुसास ।
क०	तवर ।		

रंगगुणाः ।

त्रपुसंकटुतिक्तहिमंकषायलवणंसरंचमेहघ्नम् ।
कृमिदाहपाण्डुशमनंकान्तिकरंतद्रसायनंच ॥(रा.नि.)

अर्थ-रांग (वंग)-कटु, तिक्त, शीतल, कषायरसान्वित, लवणरसयुक्त, सारक, प्रमेहनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक, पाण्डुरोगहारक, कान्तिकारक और रसायन है।

अन्यच्च ।

रंगंलघुसरंरूक्षमुष्णमेहकफकृमीन् । निहन्तिपाण्डुंसश्वासं चक्षुष्यंपित्तलंमनाक् ॥ सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्ति तथैवरंगंखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं नरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥

अर्थ-रांग (वंग)-हलका, सारक, रूखा, गरम तथा प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगको दूर करैहै, नेत्रोंको हितकारी और किंचित् पित्तकारी है। जैसे सिंह हाथियोंके समूहोंका नाश करता है, उसीप्रकार वंग सर्वप्रकारके प्रमेहादिकोंका नाश करती है। देहको सुख देनेवाली, इन्द्रियोंको प्रबल करनेवाली और देहको पुष्टि करनेवाली है।

अपिच्च ।

कासेश्वासेचमन्दाग्नौपीनसेविषमज्वरे ।
प्रमेहेपाण्डुरोगेचमृतंवंगंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, पीनस, विषमज्वर, प्रमेह और पाण्डुरोगमें वंग देनी हितकारी है।

अशोधितवङ्गदोषः ।

वंगंविधत्तेखलुशुद्धिहीनंतथाह्यपक्वञ्चकिलासगुल्मौ ।
कुष्टानिशूलंकिलवातशोथंपाण्डुंप्रमेहञ्चभगंदरंच ॥
विषोपमंरक्तविकारवृन्दंक्षयञ्चकृच्छ्राणिकफंज्वरंच । मेहाश्मरीविद्रधिमुख्यरोगान्नागोऽपिकुर्य्यात्कथितान्विकारान् ॥

अर्थ-अशोधित और अपक्व वंग-किलासकुष्ठ, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वातव्याधि, सूजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, रक्तविकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफ,

ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि मुख्यरोगोंको उत्पन्न करै है तथा विषकी समान है। और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है।

वंगस्य प्रकारभेदाः।

क्षुरकंमिश्रकञ्चापिद्विविधंवङ्गमुच्यते।
उत्तमंक्षुरकंतत्रमिश्रंकंत्वहितंमतम्॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकारकी है, तहां क्षुरक वंग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वंग अहितकारी है।

धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावंसगौरवम्।
निःशब्दंखुरवंगंस्यात् मिश्रकंश्यामशुभ्रकम्॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम, चिकनी शीघ्रगलजाय, तोलमें भारी, और अग्निमें डालनेसे शब्द न करे उसको खुरक कहते हैं और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रंगकी होती है।

श्रेष्ठवंगस्य लक्षणम्।

श्वेतंमृदुलघुस्वच्छस्निग्धमुष्णसहंहिमम्।
सूत्रपत्रकरंकान्तंत्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम्॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमें हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णसह, शीतल, जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार ऐसा राँग उत्तम होताहै।

विवरण। राँग अन्यद्वीपोंसे आताहै, बर्तनोंकी कलई और रंग प्रभृतिके काममें आताहै। तांबेके योगसे इसका काँसा बनताहै। राँगकी भस्मको वंग कहतेहैं।

सीसकनामानि।

सीसंसुवर्णकंचीनंपिष्टंसिन्दूरकारणम्।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीसक, सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपदभव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट, चीर, वध्र, पिच्चट, सुवर्णारि, त्रपु [:], वध्रक, महाबल, यामुनेष्टक, बहुमल, श्वेतरंजन, जड, भुजङ्गम, उरग, कुरंग, परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, तारशुद्धिकर, शिरावृत्त, वयोरंग, चीनपिष्ट, चीनरंग, लेख्य, धातुमल, पार्वत)।

सं०	नाग, सीसक ।	तै०	शीश, शिषमु ।
हिं०	सीसा ।	दा०	शिशू ।
बं०	सीसे, सीसा ।	इं०	लेड । Lead
म०	शिसें ।	लै०	प्लंबम् । Plumbum
गु०	शीसुं ।	फा०	सुर्व ।
क०	सीसा ।	अ०	रुसासुल, अस्वद ।

सीसक गुणाः ।

सीसंरंगगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति॥वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युश्चनाशयतिसंततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ–शीशेमें रांगके तुल्य गुण हैं; विशेषकरके प्रमेहको दूर करेहै । सीसा–सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक, और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

क्षयपवनविकारेगुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूलेमेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदेवैनप्रवह्नौप्रशस्तः शुभविधिकृतनागःकामपुष्टिंददाति ॥

अर्थ–सीसा–क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ. शूल, प्रमेह, खाँसी, संग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदाः ।

नागन्तुद्विविधंप्रोक्तंकुमारंसमलंतथा । कुमारंसर्वकार्य्येषु योजनीयंगुणाधिकम् ॥द्रुतद्रावंमहाभारंछेदेकृष्णंसमुज्ज्वलम् । पूतिगंधंबहिःकृष्णंशुद्धसीसमतोन्यथा ॥

अर्थ–कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

अशोधितवंगनगादोषाः ।

पाकेनहीनौकिलवंगनागौकुष्ठानिगुल्मांश्चतथाविकारान् ।
कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुतःप्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और शीशेके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म, कण्डू, प्रमेह, मंदाग्नि. सूजन और भगंदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोत्पत्तिः ।

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचह ।
वीर्य्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहंनृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुंदर पुत्रीको देख वासुकी साँपने वीर्य्य छोडा, उस वीर्य्यसे मनुष्योंके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुवा ।

जसदनामानि ।

जसदंवंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वंगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपटल, कंसास्थि)

संस्कृतभाषामें	जसद ।	तैलिंगीभाषामें	खर्पर ।
हिन्दीभाषामें	जस्त, जस्ता ।	इंग्रेजीभाषामें	झिंक् । Zinc
वंगभाषामें	दस्ता ।	लैटिन्भाषामें	झिंकं । Zincum.
मराठीभाषामें	जस्त ।	फारसीभाषामें	रुएतुतिया ।
गुजरातीभाषामें	जसत ।	अरबीभाषामें	शव्रहा ।

जसदगुणाः ।

जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुंश्वासंचनाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त-कषेला, कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रंलोहमयस्कान्तंकृष्णायोलोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र, लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, शास्त्रालय, शस्त्र, शस्त्रक, शम्बक, पित्त, पित्तायस, आयस, शच, मुण्डज, निशित, खड्ग, अयः, कान्त, चित्रायस, और चालज)

कृष्णलोहनामानि ।

वर्त्तलोहंतीक्ष्णलोहंनीलिकापुटलोहकम् ।

अर्थ-वर्त्तलोह, तीक्ष्णलोह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलोह, मुण्डायस, इषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृषिलोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह ।
हिन्दीभाषामें	लोहा, इस्पात, फोलाद् ।
वंगभाषामें	लौह, तिखा, इष्पात्, काललौह ।
मराठीभाषामें	लोखंड, पोलाद, तिखें ।
गुजरातीभाषामें	लोढुं, मोछुं, गजवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	अयस्कान्त, कब्बिण ।
तैलङ्गीभाषामें	इनुमु ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्न । Iron स्टील । Steel
लैटिन्भाषामें	फेर्रम । Ferrum
फारसीभाषामें	आहन्, फोलाद, संगेआहन ।
अरबीभाषामें	हदीद, हजरुल ।

कान्तलोहगुणाः ।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगन्दरम् । कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकान्तमयोहरेत् ॥ प्लीहानमम्लपित्तञ्चयंकृच्चापिशिरोरुजम् । सर्व्वान्रोगान्विजयतेकान्तलोहंनसंशयः ॥ बलंवीर्य्यंवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत् ।

अर्थ-कान्तलोह,-गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोष, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोंको दूर करै है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है ।

कान्तलोहस्य लक्षणम् ।

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिन्दुःप्रतप्ते हिंगुर्गंधंत्यजतिचनिजंतिक्ततांनिम्बकल्कः । तप्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकंनैतिभूमिं कृष्णांगःस्यात्सजलचणकःकान्तलोहंतदुक्तम् ॥

अर्थ-जिसके बर्तनद्वारा जलमें तेलकी बूँद डालनेसे नहीं फैले, जिसमें तपानेसे हींग अपनी गन्धको छोडदेवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध औटानेसे दूध शिखरके आकार ऊपरको खडा होजावे, परन्तु फैले नहीं और जिसमें जलसहित चने भिगोनेसे काले होजावें उसको कान्तलोह कहते हैं।

सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः।

लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु। रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत्॥ कफंपित्तंगरंशूलंशोथार्शःप्लीहपाण्डुताः। मेदोमेहकृमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि॥

अर्थ-शुद्धलोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, बादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करे है। लोहेके समान लोहेके कीटके गुण जानने।

अशोधितलोहस्य दोषाः।

क्लीबत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्धृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च। नानारुजाञ्चापितथाप्रकोपंकरोतिहृल्लासमशुद्धलोहम्॥ जीवहारिमदकारिचायसंचेदशुद्धिमदसंस्कृतंध्रुवम्। पाटवंनतनुतेशरीरकेदारुणंहृदिरुजांचयच्छति॥

अर्थ-अशुद्धलोहा-नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, नानाप्रकारके रोगोंका कोप और हल्लासको करनेवाला है। प्राणनाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्य्यता नाशक और दारुण हृदयव्यथाको उत्पन्न करता है।

लोहस्य स्वाभाविकदोषाः।

गुरुतादृढताक्लेदोकफोदेहस्यकारिता। अश्मदोषःसुदुर्गन्धोदोषाःसप्तायसस्यतु॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता. पत्थरदोष और दुर्गंध यह सात दोष लोहेमें स्वाभाविक रहते हैं।

मुण्डलोहगुणाः।

मुण्डंरूक्षोष्णतिक्तंचवातपित्तकफप्रणुत्।

तीक्ष्णंपाण्डुहरंतच्चशूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ-मुण्डलोह-रूखा, गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, शूल और प्रमेहको हरनेवाला है।

लोहस्योत्पत्तिः ।

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि ।
उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥

अर्थ-पूर्वकालमें देवताओंके द्वारा युद्धमें विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहेकी उत्पत्ति हुई है।

लोहसेविनः कार्य्याणि ।

गुञ्जामेकांसमारभ्ययावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोहंसमश्नीयाद्यथादोषबलंनरः ॥ कूष्माण्डंतिलतैलंचमाषान्नंराजिकान्तथा । मद्यमम्लरसं चैव वर्जयेल्लोहसेवकः ॥

अर्थ-एकगुंजासे लेकर नवरत्तीतक लोहेकी मात्रा है। लोहेको सेवन करनेवाले मनुष्य-पेठा, तिलका तेल, उडद, राई, मदिरा और अम्लरस खटाई आदि) वाले पदार्थोंको छोड देवे।

मण्डूरनामानि ।

सिंहानंकिट्टिमण्डूरंलोहकिट्टमयोमलम् ॥

अर्थ-सिंहान, किट्टि, मण्डूर, लोहकिट्ट, अयोमल (लोहसिंहानिका, लोहज, लोहपुरीष, लोहमल, सितवन, सिंहास, सितवाण, शूलघातन, लौहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिंहल)

मण्डूरलक्षणगुणाः ।

ध्मातस्यलोहस्यमलंमण्डूरमितिचोच्यते ।
यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥

अर्थ-दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते हैं। जिस २ लोहेके जैसे २ गुण हैं, वैसे २ ही उसकी कीटके जानने।

सर्वविधामण्डूरप्रकारभेदाः ।

शताब्दमुत्तमंकिट्टंमध्यंचाशीतिवार्षिकम् ।
अधमंषष्टिवर्षीयंततोहीनंविषोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर सर्वोत्कृष्ट है, ८० अस्सी वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्पकालका मण्डूर विषके समान है।

विवरण। लोहेकी अनेक जातिहैं, उन सबको यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा। लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

कांस्यनामानि।

कांस्यंविद्युत्प्रियंकंसंताम्रार्धंवंगशुल्वजम् ॥

अर्थ-कांस्य-विद्युत्प्रिय, कंस, ताम्रार्द्ध, वंगशुल्वज, (कंसास्थि, प्रकाश, घण्टाशब्द, असुराह्वय, सौराष्ट्रक, घोष, कांसीय, घोरपुष्प, वह्निलोहक, दीप्तलोहक, घोषपुष्प, दीप्तलोह, कांसक, कांस, ताम्रत्रपुज, दीप्ति)

संस्कृतभाषामें	कांस्य।
हिन्दीभाषामें	काँसा, काँसी।
वंगभाषामें	कांसा।
मराठीभाषामें	कांसे।
गुजरातीभाषामें	कांसु।
कर्णाटकीभाषामें	कंचु।
तैलङ्गीभाषामें	कंचु।
इंग्रेजीभाषामें	बेलमेटल। Bell Metal ब्रोंझ Bronze
फारसीभाषामें	रोईन।
अरबीभाषामें	तालिकून।

कांस्यकगुणाः।

कांस्यस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः।
संयोगजप्रभावेणतस्यान्येपिगुणाःस्मृताः ॥
कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम्।
गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कांसेके गुण तांबे और रांगके समान जानने। संयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहते हैं। कांसा-कषेला, कडवा, गरम, लेखन विशद, कुछेक दस्तावर, भारी, नेत्रोंको हितकारी, रूखा और कफपित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

कांस्यन्तुतिक्तमुष्णंचक्षुष्यंवातकफविकारघ्नम् ।
रूक्षंकषायरुच्यंलघुदीपनपाचनंपथ्यम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शुद्ध, काँसा-कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, वातकफदोषनाशक, रूखा, कषेला, रुचिकारक, दीपन और पाचक है ।

घृतमेकंविनाचान्यत्सर्वंकांस्यगतंनृणाम् ।
भुक्तमारोग्यसुखदंहितंसात्म्यकरंतथा ॥

अर्थ-एक केवल घृतको छोडकर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कांसेके पात्रमें रक्खे हुए-आरोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते हैं ।

विवरण । कांसा-आठभाग तांबा और दोभाग रांगके योगसे बनाया जाताहै । कांसेके पात्र आदि अनेक सामान वनते हैं । कांसा-उपधातु है ।

पित्तलनामानि ।

पित्तलश्चाऽथारकूटःकपिलोहंसुवर्णकम् ।
रिरीरीरीचरीतिश्चपीतलोहंसुलोहकम् ॥
ब्राह्मीतुराज्ञीकपिलाब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ।

अर्थ-पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, रीति, पीतलोह, सुलोहक, ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी (पतिकावेर, द्रव्यदारु, रीती, मिश्र, आर, राजरीति, क्षुद्रसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतनक, लोहितक, पिंगललोह, पीतक, पाकतुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

संस्कृतभाषामें पित्तल ।	कर्णाटकीभाषामें पित्तालेयरड्डु ।
हिंदीभाषामें पीतल, कांची पीतल ।	तैलिङ्गीभाषामें इत्तडी ।
बंगभाषामें पितल, कॉचापितल ।	इंग्रेजीभाषामें ब्रास । Brass
मराठीभाषामें पितळ, सोनपितळ ।	फारसीभाषामें विरंज ।
गुजरातीभाषामें पीतल ।	

पित्तलगुणा ।

पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः।संयोगजप्रभावे-

णतस्यान्येपिगुणाःस्मृताः॥ रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तंचलव-
णंरसे। शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्नंनातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तांबे और जस्तकी समानहैं, संयोगजनकप्रभावसे औरभी गुण कहते हैं। दोनों प्रकारके पीतल-रूखे, कडवे, लवणरसान्वित, शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेखन नहीं हैं।

अन्यच्च।

सकलमेहमरुद्गुदजारुजंग्रहणिकाकफपाण्डुभवंरुजम्।
श्वसनकामलशूलभवंरुजंहरतिभस्मतदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल-सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदजरोग, संग्रहणी, कफ, पांडु, श्वास, कामला और शूलका नाश करे हैं।

अपिच।

रीतेर्द्वयंपाण्डुसमीरनाशनंरूक्षंसरं कृमिहरंलवणं विषघ्नम्।
वृष्यंवलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धिंकरोतिसहसाचरसायनंच।

अर्थ-दोनोंप्रकारके पीतल-पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रूखे, सारक, कृमिहारक, लवणरसान्वित, विषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वलीपलितनाशक और आयुवर्द्धक हैं।

विवरण। पीतल-उपधातु है यह ताँबे और जस्तके योगसे बनाया जाता है। इसमें तांबा १ भाग और जस्त ३ भाग डालकर बनाया जाता है। यह दोप्रकारका होताहै।

पारदनामानि।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः।
चपलःशिववीर्य्यंच रसःसूतःशिवाह्वयः।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य्य, रस, सूत, शिवाह्वय (रसराज, रसनाथ, महातेज, रसलेह, रसोत्तम, सूतराट्, जैत्र, शिवबीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्द्धर, प्रभु, रुद्रज, हरतेज, अचिन्तज, अवित्तज, खेचर, अमर, देहद, मृत्युनाशक, स्कन्द, स्कन्दांशक, देव, दिव्यरस, रसायनश्रेष्ठ, यशोद, सूतक, सिद्धधातु, पारद, हरबीज, रजस्वल, मूर्त्ति, पार, लोहेश, दुर्धर, मृत्युनाशन, हेमानिधि, त्रिनेत्र, रोपण, स्वामी)

संस्कृतभाषामें	पारद ।	तैलिंगीभाषामें	पारदरसम् ।
हिन्दीभाषामें	पारा ।	इंग्रेजीभाषामें	मर्क्युरी Mercury
वंगभाषामें	पारा ।	लैटिन्‌भाषामें	हेड्रार्जिरं । Hydrargyrum
मराठीभाषामे	पारा ।		
गुजरातीभाषामें	पारो ।	फारसीभाषामें	सिमाव ।
कर्णाटकीभाषामें	पारदरसः ।	अरबीभाषामें	जीवक् ।

पारदगुणाः ।

पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः । योगवाहीमहावृ-
ष्यःसदादृष्टिबलप्रदः ॥ सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठ-
नुत् । असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम् ॥ रसे-
न्द्रोहन्तितद्रोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् । (भा०प्र०)

अर्थ—पारा—मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय और लवणरसान्वित, स्निग्ध त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और बलको बढाता है । सर्वरोगनाशक और विशेष करके कुष्ठनाशक है । जो रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य, हाथी और घोडेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है ।

अन्यच्च ।

देहस्यशुद्धिंकुरुतेचपारदोनानागदानांहरणेसमर्थः ।
करोतिपुष्टिंहरतेचमृत्युंकल्पायुषंचैवकरोतिनूनम् ॥
पारदःसकलरोगपारदोराजयक्ष्मसरभेकवारिदः ।
सर्वरोगमपहंतितत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात् ॥

अर्थ—पारा—देहशुद्धकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक, पुष्टिकारक और मृत्युहारक है, तथा चिरंजीव करनेवाला है । पारा सर्वरोगोंको दूर करनेवाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मूर्च्छातोंगदहृत्तथैवखगतिंधत्तेविबद्धोर्थदः स्याद्भस्माम-
यवार्धकादिहरणंदृक्पुष्टिकांतिप्रदम् । वृष्यंमृत्युविनाशनं-

बलकरंकांताजनानंदनं शार्दूलातुलसत्त्वकृच्चभुविजा-
न्रोगानुसारीस्फुटम् ॥ मूर्च्छितोहरतेभुजबंधनंभूयोपिसु-
क्तिदोभवति । अमरीकरोतिमृतःकोन्यःकरुणाकरोस्ति-
सूतात् ॥

अर्थ-मूर्च्छितपारा-रोगनाशक और आकाशमार्गमें गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है। और पारेकी भस्म-तरुणता-दृष्टि, पुष्टि तथा कान्तिजनक है। वीर्य्यवर्द्धक,मृत्युनाशक, स्त्रियोंको आनन्द-जनक और योगवाही है। मूर्च्छित पारा-अंगग्रहनाशक और मुक्तिदायक है। और मराहुवा पारा अमरपदको देवेहै। फिर इससे अधिक और कौन दूसरा कृपा करनेवाला है।

पारदे पथ्यानि।

हितंमुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानिसदाततः।शाकेपुनर्नवादेवि
मेघनादंसवास्तुकम्॥सैन्धवंनागरंमुस्तामूलकानिचभक्ष-
येत्। आत्मज्ञानंकथापूजाशिवस्यचविशेषतः। एतांस्तु
समायान्भद्रेनलंघेद्रसभक्षकः॥ (नि० र०)

अर्थ-पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूँग, दूध, शालिधानके चावल, बकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुएका शाक, सैंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये। तथा आत्मज्ञान, कथा, पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे।

पारददोषाः।

मलंविषंवह्निगिरित्वचापलंनैसर्गिकंदोषमुशन्तिपारदे ।
उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रेकथितौमुनीश्वरैः॥
मलेनमूर्च्छामरणंविषेणदाहोग्निनाकष्टतरःशरीरे। देहस्य-
जाड्यंगिरिणासदास्याच्चांचल्यतावीर्य्यहतिश्चपुंसाम् ॥
वंगेनकुष्ठंभुजगेनषंढोभवेत्ततोसौपरिशोधनीयः। वह्निर्वि-
षंमलंचेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥ एतेकुर्वन्तिसन्तापंमृतिं

मूर्च्छांनृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदे यदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः ।

अर्थ-मल, विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पांच दोष पारेमें स्वभावसेही हैं और रांग तथा शीशेके दो दोष इसमें उपाधिज हैं, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे हैं। मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्नि-दोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमें पीडा. पर्वतके दोषसे देहमें जडता और चंचलताके दोषसे वीर्य्यको हरेहै। वंगदोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुंसकताको करता है। इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधनाचाहिये । अग्नि, विष और मल यह तीन दोष पारेमें मुख्य हैं । सो संताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते हैं यद्यपि औरभी पारेमें वैद्योंने अनेक दोष कहे हैं; किन्तु मुख्य यह तीनही दोष हैं, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये ।

अशोधितपारददोषाः।

संस्कारहीनंखलुसूतराजंयःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम् । देहस्यनाशंविदधातिनूनंकष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै। निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करे है ।

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि ।

रसायनादिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः । ततोरसइतिप्रोक्तः सचधातुरपिस्मृतः॥शिवाङ्गात्प्रच्युतंरेतःपतितंधरणीतले-तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत् ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयं शिववीर्य्यंचतुर्विधम् । श्वेतंरक्तंतथापीतंकृष्णंतत्तुभवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चखलुजातितः । श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तंकिलरसायनम् ॥धातुवादेतुतत्पीतंखेगतौ कृष्णमेवच ।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी, कांक्षा, करते हैं। इसकारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते हैं। पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण वह देहका, सारभाग, शुक्र

उत्पन्न होनेके हेतु, शुक्लवर्ण और स्वच्छ, हुवा। यह क्षेत्रभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको ब्राह्मण कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायनकार्य्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह धातुवादमें श्रेष्ठ है। और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाशमार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदप्रशंसा।

मृदःकोटिगुणंस्वर्णंस्वर्णात्कोटिगुणंमणिः।
मणेःकोटिगुणंबाणोबाणात्कोटिगुणंरसः॥
रसात्परतरंलिंगंनभूतंनभविष्यति। (नि०र०)

अर्थ-मट्टीके गुणोंसे अधिक करोड गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें हैं। सुवर्णके गुणोंसे अधिक करोडगुण मणिके दर्शन करनेमें हैं। मणिके गुणोंसे अधिक करोडगुण वाणके दर्शन करनेमें हैं और वाणके गुणोंसे करोड गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें हैं, पारेसे अधिक गुणवाला पदार्थ न हुवा और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे बनाये "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

हिंगुलनामानि।

हंसपादंरसस्थानंहिंगुलंरक्तपारदम्॥

अर्थ-हंसपाद, रसस्थान, हिंगुल, रक्तपारद (हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुड, रक्त, मर्कटशीर्ष, दरद, रस, उरु, उन्द, कपिशीर्षक, बर्बर, सुरंग, सुनर, रंजन, म्लेच्छ, चित्राङ्ग, चूर्णपारद, चर्म्मारक, रसोद्भव, रंजक, रसगर्भ, चूर्णपारद, मनोहर, चर्म्मार, नानाशृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें	हिंगुल।
हिन्दीभाषामें	हिंगुलू, सिंगरफ, इंगुर, ईंगलू।
वंगभाषामें	हिंगुल।
मराठीभाषामें	हिंगूळ।
गुजरातीभाषामें	हिंगळो।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुलिपक।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगिलाकामु।

इंग्रेजीभाषामें सल्फेट ऑफ् मर्क्युरि । Sulphate of Mercury
सिनेबारानेटिव । cinnabır Native
लैटिन् भाषामें सल्फुएटं हैड्राजिरं । Sulphuatum Hydrargyrium
फारसीभाषामें सिंग्रफ् ।
अरबीभाषामें जंजफर ।

हिंगुलगुणाः ।

तिक्तःकषायःकटुहिंगुलुःस्यान्नेत्रामयघ्नःकफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्चप्लीहामवातौचगरंनिहन्ति ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-कडवा, कषेला, चरपरा तथा नेत्ररोग, कफ, पित्त, हृल्लास, कुष्ठ, ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात और विषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिंगुलंमधुरंतिक्तमुष्णंवातकफापहम् ॥
त्रिदोषद्वंद्वदोषोत्थंज्वरंहरतिसेवनात् ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोष, द्वन्द्वजदोष और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

हिंगुलःसर्वदोषघ्नोदीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरोवृष्योजारणेलोहमारणे ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-सर्वदोषनाशक, दीपन, अतिरसायन, सर्वरोगनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, जारण और लोहेके मारनेमें उत्तम है ।

हिंगुलभेदलक्षणम् ।

हिंगुलस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्म्मारःशुकतुण्डकः। हंसपादस्तृतीयःस्याच्चर्म्मारःशुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिंगूलःपीतवर्णोभवेत्सहि । जपाकुसुमसङ्काशोहंसपादोमहोत्तमः ॥(भा.प्र.)

अर्थ-सिंगरफ-चर्म्मार, शुकतुण्डक और हंसपाद इनभेदोंसे तीन प्रकारका है । तहां चर्म्मारहिंगुल सफेद रंगका, शुकतुण्डक हिंगुल पीले रंगका और हंसपादहिंगुल जपाके फूलोंकी समान लाल रंगका अत्यन्त उत्तम होता है ।

हिंगुलोत्पत्तिः ।

अशुद्धपारदंभागंचतुर्भागंतुगन्धकम् । उभौक्षिप्त्वालोहपात्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत् ॥ कृत्वाथखंडशस्तत्रकाचकुप्यांनिरुध्यच । वस्त्रमृत्तिकयासम्यक्काचकूपिंप्रलेपयेत् ॥ सर्वतोंगुलमानेनच्छायाशुष्कंतुकारयेत् । वालुकायंत्रगर्भेतुदिनंमृद्वग्निनापचेत्॥क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पचेद्दिवसपंचकम् । सप्ताहंतुसमुद्धृत्यहिंगुलःस्यान्मनोहरः ॥

अर्थ-अशुद्धपारा-एकभाग, गन्धक चारभाग इन दोनोंको लोहेके पात्रमें डालकर, एक क्षण मंदाग्निसे पकावे, फिर टुकडे करके कांचकी शीशीमें रख उस शीशीपै कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोंओर एक अंगुल ऊँचा लेप करे; छायामें सुखावे फिर वालुकायंत्रमें रखकर एक दिन मृदु अग्निसे पकावे क्रमसे फिर पांचदिन पर्य्यंत वृद्धिकरता हुवा अग्नि लगावे सातवें दिन निकालले, अच्छा सिंग्रफ वनजायगा ।

स्रोतोऽञ्जननामानि ।

स्रोतोऽञ्जनंनदीजंचवाल्मीकञ्जयामलम् ॥

अर्थ-स्रोतोंजन. नदीज, वाल्मीक, जयामल, (स्रोतज, स्रोतोनदीभव, स्रोतोभव, सौवार. सौवीरसार, कपोताञ्जन, यामुन, पीतसारी, वारिभव, कपोतसार, कापोतसार और वाल्मीकशीर्ष)

सौवीराञ्जननामानि ।

सौवीरकंपार्वतेयंमेचकंनीलमंजनम् ॥

अर्थ-सौवीरक, पार्वतेय, मेचक, नील, अंजन (यामुन, कृष्ण, नादेय, स्रोतोज, दृष्प्रद, सुवीरज, नीलांजन, चक्षुष्य, वारिसम्भव और कपोतक)

संस्कृतभाषामें	स्रोतोंजन, सौवीराञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	सुरमा, अंजन, श्वेतशुर्म्मा, कालाशुर्म्मा ।
वंगभाषामें	श्वेतशुर्म्मा, नीलशुर्म्मा, नीलाञ्जन, कालशुर्मा ।
मराठीभाषामें	काळासुरमा, लालसुरमा, पांढरासुरमा ।
गुजरातीभाषामें	सुरमो, कालोसुरमो, लालसुरमो ।
कर्णाटकीभाषामें	स्रोतोंजन ।
तैलिङ्गीभाषामें	सौवीराञ्जन ।

इंग्रेजीभाषामें	सल्फुरेट ऑफ आंटीमनी	Sulphuret of antimony
लैटिन्‌भाषामें	आंटिमोनाई सल्फुरेटम्	Antimonai Sulphuretum
फारसीभाषामें	सूर्मअस्फहानि ।	
अरबीभाषामें	कुहल इसमुद ।	

स्रोतोऽञ्जनगुणाः ।

स्रोतोऽञ्जनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यंकफपित्तनुत् ।
कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविषापहम् ॥
हिक्काक्षयास्रजिच्छीतंसेवनीयंसदाबुधैः । (भा० प्र०)

अर्थ-स्रोतोञ्जन (कालासुर्म्मा)-स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्त-नाशक, कषेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विषनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोषनिवारक और शीतल है ।

श्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकारंभिन्नंनीलाञ्जनप्रभम् ।
घृष्टेचगैरिकावर्णंश्रेष्ठंस्रोतोऽञ्जनञ्चतत् ॥

अर्थ-बाँबीकी शिखरके आकार भिन्न नील अंजनकी समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमें गेरूकी रंगका हो वह उत्तम स्रोतोंऽजन है ।

सौवीराञ्जनगुणाः ।

सौवीरंमधुरंशीतंकषायंस्निग्धलेखनम् ।
रक्तपित्तविषच्छर्दिहिक्काघ्नंदृक्प्रसादनम् ॥

अर्थ-सौवीराञ्जन-मधुर, शीतल, कषेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विष, वमन और हुचकीको दूर करेहै तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनन्तुकौसुम्भंरीतिकंकुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ-पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, सदञ्जन, रीतिकुसुम, माक्षिक, चाक्षुष्य, कृमिरसाञ्जन और धातु-माक्षिक)

सं०	पुष्पाञ्जन ।	क०	पुष्पांजन ।
हिं०	पुष्पांजन ।	तै०	पुष्पांजनमु । [Oxyde
बं०	पुष्पाञ्जन ।	इं०	झिंक् ओक्सैड । Zinc
म०	पितळेचेंकीट, पुष्पाञ्जन।	लै०	झिन्साई ओक्सैडं ।
गु०	कसांजण ।		Zinci Oxidum

पुष्पाञ्जनगुणाः ।

पुष्पाञ्जनंहिमंप्रोक्तंपित्तहिक्काप्रदाहनुत् ।
नाशयेद्विषकासार्त्तिंसर्वनेत्रामयापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पुष्पांजन-शीतल, पित्तनिवारक, हिक्कानाशक, दाहहारक, विष विनाशक, खाँसीकी पीडाको हरनेवाला और सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंको दूरकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रीतिपुष्पंचचक्षुष्यंशीतपित्तकफापहम् ॥
हिक्कांदाहंविषंकासंनेत्ररोगंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-पुष्पांजन-नेत्रोंको हितकारी तथा शीतपित्त, कफ, हिचकी, दाह, विष, खाँसी और नेत्ररोगनाशक है ।

अपिच ।

पुष्पाञ्जनंहिमंस्निग्धंशीतंसर्वाक्षिरोगहृत् ।
अतिदुर्धरहिक्काघ्नंविषज्वरगदापहम् ॥

अर्थ-पुष्पांजन-हिम, स्निग्ध, शीतल, सर्वप्रकारके नेत्ररोगहारक, अत्यंत, दुर्धर हिचकीको दूर करनेवाला तथा विष और ज्वरनाशकहै ।

तुत्थकनामानि ।

मूषातुत्थंकांस्यनीलंतुत्थकंशिखिकण्ठकम् ॥

अर्थ-मूषातुत्थ, कांस्यनील, तुत्थक, शिखिकण्ठक (तुत्थ, हरिताश्म, नीलांगज, मयूरग्रीवक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्भव, मयूरतुत्थ, भृतक, शिखिकण्ठ, नील, तुत्थांजन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, हेमसार, मृतामिद और ताम्रोपधातु)

संस्कृतभाषामें	तुत्थ, मयूरतुत्थ ।
हिन्दीभाषामें	(तूतिया) नीलाथोथा, नीलातूतिया।
बंगलाभाषामें	तुँतिया ।

मराठीभाषामें मोरचूत (द) ।
गुजरातीभाषामें मोरथुथु ।
कर्णाटकीभाषामें मयूरतुत्थ ।
तैलङ्गीभाषामें मेलतुतु ।
इंग्रेजीभाषामें सलफेट ऑफ कॉपर । Sulphate ot Copper
लैटिनभाषामें क्युप्रिआसलफस Cuprea Sulphas
फारसीभाषामें तूतिया ।
अरबीभाषामें तुतिया अकजर ।

तुत्थगुणाः ।

तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ।
लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परंचापितद्गुणम् ।

अर्थ-नीलायोथा-चरपरा, नमकीन, कषेला, वमनकारक, हलका, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, विष, पथरी, और कण्डूनाशक है। खपरियाकेभी इसीकी समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

तुत्थंकटुकषायोष्णंश्वित्रनेत्रामयापहम् ।
विषदोषेषुसर्वेषुप्रशस्तंवान्तिकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नीलायोथा-चरपरा, कषेला, गरम, श्वित्रकुष्ठनाशक, नेत्ररोगनाशक, सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है।

अपिच ।

तुत्थकंनेत्ररोगघ्नंशीतंचित्रत्रिनाशनम् ।
कृमिघ्नंलेखनंभेदिकण्डूक्लेदविषापहम् ॥

अर्थ-नीलाथोथा-नेत्ररोगनाशक, शीतल, चित्रकुष्ठनाशक, कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकारोंको हरनेवाला है।

अपिच ।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलंकुष्ठाम्लपित्तकविबंधहरंपरंच।
रसायनंवमनरेचकरंगदघ्नंचित्रापहंगदितमत्रमयूरतुत्थम् ॥

अर्थ-नीलाथोथा-सर्वदोष, विष, हृदयरोग, शूल, कुष्ठ, अम्लपित्त और

विबन्धको दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोढको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

वमने मंडले दद्रौ विषेचैव प्रशस्यते ॥

अर्थ-नीलाथोथा-वमन, मंडलकुष्ठ, दाद और विषके विकारोंमें हितकारी है।

खर्परनामानि।

चक्षुष्यममृतोत्पन्नं खर्परीदार्विकातथा ॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका (खर्पर, रसक, खर्परिका, तुत्थ, खर्परीतुत्थ, खर्परीतुत्थक, यशदोपधातु)

संस्कृतभाषामें	खर्पर।
हिन्दीभाषामें	खपरिया, खापरिया।
वंगभाषामें	खापर।
मराठीभाषामें	कलखापरी।
गुजरातीभाषामें	खापरियुंकालुं।
कर्णाटकीभाषामें	खर्परी।
तैलिङ्गीभाषामें	खर्परं।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक् जाक्। Black jack
लैटिन्भाषामें	झिंकिसल्फाईडं। Zinci Sulphidum
फारसीभाषामें	संगवसरी।
अरबीभाषामें	तुतिया, किरमानी, मकसुल।

खर्परगुणाः।

रसकःसर्वमेहघ्नःकफपित्तविनाशनः।
नेत्ररोगक्षयघ्नश्चज्वरकुष्ठविषापहः ॥ (वै०वि०नि०)

अर्थ-खपरिया-सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर, कुष्ठ और विषके विकारोंको दूर करेहै।

अन्यच्च।

जायतेशोभनंभस्मसर्वव्याधिहरंपरम्।
नेत्ररोगहरंकेदिक्षयहाखर्परोगुरुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक क्लेदकारक, क्षयरोगको हरनेवाली और भारीहै ।

अशोधितखर्परदोषाः ।

अशुद्धःखर्परःकुर्य्याद्वान्तिंभ्रान्तिंविशेषतः ।
तस्माच्छोध्यःप्रयत्नेनयावद्वान्तिविवर्जितः ॥

अर्थ-अशोधित खपरिया-वान्ति और भ्रान्तिको करती है इसकारण जबतक वान्ति करके रहित नहो तबतक प्रयत्नसे शोधे ।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकंधातुमाक्षिकंताप्यंस्वर्णाह्वयंमतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्णमाक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक आवर्त्त, क्षौद्रधातु, माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनामा, तापिञ्ज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु, अजनामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलंमाक्षिकश्रेष्ठंश्वेताक्षंतारमाक्षिकम् ।

अर्थ-विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।
वंगभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ।
मराठीभाषामें	दगडीसोनामुखी, रौप्यमाक्षी ।
गुजरातीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी ।
कर्णाटकीभाषामें	धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।
तैलिङ्गीभाषामें	स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्नपाईराईटीस् । Iron pyrites
लैटिन्भाषामें	फेरीसल्फुरेटम् । Feeri sulphuretum
अरवीभाषामें	मुर्कशीशाजहवी, मुर्कशीशाफिद्दा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणाः ।

सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् ।

चक्षुष्यंवस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषंकण्डुत्रिदोषानपिनाशयेत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-सोनामाखी-स्वादु, कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, वस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, विष. ववासीर, सूजन, विष, कण्डू और त्रिदोषका नाश करैहै ।

अन्यच्च ।

माक्षिकंमधुरंतिक्तमम्लंकटुकफापहम् ।
भ्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु-मधुर, कडवी, अम्ल, चरपरी, कफनाशक तथा भ्रम, हल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी और विषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

माक्षिकंतुवरंवृष्यंस्वर्यंलघुरसायनम् ।
चक्षुष्यंकुष्ठशोफार्शोमेहवस्त्यर्तिपांडुता ।
व्यवायिकटुकंहन्तिकुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म०नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु-कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करनेवाली, हलकी, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन ववासीर, प्रमेह, वस्ती-की पीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाशकरैहै । व्यवायी और चरपरी है ।

अशुद्धमाक्षिकदोषाः ।

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
मालांतथैवव्रणपूर्विकांचकुर्य्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधातु-मन्दाग्नि, वलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धंमाक्षिकंकुर्यादांध्यंकुष्ठंक्षयंकृमीन् ।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अशुद्ध सोनामाखी-आंध्य, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करे है । इसकारण प्रयत्न करके शोधनी चाहिये ।

अपिच ।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।
उपधातुःसुवर्णस्यकिञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ-किंचित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है, सुवर्णकी उपधातु है और किञ्चित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणाः ।

माक्षिकोरजतहाटकप्रभःशोधितोतिगुणदःसुसेवितः ।
मेहकुष्ठकृमिशोफपाण्डुतापस्मृतिंहरतिसोश्मरींजयेत् ॥
स्वर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ-रूपामाखी चांदीकी और सोनेकी समान प्रभायुक्त होती है, यह भलेप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अशोधित रूपामाखीके दोष स्वर्णमाखीकी समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ-जो माखी रूपेकी समान श्वेतवर्ण तथा किंचित् रौप्यमिश्रितहो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि ।

वोदारोनागसत्वश्चव्रणघ्नः स्वर्णवर्णकः ।

संस्कृतभाषामें	वोदार, नागसत्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्ण
हिन्दीभाषामें	मुरदाशिंग ।
मराठीभाषामें	मुरदाडशिंग ।
गुजरातीभाषामें	वोदारकांकरो ।
इंग्रेजीभाषामें	लिथार्ज । Litharge
लैटिन्भाषामें	प्लंबी आक्षैडं । Llumbi
फारसीभाषामें	मुरदासिंग ।
अरबीभाषामें	मुर्दासिंज ।

वोदारगुणाः ।

वोदारःसारकोभेदीव्रणरोपणकारकः।वान्तिकृन्मूत्रकृच्छ्रा-

णांप्रमेहस्यचकारकः ॥ कफंवातंव्रणंशूलमुदरंकृमिशोथक-
म् । आध्मानंवातगुल्मञ्चआनाहंशोफजज्वरम् ॥उदावर्त्तं-
नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-मुरदासिंग-सारक, भेदक, व्रणरोपक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रकारक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, व्रण, शूल, उदररोग, कृमि, सूजन, आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सीससत्त्वंमरुच्छ्लेष्मशमनंकायदाहकम् ।
केश्यंपुंसांगरोगघ्नंरंजनंरसबंधनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-मुरदासिंग-वात, कफ, गरमीके रोग और शरीरकी दाहको दूर करे है केशोंको हितकारी, पुरुषोंके अंगरोगोंको दूर करनेवाला और पारेको बांधनेवाला है ।

वोदारोत्पत्तिलक्षणम्

अर्बुदस्यगिरेःपार्श्वेजातंवेंदारशृंगकम् ।
सदलंपीतवर्णंचभवेद्गुर्जरमंडले ॥

अर्थ-अर्बुदपर्वतके निकट पार्श्वभागमें वेंदार नामवाला शृंग है उस शृंगपै मुरदासिंग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा गुर्जरदेशमें होता है ।

अभ्रकनामानि ।

अभ्रकंगिरिजाबीजंनिर्मलंगिरिजामलम् ।
अब्दंव्योमघनंशुभ्रंबहुपत्रंघनाह्वकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजाबीज, निर्मल, गिरिजामल, अब्द, व्योम, घन, शुभ्र, बहुपत्र, घनाह्वक, (गिरिज, अमल, गौर्य्यामल, गरजध्वज, अभ्र, भृङ्ग, अम्बर, अन्तरिक्ष, आकाश, ख, अनन्त, गौरीज, गौरीजेय, गगन)

संस्कृतभाषामें	अभ्रक ।
हिन्दीभाषामें	अभ्रक, अवरख, आभ ।
बंगभाषामें	अभ्र ।
मराठीभाषामें	अभ्रक ।
गुजरातीभाषामें	अभरख ।

कर्णाटकीभाषामें	अभ्रक ।
तैलिंगीभाषामें	अभ्रकं ।
इंग्रेजीभाषामें	टाल्क, ग्लिमर । Talc Glimmer
लैटिन्भाषामें	माईका । Mica
फारसीभाषामें	सिताराजमीन ।
अरबीभाषामें	तलूक ।

मारिताभ्रकगुणाः ।

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रि-दोषंव्रणमेहकुष्ठंप्लीहोदरग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्ति-द्रढयतिवपुर्वीर्य्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढचंरमयतिशतंयोपि-तांनित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयतिसुतान्विक्रमैःसिंहतु-ल्यान्मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम् ।

अर्थ-अभ्रक-कषेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोष-नाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका नाश करैहै । रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करानेवाला और मृत्युके भय-कोभी हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

मृताभ्रकंकामबलप्रदंचविषंमरुछ्वासभगन्दरांध्यम् ।
मेहभ्रमंपित्तकफंचकासंक्षयंनिहन्त्येवयथानुपानात् ॥

अर्थ-अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आंध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदाः ।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।
क्रमेणचसितंरक्तंपीतंकृष्णञ्चवर्णतः ॥

अर्थ-अभ्रक-जातिके भेदसे चार प्रकारकाहै, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

और शूद्र, तहां ब्राह्मणअभ्रक-श्वेतरंगका, क्षत्रिय अभ्रक-लालरंगका, वैश्यअभ्रक-पीले रंगका और शूद्रअभ्रक काले रंगका होता है।

प्रशस्यतेसितंतारेरक्तंतत्तुरसायने ।
पीतंहेमनिकृष्णंतुगदेषुभूतयेऽपिच ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चांदीके बनानेमें सफेद अभ्रक, रसायन कर्म्ममें लाल, सुवर्णके बनानेमें पीला और रोगोंमें तथा ऐश्वर्यके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये।

चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः ।

पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चेतिचतुर्विधम् । पिनाकंवर्ज्जयेद्धीमान्दर्दुरञ्चविशेषतः । तृतीयंनागसंज्ञञ्चदूरतःपरिवर्ज्जयेत् । मुञ्चत्यग्नौविनिःक्षिप्तंपिनाकंदलसञ्चयम्॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् । दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् ॥ गोलकान्बहुशःकृत्वातत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् ।नागन्तुनागवद्वह्नौफूत्कारंपरिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यन्तुविदधातिभगन्दरम् । वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतींव्रजेत् ॥ वज्रसंज्ञंहितंयोग्यमभ्रंसर्वत्रनेतरत् । सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत्॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्त्वंगुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवंचाभ्रंस्वल्पसत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसे अभ्रक, चार प्रकारका है। इनमें पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्यहै। पिनाकअभ्रक अग्निमें डालनेसे परत २ होजाताहै। यदि इसको कोई अज्ञानके वशसे खा ले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होताहै। दर्दुरनाम वाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककी समान शब्द करता है। तथा गोलाकार होजाताहै। इसको भक्षण करनेसे मृत्यु होतीहै। नागनामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे फुंकार करता है, इसको भक्षण करनेसे अवश्य भगन्दररोग उत्पन्न होताहै। और वज्रसंज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नहीं होताहै यह वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोंमें उत्तम होनेके कारण सब प्रकारके रोग,

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है। उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है।

अशोधिताभ्रदोषाः।

पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्टंक्षयंपाण्डुगदंचशोथम्।
हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रंह्यसिद्धंगुरुतापदंस्यात् ॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक-अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाडेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करे है।

अभ्रकोत्पत्ति.।

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम्। विस्फुलिङ्गास्तत-स्तस्यगगनेपरिसर्पितः॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुम-हीभृताम्। तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम्॥ तद्वज्रं-वज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात्। गगनाद्गलितंयस्माद्गगनञ्च ततोमतम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेंसे चिनगारियें निकलकर आकाशमंडलमें फैलगईं, फिर वेही चिं-नगारियें गर्जते वादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृंगोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ। यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, वादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहतेहैं और आकाशसे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं।

अभ्रे पथ्यम्।

क्षाराम्लंद्विदलंचैवकर्कटीकारवेल्लकम्।
वृन्ताकंचकरीरंचतैलंचाभ्रेविवर्ज्जयेत्॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, बैंगन, करील और तेलको छोडदेवे।

गन्धकनामानि।

गौरीबीजंबलिर्गन्धपाषाणोगन्धकःस्मृतः।

अर्थ-गौरीवीज, वलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामाघ्न, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध, रसगन्धक, कुष्ठारि, कीटघ्न, क्रूरगन्ध, शरभूमिज, बलरस)

संस्कृतभाषामें	गन्धक ।	तैलिङ्गीभाषामें	गंधकमु ।
हिन्दीभाषामें	गन्धक ।	अं०	सल्फर ब्रिस्टोन ।
वंगभाषामें	गन्धक ।	फारसीभाषामें	गोगिर्द ।
मराठीभाषामें	गन्धक ।	लैटिन्भाषामें	सक्कर ।
गुजरातीभाषामें	गन्धक ।	अरबीभाषामें	किब्रित ।

गन्धकगुणाः ।

गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरःसरः ।
पित्तलःकटुकः पाकेकण्डूवीसर्पजन्तुजित् ।
हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गन्धक-चरपरा, कडवा, उष्णवीर्य्य, कषेला, सारक, पित्तजनक, पचनेमें कटु, रसायन तथा कण्डू, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोधितोयस्तुगन्धःस्याज्जरामृत्युरुजापहः ।
अग्निसंदीपनःश्रेष्ठोवीर्य्यवृद्धिकरोऽस्थिकृत् ॥(प्र०भृ०)

अर्थ-शोधितगंधक-जरा और मृत्युनाशक है तथा सर्व रोगनिवारक है, अग्निप्रदीपक, श्रेष्ठ, अत्यन्तवीर्य्यवर्द्धक और अस्थिजनक है ।

अपिच ।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सकलकुष्ठगदाञ्छुचिगन्धकः । हरतिनिष्कमितःपयसान्वितो मदनवृद्धिकरोनयनार्त्तिहृत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-शोधितगंधक चार मासे दूधके साथ सेवन करनेसे वातविकार, पित्तविकार, कफविकार, विष, कामला, सर्व प्रकारके कुष्ठ और नेत्ररोगोंको दूर करे है तथा कामदेवको बढावेहै ।

अशुद्धगन्धकदोषाः ।

अशोधितोगन्धकएषकुष्ठंकरोतितापंविषमंशरीरे ।
सौख्यञ्चरूपञ्चबलंतथौजःशुक्रंनिहन्त्येवकरोतिचास्रम् ॥

अर्थ-अशुद्धगन्धक-कोढ और विषमताप देहमें उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धंकुरुतेकुष्ठंपित्तंदाहंभ्रमंरुजम् ।
हन्तिवीर्य्यंबलंरूपंगन्धकंशोधयेत्ततः ॥

अर्थ-अशुद्धगन्धक-कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है । वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधकर काम लेवे ।

गन्धकस्य प्रकारभेदाः ।

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलश्चेतिचतुर्विधः । गन्धकोवर्णतोज्ञे-
योभिन्नभिन्नगुणाश्रयः । श्वेतःकुष्ठापहारीस्याद्रक्तोलोहप्र-
योगकृत् । पीतोरसेप्रयोगार्होनीलोवर्णान्तरोचितः ॥

अर्थ-गन्धक, सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोंसे चार प्रकारका है, तहां सफेद गन्धक-कुष्ठनाशक है । लाल गंधक-लोहके मारनेमें लेना । पीला गन्धक-पारेके विषयमें, उत्तम है, और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायनकर्म्ममें श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

रक्तोहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने ।
व्रणविलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्लभः ॥

अर्थ-लाल गंधक सुवर्णके बनानेमें लेना, पीलागन्धक रसायन कर्म्ममें लेना, व्रणके लेपादिकमें सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है ।

श्वेतगन्धकलक्षणम् ।

शुक्लपद्मसमच्छायोनवनीतसमप्रभः ।
मसृणःकठिनःस्निग्धःश्रेष्ठगन्धकउच्यते ॥

अर्थ-जो सफेद कमलकी समान वर्णवाला, नवनीतकी समान प्रभायुक्त हो मसृण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गंधक उत्तम कहा जाता है ।

गन्धकस्योत्पत्तिः ।

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याःक्रीडन्त्यारजसाप्लुतम् ।
दुकूलंतेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ ॥
प्रसृतंतद्रजस्तस्माद्गन्धकःसमजायत ।

अर्थ-पूर्वकालमें श्वेतद्वीपमें क्रीडा करती हुई भगवती देवी रजस्वला हुई तब उस रजके सनेहुए कपडेसे भगवती देवी क्षीरसमुद्रमें न्हाई वह रज क्षीरसागरमें गिरा, उससे गन्धककी उत्पत्ति हुई ।

सिन्दूरनामानि ।

सिन्दूरंनागजंवीरंरक्तंसन्ध्यारुणंशिवम् ॥

अर्थ-सिन्दूर, नागज, वीर, रक्त, सन्ध्यारुण, शिव (रक्तवालुका, रंगज, वंगज, शृङ्गारभूषण, नागरक्त, नागसम्भव, रक्तचूर्ण, रक्तवालुक, रक्तशासन, भालदर्शन, नागरेणु, सीमन्तक, नागगर्भ, शोण, वीररज, गणेशभूषण, सन्ध्याराग, शृङ्गारक, सौभाग्य, अरुण, मङ्गल्य, सीसज, सीसोपधातु)

संस्कृतभाषामें	सिन्दूर ।	लैटिन्भाषामें	प्लुवं ओक्सैडम् ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूर ।	तामिलभाषामें	चेन्दूरम् ।
वंगभाषामें	सिन्दुर ।	इंग्रेजीभाषामें	मिनियम् रेडलेड ।
मराठीभाषामें	शेंदुर ।	फारसीभाषामें	सिरिन्ज ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेन्दुरमु ।	अरबीभाषामें	उसरंज ।

सिन्दूरगुणाः ।

सिन्दूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥

अर्थ-सिन्दूर-गरम, विसर्पनाशक, कुष्ठविनाशक, कण्डूनिवारक, विषहारक, भग्नसन्धानकारक, व्रणको शोधनेवाला और भरनेवाला है ।

सिन्दूरस्य स्वरूपम् ।

सीसोपधातुःसिन्दूरंगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ।
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सिन्दूर सीसेसे बनाया जाता है इस कारण सिन्दूरको सीसेकी उपधातु कहते हैं, सिन्दूरके गुण सीसेकी समान है परन्तु संयोगज प्रभावसे और २ भी गुण कहे हैं ।

मनःशिलानामानि ।

मनःशिलाचगोलाचमनोज्ञानागजिह्विका ।
मनोगुप्तारोगशिलानेपालीकुनटीशिला ॥

अर्थ-मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नेपाली, कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका. कल्याणिका, नागमाता, रसनेत्रिका, दिव्यौषधि)

संस्कृतभाषामें	मनःशिला ।	तैलङ्गीभाषामें	मानुशिला ।
हिन्दीभाषामें	मनशिल, मैनशिल।	फारसीभाषामें	जरनिख, अहेमर ।
वंगभाषामें	मनछाल ।	इंग्रेजीभाषामें	रीलेगार ।
मराठीभाषामें	मनशीळ ।	लैटिन्भाषामें	आर्सेनिक, सल्फैडम् ।
गुजरातीभाषामें	मणशल ।		

मनःशिलागुणाः ।

मनःशिलागुरुर्बल्यासरोष्णालेखनीकटुः ।
तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥

अर्थ-मनशिल-भारी, वलकारी, सारक, गरम, लेखन, चरपरी, कडवी, स्निग्ध तथा विष, श्वास, खांसी भूत, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

अशोधितमनःशिलादोषाः ।

मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुन्ध्रुवंशोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्धंकिलमूत्ररोधमशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्य्यात् ॥

अर्थ-अशुद्धमनशिल-वलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है ।

हरितालमनःशिलयोर्भेदः ।

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनागेवतदन्तरम् ।
तालकमतिपीतंस्याद्रवेद्रक्तामनःशिला ॥

अर्थ-हरिताल और मनशिल इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होतीहैं ।

हरितालनामानि ।

पिञ्जरंपित्तलंतालंमनोज्ञहरितालकम् ।

छत्रांगंकाञ्चनरसंगोदन्तंनटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पित्तल, ताल, मनोज्ञ, हरितालक, छत्राङ्ग, काञ्चनरस, गोदन्त, नटमण्डन (विस्रगन्धि, पीतक, हरिताल, कर्बूर, पीतन, हरिबीज, सिद्धधातु, पिञ्जल, लोमहृत्, वंशपत्रक, वर्णक, अल, पीत, गोरोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, वैदल, तालक, कनकरस, काञ्चनक, बिडालक, चित्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गसार, गौरीललित)

सं०	हरिताल ।	क०	हरिदाल ।
हिं०	हरिताल ।	इं०	ऑर्पिमेंट ।
बं०	हरिताल, हत्तेल ।	लै०	यलोआर्से निकंसलफाईडम्
म०	हरताळ ।	अ०	जरनिख अस्फर ।

हरितालगुणाः।

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरिताल-चरपरी, स्निग्ध, कषेली, गरम, विषनाशक तथा कण्डू, कुष्ठ, मुखरोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, वाल और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शोधितंहरितालन्तुकान्तिवीर्य्यविवर्द्धनम् ।
कुष्ठादिकफरोगघ्नंजरामृत्युहरंपरम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-कान्तिजनक, वीर्य्यवर्द्धक, कुष्ठादिरोगहारक, कफरोगनिवारक, जरा और मृत्युको नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्कुष्ठानिमेहांश्चगुदामयांश्च ।
निहन्तिगुञ्जार्धमितंतुतालंषड्भल्लखंडेनसमंचयुक्तम् ॥

अर्थ-आधी चोटलीभर हरितालकी भस्म और छःभाग चीनी मिलाकर खानेसे अस्सी प्रकारके वात, कफ, पित्त, कुष्ठ प्रमेह और बवासीर दूर होतीहै ।

अशुद्धहरितालदोषाः।

अशुद्धन्तालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटादिसंकोचान्कुरुतेतेनशोधयेत् ॥

अर्थ-अशोधित हरिताल-आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक, प्रमेह-जनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अंगसंकोचक है ।

अपिच ।

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णंसधूमकंवातचयंचपित्तम् । पंगुत्वकुष्टेतनुतेचतेनदेहस्यनाशंचकरोतिसद्यः ॥

अर्थ-अशुद्ध हरताल-पीली और अग्निमें डालनेसे धुआं देने लगतीहै ऐसी हरिताल-वातपित्तको बढानेवालीहै, देहमें पंगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली है और तत्काल देहनाशक है ।

अन्यच्च ।

हरतिचहरितालंचारुतांदेहजाताम् सृजतिचबहुतापमंगसङ्कोचपीडाम् ॥ वितरतिकफवातौकुष्टरोगंविदध्यादिदमशितमशुद्धंमारितंचाप्यसम्यक् ॥

अर्थ-अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल-देहकी सुंदरताको हरनेवाली घोर ताप तथा अंगोंका संकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढानेवाली और कोढको करनेवाली है ।

हरितालस्यप्रकारभेदाः ।

हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिण्डसंज्ञकम् । तयोराद्यंगुणैः श्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् ॥स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् । पत्राख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् ॥ निष्पत्रं पिण्डसदृशंस्वल्पसत्त्वंतथागुरु । स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ॥

अर्थ-पत्रहरिताल और पिंडहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है तहां पत्रहरिताल (तबकिया) गुणोंमें श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुणवालीहै । जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रककी समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहितहो पिण्डकी समान गोल हो वह अलपसत्वयुक्त, हलकी, स्त्रीके पुष्पका नाश करनेवाली और अलपगुणवाली ऐसी पिंडहरिताल जाननी ।

अन्यच्च ।

हरितालोष्टधाप्रोक्तोगोदन्तःसर्वतोधिकः ।
तदभावेतुपत्राख्योवयसःस्थापनःपरः ॥

अर्थ-हरिताल आठ प्रकारकी कहीहै, उन सर्वमें गोदन्त हरिताल उत्तम है, गोदन्त हरितालके अभावमें पत्राख्य हरिताल लेनी यह अवस्था-स्थापक है ।

हरितालभस्मानुपानम् ।

सर्वरक्तविकारेषुदेयमाम्रहरिद्रया । सुहालाहलजीराभयामपस्मारहरंपरम् ॥ समुद्रफलयोगेनजलोदरविनाशनम् । देवदालिरसैर्युक्तंभगन्दरहरंपरम् । फिरंगदोषजंरोगंजातंहन्तिसुदुस्तरम् ॥ विसर्पमण्डलंकण्डूपामाविस्फोटछंतथा । वातरक्तकृतान्रोगानन्यानपिविनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म-सर्वप्रकारके रक्तविकारोंमें आम्बियाहलदीके साथ देनी चाहिये, वच्छनाग विष और जीरेके साथ अपस्माररोगमें देनी चाहिये, समुद्रफलके साथ जलोदररोगमें देनी चाहिये और देवदालीके रसके साथ भगन्दर, फिरंगोपदंश, विसर्प, मंडल, कण्डू, पामा, विस्फोट और वातरक्तजनित रोग तथा अन्यान्य रोगोंकोभी दूर करेहै ।

हरितालभक्षणप्रमाणम् ।

भक्षयेद्रत्तिमात्रंहियथायोगेनतालकम् ।
क्षाराम्लौचकटुत्यक्त्वामिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुंजा प्रमाण भक्षण करनी चाहिये तथा क्षार, अम्ल और कटुपदार्थ नहीं खावे और मिष्ठ भोजन करे ।

हरितालप्रयोज्यम् ।

श्वासेकासेक्षयेदुष्टेपित्तेवैवातशोणिते ।
दद्रुपामाव्रणेकुष्ठेतालकंचप्रदापयेत् ॥

अर्थ-हरिताल-श्वास, खांसी, क्षय, पित्त, वातरक्त, दद्रु, पामा, व्रण और कुष्ठरोगमें देनी चाहिये ।

हरितालादीनामुत्पत्तिः ।

हरितालंहरेर्वीर्य्यंलक्ष्मीवीर्य्यंमनःशिला ।
पारदंशिववीर्य्यंस्याद्गन्धकंपार्वतीरजः ॥

अर्थ-विष्णुके वीर्यसे हरिताल, लक्ष्मीके वीर्य्यसे मनशिल, शिवके वीर्य्यसे पारा और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है ।

विवरण । हरिताल-वंशपत्री, स्तवक (तवकिया) और पिण्डाख्य (गुवरिया) इन भेदोंसे कई प्रकारकीहै दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होतीहै ।

कासीसनामानि ।

कासीसंधातुकासीसंखाचरंधातुशेखरम् ।
शोधनंपांसुकासीसंकेसरंहंसलोमशन् ॥

अर्थ-कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांसुकासीस, केसर, हंसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौषध)

पुष्पकासीनामानि ।

द्वितीयंपुष्पकासीसंवत्सकंचमलीमसम् ।
ह्रस्वंनेत्रौषधंयोज्यंविशदंनीलमृत्तिका ॥

अर्थ-पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस, ह्रस्व, नेत्रौषध, विशद, नील-मृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	कासीस, पुष्पकासीस ।
हिन्दीभाषामें	कसीस, पुष्पकसीस ।
वंगभाषामें	धातुकासीस, पुष्पकासीस ।
मराठीभाषामें	हिराकस, श्वेतनीळी ।
गुजरातीभाषामें	हीराकशी बे जातनी छे नीली तथा धोळी ।
कर्णाटकीभाषामें	कासीस ।
इंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ् आयर्न । Sulphate of iron vitriolgreen विट्रिअलग्रीन्
लै०	फेरिसल्फास Ferry Sulphas
फारसीभाषामें	जाकेसब्ज ।
अरबीभाषामें	जाजेअखदर, जाजेअस्फर ।

कासीसगुणाः ।

कासीसंतुकषायंस्याच्छिशिरंविषकुष्ठजित् । खर्ज्जूकृमिहरंचैवचक्षुष्यंकान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकंतिक्तंशीतंनेत्रामयापहम् । लेपेनपामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, तथा विष, कुष्ठ, खर्ज्जू और कृमिका नाश करे है । पुष्पकासीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं ।

अन्यच्च ।

कासीसंतुवरंशीतंचक्षुष्यंकान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णञ्चतिक्तञ्चकेश्यंक्षारविषप्रणुत् ॥ वृष्यंचचित्रकुष्ठघ्नंमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम् । कफंवातंव्रणंकुष्ठंक्षयंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-कासीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, अम्ल-उष्ण, कडवा, केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, चित्रकुष्ठ, नाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्पादिकासीसमपिप्रशस्तंसोष्णंकषायाम्लमतीवनेत्र्यम् ।
विषानिलश्लेष्मगतिव्रणघ्नंश्वित्रक्षयघ्नंकचरंजनंच ॥
वातश्लेष्महरंकेशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्तप्रशस्त, गरम, कषेला, खट्टा, अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष, वात, कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाशकरे है, केशरंजक, वात, कफ, नेत्र और केशोंकी खुजली, विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है ।

कासीसलक्षणम् ।

भस्मवन्मृत्तिकाम्लंचकासीसंधातुइत्यपि ।
तदेवकिञ्चित्पीतंतुपुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ–धातुकासीस–भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होतीहै और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है।

गैरिकनामानि।

गिरिमृद्गैरिकंरक्तधातुर्लोहितमृत्तिका।

अर्थ–गिरिमृत्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरंगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, प्रत्यग्रम, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि।

सुवर्णगैरिकंचान्यत्सुरक्तंस्वर्णगैरिकम्।

अर्थ–सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि।

पाषाणगैरिकंप्रोक्तंकठिनंताम्रवर्णकम्।

अर्थ–पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक।
हिंदीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरोंजी।
वंगभाषामें	गिरिमाटी।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, तांवेगेरु, हुरमुंजी।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु।
इंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लैटिन् भाषामें	वॉलरुब्रा-Bole Rubia
फारसीभाषामें	गिलेसुर्खमिश्री।
अरवीभाषामें	तीनेमगरेवी अहमर।

गैरिकगुणाः।

गैरिकंरक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम्।
चक्षुष्यमन्यद्बल्यंचविशेषाद्वान्तिनाशनम्॥

अर्थ–गेरु–रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे है, नेत्रोंको हितकारी, वलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है।

अन्यच्च।

विशदोगैरिकःस्निग्धःकषायोमधुरोहिमः।

चक्षुष्योरक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिक्काविषापहः ॥

अर्थ-गेरु-विशद, स्निग्ध, कषेला, मधुर, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, तथा वमन, हिचकी और विषविनाशक है।

सुवर्णगैरिकगुणाः।

सुवर्णगैरिकंस्निग्धमधुरंतुवरंमतम्। चक्षुष्यंशीतलंबल्यंव्रणरोपणकारकम् ॥ विशदंकान्तिकृत्प्रोक्तंदाहंपित्तंकफंजयेत्। हिक्कांरक्तरुजंजूर्तिंविषविस्फोटकंवमिम् ॥ अग्निदग्धव्रणंचाशोरक्तपित्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कषेला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, बलकारक, व्रणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, ववासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है।

द्विविधगैरिकगुणाः।

गैरिकद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंमतम्।
चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके गेरु-स्निग्ध, मधुर, कषेले, नेत्रोंको हितकारी तथा दाह, रक्तपित्त, कफ, हुचकी और विषको हरनेवाले हैं।

खड़ीनामानि।

पाकशुक्लाशिलाधातुःकठिनीचखटिःखडी।

अर्थ-पाकशुक्ला, शिलाधातु, कठिनी, खटि, खडी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, सितधातु, पाण्डुमृत, कक्खटी, वर्णरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकानखा, अनीलधातु, वर्णलेखिका, शुक्लधातु, धातुपल, कठिनिका, लेखनी, मकल्ल।

संस्कृतभाषामें	खटी।
हिन्दीभाषामें	खरियामाटी, खडिया, गौरखडी।
वंगभाषामें	खडिमाटी, चाखडि।
मराठीभाषामें	खडु।
गुजरातीभाषामें	खडी।
कर्णाटकीभाषामें	वेणेवडु।

इंग्रेजीभाषामें	पाईपक्ले । Pipe clay
लैटिन्भाषामें	कार्वोनेट् आफ् कलशम् । Corbonate of calcum
फारसीभाषामें	गिलेसुफेद, गिलेखरिया ।
अरबीभाषामें	तिने अबीयद् ।

खटीगुणा ।

खटिकामधुरातिक्ताशीतलाव्रणदोषहा ।
पित्तंदाहंकफंरक्तदोषंनेत्ररुजंजयेत् ॥

अर्थ-खडिया-मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

खटीदाहास्त्रनुच्छीतामधुराविषशोषजित् । कफघ्नीनेत्रयोः पथ्यालेखनाबालकोचिता ॥ तद्वत्पाषाणखटिकाव्रणपित्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा॥

अर्थ-खडिया-दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करेहै, शीतल, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, लेखन आर बालकोंको हितकारीहै । पाषाणखटिका (सेलखडी)-केभी गुण खडियाकी समान हैं तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूरकरेहै, शीतल इसके लेप करनेमें यह गुण है और खानेमें तो मिट्टीकी समान है ।

कपर्दकनामानि ।

कपर्दकोवराटश्चकपर्दीचवराटिका ।

अर्थ-कपर्दक, वराटक, कपर्दी. वराटिका (वराट, कपर्द, ऊद्धाहवी, चराचर, चर, वर्ज्य, बालक्रीडक)

संस्कृतभाषामें	कपर्दक ।	गुजरातीभाषामें	कोडी ।
हिन्दीभाषामें	कवडी, कौडी ।	कर्णाटकीभाषामें	कवडी ।
बंगभाषामें	कडि ।	इंग्रेजीभाषामें	कवरीझ Covries
मराठीभाषामें	कवडी ।		

कपर्दिकागुणाः ।

कपर्दिकाहिमानेत्रहितास्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नीपित्तास्रकफनाशिनी ॥

अर्थ-कवडी-शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णस्राव, अग्निमांद्य, रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

कटूष्णादीपनीवृष्यागुल्मवातकफापहा ।
परिणामादिशूलघ्नीग्रहणीक्षयनाशिनी ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, संग्रहणी और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

कपर्दःकटुतिक्तोष्णःकर्णशूलव्रणापहः ।
शूलगुल्मामयघ्नश्चनेत्रदोषनिकृन्तनः ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, कडवी, गरम तथा कर्णशूल, व्रण, शूल गुल्म और नेत्ररोगको हरनेवाली है ।

कपर्दिकाभेदा ।

वराटिकात्रिधाप्रोक्ताश्वेताशोणात्रिधापरा । पीताचतीक्ष्णा चक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥ अतिबिंदुभिरश्वेतैर्लांछिता रेखयाथवा । बालग्रहहरानानाकौतुकेषुचपूजिता ॥ पीता गुल्मयुतापृष्ठेरसयोगेषुयोजयेत् । सार्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठायोगेषुयोजयेत् ॥ निष्कप्रमाणामध्यासाहीनापादोननिष्कका ॥

अर्थ-कौडी सफेद, लाल और पीली इन भेदोंसे तीनप्रकारकी है, तहां पीली कौडी-तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारी है, सफेद और लाल कौडी-शीतल और व्रणका भरनेवाली है । काले बिंदुयुक्त तथा रेखाआकरकलांछित ऐसी कौडी-बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कौतुकोंमें उपयोगी है और जिसकी पीठपर पीली गांठें हों ऐसी कौडी रसकर्म्ममें लेनी चाहिये । तोलमें डेढ तोलेवाली कौडी उत्तम होती है एक तोलेभरकी कौडी मध्यम और पाव तोले भरकी कौडी कनिष्ठ होती है ।

शुक्तिनामानि ।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैवमहाशुक्तिश्चशुक्तिका ।
मुक्तास्फोटोब्धिमण्डूकीमौक्तिकप्रसवाचसा ॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्तामसू, महाशुक्ति. शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, मौक्तिकप्रसवा (दुर्नामा, दीर्घकोषिका, दीर्घकौशिका, पङ्कशुक्ति, मुक्तगार महाशुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि।

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः कृमिसूः क्षुद्रशुक्तिका ।
शम्बूकाजलडिम्बश्चपुटिकातोयशुक्तिका ॥

अर्थ-जलशुक्ति, वारिशुक्ति, कृमिसु (क्ति), क्षुद्रशुक्तिकाशम्बूका, जलडिंब, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नरशुक्ति)

संस्कृतभाषामें	शुक्ति, जलशुक्ति ।
हिन्दीभाषामें	मोतीकी सीप, जलसीप
वंगभाषामें	झिनुक, शामुक ।
मराठीभाषामें	मोत्याची शिंप, नदीतील शिंप ।
गुजरातीभाषामें	मोतीनी छीप, नदीना छिपना ।
कर्णाटकीभाषामें	मुक्तिनीसिंपु, तौरेयसिंपु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओईस्टरशेल । Oyster shell

शुक्तिगुणाः ।

मुक्ताशुक्तिः कटुः स्निग्धाश्वासहृद्रोगनाशिनी ।
शूलप्रशमनीरुच्यामधुरादीपनीपरा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयरोगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मधुर और दीपन है ।

अन्यच्च ।

मुक्ताशुक्तिस्तुमधुरास्निग्धारुच्याचदीपनी ।
कट्वीचकासशूलघ्नीहृद्रोगस्यचनाशिनी ॥
स्नायुरोगहरीचैवज्वरघ्नीव्रणभेदिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खांसी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है ।

अपिच ।

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥

अर्थ-सीप-शीत, पित्त, रुधिरविकार और ज्वरको हरनेवाली है।

जलशुक्तिगुणाः ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी गुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरा रुच्या पाचनी बलदायिनी ॥

अर्थ-जलसीप-चरपरी, स्निग्ध, दीपन, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, विषविकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है।

अन्यच्च ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी पाचका च सा ।
रुच्या बलप्रदा गुल्मनाशिनी चक्षुषोर्हिता ॥
विषदोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्त्तिता । (रा०नि०)

अर्थ-जलकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, दीपन पाचक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, गुल्मनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करैहै।

विवरण। मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दोप्रकारकी होतीहैं। तहां मोतीकी सीप अत्यंत शुभ्र और सुफेद रंगकी समुद्रमें होतीहै। दूसरी सीप नदियोंमें होती हैं।

शंखनामानि ।

शंखः समुद्रजः कम्बुः सुनादः पावनध्वनिः ॥

अर्थ-शंख, समुद्रज, कम्बु, सुनाद, पावनध्वनि (कम्बु, कम्बोज अब्ज, त्रिरेख, जलज, अर्णोभव, अन्तःकुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखरदीर्घनाद, वहुनाद, हरिप्रिय, दीर्घनिस्वन, सुरचर, सम्यक्छब्द, जलोद्भव, विष्णुप्रिय, दुष्टद्रावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णवभव, अर्णवभवोदर ।

सं०	शंख।	गु०	शंख।
हिं०	शंख।	तै०	शंखमु।
बं०	शाँक, शंख।	इं०	कोंच। Conch
म०	शंख।		

शंखगुणाः ।

शंखो नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-शंख-नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शंखःकटुःसरःशीतःपुष्टिवीर्य्यबलप्रदः ।
गुल्मशूलहरःश्वासनाशनोविषदोषनुत् ।

अर्थ-शंख-चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि, वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विषके विकारोंको हरेहै ।

अपिच ।

शंखःशीतःकषायश्चलेखीचाजीर्णशूलजित् ।

अर्थ-शंख-शीतल, कषेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूलनाशक है ।

अपिच ।

शंखस्तुपौष्टिकोबल्योरसकालेकटुःस्मृतः । पटुःशीतोग्राहकश्चचक्षुष्योवर्णकृन्मतः ॥ नेत्रपुष्पंपंक्तिशूलंगुल्मंसंग्रहणींहरेत् । तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरःस्मृतः ॥ दक्षिणावर्तशंखस्तुत्रिदोषकामलापहः । विषदोषक्षयनेत्रग्रहपीडाविनाशकः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शंख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पंक्तिशूल, गुल्म संग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे) गुल्म, शूल, और श्वासनाशक है । दक्षिणावर्त्तशंख-त्रिदोष, कामलारोग, विषदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे है ।

शंखस्य प्रकारभेदाः ।

द्विधासदक्षिणावर्त्तिर्वामावर्त्तिस्तुभेदतः ।
दक्षिणावर्त्तशंखस्तुपुण्ययोगादवाप्यते ॥
यद्गृहेतिष्ठतिसोवैसलक्ष्म्याभाजनंभवेत् ।

अर्थ-शंख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त इन भेदोंसे दोप्रकारका है । दक्षिणावर्त्त शंख पुण्यके योगसेही प्राप्त होताहै । और जिसके घरमें यह रहताहै उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती है ।

श्रेष्ठशंखलक्षणम् ।

शंखस्तुविमलःश्रेष्ठश्चंद्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धोगुणदोनैवशुद्धस्तुसुगुणप्रदः ॥

अर्थ-निर्मल और जिसकी चंद्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शंख उत्तम है । अशुद्ध शंख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शंख गुणदायक है ।

कृमिशंखनामानिगुणाश्च ।

कृमिशंखःकृमिजलजःकृमिवारिश्चजन्तुकम्बुश्च ।
कथितोरसवीर्य्याद्यैःकृतनिधिभिःशंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ-कृमिशंख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु । कृमिशंख-रसवीर्यादिकमें शंखकेही समानहै ।

क्षुद्रशंखनामानि ।

कोशस्थालघुशंखास्तुक्षुद्रकाःक्षुल्लकास्तथा ।
शंखनकाश्चशम्बूकाःक्षुद्रशंखानदीभवाः ॥

अर्थ-कोशस्थ, लघुशंख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शंखनक, शम्बूक, क्षुद्रशंख, नदीभव ।

क्षुद्रशंखगुणाः ।

शम्बूकाःशीतलानेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णाग्राहिदीपनपाचनाः ॥

अर्थ-क्षुद्रशंख शीतल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीतज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है ।

अन्यच्च ।

शम्बूकःसृष्टविण्मूत्रोमधुरःपित्तरोगहा ।

अर्थ-क्षुद्रशंख (घोंघा)-मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोग नाशक है ।

अपिच ।

क्षुल्लकःकटुकस्तिक्तःशूलहारीचदीपनः ।

अर्थ-क्षुलक (घोंघा)-चरपरा, कडवा, शूलनाशक और दीपन है ।

कंकुष्ठनामानि ।

कङ्कुष्ठंकालकुष्ठञ्चविरङ्गंरङ्गदायकम् ।

अर्थ–कंकुष्ठ, कालकुष्ठ, विरंग, रंगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

संस्कृतभाषामें	कंकुष्ठ।
हिंदीभाषामें	कंकुष्ठ (मुरदासिंग)।
वंगभाषामें	पार्वतीयमृत्तिकाविशेष।
मराठीभाषामे	कुंकुष्ठ।
गुजरातीभाषामें	पीलीयो।

कंकुष्ठगुणाः।

कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम्।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कंकुष्ठ–दस्तावर, कडवा, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, गुल्म, आनाह और कफरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठंतिक्तकटुकंवीर्य्यंचोष्णंप्रकीर्त्तितम्।
गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नंरसजन्तुव्रणापहम्। (रत्नाकर)

अर्थ–कंकुष्ठ–कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, रस, जन्तु और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठंपित्तकृद्भेदिविबंधकफगुल्मनुत्। भजेदेनंविरेकार्थे ग्राहिभिर्यवमात्रया॥नाशयेदामपूतिंचविरेच्यंक्षणमात्रतः। सुभक्षितंचताम्बूलंविरेकंतंविनाशयेत्॥

अर्थ–कंकुष्ठ–पित्तकारक, भेदक तथा विबंध, कफ और गुल्मको दूर करेहै। इसको एक जौकी वरावर मलरोधी मनुष्योंको देनेसे क्षणमात्रमें दस्त होने लगतेहैं और दुर्गंध आम दूर होजातीहै तथा ताम्बूलके खानेसे वही दस्त वंद हो जातेहैं॥

कङ्कुष्ठोत्पत्तिलक्षणम्।

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते। तत्रैकंनलिकाख्यंस्यात्तदन्यंरेणुकंस्मृतम्॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धंश्रेष्ठकंकुष्ठमादिमम्। श्यामंपीतंलघुत्यक्तसत्त्वंनेष्टंहिरेणुकम्।

अर्थ-कंकुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होताहै; तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ कंकुष्ठ होताहै और काला, पीला, हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक कंकुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्तिकंकुष्ठंसद्योजातस्यदन्तिनः ।
वर्च्चश्चश्यामपीताभंतदतीवविरेचनम् ॥

अ -कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होताहै तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शंखजीरकनामानि ।

कम्बुजीरःश्लक्ष्णजीरस्तथाश्लक्ष्णमृदापिच ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत [द्] ।

संस्कृतभाषामें	शंखजीरक ।
हिन्दीभाषामें	संगजराहत ।
मराठीभाषामें	शंखजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शंखजीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	सोपस्टोन् । Soaplstone
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषामें	संगे जराहत ।
अरबीभाषामें	हजरुल एरावी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधंजीरकंतुव्रणदाहरुचंजयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (संगरजराहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करे है। इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होताहै ।

स्फटीनामानि ।

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा ॥
दृढरंगारंगदृढादृढारंगापिकथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, रंगदृढा, दृढा, रंगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रंगाङ्गा, सुरंगा, गतरंगा)

सं० स्फटिकारि ।	तै० फाटिके ।
हिं० फटकिरी ।	अ० विट्टील हाईट आलम् ।
बं० फटफिरी ।	लै० हैड्राजिरसूसल्‌ फ्युरेष्टम् ।
म० तुर्टी, फटकी ।	फा० जाकसफेते ।
क० फटकी ।	अ० जाज कल्कतार ।

अस्य गुणाः ।

स्फाटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान् ।
निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको संकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फाटिकीतुवरास्निग्धाकट्वीरंगप्रदामता । रसबन्धकरीकुष्ठ
व्रणप्रदरनाशिनी॥विषदोषंमूत्रकृच्छ्रंवान्तिशोषंत्रिदोषक-
म् । प्रमेहंचनाशयत्येवंपूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, स्निग्ध, चरपरी, रंगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानिगुणाश्च ।

चुम्बकःकान्तपाषाणोऽयस्कान्तोलौहकर्षकः ।
चुम्बकोलेखनःशीतोमेदोविषगरापहः ॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लौहकर्षक । चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा भेद, विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्त्तगुणाः ।

राजावर्त्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः ।
राजावर्त्तःप्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

सौराष्ट्रीनामानि ।

सौराष्ट्र्याढकीतुवरीपर्पटीकालिकासती ।
सुजातादेशभाषायांगोपीचंदनमुच्यते ॥

अर्थ-सौराष्ट्री, आढकी, तुवरी, पर्पटी, कालिका, सती, सुजाता, इसको गोपीचंदन कहते हैं । (काक्षी, पार्वती, मसी, मृदाह्वया, मृत्, मृत्स्ना, आसङ्ग, सुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका, कंसोद्भवा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामें	सौराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	गोपीचंदन, सोरठकी मिट्टी ।
वंगभाषामें	सौराष्ट्रदेशीय सुगन्धिमृत्तिकाविशेष ।
मराठीभाषामें	गोपीचंदन ।
गुजरातीभाषामें	गोपीचंदन ।
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ एल्युमीना ।

सौराष्ट्रीगुणाः ।

गोपिकाचन्दनंशीतंदाहव्रणविषापहम् ।
विसर्पशमकंलेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ-गोपीचंदन-शीतल, दाहनाशक, व्रणविनाशक, विषहारक, विसर्पनिवारक और इसका लेप करनेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाताहै ।

अन्यच्च ।

गोपीचंदनकंदाहक्षतरक्तविकारनुत् ।
पित्तंकफंचप्रदरंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-गोपीचंदन-दाह, क्षत, रुधिरविकार, पित्त, कफ और प्रदररोगका नाश करे है ।

वालुकानामानि ।

सिकतावालुकासिक्ताशीतलासूक्ष्मशर्करा ।
प्रवाहोत्थामहाश्लक्ष्णासूक्ष्मापानीयचूर्णका ॥

अर्थ-सिकता, वालुका, सिक्ता, शीतला, सूक्ष्मशर्करा, प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका, (वालिका, प्रवाही, महासूक्ष्मा, पानीयवर्णिका, रेतजा)

सं०	वालुका ।	तै०	विशिका ।
हिं०	वालु, रेत [ती, ता,]	इं०	सॅन्ड । Sand
वं०	बाली ।	लै०	सीलीका । Silica
म०	वाळू, रेती ।	फा०	रेग ।
गु०	रेती, वेलु ।	अ०	रमल ।
क०	हाळुळु ।		

अस्यगुणाः ।

सिकतामधुराशीतालेखनीतापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणंचैवव्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरीचास्याःस्वेदनंवातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ—वालु तथा रेता—मधुर, शीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्निदग्ध-व्रण, व्रण, उरःक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करे है। इसका सेक वातनाशक है।

कर्दमनामानि ।

पङ्कस्तुजलकल्कश्चचुलुकःकर्दमोमलः ।
चिकिलःपलितोद्रापःपललश्चनिषद्वरः ॥

अर्थ—पङ्क, चुलुक, कर्दम, मल, चिकिल, पलित, द्राप, पलल, निषद्वर (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदामृत्तिकामृत्स्नाक्षेत्रजाकृष्णमृत्तिका ।

अर्थ—मृत्, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	पंक, कर्दम, मृत् ।
हिन्दीभाषामें	कींच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।
वंगभाषामें	कादा. माटी, कालमाटी ।
मराठीभाषामें	चिखल, माती, गारा ।
गुजरातीभाषामें	गारो, कालीमाटी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नोवुलु ।
इंग्रेजीभाषामें	मडब्लॅक् क्ले । Mud black Clay
लैटिन्भाषामें	हैड्रस् सिलिकेट ऑफ् आल्युमीनीयम् । Hydrasis silicate of alumunum

पंकगुणाः ।

पंकोदाहास्रपित्तास्रशोथघ्नःशीतलःसरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करैहै। शीतल और सारक है)

अन्यच्च ।

कर्दमःशीतलोरूक्षोविषघ्नोवेदनापहः ।
शोफदाहप्रशमनोव्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमःशीतलःस्निग्धोविषपित्तास्रभग्नजित् ।
शोफदादक्षतहरोहितःशोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भग्न, सूजन, दाह और घावको दूर करे है। व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव-दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्नारक्तदोषप्रदरंक्षतदाहहा ।
मूत्रकृच्छ्रंकफंपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी, रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रलेपाद्विनिहंत्येषाशोथंभल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार, प्रदर, कफ, पित्तको हरै और इसका लेप करनेसे भिलावेंसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होतीहै ।

बोलनामानि ।

बोलंगन्धरसंपिण्डंनिर्लोहंबार्बररंरसम् ।
सुगन्धंनालकंपौरंरसगन्धंसितंविदुः ॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिंड, निर्लोह, बर्बररस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष, बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, प्रिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषामें	बोल ।
हिन्दीभाषामें	बोल, हीराबोल, बीजाबोल ।
बंगभाषामें	गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी ।
मराठीभाषामें	बोळ ।
गुजरातीभाषामें	हिराबोल ।
कर्णाटकीभाषामे	बोल ।
तैलिङ्गीभाषामें	बालिमु, त्रोपोलमु ।
तामिलीभाषामें	वेलइपूपोलम् ।
बर्मू०	रत्त्या बोल ।
इंग्रेजीभाषामे	मिर्हा । Myrha
लैटिन्भाषामें	बालासामोडेड्रन् मिर्हा । Bulsa modedron myrha
फारसीभाषामें	मुर ।
अरबीभाषामें	मुरसाफ, मुरमकी ।

अस्य गुणाः ।

रक्तबोलःकटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्चपाचनः । मेध्योग्निदीपकोगर्भाशयस्यचविशोधनः ॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नःकफपित्तत्रिदोषनुत् । प्रदराश्मरीमेहघ्नोयोनिशूलज्वरप्रणुत् ॥ कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः । ग्रहबाधांपौरुषत्वं नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त, त्रिदोष,

मदर, पथरी, प्रमेह, योनिशूल, ज्वर, कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिसार, पसीना, ग्रहबाधा और पुरुषताका नाश करे है ।

शिलाजतुनामानि ।

शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्य्यासइत्यपि ।
गैरेयमश्मजञ्चापिगिरिजंशैलधातुजम् ॥

अर्थ-शिलाजतु, अद्रिजतु, शैलनिर्य्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज,(अर्थ्य, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

सं०	सिलाजतु ।	क०	कलुवेचरु ।
हिं०	शिलाजीत ।	इं०	आसफेल्ट, जुझपिच ।
बं०	शिलाजतु ।	लै०	आस्फल्टं पंझाविनम् ।
म०	शिलाजीत ।		विटुमेन जुडाईकम् ।

अस्योत्पत्तिलक्षणं गुणाश्च ।

निदाघेघर्मसन्तप्ताधातुसारंधराधराः । निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्तितच्छिलाजतुकीर्त्तितम् ॥ सौवर्णंरजतंताम्रमायसंतच्चतुर्विधम् । शिलाह्वंकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ॥ छेदियोगवहंहन्तिकफमेदोश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवातास्राशाँसिपांडुताम् ॥ अपस्मारंतथोन्मादंशोथकुष्ठोदरकृमीन् । सौवर्णन्तुजपापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् ॥ मधुरंकटुतिक्तन्तुशीतलंकटुपाकिच । राजतंपाण्डुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच ॥ ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते । लौहंजटायुपक्षाभंतत्तिक्तंलवणंभवेत् ॥ विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-उष्णकालमें सूर्यकी किरणोंसे पर्वत तपित होकर धातुओंके सारको गोंदकी समान छोडते हैं; उस सारको शिलाजीत कहते हैं, सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस इन भेदोंसे शिलाजीत चार प्रकारका है । शिलाजीत-कटु, तिक्त, उष्ण, कटुपाकी, रसायन, छेदक, योगवाही तथा कफ,

मेद, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, ववासीर, पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है। सौवर्ण (सुवर्णकी खानका)। शिलाजीत–जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है, मधुरसंयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तरसयुक्त, 'शीतल और पचनेमें चरपरा है। राजत (रूपेकी खानका)। शिलाजीत–पाण्डुरंगका होता है। शीतल, कटु और पचनेमें स्वादिष्ठ है। ताम्र (तांवेकी खानका) शिलाजीत–मोरकी गरदनके रंगकेसा होता है। तीक्ष्ण और उष्ण है। लौह (लोहेकी खानका)। शिलाजीत–जटायुकी पंखकी समान काले रंगका होता है। कडवा, लवणरसान्वित, विपाकमें चरपरा, शीतल और सवमें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

मासेशुक्रेशुचौचैवशैलाःसूर्य्यांशुतापिताः। जतुप्रकाशंस्व-
रसंशिलाभ्यःप्रस्रवन्तिहि॥शिलाजत्विति विख्यातंसर्वव्या-
धिविनाशनम्।त्रप्वादीनान्तुलौहानांषण्णामन्यतमान्वयम्।
ज्ञेयंसुगन्धंतच्चापिषड्योनिप्रथितंक्षितौ। लौहाद्भवतितद्य-
स्माच्छिलाजतुजतुप्रभम्। तस्यलौहस्यतद्वीर्य्यंरसश्चापि
बिभर्त्तितत्। त्रपुसीसायसादीनिप्रधानान्युत्तरोत्तरम्॥
यथायोगप्रयुक्ताहिश्रेष्ठश्रेष्ठगुणाःस्मृताः। (सु०सं०)

अर्थ–ज्येष्ठ आषाढके महीनेमें पर्वत सूर्य्यकी किरणोंसे अत्यन्त तापित होकर लाखकी समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे वहाते हैं; वह रस शिलाजीत नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक छह धातुओंसे यह पृथक् है इसे सुगन्धिवाला जानना। यह पृथ्वीमें छै स्थानोंसे होता है जो लोहसे उत्पन्नहोता है वह लाखके रंगका है, वह उस लोहेका वीर्य्य और रसभी धारण करता है। रांग, सीसा लोहादि खानजनित गुणोंमें उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथा-योग्य प्रयुक्त करने चाहिये।

श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णंस्निग्धंमृदुतथागुरु।
तिक्तंकषायंशीतञ्चसर्वश्रेष्ठंतदायसम्॥

अर्थ-जिसमें गोमूत्रकी समान गंध आतीहो, रंग कृष्णहो, चिकना, नरम, भारी, कडवा, कषेला, और शीतल ऐसा शिलाजीत लौहकी खानसे उत्पन्न हुवा श्रेष्ठ जानना ।

शिलाजतुगुणः ।

शैलजंकटुकंतिक्तंमेहघ्नञ्चरसायनम् । उष्णमुन्मादशोफघ्नंक्षयकुष्ठाश्मरीहरम् ॥ शोफोदरापस्मारघ्नंबस्तिरोगार्शनाशनम् । कण्डूञ्चपाण्डुरोगञ्चछर्दिंवातंकफंजयेत् ॥ वलीपलितकासघ्नंश्वासमूत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-शिलाजीत-चरपरा, कडवा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम तथा उन्माद, सूजन, क्षय, कोढ, पथरी, शोफ, उदर, अपस्मार, वस्तिरोग, बवासीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, खाँसी, श्वास और मूत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

शिलाजंकफवातघ्नंतिक्तोष्णंक्षयरोगनुत् ।
वह्नौक्षिप्तंभवेद्यत्तुलिंगाकारमधूमकम् ॥

अर्थ-जो अग्निमें गेरनेसे धूमरहित और लिंगाकार खडा हो जावे वह शिलाजीत उत्तम और शुद्ध जानना । शिलाजीत-कफवातनाशक, कडवा गरम और क्षयरोगका नाशक है ।

अशुद्धशिलाजतुदोषाः ।

अशुद्धंदाहमूर्च्छार्थंभ्रमपित्तास्रशोणितम् ।
शिलाजतुप्रकुरुतेमांद्यमग्नेश्चविड्ग्रहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, अग्निमांद्य और मलबद्धताको करता है

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धातूपधातुवर्गः ॥ ६ ॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः ।

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमन्तेऽस्मिन्नतीवयत्
ततोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ (भा०प्र०)

रत्नंक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।
तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ-धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें अतीव रमतेहैं इसीकारण शब्द-शास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है। रत्न और मणि यह दोनों चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमें कहे जाते हैं।

रत्नानांनिरूपणम्।

वज्रंविद्रुममौक्तिकंमरकतंवैदूर्य्यंगोमेदकं
माणिक्यंहरिनीलपुष्पदृषदौरत्नानिनाम्नानव ।
यान्यन्यान्यपिसन्तिकानिचिदिहत्रैलोक्यसीम्निस्फुटं
नाम्नातान्युपरत्नसंज्ञकतमान्याहुःपरीक्षाकृतः। (नि.र.)

अर्थ-नवरत्न-हीरा १ मूँगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ हैं। और इस पृथ्वीपर इन्हीं रत्नोंकी सदृश दूसरे रत्न होते हैं उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते हैं।

अन्यच्च।

मुक्ताफलंहीरकंचवैदूर्य्यंपद्मरागकम् ।
पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव। (विष्णुधर्म्मोत्तरे)

अर्थ-मोती, हीरा, वैडूर्य्य, माणिक, पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूँगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते हैं।

रत्नगुणाः।

रत्नानिभक्षितानिस्युर्मधुराणिसराणिच ।
चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥
मङ्गल्यानिमनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच ।

अर्थ-रत्न-मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, विषनाशक, स्निग्ध, मंगलकारक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

मणयोवीर्य्यतःशीतामधुरास्तुवरारसात् ।

चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारकाः ॥

अर्थ-मणि (रत्न)-शीतवीर्य्य, मधुर, कषेली, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, सारक और विषहारक है।

हीरकनामानि।

हीरकंवज्रमशिरंषट्कोणंदृढगर्भकम्।

अर्थ-हीरक, वज्र, अशिर, षट्कोण, दृढगर्भक (हीर, दधीच्यस्थि, वज्रक, सूचीमुख, वरारक, रत्नमुख्य, वज्रपर्य्यायनाम, अभेद्य, दृढाङ्ग, चन्द्र, मणिवर)।

संस्कृतभाषामें	हीरक, वज्र।
हिंदीभाषामें	हीरा।
वंगभाषामें	हिरे।
मराठीभाषामें	हिरा।
गुजरातीभाषामें	हिरो।
कर्णाटकीभाषामें	वज्र।
तैलिङ्गीभाषामें	वज्र।
इंग्रेजीभाषामें	डाएमोण्ड। Diamond
लैटिन्भाषामें	पिओरकार्बन् एडम्स्। Pure carbon Adams
फा०	इलमाश।

हीरकगुणाः।

हीरकःसारकःशीतःकषायोमधुरस्तथा।
चक्षुष्योवान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरोधृतः ॥

अर्थ-हीरा-सारक (कुछ २ दस्तावर) शीतल, कषेला, मधुर, और नेत्रोंको हितकारी वमनकारक है। इसको धारण करनेसे पाप और अलक्ष्मीका नाश होताहै।

हीरकभेदलक्षणगुणाः।

सश्वेतस्तुस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः। पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः॥रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः। क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः॥वैश्योधनप्रदःप्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत्। शूद्रोनाशयति

व्याधीन्वयःस्तम्भंकरोतिच॥पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीया-
निलक्षणैः। सुवृत्ताःफलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः ॥ पु-
रुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्जिताः। रेखाबिन्दुसमा-
युक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः ॥ त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञे-
याश्च नपुंसकाः। तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबन्धनकारिणः॥
स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिस्त्रीणांसुखप्रदाः। नपुंसका-
स्त्ववीर्य्याःस्युरकामाःसत्त्ववर्जिताः ॥ स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्र-
दातव्याःक्लीबंक्लीबेप्रयोजयेत्। सर्वेभ्यःसर्वदादेयाः पुरुषा-
वीर्य्यवर्द्धनाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हीरा-जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, तहां ब्राह्मण हीरा (सफेप, हीरा) रसायनकार्य्यमें उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है। क्षत्रिय हीरा (लालरंगका) यह सर्व व्याधि, जरा और मृत्युनाशक है। वैश्यहीरा, (पीले रंगका) यह, धनप्रदायक, और शरीरको दृढ करनेवाला है। और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होताहै; यह व्याधिनाशक और अवस्थास्थापक है। हीरा-स्त्री, पुरुष और नपुंसक, इन भेदोंसे तीन प्रकारका है, उत्तम गोलाकार, चमकदार, बडा रेखा और-बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना। रेखा और बिन्दुकरके युक्त तथा, छे कोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना। त्रिकोणयुक्त और सुदीर्घ हीरेको नपुंसकजातिका जानना। इनमें पुरुषजातिका हीरा-रस(पारा) को बाँधनेवाला और श्रेष्ठ है। स्त्रीजातिका हीरा-कान्तिजनक और स्त्रियोंको सुखकारक है। नपुंसकजातिका हीरा वीर्य्यविहीन, कामवर्जित और सत्त्वशून्य जानना। स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुंसक जातिका नपुंसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और वीर्य्यवर्द्धक है।

हीरकगुणाः।

वज्रंसमीरकफपित्तगदांश्चहन्याद्वज्रोपमञ्चकुरुतेवपुरुत्तमश्रि।
शोषक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्वयथुहारिचषड्रसाढ्यम्।

अर्थ-हीरा-वातपित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करनेवाला, लक्ष्मीवर्द्धक, षड्रसयुक्त तथा शोष, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग और सूजनको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च ।

वज्रंरसायनंचैवषड्रसैश्चयुतंसदा । देहदार्ढ्यकरंपुष्टिबलवीर्य्यविवर्द्धनम् ॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान् । कफंवातंचशोफंचमेदमेहभगन्दरान् । पाण्डुरोगोदरंमेदं नाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ–हीरा–रसायन, षड्रसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, बल और वीर्य्यवर्द्धक है, वर्णको सुंदर करनेवाला, सुखकारक तथा वातकुष्ठ, पित्त, क्षय. भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और मेदनाशक है ।

अशुद्धहीरकदोषाः ।

अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा । पाण्डुतापंगुरुत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत् ॥पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदंचदुष्टम् । हृत्पार्श्वपीडांकुरुतेतिदुःखदामशुद्धवज्रंगुरुमात्महंत्यजेत् ॥ (रत्ना०)

अर्थ–अशोधित हीरा–कोढ, पार्श्वशूल, पाण्डु, शरीरमें ताप और भारीपनको करे है । तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, हृदय और पसलीमें शूल तथा आत्माका नाश करे है ।

माणिक्यनामानि ।

पद्मरागोलोहितकोमाणिक्यंशोणरत्नकम् ।

अर्थ–पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराट्, रविरत्नक, शोणरत्न, तरणिरत्न, शृङ्गारी, रंगमाणिक्य, तरुण, रत्ननायक, रागयुक्, रत्न, शोणोपल, सौगन्धिक, कुरुविन्द, कुरुविल्व, लोहित, कुरुविन्दक, लक्ष्मीपुष्प, अरुणोपल) ।

सं०	पद्मराग, माणिक्य ।	तै०	माणिक्यं ।
हिं०	मानिक, लाल ।	इं०	रुबी । Ruby
बं०	माणिक ।	लै०	रुबिनस् । Rubinus
म०	माणिक ।	फा०	लालवदपूशानी ।
गु०	माण्यक, चुनी ।	अ०	लाल ।
क०	माणक ।		

माणिक्यगुणाः ।

माणिक्यंलेखनंशीतंकषायंमधुरंसरम् ।
चक्षुष्यंमंगलंदाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

अर्थ-मानिक-लेखन, शीतल, कषेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी मंगलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विषविनाशक है ।

माणिक्यभेदवर्णाः ।

सिंहलेतुभवेद्रक्तंपद्मरागमनुत्तमम्।पीतंकाणपुरोद्भूतंकुरुविन्दमितिस्मृतम् ॥अशोकपल्लवच्छायमिदंसौगन्धिकंविदुः। तुम्बुरुच्छाययानीलंनीलगन्धिप्रकीर्त्तितम् ॥ उत्तमंसिंहलोद्भूतंनिकृष्टन्तुम्बुरूद्भवम् । मध्यमंमध्यमंज्ञेयंमाणिक्यं क्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ-सिंहल देशमें लालरंगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होताहै यह सर्वमें श्रेष्ठ जानना। कानपुर नामवाले देशमें कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होताहै यह पीला और मध्यम जानना। और अशोक वृक्षके पल्लवकी सदृश रंगके सौगन्धिक नामवाले माणिक्यको मध्यम जानना। तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाले नीले रंगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहतेहैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमें उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमें उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः ।

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमास्त्रक्समवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवोदाडिमबीजवर्णास्तथापरेकिंशुकपुष्पभासः ॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुंकुमानांलाक्षारसस्यापिसमानवर्णाः ।
चकोरपुंस्कोकिलसारसानांनेत्रावभासश्चभवन्तिकेचित् ॥

अर्थ-बन्धूक पुष्पकी समान, गुञ्जाकी, इंद्रगोप कीडेकी और जपाके फूलकी समान वर्णवाला और शोभासंयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजकी सदृश रंगवाला माणिक होताहै । और कोई कहते हैं टेसूके फूलकी समान प्रभायुक्त, सिंदूरकी सदृश, लाल कमलकी समान, कुंकुमकी समान,

लाखकी समान तथा चकोर, कोकिला और सारस इनके नेत्रोंकी कांतिकी समान वर्णवाले माणिक क्वचित् होते हैं ।

अन्यच्च ।

क्वचित्तुस्फाटिकोत्थानांदेशेतुवरसंज्ञके । सधर्म्माणःप्रजायन्तेस्वल्पमूल्याहितेस्मृताः ॥ वर्णानुयायिनस्तेषांरंध्रदेशेतथापरे । यज्जायन्तेतुतेकेचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः ॥ शोभाद्वितयवन्तोयेमणयः क्षतिकारकाः ।उभयत्रपदंयेषां तेनचस्यात्पराभवः ॥

अर्थ–कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं वह स्वल्प मूल्यका होता है । रन्ध्रदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं वह उससेभी कम कीमतके होते हैं वह मणियें हानिकारक हैं । और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होती है ।

अथ तोल।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तुदशसप्ततिगुञ्जकात् । पद्मरागस्तुलयतियथापूर्वंमहागुणः ॥बिम्बीफलसमाकारोषड्वसुदशतोलकः। पद्मरागस्तुलयतियथोत्तरमहागुणः ॥ अतःपरंप्रमाणेनमानेनन्नचलक्ष्यते ।

अर्थ–तोल–एक गुञ्जासे लेकर १७ गुंजा प्रमाणतक पद्मरागमणि तुलती है–वह बडे गुणोंकरके युक्त होतीहै । पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमतभी अधिक होगी । जिसका कंदूरीकी समान आकार है और ६–८–१०–तोलेकी तोलमें है उसकी कीमत यथा क्रमसे अधिक जाननी । इसके उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है ।

अथ मूल्यम् ।

षड्विंशतिसहस्राण्येकमणेःपलप्रमाणस्य । कर्षत्रयस्यविंशतिरुपरिष्टात्पद्मरागस्य ॥ अर्द्धपलस्यद्वादशकर्षस्यैवषट्सहस्राणि । यच्चाष्टमासिकमितंतस्यसहस्रत्रयंमौल्यम् ॥ माषचतुष्टयंयत्स्यात्तस्यदशशतंमौल्यम् ॥ माषद्वयमितो

यस्तुपद्मरागःसुनिर्मलः । तस्यपंचशतंमौल्यंरौप्यंकर्षस्य चेरितम्॥माषकैकमितोयस्तुपद्मरागोगुणान्वितः। शतैक- संमितंवाच्यंमौल्यंतस्यविचक्षणैः ॥ अतोन्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागागुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्विगुणमौल्येनमूल्यंतेषांप्रक- ल्पयेत् । व्रणेमूल्यंचार्द्धंतेजोहीनस्यमूल्यमष्टांशः । अल्प- गुणोबहुदोषोमूल्यंनाप्नोतिविंशांशम् ॥

अर्थ-जो माणिक तोलमें ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये हैं। और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये हैं । जो माणिक तोलमें दो तोलेभरहो उसकी कीमत १२०००, रुपये हैं । और जो तोलमें एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये हैं । और जो तोलमें आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००, रुपये हैं और जो तोलमें चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमें दो मासेका हो और निर्मल हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने। जो पद्मराग तोलमें एक मासेका है और गुणसंयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने। और जो तोलमें इससेभी कम है तथा गुणोंमें श्रेष्ठ है उसका मूल्य सुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमें व्रण हो तो आधे मूल्यका जानना। और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी। जिसमे अल्पगुण और वहुत दोष हों तो उसकी कीमत वीसवे भाग भी नहीं।

रत्नपरीक्षा।

बालार्ककरसंस्पर्शाद्यःशिखांलोहितांवमेत् । रंजयेदाश्रयं वापिसमहागुणउच्यते।दुग्धेशतगुणेक्षिप्तोरंजयेद्यःसमंततः। वमेच्छिखांलोहितांवापद्मरागःसउत्तमः । अन्धकारेम- हावोरेयोन्यस्तःसन्महामणिः ॥ प्रकाशयतिसूर्य्याभःसः श्रेष्ठःपद्मरागकः। पद्मकोशेषुयोन्यस्तःप्रकाशयतितत्क्षणा- त् ॥ पद्मरागवरोह्येषदेवानामपिदुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशम- नःसर्वसम्पत्तिदायकः ॥बालार्काभिमुखंकृत्वादर्पणेधारये-

न्मणिम्। तत्रकान्तिविभागेनच्छायाभागंविनिर्दिशेत्॥अ-
प्रणश्यतिसंदेहेशिलायांपरिघर्षयेत् । घृष्टोयोत्यन्तशोभा-
वान्परिमाणंनमुञ्चति ॥ सज्ञेयोऽशुद्धजातीयोज्ञेयाश्चान्येः
विजातयः । अत्यन्तलोहितोयश्चपद्मरागःसउच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंके स्पर्श करतेही लाल कान्तिको त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महागुणवाला है। जो अपनेसे सौगुने दूधमें पडा हुआभी चारों ओरसे कान्ति प्रगट करता है और जो लाल रंग की कान्तिको फैलावे है वह पद्मरागरत्न अत्यन्त उत्तम है। महाघोर अंधकारमें रक्खा हुआ यह महारत्न यदि सूर्यकी समान प्रकाश करे तो उत्तम है। जो माणिक मुद्रितकमलमें रखनेसे तत्काल कमल को प्रफुल्लित करदे वह उत्तम पद्मरागरत्न देवताओंकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोंको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्पत्तियोंको देनेवाला है। प्रातःकालके सूर्यके सन्मुख दर्पणमें इस मणिको धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने संदेहको दूर करनेके लिये इसको पत्थरपर घिसे जो घिसनेसे अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको त्याग न करे तो शुद्ध पद्मरागमणि जाने और दूसरे विजातीय पद्मराग हैं जो अत्यन्त लाल हैं वेभी पद्मराग मणि हैं।

माणिक्यगुणाः।

सपत्नमध्येपिकृताधिवासंप्रमादवृत्तावपिवर्त्तमानम् ।
नपद्मरागस्यमहागुणस्यभर्त्तारमापत्समुपैतिकाचित् ॥
दोषोपसर्गप्रभवाश्चयेतेनोपद्रवास्तंसमभिद्रवन्ति ।
गुणैःसुमुख्यैःसकलैरुपेतोयःपद्मरागंप्रयतोबिभर्त्ति ॥

अर्थः-शत्रुओंके बीचमें रहने और प्रमाद करनेपरभी इस महागुणवाली पद्मरागमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त नहीं होता जितने दोष हैं उनमेंसे कोई भी इसको प्राप्त नहीं होता जो पद्मराग मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोंसे संयुक्त हो जाता है।

अन्यच्च ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातघ्नञ्चरसायनम् ।
कफघ्नंदीपनंवृष्यंभूतघ्नञ्चक्षयार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-माणिक्य-मधुर, स्निग्ध; वातविनाशक, रसायन, कफनाशक, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातपित्तप्रणाशनम् ।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानांरसायनकरंपरम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमें श्रेष्ठ और रसायन है ।

अन्यच्च ।

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातघ्नंचरसायनम् ।
पित्तंव्रणंनाशयतिपूर्वैरितिनिवेदितम् ।

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे है ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकंशुक्तिजंमुक्ताशौक्तिकेयंशशिप्रभम् ।
अम्भःसारमिन्दुरत्नंलक्ष्मीमुक्ताफलंहिमम् ॥

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज, मुक्ता, शौक्तिकेय, शशिप्रभ, अम्भः-सार, इन्दुरत्न, लक्ष्मी, मुक्ताफल, हिम (शुक्तिबीज, हारी, कुवल, सौम्य, तार, तारा, मौतिक, तौतिक, शीतल, नीरज, नक्षत्र, अम्भः-सार, विन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तेयक, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमवल, सुधांशुभ, सुधांशुरत्न, लक्ष, शशिप्रिय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

सं०	मुक्ता ।	तै०	मोत्याछु ।
हिं०	मोती	इं०	पर्ल । Pearl
बं०	मुक्ता ।	लै०	मार्गरिटा । Margraira
म०	मोती ।	फा०	मरवारिद ।
गु०	मोती ।	अ०	लोलो ।
क०	मौक्तिक ।		

मौक्तिकगुणाः ।

मुक्ताकषायास्वाद्वीचबलपुष्टिप्रदायिनी ।
वृष्यानेत्रहितारायक्ष्मघ्नीविषनाशिनी ॥
स्त्रीणांकान्तिरतिकरीधारणाद्ग्रहपापनुत् । (आ०सं०)

अर्थ-मोती-कषेला, स्वादिष्ठ, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी तथा राजयक्ष्मा और विषविनाशक है। इसको धारण करनेसे-स्त्रियोंकी कान्ति और रति बढतीहै तथा ग्रह और पापका नाश होता है।

अन्यच्च।

मौक्तिकंसुमधुरंसुशीतलंदृष्टिरोगशमनंविषापहम्। राजयक्ष्मपरिकोपनाशनंक्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनम्॥ कफपित्तक्षयध्वंसिकासश्वासाग्निमांद्यजित्। पुष्टिदंवृष्यमायुष्यंदाहघ्नंमौक्तिकंमतम्। मुक्तानांहारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी। कान्तिहर्षनेत्रसुखंददातीतिप्रकीर्तितम्॥ (नि. र.)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, दृष्टिरोगको दूर करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणवीर्य्यवालेको बल और पुष्टि देनेवाला है। मोती-कफ, पित्त, क्षय, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और दाहको दूर करेहै, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक। मोतियोंका हार धारण करनेसे-दाह और पित्त दूर होता है, कान्तिजनक, हर्ष बढता है और नेत्रोंमें सुख होता है।

मौक्तिकोत्पत्तिः।

शुक्तिःशंखोगजःक्रोडःफणीमत्स्यश्चदर्दुरः।
वेणुश्चाष्टौसमाख्याताःसुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः॥

अर्थ-पंडितोंने सीप, शंख, हाथी, सूअर, सांप, मछली, मेडक और बांस यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे हैं।

गजमौक्तिक।

यद्दन्तावलकुम्भसम्भवमदःपीतारुणंमंदरुक्।
धात्रीदघ्नतयात्ररत्नमधमंकाम्बोजकुम्भोद्भवम्॥

अर्थ-गजमोती-काम्बोजदेशके बलवान् हाथियोंके गंडस्थलके निकट किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होताहै उसको स्त्री, धारण करती हैं और वह अधम रत्न है।

बराहमौक्तिक।

एकाकीससुखेननिस्पृहतयायःकाननंगाहते

तस्यानादिवराहवंशजनुषःकोलस्यमूर्ध्निस्थितम् ।
कंकोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलंदैवादवाप्नोतितत्
यस्तंधारयतेभवेत्सनिधिभिर्मर्त्योधनाधीशवत् ॥

अर्थ-वराहमोती-आदि वराह अवतारके वंशका जो सूअर इकला सुखसहित निस्पृह वनमें विहार करता है उस सूअरके मस्तकमें मोती होताहै, वह मोती कंकोलकी समान आकृतिवाला, चन्द्रमाकी समान धवल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्तहोताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री धनाधीश होजाते हैं ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताःसन्तिकुलाचलेषुकरकाकान्त्युद्भवावंशजाः ।
कर्कन्धूफलबन्धवोनिदधतेकंठेषुशुद्धांगनाः ॥

अर्थ-वंशमोती-कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले वांस होतेहैं उन बांसोंमें वेरकी समान मोती उत्पन्न होताहै उस मोतीको स्त्रियां कण्ठमें धारण करती हैं ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्गजैःसमःपाटली-
पुष्पाभःसनलक्ष्यतेभुविजनैरस्मिन्कलौपापिभिः ॥

अर्थ-मत्स्यमोती-मछलीके पेटमें होतेहैं यह मोती गजमोतीकी समान आकृतिवाले और पाढलके फूलकी समान रंगवाले होतेहैं और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोंकी दृष्टि नहीं पडतेहैं ।

दर्दुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवंतदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते
विनियतंवर्षासुमुक्ताफलम् ॥ तिग्मांशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृ-
शंसौदामिनीसन्निभं देवानामपि दुर्लभंनमनुजस्यैतस्य
प्राप्तिःपुनः ॥

अर्थ-वर्षाऋतुमें जो मेडक मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नहीं गिरते हैं उन मेडकोंके उदरमें मोती उत्पन्न होतेहैं वह मोती पृथ्वीपर नहीं आते बीचमें देवता ग्रहण करलेते हैं वह मोती सूर्यके तेजसेभी अधिक

और बिजलीकीसमान प्रभावाले होते हैं देवताओंकोभी दुर्लभ हैं और मनुष्यकी तो क्या बात है।

शंखमौक्तिक।

शंखस्याच्युतहारिणोजलनिधौयेवंशजाःकम्बुका-
स्तेष्वंतःकिलमौक्तिकंभवतिवैतच्छुक्रतारानिभम् ॥
कापोताण्डसमंसुवृत्तमसकृच्छ्रीकंसरूपंलघु
स्निग्धंस्पर्शकृतंहितच्चनपुनर्मर्त्यैस्तदासाद्यते ॥

अर्थ-पांचजन्य शंखके वंशके जो शंख समुद्रमें हैं उन शंखोंमें सफेद तथा नक्षत्रकी समान कान्तिवाले और कबूतरके अंडेकी समान गोल मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हलके और लक्ष्मीजनक हैं तथा वह एकबार मनुष्योंको स्पर्श होनेपर फिर हाथ नहीं लगते हैं।

सर्पजमौक्तिक।

शेषस्यान्वयिनांफणासुफणिनांयन्मौक्तिकंजायते वृत्तंनि-
र्मलमुज्ज्वलंशशिरुचिश्यामच्छविश्रीकरम् ॥ कंकोलाकृति
कोपिकोटिसुकृतैःप्राप्नोतिचेन्मानवः सस्याद्वाजिगजाधि-
कोनृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेसद्मनिचेत्सपन्नगम-
णिस्तेयातुधानामराः हर्तुरंध्रमवेक्षतेइतरतःकुर्य्यान्महा-
शांतिकम् ॥

अर्थ-सर्पजमौक्तिक-शेषके वंशमें जो उत्पन्न हुये सर्प उन सर्पोंके फणोंमें उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चंद्रमाकी समान श्याम छबिवाले और कंकोलकी समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी करोड जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्यकेही हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको यह मोती प्राप्त होते हैं उसके गज अश्वादिककी वृद्धि होती है और वह नीचकुलकाभी मनुष्य राजाके समान हो जाता है और उन मोतियोंको घरमें रखनेसे निश्चय राक्षसबाधा दूर होती है तथा महाशान्ति होती है।

लक्षणम्।

श्वेतंस्निग्धमतीवबंधुरतरंस्यात्पारसीकोद्भवम्।
रूक्षंकाञ्चनवर्णसंकरयुतंस्याद्वावरंमौक्तिकम्।

शोणंतूर्मेजसंभवंविदुरतिस्निग्धंतथादोषजम्
चातुर्वर्ण्ययुतंसुलक्षणमितिश्लक्ष्णंकविश्रीकरम् ॥

अर्थ-पारसदेशके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-श्वेत, स्निग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरबके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-रूखा और कुछ सुवर्णकी समान रंगवाला होता है। और अन्य समुद्रोंमें उत्पन्न होनेवाले मोती, लाल, स्निग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते हैं।

शुक्तिमौक्तिक।

षट्स्वेतेष्वपिरुक्मिणीवजगतिख्यातिंगतारुक्मिणी
नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणासिंधौसमुज्जृम्भते ॥
तस्यागर्भभवन्तुकुंकुमनिभंजातीफलाकृत्तिनम्
स्थूलंस्निग्धमतीवनिर्मलतमंभूमौप्रकाशंसदा ॥

अर्थ-जो सीप रूपेकी समान या सोनेकी समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमें उत्पन्न होती है उस सीपमें कुंकुमकी समान प्रभायुक्त जायफलकी समान रूपवाले, स्थूल, स्निग्ध, अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होतेहै।

मौक्तिकपरीक्षा।

यद्विच्छायंमौक्तिकंव्यंगकायंशुक्तिस्पर्शंरक्ततांचापिधत्ते
मत्स्याक्षांकंरूक्षमुत्तानिम्नंनैतद्धार्यंधीमतादोषदायि ॥
नक्षत्राभंवृत्तमत्यन्तमुक्तंस्निग्धंस्थूलंनिर्व्रणंनिर्मलंच
न्यस्तंधत्तेगौरवंयत्तुलायांनिर्मौल्यंतन्मौक्तिकंसिद्धिदायि ॥

अर्थ-जो मोती कान्तिरहित, व्यंगशरीरवाला, सीपीमें लगाहुआ, लाल, मछलीकी आंखोंकी समान चिह्नित, रूखा और ऊंचा नीचा होता है ऐसे दोषदायक मोतीको, बुद्धिमान् पुरुष नहीं धारण करे। जो मोती नक्षत्रकी समान कान्तिवाला, गोल, स्निग्ध, स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमें भारी होताहै ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है।

प्रवालनामानि ।



प्रवालोंगारकमणिर्विद्रुमोंभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नंचरत्नांगोरक्तांगश्चलतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामें	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामें	मूंगा ।
वंगभाषामें	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषायें	पोंवळें ।
गुजरातीभाषामें	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामें	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामें	प्रवालकं, पागडालु ।
इंग्रेजीभाषामें	रेड्कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामें	कोरेलियंरुब्रं । Coralium rubrum
फारसीभाषामें	मिरजान्, वेखमिरजां ।
अरबीभाषामें	एहेमखुसमुद ।

प्रवालगुणाः ।

वीर्य्यवृद्धौतथापुष्टौयस्यैच्छावर्ततेपरा ।
विद्रुमंशोधितंतेनसेवनीयंगुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंकी वीर्य्यको बढानेकी और शरीरको पुष्टि करनेकी

इच्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा) का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है ।

अन्यच्च ।

विद्रुमंसर्वदोषघ्नंदीपनंरुचिपुष्टिदम् ।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत् ॥

अर्थ–मूँगा–सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक, पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

प्रवालंमधुरंसाम्लंकफपित्तार्त्तिदोषऽनुत् । वीर्य्यकान्तिकरं स्त्रीणांधृतेर्मंगलदायकम् ॥क्षयपित्तास्रकासघ्नंदीपनंपाचनं लघु । विषभूतादिशमनंविद्रुमंनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ–मूँगा–मधुर, अम्ल, कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिजनक, स्त्रियोंको धारण करनेसे मंगलदायक, क्षयनाशक, रक्तपित्त-हारक, कासघ्न, दीपन, सारक, पाचक, हलका तथा ज्वर, विष, भूतादि-बाधा, उन्माद, पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है ।

प्रवालमंजरीगुणाः ।

प्रवालमंजरीसार्द्राकामपुष्टिकरीनृणाम् ।
सेवितासततंदेहेवीर्य्यस्तम्भंकरोतिच ॥

अर्थ–मूँगेकी कच्ची बेल–मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है ।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम् ।

बालार्ककिरणारक्तासागरसलिलोद्भवाचजलतापा ।
नत्यजतिनिजांरुचिंनिकषेघृष्टापिसामृताजात्या ॥
पक्वबिंबफलच्छायंवृत्तायतमवक्रकम् । स्निग्धमव्रणकंस्थूलं प्रवालंसप्तधाशुभम् ॥ आररंगंजलाक्रान्तिवक्रंसूक्ष्मंसको-टरम् । रूक्षंकृष्णंलघुश्वेतंप्रवालमशुभंत्यजेत् ॥

अर्थ–समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंकी समान लाल मूँगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसोटीपै घिसनेसेभी अपनी कान्ति और रंगको नहीं

छोडती तथा अमृतकी समान गुणकारी है । पक्की कन्दूरीके फलकी समान लाल, गोल, लम्बे, सरल, स्निग्ध, व्रणरहित और स्थूल इन सात लक्षणोंसे युक्त मूंगे उत्तम होते हैं । पीतिलकी समान रंगवाले, पानीकी समान रंगवाले, वक्र (टेढे) सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, रूक्ष, कृष्ण, हलके और श्वेत ऐसे मूंगे त्याज्य हैं ।

मरकतनामानि ।

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भंहरिन्मणिः ।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त; राजनील, गरुडाङ्कित, रौहिणेय, सौपर्ण, गरुडोद्गीर्ण, बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वापबोल, गारुड, गरुडोत्तीर्ण, वाप्रबोल)

सं०	मरकत ।	तै०	नीलम् ।
हिं०	पन्ना ।	इं०	इमरील्ड । Emerold
बं०	पान्ना ।	लै०	स्मेरेग्डस् । Smaragdus
म०	पाचूरत्न ।	फा०	जुमुरंईप ।
गु०	लीलुंपानुं ।	अ०	जमईद ।
क०	पाचि पच्चे ।		

मरकतगुणाः ।

पाचिकाशीतलारुच्यारसकालेमधुःस्मृता ।
पुष्टिकृद्विषहावृष्याभूतबाधाम्लपित्तहा ॥

अर्थ-पन्ना-शीतल, रुचिकारक, मधुररसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा भूतबाधा और अम्लपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

ज्वरच्छर्दिविषश्वासंसन्तापाग्नेश्रमांद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नंतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पन्ना-ज्वर, वमन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूर करेहै और ओजको बढानेवाला है ।

मरकतमणिपरीक्षा ।

स्वच्छंगुरुस्निग्धगात्रंचमार्दवसमेतमव्यंगंबहुरंगम् । शृंगारीमरकतंबिभृयात् । शर्करिलंरूक्षंमलिनम् । लघुहीनकान्तिकल्मषंत्रासयुतंविकृतांगंमरकतममरोपिनोपयुंजीत ।

अर्थ-स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु, अव्यंग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना शृङ्गारी मनुष्योंको धारण करना चाहिये । खरखरा, रूखा, मलिन, हलका कान्तिहीन, कल्मषयुक्त, त्रासयुक्त और विकृतांग धारण नहीं करे ।

अपिच ।

हारिद्वर्णंगुरुस्निग्धंस्फुटरश्मिरयंशुभम् । भासुरंभासनंताक्ष्यंगात्रसमंसुसंमतम् ॥ कपिलंकर्कशंनीलंपाण्डुकृष्णंच लाघवम् ॥ चिपटंविकृतंकृष्णंरूक्षंताक्ष्यंनशस्यते ।(रत्नाकर)

अर्थ-हरेरंगवाला-भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्तियुक्त और गरुडकी समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है । कपिलवर्ण, खरखरा, नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना उत्तम नहीं होता ।

पुष्परागनामानि ।

पुष्परागोजीवरत्नंपीतस्फटिकइत्यपि ।

अर्थ-पुष्पराग, जीवरत्न, पीतस्फटिक, (पुष्पराज, मंजुमणि, वाचस्पतिवल्लभ, पीत, पीतरक्त, पीताश्मा, गुरुरत्न, पीतमणि)

सं०	पुष्पराग ।	क०	पुष्पराग ।
हिं०	पुखराज ।	तै०	पुष्परागम् ।
बं०	पुष्पराग ।	इं०	टोपाज । Topag
म०	पुष्कराज ।	लै०	टोपाजीयो । Topagio
गु०	पुखराज, पीळु रत्न ।		

पुष्परागगुणाः ।

पुष्परागंविषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित् ।
दाहकुष्टार्शशमनंदीपनंलघुपाचनम् ॥

अर्थ-पुखराज-विष, वमन, कफ, वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और बवासीरको दूर करैहै, दीपन, हलका और पाचक है ।

अन्यच्च ।

पुष्परागोम्लःशीतःस्याद्वातलोग्निश्चदीपनः ।
वृष्योवयःस्थापकश्चप्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥
वातनाशकरः प्रोक्तोमुनिभिःपारदर्शिभिः ।

अर्थ-पुष्पराज-अम्ल, शीतल, वादी, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, मज्ञाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है ।

पुष्परागलक्षणम् ।

पुष्परागंगुरुस्निग्धंस्वच्छंस्थूलंसमंमृदु ।
कर्णिकारप्रसूनाभंमसृणंशुभमष्टधा ॥

अर्थ-पुखराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलकी समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना ।

अन्यच्च ।

कृष्णंविद्धाङ्कितंव्यंगंधवलंमलिनंलघु । विच्छायंशर्करा-भागंपुष्परागंसदोषलम् ॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंग-शुद्धं स्निग्धंचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलम् । यत्पुष्परागम-मलंकलयेदमुष्य पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान् ॥ अयंखलुपुष्परागोजात्यस्तथाचायंपरीक्षकैरुक्तः ।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, विद्ध, अंकित, व्यंग (झाईयुक्त) सफेद, मलिन, हलका, बेरंग और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होताहै । और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति, शौर्य, सुख, आयु अर्थको देवेंहै ।

नीलमणिनामानि ।

नीलस्तुशौरिरत्नंस्यान्नीलाश्मानीलरत्नकः ।
नीलोपलस्तृणग्राहीमहानीलःसुनीलकः ॥

संस्कृतभाषामें	नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मसार)
हिन्दीभाषामें	नीलमणि ।
बंगभाषामें	नीलमणि ।
मराठीभाषामें	नीळमणि ।
गुजरातीभाषामें	नीलम्, काळुंनंग ।
कर्णाटकीभाषामें	नील ।

तैलिङ्गीभाषामें नीलं ।
इंग्रेजीभाषामें सेफायर । Saftire
लैटिन्भाषामें सेफायर्स । Saffirus

नीलगुणाः ।

श्वासकासहरंवृष्यंत्रिदोषघ्नंसुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नंनीलमीरितम् ॥

अर्थ-नीलम्-श्वास, खांसी, त्रिदोष, विषमज्वर, ववासीर और पापनाशक है, वीर्य्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है ।

अन्यच्च ।

नीलःसतिक्तकोष्णश्चकफपित्तानिलापहः ।
योदधातिशरीरेचसौरिमर्दनदोभवेत् ॥

अर्थ-नीलम्-कडवा, गरम, कफपित्तनाशक और इसको शरीरमें धारण करनेसे शनिग्रहकी वाधा दूर होतीहै ।

नीलस्य वर्णभेदाः ।

सितशोणपीतकृष्णच्छायानीलाःक्रमादिमेकथिताः ।
विप्रादिवर्णसिद्धचैधारणमस्यापिवज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ-सफेद, लाल, पीला और काला इन भेदोंसे नीलम् चार प्रकारका है तहां सफेद रंगका ब्राह्मण, लालरंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका शूद्र होताहै । नीलम् अंगमें धारण करनेसे हीरेकी समान फल देताहै ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिकोगोमेदोऽगस्तिसत्त्वंतमोमणिः ।

अर्थ-पिङ्गस्फटिक, गोमेद, अगस्तिसत्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरत्नक, वाहुरत्न, स्वर्भानव)

सं० गोमेदक ।
हिं० गोमेदमणि ।
वं० गोमेद ।
म० गोमेदमणि ।
गु० गोमूत्र जेवुं पीलारंगनुं ।
क० गोमेद ।
तै० गोमेदकं ।
इं० ओनिक्स । Onyx
लै० ओनिक्स । Onyx

गोमेदकगुणाः ।

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत् ।
दीपनःपाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातके कोपको शान्ति करनेवाली, दीपन, पाचक और इसको शरीरमें धारण करनेसे पापका नाश होताहै ।

अन्यच्च ।

गोमेदंकफपित्तघ्नंक्षयंपाण्डुक्षयंकरम् ।
दीपनंपाचनंरुच्यंत्वच्यंबुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगहारक, दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको हितकारी और बुद्धिप्रबोधक है ।

अपिच ।

गोमेदोम्लःपाचकश्चचक्षुष्योष्णोग्निदीपनः ।
लघुर्वातस्यकासस्यनाशकारीप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको हितकारी, गरम, अग्निप्रदीपक, हलकी तथा वात और खाँसीको दूर करे है ।

गोमेदपरीक्षा ।

हिमालयेवासिन्धौवागोमेदमणिसम्भवः। स्वच्छकान्तिर्गुरुःस्निग्धोवर्णाढचोदीप्तिमानपि॥वलक्षःपिञ्जरोधन्योगोमेदइतिकीर्त्तितः।चतुर्धाजातिभेदस्तुगोमेदोऽपिप्रशस्यते । ब्राह्मणःशुक्लवर्णःस्यात्क्षत्रियोरक्तउच्यते । आपीतोवैश्यजातिस्तुशूद्रस्तुनीलउच्यते ॥ छायाचतुर्विधाश्वेतारक्तपीताऽसितातथा । गुरुप्रवाढचःसितवर्णरूपःस्निग्धोमृदुर्वातिमहापुराणः ॥ स्वच्छस्तुगोमेदमणिर्धृतोयंकरोतिलक्ष्मीं धनधान्यवृद्धिम् । लघुर्विरूपोऽतिखरोन्यमानःस्नेहोपलिप्तोमलिनःखरोऽपि । करोतिगोमेदमणिर्विनाशंसम्पत्तिभोगावलवीर्य्यराशेः । येदोषाहीरकेज्ञेयास्तेगोमेदमणावपि ॥ परीक्षावह्नितःकार्य्याशाणेवाबहुकोविदैः। स्फटिकेनैवकुर्व-

न्तिगोमेदप्रतिरूपिणम् ॥ शुद्धस्यगोमेदमणेस्तुमूल्यंसुवर्णतोद्वैगुणमाहुरेके। अन्येतथाविद्रुमतुल्यमूल्यंतथापरेचामरतुल्यमाहुः ॥ चतुर्विधानामेषान्तुधारणंपरिसम्मतम् ।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ-गोमेदमणि-हिमालय और सिन्धुमें होती है। स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहां ब्राह्मण सफेद रंगकी, क्षत्रिय लाल रंगकी, वैश्य पीले रंगकी और शूद्र नीले रंगकी होती है। इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली। जो भारी, सफेद-रंगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है। जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति,भोग,बल और वीर्य्यका नाश होताहै। जो दोष हीरेमें होतेहैं वह दोष गोमेद मणिमेंभी हैं। इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते हैं। शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेकी बराबर कहते हैं। कोई अमररत्नकी समान कहते हैं। इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है।

वैदूर्यनामानि ।

वैदूर्य्यंराहूकंकेतुरत्नंमेघखराङ्कुरम् ।

अर्थ-वैदूर्य्य, राहूक, केतुरत्न, मेघखरांकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दांकुर, विदूररत्न विदूरज, केतुग्रहवल्लभ)।

संस्कृतभाषामें	वैदूर्य्य ।
हिन्दीभाषामें	वैदूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।
वंगभाषामें	वैदूर्य्य ।
मराठीभाषामें	वैदूर्य्यरत्न ।
गुजरातीभाषामें	माजरानी आँख जेवुं लसणियो ।
कर्णाटकीभाषामें	वैदूर्य्य ।

तैलङ्गीभाषामें वैडुर्य्य ।
इंग्रेजीभाषामें केट्सआइ । Catseye

अस्य गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्चकफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमनंभूषितञ्चशुभावहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–वैडूर्य्य–गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ,वात और गुलमादि दोषोंको दूर करे है। एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलको देता है ।

अन्यच्च ।

वैडूर्य्यंरक्तपित्तघ्नंप्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नंदीपनंगुल्मनाशनम् ॥

अर्थ–वैडूर्य्यमणि–रक्तपित्तनाशक, प्रज्ञा, आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करे है ।

अपिच्च ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लंस्यादग्निदंचरसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरंमतम् ॥
अन्येगुणाहीरकवद्विज्ञेयाविबुधैःकिल ।

अर्थ–वैडूर्य्यमणि–गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रसायन तथा शूल, गुल्म, उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानने ।

उत्तमवैडूर्य्यलक्षणम् ।

वैडूर्य्यंश्यामशुभ्राभंसमस्वच्छंगुरुस्फुटम् ।
भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितंशुभमीरितम् ॥

अर्थ–जो वैडूर्य्यरत्न (लहसुनिया)–श्याम और शुभ्र तथा विमलकांतिवाला हो, समगोल, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे जिसमेंसे धवल, और चन्द्रमाकी समान श्याम कांति हो ऐसा वैडूर्य्य उत्तम होता है ।

इति रत्नानि ।

अथोपरत्नानि ।

वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तञ्चैवविक्रान्तंनीलवज्रंकुवज्रकम् ।
गोनासःक्षुद्रकुलिशंजीर्णवज्रञ्चगोनसम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस।

वैक्रान्तगुणाः।

वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नःषड्रसोदेहदार्ढ्यकृत्।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, षड्रसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खांसी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है।

अन्यच्च।

वैक्रान्तोवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः।
विषघ्नोरसराजश्चज्वरकुष्टक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान हैं, देहको दृढ करनेवाली, पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करे है।

सूर्य्यकान्तनामानि।

दीप्तोपलःसूर्य्यकान्तोज्वलनाश्माग्निगर्भकः।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्य्याश्मा, दहनोपम, सूर्य्यमणि)।

संस्कृतभाषामें	सूर्य्यकान्त।
हिन्दीभाषामें	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त।
वंगभाषामें	आतसपाथर।
मराठीभाषामें	सूर्य्यकान्तमणि।
गुजरातीभाषामें	अगनचशमांनो काच।
इंग्रेजीभाषामें	मेग्निफाइंग ग्लास। Magnifying glass

सूर्य्यकान्तगुणाः।

सूर्य्यकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः।
वातश्लेष्महरोमेध्यःपूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ रा०नि)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होताहै।

अन्यच्च।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नोमेध्योष्णश्चरसायनः।

कफवातहरःप्रोक्तःपूर्वैरायुर्विदैर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-सूर्य्यकान्तमणि-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रसायन, कफ और वातको दूर करेहै ।

शुद्धःस्निग्धोनिर्व्रणोनिस्तुषस्तुयोनिर्घृष्टोव्योमनैर्मल्यमेति ।
यःसूर्य्यांशुस्पर्शनिर्व्यूतवह्निर्जात्यासोयंचक्षतेसूर्य्यकान्तः ॥

अर्थ-जो चिकना, व्रणरहित, तुषरहित, घिसनेसे आकाशकी समान निर्मल होजाय और धूपमें रखनेसे जिसमें अग्नि बलउठे ऐसा सूर्य्यकान्त (आतिशीशीशा) उत्तम होताहै ।

चन्द्रकांतनामानि ।

चन्द्रकान्तःसोममणिःसिताश्माप्रस्तरोपलः ।

अर्थ-चन्द्रकान्त, सोममणि, सिताश्मा, प्रस्तरोपल (चान्द्र, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, संप्लवोपल, शीताश्मा, चन्द्रिकाद्राव शशिकान्त) ।

संस्कृतभाषामें	चन्द्रकान्त ।
हिंदीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
वंगभाषामें	चन्द्रकान्त ।
मराठीभाषामें	चन्द्रकान्तमणि ।
कर्णाटकीभाषामें	चन्द्रकान्तः ।
तैलिंगीभाषामें	चन्द्रकान्तं ।

चन्द्रकान्तमणिगुणा ।

चन्द्रकान्तमणिःशीतःस्निग्धःस्वच्छःशिवप्रियः ।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीविनाशनोनिरन्तरम् ॥

अर्थ-चन्द्रकान्तमणि-शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय तथा रुधिरविकार, दाह, ग्रह और अलक्ष्मीका नाशकरेहै ।

चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवंरूक्षंशीतंदाहविनाशनम् ।

अर्थ-चंद्रकान्तमणिका जल-रूखा, शीतल और दाहको दूर करेहै ।

चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् ।

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतंस्रवतिक्षणात् ।

चन्द्रकान्तंतदाख्यातंदुर्लभंतत्कलौयुगे ॥ (यु०क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे जिसमें अमृत (जल) टपकताहै उसीको चन्द्रकान्तमणि कहतेहैं यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभहै ।

स्फटिकनामानि ।

शैवःशूकःश्वेतरत्नंस्फटिकोनिस्तुषोपलम् ।

अर्थ-शैव, शूक, श्वेतरत्न, स्फटिक, निस्तुषोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक, स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ठ, धौतशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुषरत्न, शिवप्रिय) ।

सं०	स्फटिक ।	गु०	फाटकमणि ।
हिं०	स्फटिक, फटिकमणि ।	क०	स्फटिक ।
बं०	फटिक् ।	तै०	स्फटिक ।
म०	स्फटीक ।	इं०	क्रिष्टल ।

स्फटिकगुणाः ।

स्फटिकःसमवीर्य्यःस्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत् ।
तस्याक्षमालाजपतोधत्तेकोटिगुणंफलम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्य्य तथा पित्त, दाहकी वेदना और शोषको दूर करे है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है ।

पेरोजनामानि ।

पेरोजंहरिताश्माचभस्माङ्गंहरितंद्विधा ।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें	पेरोज ।
हिन्दीभाषामें	फिरोजा ।
वंगभाषामें	उपरत्नविशेप ।
मराठीभाषामें	पेरोज ।
गुजरातीभाषामें	पीरोजो ।
कर्णाटकीभाषामें	पेरोज ।
इंग्रेजीभाषामें	टरकोइझ । Tikois
लैटिन्भाषामें	टरचेसीयस टरचीना । Terchesius Turchina

फारसीभाषामें	फिरोजा ।
अरबीभाषामें	फिरोजंज ।

अस्य गुणाः ।

पेरोजंस्तुकषायंस्यान्मधुरंदीपनंपरम् ।
स्थावरंजङ्गमञ्चैवसंयोगाच्चतथाविषम् ॥
तत्सर्वंनाशयेच्छीघ्रंशूलंभूतादिदोषजम् ।

अर्थ-फिरोजा-कषेला, मधुर, दीपन और किसीके संयोगसे स्थावर तथा जंगम विषको दूर करे है और भूतादि दोषोंसे उत्पन्न हुये शूलका नाश करे है ।

काचनामानि ।

काचःकृत्रिमरत्नश्चपिंगाणोमुकुरोपिच ।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिंगाण, मुकुर ।

संस्कृतभाषामें	काच ।	इंग्रेजीभाषामें	ग्लास । Glass
हिन्दीभाषामें	काँच. कश्च ।	लैटिन्भाषामें	ग्लेसम् । Glesum
वंगभाषामें	काच ।	फारसीभाषामें	आबगीनां ।
मराठीभाषामें	कांच ।	अरबीभाषामें	जुजाजं ।
गुजरातीभाषामें	काच ।		

अस्या गुणाः ।

काचातुसारकालघ्वीव्रणनेत्रहितावहा ।
लेखनीशूलहृत्प्रोक्तावैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-काँच-सारक, हलका, व्रण और नेत्रोंको हितकारी, लेखन और शूलनाशक है ।

दुग्धपाषाणनामानि ।

दुग्धपाषाणिकाक्षीरीमाधवीमेदसन्निभा ।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, क्षीरी, माधवी, मेदसन्निभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणक, दुग्धाश्मा, गोमेदसन्निभ, वज्राभ, दीप्तिक, दुग्धी, क्षीरक्षव, सौध)

संस्कृतभाषामें	दुग्धपाषाण ।
हिंदीभाषामें	शिरगोला ।

वंगभाषामें	शिरगोला ।
मराठीभाषामें	शिरगोळा ।
गुजरातीभाषामें	दुधियो पाणो ।
कर्णाटकीभाषामें	रंगवालियहरेल्ल ।

अस्यगुणा ।

दुग्धपाषाणकोरुच्यईषदुष्णोज्वरापहः ।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नःकासाध्मानविनाशनः ॥

अर्थ–दुग्धपाषाण–रुचिकारक, ईषदुष्ण, ज्वरनाशक तथा पित्त, हृदयरोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्नवर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ विषवर्गः ।

विषनामानि ।

काकोलोगरलःक्ष्वेडोविषंस्याद्दारदोपिच ।
सौराष्ट्रिकःशौक्लकेयोब्रह्मपुत्रःप्रदीपनः ॥

अर्थ–काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकूल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हालाहल, हलाहल, शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जंगुल, जांगुल, वत्सनाभ, जीवनाघात, किषल, प्राणहर)

संस्कृतभाषामें	वत्सनाभ, अमृत ।
हिन्दीभाषामें	वचनाग, मीठाविष ।
वंगभाषामें	काटविष, अमृतविष ।
मराठीभाषामें	वचनाग ।
गुजरातीभाषामें	छिंगडियो, वछनाग ।
कर्णाटकीभाषामें	वशनवी ।
तैलिंगीभाषामें	नाभी ।
इंग्रजीभाषामें	एकोनाईट । AConite
लैटिन्भाषामें	एकोनाइटफेरोक्स । Aconitumferox
फारसीभाषामें	जहर ।
अरबीभाषामें	विष ।

वत्सनाभविषगुणाः ।

वत्सानाभोतिमधुरःसोष्णोवातकफापहः ।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-(वत्सनाभ मीठा)-अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करेहै पित्त और सन्तापको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ॥
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥

अर्थ-विष-प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी, आग्नेय, वातकफनाशक, योगवाही और मदकारक है ।

अपिच ।

रूक्षमुष्णंतथातीक्ष्णंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच । विकाशिविशदञ्चैवलघ्वपाकिचतेदश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तंसशोणितम् । तैक्ष्ण्यान्मतिंमोहयतिमर्म्मबन्धान्भिनत्तिच ॥ शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच । आशुत्वादाशुवत्प्रोक्तंव्यवायात्प्रकृतिंहरेत् । विकाशित्वाद्दीपयतिदोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यतेवैशद्याद्दुश्चिकित्स्यश्चलाघवात् ॥ दुर्ज्जरंचाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयतेचिरम् ।

अर्थ-रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशुव्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमें रहते हैं । तहाँ रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होतीहै । उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते हैं । तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनको छिन्न करताहै । सूक्ष्मगुणसे सर्व शरीरके अवयवोंमें हठसे प्रवेश करके क्रियाओंका प्रकाश करताहै । आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कार्योंको प्रकाशित करता है । व्यवायिगुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है । विकाशिगुणसे शारीरक वातादि दोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको फैलाताहै । विशदगुणके द्वारा अत्यन्त दस्तोंको लाताहै; लघुगुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा तज्जन्य बहुत कालपर्यन्त क्लेश होताहै ।

अन्यच्च ।

विषंरसायनंबल्यंवातश्लेष्मविकारनुत् । कटुतिक्तंकषायञ्च मदकारिसुखप्रदम् ॥ व्यवायिचशिरोद्राहिकुष्ठवातास्रनाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥ गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसिनाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ–विधिसेवित विष–रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमांद्य, श्वास, खाँसी प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कषेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषंव्रणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच । आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ–विष–व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते हैं ।

विषस्य प्रकारभेदाः ।

वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः । सौराष्ट्रिकःशृङ्गकश्चकालकूटस्तथैवच ॥ हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ।

अर्थ–वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र इन भेदोंसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः ॥

अर्थ–संभालुके पत्तोंकी समान बछडेकी नाभिकी आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ।

अर्थ–हलदीकी समान जिसका मूल हो उसको हारिद्र विष जानना ।

३ अथ सक्तुकस्य स्वरूपम् ।

यद्ग्रन्थिःसक्तुकेनैवपूर्णमध्यःससक्तुकः ।

अर्थ-जिसकी गांठ सत्तूकी सदृश बीचमेंसे भरी हुई हो उसको सक्तुक विष जानना ।

४ अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ।

वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः ।
महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः ॥

अर्थ-जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीप्तिमान् और अग्निकी समान प्रभा-वाला उसको महादाह करनेवाला प्रदीपन विष जानना ।

५ अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ।

सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यते ।

अर्थ-जो सोरठ देशमें उत्पन्न होता है उसको सौराष्ट्रिक विष कहते हैं ।

६ अथ शृङ्गिकस्य स्वरूपम् ।

यस्मिन्गोशृङ्गकेबद्धेदुग्धंभवतिलोहितम् ।
सशृङ्गिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥

अर्थ-जिसको गायके सींगसे बांधनेसे गायका दूध लाल उतरने लगे उसको वैद्योंने शृङ्गिक (सिंगियाविष) कहा है ।

७ अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ।

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिराज्जातस्त-रुरश्वत्थसन्निभः ॥ निर्य्यासःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरि-कीर्त्तितः । सोहिच्छत्रेशृङ्गबेरेकोङ्कणेमलयेभवेत् ॥

अर्थ-देव असुरोंके संग्राममें देवोंने जब पृथुमालि दैत्यको मारा तब उस दैत्यके रुधिरसे पीपलकी समान वृक्ष उत्पन्न हुआ इस वृक्षके गोंदको मुनि कालकूट विष कहते हैं यह अहिच्छत्र, शृङ्गबेर, कोंकण और मलवारमें उत्पन्न होता है ।

८ अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ।

गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसायस्यद-ह्यन्तेसमीपस्थाद्रुमादयः ॥ असौहालाहलोज्ञेयःकिष्कि-न्धायांहिमालये । दाक्षिणाब्धितटेदेशेकोङ्कणेपिचजायते ॥

अर्थ-दाखोंके गुच्छोंके समान फल और तालके वृक्षोंकी समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते हैं उसको हालाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणदेशमें उत्पन्न होता है।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम्।

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारकः।
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले॥

अर्थ-जिसका रंग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र विष जानना यह मलयाचल पर्वतमें उत्पन्न होता है।

विषस्य वर्णभेदाः।

ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितप्रभः। वैश्यःपीतोऽसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः। रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये। वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायच॥ (भा.प्र.)

अर्थ-पाण्डु रंगका विष ब्राह्मण, लाल रंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है। रसायनमें ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष, कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये।

अन्यच्च।

स्थावरंजंगमञ्चैवद्विविधंविषमुच्यते।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तुद्वितीयंषोडशाश्रयम्॥

अर्थ-स्थावर और जंगम इन भेदोंसे विष दो प्रकारका है तहां स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकार जानना।

स्थावरविषस्यदशप्रकारा यथा।

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वक्क्षीरंसारमेवच।
निर्य्यासोधातवःकन्दःस्थावरस्याश्रयादश॥

अर्थ-स्थावरविष-वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोंमें रहता है। अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते हैं।

स्थावरविषस्य भक्षणदोषाः ।

स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदन्तहर्षंगलग्रहम् ।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्चजनयेद्विषम् ॥

अर्थ-स्थावरविष-ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलवेदना, मुखमें झागोंका आना, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छाको उत्पन्न करता है ।

जङ्गमविषस्य स्वरूपम् ।

सर्प्पाःकीटोन्दुरालूतावृश्चिकागलगोधिकाः । जलौकामत्स्यमण्डूकाःशलभाःसकृकण्टकाः ॥ श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः ।दंष्ट्रिणोऽमीविषंतेषांदंष्ट्रोत्थंजंगमंमतम् ॥

अर्थ-साँप, कीट, उन्दुर (मूसा), लूता (मकडी), वृश्चिक (बिच्छू) गलगोधिका, जलौका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेडक), शलभ (पतंग), कृकलास, कुक्कुर, सिंह, व्याघ्र, शृगाल, तेन्दुआ और नौला इन सब जन्तुओंके दाँतोंके विषको जंगम विष कहते हैं ।

जंगमविषस्य षोडशप्रकाराः ।

दृष्टिर्निश्वासोदंष्ट्राश्चनखमूत्रमलानिच ।
शुक्रंलालामुखंस्पर्शसदंशंस्रावमार्द्दितम् ॥
गुदास्थिपित्तशूकानिदशषड्जंगमाश्रयाः ।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषैली जन्तुओंकी दृष्टि, निश्वास, दन्त, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लार, मुख, स्पर्श, दाँत, स्राव, गुददेश, अस्थि, पित्त और शूक इन १६ स्थानोंमें होताहै ।

जंगमविषस्य भक्षणदोषाः ।

निद्रांतन्द्रांक्लमंदाहंसपाकंलोमहर्षणम् ।
शोकश्चैवातिसारश्चजनयेज्जंगमंविषम् ॥

अर्थ-जंगमविष-निद्रा, तन्द्रा, क्लान्ति, दाह, पाक, लोमहर्षण, शोक और अतिसारको उत्पन्न करता है ।

शोधितविषगुणाः ।

येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् ।
तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषमें हैं वे दोष शोधितविषमें नहीं हैं इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमें लेना चाहिये ।

अथ विषसेवनप्रकारः ।

नानारसौषधैर्येतुदुष्टायांतीहनोगदाः । तेनश्यन्तिविषेदत्ते शीघ्रंवातकफोद्भवाः॥शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुवर्षासुचप्रदापयेत् । चातुर्मास्येहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि । दातव्यंसर्वरोगेषु घृताशिनिहिताशिनि ॥ क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यंरसायनरते नरः । ब्रह्मचर्य्यविधानंहिविषकल्पेसमाचरेत् ॥ पथ्येस्व-स्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसंशयः।आचार्येणतुभोक्तव्यंशि-ष्यप्रत्ययकारकम् ॥ विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभ-वेत् । सर्वरोगप्रशमनंदृष्टिपुष्टिकरंविषम् ॥

अर्थ-जो वातकफोद्भवरोग नानाप्रकारकी औषधियोंको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजातेहैं सर्वऋतुओंमें विष-मात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये । चार महीनेमें विष, कुष्ठ और लूतादि रोगोंको दूर करताहै और यह सर्वरोगोंमें देना चाहिये । रसायनमें रत ऐसे मनुष्योंको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और ब्रह्मचर्य्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इसप्रकार करनेसे रोगोंका नाश होताहै । शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विष वैद्यको भक्षण करना चाहिये । शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोंमें देना हितकारक है । विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरको पुष्टि करनेवाला है ।

विषमात्राप्रमाणम् ।

एकाष्टकंभवेद्यावदभ्यस्तंतिलमात्रया ।
सर्वरोगहरंनॄणांजायतेशोधितंविषम् ॥

अर्थ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर एक तिल बढावे इस प्रकार करनेसे सर्वप्रकारकी व्याधियोंका नाश होताहै ।

अन्यच्च ।

प्रथमेसार्षपीमात्राद्वितीयेसार्षपद्वयम्।तृतीयेचचतुर्थेचपंच-मेदिवसेतथा ॥ षष्ठेचसप्तमेचैवक्रमवृद्ध्याविवर्द्धयेत् । सप्त-

सर्षपमात्रेणप्रथमंसप्तकंनयेत् ॥ एवंमात्राविषंदेयंतृतीयेस-
प्तकेक्रमात् । वृद्ध्याहन्यात्प्रदातव्यंचतुर्थेसप्तकेतथा ॥ एवं
सप्तसमायातेपरांमात्रांभिषग्वरैः । स्थिरीकुर्य्याद्यथेच्छन्तु
ततस्त्यागन्तुकारयेत् । सेवनक्रमहान्यातुविषकल्पस्तुई-
रितः । एवंमात्रासेवनंस्याद्गुञ्जामात्रंतुकुष्ठवान् ॥ एवमेवा-
ष्टपर्यन्तंपरामात्राधिकामता । विधिनामात्रयाकालेभवे-
त्पथ्याशिनांनृणाम् ॥

अर्थ-विष-पहिले दिन एक सरसोंकी बराबर, दूसरे दिन दो सरसोंकी समान, तीसरे दिन तीन सरसोंकी समान अर्थात् सातदिनपर्य्यन्त एक २ सरसों रोज रोज बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमेंभी सात सरसों प्रमाण देतारहै, तीसरे सप्ताहमें फिर क्रमसे एक २ सरसों अधिक वढादे इसप्रकार तीसरे सप्ताहमें क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये । चौथे सप्ताहमें क्रमसे वृद्धि कर देनीचाहिये । इसप्रकार सात सप्ताह बीतनेपर श्रेष्ठ वैद्योंने विषकी परम मात्रा कहीहै यथेच्छ स्थिरकरके फिर इसका त्याग करदे क्रमसे कमती करे । यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधिहै । इसप्रकार कुष्ठवाला एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्य्यन्त इसकी परम मात्राहै । विधिपूर्वक मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहै ।

विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ।

घृतंक्षीरंसितांक्षौद्रंगोधूमांस्तण्डुलांस्तथा । मरीचंसैन्धवं
द्राक्षांमधुरंपानकंहिमम् ॥ ब्रह्मचर्य्यंहिमंदेशंहिमंकालंहिमं
जलम् । विषस्यसेवकोमर्त्योभजेदतिविचक्षणः ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, गेहूं, चावल, कालीमिरच, सैंधानमक, दाख, मधुर और शीतल, पानक, ब्रह्मचर्य्य, शीतलदेश, शीतकाल और शीतल जल सेवन करना चाहिये ।

मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा ।

मात्राधिकंयदामर्त्यःप्रमादाद्भक्षयेद्विषम् । अष्टौवेगास्तदा
तेनजायंतेतस्यदेहिनः ॥ रोमाञ्चःप्रथमेवेगेद्वितीयेवेपथुर्भ-
वेत् । वेगेतृतीयेदाहःस्याच्चतुर्थेपतनंभवेत् ॥ फेनस्तुपंचमे

वेगेषष्ठेवैकल्यमेवच । जडतासप्तमेवेगेमरणंचाष्टमेभवेत् ॥ विषवेगानितिज्ञात्वामंत्रतंत्रैर्विनाशयेत् ।यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोतिहिमानवः ॥

अर्थ-जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रासे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहैं तहां प्रथम वेगमें रोमाञ्च और दूसरेमें कम्प, तीसरे वेगमें दाह चौथे, वेगमें शरीरका गिरना, पांचवें वेगमें मुखमें झागोंका आजाना, छठे वेगमे विकलता, सातवें वेगमे जडता और आठवें वेगमें मरण होताहै । इसप्रकार विषके वेगोंको जानकर जवतक आठवाँ वेग न आवे तवतक मंत्र और तंत्रोंसे नाशकरे ।

विषको उतारना ।

अतिमात्रंयदाभुक्तंवमनंतस्यकारयेत् । दद्यात्तावदजादुग्धं यावद्वान्तिर्नजायते॥अजादुग्धंयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहिनः । विषवेगंततोजीर्णंजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

अर्थ-जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जवतक वमन न हो तवतक वकरीका दूध पिलादे जिस समय वकरीका दूध कोठेमें स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा ।

अन्यच्च ।

विषंहन्याद्रसःपीतोरजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटंकणंवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

अर्थ-हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिम्बकवारिणा ।
विषवेगंनिहन्त्येववृष्टिर्दावानलंयथा ॥

अर्थ-जियापोता वृक्षकी मज्जाको नींबूके रसमें उवालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिसे दावानलका नाशहोता है ।

अतिमात्रंयदाभुक्तंतदाज्यंटंकणंपिवेत् ।

विषंसवेगतोनाशमाशुप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥

अर्थ-जिस समय जो कोई मनुष्य मात्रासे अधिक विषको भक्षण करे उस मनुष्यको उसी समय सुहागा और घी मिलाकर पिलानेसे वर्त्तमान विषके वेगका शीघ्रही नाश हो जायगा ।

आखुपाषाणनामानि ।

शतमल्लेतुमल्लःस्याद्गौरीपाषाणकस्तथा ।
आखुपाषाणकश्चैवलोहशंकरकारकः ॥

अर्थ-शतमल्ल, मल्ल, गौरीपाषाण, आखुपाषाण, लोहशंकरकारक ।

संस्कृतभाषामें	आखुपाषाण ।
हिन्दीभाषामें	शोमलखार, शंखिया ।
मराठीभाषामें	सोमल, शंखिया ।
गुजरातीभाषामें	शोमल, शोमलखार, शंखियो ।
इंग्रेजीभाषामें	ओक्साइड ऑफ आर्सेनिक Oxide of Arsenic
लैटिन्भाषामें	ओक्सेडं आर्सेनीकम् । Oxidum Arsenicum
फारसीभाषामें	मिर्गवमूष ।
अरबीभाषामें	सुंबुल (खा) र ।

अस्य गुणाः ।

खनिजंविषमाख्यातंदाहवांतिविरेककृत् ।
मात्राधिकंयदाखादेत्तदामृत्युमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-खनिजविष-दाह, वमन और विरेचनको करनेवाला है मात्रासे अधिक खानेसे मृत्युको देवे है ।

आखुपाषाणकःस्निग्धःपारदस्यनियामकः । लोहभेदकरश्चैववीर्य्यकृत्कांतिवर्द्धनः ॥ त्रिदोषसर्वव्याधीनांनाशकः परिकीर्त्तितः।अशुद्धःसतुविज्ञेयःसप्तधातुविनाशकृत् ॥दाहंचित्तभ्रमंचैवलालास्रावंतथामृतम् । अनेकवेदनाश्चैवबहुव्याधिंतृषांतथा ॥ करोत्यतोमूर्खहस्तेनदातव्यःकदाचन। तत्समीपेनैववाच्यःप्राणघातकरोह्यसौ ॥

अर्थ-शंखिया-स्निग्ध, पारेको बांधनेवाला, लोहभेदक, वीर्य्यवर्द्धक,

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है । अशुद्धशंखिया—सप्तधातुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृति, अनेक प्रकारकी पीडा, बहुव्याधि और तृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमें कभीभी नहीं देना और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योंकि यह प्राणनाशक है ।

अथ उपविषनामानि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंतथैवकलहारिका ।
करवीरोऽथधुस्तूरःपञ्चोपविषाःस्मृताः॥ (अमरकोश)

अर्थ—आकका दूध, सेहुंडका दूध, कलिहारी, कनेर और धतूरा यह पांच उपविष हैं ।

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलाङ्गलीकरवीरकः ।
गुञ्जाहिफेनोधुस्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—आकका दूध, सेहुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर; घुघुची, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं ।

अपिच ।

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः ।
जैपालोन्मत्ताहिफेनंनवोपविषजातयः ॥

अर्थ—सेहुण्ड, आक, कलिहारी, घुघुची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति हैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे विषोपविषवर्गःसमाप्तः ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ।

धान्यनामानि ।

धान्यंभोग्यंचभोगार्हमन्नाद्यंजीवसाधनम् ।

अर्थ—धान्य, भोग्य, भोगार्ह, अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्बकरि, व्रीहि

धान्यभेदा ।

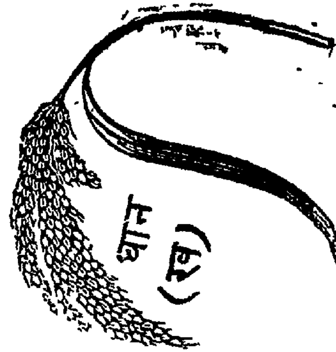
शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम् । शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यपंचकम्॥शालयोरक्तशाल्याद्या-

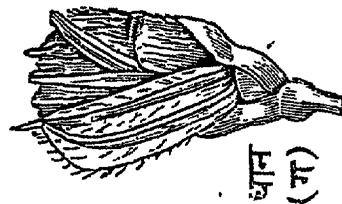
व्रीहयःषष्टिकादयः। यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिम्बिधान्यकम्॥ कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यंचतत्स्मृतम्॥

अर्थ-शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य इन भेदोंसे धान्य पांच प्रकारके कहे हैं। तहां रक्तशालिआदि शालिधान्य, साठीआदि व्रीहिधान्य, जौको आदिले शूकधान्य, मूँगको आदिले शिम्बीधान्य और कंगुनीको आदिले धान्योंको शूकधान्य कहते हैं और क्षुद्रधान्यको तृणधान्यभी कहते हैं।

शालिधान्यनामानि।







रक्तशालिःसकलमःपाण्डुकःशकुनाहृतः। सुगन्धकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः॥ पुष्पाण्डकःपुण्डरीकस्तथामहिषमस्तकः। दीर्घशूकःकाञ्चनकोहायनोलोध्रपुष्पकः। इत्याद्याःशालयःसन्तिबहवोबहुदेशजाः। ग्रन्थविस्ताररभीतेस्तेसमस्तानात्रभाषिताः॥

अर्थ-रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक और लोध्रपुष्पक इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोंमें उत्पन्न होते हैं वह सब ग्रन्थ बढनेके भयसे यहां नहीं कहे।

संस्कृतभाषामें	शालि, तण्डुल ।
हिन्दीभाषामें	धान, शालिधान, चावल ।
बंगभाषामें	शालिधान्य, चाउल ।
मराठीभाषामें	साळी, भात ।
गुजरातीभाषामें	शाल्य, चोखा ।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लु ।
तैलिंगीभाषामें	धान्यमु, वीयमु ।
इंग्रेजीभाषामें	राईस । Rice
लैटिन्भाषामे	ओरिझासेटाईवा । Oryza sativa
फारसीभाषामे	विरंज ।
अरबीभाषामें	उरज ।

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेनविनाशुक्लाहैमन्ताःशालयःस्मृताः.

अर्थ-जो विना छरे फटके सफेद हों उनको शालिधान कहते है और शालिधान हेमन्तऋतुमें होते हैं इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणाः ।

शालयोमधुराः स्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्च्चसः ।
कषायालघवोरुच्याःस्वर्य्यावृष्याश्चबृंहणाः ॥
अल्पानिलकफाःशीताःपित्तघ्नामूत्रलास्तथा ।

अर्थ-शालिधान-मधुर, स्निग्ध, बलकारक, अल्पप्रमाणमलरोधक, कषेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिजनक, कुछेक वातकफको कुपित करनेवाले, शीतल, पित्तनाशक और मूत्रजनक हैं ।

अपिच ।

शालयोदग्धभूजाताःकषायालघुपाकिनः । सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः । कैदारावातपित्तघ्नागुरवःकफशुक्लाः । कषायाःस्वल्पवर्चस्कामधुराश्चबलावहाः ॥ स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः । किञ्चित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि ।वापितामधुरावृष्याबल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥ श्लेष्मलाश्चाल्पवर्च्चस्काःकषायागुरवोहिमाः ।

वापितेभ्योगुणैःकिञ्चिद्धीनाःप्रोक्ताअवापिताः ॥ रोपिता-स्तुनवावृष्याःपुराणालघवःस्मृताः । तेभ्यस्तुरोपिताभूयः शीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥ छिन्नरूढाहिमारूक्षाबल्याःपित्त-कफापहाः । बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ-जलीहुई पृथ्वीमें उत्पन्न हुये शालिधान-कषेले, लघुपाकी, मल और मूत्रको करनेवाले, रूखे और कफको शोखनेवाले हैं । खेतमें उत्पन्न हुये शालिधानं-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्रजनक, कषेले, अल्पमल वर्द्धक, मधुर और बलवर्द्धक हैं । स्थलमें उत्पन्न हुये शालिधान-स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, किञ्चित्कडवे, कषेले और पाकमें कटु हैं । वापितधान्य-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तनाशक, कफकारक, अल्पमलवर्द्धक, कषेले, भारी और शीतल हैं । अवापितधान्य वापितधान्यसे किञ्चित् हीन गुणवाले हैं । रोपितनवीनधान्य-वीर्य्यवर्द्धक हैं और वही पुराने होनेपर हलके होजाते हैं । और २ धानोंकी अपेक्षा रोपितधान्य अधिकगुणवाले और शीघ्रपाकी हैं । छिन्नरूढशालिधान्य-शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तकफनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किञ्चित् कडवे हैं।

रक्तशालिगुणाः ।

रक्तशालिर्वरस्तेषुबल्योवर्ण्यस्त्रिदोषजित् । चक्षुष्योमूत्रलः स्वर्य्यःशुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्व-ह्निपुष्टिदः।तस्मादल्पान्तरगुणाःशालयोमहदादयः(भा.प्र.)

अर्थ-लालशालिधान्य (दाऊदखानी चावल)-सब धान्योंमें उत्तम हैं, बलवर्द्धक, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाले, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रजनक, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाले, शुक्रजनक, तृषानिवारक ज्वरहारक, विषविनाशकं, व्रणनाशक, श्वासको दूर करनेवाले, खाँसीको हरनेवाले, दादको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं । महाशालि आदिके गुण रक्तशालिधानकी अपेक्षा कम हैं ।

महाशालिधान्यगुणाः ।

राजान्नशालिकास्निग्धामधुराचाग्निदीपनी।बलकान्तिधातुप-थ्यकारकाचत्रिदोषहा ॥ लघ्वीगुणैरभ्यधिकाज्ञेयाचैवोत्तरोत्त-रम्।श्वेतारक्तास्तथाकृष्णाज्ञेयाश्चगुणदर्शिभिः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-राजशालि (हंसराज, बॉसमती इत्यादि)-स्निग्ध, मधुर, अग्निप्रदीपक,: बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोषनाशक और हलके हैं । ये सफेद, लाल और काले इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं इन तीनोंके गुण एक २ से अधिक हैं ।

अन्यच्च ।

रक्तशालिर्महाशालिःकलमाषष्टिकापरा । खञ्जरीटापसाहीचजीरकान्याकपिञ्जला ॥सौगन्धीशूकलाचान्याविलवासीकचोरका । गरुडारुक्मवन्तीचकलमान्यातथापरा॥ बिल्वजामागधीपीताताअष्टादशशालयः ।

अर्थ-रक्तशालि, महाशालि, कलमा, षष्टिका, खंजरीटा, पसाही, जीरका, कपिञ्जला, सौगन्धी, शूकला, बिलवासी, कचोरका, गरुडा, रुक्मवन्ती, कलमा, बिल्वजा, मागधी और पीता इन भेदोंसे शालिधान अठारह प्रकारके हैं ।

तेषांगुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नीचक्षुष्यामूत्ररोगहा । महाशालिर्गुरुर्वृष्याचक्षुष्याबलवर्द्धिनी ॥ शीतागुरुस्त्रिदोषघ्नीमधुरापरषष्टिका । जीरकावातपित्तघ्नीकलमाश्लेष्मपित्तहा॥ कपिञ्जलाश्लेष्मलास्यान्मागधीकफवातला । बिलवासीगुरुश्चापि पित्तघ्नीशुक्रवर्द्धिनी॥शूकलापित्तवातघ्नीकचोरापित्तनाशिनी॥गरुडान्याचवातघ्नीपित्तमूत्रगदापहा ॥ रुक्मवन्तीलघुरुचिबलपुष्टिकरीमता। कलमान्यालघुःपथ्यावातश्लेष्मविवर्द्धिनी ॥बिल्वजामागधीपीतासामान्यास्तागुणागुणैः॥ रुचिकृद्बलकृन्मूत्रदोषघ्नीचश्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचलेजाताःशालयोलघुपाकिनः । सुपथ्याबद्धविण्मूत्रारूक्षाःश्लेष्मापकर्षिणः ॥ केदारप्रभवावृक्षावातपित्तविनाशिनः । रक्तपित्तविकारघ्नावातलाःकफकारकाः ॥ देशेदेशेविभिन्ना-

निनामानिपरिलक्षयेत् ।समान्गुणैश्चसर्वांस्तान्भूमिभागो-
द्भवान्विदुः॥शालयश्छिन्नरोहाश्चमूत्रलावातलाहिमाः॥हारीत

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्ररोगको दूर करे हैं। महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी और बलकारी हैं। षष्टिक शालिधान-शीतल, भारी, त्रिदोषनाशक और मधुर हैं। जीरक शालिधान-वातपित्तनाशक हैं। कलमीधान-कफ और पित्तको दूर करे हैं। कपिञ्जल शालिधान-कफकारक हैं। मागधी शालिधान-कफ और वातको करे हैं। बिलवासी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक हैं। शूकला शालिधान-पित्तवातनाशक हैं। कचोरा शालिधान-पित्तनाशक हैं। गरुड शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मूत्ररोगको दूर करे हैं। रुक्मवन्ती शालिधान-हलके रुचिकारक, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक हैं। दूसरे प्रकारके कलमीधान-हलके, पथ्य और वातकफवर्द्धक हैं। बिल्वजा, मागधी और पीता यह तीनों प्रकारके शालिधान गुण और दोषोंमें समान हैं। रुचिकारक, बलकारक, मूत्रदोषनाशक और श्रमरोगहारक हैं। दग्धग्राम और पर्वतमें उपजे शालिधान-लघुपाकी हैं, पथ्य, मलमूत्ररोक, रूखे, और कफको सोखनेवाले हैं। खेतमें उपजे शालिधान-रूखे वातपित्तनाशक, रक्तपित्तविनाशक, वातवर्द्धक और कफकारक हैं। इन सब शालिधानोंके नाम देश २ में भिन्न हैं। सर्व प्रकारके शालिधान सर्वप्रकारकी भूमिके भागोंमें उत्पन्न हुये गुणोंमें समान हैं। छिन्नरोहशालिधान-मूत्रजनक, वातकारक और शीतल हैं।

व्रीहिधान्यलक्षणम् ।

वार्षिकाःकण्डिताःशुक्लाव्रीहयश्चिरपाकिनः । कृष्णव्रीहिः
पाटलश्चकुक्कुटाण्डकइत्यपि ॥ शालामुखोजतुमुखइत्याद्या
व्रीहयःस्मृताः ।कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयत्कृष्णतुषतण्डुलः॥
पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते।कुक्कुटांडाकृतिर्व्रीहिः
कुक्कुटाण्डकउच्यते ॥ शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतण्डु-
लउच्यते । लाक्षावर्णंमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तुसः ॥
व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्य्यतोहिमाः । अल्पाभिष्य-

न्दिनोबद्धवर्चस्काःषष्टिकैःसमाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाःपरे ।(भा० प्र०)

अर्थ-व्रीहिधान-वर्षाकालमें पकतेहैं यह धान छरनेमें सफेद और बहुत देरमें पकतेहै व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहैं जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल, कुक्कुटाण्डाकृति, शालामुख और जतुमुख इत्यादि। जिसके तुष और चावल काले रंगके होंय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहैं। जिसका रंग पाडलके फूलकी समान हो उसको पाटलाव्रीहि कहतेहैं । जिसका आकार मुरगेके अंडेकी समान हो, उसको कुक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहैं। जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहैं। जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते हैं। सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमें मधुर, शीतवीर्य्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक । व्रीहिधानोंमें कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहैं, शेष अल्प गुणवाले हैं।

अन्यच्च ।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नीमधुराकार्श्यहातथा ।
पित्तघ्नीपिच्छिलाशुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ (वै०नि०)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक, पिच्छिल तथा शुक्र, रूप और वर्ण तथा बलको देवेंहै ।

षष्टिकलक्षणं नामानि च ।

गर्भस्थाएवयेपाकंयान्तितेषष्टिकामताः।षष्टिकःशतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ॥महाषष्टिकइत्याद्याःषष्टिकाःसमुदाहृताः। ऋतेऽपिव्रीहयःप्रोक्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ-जो बालमेंही पकजावें उनको षष्टिक धान्य कहते हैं। षष्टिक, शतपुष्प, प्रमोदक, मुकुन्दक, महाषष्टिक (षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल, षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते हैं। इनमें व्रीहिधानोंके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते हैं।

अन्यच्च ।

योव्रीहिः षष्टिरात्रेणपच्यतेसतुषष्टिकः ।

अर्थ-जो धान ६० रातमें पकके तैय्यार होजायँ उनको षष्टिकधान्य कहते हैं।

षष्टिकगुणाः ।

षष्टिकामधुराःशीतालघवोबद्धवर्चसः । वातपित्तप्रशमनाः शालिभिःसदृशागुणैः । षष्टिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित्॥स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहारिणी । रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततःस्वल्पगुणाःपरे ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–षष्टिक (साठीधान)–मधुर, शीतल, हलके, मलरोधक, वातपित्तनाशक यह गुणोंमें शालिधानके समान हैं । सर्वप्रकारके धान्योंमें षष्टिक धान्य उत्तम हैं, हलके, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, स्वादिष्ट, नरम, मलरोधक, बलदायक, ज्वरनाशक । इनके गुण लाल शालिधानोंकी समान जानने और २ धान इनसे हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोग्राहीगुरुःस्वादुस्त्रिदोषघ्नःस्थिरोहिमः ।
षष्टिकोव्रीहिषुश्रेष्ठोगौरश्चासितगौरतः ॥ (वाग्भट)

अर्थ–साठीधान–स्निग्ध, मलरोधक, स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, स्थिर, शीतल और सर्वधानोंमें श्रेष्ठ हैं । यह वर्णके भेदसे कृष्ण और गौर दो प्रकारके हैं तहां कृष्णषष्टिक धानोंकी अपेक्षा गौरषष्टिकधान अधिक गुणवाले हैं ।

अपिच ।

स्निग्धोवातहरस्त्रिदोषशमनःपथ्यःसदाप्राणिनांश्रेष्ठोव्रीहिषुषष्टिकःश्रमहरःकृच्छ्रादिदोषापहः ॥ गौरश्चासितगौरतोपिनितरांसेव्यःकरोत्युच्चकैः शुक्रंश्वासहरः क्षतक्षयहरः कासादिदोषापहः ॥

अर्थ–सफेद और काले दोनोंप्रकारसे साठीधान–स्निग्ध, वातनाशक, त्रिदोषनाशक, पथ्य, सर्वप्रकारके व्रीहिधानोंमें श्रेष्ठ, मूत्रकृच्छ्रादिदोषनाशक, शुक्रजनक, श्वासनाशक तथा क्षत, क्षय और कासादिरोगोंको दूर करैहैं ।

विवरण । धानकी तीन चार जातिहैं, शालि, शूक, शिम्बी और तृणधान्य इनमें शालिधान अनेक प्रकारके होते हैं देशके भेदसे इसके नाम

भिन्न २ हैं । संस्कृतग्रन्थोंमें अनेक नाम कहेहैं जैसे कलम, सुगंधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, षष्टिक इत्यादि अनेक जातिहैं वह सर्व नहीं लिखीं क्योंकि वर्त्तमानकालमें संस्कृत नाम प्रचलित नहीं हैं देश २ में जुदे २ नाम हैं जैसे इस देशमें हंसराज, वासमती, सुखखर्चा, बिदली, दाऊदखानी, मुनिया, रायमुनिया, दलबादल, चवल, फतेपुरी; बंकी नागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित हैं अगर इसी देशके नाम लिखें तो १०० पृष्ठकी पुस्तक तैय्यार होजाय । जो साठ दिनमें पककर तैय्यार होजायँ उनको साठीधान कहते हैं । साठीधान और धानोंकी अपेक्षा हलके और पथ्यहैं । जौ, गेहूं, बाजरा, ज्वारइत्यादिको शूकधान्य कहते हैं । मूंग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते हैं । शमा, कंगुनी, कोदों आदि तृणधान्य हैं ।

यवनामानि ।

यवस्तुमेध्यःसितशूकसंज्ञोदिव्योक्षतःकंचुकिधान्यराजौ ।
स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्चशक्तुर्हयेष्टश्चपवित्रधान्यम् ॥

अर्थ—यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कंचुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक, हयप्रिय, यवक, श्वेतशुङ्ग, प्रवेट, शीतशूक, कंचुकी, तुरंगप्रिय)

संस्कृतभाषामें	यव ।
हिंदीभाषामें	जौ ।
वंगभाषामें	यव ।
गुजरातीभाषामें	जव ।
मराठीभाषामें	जव, जौं ।
कर्णाटकीभाषामें	मुंडजयव ।
तैलिङ्गीभाषामें	यवधान्य ।
तामिलीभाषामें	वार्लिअरिसु ।
इंग्रेजीभाषामें	विटरवार्ली, पेरलवार्ली । Bitter Rarley Poarl Rarley
लैटिन्भाषामें	होर्डियंहेग्झास्टिकम् । Hordeum Hexasticum
फारसीभाषामें	जव ।
अरबीभाषामें	शईर ।

यवस्य प्रकारभेदाः ।

यवःसशूकनिःशूकहरिद्भेदैस्त्रिधामतः ।
सशूकोगुणवांस्तस्मान्निःशूकोल्पगुणःस्मृतः
हरिद्वर्णोहीनगुणोमुनिभिःपरिकीर्त्तितः ।

अर्थ-जौ शूक, निःशूक और हरित् वर्ण इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं तहां शूकयुक्त जौ गुणोंमें अधिक हैं, निःशूक जौ हीन गुणवाले और हरित् वर्ण जौ उनसेभी हीन गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

यवस्तुशीतशूकःस्यान्निःशूकोऽतियवःस्मृतः ।
स्तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततःस्वल्पश्चकीर्त्तितः॥(भा.प्र.)

अर्थ-शीतशूकवाले जौको यव कहते हैं, शूकहीन जौको अतियव कहते हैं, हरे रंगके जौको स्तोक्य कहते हैं और साधारण यवोंको स्वल्पयव कहते हैं ।

यवगुणाः ।

रूक्षःशीतोगुरुःस्वादुःकषायोमधुरोयवः ।
वृष्योग्राहीकफघ्नश्चस्यात्पित्तश्वासकासनुत् ॥ (हा०सं०

अर्थ-जौ-रूखे, शीतल, भारी, स्वादु, कषेले, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, कफनाशक तथा पित्त, श्वास और खांसीको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

यवःकषायोमधुरःशीतलोलेखनोमृदुः । व्रणेषुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः ॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दीस्वर्य्यो बलकरोगुरुः । बहुवातमलोवर्णस्थैर्य्यकारीचपिच्छिलः॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ तस्मादतियवोन्यूनःस्तोक्योन्यूनतरस्ततः (भा०प्र०)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमें तिलकी समान हितकारी, रूखे, मेधा और अग्निवर्द्धक, पाकमें कटु, अनभिष्यंदी, स्वरको शुद्ध करनेवाले, बलकारक, भारी, अत्यन्त वातको करनेवाले, बहुत

मलको करनेवाले, वर्णको सुन्दर करनेवाले, पिच्छिल तथा कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ, पित्त, मेदरोग, पीनस, श्वास, खांसी, उरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं। जैसे अतियव और अतियवसे स्तोक्य हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च ।

यवःकषायोमधुरःसुशीतलःप्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः ।
अशूकमुण्डस्तुयवोबलप्रदोवृष्यश्चनॄणांबहुवीर्य्यपुष्टिदः।(रा.)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और, कफनाशक हैं। अशूक अर्थात् मुण्डे जौ-बलवर्द्धक, -वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं।

गोधूमनामानि ।



गोधूमोबहुदुग्धःस्यादरूपोम्लेच्छभोजनः ।
यवनोनिस्तुषःक्षीरीरसालःसुमनश्चसः ॥

अर्थ-गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुष, क्षीरी, रसाल, सुमन (गोधुम, सुमना,)

संस्कृतभाषामें	गोधूम ।
हिंदीभाषामें	गेहूं ।
वंगभाषामें	गम ।
मराठीभाषामें	गहूं, काठे लाल रंगाचे (कों०-) पोटेंगुळधुंवे ।
गुजरातीभाषामें	घउं ।
कर्णाटकीभाषामें	गोदी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोदुउ ।
इंग्रेजीभाषामें	ह्वीट् । Wheat
लैटिन् भाषामें	ट्रिटिकम्, वल्गेरी । Tritlcnm Vulgare

फारसीभाषामें गंदुम ।
अरबीभाषामें हिंता ।

गोधूमगुणाः ।

मधुरोगुरुविष्टम्भीवृष्योबल्योऽथबृंहणः ।
ईषत्कषायःशीतश्चगोधूमःस्यात्रिदोषहा ॥ (हा०सं०)

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषेले, शीतल और त्रिदोषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

गोधूमउक्तोमधुरोगुरुश्चबल्यःस्थिरःशुक्ररुचिप्रदश्च ।
स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहंतासन्धानकृज्जीवनकोलपरेची ॥

अर्थ-गेहूँ-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, प्राणदायक और कुछेक दस्तावर हैं ।

अन्यच्च ।

गोधूमःस्निग्धमधुरोवातघ्नःपित्तदाहहृत् ।
गुरुःश्लेष्मप्रदोबल्योरुचिरोवीर्य्यवर्द्धनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गेहूं-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तघ्न, दाहनिवारक, भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

अपिच लक्षणगुणाः ।

गोधूमःसुमनोऽपिस्यात्रिविधःसचकीर्त्तितः । महागोधूमइत्याख्यःपश्चाद्देशात्समागतः ॥ मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पासामध्यदेशजा । निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नन्दीमुखाभिधः ॥ गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरुः । कफ[1]शुक्रप्रदोबल्यःस्निग्धःसन्धानकृत्सरः ॥ जीवनोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत् ।मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः ॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नंदीमुखःस्मृतः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-गेहूं, महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंसे तीन प्रका-

१ कफप्रद-कफकारक ऐसा नवीन पदहै; परन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थमें नहीं लिखा.

रके हैं वहां महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिमें होते हैं, मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली, आगरा, लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम, शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है। गेहूं-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक, स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, संजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले हैं। मधूली गेहूं-शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक, पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानने।

यवनालनामानि।

यवनालोयावनालः शिखरीवृत्ततण्डुलः।
दीर्घनालोदीर्घशरःक्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक।

धवलयावनालनामानि।

धवलोयावनालस्तुपाण्डुरस्तारतण्डुलः।
नक्षत्राकृतिविस्तारोवृत्तोमौक्तिकतण्डुलः ॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुंदक)

तुवरयावनालनामानि।



अथतुवरयावनालस्तुवरश्चकषाययावनालश्च।
अपिरक्तयावनाललोहितलोहिततुवरधान्याश्च ॥

अर्थ-तुवरयावनाल-तुवर, कषाययावनाल, रक्तयावनाल, लोहित, लोहिततुवरधान्य ।

अपिच ।

ललिताक्रोष्टुपुच्छाचश्रीखण्डीचसुगन्धिका ।
कृष्णाभाद्रपदीचान्याश्वेतामंडाचजूर्णका ॥
रक्तिकाकुब्जिकाद्याश्चबह्वयोजूर्णाह्वजातयः ।

अर्थ-ललिता, क्रोष्टुपुच्छा, श्रीखण्डी, सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपदी, श्वेता, मंडा, जूर्णका, रक्तिका और कुब्जिका इत्यादि ज्वारकी अनेक जाति हैं ।

संस्कृतभाषामें	यावनाल, धवलयावनाल, रक्तयावनाल ।
हिन्दीभाषामें	जुआर, सफेदजुआर, लालज्वार ।
वंगभाषामें	जोआर, जनार+श्वेतजनार, कालजनार, लाल-जनार, भुट्टो ।
मराठीभाषामें	जोंधळे, ज्वारी ।
गुजरातीभाषामें	जारच, जुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	जोलदहेसरु, कारुजोल ।
तैलिङ्गीभाषामें	जोन्नलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटमीलेट । Great Millet-
लैटिन्भाषामें	होलकस् वलगेरी Holcus vulgare सोरघम् वलगेरीसं Sorghum vulgare
फारसीभाषामें	जुरेमका ।
अरबीभाषामें	हंतारुमिया+खंदरूस ।

यावनालगुणाः ।

यावनालोगुरुःशीतोरूक्षोग्राहीरुचिप्रदः ।
वृष्योमलस्तम्भकरःस्वादुःपित्तकफापहः ॥
रक्तरोगप्रशमनोऋषिभिःपूर्वमीरितः ॥

अर्थ-जुआर, भारी, शीतल, रूखी, मलरोधक, रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, मलस्तम्भक, स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक और रुधिरके विकारको शान्ति करनेवाली है ।

धवलयावनालगुणाः ।

धवलोयावनालस्तुपथ्योवृष्योबलप्रदः ।
त्रिदोषाशोंव्रणहरोगुल्मारुचिविनाशकः ॥

अर्थ–सुफेदज्वार–पथ्य, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, ववासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको दूर करे है ।

शारदयावनालगुणाः ।

शारदोयावनालस्तुश्लेष्मलः पिच्छिलोगुरुः ।
शीतलोमधुरोवृष्योबल्यःपुष्टिकरोमतः ॥
त्रिदोषशमनश्चैवपूर्ववैद्यैर्निरूपितः । (नि० र०)

अर्थ–शारदयावनाल–कफकारक, पिच्छिल, भारी, शीतल, मधुर, वीर्य्य-वर्द्धक, वलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है ।

साजकनामानि ।

वर्जरीनालिकानालीनीलसस्यंचसाजकः ।
अग्रधान्यंवर्जरीकातथानीलकणास्मृता ॥

अर्थ–वर्जरी, नालिका, नाली, नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जरीका, नीलकणा ।

संस्कृतभाषामें	वर्जरी, साजक ।
हिन्दीभाषामें	बाजरा ।
मराठीभाषामें	बाजरी ।
गुजरातीभाषामें	बाजरो ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाइक्डमिलेट् Spieked millet
लैटिन्भाषामें	पेनीसीलेर्या,स्पाईकटा Pemecllaria spicate
	पेनीसेटं, टाइफोडियं Peninsetum typhoi m
फारसीभाषामें	गार्वसा ।
अरवीभाषामें	जार्वस ।

अस्य गुणाः ।

साजकोवातलोहृद्योबल्यःकान्तिकरोमतः ।
अग्निदीप्तिकरश्चोष्णोरूक्षःपित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदोदुर्जरश्चपुंस्त्वपुष्टिहरोमतः । (नि० र०)

अर्थ-बाजरा-बादी, हृदयको हितकारी, बलकारी, कान्तिजनक, अग्निप्रदीपक, गरम, रूखा, पित्तको कुपित करनेवाला, स्त्रियोंके कामको बढानेवाला, देरमें पचनेवाला तथा पुरुषता और पुष्टिको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

वर्जरीदुर्जराज्ञेयाकफवातप्रणाशिनी।

अर्थ-बाजरा-देरमें पचनेवाला और कफवातको हरनेवाला है।

शमीधान्यनामानि।

शमीजाःशिम्बिजःशिम्बीभवासूप्याश्चवैदलाः।

अर्थ-शमीज, शिम्बिज, शिम्बीभव, सूप्य, वैदल।

शमीधान्यगुणाः।

वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः।
वातलाःकफपित्तघ्नाबद्धमूत्रमलाहिमाः॥
ऋतेमुद्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारकाः।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूँग, मसूर,मोठ,उडद, लोबिया, चने, अडहर, मटर, कुलथी इत्यादि)-मधुर, रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, वातकारक, कफ-पित्तनाशक, मूत्रमलरोधक, शीतल इनमें मूँग और मसूरको छोडकर शेष सर्व आध्मानकारक हैं।

अन्यच्च।

शिम्बीधान्यंतुमधुरंशीतंरूक्षंकषायकम्। कटुपाकेवातलं चमूत्रलंमलस्तम्भकृत्॥ मसूरामुद्गरहितंगुरुचाध्मानका-रकम्।लेपादिनारक्तदोषमेदपित्तकफापहम्॥ (र०नि०)

अर्थ-शिम्बीधान्य-मधुर, शीतल, रुक्ष, कषाय, पाकमें कटु, बादी, मूत्रजनक, मलस्तम्भक इनमें मसूर और मूँगको छोडके शेष सर्व शिम्बी-धान्य भारी और आध्मानकारक हैं। इनका लेपादिक करनेसे रक्तविकार, मेद, पित्त और कफका नाश होता है।

मुद्गनामानि।

मुद्गस्तुसूपश्रेष्ठःस्याद्वर्णार्हश्चरसोत्तमः।
भुक्तिप्रदोहयानन्दःसुफलोवाजिभोजनः॥

अर्थ-मुद्ग, सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिमद, हयानन्द सुफल, वाजिभोजन ।

संस्कृतभाषामें	मुद्ग ।
हिन्दीभाषामें	मूग ।
वंगभाषामें	मुग
मराठीभाषामें	हिरवे मूग, पिवळे मूग ।
गुजरातीभाषामें	मग लीला, काला कच्छी ।
कर्णाटकीभाषामें	हेसयेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेसलु ।
पंजाबीभाषामें	मूजि ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रीन ग्रेन । Green grain
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस् मुगो । Phaseolus Muego
फारसीभाषामें	बुनुमाष ।
अरबीभाषामें	मज ।

मुद्गगुणाः ।

शीतःकषायोमधुरोलघुःस्यात्पैत्तास्रभूदोपहरः सरश्च । विपाकतोऽसौकटुकप्रधानोमुद्गस्तथान्यःकथितोऽभिरम्यः (हा०)

अर्थ-मूँग-शीतल, कषेली, मधुर, हलकी, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली, सारक, विपाकमें कटु और रमणीक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमुद्गामहामुद्गागौराहरितपीतकाः । श्वेतारक्तास्तुनिर्दिष्टालघवःपूर्वपूर्वतः ॥ प्रधानाहरितास्तत्रवन्यमुद्गास्तुमुद्गवत् । मुद्गःकषायोमधुरःकफपित्तास्रजिल्लघुः ॥ ग्राहीशीतःकटुःपाकेचक्षुष्योनातिवातलः ॥ (राज०नि०)

अर्थ-मूँग-अनेक प्रकारके होते हैं जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गौरवर्णमुद्ग, हरितमुद्ग, पीतमुद्ग, श्वेतमुद्ग और रक्तवर्णमुद्ग इनमें पूर्वसे पूर्व मूँग लघु हैं अर्थात् रक्त मूँगसे सफेद मूँग, सफेद मूँगसे पीलेमूँग और पीले मूँगसे हरा मूँग हलका है इत्यादि सर्व मूँगोंमें हरा मूँग प्रधान है। वनमूँग (मोठ) के गुण भी मूँगके समान हैं । मूँग-कषेली, मधुर, कफनाशक, रक्तपित्त-

निवारक, हलका, मलरोधक, शीतल, पचनेमें कटु, नेत्रोंको हितकारी और अत्यन्त वातकारक नहीं है ।

अपिच ।

मुद्गोरूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः । स्वादुरल्पानिलो नेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ॥ मुद्गोबहुविधःश्यामोहरितःपीतकस्तथा । श्वेतोरक्तश्चतेषांतुपूर्वःपूर्वोलघुःस्मृतः ॥ सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः । चरकादिभिरप्युक्तएषएवगुणाधिकः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मूँग-रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादिष्ठ, अल्पवातकारक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरको दूर करे है । वनमूँग (मोठ) के गुणभी मूँगके समान हैं । मूँग अनेक प्रकारकी हैं जैसे श्याम, हरित, पीत, सफेद, लाल । इनमें पहिले २ मूँग हलके हैं सुश्रुतने हरे मूँगको उत्तम कहाहै और चरकादिकभी इसीप्रकार कहते हैं ।

अन्यच्च ।

मुद्गःपित्तकफापहोव्रणहरःकण्ठामयघ्नोलघुः पथ्योवातविरक्तजन्तुषुतथानेत्रामयेसर्वदा॥नैवाध्मानकरस्तथानिलहरोमन्दानलेशस्यते भक्तानामपिचोत्तमःस्वरकरोमूत्रामयच्छेदनः ॥

अर्थ-मूँग-पित्तकफनाशक, व्रणविनाशक, कण्ठरोगनिवारक, हलकी तथा वातरक्त, कृमिरोग और नेत्ररोगमें हितकारी है, आध्मानकारक नहीं, वातहारकभी नहीं, मन्दाग्निको दूर करनेवाली, भोजनके ऊपरभी पथ्य, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली और मूत्ररोगको हरनेवाली है ।

कृष्णमुद्गनामानि ।

कृष्णमुद्गस्तुवासन्तोमाधवश्चसुराष्ट्रजः ।

अर्थ-कृष्णमुद्ग, वासन्त, माधव, सुराष्ट्रज ।

कृष्णमुद्गगुणाः ।

कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नोमधुरोवातनाशनः ॥
लघुश्चदीपनःपथ्योबलवीर्य्यांगपुष्टिदः ।

अर्थ–कालीमूँग–त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा बल, वीर्य्य और शरीरको पुष्टि देनेवालीहै ।

हरिन्मुद्गनामानि ।

शारदस्तुहरिन्मुद्गोधूसरोऽन्यश्चशारदः ।

अर्थ–शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके हैं, धूसर और शारद यह दूसरी होती है ।

हरिन्मुद्गगुणाः ।

हरिन्मुद्गःकषायश्चमधुरःकफपित्तहृत् ।
रक्तमूत्रामयघ्नश्चशीतलोलघुदीपनः ॥

अर्थ–हरीमूँग–कषेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुधिरविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है ।

धूसरमुद्गगुणाः ।

तद्वच्चधूसरोमुद्गोरसवीर्य्यादिषुस्मृतः ।
कषायोमधुरोरुच्यःपित्तवातविबन्धकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–धूसर रंगकी मूँग रसवीर्य्यादिकमें तो हरीमूँगकी समानहै कषेली, मधुर, रुचिकारी तथा पित्त, वात और विबन्धकारक है ।

मकुष्ठनामानि ।

मकुष्ठकोमकुष्ठश्चवनमुद्गःकृमीलकः ।
अमृतोरण्यमुद्गश्चवल्लीमुद्गश्चकीर्त्तितः ॥

अर्थ–मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, (मुकुष्ठ, मपष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्टक, मकुष्ठक. मकुष्ठ, वरक, निगूढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्ठक, मुद्गष्ट, मयटक, मुकुष्ठ, मयूष्ट. मयष्ट, मद्यक, मयुष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामें	मकुष्ठ ।
हिन्दीभाषामे	मोठ ।
वंगभाषामें	वनमूँग ।
मराठीभाषामें	मटक्या ।
गुजरातीभाषामें	मठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मुगु, हेसरुभेद ।
तैलिंगीभाषामें	कंकंपेसालु ।

इंग्रेजीमें एकोनेडेलिव्ड किडनीबिन । Aconite leaved Kidney bean
लैटिन्भाषामें फेसी ओलस् Phaseolus
एकोनिटि फोलीयम् । aconite folium
फारसीभाषामें माषहिंदि ।

मकुष्टगुणाः ।

सरक्तपित्तकफवातहन्ताचोष्णःकषायोमधुरःप्रदिष्टः ।
ग्रहीसुशीतोगुदकीलगुल्मंमकुष्ठकःसर्वगदान्निहन्ति ॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है, गरम, कषेली, मधुर, मलरोधक, शीतल तथा गुदकील, गुल्म और रोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मकुष्ठकःकषायःस्यान्मधुरोरक्तपित्तजित् ।
ज्वरदाहहरःपथ्योरुचिकृत्सर्वदोषजित् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मोठ-कषेली, मधुर, रक्तपित्तनाशक, ज्वरनिवारक, दाहहारक, पथ्य, रुचिकारक और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ।
वान्तिजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-मोठ-बादी, मलरोधक, कफपित्तनाशक, हलकी, वमननिवारक, पचनेमें मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है ।

अपिच ।

मुद्गष्टःशीतलोग्राहीकफपित्तक्षयापहः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मोठ-शीतल, ग्राही तथा कफ, पित्त और क्षयको दूर करे है ।

अस्य सूपगुणाः ।

मकुष्टसूपोऽल्पबलःपाचनोदीपनोलघुः ।
चक्षुष्योबृंहणोवृष्यःपित्तश्लेष्मास्त्ररोगनुत् ॥ (द्र०गु०)

अर्थ-मोठकी दाल-अल्पबलकारक, पाचक, दीपन, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

माषनामानि ।

माषस्तुकुरुविन्दःस्याद्धान्यवीरोवृषांकुरः ।

मांसलश्चबलाढ्यश्चपित्र्यश्चपितृभोजनः ॥

अर्थ-माष, कुरुविन्द, धान्यवीर. वृषांकुर, मांसल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन (बीजरत्न, बली)

संस्कृतभाषामे	माष ।
हिन्दीभाषामें	उडद् ।
वंगभाषामें	माषकलाय ।
मराठीभाषामे	उडीद् ।
गुजरातीभाषामें	उडद् ।
कर्णाटकीभाषामें	उद्दु ।
तैलिंगीभाषामे	मिनुउलु ।
इंग्रेजीभाषामें	किड्नीबीन । Kidney bean
लैटिन्भाषामें	फेसीओलम् रेडीरेटस् । Phaseolus rediatus
फारसीभाषामें	माष ।
अरवीभाषामे	माषा ।

माषगुणाः ।

माषःस्निग्धोबहुमलकरःशोषणःश्लेष्मकारी वीर्येउष्णोझ-टितिकुरुतेरक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातंगुरुबलकरोरो-चनोभक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्यंश्रमसुखवतांसेवनीयोनरा-णाम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, बहुमलकारक, शोषक, कफकारक, उष्णवीर्य्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक, भारी, बलकारी, रुचि-कारक, स्वादिष्ठ तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योंको सदैव सेवने योग्य है।

अन्यच्च ।

स्निग्धोऽथवृष्योमधुरश्चबल्योमरुत्कफानांपरिबृंहणश्च ।
पाकेम्लकोष्णोविदितोहिमश्चमापोऽथहृद्यःकथितोनरैश्च॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, बलकारक, वात और कफको बढानेवाला, पाकमें अम्ल, उष्ण, शीतल और हृदयको हितकारी है।

अन्यच्च ।

माषोगुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रःस्निग्धोष्णवृष्योमधुरोऽनिलघ्नः।

सन्तर्पणःस्तन्यकरोविशेषाद्बलप्रदःशुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद्-भारी, मलमूत्रको निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल, शुक्र और कफको करनेवाला है ।

कषायभावान्नपुरीषभेदीनमूत्रलोनैवकफस्यकर्त्ता ।
स्वादुर्विपाकेमधुरोऽलसांद्रःसन्तर्पणःस्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद्-कषैलेपनसे मलभेदक नहीं है और मूत्रजनकभी नहीं है और न कफको करनेवालाहै, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है ।

अपिच ।

माषःस्निग्धोबलश्लेष्ममलपित्तकरःसरः ।
गुरूष्णोनिलहास्वादुःशुक्रवृद्धिविरेककृत् (वाग्भ०)

अर्थ-उडद्-स्निग्ध, बलकारक, कफजनक, मलकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और दस्तावर है ।

अन्यच्च ।

माषःसाधारणःस्निग्धःशोषणोष्णःकफप्रदः । वृष्यःपित्त-
करःपित्तकोपनोरोचकोगुरुः॥बल्यःसन्तर्पणःस्वादुःपुष्टि-
कृन्मूत्रशुक्रलः । मलभेदकरोदुग्धकारकोमांसवर्द्धकः॥मेद-
वृद्धिकरश्चैवश्वासश्रमनिवारणः । परिणामभवंशूलमर्दितंच
विनाशयेत् । वातंचार्शोनाशयतीत्येवमार्यैर्निरूपितम् ॥ (र०)

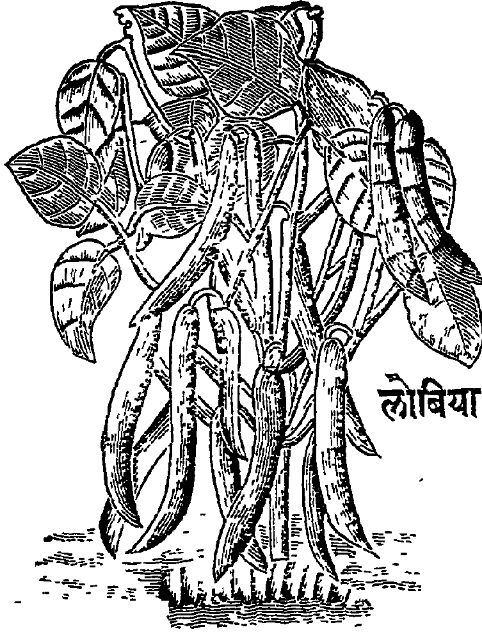
अर्थ-उडद्-स्निग्ध, शोषण, गरम, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, भारी, बलकारक, तृप्तिजनक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, मूत्रजनक, शुक्रकारक, मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है ।

राजमाषनामानि ।

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चबलः स्मृतः ।

अर्थ-राजमाष, महामाष, चपल, चवल (बर्ब्बट, मरुत्कर, द्विजसम,

नीलमाष, नृपमाष, नृपोचित, सितमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक, सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक).



संस्कृतभाषामें	राजमाष ।
हिन्दीभाषामें	लोबिया ।
वंगभाषामें	वरबटीकलाय, बोरा ।
मराठीभाषामें	चंवळचा (अळसुंदे) ।
गुजरातीभाषामें	चोला ।
कर्णाटकीभाषामें	वरवटा, अलसंदे ।
पंजावीभाषापें	रैस ।
इंग्रेजीभाषामें	चाईनिझ डोलिकोस् । Chinese dolicos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् सिनेन्सीस् । Dolichos sinensis
	विगना काटिएंग् । Vigna catiang
फारसीभाषामें	लोबिया ।
अरबीभाषामें	फारिका ।

राजमाषगुणाः ।

राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः । रूक्षोवातकरोरु-

च्यःस्तन्योभूरिबलप्रदः ॥ श्वेतरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः।योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः॥ (भा.प्र.)

अर्थ-लोविया-भारी, स्वादिष्ठ, कषेला, तृप्तिकारक, सारक, रूखा, वातकारक, रुचिजनक, स्तनोंमें दूध करनेवाला और बलकारक है। सफेद, लाल और काला इन भेदोंसे लोविया तीन प्रकारके हैं इनमें बडा लोविया अधिक गुणवाला जानना।

अन्यच्च।

राजमाषःसरोरुच्यःकफशुक्राम्लपित्तकृत्।
सस्वादुर्वातलोरूक्षःकषायोविशदोगुरुः॥(च०सु०सं०)

अर्थ-लोविया-सारक, रुचिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, अम्लपित्तकारक, स्वादिष्ठ, वातकारक, रूखा, कषेला, विशद और भारी है।

अपिच।

रूक्षोगुरुर्बहुशकृच्चलकृच्चशिम्बीधान्याधमस्त्वमसिनागम एषमिथ्या। हेराजमाषतवराजपदंप्रदत्तं माषंविहायविधिनातदहष्टमेव ॥ (वै०अ०)

अर्थ-हे राजमाष! (लोविया)-जो कि, तुम रूखे, भारी, बहुत मलको करनेवाले, शिम्बीधान्योंमें अधम हो यह बात मिथ्या नहीं है इसपरभी विधाताने तुमको और उरदोंको छोडकर राजपद दिया यह प्रारब्धका फल नहीं तो क्या है?।

अस्य सूपगुणाः।

राजमाषभवःसूपःस्वादूरूक्षःकषायकः।
ग्राहीगुरुर्वातकरःस्तन्यकृद्रुचिकारकः॥ (द्रव्यगुण)

अर्थ-लोवियेकी दाल-स्वादिष्ठ, रूखी, कषेली, मलरोधक, भारी, वातकारी, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है।

निष्पावनामानि।

निष्पावोराजशिम्बीस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः।

अर्थ-निष्पाव राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक।

संस्कृतभाषामें निष्पाव।
हिंदीभाषामें भटवासु, भेटरासु, राजशिम्बीके बीज।

वंगभाषामें	राजशिम्बीबीज, भेटवासु ।
मराठीभाषामें	कडवेवाल, पांढरे पावटे, तांबडे पावटे । ऑवरे ।
गुजरातीभाषामें	ओलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	आवरे, तोरेआवरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आनपचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	लेबलेब्वल्गेरीस् । Lablab Vulgaris

निष्पावगुणाः ।

निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लगुरुःसरः ।
कषायःस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबंधकृत् ॥
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–निष्पाव (भटवासु)–मधुर, रूखा, पाकमें अम्ल, भारी, वातकारी, कुछेक दस्तावर, कषेला, स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विबंधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरेहै ।

अन्यच्च ।

निष्पावोवातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरोगुरुः ।
सरोविदाहिदृक्छुक्रकफशोफविनाशनः ॥ (वाग्भट)

अर्थ–निष्पाव–वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करेहै । भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

निष्पावोमधुरोरूक्षःपाकेम्लःसारकोगुरुः ।
उष्णःशोषकरोबल्यःपुष्टिकृत्तुवरोमतः ॥
विषदृष्टिहरःप्रोक्तःपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः । (रा०नि०)

अर्थ–भटवासु–मधुर, रूखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, बलकारक, पुष्टिकारक, कषेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

निष्पावस्तुवरोमेध्योदीपनोमधुरोरसे ।

कंठशुद्धिकरोरुच्योग्राहकोमुनिभिर्मतः ॥
निष्पावसदृशास्त्वन्येगुणाज्ञेयाश्चिकित्सकैः ।

अर्थ-सफेद और नील निष्पाव-कडवे, मेधाजनक, दीपन, रसमें मधुर, कंठशोधक, रुचिकारक और ग्राही हैं शेष गुण निष्पावकी समान जानने ।

रक्तनिष्पावगुणाः ।

रक्तनिष्पावकोरुच्योमधुरःशीतलोगुरुः ।
किञ्चित्कषायोबल्यश्चवातलःपुष्टिकृन्मतः ॥
आध्मानकृद्गुणास्त्वन्येनिष्पावसदृशामताः ।

अर्थ-लाल निष्पाव-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, किञ्चित्कषेला, बलकारी, वातकारक, पुष्टिकारक, आध्मानकारक और गुण निष्पावकी समान जानने ।

नदीनिष्पावगुणाः ।

नदीनिष्पावकस्तिक्तःकटुर्वातकरोगुरुः ।
रक्तप्रदःकफकरोरुचिकृत्तुवरोमतः ॥
विषदोषहरश्चैवमुनिभिः परिकीर्त्तितः । (नि०र०)

अर्थ-नदीनिष्पाव-कडवा, चरपरा, वातकारक, भारी, रक्तकारक, कफकारक, रुचिजनक, कषेला और विषके दोषोंको हरनेवाला है ।

मसूरनामानि ।

मसूरोरागदालिस्तुमङ्गल्यःपृथुबीजकः ।
सूरःकल्याणबीजश्चगुरुबीजोमसूरकः ॥

अर्थ-मसूर, रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याणबीज, गुरुबीज, मसूरक (मङ्गल्यक, मसुर, व्रीहिकाश्चन, गभोलिक, ताम्बूलराग, हालासक, मसुरा, मसूरा, मसूरिका, मसूरि, मङ्गल्या, माङ्गल्या)

संस्कृतभाषामें	मसूर ।
हिन्दीभाषामें	मसूर ।
वंगभाषामें	मुसुरि, कलाय ।
मराठीभाषामें	मसूर ।
गुजरातीभाषामें	मसूर ।
कर्णाटकीभाषामें	चणगी ।

तैलिंगीभाषामें	मसूरपप्पु, चिरशनमछु ।
तामिलीभाषामें	मिसुर, पुरपुर ।
इंग्रेजीभाषामें	लेंटिल । Lentil
लैटिन्भाषामें	ईरवेलेन्स । Eravylens
फारसीभाषामें	बुनोमुर्स ।
अरबीभाषामें	अदस् ।

मसूरगुणाः ।

मसूरोमधुरःशीतःसंग्राहीकफपित्तजित् ।
वातामयकरश्चैवमूत्रकृच्छ्रहरोलघुः ॥ (रा०नि०)

अर्थ—मसूर—मधुर, शीतल, मलरोधक, कफपित्तनाशक, वातरोगको करनेवाली, हलकी और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रूक्षोविशोषीमधुरःप्रदिष्टःशूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान् ।
करोतिवातामयवर्द्धनश्चपित्तास्रसंकृच्छ्रहरोमसूरः ॥(हा.सं.)

अर्थ—मसूर—रूखी, विशोषक, मधुर तथा शूल, गुल्म और संग्रहणीरोगको उत्पन्न करनेवाली है, वातरोगोंको बढानेवाली तथा रक्तपित्तऔर मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मासूरालघवोतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहाः
श्लेष्मापित्तनिबर्हणारुचिकरावातव्यथाकारकाः ।
विष्टम्भंजनयन्तिकोष्ठधमनंकृच्छ्राश्मरीछेदकाः
सर्वेपित्तविकारजेषुविहिताहृद्याश्चमाधुर्यकाः ॥

अर्थ—मसूर—हलकी, अत्यन्तरूखी, विशद, नेत्रोंको हितकारी मूत्रग्रहनाशक, श्लेष्मपित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरोधक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोंको दूर करे है हृदयको हितकारी और मधुर है ।

अपिच ।

मसूरोलेपनोवर्ण्योरूक्षोबद्धमलोहिमः ।
वाताध्मानकरःकिञ्चित्पित्तास्रकफहालघुः ॥

कषायोमधुरोमेदोहंताचासौप्रकीर्त्तितः ।
तत्पर्णशाकंतुवरंलघुतिक्तञ्चकीर्तितम् ॥

अर्थ-मसूरका लेप-वर्णको सुंदर करनेवाला और त्वचाके रोगोंको हरनेवाला है, मसूर-रूखी, मलवर्द्धक, शीतल, वातकारक, किंचित् आध्मानकारक, रक्तपित्त और कफनाशक, हलकी, कषेली, मधुर, मेदनाशक है। इसके पत्तोंका शाक-कषेला, हलका और कडवा है।

चणकनामानि।

चणकोहरिमन्थःस्याद्वाजिमन्थश्चजीवनः ।

अर्थ-चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ, जीवन (हरिमन्थक, हरिमन्थज, चण, सुगन्ध, कृष्णचञ्चुक, वालभोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकी, वालभैषज्य, सकलप्रिय)

संस्कृतभाषामें	चणक।
हिन्दीभाषामें	चने, चना, छोला।
बंगभाषामें	छोलारगाछ, वुट्।
मराठीभाषामें	हरभरे।
गुजरातीभाषामें	चण्या।
कर्णाटकीभाषामें	कडले, विलीयकडले।
तैलङ्गीभाषामें	शलंगाळु।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राम। Gram
लैटिन्भाषामें	सीसरएरिएटिनं। Cicer Arietinum
फारसीभाषामें	नखूद।
अरवीभाषामें	हुमस्।

चणकगुणाः।

चणकःशीतलोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ।
लघुःकषायोविष्टम्भीवातलःकुष्ठनाशनः ॥ (म.नि.)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनिवारक, कफहारक, हलके, कषैले, विष्टम्भकारक, वातवर्धक और कुष्ठनाशक हैं।

अन्यच्च।

चणकोमधुरोरूक्षोमेहजिद्वातपित्तकृत् ।

दीप्तिवर्णकरोबल्योरुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चने-मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं ।

अपिच ।

रक्तेकफेपीनसकेतुकण्ठेगलामयेवातरुजेसपित्ते ।
शीतःप्रतिश्यायकृमीन्निहन्तिशुष्कस्तथार्द्रश्चणकःप्रशस्तः ।
(हा०सं०)

अर्थ-सूखे तथा गीले चने-रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग, गलरोग, वातरोग, पित्तरोग, प्रतिश्याय और कृमिरोगको दूर करे हैं और शीतल हैं ।

अन्यच्च ।

चणकोवातलःशीतःकफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-चनें-बादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः । लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः ॥ सचाङ्गारेणसंभृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणाः । आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्त्तितः ॥ शुष्कभृष्टोतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपनः । स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः । कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कषेले, विष्टम्भकारक, बादी और ज्वरनाशक हैं । वही चने अंगारों तथा तेलमें भुनेहुये पूर्वोक्त गुणोंको करनेवाले हैं । गीले भुनेहुये चने-बलकारक और रोचक हैं । सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढको कुपित करनेवाले हैं । सीजेहुये चने-पित्त और कफनाशक हैं । चनेकी दाल-क्षोभको करनेवाली है । कच्चे चने-अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक, शीतल, कषेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

आमश्चणःशीतलरुच्यकारीसन्तर्पणोदाहतृषापहारी ।

गौल्योश्मरीशोषविनाशकारीकषायईषत्कफवीर्य्यकारी।(रा.नि.)

अर्थ-कच्चे-चने-शीतल, रुचिकारक, तृप्तिजनक, दाहनाशक, तृषानिवारक, गौल्य, अश्मरीको दूर करनेवाले, शोषनाशक, किञ्चित्कषेले, कफ और वीर्य्यकारक हैं।

अपिच भृष्टचणकगुणाः।

भृष्टस्तुचणकश्चोष्णोरुच्योरक्तरुजाकरः। लघुर्बल्यःशुक्रलश्चतेजोवृद्धिकरःस्मृतः॥ विनाजलेनचभृष्टाश्चातिरूक्षाश्चवातलाः। कुष्ठप्रवर्द्धनाःप्रोक्ताशुणास्त्वन्येतुपूर्ववत्॥(र०नि०)

अर्थ-भुनेहुये चने-गरम, रुचिकारी, रक्तरोगकारक, हलके, बलकारक, शुक्रजनक, शरीरको तेज देनेवाले तथा पसीना, शीतलता, आम, वात और क्रमका नाशकरे हैं। सूखे भुनेचने अत्यन्त रूखे, बादी, कुष्ठवर्द्धक और गुण पहिलेके समान जानने।

कृष्णचणकगुणाः।

कृष्णस्तुचणकःशीतोमधुरश्चरसायनः।
बलकृच्छ्वासकासघ्नःपित्तातीसारपित्तहा॥ (नि०र०)

अर्थ-काले चने-शीतल, मधुर, रसायन, बलकारक तथा श्वास, खांसी, पित्तातीसार और पित्तको दूर करेहैं।

चणकशाकगुणाः।

चणकानांदलंचाम्लंकिञ्चिद्वातप्रकोपनम्।
मलस्तम्भकरंरुच्यंतर्पणंचाग्निकारकम्॥
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैःकृपालुभिः॥ (र०नि०)

अर्थ-चनेका शाक-अम्ल, किंचित् वातकारक, मलस्तम्भक, रुचिजनक, तृप्तिकारक, अग्निकारक और कफनाशक है।

अन्यच्च।

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत्।
अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुद्दन्तशोथहृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-चनेके पत्तोंका शाक-कषेला, कठिनतासे पचनेवाला, कफ और वातकारक, अम्ल, विष्टम्भजनक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूरकरेहै।

आढकीनामानि ।



आढकीतुवरीवर्य्यामृत्तालंचमृतालकम् ।
काक्षीकरवीरभुजावृत्तबीजासुराष्ट्रजम् ॥

अर्थ-आढकी, तुवरी, वर्य्या, मृत्ताल, मृतालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तवीजा, सुराष्ट्रज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृतालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	आढकी ।
हिन्दीभाषामें	अडहर ।
वंगभाषामें	अडहर, आइरि ।
मराठीभाषामें	तुरी ।
गुजरातीभाषामें	तुरदाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कटलाकट्टु, तौगरी ।
तैलिंगीभाषामें	कादुल्ठ ।
इंग्रेजीभाषामें	पीजीअनपी । Pigeon pea
लैटिन्भाषामें	केजेनस इंडिकस । Cajanus indicus
फारसीभाषामें	शाखुल ।

आढकीगुणाः ।

मृदुःकषायाचसरक्तपित्तंवातंकफंहन्तिमुखव्रणञ्च ।
गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकीस्यात् ।(हा.)

अर्थ-अडहर-कषेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खांसी, वमन, हृदयरोग और ववासीरको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

तुवर्यतिकषायाचमेदःश्लेष्मास्रपित्तजित् ।
विबन्धाध्मानकृत्स्वादुःस्वादुपाकाल्पवातला ॥
शीतलाबद्धविण्मूत्रालघ्वीरूक्षाप्रकीर्त्तिता । (शो०नि०)

अर्थ-अडहर-अत्यन्त कषेली, मेद, कफ और रक्तपित्तनाशक है, विबन्धकारक, आध्मानकारक, स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ, किञ्चित् वातकारक, शीतल, मल और मूत्रको बाँधनेवाली, हलकी और रूखी है ।

अपिच ।

आढकीमधुराकिञ्चिद्वातलाचकषायका । गुर्वीरुच्याग्राहिणीचरूक्षावर्ण्याचशीतला॥कफपित्तज्वरविषरक्तरुग्गुल्मवातनुत् । अर्शोनाशकराप्रोक्ताघृतयुक्ताचवातहा ॥ कफपित्तहरालेपैःसेकैर्मेदकफापहा । तुवरीदालिकापथ्याकिञ्चिद्वातकरामता ॥ कृमित्रिदोषशमनीघृतयुक्तात्रिदोषहा ।

अर्थ-साधारण अडहर-मधुर, किञ्चित् वातकारक, कषेली, भारी, रुचिकारी, मलरोधक, रूखी, वर्णकारक, शीतल तथा कफ, पित्तज्वर, विष, रुधिरविकार, गुल्म, वात और बवासीरको दूर करेहै और घीके साथ वातका नाशकरेहै । इसका लेप करनेसे कफ और पित्तका नाश होताहै । इसका सेक करनेसे मेद और कफ दूर होते हैं । इसकी दाल-पथ्य, किञ्चित् वातकारक तथा कृमि और त्रिदोषका नाशकरेहै और घीयुक्त त्रिदोषनाशक है ।

श्वेताढकीगुणाः ।

श्वेतातुवरीगुर्वीवातपित्तप्रकोपदा ।
अम्लपित्तकराग्राहिण्यपथ्याध्मानकारिणी ॥

अर्थ-सफेद अडहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अम्लपित्तकारक, मलरोधक, पथ्य और आध्मानकारक है ।

रक्ताढकीगुणाः ।

रक्तातुवरीरुच्याबल्यापथ्याज्वरापहा ।
पित्तसन्तापादिनानारोगनाशकरीमता ॥

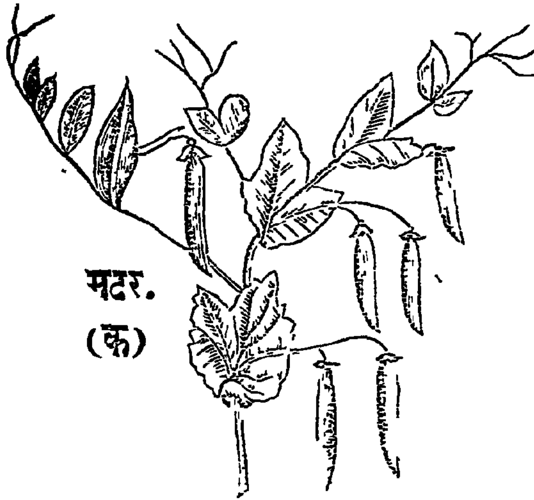
अर्थ-लाल अडहर-रुचिकारक, बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करैहै ।

कृष्णाढकीगुणाः ।

कृष्णातुतुवरीबल्याचाग्निदीप्तिकरामता ।
पित्तदाहप्रशमनीऋषिभिःपरिकीर्त्तिता ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-काली अडहर-बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शान्ति करनेवालीहै ।

कलायनाम.नि ।





कलायोमुण्डचणकोहरेणूरेणुकःस्मृतः ॥

अर्थ-कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, (सतीलक, हरेणु, खण्डिक,

त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, नीलक, कण्टी, सतील, सतीन, हरेणुक, सतीनक)

संस्कृतभाषामें	कलाय ।
हिन्दीभाषामें	मटर, केराव ।
वंगभाषामें	वाँटुला मटर, मठर, तेओडा मटर ।
मराठीभाषामें	वाटाणे ।
गुजरातीभाषामें	मटाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	वट्टकडले ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दइब्वे ।
इंग्रेजीभाषामें	फील्डपी । Field pea
लैटिन्भाषामें	पाईसम् सेटाइवम् । Pisum sativum

अस्य गुणाः ।

कलायःकुरुतेवातंपित्तंदाहकफापहः ।
रुचिपुष्टिप्रदःशीतःकषायश्चामदोषकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मटर-वातकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, कफहारक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, शीतल, कषेली और आमदोषको करे है ।

अन्यच्च ।

कलायोमधुरःस्वादुःपाकेरूक्षश्चशीतलः ।
"रक्तहाकफपित्तघ्नोभिन्नविड्कोतिवातलः" ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मटर-(केराव)-मधुर, पचनेमें स्वादिष्ठ, रूखी, शीतल, रुधिरविकारनाशक, कफपित्तहारक, मलको निकालनेवाली और वातको करनेवाली है ।

अपिच ।

किञ्चित्कषायामधुराःप्रदिष्टारक्तप्रशान्तिंजनयन्तिबल्याः ।
किञ्चित्सवातंविनिहन्तिपित्तंकलायकामुद्गसमानरूपाः ॥ हि. सं.

अर्थ-मटर-किञ्चित्कषेली, मधुर, रक्तविकारको शान्ति करनेवाली, वलकारक, किंचित् वात और पित्तको दूर करे है । यह रूपमें मूँगकी समान होतीहै ।

त्रिपुटनामानि ।

त्रिपुटःखण्डिकोपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

संस्कृतभाषामें	त्रिपुट, सण्डिक ।
हिन्दीभाषामें	खेसारी, कसूर+कस्सा ।
वंगभाषामें	खेसारिकलाय ।
मराठीभाषामें	लांग, लांक ।
गुजरातीभाषामें	मटर् ।
तैलिङ्गीभाषामें	लांक ।
इंग्रेजीभाषामें	चिकिलिंगवेच । Chickling Vetch
लैटिन्भाषामें	लेथिरस् सेटिवस् । Lathyrus Sativus
	पिसं एर्वेन्स । Pisum Arvens
फारसीभाषामें	मासंग, जलवान् ।
अरबीभाषामें	हब्बुल वकर, खलज ।

त्रिपुटगुणाः ।

त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम् ।
कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा ॥
किन्तुखञ्जत्वपङ्गुत्वकरोवातातिकोपनः । (भा०प्र०)

अर्थ–त्रिपुट (खेसारी)–मधुर, कडवा, कषैला, अत्यन्त रूखा, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, मलरोधक, शीतल, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खंजापन तथा लंगडेपनको देनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रूक्षोविशोषीमधुरःप्रदिष्टःस्नायुंकरोत्यस्थिगतंबलिष्ठम् ।
शूलंविबन्धभ्रमशोफकर्त्तादाहार्शहृद्रोगविकारकारी ॥(हा.सं.)

अर्थ–त्रिपुट (कस्सा)–रूखा, शोधक, मधुर, हड्डीकी नसोंको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सूजन, दाह, बवासीर और हृदयरोगको उत्पन्न करेहै ।

अपिच ।

लाङ्कस्तुशीतलोरुच्योमधुरोवातकारकः।गुरुश्चतुवरोरूक्षः कफपित्तविनाशकः ॥ वृषभाणांहितःप्रोक्तःपर्णशाकातुवातला। रुच्यापित्तकफानांतुहननीपरिकीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ–त्रिपुट तथा लांक–खेसारी–शीतल, रुचिकारक, मधुर, वातकारक,

भारी, कषेली, रूखी, कफपित्तनाशक और बैलोंको हितकारी है। इसके पत्तोंका शाक-बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है।

कुलित्थनामानि।

कुलित्थस्ताम्रबीजश्च श्वेतबीजः सितेतरः ॥

अर्थ-कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, (कालवृन्त, ताम्रवृक्ष, कुलत्थिका, ताम्रवृन्त, ताम्रबीज, कुलत्थ)

संस्कृतभाषामें	कुलित्थ।
हिंदीभाषामें	कुलथी।
वंगभाषामें	कुलथी, कलाय।
मराठीभाषामें	कुळीथ, हुलगे।
गुजरातीभाषामें	कलथी।
कर्णाटकीभाषामें	हुलुवलेतीसी।
तैलिंगीभाषामें	वुलावुलु।
इंग्रेजीभाषामें	टुफ्लावर्डडोलीकोस्। Two flowered dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलीकोस् बाईफ्लोरस्। Dolichos Bitloros
फारसीभाषामें	किलत, मुंखहिंदी।
अरबीभाषामें	हबुलकिलत।

कुलत्थगुणाः।

कुलत्थस्तु कषायोष्णो रूक्षो वातकफापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुलथी-कषेली, गरम, रूखी तथा वात और कफनाशक है।

अन्यच्च।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः।
गुल्मशुक्राश्मरीमेमेदःश्वासकासप्रमेहजित् ॥ (राज०)

अर्थ-कुलथी-कफवातनाशक, मलरोधक, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी, मेद, श्वास, खाँसी और प्रमेहको दूर करे है।

अन्यच्च।

कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत्। लघुर्विदाही वीर्य्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ॥ हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान्। स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कुलथी-पाकमें कटु, कषेली, रक्तपित्तकारक, हलकी, दाहजनक, उष्णवीर्य्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है। तथा पसीनेको रोकनेवाली है।

अन्यच्च।

उष्णोजयेन्मारुतपीनसंतुकासप्रतिश्यायविबन्धगुल्मान्।
हिक्कांसरक्तस्तुबलासपित्तंनिहन्तिमेदश्चकुलत्थकोऽयम्।(हा.)

अर्थ-कुलथी-गरम, वात, पीनस, खाँसी, प्रतिश्याय, विबन्ध, गुल्म, हिचकी, रक्त, कफ, पित्त और मेदोरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

वीर्य्येचोष्णाःकुलत्थाःकफपवनहराःपित्तरक्तप्रदाश्च
पाकेम्लाःश्वासकासोदरहृदयशिरोवस्तिशूलापहाश्च।
मूत्राघाताश्मरीघ्नानयनगदहराःशुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठादुर्नामकुष्ठश्वयथुगदयकृद्गुल्मतूनीगदेषु॥

अर्थ-कुलथी-उष्णवीर्य्य, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, पचनेमें, अम्ल तथा श्वास, खाँसी, उदररोग, हृदयरोग, शिरोरोग वस्तिशूल, मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग, शुक्र, बवासीर, कोढ, सूजन, यकृत, गुल्म, और तूनीरोगको हरनेवाली है।

अपिच।

उष्णाःकुलत्थाःपाकेम्लाविषंस्थावरजङ्गमम्।
कासार्शःकफवातांश्चघ्नन्तिपित्तास्रदाःपरम्॥ (वाग्भट)

अर्थ-कुलथी-गरम, पचनेमें अम्ल तथा स्थावरविष, जंगमविष, खाँसी, बवासीर, कफ और वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करेहै।

तिलनामानि।

तिलस्तुहोमधान्यंस्यात्पवित्रःपितृतर्पणः।
पापघ्नंपूतधान्यं च जटिलस्तुवनोद्भवः॥

अर्थ-तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पण, पापघ्न, पूतधान्य, जटिल, वनोद्भव (स्नेहफल, पूरफल, तैलफल)



संस्कृतभाषामें	तिल ।
हिन्दीभाषामें	तिल, कालेतिल, तिली ।
वंगभाषामें	तिलगाछ ।
मराठीभाषामें	तीळ, काळे तीळ, चोखे तीळ ।
गुजरातीभाषामें	तल ।
कर्णाटकीभाषामें	एळु ।
तैलिङ्गीभाषामें	तोवुल, सब्बिनूने, नुव्वुलु ।
तामिलीभाषामें	वाल्लेनय ।
द्राविडीभाषामें	वारिकतिल ।
इंग्रेजीभाषामें	सिसेम नैजरसीडस् । Sisamum Niger seeds
लैटिन्भाषामें	सिसेमस् इंडिकम् । Sesam Indicum
फारसीभाषामें	कुंजद् ।
अरबीभाषामें	सिमसिम ।

तिलगुणाः ।

तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः । विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तकृत् ॥ बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यःस्तन्योव्रणेहितः। दन्त्योल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोतिमतिप्रदः ॥ कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःस्मृतः । अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयस्तिलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तिल-चरपरे, कडवे, मधुर, कषेले, भारी, पचनेमें चरपरे, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण, कफपित्तकारक, बलवर्द्धक, केशोंको हितकारी, स्पर्शमें शीतल,

त्वचाको हितकारी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले व्रणरोगमें हितकारी, दाँतोंको हितकारक, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं। सर्वतिलोंमें काले तिल उत्तम हैं, सफेद तिल मध्यम हैं, यह वीर्य्यवर्द्धक हैं और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च।

"ईषत्कषायोमधुरःसतिक्तःसंग्राहिकःपित्तकरस्तथोष्णः।
तिलोविपाकेमधुरोबलिष्ठःस्निग्धोव्रणेलेपनपथ्यउक्तः॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्रःस्तन्योथकेश्योनिलहागुरुश्च।
तिलेषुसर्वेष्वसितःप्रधानोमध्यःसितोहीनतरास्तथान्ये॥"
(आ.सं.)

अर्थ-तिल-किञ्चित्कषेले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमें पथ्य, दाँतोंको हितकारी, अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, केशोंको हितकारी, वातहारी और भारी है। सर्व तिलोंमें काले तिल प्रधान है, सफेद मध्यम और दूसरे अधम है।

अस्य पिण्याकगुणाः।

पिण्याकंमधुरंरुच्यंतीक्ष्णंनेत्रविकारकृत्।
मलावष्टम्भकंरूक्षंकफवातप्रमेहनुत्॥
पित्तास्रबलपुष्टिञ्चददातीतिभिषङ्मतम्। (नि०र०)

अर्थ-तिलोंकी खल-मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करनेवाली, मलस्तंभक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशक है, रक्तपित्त, बल और पुष्टिको देनेवाली है।

अतसीनामानि।

अतसीपिच्छिलादेवीमदगन्धामदोत्कटा।
उमाक्षुमाहैमवतीसुनीलानीलपुष्पिका॥

अर्थ-अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका (चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मसृणा, तैलोत्तमा)



संस्कृतभाषामें	अतसी ।
हिन्दीभाषामें	अलसी, तिसी, मसीना ।
बंगभाषामें	मसिना, तिसी ।
मराठीभाषामें	जवस, अळशी ।
गुजरातीभाषामें	अळशी ।
कर्णाटकीभाषामें	असगे ।
तैलङ्गीभाषामें	नल्लपगासिचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	कामन् फ्लेक्ससीड् Common flaxseeds, Linseeds
लैटिन्भाषामें	लीनीसेमीना । Lini Semina
	लीनंउसिटेटिसिम । Linum Usitatissimum
फारसीभाषामें	तुख्मेकतान ।
अरबीभाषामें	बजरुलकतान ।

अतसीगुणाः ।

अतसीमदगन्धास्यान्मधुराबलकारिका ।
कफवातकरीचेषत्पित्तहृत्कुष्ठवातनुत् ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-अलसी-मदगन्धयुक्त, मधुर, बलकारक, किंचित् कफवातकारक, पित्तनाशक तथा कुष्ठ और वातको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः ।
उष्णाहृक्छुकवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-अलसी-मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमें चरपरी, भारी, गरम तथा दृष्टि, शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अतसीशुक्रदृष्टिघ्नीस्निग्धावातास्रजिद्गुरुः ॥ (म.नि.)

अर्थ-अलसी-शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातरक्तविनाशक और भारी है ।

अपिच ।

अतसीमधुरास्निग्धागुर्वीचोष्णाबलप्रदा ।
पाकेकट्वीचतिक्ताचकफवातव्रणापहा ॥
पृष्ठशूलंचशोथंचपित्तंशुक्रंदृशंजयेत् ।
पर्णमस्याःकासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि०र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमें चरपरी, कडवी तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाशकरेहै । इसके पत्ते-खाँसी, कफ, वात और श्वासको दूर करे हैं ।

सर्षपनामानि ।

सर्षपःकटुकस्नेहोभूतघ्नोरक्षिताफलः ।
उग्रगन्धोग्रहघ्नश्चतन्तुभोथकदम्बकः ॥

अर्थ-सर्षप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न, तन्तुभ, कदम्बक (सरिषप, कदम्बद, विम्बट, कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजक्षवक) ।

गौरसर्षपनामानि ।





तीक्ष्णकश्चदुराधर्षोरक्षोघ्नःकुष्ठनाशनः ।
सिद्धप्रयोजनःसिद्धसाधनःसितसर्षपः ॥

अर्थ-तीक्षणक, दुराधर्ष, रक्षोघ्न, कुष्ठनाशन, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन सितसर्षप (गौर, अनध्य, सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कण्डूघ्न, राजिकाफल, गुरुघ्न)

संस्कृतभाषामें	सर्षप, गौरसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	सरसों, सफेदसरसों ।
वंगभाषामें	सरिषा, सर्षे, श्वेतसर्षे ।
मराठीभाषामें	शिरस, श्वेतशिरस ।
गुजरातीभाषामें	शरशव ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयसासेव ।
तैलङ्गीभाषामें	पाच्चाअश्वालु ।
इंग्रेजीभाषामें	सिनापिस्आल्वा । Sinapisalba
लैटिन् भाषामें	ब्रेसिका कैंपेस्ट्रिस् । Brassficacampestris
फारसीभाषामें	सर्षफ ।
अरबीभाषामें	उर्फेअबीयद् ।

सर्षपगुणाः ।

सर्षपस्तुरसेपाकेकटुस्स्निग्धःसतिक्तकः। तीक्ष्णोष्णःकफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ॥रक्षोहरोजयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथारक्तस्तथागौरःकिन्तुगौरोवरोमतः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सरसों रस और पाकमें-चरपरी है, स्निग्ध, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, अग्निवर्द्धक तथा राक्षसबाधा, कण्डू, कुष्ठ, कोढ, कृमि और ग्रहकी बाधाको दूर करनेवाली है, लाल और सफेद सरसों समानही गुणवाली हैं, किन्तु तोभी सफेद सरसों लालकी अपेक्षा उत्तम है ।

अन्यच्च ।

सर्षपःकटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णश्चोष्णोग्निदीपनः । किञ्चिद्रूक्षः पित्तलश्चरक्तपित्तकरोमतः ॥ रूक्षोवातंकफंकण्डूंकुष्ठंशूलं कृमीञ्जयेत् ।ग्रहपीडांचपीडांचनाशयेदितिकीर्त्तितः॥(नि.र.)

अर्थ–सरसों–चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, किञ्चित् रूखी, पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है ।

सिद्धार्थगुणाः ।

सिद्धार्थःकटुकस्तिक्तोरुच्योष्णोवातरक्तकृत् ।
ग्रहपीडार्शत्वग्दोषशोथव्रणविषापहः ॥

अर्थ–सफेद सरसों–चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक तथा ग्रहपीडा, बवासीर, त्वचाके दोष, सूजन, व्रण और विषका नाश करे है ।

सर्षपशाकगुणाः ।

पर्णशाकासराचाम्लापित्तलातुवरागुरुः ।
स्वाद्वीचोष्णाचपट्वीचकफनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ–सरसोंके पत्तोंका शाक–सारक, अम्ल, पित्तकारक, कषेला, भारी, स्वादिष्ठ, गरम, खारी और कफहारी है ।

राजिकानामानि ।

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुज्जनिकासुरी ।
क्षवःक्षुताभिजनकःक्रिमिकःकृष्णसर्षपः ॥

अर्थ–राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काकोदुम्बरिका, रक्तिक, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा)

राजसर्षपनामानि ।

राजक्षवकःकृष्णातीक्ष्णफलाराजिकाराज्ञी ।
साकृष्णसर्षपाविज्ञेयाराजसर्षपाख्याच ॥

अर्थ–राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला, राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्षपा, राजसर्षप (कृष्णिका, सूरी, मुष्ठक, व्यष्टक, कटुक, क्षव, क्षुताभिजनन, क्षुधाभिजनन)


राई.

संस्कृतभाषामें	राजिका, राजसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	राई, लाई ।
वंगभाषामें	राइसर्षे, कालसर्षे, राजसर्षा, राइसरिषा ।
मराठीभाषामें	मोहरी, रायी ।
गुजरातीभाषामें	राई जम्बुसरी अने देशी ।
कर्णाटकीभाषामें	सासिराई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वर्णाछु ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्ड सीड्स् । Mustrd Seeds
लैटिन्भाषामें	सिनापिस् नाइग्रा ब्रोसेका नाइग्रा । Sinapis nigra, Brossica Nigra
अरबीभाषामें	खरदल ।

राजिकागुणाः ।

आसुरीकटुतिक्तोष्णावातप्लीहार्त्तिशूलनुत् ।
दाहपित्तप्रदाहन्तिकफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-राई-चरपरी, कडवी, गरम, वात, प्लीहा और शूलनाशक है। दाहजनक, पित्तकारक, तथा कफ, गुल्म, और कृमिरोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥
अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका । (भा०प्र०)

अर्थ–राई–कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किञ्चित् रूखी, अग्निवर्द्धक तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूर करेहै। काली राईके भी गुण राईकी समान हैं, विशेषकरके अत्यन्त तीक्ष्ण है।

राजसर्षपगुणाः।

राजसर्षपकश्चोष्णःपित्तलोदाहकारकः।
कटुस्तिक्तोगुल्मकुष्ठकण्डूव्रणरुजापहः॥
वातशूलंनाशयतीत्येवंपूर्वैर्निवेदितम्।

अर्थ–राजसर्षप–गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कडवी तथा गुल्म, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और वात शूलका नाश करेहै।

राजिकापत्रशाकगुणाः।

राजिकापर्णशाकातुकट्वीचोष्णाबलप्रदा।
स्वाद्वीपित्तकरीज्ञेयाकृमिवातकफापहा॥
कण्ठरोगहराचोक्तापूर्वैः सूज्ञचिकित्सकैः। (नि० र०)

अर्थ–राईके पत्तोंका शाक–चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ट, पित्तकारक, कृमिनाशक, वातकफनाशक और कण्ठरोगको दूर करे है।

तृणधान्यनामानि।

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम्॥

अर्थ–क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य।

तृणधान्यगुणाः।

तृणधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम्।
मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम्॥
वातकृद्बद्धविट्कश्चपित्तरक्तकफापहम्। (भा० प्र०)

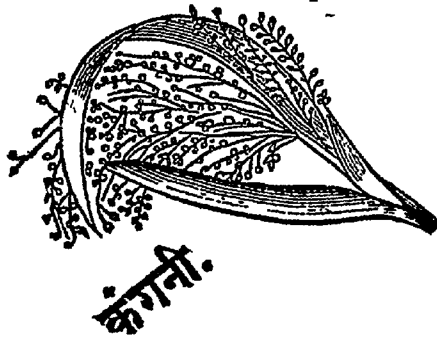
अर्थ–तृणधान्य–अनुष्ण, कषेले, हलके, लेखन, मधुर, पचनेमें चरपरे, रूखे, क्लेदशोषक, वातवर्द्धक, मलवन्धक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है।

अन्यच्च।

तृणधान्यंलघुस्वादुपाकेकटुचलेखनम्। मलबन्धकरंरूक्षं
तुवरंमधुरंमतम्॥ क्लेदशोषकरंचोष्णंवातलंपित्तलंतथा॥
कफनाशकरंचैवपूर्ववैद्यैरुदाहृतम्॥ (नि० र०)

अर्थ-तृणधान्य-हलके स्वादिष्ट, पाकमें कटु, लेखन, मलबंधक, रूखे, कषेले, मधुर, क्लेदशोषक, गरम, वादी, पित्तकारक और कफनाशक है।

कंगुनामानि।



स्त्रियांकंगुःप्रियंगुर्द्वेकृष्णारक्तासितातथा।
पीताचतुर्विधाकंगुस्तासांपीतावरास्मृता॥

अर्थ-कंगु, प्रियंगु (प्रियंगू, कंगू, कंगुका, कंगुनीका, कंगूनी, चीनक, पीततण्डुल)।

संस्कृतभाषामें	कंगु।
हिन्दीभाषामें	कंगुनी, कांगनी, कँगनी।
वंगभाषामें	कांगुनी, कांनिधान।
मराठीभाषामें	कांग।
गुजरातीभाषामें	कांग।
कर्णाटकीभाषामें	नवणे।
तैलिंगीभाषामें	कोर्रलु।
लैटिन्भाषामें	पेनिकं मिलियेस्यं। Panicum Miliaceum
फारसीभाषामें	गल।

कंगनी-काली, लाल, सफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें पीली कंगनी उत्तम है।

कंगुगुणाः।

कंगुस्तुवातसन्धानवातकृद्बृंहणोगुरुः।
रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कंगनी-भग्नसन्धानकारक, वातकारक, पुष्टिकारक, भारी, रूखी, कफनाशक और घोडोंके लिये अत्यन्त उपकारी है।

अन्यच्च।

प्रियङ्गुर्मधुरोरुच्यःकषायःस्वादुशीतलः।
वातकृत्पित्तदाहघ्नोरूक्षोभग्नास्थिसन्धिकृत्॥

अर्थ–कंगनी–मधुर, रुचिकारक, कषेली, स्वादिष्ठ, शीतल, वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी, भग्न और हड्डीको जोडनेवाली है।

अन्यच्च।

कङ्गुःशीतोवातकरोरूक्षोवृष्यःकषायकः। धातुवृद्धिकरः स्वादुर्गुरुश्चाश्वहितावहः॥ भग्नास्थिसन्धानकरोगर्भपाते हितावहः। कफपित्तहरश्चायंकृष्णरक्ताच्छपीतकैः॥ वर्णैश्चतुर्धासमतोगुणैश्चोत्तरतोधिकः॥

अर्थ–कंगनी–शीतल, वातकारक, रूखी, वृष्य, कषेली, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी, अश्वोंको हितकारी, भग्नास्थिसन्धानकारक, गर्भके गिरानेमें हितकारी, कफपित्तनाशक है, यह कृष्ण, रक्त, सुफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है, इनमें एकसे एकके अधिक गुण हैं।

चीनकनामानि।

चीनकःकाककंगुश्चसुश्लक्ष्णःश्लक्ष्णकःस्मृतः॥

अर्थ–चीनक, काककंगु, सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कंगु)।

संस्कृतभाषामें	चीनक।
हिंदीभाषामें	चीना, चैना।
वंगभाषामें	चिने।
मराठीभाषामें	राळे।
गुजरातीभाषामें	चीणो।
कर्णाटकीभाषामें	चीनक।
इंग्रेजीभाषामें	मीलेट। Millet
लैटिन्भाषामें	पेनिकंमिलियेरी। Panicum Miliari
फारसीभाषामें	उरजान।
अरबीभाषामें	बारेगा।

चीनकगुणाः।

चीनकःकङ्गुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः॥ (भा.प्र.)

अर्थ-चीनाधान कंगनीका भेद है। इसकारण इसके गुणभी कंगनीकी समान जानने।

नीवारनामानि।



नीवारोरण्यधान्यंस्यान्मुनिधान्यंतृणोद्भवम् ॥

अर्थ-नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव (तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामें	नीवार।
हिंदीभाषामें	तिली, तीनी, तीली।
बंगभाषामें	उडीधान्य।
मराठीभाषामें	देवभात।
गुजरातीभाषामें	वंटी।
कर्णाटकीभाषामें	ज्यरहुमेधे।
तैलङ्गीभाषामें	निवरिवड्ढु।
लैटिन्भाषामें	पेनिकं इटालिकं। Panicum Italicum

नीवारगुणाः।

नीवारोमधुरःस्निग्धःपवित्रःपथ्यदोलघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-नीवारधान्य-मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और हलके हैं।

अन्यच्च।

नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-नीवारधान्य-शीतल, मलरोधक, पित्तनाशन तथा कफ और वातकारक है।

अपिच।

नीवारःश्लेष्मलोरूक्षःकषायोवातलोहिमः।

लेखनोबद्धविण्मूत्रःस्वादुःपित्तहरोलघुः ॥ (शो.नि.)

अर्थ-नीवारधान्य-कफकारी, रूखे, कषेले, वादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको वांधनेवाले, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक और हलके हैं ।

वरकनामानि ।

वरकःस्थूलकंगुश्चरूक्षःस्थूलप्रियंगुकः ।

अर्थ-वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियंगु (स्थूलकंगू)

वरकगुणाः ।

वरकोमधुरोरूक्षःकषायोवातपित्तकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वरक, (चीनाभेद)-मधुर, रूखे, कषाय और वातपित्तकारक है । यह कंगनीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	वरक ।
हिन्दीभाषामें	चीनाभेद ।
वंगभाषामें	चीनाविशेष ।
मराठीभाषामें	वऱ्या ।
गुजरातीभाषामें	वऱ्यो ।
लैटिन्भाषामें	पेनिकंमिलीयेरी कहते हैं ।

नर्त्तकनामानि ।



नर्त्तकोनृत्यकुण्डश्चभूचराचमलीयसः ।
कठिनोगुच्छकणिशोलञ्छनोबहुपत्रकः ॥

अर्थ-नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, वहुपत्रक ।

संस्कृतभाषामें	नर्त्तक ।
हिन्दीभाषामें	नर्त्तक मडुआ ।
मराठीभाषामें	नौचणी, नागली ।

गुजरातीभाषामें नागली ।
कर्णाटकीभाषामें टपिगुचणे ।
इंग्रेजीभाषामें फ्रिकूस्याइक्ड एल्युसीन । Thrick Spiked Elensinc
लैटिन्भाषामें इल्युसाइन कारेकेना । Elensine Coracana
फारसीभाषामें मंडवा ।

अस्य गुणाः ।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तोमधुरस्तर्पणोलघुः।बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रि-दोषशमनोमतः॥रक्तदोषहरश्चैवमुनिभिःपूर्वमीरितः।(नि.र.)

अर्थ-नर्त्तक-कषेले, कडवे, मधुर, तृप्तिकारक, हलके, बलकारक, शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्यामाकनामानि ।

श्यामाकःश्यामकःश्यामस्त्रिबीजःस्यादविप्रियः ।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः ॥

अर्थ-श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिबीज, अविप्रिय, सुकुमार, राजधान्य, तृणबीजोत्तम ।

संस्कृतभाषामें श्यामाक ।
हिन्दीभाषामें समा ।
वंगभाषामें शामाधान ।
मराठीभाषामें सांवे, काथली ।
गुजरातीभाषामें शामो ।
कर्णाटकीभाषामें संधे ।
तैलङ्गीभाषामें श्यामालु ।
लैटिनभाषामें पेनिकं फ्रुमेंटेइयं । Panicum Frumentaceum
ओपलिस् मेनम् फ्रूमेंटेइयं । Oplis menus Frumentaceum
फारसीभाषामें शामाख् ।

श्यामाकगुणाः ।

श्यामाकोमधुरःस्निग्धःकषायोलघुशीतलः ।
वातकृत्कफपित्तघ्नःसंग्राहीविषदोषनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-समा-मधुर, स्निग्ध, कषेला, हलका, शीतल, वातकारक, कफपित्तनाशक, मलरोधक और विषके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तनुत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-समा-शोषक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है ।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः ॥

अर्थ-कोद्रव, कोरदूष, (कुद्रव, कोरदूषक, कोरदुष्क, कोद्दार, कोद्दाल, कुद्दाल, मदनाग्रक, कोर्द्रव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वनकोदोंके हैं ।

संस्कृतभाषामें	कोद्रव ।
हिन्दीभाषामें	कोदों ।
वंगभाषामें	कोदोधान्य ।
मराठीभाषामें	हरीक, कोद्रू ।
गुजरातीभाषामें	कोदरो, जंगलीकोदरो ।
कर्णाटकीभाषामें	हारकं ।
तैलङ्गीभाषामें	आलुवालु ।
इंग्रेजीभाषामें	पंकचर्ड पासपेलं । Punctured Paspalum
लैटिन्भाषामें	पासपेलं स्क्रोबिक्युटेल्यम् । Paspalum Scrobicutalium
औत्कलीभाषामें	कोद्रु ।

कोद्रवगुणाः ।

कोद्रवोवातलोग्राही हिमःपित्तकफापहः ।

उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कोदों-वातकारक, मलरोधक, शीतल और पित्तकफनाशकहैं, वनकोदों-गरम, मलरोधक और वातकारक हैं ।

अन्यच्च ।

कोद्रवोमधुरस्तिक्तोव्रणिनांपथ्यकारकः ।

कफपित्तहरोरूक्षोमोहकृद्वातलोगुरुः ॥

अर्थ-कोदों-मधुर, कड़वे, व्रणरोगवालोंको पथ्य, कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी हैं ।

अन्यच्च ।

कोरदूषःपरंग्राहीस्पर्शशीतोविषापहः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कोदों-अत्यन्त मलरोधक, स्पर्शमें शीतल और विषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

रूक्षोग्राहीकोद्रवःस्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।
नात्यन्तकफकृत्प्रोक्तोरुच्यःस्वादुःप्रकीर्त्तितः॥(हा.सं.)

अर्थ-कोदों-रूखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यन्त कफकारक नहीं, रुचिकारी और स्वादिष्ठ हैं ।

अपिच्च ।

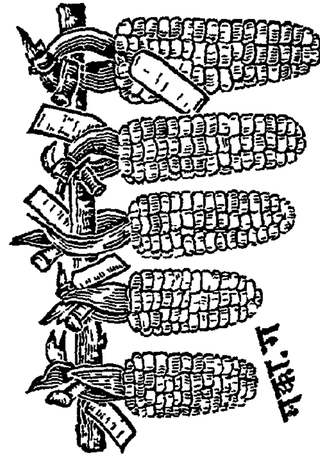
कोद्रवोबद्धविण्मूत्रोवातलोलेखनोलघुः ।
विषपित्तकफामघ्नोकषायोरक्तपित्तजित् ॥
स्पर्शःशीतःपरंग्राहीमधुरोरूक्षशीतलः ॥
उद्दालकस्तुवीर्य्योष्णोलेखनोवातलोलघुः ।
रूक्षःस्वादुःकषायश्चश्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-कोदों-मलमूत्रबद्धक, वातकारक, लेखन, हलके, विषविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कषेले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले, स्पर्शमें शीतल, अत्यन्तग्राही, मधुर, रूखे और शीतल हैं । वनकोदों-उष्णवीर्य्य, लेखन, बादी, हलके, रूखे, स्वादिष्ठ, कषेले, कफनाशक और मलमूत्रबद्धक हैं ।

कटिधान्यनामानि ।







मकायस्तुमहाकायोकटिजःकांडजःस्मृतः ।
शिखालुःसंपुटांतस्थोयावनालसमोगुणैः ॥

अर्थ–मकाय, महाकाय, कटिज, कांडज, शिखालु, संपुटांतस्थ । इसके गुण ज्वारकी समान हैं।

संस्कृतभाषामें	मकाय, महाकाय ।
हिंदीभाषामे	मक्का, भुंटे ।
मराठीभाषामें	मका ।
गुजरातीभाषामें	मकाई ।
तैलङ्गीभाषामें	जनपटलु ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन्‌कोर्नमेझ । Indian Corn Maize
लैटिन्‌भाषामें	झियामेझ । Zia-Maize

अस्य गुणाः ।

महाकायस्तृप्तिकरोवातलःकफपित्तहृत् ।
विष्टम्भजनकोरूक्षःकोमलोरुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ–तृप्तिकारक, वादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूखी है। कच्चीमक्का–पुष्टि और रुचिको करनेवाली है ।

गवेधुकानामगुणाश्च ।

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम् ॥

अर्थ-गवेधुका, गवेधु (गवेडु, गवेडुका, कुन्त,क्षुद्रा, गोजिह्वा,गुन्द्रगुत्थ)

गवेधुःकटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गरहेडुआ-कटु, स्वादिष्ठ, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वरट्टिका ॥

संस्कृतभाषामें	कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहते है ।
हिन्दीभाषामें	कर्र, कर ।
वंगभाषामें	कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कडर्चा ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बानावी ।
फारसीभाषामें	तुख्मकाफशा ।
अरबीभाषामें	हबुल् अस्फर ।

अस्या गुणाः ।

वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ।

कषायाशीतलागुर्वीस्वादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कर्र-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कषेली, शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुकनामगुणाश्च ।

चारुकःशरबीजंस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।

चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥

शीतलोलघुवृष्यश्चकषायोवातकोपनः । (भा० प्र०)

अर्थ-सरपत्तेके बीजोंको चारुक कहते हैं । चारुक-मधुर, रूक्ष, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु, वृष्य, कषाय और वातको कुपित करे है ।

वेणुयवगुणाः ।

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ।

बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वांसके चावल-रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकारक और सारक हैं। इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिखचुके हैं।

यवनालगुणाः।

यवनालोहिमःस्वादुर्लोहितःश्लेष्मपित्तजित्।
अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितोलघुः (भा० प्र०)

अर्थ-पुनेरा-शीतल, स्वादिष्ठ, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है।

नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः।

धान्यंसर्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम्। तत्तुवर्षोषितंपथ्यं यतोलघुतरंहितम्॥ वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुञ्चति। नतुत्यजतिवीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम्॥ एतेषुयवगोधूमतिलमाषानवाहिताः।पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः स्वस्थान्प्रतिहिताः पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः॥

अर्थ-सर्व नये धान्य-स्वादिष्ठ, भारी और कफको करनेवाले कहेहैं। एक वर्षके वीतजानेपर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोडदेतेहैं किन्तु अपने २ वीर्यको नहीं त्यागते क्रमसे दो वर्षके पीछे वीर्यकोभी छोडदेते हैं। इनमें जौ, गेहूं, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने वेरस, रूखे और गुणकारीभी नहीं हैं। यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं। किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्गः समाप्तः॥ १०॥

अथ शाकवर्गः।

पत्रंपुष्पंफलंनालंकन्दंसंस्वेदजंतथा।
शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम्॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कंद और संस्वेदज इन भेदोंसे शाक छः प्रकारका है इनमें एकसे दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फल, फलसे नाल, नालसे कंद और कन्दसे संस्वेदज भारी है ।

शाकदोषाः ।

प्रायःशाकानिसर्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच । रूक्षातिबहुवर्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ शाकंभिनत्तिवपुरस्थिनिहन्ति नेत्रं वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् । प्रज्ञाक्षयंचकुरुतेपलितंचनूनं हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ शाकेषुसर्वेषुवसंतिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय । तस्माद्बुधः शाकविवर्जनन्तु कुर्य्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः ॥

अर्थ-दोष और गुण-प्रायः सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, रूखे, बहुमल करनेवाले तथा विष्ठा और अधोगत वातको करनेवाले हैं । शाक-शरीर, हड्डी, नेत्र, रक्त, शुक्र और बुद्धिका नाश करे है । स्मरणशक्तिको हरेहै, गतिशक्तिको दूर करे है और विनासमयकेही बालोंको धवल करे है । सर्व प्रकारके शाकोंमें रोग रहते हैं और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु हैं, इसकारण बुद्धिमान् शाक भोजन करना छोडदेवे और ऐसेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् खटाईमें हैं, सो खटाईभी त्यागने योग्यहै ।

शाकंसर्वमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपंचकम् ।
जीवन्तीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादःपुनर्नवा ॥

अर्थ-सर्वप्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी हैं, किन्तु जीवन्ती, वास्तूक, मत्स्याक्षी, चौलाई और पुनर्नवा यह पांच शाक हितकारी हैं ।

तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि ।

वास्तूकंवास्तुकश्चस्यात्क्षारपत्रश्चशाकराट् ।
तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तंस्याद्गौडवास्तुकम् ॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, (पांशुपत्र, शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, कङ्कोल, घनाघन, वास्तु, वसुक, हिलमोचिका, शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती) । दूसरा लाल पत्तोंका होता है उसके पर्याय यह हैं गौडवास्तूक (चिल्ली, चिल्लिका, तुनी, अग्रलोहिता, मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्रा, वास्तुकी, महद्दला और गौडवास्तु)

संस्कृतभाषामें	वास्तूक, गौडवास्तूक।
हिन्दीभाषामें	वथुआ, चिल्ली, बडा वथुआ।
वंगभाषामें	वेतुया, वेतोशाक।
मराठीभाषामें	चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी।
गुजरातीभाषामें	टांको, चील।
कर्णाटकीभाषामें	चक्रवर्ती, विलीपचिल्लीके।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाईट ग्रुजफूट White goose foot
	परपल् गुजफुट Purple goose foot
लैटिन्भाषामें	केनापाडपं आल्वं Chenopodum Album
	के. एट्रिप्लिसीस्। Che. atripolisis
फारसीभाषामें	मुसेलेसा सरमक।
अरबीभाषामें	रोकूवतुल वजामेल कुतुफ।

वास्तूकगुणाः।

वास्तूकोऽग्निकरोरसेचमधुरःपित्तापहश्चक्षुषः
स्निग्धोवातविनाशनःकृमिहरःपित्तादिदोषापहः।
वर्चोमूत्रविशोधनःप्रथमतःश्लेष्मामयानांतथा
शाकानामपिचोत्तमोलघुतरःपथ्यःसदाप्राणिनाम्॥

अर्थ-वथुआ-जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, कृमिनाशक, पित्तादिदोषनाशक, मलमूत्रविशोधक, शाकोंमें उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है।

अन्यच्च।

सक्षारःकृमिजित्त्रिदोषशमनःसंदीपनः पाचन-
श्चक्षुष्योमधुरःसरोरुचिकरोविष्टम्भशूलापहः।
वर्च्चोमूत्रविशोधनःस्वरकरःस्निग्धोविपाकेगुरु
र्वास्तूकःसकलामयप्रशमनश्चिल्लीतदेवोत्तमा॥

अर्थ-वथुआ-क्षारयुक्त, कृमिनाशक, त्रिदोषनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध, पाकमें भारी और सर्व

प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाला है । चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ इससेभी उत्तम है ।

अन्यच्च ।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारीविस्रंसनोबुद्धिबलाग्निकारी ।
क्षारोविपाकेकटुवास्तुकःस्यात्तद्वच्चचिल्लीलघुपत्रयुक्ता।(सुषेण)

अर्थ-बथुआ-बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विस्रंसन, बुद्धिजनक, बलकारक, जठराग्निवर्द्धक, क्षार- विपाकमें कटु और चिल्लीके गुणभी इसीकी समान हैं ।

अपिच ।

वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम् ।
दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम् ॥
सरंपित्तास्रप्लीहास्रकृमिदोषत्रयापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके बथुए-स्वादिष्ठ, क्षार, पाकमें कटु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, हलके, शुक्रजनक, बलकारक, कुछेक दस्तावर, रक्त, पित्त, प्लीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

वास्तुकंमधुरंहृद्यंवातपित्तार्शसांहितम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-बथुआ-मधुर, हृदयको हितकारी तथा वात, पित्त और बवासीररोगवालोंको हितकारी है ।

चिल्लीगुणाः ।

चिल्लीवास्तुकतुल्याचसक्षाराश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नीपथ्याचरुचिकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ-बथुएकी समानही गुणवाला है, क्षार, कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है। बथुआ जौ और गेहूँके खेतमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै इसके पत्तोंमें खार बहुत होताहै और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

लोणीबृहल्लोणीनामानि ।

लोणालोणीचकथिताबृहल्लोणीचघोलिका ॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका ।

संस्कृतभाषामें लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका ।

हिंदीभाषामें	लोनी, नोनिया. कुल्फा ।
वंगभाषामें	वडणुनी, क्षुदेणुनी, वनणुनी ।
मराठीभाषामें	घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ ।
गुजरातीभाषामें	लुणी झीणी, लुणी मोटी ।
कर्णाटकीभाषामें	गोलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	अईलकुस ।
तामिलीभाषामें	कोरिलकीरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	पर्सलेन । Purs lane
लैटिन्भाषामें	पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca oleracea
फारसीभाषामें	खुरफा ।
अरवीभाषामें	वक्लतुलहुमक्का ।

लोणीगुणाः ।

लोणीरूक्षागुरुःकट्वीवातश्लेष्महरीपटुः ।
अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी ॥

अर्थ–लोणी अर्थात् नोनियाका शाक–रूखा. भारी, कटु, वातकफनाशक, खारी, अर्शरोगनाशक, दीपन, अम्ल, मन्दाग्नि और विषविनाशक है।

घोलिकागुणाः ।

घोलिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत् ।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् ॥
पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

अर्थ–घोलिका अर्थात् बडी नोनिया, कुलफा–अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रणविनाशक, गुल्मनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक, पित्तजनक, अम्ल तथा संग्रहणी, ववासीर कुष्ठ और अतिसारको दूर करे है।

अन्यच्च ।

घोलिकारुचिदापटीपित्तलाचाम्लिकामता ।
सराकफव ।चोष्णावातत्वग्दोषनाशिनी ॥
गुल्मव्रण ।सकासनेत्ररुङ्मेहशोथहा ।

अर्थ–नोनिया–रु .चकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल, सारक, कफकारक,

गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

राजपूर्वाघोलिकातुरूक्षाचाम्लापटुःस्मृता ।
रुच्याकट्वीचगुर्वीचदीपिकाग्नेःकफापहा ॥
वातंचार्शचाग्निमांद्यंविषंशुक्रंचनाशयेत् ॥

अर्थ-बडी लोणी-रूक्ष, अम्ल, खारी, रुचिकारक, कटु, भारी, अग्निप्रदीपक, कफनाशक तथा वात, बवासीर, मन्दाग्नि, विष और शुक्रका नाश करे है ।

क्षुद्रघोलिकागुणाः ।

क्षुद्रघोलिकापित्तलासराकफकरीचकट्वीजीर्णजूर्तिहा ।
श्वासकासहागुल्मनाशिनीमेहशोथहासारसायनी ॥
वातहामताचोष्णकारिणीचाम्लिकामतानेत्ररोगहा ।
चर्मदोषहाव्रणहरीमतापूर्ववैद्यकैःसानिरूपिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटेपत्तोंके नोनियाका शाक-पित्तजनक, सारक, कफकारक, कटु, जीर्णज्वरनाशक और श्वास, खांसी, वायगोला, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाला है, रसायन, वातविनाशक, गरम, खट्टा तथा नेत्ररोग, चर्मविकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिया और कुल्फा यह दोनों गीली और रेतीली तथा खारी जमीनमें उत्पन्न होते हैं ।

चुक्रनामानि ।



चुक्रंतुचुक्रवास्तूकंलिकुचंचाम्लवास्तुकम् ।

दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका ॥

अर्थ–चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिकुच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधनी) ।

संस्कृतभाषामें	चुक्र, चुक्रिका ।
हिन्दीभाषामें	चूका, चूकाकाशाक ।
वंगभाषामें	चुकापालङ ।
मराठीभाषामे	आंवटचुका, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	चुको खाटी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलिचकोत ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लेडरडाक । Bladdered Dock
लैटिन्भाषामें	रुमेक्स वेसिकेरिपस् । Rumex vesicarips
फारसीभाषामें	तुरशक बडा तुर्रे खुरासानी छोटा ।
अरवीभाषामें	हुमाजवुकले हामेजा ।

अस्य गुणाः ।

चुक्रोग्निदीपनश्चोष्णोरुचिकारीलघःस्मृतः । पित्तलःसारकःपथ्योह्यत्यम्लःशूलनाशकः ॥ गुल्माग्निमांद्यहृत्पीडाबद्धविट्कामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्मापहोमतः । वातंचमुखवैरस्यंनाशयेदितिकीर्त्तितः॥(नि०र०)

अर्थ–चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक, पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमांद्य, हृदयकी पीडा, मलबद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे है तथा स्वादिष्ठ है ।

अन्यच्च ।

चुक्रकंदुर्जरंभेदिवातजित्पित्तलंगुरु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ–चूका–दुर्जर अर्थात् कठिनतासे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषोबाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः ॥
दीर्घनालोरक्तपर्णोबिन्दुपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, वाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरसा सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरसाकी नाल वडी होती है, पत्ते लाल होते हैं और पत्तोंके ऊपर विन्दु होते हैं ।

संस्कृतभाषामें	मारिष ।
हिन्दीभाषामें	सफ़ेद मरसा, लाल मरसा, नवडा ।
वंगभाषामें-	श्वेतकॉटानटेरशाक, लाल कॉंट्रानटेरशाक ।
मराठीभाषामें	पोकळचाची भाजी, माठाची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	डांभो ।
औत्कलीभाषामें	नेउटाशाग ।
तैलिङ्गीभाषामें	डुगलकुरा ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् ट्रिकलर । Amaranthus tricolor

मारिषगुणाः ।

मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गुरुः।वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्॥रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः। श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मरसा-मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारक, रक्तपित्तनिवारक और अग्निकी विषमताको दूर करे है । लाल मरसा-अत्यन्त भारी नहीं, क्षार, मधुर, सारक, कफकारक, पचनेमें चरपरा और स्वल्पदोषयुक्त है ।

अन्यच्च ।

मारिषोरोचकःशीतोगुरुर्मेदस्त्रिदोषजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-मरसा-रुचिकारक, शीतल, भारी तथा मेदरोग और त्रिदोषनाशक है ।

तण्डुलीयनामानि ।

तण्डुलीयोमेघनादःकाण्डेरस्तण्डुलेरकः ।
भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥

अर्थ--तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीवीज, विषघ्न, अल्पमारिष (तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तंडुलीयक, ग्रन्थिल, वहुवीर्य्य, घनस्वन, सुशाक, पथ्यशाक, स्फूर्ज्जथु, स्वनिताह्वय, वीर, तण्डुलनामा)

कञ्चटनामानि ।

पानीयंतण्डुलीयंयत्तत्कञ्चटमुदाहृतम् ॥

अर्थ--पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिष जलज)

संस्कृतभाषामें	तण्डुलीय, कञ्चट ।
हिंदीभाषामें	चौलाईका शाक, जलचौलाई ।
वंगभाषामें	क्षुदेनटे, चांपानटे, गोयाल, कांचडादाम ।
मराठीभाषामें	तांदुळजा, चवळाई ।
गुजरातीभाषामें	तांजलजो ।
तैलिङ्गीभाषामें	मोलाकुरा, कुईकोरा ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुकुशाले ।
तामिलीभाषामें	मुल्लुक्किरइ ।
द्राविडीभाषामें	काण्डेमाट ।
इंग्रेजीभाषामें	हरमेफ्रोडाईट एमेरेंथ Hermaphrodite Amaranth
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् टेन्युईफोलियस् Amaranthus Tenifolius
फारसीभाषामें	सुपेजमर्ज ।
अरबीभाषामें	बुकलेयमानीय ।

तण्डुलीयगुणाः ।

तण्डुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—चौलाई—हलकी, शीतल, रूखी, पित्तकफनाशक, रक्तविकारविनाशक, मलमूत्रनिःसारक, रुचिकारक, दीपन और विषहारक है ।

अन्यच्च ।

तण्डुलीयस्तुशिशिरोमधुरोविषनाशनः ।
रुचिकृद्दीपनः पथ्यःपित्तदाहभ्रमापहः ॥

अर्थ—चौलाई—शीतल, मधुर, विषनाशक, रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है ।

अपिच ।

रसेविपाकेमधुरोऽतिशीतोरूक्षस्तृषारोचकनाशनश्च ।
सदाहपित्तंरुधिरंविषंचविशेषतोहन्तिचतण्डुलीयः ॥

अर्थ-चौलाई-रस और विपाकमें मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखी तथा तृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करे है।

अन्यच्च।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नंतण्डुलीयकम्।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है।

अस्य पत्रगुणाः।

तण्डुलीयकदलंहिममर्शःपित्तरक्तविषकासविनाशि।
ग्राहकंसमधुरंचविपाकेदाहशोषशमनंरुचिदायि॥ (रा.नि.)

अर्थ-चौलाईके पत्ते-छूनेमें शीतल, पित्तरक्तनाशक, विषघ्न, कासनिवारक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक हैं।

अस्य मूलगुणाः।

तण्डुलीयकमूलंस्यादुष्णंश्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरंरक्तपित्तप्रदरसंहरम्॥ (आ०सं०)

अर्थ-चौलाईकी जड-गरम, कफनाशक, रजरोधक तथा रक्तपित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

कञ्चटगुणाः।

कञ्चटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु। (भा०प्र०)

अर्थ-जलचौलाई-कडवी, हलकी तथा रक्तपित्त और वातका नाश करे है।

पालङ्क्यनामानि।



पालङ्क्यंतुपलंक्यायांमधुराक्षुरपत्रिका।
सुपत्रास्निग्धपत्राचग्रामिणीग्राम्यवल्लभा॥

अर्थ-पालङ्कच, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका, पालंक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा, पालंकी)।

संस्कृतभाषामें	पालङ्कच।
हिन्दीभाषामें	पालगका शाग।
वंगभाषामें	पालंशाक।
मराठीभाषामें	पालख, पोईशाक।
गुजरातीभाषामें	पालखनी भाजी।
कर्णाटकीभाषामें	पालक्य।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाईनेज Spinage
लैटिन्भाषामें	स्पाईनेइया ओलिरेइया Spinasia Oleracea
फारसीभाषामें	इस्यनाख।
अरबीभाषामें	अस्यनाख।

पालङ्कचगुणाः।

पालंक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः।
विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तविषापहा॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालगका साग-वादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भजनक तथा मद, श्वास, रक्तपित्त और विषका विनाश करेहै।

अन्यच्च।

पालंक्यमीषत्कटुकंमधुरंपथ्यशीतलम्।
रक्तपित्तहरंग्राहिज्ञेयंसन्तर्पणंपरम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-पालगका साग-किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्तनाशक, मलरोधक और तृप्तिकारक है।

अन्यच्च।

पालक्यामितिवर्णयन्तिसुधियोगुर्वींसरापिच्छिला।
शीताश्लेष्मकरीचरक्तशमनीपित्तंविषंनाशयेत्॥

अर्थ-पालगका साग-भारी, कुछेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है।

कुणञ्जरनामानि ।

कुणञ्जरःकुणञ्जीचकुणंजोरण्यवास्तुकः ।

अर्थ-कुणञ्जर, कुणञ्जी, कुणञ्ज, अरण्यवास्तुक (क्षेत्रशाक, सुशाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	कुणंजर ।
हिंदीभाषामें	लेसुवा ।
वंगभाषामें	वनवेतुया ।
मराठीभाषामें	कुणजीरु ।
गुजरातीभाषामें	कणेझरो, कणेझो ।
कर्णाटकीभाषामें	गोरेजेयपलेय ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेन्थस् पोलिगोनोइडिस् । Amaranthus Polygonoides

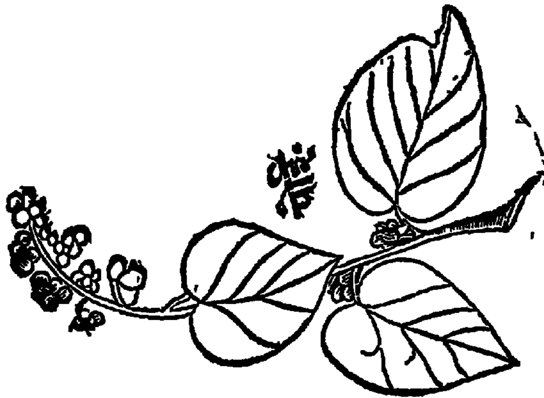
कुणञ्जरगुणाः ।

कुणञ्जरस्त्रिदोषघ्नोमधुरोरुच्यदीपकः ।
ईषत्कषायःसंग्राहीपित्तश्लेष्महरोलघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुणञ्जर-त्रिदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन, किंचित्कषेला; मलरोधक, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है ।

विवरण-कुणंजरके क्षुप वर्षातमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते चौलाईकी समान और बाल सफेद् तथा लालरंगकी निकलती हैं ।

उपोदकीनामानि ।



उपोदकीकलम्बीचपिच्छिलापिच्छिलच्छदा ।

मोहिनीमदशाकश्चविशालावलिपोदकी ॥

अर्थ-उपोदकी, कलम्बी, पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला, वलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकप्रिया, अपोदिका, पूतीका, पूतिका)।

संस्कृतभाषामें	उपोदकी, पोदकी।
हिंदीभाषामें	पोईका साग।
बंगभाषामें	पुंइशाक।
मराठीभाषामें	मायाळु, लघु व थोर।
गुजरातीभाषामें	पोथी।
इंग्रेजीभाषामें	रेडमलबारनाइटशेड। Red Malbar Night shabe
लैटिन्भाषामें	वर्सेला रुब्रा Bassella Ruba
	ब० आलवा। B. Alba

उपोदकीगुणाः।

उपोदकीकषायोष्णाकटुकामधुराचसा।
निद्रालस्यकरीरुच्याविष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ-पोईका शाक-कषेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आलस्यको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है।

अन्यच्च।

पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत्।
अकण्ठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तनुत् ॥
बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-पोईका शाक-शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको अहितकारी, पिच्छिल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक, रुचिकारक, पथ्य, पुष्टिकारक और तृप्तिजनक है।

अन्यच्च।

उपोदिकासरास्निग्धाबल्याश्लेष्मकरीहिमा।
स्वादुपाकरसावृष्यावातपित्तमदापहा ॥

अर्थ-पोईका शाक-कुछेक दस्तावर, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक, शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात, पित्त और मदनाशक है।

अपिच ।

उपोदकीद्वितीयाचक्षुद्रान्यावनजातथा ।
चतुर्थीमूलपोतीचगुणैःसर्वाःसमाःस्मृताः ॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटी पोई, वनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईकी समान हैं ।

विवरण । पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोंमें उत्पन्न होजाती है । बेलका रंग सफेद और लाल होताहै, पत्ते गोल होते हैं और बीज लाल होते हैं ।

सहस्रमूलीनामानि ।

काण्डपत्रीकोषपुष्पीघननीलसुमाशुभा ।
सहस्रमूलिकाज्ञेयावर्षाकालीचसास्मृता ॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोषपुष्पी, घननीलसुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली ।

संस्कृतभाषामें	सहस्रमूली ।
हिन्दीभाषामें	सहस्रमूली ।
मराठीभाषामें	वेलिची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	शिषमूली ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पैडरवर्ट । Spider Wort
लैटिन्भाषामें	कोमिलिया काम्युनास् । Comeyllia Communis

अस्या गुणाः ।

सहस्रमूलिकास्निग्धामधुरापित्तनाशिनी ।
किञ्चिद्वातकरीबल्यासराचैवरसायनी ॥

अर्थ-सहस्रमूली-स्निग्ध, मधुर, पित्तनाशक, किञ्चित् वातकारक, बलकारक, सारक और रसायन है ।

चञ्चुनामानि ।

चंचुश्चविजलाचञ्चूःकलभीभीरुपत्रिका ।
चञ्चूरश्चञ्चुपत्रश्चसुशाकःक्षेत्रसम्भवः ॥

अर्थ-चंचु, विजला, चंचू, कलभी, भीरुपत्रिका, चंचुर, चंचुपत्र, सुशाक, क्षेत्रसम्भव (चिञ्चा, चिंचुकी, दीर्घपत्री)

महाचञ्चुनामानि ।

बृहच्चंचुविषारिस्यान्महाचंचुःसुचंचुका ।
स्थूलचंचुर्दीर्घपत्रीदिव्यगन्धाचसप्तधा ॥

अर्थ—बृहच्चंचु, विषारि, महाचञ्चु, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु, दीर्घपत्री, दिव्यगन्धा ।

क्षुद्रचंचुनामानि ।

क्षुद्रचञ्चुस्तुचञ्चुःस्याच्चंचूःशुनकचंचुका ।
त्वक्साराभेदनीक्षुद्राकटुकापटुपत्रिका ॥

अर्थ—क्षुद्रचंचु, चंचु, चंचू, शुनकचंचुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पटुपत्रिका ।

संस्कृतभाषामें	चंचु ।
हिंदीभाषामें	चंचु, चेवुना ।
वंगभाषामें	चेचको ।
मराठीभाषामें	लघुचंचु, थोरचंचु ।
गुजरातीभाषामें	छुछ राजगरीनी भाजी ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिन्तचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	कार्कोरस् एक्युटेंग्युलेरीस् Corchorus acutangularis

चंचुगुणाः ।

चंचुस्तुमधुरातीक्ष्णाकषायामलशोषिणी ।
गुल्मोदरविबन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी ॥

अर्थ—चंचु—मधुर, तीक्ष्ण, कषेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदररोग, विबंध, बवासीर और संग्रहणी रोगको दूर करे है ।

महाचंचुगुणाः ।

महाचंचुःकटूष्णाचकषायामलरोधिनी ।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नीचरसायनी ॥

अर्थ—वडा चंचुका शाक—चरपरा, गरम, कषेला, मलरोधक, रसायन तथा गुल्म, शूल, उदररोग, बवासीर और विषका नाश करे है ।

क्षुद्रचंचुगुणाः ।

क्षुद्रचंचुस्तुमधुराकटूष्णाचकषायिका ।

दीपनीगुल्मशूलार्शःशमनीचविबन्धकृत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-क्षुद्रचंचु-मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, विबन्धकारक तथा गुल्म, शूल और बवासीरको दूर करे है।

अन्यच्च।

चंचुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रयापहा।
धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलिकास्मृता॥

अर्थ-चंचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, मेधाजनक और पिच्छिल है।

चंचुबीजगुणाः।

चंचुबीजंकटूष्णंचगुल्मशूलोदरार्त्तिजित्।
विषंत्वग्दोषकण्डूतिआखोर्दुष्टविषापहम्॥

अर्थ-चंचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, शूल, उदरकी पीडा, विष, त्वचाके दोष, खुजली, मूसेका विष और दुष्ट विषको दूर करे है।

विवरण-चेवुनाके छोटे २ क्षुप होते हैं विशेषकरके यह चौमासेमें होता है फूल पीला आता है और फली लगती हैं इसकी अनेक जाति हैं।

नाडीकनामानि।

नाडीकंकालशाकञ्चश्राद्धशाकंचकालकम्।

अर्थ-नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक।

अस्यगुणाः।

कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोफहृत्॥
बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नाडीका शाक-कुछेक दस्तावर, रुचिकारी, वातकारक, कफनाशक सूजनको दूर करनेवाला, बलकारक, रुचिजनक मेधाकारक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

नाडीशाक-पट्टशाकनामानि।

पट्टशाकस्तुनाडीकोनाडिशाकश्चसस्मृतः।

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक, नाडीशाक (नाडीच, केंचुक, पेचुली, पेचु, विश्वरोचन)।

संस्कृतभाषामें पट्टशाक, नाडीशाक।

हिन्दीभाषामें पटुआसाग ।
वंगभाषामें पाटशाक, कोसटारशाक, नालते ।
मराठीभाषामें नाडीशाक ।
गुजरातीभाषामें नालानी भाजी ।
लैटिन्‌भाषामें आईपोमिया रिप्टेन्स । Ipomoea Reptams

अस्यगुणा ।

नाडीकशाकंद्विविधंतिक्तंमधुरमेवच । रक्तपित्तहरंतिक्तंकृमिकुष्ठविनाशनम् ॥ मधुरंपिच्छिलंशीतंविष्टम्भिकफवातकृत् । तच्छुष्कपत्रंज्वरदोषनाशनंविशेषतःपित्तकफज्वरापहम् । जलंचतस्यापिचपित्तहारकंसुरोचनंव्यञ्जनयोगकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नाडीक शाक-तिक्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां तिक्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है। मधुर शाक-पिच्छिल, शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है । नाडीके सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक हैं । नाडीका जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यंजनमें उपयोगी है ।

अन्यञ्च ।

तच्छुष्कंजलदोषघ्नंपित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥

अर्थ-नाडीके सूखे पत्ते-जलदोषनाशक, पित्त, कफ और आमवातविनाशक हैं ।

विवरण । नाडीकी बेल पानीमें होतीहै । इसकी डंडी पोली और गांठदार होती है । पत्ते लम्बे लम्बे होतेहैं । अफीमके विषको दूर करनेके लिये इसके पत्तोंका रस प्रयोग किया जाता है ।

कलम्बीनामानि ।

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)
संस्कृतभाषामें कलम्वी ।
हिन्दीभाषामें कलमीशाक ।
वंगभाषामें कलमी ।
तैलिंगभाषामें तोमेवञ्चलिचेट्ठु ।

अस्या गुणाः ।

कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी ॥(भा०प्र०)

अर्थ-कलमीशाक-स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ।

विवरण। कलमीशाक प्रायः खेतोंमें होताहै ।

हिलमोचिकानामानि ।

हिलमोचीत्रिवृत्पर्णीविषघ्नीहिलमोचिका ।

अर्थ-हिलमोची, त्रिवृत्पर्णी, विषघ्नी, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोची, मोची, मत्स्याङ्गी, हेलश्वी, मम्वी, मत्स्याक्षी, चक्राङ्गी, जलब्राह्मी, ब्राह्मी, शंखधरा, आचारी)

संस्कृतभाषामें	हिलमोचिका ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुल ।
वंगभाषामें	हिञ्चेशाक ।
वम्॰	हुरहुची ।
औत्क०	हिरमिचा ।

अस्या गुणाः ।

शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हिलमोचिका अर्थात् हुलहुरका शाक-सूजन, कोढ, कफ, पित्त इनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिलमोचीसरातिक्ताकुष्ठघ्नीकफपित्तजित् ।

अर्थ-हुरहुलशाग-कुछेक दस्तावर, कडवा तथा कुष्ठ और कफपित्तनाशक है ।

विवरण। यह ब्राह्मीकी समान होतीहै । प्रायः जलके निकटके स्थानोंमें देखीजाती है । फूल छोटा छोटा नीले रंगका आताहै ।

सुनिषण्णकनामानि ।

सितिवारःसितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः ।
श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णाकःकुर्कुटःशिखी ॥

अर्थ-सितिवार, सितिवर, स्वास्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुर्कुट, शिखी (वितुन्न, सुनिषण्ण, चुचु, सुतपत्र, शितिचार, सूच्याह्वय, सूच्याह्व, सूचिपत्रक, श्रीवारक, बभ्रु, कुरण्ट, कुक्कुट, सूचिदल, श्वेतावर, मेधाकृत, ग्राहक, शितिवार)

संस्कृतभाषामें	सुनिषण्णक ।
हिन्दीभाषामें	शिरिआरि, चौपतिया, उटिंगण, गुठवा । उटिंगणके बीज ।
वंगभाषामें	सुषुणीशाक, शुशुनीशाक ।
मराठीभाषामें	कुरडू ।
गुजरातीभाषामें	ओटीगण, ओटीगणनाबी । खडकतिरा ।
तैलिङ्गीभाषामें	सुनिषण्णमनेशाकमु ।
औत्कलीभाषामें	छुनछुनिया ।
लैटिनभाषामें	ब्लेफेरिस् इडयुलीम् । Blepharis Edulis
फारसीभाषामें	अंजरा, तुरुमेअंजरा ।
अरबीभाषामें	अंजरा, बजहुलअंजरा ।

अस्य गुणाः ।

सुनिषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ।
अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः ।
वृष्योरुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ–सुनिषण्णक–शिरिआरि–चौपतियाका शाक–शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ और भ्रमको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सुनिषण्णोलघुर्ग्राहीवृष्योग्निकृत्त्रिदोषहा ।
मेधारुचिप्रदोदाहज्वरहारीरसायनः ॥ (शो०नि०)

अर्थ–चौपतियाका शाक–हलका, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है ।

अस्य बीजगुणा ।

सुनिषण्णकबीजन्तुमूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।

अर्थ–उटिंगणके बीज–मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे हैं ।

विवरण । सुनिषण्णक अर्थात् उटिंगणका छता क्षुपकी समान सजल स्थानोंमें होताहै पत्ते चार और चांगेरीकी समान होतेहैं उन चार पत्तोंके

बीचमेंसे कलीसी निकलती है उसमें दो बीज चपटे लगेहुये होते हैं वह बीज तालमखानेकी सदृश चिकने होते हैं ।

मूलकस्य पत्रशाकगुणाः ।

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम् ।
स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत् ॥

अर्थ-नवीनमूलीके पत्तोंका शाक-हलका, रुचिकारी, गरम और पाचक है वही घी और तैलादिमें सिद्धकिया अर्थात् छौकाहुआ त्रिदोषनाशक है और असिद्ध अर्थात् कच्चा कफपित्तकारक है ।

चम्पकपत्रशाकगुणाः ।

काञ्चनंपत्रशाकंतुकषायंकटुकंमधु ।
गंडमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ-चम्पाके पत्तोंका शाक-कषेला, चरपरा, मधुर तथा गंडमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है ।

मुष्ककपत्रशाकगुणाः ।

मोक्षपत्रस्यशाकन्तुतिक्तंचतुवरंमतम् ।
दीपनंगुल्ममेहघ्नमुष्णंवातकफक्रिमीन् ॥
जयेत्प्लीहामग्रहणीमेहपाण्डुगुदामयान् ।

अर्थ-मोखाके पत्तोंका शाक-कडवा, कषेला, दीपन, गरम तथा गुल्म प्रमेह, वात, कफ, कृमि, प्लीहा, आम, संग्रहणी, मेह, पाण्डु और गुदाके रोगोंको दूर करेहै ।

करलीनामानि ।

करलीदीर्घपत्राचमध्यदण्डाप्रलंबिका ।

अर्थ-करली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, प्रलम्बिका ।

हिन्दीभाषामें	करली ।
मराठीभाषामें	कुलीची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	करलीनी भाजी ।
लैटिन्भाषामें	फेलेञ्जियमट्र युवरोझं ।

अस्या गुणाः ।

करलीशीतलास्वाद्वीवातलाकफकृद्गुरुः ।

अर्थ-करली-शीतल, स्वादिष्ठ, वातजनक, कफकारक और भारी है ।

अन्यच्च ।

करलीमधुरातिक्तावातलासारकामता ।

अर्थ-करलीके पत्तोंका शाक-मधुर, कडवा, बादी और सारक है ।

विवरण । करलीके क्षुप वर्षाऋतुमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते लम्बे और पत्तेके बीचमेंसे एक वाल निकलती है इसमें सफेद फूल होताहै इसका फल नीले रंगका होताहै और इसके पत्तोंका शाक करतेहैं ।

शतपुष्पापत्रशाकगुणाः ।

शतपुष्पादलंसोष्णंमधुरंगुल्मशूलजित् ।
वातघ्नंदीपनंपथ्यंपित्तकृद्रुचिदायकम् ॥

अर्थ-सोयेके पत्तोंका शाक-गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है ।

मेथिकापत्रशाकगुणाः ।

मेथिकापत्रशाकातुतिक्तावातहरामता ।
रुचिकृद्दीपनीयाचकिंचित्पित्तप्रकोपनी ॥

अर्थ-मेथीके पत्तोंका शाक-कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करैहै ।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

कटूष्णंराजिकापत्रंकृमिवातकफापहम् ।
कण्ठामयहरंस्वादुवह्निदीपनकारकम् ॥

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात, कफ और कण्ठरोगको दूर करैहै ।

सर्षपपत्रशाकगुणाः ।

सार्षपंपत्रमत्युष्णंरक्तपित्तप्रकोपनम् ।
विदाहिकटुकंस्वादुशुक्रकृद्रुचिदायकम् (रा०नि०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और रुचिकारक है ।

अन्यच्च ।

कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु ।

अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥
सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् । (भा०प्र०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-चरपरा, बहुमूत्रमलकारक, भारी, अम्लपाकी, दाहजनक, गरम, रूखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, लवणरसयुक्त, स्वादु और सर्वशाकोंसे निन्दित है।

शिग्रुपत्रशाकगुणाः ।

शिग्रुपत्रभवंशाकंरुच्यंवातकफापहम् ।
कटूष्णंदीपनंपथ्यंक्रिमिघ्नंपाचनंपरम् ॥

अर्थ-सैंजिनेके पत्तोंका शाक-रुचिकारक, वातकफनाशक, चरपरा, गरम, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है।

दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ।

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम् ।
कण्डूकासक्रिमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लघु ॥

अर्थ-परमारके पत्तोंका शाक-दोषनाशक, खट्टा, वातकफनाशक तथा कण्डू, खाँसी, कृमि, श्वास, दाद और कुष्ठनाशक है और हलका है।

कासमर्द्दनामानि ।

कासमर्दोरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ।

अर्थ-कासमर्द, अरिमर्द, कासारि, कर्कश (कालङ्कत्त, विमर्द, कासमर्दक, काल, कनक, जरण, दीपन, काशमर्द)।

संस्कृतभाषामें	कासमर्द (क)।
हिन्दीभाषामें	कसौंदी ।
वंगभाषामें	कालकासुन्दा ।
मराठीभाषामें	रानकासविंदा ।
गुजरातीभाषामें	कासोंदरी जंगली तथा मोटो झाड ।
कर्णाटकीभाषामें	कासवदी फरहुल कसाद् ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुरंपुताढचं ।
इंग्रेजीभाषामें	राउण्डपोडेडकेश्या । Round podded cassia
लैटिन्भाषामें	केश्यासोफेरा। Cassia Sophera
	केश्याओकसिडेंटेलिस् । C. Occi dentails

अस्य पत्रगुणाः ।

कासमर्द्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषार्शनुत् ॥
मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम् ।
विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसौंदीके पत्तोंका शाक-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कासनाशक, विषघ्न, बवासीरको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेषकरके खांसीको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यच्च ।

कासमर्द्दःसतिक्तोष्णोमधुरःकफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नःपाचनःकण्ठशोधनः ॥(रा०नि०)

अर्थ-कसौंदी-कडवी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरनेवाली, खांसीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दोऽग्निदःस्वर्य्यःस्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ॥

अर्थ-कसौंदीका शाक-अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । कसौंदीके क्षुप प्रायः बाग और जंगलमें बहुत होते हैं, पत्ते बराबर डंडीपर लगे होते हैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आती है ।

कौसुम्भशाकगुणाः ।

कौसुम्भशाकंमधुरंकटूष्णंविण्मूत्रदोषापहरंमदघ्नम् ।
दृष्टिप्रसादंकुरुतेविशेषाद्रुचिप्रदंदीप्तिकरंचवह्नेः ॥

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोंको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

वर्षाभूशाकगुणाः ।

वर्षाभूवसुकौपर्णकफमांद्यानिलापहौ ।
शाकेरूक्षतरौगुल्मप्लीहशूलापहारकौ ॥

अर्थ-पुनर्नवा और वसुकके पत्तोंका शाक-रूखा तथा कफ, मन्दाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाशाकगुणाः ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरीलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ--गोभीका शाक--कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वरनाशक है तथा हलका है ।

पटोलपत्रगुणाः ।

पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
स्निग्धंवृष्यंतथोष्णंचज्वरकासकृमिप्रणुत्॥(भावप्रकाश)

अर्थ-परवलके पत्तोंका शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम तथा ज्वर, खाँसी और कृमिरोगको दूर करे है ।

गुडूचीपत्रशाकगुणाः ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु । कषायंकटुतिक्तंचस्वादु-
पाकंरसायनम् ॥ बल्यमुष्णंचसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम् ।
दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-अग्निप्रदीपक, सर्व प्रकारके ज्वरको हरनेवाला, हलका, कसेला, चरपरा, कडवा, स्वादुपाकी, रसायन, बलवर्द्धक, गरम, मलरोधक, त्रिदोषनाशक, तृषानिवारक तथा दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

पर्पटशाकगुणा ।

पर्पटोहन्तिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ॥

अर्थ-पित्तपापडेका शाक-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है, ग्राही, शीतल, कडवा, वादी और हलका है ।

सेहुण्डपत्रशाकगुणाः ।

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्तोंका शाक-तीक्ष्ण, दीपन, रोचक तथा आध्मान, आष्ठीलिका, गुल्म, शूल, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

यवानीपत्रशाकगुणाः

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत् ।

उष्णंकटुचतिक्तंचदीपनंगुल्मशूलनुत् ॥

अर्थ-अजवायनके पत्तोंका शाक-जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है ।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत् ।
भेदकंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु ॥

अर्थ-गूमाके पत्तोंका शाक-स्वादिष्ठ, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है ।

चणकपत्रशाकगुणाः ।

रुच्यंचणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत् ।
अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुद्दन्तशोथनुत् ॥

अर्थ-चनेके पत्तोंका शाक-दुर्जर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशकं और दांतोंकी सूजनको दूर करे है ।

कलायपत्रशाकगुणाः ।

कलायशाकंभेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित् ।

अर्थ-मटरके पत्तोंका शाक-दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है।

अथ पुष्पशाकम् ।

अगस्तिपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तांध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगस्तियाके फूलोंका शाक-शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चौथियाको दूर करनेवाला, रतोंधेको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा पीनस, श्लेष्म पित्त और वातको विनाश करे है ।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ।

जीवन्तीपुष्पजंशाकंतुवरंमधुरंलघु ।

पथ्यंरुचिकरंवृष्यंकफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जीवन्तीके फूलोंका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है ।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु ।
वातपित्तहरंशीरंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेके फूलोंका शाक-स्निग्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है ।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनम् ।

अर्थ-सैंजिनेके फूलोंका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें सूजन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मको दूर करे है । मधुशिग्रुके फूलोंका शाक-नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्त प्रसादक है ।

शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तुघृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यंचनसंशयः ॥ रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-घी और सैंधानिमक डालकर बनायाहुआ शेमलके फूलोंका शाक दुःसाध्यप्रदरका निःसंदेह नाश करे है । रस और पाकमें मधुर, कसेला, शीतल, भारी तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, ग्राही और वादी है ।

वरुणपुष्पगुणाः ।

पुष्पंवरुणजंग्राहिपित्तघ्नमामवातजित् ।

अर्थ-बरनाके फूलोंका शाक-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करे है ।

मधूकपुष्पगुणाः ।

मधूकपुष्पञ्चहृद्यंतर्पणंबृंहणंपरम् ।

अर्थ-महुवाके फूलोंका शाक-हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है ।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहिशाकंप्रशस्तंचरक्तपित्तेविशेषतः ॥

अर्थ-कचनार, सफेद कचनार, सन और सेमलके फूलोंका शाक-मलरोधक और रक्तपित्तरोगमें हितकारी है ।

अथ फलशाकम् ।

कूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलंपीतपुष्पंबृहत्फलम् ।

अर्थ-कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल (घृणावास, तिमिप, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक, कर्कारु, शिखिवर्द्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका, कुम्भाडी, बृहत्फला, सुफला, कुञ्जफला, नागपुष्पफला) ।

संस्कृतभाषामें	कूष्माण्ड ।
हिन्दीभाषामें	पेठा, कुम्हडा, कोहडा ।
वंगभाषामें	कुमडागाछ ।
मराठीभाषामें	कोहोळा ।
गुजरातीभाषामें	भुरुं कोळुं ।
कर्णाटकीभाषामें	दारकोहोळा ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुल्लाहा, वर्डीका, गुम्मडि ।
उडी०	कखाड़ु, पानीकखारु ।
इंग्रेजीभाषामें	पंपकीन । Pumpkin
लैटिन्भाषामें	बेनीनकासा सेरिफेरा Benincassa Cerifera
फारसीभाषामें	भूराकुद्दु ।
अरबीभाषामें	महदेवा ।

अस्य फलगुणाः ।

मूत्राघातहरंप्रमेहशमनंकृच्छ्राश्मरीछेदनम् ।

विण्मूत्रग्लपनंतृषार्तिशमनंजीर्णांगपुष्टिप्रदम् ।
वृष्यंस्वादुतरंत्वरोचकहरंबल्यंचपित्तापहम् ॥
कूष्माण्डप्रवरंवदन्तिभिषजोवल्लीफलानांपुनः॥ (रा०नि०)

अर्थ–पेठा–मूत्राघात रोगको हरनेवाला, प्रमेहको शान्ति करनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र तृषाकी पीडाको शान्ति करनेवाला, जीर्ण शरीरवालोंको पुष्टि देनेवाला, वीर्य्यको बढानेवाला, स्वादिष्ठ, अरुचिको हरनेवाला, बलको करनेवाला, पित्तका नाश करनेवाला और सब बेलवाले फलोंमें उत्तम हैं ।

अन्यच्च ।

मूत्रावरोधशमनंबहुपित्तहारि कृच्छ्राश्मरीप्रशमनंविनिहन्तिपित्तम् ॥ पथ्यंसशोणितसमुल्वणपित्तरोगे तृष्णापहंत्रिषुसमंतमुदाहरन्ति ॥ (सु०)

अर्थ–पेठा–मूत्रके रोधको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोंको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला, पित्तनाशक तथा रक्तपित्तरोगमें हितकारी, तृषानिवारक है ।

अन्यच्च ।

कूष्माण्डंभेद्यभिष्यन्दिविष्टम्भिवातपित्तजित् । वस्तिशुद्धिकरंवृष्यंस्वादुपाकरसंगुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्बालमध्यं चैवकफापहम् । पक्वंलघूष्णंसक्षारंदीपनंपाचनंतथा॥ सर्वं दोषहरंहृद्यंपथ्यंचेतोविकारनुत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ–पेठा–भेदक, अभिष्यन्दी, विष्टम्भकारक, वातपित्तनाशक, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कच्चा पेठा–विशेष करके पित्तनाशक है । मध्यम अवस्थाका पेठा–कफनाशक है । और पक्का पेठा–हलका, गरम, क्षारयुक्त, दीपन, पाचन, त्रिदोषनाशक, हृदयको हितकारी, पथ्य और हृदय (मन) के रोगनाशक है ।

अपिच ।

कूष्माण्डकफलंवृष्यंपुष्टिकृद्धातुवर्द्धकम् । वस्तिशुद्धिकरंबल्यमतिस्वादुचशीतलम् ॥ गुरुरूक्षंसारकंचहृद्यंकफकरं

मतम्। मूत्राघातंप्रमेहञ्चमूत्रकृच्छ्राश्मरींतृषाम् ॥ अरोच-
कंवातपित्तंपित्तंरक्तरुजंतथा । वातंरेतोविकारंचनाशयेदि-
तितन्मतम् ॥ तत्कोमलंचातिशीतंदोषकृत्पित्तहारकम् ॥
तन्मध्यमंकफकरंपक्कंकिञ्चिच्चशीतलम् ॥दीपकंचलघुस्वा-
दुक्षारंवस्तेश्चशुद्धिदम्। सर्वदोषहरंपथ्यंपक्कमज्जाचमाधुरी।
वस्तिशुद्धिकरीवृष्यापित्तनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ-पेठा-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, बलकारक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी, कफकारक तथा मूत्राघात, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुक्रके विकारको हरे है, कच्चा पेठा-अत्यन्त शीतल, दोषकारक, पित्तकारक है। मध्यम अवस्थाका पेठा-कफकारक और पक्का पेठा-किञ्चित् शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार वस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक और पथ्य है। पक्के पेठेकी मूँग-मधुर, वस्तिशोधक, वृष्य और पित्तनाशक है।

विवरण। पेठा घरबाहर सब जगह बोयाजाता है और इसकी बेल चलतीहै यह फल बडा और इसका रंग नीला होता है जब यह फल पकजाता है तब इसके ऊपर सफेद रंगकी धूलसी जमजाती है।

पीतकूष्माण्डनामानि।

कूष्माण्डंपीतपुष्पाचग्राम्यापीतफलाचसा।
गुडयोगफलाचैवपीतकूष्माण्डइत्यपि ॥

अर्थ-कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला; गुडयोगफला, पीतकूष्माण्ड।

संस्कृतभाषामें	(डंगरी) पीतकूष्माण्ड।
हिन्दीमें	लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू, काशीफल, सफुरियाकुमार।
बंगभाषामें	बिलातिकुमडा।
मराठीभाषामें	तांबडा भोंपळा।
गुजरातीभाषामें	पतकोळु, शाकरकोळु।
कर्णाटकीभाषामें	डंगर।
तैलङ्गीभाषामें	तियागुवडिकाया।

इंग्रेजीभाषामें	दिगोर्ड ।	The gourd
लैटिन्‌भाषामें	कुकुर्विटा मेसिमा ।	Cucurdita Mascima
फारसीभाषामें	बादरंग ।	

पीतकूष्माण्डगुणाः ।

अपरंपीतकूष्माण्डंगुरुपित्तकरंपरम् ।
अग्निमान्द्यकरंस्वादुश्लेष्मघ्नंवातकोपनम् ॥(आ०सं०)

अर्थ-पीतकूष्मांड अर्थात् भिलया, लालकद्दू-भारी, पित्तजनक, मन्दाग्निकारक, स्वादिष्ठ, कफनाशक और वातको कुपित करे है ।

विवरण-लाल कद्दू अर्थात् भिलयाकद्दू सर्वत्रबोया जाताहै, इसकी पेठेकी माफिक बेल चलतीहै, पत्ते बडे, बडे, फूल पीला और फल बहुत बडे बडे लगतेहैं ।

कूष्माण्डीनामगुणाश्च ।

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥
पक्वातिक्ताग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् । (भा०प्र०)

अर्थ-कूष्माण्डी (कोहडी) हलकी और इसको कर्कारु भी कहतेहैं, कर्कारु-मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निप्रदीपक, क्षारयुक्त और कफवातनाशक है ।

अलाबुनामानि ।

अलाबुःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्त्तुला ।

अर्थ-अलाबू, तुम्बी (अलाबु, तुम्ब, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, महाफला, आलाबू, एलाबु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, तुम्बी, अलीबु, तुम्बक) यह दो प्रकारका होताहै एक लम्बा और दूसरा गोल ।

संस्कृतभाषामें	अलाबु, तुम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कद्दू, तोम्बी, लम्बा लौआ, ग्रहालौआ, रामतोरई ।
वंगभाषामें	लाउ, कदु ।
मराठीभाषामें	दुध्या भोंपळा ।
गुजरातीभाषामें	दुधीयुं, दुधडुं ।
कर्णाटकीभाषामें	कडंउबलकायि ।

तैलिंगीभाषामें	तीयातुखडीकाया।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाइटगुर्ड। White gourd
लैटिन्भाषामें	कुकुर्बिटा लाजिनेरिया। Cucurbita lagenaria
फारसीभाषामें	कुदुशिरिन् कुदुष्दरोज।
अरबीभाषामें	युक्तिनेहुलुकरा।

अस्या गुणाः।

मिष्टतुम्बीफलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु।
वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ—तोम्बी कद्दू हृदयको हितकारी, पित्तकफनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है।

अन्यच्च।

तुम्बीसुमधुरास्निग्धापित्तघ्नीगर्भपोषकृत्।
वृष्यावातप्रदाचैवबलपुष्टिविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ—तोम्बी-मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है।

अपिच।

अलाबूर्भेदनीगुर्वीपित्तघ्नीकफलाहिमा।

अर्थ—कद्दू रामतोरई-भेदक, भारी, पित्तनाशक कफकारक और शीतल है।

अन्यच्च।

तुम्बीतुमधुरास्निग्धागर्भपोषणकारिणी।वृष्यावातप्रदाबल्यापौष्टिकारुच्यशीतला॥ मलस्तम्भकरीरूक्षाभेदकागुरुपित्तनुत्।काण्डमस्याश्चमधुरंवातलंकफकारकम्॥ स्निग्धंशीतंभेदकंचपित्तनाशकरंजगुः। (नि० र०)

अर्थ—तोम्बी-मधुर, स्निग्ध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वातजनक, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, शीतल, मलस्तम्भक, रूखी, भेदक और पित्तनाशक है। इसकी बेलके कांड-मधुर, बादी, कफकारक, स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक हैं।

कटुतुम्बीनामानि।

कटुतुम्बीपिण्डफलाराजपुत्रीनृपात्मजा।

फलिनीतिक्ततुम्बीचतिक्तकाकटुतिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला, तुम्बिनी, बृहत्फला, दंतबीजा, तिक्तबीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी) ।

संस्कृतभाषामें	कटुतुम्बी ।
हिन्दीभाषामें	तितलोकी, कडवीतोम्बी ।
वंगभाषामें	तित्लाउ ।
मराठीभाषामें	कडू भोंपळा ।
गुजरातीभाषामें	कडवी तुंवडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कहीसोरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेतिआनव ।
इंग्रेजीभाषामें	बोटलगुर्ड । Bottle gourd
लैटिन्‌भाषामें	लेजीनेरिया वलगेरिस । Lagenaria Vulgaris
	क्युक्युर्बिटालेजिनेरिया । Cucurbita Lagenaria
फारसीभाषामें	कदुदुतल्ख ।
अरबीभाषामें	करउल्मुर ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुम्बीकटुस्तीक्ष्णावान्तिकृच्छ्वासवातजित् ।
कासघ्नीशोधनीशोफव्रणशूलविषापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक, श्वासको दूरकरनेवाली, वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथा सूजन, व्रण, शूल और विषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कटुतुम्बीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा ।
तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-शीतल, हृदयको हितकारी, कडवी, पचनेमें कटु तथा पित्त, खांसी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करेहै ।

अस्याः पर्णगुणाः ।

पर्णपाकेतुमधुरंमूत्रशोधनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिंकरंप्रोक्तमृषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ–कडवीतोम्बीके पत्ते–पाकमें मधुर, मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकरें हैं ।

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्तेकफकर्षिते ।
प्रताम्यतिनरेचैववमनार्थंतदिष्यते ॥

अर्थ–कडवीतोम्बी–खाँसी, श्वास, विष, वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित हैं उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये ।

विवरण–कडवीतोम्वी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोंपै सफेद आतेहैं, फलभी एकसे लगते हैं ।

कर्कटीनामानि ।

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ–एर्वारु, कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा, स्थूला, तोयफला, हस्तिदन्तफला, कर्कटी, छर्द्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा, चिर्भटी, कर्कटाक्ष, शान्तनु, वालुङ्की, त्रपुषी, इर्वारु, उर्वारु, ईर्वारु) ।

संस्कृतभाषामें	कर्कटी ।
हिन्दीभाषामें	ककडी ।
वंगभाषामें	काँकुड, बडकाँकड ।
मराठीभाषामें	कांकडी, वालुक–कांकडी ।
गुजरातीभाषामें	कांकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	क्येयसौत ।
तैलिङ्गीभाषामें	दोसकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	ककंबर । Cucumber
लैटिन्भाषामें	क्युक्युमिस् सेटिवस् । Cucumis Sativus
फारसीभाषामे	ख्याटजाव+दरंज ख्यारदराज ।
अरबीभाषामें	किस्साकदस् ।

अस्या गुणाः ।

कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः ।
रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची काकडी-शीतल, रूखी, मलरोधक, मधुर, भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है। पक्की ककडी-गरम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है।

एर्वारुकंपित्तहरंसुशीतलंमूत्रामयघ्नंमधुरंरुचिप्रदम्। सन्तापमूर्च्छापहरञ्चतृप्तिदंवातप्रकोपायघनंतुसेवितम् (रा.नि.

अर्थ-ककडी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है।

अन्यच्च।

कर्कट्यास्तुफलंपक्कंछर्दितृष्णाक्लमार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-पक्की ककडी-वमन, तृषा और क्लान्तिको दूर करे है।

अपिच।

एर्वारुकंतुमधुरंरुच्यंरूक्षंचशीतलम्। तृप्तिकृद्ग्राहकंप्रोक्तमत्यन्तवातकारकम् ॥ गुरुवातज्वरकफकारकंतापहारकम्। पित्तंमूर्च्छांमूत्रकृच्छ्रंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ कोमलैर्वारुकंतिक्तंलघुस्वाद्वतिमूत्रलम्। शीतंरूक्षंरक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रास्रदोषजित् ॥ तत्पक्कंपित्तलंचाग्निदीपनंचतृषापहम्। उष्णंत्रिदोषशमनंक्लमदाहहरंमतम् ॥ गृहेजीर्णंतुतज्ज्ञेयमुष्णंपित्तकरंमतम्। कफवायोर्नाशकरंप्रोक्तमायुर्विदैर्जनैः ॥

अर्थ-ककडी-मधुर, रुचिकारक, रूखी, शीतल, तृप्तिकारक, मलरोधक, अत्यन्त बादी, भारी, वातज्वरकारक, कफकारक, तापनाशक तथा पित्त, मूर्च्छा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है। कोमल ककडी-हलकी, कडवी, स्वादु, अत्यन्त मूत्रकारक, शीतल, रूखी है तथा रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूर करे है, पक्की ककडी-पित्तजनक, अग्निप्रदीपक, तृषानिवारक, गरम, त्रिदोषनाशक, क्लमहारक, दाहनिवारक है और जो घरमें रक्खीहुई पकजावे ऐसी ककडी-गरम पित्तकारक तथा कफ और वातको नष्ट करेहै।

कर्कटीमधुरारुच्याशीतालघ्वीचमूत्रला। त्वचायाकटुका

तिक्तापाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृष्याग्राहिणीप्रोक्तामूत्ररो-
धाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रंवमिंदाहंश्रमंचैवविनाशयेत् ॥
सापक्वारक्तदोषस्यकारिण्युष्माबलप्रदा ॥

अर्थ-दूसरे प्रकारकी ककडी-मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्रजनक, इसकी त्वचा-कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृष्य, ग्राहिणी, मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन, दाह और श्रमका नाश करे है। वही पक्की ककडी-रुधिरविकारकारक, गरम और बलकारक है।

तृतीयाकर्कटीरुच्यामधुरावातकारिणी।
शीतामूत्रप्रदागुर्व्वीकफकृद्दाहनाशिनी ॥
वमिंपित्तंभ्रमंमूत्रकृच्छ्रंमूत्राश्मरींहरेत् ।

अर्थ-तीसरे प्रकारकी ककडी-रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक, शीतल, मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है।

अरण्यकर्कटीगुणाः ।

अरण्यकर्कटीचोष्णारसेतिक्ताचभेदिका ।
पाकेकट्वीकफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ-वनककडी-गरम, तिक्तरसान्वित, भेदक, पाकमें कटु तथा कफ, कृमि, पित्त, कण्डू और ज्वरको दूर करनेवाली है।

तिक्तकर्कटीगुणाः ।

तिक्तकर्कटिकाप्रोक्तारसेपाकेकटुःस्मृता ।
तिक्तामूत्रकरीवान्तिकारिकामूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवातंचाष्ठीलांनाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ-कडवीककडी-रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान और अष्ठीलाको दूर करे है।

चीनाकर्कटीगुणाः ।

चीनाकर्कटिकाशीतामधुरारुचिदागुरुः ।
कफवाततृप्तिकरीहृद्यापित्तरुजापहा ॥
दाहशोषहराप्रोक्तामुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ-चीनाककडी-शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक तथा दाह और शोषको हरनेवाली है ।

सर्वकर्कटीगुणाः ।

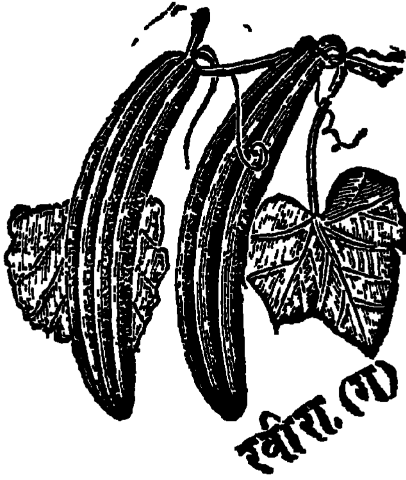
सर्वाकर्कटिकागुर्वीदुर्जरावातरक्तदा । अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः ॥ वर्षाशरदिचोत्पन्नानोहितानच भक्षयेत् । हेमन्तजारुचिकरापित्तहाभक्षिताहिता ॥ सैवार्धपक्वासंप्रोक्तापीनसोत्पादनीमता। सम्यक्पक्वाचमधुराकफनाशकरीमता ॥ (नि०र०)

अर्थ-सर्वप्रकारकी ककडी-भारी, कठिनतासे पचनेवाली, वातरक्तको करनेवाली और मंदाग्निको करनेवालीहै । वर्षा और शरद् ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षणकरनी चाहिये । हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी-रुचिकारक, पित्तनाशक, भक्षणकरनेयोग्य और हितकारी है, अधपकी ककडी-पीनसको उत्पन्न करनेवाली है । अच्छे प्रकारसे पकीहुई ककडी-मधुर और कफनाशक है ।

विवरण-ककडीकी अनेक जाति हैं किन्तु सर्वप्रकारकी ककडियोंमें ग्रीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होतीहै ।

त्रपुषनामानि ।







त्रपुषंकण्टकिफलंसुधावासंसुशीतलम् ।

अर्थ–त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास, सुशीतल (पीतपुष्पा, काण्डालु, कण्टालु, त्रपुकर्कटी, वहुफला, कण्टकिलता, कोषफला, तुन्दिलफला, सुधावासा) ।

संस्कृतभाषामें	त्रपुष ।
हिन्दीभाषामें	खीरा, क्षीरा, वालमखीरा ।
वंगभाषामें	शँशा ।
मराठीभाषामें	तवसें, कांकडी, खिरा ।
गुजरातीभाषामें	तांसलि ।
कर्णाटकीभाषामें	तसेंयकाथि ।
तैलिंगीभाषामें	दोजकइअ ।
तामिलीभाषामें	महेंवेहरिकोड्कणो ।
इंग्रेजीभाषामें	The Cocumber
लैटिन्भाषामें	(Cucumis salivus S N C Haidwichii)
फारसीभाषामें	शियारखुर्द ।

त्रपुषगुणाः ।

त्रपुषंलघुनीलंचनवंतृट्क्लमदाहजित् । स्वादुपित्तापहंशीतं रक्तपित्तहरंपरम् ॥ तत्पक्वमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवात-

नुत् । तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ (भा०प्र)

अर्थ-नवीनखीरा-हलका, नीला, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, क्लम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करैहै। पकाहुआ खीरा-खट्टा, गरम, पित्तकारक, कफवातनाशक है। इसके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रूखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करैहैं।

अन्यच्च ।

स्यात्त्रपुषीफलंरुच्यंमधुरंशिशिरंगुरु ।
भ्रमपित्तविदाहार्त्तिवान्तिहृद्बहुमूत्रदम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-खीरा-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा भ्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करे है। खीरा सर्वत्र प्रसिद्ध है।

चिर्भिटनामानि ।

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी ।

अर्थ-चिर्भिट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी (सुचित्रा, चित्रफला, क्षेत्रचिर्भिटा, पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भिटिका, कर्कोचिर्भिटा)।

मृगेर्व्वारुनामानि ।

मृगाक्षीश्वेतपुष्पाचमृगेर्व्वारुमृगादनी । चित्रवल्लीबहुफला कपिलाक्षीमृगेक्षणा॥चित्राचित्रफलापथ्याविचित्रामृगचिर्भिटा । मरुजाकुम्भसीदेवीज्ञेयाचैकोनविंशतिः ॥

अर्थ-मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्व्वारु, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा, चित्रा, चित्रफला, पथ्या, विचित्रा, मृगचिर्भिटा, मरुजा, कुम्भसी, देवी (कटुफला, लघुचिर्भिटा)।

संस्कृतभाषामें	चिर्भिट (टा) मृगेर्व्वारु ।
हिन्दीभाषामें	कचरिया, गुरुमीहुँ, भकुर, सेंध, फूट, गोरखककडी।
वंगभाषामें	काकुड, गोमुक, फुटी ।
मराठीभाषामें	चिबूड, शेंदाड, टकमकें ।
गुजरातीभाषामें	चिभडां, राजगरां, कोठींबां ।
तैलङ्गीभाषामें	बुडरंगपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	पुबिसेंटक्युकंबर । Pubescent Cucumber
लैटिन्भाषामें	क्युक्युमिस् प्युबीसेन्स । Cucumis Pubescens
क्यु०	ट्राइगोनस् । C. Trigonus

चिर्भिटगुणाः ।

चिर्भटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ।
अनुष्णंग्राहिविष्टम्भिपक्कमूष्णञ्चपित्तलम् ॥

अर्थ-कचरिया, गुरुभीडु-मधुर, रूखी, भारी, पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पक्की कचरिया-गरम और पित्तकारक है

अन्यच्च ।

बाल्येतिक्ताचिर्भटाकिञ्चिदम्ला गौल्योपेतादीपनीसाचपाके ।
शुष्कारूक्षाश्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नीसारोचनीदीपनीच ॥

अर्थ-कच्ची कचरिया-कडवी, किञ्चित् अम्ल, गोल्य और पाकमें दीपन है । सूखी कचरिया-रूखी, कफनाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक, जडतानाशक, रोचन और दीपन है ।

अन्यच्च ।

चिर्भटःशीतलोग्राहीगुरुश्चमधुरःस्मृतः।मलस्तम्भकरःपित्तमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ दाहंप्रमेहंवातंचशोषंचैवविनाशयेत् ।तत्कोमलफलंवातकोपनंकफपित्तनुत् ॥ तत्पक्कंपित्तलंचोष्णंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-कचरिया-शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोषका नाश करे है । कच्ची कचरिया-वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पक्की कचरिया-पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तंचिर्भटंवातकफकृत्स्वादुशीतलम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी कचरिया-वातकफकारक, स्वादिष्ठ और शीतल है ।

चिर्भटपुष्पगुणाः ।

पुष्पश्चचिर्भटस्यैवदोषत्रयकरंस्मृतम् ।
अपक्कंजीर्णकफकृत्पक्कंकिञ्चिद्विशिष्यते (हा०सं०)

अर्थ-कचरियाके फूल त्रिदोषकारक हैं, कच्चा अजीर्ण और कफ करेहैं और पक्का कुछेक विशेष होजाताहै ।

मृगाक्षीगुणाः ।

मृगाक्षीकटुकातिक्तापाकेम्लावातनाशिनी ।
पित्तकृत्पीनसहरादीपनीरुचिकृत्परा । (रा०नि०)

अर्थ-सेंध-चरपरी, कडवी, पचनेमें खट्टी, वातनाशक, पित्तनाशक, पीनसरोगको दूरकरनेवाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है ।

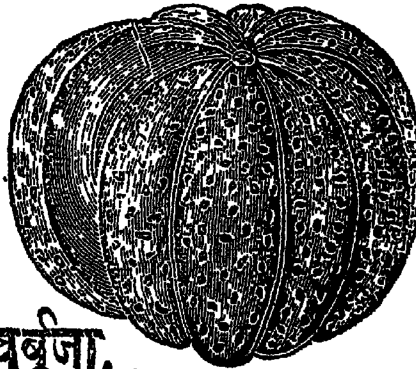
अपिच ।

तिक्तंसुतीव्रंमधुरंचसाम्लंवातापहंपित्तविनाशनंच ।
श्लेष्माकरंरोचनपाचनंचकोठीवटंचाग्निकरंनराणाम् (सुषे०)

अर्थ-सेंध-कडवी, तीव्र, मधुर, खट्टी, वातविनाशक, पित्तनाशक कफकारक, रोचन, पाचन और मनुष्योंके अग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । चिर्भटा, फूट, सेंध, कचरिया इन सबकी बेल ककडी तथा खर्बूजेकी समान होती है ।

खर्बूजनामानि ।



दशांगुलंतुखर्बूजंकथ्यंतेतद्गुणाअथ ॥

अर्थ-दशांगुल, खर्बूज (फलराज, अमृताह्व, षड्भुजा, मधुफला, षड्रेखा, वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका, वृत्तेर्वारु, षण्मुखा) ।

संस्कृतभाषामें	दशांगुल ।
हिंदीभाषामें	खरबूजा ।
बंगभाषामें	खरमुज, खरबुजा ।
मराठीभाषामें	खर्बुज ।

गुजरातीभाषामें	तलिया शकरटेटी।
कर्णाटकीभाषामें	पढजसौते।
तैलिंगीभाषामें	खरबूजं।
इंग्रेजीभाषामें	मेलन्। Melon
लैटिन्भाषामें	कुक्युमिस् मेलो। Cucumis Melo
फारसीभाषामें	खुरपुजा।
अरबीभाषामें	बित्तिख।

अस्य गुणाः।

खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु । स्निग्धंस्वादुतरंशीतं वृष्यंपित्तानिलापहम् ॥ तेषुयच्चाम्लमधुरंसक्षारञ्चरसाद्भवेत् । रक्तपित्तकरंतत्तुमूत्रकृच्छ्रकरंपरम् ॥

अर्थ–खर्बूजा–मूत्रकारक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है। इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है।

अन्यच्च।

तिक्तंबाल्येतदनुमधुरंकिञ्चिदम्लंचपाके निष्पक्वंचेत्तदमृतसमंतर्पणंपुष्टिदायि । वृष्यंदाहश्रमविशमनंमूत्रवृद्धिंचधत्ते पित्तोन्मादापहरकफदंषड्भुजंवीर्य्यकारि ॥ (रा० नि०)

अर्थ–कच्चा खर्बूजा–कडवा, ईषत् मधुर और पाकमें किंचित् खट्टा है। पका खर्बूजा–अमृतकी समान तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर करनेवाला, श्रमको हरनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश करनेवाला, कफकारक और वीर्य्यजनक है।

अन्यच्च।

खर्बूजंफलराजमुत्तमगुणंपक्वंरसंबृंहणं बल्यंस्वादुतरंहिमं गुरुमहत्पित्तानिलार्त्तिहरेत् । स्निग्धंमूत्रलमौदरामयहरं सौगन्धिमत्यादरान्नीतं पाणियुगे दशांगुलमतो नाम्ना कृतं विष्णुना ॥ (सुषेण)

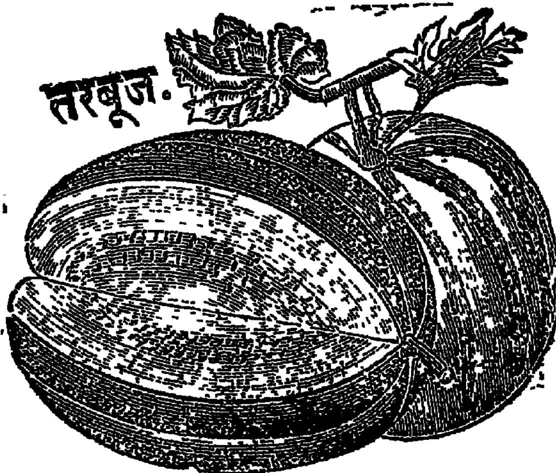
अर्थ-फलोंमें राजा, उत्तम हैं गुण जिसके ऐसा पक्का खरबूजा पुष्टिकारक बलवर्द्धक, स्वादुतर, शीतल भारी, पित्त और वातकी वेदनाको शान्तिकरनेवाला, स्निग्ध, मूत्रजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुगंधिवाला है। विष्णुने इसको अत्यन्त आदरसे दोनों हाथोंमें लिया इसकारण इसका नाम दशांगुल है।

अपिच।

पक्वन्तुखर्बुजंतृप्तिकारकंपौष्टिकंमतम्। कफकृन्मूत्रलंबल्यं कोष्ठशुद्धिकरंगुरु॥ स्निग्धंसुस्वादुशीतंचवृष्यंदाहश्रमापहम्।वातंपित्तंचउन्मादंनाशयेदितितन्मतम्॥तत्कोमलंमधुरंतिक्तंकिञ्चिदम्लंचतन्मतम्। तत्तुवृद्धंचमधुरंरसेक्षारञ्च अम्लकम्॥ रक्तपित्तंमूत्रकृच्छ्रंकरोतीतिबुधाजगुः।(रत्ना०)

अर्थ-पक्का खरबूजा-तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, कफकारक, मूत्रवर्द्धक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, स्निग्ध, सुस्वादु, शीतल, वृष्य तथा दाह, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगको हरनेवाला है। कच्चा खरबूजा-मधुर, कडवा और किंचित् खट्टा है। पुराना खरबूजा-मधुर, क्षाररसान्वित, अम्ल तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला है। खरबूजा कईप्रकारका होताहै। किन्तु ग्रीष्मऋतुमें उत्पन्न होनेवाला सर्वमें श्रेष्ठ होताहै।

कालिङ्गनामानि।



कालिङ्गंकृष्णबीजंस्यात्कालिन्दंचसुवर्त्तुलम्॥

अर्थ-कालिंग, कृष्णवीज, कालिंद, सुवर्त्तुल (मांसफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र, मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मांसल, अल्पप्रमाणक, सुखाश, राजतिनिष, लतापनस, नाटाम्र, मेट, शीर्णवृन्त, बृहद्गोल, सुखवास, सेट, गोडुम्ब, रक्तवीज, चेलान, मूत्रल)।

संस्कृतभाषामें	कालिङ्ग, शीर्णवृन्त ।
हिंदीभाषामें	तरवूज, सरदा तरवूज, लाल और कालेवीजोंका, कालिंग ।
वंगभाषामें	तरमुज, चेलना ।
मराठीभाषामें	कलिंगड ।
गुजरातीभाषामें	तडबूच, कालिंगडुं ।
कर्णाटकीभाषामें	कौंडे ।
तैलङ्गीभाषामें	तरबुजंपुच्चकाया ।
औत्क०	तरपुज ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरमेलन् । Water Melon
लैटिन्भाषामें	साईट्रुलस् वल्गेरीस् । Citrullus Vulgari.
फारसीभाषामें	हिंद्वाना ।
अरवीभाषामें	वत्तिखहिंदी ।

कालिङ्गगुणाः ।

कालिङ्गंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु ।
पक्वन्तुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा तरवूज-मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला, शीतल और भारी है, पक्का तरवूज-गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफवात-नाशक है ।

अपिच ।

कालिंगोमधुरःशीतःपित्तदाहश्रमापहः ।
वृष्यःसन्तर्पणोबल्योवीर्य्यपुष्टिविवर्द्धनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तरवूज-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, तृप्तिकारक, वलवर्द्धक तथा वीर्य्य और पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

शीर्णवृन्तंकफकरंसक्षारंमधुरंलघु ।

अर्थ-तरवूज-कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है ।

अपिच ।

चेलानंगुरुविष्टम्भिमधुरंवातपित्तशित् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दूसरे प्रकारका तरबूज-भारी, विष्टम्भकारक, मधुर और वातपित्त-नाशक है ।

अन्यच्च ।

कालिंगंशीतलंबल्यंमधुरंतृप्तिकारकम् । गुरुपुष्टिकरंज्ञेयं मलस्तम्भकरंतथा ॥ कफकृद्दृष्टिपित्तघ्नंशुक्रधातोस्तुनाशकम् । तत्पक्वंपित्तलंक्षारंचोष्णंवातकफप्रणुत् ॥ "मज्जस्तु-मधुरोबल्योरुचिकृद्धातुवर्द्धकः" । पर्णंतिक्तंरक्तवृद्धिकरं चैवप्रकाशितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कच्चा-तरबूज शीतल, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, भारी, पुष्टिकारक, मलस्तम्भक, कफकारक तथा दृष्टि, पित्त, शुक्र और धातुका नाश करे है । पक्का तरबूज-पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है । तरबूजकी मींग-मधुर, बलकारक, रुचिजनक और धातुवर्द्धक है । इसके पत्ते-कडवे और रक्तवर्द्धक हैं ।

विवरण । तरबूजके खेत प्रायः नदीके निकट और रेतीमें होते हैं तरबूज दो प्रकारका होता है एक काले बीजोंका दूसरा लाल बीजोंका काले बीजोंके तरबूजका गूदा गुलाबी और पीले रंगका होता है और लाल बीजोंके तरबूजका गूदा लाल गुलाबी और पीले आदि सब रंगका होता है इस देशमें तरबूजको पौष और माघके महीनेमें बोते हैं, फाल्गुन और चैत्रमें क्षुप होकर पुष्प आजाते हैं और वैशाख ज्येष्ठमें फल लगते हैं । दूसरे प्रकारके अर्थात् काले बीजोंके तरबूज कार्त्तिक मासमें होते हैं । किसी २ देशमें तरबूज सदैव होते हैं और तोलमें १ मनपर्य्यन्त होता है ।

कोशातकीनामानि ।

कोशातकीस्वादुफलासुपुष्पाकर्कोटकीस्यादपिपीतपुष्पा । धाराफलादीर्घफलासुकोशाधामार्गवःस्यान्नवसंज्ञकोयम् ॥

अर्थ-कोशकी, स्वादुफला, सुपुष्पा, कर्कोटकी, पीतपुष्पा, धाराफला, दीर्घफला, सुकोषा, धामार्गव (कृतवेधना, जालिनी, राजकोशातकी, राजिमत्फला) ।

संस्कृतभाषामें	कोशातकी, धाराफला ।
हिन्दीभाषामें	तोरई ।
बंगभाषामें	घोषालता ।
मराठीभाषामें	शिराळी, दोडकी ।
गुजरातीभाषामे	तुरीयां थिसोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	धारवितरोई ।
तैलङ्गीभाषामें	बीरकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	एक्युटेंगलेडककम्बर । Acuteangled Cucumber
लैटिन्‌भाषामें	ल्युफाएक्युटेंग्युला । Luffa acutangula

अन्या गुणाः ।

धाराकोशातकीस्निग्धामधुराकफपित्तनुत् ।
ईषद्वातकरीपथ्यारुचिकृद्बलवीर्य्यदा ॥ (रा०नि०)

अर्थ–तोरई–स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् वादी, पथ्य, रुचिकारक, बल और वीर्य्यको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पित्तानिलघ्नंकफजिद्विपाकात्पथ्यंज्वरेस्वादुरसोपपन्नम् ।
हुताशनोद्दीपनभेदकंचकोशातकंशाकवरंवदन्ति ॥

अर्थ–तोरइयोंका शाक–पित्तवातनाशक, कफहारक, ज्वरमें पथ्य, स्वादुरसवाला, अग्निको दीपन करनेवाला और शाकोंमें इसको श्रेष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

धाराकोशातकीशीतामधुराकफवातला ।
पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–तोरई–शीतल, मधुर, कफकारक, वादी, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिका नाश करे है ।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकीप्रोक्ताहस्तिघोषामहाफला ।
धामार्गवोघोषकश्चहस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥

अर्थ–महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, ऐभी, महत्पुष्पा, सपीतिका, हस्तिघोषातकी) ।

संस्कृतभाषामें	महाकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	घियातोरई, नेनुआ ।
वंगभाषामें	हस्तिघोषा+धुन्दुल ।
मराठीभाषामें	घोसाळी, घडघोसाळी, पारोशी ।
गुजरातीभाषामें	गलकुं ।
कर्णाटकीभाषामें	अरहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुछावीरकाया+एनुगवीर ।
लैटिन्भाषामें	ल्युफापेंटेंड्रा । Luffaprntaundra
फारसीभाषामें	खियार ।
उडि०	तरडि ।

अस्य गुणाः ।

महाकोशातकीस्निग्धासरापित्तानिलापहा ।(म०वि०)

अर्थ-घियातोरई-स्निग्ध, सारक तथा पित्त और वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

महाकोशातकीस्निग्धारक्तपित्तानिलापहा ।(भा०प्र०)

अर्थ-घियातोरई, बडी तोरई-स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक और वातविनाशक है ।

अपिच ।

हस्तिकोशातकीस्निग्धामधुराध्मानवातकृत् ।
वृष्याकृमिकरीचैवव्रणसंरोपणीचसा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-घियातोरई, नेनुआ-स्निग्ध, मधुर, आध्मानकारक, वातवर्द्धक, वृष्य, कृमिजनक और घावको भरनेवाली है ।

तिक्तकोशातकीनामानि ।

कोषातक्यांकृतच्छिद्राजालिनीकृतवेधना ।
क्ष्वेडासुतिक्ताघण्टालीमृदंगफलिकामता ॥

अर्थ-कोषातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधना, क्ष्वेडा, सुतिक्ता, घण्टाली, मृदंगफलिका (तिक्तकोषातकी, तिक्ता, कृतवेधनिका । कृष्णा, सुशोधनी, वन्या, कर्कशच्छदा) ।



संस्कृतभाषामें	तिक्तकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	कडवी तोरई, जंगलीतोरई, झिमनी ।
बंगभाषामें	झिङ्गा ।
मराठीभाषामें	कडूदोडकी, दीवाली, कडूशिराळी ।
गुजरातीभाषामें	झुमखंडां कडवातें कडवी घीसोडी, धामार्गवतें । कडवा तुरीया ।
कर्णाटकीभाषामें	काहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेदुविकाया ।
उडि०	जनी ।
इंग्रेजीभाषामें	विटरल्युफा । Bitter Luffa
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएमेरा । Ruffa amaıa
फारसीभाषामें	तुरीयेतलख ।

अस्यगुणाः ।

तिक्तकोशातकीशीताकिञ्चित्कट्वीकषायका । तिक्तापक्वाशयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत् ॥ लघ्वीरूक्षावातकफपित्तपाण्डुविषापहा । यकृत्कुष्टार्शशोथघ्नीकासोदरविनाशिनी ॥ कामलागुल्मशमनीफलंचास्यास्तुभेदकम् । कटुतिक्तंचशीतश्चस्निग्धंहृद्यंचदीपनम् ॥ कासारोचकमेहघ्नंज्वरकुष्टकफापहम्।श्वासंपित्तंचवातञ्चनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-कडवी तोरईकी बेल-शीतल, किञ्चित्कटु, कषेली, कडवी, पक्वाशय, आध्मान, मल और आमाशयको शुद्ध करनेवाली, हलकी, रूखी तथा वात, कफ, पित्त, पाण्डु, विष, यकृत् कुष्ठ, बवासीर, सूजन, खाँसी, उदररोग, कामला और गुल्मको हरेहै। इसका फल भेदक, कटु, तिक्त, शीतल, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, दीपन तथा खाँसी, अरुचि, प्रमेह ज्वर, कुष्ठ, कफ, श्वास, पित्त और वातका नाश करे है।

अन्यच्च।

तिक्तकोशातकंतिक्तंवातलंकफपित्तजित्।
अवृष्यंकटुकंपाकेसारकंवान्तिकारकम्॥
एतत्फलंचबीजंचनस्यान्नासाशिरोर्त्तिजित्।(शो०नि०)

अर्थ-कडवी तोरई-कडवी, बादी, कफपित्तनाशक, अवृष्य, पचनेमें कटु, सारक और वमनकारक है। इसके फल और बीजोंके नास लेनेसे नासिका और शिरकी पीडा दूर होती है।

विवरण-तोरई, घियातोरई और कडवी तोरई इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है, तहां तोरई सफेद रंगकी और धारयुक्त तथा पीले फूलकी होतीहै। घियातोरई नीलेरंगकी और लम्बे गोल तथा पीले फूलकी होतीहै। और कडवी तोरई सफेद रंगकी जंगलमें वृक्षोंके ऊपर लगती है, फूल पीले और बीज काले होतेहैं।

चिचिण्डनामानि।

चिचिण्डःश्वेतराचिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः।

अर्थ-चिचिण्ड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक (चिचुण्ड, वेश्मकूल, बृहत्फला, अहिफला, दीर्घफला, चीनकर्कटिका।

संस्कृतभाषामें	चिचिण्ड+अहिफला।
हिन्दीभाषामें	चचेंडा, चिचेंडा।
वंगभाषामें	चिचिङ्गा, चिचिण्डा।
मराठीभाषामें	टरकांकडी।
गुजरातीभाषामें	पंडोलां।
तैलङ्गीभाषामें	पोटलाकाया।
इंग्रेजीभाषामें	स्नेकूगोर्ड। Srake Gourd
लैटिन्‌भाषामें	ट्रिकोसेंथिस् ऐंग्विना Trichos-authis anguina

अस्य गुणाः ।

चिचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः ।
शोषिणेतिहितःकिञ्चिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः ॥

अर्थ-चिचेंडा-वातपित्तनाशक, वलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोषरोगमें हितकारी और परवलोंसे गुणोमें किञ्चित् न्यूनहै ।

विवरण। चचंडेकी वेल तोरईकी समान होती है, फल वडे वडे लम्बे सॉपकी समान होते हैं ।

पटोलनामानि ।

स्वादौचस्वादुपूर्वासास्वादिष्टाजनवल्लभा ।
राजपूर्व्वासुशाकाचस्वादुपत्रफलाचसा ॥

अर्थ-स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्टा, जनवल्लभा, राजपूर्व्वा, सुशाका, स्वादुपत्रफला (राजपटोल)।

अस्य गुणाः ।

पटोलंपाचनंहृद्यंवृष्यंलघ्वग्निदीपनम् । स्निग्धोष्णंहन्ति-कासासंज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥ पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचन-करं सुखात् । नालंश्लेष्महरंपत्रंपित्तहारिफलंपुनः ॥ दोष-त्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तपटोलिकाः । (भा० प्र०)

अर्थ-परवल-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, हलका, अग्निप्रदीपक, स्निग्ध, गरम तथा खॉसी, रुधिरविकार, ज्वर, त्रिदोष और कृमिका नाश करे है। परवलकी जड सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है। परवलकी नाल-कफनाशक है। पटोलके पत्ते-पित्तनाशक हैं । इसके फल-त्रिदोषनाशकहैं, कडवे परवलके गुणभी इसीके समान हैं ।

अन्यच्च ।

पटोलीबलकृत्स्वादुःपथ्यादीपनपाचनी । रुच्यापुष्टिकरी ज्ञेयावातपित्तज्वरापहा॥शोषत्रिदोषशमनीफलंवृष्यंरुचि-प्रदम् । मधुरंस्वादुपथ्यंचपाचनंलघुदीपकम् ॥हृद्यंस्निग्धं चउष्णंचकफरक्तत्रिदोषनुत् । कासज्वरकृमीन्हन्तिपर्णंवै पित्तनाशनम् । मूलंरेचकरंप्रोक्तंवल्लीचैवकफापहा ॥

अर्थ-परवल-बलकारक, स्वादिष्ठ, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक, पुष्टिजनक तथा वात, पित्त, ज्वर, शोष और त्रिदोषको शान्ति करेहै। इसके फल-वृष्य, रुचिकारक, मधुर, स्वादिष्ठ, पथ्य, पाचन, हलके, दीपन, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, गरम, कफ, रक्तविकार, त्रिदोष, खाँसी, ज्वर और कृमिनाशक हैं। इसके पत्ते पित्तनाशक। इसकी जड विरेचन करानेवाली है। इसकी बेल कफनाशक है।

राजपटोलीनामानि।

मेकीराजपटोलीचपर्वंगीपीलुपर्णिका।
राजनामासुपथ्याचवृत्तबीजाचपर्वरा॥

अर्थ-मेकी, राजपटोली, पर्वंगी, पीलुपर्णिका, राजनामा, सुपथ्या, वृत्तबीजा, पर्वरा।

पर्वरंपाचनंहृद्यंवृष्यंवह्निकरंलघु।दीपनंस्निग्धमुष्णञ्चका-
सरक्तत्रिदोषहम्॥कृमिजिन्मधुरंप्रोक्तंवैद्यैर्विद्याविचक्षणैः।
कफनाशकरीवल्लीपत्रंपित्तस्यनाशकम्॥मूलंतुरेचकंचा-
स्यमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-पर्वर-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, अग्निजनक, हलका, दीपन, मधुर, स्निग्ध, गरम तथा खांसी, रुधिरविकार, त्रिदोष और कृमिनाशक है। इसकी बेल-कफनाशक। पत्र-पित्तनाशक और मूल-दस्त करानेवालीहै।

तिक्तपटोलनामानि।

पटोलःकुलकःप्रोक्तःपाण्डुकःकर्कशच्छदः।राजीफलःपाण्डु
फलोराजीमानोमृताफलः॥तिक्तोत्तमोबीजगर्भःकुष्ठारिःकास
मर्द्दनः॥पञ्चराजीफलोज्योत्स्नाकच्छुरोज्वरनाशनः॥

अर्थ-पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान, अमृताफल, तिक्तोत्तम, बीजगर्भ, कुष्ठारि, कासमर्द्दन, पञ्चराजीफल, ज्योत्स्ना, कच्छुर, ज्वरनाशन (तिक्तक- पटु, पटुक, कर्कशदल, कुलज, वाजिमान्, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक्त, तिक्तभद्रक, कटुफल, कटुक, कटु, अमृतफल, पाण्डुक, पाण्डु, नागफल, पञ्जर, ज्योत्स्नी, कच्छुघ्नी, प्रतीक, कुष्ठहा, कासभञ्जन)।

संस्कृतभाषामें	पटोल, तिक्तपटोल।
हिन्दीभाषामें	कडवे परवल।
वंगभाषामें	पलतालता।
मराठीभाषामें	कडुपडवळ।
गुजरातीभाषामें	कडवापटोल, आंख्यफुटामणां।
कर्णाटकीभाषामें	कहिपडवल।
तैलिङ्गीभाषामें	सेसपदूला-कोम्मुपटोल।
तामिलीभाषामें	कोम्बुपुडलें।
कानाडीभाषामें	मोरहडी।
लैटिन्भाषामें	ट्रिकोसैंथिस् कुकुमेरिना। Trichosanthis cucumerina

अस्य गुणाः।

पटोलःकटुतिक्तोष्णःसरःपित्तबलासजित्।
कफकण्डूतिकुष्ठासृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-कडवे परवल-कटु, तिक्त, गरम, कुछेक दस्तावर तथा पित्त, वलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर और दाहकी वेदनाको दूर करनेवाले हैं।

अन्यच्च।

पटोलकफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम्। विसर्पनयनव्याधि-
त्रिदोषगरनाशनम्॥पटोलपत्रंपित्तघ्नंनाडीतस्यकफापहा।
फलंतस्यत्रिदोषघ्नंमूलंतस्यविरेचनम्॥ (रा० व०)

अर्थ-कडवे परवल-कफ, रक्तपित्त, व्रण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषका विनाश करेहैं। पटोलपत्र-पित्तनाशक है। परवलकी नाडी-कफनाशक। इसके फल-त्रिदोषनाशक और इसकी जड-दस्तावर है।

अन्यच्च।

तिक्तापटोलीकटुकासारकोष्णाकटुःस्मृता। भेदनीपाच-
नीचैवअग्निदीप्तिकरीपरा॥ पित्तंकफंचकण्डूञ्चकुष्ठंरक्तवि-
कारकम्।ज्वरंदाहंतृषांकोष्ठरोगंकृमिंचनाशयेत्॥ फल-
मस्याःकटुस्तिक्तंपाकेस्वादुलघुस्मृतम्। दीपनंपाचनंवृ-
ष्यंमललोमनकारकम्॥ वातपित्तकफानांतुयथास्थाने

निवेशकम् । सारकंश्वासज्वरहृत्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पित्तनाशकरंपर्णमूलंकफविनाशकम् । कफनाशकरंवल्लीतैलं वातकफापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवे परवल-चरपरे, सारक, गरम, कटु, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक तथा, पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, कोष्ठरोग और कृमिरोगका नाश करे है। इसके फल-चरपरे, कडवे, स्वादुपाकी, हलके, दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात, पित्त और कफको यथास्थानमें स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्वास, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोगका नाशकरे हैं। इसके पत्ते-पित्तनाशक। इसकी जड-कफनाशक। इसकी वेलकफनाशक और इसका तेल-वात और कफनाशक है।

विवरण। परवल मधुर और कडवे इन भेदोंसे दो प्रकारके होते हैं, तहां कडवे परवल औषधिमें अधिकतासे लियेजाते हैं। परवलकी वेल प्रायः जंगलमें होती है, फूल सफेद, फल नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं।

विम्बीनामानि ।

बिम्बीरक्तफलातुण्डीतुण्डिकेरीचबिम्बिका ।
ओष्ठोपमफलाप्रोक्तापीलुपर्णीचकथ्यते ॥

अर्थ-बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरी, विम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी (ओष्ठी, कर्म्मकरी, तुण्डीकेरी, तुण्डिकेरिका, तुण्डिकेरि, झुण्डिकेशी, विम्बा, विम्बक, विम्बजा, दन्तच्छदोपमा, गोह्री, रुचिरफला, छर्दिनी)।

संस्कृतभाषामें	विम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कन्दूरी ।
वंगभाषामें	तेलाकुच ।
मराठीभाषामें	गोडतोंडली, कोंडवली ।
गुजरातीभाषामें	घोलांमिठां ।
कर्णाटकीभाषामें	सीहिदोंडे, तोंडेहण्णु ।
तामिलभाषामें	कोवे ।
तैलिंगीभाषामें	दोंडतिगे ।
लैटिन्भाषामें	कोकसियाइण्डिक ।

अस्या गुणाः ।

बिम्बीफलंस्वादुशीतंगुरुपित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनंलेखनंरुच्यंविबंधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ—कन्दूरी—स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, रक्तापित्तनाशक, वातविनाशक, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक तथा विबंध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

बिम्बीफलंस्वादुशीतंस्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।
हृद्दाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ—कन्दूरी—स्वादिष्ठ, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफपित्तनाशक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खांसी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है ।

अन्यच्च ।

बिम्बिकामधुराशीताकफवान्तिकरामता।रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान्॥रक्तरुग्विषकासांश्वरक्तपित्तज्वरान्हरेत् ।फलमस्यागुरुस्वादुशीतलंलेखनंमतम्॥मलस्तम्भकरंस्तन्यमुदरेवातसंचयम् । रुच्यंपित्तंरक्तदोषवाताश्वासंचनाशयेत्।शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरंमतम् । पुष्पमस्याःकण्डुपित्तकामलानाशकारकम्॥अस्याःपर्णोद्भवाशाकाशीतलामधुरालघुः । ग्राहकातुवरातिक्तापाके कट्वीचवातला ॥ कफपित्तहराप्रोक्तापूर्वैर्वैद्यवरैःस्फुटम् । मूलमस्याहिमंमेहनाशनंधातुवर्द्धकम्॥हस्तदाहहरंभ्रान्तिवान्तिनाशकरंमतम् । (इतिरत्नाकरे)

अर्थ—कन्दूरी—मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सूजन, रुधिरविकार, विषदोष, खाँसी, रक्तपित्त और ज्वरको दूर करेहै । इसके फल भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, लेखन, मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमें वायुको संचितकरनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सूजन, वृद्धि, दाह, खांसी और दमेंको हरनेवाले हैं । इसके फूल—कण्डू, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले हैं । इसके

पत्तोंका शाक-शीतल, मधुर, हलका, मलरोधक, कसेला, पचनेमें, चरपरा, बादी तथा कफ और पित्तका नाशकरे है। इसकी जड-शीतल, प्रमेहनाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पाँवोंकी दाह, वान्ति और भ्रान्तिको शान्तिकरे है।

तिक्तबिम्बीनामानि।

तिक्ततुण्डीतुतिक्ताख्याकटुकाकटुतुण्डिका।
बिम्बीचकटुतिक्तादितुण्डीपर्य्यायगाचसा॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुण्डिका, कटुबिम्बी, तिक्तबिम्बी, तुण्डीपर्य्यायगा।

संस्कृतभाषामें	तिक्ततुण्डी।
हिंदीभाषामें	कडवी कन्दूरी।
वंगभाषामें	कटुतराइ, तितपलता, तेत् केन्दुरुकी।
मराठीभाषामें	कडू तोंडली।
गुजरातीभाषामें	कडवी घोली।
कर्णाटकीभाषामें	तीतकुन्दुरु, कहितोडे।
लैटिन्भाषामें	सिफेलेन्द्राइंडिका। Cephalandra Indica
	कोकासिनीयाणमेरा।

अस्या गुणाः।

कटुतुण्डीकटुस्तिक्ताकफपित्तविषापहा।
अरोचकास्रपित्तघ्नीसदापथ्याचरेचनी॥ (रा०नि०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-चरपरी, कडवी, सदैव, पथ्य, रेचन करनेवाली तथा कफ, पित्त, विष, अरुचि, खाँसी और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली है।

अन्यच्च।

तिक्तबिम्बीफलंतिक्तंवामकंवातकोपनम्।
शोथरुग्विषपित्तघ्नंरक्तरुक्कफपाण्डुहम्॥ (नि०र०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-कडवी, वमनकारक, वातको कुपित करनेवाली तथा शोथरोग, बिष, पित्त, रुधिरविकार, कफ और पाण्डुरोगको हरनेवालीहै।

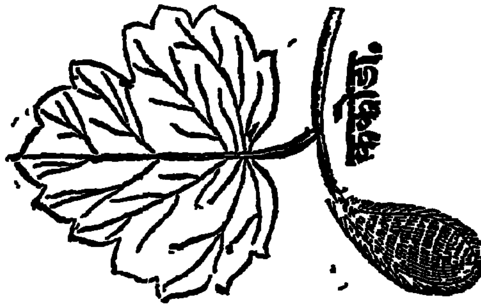
अपिच।

तिक्तबिम्बीफलंचामंछर्द्दनंकफनाशनम्।
पक्वंपित्तहरंशीतंमधुरंरसपाकयोः॥ (शो०नि०)

अर्थ–कच्ची कडवी कन्दूरी–वमनकारक और कफनाशक है । पकी कडवी कन्दूरी–पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमें मधुर है ।

विवरण–कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोंसे दो प्रकारकी होती है, तहां मधुर कन्दूरी प्रायः बागोंमें बोई जातीहै और कडवी कन्दूरी स्वयं वन तथा बँसियोंमें उत्पन्न होजाती है इसकी वेल चलतीहै । पत्ते तीन अनीवाले होतेहैं । फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

ककोंटकीनामानि ।



ककोंटकीपीतपुष्पीमहाजालीतिचोच्यते ।

अर्थ–ककोंटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्ध्या, बोधनाज्ञालि, मनोज्ञा, मनस्विनी) ।

संस्कृतभाषामें	ककोंटकी ।
हिंदीभाषामें	खेखसा, ककोंडा ।
वंगभाषामें	फलशाकविशेष (काकरोल) ।
मराठीभाषामें	कांटली, कर्टोली ।
गुजरातीभाषामें	कंटोली ।
लैटिनभाषामें	मोमोर्डिकाडायोईका ।
तैलिङ्गीभाषामें	अगोरकर ।
म०	वेंपावल ।
तु०	काड कुंचाला ।
ता०	इगारवल्लि ।
क०	मडुवागाळ ।

अस्या गुणाः ।

ककोंटीमलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी ।

कासश्वासज्वरान्हन्तिकटुपाकाचदीपनी ॥

अर्थ-ककोडा-मलको हरनेवाला तथा कुष्ठ, हृल्लास, अरुचि, श्वास, खाँसी और ज्वरको दूर करनेवाला, कटुपाकी और दीपन है ।

अन्यच्च ।

कर्कोटकीकटूष्णाचतिक्ताविषविनाशिनी ।
वातघ्नीपित्तहृच्चैवदीपनीरुचिकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-ककोडा-चरपरा, गरम, कडवा, विषविनाशक, वातनाशक, पित्तहारक, दीपन और रुचिकारक है ।

अपिच ।

कर्कोटकीरुचिकराकट्वीचाग्निप्रदीपनी । तिक्तोष्णावातकफहृद्विषंपित्तंविनाशयेत् ॥ फलमस्यास्तुमधुरंलघुपाकेकटुस्मृतम् । अग्निदीप्तिकरंगुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत् ॥ कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत् । लालास्रावारुचिर्वातकिलासहृदयव्यथाः । नाशयेत्पर्णमस्याश्वरुच्यंवृष्यंत्रिदोषनुत् । कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्कार्शनाशनम् ॥ कंदोमाक्षिकसंयुक्तःशीर्षरोगेप्रशस्यते ॥ (नि०र०)

अर्थ-कर्कोटकी-रुचिकारक, कटु, अग्निप्रदीपक, तिक्त, गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाशकरेहै । इसके फल-मधुर, लघु, पचनेमें कटु, अग्निप्रदीपक तथा गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ, खाँसी, प्रमेह, श्वास, ज्वर, किलास, लालास्राव, अरुचि, वात, किलास और हृदयकी पीडाको दूरकरेहैं । इसके पत्ते-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और बवासीरको हरनेवाले हैं । इसका कंद-मधुके साथ मस्तकरोगमें हितकारीहै ।

विवरण । ककोडेकी वेल प्रायः झाडी और वाडोंके ऊपर फैलजातीहै, फलके ऊपर कांटे होतेहैं कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल पडजातेहैं ।

कारवेल्लनाम।नि ।

कारवेल्लंकठिल्लंस्यादुग्रकाण्डंसुकाण्डकम् ।

अर्थ-कारवेल्ल, कठिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डक (कठिल, कारवेल्लक)

कारवेल्लीनामानि ।



कारवेल्लीवारिवल्लीबृहद्वल्ल्यापरास्मृता ।

अर्थ–कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (करका, करवल्ली, चित्रपत्र, कठिल्लका, सूक्ष्मवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्लिका, कटिल्लक, सुषवी, राजवल्ली, शुषवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्डूर, काण्डकटुक, सुकाण्ड, उग्रकाण्ड, नासासंवेदन, पटु) ।

संस्कृतभाषामें	कारवेल्ल, कारवेल्ली ।
हिन्दीभाषामें	करेला, करेली ।
वंगभाषामें	बडकरेलाउच्छे, छोटकरलाउच्छे ।
मराठीभाषामें	कारलें, क्षुद्रकारली, लघुकारली ।
गुजरातीभाषामें	कारेला, कडवा.वेला ।
कर्णाटकीभाषामें	हागल ।
तैलङ्गीभाषामें	करिला, काकरकाया ।
औत्कलीभाषामें	शलरा ।
इंग्रेजीभाषामें	हेरीमोर्डिका । Hairy Mordica
लैटिन्भाषामें	मोमोर्डिकाकरेंटिया । Memordica Choratia
	मो. सिंबेलेरिया । M Cymbalaria
फारसीभाषामें	कारेलाइ ।
अरबीभाषामें	किस्सा, उलहिमार ।

कारवेल्लगुणाः ।

कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपाण्डुमेहकृमीन्हरेत् ॥

तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः। (भा.प्र.)

अर्थ-करेला-शीतल, भेदक, हलका, कडवा, वातकारक नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, प्रमेह और कृमिरोगका नाशकरे है। करेलीके गुणभी करेलेकी समानहैं विशेषकरके पित्तनाशक और हलकी है।

अन्यच्च।

कारवेल्लमवृष्यञ्चरोचनंकफपित्तजित् (रा॰नि॰)

अर्थ-करेला-अवृष्य, रुचिकारक तथा कफ और पित्तका नाशकरेहै।

अन्यच्च।

[कारवेल्लश्चवातघ्नःकफघ्नःपित्तकारकः।
उष्णोरुचिकरःप्रोक्तोरक्तदोषकरोनृणाम्] (हा॰)

अर्थ-करेला-वातविनाशक, कफनाशक, पित्तकारक, गरम, रुचिकारक और रुधिरके विकारोंको करनेवालाहै।

अपिच।

कारवेल्लंचातितिक्तमग्निदीप्तिकरंलघु। उष्णंशीतंभेदकंच स्वादुपथ्यंसमीरितम्॥ अरुचिंचकफंवातंरक्तदोषंज्वरंकृमीन्। पित्तंपाण्डुञ्चकुष्ठञ्चनाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ बृहदुक्तंकारवेल्लंकटुतिक्तंचदीपकम्। अवृष्यंभेदकंस्वादुरुच्यं क्षारंलघुस्मृतम्॥ अवातलंपित्तहरंरक्तरुक्पाण्डुरोगहृत्। अरोचकंकफंश्वासंव्रणंकासंकृमींस्तथा॥ कोष्ठंकुष्ठंज्वरंचैव प्रमेहाध्माननाशनम्। कामलांनाशयत्येवगुणास्त्वन्येतुपूर्ववत्॥ जलजंकारवेल्लंस्यात्तिक्तंभेदकरंमतम्। कफंकुष्ठं पाण्डुरोगंकृमीन्पित्तञ्चनाशयेत्॥ वनजंकारवेल्लन्तुदीपनं तिक्तकंमतम्। हृद्यंज्वरार्शःकासघ्नंकफवातकृमीहरम् (रत्नाकरे)

अर्थ-करेली-अत्यन्त कडवी, अग्निप्रदीपक, हलकी, गरम, शीतल, दस्तावर, स्वादु, पथ्य तथा अरुचि, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, कृमि, पित्त, पाण्डरोग और कुष्ठरोगको नष्टकरनेवाली है। करेला-कटु, तिक्त, दीपन, अवृष्य, भेदक, स्वादिष्ठ, रुचिकारक, क्षार, हलका, वातकारक नहीं, पित्तनाशक तथा रुधिरविकार, पाण्डुरोग, अरुचि, कफ, श्वास, व्रण

खाँसी, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ, ज्वर, प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है। और शेष गुण पूर्वकी नाईं जानने। जलमें उत्पन्न होनेवाला करेला-कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग, कृमि और पित्तरोगका नाश करे है। वनकरेला-दीपन, कडवा, हृदयको हितकारी तथा ज्वर, ववासीर, खाँसी और वातको दूरकरे है।

डिण्डिशनामानि-गुणाश्च ।

डिण्डिशोरोमशफलोमुनिनिर्मितइत्यपि ।
डिण्डिशोरुचिकृद्भेदीपित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥
सुशीतोवातलोरूक्षोमूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ (भा० प्र०)

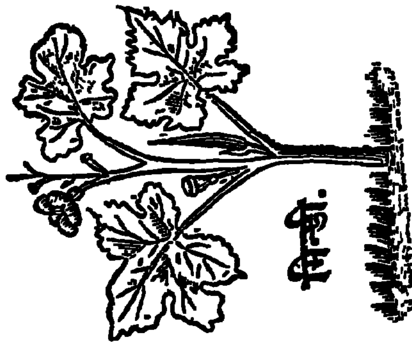
अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित । हिं० ढेंढश । ढेंढश-रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, वादी, रूक्ष, मूत्रजनक और पथरीको दूर करे है।

पिण्डारगुणाः ।

पिण्डारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् ।
पाकेलघुविशेषेणविषशान्तिकरंस्मृतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार-शीतल, बलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक, लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है।

भेण्डानामानि ।



भेण्डाभिण्डातिकाभिण्डोभिण्डकःक्षेत्रसम्भवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रःसुशाकःपिच्छिलःस्मृतः ॥

अर्थ-भेण्डा, भिण्डातिका, भिण्ड, भिण्डक, क्षेत्रसम्भव, चतुष्पद, चतुःपुण्ड्र, सुशाक, पिच्छिल (भिण्डीतक, अस्रपत्रक, करपर्ण, वृत्तवीज)।

संस्कृतभाषामें	भिण्डा ।
हिंदीभाषामें	भिण्डी ।
वंगभाषामें	स्वनामख्यातफलशाक वि० ।
मराठीभाषामें	भेंडे, रानभेंडे ।
गुजरातीभाषामें	भींडा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेंडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	भेंडकाया ।
लैटिन्भाषामें	हिबिस्कस् एस्क्युलेंटस् । Hidischus Esculentus
फारसीभाषामें	बामिया ।
अरबीभाषामें	कुवार ।

भेण्डागुणाः ।

करपर्णफलंरुच्यंपिच्छिलंगुरुवातलम्।वृष्यंश्लेष्मकरंबल्यं शुक्रवृद्धिकरंपरम् ॥ कासेमन्दानलेवातेपीनसेषुविनिंदितम्।

अर्थ-भिण्डी-रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, वादी, वृष्य, कफकारक, बलकारक, शुक्रवर्द्धक तथा खाँसा, मन्दाग्नि, वात और पीनसरोगमें अहितकारी है ।

अन्यच्च ।

भेण्डात्वम्लरसाचोष्णाग्राहीचरुचिकारका ।
राजनामानिघण्टेचद्रव्येवृष्यापरास्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ-भिण्डी-अम्ल, गरम, मलरोधक, रुचिकारक और वृष्यहै ।

वार्त्ताकुनामानि ।



वार्त्ताकीकण्टवृन्ताकीकण्टालुःकण्टपत्रिका । निद्रालुर्मां-
सलफलावृन्ताकीचमहोटिका ॥ चित्रफलाकण्टकिनीमह-
तीकट्फलाचसा । मिश्रवर्णफलानीलफलारक्तफलातथा॥
शाकश्रेष्ठावृत्तफलानृपप्रियफलास्मृता ।

अर्थ—वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका, निद्रालु, मांसल-फला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कट्फला, मिश्र-वर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिकुण, वार्त्ताक, शाक-विल्व, राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाकविल्वक, वार्तिक, वातिगम, बृन्ताक, वङ्गण, अङ्गण, बेर, नीलवृषा, भाण्टिका, नीलकण्टका) ।

संस्कृतभाषामें	वार्त्ताकु ।
हिंदीभाषामें	बैंगन, भण्टा, भटा ।
वंगभाषामें	वेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	वांगे ।
गुजरातीभाषामें	रिंगणा, रिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	वदने ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंकाया, वङ्गणाहिरिवंगु ।
औत्कलीभाषामें	वाइगुण ।
तामिलीभाषामें	कुठिरेकइ ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिजल् । Bringle
लैटिन्भाषामें	सोलेनंमेलंज़ीना । Solanum Melongena
फारसीभाषामें	वादंगान् ।
अरबीभाषामें	वादंजान् ।

वार्त्ताकुगुणाः ।

वार्त्ताकीकटुकारुच्यामधुरापित्तनाशिनी ।
बलपुष्टिकरीहृद्यागुरुर्वातेषुनिन्दिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ—बैंगन—कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी, भारी और वातरोगमें निन्दितहै ।

अन्यच्च ।

निद्राकरंप्रीतिकरंगुरुस्यात्सवातलंकासविकारकारि।

श्रेष्ठंसुदीर्घंकफवर्द्धनञ्चसश्वासकासारुचिवर्द्धनञ्च॥ (हा.)

अर्थ-बैंगन-निद्राजनक, प्रीतिकारक, भारी, बादी, खाँसीके विकारोंको करनेवाला तथा कफ, श्वास, खाँसी और अरुचिको बढानेवाला है । लम्बा बैंगन श्रेष्ठ होता है ।

अन्यच्च ।

अग्निप्रदामारुतनाशिनीचशुक्रप्रदाशोणितवर्द्धिनीच ।
हृल्लासकासारुचिनाशिनीचवार्त्ताकुरेषागुणसप्तयुक्ता॥

अर्थ-बैंगन-अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हल्लास, खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाला है ।

साबालाकफपित्तघ्नीपक्कासक्षारपित्तला।सदाफलात्रिदोषघ्नीरक्तपित्तप्रसादनी ॥अङ्गारपक्कावार्त्ताकुःकिञ्चित्पित्तकरीमता । कफमेदोऽनिलहरासरालघुतरापरा ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्चा बैंगन-कफपित्तनाशक और पक्का बैंगन-क्षारयुक्त और पित्तल है । मध्यम बैंगन-त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मल करनेवाला है । अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन [बैंगनका भुरता]-किंचित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और लघुतर है ।

अन्यच्च ।

वृन्ताकंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंक्षुधादीपनं हृद्यंरुच्यमपित्तलंकफमरुज्जित्सर्वशाकोत्तमम् ॥ सक्षारंकफवातहारिरुचिकृद्वह्नेस्तुसंदीपनं तिक्तोष्णंमधुरंतथाकटुरसमीषच्चपित्तप्रदम् ॥ (त्रि०)

अर्थ-बैगन-कटु, तिक्त, गरम, मधुर, क्षार, क्षुधाको दीपनकरनेवाला, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, अपित्तल, कफवातनाशक और सर्वशाकोंमें उत्तम है । और किसी क्षारके साथ कफवातनाशक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तिक्त, गरम, मधुर, कटुरसान्वित और किञ्चित् पित्तको कुपित करे है ।

अपिच ।

वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णंकटुपाकमपित्तलम्।ज्वरवातबलासघ्नंदीपनंशुक्रलंलघु ॥ तद्बालंकफपित्तघ्नंवृद्धंपित्तकरंगुरु ।

वृन्ताकंपित्तलंकिञ्चिदङ्गारपरिपाचितम्॥ कफमेदोनिला-
मघ्नमत्यन्तलघुदीपनम्। तदेवहिगुरुस्निग्धंसतैलंलवणा-
न्वितम्॥ अपरंश्वेतवृन्ताकंकुक्कुटाण्डसमंभवेत्। तदर्शः-
सुविशेषेणहितंहीनञ्चपूर्वतः॥(भा०प्र०)

अर्थ-बैंगन-स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, पाकमें कटु, अपित्तल, ज्वर, वात और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक और हलका है, कच्चा बैंगन-कफपित्त-नाशक, पक्का बैंगन-पित्तकारक और भारीहै। अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन किंचित् पित्तकारक है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हलका तथा दीपन है वही अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन-तेल और लवणयुक्त, भारी और स्निग्ध है। और दूसरा सफेद रंगका बैंगन मुरगेकी अंडेकी समान होता है वह सफेद बैंगन बवासीरवाले मनुष्योंको विशेष करके हितकारी है और पहिले बैंगनोंसे गुणोंमें हीन है। बैंगन सर्वत्र प्रसिद्ध है।

गोराणीनामानि।

गोराणीदृढबीजाचनिशांध्यघ्नीचबाकुची।
सुशाकावक्रशिम्बीचगोरक्षफलिनीस्मृता॥

अर्थ-गोराणी, दृढबीजा, निशांध्यघ्नी, बाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी, गोरक्षफलिनी।

संस्कृतभाषामें	गोराणी।
हिन्दीभाषामें	ग्वारकी फली।
मराठीभाषामें	गोवारीच्या शेंगा, बांवच्या।
गुजरातीभाषामें	गुवार।
तैलिङ्गीभाषामें	गोरचिकुडु।
लैटिन्भाषामें	सोयेमोपसिस् सोरेलियाइडिज्। Cyamopsis Psoralioide

अस्या गुणाः।

बाकुचिकाशिम्बिरूक्षावातलामधुरागुरुः।
सराकफकरीचाग्निदीपनीपित्तनाशिनी॥(नि० र०)
"पत्रमस्यानिशांध्यघ्नंपित्तनाशकरंपरम्"।

अर्थ-गुवारकी फली-रूखी, वादी, मधुर, भारी, दस्तावर, कफकारक,

अग्निप्रदीपक और पित्तनाशक है। गुवारके पत्ते-रतोंधेको दूरकरनेवाले और पित्तको हरनेवाले हैं।

हरितनिष्पावीनामानि।

निष्पावीग्रामजादिःस्यात्फलिनीनखपूर्व्विका।
मण्डपाफलिकाशिम्बीज्ञेयागुच्छफलाचसा॥

अर्थ-निष्पावी, ग्रामजा, फलिनी, नखपूर्व्विका, मण्डपा, फलिका, शिम्बी, गुच्छफला (विशालफलिका, निष्पावि, चिपिटा)।

शुभ्रनिष्पावीनामानि।

अन्यांगुलिफलाचैवनखनिष्पाविकास्मृता।
वृत्तनिष्पाविकाग्राम्यानखपुञ्जफलाशना॥

अर्थ-अङ्गुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका, ग्रौम्या, नखपुञ्जफला, अशना (कपिकच्छुफला)।

संस्कृतभाषामें	निष्पावी, अंगुलिफला।
हिन्दीभाषामें	सेंम, सेंवी।
वंगभाषामें	बोरा, बरवटी।
मराठीभाषामें	घेवडा, लघु घेवडा, थोर घेवडा, वालपापडी।
गुजरातीभाषामें	वालोल, पांदडी।
तामिलीभाषामें	मोच्चेकोटै।
तैलङ्गीभाषामें	चिकुंडु, अनुमुलु।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्सीडेड डोलिकोस। Black seeded Dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् लबलब। Dolichos Lablab
अरबीभाषामें	बिन्स।

द्विविधनिष्पावीगुणाः।

निष्पावौद्वौहरिच्छुभ्रौकषायौमधुरौरसौ।
कण्ठशुद्धिकरौमेध्यौदीपनौरुचिकारकौ॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (हरी और सफेद) निष्पावी-कषेली, मधुर, कण्ठशोधक, मेधाजनक, दीपन और रुचिकारक है।

अन्यच्च।

ग्रामजावातलारुच्यातुवरामधुरामता। मुखप्रियाकण्ठशु-

द्धिकारिणीग्राहिणीमता ॥अग्निदीप्तिकरीचैवकफपित्तवि-
नाशका। बृहत्तुग्रामजारुच्यावातलाचाग्निदीपनी। मुख-
प्रियाचसंप्रोक्ताशाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णातुग्रामजाक-
ण्ठ्यामेध्याचाग्निप्रदीपनी।तुवराचरसेमाध्वीरुच्याचग्रा-
हिणीमता ॥ प्रोक्ताङ्गुलिफलावातकारिणीकफकारिणी।
विषनाशकरीप्रोक्तागुणास्त्वन्येतुकृष्णवत्। पीतायास्त्व-
धिकाज्ञेयाःपूर्ववैद्यैर्विचारिभिः। (इति रत्नाकरे)

अर्थ–निष्पावी–वादी, रुचिकारक, कषेली, मधुर, मुखप्रिय, कण्ठको शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है। बडी निष्पावी–रुचिकारक, वादी, अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है। काली निष्पावी–कण्ठको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, कषेली, मधुर, रुचिकारक और मलरोधक है। सफेद निष्पावी–वादी, कफकारक, विषविनाशक और शेष गुण काली निष्पावीकी समान जानने। पीली निष्पावीके गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक हैं।

शिम्बीनामानि।

असिशिम्बीखड्गशिम्बीशिंबनीनीलशिम्बिका।
महाशिम्बिबृहच्छिम्बीस्थूलशिम्बीचशिम्बिका ॥

अर्थ–असिशिम्बी, खड्गशिम्बी, शिम्बिनी, नीलशिंबिका, महाशिंवी, बृहच्छिम्बी, स्थूलशिंवी, शिम्बिका।

कोलशिम्बीनामानि।

कोलशिम्बीकृष्णफलाखड्गासूकरपादिका।
शिम्बीकुशिम्बीकुत्साखशिम्बीपुस्तकशिम्बिका ॥

अर्थ–कोलशिम्बी, कृष्णफला, खड्गा, सूकरपादिका, शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्साखशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका (पर्टपंकपादिका)।

संस्कृतभाषामें	खड्गशिम्बी, कोलशिम्बी।
हिन्दीभाषामें	सेम, सुअरासेम, गोजियासेम।
वंगभाषाम	शेमगाछ।
मराठीभाषामें	खडसांवळ, आवईची शेंग।

गुजरातीभाषामें	परवोलिँया, तरवारडी।
तैलिंगीभाषामें	कारुचिकट्टु।
लैटिन्भाषामें	केनावोलिया एन्‌ सिफोर्मिस्‌। Canavalia Ensiformis
अरबीभाषामें	गलाफुलगोल।

द्विविधशिम्बीगुणाः।

शिम्बिद्वयञ्चमधुरंरसेपाकेहिमंगुरु।
बल्यंदाहहरंप्रोक्तंश्लेष्मलंवातपित्तजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी सेम-मधुर, पाकमेंभी मधुर, शीतल, भारी, बलकारक, दाहनाशक, कफकारक और वातपित्तको जीतनेवाली हैं।

अन्यच्च।

कृष्णासर्वबलीचोष्णागुर्वीबल्यारुचिप्रदा।
शुक्राग्निमांद्यजननीमलस्तम्भकरीमता ॥
तुवरामादकावातकफनुत्पित्तलामता। (नि०र०)

अर्थ-काली सेम-गरम, भारी, बलकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, मन्दाग्निजनक, मलस्तम्भक, कषेली, मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है।

अन्यच्च।

असिशिम्बीतुमधुराकषायाश्लेष्मपित्तजित्।
व्रणदोषापहंत्रीचशीतलारुचिदीपनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सेम-मधुर, कषेली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोंको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है।

कोलशिम्बीगुणाः।

कोलशिम्बीसमीरघ्नीगुर्व्युष्णाकफपित्तकृत्।
शुक्राग्निमांद्यकृद्वृष्यारुचिकृद्बद्धविड्गुरुः ॥

अर्थ-सुअरासेम-वातनाशक, भारी, गरम, कफपित्तजनक, शुक्र और अग्निको मंद करनेवाली, वृष्य, रुचिकारक, मलरोधक और भारी है।

दधिपुष्पीनामानि।

दधिपुष्पीखड्गांगीखड्गपर्यंकपादिकाकृपा।

खट्वापादीवंश्याकाकांकोलपालिकानवधा ॥

अर्थ–दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्य्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वंश्या, कांकाकोलपालिका ।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम ।
वंगभाषामें	कट्टराशिम् ।
मराठीभाषामें	गोडी कोंहळी ।
गुजरातीभाषामें	अडदवेल्य–कागडोलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी ।
लैटिन्‌भाषामें	मुक्युनामोनोंस्परमा । Mucuna-Monosperma

अस्या गुणाः ।

दधिपुष्पीकटुमधुराशिशिरासन्तापपित्तदोषघ्नी ।
वातामयदोषकरीगुरुस्तथारोचकघ्नीच ॥ (रा०नि०)

अर्थ–चमरियासेम–कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दधिपुष्पीतुमधुराकट्वीशीतोष्णदामता । वृष्याहृद्यागुरुर्ज्ञेयामलस्तम्भाग्निमांद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदाप्रोक्तासन्तापारोचकाञ्जयेत् । त्रिदोषशमनीप्रोक्तापूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥ गुरुहृद्यंबीजमस्यारुचिदंस्तम्भकंमतम् । कफाग्निमांद्यकरणंवातंपित्तंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ–दधिपुष्पी–करियासेम–मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरूचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है । इसके बीज–भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमांद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे हैं ।

सौभाञ्जनशिवीगुणाः ।

सौभाञ्जनफलंस्वादुकषायंकफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सहिंजनेकी फली-स्वादिष्ठ, कषेली, कफपित्तनाशक तथा शूल, कोढ, क्षय, श्वास और गुल्मको दूर करे है तथा दीपनहै ।

डोडिकानामगुणाश्च ।

डोडिकाविषमुष्टिश्चडोडीत्यपिसुमुष्टिका ।
डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावह्निप्रदालघुः ॥
हन्तिपित्तकफार्शांसिकृमिगुल्मविषामयान् । (भा.प्र.)

अर्थ-डोडिका, विषमुष्टि, डोडी, सुमुष्टिका । डोडी अर्थात् करेरुआ-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, अग्निजनक, हलकी तथा पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गुल्म और विषके रोगोंको दूर करे है ।

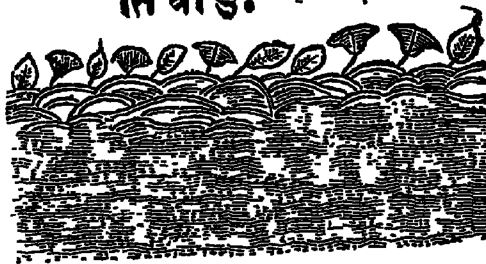
मुनिशिम्बीगुणाः ।

मुनिशिम्बीसराप्रोक्ताबुद्धिदारुचिदालघुः । पाककालेतु मधुरातिक्ताचैवस्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोग-विषापनुत्।शोषगुल्महराप्रोक्तासापक्वारूक्षवातला ॥ (नि.र.)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक, बुद्धिदायक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मको हरनेवाली है। वही पकी हुई फली-रूखी और बादी करे है ।

शृङ्गाटकनामानि ।

सिंघाडे.



शृङ्गाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि ।

अर्थ-शृङ्गाटक, जलफल, त्रिकोणफल (जलसूचि, संघाटिका, वारिकण्टक, शुक्लदुग्ध, शृङ्गाट, वारिकुब्जक, क्षीरशुक्ल, जलकण्टक, शृङ्गरुह, जलवल्ली, जलाशय, शृङ्गकन्द, शृङ्गमूल, विषाणी, जलकन्द, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक) ।

संस्कृतभाषामें	शृङ्गाटक ।
हिन्दीभाषामें	सिंघाडे ।
वंगभाषामें	पाणिफल, सिंघाडे ।
मराठीभाषामें	शिंगाडे ।
गुजरातीभाषामें	शिंगोडां ।
कर्णाटकीभाषामें	सिंघाडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	परिकेगड्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरकेलट्राप । Water Caltrop
लैटिन्भाषामें	ट्रापाबाईस्पाईनोझ । Trapa Bisp nosa
फारसीभाषामें	सुरंजान् ।

अस्य गुणाः ।

शृङ्गाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् ।
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सिंघाडे–शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफकारक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटकःशोणितपित्तहारीलघुःखरोवृष्यतमोविशेषात् ।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारीरुचिप्रदोमेहनदार्ढ्यहेतुः ॥ (रा.नि.)

अर्थ–सिंघाडे–रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, वृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिंगको दृढकरनेवाले हैं ।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटंगुरुविष्टम्भिशीतलंरक्तपित्तनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ–सिंघाडे–भारी, विष्टम्भकारक, शीतल और रक्तपित्तनाशक हैं ।

अपिच ।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्योलघुर्ग्राहीरुचिप्रदः । शुक्रलोवातकफकृद्गुरुर्मेहनदार्ढ्यकृत् ॥ तुवरोमधुरःशीतस्तर्पणःस्वादुपित्तजित् । दाहत्रिदोषमेहघ्नोरक्तदोषश्रमापहः । शोफसन्तापहाप्रोक्तःपूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिंघाडे अत्यन्त वृष्य, हलके, मलरोधक, रुचिकारक, शुक्रजनक, वात और कफकारी, भारी, लिंगको दृढकरनेवाले, कषेले, मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक तथा दाह, त्रिदोष, प्रमेह, रुधिरविकार, भ्रम, सूजन और सन्तापको हरनेवाले हैं।

विवरण-सिंघाडेकी बेल बडे २ सरोवरोंमें होतीहैं वेलमें तीन धारवाले फल लगते हैं फलके ऊपर तीन कांटोंकी समान अणी होतीहै फलमेंसे एक मींग निकलतीहै उस मींगके शाकादि पदार्थ बनाते हैं और उसी मींगको सुखाकर उसका चून बनातेहैं उस चूनकीभी अनेक वस्तु बनाई जाती हैं इस देशमें सिंघाडेका चून फलाहार होगया है।

अथ नालशाकम्।

सर्षपनालगुणाः।

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम्।
कण्डूक्रिमिहरंदद्रुकुष्ठघ्नंरुचिकारकम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरसोंकी नाल-तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारक तथा वात, श्लेष्म, व्रण, कण्डू, कृमि, दद्रु और कुष्ठका नाशकरेहै।

शूरणनालगुणाः।

नालंतुसूरणंरुच्यंकफवातहरंलघु।
अर्शसांतुविशेषेणहितंकामाग्निदीपनम्॥ (म०वि०)

अर्थ-जमीकन्दकीनाल-रुचिकारी, कफ वातविनाशक, हलकी कामाग्निदीपक और विशेष करके अर्शरोगमें हितकारी है।

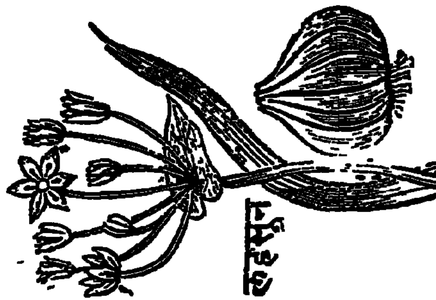
अथ कन्दशाकम्।

रसोननामानि।

रसोनोलशुनोरिष्टोम्लेच्छकन्दोमहौषधः।
शुक्लकन्दोमहाकन्दोवातारिर्दीर्घपत्रकः॥

अर्थ-रसोन, लशुन, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, महौषध, शुक्लकन्द, महाकन्द,

वातारि, दीर्घपत्रक (रसुन गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, भूतघ्न. उग्रगन्ध, यवनेष्ट)।



संस्कृतभाषामें	रसोन ।
हिन्दीभाषामें	लशुन, लहशन, कांदा ।
वंगभाषामें	लसुन ।
मराठीभाषामें	पांढरी लसूण, तांबडी लसूण ।
गुजरातीभाषामें	लसण ।
कर्णाटकीभाषामें	विलीयवेल्लुली ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्लाउल्लीगांडा ।
तामिलीभाषामें	वल्लइपाण्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	गार्लिकरूट् । Garlic root
लैटिन्भाषामें	एलियंसेटिवं । Alium Sativum
फारसीभाषामें	सीर ।
अरवीभाषामें	सुम् ईस्कुर्दियून सुमलहैयार ।

अस्यगुणा ।

पञ्चभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जितः । तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः ॥ कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तःपत्रेषु संस्थितः । नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः॥बीजे तुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः । रसोनोबृंहणोवृष्योस्निग्धोष्णःपाचनःसरः ॥ रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरको मतः॥भग्नसन्धानकृत्कण्ठ्योगुरुःपित्तास्रवृद्धिदः ॥ बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः॥हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्चहन्ति । मद्यंमांसंतथाम्लंचहितंलशुनसेविनाम् । व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ-लहसन-पांच रसयुक्त है और अम्लरस करके वर्जितहै इसकारण इसको एकरस ऊन अर्थात् रसोन कहतेहैं। इसकी जडमें चरपरा रस, पत्तोंमें कडवा रस, नालमें कषेला रस, नालके अगले भागमें लवणरस और वीजोंमें मधुर रस रहताहै। लशुन-बृंहण, वृष्य, स्निग्ध, उष्ण, पाचक, सारक, रस और पाकमें चरपरा, तीक्ष्ण, मधुर, भग्नसन्धानकारक, कण्ठको हितकारी, भारी, रक्तपित्तको वढानेवाली, वलकारक, वर्णको सुंदरकरनेवाली, मेधाकारक नेत्रोंको हितकारी और रसायनहै। तथा हृदयरोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूल, विवन्ध, गुल्म, अरुचि, खाँसी, सूजन, ववासीर, कोढ, मंदाग्नि, कृमि, वात, श्वास और कफको हरनेवालीहै, लहसन सेवनकरनेवाले मनुष्यको मद्य, मांस और अम्ल (खटाई) हितकारीहै। व्यायाम (दंड, कसरत), धूपमें फिरना, क्रोध करना, अत्यन्त जलपीना, दूध और गुड यह लशुन भक्षण करनेवाले मनुष्यको निरन्तर त्यागने चाहिये।

अन्यच्च।

रसोनउष्णःकटुपिच्छिलश्चस्निग्धोगुरुःस्वादुरसोथबल्यः। वृष्यःसुमेधास्वरवर्णकारीभग्नस्यसन्धानकरःसुतीक्ष्णः(रा.नि.

अर्थ-लशुन-गरम, चरपरी, पिच्छिल, स्निग्ध, भारी, स्वादिष्ठ, वलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, मेधाजनक, स्वरको उत्तमकरनेवाली, वर्णको सुंदरकरनेवाली, भग्नसन्धानकारक और तीक्ष्ण है।

अपिच।

रसोनःसर्वांगंप्रसरतिमरुन्नाशनकरःसरोवृष्यःस्निग्धोगुरुररुचिकासज्वरहरः। कफंश्वासंगुल्मंक्षपयतिचकेश्यःक्रिमिहरः प्रमेहार्शःकुष्ठश्वयथुहरउक्तस्त्वशिशिरः ॥ प्रभग्नेसन्धानोरुधिरयुतपित्तंप्रकुरुते जराव्याधिध्वंसीपचयतिचशूलप्रशमनः।

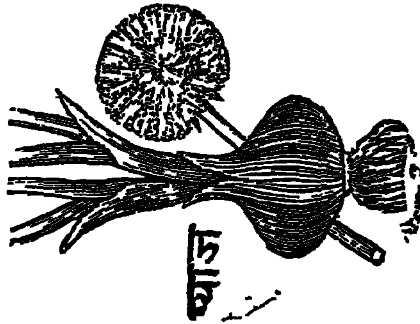
अर्थ-लहसन-शरीरमें सर्वप्रकारकी फैलीहुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खाँसीको हरनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और गुल्मका विनाश करनेवाली, केशोको हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह, ववासीर, कोढ और सूजनको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित-करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाश करे है ।

पलाण्डुनामानि ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषकः ।

अर्थ-पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीच-भोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, मुखगन्धक, वहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, मुकुन्दक) ।

राजपलाण्डुनामानि ।



अन्योराजपलाण्डुःस्याद्यवनेष्टोनृपाह्वयः । राजप्रियोमहा-कन्दोदीर्घपत्रश्चरोचकः ॥ नृपेष्टोनृपकन्दश्चमहाकन्दोनृप-प्रियः । रक्तकन्दश्चराजेष्टोनामान्यत्रत्रयोदश ॥

अर्थ-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकन्द, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट ।

संस्कृतभाषामें	पलाण्डु, राजपलाण्डु ।
हिन्दीभाषामें	प्याज, लालप्याज ।
वंगभाषामें	पेंयाज, लालपेंयाज ।
मराठीभाषामें	पांढराकांदा, लालकांदा, पातीचा कांदा ।

गुजरातीभाषामें	डुंगली ।
कर्णाटकीभाषामें	लोहिबी उल्लि-केंपिन उल्लि ।
तैलङ्गीभाषामें	नीरउली ।
तामिलभाषामें	वेङ्गयम् ।
इंग्रेजीभाषामें	बल्ब ओयिन । (Bulb) onion
लैटिन्भाषामें	एलीयंसेपा । Allium sepa
फारसीभाषामें	प्याज ।
अरबीभाषामें	वसल् ।

पलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुःकटुकोबल्यःकफपित्तहरोगुरुः ।
वृष्यश्चरोचनःस्निग्धोवान्तिदोषविनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-प्याज-चरपरी,बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचन, स्निग्ध और वमनके दोषको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुर्वातकफहाशुक्रलःशूलगुल्मनुत् । (हा० सं०)

अर्थ-प्याज-वातकफनाशक, शुक्रजनक तथा शूल और गुल्मका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुस्तुबुधैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ।
स्वादुःपाकरसेऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः ॥
हरतेकेवलंवातंबलवीर्य्यकरोगुरुः । (भा. प्र..)

अर्थ-प्याजके गुण लहसुनके गुणोंकी समान जाननें । प्याजस्वादुपाकी, स्वादिष्ठ, अनुष्ण, कफकारक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं, वातविनाशक, बलकारी, वीर्य्यजनक और भारी है ।

राजपलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुर्नृपपूर्वःस्याच्छिशिरः पित्तनाशनः ।
कफहृद्दीपनश्चैवबहुनिद्राकरस्तथा ॥

अर्थ-लालप्याज-शीतल, पित्तनाशक, कफहारक, दीपन और अत्यन्त निद्राकारक है ।

अन्यच्च ।

वक्ष्यतेनृपपलाण्डुलक्षणंक्षारतीक्ष्णमधुरोरुचिप्रदः ।
कण्ठशोषशमनोऽतिदीपनःश्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः ॥

अर्थ-लालप्याज-क्षार, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोषको दूर करनेवाली, अन्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त बृंहण है ।

पलाण्डुबीजगुणाः ।

बीजंपलाण्डोर्वृष्यंस्याद्दन्तकीटप्रमेहजित् । (रत्नाकर)

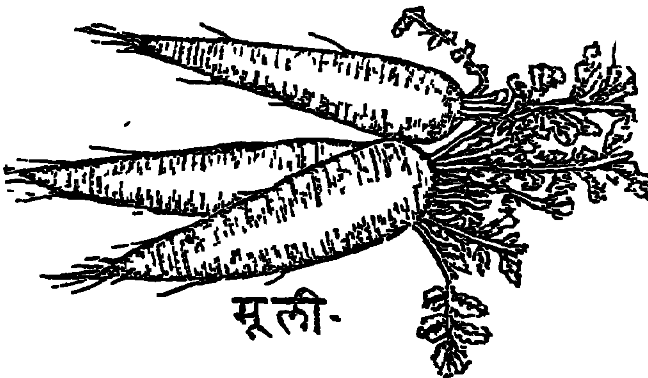
अर्थ-प्याजके बीज-वृष्य तथा दांतोंके कीडे और प्रमेहको दूर करनेवाले हैं ।

मूलकनामानि ।

मूलकंहरिपर्णञ्चभूमिकाक्षारएवच ।
नीलकण्ठंमहाकन्दंरुचिष्यंहस्तिदन्तकम् ॥

अर्थ-मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिष्य, हस्तिदन्तक (राजाल्लुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कन्दमूल, सित, शंखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारमूल, शिम्बी फल)

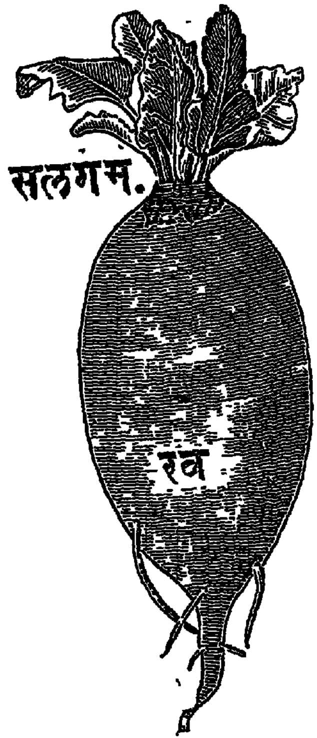
चाणक्यमूलकनामानि ।

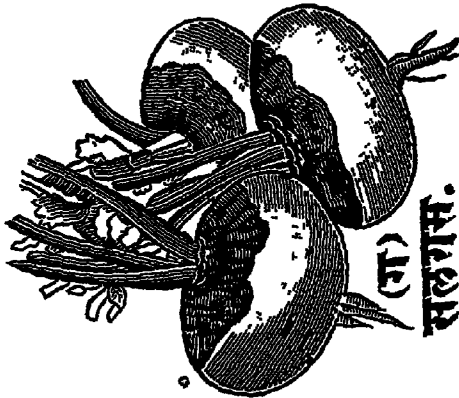

मूली-

चाणक्यमूलकंचान्यद्वानेयंविष्णुगुप्तकम् ।
स्थूलमूलंमहाकंदंकौटिल्यंमरुसम्भवम् ॥
शालामर्कटकंमिश्रंज्ञेयंचैवनवाभिधम् ।

अर्थ—चाणक्यमूलक, वानेय, विष्णुगुप्तक, स्थूलमूल, महाकन्द, कौटिल्य, मरुसम्भव, शालामर्कट, मिश्र ।







संस्कृतभाषामें	मूलक, चाणक्यमूलक ।
हिन्दीभाषामें	मूली, बडीमूली, मूला, मूलीकी फली ।
वंगभाषामें	मुला, चणकमुली ।
मराठीभाषामें	मूळा ।
गुजरातीभाषामें	मूळा, मूलाफली, मोगरी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुलंगी ।
तैलिङ्गीभाषामें	शूतिदंपा ।
इंग्रेजीभाषामें	रेडीश । Radish
लैटिन्भाषामें	रफेनस् स्टेटिवस् । Raphanus Stativus

फारसीभाषामें तुख्म तुख्मतुख्म ।
अरबीभाषामें फजल् वजरुल् ।

मूलकगुणाः ।

मूलकंतीक्ष्णमुष्णञ्चकटूष्णंग्राहिदीपनम् ।
दुर्नामगुल्महृद्रोगवातघ्नंरुचिदंगुरु ॥

अर्थ-मूली-तीक्ष्ण, गरम, कटु, उष्ण ग्राही, दीपन तथा बवासीर, गुल्म, हृदयरोग और वातका नाश करे है रुचिकारी और भारी है ।

चाणक्यमूलकगुणाः ।

चाणक्यमूलकंसोष्णंकटुकंरुच्यदीपनम् ।
कफवातक्रिमीन्गुल्मंनाशयेद्ग्राहकंगुरु ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वडीमूली-गरम, चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, कृमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है ।

अन्यच्च ।

लघुमूलकमुष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम् । दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥ नासिकाकण्ठरोगघ्नंनयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धं तदेवस्याद्दोषत्रयविनाशनम् । (भा०प्र०)

अर्थ-छोटी मूली-गरम, रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक, स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग, कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । वडी मूली-रूखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमें सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक होजाती है ।

अन्यच्च ।

मूलकंगुरुविष्टम्भितीक्ष्णमामंत्रिदोषकृत् । तदेवस्नेहपक्वंचेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ शुष्कंत्रिदोषशमनंशोथघ्नंगरजिल्लघु । तत्पुष्पंकफपित्तघ्नंतत्फलंकफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्ची मूली-भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण और त्रिदोषजनक है । वही तेल घृतादिमें पकाई हुई-कफकारक और वातपित्तहारक होजाती है । सूखी मूली-त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक, विषनाशक और हलकी है । मूलीके फूल-कफ पित्तनाशक और मूलीकी फली-कफवातनाशक है ।

अपिच ।

बालंतुमूलकंतिक्तंकटूष्णंचरुचिप्रदम् । लघ्वग्निदीपकंहृद्यंतीक्ष्णंतुपाचकंसरम् ॥ मधुरंग्राहकंबल्यंमूत्रदोषार्शनाशनम् । गुल्मक्षयश्वासकासनेत्ररोगविनाशकम् ॥ नाभिशूलंकफंवातंकण्ठरोगविनाशकम् । त्रिदोषदद्रुशूलघ्नमुदावर्त्तप्रणुत्परम् ॥ पीनसंचव्रणंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् । जीर्णमूलंचोष्णवीर्य्यंशोषंचदाहपित्तकृत् ॥ रक्तदोषकरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् । पक्वमूलंतुकटुकंचोष्णमग्निकरंमतम् ॥ भक्षितेभोजनात्पूर्वंपित्तदाहप्रकोपनम् । भोजनोत्तरवेलायांभक्षितंबलदंहितम् ॥ वेसवारयुतंचार्शःशूलहृद्रोगनाशकम्। किंचिदुष्णामूलशिम्बीकफवातविनाशिनी॥ मूलपुष्पंकफकरंपित्तकृत्परिकीर्त्तितम् । (रत्नाकर)

अर्थ-कच्ची मूली-कडवी, चरपरी, गरम, रुचिकारक, हलकी, अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, पाचक, सारक, मधुर, ग्राही, बलकारी तथा मूत्रदोष, बवासीर, गुल्म, क्षय, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, नाभिशूल, कफ, वात, कण्ठरोग, त्रिदोष, दाद, शूल, उदावर्त्त, पीनस और व्रणका नाश करे है । पुरानी मूली उष्णवीर्य्य तथा शोष, दाह, पित्त और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। पक्की मूली-चरपरी, गरम, अग्निजनक है, यह भोजनसे प्रथम भक्षण करीहुई पित्त और दाहको कुपित करे है । भोजनके पीछे भक्षण की हुई-बलको करनेवाली और हितकारक है। बेसवारके साथ खाई हुई मूली-बवासीर, शूल और हृदयरोगका नाश करे है । मूलीकी फली-किंचित् गरम और कफ वातनाशक हैं। मूलीके फूल-कफकारक और पित्तजनक हैं ।

गर्जरनामानि ।

गाजरंगृञ्जनंप्रोक्तंतथानारंगवर्णकम् ॥

अर्थ-गाजर, गृञ्जन, नारंगवर्ण (पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नारंग, पीतमूलक) ।

गृञ्जननामानि ।

गृञ्जनंशिखिमूलंचयवनेष्टंचवर्त्तुलम् ।
ग्रन्थिमूलंशिखाकन्दंकन्दंडिण्डीरमोदकम् ॥

अर्थ-गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्त्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कंद, डिंडीरमोदक ।

पिण्डमूलनामानि ।



पिण्डमूलंगजीडंचपिण्डिकंपिण्डमूलकम् ।

अर्थ-पिण्डमूल, गजीड, पिण्डिक, पिण्डमूलक ।

संस्कृतभाषामें	गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल ।
हिन्दीभाषामें	गाजर, जंगली गाजर, गोलमूलो ।
वंगभाषामें	गाजर ।
मराठीभाषामें	गाजर, रानगाजर ।
गुजरातीभाषामें	गाजर, पताळुगाजर, अडवाउगाजर ।
कर्णाटकीभाषामें	सेठीमूलं, चडिकेयलमूलंगी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गृञ्जनं ।
इंग्रेजीभाषामें	क्यारटरुट Carrotroot कारटसीड्स । Carrotseeds
लैटिन्भाषामें	डाक्सकेरोटा । Daucus carota
फारसीभाषामें	जर्दक, गजर, गजरेदस्ति तुख्मेजर्दक ।
अरबीभाषामें	जजर, जजरेबीरं बजरुल्जजर ।

गर्जरगुणाः ।

गाजरंमधुरंतीक्ष्णंतिक्तोष्णंदीपनंलघु ।
संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गाजर-मधुर, तीक्ष्ण, कडवी, गरम, दीपन, हलकी, मलरोधक तथा रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी कफ, और वातका नाशकरे है।

अन्यच्च।

गाजरंमधुरंरुच्यंकिञ्चित्कटुकफापहम्।
आध्मानक्रिमिशूलघ्नंदाहपित्ततृषापहम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-गाजर-मधुर, रुचिकारक, किञ्चित् चरपरी, कफनाशक तथा आध्मान, कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

गृञ्जनगुणाः।

गृञ्जनंकटुचोष्णंहिकफवातरुजापहम्।
रुच्यंचदीपनंहृद्यंदुर्गंधंगुल्मनाशनम्॥

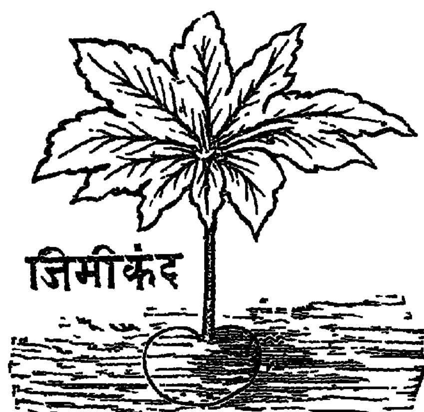
अर्थ-जंगलीगाजर, चरपरी, गरम, कफवातरोगनाशक, रुचिकारक, दीपन हृदयको हितकारी तथा दुर्गंध और गुल्मका नाश करेहै।

पिण्डमूलगुणाः।

पिण्डमूलंकटूष्णञ्चगुल्मवातादिदोषनुत्।

अर्थ-गोलमूली-चरपरी, गरम तथा गुल्म और वातादि दोषोंको दूर करनेवाली है।

सूरणनामानि।



सूरणःकन्दओल्लश्चकन्दलोऽर्शोघ्नइत्यपि॥

अर्थ-सूरण, कंद, ओल, कन्दल, अर्शोघ्न, (सूरण, ओल, कण्ठाल, कण्डुल, कन्दी, सुकन्दी, स्थूलकन्दक, दुर्नामारि, सुवृत्त, वातारि, कन्दशूरण, तीव्रकण्ठ, कंडूहर्ह, कन्दवर्द्धन, बहुकन्द, रुच्यकन्द, शूरणकन्द)।

संस्कृतभाषामें	शूरण ।
हिन्दीभाषामें	सूरन, जिमीकन्द ।
वंगभाषामें	ओल ।
मराठीभाषामें	गोंडा । सुरण खाजेरा सुरण ।
गुजरातीभाषामें	सूरण ।
कर्णाटकीभाषामें	सूरण
तैलिङ्गीभाषामें	मंचाकन्दा, दोलकन्दा ।
तामिलीभाषामें	सूरण ।
लैटिन्भाषामें	एमोर्फोफेलस पेनिक्युलेटस् । Amorphophallus (—paniculatus
फारसीभाषामें	ओल ।

अस्य गुणाः ।

सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भीविशदो रुच्यःकफार्शःकृन्तनोलघुः ॥ विशेषादर्शसिपथ्यःप्लीहगुल्मविनाशनः । सर्वेषांकन्दशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रूणांरक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिसः।संधानोयोगसम्प्राप्तसूरणोगुणवत्तमः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ—सूरण—जमीकन्द—रूखा, कषेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा विष्टम्भकारक, विशद, रुचिकारक, कफनाशक, बवासीरको दूर करनेवाला हलका, विशेषकरके अर्शरोगवालोंको हितकारी है तथा प्लीहा और गुल्मरोगोंका नाशकरे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको हितकारी नहीं है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

सूरणश्चकटुरुच्यदीपनःपाचनःकृमिकफानिलापहः ।
श्वासकासवमनार्शसांहरःशूलगुल्मशमनोस्रदोषकृत् ॥

अर्थ—जमीकन्द—चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिघ्न, कफवातनाशक तथा श्वास, खांसी, वमन, बवासीर, शूल और गुल्मरोगको दूरकरेहै तथा रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

सूरणोदीपनोरुच्यःकफघ्नोविशदोलघुः ।
विशेषादर्शसांपथ्योग्राम्यकन्दस्तुदोषलः ॥

अर्थ-जमीकन्द-दीपन, रुचिकारक, कफनाशक, विशद, हलका, विशेष करके बवासीर रोगवालोंको पथ्य है और नगरका पैदाहुआ जिमीकन्द दोषजनक है ।

वनसूरणनामानि ।

वज्रकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ।

अर्थ-वज्रकन्द, सुरेन्द्र, वन्द- चित्रकन्दक (सितसूरण, वनकन्द, अरण्यसूरण, वनज, श्वेतसूरण, वनओल) ।

अस्या गुणाः ।

तद्वद्वन्योवज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ।

अर्थ-जंगली सूरणके गुणभी सूरणकेही समान हैं, कफनाशक और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

वज्रसूरणकोरुच्यः कटूष्णः कृमिनाशनः ।
गुल्मशूलादिदोषघ्नः सचारोचकहारकः ॥ (रा.नि.)

अर्थ-वनसूरण-रुचिकारी, चरपरा, कृमिनाशक, गरम, गुल्मशूलादिकरोगनाशक और अरुचिको हरनेवाला है ।

रक्तालुनामानि ।

रक्तस्तुरक्तपिण्डालूरक्तालूरक्तपिण्डकः ।
लोहितोरक्तकन्दश्चलोहितालुः षडाह्वयः ॥

अर्थ-रक्त, रक्तपिण्डालु, रक्तालु, रक्तपिण्डक, लोहित, रक्तकन्द, लोहितालु ।

पिण्डालुनामानि ।

श्वेतः पिण्डीतकः पिण्डकन्दोरोमशकन्दकः ।
कन्दग्रन्थिश्चपिण्डालुः पिच्छिलः स्वादुकन्दकः ॥

अर्थ-पिण्डीतक, पिण्डकन्द, रोमशकन्दक, कन्दग्रन्थि, पिण्डालु, पिच्छिल, स्वादुकन्दक ।

संस्कृतभाषामें	रक्तालु, पिण्डालु ।
हिन्दीभाषामें	रतालु, पिण्डालु, काँदु, शकरकन्दी ।
वंगभाषामें	लालपिण्डालु, गोलआलु, चुवडिआलु ।

मराठीभाषामें	लाल रताळें, पांढरें रताळें ।
गुजरातीभाषामें	रताळु, शकरकन्द, श्वेताळु ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिनहेंडल, विलयहेंडल ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरगेड्डु ।
तामिलीभाषामें	यामस्कोलं ।
औत्क०	घराअलु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्पोटेटो Sweet potato
लैटिन्भाषामें	बटाटास् एस् क्युलेटस् Batatas Esculatus
	व. एड्युलीस् B Edulis
फारसीभाषामें	जरदाक लाहोरी ।

रक्तालुगुणा ।

रक्तपिण्डालुकःशीतोमधुराम्लःश्रमापहः ।
पित्तदाहापहोवृष्योबलपुष्टिकरोगुरुः ॥

अर्थ-रक्तालु-शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी हैं ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुरःशीतोमूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नोवृष्यःसन्तर्पणोगुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक, शोषनाशक, प्रमेहको हरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और भारी हैं ।

पिण्डालुकंकफकरंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु-कफकारक, भारी और वातको कुपित करनेवाले हैं ।

आलुकीगुणाः ।

राजालुभेदःसम्प्रोक्तश्चारुईइतिनामतः ।
मलावष्टम्भकःस्निग्धोजडोबलकरोमतः ।
कफनाशकरश्चैवतैलेपक्कोरुचिप्रदः ॥ (नि० र०) ॥

अर्थ-रताळुका भेद अरुई है । अरुई-मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाईहुई रुचिकारक है ।

गजकर्णालुनामानि ।

आलुकंदीर्घनालश्चतीक्ष्णकन्दंसुकन्दकम् ।

महापत्रालुकंचैवहस्तिकर्णंचतत्स्मृतम् ॥

अर्थ-आलुक, दीर्घनाल, तीक्ष्णकन्द, सुकन्दक, महापत्रालुक, हस्तिकर्ण।

संस्कृतभाषामें	गजकर्णालु ।	
हिंदीभाषामें	घुय्याँ, आलु ।	
मराठीभाषामें	अळवाचा कांदा ।	
गुजरातीभाषामें	अलवी ।	
तैलिंगीभाषामें	सारकंदा ।	
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटलीव्ड केलेडचम् ।	Great leaved caledium
लैटिन्भाषामें	एरम् इण्डिकम् ।	Erum indicum
अरबीभाषामें	ढुयांकलकाश ।	

गजकर्णीगुणाः ।

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत्।शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकन्दकः॥पाण्डुशोथकृमीगुल्मप्लीहानाहोदरापहः।ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकन्दवत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-गजकर्ण-कडवा, गरम, वातकफनाशक, शीतज्वरनाशक, इसका कन्द पाकमें स्वादिष्ठ तथा पाण्डुरोग, सूजन, कृमि, गुल्म, प्लीहा, आनाह, उदररोग, संग्रहणी और ववासीरको दूर करनेवाला है और वनसूरणके समान है ।

मुखालुनामानि ।

मुखालुर्मण्डपारोहोदीर्घकन्दस्तुकन्दकः ।
स्थूलकन्दोमहाकन्दःस्वादुकन्दश्चसप्तधा ॥

अर्थ-मुखालु, मण्डपारोह, दीर्घकन्द, सुकन्दक, स्थूलकन्द, महाकन्द, स्वादुकन्द ।

मुखालुगुणाः ।

मुखालुकःस्यान्मधुरःशिशिरःपित्तनाशनः ।
रुचिकृद्वातकृच्चैवदाहशोषतृषापहः ॥

अर्थ-मुखालु-मधुर, शीतल, पित्तनाशक रुचिकारक, वातवर्द्धक तथा दाह, शोष और तृषाको हरनेवाला है ।

कासालुनामानि ।

कासालुःकासकन्दश्चकन्दालुश्चालुकश्चसः ।
आलुर्विशालपत्रश्चपत्रालुश्चेतिसप्तधा ॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु ।

कासालुगुणाः ।

कासालुरुग्रकण्डूतिविषश्लेष्मामयापहः ।
अरोचकहरःस्वादुःपथ्योदीपनकारकः ॥(रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र कण्डूको हरनेवाला, विषघ्न, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करेहै ।

अन्यच्च ।

कासालुकंकण्डुकरंमधुरंपथ्यकारकम् ।
दीपनंरुचिदंप्रोक्तंकफवातरुजापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है ।

फोंडालुनामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्चरक्तपत्रोमृदुच्छदः ॥

अर्थ-फ़ोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणाः ।

फोण्डालुःश्लेष्मवातघ्नःकटूष्णोदीपनीयकः ॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं ।

पानीयालुनामानि ।

पानीयालुर्जलालुःस्यादनूपालुरवालुकः ।

अर्थ-पानीयालु, जलालु, अनूपालु, अवालुक ।

पानीयालुगुणाः ।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्नःसन्तर्पणकरःपरः ॥

अर्थ-पानीयालु-त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है ।

नीलालुनामानि ।

नीलालूरसिकालुःस्यात्कृष्णालुःश्यामलालुकः ।

अर्थ-नीलालु, रसिकालु, कृष्णालु, श्यामलालुक ।

नीलालुगुणाः ।

नीलालुर्मधुरःशीतःपित्तदाहश्रमापहः ।

अर्थ-नीलआलु-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह और श्रमको दूर करैहै ।

शुभ्रालुनामानि ।

शुभ्रालुर्महिषीकन्दोलुलायकन्दश्वशुक्लकन्दश्च ।
सर्पाख्योवनवासीविषकन्दोनीलकन्दान्यः ॥

अर्थ-शुभ्रालु-महिषीकन्द, लुलायकन्द, शुक्लकन्द, सर्पाख्य, वनवासी, विषकन्द, नीलकन्द ।

शुभ्रालुगुणाः ।

कटूष्णोमहिषीकन्दःकफवातामयापहः ।
मुखजाड्यहरोरुच्योमहासिद्धिकरःसितः ॥

अर्थ-भैंसाकन्द-चरपरा, गरम, कफ वात रोगनाशक, मुखकी जडताको हरनेवाला, रुचिको करनेवाला और सफेद रंगका महासिद्धिकारक है ।

हस्तिकन्दनामानि ।

हस्तिकन्दोहस्तिपत्रःस्थूलकन्दोतिकन्दकः ।बृहत्पत्रोति-
पत्रश्चहस्तिकर्णस्तुकर्णकः॥त्वग्दोषारिःकुष्ठहन्तागिरिवा-
सीनगाश्रयः।गजकन्दोनागकन्दोज्ञेयोवेसप्तनामकः ॥

अर्थ-हस्तिकन्द, हस्तिपत्र, स्थूलकन्द, अतिकन्दक बृहत्पत्र, अतिपत्र, हस्तिकर्ण, कर्णक, त्वग्दोषारि, कुष्ठहन्ता, गिरिवासी, नगाश्रय, गजकन्द, नागकन्द ।

हस्तिकन्दगुणाः।

हस्तिकन्दःकटूष्णःस्यात्कफवातामयापहः ।
त्वग्दोषघ्नोमहाकुष्ठविषवैसर्पनाशकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हस्तिकन्द-चरपरा, गरम, कफवातरोगनाशक तथा त्वचाके विकारनाशक, महाकुष्ठ, विष और विसर्परोगको नाशकरे है ।

हस्तिकन्दःस्मृतश्चोष्णःकटुकोमधुरोगुरुः ।

शोफंकफंरक्तदोषंवातंकुष्ठंविसर्पकम् ॥
त्वग्दोषंनाशयत्येवंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-हस्तिकन्द-गरम, चरपरा, मधुर, भारी तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ, विसर्प और त्वचाके दोषोंको दूर करेहै ।

कोलकन्दनामानि ।



कोलकन्दःकृमिघ्नश्चपञ्जलोवस्त्रपञ्जलः ।
पुटालुःसुपुटश्चैवपुटकन्दश्चसप्तधा ॥

अर्थ-कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटालु, सुपुट, पुटकन्द ।

कोलकन्दगुणाः ।

कोलकन्दःकटुश्चोष्णःकृमिदोषविनाशनः ।
वान्तिविच्छर्दिशमनोविषदोषनिवारणः ॥

अर्थ-कोलकन्द-चरपरा, गरम, कृमिरोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोंको दूर करनेवाला है ।

वाराहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्दएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः ।
अनूपेसभवेद्देशेवराहइवलोमवान् ॥

अर्थ-वाराहीकन्द, चर्म्मकारालुक, (विष्वक्सेनप्रिया, घृष्टि, वदराकच्छा, वनमालिनी, गृष्टि, बिल्वमूला, शूकरी, क्रोडकन्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कौमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, क्रोडी, कन्या, माधवेष्टा गृष्टिका, शूकरकन्द, क्रोड, वनवासी, कुष्ठनाशन, वल्य, अमृत, महावीर्य्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, ब्राह्मीकन्द, महौषध, सुकन्दक, वृद्धिद, व्याधिहन्ता, मागधी)।



विवरण। यह कन्द अनूपदेशमें होताहै: इस कन्दके ऊपर सूअरकी समान बाल होतेहैं इस कारण इसको वाराहीकन्द कहतेहैं।

संस्कृतभाषामें	वाराहीकन्द।
हिंदीभाषामें	गेंठी, भिवोंलीकन्द।
वंगभाषामें	चामाळु, चुवाडिआळु।
मराठीभाषामें	डुकरकन्द।
गुजरातीभाषामें	वाराहीकन्द, सुअरिया, सालिवणावेल्य।
कर्णाटकीभाषामें	हंदिगेट्टे।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्राह्मदंडिचेट्टु। पाचितोके, नेलताडिचेट्टु।
लैटिनभाषामें	डायोरकोरियासेटिवा। Diorcorea Sativa

वाराहीगुणाः।

वाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ—वाराहीकन्द—पित्तजनक, बलकारक, चरपरा, कडवा, रसायन तथा आयु, शुक्र और जठराग्निको बढानेवाला है और प्रमेह, कफ, कोढ और वातका नाश करे है।

अन्यच्च।

वाराहीतिक्तकटुकाविषपित्तकफापहा।
कुष्ठमेहकृमिहरावृष्याबल्यारसायनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा, चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विष, पित्त, कफ, कोढ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चार्शोघ्नोवातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, वात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

वाराहकन्दःकटुकस्तिक्तोबल्यश्चपित्तलः । रसायनःशुक्रलश्चवृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णोवर्णकरःस्वर्य्यश्चायुर्विवर्द्धनः । कुष्ठंमेहंत्रिदोषञ्चकफंवातंकृमींस्तथा ॥ मूत्रकृच्छ्रहरःप्रोक्तोवैद्यैर्विद्याविशारदैः । (नि०र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा, कडवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, मधुर, गरम, वर्णकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाशकरे है ।

विवरण । वाराहीकंदको कहीं गेंठी और कहीं अंगीठी तथा सूअरकंदभी कहतेहैं । यह पृथिवीमे गुडकी भेलीकी समान होताहै । पत्ते कटीले बडे बडे अनीदार होतेहैं, इसपर सूअरकी समान बाल होतेहैं ।

विष्णुकन्दनामानि ।

विष्णुकन्दोविष्णुगुप्तःसुपुष्टोबहुसम्पुटः ।
जलवासाबृहत्कन्दोदीर्घवृत्तोहरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द, विष्णुगुप्त, सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, बृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुकन्दगुणाः ।

विष्णुकन्दस्तुमधुरःशिशिरःपित्तनाशनः ।
दाहशोफहरोरुच्यःसन्तर्पणकरःपरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और तृप्तिकारक है ।

धरणीकन्दनामानि ।

धरणीधारणीयाचवीरपत्रीसुकन्दकः ।

कन्दालुर्वनकन्दश्चकन्दाद्योदंडकंदकः ॥

अर्थ-धरणी, धारणीया, वीरपत्री, सुकन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दाद्य, दण्डकन्दक ।

धरणीकन्दगुणाः ।

मधुरोधरणीकन्दःकफपित्तामयापहः ।
वक्रदोषप्रशमनःकुष्ठकण्डूतिनाशनः ॥

अर्थ-धरणीकन्द-मधुर, कफपित्तरोगनाशक, मुखदोषको दूर करनेवाला तथा कोढ और खुजलीको हरनेवाला है ।

नाकुलीकन्दनामानि ।

नाकुलीसर्पगन्धाचसुगन्धारक्तपत्रिका ।
ईश्वरीनागगन्धाचाप्यहिभुक्स्वरसातथा ॥
सर्पादनीव्यालगन्धज्ञेयाचेतिदशाह्वया ॥

अर्थ-नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा ।

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्यामहासुगन्धाचसुवहागन्धनाकुली। सर्पाक्षीफणिहंत्री चनकुलाढ्याहिभुक्चसा ॥ विषमर्दनिकाचाहिमर्दनीविष-मर्दनी। महाहिगन्धाहिलताज्ञेयास्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता ।

द्विविधानाकुलीकन्दगुणाः ।

नाकुलीयुगलंतिक्तंकटूष्णंचत्रिदोषजित् ।
अनेकविषविध्वंसिकिञ्चिच्छ्रेष्ठंद्वितीयकम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारके नकुलकंद-कडवे, चरपरे, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंका विध्वंस करनेवाले और सुगंधनाकुलीकन्द नाकुली कन्दकी अपेक्षा कुछेक उत्तम है ।

मालाकन्दनामानि ।

अथमालाकन्दःस्याद्दलकन्दश्चपंक्तिकन्दश्च ।

त्रिशिखदलाग्रन्थिदलाकन्दलताकीर्तिताषोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पंक्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता ।

मालाकन्दगुणाः ।

मालाकन्दःसुतीक्ष्णःस्याद्गण्डमालाविनाशकः ।
दीपनोगुल्महारीचवातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्मनाशक तथा वात और कफका नाश करनेवालाहै ।

विदारीकन्दनामानि ।

विदारिकास्वादुकन्दासिताशुक्लाशृगालिका । विदारीवृष्यकन्दाचबिडालीवृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डीस्वादुलतागजेष्टावारिवल्लभा । ज्ञेयाकन्दफलाचेतिमनुसंख्याह्वयामता ॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारिवल्लभा, कन्दफला ।

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारीमधुराशीतागुरुःस्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेयाचकफकृत्पुष्टिबल्यावीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-बिलारीकन्द-बिलाईकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्य्यको बढानेवाला है ।

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्याक्षीरविदारीस्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी । इक्षुवल्लीक्षीरकन्दःक्षीरवल्लीपयस्विनी॥क्षीरशुक्लाक्षीरलतापयःकन्दापयोलता। पयोविदारिकाचेतिविज्ञेयाद्वादशाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकन्द, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

ज्ञेयाक्षीरविदारीचमधुराम्लाकषायका ।

तिक्ताचपित्तशूलघ्नीमूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दूधविदारी-कंद मधुर, अम्ल, कसेला, कडवा, पित्तनाशक, शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दोद्विधाप्रोक्तोविनालस्तुसनालकः ।
विनालोरोगहर्त्तास्याद्वयःस्तम्भीसनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका हैं, तहां विना नालका क्षीरकंद-रोगनाशक और नालयुक्त-वयस्तम्भक है। विदारीकंदके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमें देखो।

चण्डालकन्दनामानि ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्दःस्यादेकपत्रोद्विपत्रकः ।
त्रिपत्रोऽथचतुःपत्रःपञ्चपत्रश्चभेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है।

चण्डालकन्दगुणाः ।

चण्डालकन्दोमधुरःकफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नोविज्ञेयश्चरसायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादिबाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि ।

अथतैलकन्दउक्तोद्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च ।
करवीरकन्दसंज्ञोज्ञेयस्तिलचित्रपत्रकोबाणैः ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाङ्कितदल, करवीरकंदसंज्ञ, तिलचित्रपत्रक।

तैलकन्दगुणाः ।

लोहद्रावीतैलकन्दःकटूष्णोवातापस्मारहारीविषारिः ।
शोफघ्नःस्याद्बंधकारीरसस्यद्रागेवासौदेहसिद्धिंधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको पतला करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात, अपस्मार, विष और सूजनको दूर करेहै, पारेको बांधनेवाला और तत्काल देहको सिद्धकरनेवाला है।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिकाबृहत्पत्रायाच्छिन्नग्रन्थिकाचसा ।
कन्दालुःकन्दबहुलाप्यम्लवल्लीद्रुमारुहा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, बृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दबहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणाः ।

त्रिपर्णीमधुराशीताश्वासकासविनाशिनी ।
पित्तप्रकोपशमनीविषव्रणहरापरा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणापुत्रकन्दाचपुत्रदानागिनीतथा ।
नागाह्वानागपत्रीचतुलिनीमक्षिकाचसा ॥
अस्रबिन्दुच्छदाचैवसुकन्दादशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रबिन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणाः ।

लक्ष्मणामधुराशीतास्त्रीवन्ध्यत्वविनाशिनी ।
रसायनकरीबल्यात्रिदोषशमनीपरा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर, शीतल, स्त्रीके बांझपनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तुजोडिर्वैद्यवरैःस्मृतः ।
करजोडिरितिख्यातोरसबद्धादिवश्यकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी, हत्थाजूडीके हैं हत्थाजोडी-पारेआदिको बाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्दःस्तबकाह्वकन्दोगुलच्छकन्दश्चविघण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तवकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विघण्टिका ।

गुलच्छकन्दगुणाः ।

गुलच्छकन्दोमधुरःसुशीतलोवृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द-मधुर, शीतल, वृष्य, तृप्तिकारक और दाहनाशक है ।

मानकन्दनामानि ।

मानकःस्यान्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्थलपद्म, विस्तीर्णपर्ण, माण, बृहच्छद, छत्रपत्र, माणक) ।

अस्य गुणाः ।

माणकःशोथहृच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सूजनको दूर करनेवाला, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हलका है ।

अन्यच्च ।

माणकःस्वादुःशीतश्चगुरुःशोथहरःकटुः ॥(राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, सूजनको दूर करनेवाला और चरपरा है ।

शंखालुनामानि ।

शंखालुःशंखसंकाशोमध्वालुःस्यात्तुरोमशः ।

अर्थ-शंखालु, शंखसंकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालुःस्वल्पकाष्ठंचततःकाष्ठालुकंस्मृतम् ।

अर्थ-काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविधऽऽलुगुणाः ।

आलुकंशीतलंसर्वंविष्टम्भिमधुरंरसम् ।
सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जरंरक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरंवृष्यंबल्यंस्तन्यविवर्द्धनम् ॥(म०नि०)

अर्थ-सर्वप्रकारके आलु-शीतल, विष्टम्भकारक, मधुररसान्वित, मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तनाशक, कफवातकारक, वृष्य, बल्य और स्तनोंमें दूध प्रकट करनेवाले हैं ।

राजाल्वादिगुणाः ।

मधुराजालुकंशीतंमधुरंवायुकारकम् । पाकेकटुचविज्ञेयंरुचिदंदाहपित्तनुत् ॥ शोषतृट्कफनुत्प्रोक्तमस्यकन्दस्तुशीतलः । आग्निमांद्यंमलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्परः ॥ रक्तराजालुकंकिञ्चिदुष्णंचाग्निप्रदीपकम् ।कफवातहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ श्वेतालुकिञ्चित्कटुकमुष्णंवातकफापहम् ।कृष्णालुकंतुमधुरंशीतवीर्य्यंश्रमापहम् ॥ पित्तदाहहरंचैवऋषिभिःपरिकीर्त्तितम् । कृष्णंवनालुकंरुच्यंमहासिद्धिकरंपरम् ॥ मुखजाड्यहरंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः । वनालुकंतृप्तिकरंत्रिदोषशमनंपरम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-मधुर राजालु-शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमें चरपरे, रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोषको दूर करनेवाले, तृषाको हरनेवाले, कफनाशक । इसका कन्द-शीतल, मंदाग्निकारक, मलस्तम्भक, कफकारक और पित्तनाशक है । लालराजालु-किञ्चित् उष्ण, अग्निप्रदीपक और कफ तथा वातको हरनेवाले हैं । सफेद आलु-किञ्चित् चरपरे, गरम, वात कफनाशक हैं । कृष्णालुक-मधुर, शीतवीर्य्य, श्रमनाशक, पित्त और दाहको हरनेवाले हैं । काले वनआलु-रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी जडताको दूर करनेवाले हैं । वनालु-तृप्तिकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाले हैं ।

कसेरुनामानि ।

गुण्डकन्दःकसेरुःस्यात्क्षुद्रमुस्ताकसेरुका ।
सूकरेष्टःसुगन्धिश्चसुगन्धोगन्धकन्दकः ॥

अर्थ-गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द, कसेरुक, (कशेरु, राजकशेरुक) ।

कसेरुद्विविधंतत्तुमहद्राजकशेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोडमितिस्मृतम् ॥

अर्थ-कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दूसरा चिचोड । तहां बडे

कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरू कहते हैं और जिसका आकार मोथाके समान हो तथा हलका हो उसको चिचोड कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	कसेरु ।
हिंदीभाषामें	कसेरू ।
वंगभाषामें	केशुर ।
मराठीभाषामें	कचरा, फुरडचा ।
कर्णाटकीभाषामें	सेकिनगड्डे ।
तैलङ्गीभाषामें	इट्टिकोति ।
लैटिन्भाषामें	स्क्रिपस कैसूर । Seripus Kyseor

द्विविधकसेरुगुणाः ।

कसेरुकद्वयंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ।
पित्तशोणितदाहघ्नंनयनामयनाशनम् ॥
ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम् ।(भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके कसेरू-शीतल, मधुर, कसेले, भारी, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, नेत्ररोगको हरनेवाले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकफकारक, रुचिजनक और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करें हैं।

केमुकनामानि ।

केबुकाकेमुकःकेम्बुसुपत्रादलमालिनी ।
केलूटःस्वल्पविटपःस्वादुकन्दश्चपोलिनी ॥

अर्थ-केबुका, केमुक, केम्बु, सुपत्रा, दलमालिनी, केलूट, स्वल्पविटप, स्वादुकन्द, पोलिनी (पेचुक, पेचुनी, पेचु, पेचिका, दलसारिणी, केचुक)।

संस्कृतभाषामें	केमुक ।
हिन्दीभाषामें	केउँआ ।
वंगभाषामें	केउँगाछ केलूपपेंपा ।
मराठीभाषामें	कोबी ।
गुजरातीभाषामें	कोवी ।
इंग्रेजीभाषामें	केबेज । (Cabbage)
लैटिन्भाषामें	कोस्टस् स्पेश्योसस् । Costus speciosus
फारसीभाषामें	कलाम ।.
अरबीभाषामें	कंदकलव ।

अस्य गुणा ।

केमुकःकटुकःपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघुः ।
दीपनंपाचनंहृद्यंकफपित्तज्वरापहम् ॥
कुष्ठकासप्रमेहार्शोनाशनंवातलंकटु । (भा०प्र०)

अर्थ-केमुक-पचनेमें कटु, कडवा, मलरोधक शीतल, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, प्रमेह और बवासीरको हरनेवाला है।

अन्यच्च ।

केलूटकंतुमधुरंरूक्षमच्छंचशीतलम् ॥
भेदकंग्राहकंरुच्यंगुरुपित्तकफापहम् ।
वातनाशकरंचैवकंदेप्येतेगुणाःस्मृताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ, शीतल, भेदक, मलरोधक, रुचिकारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसकी समान जानने।

शाल्मलीकन्दनामानि ।

शाल्मलीकन्दकश्चाथविज्जुलोवनवासकः ।
वनवासोमलघ्नश्चमलहन्ताषडाह्वयः ॥

अर्थ-शाल्मलीकन्द, विज्जुल, वनवासक, वनवास, मलघ्न, मलहन्ता ।

शाल्मलीकन्दगुणाः ।

मधुरःशाल्मलीकन्दोमलसंग्रहरोधजित् ।
शिशिरःपित्तदाहार्तिशोषसन्तापनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शाल्मलीकन्द-अर्थात् सेमलकी मूली-मधुर, मलसंग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली, शीतल तथा पित्त, दाह, शोष और सन्तापको हरनेवाली है।

कदलीकन्दगुणा ।

कन्दःकदल्यारूक्षःस्याद्वातलस्तुवरोगुरुः।शीतोबल्योमधुः
केश्योरुच्योऽग्निमांद्यकारकः॥कर्णशूलंचाम्लपित्तंदाहंरक्तरु-
जंतथा।सोमदोषरजोदोषक्रमीन्कुष्ठंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, वादी, कसेला, भारी, शीतल, बलकारी,

मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिजनक, मंदाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष, कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है ।

अथ संस्वेदजशाकनामानि ।



उक्तंसंस्वेदजंशाकंभूमिच्छत्रंशिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषुवृक्षादिषुतदुद्भवेत् ॥

अर्थ-संस्वेदजशाक, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक, (भूछत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छत्र, भूमिस्फोट, धरांकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, उच्छिलीन्ध्र, स्वेदज) यह मृत्तिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमें उत्पन्न होता है।

संस्कृतभाषामें	संस्वेदजशाक ।
हिन्दीभाषामें	सांपकी छत्री, छाता, छतोना ।
वंगभाषामें	छातकुड, छाता, भुँईछाति ।
मराठीभाषामें	भुईफोड, अळम्बी ।
कोकणभाषामें	काभिल ।
गुजरातीभाषामें	फुग्य मींदडानी वली ।
इंग्रेजीभाषामें	मशरूम । Mushroom
लैटिन्‌भाषामें	फंगाई । Fungi

अस्य गुणाः ।

सर्वेसंस्वेदजाःशीताःदोषलाःपिच्छिलाश्चते।गुरवश्छर्द्यतीसार-ज्वरश्लेष्मामयप्रदाः॥श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः । नातिदोषकरास्तेस्युःशेषास्तेभ्योविगर्हिताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सर्वप्रकारके संस्वेदजशाक-शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोंको उत्पन्न करें हैं । सफेद शुभ्र-स्थानमें उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, बांस और गायोंके स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य हैं ।

अन्यच्च ।

शीताबल्यासुनेशानीगुरुर्भेदकरामधुः । त्रिदोषकारिणीवृ-
ष्याकफदाचमताबुधैः ॥ भेदास्त्रयःसमाख्याताःकृष्णोर-
क्तश्चपाण्डुरः । कृष्णारसेचपाकेचमधुरोष्णागुरुःस्मृता ॥
श्वेतातुपाककालेचगुर्वीरक्ताल्पदोषदा । (नि०र०)

अर्थ-सांपकी छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोष-जनक, वीर्य्यवर्द्धक और कफकारक है । यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है । तहां कालेरंगका मधुर, गरम और भारी है । सफेद पाकमें भारी और लाल अलपदोषजनक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्गः समाप्तः ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।

जलनामानि ।

पानीयंसलिलंनीरंकीलालंजलमम्बुच ।
आपोवार्वारिकंतोयंपयःपाथस्तथोदकम् ॥
जीवनंवनमम्भोर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच ।

अर्थ-पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप्, वार्, वारि, तोय, पयस्, पाथस्, उदक, जीवन, वन, अम्भस्, अर्णस्, अमृत, घनरस(मेघप्रसव, कमल, भुवन, कवन्ध, पुष्कर, सर्वतोमुख. सलिल, सल, जड, क, अन्ध, कमन्ध, उद, दक, नार, शम्वर, अभ्रपुष्प, घृत, कृत्स्न, पर्य्य, पाथ, यादोनिवास, जीवनीय, कुलीनस, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सवर, सर, कूपीट, चंद्रोरस, सदन, कर्बुर, व्योम, सम्ब, इरा, वाज, तामर, कम्बल, स्यन्दन, सम्बल, जलपीथ, क्षर, ऋत, ऊर्ज्ज, कोमल, सोम, नारा, छन्न,

क्षोद, नभ, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, वृबूक, बुस, तुग्या, कर्बूर, सुक्षेम, धरुण, क्षुरा, अरविन्दानि, धवुन्धतु, जामि, आयुधानि, क्षय, अहि, अक्षर, स्रोत, तृप्ती, रहस, रस, भेषज, सह, शव, षह, ओज, सुख, क्षत्र, आरया, शुभ, यांदु, भूत, भविष्य, महत्, यश, मह, सर्णीक, स्वृतीक, सतीन, गहन, गभीर, गम्भलंग, अन्न, हवि, सद्य, योनि, ऋतस्ययोनि, सत्य, रयि, सत्, पूर्ण, सर्व, अक्षित, बर्हि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्दु, हेम, स्वसर्ग, सम्बर, अम्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाष, वज्र, नीलकण्ठप्रिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषामें	पानीय, सलिल ।
हिन्दीभाषामें	जल, पानी ।
वंगभाषामें	जल ।
मराठीभाषामें	उदक, पाणी ।
गुजरातीभाषामें	पांणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुनीक ।
तैलिंगीभाषामें	नीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटर । water
लैटिन्भाषामें	एक्वा । Aqua
फारसीभाषामें	आव ।
अरवीभाषामें	माय ।

जलगुणा ।

पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्ध-
हृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् । हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यं-
हितंशीतलं लघ्वच्छंरसकारणंनिगदतेपीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ-जल-पानी-श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विवन्ध और निद्राको दूर करेहै, बलकारक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरसवाला, अजीर्णको हरनेवाला, निरन्तर हितकारी, शीतल, हलका, स्वच्छ, रसोंका कारण और अमृतकी समान सर्वप्राणियोंका जीवन है ।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिपानीयानिपृथक्पृथक् । शृणुत्वंचस-
मासेनगुणान्गुणविपर्य्ययम् ॥ द्विविधंचोदकंप्रोक्तमान्त-

रीक्षंतथौद्भिदम् । आन्तरीक्षंतुद्विविधंगाङ्गंसामुद्रिकंपयः ॥ गाङ्गसामुद्रविज्ञानंकथयिष्यामिसाम्प्रतम् । धारितंयेनपात्रेणलक्ष्यतेतेनतद्विधम् ॥ धौतंशुद्धंसितंवस्त्रंचतुर्हस्तप्रमाणकम् । दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्कोणेषुबन्धयेत् । तस्मात्परीक्ष्यंतत्तोयंशुद्धेरौप्यमयेऽथवा । कांस्यपात्रेसमुद्धृत्यपरीक्षेतभिषग्वरः ॥ शुद्धकार्पासतूलंवाश्वेतशाल्योदनस्यवा । पिण्डिकातत्समाक्षिप्ताश्वेततांयातिसापुनः ॥ श्वेतातुनिर्मलापिण्डीशुद्धश्चनिर्मलंपयः । तद्गाङ्गंसर्वदोषघ्नंगृहीताङ्गंसुभाजने ॥ तद्धारयेच्चमतिमान्बल्यंमेध्यंरसायनम् । श्रमक्लमपिपासाघ्नंकण्डूदोषनिवारणम् ॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्रस्तम्भविनाशनम् ॥ गङ्गोदकस्यवृष्टिःस्याद्दिवसेवाप्रदृश्यते । आविलंसमलंनीलंघनंपीतमथापिच । सक्षारंपिच्छिलंचैवसामुद्रंतन्निगद्यते ॥ सघनंकफकृच्चैवकण्डूश्लीपदकारकम् । सवातलंचविज्ञेयंरक्तदोषार्तिकारणम् ॥ (हा० सं०)

अन्यच्च ।

अर्थ–महर्षि आत्रेयजी हारीतसे कहते हुये कि, मैं अब पानियोंके भेद और गुण दोप कहताहूं तू सुन । पानी आन्तरीक्ष और औद्भिद इन भेदोंसे दो प्रकारका कहा है तहां आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीकेभी दो भेद हैं एक गांग अर्थात् गंगाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात् समुद्रका गंगा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहताहूं । जिस पात्रमें रक्खा हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं । जलपरीक्षा–धुला हुआ शुद्ध और सफेद वस्त्र चार हाथ लेवे फिर तीन २ हाथ के दंडोंसे उस वस्त्रके चारों कोने बांध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चांदीके वरतनमें अथवा काँसीके वरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचावलके भातका पिण्ड बना उस जलमें डालदे जो सफेदपनेको प्राप्त होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल होजावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मल होजावे तो उसको गंगाका पानी जानना । वह गंगाजल सर्वदोप-

नाशक है, उस जलको सुंदर पात्रमें बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्लम, प्यास, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है । अथवा दिनमें जो बरसता है वह गंगोदक है । कलुषतायुक्त, मलसंयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेघके जलको सामुद्रिकजल जानना । समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है ।

अन्यच्च ।

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा । दिव्यंचतुर्विधं प्रोक्तंधाराजंकरकाभवम् ॥ तौषारञ्चतथाहैमन्तेषुधारंगुणाधिकम् । धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा ॥ शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितंचतत् । सौवर्णेराजतेताम्रे स्फाटिकेकाचनिर्मिते ॥ भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते । धारंनीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यंरसंलघु ॥ सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ।पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् ॥ तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् । धारंजलञ्चद्विविधंगाङ्गसामुद्रभेदतः ॥ आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजाः।मेघैरन्तारितावृष्टिंकुर्वन्तीतिवचः सताम् ॥ गाङ्गमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः।सर्वथातज्जलंदेयंतथैवचरकेवचः ॥ स्थापितेहेमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा । शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥ तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा । तच्चसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ विस्रञ्चदोषलंतीक्ष्णंसर्व्वकर्म्मसमाहितम् । सामुद्रंत्वाश्विनेमासिगुणैर्गाङ्गवदादिशेत् ॥ यतोगस्त्यस्यदिव्यर्षेरुदयात्सकलंजलम् । निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याददोषलम् ॥ फूत्कारविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् ।

वर्षासुसविषंतोयंदिव्यमप्याश्विनंविना। अनार्त्तवंप्रमुञ्चंति वारिवारिधरास्तुयत् ॥ तत्रिदोषायसर्वेषांदेहिनांपरिकीर्त्तितम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम तहां दिव्यजल-धाराज, करकाभव, तौषार और हैम इन भेदोंसे चार प्रकारका है। इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है। धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं। धाराजल त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, तृप्तिजनक, आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है। यह गुण शरदृऋतुमें कहे हैं, किन्तु वर्षाऋतुमें नहीं। धाराजल गांग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है। पहिले आचार्य्योंने कहाहै कि, आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर मेघोंमें छिपे हुए प्रायः आश्विनके महीनेमें मेघद्वारा वर्षातेहैं वह जल सर्वथा सर्वको देना चाहिये तैसेही चरकमेंभी कहाहै परीक्षा। सुवर्ण तथा चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न विगडें और न उनका रंग बदले तो उसको गंगाजल जानना। यह गंगाजल सर्वदोषनाशकहै। और जो वह चावल सडजावें और रंग बदल जावें तो उस जलको सामुद्रजल जानना। यह समुद्रजल सर्वदोषजनकहै। समुद्रजल-खारी, निमकीन, शुक्र, दृष्टि और बलविनाशकहै, दुर्गंधयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमें यह अहितकारीहै। किन्तु आश्विनके महीनेमें जो समुद्रसंम्बंधी वर्षाका जलहै वह गंगाजलकी समान गुणकारक जानना। कारण यह है कि, आश्विनके महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल-निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते हैं। क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें विचरनेवाले सॉपोंकी विषेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहैं, किन्तु आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते। जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके त्रिदोष करनेवाला है।

इतिद्विधोदकंप्रोक्तंतथावक्ष्येचतुर्विधम्। रात्रिवृष्टिर्दिवावृ-

ष्टिर्दुर्दिनासमयोद्भवा ॥ निशाजलंकफकरंघनंशीतगुणा-
त्मकम् । समुद्रतोयस्यसमंविज्ञेयंवातकोपनम् ॥ दिवासू-
र्य्यांशुसंतप्तामेघावर्षन्तियत्पयः । तत्कफघ्नंपिपासाघ्नंलघु-
वातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिनेवृष्टिसंपातंवातोद्धूतंसवातकम् ।
कफकृच्छोषहननंतर्पणंदोषकोपनम् ॥ तथाश्रावणवृष्टिश्च
दोषरोषकरानृणाम् ।कण्डूत्रिदोषजननंपानीयंनप्रशस्यते॥
सघनंनाभसंनीरंश्लेष्मकृद्वातकोपनम् । शमनंपित्तरोगाणां
मधुरंरक्तदोषहृत् ॥रूक्षंपित्तकरंचाम्लगुणंरक्तविकारकृत् ।
चित्रानक्षत्रसम्भूतंपरंशस्तंत्रिदोषहृत् । कार्त्तिकीवृष्टिसम्भू-
तंस्वातिसम्पातशीतलम्॥नाशनंचत्रिदोषाणांसर्वसस्यवि-
वर्द्धनम् । शीतलंबलकृद्वृष्यंतृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-इसप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा, अब चार प्रकारका कहतेहैं। रात्रिमें जो बरसता है, दिनमें जो बरसता है, दुर्दिनमें जो बरसताहै, और असमयमें जो बरसता है। रात्रिमें वर्षा हुआ जल-कफकारक, घन, शीतल गुणोंवाला, वातको कुपित करनेवाला और समुद्रके जलके समानहै। दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त हुये मेघ जो पानीको वर्षाते हैं वह जल-कफनाशक, प्यासको हरनेवाला, हलका और वातको कुपित करता है। दुर्दिनमें वर्षा हुआ जल-वातल, कफकारक, शोषनाशक, तृप्तिकारक और दोषोंको कुपित करे है। श्रावणके महीनेकी वर्षाका पानी-मनुष्योंके दोषोंको कुपित करनेवाला, कण्डूजनक, त्रिदोषकारक और यह जल उत्तम नहीं है। भादोंके महीनेकी वर्षाका जल-कफकारक, वातको कुपित करनेवाला, पित्तरोगोंकी शान्ति करनेवाला, मधुर और रुधिरके विकारोंको करे है। आश्विनके महीनेकी वर्षाका जल-रूखा, पित्तजनक, अम्ल और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। चित्रानक्षत्रमें वर्षाहुआ जल-त्रिदोषनाशक और अत्यन्त उत्तम होता है। कार्त्तिकमासकी वर्षाका जल-अति शीतल, त्रिदोषनाशक, सर्वप्रकारकी खेतियोंको बढानेवाला, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तृषा, दाह और ज्वरको हरनेवाला है।

धारकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् ।

तथाधारंचकारंचतौषारंहैममेवच ।
चतुर्विधंसमुद्दिष्टंतेषांवच्मिगुणागुणम् ॥

अर्थ–धार, कार, तौषार, हैम इन भेदोंसे जल चार प्रकारके हैं, अब इनके गुण और दोषोंको कहताहूं ।

धारंचतुर्विधंप्रोक्तंवक्ष्येकारंमहामते ।
श्रीमतांचमहाप्राज्ञहितायरुजशान्तये ।

अर्थ–धारसंज्ञक जल चार प्रकारका कहा है, अब कार जल श्रीमान् और बडे विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहताहूं ।

अथ करकाः ।

स्वर्नद्याःशीतवातेनमेघविस्फूर्जसंकुलम् ।शीताम्बुबद्धकाठिन्यंशिलाजातंहिमेनतु॥ पश्चात्सूर्य्यांशुसन्तापात्किञ्चिद्विद्रवतेजलम् । वहन्तिमेघाःसलिलंशकलंशीतलंमतम् ॥
(हा०सं०)

अर्थ–शीतलपवनसे स्वर्गंगादि नदियोंका शीतल जल मेघके शब्दसे संकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाताहै पश्चात् सूर्य्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाताहै फिर मेघ उसको खण्ड खण्डरूप (ओलोंको) बरसाते हैं उन ओलोंका जल परमशीतल होताहै ।

अन्यच्च ।

दिव्यंवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतन्तिया ।
पाषाणखण्डवच्चापस्ताःकारिक्योऽमृतोपमाः ॥

अर्थ–दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताडित हुआ जो जल आकाशसे शिलारूपसे गिरता है उसको 'करकाजल' कहते हैं ।

गुणाः ।

करकाजंजलंरूक्षंविशदंचगुरुस्थिरम् ।
दारुणंशीतलंसांद्रंपित्तहृत्कफवातकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–ओलोंका जल–रूखा, विशद, भारी, स्थिर, दारुण, शीतल, गाढा पित्तनाशक और कफकारक है ।

अन्यच्च ।

कारंशीतगुणंश्रमोपशमनंरूक्षंमरुच्छ्लेष्मकृन्मूर्च्छामोहशिरोर्त्तिनाशनकरंहिक्काविनिर्वारणम् । शोफीनांव्रणिनांचनोहितकरंपित्तात्मकानांहितं शंसन्तिप्रवरागुणैःप्रतिकृतिंतस्मान्नदूरेकृतम् ॥

अर्थ-ओलोंका जल-शीतगुणान्वित, श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा, मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है । सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहितहै और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है । यह अत्युत्तमहै इसमें अनेक गुणहैं इसकारण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये । (हा० सं०)

अथ तौषारलक्षणं गुणाश्च ।

अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निरापस्तदुद्भवाः । धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तुताःस्मृताः ॥ अपथ्याःप्राणिनांप्रायोभूरुहाणांचनोहिताः । तुषाराम्बुहिमंरूक्षंस्याद्वातलमपित्तलम् ॥ कफोरुस्तम्भकंठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत् । (भा०प्र०)

अर्थ-नदीसे लेकर समुद्रतक अग्निहै उससे उत्पन्न हुये जल धुएँके अवयव हीन तुषार कहातेहैं, वह तुषार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक हैं । तुषारका जल-शीतल, रूखा, बादी, अपित्तल तथा कफ, उरुस्तम्भ, कण्ठ, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

तौषारंलघुशीतलंश्रमहरंपित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोषाणांशमनंजलार्तिहननंसर्वामयघ्नंपरम् ॥ कुष्ठश्लीपदचर्चिकाविषहरंपामाविसर्पापहम् । क्षीणानांक्षतशोषिणांहितकरंसंसेव्यतेमानवैः ॥ (हा०सं०)

अर्थ-तुषारका जल-हलका, शीतल, श्रमनाशक, पित्तकी पीडाको शान्तिकरनेवाला, दोषनिवारक, जलके रोगोंको हरनेवाला, सर्वप्रकारके रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कोढ, श्लीपद, मकडीका विष, पामा और

विसर्परोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोग-वालोंको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्योद्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेवहिमंहैमंजलमाहुर्मनीषिणः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो वर्फ गलकर जल टपकताहै उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं ।

हिमजलगुणा ।

हैमंघनंचमधुरञ्चकफात्मकञ्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनंभ्रमना-शनञ्च । पित्तास्रजप्रशमनंरुधिरक्षतघ्नं शान्तिकरोतिहि-मसम्भववारिसद्यः ॥ (हा०सं०)

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है ।

अन्यच्च ।

हिमन्तुशीतलंरूक्षंदारुणंसूक्ष्ममित्यपि ।
नतद्दूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको दूषित करे, न पित्तको दूषित करे और न यह कफको दूषित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः । जाङ्गलंपरमानूपंत-तस्साधारणंक्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्चपित्तरक्तामया-न्वितः । ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यंजांगलंजलम् ॥ बह्वंबुर्बहुवृक्षश्चवातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूपइतिख्या-तआनूपंतद्भवेज्जलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेशःसहिसाधार-णःस्मृतः । तस्मिन्देशेयदुदकंतत्तुसाधारणंस्मृतम् ॥ जा-ङ्गलंसलिलंरूक्षंलवणंलघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफहृत्पथ्यं विकारान्हरतेबहून् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्धं

घनंगुरु । वह्निहृत्कफकृद्वृष्यंविकारान्कुरुतेबहून्॥साधा-रणन्तुमधुरंदीपनंशीतलंलघु । तृष्णादाहमदच्छर्दितथा दोषत्रयप्रणुत् ॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जांगल, आनूप और साधारण इन भेदोंसे तीन प्रकारकाहै। जिस देशमें अल्पजल और थोडे वृक्ष हों और जहां प्रायः प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हों उस देशको जांगलदेश कहते हैं और उस देशके जलको जांगल जल कहते हैं। जिस देशमें बहुत जल और बहुत वृक्ष हों और जहांके जीव अधिकतर वात कफ रोगवाले हों उस देशको अनूप देश कहतेहैं और उस देशके जलको आनूप कहतेहैं। जिस देशमें जंगल और अनूप दोनों लक्षण मिश्रित हों रोगभी मिश्रित हों उस देशको साधारण कहतेहैं और उस देशके जलको साधारण-जल कहतेहैं। जांगलजल-रूखा, निमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्नि-जनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवालाहै। आनूपजल-अभिष्यंदि, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, वृष्य और अनेक प्रकारके विकारोंको करे है। साधारणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हलका तथा तृषा दाह, मद, वमन और त्रिदोषका नाश करे है।

अथाष्टविधं जलम्।

धारंपृथिव्यांपतितंपयस्तुतत्रैवजातंगुणभेदभिन्नम्।
नानाविधैर्भेदगुणैश्चसम्यग्जातंजलंचाष्टविधंवदन्ति ॥
नद्योद्भिदंप्रस्रवणंचचौंडयंकौपंतडागंसरसोद्भवञ्च ।
वाप्योद्भवंतंप्रवदन्तिधीरानीरंसमासेनवदामिचात्र॥(हा.सं.)

अर्थ-धारनामवाला जल पृथिवीमें पतित हुआ तहां गुणोंके भेदोंसे भिन्न होजाताहै फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोंसे आठ प्रकारका होता है। नादेय (नदीका), औद्भिद (जो पृथ्वीको तोडकर वहता है उसका जल) झरनेका, चौंडयका, कुएका, तडागका, सरका और वापीका इन भेदोंसे जल आठ प्रकारका कहाहै।

नदीजलम्।

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम्।

नादेयमुदकंरूक्षंबातलंलघुदीपनम् ॥
अनभिष्यन्दिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल–रूखा, बादी, हलका, दीपन, अनभिष्यंदि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च।

यच्छ्रीमताञ्चैवमहीपतीनांसेव्यंतथायोग्यतमंप्रदिष्टम् ।
नादेयतोयंमधुरंतथालघुरूक्षंतथोष्णंशमनञ्चवायोः ॥
सन्दीपनंसस्यविनाशनञ्चहिमागमेवाशिशिरेनिपेव्यम् ।
बलप्रदंपथ्यकरंनराणांप्रदिष्टमेतत्तुसदाभिषग्भिः ॥ (हा.सं.)

अर्थ–नदीका जल–लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्ति करनेवाला, अग्निप्रदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतऋतुके आगममें तथा शिशिर ऋतुमें सेवन करना चाहिये।

नद्यःशीघ्रवहालघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः ।
गुर्व्यःशैवलसंछन्नामंदगाःकलुषाश्चयाः ॥

अर्थ–शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल–हलका और निर्मल होताहै। और मंदवहनेवाली नदियोंका जल-भारी, काईसे ढका हुआ और कलुषता-युक्त होताहै।

नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे ।
उदकेदेशभेदेनगुणान्दोषांश्चलक्षयेत् ॥

अर्थ–नदी–सरोवर, तालाव, कूआ, झरना इनके जलोंमें देशभेदके द्वारा गुण और दोष जानने।

अथ गंगाजलगुणाः।

स्वादुपाकरसंशीतंत्रिदोषशमनंतथा ।
पवित्रमतिपथ्यञ्चगाङ्गंवारिमनोहरम् ॥

अर्थ–गंगाजल–स्वादुपाकी, शीतल, त्रिदोषकी शान्तिकरनेवाला, पवित्र, अत्यन्त पथ्य और मनोहर है।

यमुनाजलगुणाः।

गाङ्गात्किञ्चिद्गुरुतरंस्वादुपित्तापहंपरम्।
वातलंवह्निजननंरूक्षंचयामुनंजलम्॥

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारीहै, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है।

नर्मदाजलगुणाः।

अथस्वच्छंप्रशस्तञ्चशीतलंलघुलेखनम्।
पित्तश्लेष्मप्रशमनंनार्मदंसर्वरोगनुत्॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल, शीतल, हलका, लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करनेवाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाश करे है।

गोदावरीजलगुणाः।

कण्डूकुष्ठप्रशमनंवह्निसंदीपनंपरम्।
पाचनंवातपित्तघ्नंवारिगोदावरीभवम्॥

अर्थ-गोदावरी नदीका जल-कण्डू, कुष्ठ और वातपित्तनाशकहै, अग्नि-प्रदीपक और पाचक है।

कावेरीनदीजलगुणाः।

कावेरीसलिलंपथ्यंवातघ्नंबलवर्णकृत्।
आग्नेयमतिशीतञ्चदद्रुकुष्ठविनाशकृत्॥

अर्थ-कावेरीनदीका जल-पथ्य, वातविनाशक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, जठराग्निको बढानेवाला, अत्यन्त शीतल तथा दाद और कुष्ठका नाश करे है।

कृष्णवेणीजलगुणाः।

रूक्षंचशीतलंवारिवातरक्तप्रकोपनम्।

अर्थ-कृष्णावेणीका जल-रूखा, शीतल और वातरक्तको कुपित करेहै।

पूर्वदेशोद्भवानद्यःसर्वावातकफप्रदाः। पश्चिमाःपित्तलाःसर्वाःकफवातविनाशनाः॥ पश्चिमोदधिगाःशीघ्रवहायाश्चामलोदकाः। पथ्याःसमासात्तानद्योविपरीतास्ततोऽन्यथा॥

अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी-वातकफकारक। पश्चिमदेशकी सर्वनदी-पित्त-कारक और कफवातविनाशक हैं। पश्चिमके समुद्रमें जानेवाली नदियोंका

जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नादेयंसंप्रवक्ष्यामिसमुद्रगामिस्रोतसाम्। ससैकतासपाषाणाद्विविधाचाम्बुवाहिनी॥ सदावहावाघनवारिकोष्णामरुत्कफानांशमनञ्चतस्याः। नीरंवसन्तेहितकृद्विशेषान्नदीभवंनैवहिमागमेच॥ घनविमलशिलानांस्फालनाज्जातफेनं बहलसजलवीचीच्छन्नसंक्षोभहृतम्। ननुसुखमयशीतंनातिचोष्णंघनञ्च हरतिपवनपित्तंश्लेष्मकृद्वारिसम्यक्॥ नघनविमलतोयंसैकतायाःप्रवाहो नचभवतिलघुत्वंश्लेष्मकृद्धन्तिपित्तम्। भवतिमधुरमेवंकिञ्चिदुष्णंकषायंभवति पवनकारीशोषमूर्च्छांनिहन्ति॥ हिमवत्प्रभवानद्यःपुण्या देवर्षिसेविताः। घनपाषाणसिकतावाहिनीविमलोदकाः॥ हन्तिवातकफंतोयंश्रमशोषविनाशनम्। किञ्चित्करोति वापित्तंत्रिदोषशमनंजलम्॥ पारिभद्रभवायाश्चविन्ध्यसिन्धुभवाश्चयाः। शिरोहृद्रोगकुष्ठानांताहेतुःश्लीपदस्यच॥ मलयप्रभवानद्यःशीततोयाःसुधोपमाः। प्रतिपित्तंचवातंच शोपभ्रमश्रमापहाः॥गंगासरस्वतीशोणायमुनासरयूशची। वेणाशरावतीनीलाउत्तरापूर्ववाहिनी॥ हिमवत्प्रभवाह्येता हिमसंघातशीतलाः। समाःसर्वगुणैर्नद्योवातश्लेष्महरानृणाम्॥ आसांनवशतैर्युक्तागङ्गाप्रोक्तामनीषिभिः। तथाचर्मण्वतीवेत्रवतीपारावतीतथा॥ क्षिप्रामहापदीपीतासुत्सकन्यामनस्विनी। शेवतीचैवशैलिन्यःसिन्धुयुक्ताःसमुद्रगाः वातपित्तहरंनीरंत्रिदोषघ्नंमतंपरम्। श्रमग्लानिहरंवृष्यमुत्तराशानुगामिच॥तापीगोपतिगोलोमीगोमतीसलिलामही। सरस्वतीयुतानद्योनर्म्मदापश्चिमानुगाः॥ आसांजलंघनं

शीतंपित्तघ्नंकफकृत्तथा । वातदोषहरंहृद्यंकण्डूकुष्ठविनाशनम् ॥ पश्चिमाद्रिसमुद्भूतागौतमीपुण्यभावना: । आसां शीतंजलंवापिकफवातविकारकृत् ॥ पित्तदंशमनंबल्यंमूत्रदोषविकारकृत् । पूर्णापयस्विनीवेत्राप्रणीताचवरानना ॥ द्रोणागोवर्द्धनीयान्यागौतम्यानुगताइमाः । आसांजलंघनं नातिवातश्लेष्मविकारकृत् ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चैवनद्योनवशतैर्युताः । कावेरीवीरकान्ताचभीमाचैवपयस्विनी ॥विभावरीविशालाचगोवन्दनीमदनस्वसा।पार्वतीचापरानद्योदक्षिणादिग्गमाइमाः ॥ प्रत्येकशोनवशतैर्युताइमाःपृथक्पृथक्। सर्वासांपरिसंख्याचशतानांचैकविंशतिः ॥ क्रोशेक्रोशेभवेत्कुल्यायोजनेयोजनेनदी । द्वियोजनाचविज्ञेयामहानीराबुधैर्नदी ॥ (हा० सं०)

अर्थ-आत्रेयजी कहतेहैं कि, अब समुद्रमें जानेवाली नदियोंको कहताहूं, रेतेवाली और पत्थरोंवाली इन भेदोंसे नदी दो प्रकारकी हैं। सदैव बहनेवाली नदी-घनजलवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली हैं उनका जल विशेष करके वसंतऋतुमें हितकारी है और हिमऋतुके पूर्वमें हितकारी नहीं है। घन और निर्मल ऐसे पत्थरोंवाली नदीका जल-फेनयुक्त और तरंगोंके क्षोभसे गरम होजाता है, सुंदर, शीतल, अत्यन्त उष्ण नहीं, हलका, घन वात पित्तनाशक और कफको करता है। बालु रेतेवाली नदियोंका जल-घन नहीं, निर्मल हलका भी नहीं, कफकारक, पित्तनाशक, मधुर, किञ्चित् गरम, कषेला, वातकारक तथा मूर्च्छा और शोषको दूर करे है। हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदी पवित्र हैं देव और ऋषियों करके सेवित हैं, भारी पत्थर और बालूकरके युक्त बहनेवाली हैं और उनका जल-निर्मल, वातकफनाशक, श्रमनिवारक, शोषनाशक, किञ्चित् पित्तकारक तथा पित्त और त्रिदोषको शान्ति करे है। पारिभद्र, विन्ध्याचल और सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-शिरोरोग, हृदयरोग, कुष्ठ और श्लीपदादिरोगोंका कारण है । मलय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-

शीतल, अमृतके समान तथा वात, पित्त, शोष, भ्रम और श्रमका नाश करे है । गंगा, सरस्वती, शोण, यमुना, सरयू, शची, वेणा, शरावती और नीला तथा उत्तर और पूर्वको वहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके संघातसे शीतल हुई यह सर्वनदी गुणोंमें समान और मनुष्योंके वात तथा कफको हरनेवाली हैं । इनमे ९०० नौसौ नदियोंयुक्त गंगा कही है । तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्तका, मनस्विनी, शेवती, शैवलिनी और सिन्धु यह सर्वनदी समुद्रमे जानेवाली हैं । इन सर्वनदियोंका जल–वातपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, श्रमहारक, ग्लानिनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोपती, गोलोमी, गोमती, सलिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह सर्व पश्चिमसे वहती हैं इनका जल–घन, शीतल, पित्तनाशक, कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठका नाश करे है । पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गौतमी और पुण्यभावना आदि नदियोका जल–शीतल कफ और वातके विकारोंको करे है । पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, वलकारक और मूत्रदोषोंको उत्पन्न करे है । पूर्णा, पयस्विनी, वेत्रा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा, गोवर्द्धनी आदि नदी गौतमी नदीका अनुगमन करती है । इनका जल–अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है । पूर्वके समुद्रमे गमन करनेवाली ९०० नदी है । कावेरी वीरकान्ता, भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी, मदनस्वसा और पार्वती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली हैं । एक २ नदी ९०० नदीयुक्त है और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोंकी संख्या २१०० हैं । कोशकोशमें कुल्या होती हैं, योजन २ मे नदी होती हैं और वारह २ योजनमें महाजलवाली नदी होती है जिसको नद कहते हैं ।

औद्भिदभूमिगुणा ।

भूमिःपञ्चविधाज्ञेयाकृष्णारक्तासितातथा । पीतानीलाभवेच्चान्यागुणास्तासांप्रकीर्त्तिताः ॥ साकृष्णामधुराक्षाराकषायापीतवर्णिनी । रक्तासातुभवेत्तिक्तामधुराम्लासितास्मृता ॥ नीलासकटुकाज्ञेयाभूमिभागाज्जलंविदुः । सघनंमधुरंनीरं कृष्णभूमिपरिस्नुतम् ॥ पीनास्थितंकषायंचरक्तायाःक्षारमाधुरम् । सितायाह्यम्लमधुरंभूमिभागेनलक्षयेत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल, सफेद, पीली और नीली इन भेदोंसे पांच प्रकारकी है, अब उनके गुण कहते हैं, काली पृथिवी मधुर और खारी है। पीले रंगकी पृथिवी-कषेली है। लाल पृथिवी कडवी है। सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है। और नीली पृथिवी चरपरी है। ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा है। काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होताहै। पीली पृथिवीका पानी-कषेला होताहै। लाल भूमिका जल-खारी और मधुर होता है। सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होताहै ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्रायः पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है।

औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च।

विदार्य्यभूमिंनिम्नायामहत्याधारयास्रवेत्। तत्तोयमौद्भिदं नाम्नवदन्तीतिमहर्षयः॥ औद्भिदंवारिपित्तघ्नंसविदाह्यति-शीतलम्। प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको फाड़कर जो नीचे बडी धारासे जल वहताहै उस जलको औद्भिद जल कहते हैं, औद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अत्यन्त शीतल, प्रीणन, मधुर, बलकारक, किंचित् वातकारक और हलका है।

अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च।

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहोनिर्झरोझरः। सतुप्रस्रवणश्चापि तत्रत्यंनैर्झरंजलम्॥ नैर्झरंरुचिकृन्नीरंकफघ्नंदीपनंलघु। मधुरंकटुपाकंचवातलंस्यादपित्तलम्॥

अर्थ-पर्वतमेंसे जो जल बहताहै उसको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहतेहैं, हिन्दीमें झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-रुचिकारक, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपित्तल है।

अथ चौंड्यस्य लक्षणं गुणाश्च।

शिलाकीर्णस्वयंश्वभ्रंनीलाञ्जनसमोदकम्। लतावितानसं-छन्नंचौण्डचमित्यभिधीयते॥ अश्मादिभिरबद्धंयत्तच्चौ-ञ्ज्यमितिवापरे। तत्रत्यमुदकंचौञ्ज्यंमुनिभिस्तदुदाहृत-म्॥ चौञ्ज्यंवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु। मधुरंपित्तनुद्रु-च्यंपाचनंविशदंस्मृतम्॥

अर्थ-जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंकरके व्याप्त हो और जिसका जल नील अंजनकी समान निर्मलहो और जिसके ऊपर लता छारहीहों उसको चौण्ड्य कहते हैं । कोई आचार्य्य कहतेहैं कि, जो पत्थर आदिसे न बांधाहो उसको चौञ्ज्य कहते हैं । उसके जलको चौञ्ज्य जल कहतेहैं । चौण्ड्यका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हलका, मधुर, पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशदहै ।

अथ कौपस्य लक्षणं गुणाश्च ।

भूमौखातोल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृतिः । बद्धोऽबद्धः सकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंजलयदिस्वादुत्रि-दोषघ्नंहितंलघुतत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परं॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडा गहरा गोल गड्ढा खोदकर ईंटपत्थरोंसे बनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहतेहैं और उसके जलको कौपजल कहतेहैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ठ हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हलका होता है और खारी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होताहै ।

अन्यच्च ।

कफघ्नंकूपपानीयंक्षारंपित्तकरंलघु । (रा० नि०)

अर्थ-औरभी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हलका है।

तडागजलस्य लक्षण गुणाश्च।

प्रशस्तोभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडा-गःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥ ताडागमुदकंस्वादुकषायं कटुपाकिच । वातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमें बहुतवर्षोंके पुराने जलाशयको तडाग कहतेहैं, उसके जलको ताडागजल कहतेहैं । तालवका जल स्वादिष्ठ, कषेला, कटु-पाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको बाँधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

सारसलक्षणं गुणाश्च ।

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रित्यतिष्ठति । तत्सरोजलसं-च्छन्नंतदम्भःसारसंस्मृतम् ॥ सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंम-धुरंलघु । रोचनंतुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥

अर्थ-जहां नदी पहाडआदिसे रुककर ठहर जावे उसको सर कहतेहैं, उसके जलको सारस कहते हैं। सरका जल-बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचन, कषेला, रूखा तथा मल और मूत्रको बांधनेवाला है।

वाप्यलक्षणं गुणाश्च।

पाषाणैरिष्टकाभिर्व्वाबद्धःकूपोऽबहूत्तरः। ससोपानोभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते॥ वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत्। तदेवमिष्टंकफकृद्वातपित्तहरंभवेत्॥

अर्थ-पत्थर अथवा ईंटोंसे जो बडा कुआ बनाया जावे और उसमें सोपान अर्थात् सीढीभी लगाईजावें उसको वापी (बावडी) कहते हैं और इसके जलको वाप्य कहते हैं। बावडीका पानी जो खारी होय तो पित्तकारक और कफवातहारक जानना। और जो मीठा होय तो कफकारक और वातपित्तहारक जानना।

पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च।

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रर्क्षगेरवौ।
नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तत्रत्यंवारिपाल्वलम्॥
पाल्वलंवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत्।

अर्थ-छोटे सरको पल्वल कहते हैं, इसमें श्रावण तथा वर्षामें जल रहता है फिर सूखजाता है, इसके जलको पाल्वल कहते हैं। पल्वल अर्थात् तलैयाका जल-अभिष्यन्दी, भारी, स्वादु और त्रिदोषकारक है।

विकिरस्य लक्षणं गुणाश्च।

नद्यादिनिकटेभूमिर्य्याभवेद्वालुकामयी। उद्घाट्यतेततोयत्तु तज्जलंविकिरंविदुः॥ विकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम्। तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक्॥

अर्थ-नदीके निकटकी जो पृथिवी वालुयुक्त होतीहै उसमें गड्ढा खोदकर जो जलको निकालते हैं उस जलको विकिर (चोहेका) जल कहते हैं। विकिर (चोहेका) जल-शीतल, निर्मल, निर्दोष, हलका, कषेला, स्वादिष्ट और पित्तनाशक है और जो खारी होय तो पित्तकारक जानना।

कैदारस्य लक्षण गुणाश्च।

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम्।

केदारंवार्य्यभिष्यन्दिमधुरंगुरुदोषकृत् ॥

अर्थ-केदार खेतको कहते हैं और उसके जलको केदार कहते हैं । केदारका जल-अभिष्यन्दि, मधुर, भारी और दोषकारी है ।

वृष्टिजललक्षणंगुणाश्च ।

वार्षिकंतदहर्वृष्टंभूमिस्थमहितंजलम् ।
त्रिरात्रमुषितन्तत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जो वृष्टिका जल उसी दिन वर्षा हो और भूमिस्थित हो वह जल अहितकारीहै और जो वही जल तीन रात्रि रक्खारहै तो स्वच्छ और अमृतकी समान होजाता है।

क्षारजलगुणाः ।

क्षारोदकंपित्तलंस्यात्सरंचाग्निप्रदीपनम् ।
कफवातहरंचैवप्रोक्तंपूर्वचिकित्सकैः ॥

अर्थ-खारीजल-पित्तकारक, सारक, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातका विनाश करे है ।

समुद्रजलगुणाः ।

सामुद्रंदोषजनकंदाहकंरक्तदोषकृत् ।
अग्निमांद्यंश्लीपदंचत्वग्दोषञ्चकफंजयेत् ॥ (वै०नि०)

अर्थ-समुद्रका पानी-दोषजनक, दाहकारक, रक्तके विकारोंको करनेवाला तथा मंदाग्नि, श्लीपद, त्वचाके दोष और कफका नाश करे है ।

सर्वऋतुसम्बन्धिजलगुणाः ।

वारिसाधारणंवृष्यंदीपनंमधुरंलघु ॥

अर्थ-साधारण जल-वीर्य्यवर्द्धक, दीपन, मधुर और हलकाहै ।

वार्षिकजलगुणाः ।

गुर्वभिष्यन्दिपानीयंवार्षिकंमधुरंसरम् ।

अर्थ-वर्षाऋतुका जल-भारी, क्लेदकारक, मधुर और सारकहै ।

शारदीयजलगुणाः ।

शारदञ्चानभिष्यन्दिलघुतत्परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-शरद्ऋतुका जल-अनभिष्यदि अर्थात् क्लेदहीन और हलका है ।

हैमन्तिकजलगुणाः ।

हैमन्तिकंजलंस्निग्धंवृष्यंबल्यंहितंगुरु ।

अर्थ-हेमन्तऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, हितकारी और भारी है ।

शैशिरजलगुणाः ।

शैशिरंकफवातघ्नंकिञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु ।

अर्थ-शिशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हैमन्तिक जलसे किञ्चित् हलका है ।

वासन्तिकजलगुणाः ।

कषायंमधुरंरूक्षंविद्याद्वासंतिकंजलम् ।

अर्थ-वसन्तऋतुका जल-कषेला, मधुर, और रूखा होता है ।

ग्रैष्मिकजलगुणाः ।

ग्रैष्मिकञ्चानभिष्यन्दिजलमित्येषनिश्चयः ॥ (रा०व०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका जल-क्लेदरहित होता है ।

ऋतुपरत्वेनजलगुणाः ।

हेमन्तेसारसंतोयंताडागंवाहितंस्मृतम् । हेमन्तेविहितंतोयं शिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकौपंवाप्यंवानैर्झरं जलम् । नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ॥ विषवद्धन-वृक्षाणांपत्राद्यैर्दूषितंयतः । औद्भिदंवान्तरिक्षंवाकौपंवाप्रा वृषिस्मृतम् ॥ शस्तंशरदिनादेयंनीरमंशूदकंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हेमन्तऋतुमें सरोवर और तालावका जल पीना हितकारी है, जो जल हेमन्तऋतुमें हितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमेंभी हितकारी है वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें कुयेका, वावडीका और झरनेका जल पीना चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये । कारण यह है कि, इसऋतुमें पतझड होता है इससे उन पत्तोंसे वह नदीका जल विषकी समान दूषित होजाता है । वर्षाऋतुमें औद्भिद वा अन्तरिक्षजल अथवा कुयेका जल पीना चाहिये और शरदृऋतुमें नदीका जल अथवा अंशूदक सेवन करना चाहिये ।

अन्यच्च।

शरदिस्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलंहितम् ॥

अर्थ-शरदृऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी होजाते हैं।

अन्यच्च।

पौषेवारिसरोजातंमाघेतत्तुतडागजम्। फाल्गुनेकूपसम्भूतं चैत्रेचौण्डयंहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरंनीरंज्येष्ठेशस्तंतथौद्भिदम्। आषाढेशस्यतेकौपंश्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौपंपयःशस्तमाश्विनेचौंज्यमेवच। कार्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ-पौषके महीनेमें सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका, फाल्गुनके महीनेमें कुयेका, चैत्रके महीनेमें चौण्डयका, वैशाखके महीनेमें झरनेका, जेठके महीनेमें उद्भिद्का, आषाढके महीनेमें कुयेका, श्रावणके महीनेमें दिव्योदक, भादोके, महीनेमें कुएका, आश्विनके महीनेमें चौंज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये।

तथाचतुर्विधंतोयंवक्ष्यामिशृणुकोविद।
पापोदकंरोगोदकमंशूदकारोग्योदकौ ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको-पापोदक-रोगोदक-अंशूदक और आरोग्योदक इन भेदांसे चार प्रकारसे कहता हूं. हे हारीत ! सुन।

पापोदक।

पापंपापोदकंचैवकरोत्येवमरोचकम्। विष्ठायुक्तंग्राहिनीरं कृमिकीटसमाकुलम्॥समलंनीलशैवालंपापन्तुनर्दितंचयत्। स्नानेपानेनतच्छस्तंनराणांवाहयेषुच॥ स्नानेनत्वग्भवान्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत्। पानेनकफगुल्मानांकृमीणांवरसम्भवान्॥करोतिविविधान्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥

अर्थ-पापोदक अर्थात् पापीपानी-अरुचिकारक है। विष्ठायुक्त जल-मलरोधक है। कृमि, कीट, मल और नीलीकाई आदिसे मिलेहुये जलको पापोदक कहतेहैं। यह पापोदक-मनुष्य और घोडोंको स्नान और पीनेमें

अहितकारी है। और इस जलसे स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, कुष्ठ और विसर्प रोग उत्पन्न होता है। और इस जलको पान करनेसे-कफ, गुल्म और कृमिप्रभृति नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस कारण यह पापीजल कदापि नहीं पीना चाहिये।

रोगोदकम्।

बहुवृक्षलताकुञ्जेछायाकूपोऽथवासरः। अव्ययश्चेदधोऽप्ये-वंकृमिशैवालसंयुतम्॥ क्लिन्नंसपिच्छिलंकृष्णंवृक्षमूलाश्रि-तंभवेत्। बहुवृक्षपर्णयुक्तंदुर्गन्धंमूत्रगन्धवत्॥ रोगोदकंवि-जानीयात्करोतिविषमान्गदान्। शूलंकुष्ठंचकण्डूंचसेविते-नकरोतिहि॥ विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुतंतप्तंघनंफेनिलं दन्तग्राह्यमनार्त्तवंहिसजलंदुर्गन्धिशैवालजम्। नानाजी-वविमिश्रितंगुरुतरंपर्णौघपङ्काविलं चन्द्रार्कांशुसुगोपितं नचपिबेन्नीरंसदादोषलम्॥ गुल्मंप्लीहार्शःपाण्डुश्चजलंवा पिजलोदरम्।

अर्थ-बहुतसे वृक्ष और बहुतसी बेलोंके समूहकी छायामें कूवा वा सरोवर हो और उसमें पानी सदैव भरा रहता हो वह जल कृमि, शिवारयुक्त हो, क्लेदितहो, पिच्छिलहो, काले रंगका हो, वृक्षोंकी जडोंसे आश्रितहो और बहुत वृक्षोंके पत्तोंसे युक्त हो, दुर्गंधित हो मूत्रकी समान गन्धवाला हो उसको रोगोदक कहते हैं-यह रोगोदक अर्थात् रोगी पानी-विषमरोग, शूल, कुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है। तथा जो जल विष्ठा, मूत्र, तृण, काई और विषसहित हो, गरमहो, घनहो, फेनिलहो, दांतोंको पकडताहो, अकालमें वर्षाहो, दुर्गन्धियुक्तहो, शिवारयुक्तहो, अनेक प्रकारके जीवोंसे मिलाहुवाहो, अधिकतर भारीहो, पत्र, और कीचडसे मैलाहो और जिसपर चन्द्रमा और सूर्य्यकी किरणें नहीं पडतीं हों वह जलभी रोगोदक जानना, यह जलभी नहीं पीना चाहिये। यह सर्वकालमें दोषजनक है तथा गुल्म, प्लीहा, बवासीर, पाण्डु और जलोदर रोगको उत्पन्न करता है।

अंशूदकम्।

दिवासूर्यांशुसन्तप्तंरात्रौचन्द्रांशुशीतलम्।

अंशूदकमितिख्यातंसर्वरोगनिवारकम् ॥
कफमेदोनिलघ्नंचदीपनंवस्तिशोधनम् ।
श्वासकासहरंनीरंचक्षुष्यंनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-जो जल-दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त होताहै और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अंशूदक नामसे विख्यात है। अंशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ, मेद और वातविनाशक है। दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक है।

आरोग्योदकम्।

पादशेषन्तुक्कथितंतच्चारोग्यजलंविदुः । कासश्वासहरंपथ्यं मारुतंचापकर्षति॥सद्योज्वरंहरत्याशुसमेदःकफनाशनम् । प्रतिश्यायंपाचयतिशूलगुल्मार्शनाशनम् । दीपनश्चहुताश-स्यपाण्डुशोथोदरापहम् । अजीर्णश्चजरत्याशुपीतमुष्णो-दकंनिशि ॥ (हारीतसंहिता,)

अर्थ-जो जल-अग्निपर औटानेसे चौथाई भाग वाकी रहजाय वह आरोग्योदक है। आरोग्योदक-खांसी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद, कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और ववासीरको दूर करे है। अग्निप्रदीपक और पाण्डुरोग, सूजन, उदररोग तथा रात्रिमें पियाहुआ गरमजल अजीर्णको दूर करे है।

जलग्रहणकालः।

भौमानामम्भसांप्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते ।
शीतत्वंनिर्मलत्वंचयतस्तेषांमतोगुणः ॥

अर्थ-भूमिसम्बन्धी जल प्रातःकालही ग्रहण करना चाहिये; कारण यह है कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता है, सो यह दोनों गुण प्रातःकालही होते हैं।

शीतजलगुणाः।

शीताम्बुमदमूर्छाघ्नंछर्दिपित्तज्वरापहम् ।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥

अर्थ-शीतजल-मद, मूर्च्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, क्लम, तृषा, दाह, मदात्यय और विषका नाशकरेहै ।

उष्णोदकलक्षणंगुणाश्च ।

क्वाथ्यमानन्तुयत्तोयंनिष्फेनंनिर्मलीकृतम् । भवत्यर्द्धावशिष्टन्तुतदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकंसदापथ्यंकासज्वरविबन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्नंदीपनंवस्तिशोधनम् ॥ तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनन्तुपित्तजित् । कफघ्नंपादशेषन्तुपानीयंलघुदीपनम् ॥ (राज०)

अर्थ-क्वाथ्यमानजलको अग्नि देते २ जब वह निष्फेन और निर्मल होकर अर्द्धशेष रहजाय तब उस जलको उष्ण जल कहते हैं । उष्ण जल सदैव पथ्य, तथा कास, ज्वर, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन और वस्तिशोधक है । उष्ण जलका जब जलते २ एकपाद कम होजावे तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जब जलते २ आधा बाकी रहजाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जब जलते २ एकही भाग शेष रहजाय तब वह जल कफनाशक, हलका और अग्निप्रदीपक होजाताहै ।

अन्यच्च ।

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनच । अथवाक्वाथनेचैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरान्हन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ॥

अर्थ-जो जल-औटाते २ आठवां भाग शेष रहगया हो, उसको वा औटाते २ चौथा भाग शेष रहगयाहो उसको अथवा औटाते २ आधा रहगया हो उसको तथा केवल औटायेहुवेही जलको उष्णोदक कहते हैं । उष्णजल रात्रिमें पियाहुवा-कफ, आमवात और मेदरोगनाशक है । वस्तिशोधक, दीपन तथा खांसी, श्वास और ज्वरको हरनेवाला है ।

ऋतुभेदेउष्णजलभेदः

हेमन्तेशिशिरेपादहीनंपादस्थितंमधौ ।
स्यात्पानीयंशरत्कालेग्रीष्मेचार्द्धावशेषितम् ॥

इच्छन्तिबहुदोषत्त्वात्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ।

अर्थ-उष्णजल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेष, शरत् और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्धशेष और वर्षाऋतुमें जल बहुत दोषयुक्त होताहै, इसकारण इस ऋतुमें उष्णजलको, औटाते २ जब आठवां भाग शेष रहजाय तब व्यवहारमें लाना चाहिये ।

अन्यच्च ।

त्रिपादशेषंसलिलंग्रीष्मेशरदिशस्यते ।
हिमेऽर्द्धशेषंशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः ।

अर्थ-कोई वैद्य ऐसा कहतेहैं कि, उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमें तीन पादशेष रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्त ऋतुमें अर्द्धशेष रहनेपर सेवन करना चाहिये ।

पर्य्युषितजलगुणाः ।

दिवाशृतश्चयत्तोयंरात्रौतद्गुरुतांव्रजेत् । रात्रौशृतंदिवाचापिगुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौतप्तश्चशीतश्चनपेयंदिवसेजनैः । दिवातप्तश्चशीतश्चनपेयंनिशिसर्वदा ॥

अर्थ-दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है और रात्रिका औटाया जल दिनमें भारीपनको प्राप्त हो जाताहै । रात्रीमें औटाकर जो जल शीतल होजाय वह जल दिनमें नहीं पीना चाहिये और जो जल दिनमें औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमें नहीं पीना चाहिये ।

शृतशीतजलगुणाः ।

शृतशीतंत्रिदोषघ्नंयदन्तर्बाष्पशीतलम् ॥

अर्थ-जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमें शीतल हुआहो वह जल त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शृतशीतंनचस्निग्धंनरूक्षंचतदेवहि ।
नचश्लेष्मकरंतद्धिनचवायुंप्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंढा होगयाहो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखा है, न कफकारक और न वायुको कुपित करैहै ।

अन्यच्च ।

स्वच्छंसज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यात्तंवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैवमधुरं बालस्यसंजल्पवत् । पथ्यंदीपनपाचनं लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्माननवज्वरेपि शमनंश्लेष्मापहंश्वासजित् ॥ संशुद्धोवरवस्तिशुद्धिकरणंहृत्पार्श्वशूलापहं । गुल्मारोचकपीनसेनिगदितंशीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शृतशीतजल-स्वच्छ, सज्जनके चित्तकी समान निर्मल हलका, शीतल पुत्रके आलिंगनकी समान मधुर, पथ्य, दीपन, पाचक, लघुतर तथा श्वासयुक्त, खांसी, हिचकी, अफारा, नवीन ज्वर, कफ और श्वासको दूर करे है । शुद्ध, वस्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर करेहै । और गुल्म, अरुचि, और पीनसरोगमें हितकारी है ।

अपिच्च ।

पित्तोत्तरेपित्तरोगेपित्तासृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाछर्दिज्वरेदाहेतृष्णातीऽसारपीडिते ॥ धातुक्षयेविषार्त्तेचसन्निपाते विशेषतः । शस्तंविबन्धरोगेचश्टतशीतंजलंसदा ॥

अर्थ-शृतशीतजल-कफ, वात और पित्तरोगमें, रक्तपित्त और कफ पित्तमें, मूर्च्छा, वमन, ज्वर, दाह, तृषा, अतिसार, धातुक्षय, विषसे पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगमें और विशेष करके विवन्ध रोगमें हितकारी है ।

अपिच्च ।

द्विपाचितंजलंपीतंविषतुल्यंसदाचरेत् ।

अर्थ-औटाकर शीतल कियेहुये जलको दुवारा गरम नहीं करनाचाहिये। क्योंकि, गरम जलको दुवारा गरमकरके पानकरनेसे विषकी समान अपकार करता है ।

उष्णजलनिषेधः ।

मदात्ययेसदाहेचरक्तपित्तेतथोर्ध्वगे ।
रक्तमेहेविशेषेणनोष्णंतोयंप्रशस्यते ॥ (हा०सं०)

अर्थ-गरमजल-मदात्यय, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वरोग, और रक्तप्रमेह रोगमें अहितकारी है ।

शीतलजलनिषेधः ।

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे।आध्मानेस्तिमितेकोष्ठे सद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्ज्जयेत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-शीतलजल पसवाडेकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुल्लाब ले चुकाहो, नवीनज्वर, अरुचि संग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमें त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषयः ।

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखेप्रसेकेजठरेकुष्ठनेत्रामयेज्वरे॥व्रणेचमधुमेहेचपिबेत्पानीयमल्पकम् ।(भा.प्र.)

अर्थ-अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, व्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल पीना चाहिये ।

गुल्मार्शोग्रहणीक्षयेषुजठरेमंदानलेध्मानके शोफेपाण्डुगलग्रहेव्रणगदेमेहेचनेत्रामये । वातारुच्यतिसारकेकफयुतेकुष्ठे प्रतिश्यायके चोष्णंवारिसुशीतलंशृतहिमंस्वल्पंप्रदेयंजलम्॥

अर्थ-गुल्म, अर्श, संग्रहणी, क्षय, उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन, पाण्डु, गलग्रह, व्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ और प्रतिश्याय रोगमें उष्ण,शीतल अथवा शृतशीत जल अल्प पीना चाहिये

जलपानविधिः ।

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्चसएवदोषः ।
तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥

अर्थ-बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नहीं होता और बिलकुल जल न पीनेसेभी अन्न नहीं पचताहै, इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढानेके लिये वारंवार ठहर २ कर अल्प जल पीवै ।

अजीर्णेभेषजंवारिजीर्णेवारिबलप्रदम् ।
भोजनेचामृतंवारिरात्रौवारिविषप्रदम् ॥

अर्थ-अजीर्ण अवस्थामें जल औषधीकी समानहै अर्थात् औषधीकी तुल्य गुण करेहै । जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेमें जल बलको देनेवाला है। भोजनमें जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमें जल विषके सदृश दोषजनक है ।

अन्यच्च ।

पिबेद्घटसहस्राणियावन्नास्तमितोरविः ।
अस्तंगतेदिवानाथेबिन्दुरेकोघटायते ॥

अर्थ-जबतक सूर्य्य अस्त नहीं होय तबतक चाहे हजारों घडे जल पियें किन्तु जब सूर्य्य अस्त होजाय तब एक बिन्दुभी जल नहीं पीना चाहिये अर्थात् एक बिन्दु जलभी घटकी समान हो जाता है ।

ग्रीष्मेशरदिपातव्यंस्वेच्छयासलिलंनरैः ।
अन्यदास्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत् ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद्ऋतुमें जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओंमें वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये ।

आदौजलंवह्निविनाशकारिपश्चात्तदंतेकफबृंहणंच ।
मध्येतुपीतंसमतासुखंचतस्याभियोगोभिमतःसकृच्च ॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामें जल पीनेसे मंदाग्नि होतीहै, भोजनके अंतमें जल पीनेसे कफ बढताहै और भोजनके मध्यमें जल पीनेसे जठराग्निमबल होतीहै ।

भुक्तान्तःपरतःशस्तंपीतंवारिगुणात्मकम् । अध्वश्रान्तेक्षुधाक्रान्तेशोषक्रोधातुरेषुच ॥विषमासनोपविष्टेचपीतंवारिरुजाकरम् । तस्मात्प्रसन्नेमनसिपानीयंमन्दमाचरेत् ॥ आदौपीत्वादहत्यग्निंमध्येपीत्वारसायनम् । तदन्तेचजलंपीत्वातज्जलंदुर्जरंभवेत् ॥ भोजनादौजलंपीत्वाचाग्निसादःकृशाङ्गता । अन्तेकरोतिस्थूलत्वमूर्ध्वमामाशयात्कफम् ॥

(हा०सं०)

अर्थ-भोजनके मध्यमें पीया हुवा पानी गुणकारक है । मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनपें बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है । इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे । भोजनकी आदिमें पियाहुवा पानी मंदाग्निको करता है, भोजनके मध्यमें पियाहुवा पानी रसायन है और भोजनके अन्तमें पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है । भोजनकी आदिमें जल पीनेसे मंदाग्नि और शरीरमें कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमें पानी पीनेसे-स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होता है ।

पानीयंपानीयंशरदिवसन्तेचपानीयम् ।
नादेयंनादेयंशरदिवसन्तेचनादेयम् ॥

अर्थ-शरद् और वसंन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद्ु और वसन्त ऋतुमें नहीं पीना चाहिये । कारण यह है कि, उक्त समयमें जल दूषित होकर दोषोंको दूषित करे है ।

जलपानावश्यकता ।

पानीयंप्राणिनांप्राणास्तदायत्तंहिजीवनम् । तस्मात्सर्व्वास्ववस्थासुकैश्चिद्वावारिवार्यते ॥ अन्नेनापिविनाजन्तुःप्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावेपिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते॥तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति ।तस्मात्प्राणस्यरक्षार्थंवारिदेयंपिपासवे ॥

अर्थ-जल जीवोंका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है, अतएव मनुष्योंको किसी अवस्थामें भी जल त्याग नहीं करना चाहिये। अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्य्यंत जीते रहते हैं, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेंही प्राणोंको त्यागदेतेहैं । तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होताहै और मोहसे प्राणोंका नाश होता है । अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये ।

प्रशस्तजलगुणाः ।

अगन्धमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम् ।
अच्छंलघुचहृद्यंचतोयंगुणवदुच्यते ॥

अर्थ-दुर्गंधहीन, अव्यक्तरस, शीतल, तृषानाशक, स्वच्छ, हलका और हृदयको हितकारी ऐसा जल उत्तम कहा है।

निन्दितजलम्।

पिच्छिलंकृमिलंक्लिन्नंपर्णशैवालकर्द्दमैः। विवर्णंविरसंसांद्रंदुर्गंधंनहितंजलम्॥ कलुषाच्छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः। सुदुर्दर्शमसंस्पृष्टंसौरचान्द्रमसांशुभिः॥ अनार्त्तवंवार्षिकन्तुप्रथमंतच्चभूमिगम्। व्यापन्नंपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपनम्॥तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानोदरज्वरान्। कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दिकण्डूगण्डादिकांस्तथा॥

अर्थ-पिच्छिल, कृमियुक्त, पत्ते, काई और कीचसे बिगडाहुवा, बुरेरंगका, बुरेस्वादका, गाढा, दुर्गंधवाला, कलुषतायुक्त पुरैनके पत्तोंसे, नीलीसे और तृणोंसे ढकाहुवा, बुरीभूमिका जिसका स्पर्श बुराहो, जिसपर सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणें न पडतींहों, विना समयका, जो वर्षकर प्रथमही भूमिमें भराहो और बिगडाहुवा ऐसा जल कभीभी काममें नहीं लेना चाहिये। यह जल अहितकारी और सर्वदोषोंको कुपित करैहै। इस जलमें स्नान और पान करनेसे तृषा, आध्मान, उदररोग, ज्वर, खाँसी मंदाग्नि, अभिष्यन्द, कण्डू और गलगण्डादि रोग उत्पन्न होतेहैं।

दुष्टजलनिर्दोषीकरणम्।

निन्दितंचापिपानीयंक्वथितंसूर्य्यतापितम्। ताम्रंसुवर्णरजतंपाषाणंसिकतांमृदम्॥ भृशंसन्ताप्यनिर्व्वाप्यसप्तधासाधितंतथा। कर्पूरजातीपुन्नागपाटलादिसुवासितम्॥शुचिसांद्रपटस्रावित्क्षुद्रजन्तुविवर्जितम्। स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैः शुद्धंस्याद्दोषवर्ज्जितम्॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः। गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादंबुप्रसाधनम्॥

अर्थ-दुष्टजलके शोधनकी विधि-प्रथम दुष्टजलको खूब औटावे, फिर धूपमें धर देवे, पीछे सुवर्ण, रजत, लोह, पत्थर और वालूको गरम करके सातवार उस जलमें बुझावे फिर उत्तम मिट्टीके कोरे पात्रमें भरकर उसमें

कपूर, चमेली, पुन्नाग और पाटलादिके फूलोंसे तथा खस आदि सुगंधित वस्तुओंसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमे छानलेवे । जिससे कि, उसमें छोटे २ जन्तु न रहें तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुवा जल निर्दोष होजाता है । पर्णमूल, कमलकी गांठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और वस्त्रादिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणाः ।

सुवासितंजलंपुष्पैःपूतंशुक्लेनवाससा ।
नवेमृद्भाजनेन्यस्तंमाङ्गल्यंरुचिकृत्परम् ॥

अर्थ-सुगंधित्त पुष्पादिकोंसे सुवासित कियाहुवा श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा और नवीन मृत्तिकापात्रमें रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचिकारक है ।

पीतजलपाकविधिः ।

आमंजलंजीर्य्यतियामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलंच ।
तदर्द्धमात्रेणशृतंकदुष्णंपयःप्रपाकेविधिरेषउक्तः ॥

अर्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमें पचताहै, औटाकर शीतल किया जल एक पहरमें पचता है और गरम जल १॥ डेढ घंटेमें पचता है इस प्रकार जलपाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वारिवर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंपीयूषंबालजीवनम् ॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, दोहज, अवदोह, दोहापनय)

सं०	दुग्ध ।	तै०	पालु ।
हिं०	दूध ।	इं०	मिल्क । Milk
बं०	दुध ।	लै०	लॅक्टस । Lactus
म०	दूध ।	फा०	शीरे ।
गु०	दुध ।	अ०	लवनुल ।
क०	हालु ।		

दुग्धगुणाः ।

दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम् । सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्व्वशरीरिणाम् ॥ जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजीकरंपरम् । वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम् । विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम् । जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच ॥ ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहतृषिहृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारेचयोनिरोगश्रमक्लमे । गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम् ॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये । तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानियानिभुङ्क्तेहि मानवः । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दूध-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्य्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोंकी आत्मा, जीवन, बृंहण, बलकारक, मेध्य, वाजीकरण, अवस्थास्थापक, आयुष्यकारक, संधिकर्त्ता और रसायन है । ओजके बढानेमें विरेचन, वमन और वस्तिको समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्त, गुल्मरोग, वस्तिरोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम, क्लम और गर्भस्रावमें निरन्तर हितकारी है । जो बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण, भूँखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये हैं उनको दूध सदैव अतिशय हितकारी है । मनुष्य जो दाहजनक अन्न और पानोंको सेवन करते हैं उनके दाहको शान्तिकरनेके लिये भोजनके अन्तमें दूध अवश्य पीना चाहिये ।

अन्यच्च ।

क्षीरंस्वादुरसंस्निग्धमौजस्यंधातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहरंवृष्यंश्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम् ।
तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम् ॥ (वै०)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, औजस्य, और धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है। दूध-जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमें अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणज्वरमें पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम्।
क्षीरादिकगुणदोषौवक्ष्येनुक्रमतोयथायोग्यम् ॥

अर्थ-गाय, भैंस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूं।

गोदुग्धगुणाः।

धेनोःपयःस्यान्मधुरंसुशीतंरसायनंस्निग्धमलंगुरुस्यात्।
भ्रमश्रमघ्नंविषहृत्सरंचकफावहंशुक्रकरंहिवर्ण्यम् ॥

अर्थ-गायका दूध-मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुंदर करेहै।

अन्यच्च।

गव्यंक्षीरंपथ्यमत्यंतरुच्यंस्वादुस्निग्धंपित्तवातामयघ्नम्।
कांतिंप्रज्ञांबुद्धिमेधाङ्गपुष्टिंधत्तेस्पष्टंवीर्य्यवृद्धिंविधत्ते ॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गमें पुष्टि और वीर्य्यको वढावे है।

अन्यच्च।

गोक्षीरंजीवनंबल्यंरक्तपित्तानिलापहम्।
आयुष्यंपुंस्त्वकृत्पथ्यंमेध्यंवृष्यंरसायनम् ॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, वलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है।

अपिच।

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः। शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरंगुरु। जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनांसदा॥ (भा.प्र.)

अर्थ—गायका दूध—विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तपित्तनाशक, दोष, धातु, मल, स्रोत और किञ्चित् क्लेदकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जरा तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है।

वर्णविशेषे गुणविशेषाः।

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धंवातहारिगुणाधिकम्।
पीतायाहरतेपित्तं तथावातहरंभवेत् ॥
श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत् ॥

अर्थ—कालीगायका दूध—वातनाशक और अधिक गुणवाला है। पीली गायका दूध—पित्तनाशक और वातविनाशक है। सफेद गायका दूध—कफकारक और भारी है। लाल और चितकबरी गायका दूध—वातनाशक है।

विवत्साबालवत्सायाःपयोदोषलमीरितम्।

अर्थ—जिन गायोंका वछडा नहीं है अथवा जिनका छोटा वछडा है उनका दूध दोषकारक है।

वकेनीगोदुग्धगुणाः।

बष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः।

अर्थ—वाखरी गायका दूध—त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक, और वलवर्द्धक है।

देशविशेषे गुणविशेषाः।

जाङ्गलानूपशैलेषुचरन्तीनांयथोत्तरम्।
पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥

अर्थ—जो गाय जांगल, अनूप और पर्वतोंमें चरती हैं उनका दूध यथाक्रमसे भारी जानना। अर्थात् जांगल देशकी चरनेवालियोंसे अनूप देशकी-गायोंका, और अनूप देशकी चरनेवालियोंसे पर्वतोंमें चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और जैसा यह आहार करती हैं वैसेही आहारके अनुसार घृत निकलता है।

आहारविशेषे गुणविशेषाः।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम्।
तत्तुवर्ण्यपरंवृष्यंसुस्थानांगुणदायकम् ॥
पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम्। (भा०प्र०)

अर्थ-जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दूध-भारी कफका-रक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुण-दायक है । जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और विनोले खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारक है ।

अवस्थाविशेषगुणाः ।

तरुणीनांगवांदुग्धंमधुरंचरसायनम् । त्रिदोषशमनंचैववृद्धायादुर्बलंमतम् ॥ सगर्भायाःसमुद्दिष्टंत्रिमासोर्ध्वंचपित्तलम् । क्षारंचमधुरंचैवमतंवैशोषकारणम् ॥ प्रथमंचप्रसूतायानिःसारंगुणहीनकम् । नूत्नप्रसूतगोर्दुग्धंरूक्षंदाहकरं मतम् ॥ रक्तदोषस्यजनकंपित्तलंचमतंबुधैः । चिरप्रसूतादुग्धंतुमधुरंदाहकंपटु ॥ (निघण्टुरत्नाकरे.)

अर्थ-तरुणी गायका दूध-मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक है । वृद्ध-गायका दूध-दुर्वल है । जिसगायको ग्यावन हुवे तीन महीने वीतगये हों उस गायका दूध-पित्तकारक, खारी, मधुर और शोषकारक है । जो गाय पहिलीवार व्याई है उसका दूध-सारहीन और गुणोंमें हीन है । जो गाय नवीन व्याई है उसका दूध-रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनेवाला और पित्तकारकहै । जिस गायको व्याये हुवे वहुत दिन वीत गये हैं उसका दूध-मधुर, दाहकारक और निमकीन है ।

अन्यच्च गोदुग्धानांप्रशस्ताप्रशस्तभेदाः ।

शस्तंवत्सैकवर्णायाधवलीकृष्णयोरपि ।
इक्ष्वादामाषपर्णाद्याऊर्ध्वशृङ्गीचयाभवेत् ॥
तासांगवांहितंक्षीरंशृतंवाशृतमेववा ॥

अर्थ-जिन गायोंका रंग वछडेके रंगसे मिलता है उन गायोंका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशंसायोग्य है । जो गाय ईख और मषवन आदिको खाती हैं और जिन गायोंके सींग ऊपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक्व अथवा अपक्व हितकारी है ।

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ।

गव्यंप्रत्युषसिक्षीरंगुरुविष्टम्भिदुर्जरम् ।

तस्मादभ्युदितेसूर्य्येयामंयामार्द्धमेववा ॥
समुत्ताय्यंततोग्राह्यंतत्पथ्यंदीपनंलघु ॥ (राजवल्लभ.)

अर्थ–गायका दूध प्रातःकालमें–भारी, विष्टम्भकारी और दुर्जर होता है। अतएव, सूर्य्यके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत होजानेपर गायका दूध ग्रहण करना चाहिये। इसप्रकार ग्रहण करनेसे वह दूध–पथ्य, दीपन और हलका है।

महिषीदुग्धगुणाः।

स्निग्धंमरुच्छीतकरंचतन्द्रानिद्राकरंवृष्यतमंश्रमघ्नम् ।
बलप्रदंपुष्टिकरंकफस्यसंजीवनंमाहिषमुच्यतेपयः ॥ (हा०सं०)

अर्थ–भैंसका दूध–स्निग्ध, वातकारक, शीतजनक, तन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, श्रमनाशक, बलकारक, पुष्टिकारक और कफको उत्पन्न करैहै।

अन्यच्च।

माहिषंबवलर्णाग्निनिद्राशुक्रकफप्रदम् । तीक्ष्णाग्निशमनं
स्वादुरसेपाकेचपुष्टिदम् ॥ व्यायामश्रान्तदेहस्यश्रमघ्नम-
निलापहम् । निष्कामस्यातिवृद्धस्यस्त्रीषुकामप्रदायकम् ॥
बलेनतरुणस्यापिविशेषात्कामदायकम् । (सुषेण.)

अर्थ–भैंसका दूध–बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण अग्निकी शांति करनेवाला, रस और पाकमें मधुर पुष्टिकारक, तथा जिनका देह कसरत करनेसे थकगया है उनके श्रमको दूर करे है, श्रमनाशक, वातविनाशक और निष्काम, वृद्ध, स्त्री और तरुणादिकके काम उपजानेवाला है।

अन्यच्च।

माहिषंमधुरंगव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु ।
निद्राकरमभिष्यन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम् ॥ (भावमिश्र.)

अर्थ–भैंसका दूध–गायके दूधकी अपेक्षा मधुर है, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यान्दि, क्षुधाको अधिक करनेवाला और शीतल है।

छागीदुग्धगुणाः ।

छागंकषायंमधुरञ्चशीतंग्राहिलघुपित्तक्षयापहारि ।
कासज्वराणांरुधिरातिसारेहितंपयश्छागलजंत्रिदोषजित् (हा.)

अर्थ–बकरीका दूध–कषेला, मधुर, शीतल, मलरोधक, हलका तथा पित्त, क्षय, खांसी, ज्वर और रक्तातिसारमें हितकारी तथा त्रिदोषनाशक है।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरंपयः ॥
दीपनंलघुसंग्राहिश्वासकासास्रपित्तनुत् । (सुश्रुत)

अर्थ–बकरियोंकी छोटी देह होतीहै और चरपरी और कडवी वनस्पतियोंको चरतीहैं। जल बहुत कम पीतीहैं और दिनभर जंगलमें विचरती फिरतीहैं इसीसे बकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हलका, मलरोधक तथा श्वास, खांसी और रक्तपित्तको दूर करैहै।

मेषीदुग्धगुणाः ।

आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णंचाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरे । (भा०प्र०)

अर्थ–भेडका दूध–निमकीन, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम, पथरीको दूर करनेवाला, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, वृष्य तथा शुक्र, पित्त और कफकारक है। भारी तथा वातकी खांसी और केवल वातरोगमें हितकारी है।

अन्यच्च ।

औरभ्रंमधुरंरूक्षमुष्णंवातकफापहम् ।
नशस्तंरक्तपित्तीनांवातिकानांहितंभवेत् ॥

अर्थ–भेडका दूध–मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक, रक्तपित्तरोगवालोंको हितकारी नहीं है। केवल वातरोगवालोंको हितकारी है।

मृगीदुग्धगुणाः ।

मृगीनांजांगलस्थानामजाक्षीरगुणंपयः । (भा०प्र०)

अर्थ–जंगलदेशकी मृगीका दूध–बकरीके दूधकी समान गुणवाला है।

अश्वीदुग्धगुणाः ।

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यंशोषानिलापहम् ।
अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमैकशफंतथा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-घोडीका दूध-रूखा, गरम, बलकारक, शोषनाशक, वातविनाशक, अम्ल, खारी, हलका, स्वादिष्ठ है । इसी प्रकार और जितने एकखुरवाले पशु हैं उन सबका दूध घोडीके दूधकी समान जानना ।

उष्ट्रीदुग्धगुणाः ।

रूक्षंतथोष्णंलवणंकफस्यनिवारणंवातविकारहारि ।
लघुप्रशस्तंकटुकंकृमीणांशोफार्शसामौष्ट्रपयोऽनुकूलम् ।(हा.सं.)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-रूखा, गरम, नमकीन, कफनिवारक, वातहारक, हलका, अच्छा, चरपरा तथा कृमि, सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणं दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-हलका, स्वादिष्ठ, निमकीन, दीपन, सारक तथा कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूजन और उदररोगको दूर करे है ।

हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंचक्षुष्यंस्थिरताकरम् ।
स्निग्धंचमधुरंवृष्यंकषायानुरसंगुरु ॥

अर्थ-हथिनीका दूध-पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी, स्थिरताकारक, स्निग्ध, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किंचित् कषेला और भारी है ।

गर्दभीदुग्धगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंदुग्धंमधुरंबलकारकम् । रूक्षंचाम्लंदीपनं चबुद्धिमांद्यकरंमतम् ॥ पथ्यंरुचिप्रदंक्षारंकफवातविनाशनम् । बालरोगंचकासंचश्वासंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-गधीका दूध-मधुर, बलकारक, रूखा, अम्ल, दीपन, बुद्धिको मन्द करनेवाला, पथ्य, रुचिकारक, खारी, कफवातविनाशक तथा बालरोग, खाँसी और श्वासको हरनेवाला है ।

स्त्रीदुग्धगुणाः ।

सञ्जीवनंबृंहणमेवसात्म्यंसन्तर्पणंनेत्ररुजापहंच ।
पित्तस्यरक्तस्यचनाशनंचनारीपयःस्नेहनमेवशस्तम् ॥

अर्थ—स्त्रीका दूध—संजीवन, पुष्टिकारक, पथ्य, सात्म्य, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है।

अन्यच्च ।

प्रोक्तंतुमानुषीदुग्धंमधुरंशीतलंलघु । चक्षुष्यंतुवरंपथ्यंदीपनंपाचकंमतम्॥धातुवृद्धिकरंरुच्यंजीवनंस्नेहनंतथा । रक्तपित्तेचनस्यार्थंनेत्रशूलेक्षिपूरणे॥ उत्तमंनेत्ररोगघ्नमभिघातविनाशकम्।वातंपित्तंनाशयतीत्येवमुक्तंचिकित्सकैः ॥(नि०र०)

अर्थ—स्त्रीका दूध—मधुर, शीतल, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है। तथा रक्तपित्तपर इसका नास देना और नेत्रके फूलेपर इसको आंखमें भरना उत्तम है; नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका नाश करे है।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधिः ।

अल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशनेलघु। पिण्याकाम्लाशिनीनांतुगुर्वभिष्यंदिशीतलम् ॥ क्षीणानांदुर्बलानाञ्चतथाजीर्णज्वरार्दिते। दीप्ताग्निमानतन्द्राणांश्रमशोषविकारिणाम् ॥ व्यवायिनामल्परेतःश्वासिनांविषमाग्निनाम् । तथाचराजयक्ष्माणांक्षीरपानंविधीयते॥नशस्तंलवणैर्युक्तंक्षीरंचाम्लेनवापुनः।करोतिकुष्ठंत्वग्दोषंतस्मान्नैवहितंमतम् ॥
(हा०सं०)

अर्थ—जो मनुष्य—अल्पजल पीते हैं, कसरत करते हैं तथा चरपरे और कडवे पदार्थ खाते हैं उनके लिये दूध हलका है । और जो मनुष्य तिलोंकी पिट्टी खाते हैं और अम्लरसका सेवन करते हैं उनके लिये दूध भारी, अभिष्यन्दि और शीतल है। क्षीण, दुर्बल, जीर्णज्वरसे पीडित, जिनकी जठराग्नि दीपन है, तन्द्राहीन, श्रमवाले, शोषयुक्त, मैथुन करनेवाले

क्षीणवीर्य्यवाले, श्वासयुक्त, विषम, अग्नियुक्त और राजयक्ष्मारोगवाले मनुष्योंको दूधका सेवन करना चाहिये। लवणयुक्त अथवा अम्लद्रव्ययुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है। यह कोढ और त्वचाके रोगोंको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है।

आमंक्षीरमभिष्यन्दिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम्।
ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतद्गव्यंमाहिषवर्ज्जितम्॥
नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुशृतंहितम्॥

अर्थ-गाय और भैंसके दूधको छोडकर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफकारी और अपथ्य होतेहैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पक्का नहीं होता।

धारोष्णादिदुग्धगुणाः।

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम्। दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत्॥ धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम्। शृतोष्णमाविकंपथ्यंशृतशीतमजापयः॥ शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतशीतंतुपित्तनुत्। अर्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः॥जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा। तथातथागुरुस्निग्धंवृष्यंबलविवर्द्धनम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धारोष्ण (दुहनेके समय जो उष्ण होता हैं)-गायका दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृतकी समान दीपन और त्रिदोषनाशक है। जो गायके दूधकी धार शीतल होगई हो तो त्यागने योग्य है। गायका दूध-धारोष्ण प्रशंसायोग्य है। भैंसका दूध-धाराशीत उत्तम होता है। भेडका दूध गरमागरम हितजनक है और बकरीका दूध ओटा कर शीतल किया हुवा हितकारी होता है। शृतोष्ण अर्थात् औटाकर गरम किये दूध कफवातनाशक और औटाकर शीतल किये हुए दूध पित्तनाशक होते हैं। आधा पानी मिलाकर शेष बचा हुआ दूध कच्चे दूधकी अपेक्षा हलका है। जलसे रहित जैसे २ दूध बहुत औटता है वैसे वैसेही अधिक भारी, स्निग्ध, शुक्रजनक और बलवर्द्धक होता है।

प्रभातादिभवदुग्धगुणाः।

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा। प्राभातिकंत-

दाप्रायोप्रादोषाद्गुरुशीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताद्व्याया-
मानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोषंलघुवातकफापहम् ॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातः-कालका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी और शीतल होता है। दिनमें धूपके लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसे सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है।

समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्नकालेपयो मध्याह्नेतु बला-
वहंकफहरं पित्तापहंदीपनम् । बालेवृद्धिकरं क्षयेक्षयकरंवृ-
द्धेषुरेतोवहं रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरंसदासेव्यते ॥
वदन्तिपेयंनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ।
भवत्यजीर्णेनशयीतशर्वरींक्षीरस्यपानस्यनशेषमुत्सृजेत्॥
दीप्तानलेकृशेपुंसिबालेवृद्धेपयःप्रियेमतंहिततमंदुग्धंसद्यः
शुक्रकरंपरम् ॥ भुक्तायेबहुतीव्रचंडविदलायेचाम्लतिक्ता-
रसारूक्षाःक्षारविदाहशोषककरायेचातितापप्रदाः । काषा-
याःकटुरूक्षदुर्जरतराःसंसेव्यमानाहठात्तत्सर्वंबलकृत्करो-
तितरसादुग्धंनिशासेवितम् ॥

अर्थ-पूर्वाह्नकाल (प्रथम प्रहर) में पिया हुआ दूध-वीर्य्यवढानेवाला, पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है। मध्याह्नकालमें पियाहुवा दूध-बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकोंको वढाने-वाला, क्षई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्य्यको देनेवाला है। और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोषोंकी शान्ति करता है, पथ्यहै, इसकारण-दूध नित्य सेवन करना चाहिये। कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, रातमें केवल दूधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिये, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होजाताहै और निद्रा नहीं आतीहै, तथा पीत दूधको बाकी न छोडे। जिनकी जठराग्नि दीप्तहै और जिनका शरीर कृशहै, बालक, वृद्ध और जिनको दूध प्याराहै

उनके लिये दूध अत्यन्त हितकारीहै और तत्काल शुक्रको उत्पन्न करेहै। जो मनुष्य अत्यन्त तीव्र तथा अनेक दोषोंको कुपित करनेवाले विंदलोंको खातेहैं और जो मनुष्य-अम्ल, कडवे, रूखे, खारी, दाहजनक, शोषकारक, तापजनक, कषेले, चरपरे, रूखे और दुर्जर पदार्थोंका सेवन करतेहैं उन सबको रात्रिमें सेवन किया हुवा दूध बलको देनेवाला है।

निन्दितदुग्धम्।

विवर्णविरसंचाम्लंदुर्गंधंग्रन्थिलंपयः।वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठादिकृद्यतः॥ क्षीरंमुहूर्तत्रितयोषितंयदतप्तमेतद्विकृतिं प्रयाति। षष्ठेतुदोषंकुरुतेतदूर्ध्वंविषोपमंस्यादुषितंदशा-नाम्॥

अर्थ-जो दूध बुरे रंगका, बुरे स्वादवाला, खट्टा दुर्गंधित और गांठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये, तथा खटाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नहीं सेवन करना चाहिये। तीन मुहूर्त्तक रक्खा हुवा कच्चा दूध विकारको प्राप्त होजाता है। अर्थात् विगडजाताहै, छैः मुहूर्त्तक रक्खा हुवा दूध अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करताहै और दश मुहूर्त्तक रक्खा हुवा दूध विषकी समान होजाताहै।

अन्यच्च।

मुहूर्तपंचकादूर्ध्वंक्षीरंभजतिविक्रियाम्। तदेवद्विगुणेकाले विषवद्धन्तिमानवम्॥अक्कथितंदशघटिकाक्कथितंद्विगुणा-स्ताश्चपयःपथ्यम्। कोष्णंचस्वरसाढ्यंयावत्तावत्पयःप्रा-श्यम्॥ तस्माच्छृतंवाप्यशृतंपयस्तात्कालिकंपिबेत्॥

अर्थ-पांच मुहूर्त्तके पश्चात् विना औटाया हुवा दूध विकारको प्राप्त होजाताहै और वही दश मुहूर्त्तके बाद विषकी समान मनुष्यको मार देता है। कच्चा दूध दश घडीतक और औटा हुवा दूध बीस घडीतक पीनेयोग्य और पथ्य होताहै ऐसा मतान्तर है। मंदोष्ण और जबतक रसयुक्त होय तबतक दूध पीनेयोग्य होताहै, इसकारण औटा हुवा अथवा विना औटा हुवा तत्कालका दूध पीना चाहिये।

क्षीरसात्म्यासात्म्यम्।

जीर्णज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम्। तदेवतरुणेपीतं

विषवद्धन्तिमानवम् ॥ चतुर्थभागंसलिलंनिधाययत्नाद्य-
दावर्त्तितमुत्तमंतत् । सर्वामयघ्नंबलपुष्टिकारिवीर्यप्रदंक्षीर-
मतिप्रशस्तम् ॥ येषांनसात्म्यंक्षीरेणपीतंचाध्मानकारकम्।
तेषामर्द्धजलंदत्वानागरंपिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशे-
षंतत्पीत्वासुखमाप्नुयात् । गव्यंपूर्वाह्णकालेस्यादपराह्णेतु
माहिषम् ॥ क्षीरंसशर्करंपथ्यंयद्वासात्म्यंचसर्वदा।स्निग्धं
शीतंगुरुक्षीरंसर्वकालंनसेवयेत् ॥ दीप्ताग्निंकुरुतेमंदंमन्दा-
ग्निनष्टमेवच । नित्यंतीव्राग्निनांसेव्यंसुपक्वंमाहिषंपयः ॥
पुष्यन्तिधातवःसर्वेबलपुष्टिविवर्द्धनम् । खण्डेनसहितंदुग्धं
कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमला-
पहम् । सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंमतम् ॥

अर्थ–दूध–जीर्णज्वर, कफ और निर्वलतामे अमृतकी समान है और वही दूध नये ज्वरमे पिया हुवा विषकी समान मनुष्यको मार देवेहै । दूधमे चौथा भाग पानी मिलाकर औटावे जव वह पानी जल जाय तव सेवन करे, वह दूध श्रेष्ठ, सर्वरोगनाशक, वलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्य्यजनक और अत्यन्त प्रशंसा-योग्य है। जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेमे अफारा हो जाताहै उनको चाहिये कि दूधमें आधा भाग पानी डालकर, एक तोला सोंठ और एक तोला पीपल डाललेवे फिर औटावे, जव पानी जल जाय तव उतारकर खूब लोट पोट करे। तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाताहै और सुख उत्पन्न होताहै । गायका दूध पूर्वाह्णकालमें और भैंसका दूध अपराह्णकालमें पीना चाहिये । शर्करायुक्त और गरम कियाहुआ दूध सर्व कालमें श्रेष्ठ है । स्निग्ध, शीतल, गाढा ऐसा दूध सर्व कालमें सेवन नहीं करना चाहिये । पकाहुआ भैंसका दूध–दीप्ताग्निको मंद करेहै और मन्दाग्निको नष्ट करे है । इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मंदाग्निवाले मनुष्यको कभी भी नहीं पीना चाहिये, सर्व धातुओंको पुष्टि करे और वल तथा पुष्टिवर्द्धक है, खांडयुक्त दूध–कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके साथ दूध–शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है, गुडके साथ दूध–मूत्रकृच्छ्रनाशक और पित्तश्लेष्मकारक है ।

पर्य्युषितक्षीरगुणाः ।

क्षीरंपर्य्युषितंसर्व्वंगुरुविष्टम्भिदुर्ज्जरम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके बासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और देरमें पचते हैं।

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानिगुणाश्च ।

क्षीरंतत्कालसूतायाघनंपीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्यपक्वस्य पिण्डःप्रोक्तःकिलाटकः॥ अपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्पयः ।दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा ॥ द्रवभावेनसहितंतक्रपिण्डःसउच्यते । नष्टदुग्धंभवेन्नीरंमोरटंजय्यटोऽब्रवीत् ॥ पीयूषंचकिलाटश्चक्षीरशाकंतथैवच।तक्रपिण्ड इमे वृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः ॥ गुरवःश्लेष्मलाहृद्यावातपित्तविनाशनाः । दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः ॥

मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ।

लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः ॥

अर्थ-तुरतकी ब्याई हुई गाय भैंसादिकके गाढे दूधको पीयूष (खीस) कहते हैं। जो दूध, अग्निसे जलकर पिण्डी बँध जाय उसको किलाट (मावा, खोया) कहते हैं। विना औटायेही जो कच्चा दूध फट जाय उसको क्षीरशाक (फटा दूध) कहते हैं। जो दूध दही अथवा मठेके पडनेसे नष्ट होगयाहो फिर उस दही वा छाछसे फटे हुए दूधको झीने वस्त्रसे बाँधकर उसका पानी निकाल डाले जब उसका पिण्ड होजाय और जलका उसमें कुछ अंश न रहे तब उसको तक्रपिण्ड कहते हैं। फटे दूधके पानीको जय्यटदेवने मोरट कहाहै। पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड यह सब वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, भारी, कफकारी, हृदयको हितकारी और वातपित्तको दूर करे हैं। जिनकी जठराग्नि दीपन है जिनको निद्रा नहीं आती है और जिनको विद्रधिरोग है उन मनुष्योंको यह परमहितकारी है । चीनीके साथ मोरट (फटे दूध) के पानीको पीनेसे मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर दूर होताहै तथा लघु, बलकारक और रुचिकारक है।

क्षीरसन्तानिकागुणाः ।

सन्तानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तास्रदाहनुत् ।

तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रदा ॥

अर्थ-दूधकी मलाई-भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करै है ।

चण्डातक्षीरगुणाः ।

क्षीरंगव्यमथाजंवाकोष्णंदण्डाहतंपिबेत् ।
लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम् ॥

अर्थ-गाय तथा बकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुआ दूध हलका, वीर्य्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको नष्ट करै है ।

गोदुग्धादिभवफेनगुणाः ।

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनंत्रिदोषघ्नं रोचनंबलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघु । अतिसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गायके दूधके झाग अथवा बकरीके दूधके झाग-त्रिदोषनाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल तृप्तिकारक, हलके तथा अतीसार, मन्दाग्नि और जीर्णज्वरमे हितकारी हैं ।

पयसःकेवलस्यापिपदार्थाबलवृष्यदाः ।
हिताःसुगन्धिनःपुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदाः ॥ (नि०र०)

अर्थ-पेडे-बरफी, रबडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, हितकारी, सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दुग्धवर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ दधिवर्गः ।

दधिपयस्यंमंगल्यंविरलंचदधिद्रप्सम् ।

अर्थ-दधि, पयस्य, मंगल्य, विरल, दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिग्ध, तक्रजन्म, साम्लक)

संस्कृतभाषामें	दधि ।
हिंदीभाषामें	दही ।
वंगभाषामें	दइ ।
मराठीभाषामें	दहीं ।
गुजरातीभाषामें	दहि ।
कर्णाटकीभाषामें	मसरु ।
तैलिंगीभाषामें	पेरुगु ।
इंग्रेजीभाषामें	करड्लूडमिल्क । Curdled Milk.
फारसीभाषामें	दोग ।
अरबीभाषामें	जुगरात ।

साधारणदधिगुणाः ।

पाकेऽम्लमुष्णंदधिदीपनंचस्निग्धंकषायंसरसंगुरुस्यात् । संग्राहिपित्तास्रकफप्रदस्यान्मेदःप्रदेशोफकरंप्रसिद्धम् ॥

अर्थ-दही-पचनेमें खट्टा, गरम, दीपन, स्निग्ध, कषेला, भारी, मलरोधक, रक्तपित्तकारक, कफकारक, मेदजनक और सूजनको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

दध्यम्लंगुरुवातदोपशमनंसंग्राहिमूत्रावहं बल्यंशोफकफार्त्यरुच्यशमनंवह्नेश्चशान्तिप्रदम् । कासश्वाससपीनसेषुविषमेशीतज्वरेस्याद्धितं रक्तोद्रेककरंकरोतिसततंशुक्रस्यवृद्धिंपराम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-दही-अम्ल, भारी, वातके विकारको दूर करनेवाला, मलरोधक, मूत्रजनक, बलकारक, शोफनाशक, कफहारक, अरुचिनिवारक, अग्निको शान्ति करनेवाला तथा खाँसी, श्वास, पीनस, विषमज्वर और शीतज्वरको दूर करे है और रक्तपित्त तथा शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

दध्युष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु । पाकेऽम्लंग्राहिपित्तास्रशोफमेदःकफप्रदम् ॥ मूत्रकृच्छ्रेप्रतिश्यायेशीतकेविषमज्वरे । अतीसारेऽरुचौकाश्र्यैशस्यतेबलवर्द्धनम् ॥ (म०वि०)

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कुछेक कषेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, सूजन, मेद और कफको करे है। मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है।

अन्यच्च।

दधिस्वाद्वग्निदंहृद्यंस्नेहनंरोचनंगुरु।
पाकेऽम्लमुष्णंवातघ्नंमाङ्गल्यंबृंहणंपरम्॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दही-स्वादिष्ठ, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमें अम्ल, गरम, वातनाशक, मंगलकारक और पुष्टिकारक है।

दधिभेदाः।

आदौमंदंततःस्वादुस्वाद्वम्लंचततःपरम्।
अम्लंचतुर्थमत्यम्लंपंचमंदधिपञ्चधा॥

अर्थ-प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरान्त खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पांचप्रकारका होता है।

मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च।

मन्दंदुग्धवदव्यक्तंरसंकिञ्चिद्घनंभवेत्। मन्दंस्यात्सृष्टविण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत्॥ यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तंस्वादुरसंभवेत्। अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम्॥ स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दिवृष्यंमेदकफावहम्॥ वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम्॥ स्वाद्वम्लंसान्द्रमधुरंकषायानुरसंभवेत्। स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवज्जनैः॥ यत्तिरोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम्। अम्लन्तुदीपनंपथ्यंरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम्॥ तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत्। अत्यम्लंदीपनंरक्तपित्तपुष्टिकरंपरम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जो दूध कुछेक जमकर गाढा पडगयाहो और जिसमें मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उस दहीको मंद कहतेहैं।

मंद दही-मलमूत्रको करनेवाला तथा त्रिदोष और दाहको करे है। जो जमकर गाढा होगया हो और जिसमें स्वादुरस मालूम हो तथा अम्लरस प्रगट न हो उसको स्वादु दही जानना। स्वादु दही अत्यन्त अभिष्यन्दी, वीर्य्यवर्द्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचनेमें मधुर और रक्तपित्तको कुपित करेहै। जो दधि अम्ल और मधुर दोनों रसयुक्त हो सान्द्र तथा कुछेक कषेला हो उसको स्वाद्वम्ल दही कहते हैं। स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीकी समान जानने। जिस दहीकी मधुरता नाश होकर खट्टा होगया हो उस दहीको अम्लदही कहते हैं, अम्लदही-दीपन, रक्तपित्त और कफकारक है। जो दही अत्यन्त खट्टा हो, दांतोंको खट्टे करे, जिसके खानेसे रोमांच होआवे और कण्ठादिमें दाहको उत्पन्न करे उस दहीको अत्यम्लदधि कहते हैं। अत्यम्लदही-दीपन, रुधिरविकार, वात और पित्तको करे है।

मधुरंभक्षयेच्चैवचात्यम्लंवर्जयेत्सदा।
मधुरंदधिरोगघ्नमत्यम्लंरोगकारकम्॥

अर्थ-मधुर दधि खाना चाहिये और अत्यन्त खट्टा दही नहीं खाना चाहिये। कारण यह है कि, मधुर दही रोगनाशक और अत्यन्त खट्टा दही रोगकारक है।

गव्यदधिगुणाः।

दधिगव्यमतिपवित्रंशीतंस्निग्धंचदीपनंबलकृत्।
मधुरमरोचकहारिग्राहिचवातामयघ्नञ्च॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका दही-अत्यन्त पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बलकारक, मधुर, अरुचिको हरनेवाला, मलरोधक और वातरोगनाशक है।

अन्यच्च।

गव्यंदध्युत्तमंबल्यंपाकेस्वादुरुचिप्रदम्।
पवित्रंदीपनंस्निग्धंपुष्टिकृत्पवनापहम्॥
उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम्। (भावप्रकाश.)

अर्थ-गायका दही-उत्तम, बलकारक, पचनेमें स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातविनाशक है। सर्व दहियोंमें गायका दही-गुणोंमें सबसे अधिक है।

अरोचकेपीनसकासकृच्छ्रेशीतज्वरेतद्विषमज्वरेच।

दुर्नामरोगेग्रहणीगदेचगव्यंप्रशस्तंदधिसर्वदैव ॥

अर्थ–गायका दही–अरुचि, पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर विषम-ज्वर, बवासीर और संग्रहणीरोगमे हितकारी है ।

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् ।
स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वस्रदूषणम् ॥

अर्थ–भैंसका दही–स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करेहै ।

अन्यच्च ।

घनंमाहिषमुद्दिष्टंमधुरंरक्तदोषकृत् ।
कफशोफहरंस्वस्थंपित्तकृद्वातकोपनम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ–भैंसका दही–गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक, स्वस्थ, पित्तकारक और वातको कुपित करेहै ।

अपिच ।

महिष्यास्तुदधिप्रोक्तंरक्तपित्तप्रसादनम् । वृष्यंस्निग्धंचमधुरं शोधनंकफकारकम् ॥ गुर्वभिष्यंदिबल्यंस्याच्छुक्रलंचप्रकीर्त्तितम् । पित्तंवातंश्रमंचैवनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ–भैंसका दही–रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यंदी, बलकारक, शुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करे है ।

छागदधिगुणाः ।

दध्याजंकफपित्तनाशनकरंपातघ्नमुष्णंतथा दुर्नामश्वसनेचका-सिनिहितंचाग्नेश्चसंदीपनम् । वृष्यंबृंहणकान्तिदंबलकरंसर्वा-मयध्वंसनं आमार्शेष्वतिसारकेनिगदितंपथ्यंसदाप्राणिनाम् ॥

अर्थ–बकरीका दही–कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निप्रदीपक तथा बवासीर, श्वास, खाँसी, आम, अर्श और अतिसाररोगको दूर करेहै और सदैव मनुष्योंको पथ्य है ।

अन्यच्च ।

आजंदधिभवेचोष्णंक्षयवातविनाशनम् । दुर्नामश्वासकासे-

क्षुहितमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाकेमधुरंवृष्यंरक्तपित्तप्रसादन-म् । शस्तंप्राभातिकंप्रोक्तंवातपित्तनिबर्हणम् ॥ (अ०हा०)

अर्थ-बकरीका दही-गरम, क्षय, वातनाशक, बवासीर, श्वास और खाँसीमें हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्त-पित्तप्रसादन और प्रातःकालका बकरीका दही-श्रेष्ठ और वात-पित्त-निवारक है ।

अन्यच्च ।

दध्याजंकफवातघ्नंलघूष्णंनेत्रदोषजित् ।
दुर्नामश्वासकासघ्नंरुच्यंदीपनपाचनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बकरीका दही-कफवातनाशक, हलका, नेत्रविकारनाशक, बवासी-रको हरनेवाला, श्वासनाशक, कासघ्न, रुचिकारक, दीपन और पाचन है ।

आविकदधिगुणाः ।

कोपनंकफवातानांदुर्नाम्नाचाविकंदधि।दीपनीयन्तुचक्षुष्यंपा-ण्डुकृच्चापिवातुलम्॥ रूक्षमुष्णंकषायंस्यादत्यभिष्यन्दिदोष-लम्।रसेपाकेचमधुरंकषायंकुष्ठवर्द्धनम् ॥ (अ०हा०)

अर्थ-भेडका दही कफ, वात और बवासीरको कुपित करनेवाला, जठराग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, पाण्डुरोगको उत्पन्न करनेवाला, बादी, रूखा, गरम, कषेला, अत्यन्त अभिष्यन्दि, दोषजनक, रस, और पाकमें मधुर, कषाय और कुष्ठको बढानेवाला है ।

अन्यच्च ।

आविकंदधिसुस्निग्धंकफपित्तकरंगुरु ।
वातेचरक्तवातेचपथ्यंशोफव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका दही-स्निग्ध, कफपित्तकारक भारी, वात और रक्तवातमें पथ्य तथा सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

हस्तिनीदधिगुणाः ।

हस्तिनीदधिकषायलघूष्णंपक्तिशूलशमनंरुचिप्रदम् ।
दीप्तिदंखलुबलासगदघ्नंवीर्यवर्द्धनबलप्रदमुक्तम् ॥

अर्थ-हथिनीका दही-कषेला, हलका, गरम, पक्तिशूलनिवारक, रुचि-कारक, अग्निप्रदीपक, कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और बलदायक है ।

अन्यच्च।

हस्तिन्यादधिवीर्य्योष्णंकषायंकफवातनुत्।

अर्थ-हथिनीका दही-उष्णवीर्य्य, कसेला और कफ तथा वातनाशक है।

अश्वीदधिगुणाः।

अश्वीदधिस्यान्मधुरंकषायंकफार्तिमूर्च्छामयहारिरूक्षम्।
वाताल्पदंदीपनकारिनेत्रदोषापहंतत्कथितंपृथिव्याम्॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, कसेला, कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको दूर करनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

वाजिजंसमधुरंबलवर्णस्वेददाहमुपयातिगुरुत्वम्।
दीपनीयमतिदोषलंसदाचाक्षुषंदधिमरुत्प्रकोपिच॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीपक, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करेहै।

गर्दभीदधिगुणाः।

गर्दभीदधिरूक्षोष्णंलघुदीपनपाचनम्।
मधुराम्लरसंरुच्यंवातदोषविनाशनम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-गधीका दही-रूखा, गरम, हलका, दीपन, पाचन, मधुर, अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है।

उष्ट्रीदधिगुणाः।

वातार्शकुष्ठक्रिमिनाशनंचऔष्ट्रंविपाकेकटुतिक्तकंच।
सक्षारमम्लंक्रमिकोष्ठनाशनंबल्यश्चसन्तर्पणमाशुकारि॥

अर्थ-ऊंटनीका दही-वादीकी ववासीर, कोढ, कृमि और कोठेके रोगको दूर करे है। पाकमें, कटु, तिक्त, क्षार, अम्ल, बलकारक और तत्काल तृप्तिकारक है।

अन्यच्च।

विपाकेकटुसक्षारंगुरुभेद्यौष्ट्रिकंदधि।
वातमर्शांसिकुष्ठानिक्रमीन्हंत्युदरंपरम्॥ (हा०सं०)

अर्थ-ऊंटनीका दही-पचनेमें कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है।

मानुषीदधिगुणाः।

स्निग्धंविपाकेमधुरंबल्यंसन्तर्पणंहितम्।
चक्षुष्यंग्राहिदोषघ्नंदधिनार्य्यागुणोत्तमम्॥ (हा०सं०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पचनेमें मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणाः।

वार्षिकंपित्तकृद्वातशमनंकफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगेचरक्तपित्तेनशस्यते॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमें हितकारी नहा है।

शारदीयदधिगुणा।

शारदंदधिगुर्व्वम्लंरक्तपित्तविवर्द्धनम्।
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानांकरोतिविषमज्वरम्॥

अर्थ-शरदृऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करेहै।

हैमन्तिकदधिगुणाः।

गुरुस्निग्धंसुमधुरंकफकृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यंमेध्यंचहैमन्तंपुष्टिदंतुष्टिवृद्धिदम्॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक है।

शैशिरदधिगुणाः।

वृष्यंबलकरंपैत्तंश्रमस्यापहरंपरम्।
शैशिरंसघनंचाम्लंपिच्छिलंगुरुचैवच।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणाः।

वातलंमधुरंस्निग्धंकिञ्चिदम्लंकफात्मकम्।

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तंवसन्तेनप्रशश्यते ॥

अर्थ–वसन्तऋतुका दही–बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः।

लघुचाम्लंभवेद्ग्रीष्मेचात्युष्णंरक्तपित्तकृत् ।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधिप्रोक्तंनग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ–ग्रीष्मऋतुका दही–हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ।

पक्वदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धंगुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ–औटाये हुवे दूधका दही–रुचिकारक, स्निग्ध, गुणोंमें श्रेष्ठ, पित्त-वातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है ।

निःसारदधिगुणाः ।

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु ।
विष्टम्भिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥

अर्थ–जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार, दही–मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी, और संग्रहणीरोगको दूर करे है ।

गालितदधिगुणाः ।

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु ।
बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–छानाहुआ और निचोडाहुआ दही–स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

सितायुक्तदधिगुणाः ।

सितायुक्तंदधिप्रोक्तंपित्तदाहतृषाहरम् ।
रक्तदोषहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-चीनीयुक्त दही-पित्त, दाह, तृषा और रुधिरके विकारको दूर करे है।

गुडयुक्तदधिगुणाः।

गुडयुक्तंदधिप्रोक्तंतर्पणंधातुवर्द्धकम्।
गुरुवातहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-गुडमिश्रित दही-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वात विनाशक है।

दधिभक्षणनिषिद्धता।

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णमामलकैर्विना॥ (सु०सं०)

अर्थ-रात्रिमें दही नहीं खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री, मूंगकी दाल, मधु और आमलेके विना तथा उष्ण दही नहीं खाना चाहिये।

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुप्रायशोदधिगर्हितम्।
हेमन्तेशिशिरेचैववर्षासुदधिशस्यते॥ (सु०सं०)

शरद्, ग्रीष्म और वसन्तऋतुमें दही प्रायः अपकारी है और हेमन्त शिशिर तथा वर्षाऋतुमें दही हितकारी है।

अक्रमदधिभक्षणदोषाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयान्भ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलाश्चापिविधिंहित्वादधिप्रियः॥

अर्थ-विना नियमके दहीको खानेसे-ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, पाण्डु, भ्रम और कामलादिक अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

त्रिकट्वादियुक्तदधिगुणाः।

दधित्रिकटुकयुक्तंराजिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नंवह्नि-
संधुक्षणंच। तुहिनशिशिरकालेसेवितंचातिपथ्यं रचय-
तितनुदार्ढ्यंकान्तिमत्त्वंचनॄणाम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-दहीमें त्रिकुटेका चूर्ण, सेंधानोंन और राईका चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतुमें खानेसे कफको दूर करे, वातका नाश करे, अग्निको दीपन करे, अत्यन्त पथ्य तथा शरीरको दृढ करे और अङ्गमें कान्तिको उत्पन्न करेहै।

सरस्यमस्तुनश्च लक्षणानि गुणाश्च।

दध्नस्तूपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः।सलोकेसरइत्युक्तो दध्नोमण्डस्तुमस्त्विति॥सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः।साम्लोवस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः। मस्तुक्लमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत्। स्रोतोतिशोधनंह्लादिकफतृष्णानिलापहम्॥ अवृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसञ्चयम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दहीके ऊपरके स्नेहयुक्त गाढे भागको लोकमें सर (मलाई) कहते हैं और दहीके जलको मस्तु (तोड) कहते हैं। दहीकी मलाई-स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, वातविनाशक,जठराग्निको मंद करनेवाली, खट्टी, वस्तिरोगनाशक, पित्त और कफवर्द्धक है। दहीका जल-क्लमनाशक, बलकारक, भोजनमें रुचिको करनेवाला, शरीरके स्रोतोंको शोधनेवाला, आनन्दजनक कफनाशक, तृषानिवारक, वातविनाशक, अवृष्य, तृप्तिकरनेवाला और शीघ्रही मलके संचयको भेदनेवाला है।

दधिकूर्चिकलक्षणगुणाश्च।

अर्द्धोदकेपयस्युष्णेदध्यम्लंदधिकूर्चिका।
वातघ्नीग्राहिणीरूक्षादुर्जरादधिकूर्चिका॥ (रा०व०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाले फिर उसमें खट्टा दही मिलालेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं। दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, मलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है।

इति श्रीशालिग्राम-निघण्टुभूषणे दधिवर्गः समाप्तः॥ १४॥

अथ तक्रवर्गः।

तक्रंदण्डाहतंघोलंगोरसःकट्वरंद्रवः।
मथितंकङ्करंचाम्लंमलिनंभग्नसन्धिकम्॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्वर, द्रव, मथित, कङ्कर, अम्ल,

मलिन, भग्नसन्धिक (गोरसज, कालशेय, विलोडित, अरिष्ट, उदश्वित्, प्रमथित, अम्बर, कट्वर, घल, केवल, छच्छिका) ।

संस्कृतभाषामें	तक्र ।
हिन्दीभाषामें	छाछ मट्ठा ।
वंगभाषामें	घोल ।
मराठीभाषामें	ताक ।
गुजरातीभाषामें	छांस, घोलवु ।
कर्णाटकीभाषामें	मज्जिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चल्ला ।
इंग्रेजीभाषामें	१ बटरमिल्क २ व्हे । Butter Milk Weay
फ़ारसीभाषामें	मस्त, मठा ।
अरबीभाषामें	हमीज ।

तक्रभेदाः ।

तेषांनामानिभिन्नानिलक्षणानिसमानिच ।घोलन्तुमथितं-तक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच॥ससारंनिर्जलंघोलंमथितंत्वस-रोदकम् । तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम्॥ छच्छि-कासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुरवारिका ॥

अर्थ-घोल, मथित, तक्र, उदश्वित् और छच्छिका इन भेदोंसे तक्र पांच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मथा गया हो और पानी जिसमें न पडा हो उसको घोल कहते हैं और जिसमेंसे मलाई निकाल ली हो विनापानी डाले मथा गया हो, उसको मथित कहते हैं । जिसमें तीन भाग दहीहो और एक भाग पानी गेरकर मथा गयाहो, उसको तक्र (मट्ठा) कहते हैं । जिसमें आधा दही और आधा पानी पडाहो उसको उदश्वित् कहते हैं और जिसमें अँधाधुन्ध पानी पडा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाछ) कहते हैं ।

एतेषां गुणाः ।

वातपित्तहरंघोलंमथितंकफपित्तनुत् । तक्रंग्राहिकषायाम्लं स्वादुपाकंरसंलघु ॥ वीर्य्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाश-नम्।ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात्॥किंचित्स्वा-

द्रुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपनम्। अम्लोष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापिकफापहम्। नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धाःप्रभवन्तिरोगाः॥ यथासुराणाममृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः। उदश्वित्कफकृद्बल्यंश्रमघ्नंपरमंमतम्॥ छच्छिकाशीतला। लघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी। वातनुत्कफनुत्साऽनुदीपनीलवणान्विता॥(भा०प्र०)

अर्थ—तहाँ—घोल—वातपित्तनाशक है। मथित—कफपित्तनाशकहै। तक्र—मलरोधक, कसेला, खट्टा, पचनेमें स्वादु, रसमेंभी स्वादु, हलका, उष्णवीर्य्य, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनाशक और संग्रहणी अतीसारादि रोगोंमें पथ्य है। तक्र हलका होनेसे ग्राही, स्वादुपाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता। अम्ल, उष्ण, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक, कषाय, उष्ण, विकाशि, और रूक्ष होनेसे कफका नाश करे है। तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता, तक्रसे भस्म किये हुवे रोग फिर कभी नहीं होते। जैसे स्वर्गलोकमें देवताओंको अमृत है वैसेही मृत्युलोकमें प्राणियोको तक्र है। उदश्वित्—कफकारक, वलवर्द्धक और श्रमनाशक है। छच्छिका (छाछ)—शीतल, हलकी, पित्तनाशक, श्रमहारक, तृषानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक, कफहारक और अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च।

घोलंमारुतपित्तहारिमथितंवातापहंश्लेष्महृत्
पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकंतक्रंत्रिदोषापहम्।
मन्दाग्नावरुचौतथैवनितरामन्येषुरोगेष्वपि
श्रेष्ठंतक्रमिदंवदन्तिमुनयस्तेनोत्तमंप्राणिनाम्॥

अर्थ—घोल—वातपित्तनाशक, मथित—वात और कफनाशक है। उदश्वित्—पित्त और कफनाशक है। और तक्र—त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि, अरुचि और अन्यरोगोंमें भी हितकारी है।

तक्रंत्रिदोषशमनंस्वादुपाकरसंलघु।

वीर्य्योष्णंमूत्रकृच्छ्रघ्नंकषायमम्लमग्निदम् ॥

अर्थ—तक्र—त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित, हलका, उष्णवीर्य्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक, कसेला, खट्टा और जठराग्निजनक है।

अम्लेनवातंमधुरेणपित्तंकफंकषायेणनिहन्तिसद्यः ।

अर्थ—तक्र—अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कसेलेपनसे कफका नाश करे है। इस प्रकार तक्र त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च ।

तक्रंस्वादुकषायमम्लकरसंभक्ष्यंलघूष्णंहितं
गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनंछर्द्दिप्रसेकापहम् ।
तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छ्लेष्मानिलघ्नंपरं
सेव्यंमूत्रगदापहंज्वरहरंस्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ—तक्र—स्वादिष्ठ, कसेला, खट्टा, भक्षणेयोग्य, हलका, गरम, हितजनक तथा गुल्म, बवासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, वात, मूत्ररोग, ज्वर और स्नेहसे उत्पन्न हुई पीडाको दूर करे है।

अन्यच्च ।

आमातिसारेचविषूचिकायांवातज्वरेपाण्डुषुकामलायाम्।
प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यंपिबेत्तक्रमरोचकेच ॥

अर्थ—तक्र—आमातिसार, विषूचिका, वातज्वर, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग, वातशूल और अरुचिमें सदैव पीना चाहिये।

तथाचत्रिविधंतक्रंकथ्यतेशृणुपुत्रक । यथायोगेनतत्सम्यक्छस्यतेयेषुरोगिषु ॥ समुद्धृतघृतंतक्रमर्द्धोद्धृतघृतञ्चयत् । अनुद्धृतघृतञ्चान्यदित्येतत्त्रिविधंमतम् ॥पूर्वंलघुचपथ्यंचत्रिदोषशमनंपरम् । ततःपरंवृष्यतरंक्रमेणसमुदीरितम् ॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुविद्यात्कफात्मकम् । बलप्रदन्तुक्षीणानामामशोफातिसारकृत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ—आत्रेयजी कहनेलगे कि, तक्र तीन प्रकारका है सो मैं कहताहूं। हे पुत्र! सुन, वह तक्र जिन रोगोंमें हितकारी है सो दिखलाताहूं । घृतहीन,

अल्पघृतयुक्त और घृतसंयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है । तहां, घृतहीन अर्थात् जिस तक्रमेंसे घी निकाललियाहो ऐसा तक्र हलका, पथ्य और त्रिदोषनाशक है । अल्पघृतसयुक्त अर्थात् जिसमेसे थोडा घी निकाललियाहो ऐसा तक्र वीर्य्यवर्द्धक और घृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेंसे घी नहीं निकालाहो ऐसा तक्र-गाढा, भारी, कफकारक, क्षीणमनुष्योंको बल देनेवाला तथा आम, सूजन और अतिसारको दूर करे है ।

तत्पुनर्मधुरंश्लेष्मप्रकोपनकरंपरम् ।
वातघ्नंपित्तशमनमम्लन्तुपित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र-कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है । और खट्टा तक्र-सदैव पित्तकारक है ।

पक्वापक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच ।
पीनसश्वासकासेषुपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ (अ०)

अर्थ-कच्चा तक्र-कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है । इसकारण पीनस, श्वास और खासीमें तो पक्काही तक्र देना चाहिये ।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ।

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुण्ठीसैन्धवसंयुतम् ॥ पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे हिंगुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनसुसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्यं पुष्टिदंबल्यंवस्तिशूलविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥

अर्थ-वातरोगमें-सोंठ और सैंधवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टातक्र पीना चाहिये पित्तरोगमें बूरा मिलाकर मीठातक्र पीना । अधिक कफमें त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये । घोल-हींग, जीरा और सैंधवलवणयुक्त अत्यन्त वातनाशक है । तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है रुचिकारक पुष्टिजनक, बलकारक और बस्तिशूलको निर्मूल करे है । घोल-मूत्रकृच्छ्ररोगमें गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमें चीतेके साथ पीना चाहिये ।

तक्रसेवननिमित्तानि ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच । अरुचौस्रोतसां रोधेतक्रंस्यादमृतोपमम् ॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्द्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं गुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः । श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ-शीतऋतु, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र अमृतकी समान गुणकारक है। यह विष, वमन, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

शीतकालेऽग्निमान्द्येचकफोत्थेष्वामयेषुच ।
मार्गावरोधेकुष्ठेचवायौतक्रंप्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुये रोग, मार्ग चलनेकी थकावट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है ।

रोगविशेषे तक्रनिषेधः ।

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले ।
नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-क्षतरोग, उष्णकाल, दुर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगमें तक्र देना नहीं चाहिये ।

गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणाः ।

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-पहिले जो आठ प्रकारके दही कहे हैं उनहीके समान उन दहियोंके तक्रोंके गुण जानने ।

गोतक्रगुणाः ।

गव्यंत्रिदोषशमनंपथ्येश्रेष्ठंतदुच्यते ।
दीपनंरुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ-गायका तक्र अर्थात् मट्ठा-त्रिदोषनिवारक, पथ्योंमें उत्तम, दीपन रुचिकारक, मेधाजनक, तथा ववासीर और उदरके विकारोंको दूर करे है।

महिषीतक्रगुणाः ।

माहिषंकफकृत्किञ्चिद्घनंशोफकरंनृणाम् ।
शस्तंप्लीहार्शोग्रहणीदोषेऽतीसारिणामपि ॥

अर्थ-भैंसका तक्र-कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योंके सूजनको करनेवाला तथा प्लीहा, ववासीर, संग्रहणी और अतिसाररोगमें हितकारी है।

छागीतक्रगुणाः ।

छागलंलघुसंस्निग्धंत्रिदोषशमनंपरम् ।
गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्वामयविनाशनम्॥ (हा०सं०)

अर्थ-बकरीका तक्र-हलका, स्निग्ध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, ववासीर, संग्रहणी, शूल, और पाण्डुरोगको दूर करेहै ।

आविकतक्रगुणाः ।

आवितक्रमपथ्यंस्यादम्लंदुर्गंधकारकम् ।
दीपनंकटुकंचोष्णंलेखनंलघुपित्तकृत् ॥
रक्तदोषकरंचैवकफवातविनाशनम् ।

अर्थ-भेडका मट्ठा-अपथ्य, खट्टा, दुर्गंधकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक, रुधिरके विकारोंको करनेवाला और कफवात-विनाशक है।

हस्तिनीतक्रगुणाः ।

हस्तिन्यास्तुस्मृतंतक्रमग्निमांद्यकरंगुरु ।
उष्णंचतुवरंतेजोवर्द्धकंकफवातहम् ॥

अर्थ-हथिनीका तक्र-मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है।

अश्वीतक्रगुणाः ।

अश्वीतक्रंतुतुवरंकिञ्चिद्वातकरंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंरूक्षंनेत्र्यंमूर्च्छाकफापहम् ॥

अर्थ-घोडीका तक्र-कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी तथा मूर्च्छा और कफका विनाश करेहै ।

उष्ट्रीतक्रगुणाः ।

औष्ट्रंतक्रंतुविरसंगुरुहृद्यंचदोषलम् ।
पीनसश्वासकासेषुशस्तमुक्तंमनीषिभिः ॥

अर्थ-ऊंटनीका तक्र-बेस्वाद, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और खाँसीमें हितकारी है ।

गर्दभीतक्रगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुस्मृतंतक्रंमधुरंदीपनंमतम् ।
रूक्षमम्लकरंचोष्णंवातनाशकरंपरम् ॥

अर्थ-गधीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक

स्त्रीतक्रगुणाः ।

स्त्रीतक्रंग्राहकंचाम्लंचक्षुष्यंतर्पणंगुरु ।
पाकेचमधुरंबल्यंत्रिदोषस्यचनाशकम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, तृप्तिकारक, भारी, पाकमें मधुर, बलकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तक्रवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।

म्रक्षणंसरजंसारंनवनीतंनवोद्धृतम् ॥

अर्थ-म्रक्षण सरज, सार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्थज, हैयङ्गवीन [क], दधिसार, नवनी, कलम्बुट, दधिज ।)

संस्कृतभाषामें	नवनीत ।
हिन्दीभाषामें	नवनी, नोनी, मक्खन ।
वंगभाषामें	ननी, माखन ।
मराठीभाषामें	लोणी ।
गुजरातीभाषामें	माखण ।
कर्णाटकीभाषामें	बेण्णी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेन्ना ।

इंग्रेजीभाषामें	वटर । Butter
लैटिन्भाषामें	बुटिरम् । Butyrum
फारसीभाषामें	मसका ।
अरबीभाषामें	जुब्द् ।

साधारणनवनीतगुणाः ।

शीतंवर्णबलावहं सुमधुरं वृष्यंच संग्राहकं वातघ्नंकफकारकंरुचिकरंसर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नंश्रमनाशनंसुखकरंकान्तिप्रदंपुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धृतनवं गोःसर्वदोषापहम् (रा०नि०)

अर्थ-नवीन (ताजी) नवनीत-शीतल, वर्णको सुंदर करनेवाला, बलकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिकारक, शरीरके सर्व प्रकारके शूलोंको हरनेवाला, खाँसीको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी और सर्वदोषोंको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

शीतंबलाढ्यंमधुराम्लवृष्यंश्लेष्मावहंपित्तमरुत्प्रणाशम् ।
शोफक्षयक्षीणकृशोतिवृद्धबालेषुपथ्यंनवनीतमुक्तम् ॥
(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ-नवनीत-माखन-शीतल, बलकारक, मधुर, खट्टा, वीर्य्यवर्द्धक, श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त कृश, वृद्ध और बालकोंको हितकारी है ।

अपिच ।

नवनीतंनवंग्राहिहृद्यंचोल्वणदीपकम् । क्षयारुच्यर्दितघ्नीहृग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ चक्षुष्यंशिशिरंस्निग्धंवृष्यंजीवनबृंहणम् । क्षीणेद्रवंहिमंग्राहिरक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥ स्मृतिवाग्ग्व्यग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्द्धनम् । वातपित्तकफोन्मादशोफालक्ष्मीज्वरापहम्॥सर्वदोषापहंशीतंमधुरंरसपाकयोः॥हा.सं.

अर्थ-नवीन नौनी-ग्राही, हृदयको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला,

क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको दूर करनेवाला, प्लीहाका नाश करनेवाला, संग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी, शीतवीर्य्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्य्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्द्धक, कफकारक मेदजनक तथा वात, पित्त, कफ, उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, ज्वर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है ।

गव्यनवनीतगुणाः ।

नवनीतंहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् ।
संग्राहिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासजित् ।
तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः ॥

अर्थ-गायका माखन-हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वर्णकारक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर, लकवा और खाँसीको दूर करे है । बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माखन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है ।

महिषीनवनीतगुणाः ।

माहिषंनवनीतन्तुकषायंमधुरंरसे ।
शीतंवृष्यप्रदंबल्यंग्राहिपित्तघ्नतुन्दरम् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-भैंसका माखन-कसेला, मधुररसान्वित, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और तुन्द (थोंद) को देता है ।

अन्यच्च ।

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु ।
दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-भैंसका नौनी-वातकफकारक, भारी, दाह, पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है ।

गव्यंवामाहिषंवापिनवनीतंनवोद्धृतम् ।
शस्यतेबालवृद्धस्यबलकृद्धातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ-गाय अथवा भैंसका मक्खन-नवीनही श्रेष्ठ होता है, बाल और वृद्धोंको हितकारी, बलकारक और धातुवर्द्धक है ।

छागीनवनीतगुणाः ।

नवनीतमजायास्तुमधुरंतुवरंलघु । चक्षुष्यंदीपनंबल्यंहित-
कृत्क्षयकासनुत् ॥ गुल्मंप्रमेहंशूलंचकण्डूंनेत्ररुजंज्वरम् ।
पाण्डुंचश्वित्रकुष्ठंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ—बकरीका नौनी—मधुर, कसेला, नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बलकारक, हितकारक तथा क्षय, खाँसी, गुल्म, प्रमेह शूल, कण्डु, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

आविकनवनीतगुणाः ।

नवनीतंस्मृतंचाव्याःपाकेशीतंसरंलघु । योनिशूलेकफेवाते-
शोफेचार्शसिचोदरे ॥ जठराग्नौसदाशस्तंकृमिज्वरकरंपर-
म् । कण्डूंवांतिंचारुचिंचकरोतीतिबुधाजगुः ॥ (नि० र०)

अर्थ—भेडका माखन—पाकमें शीतल, कुछेक दस्तावर, हलका तथा योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमें श्रेष्ठ है । कृमिकारक, ज्वर जनक तथा कण्डु, वमन और अरुचिको उत्पन्न करे है ।

हस्तिनीनवनीतगुणाः ।

हस्तिन्यानवनीतंतुतुवरंदीपनंलघु ।
तिक्तंमलस्तम्भकरंकृमिपित्तकफापहम् ॥ (नि.र.)

अर्थ—हथिनीका माखन—कसेला, दीपन, हलका, कडवा, मलस्तम्भक, तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

अश्वीनवनीतगुणाः ।

अश्विन्यानवनीतन्तुतुवरंकटुकंमतम् ।
अचक्षुष्यंस्मृतंचोष्णंकफवातविनाशनम् ॥ (नि०र०)

अर्थ—घोडीका माखन—कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम, तथा कफ और वातविनाशक है ।

गर्दभीनवनीतगुणाः ।

गर्दभ्यानवनीतन्तुबल्यंचतुवरंमतम् ।
उष्णंचदीपनंचैवकफंवातंविनाशयेत् ॥
मूत्रदोषंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-गधीका माखन-बलकारक, कसेला, गरम, दीपन तथा कफ, वात और मूत्रदोषनाशक है।

उष्ट्रीनवनीतगुणाः।

उष्ट्रीजंनवनीतन्तुपाकेशीतंलघुस्मृतम्।
अग्निदीप्तिकरंचवव्रणघ्नंकृमिनाशनम्॥ (नि० र०)

अर्थ-ऊँटनीका मक्खन-पाकमें शीतल, हलका, अग्निदीपक, व्रणनाशक और कृमिनाशक है।

स्त्रीनवनीतगुणाः।

स्त्रीजन्यंनवनीतंतुपाकेलघुरुचिप्रदम्।
चक्षुष्यंदीपनंचैवसर्वरोगान्विषंहरेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका नवनीत-पाकमें लघु, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, सर्वप्रकारके रोग और विषनाशक है।

दुग्धजातनवनीतगुणाः।

दुग्धोत्थंनवनीतन्तुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत्।
वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूधमेंसे निकालाहुवा नौनी-नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, मलरोधक और शीतल ह।

नवीननवनीतगुणाः।

नवनीतमिदंनवमेवहितंहिमशुक्रबलानलकांतिकरम्।
ग्रहणात्मकमर्दितपित्तमरुद्गुदजक्षतजक्षयकासहरम्॥

अर्थ-नवीन अर्थात् ताजा माखन-हितकारी, शीतल, शुक्रजनक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा संग्रहणी, लकुवा, पित्त, वात, गुदरोग, क्षतरोग, क्षयरोग और खाँसीको दूर करे है।

प्राचीननवनीतगुणाः।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम्॥
श्लेष्मलंगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरंतनम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-पुराना नौनी-खारी, चरपरा, खट्टा, वमनकारक, बवासीरको उत्पन्न करनेवाला, कुष्ठकारक, कफकारी, भारी आर मेदको करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे नवनीतवर्गःसमाप्तः॥ १६॥

अथ घृतवर्गः ।



घृतमाज्यंहविःसर्पिःपुरोडाशनवनीतकम् ।
पवित्रंवह्निभोग्यंचतैजसंचाभिघारकम् ॥

अर्थ–घृत, आज्य, हवि, सर्पि, पुरोडाश्, नवनीतक पवित्र, वह्निभोग्य, तैजस, अभिघारक (आज, तोयद, पीथ, अमृत, अडिघार, होम्य, आयु, नवनीतज, भोजनार्ह जीवन ।

संस्कृतभाषामें	घृत ।
हिन्दीभाषामें	घि, घृत, घी ।
बंगभाषामें	घि, घृत ।
मराठीभाषामें	तूप ।
गुजरातीभाषामें	घी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेई ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लेरीफाईड बटर । Cleiifted Butter
लैटिन्भाषामें	बुटीरम्, डेप्युरेटम् । Butyrum Deparatum
फारसीभाषामें	रोघनेजर्द ।
अरबीभाषामें	समन्, दुहनुल्बकर ।

घृतगुणाः ।

घृतन्तुसौम्यंशीतवीर्य्यंमृदुमधुरममृतमल्पाभिष्यन्दिस्नेह नमुदावर्त्तोन्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तप्रशमनम- ग्निदीपनस्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्य्यौज- स्तेजोबलकरमायुष्यंवृष्यंमेध्यंवयःस्थापनंगुरुचक्षुष्यंश्ले- ष्माभिवर्द्धनंपापालक्ष्मीप्रशमनंविषहरंरक्षोघ्नञ्च । (सुश्रुत)

अर्थ–घी–सौम्य, शीतवीर्य्य, कोमल, मधुर, अमृतकी समान गुणकारी, अल्प अभिष्यन्दी, स्निग्ध और उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूल, ज्वर, आनाह, वात तथा पित्तको दूर करनेवाला अग्निप्रदीपक तथा स्मरणशक्ति, मति, मेधा, कान्ति, स्वर, लावण्यता, सुकुमारता, ओज, तेज और बलको करनेवाला है, आयुको बढानेवाला, वीर्य्यको बढानेवाला, मेध्य, अवस्थाको

स्थापन करनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी, पाप और अलक्ष्मीको शान्ति करनेवाला, विषविनाशक, और राक्षसबाधाको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

घृतंशीतंरसेपाकेमधुरंजीवनंमतम् । स्नेहेषुचोत्तमंवृष्यंकान्तिकृद्धातुवर्द्धकम् ॥ कंठयंस्वर्य्यंचेन्द्रियाणांतृप्तिकृद्भेदकंमतम् । व्रण्यंवयःस्थापकंचभेदकंचमृदुस्मृतम् ॥ चक्षुष्यंकफकृत्प्रोक्तमग्निदीप्तिकरंगुरु । बुद्धिमेधास्मृतिप्रज्ञातेजोजोबलपुष्टिकृत् ॥ सौकुमार्यस्यमेदस्यलावण्यस्यचवर्द्धकम् । श्लेष्मकृद्बालवृद्धानांहितकृद्रुचिदंमतम् । स्निग्धंरसायनंचैवक्षतक्षीणेहितंमतम् ॥ विसर्पंचाग्निदग्धंचशस्त्रक्षीणेहितंमतम् ॥ अजीर्णोन्मादशूलानि ह्युदावर्तंक्षयंतथा । आनाहंरक्तपित्तंचवातपित्तंव्रणंतथा ॥ रक्तदोषंक्षतंदाहं योनिनेत्रश्रुतीरुजम् । दद्रुंशिरोरुजंशोथंत्रिदोषंचैवनाशयेत् ॥ निरामवातज्वरिणांहितंचामेविषोपमम् । (नि० र०)

अर्थ–घी–रसमें शीतल, पाकमें मधुर, प्राणरक्षक, स्नेहोंमें उत्तम, वृष्य, कान्तिकारक, धातुवर्द्धक, कण्ठको हितकारी, स्वरको शुद्ध करनेवाला, इन्द्रियोंकी तृप्ति करनेवाला, भेदक, घावको भरनेवाला, अवस्थास्थापक, मृदु, नेत्रोंको हितकारी, कफकारक, अग्निप्रदीपक, भारी तथा बुद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति, प्रज्ञा, तेज, ओज, बल और पुष्टि करनेवाला तथा सुकुमारता, मेद, लावण्यता और श्लेष्मको बढानेवाला है और बाल तथा वृद्धोंको हितकारी, रुचिकारी, स्निग्ध, रसायन, क्षतक्षय, विसर्प, अग्निदग्धव्रण, शस्त्रक्षत और क्षीणतामें हितकारी है । तथा अजीर्ण, उन्माद, शूल, उदावर्त्त, क्षय, आनाहवात, रक्तपित्त, वातपित्त, व्रण, रुधिरविकार, क्षत, दाह, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, दाद, शिरोरोग, सूजन और त्रिदोषको दूर करे है । तथा निराम वातज्वरवाले मनुष्यको हितकारी और आमज्वरपै विषकी समान दोषकारी है ।

अन्यच्च ।

ओजस्तेजोभिवृद्धिंजनयति सुखदंकान्तिकृत्सम्यगुक्तं पापालक्ष्मीश्रमघ्नं श्वसनकसनहाऽजीर्णजातज्वरघ्नम् । शूलोदावर्त्तरोगग्रहणिमदरुजं नाशयत्याशुपीडां पित्तघ्नंवातनाशि स्वरकरमगदंक्षुद्भ्रमेचैवसेव्यम् ॥ चक्षुष्यंवृष्यमायुःस्मृतिधृतिकरणंराजयक्ष्माविनाशं रूक्षेक्षीणेचपथ्यं वलिपलितहरंसामदोषप्रकोपे । भूतोन्मादप्रमत्तेबहुतिमिरकरेकृच्छ्रपस्माररोगेसर्वेषांसर्वदैवप्रथितगुणगणंसाधुपथ्यंघृतंस्यात् ।

अर्थ—घी—ओज और तेजको वढानेवाला, सुखको उत्पन्न करनेवाला, कान्तिजनक, पाप, अलक्ष्मी, श्रम, श्वास, खाँसी, अजीर्णसे उत्पन्न हुवा ज्वर, शूल, उदावर्त्तरोग, संग्रहणी और मदरोगका नाश करे है, पीडानाशक पित्तनिवारक, वातविनाशक, स्वरको सुंदर करनेवाला, तथा क्षुधा और श्रम रोगमें सेवन करना चाहिये । नेत्रोंको हितकारी, वीर्यको वढानेवाला तथा आयु, स्मरणशक्ति और धारणाशक्तिको करनेवाला है । राजयक्ष्मा रोगका नाशकरनेवाला, रूक्ष और क्षीणमनुष्यको हितकारी, वलीपलितविनाशक तथा आमदोष, भूतोन्माद, प्रमत्त, वहुतिमिर, मूत्रकृच्छ्र और अपस्मार रोगमें सव मनुष्योंको सर्वकालमें पथ्यहै ।

गव्यघृतगुणाः ।

धीकान्तिस्मृतिदायकंबलकरंमेधाप्रदंपुष्टिकृद्वातश्लेष्महरंश्रमोपशमनंपित्तापहंहृद्धितम् । वह्नेर्वृद्धिकरंविपाकमधुरंवृष्यं वपुःस्थैर्य्यदं गव्यंहव्यतमंघृतंबहुगुणं भोग्यंभवेद्भाग्यतः ॥ (रा०नि०)

अर्थ—गायका घी बुद्धि, कान्ति और स्मरणशक्तिदायक, वलकारक, मेधाजनक, पुष्टिकारक, वातश्लेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदयको हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, शरीरको स्थिरतादायक, हव्यतम, वहुगुणयुक्त और यह भाग्यसेही प्राप्तहोता है ।

अन्यच्च ।

सर्पिर्गवांचाप्यमृतंविषघ्नंचाक्षुष्यमारोग्यकरंचवृष्यम् ।

रसायनंचेदमतीवमेध्यंस्नेहोत्तमांगांविबुधाःस्तुवन्ति ॥

अर्थ-गायका घी-अमृतकी समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोंको आरोग्य करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सर्व स्नेहोंमें उत्तम है।

माहिषघृतगुणाः ।

सर्पिर्माहिषमुत्तमंधृतिकरंसौख्यप्रदंकान्तिकृद्वातश्लेष्मनिबर्हणंबलकरंवर्णप्रदानेक्षमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशमनंमन्दानलोद्दीपनं चक्षुष्यंनवगव्यतःपरमिदंहृद्यंमनोहारि च ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भैंसका घी-उत्तम, धृतिकारक, सुखकारक, कान्तिजनक, वातश्लेष्मनिवारक, बलकारक, वर्णप्रदायक, बवासीर और संग्रहणीको हरनेवाला, मन्दाग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी नवीनगायके घीसे परम हृदयको हितकारी और मनोहारीहै।

अन्यच्च ।

माहिषंतुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ॥

अर्थ-भैंसका घी-स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है।

छागीघृतगुणाः ।

आजमाज्यंकरोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् ।
श्वासेकासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु ॥
कफार्शोराजयक्ष्माणांनाशनंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-बकरीका घी-अग्निजनक, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक, श्वास, खाँसी और क्षय रोगमें हितकारी, पाकमें कटु तथा कफ: और राजयक्ष्मारोगको दूर करे है।

मेषीघृतगुणाः ।

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविषापहम् ।
वृद्धिंकरोतिचास्थ्नांवैवाश्मरीशर्करापहम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-भेड़का घी-पाकमें लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हड्डियोंको बढानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पाकेलघ्वाविकंसर्पिर्नवंपित्तप्रकोपनम् ।
योनिदोषेकफेवातेशोफेकम्पेचतद्धितम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका घी-लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमें हितकारी है ।

हस्तिनीघृतगुणाः ।

हस्तिन्यास्तुघृतंतिक्तंलघुवैतुवरंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंप्रोक्तंकुष्ठक्रिमिविनाशनम् ॥
मलमूत्रस्तम्भकरंकफपित्तविनाशनम् ।
विषंरक्तविकारंचनाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका, कषेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अश्वीघृतगुणाः ।

वृद्धिंकरोतिदेहाग्न्योर्लघुपाकेविषापहम् ।
तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥

अर्थ-घोडीका घी-देह और अग्निको बढानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है ।

अन्यच्च ।

अश्वीघृतंतुमधुरंकिञ्चिच्चाग्निप्रदीपकम् ।
तुवरंकटुकंचैवमलमूत्रावरोधकम् ॥
किञ्चिच्चवातलंचोष्णंपाककालेलघुस्मृतम् ।
गुरुचकफमूर्च्छानांनाशनंपरमंमतम् ।

अर्थ-घोडीका घी-मधुर, किञ्चित् अग्निप्रदीपक, कषेला, चरपरा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित् वातकारक, गरम, लघुपाकी, भारी तथा कफ और मूर्च्छाको हरनेवाला है ।

गर्दभीघृतगुणाः ।

गर्दभ्यास्तुघृतंबल्यंबुद्धिदंवामकंमतम् ।
अग्निदीप्तिकरंचोष्णवीर्य्यंपाकेलघुस्मृतम् ॥
कषायंग्लानिदंप्रोक्तंमूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गधीका घी-बलकारक, बुद्धिदायक, वमनकारक, अग्निप्रदीपक, उष्णवीर्य्य, लघुपाकी कषेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्रविकार और कफनाशक है ।

एकशफपशुघृतगुणाः ।

मधुरंरक्तपित्तघ्नंलघुपाकेचदीपनम् ।
सर्वमेकशफंसर्पिःकषायंकफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरीवाले सर्वपशुओंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी-दीपन, कषेला और कफनाशक है ।

उष्ट्रीघृतगुणाः ।

औष्ट्रंघृतंचाग्निदीप्तिकारकंचपटुस्मृतम् ।पाककालेचकटु-
कंविषार्शःकृमिनाशनम् ॥शोथंवातंकफंचैवक्रोष्टुशीर्षंतथो-
दरम् ।कुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूर्च्छापस्मारजूर्तिहम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-ऊंटनीका घी-अग्निप्रदीपक, नमकीन, पचनेमें चरपरा, विषविनाशक, बवासीरको हरनेवाला, कृमिनाशक तथा सूजन, वात, कफ, क्रोष्टुशीर्ष, उदररोग, कुष्ठ, गुल्म, उन्माद, मोह, मूर्छा, अपस्मार और ज्वरको दूर करे है ।

स्त्रीघृतगुणाः ।

कफेऽनिलेयोनिदोषेरोगेष्वन्येषुतद्धितम् ।
चक्षुष्यमाहुःस्त्रीणांचसर्पिःस्यादमृतोपमम् ॥ (हा०नि०)

अर्थ-स्त्रीका घी-कफ, वात, योनिदोष और अन्य रोगोंमें हितकारी है । नेत्रोंको हितकारी और अमृतकी समान गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

स्त्रीघृतंरुचिदंनेत्र्यंपाकेलघ्वग्निदीपनम् ।
वातंपित्तंकफंमेहंविषंचैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निमदीपक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशकहै।

उष्ट्रीणांचापिनारीणांगर्दभीनांपयांसिच ।
घृतेकार्य्येषुयोज्यानिघृतंयेषांनविद्यते ॥

अर्थ-जहां-ऊंटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहां उनका दूधही प्रयोगमें लेना चाहिये।

हैयंगवीनघृतगुणाः।

हैयंगवीनंचक्षुष्यंरुच्यंचाग्निप्रदीपकम् ।
बल्यंवृष्यंधातुकरंविशेषाज्ज्वरनाशकम् ॥

अर्थ-हैयंगवीन-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है।

दुग्धोद्भवघृतगुणाः।

घृतन्दुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगनुत् ।
निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुवा घी-मलरोधक, शीतल, नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है।

शतधौतघृतगुणाः।

शतधौतंघृतंप्रोक्तंदाहमोहज्वरापहम् ।

अर्थ-सौवार धुलाहुवा घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है।

नूतनघृतगुणाः।

नूतनंतुघृतंतृप्तिकारकंदुर्बलेहितम् ।
भोजनेस्वादुदंप्रोक्तंनेत्र्यंपाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्वल मनुष्यको हितकारी, भोजनमें स्वाददायक, नेत्रोंको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है।

पुराणघृतम्।

सर्पिःपुराणंतिमिरप्रतिश्यायामकासजित् । मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धंपुराणंस्याद्दशवर्षस्थितंघृतम् । लाक्षारसनिभंशीतंप्रपुराणमतःपरम् ॥ यथायथाभवेज्जीर्णंगुणवत्स्यात्तथापरम् । (रा०व०)

अर्थ-पुराना घी-तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम और खाँसीको दूर करैहै तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और मृगीरोगनाशक है। दश वर्षका रखा हुवा और उग्र गन्धवाला तथा लाखके रंगकी समान लाल रंगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते हैं। दश वर्षसे अधिक रखे हुवे घीको प्रपुराना घृत कहते हैं। घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २ ही अधिक गुणवान् जानना।

मतान्तरे।

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत्।मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मा-दापस्मारतिमिरापहम्॥यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत्। तथातथागुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥(भा.प्र.)

अर्थ-भावमिश्रने एक वर्ष बीत जानेपर घीको पुराना कहाहै। वह पुराना घी-त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, अपस्मार और तिमिर-रोगनाशक है। घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते हैं वैसे २ ही जो जो गुण जिस २ घीमें कहे हैं उन २ गुणोंको अधिक करते हैं।

नूतनघृतविषयाः।

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे।
बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः॥

अर्थ-भोजन, तर्पण; श्रम, बलक्षय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगमें नवीनही घृत देना चाहिये।

ज्वरेविबन्धेचविषूचिकायामरोचकेवाशमितेतथाग्नौ।पानात्ययेवापिमदात्ययेवाशस्तंनसर्पिर्बहुमन्यतेसुधीः॥ (हा०सं०)

अर्थ-ज्वर, विबन्ध, विषूचिका, अरोचक, मंदाग्नि, पानात्यय और मदात्ययरोगमें बहुत घी नहीं देना चाहिये।

अन्यच्च।

शतवर्षसहस्रंवास्थितंकौम्भमितिस्मृतम्।
एकादशशताद्यंचमहाघृतमितिस्मृतम्॥

अर्थ-सौ वर्षके पुराने अथवा एक सहस्र वर्षके पुराने घृतको कौम्भ कहते हैं और इसके उपरान्तके घृतको महाघृत कहते हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे घृतवर्गः समाप्तः॥ १७॥

अथ मूत्रवर्गः ।

स्रवणंमेहनंमूत्रंप्रस्रावंप्रस्रवंतथा ।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यनिष्यन्द, स्रव) ।

संस्कृतभाषामें	मूत्र ।
हिन्दीभाषामें	मूत, पेशाव ।
वंगभाषामें	मुत्, चोना, प्रस्राव ।
मराठीभाषामें	मूत, मूत्र ।
गुजरातीभाषामें	मुतर ।
कर्णाटकीभाषामें	मूत्र, आकलगोत ।
तैलङ्गीभाषामें	उच्चा ।
इंग्रेजीभाषामें	युरीन् ।
लैटिन्भाषामें	युरिना ।

मूत्रंगोजाविमाहिष्यंगजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।
मूत्रंमानुषजञ्चान्यत्समासेनगुणाञ्छृणु ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, बकरी भेड, भैंस, हाथी, घोडा, ऊंट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण संक्षेपसे कहताहूं, तूं सुन ।

गोमूत्रगुणाः ।

तीक्ष्णंचोष्णंक्षारमेवंकषायंगौल्यंमेध्यंश्लेष्मवातंनिहन्ति ।
भेद्यारक्तंपित्तशांतिंकरोतिगुल्मानाहोन्माददोषापहंच ॥
कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान् । कासंसकुष्ठजठरकृमिकोषजालं गोमूत्रमेकमपिपीतमहोनिहन्ति ॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाव-तीक्ष्ण, गरम, खारी, कषेला, गौल्य, मेधाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, आनाह और उन्माददोषनाशक है । तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदरोग, मूत्ररोध, खाँसी, कोढ, उदररोग, और कृमिके समूहको नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

गवांमूत्रंकषायंस्यात्कटुतिक्तंलघुस्मृतम् । क्षारंचोष्णंचतीक्ष्णंचपाचनंचाग्निदीपनम् ॥ भेदकंपित्तलंमेध्यंकिञ्चिच्चमधुरंसरम् । लेखनंबुद्धिदंप्रोक्तंकफवातविनाशनम् ॥ कुष्ठगुल्मंचोदरञ्चपाण्डुरोगंकिलासकम् । शूलंचार्शश्चकण्डूंचश्वासंचामंज्वरंतथा ॥ आनाहवातंकासंचमलस्तम्भश्चशोथकम् । मुखाक्षिरोगंत्वग्रोगंकामिन्याश्चातिसारकम् ॥ मूत्ररोधंनाशयतिह्येतच्चैवगुणाधिकम् । (रा० नि०)

अर्थ-गायका मूत-कषेला, चरपरा, कडवा, हलका, खारी, गरम, तीक्ष्ण, पाचन, अग्निप्रदीपक, भेदक, पित्तकारक, मेधाजनक, किञ्चित् मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिदायक तथा कफ, वात, कोढ, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, किलास, शूल, बवासीर खुजली, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात, खाँसी, मलस्तम्भ, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वचाके रोग, स्त्रियोंका अतिसार और मूत्ररोधको दूर करेहै । यह गुणोंमें अधिक है ।

छागीमूत्रगुणाः ।

आजंमूत्रंतीक्ष्णमुष्णंकषायंयोज्यंपानेशूलगुल्मार्त्तिनाशम् । कासेश्वासेकामलापाण्डुरोगेह्यर्शोरोगेश्रेष्ठमेतद्वदन्ति(हा.सं.)

अर्थ-बकरीका मूत्र-तीक्ष्ण, गरम, कषेला, तथा शूल, गुल्म, खाँसी, श्वास, कामला, पाण्डुरोग, और बवासीरको हरनेवालाहै ।

आविकमूत्रगुणाः ।

सक्षारंकटुकंतीक्ष्णंमूत्रंवातघ्नमाविकम् ।
दुर्नामोदरशूलघ्नंकुष्ठमेहविशोधनम् ॥

अर्थ-भेडका मूत-क्षारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक तथा बवासीर, उदररोग, शूल, कुष्ठ और प्रमेहको दूरकरे है ।

माहिषमूत्रगुणाः ।

क्षारंसतिक्तंकटुकंकषायंप्रभेदिवातस्यशमंकरोति ।
पित्तप्रकोपंकुरुतेसदाचकुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम् ॥

अर्थ-भैंसका, मूत-खारी, कडवा, चरपरा, कषेला, भेदक, वातको

शान्तिकरनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, ववासीर, पाण्डुरोग, उदररोग और शूलनाशक है।

गजमूत्रगुणाः।

सतिक्तंलवणंभेदिवातघ्नंकफकोपनम्।
क्षारमण्डलकुष्ठानांनाशनंगजमूत्रकम्॥

अर्थ-हाथीका मूत-कडवा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपितकरनेवाला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्टकरे है।

अश्वीमूत्रगुणाः।

छर्दिकासकफहरंकृमिकुष्ठविनाशनम्।
दीपनंकटुतीक्ष्णोष्णंवातश्लेष्मविकारनुत्॥ (हा०सं०)

अर्थ-घोडीका मूत-वमन, खाँसी, कफ, कृमि, कोढ, वात और कफनाशक है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है॥

गर्दभीमूत्रगुणाः।

खरमूत्रंकटूष्णंचक्षारंतीक्ष्णंकफापहम्।
महावातापहंभूतकम्पोन्मादहरंपरम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-गधीकामूत्र-चरपरा, गरम, खारी, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महावात, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है।

औष्ट्रमूत्रगुणाः।

औष्ट्रंकफहरंरूक्षंकृमिदद्रुविनाशनम्।
श्रेष्ठंकुष्ठोदरोन्मादशोषार्शःकृमिवातनुत्॥

अर्थ-ऊंटनीका मूत-कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिवारक है, श्रेष्ठ तथा कुष्ठ, उन्माद, शोष, ववासीर, कृमि और वातनाशक है।

मानुषमूत्रगुणाः।

मानुषंक्षारकटुकंमधुरंलघुचोच्यते। चक्षूरोगहरंबल्यंदीपनंकफनाशनम्॥ असूतायाघनंमूत्रंप्रसूतायाद्रवंलघु। नकिंगुणविशेषःस्यात्समतापाकवीर्य्ययोः॥

अर्थ-स्त्रीका मूत-खारी, चरपरा, मधुर हलका, नेत्ररोगनाशक, वलकारक, दीपन और कफनाशकहै। अप्रसूतास्त्रीका मूत्र गाढा, होताहै, प्रसूतास्त्रीका मूत-पतला, हलका और अप्रसूताके, मूतसे कुछ विशेष गुणवाला नहीं है और पाक तथा वीर्य्यमें भी समानही है।

गोजाविमहिषाणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंमतम् ॥

अर्थ-गौ, बकरी, भेड, भैंस इनोंमें स्त्रियोंका मूत्र, उत्तम होता है और गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य इनोंमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है ।

मूत्रविशेषगुणाः ।

सौरभेयकमूत्रन्तुघनंसान्द्रंप्रशस्यते । तच्चवृषणहीनानां किञ्चिल्लघुतरंस्मृतम् ॥ वृषमूत्रञ्चशोफघ्नंक्रिमिदोषविनाशनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनञ्चाग्निदीपनम् ॥ अजांगविगतंमूत्रंपानेशस्तंभिषग्वर । आविकंमाहिषंचाश्वंतैलपाकेविधीयते ॥ गजमूत्रप्रलेपश्चकण्डूदद्रुविसर्पनुत् । कारभंखरमूत्रंवातैलेनस्येविधायकम् । औष्ट्रंगोजाविनांच गजहयमहिषीमूत्रवर्गःखरोत्थं तिक्तंतीक्ष्णंलघूष्णंसलवणसुरसंपित्तलंभेदिरूक्षम् ॥ हृद्यंरुच्यंकृमिघ्नंहुतवहजननंकुष्ठमेदोविनाशं गुल्मानाहार्शशूलानिलकफविषजिच्छोफपाण्डूदरघ्नम् ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोधिकम् । अतोविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते । प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ मानुषंविषजिन्मूत्रंविषूच्यामहरंचतत् । नस्येचौष्ट्रंचपानेतुगवांचाव्याःप्रशस्तकम् ॥ तैलयोगेगर्दभस्यवस्त्यश्वमहिषन्तथा । दद्रुकण्डूविसर्पाणांलेपनेहस्तिमूत्रकम् ॥

अर्थ-बैलका मूत-गाढा, सान्द्र और श्रेष्ठ होता है और वही बैल वृषणहीन अर्थात् वधियाका मूत-कुछेक हलका होताहै । बैलका मूत-सूजनको दूर करनेवाला, कृमिदोषनाशक तथा कामला, संग्रहणी इनको दूर करे है और अग्निप्रदीपकहै । बकरीका मूत और गायका मूत पीनेमें उत्तम है, मेंढेका मूत, भैंसेका मूत और घोडेका मूत तैलपाकमें हितकारी है । हाथीके मूतका

लेप कण्डू, दद्रु और विसर्परोगनाशक है । ऊंटका मूत और गधेका मूत–तेलमें और नस्यमें उत्तम है, ऊंट, गाय, बकरी. भेड, हाथी, घोडा. भैंस और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कडवा, तीक्ष्ण, हलका, गरम. लवणरसान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी, रुचिजनक. कृमिनाशक, क्षुधाको वढानेवाला, कुष्ठ और मेदरोगनाशक तथा गुल्म, आनाह, ववासीर, शूल, वात, कफ, विष, सूजन. पाण्डु और उदररोगको दूर करे है । सर्वप्रकारके मूत्रोंमें गोमूत्र गुणोंमें अधिकहै । अतएव जहां कहीं मूत्रशब्द आवे वहांपर गोमूत्र समझना चाहिये । गोमूत्र–प्लीहा. उदररोग, श्वास खाँसी, सूजन, मलरोध, शूल, गुल्म. अफारा, कामला और पाण्डुरोगको दूर करे है । मनुष्यका मूत्र–विषविनाशक और विषूचिका रोगको नष्ट करे है, नासमे ऊंटका मूत्र उत्तम है. पानमें गोमूत्र श्रेष्ठ है । तैलयोगमें गर्दभका मूत्र, वस्तिकर्म्ममे, घोडे और भैंसका तथा दाद. खुजली और विसर्पके लेपमें हाथीका मूत्र लेना चाहिये ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मूत्रवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः ।



तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

अर्थ–तिलादिक स्निग्धवस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं (अभ्यञ्जन, म्रक्षण, तिलज, स्नेह) ।

संस्कृतभाषामें	तैल ।
हिन्दीभाषामें	तैल ।
वंगभाषामें	तैल, तेल ।
मराठीभाषामें	तेल ।
गुजरातीभाषामें	तेल ।
कर्णाटकीभाषामें	तैलं ।
तैलिङ्गीभाषामें	नुने ।
इंग्रेजीभाषामें	आइल । Oil
लैटिन्भाषामें	ऑईलयम् । Oluem
फारसीभाषामें	रोगन, रोगनेकुंजद ।
अरवीभाषामें	दोहनुसिमसिग ।

तैलंवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तैल वातको हरे है ।

तिलतैलगुणाः ।

कषायानुरसंस्वादुसूक्ष्ममुष्णंव्यवायिच ।
पित्तकृद्वातशमनंश्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥

अल्पंरुचिकरंमेध्यंकण्डूकुष्ठविकारनुत् । वृष्यंश्रमापहंज्ञेयं तिलतैलंविदुर्बुधाः ॥ छिन्नभिन्नेच्युतेघृष्टेभग्नाग्निदाहकेऽपि च । वाताभिष्यन्दिस्फुटनेचाभ्यङ्गेतिलतैलकम् ॥ व्यालश्व-सर्पभेकानांविषेभ्यङ्गावगाहने । पानेवस्तौबलासेचतिलतै-लंविधीयते ॥ तिलतैलंविधेयंस्यात्सर्वरोगनिवारणे । (हा०सं०)

अर्थ-तिलका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, सूक्ष्म गरम, व्यवायि, पित्तकारक, वातनिवारक, कफादिरोगवर्द्धक, अल्परुचिकारक, मेधाजनक, खुजलीको हरनेवाला, कोढको दूरकरनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, श्रमनाशक, छिन्न अर्थात् खड्ग आदिके लगनेसे कटे हुएमें बरछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेसे जो चोट लगजाती है, उसमें घिसनेमें, पत्थर आदिके रगडनेसे छिलजानेमें, हाड आदिक टूटनेमें, अग्निसे जलजानेमें, वाताभिष्यन्दमें, फूटनेमें, भेडिया, कुत्ता, मेडक और सर्पके विषमें, मालिस, स्नान, वस्तिकर्म्म और बलासरोगमें तिलका तेल हितकारी है और सर्वरोगोंको दूर करनेके लिये तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतैलमलंकरोतिकेशान्मधुरंतिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ।
बलकृत्कफवातजंतुखर्जूव्रणकण्डूतिहरंचकान्तिदायि ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-तिलका तेल-केशोंको उत्तम करनेवाला, मधुर, कडवा, कषेला, गरम, तीक्ष्ण, बलकारक तथा कफ, वात, कृमि, खुजली, घाव, कडू इनको दूरकरनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतैलंगुरुस्थैर्य्यंबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविशदं मधुरंरसपाकयोः ॥ सूक्ष्मंकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् ।

वीर्य्योष्णंतुहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ लेखनंवद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंवुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् । श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् ॥ त्वच्यंकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा । छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविश्लिष्टदारिते । तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ॥ वस्तौपानेन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे । सेकाभ्यङ्गावगाहेषुतिलतैलं प्रशस्यते ॥ (भावमिश्रः)

अर्थ–तिलका तेल–भारी, स्थिरताकारक, वलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विशद, रस और पाकमें, मधुर सूक्ष्म, कषेला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन, मलमूत्ररोधक, गर्भाशयविशोधक, दीपन, वुद्धिदायक, मेधाजनक, व्यवायि, व्रण और प्रमेहनाशक, कान, योनि और शिरके शूलको दूर करनेवाला, लघुताकारक, त्वचाको हितकारी, केशोंको सुंदर करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी यह गुण तैलके मलनेके हैं। खानेमें यह गुण नहीं हैं और गुण इनसे उलटे हैं । छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिसजाना, मसलजाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, विधजाना, आगसे जलजाना, स्थानसे उतरजाना, चिरजाना, चोट लगनी, टेढा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे घायल होजानेपर, वस्तिकर्म्म, पान, अन्नसंस्कार (तेलसे छौंकना) नासकर्म्म, कान और आंखोंमें भरना, सेक, मर्द्दन और अवगाहनमें तिलका तेल हितकारी है ।

नास्तितैलात्परंकिञ्चिदौषधंमारुतापहम् ।
तैलंसंयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहंस्मृतम् ॥

अर्थ–तेलकी समान और कोई दूसरी वातनाशक, औषधि नहीं है और, द्रव्योंके संयोगसे संस्कृत (पक्का) तेल सर्वरोगनाशक है ।

घृताच्छ्रेष्ठतमंतैलंमर्दनेनचभोजने ।
घृतमब्दात्परंपक्कंहीनवीर्य्यंप्रजायते ॥
तैलंपक्कमपक्कंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ।

अर्थ-तेल-घृतसे गुणोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह मर्दन करनेमें है, भोजन करनेमें नहीं है। घी एकवर्ष बीतजानेपर पंका हुवा हीनवीर्य्य होजाता है, परन्तु तेल तो पकाहुवा वा विनापका जितना जितना ज्यादे पुराना होगा उतनाही अधिकगुणवाला होता है।

नपित्तरोगेनचशोणितेचपथ्येमहावातविकारसंघे।
तिलोद्भवंतैलमुदाहरंतिवाताश्रितान्हन्तिमस्तदोषान् ॥

अर्थ-तिलोंका तेल-पित्तरोग और रक्तरोगमें पथ्य नहीं है, महावातरोगके समूहमें पथ्य है और सर्वप्रकारके वातरोगोंका नाशकरे है।

सर्षपतैलगुणाः।

कटूष्णंसार्षपंतैलंरक्तपित्तप्रदूषणम्।
कफशुक्रानिलहरंकण्डूकृमिविनाशनम् ॥ (राज०नि०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा, गरम, रक्तपित्तकारक तथा कफ, शुक्र, वात, खुजली और कृमिनाशक है।

अन्यच्च।

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकिसरंलघु।
लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥
कफमेदोऽनिलाऽर्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम्।
कण्डूकोष्ठकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टव्रणप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरसोंका तेल-दीपन पचनेमें चरपरा, सर, लघु, लेखन, स्पर्श और वीर्य्यमें उष्ण, तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रकोपित करनेवाला तथा कफ, मेदरोग, वात, बवासीर, शिररोग, कर्णरोग, कण्डू, कोठ, कृमि, श्वित्रकुष्ठ. कुष्ठ और दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाला है।

अपिच।

कटुतिक्तंतथाग्राहिचोष्णंस्यात्कफवातनुत्।
कृमिकण्डूशोधनंस्यात्पित्तकृत्सार्षपंस्मृतम् ॥
कर्णरोगेकृमिरोगेतथावातामयेषुच
कण्डूकुष्ठामयेचैवकफमेदोगदेषुच ॥

प्रशस्यंसार्षपञ्चैवरोगाणाञ्चविभावयेत् ।
वस्तिकर्म्मणिनोशस्तंपित्तदाहकरंमहत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम, कफवातनाशक कृमि और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमिरोग वातरोग, कण्डू, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमें हितकारी है, वस्तिकर्म्ममें उत्तम नहीं है और पित्त दाहकारक है ।

राजिकातैलगुणाः ।

श्वेतायाश्चैवरक्तायाराजिकायास्तुतैलकम् ।
केश्यंचतिक्तंकटुकंमूत्रकृच्छ्रकरंमतम् ॥
त्वग्दोषंवातदोषंचपूयंचैवविनाशयेत् ।
गुणास्त्वन्येसर्षपानांतैलतुल्याइतीरितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल वा काली राईका तेल-केशोंको हितकारी, कडवा, चरपरा, मूत्रकृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरेहै । शेष गुण सर्सोंके तेलकी समान जानने ।

तुवरीतैलगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहंचापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तोरीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, हलका, मलरोधक, कफनाशक, रक्तविकारनिवारक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा खुजली, कोढ, कोठ, कृमि, मेदोदोष, व्रण और सूजनको हरणकरे है ।

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीप्रभवंतैलंघनंमधुरपिच्छिलम् ।
विपाकेकटुचोष्णञ्चवातश्लेष्मनिवारणम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-अलसीका तेल-गाढा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण, वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

मधुरंत्वतसीतैलंपिच्छिलंचानिलापहम् ।

मदगन्धिकषायश्चकफकासापहारकम् ॥ (रा० नि०

अर्थ-अलसीका तेल-पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धियुक्त, कषेला तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

उमातैलंचवातघ्नंस्वादूष्णंबलकृद्गुरु ।
कटुपाकमचक्षुष्यंत्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-वातविनाशक, स्वादिष्ठ, बलकारी, भारी, कटुपाकी, नेत्रोंको हितकारी नहीं. तथा त्वग्दोष, कफ और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

अतसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत्।कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु॥ मलकृद्रसतःस्वाद्वग्राहित्वग्दोषहृद्व्रणम् । वस्तौपानेतथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अलसीका तेल-अग्निजनक, स्निग्ध, गरम, कफ पित्तकारक, कटुपाकी, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी, वातहारी, भारी, मलकारक, रसमें स्वादु, मलरोधक, त्वचाके विकार और व्रणको हरनेवाला तथा वस्तिकर्म्म, पान, मर्दन, नास, कर्णपूरण और अनुपानविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलमुष्णन्तुविपाकेकटुकंगुरु ।
विदाहकंविशेषेणसर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-कसूमका तेल-गरम, पचनेमें चरपरा, भारी, विशेषकरके दाहकारक और सर्वदोषोंको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुसुम्भतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच ।
चक्षुर्भ्यामहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कसूमका तेल-खट्टा, भारी, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है ।

अपिच ।

कुसुम्भतैलंबलदंक्षारंकटुविदाहकृत । अचक्षुष्यंगुरुस्तीक्ष्ण-मुष्णंविट्स्तम्भकारकम्॥रक्तपित्तकरंचाम्लंत्रिदोषाणांचका-रकम् ॥ कृमिवातहरंप्रोक्तंपूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-कसूमका तेल-बलवर्द्धक खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषजनक तथा कृमि और वातविनाशक है ।

गोधूमादितैलगुणाः ।

गोधूमयावनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजंतैलम् ।
वातकफपित्तशमनंकण्डूकुष्टादिहारिचक्षुष्यम्॥(रा०नि०)

अर्थ-गेहूं, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकोंका तेल-वात, कफ, पित्त निवारक, नेत्रोंको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है ।

एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलंकृमिनाशनंचसर्वत्रशूलभ्रमरुत्प्रणाशनम् ।
कुष्ठापहंचापिरसायनंचपित्तप्रकोपानलशोधनंच ॥

अर्थ-एरंडका तेल-कृमिनाशक, सर्व प्रकारके शूलोंको निर्मूल करनेवाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निशोधक है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु । वृष्यंत्वच्यंव-यःस्थापिमेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनि शुक्रविशोधनम् । विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हंतिवातोदरानाह गुल्माष्ठीलाकटिग्रहान्॥वातशोणितविड्बन्धवर्ध्मशोथा-मविद्रधीन् । आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः ॥ एक एवनिहंतायमेरण्डस्नेहकेसरी । (भा०प्र०)

अर्थ-अंडका तेल-या अंडीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्ति-

कारक, बलदायक, कषेला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रशोधक, आमगन्धिवाला, रस और पाकमें स्वादिष्ठ, कडवा. चरपरा, कुछ कुछ दस्तावर तथा विषमज्वर, हृदयरोग, पीठ और गुह्यस्थानका शूल, वात, उदररोग, आनाह, गुल्म, अष्ठीलिका, कमरकादर्द, वातरक्त, मलबद्ध, वध्म (बद) सूजन, आम और विद्रधीरोगको नष्ट करेहै शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपी मत्त हाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूपी सिंह है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलंमधुरंगुरुश्लेष्माभिवर्द्धनम्। वातासृग्गुल्महृद्रोग जीर्णज्वरहरंपरम् ॥ हृद्वस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम्। आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्त्तशूलिनाम् ॥ हितंवातामयश्वासग्रन्थिब्रध्नविकारिणाम् ॥ (राज० नि०)

अर्थ-अंडीका तेल-मधर, भारी, श्लेष्मवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृदयरोग और जीर्णज्वरको दूर करे है तथा हृदय, वस्ति, पार्श्व, जानु, ऊरु, त्रिक्, पृष्ठ और अस्थिशूलवाले, मनुष्योंको एवं आनाह, अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त्त, शूल, वातरोग. श्वास, ग्रन्थि और ब्रध्नरोगवाले मनुष्योंको हितकारी है।

करंजतैलगुणाः।

कारंजंकटुकंपाकेकटूष्णमनिलापहम्।
कुष्ठशीर्षगदार्शोघ्नंमेदशुक्रप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहरणंश्लेष्मकृमिविध्वंसनंलघु।
मक्षिकादंशकीटादिनाशनंव्रणरोपणम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करंजका तेल-पचनेमें चरपरा, गरम, वातनाशक तथा कोढ, शीर्षरोग, बवासीर, मेद, शुक्र, प्रमेह, अध और ऊर्द्धवात, कृमि, मक्षिका और दंशादि कीडोंके विषको दूर करेहै हलका और व्रणको भरनेवाला है।

अन्यच्च।

करंजतैलंतिक्तंस्यादुष्णंचव्रणपूरकम्। नेत्ररोगंविचर्चीश्चवातंकुष्ठंव्रणंतथा ॥ कण्डूंगुल्ममुदावर्त्तंयोनिदोषंचनाशयेत्। अर्शोघ्नंलेपनाच्चैवनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करंजका तेल-कडवा, गरम, व्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, विचर्ची, वात, कोढ, व्रण, कण्डु, गुल्म, उदावर्त्त, योनिविकार, बवासीर और लेप करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है

इंगुदीतैलगुणाः ।

इंगुद्यास्तुस्मृतंतैलंस्निग्धंशीतंचकान्तिदम् ।
मधुरंकफकृद्बल्यंचक्षुष्यंधातुवर्द्धकम् ॥
केशवृद्धिकरंचैवपित्तनाशकरंमतम् । (नि०र०)

अर्थ-हिंगोटका तेल-स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, केशवर्द्धक और पित्तनाशक है।

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलंकिञ्चिदुष्णंतिक्तंकृमिकफापहम् ।
कुष्ठंव्रणंवातपित्तंपित्तंचार्शज्वरंतथा ॥
शोफोदरंरक्तरुजंकफंपित्तज्वराञ्जयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-नीमका तेल-किंचित्, गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ, घाव, वातपित्त, पित्त, बवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है।

शिग्रुतैलगुणाः ।

शिग्रुतैलंचकटुकंचोष्णमुक्तंचपिच्छिलम् ।
त्वग्दोषंचव्रणंवातंकफंकण्डूञ्चनाशयेत् ॥
शोथनाशकरंचैवमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सैंजिनेका तेल-चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू और सूजनको दूर करे है।

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मत्याःस्मृतंतैलंवामकंतिक्तकंमतम् । अत्युष्णंसारकंतीक्ष्णंपित्तलंस्मृतिबुद्धिदम् ॥ मेधाकरंलेखनंचरसायनकरंमतम् । अग्निदीप्तिकरंवातंत्रिदोषंचकफंजयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-मालकांगुनीका तेल-वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाकारक, लेखन, रसायन, अग्निप्रदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है।

विभीतकतैलगुणाः ।

अक्षतैलंस्वादुशीतंवृष्यंकेश्यंगुरुस्मृतम् ।
कान्तिप्रदंकफकरंवातंपित्तंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-बहेडेका तेल-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, केशोंको हितकारी, भारी, कान्तिजनक, कफकारी तथा वात और पित्तहारी है ।

हरीतकीतैलगुणाः ।

हरीतक्याःस्मृतंतैलंशीतलंतुवरंमधु ।
कटुपथ्यंसर्वरोगनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हरडका तेल-शीतल, कषेला, मधुर, चरपरा, पथ्य तथा सर्वप्रकारके रोग और नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

कोशाम्रतैलगुणाः ।

कोशाम्रतैलंतिक्तंस्यादम्लंबल्यंचमाधुरम् ।
पथ्यंरुचिकरंचैवपाचकंचसरंमतम् ॥
कृमिकुष्ठव्रणानांचनाशकंपरिकीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-कोशमकी गुठलीका तेल-कडवा, खट्टा, बलकारक, मधुर, पथ्य, रुचिकारक, पाचक, सारक तथा कृमि, कुष्ठ और व्रणको दूर करे है ।

कर्पूरतैलगुणाः ।

शीतांशुतैलमाक्षेपशमनंवायुनाशनम् । स्वेदनंशूलहृच्चोग्रं ज्वरघ्नंकफनुत्परम् ॥ आमवातेतथाध्मानेज्वरेचशिररोग-हे । दन्तरोगेचभग्नेचद्वैपेयंपरियुज्यते ॥ (आ०सं०)

अर्थ-कपूरका तेल-आक्षेपको शान्ति करनेवाला, वातविनाशक स्वेद अर्थात् पसीनेको लानेवाला, शूलनाशक, उग्रज्वर और कफको हरनेवालाहै तथा आमवात, आध्मान, ज्वर, शिरोरोग, दन्तरोग और भग्नरोगमें कपूरका तेल देनाचाहिये ।

अन्यच्च ।

कर्पूरतैलंकटुकंचोष्णंपित्तकरंमतम् ।
दंतदार्ढ्यप्रदंचैवकफवातविनाशकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कपूरका तेल-चरपरा, गरम, पित्तकारक, दाँतोंको दृढकरनेवाला और कफ वातविनाशक है ।

त्रपुषादितैलगुणाः।

त्रपुसैर्वारुकूष्माण्डचारबीजादितैलकम्।
केश्यंकफप्रदंशीतंमधुरंगुरुचस्मृतम्॥
वांतिकृद्वातपित्तस्यनाशनंपरिकीर्त्तितम्।

अर्थ-खीरे, ककडी, पेठा और चिरौंजी आदिका तेल-केशोंको हितकारी, कफकारी, शीतल, मधुर, भारी वमनकारक और पित्तनाशक है।

भल्लातकतैलगुणाः।

भल्लाततैलंकटुकंस्वादुचोष्णंचपित्तलम्। तिक्तंतीक्ष्णंचतुवरमूर्ध्वाधोमार्गशोधकम्॥ त्रिदोषंचकृमीन्मेहंमेदंशुक्रंकफन्तथा। अर्शोवातंचकुष्ठञ्चकण्डूंचैवविनाशयेत्॥ गुणास्तुम्बरकस्यापितैलस्यैतेबुधैःस्मृताः।

अर्थ-भिलावेका तेल-चरपरा, स्वादिष्ट, गरम, पित्तकारक, कड़वा, तीक्ष्ण, कषेला, अधोर्ध्व दोषको शोधनेवाला तथा त्रिदोष कृमि, प्रमेह, शुक्र, कफ, बवासीर, वात, कोढ और खुजलीको दूर करैहै तुम्बुरुके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने।

त्रिवृत्तैलगुणाः।

त्रिवृत्तैलंतुशीतंस्याद्वातपित्तकफापहम्।

अर्थ-निसोथके बीजोंका तेल-शीतल और वात-पित्त-कफनाशक है।

देवदारुतैलगुणाः।

तैलन्तुदेवदारोस्तुकटुतिक्तंकषायकम्।
व्रणशुद्धिकरंवातकृमिकुष्ठविनाशकम्॥

अर्थ-देवदारुका तेल-चरपरा, कडवा, कषेला, व्रणशोधक तथा वात, कृमि और कुष्ठनाशक है।

रालतैलगुणाः।

सर्जतैलंतुविस्फोटकुष्ठदद्रुविनाशकम्।
कृमीन्कफंचवातंचनाशयेदितिकीर्त्तितम्॥

अर्थ-रालका तेल-विस्फोट, कुष्ठ, दद्रु, कृमि, कफ और वातविनाशक है।

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रबीजभवंतैलंसुगंधिमधुरंसतम् ।
रूक्षंकिञ्चित्पित्तलंचतिक्तंचविशदंमतम् ॥
कफवातहरंचैवमुनिभिःपरिकीर्तितम् ।

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-सुगंधि, मधुर, रूखा, किंचित् पित्तकारक, कडवा, विशद् और कफवातनाशक है ।

मधूकतैलगुणाः ।

मधूकतैलंमधुरंपिच्छिलंतुवरंसतम् ।
कफपित्तज्वरंचैवदाहंपित्तंचनाशयेत् ॥
पलाशपाटलायास्तुतैलस्यैतेगुणामताः ।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छिल, कषेला तथा कफ, पित्त, ज्वर, दाह और पित्तको दूर करेहै । पलाश और पाडलके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

वन्दातैलगुणाः ।

वन्दाकतैलंमधुरंगुरुःकटुरसंमतम् ।

अर्थ-वंदाका तेल-मधुर, भारी और कटुरसान्वित है ।

अंकोलतैलगुणाः ।

अंकोलतैलंवातघ्नमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।
कफनाशकरंप्रोक्तंपूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥

अर्थ-अंकोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेसे त्वचाके रोग दूर होते हैं और कफनाशक है ।

दंतीतैलगुणाः ।

दन्त्यास्तैलंस्वादुकेश्यंलेपनात्सर्वकुष्ठहम् ।
वातहंप्राशनेनैवपित्तस्यास्रस्यनाशकम् ॥

अर्थ-दंतीका तेल-स्वादिष्ठ, केशोंको हितकारी, लेपकरनेसे सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरे है, पीनेसे वातको हरे और रक्तपित्तनाशक है ।

पुत्राजीवकतैलगुणाः ।

पुत्रजीविभवंतैलंकफवातविनाशकम् ।

अर्थ-जियापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणाः ।

त्रायमाणभवंतैलंसर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अर्थ-त्रायमाणका तेल-सर्वरोगनाशक है ।

शंखिनीतैलगुणाः ।

शंखिनीसम्भवंतैलंतीक्ष्णंतिक्तंकटुस्मृतम् । रक्तपित्तकरं चैवसारकंचमतंलघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नंकफवातहरंपरम्। शुक्रमेदहरंप्रोक्तंपूर्वैर्वैद्योत्तमैःपुरा ॥ (इ० र०)

अर्थ-शंखिनीका तेल-तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक, सारक, हलका तथा कृमि, कोढ, ववासीर, प्रमेह, कफवात, शुक्र और मेदनाशक है ।

पुन्नागतैलगुणाः ।

पुन्नागतैलंकटुकंसरंतिक्तंचलेखनम् ।
पित्तलंवातरक्तघ्नंदाहनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-पुन्नागका तेल-चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक, वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैलगुणा ।

कपित्थनलंतुवरंस्वादुचाखुविषापहम् ।

अर्थ-कैथके वीजोंका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ और मूसेके विषको हरे है ।

खसखसतैलगुणाः ।

खसबीजस्यतैलन्तुबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम् ।
स्वादुशीतंकफकरंवातनाशकरंमतम् ॥

अर्थ-खसखसका तेल-वलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, कफकारक और वातविनाशक है ।

नारिकेलतैलगुणाः ।

नारिकेलभवंतैलंरसेपाकेमधुस्मृतम् ।
बल्यंकेश्यंवातहरमुष्णंनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-नारियलका तेल-रस और पाकमें मधुर, वलकारक, केशोंको हितकारी, वातनाशक, गरम और नेत्ररोगनाशक है ।

पीलुतैलगुणाः ।

पीलुतैलंसरंचोष्णंकुष्ठवातक्षतापहम् । शोथंपित्तरुजंकण्डूं

गण्डमालांविनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिंरक्तदोषंनाशयेदितिचस्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येतएवगुणामताः ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गंडमाला, अंत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिंशपादितैलगुणाः ।

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलंतुतुवरंतिक्तंकटुकंवातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसों, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ, कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करे है ।

पृथ्वीकादितैलगुणाः ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकंचतैलन्तुतीक्ष्णंपाकेकटुस्मृतम् ॥ सरमुष्णंचतिक्तंचलघुकुष्ठकफापहम् ।मेहमूर्च्छामदकृमिविनाशनंपरमंमतम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिकर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कवीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा, सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम् ।
अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ।
शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनीनाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है । शिरस्तैलमर्दनगुणाः ।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसःशिरःशूलंनजायते । नखालित्यंनपालित्यंनकेशाःप्रपतन्तिच ॥ दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिच घनायताः । इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होताहै तथा केशोंकी अल्पता, पकता और केश नहीं पतन होतेहैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोमे प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होतीहै ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहाः ।
नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुजः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालतेहैं-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊंचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नही होते है ।

मर्द्दनेतैलगुणाः ।

"घृतादष्टगुणंगुरु"

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिकहैं ।

तैलंनसेवयेद्धीमान्यस्यकस्यचयद्भवेत् ।
विषसात्म्यगुणत्वाच्चयोगेतन्नप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि, जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिकेवलार्कगुणंप्रिये ।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं ।

हरीतक्यर्कगुणाः।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

विभीतकार्कगुणाः।

विभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है।

आमलक्यर्कगुणाः।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोहंविनाशयेत्।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है।

नागरार्कगुणाः।

शुण्ठ्याविबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत्।

अर्थ-सोंठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है।

आर्द्रकार्कगुणाः।

आर्द्रकस्यज्वरंदाहंहरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत्।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत्।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है।

मरीचार्कगुणाः।

मरीचकःश्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः।

ग्रन्थिकस्यप्लीहगुल्मकफवातहरःपरः।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है।

चव्यार्कगुणाः।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापहः।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशकहै।

गजपिपल्यर्कगुणाः।

अर्कस्तुगजपिप्पल्यावातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत्।

अर्थ–गजपीपलका अर्क–वात, कफ और मंदाग्निनाशक है।

चित्रकार्कगुणाः।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोपहा।

अर्थ–चीतेका अर्क–अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोषको हरे है।

यमान्यर्कगुणाः।

यमान्याःपाचनोरुच्योदीपनः शुक्रशूलहृत्।

अर्थ–अजवायनका अर्क–पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है।

अजमोदार्कगुणाः।

अजमोदोद्भवोवातकफहावस्तिशोधनः।

अर्थ–अजमोदका अर्क–वात कफनाशक और वस्तिशोधक है।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः।

पारसीकयमान्यास्तुग्राहीपाचकमादकः।

अर्थ–खुरासानी अजवायनका अर्क–मलरोधक, पाचक और मदकारक है

जीरकार्कगुणाः।

जीरकस्यतुसंग्राहीगर्भाशयविशुद्धिकृत्।

अर्थ–जीरेका अर्क–ग्राही और गर्भाशयशोधक है।

कृष्णजीरकार्कगुणा.।

कृष्णजीरस्यचक्षुष्योगुल्मच्छर्द्यतिसारजित्।

अर्थ–कालेज़ीरेका अर्क–नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूरकरेहै।

कारवीजीरकार्कगुणाः।

कारव्याबलकृच्चार्कोज्वरघ्नःपाचनःसरः।

अर्थ–कलोंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है।

धान्यकार्कगुणाः।

धान्यकस्यतृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित्।

अर्थ–धनियेका अर्क–तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है।

शतपुष्पार्कगुणाः ।

मिश्याज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेयार्कगुणाः ।

मिश्रेयायावह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणाः ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशकहै ।

मेथिकार्कगुणाः ।

मेथिकायाःश्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिकार्कगुणाः ।

वनमेथ्याःसर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोंके सर्व रोगोंको हरे है ।

चन्द्रसूरार्कगुणाः ।

चन्द्रसूरस्यहिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंग्वर्कगुणाः ।

हिङ्गुनःपाचनोरुच्यःकृमिशूलोदरापहः ।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोगनिवारक है ।

वचार्कगुणाः ।

वचायावह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबंध, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचार्कगुणाः ।

पारसीकवचायास्तुभूतोन्मादबलंहरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिञ्जनार्कगुणाः ।

कुलिञ्जनस्यस्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ–कुलिंजनका अर्क–स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुख-शोधक है ।

स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्कोविशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ–स्थूलग्रन्थि वचका अर्क–विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपान्तरवचार्कगुणाः ।

द्वीपान्तरवचायास्तुहरेच्छूलंफिरङ्गकम् ।

अर्थ–चोपचीनीका अर्क–शूल और फिरंगरोगनाशक है ।

हपुषार्कगुणाः ।

हपुषायाहरेत्प्लीहंविषमोहञ्चदारुणम् ।

अर्थ–हाऊबेरका–अर्क–प्लीहा, विष और दारुणमूर्च्छाको हरेहै ।

क्षुद्रहपुषार्कगुणाः ।

वपुषायाःसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ।

अर्थ–छोटेहाऊबेरका अर्क–वात, बवासीर, संग्रहणी गुल्म और शूल-नाशक है ।

विडङ्गार्कगुणाः ।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ।

अर्थ–वायविडंगका अर्क–उदरोग, कफ, कृमि, वात और विबंध नाशक है ।

तुम्बुरोरर्कगुणाः ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत् ।

अर्थ–तुम्बुरुका अर्क–शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वंशलोचनार्कगुणाः ।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ–वंशलोचनका अर्क–तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरे है ।

समुद्रफेनार्कगुणाः ।

समुद्रफेनजःशीतोरेचकःकफहृत्परः ।

अर्थ–समुद्रफेनका अर्क–शीतल, दस्तावर और कफनाशक है ।

जीवकार्कगुणाः ।

जीवकोत्थःशुक्रकफबलकृच्छीतलःसमः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र, कफ और बलकारक और समशीतल है ।

ऋषभकार्कगुणाः ।

आर्षभःपित्तदाहास्रकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त, दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षयकरे है ।

मेदार्कगुणाः ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तुदृश्यःस्तन्यःकफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणाः ।

महामेदोद्भवः शीतोरक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात, रक्त और ज्वरनाशक है ।

काकोल्यर्कगुणाः ।

काकोल्याःशुक्रलःशीतोपित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यर्कगुणाः ।

क्षीरकाकोलिकाजातोबृंहणोदाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यर्कगुणाः ।

ऋद्ध्याबल्यस्त्रिदोषघ्नोरक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यर्कगुणाः ।

वृद्ध्यागर्भगतःशीतःक्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुकार्कगुणाः ।

मधुयष्ट्याःकेशकरःस्वर्य्यःपित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मुलेठीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकारोंको हरेहै ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणाः ।

जलयष्ट्याविषच्छर्द्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ–जलमुलेठीका अर्क–विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है।

काम्पिल्लार्कगुणाः ।

काम्पिल्लस्यविरेकीस्यान्मेहनस्यविकारनुत् ।

अर्थ–कवीलेका अर्क–विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्कगुणाः ।

आरग्वधस्यपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ–अमलतासका अर्क–रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्कगुणाः ।

भूनिम्बस्यतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अर्थ–चिरायतेका अर्क–तृषा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमिनाशक है ।

वत्सार्कगुणाः ।

भद्रमानस्तुपित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ–इन्द्रजौका अर्क–रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है ।

मदनफलार्कगुणाः ।

मदनोत्थश्छर्द्दनेनचतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ–मैनफलका अर्क–वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नार्कगुणाः ।

रास्नोद्भवःसमीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ–रास्नाका अर्क–वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है ।

नागभिन्नार्कगुणाः ।

नागभिन्नोद्भवाभोगीलूताद्याखुविकारहृत् ।

अर्थ–नाकुलीका अर्क–सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरेहै ।

माचिकार्कगुणाः ।

माचिकाजस्तुपित्तास्रपक्कातीसारहालघुः ।

अर्थ–मोईयेका अर्क–हलका, रक्तपित्त और पक्कातिसारनाशक है ।

तेजस्विन्यर्कगुणाः ।

तेजस्विन्याः श्वासकासकफघ्नो वह्निदीपनः ।

अर्थ-तेजबलका अर्क-श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ।

ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकांगुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणाः ।

कुष्ठस्य हन्ति वातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है ।

पौष्करार्कगुणाः ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकरमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणाः ।

हेमाह्वायारेकवान्तिकरः कण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणाः ।

शृङ्गी हरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाशिंगीका अर्क-ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणाः ।

कट्फलोत्थः श्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिं हरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणाः ।

भार्ग्या हरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेदार्कगुणाः ।

पाषाणभेदजोयोनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ-पाषाणभेद्का अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्कगुणाः ।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-धायके फूलोंका अर्क-तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्प-रोगनाशक है ।

समङ्गार्कगुणाः ।

माञ्जिष्ठजोविषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणाः ।

कुसुम्भजोवर्णकरोरक्तपित्तकफापहः ।

अर्थ-कसूमका अर्क-वर्णको सुंदर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षार्कगुणा ।

लाक्षाजःकृमिवीसर्पव्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लाखका अर्क-कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठनाशक है ।

हरिद्रार्कगुणाः ।

हरिद्रायामेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोग-नाशक है ।

आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ।

आरण्यकहरिद्रायाःकुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ-वनहलदीका अर्क-कोढ, वात और रक्तविकारविनाशक है ।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ।

कर्पूरकहरिद्रायाःसर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्रार्कगुणाः ।

दार्व्याविशेषतोलेपान्नेत्रकर्णस्यरोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्ण-रोगको हरैहै ।

रसाञ्जनार्कगुणाः ।

रसाञ्जनोद्भवोनेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्थ-नेत्रविकार और व्रणदोषनिवारक है ।

अवल्गुजार्कगुणाः ।

बाकुच्याःकृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापहः ।

अर्थ-बापचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है ।

चक्रमर्दार्कगुणाः ।

प्रपुन्नाटस्यहन्त्येवकण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ-चकवडका अर्क-खुजली, दाद विष और वातविनाशक है ।

अतिविषार्कगुणाः ।

विषजोदीप्तिकार्य्यर्कःकफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीसका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशकहै।

लोध्रार्कगुणाः ।

लोध्रजःशीतलोग्राहीचक्षुष्यःकफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्रार्कगुणाः ।

बृहत्पत्रोद्भवोनेत्र्योज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है ।

भल्लातकार्कगुणाः ।

भल्लातकोद्भवोहन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क- ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है ।

गुडूच्यर्कगुणाः ।

गुडूच्यादीपनःश्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरेहै ।

बिल्वार्कगुणाः ।

बैल्वःश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ।

अर्थ-बेलका अर्क-कफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है ।

काश्मर्य्यर्कगुणाः।

गाम्भारीजोभ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत्।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृषा, शूल, ववासीर, विष और दाह-नाशक है।

पाटलार्कगुणाः।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत्।

अर्थ-पाडलका अर्क-वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और अरुचिनिवारक है।

अग्निमन्थार्कगुणाः।

अग्निमन्थोद्भवःशोफकृमिपाण्डुबलासनुत्।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है।

श्योनाकार्कगुणाः।

श्योनाकजस्तुगुल्मार्शःकृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत्।

अर्थ-श्योनाकका अर्क-गुल्म, ववासीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है।

शालिपर्ण्यर्कगुणाः।

शालिपर्ण्याःक्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा।

अर्थ-शालिपर्णीका अर्क-क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसार निवारक है।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः।

पृश्निपर्ण्याज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत्।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है।

बृहत्यर्कगुणाः।

वार्त्ताक्यांज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा।

अर्थ-बृहती अर्थात् कटाईका अर्क-ज्वर, मुखकी विरसता, मलदोष, अरुचि और शूलनाशक है।

श्वेतकण्टकार्यर्कगुणाः।

कण्टकार्य्यागर्भकरःपाचनःकफकासहा।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको दूर करे है।

कण्टकार्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्यादीपनश्श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है।

गोक्षुरार्कगुणाः ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वात-विनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणाः ।

जीवन्त्याःसारहृन्नेत्र्योदोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसार-नाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः ।

मुद्गपर्ण्याःशोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारक है ।

माषपर्ण्यर्कगुणाः ।

माषपर्ण्याःशुक्रकरोवातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डार्कगुणाः ।

पञ्चांगुलोद्भवःशूलशिरःपीड़ोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशकहै ।

रक्तैरण्डार्कगुणाः ।

रुबुकोत्थोद्भवःश्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अंडका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है ।

मन्दारार्कगुणाः ।

मन्दारजोवातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है ।

अर्क्यर्कगुणाः ।

अर्क्यर्कःप्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणाः ।

वज्रीजोलेपतोहन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुंड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलार्कगुणाः ।

सातलोत्थःकफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्क-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है।

लांगल्यर्कगुणाः ।

लाङ्गल्यालेपतोहन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहृत् ।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरैहै।

श्वेतकरवीरार्कगुणाः ।

करवीरोद्भवोनेत्रशोफकुष्ठव्रणापहः ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग, सूजन, कोढ और व्रणविनाशक है ।

रक्तकरवीरार्कगुणाः ।

चण्डातोत्थस्तुविषहृद्भक्षणेलेपनेसुहृत् ।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमे विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है ।

धत्तूरबीजार्कगुणाः ।

धत्तूरजोहरेल्लेपाद्यूकाकृमिविषादिकम् ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि और विषदोषनाशक है ।

वासार्कगुणाः ।

वासोद्भवोज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ और क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटार्कगुणाः ।

पार्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम, तृषा, कफ और ज्वरको हरे है ।

निम्बार्कगुणाः ।

निम्बजःश्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम, तृषा, खाँसी, ज्वर, अरुचि और वमननिवारक है ।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवोगुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ-बकायननीमका अर्क गुल्म और मूषेके विषको हरे है ।

पारिभद्रार्कगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद और कृमिविनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारोगण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है ।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तुपित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय और खाँसीको हरेहै ।

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्कोरुचिकृच्छुक्रलोग्राहिदीपनः ।

अर्थ-लालसैंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवोहन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सफेद सैंजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

शिग्रुजार्कगुणाः ।

शिग्रूजोविषहृन्नेत्र्यस्तस्यनस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसैंजिनेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्याःकर्णशूलशोफव्रणविषापहः ।

अर्थ-कोयलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण और विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवोहन्तिशूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्हालुका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्कोहरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिंलघुः ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है।

कुटजार्कगुणाः।

कौटजोदीपनःशीतःकफतृष्णामकुष्ठजित्।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणाः।

कारञ्जःकफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः।

अर्थ-करंजका अर्क-कफ, गुल्म, बवासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है।

घृतकरञ्जार्कगुणाः।

घृतकारञ्जकोभेदीवातार्शःकृमिकुष्ठजित्।

अर्थ-घृतकरंजका अर्क-भेदक तथा वात, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणाः।

कारंजोवान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित्।

अर्थ-करंजुयेका अर्क-वमन, वात, बवासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है।

श्वेतगुञ्जार्कगुणाः।

उच्चटार्कःकेशकरोवातपित्तकफापहः।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

रक्तगुञ्जार्कगुणाः।

गुञ्जायाहरतेश्वासमुखशोषश्रमज्वरान्।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है।

शूकशिम्ब्यर्कगुणाः।

कपिकच्छूद्भवोवृष्योबृंहणोवाजिकर्म्मकृत्।

अर्थ-कौंछका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और वाजीकरण है।

मांसरोहिण्यर्कगुणाः।

मांसरोहिण्युद्भवस्तुवृष्योदोषत्रयापहः।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है।

चिह्लकार्कगुणाः।

चैह्लःकुर्य्याद्धातुपुष्टिंतत्फलंमारयेज्जनान्।

अर्थ-चिल्हकका अर्क-धातुपुष्टिकारक और इसका फल प्राणनाशक है।

वेतसार्कगुणाः।

वेतसोहरतेदाहंशोथाशोंयोनिरुग्व्रणान्।

अर्थ-वेतका अर्क-दाह,सूजन,बवासीर, योनिरोग और व्रणविनाशक है।

जलवेतसार्कगुणाः।

जलवेतसजोग्राहीशीतोवातप्रकोपनः।

अर्थ-जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है।

हिज्जलार्कगुणाः।

हिज्जलार्कस्तुहरतेचराचरविषंस्फुटम्।

अर्थ-समुद्रफलका अर्क-स्थावर और जंगम दोनों प्रकारके विषोंको हरैहै।

अङ्कोटार्कगुणाः।

अङ्कोटकस्यशूलामशोथग्रहविषापहः।

अर्थ-अंकोलका अर्क-शूल, आम, सूजन, अंगग्रह और विषविनाशक है।

बलार्कगुणाः।

बलार्कोग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः।

अर्थ-खिरेंटीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त,-रक्तपित्त और क्षतनाशक है।

अतिबलार्कगुणाः।

अतिपूर्वाबलार्कस्तुमूर्च्छामोहहरःपरः।

अर्थ-कंघीका अर्क-मूर्च्छा और मोहनाशक है।

लक्ष्मणामूलार्कगुणाः।

लक्ष्मणार्कन्तुयासेवेद्वन्ध्यापिलभतेसुतम्।

अर्थ-लक्ष्मणाके अर्कको बाँझ स्त्रीभी सेवन करे तो पुत्रवाली होतीहै।

स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः।

स्वर्णवल्ल्याःशिरःपीडांत्रिदोषान्हन्तिदुग्धदः।

अर्थ-स्वर्णवल्लीका अर्क-शिरकी पीडा और त्रिदोषनाशक है तथा दुग्धदायक है।

कार्पास्यर्कगुणाः।

कार्पास्यर्कःकर्णसंस्थःकर्णरोगान्विनाशयेत्।

अर्थ-कपासका अर्क-कानमें डालनेसे कानके रोगोंको हरैहै।

वंशार्कगुणाः ।

वंशजःकफपित्तघ्नःकुष्ठघ्नोव्रणशोषजित् ।

अर्थ–बाँसका अर्क–कफ, पित्त, कोढ, व्रण और शोषनिवारक है ।

नलार्कगुणाः ।

नलार्कोवस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ–नलका अर्क–वस्तिकी पीडा, योनिकी पीडा, दाह, पित्त और विसर्परोगनाशक है ।

पाण्ड्यर्कगुणाः ।

पाण्ड्योजयेज्ज्वरच्छर्द्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।

अर्थ–पाण्डीरका अर्क–ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुंखार्कगुणाः ।

शरपुंखोद्भवःप्लीहगुल्मव्रणविषापहः ।

अर्थ–सरफोंकेका अर्क–प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषनाशक है ।

दुरालभार्कगुणाः ।

यवासजोमदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत ।

अर्थ–जवासेका अर्क–मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ और खाँसीको हरे है ।

मुण्ड्यर्कगुणाः ।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ–मुण्डीका अर्क–अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है ।

अपामार्गार्कगुणाः ।

अपामार्गभवश्छर्द्दिकफमेदोऽनिलापहः ।

अर्थ–चिरचिटेका अर्क–वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है ।

रक्तापामार्गार्कगुणाः ।

आरक्तापामार्गभवोधातुस्तम्भनकारकः ।

अर्थ–लालचिरचिटेका अर्क–धातुस्तम्भक है ।

कोकिलाक्षार्कगुणाः ।

कोकिलाक्षभवःशीघ्रंसेकाच्छोथंनिवारयेत् ।

अर्थ–तालमखानेका अर्क–सेक करनेसे शोफको हरे है ।

अस्थिसंहारिकार्कगुणाः ।

अस्थिसंहारिकायास्तुभग्नसंधानकृत्स्थिरः ।

अर्थ-अस्थिसंहारकाका अर्क-टूटेहुए हाडोंको जोडनेवाला है ।

कुमार्य्यर्कगुणाः ।

कुमारिकायाग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ।

अर्थ-घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि, अग्निदग्ध और विस्फोटनिवारक है ।

पुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायाःश्वेतायाःसर्वनेत्रामयापहः ।

अर्थ-विषखपरेका अर्क-सर्वप्रकारके नेत्ररोगनाशक है ।

रक्तपुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायारक्तायाग्राहीपित्तास्रनाशनः ।

अर्थ-सांठका अर्क-मलरोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

प्रसारिण्यर्कगुणाः ।

प्रसारिण्यावातहरोवृष्यःसन्धानकृत्सरः ।

अर्थ-पसरनका अर्क-वातविनाशक, वृष्य, व्रणनाशक और सारक है ।

शारिवार्कगुणाः ।

शारिवायावह्निमांद्यकासामयविनाशनः ।

अर्थ-सरिवनका अर्क-अग्निमान्द्य और कासरोगनाशक है ।

भृङ्गराजार्कगुणाः ।

भृङ्गराजस्यदन्त्योऽर्कःकेश्योरुच्यःशिरोर्त्तिहा ।

अर्थ-भँगरेका अर्क-दांतोंको हितकारी, केशोंको सुंदरकरनेवाला, रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्प्यर्कगुणाः ।

शणपुष्पीलतायास्तुह्यर्कःपित्तकफान्तकः ।

अर्थ-शणपुष्पी, पटशनका अर्क-पित्त और कफनाशक हैं ।

त्रायन्त्यर्कगुणाः ।

त्रायन्त्यर्कःशूलविषविलेपिज्वरनाशनः ।

अर्थ-त्रायमाणका अर्क-शूल, विष और विलेपकज्वरनाशक है ।

मूर्वार्कगुणाः ।

मूर्वायामेहहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

अर्थ-मूर्वाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशक हैं।

काकमाच्यर्कगुणाः ।

काकमाच्यानेत्रहितश्छर्द्दिहृद्रोगनाशनः ।

अर्थ-मकोयका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशकहै।

काकनासार्कगुणाः ।

काकनासाभवोवाम्यःशोफार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ।

अर्थ-काकनासा (कौआठोडी) का अर्क-वमनकारक तथा सूजन ववासीर और श्वित्रकुष्ठनाशक है।

काकजंघार्कगुणाः ।

काकजंघोद्भवोहन्याज्ज्वरकण्डूविषक्रिमीन् ।

अर्थ-काकजंघा(मसी) का अर्क-ज्वर, कण्डू, विष और कृमिरोगनाशक है।

नागाह्वार्कगुणाः ।

नागाह्वायाहरेच्छूलंयोनिदोषवमिक्रिमीन् ।

अर्थ-नागवला गंगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोष, वमन और कृमिरोगनाशक है।

मेषशृंग्यर्कगुणाः ।

मेषशृंग्याःश्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा ।

अर्थ-मेढाशिंगीका अर्क-श्वास, खाँसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और शूलनाशक है।

हंसपद्यर्कगुणाः ।

हंसपद्याहन्तिलूताम्भूतरक्तव्रणान्विषम् ।

अर्थ-हंसपदीका अर्क-मकडीका विष, भूतोन्माद, रक्तव्रण और अन्यप्रकारके विषोंको हरे है।

सोमवल्ल्यर्कगुणाः ।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नःक्षीरकृच्चरसायनः ।

अर्थ-सोमलताका अर्क-त्रिदोषनाशक, क्षीरजनक और रसायन है।

आकाशवल्ल्यर्कगुणाः ।

आकाशवल्ल्याःशीतोऽर्कःपित्तश्लेष्मामनाशनः ।

अर्थ-आकाशवेलका अर्क-शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है।

पातालगरुडार्कगुणाः ।

पातालगरुडीजोऽर्कोवृष्योवातगदापहः ।

अर्थ-छिरहिंटेका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और वातरोगनाशक है ।

वन्दाकार्कगुणाः ।

वन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तुविषरक्षोव्रणापहः ।

अर्थ-वंदाका अर्क-विषदोष, राक्षसबाधा और व्रणविनाशकहै ।

वटपत्रार्कगुणाः ।

वटपत्रभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ।

अर्थ-वटपत्रीका अर्क-गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगनाशक है ।

हिंगुपत्र्यर्कगुणाः ।

हिंगुपत्र्याविबन्धार्शोश्लेष्मगुल्मानिलापहः ।

अर्थ-हिंगुपत्रीका अर्क-विबन्ध, बवासीर, श्लेष्म, गुल्म और वातरोगनाशक है ।

वंशपत्र्यर्कगुणाः ।

वंशपत्र्याःपाचनोष्णोहृद्वस्तिगदसंघहृत् ।

अर्थ-वंशपत्रीका अर्क-पाचन, गरम तथा हृदयरोग और वस्तिरोगनाशक है ।

मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः ।

मत्स्याक्ष्यर्कोग्राहिशीतःकुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-मच्छेछीका अर्क-मलरोधक, शीतल तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

सर्पाक्ष्यर्कगुणाः ।

सर्पाक्ष्यारोपणःसर्पवृश्चिकादिविषापहः ।

अर्थ-गंडिनीका अर्क-व्रणको भरनेवाला तथा सर्प और वृश्चिकादिके विषको हरनेवाला है ।

शंखपुष्प्यर्कगुणाः ।

शंखपुष्प्याविषहरःकान्तिस्मृतिबलाग्निदः ।

अर्थ-शंखपुष्पीका अर्क-विषनाशक तथा कान्ति, स्मरणशक्ति; बल और अग्निकारक है ।

अर्कपुष्पार्कगुणाः ।

अर्कपुष्पाकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारहा ।

अर्थ-अर्कपुष्पीका अर्क-कृमि, श्लेष्म, प्रमेह और पित्तरोगनाशक है ।

लज्जालुकार्कगुणाः ।

लज्जालुकाया भगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत् ।

अर्थ-लज्जालुका अर्क-योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसाररोगनिवारक है।

अलम्बुषार्कगुणा ।

अलम्बुषासम्भवोऽर्कः कृमिपित्तकफापहः ।

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुभेद) का अर्क-कृमि, पित्त और कफनाशक है।

दुग्धिकार्कगुणाः ।

दुग्धिकायाः कफकरो वृष्यः स्तम्भी कृमिप्रणुत् ।

अर्थ-दुद्धीका अर्क-कफकारक, वृष्य, स्तम्भक और कृमिनाशक है ।

भूम्यामलकार्कगुणाः ।

भूम्यामल्याः कासतृषाकफपाण्डुक्षतापहः ।

अर्थ-भुईआमलेका अर्क-खाँसी, तृषा, कफ, पाण्डु और क्षतरोगनाशक है ।

ब्राह्म्यर्कगुणाः ।

ब्राह्म्या बुद्धिप्रदश्चार्कः षण्मासाभ्यासतः कविः ।

अर्थ-ब्राह्मीका अर्क-बुद्धिवर्द्धक, इसको छः महीने सेवन करनेसे कवि होजाता है ।

ब्रह्ममण्डूक्यर्कगुणाः ।

ब्रह्ममण्डूकजः पाण्डुविषशोफज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डु, विष, सूजन और ज्वरनाशक है ।

द्रोणपुष्प्यर्कगुणाः ।

द्रोणपुष्प्या ज्वरश्वासकामलाशोफजन्तुहृत् ।

अर्थ-द्रोणपुष्पीका अर्क-ज्वर, श्वास, कामला, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

सूर्य्यमुख्यर्कगुणा ।

सूर्य्यमुख्युद्भवः स्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुहा ।

अर्थ-सूर्य्यमुखीका अर्क-विस्फोट, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगनाशक है ।

वन्ध्याकर्कोटक्यर्कगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीजातः सर्पदंशव्रणापहः ।

अर्थ-बाँझककोडेका अर्क-सर्पविष और व्रणविनाशक है ।

मार्कंडिकार्कगुणाः ।

मार्कण्डिकायादुर्गंधविषगुल्मोदरापहः ।

अर्थ-मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गंध, विष, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यर्कगुणाः ।

देवदाल्याःशूलगुल्मश्लेष्माशोंवातजित्सरः ।

अर्थ-देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर और वातनाशक है तथा दस्तावर है ।

धत्तूरार्कगुणाः ।

ग्राहीधत्तूरजःशीतोवह्निकृद्व्रणदाहहा ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा व्रण और दाहनाशक है ।

गोजिह्वार्कगुणाः ।

गोजिह्वायामेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ-गोभीका अर्क-प्रमेह, खाँसी, व्रण, अतिसार और ज्वरनाशक है ।

नागपुष्प्यर्कगुणाः ।

नागपुष्प्याःसर्वविषसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ-नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विष और सर्वप्रकारके ग्रहदोष-निवारक है ।

बिल्वतर्ष्यर्कगुणाः ।

बैल्वतर्ष्योमूत्रघाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-बेलतरीका अर्क-मूत्राघात, पथरी, योनिरोग और वातविनाशक है ।

छिक्कन्यर्कगुणाः ।

छिक्कन्यावह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-नाकछिकनाका अर्क-अग्निकारक, रुचिजनक तथा बवासीर, कोढ और कृमिनाशक है ।

कुकुन्दरार्कगुणाः ।

कौकुन्दरोज्वरंरक्तंमुखशोषंकफंहरेत् ।

अर्थ-कुकुरौंदेका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनार्कगुणाः।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णःकफशोफास्रवातजित् ।(इ०लङ्कानाथः)

अर्थ–सुदर्शनका अर्क–अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिरविकार और वातनाशक है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽर्कवर्गः समाप्तः॥ १८॥



अथ मधुवर्गः।

मधुनामानि।

माक्षिकंमधुचक्षौद्रंपवित्रंकुसुमासवम् ।
भृङ्गवातंसारघंचपित्र्यंपुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ–माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (माक्षीक, पुष्पासव, पुष्परसाह्वय, माध्वीक, वरटीवांत मकरन्दरस)।

संस्कृतभाषामें	मधु, माक्षिक।
हिन्दीभाषामें	मधु, सहत।
बंगभाषामें	मधु, मौ।
मराठीभाषामें	मध।
गुजरातीभाषामें	मध।
कर्णाटकीभाषामें	जेनतुप्प।
तैलिङ्गीभाषामें	तेनी।
इंग्रेजीभाषामें	हनी। Honay
लैटिन्भाषामें	मेल। Mel
फारसीभाषामें	शहद, अगवीन।
अरबीभाषामें	असल्लुल् नहल्।

मधुसामान्यगुणाः।

शीतंकषायंमधुरंलघुस्यात्सन्दीपनंलेहनमेवशस्तम् ।
संशोधनंवाव्रणशोधनञ्चसंरोपणंहृद्यतमञ्चबल्यम् ॥
त्रिदोषनाशंकुरुतेचपुष्टिंकासक्षयेवाक्षतजेचछर्द्याम् ।

हिक्काभ्रमेशोषणपीनसानांरक्तप्रमेहेश्वसनेतिसारे ॥
रक्तातिसारेचसरक्तपित्तेतृण्मोहहृत्पार्श्वगदेऽपिशस्तः ।
नेत्रामयेवाग्रहणीगदेवाविषेप्रशस्तंमधुह्यल्पवातलम् ॥
(इतिहारीतसंहितायाम्)

अर्थ-मधु (सहत)-शीतल, कषेला, मधुर, हलका, अग्निप्रदीपक, चाटनेमें उत्तम, संशोधक, व्रणको शोधनेवाला, घावको भरनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारी, त्रिदोषहारी, पुष्टिकारी तथा खाँसीमें, क्षयमें, क्षतमें, छर्दीमें, हिक्कारोगमें, भ्रममें, शोषमें, पीनसरोगमें, रक्तप्रमेहमें, श्वासमें, अतिसारमें, रक्तातिसारमें, रक्तपित्तमें, तृषामें, मोहमें, हृदयरोगमें, पार्श्वकी वेदनामें, नेत्ररोगमें संग्रहणीमें और विषरोगमें हितकारी है और कुछेक वातकारक है ।

अन्यच्च ।

मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंस्वर्य्यंचग्राहकम् । चक्षुष्यंलेखनंचाग्निदीपकंव्रणशोधकम् ॥ नाडीशुद्धिकरंसूक्ष्मंरोपणंमृदुवर्णकृत् । मेधाकरंचविशदंवृष्यंरुचिकरंमतम् ॥ आनन्दकृच्चतुवरंचाल्पवातप्रदंमतम् । कुष्ठार्शकासपित्तघ्नंरक्तदोषकफापहम् ॥ मेहक्रिमिमदग्लानितृष्णावान्त्यतिसारनुत् । दाहंक्षतंक्षयंमेदंक्षयंहिक्कांत्रिदोषकम् ॥ आध्मानवातंचविषंमलवन्धंचनाशयेत् । सर्वमेतद्व्रणानांतुरोपणंशोधकंमतम् ॥ अस्थिसन्धानकृत्तत्तुतप्तञ्चविषवन्मतम् । उष्णद्रव्यैश्चोष्णकालेभक्षितंतापदायकम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मधु-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, स्वरको शुद्धकरनेवाला, ग्राही, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, अग्निप्रदीपक, व्रणशोधक, नाडीको शुद्धकरनेवाला, सूक्ष्म, रोपण, मृदु, वर्णकारक, मेधाजनक, विशद, वृष्य, रुचिकारक, आनन्दजनक, कषेला, अल्पवातकारक, तथा कोढ, बवासीर, खाँसी पित्त, रुधिरविकार, कफ, प्रमेह, कृमि, मद, ग्लानि, तृषा, वमन, अतिसार, दाह, क्षतक्षय मेद, क्षय, हिचकी, त्रिदोष, आध्मान, वायु, विष और मलबद्ध-

तानाशक है। सर्वप्रकारके मधु-व्रणोंको भरनेवाले, शोधनेवाले, टूटेहाडोंको जोडनेवाले हैं, यह गरम कियाहुवा, अथवा उष्णकालमें उष्ण द्रव्योंके साथ खाया हुवा विषके समान सन्तापको करता है।

मधुजातिभेदाः।

पौत्तिकंभ्रामरंक्षौद्रंमाक्षिकंछात्रमेवच।
आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः।

अर्थ-पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य औद्दालक और दाल यह आठ मधुकी जाति हैं।

एतेषां लक्षणानि।

पिंगलामक्षिकाज्ञेयामहत्यल्पाचसाद्विधा। महतीपुत्तिकानाम्नीस्वल्पाक्षुद्रेतिकथ्यते॥मध्यमामक्षिकानीलामक्षिकेत्यभिधीयते। पुत्तिकाभ्रमरक्षुद्रामक्षिकासम्भवंमधु॥पौत्तिकादुच्यतेछात्रंवरटीछत्रसम्भवम्। तपोवनेजरत्कारोरार्घ्यंमधुतरूद्भवम्। औद्दालकन्तुवल्मीककारिकीटविनिर्म्मितम्। दालमित्यभिनिर्दिष्टंवृक्षकोटरकीटजम्॥

अर्थ-पिंगलवर्ण मक्खी बृहत् और क्षुद्र इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां बृहत्मक्खी पुत्तिका और क्षुद्र मक्खी क्षुद्रानामसे कही जाती है। मध्यम आकारवाली नीले रंगकी मक्खी मक्षिकानामसे कही जाती है। पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नामवाली मक्खियोंसे पौत्तिकादि चार प्रकारके मधुकी उत्पत्ति होती है अर्थात् पुत्तिकानामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमर नाम मक्खीसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी उत्पत्ति होती है। वरटी नामवाले जो कीडे हैं उनके छत्तोंसे उत्पन्न हुवा जो मधु उसको छात्र, जिस वनमें जरत्कारु ऋषिने तप किया है उसमें जो महुवेके वृक्ष हैं उन वृक्षोंमेंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य, वल्मीककारी कीडोंके बनाये हुये मधुको औद्दालक और वृक्षोंकी कोटरोंमें जो कीडे रहते हैं उनके मधुको दारु कहते हैं।

एतेषां लक्षणानि।

माक्षिकंतैलवर्णंस्याद्घृतवर्णन्तुपौत्तिकम्।

क्षौद्रंकपिलवर्णंस्याच्छ्वेतंभ्रामरमुच्यते ॥

अर्थ–माक्षिक मधु तेलवर्ण, पौत्तिक घृतवर्ण, क्षौद्र मधु कपिलरंगका और भ्रामर मधु सफेद रंगका होता है ।

एतेषां गुणाः ।

पौत्तिकंतेषुवीर्य्योष्णंकषायानुरसान्वयात् ।वातासृक्पित्त-कृद्भेदिविदाहिमदकृन्मधु ॥ पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद्भ्रा-मरंगुरुकीर्त्तितम् । क्षौद्रंविशेषतोज्ञेयंशीतलंलघुलेखनम् ॥ तस्माल्लघुतरंरूक्षंमाक्षिकंप्रवरंस्मृतम् । श्वासादिषुचरोगेषु प्रशस्तंतद्विशेषतः ॥ छात्रंश्वित्रक्रिमिहरंरक्तपित्तहरंगुरु । आर्घ्यंचक्षुष्यमायुष्यंकफपित्तामवातजित् ॥औद्दालकंक-षायोष्णंकटुकुष्ठविषापहम् । दालंकफहरंरूक्षंदीपनंछर्दि-मेहनुत् ॥

अर्थ–पौत्तिकमधु–उष्णवीर्य्य, किंचित्कषेला, वातवर्द्धक, रक्तपित्तज-नक, भेदक, मदकारक और मधुर है। भ्रामरमधु पिच्छिल, स्वादिष्ठ और भारी है। क्षौद्रमधु–अतिशयशीतल, हलका और लेखन है। माक्षिकमधु–अत्यन्त हलका, रूखा, सर्व मधुओंमें श्रेष्ठ और श्वासादिरोगोंमें हितकारी है। छात्रमधु–श्वित्र (कोढ) कृमि और रक्तपित्तरोगनाशक तथा भारी है। आर्घ्यमधु–नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफपित्त और आमवात-रोगनाशक है। औद्दालकमधु–कषेला, गरम, चरपरा, कोढ और विष-विनाशक है। दालमधु–कफनाशक, रूखा, दीपन, वमन और प्रमेहनाशकहै।

नवपुराणमधुगुणाः ।

बृंहणीयंमधुनवंवातश्लेष्महरंपरम् ।
पुराणंलघुसंग्राहिनिर्दोषंस्थौल्यनाशनम् ॥ (रा०व)

अर्थ–नवीनमधु–पुष्टिकारक और वातकफनाशक है । पुराना मधु, हलका, मलरोधक, दोषरहित और स्थूलतानाशक है ।

मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः ।
एकसंवत्सरेतत्तुपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मधु, खांड और गुड यह तीनों एक वर्ष व्यतीत होनेपर पुराने गिने जाते हैं ऐसा भावमिश्रने कहा है ।

पक्कापक्कमधुगुणाः ।

दोषत्रयहरंपक्कमाममम्लंत्रिदोषकृत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-पक्कामधु-त्रिदोषनाशक और कच्चामधु-खट्टा और त्रिदोषजनक है ।

मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यम् ।

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः ।गृहीत्वामधुकुर्वन्तित-च्छीतंगुणवन्मधु ॥विषान्वयात्तदुष्णात्तुद्रव्येणोष्णेनवास-ह । उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-विषैले भ्रमरादिक विषैले फूलोंसे रसको इकट्ठा करके शहत बनाते हैं, वह शहत शीतल रहनेपर गुणदायक होता है, विषयुक्त रहनेसे यह मधु उष्ण किया अनेक अवगुणकारक है, ऐसेही उष्णकालमें, अथवा उष्णद्रव्यके साथ वा उष्णतासे पीडित मनुष्योंको मधु विषकी समान अहितकारी है ।

सिक्थकनामानि ।

मयनंतुमधूच्छिष्टंमधुशेषंचसिक्थकम् ।
मध्वाधारोमदनकमधूषितमपिस्मृतम् ॥

अर्थ-मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूपित, (सिक्थ, शिक्थ, शिक्थक, मधुज, मधुसम्भव, मादन, काच, विघस, उच्छिष्ट, मोदन, मक्षिकामल, क्षौद्रेय, पीतराग, स्निग्ध, माक्षिकज, क्षौद्रज, द्रावक, माक्षिकाश्रय, मधूत्थित)

सं०	मधूच्छिष्ट ।		मोतदर, मैनामु ।
हिं०	मोम ।	इं०	एल्लोवेक्स ।
बं०	मोम ।	लै०	सिराआल्वा ।
म०	मेण ।	फा०	मोमेजर्द ।
गु०	मिण ।	अ०	शया ।

अस्य गुणाः ।

मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मोम-कोमल, स्निग्ध, भूतबाधाको हरनेवाला, व्रणको भरनेवाला, भग्नसन्धानकारक तथा वात विसर्प और रुधिरके विकारोंको हरेहै ।

अन्यच्च ।

सिक्थकंपिच्छिलंस्वादुकटुस्निग्धंमृदुस्मृतम् ।अस्थिसंधिकरंव्रण्यंवातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषंवातरक्तंभूतदोषंच नाशयेत् । स्फुटितस्याङ्गलेपेनत्वचःसंधिकरंमतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ठ, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसंधानकारक, व्रणको हितकारी, तथा वात, कोढ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त, भूतबाधा और लेप करनेसे फटीहुई त्वचाको आराम करे है ।

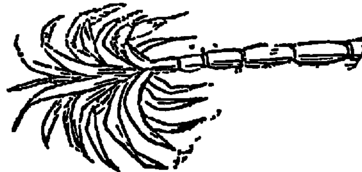
इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मधुवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ इक्षुवर्गः ।

इक्षुनामानि ।

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूरिरसोऽपिच ।
गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, गुडमूल, असिपत्र, मधुतृण, (मधुयष्टि विपुलरस, गुडदारु, रसाल, कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, कान्तार, सुकुमारक, अधिपत्र, वृष्य, गुडतृण, मृत्युपुष्प, गुडद, गण्डीदी, खड्गपत्रक, गुडकाष्ठ, तृणाधिप)-



संस्कृतभाषामें	इक्षु ।
हिन्दीभाषामें	ईख, गन्ना, गांडा, पोंडा, ऊष ।
वंगभाषामें	आक, कुशिर ।
मराठीभाषामें	ऊस ।
गुजरातीभाषामें	शेरडी, शेरडीनुं मूल ।

कर्णाटकीभाषामें	कब्बु, कब्बिनमेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरकु ।
इंग्रेजीभाषामें	श्युगरकेन । Sugar Cane
लैटिन्भाषामें	सेक्कर आल्व । Saccharum Officenarum
	सेक्करं आफिसीनेरं
फारसीभाषामें	नेशकर ।
अरबीभाषामें	कसूबुस शक्कर ।

इक्षुसाधारणगुणाः ।

इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याःकफप्रदाः ।
विपाकेमधुराःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः ॥

अर्थ-ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मुत्रजनक और शीतल है ।

सितेक्षुगुणाः ।

स्निग्धश्चसन्तर्पणबृंहणश्चसंजीवनःस्वादुरसःश्रमघ्नः
वृष्यश्चपित्तास्रशमंनयेच्चह्यंतर्विदाहीकफकृत्सितेक्षुः ॥

अर्थ-सफेद ईख-स्निग्ध, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, संजीवन, स्वादिष्ठ, श्रमनाशक, वृष्य, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली, शरीरके भीतरकी दाहको हरनेवाली और कफकारक है ।

कृष्णेक्षुगुणाः ।

तद्वत्सुकृष्णोहिभवेद्गुणैश्चवृष्योभवेत्तर्पणदाहहंत ।
सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेनशोषापहर्त्ताव्रणशोफकर्त्ता॥(हा०सं०)

अर्थ-काली ईख-व काले गन्ने-गुणोंमें सफेद ईखकी समान हैं, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित, शोषनाशक आर व्रण तथा शोफजनक हैं ।

रक्तेक्षुगुणाः ।

रक्तेक्षुःशीतलःपाकेमधुरोमृदुवृष्यकः । बलकान्तिप्रदश्चैवधातुवृद्धिकरोगुरुः ॥ तुवरःपित्तदाहघ्नोवातविस्फोटनाशकः । मूत्राघातंमूत्रकृच्छ्रंरक्तदोषंचनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लालईख-शीतल, पाकमें मधुर, मृदु, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, भारी, कषेली तथा पित्त, दाह, वात, विस्फोट, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूरकरेहै ।

इक्षुभेदाः ।

पौण्ड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः । कान्तारस्ताप-सेक्षुश्चकाण्डेक्षुःसूचिपत्रकः ॥ नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपो-रोऽथकोशकृत् । इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि ॥

अर्थ-पौण्डक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत, यह ईखकी जातिहै । अब इनके गुणोंको कहताहूं ।

पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ।

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः ।
ीतोबृंहणोबल्यःपौण्ड्रकोभीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ।

कोशकारगुणाः ।

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षय-रोगनाशक है ।

कान्तारेक्षुगुणाः ।

कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यःश्लेष्मलोबृंहणःसरः ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी, वृष्य, कफकारी, पुष्टिकारक और सारक ।

दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः ।

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कठिन और वंशक ईख-क्षारयुक्त है ।

शतपोरकगुणाः ।

शतपर्वाभवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ॥

अर्थ-शतपोरक नामवाली ईख-किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुण-वाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है।

मनोगुप्तागुणाः।

मनोगुप्तावातहारीतृष्णामयविनाशिनी।
सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तविनाशिनी॥

अर्थ-मनोगुप्तानामवाली ईख-वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है।

तापसेक्षुगुणाः।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपना।
तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी।

अर्थ-तापसेक्षु-नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्य्यवर्द्धक और बलकारक है।

काण्डेक्षुगुणाः।

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुःसतुवातप्रकोपनः।

अर्थ-काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान हैं और विशेषकरके वातको कुपित करे है।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः।

सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः।
वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः॥

अर्थ-सूचीपत्र नीलपोर-नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख-वादी, कफपित्तनाशक, कषेली और दाहजनक है।

इक्षुमूलादिगुणाः।

इक्षुमूलोतिमधुरोमध्येमधुरएवच।
ग्रन्थौत्वच्यग्रभागेचविज्ञेयोलवणोरसः॥

अर्थ-ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमें लवणरस रहता है।

बालयुवावृद्धेक्षुगुणाः।

बालइक्षुःकफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः।
युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत्॥

रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ।

अर्थ-बाल अर्थात् कच्ची ईख-कफकारी, मेदजनक प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पकी और कुछ २ कच्ची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ट, किञ्चित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है। वृद्ध अर्थात् पक्की ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षतनिवारक और बलवीर्य्यकारक है।

दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणाः ।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षोरसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराकी समान वीर्य्यवाला, दाहरहित और कफकारी है।

अन्यच्च ।

वृष्यःशीतोस्रपित्तंशमयतिमधुरोबृंहणःश्लेष्मकारी स्निग्धो हृद्यःसरश्चश्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिंकरोति। मेदोवृद्धिंविहन्याच्छमयतिचमलंतर्पणश्चेंद्रियाणां दन्तैर्निष्पीड्यसाक्षादमृतमयरसोभक्षयेदिक्षुदण्डः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारी, कफकारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, सारक, श्रमको हरनेवाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिको शान्ति करनेवाला, त्रिदोषनाशक, इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाला और अमृतोपम है।

अपिच ।

दन्तैर्निपीडितरसोरुचिकृद्गुरुश्च सन्तर्पणोबलकरःकफकृच्छ्रमघ्नः। विष्टम्भकृच्चरुधिरस्यतथैवपित्तदोषं निहन्ति सकलंवमनञ्चशोषम ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रुचिकारी, भारी, तृप्तिकारी, बलकारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और शोषहारक है।

यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ।

मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ।

किञ्चित्कालंविधृत्वाचविकृतिंयातियान्त्रिकः ॥
तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरसः ।

अर्थ-ईखकी जड और अगला भाग जो कीडोंसे खायाहुवा होताहै और गॉठ ये सब कोलूमें पेली गईहों उनके मैल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समयतक रक्खारहनेसे वह कोलूका पिला हुवा रस विगड-जाताहै अर्थात् खट्टा होजाताहै वह दूषित रस-दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होताहै ।

पर्य्युषितेक्षुरसगुणाः ।

रसःपर्य्युषितोदुष्टोह्यम्लोवातापहोगुरुः ।
कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः ।

अर्थ-ईखका बासी रस-अच्छा नहीं होता, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है ।

इक्षुपक्करसगुणाः ।

पक्कोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनोकिञ्चित्पित्तकरःस्मृतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ईखका पक्का अर्थात् अग्निपै औटाया हुवा रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला और कुछेक पित्तकारक है ।

इक्षुविशेषगुणाः ।

भक्षितोभोजनात्पूर्वंचेक्षुःपित्तस्यशामकः ।
भोजनोत्तरकालेचभक्षितोवातकोपनः ॥
भोजनेभक्षितश्चासावतिजाड्यकरोमतः । (नि० र०)

अर्थ-भोजनसे पहिले भक्षणकरीहुई ईख-पित्तनिवारक है । भोजनसे पीछे खाईहुई ईख वातको कुपित करे है और भोजनके मध्यमें खाईहुई ईख अत्यन्त जडताकारक है ।

इक्षुरसविकाराणांगुणाः ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःसराः ॥

वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः ।

अर्थ-इक्षुविकार अर्थात् ईखके रसके बनाये हुये पदार्थ-तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त, वात, मोह और विषको हरे हैं, भारी, मधुर, बलकारी, स्निग्ध, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, और पुष्टिकारक हैं ।

फाणितलक्षणगुणाश्च ।

इक्षोरसस्तुयःपक्वःकिञ्चिद्गाढोबहुद्रवः।सएवेक्षुविकारेषुख्याः-
तःफाणितसंज्ञया॥फाणितंगुर्व्वभिष्यंदिबृंहणंकफशुक्रकृत्।
वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रवस्तिविशोधनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कुछेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकायेहुये ईखके रसको फाणित कहते हैं. फाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, तथा वात, पित्त, श्रम, इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीलक्षणं गुणाश्च ।

इक्षोरसोयःसंपक्वोघनःकिञ्चिद्द्रवान्वितः।मन्दंयत्स्पन्दतेत-
स्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते ॥ मत्स्यण्डीभेदिनीबल्याल-
घ्वीपित्तानिलापहा । मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहामता ॥

अर्थ-ईखका रस जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा पिघलता है इसलिये इसको मत्स्यण्डी कहते हैं । मत्स्यण्डी-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुधिरके दोषोंको हरे है।

गुडनामानि ।

गुडःस्यादिक्षुसारस्तुमधुरोरसपाकजः ।
शिशुप्रियःसितादिःस्यादरुणोरसजःस्मृतः ॥

अर्थ-गुड, इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, शिशुप्रिय, सितादि अरुण, रसज, (खण्डज, द्रवज, सिद्ध, मोदक, अमृतसारज, इक्षुरसक्वाथ, गण्डोल, मधुबीजक, गुल, स्वादुखण्ड, स्वादु)।

गुडलक्षणम् ।

इक्षोरसोयःसंपक्वोजायतेलोष्टवद्दृढः ।
सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यंडचेवगुडोमतः ॥ (भा.मि०)

अर्थ-ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेकी समान दृढ करलेवे। उसको गुड कहते हैं। किन्तु गौडदेशमें मत्स्यण्डीको गुड कहतेहैं।

संस्कृतभाषामें	गुड।
हिन्दीभाषामें	गुड।
वंगभाषामें	गुड।
मराठीभाषामें	गूळ।
गुजरातीभाषामें	गोल।
कर्णाटकीभाषामें	होसवेल्लंद् हेलरु, जुनोहलेयवेल्ल।
तैलिङ्गीभाषामें	वेल्लासु।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीकलमोलासीस। Treacle-Molasseas
फारसीभाषामें	कंदेसिया।
अरबीभाषामें	कंदेअस्वद्।

गुडगुणाः।

गुडोवृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः।
नातिपित्तकरोमेदःकफक्रिमिबलप्रदः (राजवल्लभ)

अर्थ-गुड-वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है।

पुरातनगुडगुणाः।

पित्तघ्नःपवनापहोरुचिकरोहृद्यस्त्रिदोषापहः
संयोगेनविशेषतोज्वरहरःसन्तापशान्तिप्रदः।
-विण्मूत्रामयनाशनोग्निजननःकण्डूप्रमेहान्तकृत्
स्निग्धःस्वादुरसोलघुःश्रमहरःपथ्यःपुराणोगुडः॥ (रा.नि.)

अर्थ-पुराना गुड-पित्तनाशक, वातविनाशक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ विशेष करके ज्वरनाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निप्रदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हलका, श्रमनाशक और पथ्य है।

नूतनगुडगुणाः।

गुडोनवःकफश्वासकृमिकारोग्निमान्द्यकृत्।श्लेष्माणमाशुवि-

निहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ठ्या समंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय। (भा.प्र.

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करेहै तथा मंदाग्निजनक है । सदैव अदरखके साथ सेवन कियाहुवा गुड-कफको हरताहै, हरडके साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करताहै और सोंठके साथ खायाहुवा गुड-सर्व वातके दोषोंको नष्ट करताहै अतएव हे त्रिदोषविनाशक गुड ! तुमको नमस्कार है ।

अन्यच्च ।

नूतोगुडोमधु-क्षारोगुरुश्चोष्णश्चसंमतः । रक्तरुक्पित्तदोषाणामहितोमूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमिमेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥ पित्तलोभेदकोवातश्वासकासकफापहः । सशुद्धोरक्तकफकृत्स्वादुःस्निग्धश्चवातहा।मलमूत्रेयथामार्गंप्रवर्तयतिचांजसा।सचैकहायनोरुच्यःपथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरोहृद्यः स्वादुश्चपौष्टिकः। रसायनोलघुःस्निग्धो वृष्योमेहश्रमापहः ॥ त्रिदोषपाण्डुसन्तापपित्तवातापहो मतः । संयोगेनज्वरहररुच्यब्दजीर्णोलघुःस्मृतः ॥सर्वदोषहरःश्रेष्ठःपुराणेषुचउत्तमः । अरिष्टादिषुयोज्यःस्यादूर्ध्वहीनगुणःस्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नवीनगुड-मधुर, खारी, भारी, गरम, रक्तरोगी और पित्तरोगियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, चिकना, कुछ कुछ दस्तावर कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खाँसी और कफनाशक है, शुद्धकिया हुवा गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वादिष्ठ, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवर्त्तानेवाला है, एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, स्निग्ध, वृष्य तथा प्रमेह,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके संयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुडोंमें श्रेष्ठ है; इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये। तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामयेकामलशोषमेहेगुल्मामयेपाण्डुहलीमकेच ।
वातेसपित्तासृजिराजरोगेरुचिप्रदोरोगहरोगुरुःस्यात् ॥
कासेशोषेगुडःश्रेष्ठश्चान्यत्रापिहितोमतः ।
योगयुक्तोविशेषेणहितोगुणगणालयः ॥ (हा०सं०)

अर्थ-गुड-गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरहै तथा रुचिको उत्पन्न करैहै । कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै । और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है ।

खण्डनामानि ।

खण्डेरसोद्भवाशुक्लासुपिष्टापाण्डुरातथा ॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पंशुलका) ।

संस्कृतभाषामें	खण्ड ।
हिन्दीभाषामें	खांड ।
वंगभाषामें	खाँड ।
मराठीभाषामें	साखर ।
गुजरातीभाषामें	खांड ।
कर्णाटकीभाषामें	मालखंड ।
तैलिंगीभाषामें	पांचदारा ।
इंग्रेजीभाषामें	श्युगर । Sugar
लैटिन्भाषामें	साकोरम् । Sacoharum
फारसीभाषामें	शक्कर ।
अरबीभाषामें	शक्कर ।

खण्डगुणाः ।

वातपित्तहरंशीतंस्निग्धंबल्यंसुखप्रियम् ।
चक्षुष्यंश्लेष्मकृच्चोक्तंखंडंवृष्यतमंमतम् ॥

अर्थ-खांड वातपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, बलकारक, मुखप्रिय, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी और वीर्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

वातंनिवारयतिपित्तमपाकरोति तृष्णांछिनत्तिविनिहन्ति चमोहमूर्च्छाम् ॥ शोषंविघट्टयतितर्पयतीन्द्रियाणि शीतः सदासमधुरःखलुशुद्धखण्डः ॥

अर्थ-खांड-वातनिवारक, पित्तहारक, तृषानाशक, मोह, मूर्च्छा और शोषको हरनेवाली, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, शीतल और मधुर है ।

गुडखण्डगुणाः ।

गुडखण्डश्चमधुरःसितश्चवातपित्तहा ।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतोबल्योवृष्योरुचिप्रदः ॥

अर्थ-गुडकी खांड अर्थात् शक्कर-मधुर, सफेद, वातपित्तनाशक, किञ्चित् शीतगुणयुक्त, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुचिकारक है ।

शर्करानामानि ।

शर्करामीनाण्डीशुक्लासिताचवालुकात्मजा ।
अहिच्छत्रातुसिकताशुद्धाशुभ्रासितोपला ॥

अर्थ-शर्करा, मीनाण्डी. शुक्ला, सिता, वालुकात्मजा । अहिच्छत्रा, सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, सितोपला, (शुक्लोपला, शार्क, श्वेता, मत्स्यण्डिका, गडोद्भवा) ।

संस्कृतभाषामें	शर्करा ।
हिन्दीभाषामें	बूरा, मिश्री, बतासे, कंद ।
वंगभाषामें	चिनी, मिछरी ।
मराठीभाषामें	पिठीसाखर, खडीसाखर ।
गुजरातीभाषामें	शाकर ।
कर्णाटकीभाषामें	गुडगुडातुगीतु ।
तैलङ्गीभाषामें	फाटिकेपांचादारा ।
इंग्रेजीभाषामें	प्युरिफाईड श्युगरकेंडी Purified Sugor Candy
लैटिन्भाषामें	साक्करम् प्युरिफिकिटम् । Saccekarum Purificatum
फारसीभाषामें	खडीशक्कर नबात ।
अरबीभाषामें	सक्करे अबियद ।

शर्करागुणाः।

शर्कराशीतवीर्य्याचविपाकेमधुरासरा।
दाहतृट्छर्द्दिमूर्च्छास्रकृमिकोपविनाशिनी ॥ (गणनि०)

अर्थ-शर्करा (बूरा), शीतवीर्य्य, विपाकमें मधुर, सारक तथा दाह, तृषा, वमन, मूर्च्छा, रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करेहै।

मूर्च्छामोहतृषास्यशोषशमनीदाहज्वरध्वंसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययक्लमहरीहृद्याचसन्तर्पणी। क्षीणेरेतसिपावकेच विषमेक्षीणेक्षतेदुर्बलेदुर्वातेपिचरक्तपित्तजगदेसेव्यासदाशर्करा ॥ इक्षुजेषुविकारेषुसर्वेष्वपिमनोहरा। समस्तरोगशमनीतवराजाख्यशर्करा ॥ (सुषेणदेव)

अर्थ-मिश्री-मूर्च्छा, मोह और तृषाके शोषको शान्ति करनेवाली, दाहज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और क्लमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक तथा क्षीणवीर्य्य, विषमाग्नि, क्षीण, क्षत, दुर्बल, वातरक्त और रक्तपित्तरोगमें सदैव सेवन करनी चाहिये। सर्व प्रकारके इक्षुविकारोंमे तवराजशर्कराश्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाली है।

अन्यच्च।

शर्करामधुराशीताबल्यावृष्यासरामता। स्निग्धाकफकरी चैवक्षयंकासंतृषांजयेत् ॥ विषदोषंमदंश्वासंमोहंमूर्च्छांवमिं तथा।अतिसारंरक्तदोषंपित्तंवातंकृमींस्तथा ॥ भ्रान्तिदाहंश्रमंचार्शंनाशयेदितिकीर्त्तिता। यथायथाचधौतास्यात्तथागुणकरीमता॥खण्डोपलाचचक्षुष्यास्निग्धाधातुविवर्द्धिनी। मुखप्रियाचमधुराशीतावृष्याबलप्रदा॥ सरेन्द्रियतृप्तिकरीलघ्वीतृष्णाविनाशिनी। क्षतंक्षयंरक्तपित्तंमोहंमूर्च्छांकफंतथा ॥ वातंपित्तंचदाहंचशोषंचैवविनाशयेत्।पौण्ड्रेक्षुजाशर्करातुस्निग्धाहितकरीमता ॥ वृष्याक्षतक्षयंचैव क्षयंचैवारुचिंजयेत्। वंशेक्षुसम्भवाबल्याचक्षुष्याधातुव-

र्द्धिनी॥रूक्षाचमधुराचैवश्यामेक्षूणांबलप्रदा । श्रमघ्नीत-
र्पणीरुच्यारसेक्षूणांचशीतला ॥ स्निग्धाकान्तिकरीप्रोक्ता
रक्तेक्षोःपित्तनाशिनी । (नि.र.)

अर्थ-शर्करा-बूरा-चीनी-मधुर, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, खाँसी, तृषा, विषविकार, मद, श्वास, मोह, मूर्च्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रम, दाह, श्रम और बवासीरको दूर करे है। यह जितनी २ अधिक सफेद होगी उतनी २ ही अधिक गुणवाली है। मिश्री व कन्द-नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुखप्रिय, मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, सारक, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, हलकी, तृषानाशक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मूर्च्छा, कफ, वात, पित्त, दाह और शोषको हरनेवाली है। पुण्ड्रकादि ईखोंकी-बूरा-स्निग्ध, हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, क्षतक्षय, क्षय और अरुचिको हरेहै। वंशक नामवाली ईखकी खांड-बलकारी, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक रूखी और मधुर है। काली ईखकी चीनी-बलकारक, श्रमनाशक, तृप्तिकारक, रुचिजनक है। रसेक्षुनामवाली ईखकी चीनी-शीतल, स्निग्ध और कान्तिजनक है। लालईखकी-बूरा-पित्तनाशक है।

लसीकादीनामुत्तरोत्तरंनैर्मल्यादिनागुणवत्त्वमाह ।

लसीकाफाणितगुडंखण्डमत्स्याण्डकासिता ।
निर्म्मलालघवोज्ञेयाःशीतवीर्य्यायथोत्तरम् ॥
यथायथैषांनैर्मल्यंगुणवत्स्यात्तथातथा । (रा० व०)

अर्थ-लसीका (सीरा), फाणित (राब), गुड, खांड, चीनी और मिश्री यह क्रमसे निर्मल है, हलकी और शीतवीर्य्य है अर्थात् सीरेसे राब, राबसे गुड, गुडसे खांड, खांडसे चीनी और चीनीसे मिश्री-निर्मल, हलकी और शीतवीर्य्य है इनमें जो जो अधिक निर्मल होतीहैं उन उनकेही अधिक गुण जानने।

यावनालशर्करानामानि ।

यावनालीहिमोत्पन्नाहिमानीहिमशर्करा ।
क्षुद्रशर्करिकाक्षुद्रागुडजाजलबिन्दुजा ॥

अर्थ–यावनाली, हिमोत्पन्ना, हिमानी, हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, गुडजा, जलविन्दुजा ।

तद्गुणाः ।

क्षुद्रातुशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्तातिपिच्छिला ।
स्निग्धाचमधुरारुच्यासरादाहविनाशिनी ॥
वातपित्तंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तिता । (नि०र०)

अर्थ–यावनालशर्करा (सीरेखिस्त)–किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्त-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रुचिकारक, सारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणाः ।

यवासशर्कराशीतारसेस्वाद्वीकषायका ।
वृष्यातिक्ताचमधुराभ्रमंपित्तंतृषांजयेत् । (रा०नि०)

अर्थ–यवासशर्करा (तुरंजवीन)–शीतल, स्वादिष्ठ, कषेली, वीर्यवर्द्धक, कडवी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषानाशक है ।

अन्यच्च ।

यवासशर्कराज्ञेयाबृंहणीपित्तहारिणी । ज्वरहृद्दीपनीशीतारेचनीचपुरातनी ॥ नार्य्याश्चापन्नसत्वायादुर्बलस्यतथाशिशोः । रेचनार्थंप्रयोज्येयंक्षीणस्यस्थविरस्यच ॥ (आ०सं०)

अर्थ–यवासशर्करा (तुरंजवीन)–पुष्टिकारक, पित्तनाशक, ज्वरहारक, अग्निदीपक, शीतल और यह पुरानी दस्तावर है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्धमनुष्योंको इससे दस्तकराने चाहिये ।

मधुशर्करागुणाः ।

मधुजाशर्कराबल्यागुर्वीवृष्याचशीतला । मधुरातर्पणीरूक्षातुवराछेदकातथा ॥ पाकेस्वाद्वीवमिंदाहंपित्तंचअतिसारकम् ।रक्तपित्तंतृषांपित्तंकफंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ–मधुकी खांड–बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, रूखी, कषेली, छेदक, पचनेमें स्वादिष्ठ तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पशर्करागुणाः ।

पुष्पोद्भवाशर्करातुस्वाद्वीहृद्याचशीतला । गुर्वीपित्तंरक्तदोषंनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ यावन्त्यःशर्कराःप्रोक्ताःसर्वादाहप्रणाशनाः । रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः ॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलसे बनाईहुई चिनी-स्वादिष्ठ, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरे है । जितनी प्रकारकी चीनी हैं वे सर्व प्रकारकी दाहनाशक, रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली तथा वमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे इक्षुवर्गः समाप्तः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः ।

काञ्जिकनामानि ।

काञ्जिकंकञ्जिकंकाञ्जीकुण्डलंकुण्डगोलकम् ।
धान्यमूलंधान्ययोनिःकुल्माषंकुल्माभियुतम् ॥

अर्थ-काञ्जिक, कञ्जिक, काञ्जी, कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल, धान्ययोनि, कुल्माष, कुल्माभियुत, (आरनालक, सौवीर, कुल्माष, अभियुत, आवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल, सिद्धजल, सिद्धसलिल, कांचिक काञ्चिका, भक्तवारि, तुषाम्बु, सन्धान, गृहाम्ल, महारस, तुषोदक, शुक्तचुक्र, धातुघ्न, उन्नाह, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल, पक्ववारि, वीर, अभिषव, अम्लसारक) ।

काञ्जिकलक्षणंगुणाश्च ।

संधितंधान्यमण्डादिकाञ्जिकंकथ्यतेजनैः । काञ्जिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु ॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ लघुवातहरंतत्तुरोचनंपाचनंपरम् । शूलाजीर्णविबन्धामनाशनंबस्तिशोधनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-धान्यादिकोंके मांडको कुछ दिनों धरा रहना देवे उसको कांजी

कहते हैं कांजी-भेदक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलकी शरीरमें लगानेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पीनेसे वातकफको हरे है। उडद आदिके बडोंकी बनाईहुई कांजी अधिक गुणवाली है हलकी, वातनाशक, रोचन, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध और आमनाशक और बस्तिशोधक है।

निषेध।

शोषेमूर्च्छाज्वरार्तानांभ्रमकेदुर्विषार्दिते। कुष्ठानांरक्तपित्तानांकाञ्जिकंनप्रशस्यते॥ पाण्डुरोगेराजयक्ष्मण्यथशोफातुरेषुच। क्षतक्षीणेपरिश्रांतेमन्दज्वरनिपीडिते॥ नरेनैव हितंप्रोक्तंकाञ्जिकंदोषकारकम्॥ (हारी० सं०)

अर्थ-शोष, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, सूजनसे पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचलनेसे थकेहुये और मन्दज्वरसे पीडित मनुष्योंको कांजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है।

काञ्जिकविशेषगुणाः।

शूलवातार्दितानान्तुतथाजीर्णविबन्धिनाम्।
श्रेष्ठंप्रोक्तंतथाम्लञ्चगुणाधिक्यंनरेषुच॥ (हारी० सं०)

अर्थ-शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विबन्ध रोगवाले रोगियोंको कांजी अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है।

अन्यच्च।

नूतनंमृन्मयंकुम्भंकटुतैलेनलेपयेत्। निर्मलंचजलंतस्मिन्राजिकाजाजिसैन्धवम्॥ हिंगुविश्वानिशाचैवओदनंवंशपल्लवाः। औदनस्यकुलित्थानांजलंवटकखांडवम्॥सर्वंतस्मिन्निधायाथमुद्रांदत्वादिनत्रयम्। रक्षयित्वाततोवस्त्रेगालितंकाञ्जिकंमतम्॥तद्भेदकंवस्तिशुद्धिकरमुष्णंचतीक्ष्णकम्। रुच्यमम्लंपाचकंचलघुलेपेचदाहकम्॥ज्वरनाशकरं प्रोक्तंतत्पीतंकफवातहम्। शूलंशोथंभ्रमंदाहंमूर्च्छांपित्तज्वरंतथा॥ अजीर्णाध्मानविट्स्तम्भानामनाशकरंमतम्।

काञ्जिकेसंस्थिताश्चैववटकारुचिदामताः ॥ शीताःकफक-
रादाहशूलाजीर्णविनाशकाः । नेत्ररोगेहितानोक्ताश्चपिभिः
पाककोविदैः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-प्रथम कोरा मट्टीका घडा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेलका लेप करदे फिर उसमें निर्मल स्वच्छ जल भर देवे उस जलमें राई, जीरा, सैंधानोंन, हींग, सोंठ, हलदी, भात, बांसके कोमल पत्ते, कुलथीके भातका जल और बडोंके टुकडे यह सब पदार्थ डालकर मुख बंद करके तीनदि-नतक बंद किया रक्खा रहने देवे इसके उपरान्त उसको खोलकर वस्त्रमें छानले उसको कांजी कहते हैं । यह कांजी-भेदक, वस्तिशोधक, गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक, खट्टी, पाचक, हलकी, इसका लेप करनेसे-दाह और ज्वर दूर होता है और यह पीनेसे कफ, वात, शूल, सूजन, भ्रम, दाह, मूर्च्छा, पित्तज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है । कांजीमें पडेहुए वडे-रुचिकारक, शीतल, कफकारी, दाह, शूल और अजीर्णनाशक हैं और नेत्ररोगोंमें हितकारी नहीं हैं ।

तुषोदकलक्षणं गुणाश्च ।

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः ।
तुषाम्बुदीपनंहृद्यंपाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥
तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे तुषसहित जवोंको कूटकर भिजोवे जब उसमें खट्टापन होजाय तब वह तुषोदक होजाता है । तुषोदक-दीपन, हृदयको हितकारी, पाण्डु और कृमिरोगको दूर करे तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तकारक और वस्तिकी पीडाको हरे है ।

अन्यच्च ।

तुषोदकंवातपित्तहरन्तुरक्तपित्तकरंप्रभेदकंच ।
विपाचनंस्याज्जरणंक्रिमिघ्नमजीर्णहन्तृकटुकंचपाके ॥ (हा० सं०)

अर्थ-तुषोदक-वातपित्तनाशक, रक्तपित्तकारक, दस्तावर, पाचक, कच्चे अन्नको भस्म करता है, कृमिनाशक, अजीर्णनिवारक और पचनेमें चरपरा है ।

सौवीरनामानि ।

सौवीरकंसुवीराम्लंयवोत्थंगोधूमसम्भवम् ।

यवाम्लजंतुषोत्थंचतुषोदकञ्चापिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सौवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज तुषोत्थ, तुषोदक ।

अस्य लक्षणं गुणाश्च ।

सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदि दीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे वा पक्के जौओंके तूर अलग करदेवे, फिर उसकी कांजी बनावे उस कांजीको सौवीर कहते हैं । कोई वैद्य कहते हैं कि, 'कच्चे अथवा पक्के गेंहूसे सौवीर बनाई जाती है । सौवीर-संग्रहणी, ववासीर और कफनाशक है, दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अंगका टूटना, अस्थियोंमें पीडा और अफारेमें हितकारी है

अन्यच्च ।

सौवीरकंचाम्लरसंकेश्यंमस्तकदोषजित् ।
जराशैथिल्यहरणंबल्यंसन्तर्पणंपरम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सौवीर-खट्टी, केशोंको हितकारी, मस्तकरोगनाशक, जरा और शिथिलताको हरनेवाली, वलकारी और तृप्तिकारकहै ।

आरनालक्षणंगुणाश्च ।

आरनालंतुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वासंधितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-विना तूरके कच्चे गेहूंको भिजोकर आरनाल नामवाली कांजी वनाई जाती है । वा पक्के गेहूंसे वनाईहुईकोभी आरनाल कहते हैं । आरनालके गुण सौवीरकी समान जानने ।

आरनालकगुणाः ।

जातंयवाम्लंकटुकंविपाकेवातामयश्लेष्महरंसरक्तम् ।
पित्तप्रकोपंकुरुतेसभेदिविदूषणंपित्तगदासृजश्च ॥

अर्थ-जौसे वनाईहुई कांजी-पचनेमें कटु, वातनाशक, कफनिवारक, रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली,दस्तांवर और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

सन्दीपनंशूलहरंरुचिप्रदंगोधूमजातंक्वथितंकषायम् ।

सन्दीपनंस्याज्जरणंकफघ्नंसमीरदोषंहरतेततोऽपि॥ (हा०सं०)

अर्थ-गेहूँसे बनाईहुई कांजी-अग्निको दीपन करनेवाली, शूलको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, कषेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है ।

धान्याम्ललक्षणं गुणाश्च ।

धान्याम्लंशालिचूर्णश्चकोद्रवादिकृतंभवेत् ।
धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥
अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वस्थापनेषुच ।

अर्थ-शालिधानोंके चूर्ण अथवा कोदोंके चूनसे जो कांजी बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं । धान्याम्ल-प्रीणन, हलकी, अग्निप्रदीपक तथा सर्वप्रकारके वातरोग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये ।

शिण्डाकीलक्षणं गुणाश्च ।

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः ।
सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः ॥
शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥

अर्थ-मूलीके पत्तोंके रसमें राई डालकर जो कांजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं । अथवा सरसोंके रसमें शालिधानोंका चून डालकर जो कांजी बनाइ जाती है उसकोभी शिण्डाकी कहते हैं । शिण्डाकी-रुचिकारक भारी और पित्तकफकारी है ।

शुक्तलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच ।यत्रद्रव्येऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं लघु । पाण्डुक्रिमिहरंरूक्षंभेदकंरक्तपित्तकृत् ॥

अर्थ-कंदमूल और फलादिकमें नोंन और तेल डालकर जो द्रव्य बनायाजाता है उसको शुक्त अर्थात् सिर्का कहते हैं । सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलका, पाण्डु और कृमिरोगनाशक, रूखा, दस्तावर और रक्तपित्तकारक है ।

सन्धानलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलाढ्यंयत्तत्तुविज्ञेयमासुतम् ।

तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः ॥

अर्थ-कंद, मूल फलादिकोंमें राई आदिका चूर्ण डालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं। आचार-रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हलका है।

मद्यनामानि ।

मदिराप्रसवाहालाचपलाचहलिप्रिया ।
अमृतावीरामेधावीमाधवीकापिशायनी ॥

अर्थ-मदिरा, प्रसवा, हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीरा, मेधावी, माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता, कश्य, प्रसन्नेरा, माणिका, कपिशी, गन्धमादिनी, कत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मदगन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुप्रतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मादनी, हली, गुणारिष्ट, सरक, मधुलिका, मदोत्कटा, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारण, तत्त्व, मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्प, साधुरसा, शुण्डा, हारहूर, माद्वीक, मदना, देवसृष्टा, कापिश, अब्धिजा, कल्या, मधूल)।

संस्कृतभाषामें	मदिरा, मद्य ।
बंगभाषामें	मदिरा, मद् ।
गुजरातीभाषामें	दारू ।
मराठीभाषामें	मद्य, दारू ।
हिंदीभाषामें	मदिरा, (दे) दारु, सराव ।
कर्णाटकीभाषामें	शरे, साराइ ।
तैलिङ्गीभाषामें	कल्लु ।
अ०	वाइन ।
फारसीभाषामे	शराव ।

साधारणमदिरागुणाः ।

मद्यंसाधारणंसूक्ष्मंसारकंदाहकंकटु । सुस्वादुतिक्तंचरसे पाकेम्लंचलघुस्मृतम् ॥ अग्निदीप्तिकरंरुच्यंहृद्यंचोष्णंकषायकम् । तीक्ष्णंविकासिचमतंमूत्रलंतुष्टिकृन्मतम् ॥ मलोत्सर्गकरंनाडीवस्तिशुद्धिकरंमतम् । बल्यंपुष्टिकरं

स्वर्य्यंप्रतिभाकारकंमतम् ॥आरोग्यकारकंवर्ण्यंरक्तदूषण-
कारकम् । आनाहंचकफंवातंशूलंचैवविनाशयेत् ॥ विष-
शोकार्त्तपुरुषेस्वल्पाग्नौचहितावहम् । सात्विकैःपुरुषैःपीतं
गीतहास्यादिकारकम् ॥ राजसैर्भक्षितंचेत्स्यात्साहसादि-
करंमतम् । तामसैर्भक्षितंतच्चनिद्रालस्यादिकारकम्॥बलं
कालंचसंज्ञात्वापीतंतदमृतोपमम्।अन्यथाभक्षितंचेत्स्या-
द्विषवच्चापकारकम् ॥ अतीवमादकंतच्चदुर्गंधिविरसंगुरु ।
कृमिजुष्टंचातितीक्ष्णंघनंमृदुचदाहकम् ॥ दुष्टभाण्डस्थितं
नूतमनूद्यमपिचिक्कणम् । उष्णमुष्णपदार्थैस्तुमिश्रितंमलि-
तंतथा ॥ तीक्ष्णैर्द्रव्यैर्युतंतच्चनगृह्णीयान्नरःक्वचित्। स्त्रीद्वि-
जैर्नैवतद्ग्राह्यंबुद्धिभ्रंशकरंयतः ॥ (नि०र०)

अर्थ-साधारण मदिरा-सूक्ष्म, कुछ कुछ दस्तावर, दाहजनक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रस और पाकमें खट्टी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, हृदयको हितकारी, गरम, कषेली, तीक्ष्ण, विकासी, मूत्रकारक, तुष्टिकारक, मलको निकालनेवाली, नाडी और वस्तिको शुद्ध करनेवाली, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाली, प्रभाको उत्पन्न करनेवाली, आरोग्यताको देनेवाली, वर्णको सुंदर करनेवाली रुधिरको दूषित करनेवाली तथा आनाह, कफ, वात और शूलनाशक है विषसे विह्वलहुये, शोकसे पीडित हुये और मंदाग्निवाले मनुष्योंको हितकारी है सात्विक मनुष्य इसको पीनेसे गीत और हास्यादिको करे है रजोगुणयुक्त पुरुषोंको यह पीहुई साहसादि गुणोंको उत्पन्न करे है और तमोगुणयुक्त पुरुषोंको पीहुई निद्रा और आलस्यको करनेवाली है बल आर कालका विचार करके यह पीहुई अमृतकी समान गुण करे है अन्य प्रकार सेवन कीहुई विषकी समान सन्तापको करे है और अत्यन्त नसीली, दुर्गन्ध-युक्त, विरस, भारी, कीडेपडीहुई, अत्यन्त तीक्ष्ण, गाढी, मृदु, दाहक, बुरे बरतनमें रक्खी हुई, नवीन, अप्रिय, चिकनी, गरम, गरम पदार्थोंसे मिली हुई, मलिन और तीक्ष्ण द्रव्योंसे मिली हुई ऐसी मदिरा कभी नहीं पीनी

चाहिये। और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नहीं पीवें कारण यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है।

अरिष्टलक्षणं गुणाश्च ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् ॥
अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ।

अर्थ-जो पकी औषधियोंके काढेसे मदिरा वनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते हैं। अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओंसे गुणोंमें अधिक है। अरिष्ट जिस २ वस्तुसे वनता है उसी २ वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने।

अन्यच्च ।

अरिष्टंदीपनंहृद्यंतुवरंपाचनंलघु।सरंचकटुकंचैवपित्तवात-कफापहम् ॥ कुष्ठगुल्मार्शशोषघ्नंशोफसंग्रहणीहरम् । पा-ण्डुंप्लीहांचोदरंचज्वरंशूलंकृमीन्क्लमम्॥आनाहंनाशयेत्प्रो-क्तंसर्वमद्यैर्गुणाधिकम् ॥

अर्थ-अरिष्ट-दीपन, हृदयको हितकारी, कषेली, पाचक, हलकी, सारक, चरपरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ, गुल्म, ववासीर, शोष, सूजन, संग्रहणी, पाण्डुरोग, प्लीहा, उदररोग, ज्वर, शूल, कृमि, क्लम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योंमें अधिक गुणवाली है।

सुरालक्षणं गुणाश्च ।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ।
सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥
ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।

अर्थ-शालि और साठीधानोंकी पीठीसे जो मदिरा वनाईजातीहै उसको सुरा कहते हैं, सुरा-भारी, बलकारक, स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाली, पुष्टिकारक, कफजनक, मलरोधक तथा सूजन, गुल्म, ववासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है।

वारुणीलक्षणं गुणाश्च ।

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितामता ।

संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी ॥
सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ-पुनर्नवाको शिलपर पीसकर जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । किसीके मतसे ताल और खजूरादिके रसमें जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । वारुणी मदिराके गुण सुराकी समान हैं विशेष करके हलकी तथा पीनस, आध्मान और शूलको निर्मूल करे है ।

अन्यच्च

वारुणीपौष्टिकीहृद्यातीक्ष्णादुग्धप्रदामता । लघ्वीचश्लेष्मलाशूलकासवांतिविबन्धहा ॥ आध्मानंपीनसंश्वासंमूत्रकृच्छ्रंचनाशयेत्।गुल्मंचार्शोनाशयतीत्येवमुक्तंचिकित्सकैः ॥

अर्थ-वारुणीमदिरा-पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, दुग्धजनक, हलकी, कफकारी तथा शूल, खाँसी, वमन, विबन्ध, अफारा, पीनस, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म और बवासीरको हरेहै ।

सीधुलक्षणं गुणाश्च ।

इक्षोःपक्वैरसैःसिद्धःसीधुःपक्वरसश्चसः । आमस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः॥सीधुःपक्वरसःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत् । वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत् । विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ तस्मादल्पगुणःशीतरसःसंलेखनःस्मृतः ।

अर्थ-पकेहुये ईखके रससे जो मदिरा बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो कच्चे ईखके रससे मदिरा बनाईजातीहै उसको शीतरस कहते हैं, पके ईखके रससे बनाईहुई सीधुनामवाली मदिरा-श्रेष्ठ, स्वर, अग्नि, बल और वर्णको करनेवाली, तत्काल वातपित्तकारक, स्निग्ध, रोचन तथा विबन्ध, मेद, सूजन, बवासीर, शोफोदर और कफरोगोंको नष्ट करे है, शीतरस नामवाली मदिरा सीधुसे कुछ अल्पगुणवाली और लेखन है ।

अन्यच्च ।

सीधुःकषायाम्लकमाधुरोवासन्दीपनोमेदमलापमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयार्शोग्रहणीगदघ्नः (हा.सं.)

अर्थ-सीधुनामवाली मदिरा-कषेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, मेद और मलको हरनेवाली तथा आमातिसार, वात, पित्त, शूल, कफरोग, बवासीर और संग्रहणीको दूर करनेवाली है।

गौडीमदिरागुणा।

तीक्ष्णोष्णामधुरागौडीवातघ्नीबलपित्तकृत्।
कान्तितृप्तिकरीपथ्यावह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ०सं०)

अर्थ-गौडी अर्थात् गुडादिसे बनाई मदिरा-तीक्ष्ण, गरम, मधुर, वातनाशक तथा वल, पित्त, कान्ति और तृप्तिकारक, पथ्य, अग्नि और कामको प्रदीपन करनेवाली है।

अन्यच्च।

गौडीकषायामधुराम्लशीतासन्दीपनीशूलमलापहंत्री।
हृद्यात्रिदोषंशमयत्यजीर्णपाण्ड्वामयार्शःश्वसनान्निहन्ति।हा.सं.

अर्थ-गौडी मदिरा-कषेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक, शूल और मलको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, बवासीर और श्वासविनाशक है।

माध्वीकमद्यगुणाः।

माध्वीसुरातुमधुराकिञ्चिदुष्णाकषायका। तीक्ष्णालघ्वी
चहृद्याचरूक्षाचच्छेदनीमता ॥ पित्तंवातंचपाण्डुञ्चकाम-
लांचप्रमेहकम्। गुल्मंचार्शःप्रतिश्यायंविषंकुष्ठञ्चनाशयेत्॥

अर्थ-माध्वीनामवाली मदिरा-मधुर, किञ्चित् गरम, कषेली, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात, पाण्डुरोग, कामला प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्रतिश्याय, विष और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

माध्वीकंशीतलाम्लंमधुरमपितथास्यात्कषायोष्णकञ्च
हन्यात्पित्तामयार्शःश्वसनमपितथाचातिसारंप्रमेहान्॥
शूलानाहोपमर्दंजरयतिसकलंदीपयत्यग्निसात्म्यं
तस्माद्धातामवातंवमनमपितथाहन्तिसर्वांश्चरोगान् ॥

अर्थ-माध्वीक मदिरा-शीतल, खट्टी, मधुर, कषेली, गरम तथा पित्त-रोग, बवासीर, श्वास, अतिसार, प्रमेह, शूल और आनाहको दूर करे है, सर्व वस्तुओंको पाचनकरनेवाली, अग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, आमवात और वमनको हरनेवाली है तथा सात्म्य है।

पैष्टीमद्यगुणाः।

पैष्टीसन्दीपनीरुच्याकफकृद्वातनाशिनी।
पित्तलापाण्डुरोगाणांकारिणीबहुधामता ॥ (हा० सं०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको करनेवाली, कफकारी, वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

पैष्टीसुरातुमधुरातीक्ष्णाम्लाकटुकागुरुः।
दीपनीस्तन्यकफदामेहपुष्टिकरीमता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-मधुर, तीक्ष्ण, खट्टी, चरपरी, भारी, दीपन, स्तनोंमें दूधको करनेवाली, कफकारी तथा प्रमेह और पुष्टिको करनेवाली है।

इक्षुभवमद्यगुणाः।

मद्यंतुचैक्षवंशीतंमदकृच्चसमीरितम् ॥
यवमद्यंस्तम्भकंचरूक्षंचैवतुदीपकम् ॥
मोहकंचाग्निजनकंवृष्यंवातकफापहम्।

अर्थ-ऐक्षव मदिरा-शीतल, मदकारक और जौकी मदिरा स्तम्भक, रूखी, अग्निप्रदीपक, मोहकारक, अग्निकारक, वीर्य्यवर्द्धक और वातकफ-नाशक है।

सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः।

सर्ववृक्षभवंमद्यंशीतलंगुरुमोहनम्।
बल्यंवृष्यंन्हृद्यंचतृष्णासन्तापनाशकम् ॥

अर्थ-सर्ववृक्षोंकी मदिरा-शीतल, भारी, मोहन, बलकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृष्णा और सन्तापनाशक है।

द्राक्षामदिरागुणाः।

द्राक्षासुरातुमधुराश्रेष्ठास्निग्धारुचिप्रदा। विशदादीपनील-

ष्वीकिञ्चिदुष्णाबलप्रदा ॥ पुष्टिकृल्लेखनीवर्ण्याशुक्रलाच सरामता। किञ्चित्पित्तकरीमृद्वीवातलाशोषमेदनुत् ॥ क्लेदं पाण्डुंकफंचार्शःकृमीन्मेहंचकामलाम्। रक्तपित्तंचकुष्ठंच नाशयेदितिकीर्त्तिता॥विषमंचज्वरंचैवरक्तार्शश्चैवनाशयेत्।

अर्थ-दाखोंकी मदिरा-श्रेष्ठ, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, विशद, अग्नि-प्रदीपक, हलकी, किञ्चित् गरम, बलकारक, पुष्टिकारक, लेखन, वर्णको सुंदर करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित् पित्तकारक, मृदु, वातकारक तथा शोष, मेद, क्लेद, पाण्डुरोग, कफ, बवासीर, कृमि, प्रमेह, कामलारोग, रक्तपित्त, कोढ, विषमज्वर और खूनीववासीरको हरण करे है।

खर्जूरमद्यगुणाः।

खर्जूरमद्यंशीतंस्याद्रुच्यंवातकरंगुरु ।

अर्थ-खजूरकी मदिरा-शीतल, रुचिकारक, वादी और भारी है।

तालमद्यगुणाः।

श्लेष्मदोषकरावृष्यावातलाश्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणातालमध्विका ॥ (हा.सं०)

अर्थ-ताडकी मदिरा-कफकारी, वीर्य्यवर्द्धक, वादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा खांसी और हृल्लासको हरे है।

आसवलक्षणं गुणाश्च।

यदपक्कौषधाम्बुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः ।
आसवस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥

अर्थ-जो कच्ची औषधियोंके पानीसे मदिरा बनाई जातीहै उसको आसव कहते हैं। आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे वह बनाया जाता है उसी उसीके अनुसार जानने।

सुरासवगुणाः।

सुरासवस्तीव्रमदोवातघ्नोवदनप्रियः ॥ (चरक०)

अर्थ-सुरासव-तीव्रमदकारक, वातनाशक और मुखप्रियहै।

अन्यच्च।

सुरासवःस्नेहनःस्याद्गुरुर्बल्यश्चदीपनः ।

ग्राहकः पुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत् । (नि०र०)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन, भारी, बलकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दूध, रुधिर, मांस, कफ और मेदको हरे है तथा सग्रहणी, गुल्म, मूत्राघात, बवासीर और सूजनको हरे है ।

गुडासवगुणाः ।

गुडासवःकटुस्तिक्तोबल्यश्चाग्निप्रदीपनः ।
सुस्वादुर्मूत्रलोवर्ण्योबृंहणस्तर्पणोमृदुः ॥
सृष्टविट्कश्चवैप्रोक्तोमुनिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चरपरी, कडवी, बलकारक, अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ठ, मूत्रजनक, वर्णको सुंदर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है।

मध्वासवगुणाः ।

मध्वासवोलघुस्तीक्ष्णोमधुरस्तुवरोमतः ।
छेदीरूक्षःप्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषेली, छेदक, रूखी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है ।

द्राक्षासवगुणाः ।

द्राक्षासवःकफकारीरक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और कुष्ठनाशक है ।

शर्करासवगुणाः ।

शर्करायाश्चासवस्तुपाचकोग्निप्रदीपनः ।
रोचनश्चलघुःस्वादुर्वृष्योवस्तिविकारहा ॥
वातंशोषंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-पाचक, अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, वास्तिविकारविनाशक तथा वात और शोषनाशक है ।

जाम्बवासवगुणाः ।

जाम्बवस्यासवश्चापितुवरोग्राहकोमतः ।
वातकोपनकारीचमुनिभिःसमुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्ववासव-कषेली, मलरोधक और वातको कुपित करे है।

मैरेयमद्यगुणाः।

मैरेयकंतुमद्यंस्याद्वृष्यंधातुविवर्द्धकम्। सरंतृप्तिकरंचैवगुरुतीव्रमदप्रदम्॥ सुखप्रियंचमधुरंकटुप्रोक्तंकफप्रदम्। वलवर्द्धनकृच्चैवमेदोवातकृमीञ्जयेत्॥

अर्थ-मैरेयमदिरा-वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, सारक, तृप्तिकारक भारी, तीक्ष्णमदकारक, सुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, वलवर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणाः।

नूत्नंमद्यंस्मृतंशीतंवातलंपित्तलंतथा।
त्रिदोषजनकंदाहिकफकृद्विशदंगुरु।
अहृद्यंचसरंचैवदुर्गंधिबृंहणंमतम्॥

अर्थ-नवीनमदिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणाः।

जीर्णमद्यंभ्रामकंस्याद्दीपनंरुचिकृल्लघु। सुगंधिवृष्यंहृद्यंच स्रोतसांचविशोधकम्॥लवणेनविनासर्वरसैर्युक्तंकफापहम्। वातंकृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदितिकीर्त्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी, सुगंधियुक्त, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमि और सर्वरोगोंको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणाः।

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टोयःपिवेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा॥ किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथा स्मृतम्। अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम्॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितजनक, अन्नोंके

साथ बलाबलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराको पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेंही अन्नकी समान गुणकारक है, परन्तु अविधिसे जो पींवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पींवे है उसके अमृतकी सदृश गुणोंको करे है।

सुराप्रयोगविधिः।

कृशानांरक्तमूत्राणांग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।
सुराप्रशस्तावातघ्नीस्तन्यरक्तक्षयेषुच ॥

अर्थ-कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, संग्रहणी और अर्शरोगवाले मनुष्योंको मदिरा, विशेष हितकारी है, सुराको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षयरोग दूर होता है।

मतान्तरे।

पूर्णेकषायपित्तेचयोगयुक्तासुराहिता । बहुदोषहराचैवश्ले-ष्मरोगेविशेषतः ॥ श्रमज्वरातुरेशोषेशोफपाण्ड्वामयेक्षये ॥ मतेःक्लमेऽपस्मारेचपक्ष्मणाश्चभ्रमेषुच ॥ श्रान्तेवाविषपी-तेवासर्पदष्टेजलोदरे । रक्तपित्तेतथाश्वासेवारुणीनहिता मता ॥ (हा०सं०)

अर्थ-कषेलेपनसे युक्त हुवा पित्त जब पूर्ण होवे तब योगसे युक्त मदिरा हितकारक है बहुदोषोंको हरनेवाली और विशेषकरके कफके रोगोंको नष्ट करे है. परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोफ पाण्डुरोग, क्षय, बुद्धिकाथकना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया हो उसको, सर्पके काटेमें, जलोदरमें, रक्तपित्त और श्वासरोगमें मदिरा हितकारी नहीं है।

अथ मद्यानां गन्धनाशनोपायः।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदसिवाचम-भिव्यनक्ति । स्वाभाविकंमुखजमुज्झतिपूतिगंधं गन्धं चमद्यलशुनादिभवंचनूनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नागरमोथा, एलुआ, कूठ, जीरा, धनिया और इलायचीको चर्वण करके जो सभामें बोले हैं उनकी स्वाभाविक मुखकी दुर्गंध दूर होती है

और मद्य लशुनादिकी भी दुर्गंध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष और प्रकार देखनेकी इच्छा होय तो "भैषज्यभास्कर" में देखो।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे सन्धानवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः।

क्षारद्वयम्।

एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः।

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको दूर करता है।

स्वर्जिकायायशूकश्चक्षारद्वयमुदाहृतम्। मिलितंतूक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥

अर्थ-सज्जी और जवाखार दोनों मिलेहुएको "क्षारद्वय" कहते हैं यह मिलेभी अपने २ गुणोंको करे हैं और विशेषकरके गुल्मरोगको हरे हैं।

द्विकटुकम्।

पिप्पलीमरिचरूपम्।

अर्थ-पीपल और कालीमिर्च इनको "द्विकटुक" कहते हैं।

क्षारत्रयम्।

स्वर्जिकाचयवक्षारष्टंकणक्षारएवच। क्षारत्रयंसमाख्यातं त्रिक्षारःसचकथ्यते ॥ तत्तिक्तंबलशुक्रामकान्तिशूलोदरापहम्। वातंगुल्मंकफंचैवनाशयेदितिकीर्तितम् ॥

अर्थ-सज्जी, जवाखार और सुहागा यह "क्षारत्रय" अथवा त्रिक्षार कहे जाते हैं, क्षारत्रय-कडवे तथा बल, शुक्र, आम, कान्ति शूल और उदर रोगको हरे हैं और वात; गुल्म तथा कफको नष्ट करे हैं।

लवणत्रयम्।

सैंधवंचविडंचैवरुचकंचेतिविश्रुतम्। लवणत्रयमाख्यातंतच्च त्रिलवणंतथा ॥ वीर्य्योष्णंदीपनंतीक्ष्णंकफघ्नंपित्तवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सैंधानोंन, विरियासंचर, और संचरलवण यह तीनों मिलेहुए लवणत्रय वा त्रिलवण कहलाते हैं। लवणत्रय-उष्णवीर्य्य, दीपन, तीक्ष्ण, कफनाशक और पित्तको बढानेवाले हैं।

त्रिकटु ।

पिप्पलीमरिचंशुण्ठीत्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्यूषणं व्योषंकटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्यूषणंदीपनंहन्तिश्वासकास गलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेद-श्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ-पीपल, मिर्च और सोंठ इन तीनों औषधी एकत्र मिलीहुईको-त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष और कटुत्रिक (कटुत्रय, फलत्रिक) कहते हैं। त्रिकुटा-अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खाँसी, गलरोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद और पीनसरोगको दूर करे है ।

कटूषणा।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंविश्वमेतत्रिभिःसमैः ।
कटूषणाचविज्ञेयाबुधैरुत्र्यूषणवद्गुणैः ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल और सोंठ यह तीनों समान मिलीहुई कटूषण कहलाती हैं इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिफला ।

पथ्याबिभीतधात्रीणांफलैःस्यात्रिफलासमैः ।
फलत्रिकञ्चत्रिफलासावराचप्रकीर्त्तिता ।

अर्थ-हरड, बहेडा और आमला यह तीनों समान मिलेहुएको त्रिफला, फलत्रिक, वरा (त्रिफली, फलत्रय, फल) कहते हैं ।

मतान्तरे ।

एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौविभीतकौ ।
चत्वार्य्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे-एक हरड, दो बहेडे और चार आमले मिलेहुएको त्रिफला कहते हैं ।

गुणाः ।

त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरीसरा ।
चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ-त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको हरनेवाला, कुष्ठनिवारक, सारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिको करनेवाला तथा विषमज्वरनाशक है।

अन्यच्च ।

त्रिफलामुखरोगघ्नीगलगण्डव्रणापहा । वयसःस्थापकावृष्यासराहृद्याबलप्रदा ॥ हन्तिनाडीव्रणंकण्डूंमेधास्मृतिप्रसादिनी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोपणीक्लेदनाशिनी ॥

अर्थ-और भी त्रिफला-मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रणविनाशक, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्द्धक, कछकुछ दस्तावर, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, नाडीव्रण, और कण्डुरोगनाशक है, मेधा और स्मरणशक्तिको बढानेवाली, रसायन, रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली, व्रणको भरनेवाली और क्लेदनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्जूरीफलानिमिलितानितु । मधुरत्रिफला ज्ञेयामधुरादिफलत्रयम् ॥ मधुरत्रिफलःवृष्याविशदामधुरामता । धातुवृद्धिकरीप्रोक्ताकफवातविनाशिनी ॥

अर्थ-दाख, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिलीहुई त्रिफला कहलाती है अथवा मधुर फलत्रय मधुरात्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, विशद, मधुर, धातुवर्द्धक और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

जातीफलंतथैलाचलवंगफलमेवच ।
सुगंधत्रिफलाप्रोक्तातृतीयंचफलत्रिकम् ॥

अर्थ-जायफल, इलायची और लौंग इन तीनोको सुगंधात्रिफला और सुगंधफलत्रिक कहते हैं ।

मतान्तरे ।

जातीफलंपूगफलंलवंगलतिकाफलम् ।
सुगंधत्रिफलाज्ञेयासूरिभिस्त्रिफलास्मृता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंको सुगंधत्रिफला कहा है ।

गुणाः ।

सुगन्धित्रिफलावृष्यामुखशुद्धिकरीमता ।
हृद्यारुचिकराचैवकफस्यचविनाशिनी ॥

अर्थ-सुगंधित्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, मुखको शुद्धकरनेवाली हृदयको हितकारी, रुचिकारक और कफको हरे है ।

त्रिसुगन्धि ।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्त्तितंवातकफापहारि ।
वृष्यंविषघ्नंचसनागपुष्पंज्ञेयंचतुर्जातकमेतदेव ॥

अर्थ-दालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगंधि कहतेहैं-त्रिसुगंधि वात और कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और विषविनाशक है । और इन तीनोंमें नागकेशर मिलीहुईको चतुर्जातक कहते हैं ।

अन्यच्च ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धंत्रिजातकम् । नागकेसरसंयुक्तंचातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयंपाचनंरूक्षंतीक्ष्णौष्णंमुखगंधहृत् । लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम् ॥

अर्थ-दालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनों समान २ मिलेहुएको "त्रिजातक" कहते हैं और इसमें नागकेशर मिला दीजाय तो "चातुर्जातक" कहते हैं । त्रिसुगंधि और चातुर्जातक पाचक, रूखे, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधको हरनेवाले, हलके, पित्तजनक, अग्निकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले तथा कफ, वात और विषविनाशक हैं ।

अपिच ।

त्रिजातंपित्तलंरूक्षंरुच्यंचाग्निप्रदीपनम् । तीक्ष्णंचोष्णंलघुवर्ण्यंकटुवृष्यंबलप्रदम् ॥ रसायनंकफंवातंविषंश्वासंचपीनसम् । स्वरभेदंचकासंचमुखदोषंचनाशयेत् ॥

अर्थ-त्रिजात-त्रिसुगंधि-पित्तकारक, रूखे, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तीक्ष्ण, गरम, हलके, वर्णको सुंदर करनेवाले, चरपरे, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, रसायन तथा कफ, वात, विष, श्वास, पीनस, स्वरभेद, खाँसी और मुखके दोषोंको हरे है ।

मधुरत्रयम् ।

घृतंगुडंमाक्षिकंचविज्ञेयंमधुरत्रयम् ।
विद्यात्रिमधुरंचैवप्रोक्तंवामधुरत्रिकम् ॥

अर्थ-घी, गुड और शहत यह तीनों मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, मधुरत्रिक कहते हैं।

मतान्तरे।

सिताघृतंमाक्षिकंवाविज्ञेयंमधुरत्रिकम्।
मधुरत्रितयंचाग्निदीपनंकान्तिकारकम्॥
विषदोषंरक्तपित्तंतृष्णांचैवविनाशयेत्।

अर्थ-और कोई कहतेहैं कि, चीनी, घी और शहत यह तीनों मिलेहुये मधुरत्रय कहलातेहैं। मधुरत्रय-अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा विषविकार, रक्तपित्त और तृषाको दूर करेहै।

त्रिसमम्।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडंचैकत्रमिश्रितम्।
त्रिसमंभाष्यतेसुज्ञैरथवापिसमत्रिकम्॥

अर्थ-हरड, सोंठ और गुड यह तीनों एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते हैं वा "समत्रिक" कहतेहैं।

मतान्तरे।

हरीतकीचशुण्ठीचगुडूच्येकत्रयोजितम्।
समत्रयंरुचिकरंचक्षुष्यंमलशोधनम्॥
वातंपित्तंनाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम्।

अर्थ-और किसीके मतसे हरड, सोंठ और गिलोय यह तीनों मिलीहुई "त्रिसम" कहलाती है। त्रिसम-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, मलशोधक तथा वात और पित्तनाशकहै।

त्रिकार्षिका।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतत्त्रिकार्षिकम्।
त्रिकार्षिकंज्वरंशोथंपित्तंवातंभ्रमंतथा॥
आमंशूलमतीसारंग्रहणींचविनाशयेत्।

अर्थ-सोंठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनों मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते हैं त्रिकार्षिक-ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतिसार और संग्रहणीको हरे है।

त्रिसिता।

गुडोत्पन्नाचमधुजाहिमोत्थेतित्रिधासिता । सितागुडोत्था सस्नेहावृष्याक्षीणक्षतेहिता ॥ मधुजाशर्कराबल्यागुर्वीवृष्या चशीतला । हिमोत्थाशर्कराकिञ्चिदुष्णातिक्ताचपिच्छला ॥

अर्थ-ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनों "त्रिसिता" कहलाती हैं। तहां ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक और क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको हितकारी है। शहतकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक और शीतल है। ज्वारकी खांड-किञ्चित् गरम, कडवी और पिच्छिल है।

त्रिकण्टकम्।

शुण्ठीगुडूचीदुःस्पर्शात्रिकण्टकमितिस्मृतम् ।
त्रिकंटकानांक्काथःस्यात्पित्तज्वरविनाशनः ॥
नेत्ररोगंवमिंचैवमस्तकस्यरुजंतथा ॥

अर्थ-सोंठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएको "त्रिकण्टक" कहते हैं. त्रिकण्टकोंका काढा-पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकरोगको दूर करे है।

कण्टकत्रितयम्।

दुस्पर्शाबृहतीह्यग्निदमनीतिसमांशकम् ।
कण्टकत्रितयंप्रोक्तंत्रिदोषभ्रमनाशनम् ॥
ज्वरंपित्तंचहिक्कांचतन्द्रालापंचनाशयेत् ।

अर्थ-जवासा, बडीकटेरी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई "कण्टकात्रितय" कहलाती है । कण्टकात्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त, हुचकी, तन्द्रा और आलापको हरे है।

कण्टकारीत्रयम्।

त्रिकण्टक्षुद्राबृहतीकण्टकारीत्रयंस्मृतम् ।
कण्टकारीत्रयंतन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम् ॥
पित्तज्वरंत्रिदोषंचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-गोखुरू, कटेरी और कटाई इन तीनो एकत्र मिलीहुईको "कण्टकारीत्रय" कहते हैं. कण्टकारीत्रय-तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्तज्वर, त्रिदोष इनको दूर करे है।

त्रिलोहम्।

स्वर्णंरूप्यंतथाताम्रंत्रिलोहमितिकीर्त्तितम्।
त्रिलोहस्यगुणाःप्रोक्ताःपंचलोहसमाबुधैः॥

अर्थ–सोना, चांदी और तांवा यह "त्रिलोह" कहलाते हैं त्रिलोहेके गुण पंचलोहेके समान जानने।

अञ्जनत्रयम्।

पुष्पाञ्जनंचकालाख्यंरसाञ्जनमितित्रयम्।
अंजनत्रयमेतद्धिनेत्रयोःपरमंहितम्॥

अर्थ–पुष्पांजन, कालाञ्जन और रसाञ्जन यह अंजनत्रय कहे जाते हैं, अंजनत्रय–नेत्रोंको परमहितकारी है।

अथोपविषात्रयम्।

निर्विषातिविषाचैवलाङ्गल्युपविषात्रयम्।
विषात्रयंविषघ्नंचज्वरातीसारनाशनम्

अर्थ–निर्विषी, अतीस और कलिहारी यह तीनों उपविष कहलाते हैं। उपविषात्रय विषनाशक और ज्वरातिसारविनाशकहै।

चतुरूषणम्।

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्।
व्योषस्ययेगुणाःप्रोक्ताह्यधिकाश्चतुरूषणे॥

अर्थ–त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूषण कहा जाता है चतुरूषणके गुण त्रिकुटेसे कुछेक ज्यादे हैं।

चातुर्जातकम्।

त्रिगंधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेसरम्।
त्रिगंधंचचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तजित्॥
वर्ण्यंरुचिकरंतीक्ष्णंविषश्लेष्मामयाञ्जयेत्॥

अर्थ–इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागकेशर यह चारों मिलेहुएको चातुर्जातक कहते हैं। त्रिसुगंधि तथा चातुर्जातक रूखा, गरम, हलका, पित्तनाशक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विष और कफरोगको नष्ट करे है।

कटुचतुर्जातकम् ।

एलात्वक्पत्रंमरिचंचतुर्जातंकटुस्मृतम् ।
चतुर्जातंचकटुकंचातुर्जातसमंगुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहतेहैं, कटुचतुर्जातक चरपरा और गुण चातुर्जातककी समान जानने ।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातिविषामुस्तात्रयमेतत्रिकार्षिकम् । गुडूचीसंयुतंचैवचातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रंपाचकंस्याज्ज्वरजीर्णज्वरापहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा और गिलोय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं. चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर, जीर्णज्वर, त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है ।

चतुर्बीजम् ।

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका । एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमुदाहृतम् ॥ तच्चूर्णंभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयान् । अजीर्णंशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हालो, कलोंजी और अजवायन इन चारों एकत्र मिलेहुएको चतुर्बीज कहते हैं । इसका चूर्ण नित्य सेवन करनेसे वातरोग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है ।

चातुर्थिकगणः ।

आमलक्यभयाकृष्णाचित्रकंचसमंसमम् ।
सामान्यरोगहंताचचातुर्थिकगणःस्मृतः ॥

अर्थ-आमला, हरड, पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिलेहुएको चातुर्थिकगण कहतेहैं यह अजीर्णादिरोगनाशक है ।

बलाचतुष्टयम् ।

महाबलाचातिबलाबलानागबलातथा ।
बलाचतुष्टयंशीतंमधुरंबलकांतिकृत् ॥
स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।

अर्थ-सहदेई, कंघी, खिरैंटी और गंगेरन इन चारों एकत्र मिलीहुईको वलाचतुष्टय कहतेहैं, वलाचतुष्टय-शीतल, मधुर, वलवर्द्धक, कांतिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उरःक्षतरोगनाशक है ।

कटुग्रंथिचतुष्कम् ।

कटुग्रन्थिचतुष्कंतुशुण्ठीलशुनमार्द्रकम् ।
पिप्पलीमूलसंयुक्तंवातव्याधिहरंपरम् ॥

अर्थ-सोंठ, लहसुन, अदरख और पीपरामूल यह चारों एकत्र मिलेहुएको कटुग्रन्थिचतुष्क कहतेहैं । कटुग्रन्थिचतुष्क-वातरोगनाशक है ।

चतुस्समम् ।

जातीफलंत्रिदशपुष्पसमन्वितञ्चजीरञ्चटङ्कणयुतंचरकेन
चोक्तम् । चूर्णानिमाक्षिकसितासहितातिलीढाआमाति-
सारमखिलंगुरुहन्तिशूलम् ॥

अर्थ-जायफल, लौंग, जीरा और सुहागा इन चारोंको चतुस्सम कहतेहैं । इस चतुस्समका चूर्ण वनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्टहोताहै ।

पंचकोलम् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यंचित्रकनागरम् ।
एकत्रमिश्रितैरेभिः पंचकोलकमुच्यते ॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ यह पांचों एकत्र मिलेहुए पंचकोल कहे जातेहैं ।

पंचकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् ।
तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफवातनुत् ॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् ।

अर्थ-पंचकोल-रस और पाकमें चरपरा, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग. आनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है ।

द्वितीयपञ्चकोलम् ।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्रंविश्वभेषजम् ।
समभागानिचैतानिद्वितीयंपंचकोलकम् ॥

पंचकोलंद्वितीयंतुपाचकंदीपनंस्मृतम् ।

अर्थ-हरड, अजमोदा, संचलनोंन, हींग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिलीहुई द्वितीय पंचकोल कहलाती हैं। द्वितीय पंचकोल पाचक और अग्निप्रदीपक है।

पंचत्वक् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेणसमन्वितानाम् ।
त्वक्पंचकंपंचमहीरुहाणामितिव्रणघ्नंश्वयथुघ्नमेतत् ॥

अर्थ-वड, नदीवड,गूलर, वेंत और पीपल इन पांचोंकी छाल एकत्र मिली हुईको पंचत्वक् कहते हैं-यह व्रणविनाशक और सूजनको दूर करैहै।

मतान्तरे ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः ।
पंचैतेक्षीरिणोवृक्षास्तेषांत्वक्पंचवल्कलम् ॥
त्वक्पंचकंहिमंग्राहिव्रणशोफविसर्पजित् ।

अर्थ-किसीके मतसे-वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर इन पांचों क्षीरीवृक्षोंकी एकत्र मिलीहुई छालको पंचत्वक वा पंचवल्कल कहते हैं, त्वक्पंचक-शीतल, मलरोधक तथा व्रग, सूजन और विसर्परोगको नष्ट करे है।

पंचपल्लवाः ।

पल्लवाःक्षीरिवृक्षाणांहिताःपित्तातिसारिणाम् ।
कषायाःस्तम्भनारूक्षाःफलंतेषान्तुवातकृत् ॥

अर्थ-पचक्षीरीवृक्षोंके पत्तोंको पंचपल्लव कहते हैं, यह पंचपल्लव पित्तातिसारवाले रोगियोंको हितकारी हैं, कषाय, स्तम्भक, रूक्ष और उन वृक्षोंके फल वातकारक हैं।

अन्यच्च ।

पंचक्षीरिद्रुपत्रंतुशीतंस्वादुचतिक्तकम् । तुवरंस्तम्भकंग्राहिलेखनंकफवातनुत् ॥ वातरक्तंमलस्तम्भमाध्मानंचातिसारकम् । नाशयेत्पित्तरोगंचलघुप्रोक्तंमनीषिभिः ॥ तेषांफलंतुविष्टम्भिग्राहकंगुरुतूवरम् । अम्लंचमधुरंवृष्यंरक्त-

पित्तविनाशनम् ॥कफवातंचहृल्लासंशोषंवातंचगुल्मकम् । अरुचिंश्वासकासौचनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥ पक्कंगुणाधिकंज्ञेयमितिपूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचक्षीरी वृक्षोके पत्ते-शीतल, स्वादिष्ठ, कडवे, कषेले, स्तम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करेहैं और हलके हैं, इनके फल-विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कषेले, खट्टे, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ, वात, हृल्लास, शोष, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करेहैं, इनके पक्के फल-अधिक गुणवाले हैं ।

पंचांगम् ।

त्वक्पत्रफलमूलानिपुष्पाण्येकस्यशाखिनः ।
पंचाङ्गमितिबोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ-एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिलेहुएको पंचाग कहते है ।

निम्बपंचांगम् ।

निम्बस्यपुष्पफलत्वक्पत्रमूलंचपंचकम् ।
पंचनिम्बमितिख्यातंसर्वकुष्ठहरंपरम् ॥

अर्थ-नीमके-फूल, फल, छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिले, हुओंको पंचनिम्बक कहतेहैं, पंचनिम्ब-सर्वकुष्ठरोगनाशक है ।

अस्यगुणाः ।

पंचनिम्बन्तुतुवरंतिक्तंशीतंमधुस्मृतम् । लघुज्वरहरंकुष्ठ पित्तनाशकरंमतम् ॥ वातरक्तंचकण्डूतिंदाहंमेहंविषंज्वरम्। वातंचनाशयेदेतदितिपूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब-कषेले, कडवे, शीतल, मधुर, हलके तथा ज्वर, कोढ-पित्त, वातरक्त, कण्डू, दाह, प्रमेह, विष, ज्वर, और वातको दूर करे है ।

अपिच ।

निम्बवृक्षस्यपंचाङ्गंरक्तदोषहरंपरम् ।
पित्तंकण्डूंव्रणंकुष्ठंदाहंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब अर्थात् निम्बपंचांग-रुधिरके दोषोंको हरनेवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है ।

क्षारपञ्चकम् ।

पलाशमूलकक्षारौयवक्षारःसुवर्च्चिका ।
तिलनालोद्भवक्षारःक्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ-ढाकका खार, मूलीका खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचों मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं क्षारपंचक-गुल्म, ववासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपञ्चकम् ।

सैन्धवंरुचकंचैवविडमौद्भिदमेवच । सामुद्रेणसमायुक्तंज्ञेयं लवणपंचकम् ॥ लवणानांपंचकंतुशोषणंचरुचिप्रदम् । मलानुलोमकंदाहिनेत्र्यंवातंकफंहरेत् ॥ शूलंचनाशयत्येवमुक्तंपूर्वैर्मनीषिभिः ।

अर्थ-सैंधानोन, संचल अर्थात् कालानोन, विरियासंचरनोन, औद्भिद और समुद्रनोन यह पांचों मिलेहुए लवणपंचक कहलाते हैं । लवणपंचक-शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करैहै ।

लघुपञ्चमूलम् ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णीवार्त्ताकीकण्टकारिका । गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठंपञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदंह्रस्वंबृंहणंबलवर्द्धनम् । कषायतिक्तकंनातिशीतोष्णंसर्वदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णी (सालवन), पृश्निपर्णी (पिठवन), कटाई, कटेरी और गोखुरू यह पांचों मिलेहुए लघुपंचमूल कहलातेहैं । लघुपंचमूल-पुष्टिकारक, वलवर्द्धक, कषेला, कडवा, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सर्व प्रकारके दोषोंको दूर करे है ।

महत्पञ्चमूलम् ।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । एतन्महत्पं-

ञ्चमूलसंज्ञकंसमुदाहृतम् ॥ पंचमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफ वातनुत् । मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ-बेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अरणी यह पांचों एकत्र मिलेहुए महत्पञ्चमूल कहे जातेहैं । महत्पंचमूल कडवा, कषेला, कफवात-नाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हलका और अग्निप्रदीपक है ।

मध्यमपंचमूलम् ।

बलापुनर्नवाशूर्पपर्णीवेरण्डमेवच । एकत्रयोजितेनैवस्यान्म-ध्यपंचमूलकम् ॥ मध्यमंपञ्चमूलन्तुवृष्यंवातकफापहम् । किञ्चित्पित्तकरंप्रोक्तंपूर्वाचार्यैश्चसूरिभिः ॥

अर्थ-खिरैंटी, पुनर्नवा (साँठ) मुगवन, मषवन और अंड इन पांचों एकत्रमिले हुओंको मध्यमपंचमूल कहतेहैं । मध्यमपंचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

बलाख्यपंचमूलम् ।

निशामृतामेषशृङ्गीगोपवल्लीविदारिका । एतासांचैवमूल-न्तुबलाख्यंदोषनाशकम् ॥ बलाख्यंपञ्चमूलन्तुभेदकंचप्र-कीर्त्तितम् । शोफज्वराणांशमनंपूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ-हलदी, गिलोय, मेढाशिंगी, सारिवा और विदारीकंद: इन पांचोंके मूलको बलाख्यपंचमूल कहतेहैं । बलाख्यपंचमूल-भेदक, तथा सूजन और ज्वरको शांति करेहै ।

जीवनपंचमूलम् ।

जीवकर्षभकौवीराजीवन्तीचशतावरी । जीवनीयमिदंप्रोक्तं चतुर्थंपंचमूलकम् ॥ जीवनंपंचकंवृष्यंचक्षुष्यंधातुवर्द्धक-म् ॥ बल्यंदाहंकफंपित्तंज्वरंतृष्णाञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, बडीशतावर, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपंचमूल कहतेहैं । जीवनीयपंचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, बलकारक, तथा दाह, कफ, पित्त, ज्वर और तृषाको दूर करे है ।

तृणपंचमूलम् ।

शरेक्षुदर्भकाशानांनलस्यमूलमेवच ।
सौश्रुतश्चरकंचैवतृणाख्यंपञ्चमूलकम् ॥ (सु०)

अर्थ-शर, ईख, दाभ, काँस और नल इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है ।

अन्यच्च ।

कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् ।
पञ्चतृणमिदंख्यातंतृणजंपञ्चमूलकम् ॥ (च०)

अर्थ-कुशा, काँस, सरपता, दाभ और ईख इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा चक्रदत्तमें लिखा है ।

अन्यच्च ।

शालीक्षुकुशकाशैःस्याच्छरेणतृणपञ्चकम् ।
एषांमूलंतृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसङ्गहृत् ॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश, काँस और सरपता इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकनिघण्टुमें लिखा है । तृणपंचमूल-तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्रके रुकनेको दूर करे है ।

अस्य गुणाः ।

तृणानांपंचमूलन्तुपित्तज्वरतृषापहम् ।
रक्तदोषाम्लपित्तञ्चस्त्रीरोगंरक्तपित्तकम् ॥
प्रमेहंनाशयेदेतदितिसुज्ञैर्निरूपितम् ।

अर्थ-तृणपंचमूल-पित्तज्वर तृषा, रक्तविकार, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको हरे है ।

गोक्षुरादिपञ्चमूलम् ।

गोक्षुरोबदरीचेंद्रवारुणीकासमर्दिका । गोक्षुराद्यंपञ्चमूलं शिरीषेणसमन्वितम् ॥ गोक्षुरादिकपञ्चानांमूलंकुष्ठार्शनाशनम् । वृष्यंवातंकफंगुल्मंव्रणंचामञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-गोखुरू, बेरी, इन्द्रायण, कसौंदी और शिरस इन पांचोंके मूलको गोक्षुरादिपंचमूल कहते हैं । गोक्षुरादिपञ्चमूल-कुष्ठ, बवासीर, वात, कफ,

गुल्म, व्रण और आमको दूर करे है तथा वीर्य्यवर्द्धक है ।

पञ्चमहाविषाणि ।

गौरपाषाणकश्चैवतालकश्चमनःशिला । वत्सनाभस्यसर्प-
स्यमहापञ्चविषाणिच ॥ महाविषाणिपञ्चैवमादकानितथा-
पुनः । सद्यःप्राणहराण्येवशुद्धानिह्यमृतंजगुः ॥

अर्थ—शंखिया, हरिताल, मनशिल, वत्सभाव और सर्पका विष यह पांच महाविष हैं । पंचमहाविष—मदकारक और तत्काल प्राणोंको हरनेवाले हैं यही शुद्ध किये हुए और युक्तिके साथ सेवन किये हुए अमृतके समान गुणकारक हैं ।

पञ्चोपविषाणि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंतथालाङ्गलिकापिच । धत्तूरकोहयारिश्च
पञ्चैवोपविषाणिच ॥ उपपूर्वंपञ्चविषंमादकंप्राणहारकम् ।
शोधितंतत्तुबलदंवीर्य्यवृद्धिकरंपरम् ॥

अर्थ—आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, धतूरा और कनेर यह पांच उपविष कहे जाते हैं । पंचउपविप—मदकारक, प्राणहारक वही शुद्ध किये हुवे—बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

पञ्चगव्यम् ।

गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिस्तथैवच ।समंयोजितमेकत्रपंच-
गव्यमितिस्मृतम् ॥ पञ्चगव्यंदेहशुद्धिकरंकफविनाशनम् ।
अजीर्णापस्मृतिज्वरंभूतबाधाश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—गायका मूत्र, गोबर, दुध, दही और घी यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुएको पञ्चगव्य कहलाते हैं । पञ्चगव्य—देहशोधक, कफनाशक तथा अजीर्ण, अपस्मार, ज्वर और भूतबाधाको दूर करे है ।

पञ्चमाहिषम् ।

माहिषाम्बुदधिक्षीरंसाभिघारंचतद्रसः ।
तत्पञ्चमाहिषंज्ञेयंतद्वच्छागलपञ्चकम् ॥

अर्थ—भैंसका मूत्र, गोबर, दही, दूध और घी-इनको पंचमाहिष कहते हैं इसी प्रकार छागलपंचक जानना ।

सुगन्धपञ्चकम् ।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानिच ।
महासुगन्धमित्युक्तोनामतोयक्षकर्दमः ॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुएको यक्षकर्दम और सुगन्धपंचक कहलाते हैं ।

स्याद्यक्षकर्दमःशीतःसुगन्धिःकान्तिदायकः ।
त्वग्दोषंचशिरोरोगंविषंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्दम-शीतल, सुगन्धिजनक, कान्तिकारक तथा त्वचाके रोग, शिरोरोग और विषके विकारोंको हरे है ।

सुगंधपञ्चकंशीतंरक्तपित्तकफाञ्जयेत् ।
पीनसंमुखदौर्गन्ध्यहरंरक्तरुजञ्जयेत् ॥

अर्थ-सुगंधपंचक-शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफहारक तथा पीनस, मुखकी दुर्गन्धता और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अम्लपञ्चम् ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचाम्लवेतसः । पञ्चाम्लकः समुद्दिष्टःसचोक्तश्चाम्लपञ्चकः ॥ फलाम्लपञ्चकंरुच्यंकफकृत्कासकारकम् । तिक्तंजाडयकरंचैवविष्टम्भशूलवातनुत् । शुक्रगुल्मार्शसांनाशंकरोपीतिबुधाजगुः ॥

अर्थ-बेर, अनार, विषांबिल, चूका और अमलवेत यह अम्लपंचक है । अम्लपंचक-खट्टे, रुचिकारी, कफ और खाँसीको उत्पन्न करनेवाले, कडवे, जडताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीरको दूर करे है ।

द्वितीयफलाम्लपञ्चकम् ।

बीजपूरकजम्बीरनारंगंचाम्लवेतसम् । फलैःपञ्चाम्लकः ख्यातस्तिंतिडीसहितःपरः ॥ फलाम्लपंचकंचान्यच्छोफकृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्शःशुक्रवातविनाशनम् ॥

अर्थ-बिजोरानीम्बु, जम्भीरीनींबु, नारंगी, अमलवेंत और इमली यह दूसरा फलाम्लपंचक है । दूसरा फलाम्लपंचक-शोफकारक, मदजनक, तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वातविनाशक है ।

पञ्चगणः ।

पृष्टिपर्णीबृहत्यौचविदारीगोक्षुरस्तथा ।
गणानांपंचकंप्रोक्तंप्लीहानाहप्रमेहजित् ॥
भगन्दरंपाण्डुरोगंकुष्ठशूलोदरंजयेत् ।

अर्थ-पिठवन, कटेरी, कटाई, विदारीकंद और गोखुरू यह पांचों एकत्र मिलेहुये पंचगण कहलाते हैं । पंचगण-प्लीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है ।

पञ्चसमम् ।

शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्च्चलंतथा ।
इतिपंचसमंनामचूर्णंज्वरहरंपरम् ॥

अर्थ-सोंठ, हरड, पीपल, निसोथ और कालानोन इन पांचोंको समभाग मिलेहुये पंचसम कहे जाते हैं, पंचसमका चूर्ण-ज्वरनाशक है ।

द्वितीयपञ्चसमम् ।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदंज्वरहारि ।

अर्थ-आमला, सैंधानोन, चीता, हरड और पीपल यहभी पंचसम कहेजाते हैं इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है ।

पञ्चाङ्गलेपः ।

पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थाञ्छिग्रुमेवच ।
पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा ॥

अर्थ-पुनर्नवा, दारुहलदी, सोंठ, सरसों, सहिंजना इन पांचोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे सर्वप्रकारकी सूजन दूर होती है ।

पञ्चभृङ्गः ।

देवदालीशमीभृङ्गीनिर्गुण्डीसतमालकः ।
पञ्चभृङ्गभवःक्वाथोरोगिस्नानेप्रशस्यते ॥

अर्थ-देवदाली, शमी (छोंकर), अतीस, निर्गुण्डी और तमाल इन पांचोंके पत्तोंके काढेसे रोगीके लिये स्नानकराना उत्तम है ।

पंचमूत्रम् ।

गोजाविकामहिषीणांमूत्रंगर्दभकस्यच ।
पंचमूत्रंकटूष्णञ्चशोधनंवृष्यमीरितम् ॥

अर्थ-गाय, बकरी, भेड, भैंस और गधा इन पांचोंके मूत्रको पंचमूत्र कहते हैं । पंचमूत्र-चरपरा, गरम, शोधन और वृष्य है ।

पञ्चबीजम् ।

राजिकाचाजमोदाचजीरकंखसबीजकम् । कुबेराह्वयुतंचैव पंचबीजमुदाहृतम् ॥ मेथीज्योतिष्मतीबीजंयवानीस्थूल जीरकम् । इक्षुरेणसुसंयुक्तंद्वितीयंपंचबीजकम् ॥ पञ्चबीजंग्र-हणिकांकण्डूतिंचाग्निमान्द्यकम् । वातंशोफंकफंचैवविषूचीं श्वासकासकम् ॥ शीतरोगंचामशूलंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-राई, अजमोद, जीरा, खसखसके दानें और अजवायन यह सब एकत्र मिलेहुये पंचबीज कहेजाते हैं । मेथी, मालकांगनी, अजवायन, कलौंजी और तालमखाना यह सब एकत्र मिलेहुये द्वितीयपंचबीज कहलाते हैं । पंचबीज-संग्रहणी, कंण्डू, मंदाग्नि, वात, सूजन, कफ, विषूचिका, श्वास, खाँसी, शीतरोग, और आमशूल इन सब रोगोंको हरे है ।

पञ्चसिद्धौषधयः ।

तैलकन्दःसुधाकन्दःक्रोडकन्दोरुदन्तिका । मत्स्याक्षीस-हिताःपंचसिद्धौषध्यःप्रकीर्त्तिताः ॥ सिद्धानांचौषधीनांतु-पंचकंरोगनाशनम् । रसस्यभस्मकरणेप्रोक्तंपूर्वंभिषग्वरैः ॥

अर्थ-तेलकंद, सुधाकंद, क्रोडकंद, रुदन्ती और मत्स्याक्षी यह पांचों औषधी एकत्र मिलीहुई पंचसिद्धौषधी कहलाती हैं । सिद्धौषधीपंचक पारेकी भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करनेवाला है ।

पञ्चरत्नानि ।

कनकंहीरकंनीलंपद्मरागश्चमौक्तिकम् ।
पञ्चरत्नमिदंप्रोक्तमृषिभिःपूर्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती इन पांचोंको पञ्चरत्न कहते हैं ।

पञ्चसूरणाः ।

श्वेतश्चवनजश्चैवचित्रदण्डस्तृतीयकः ।
अत्यम्लपर्णीमालाख्यःसूरणःपञ्चधास्मृतः ॥

अर्शोघ्नपंचकंसर्वार्शानाश्चैवविनाशनम् ॥

अर्थ-जमीकंद, जंगलीजमीकंद, चित्रदंडकंद, अत्यम्लपर्णी और मालाकंद यह पंचसूरण कहलाते हैं। पंचसूरण-सर्वप्रकारके अर्शरोगनाशक है।

पञ्चपित्तानि।

वाराहच्छागमहिषमत्स्यमायूरपित्तकम्।
पञ्चपित्तमितिख्यातं सर्वेष्वेवहि कर्म्मसु ॥

अर्थ-सुअर, बकरा, भैंस, मछली और मोर इनके पित्तोंको पञ्चपित्त कहते हैं। इनको सर्व कर्म्मोंमें प्रयोग करना चाहिये।

औषधीपंचामृतम्।

गुडूचीमुशलीशुण्ठीत्रिकण्टकशतावरी । तत्पंचकंत्वौषधीजंपञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतंत्वौषधीजंतुष्टिपुष्टिबलप्रदम्। वीर्य्यवृद्धिकरंचैवप्रोक्तंपूर्वमनीषिभिः ॥

अर्थ-गिलोय, मुशली, सोंठ, गोखरू और शतावर इन पांचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपंचामृता कहते हैं। औषधीपंचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है।

पञ्चामृतम्।

दुग्धंसशर्करंचैवघृतंदधितथामधु ।
पञ्चामृतमिदंप्रोक्तंविधेयंसर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पांचों मिलेहुये पदार्थोंको पञ्चामृत कहते हैं। यह पञ्चामृत सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये।

षड्रसाः।

रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः। षड्द्रव्यमाश्रिताश्चैवतद्रसषट्कमुच्यते ॥ मधुरादिरसाःषड्वैचाग्निदीप्तिकरामताः । पौष्टिकालघवश्चैववातनाशकरामताः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय इन छैहों रसोंको षड्रस कहते हैं। यह मधुरादि षड्रस-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातविनाशक है।

क्षारषट्कम्।

क्षाराणितिललाङ्गल्योमाषापामार्गयोस्तथा ।

मौष्कककौटजंचैवक्षारषट्कंविनिर्दिशेत् ॥
क्षारषट्कंवातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, उडद्का खार, चिरचिटेका खार, मोखेका खार और कुडेका खार इन-सबको क्षारषट्क कहते हैं। क्षारषट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे है।

षडूषणम् ।

पञ्चकोलंसमरिचंषडूषणमितिस्मृतम् ।
पंचकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥

अर्थ-पंचकोलमें काली मिर्च मिलानेसे षडूषण कहा जाता है। षडूषणके गुण पंचकोलके समान जानने। पंचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशकहै।

सुगन्धषट्कम् ।

जातीफलंलवङ्गञ्चकर्पूरंपूगवालकम् ।
सुगंधषट्कमेतद्धिसकंकोलमुदाहृतम् ॥
सुगन्धषट्कंरुचिकृद्धृद्यंदाहविनाशकृत् ।

अर्थ-जायफल, लोंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोंका सुगन्धषट्क कहलाता है। सुगन्धषट्क-रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धषट्कम् ।

कालागरुचकस्तूरीकर्पूरःश्वेतचंदनम्।कंकोलंचाहिगन्धाच महादिषट्सुगंधकम् ॥महासुगंधिषट्कंतुवृष्यंचैवसुगन्धि-कृत्। भूतबाधाकफंदाहंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-काली अगर, कस्तूरी, कपूर, सफेदचंदन, शीतलचीनी और नकुलकंद यह सब एकत्र मिलेहुये महासुगन्धषट्क कहलाता है। महासुगन्धषट्क-वीर्य्यवर्द्धक, सुगंधिकारक तथा भूतबाधा, कफ और दाहको दूर करे है।

प्राणहरषट्कम् ।

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धाबालार्कस्तरुणंदधि ।

प्रभातेमैथुनंनिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ-सडाहुवा मांस, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुणदही, प्रभातकालमें मैथुन और निद्रा यह छः वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहै ।

प्राणकरषट्कम् ।

सद्योमांसंवरंचान्नंबालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।

घृतमुष्णोदकेस्नानंसद्यःप्राणकराणिषट् ॥

अर्थ-ताजा मांस, नवीन अन्न, बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलसे स्नान करना यह छैः वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली हैं ।

सप्तोपविषाणि ।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः । गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयंसवरःपरिकीर्त्तितः । अयुक्त्यासेवितश्चायंमारयत्येवनिश्चितम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कुलिहारी, कनेर, चोंटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं । सप्तउपविष वर्ग-अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक कार्य्योंमें लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुवा मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्थसप्तधातवः ।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ।

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातुहैं ।

सुवर्णादिसप्तधातवः ।

स्वर्णरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गंयशदमेवच । सीसंलोहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्याबल्यजरामयान् । निवार्य्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवोमताः ॥

अर्थ-सोना, रूपा, तांवा, रांग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली सात धातु हैं । यह सातधातु-देहमें वलिका पडना, विनासमय वालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे वालोंका गिरजाना, कृशता, निर्वलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती हैं इसीकारण इनको धातु कहते हैं ।

शरीरस्थधातूद्भवधातवः ।

स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैवच ।
ओजश्चसप्तधातूनांक्रमात्सप्तोपधातवः ॥

अर्थ-दूध, रज, वसा (चर्बी), स्वेद (पसीना), दांत, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रससे दूध, रक्तसे स्त्रीका रज, मांससे चर्बी, मेदासे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे केश और शुक्रसे ओज उत्पन्न होता है ।

सप्तोपधातवः ।

स्वर्णजंस्वर्णमाक्षीकंतारजंतारमाक्षिकम् । तुत्थंताम्रभवंवङ्गे-यंकंकुष्ठंवङ्गसम्भवम् ॥ रसकोजसदाज्जातोनागात्सिन्दूर-सम्भवः । लोहाज्जातंलोहकिट्टमेतेसप्तोपधातवः ॥

अर्थ-स्वर्णसे सुवर्णमाखी, रूपेसे रूपामाखी, ताँबेसे नीलाथोथा, रांगसे कंकुष्ठ, जस्तसे खपरिया, शीसेसे सिंदूर और लोहेसे लोहकिट्ट उत्पन्न होतीहै इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं ।

सप्तसन्तर्पणम् ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरैर्मर्दिताम्बुसशर्करम् ।
लाजाचूर्णसमध्वाज्यंसप्तसन्तर्पणंस्मृतम् ॥

अर्थ-दाख, अनार, खजूर यह तीनों चीनीके सरबतमें मिलेहुये और इनमें खीलोंका चूर्ण मिलाहुवा तथा घी और शहद सहित यह सप्तसन्तर्पण कहाजाता है ।

मतान्तरे ।

द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीशर्करान्विता ।
समध्वाज्यंचपित्तघ्नंसन्तर्पणमुदाहृत् ॥

अर्थ-किसीके मतसे दाख, अनार, खजूर, केला, शर्करा, मधु और घी यह पित्तनाशक और सन्तर्पण है ।

सप्तविधक्काथः ।

क्काथःसप्तविधश्चोक्तःपाचनःशोधनोमतः । क्केदनःशमन-श्चैवदीपनस्तर्पणस्तथा ॥ शोषकश्चैकभेदस्तुगुणास्तस्य

भवीमिते । अर्द्धांशःपाचनश्चोक्तोरव्यंशःकोष्ठशुद्धिकृत् ॥ चतुर्थांशोघर्म्मकारीत्वष्टांशोरोगनाशनः । षष्ठांशश्चाग्नि-जनकःषोडशांशस्तुशोषणः ॥ पञ्चमांशस्तृप्तिकारीमुनि-भिःपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-क्काथ सात प्रकारका होता है, जैसे-पाचन १ शोधन २ क्लेदन ३ शमन ४ दीपन ५ तर्पण ६ शोषक ७ तहां जो काढेका जल जलकर आधा रहगयाहो उसको अर्द्धांश कहते हैं। अर्द्धांश क्काथ पाचन है। जिसका पानी जलकर बारहवॉं भाग शेष रहजाय उसको रव्यंश कहते हैं। रव्यंश क्काथ कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चौथा भाग बाकी रहजाय उसको चतुर्थांश कहते हैं। चतुर्थांशकाढा-पसीनेको लानेवाला है जिस काढेका जल जलकर आठवॉं भाग शेष रहजाय उसको अष्टांश कहते हैं। अष्टांश क्काथ रोगनाशक है। जिसका जल जलकर छठा भाग बाकी रहाहो उसको षष्ठांश कहते है। षष्ठांश क्काथ अग्निजनक है। जिसका पानी जलकर सोलहवॉं भाग बाकी रहजाय उसको षोडशांश कहते है। षोडशांश क्काथ शोषक। और जिस काढेका जल जलकर पांचवॉं भाग बाकी रहजाय उसको पंचमांश कहते हैं पंचमांश काढा तृप्तिकारक है।

सप्तोपरत्नानि ।

वैक्रांतःसूर्य्यकान्तश्चचन्द्रकान्तस्तथैवच ।
कर्पूरकःस्फाटिकश्चपेरोजाख्यश्चकाचकः ॥
सप्तोपरत्नगणितामणयोलोकविश्रुताः ॥

अर्थ-वैक्रांत, सूर्य्यकांत, चंद्रकान्त, कपूर, स्फटिक, फिरोजा और कांच यह सात उपरत्न हैं।

अष्टधातवः ।

हिरण्यंरजतंकांस्यंताम्रंसीसकमेवच ।
रङ्गमायसरैत्यश्चधातवोष्टौप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चांदी, कांसा, तांबा, सीसा, रांग, लोहा और पीतल यह आठ धातुहैं।

मतान्तरे।

सुवर्णरजतंताम्रंलोहंकुप्यञ्चपारदम् ।
वंगञ्चसीसकञ्चैवअष्टौदेवसुसम्भवाः ॥

अर्थ-और किसीके मतसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्त, पारा रांग, और सीसा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यंशालाक्यकायश्चतथाबालचिकित्सितम् ।
अगदंविषतन्त्रश्चभूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेतिचिकित्साष्टविधास्मृता ।

अर्थ-शल्य, शालाक्य, काय, बालचिकित्सा, अगद विषतंत्र, भूतविद्या, रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है ।

अष्टगंधाः ।

कर्पूरंचंदनंमुस्ताकुङ्कुमंदेवदारुच ।
रोचनाकेसरोशीरंगंधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर, चंदन, नागरमोथा, केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गंधाष्टक अर्थात् अष्टगंध है ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौमेदेकाकोल्यौवृद्धिऋद्धिके । अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुर्बृंहणःशुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृद्बल्यःशरीरबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक, बलकारक, शरीरवर्द्धक बलको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधयः ।

मेदाभावेअश्वगन्धामहामेदेचशारिवा ।
जीवकर्षभकाभावेगुडूचीवंशलोचना ॥
ऋद्ध्यभावेबलादेयावृद्ध्यभावेमहाबला ।

अर्थ-मेदाके अभावमें असगंध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमें गिलोय, ऋषभकके अभावमें वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खिरेटी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमंगलघृतम् ।

वचाकुष्ठंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतापिच । सारिवासैन्धवश्चैव पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धंघृतमिदंमेध्यंपिबेत्प्रतिदिने दिने । दृढस्मृतिःकुमाराणांपिबतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, सैंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमंगलघृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातवः ।

हेमताराऽऽरनागश्चताम्रवङ्गेचतीक्ष्णकम् ।
कांस्यकंकान्तलोहश्चधातवोनवकीर्त्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चांदी, पीतल, सीसा, ताँवा, रांग, लोहा, काँसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिताक्ष्यंचपुष्पंभिदुरंचनीलम् ।
गोमेदजंचाथविदूरकंचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणाम् ॥

अर्थ-माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नील, गोमेद और वैदूर्य्य यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

क्षारदशकम् ।

शिग्रुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवैः ।
इक्षुशैखरिकमोचिकोद्भवैःक्षारपूर्वदशकंप्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सहिंजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशांगधूपः ।

मधुमुस्तंघृतंगंधोगुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलःसिह्लसिद्धार्थंदशांगोधूपउच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गंधक, गूगल, अगर, भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यांपंचमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और बृहत्पंचमूल दोनोंको मिलाकर दशमूल होताहै. दशमूल-त्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषी-
णांदशानांमूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैंस, ऊंट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहतेहै ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे संख्यावर्गः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्धं समाप्तम् ॥



॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।

मंगलाचरणम् ।

स्वात्मस्थितःसर्वगतःसमस्तव्यापारवेदीविनिवृत्तसंगः ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरोवरेण्यःपायादपायात्पुरुषःपुराणः ॥

अनूपादिवर्गः ।

देशस्तुत्रिविधोज्ञेयोह्यनूपोजांगलस्तथा ।
साधारणोविशेषेणज्ञातव्यास्तेमनीषिभिः ।

अर्थ–अनूप, जांगल और साधारण इन भेदोसे देश तीन प्रकारके हैं सो वह देश बुद्धिमानों करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्वलशैलाढ्यःफुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ शशवराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः । प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्योनीलसस्यफलान्वितः ॥ अनेक शालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः । अनूपदेशोज्ञातव्योवातश्लेष्मभयार्त्तिमान् ॥

अर्थ–जिसमें नदी, तलैया और पर्वत अधिकहों तथा जो फूले कमल और कुमुदोंके समूहसे संयुक्त होय; हंस, सारस, जलमुर्गी और चकवादि पक्षियों करके सेवितहों. खरगोस, सूअर, भैंसा, रुरू और रोहि. इनके समूहसे आकुल होय, वहुतसे वृक्ष और पुष्पोंसे युक्तहोय, हरी दूब और फलोंसे परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शालिधानोंके खेतोंसे केला और इक्ष्वादिवृक्षोंसे सुशोभित होय, अर्थात् यह सब जिसमें होंय उसको अनूपदेश कहते हैं अनूपदेश–वात और कफके रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्टास्सरससरउपेताशाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानांशालिकेदाररम्यादिनकरकरदीप्तिंवाञ्छतेयत्रलोकः॥गुरुमधुररसाढ्याभातिचेक्षुःसदार्द्राविविधजनितवर्णाःशालिगोधूमयूषाः । मधुररसविभुक्त्यामानवानांप्रकोपीभवतिकफसमीरःस्यात्तदानूपदेशः ॥

अर्थ-जिसमें निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होंय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोंसे आच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहैं शालिधानोंके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरहीहै भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोंकी अभिलाषा करते हैं, जहां भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईख होती है, जहां नानाप्रकारके रंगके शालिधान और गोधूमादि होते हैं और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वात कुपित होते हैं, उस देशको अनूपदेश कहते हैं । हिन्दी-खादर, तराई ।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः । सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमें अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और बेरी जिसमें अधिकतासे होंय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओंसे जो देश भराहुआहो जिसमें स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहों उस देशको जांगलदेश कहते हैं, जांगलदेश-वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशालाःपर्वताःकण्टकीर्णादिशिदिशिमृगतृष्णाभूरुहाःशीर्णपर्णाः ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिः सरसिरसविहीनःकूपकारम्भकर्षः ॥ तदनुविरसस स्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांशेरूक्षभावश्चस-

म्यक् ॥ पुनरपिहिमवाहंशालिसस्यंनचेक्षुर्भवतिरुधिरपि-
त्तंकोपमाशुह्युपैति ॥

अर्थ-जिसमें तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित हैं तथा कंटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमें विनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोंवाले वृक्ष अधिकतर होते हैं, जहॉ सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहॉ सरोवर और कुओंका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहॉ नीरसघान खानेमे हाथी, गाय, भैंस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहॉ रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और ईख नहीं होतीहै. और जहाँ रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहतेहैं। हिन्दी-कैटर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतंवानातिरूक्षंनस्निग्धं नचखरबहुलंचेच्चाभितः
कण्टकाढ्यम् ॥ भवतिचजलकीर्णंनातिशीतंनचोष्णं सम-
प्रकृतिसमेतंविद्धिसाधारणञ्च ॥

अर्थ-जहाँ अनूप और जांगल इन दोनों देशोंके लक्षण मिलतेहों, जहाँ न तो अत्यन्त रूक्षता होवै और न अधिक स्निग्धता होवै, जहॉ तेज और कांटे अधिक न होवें, जो चारों ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवै और न अत्यन्त गरमी होवै समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते हैं ।

अन्यच्च ।

यत्रद्वयोरपिचलक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधया-
वनालैः ॥ योराजितःसमसलोजनसौख्यदायी साधारणः
सगदितोखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ-जिसमें अनूप और जांगल दोनों देशोंके लक्षण मिलते हॉय, जहॉ गेहूं, उडद, चनें और ज्वार उत्पन्न होतेहोंय और जिसमें सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहतेहैं ।

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदंप्रवक्ष्यामिशिवेनाख्यातमंजसा ।

ब्राह्मंक्षात्रंचवैश्यीयंशौद्रंचेतियथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहूं-ब्राह्मक्षेत्र, क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण।

प्रायोदर्भपलाशवारिबहुलंयत्रार्जुनामृत्तिका।
ज्ञेयंतत्प्रथमंद्विजातिसुखदंद्रव्यंतदुत्थंभवेत् ॥

अर्थ-जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हों, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहाँकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहतेहैं। ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं।

क्षात्रक्षेत्र।

ताम्रभूमिवलयंविभूधरंयन्मृगेन्द्रमुखसंकुलंकुलम्।
घोरघोषिखदिरादिदुर्गमंक्षात्रमेतदुदितंपिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकोंके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको 'शंकर' ने क्षत्रियक्षेत्र कहाहै।

वैश्यक्षेत्र।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वरंस्वर्णरेणुनिचितंनिधानवत्।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितंवैश्यमाख्यादिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो। जिसकी मृत्तिकामें सुवर्णके कणसे मिलेहों, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको 'शंकर' ने वैश्यक्षेत्र कहाहै।

शूद्रक्षेत्र।

श्यामस्थलाढ्यंबहुसस्यभूतिदंलसत्तृणैर्बब्बुलवृक्षवृद्धिदम्।
धान्योद्भवैःकर्षकलोकहर्षदंजगादशौद्रंजगतोवृषध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घासें उत्पन्न होतीहों, जहाँ तृण और बबूरके पेड बहुत होवें, तथा जो नाना प्रकारके धान्योंके उत्पन्न होनेसे किसानोंको आनंद देनेवाली हो उस पृथ्वीको वृषध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहाहै।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यंक्षेत्रादुदितमनघंब्राह्मतःसिद्धिदायिक्षत्रादुत्थंवलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातंप्रभवतितरांधातुलोहादिसिद्धौशौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकंद्राक् ॥

अर्थ—ब्राह्मणक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं । क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्न-हुए द्रव्य वलि और पलित तथा संसारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं । वैश्य-क्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सर्वप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं । इन उपरोक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारीहैं ।

अन्यच्च क्षेत्रभेदाः ।

ब्रह्माशक्रःकिन्नरेशस्तथाभूरित्येतेषांदेवताःस्युःक्रमेण ।
प्रोक्तास्तत्रप्रागुमावल्लभेनप्रत्येकंतेपंचभूतानिवक्ष्ये ॥

अर्थ—ब्रह्मा, इंद्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्रोंके क्रमसे देवता हैं ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतोंसे पांच प्रकारका है उसको कहताहूं ।

पार्थिवक्षेत्र ।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यंपीतंयदुत्तममृगंचतुरस्रभूतम् । प्रायश्चपीतकुसुमान्वितवीरुदादितत्पार्थिवंकठिनमुशदशेषतस्तु ॥

अर्थ—जो क्षेत्र पीलेरंगके गोल कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी पीले फूलवाले हों तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं।

आप्यक्षेत्र ।

अर्द्धचन्द्राकृतिश्वेतंकमलाभंदृषच्चितम् ।
नदीनदजलाकीर्णमाप्यंतत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ—जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे संयुक्त हो, नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना ।

तैजसक्षेत्र।

खदिरादिद्रुमाकीर्णंभूरिचित्रकवेणुकम् ।
त्रिकोणंरक्तपाषाणंक्षेत्रंतैजसमुत्तमम् ॥

अर्थ-जो क्षेत्र खदिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहों, जिसका आकार तिकोना हो और जिसमें लाल पाषाण हों उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं ॥

वायवीयक्षेत्र।

धूम्रस्थलंधूम्रदृषत्परीतंषट्कोणकंतूर्णमृगावकीर्णम् ।
शाकैस्तृणैरंचितरूक्षवृक्षकंप्रकारयेत्तत्खलुवायवीयम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूएँके रंगके पाषाणोंसे संयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिसमें मृगादिपशु, शाक और तृण अधिकतासे हों. और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं।

आन्तरिक्षक्षेत्र।

नानावर्णंवर्त्तुलंतत्प्रशस्तंप्रायःशुभ्रंपर्वताकीर्णमुच्चैः ।
यच्चस्थानंपावनंदेवतानांप्राहक्षेत्रंत्रीक्षणस्त्वांतरिक्षम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतोंसे आकीर्ण और ऊँचा होवै और जिसमें देवतादि वास करते हों उसको महादेवने आंतरिक्षक्षेत्र कहा है।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः।

द्रव्यंव्याधिहरंबलातिशयकृत्स्वादुस्थिरंपार्थिवं
स्यादाप्यंकटुकंकषायमखिलंशीतंचपित्तापहम् ।
यत्तिक्तंलवणंचदीप्यमरुचिंचोष्णंचतत्तैजसं
वायव्यंतुहिमोष्णमम्लमबलंस्यान्नाभसंनीरसम् ॥

अर्थ-पार्थिवक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं। आप्यक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य चपेरे, कषेले, शीतल और पित्तनाशक होते हैं। तैजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-कडवे, नमकीन, अग्निको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं। और

वायव्यीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अवलकारक होते हैं। और आंतरिक्ष क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरस होते हैं।

पांचक्षेत्रोंकेदेवता।

ब्रह्माविष्णुश्वरुद्रोस्मादीश्वरोथसदाशिवः ।
इत्येताःक्रमतःपंच क्षेत्रभूतादिदेवताः ॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पॉच क्षेत्रोंके पॉच देवता हैं।

वृक्षोत्पत्तिः ।

जित्वाजवादरिसुसैन्यमिहाजहारवीरःपुरायुधिसुधाकलशं गरुत्मान् ॥ कीर्णैस्तदाभुविसुधाशकलैःकिलासीवृक्षादिकंसकलमस्यसुधांशुरीशः ॥

अर्थ-पूर्वकालमें जिससमय वलवान् गरुडजीने सर्वदेवसेनाको संग्राममें जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाथा उससमय जो अमृतकी बूँदें कलशमेंसे पृथ्वीके भागोंमें गिरीं उन्ही बूँदोंसे यह सब वृक्षादिक उत्पन्न हुए, और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ।

वृक्षोंकेब्राह्मणादिभेद।

तत्रोत्पन्नास्तूत्तमेक्षेत्रभागेविप्रीयादौविप्रुषोयत्रयत्र।क्षोणीजादिद्रव्यभूयंप्रपन्नास्तास्ताःसंज्ञाबिभ्रतेतत्रभूयः ॥ एवं क्षेत्रानुगुण्येनतज्जाविप्रादिवर्णिनः। यदिवालक्षणंवक्ष्याम्यमोहायमनीषिणाम् ॥

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रमें उत्पन्न हुए द्रव्य-शूद्र कहलाते हैं। ऐसे प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेदहैं उनमें वैद्यको कदाचित् भ्रम न होजावै इसकारण उनके लक्षण कहता हूँ।

तल्लक्षणानि ।

किसलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिषुविशदेषुवदंतिविप्रमेतान् ।
नरपतिमतिलोहितेषुवैश्यं कनकनिभेषुसितेतरेषुशूद्रम् ॥

अर्थ-जिसके पत्र, पुष्प, दंण्डी और शाखादि वडे होंय, उसको ब्राह्मणजातिका वृक्ष कहते हैं। जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और. शाखादि लाल

होवैं उसको क्षत्रियजातिका वृक्ष जानना। और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवैं उसको वैश्य तथा जिसके काले होवैं उसको शूद्रजातिका जानना।

ब्राह्मणादिवृक्षोंकोयोजनेकीविधि।

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेवयोजयेत्।
गुणाढ्यानपिवृक्षादीन्प्रातिलोम्यंनचाचरेत्॥

अर्थ-ब्राह्मणजातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवै, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको, वैश्यजातिके वैश्योंको और शूद्रजातिके शूद्रोंको देवै। अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोम (उलटा) न करै, अर्थात् ब्राह्मणजातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकको, और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण-और क्षत्रियको और शूद्रजातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिको न देवै।

अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विधः।

किंचिद्दोषप्रशमनंकिंचिद्धातुप्रदूषणम्।
स्वस्थवृत्तौमतंकिंचित्त्रिविधंद्रव्यमुच्यते॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्तकरनेवाली कोई रसादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस संसारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने।

तत्रिविधं यथा।

द्रव्यंतुत्रिविधंप्रोक्तंजाङ्गमौद्भिदपार्थिवम्।

अर्थ-फिर वही द्रव्य जंगम औद्भिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीन-प्रकारके हैं।

जंगमद्रव्य।

मधूनिगोरसाःपित्तंवसामज्जासृगामिषम्।
विण्मूत्रचर्मरेतोस्थिस्नायुःशृंगखुरानखाः॥
जंगमेभ्यःप्रयुज्यन्तेकेशालोमानिरोचनाः।

अर्थ-शहत, गोरस, पित्त, चरबी, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, त्वचा, वीर्य्य, हड्डी, नसैं, सींग, खुर, नख, केश, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जंगमद्रव्य कहते हैं।

पार्थिवद्रव्यम्।

सुवर्णसमलाःपंचलोहाःससिकतासुधामनःशिलाले।
मणयोलवणंगौरिकांजनेभौममौषधमुद्दिष्टम्॥

अर्थ-सोना, चॉदी, तांबा, जस्त, रांग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, वालू, सोनामाखी, खपरिया, मुर्दासिंग, मनशिल, हरिताल, हीरादि नवरत्न, उपरत्न, सैंधवादिलवण, गेरू, खरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पार्थिव अर्थात् ये औषधी पृथ्वीकी खानोंमेंसे निकलतींहैं इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं।

औद्भिदद्रव्यम्।

वनस्पतिर्वीरुधश्चवानस्पत्यस्तथौषधिः।
फलैर्वनस्पतिःपुष्पैर्वानस्पत्यःफलैरपि॥
ओषध्यःफलपाकांताःप्रतानैर्वीरुधस्मृतः।

अर्थ-धरतीको फोडकर जो द्रव्य निकलै उसको औद्भिदद्रव्य कहतेहैं और उस औद्भिदकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और ओषधि ४ जिनपै विना फूलकेही फल लगैं उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे-वड, पीपल इत्यादि। और जिनपै फूल लगकर फल आतेहैं उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहतेहैं। जैसे-आम, जामुन इत्यादि। और जो फल आनेके पश्चात् सूखजातेहैं उनको औषधि कहतेहैं। जैसे-गेंहू, जौ आदि। और जिनकी वेल चलती है उनको वीरुध कहते हैं।

अन्यच्च।

ओषध्यःपंचधाख्यातालतागुल्माश्चशाखिनः।पादपाःप्र-
सराश्चेतितेषांवक्ष्यामिलक्षणम्॥ गुडूच्याद्यालताःप्रोक्ता-
गुल्माःपर्पटकादयः।आम्राद्याःशाखिनोज्ञेयावटाश्वत्थादि-
पादपाः॥ कंटकार्यादिकाःसर्वाःप्रसराइतिकीर्त्तिताः।

अर्थ-लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोंसे औषधि पॉचप्रकारकी हैं सो उनके लक्षण कहताहूँ गिलोय, पान, सोमवल्ली, अपराजिता, स्वर्णवल्ली इत्यादि वीरुध अर्थात् लताहैं। पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, वडपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जाननी।

अथ वृक्षादीनां पुंस्त्वादिकथनम् ।

स्त्रीतापुंस्ताक्लीबताचद्रुमादौज्ञेयायुक्त्यालक्षणंतद्वदामि ।

अर्थ-वृक्षादिकोंमें स्त्री, पुरुष और नपुसंक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहताहूँ ।

स्निग्धंदीर्घंपेलवंचित्तहारिपुष्पाद्यंचेत्स्त्रीमतासाभिषग्भिः ।

अर्थ-जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर होवैं, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने ।

नोदीर्घानातिह्रस्वाःकिसलयसुमनःस्कंधकाण्डादयश्चेत्
स्थूलाःपारुष्यभाजस्तइहनिगदिताःपूरुषावैद्यवर्य्यैः ॥

अर्थ-जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यंत दीर्घ होंय और न अत्यन्त ह्रस्व होंय तथा स्थूल और दृढ होवैं उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने ।

पुंसोवध्वाश्चलिंगंमिलतिचयदिवाक्लीबतासाभिधेया
स्वंस्वंस्वेस्वेनियुक्तंगदिजनफलदंभेषजंतत्कृतंच ॥

अर्थ-जिनमें पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते होंय उनको नपुंसक-जातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियोंको, पुरुषजातिके पुरुषोंको और नपुंसकजातिके नपुंसकोंको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोंको फलकी प्राप्ति होती है ।

द्रव्यंपुमान्स्यादखिलस्यजंतोरारोग्यदंतद्बलवर्द्धनञ्च ।
स्त्रीदुर्बलास्वल्पगुणागुणाढ्याःस्त्रीष्वेवनक्वापिनपुंसकंस्यात् ।

अर्थ-सर्व पुरुषजातिकी औषधि-आरोग्यताजनक और बलको बढाने-वाली है, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोंको अधिकगुण करनेवालीहै और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नहीं है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है ।

वृक्षादीनांक्षुत्पिपासादिकथनम् ।

क्षुत्पिपासाचनिद्राचवृक्षादिष्वपिलक्ष्यते ।
मृज्जलादानतस्त्वाद्येपर्णसंकोचतोंतिमा ॥

अर्थ-भूँख, पियास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमेंभी पाई जाती है, क्योंकि

वृक्ष मिट्टी खाते, और पानी पीते हैं जो उनको मिट्टी और पानी न मिले तो वह नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सूखजातेहैं रातको - वृक्षोके पत्ते सकुचजाते और फिर सवेरेको खिलजाते हैं, इसकारण वृक्षादिकोंमें निद्रा पाई जाती है ।

वृक्षादीनांपंचभूतात्मकत्वकथनम् ।

यत्काठिन्यंसाक्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्मावर्द्धतेयत्सवातः ।
यच्चछिद्रंतन्नभःस्थावराणामित्येतेषांपंचभूतात्मकत्वम् ॥

अर्थ–वृक्षोंमेभी मनुष्योंकी तरह पंचभूत रहते हैं वृक्षोमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है और वृक्षोंमें जो छिद्र होते हैं वह आकाशका अंश है ।

वृक्षादीनां परोपकारः ।

मूलत्वक्सारनिर्य्यासनाडिस्वरसपल्लवाः ।
क्षाराःक्षीरफलंपुष्पंभस्मतैलानिकंटकाः ॥
पत्राणिशुंगाःकंदाश्चप्ररोहाश्चोपकारकाः ।

अर्थ–मूल, त्वक्, सार, निर्य्यास, नाड, स्वरस, पल्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तैल, कंटक, पत्र, अंकुर और कंद यह सब वृक्षोंके अंग उपकार करनेवाले हैं इसकारण वृक्ष परोपकारी हैं, मनुष्य तो कोई परोपकारी होते हैं परन्तु वृक्ष तो प्रायः सबही परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकोंसे भी जड हैं। (इ० भो०रा०) अब अंग्रेजी मतसे वृक्षोंका विशेष विवरण लिखते हैं । सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदोंसे दोप्रकारके हैं, वृक्षोंके पुष्प ऋतु हैं, फल संतान हैं वृक्षोंके सन्तान भी स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके संयोगसे होती है ऐसा इंग्रेजी ग्रन्थोंमें लिखा है किन्तु संस्कृतके ग्रन्थोमें नहीं। एकदल और द्विदल इन भेदोंसे वृक्षकी दो जातिहैं, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमें खडी हुई एक शिरा होतीहै और तिर्छी शिरायें अधिक नहीं होती, एकदल अंतर्वर्द्धक है । इसकी उत्पत्ति फलफूलादिके भीतरसे होती है, और इसमे शाखा नहीं होती । द्विदलवृक्षमें उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते हैं इन पत्तोंमें तिर्छी नसें अर्थात् शिरायें अधिकतासे होती हैं, इसमें उत्पत्तिक्रिया डालियोंमेंसे अंकुरोंके फूटनेसे होती है और कलमेंभी बहुधा

वांधी जाती हैं। एकदलको इंग्रेजीमें "मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "क्राईकोट लेडोनस" कहते हैं। अंतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्य-वर्द्धकको "एफजोजीनस" कहते हैं। एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, वाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षोंके बीजोंकी दो दालें होती हैं। एकदल जातीके वृक्षकी दो दाले नहीं होतीं। येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती हैं, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होतीं, जैसे एकवृक्षसे करोड वीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहैं। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं। जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है, तब उसकी डंडीके अग्रभागमें कोपलपर पुष्पोंका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें "केलीफ" कहते हैं। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै। उसमें कोषभी होता है और पंखडी अलग २ दिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते हैं कमलादि पुष्पोंमें वेष्टन नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पंखडियें खरेरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते हैं उसमें नरतंतुको इंग्रेजीमें "ष्टेमन" कहते हैं और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते हैं नर तंतुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है—जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते हैं। अंग्रेजीमें "पोलन" कहते हैं। नारीतंतु खुक्कल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें "ष्टिग्मा" कहते हैं, नारीतंतु जिस स्थानसे उत्पन्न होते हैं उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें "ओवरी" और लैटिनमें "डिस्क" कहते हैं। ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते हैं स्टाइलमें छोटे २ वीर्य्यकण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें "फोह्निला" कहते हैं। नरकेशरमें जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहांसे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती हैं और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होताहै, पतंगादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जातेहैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भ-बंधनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी संयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतंतुओमें जानेसे संकर जातिके वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रितवर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रेजीमें "रेनंक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बांधे हैं । तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लैटिनभाषामे लिखेगये हैं । उदाहरण टीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोंका "राश्क ब्रुधिआई" अर्थात् "राश्कबुर्धका" "गोतेलग्राण्डि फ्लोरा" वडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनीफ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" डंठल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक् २ फूल हों तो उन्हें अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते हैं अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें इंग्रेजीमें "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमें हो अथवा अलग २ वृक्षमें हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते हैं।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथवक्ष्यामिनक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।
पूज्यानायुष्यदांश्चैववर्द्धनात्पालनादपि ॥
विपद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः ।
अश्वत्थनागौचवटःपलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुःक्रमेण॥
बिल्वार्जुनौचैवविकंकतोथसकेसराःशम्बरसर्ज्जवंजुलाः ।
सपानसार्काश्चशमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौमधुकद्रुमःक्रमात् ।
अमीनक्षत्रदेवत्यावृक्षाःस्युःसप्तविंशतिः ।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषानक्षत्रपद्धतिः ॥
यस्त्वेतेषामामजन्मर्क्षभाजांमर्त्यःकुर्य्याद्भेषजादीन्मदांधः।
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रंचपुत्रंनश्यत्येषां वर्द्धतेवर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ–अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूं जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम–१ अश्विनी–कुचला २ भरणी–आमला ३ कृत्तिका–

गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जामून ५ मृगशिर-खैर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु-बाँस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर १० मघा-वड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-बेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विकंकत (रामबबूर) १७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध १९ मूल-साल २० पूर्वाषाढ-जलवेंत २१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३ धनिष्ठा-शमी २४ शततारका-कदम्ब २५ पूर्वाभाद्रपदा-आम २६ उत्तराभाद्रपदा-नीम २७ रेवती-महुवेका वृक्ष । जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममें लाता है, उसकी आयु, लक्ष्मी, स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयु-आदिकी वृद्धि होती है ।

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिःस्मृतः।अतस्तदोषधा निस्युरनुरूपाणि हेतुभिः॥अन्येष्वपिप्ररोहंति वनेषूपवनेषु च।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्णहैं और हिमालय पर्वत शीतल है । इसकारण विंध्यादिककी औषधि उष्णवीर्य्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य्य होती हैं । पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिकमें भी उत्पन्नहोनेवाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होती हैं ।

औषधिके लेनेमे मुहूर्तविचार ।

भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्व्यंगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्येविदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च ॥ शुद्धेरिष्फेद्युनमृतिगृहेसत्तिथौनोजनेभे।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमें, शुक्रवार, चंद्रवार, गुरुवार, बुधवार और सूर्य्य यह द्विस्वभालग्न [मिथुन, कर्क, धन, मीन] में हो और शुक्रादि वारोंमें लग्नसे १२-७-८ गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभकालमें औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है ।

औषधिलेनेकी विधि ।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजाद्विजेनकालादिकतत्त्ववेदिना। यथायथंचौषधयोगुणोत्तराःप्रत्याहरंतेयमगोचरानपि ॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण, औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसको विचार कर पर्वतादिकोंमें भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे ।

औषधिग्रहणमंत्राः ।

स्वमारण्येचएकान्तेप्रभातेमंत्रयुक्तितः । संग्राह्यमौषधंसि-द्धंनोचेद्भवतिकाष्ठवत् ॥ ॐनमस्तेऽमृतसम्भवेरसवीर्य्य-विवर्द्धिनि । बलमायुश्चमेदेहिपापान्मेजहिदूरतः ॥ येनत्वां खनतेब्रह्मायेनत्वांखनतेभृगुः । येनवेन्द्रोऽथवरुणस्तेनत्वा-मुपचक्रमे ॥ तेनाहंखनयिष्यामिमन्त्रपूतेनपाणिना । ॐ आतपेतेमात्रियतेतेजोवीर्य्योऽन्यथाभवेत् ॥ अत्रैवतिष्ठक-ल्याणि ममकार्यकरीभव ॥ ममकार्य्येभूतेसिद्धेततःस्वर्गं गमिष्यसि । ॐह्रींचण्डेन्द्रूंफट्स्वाहा॥अनेनमन्त्रेणानुसं-युतमातपेत्रिदिनंशुष्कनिहितंवीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्या-यांसर्वाऔषध्यउत्पाट्यन्ते ॥

अर्थ—स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमें प्रभातके समय जाकर मंत्रयुक्तिसे औषधको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धि होतीहै, नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मंत्रको पढ़कर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मंत्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमें सुखादेवे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजातीहै प्रायः पुष्यार्कयोगमें सब प्रकारकी औषधि उखाडीजातीहैं, ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ।आदित्यसम्मुखो-मौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादु-त्तराश्रितम् ।

अर्थ—औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमें जाकर सूर्य्यके सन्मुख उपस्थितहो मौनको धारणकर शंकरको हृदयमें नमस्कारकर साधारण भूमिमें उत्पन्न हुई, ऐसी औष-धिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

दुष्टऔषधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोषरमार्गजाः ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषन्धःकार्य्यसाधिकाः ॥

अर्थ-बाँबी, बुरीजमीन, अनूपदेश (खादर) श्मशानभूमि, ऊषर जमीनमें और मार्गमें उत्पन्न होनेवाली औषधि और जो कीडोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूंकीमारी, ऐसी औषधि कार्य्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इसकारण इनको नहीं लेवे।

औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि।

धूमवर्षानिलक्लेदैःसर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वागृहेन्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और सरदी इनसे रहित तथा जिसमें किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमें औषधियोंको भलेप्रकारसे रक्खे।

प्लोतमृद्भांडफलकशंकुविन्यस्तभेषजम् ।
प्रशस्तायांदिशिशुचौभेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियोंमें, वा टुकडोंमें मिट्टीकी हांडियोंमें इमरतवानोंमें, मटकियोंमें, मलसोंमें, मलसियोंमें, सकोरोंमें, कटोरोंमें, प्यालोंमें, शीशियोंमें, बोतलोंमें, शीसोंमें, डिब्बोंमें, डिब्बियोंमें तख्तोंपै, अलमारियोंमें, कीलोंपै, खुंटीपै और मेखोंपै औषधी रखनी चाहिये और जिसमें सब औषधि रक्खीहों वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तरदिशा तथा उत्तम स्थानमें बनना चाहिये।

अतिस्थूलजटायाःस्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम् । गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥ महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्वतः । तेषांतुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानि सर्वशः ॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याःसारःस्याद्बीजकादितः। तालीसादेस्तुपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः॥ क्वचिन्मूलंक्वचित्कंदःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम् । क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः ॥ चित्रकंसूरणंनिम्बोवासाचत्रिफला क्रमात् । धातकीकंटकारीचखदिरःक्षीरपादपः ॥

अर्थ-लम्बी और स्थूल जडवाले वृक्षकी छाल लेवे, छोटीजडवाले वृक्षका सर्वांग लेवे, जिनकी जड बडी और चारों ओर छाल लिपट रहीहै उनका वक्कल लेवे, छोटी जडवाले वृक्षोंका पंचांग लेवे, वड इत्यादि वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये, विजयसारादिका सार तालिशादिके पत्र और त्रिफलादिके फल लेने चाहिये । किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये । चीतेकी छाल, सूरणका कन्द, नीम और अडूसे आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पंचांग, खदिरादिकका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य है ।

क्वचिन्निंबस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि ।
बालंफलंतुबिल्वस्यपक्वमारग्वधस्यच ॥

अर्थ-कहीं नीमके पत्ते न मिलें तो वहाँ छालभी लेलेवै, बेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये ।

अंगेनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् ।
पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥

अर्थ-जहाँ औषधिका कोई अंग नहीं कहा होय वहाँ औषधिकी जड लेनीचाहिये, जहाँ तोल नहीं कहीहुई होय वहाँ सब औषधि समानभाग लेवे, जहाँ वासन नहीं कहा होय वहाँ मट्टीका वासन लेवे, जहाँ काल नहीं कहा होय वहाँ प्रातःकाल समझना ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ पुराणंतुप्रशस्तंस्यात्तांबूलंकांजिकंतथा । शुष्कंनवीनद्रव्यंतुयोज्यंसकलकर्मसु ॥ आर्द्रंतुद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः । गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडश्चशतावरी ॥ अश्वगंधासहचरःशतपुष्पाप्रसारिणी । प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ॥ वासानिंबपटोलकेतकबलाकूष्मांडकेंदीवरी वर्षाभूकुटजाश्चकन्दसहिताः सापूतिगंधामृताः ॥ ऐन्द्रीनागबलाकुरंटकपुराक्षत्रामृतास-

र्वदा सार्द्राएवतुनकचिद्द्विगुणिताःकार्येषुयोज्याबुधैः ॥ घृतंतैलंचपानीयंकषायंव्यंजनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतं चोष्णंतत्सर्वंस्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-सब कर्मोंमें सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविडंग, पीपल, गुड, धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे, अर्थात् नवीन न लेवे। पान और काँजी पुरानी लेनी चाहिये सूखा और नवीनद्रव्य सब कार्योंमें लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगंध, पियाबाँसा, सौंफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कदाचित् न लेवे । बाँसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, खिरैटी, पेठा, नीलेकमल, शतावरी, सोंठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गंगेरन, पियाबाँसा, सौंफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी वैद्य द्विगुणे न डाले. घी, तैल, जल, क्काथ और भोजनकी वस्तु इन सबको एकबार पकाकर ठंढे होनेपर फिर गरम न करै यदि गरम करै तो विषकी समान अपकारी होजाते हैं ।

द्रव्यलक्षण ।

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्वकर्म्मणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्याभल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ वराहमूर्द्धवत्कंदोवाराहीकंदसंज्ञकः । सौवर्चलंतुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥ सुवर्णच्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इंद्रपुष्पप्रतीकाशामनोह्वाचोत्तमामता ॥ श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्य्यते। तोयपूर्णेकांस्यपात्रेप्रतानेनविवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवरः स्निग्धएलासूक्ष्मफलावरा । श्वेतचंदनमत्यन्तंसुगन्धिगुरुपूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यंतंलोहितंप्रवरंमतम् । काकतुण्डनिभःस्निग्धोगुरुःश्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ सुगंधिलघुरूक्षञ्च सुरदारुवरंमतम् । सरलंस्निग्धमत्यर्थंसुगंधिचगुणावहम् ॥ अतिपीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः । जातीफलंगुरु स्निग्धंसमंशुभ्रांतरंवरम् ॥ मृद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गो-

स्तनसन्निभा । करमर्द्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्तिता । खंडंतुविमलंश्रेष्ठंचंद्रकांतसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधंमधुतरंमतम् ॥

अर्थ-हरंड छोटी और वहुत गूदेवाली श्रेष्ठ होतीहै। जलमें डालनेसे डूबजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होताहै। वाराहके मस्तककी समान वाराहीकंद उत्तम होताहै। काँचकी समान कालानोन उत्तम होताहै। स्फटिकमणिकी समान निर्म्मल और प्रभावाला सैंधानोन उत्तम होताहै । सोनामाखी सोनेकी समान पीली उत्तम होतीहै। मैनशिल इंद्रपुष्पकी सदृश श्रेष्ठ होतीहै। जो गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरेहुये काँसीके वासनमें गेरनेसे तारसे तारसे छोडे वह शिलाजीत उत्तम होताहै। कपूर चिकना और कषेला उत्तम होताहै। इलायची छोटे फलवाली उत्तम होतीहै। सफेद चंदन अत्यंत सुगंधिवाला और भारी उत्तम होताहै। लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होताहै। अगर कौवेके मुखकी समान स्निग्ध और भारी उत्तम होतीहै। देवदारु सुगंधिवाली, हलकी और रूखी अच्छी होती है । सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होतीहै। दारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होतीहै। जायफल भारी, चिकना, गोल और जो तोडनेसे भीतरसे सफेद निकले वह उत्तम होताहै। दाख गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और करोंदेकी फलकी समान आकारवाली दाख मध्यम जाननी । खांड-चंद्रकांतकी समान धवल और निर्म्मल उत्तम होतीहै। शहत गायके घीके समान रुचिकारक और सुगंधिवाला उत्तम होताहै।

स्वभावसे श्रेष्ठ ।

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिकाः।शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः॥ शिम्बीधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकीतथा। रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः।दाडिमामलकंद्राक्षांखर्जूरंचपरूषकम् । राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेप्रशस्यते ॥ पत्रशाकेषुवास्तूकंजीवन्तीपोतिकावरा । पटोलंफलशाकेषुकंदशाकेषुसूरणम् ॥ एणःकुरंगहरिणौजांगलेषुप्रशस्यते।पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः॥ह-

रिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णतयामतः । कुरंगस्ताम्रउ-
द्दिष्टोहरिणःकृत्तिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यंदुग्धेषुगव्यमा-
ज्येषुगोभवम् । तैलेषुतिलजंतैलमैक्षवेषुसिताहिता ॥

अर्थ-शालिधानोंमें लालशालिधान, षष्टिकधानोंमें साँठीधान, शूक-धानोंमें जौ और गेहूं, शिम्बीधानोंमें मूंग, मसूर और अरहर रसोंमें मधुर रस, लवणोंमें सैंधानोंन, फलोंमें अनार, आमला, दाख, खजूर, फालसा, खिरनी और विजोरा, पत्रशाकोंमें-वथुआ, जीवन्ती, पोईका साग, फल-शाकोंमें परवल; कंदशाकोंमें जमीकंद, जंगली जीवोंमें काला, लाल और चितकबरा हिरन, पक्षियोंमें तीतर और लवा, मछलियोंमें रोहू, जलोंमें दिव्यजल, दूधोंमें गायका दूध, घृतोंमें गायका घी, तेलोंमें तिलका तेल और इक्षुविकारोंमें मिश्री उत्तम है । तामेके रंगके हिरनको हिरन कहते हैं, काले रंगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरंग कहते हैं ।

स्वभावसे अश्रेष्ठ (बुरे) ।

शिम्बीषुमाषान्ग्रीष्मतौलवणेष्वोषरंत्यजेत् । फलेषुलकु-
चंशाकेसार्षपाणांहितंमतम् ॥ गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंम
हिषीवसा । मेषीपयःकुसुम्भस्यतैलंत्याज्यंचफाणितम् ॥

अर्थ-शिम्बीधानोंमें उडद, ऋतुओंमें ग्रीष्मऋतु, निमकोंमें खारीनोन, फलोंमें बडहर, सागोंमें सरसोंका साग, ग्राम्यमांसोंमें गायका मांस, चर्बियोंमें भैंसकी चर्बी, दूधोंमें भेडका दूध, तेलोंमें कसूमका तेल और इक्षुविकारोंमें राब त्यागने योग्य है ।

उपयोगविरुद्ध ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः ।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ-शाक, खट्टफल, तिलोंकी खल, कुलथी, निमक, मछली, बाँसके कल्ले, दही और मांसके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारीचहारीतोहारिद्रालवणैःकृतः ।

अर्थ-हलदी और निमकके साथ हारीत पक्षीका मांस खाना विषकी समान है ।

रुवोस्तैलेनसंभृष्टंविषंमायूरमाहिषम् ॥

अर्थ-अंडेके तेलमें भुनाहुआ मोरका मांस और भैंसका मांस विषकी समान अपकारी है।

वराहवसयाभृष्टाबलाकातुहरत्यसून् ।

अर्थ-सूअरकी चरबीसे भुनाहुवा बलाका पक्षीका मांस भक्षण करनेसे शीघ्रही प्राण नष्ट होते हैं।

संयुक्तासैववारुण्याकुल्माषैश्वविरुध्यते ।

अर्थ-बलाका पक्षीका मांस मदिराके साथ अथवा कुल्माषके साथ भक्षण करना संयोगविरुद्ध है।

अविंकुसुम्भशाकेनमत्स्यतैलैःकणांत्यजेत् ।

अर्थ-भेडका मांस कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिये।

माषैरिक्षुविकारांश्वकांजिकैस्तिलशष्कुली ।

अर्थ-उडदोंके साथ इक्षुविकार (गुड, खांड, बूरा, मिश्री इत्यादि) और कांजीके साथ तिलशष्कुली खानी निषेध है।

कपोतःसार्षपेभृष्टोघृतंकांस्येदशाहगम् ।

अर्थ-सरसोंके तेलमें भुनाहुआ कबूतरका मांस नहीं खाना चाहिये और कांसीके पात्रमें दश दिनका रक्खाहुआ घी खाना निषेध है।

विषंघृतसमंक्षौद्रंमधुनागगनाम्बुच ।

अर्थ-बराबर भाग शहत और घी मिलाकर पीनेसे तथा सहतके साथ मेघके जलको पीनेसे विषकी समान अपकार करै है।

मूलकंमाषयूषेणमधुनानचभक्षयेत् ।

अर्थ-उददोंके यूषके साथ अथवा मधुके साथ मूली नहीं खानी चाहिये।

नारिकेलजलेनापिकर्पूरंनैवभक्षयेत् ॥

अर्थ-नारियलके जल (दूध) के साथ कपूर भक्षण करना अनुचित है।

एकत्रसर्वमांसानिविरुध्यन्तेपरस्परम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारके मांस एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अर्थात् एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मांस मिलाकर नहीं खावै।

आषधी लेनेमें संकेत ।

लवणंसैन्धवंप्रोक्तंचंदनंरक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्याधवलचन्दनैः॥कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् ।अन्तःसंमार्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका॥बहिः संमार्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका । पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेव हिगृह्यते ॥ शकृद्रसोगोमयकोगोत्रंगोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ–जहां लवण लिखा है वहां सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके स्थानमें लालचन्दन लेवै, परंतु चूरण अवलेह–आसव और तेल, इनमें सफेद चन्दन डालै, काढा और लेपादिकमें लाल चन्दन लेवै, अंतःसंमार्जन (जो भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करै) औषधियोंमें अजमोदके जगह अजवायन लेनी चाहिये और बहिः सम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेसे शरीरको शुद्ध करै) औषधियोंमें अजमोदकी जगह अजमोदही डालै, जहां केवल दुग्ध और घृत लिखा है वहां गायका दूध घी लेवै, जहां शकृद्रस (गोबरका रस) लिखा है वहां गायके गोबरका रस लेवै, जहां केवल मूत्र लिखा है वहां गोमूत्र लेना चाहिये ।

प्रतिनिधि ।

चित्रकाऽभावतीदन्तीक्षारःशिखरिजोऽथवा ।अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठन्दद्याद्भिषग्वरः । मूर्वाभावेत्वचाग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधैः॥ अहिंस्रायाअभावेतुमानकन्दःप्रकीर्तितः । लक्ष्मणायाअभावेतुनीलकंठशिखामता॥ बकुलाऽभावतोदेयंकह्लारोत्पलपंकजम् । नीलोत्पलस्याभावेतुकुमुदंदेयमिष्यते॥ जातीपुष्पंनयत्रास्तिलवंगंतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसोह्यभावेतद्रसोमतः । पौष्कराभावतःकुष्ठन्तथालांगल्यभावतः । स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥चविकागजपिप्पल्योपिप्पलीमूलवत्स्मृते । अभावेसोमराज्यास्तुप्रपु-

न्नाटफलंमतम् ॥ यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशाबुधैः।
रसांजनस्याभावेतुसम्यग्दार्वीप्रयुज्यते॥सौराष्ट्र्याभावतोदे-
यास्फटिकातद्गुणाजनैः।तालीसपत्रिकाभावेस्वर्णतालीप्र-
शस्यते ॥ भार्ङ्ग्यभावेतुतालीसंकंटकारीजटाऽथवा ।
रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्वकम् ॥ अभावेमधुयष्ट्या-
स्तुधातकींचप्रयोजयेत् । अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्य-
मिष्यते॥द्राक्षायदिनलभ्येतप्रदेयंकाश्मरीफलम् । तयो-
रभावेकुसुमंबंधकस्यमतंबुधैः॥लवंगकुसुमंदेयंनखस्याभा-
वतःपुनः । कस्तूर्य्यभावेकंकोलंक्षेपणीयंविदुर्बुधाः ॥ कं-
कोलस्याप्यभावेतुजातीपुष्पंप्रदीयते । सुगंधिमुस्तकंदेयं-
कर्पूराभावतोबुधैः ॥ कर्पूराभावतोदेयंग्रन्थिपर्णंविशेषतः।
कुंकुमाभावतोदद्यात्कुसुम्भकुसुमंनवम् ॥ श्रीखण्डचन्द-
नाभावेकर्पूरंदेयमिष्यते । अभावेत्वेतयोर्वैद्यःप्रक्षिपेद्रक्तच-
न्दनम्॥रक्तचन्दनकाभावेनवोशीरंविदुर्बुधाः । मुस्ताचा-
तिविषाभावेशिवाभावेशिवामता॥अभावेनागपुष्पस्यप-
द्मकेशरमिष्यते । मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपिवाऽ-
सति॥ वरीविदार्य्यश्वगंधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत्।वाराह्या-
श्चतथाभावेचर्म्मकारालुकोमतः ॥ वराहीकंदसंज्ञस्तुपश्चि-
मेगृष्टिसंज्ञकः । वाराहीकंदएवान्यश्चर्मकारालुकोमतः ॥
अनूपसंभवेदेशेवराहइवलोमवान्॥ भल्लातकासहत्त्वेतुरक्त-
चन्दनमिष्यते।भल्लाताभावतश्चित्रंनलश्चेक्षोरभावतः॥सुव-
र्णाभावतःस्वर्णमाक्षिकंप्रक्षिपेद्बुधः । श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयंबुधै-
रजतवद्ध्रुवम्।माक्षिकस्याप्यभावेतुप्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम्।
सुवर्णमथवारौप्यंमृतंयत्रनलभ्यते॥तत्रकान्तेनकर्माणिभि-

षक्कुर्य्याद्विचक्षणः ॥ कान्ताभावेतीक्ष्णलोहंयोजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ अभावेमौक्तिकस्यापिमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् । मधुयत्रनल-भ्येततत्रजीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यंडचभावतोदद्युर्भिषजःसि-तशर्कराम् । असंभवेसितायास्तुबुधैःखंडंप्रयुज्यते ॥ क्षीरा-भावेरसोमौद्गोमासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनिया-नितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकतराभावेपरंवैद्येनजानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमें जवासा, तगरके अभावमें कूठ, मूर्वाके अभावमें जिंगनीकी छाल, अहिंस्राके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकंदके अभावमें मयूरशिखा, मौलसिरीके अभावमें कुमुद लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरामूल न होय वहां चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारूहलदीके अभावमें हलदी, रसौतके अभावमें दारूहलदी, गोपीचंदनके अभावमें फिटकरी, तालीशपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश, भारंगीके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमें पांशु लवण लेवै, मुलैठीके अभावमें धायके फूल, अमलवेतके अभावमें चूका, दाखके अभावमें कुंभेरका फल, दाख और कुंभेरके अभावमें दुपैरियाका फूल, नखद्रव्यके अभावमें लौंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी, शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगंधमोथा वा गठि-वन, केसरके अभावमें कसूमके नवीन फूल, श्रीखंडचन्दनके अभावमें कपूर, केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन खस, अतीसके अभावमें नागरमोथा, हरडके अभावमें आंवला, नागकेसरके अभा-वमें कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीवक और ऋष-भकके अभावमें विलाईकन्द, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगंध, ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द, और वाराहीकंदके अभावमें चर्मकारआलू लेवै वाराही कंदको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं । चर्मकार-आलूभी वाराहीकाही भेदहै ये सजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हैं, भिलावेके अभावमें लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चांदीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहेकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी सफेद चीनीके अभावमें सफेद खाँड और दूधके अभावमें मूंगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहां कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैःसमंद्रव्यंविचिन्त्यच ।युंज्याद्विविधमन्यच्चद्रव्याणांतुरसादिवत् ॥ योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्मतः । यत्तुप्रधानंतस्यापिसदृशंनैवगृह्यते ॥ व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगणोक्तमपितत्त्यजेत् । अनुक्तमपियुक्तंयद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही हैं तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले । इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे, जैसे कि, मरिचादिगुटिकामें पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि हैं इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि गेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारीहै उसको उस योगमेंसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमें नहीं है तोभी रसादिवित् वैद्य उस योगमें मिलादेवै ।

द्रव्यांतर्गतपदार्थाः ।

रसोवीर्यंविपाकश्चज्ञातव्यास्तेतियत्नतः ।
रसस्तुमधुरादिःस्याद्वीर्यंकार्येसमर्थता ॥
परिणामेगुणाढ्यत्वंविपाकइतिसंज्ञितम् ।

अर्थ-द्रव्योंमें रस, वीर्य्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये, मधुरादिकको रस कहतेहैं, जो कार्यमें समर्थता करै उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करै उसको विपाक कहते हैं ॥

द्रव्येरसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच । पदार्थाःपंचतिष्ठंति स्वस्वंकुर्वन्तिकर्मंच॥रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः॥षड्द्रव्यमाश्रितास्तेचयथापूर्वंबलावहाः।तत्राद्यामारुतंघ्नंतित्रयस्तिक्तादयःकफम्। कषायतिक्तमधुराःपित्तमन्येतुकुर्वते॥येरसावातशमनाभवंतियदितेषुवै । रौक्ष्यलाघवशैत्यानिनतेहन्युःसमीरणम्॥ येरसाःपित्तशमनाभवंतियदितेषुवै । तीक्ष्णोष्णलघुताचैवनतेतत्कर्मकारिणः॥येरसाः श्लेष्मशमनाभवंतियदितेषुवै । स्नेहगौरवशैत्यानिनतेहन्युःकफंतदा ॥

अर्थ–रस गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यमें रहतेहैं और ये अपने २ कार्योंको करते हैं, स्वादु, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषेला ये छः रस द्रव्योंमें रहते हैं, और इनमें एकसे दूसरा बलहीन है अर्थात् स्वादुरससे अम्लरस, अम्लरससे लवणरस, लवणरससे तिक्तरस, तिक्तरससे चरपरारस और चरपरेसे कषेलारस निर्बलहै।स्वादु, अम्ल, और लवण ये तीनों रस वातनाशकहैं और तिक्त, कटु, कषेला ये तीनों रस कफको हरतेहैं तथा कषेला, तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते हैं, शेषके अम्ल, कटु और कषाय ये तीनों रस पित्तकारकहैं जो रस वातको दूर करनेवालेहैं, किन्तु उनमें रूक्षता, लघुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो वह कदापि वातको दूर नहीं करसक्ते। जो रस पित्तको शान्त करनेवाले हैं जो उनमें तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ये तीनों गुण होवैं तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसक्ते ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले हैं यदि उनमें स्निग्धता, गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो कदापि कफको दूर नहीं करसक्ते ।

क्षारःकषायःपवनप्रकोपीमधुरोऽथतिक्तःकफकोपनश्च ।
कट्वम्लकौपित्तविकारकारिणौकट्वम्लकौवातशमौप्रदिष्टौ॥
पित्तस्यनाशीमधुरःसतिक्तःकटूकषायौशमनौकफस्य ।
अन्योन्यमेतच्छमनंवदन्तिपरस्परंदोषविवृद्धिमन्तः ॥

अर्थ-लवण और कषेला रस वातको कुपित करैहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवालाहै, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करताहै और वातको शमन करताहै, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करे है, चरपरा और कषेलारस कफको शमन करैहै और परस्पर दोषोंको वढाने-वाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते हैं ।

मधुरःश्लेष्मलःप्रायोजीर्णाच्छालियवाहते ।प्रायोम्लंपित्त-जनकंदाडिमामलकाहते ॥ अपथ्यंलवणंप्रायश्चक्षुषोन्यत्र सैंधवात्।तिक्तंकटुकभूयिष्ठमवृष्यंवातकोपनम् ॥ ऋतेमृ-तापटोलीभ्यांशुण्ठीशुष्कादसोनतः । कषायःप्रायशःशी-तःस्तंभनश्चाभयांविना ॥

अर्थ-पुराने चावल, जौ, गेहूं, मूँग, सहत, मिश्री और जंगली जीवोंके मांसको छोडकर जितने मधुर रसवाले पदार्थ हैं सव पित्तको करतेहैं, सैंधव लवणको छोडकरके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्रोंको अहितकारीहैं. गिलोय और परवलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ हैं सव अवृष्य, वातको कुपित करनेवाले हैं, सोंठ, अदरख और लशुनको छोडकर जितने चर्परे पदार्थ हैं अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले हैं, हरडको छोडकर जितने कषेले पदार्थ हैं प्रायः सवही शीतल और स्तम्भक है ।

मधुररसवर्णनम् ।

मधुरंगौल्यमित्याहुरिक्ष्वादौचसलक्ष्यते ॥स्वादुःस्तन्यर-सौजसांचबलकृद्वीर्यप्रदस्तृप्तिदः प्राह्लद्यांरसनांकरोतितद-नुश्लेष्मप्रकोपप्रदः । पित्तानांदमनः श्रमोपशमनोवृष्योन-राणांहितःक्षीणानांक्षतपाण्डुनेत्रविरुजांहंताभवेन्माधुरः ॥

अर्थ-मधुर, गौल्य (गोल, रसज्येष्ठ, गुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सव मधुररसके पर्याय हैं, मधुररस इक्ष्वादिकमें रहताहै, मधुररस स्तनोमें दूधको वढानेवाला, वल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वामें तृप्तिको करनेवाला, किंचित् कफको कुपित करनेवाला, पित्तको दमन करनेवाला, श्रमको शमन करनेवाला तथा क्षीण, क्षत, पाण्डु और नेत्ररो-गवाले मनुष्योंको हितकारीहै ।

मधुरःपिच्छिलःशीतोधातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्योवातपित्तघ्नःकुर्यात्स्थौल्यमलकृमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमें दूध और बलको बढानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिको करनेवाला है ।

मधुरस्तुरसश्चिनोतिकेशान्वपुषःस्थौल्यबलौजवीर्यदायी।
अतिसेवनतःप्रमेहशैत्यंजडतामांद्यमुखान्करोतिदोषान् ॥

अर्थ-मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला, शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, ओज, वीर्य्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुखरोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगंडादिरोगकृत् । (रा० व०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगंडादि रोगोंको उत्पन्न करताहै ।

अम्लरसवर्णनम् ।

अम्लस्तुचिंचाजंबीरमातुलुंगफलादिषु ।
अम्लोष्णोंतर्बहिःशीतोरुच्यःपित्तकफास्रदः ॥
विबंधानाहदृष्टिघ्नोदंताक्षिभ्रूनिकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस-इमली, जम्भीर और मातुलुंगादि फलोंमें होताहै, अम्लरस-गरम, बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल, रुचिकारक, पित्त, कफ और रुधिरको कुपित करनेवाला तथा विबंध, आनाह और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और दाँत, नेत्र, भौंहको सकुचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अम्लाभिधःप्रीतिकरोरुचिप्रदःप्रपाचनोयंमृदुतांचयच्छति।
भ्रांतिंचकुष्ठंकफपांडुतांचकार्श्यंचकासंकुरुतेतिसेवितः ॥

अर्थ-अम्लरस-प्रीतिकारक, रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवालाहै, इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डुता और कृशताको करैहै ।

अन्यच्च।

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान्।
कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू, पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करैहै।

लवणरसवर्णनम्।

लवणस्तुवरःप्रोक्तःसैंधवादिषुदृश्यते।
लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तहा ॥
पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुकारकः।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस-शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवालाहै।

अन्यच्च।

लवणोरुचिकृद्रसोनितांतपचनःस्वादुकरश्चसारकश्च।
अतिसेवनतोजरांचपित्तंशितिमानंचददातिकुष्ठकारी ॥

अर्थ-लवणरस-रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, सारकहै इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढको करैहै।

अपिच।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत्।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥

अर्थ-इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होतेहैं, शरीरमें वलीका पड़ना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होतेहैं।

तिक्तरसवर्णनम्।

तिक्तन्तुपिचुमन्दादौव्यक्तमास्वाद्यतेरसः।

अर्थ-कडवारस-नीम चिरायतादिमें रहता है तथा यह रस प्रायः गुप्त और बेस्वाद होता है ।

तिक्तः पित्तकफापहोज्वरहरः कुष्ठादिदोषापहः शीतोरक्तगदापहः श्रमहरोरुच्योनसंक्लेदनः । जिह्वाकंठविशोधनोभवति तद्दाहापहोरोचनो वक्त्रोल्लासकरः प्रकुष्ठकथितोनिम्बादिके स्वादधृक् ॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करनेवाला, शीतल, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, रुचिकारक, क्लेदकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला, दाहनाशक, रोचन और मुखको प्रसन्न करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् । कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः ॥ रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कंठस्तन्यविशोधनः । वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरुक्षणोलघुः ॥ सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत् । कम्पमूर्च्छातृषाकारीबलशुक्रक्षयप्रदः ॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कोढ, विष, उत्क्लेद, दाह, रुधिरविकार इनको दूर करे है, स्वयं अरुचिकारक होनेपरभी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करे है, कंठ और स्त्रीके दूधको शोधे है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुखानेवाला, रूखा और हलका है । कडवेरसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तंभ, श्रम, कम्प, मूर्च्छा और तृषारोग उत्पन्न होताहै तथा बल और शुक्रका नाश होताहै ।

कटुरसवर्णनम् ।

कटुस्तुपिप्पलीमूलेमरिचादौसलक्ष्यते ॥ नेत्रस्राववहोमुखं विदहतेकर्णाक्षिज्वालोद्वहन् बीभत्संकुरुतेश्रमंविदधतेरूक्ष-

श्चतीक्ष्णोभृशम् । अग्निश्चोत्पथतेक्षतंविदहतेक्षीणस्यश-स्तोनच वातंवर्द्धयतेकफंप्रहरतेरौद्रःकटुर्योरसः ॥

अर्थ—चरपरारस—पींपलामूल और मिरचादिमें रहता है। चरपरारस—नेत्रोंमेंसे पानी टपकावे, मुखको जलावे, कानोंमें झलझलाहट करे, नेत्रोंमें ज्वाला उत्पन्न करै,भयंकरपनेको प्रगट करै, रूखा, तीक्ष्ण, अग्निको उत्पन्न करै, क्षतको दहन करनेवाला, क्षीण मनुष्योंको अहितकारी वातको बढानेवाला, कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है।

अन्यच्च ।

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत्।श्लेष्महल्लघुराग्ने-यःकृमिकण्डूविषापहः॥रूक्षःस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्या-पकर्षणः।अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगकोमतः॥दी-पनःपाचनोरुच्योनासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसा-मज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः॥ स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्योव-र्चोविवन्धकृत् । सोतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोष-कृत्॥कंठादिपीडामूर्च्छांतर्दाहदोबलकान्तिहृत् ।

अर्थ—चरपरारस—गरम, तीक्ष्ण, विशद, वातपित्तकारक, कफनाशक, हलका, आग्नेय, कृमिनाशक, खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोंको दूर करनेवाला, रूखा, स्तनाम दूधको सुखानेवाला, मेदा और स्थूलताको हरनेवाला, आँसुओंको उत्पन्न करनेवाला, नासिका, मुख, नेत्र और जिह्वाको उद्वेग करनेवाला, दीपन, पाचन, रुचिकारक, नासिकाको सुखानेवाला, क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, विष्ठा और मूत्रको सुखानेवाला, स्रोतोंको प्रकाशित करनेवाला, रूखा मेधाजनक और मलरोधक है । इसको अधिक सेवन करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होताहै । तथा मुख,तालु, ओष्ठ यह सूखजाते हैं कंठमें पीडा उत्पन्न होवे अंतर्दाह होवे, तथा बल और कान्ति नष्ट होवेहैं।

कषायरसवर्णनम् ।

कषायस्तुवरःप्रोक्तःसतुपूगीफलादिषु ।

अर्थ-कषाय, तुवर (तूवर, कुवर) यह कषायरसके पर्य्याय हैं। कषायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है।

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनोहिमः।
कफशोणितपित्तघ्नोजिह्वाजाड्यकरोलघुः ॥

अर्थ-कषेलारस-व्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला, स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जडताको करनेवाला और हलका है।

मतान्तरम्।

कषायःशोषणःस्तम्भीव्रणपाकार्त्तिनाशनः।
कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोगुरुस्तथा ॥

अर्थ-कषेला रस-शोषण, स्तम्भक, व्रणपाककी पीडाको दूर करनेवाला, कफनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला, पित्तनिवारक, रूखा, शीतल और भारी है।

अन्यच्च।

कषायनामानिरुणद्धिशोफंवर्णंतनोर्दीपनपाचनश्च।
सत्त्वापहोसौशिथिलत्वकारीनिषेवितःपांडुकरोतिगात्रम् ॥

अर्थ-कषेलारस-सूजनको करे, वर्णको बिगाडदेवे, दीपन, पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे, शिथिलताको उत्पन्न करे और इसको अधिक सेवन कियाजाय तो शरीरमें पांडुता उत्पन्न होती है।

अथ द्वन्द्वरसः।

कटुःकषायश्चकफापहारिणौमाधुर्य्यतिक्तावपिपित्तनाशनौ।
कट्वम्लसंज्ञौचरसौमरुद्धरावित्थंचद्वन्द्वौसकलामयापहौ ॥

अर्थ-चरपरा और कषेलारस-कफको, मधुर और कडवारस पित्तको, चरपरा और खट्टारस वातको दूर करे है, इसप्रकार दो दो रस मिलेहुये सर्वप्रकारके रोगोंको हरे हैं। इन छः रसोंमें एकमें एक मिलनेसे अनेक भेद होजातेहैं सो कहते हैं।

मिश्रितरसके ६३ भेद ।

मधुरोम्लंकटुस्तिक्तःकटुस्तुवरइत्यपि ।
क्रमादन्योन्यसंकीर्णानानात्वंयांतिषड्रसाः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, चरपरा, कडवा, नमकीन और कषेला यह छः रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होतेहैं और उनके गुणभी पृथक् २ होजाते हैं, वह सब नीचे लिखते हैं ।

सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससम्भवाः । रसानांयोगत-स्तुस्यादन्यएवगुणोदयः॥संयोगाद्विषतांयातिसममाज्ये-नमाक्षिकम् । अमृतंतुविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥

अर्थ-ये सामान्यतासे छः रसोंके गुण कहे हैं, किन्तु रसोंके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न होजातेहैं, जैसे-घृतमे वरावर भाग सहत मिलानेसे विष होजाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे सॉपके डसनेसे विषरूप होजाते हैं ।

रसानांसंयोगाःसप्तपंचाशद्भवन्ति ।
कल्पनात्तुत्रिषष्टिधाभवन्ति ॥

अर्थ-रसोंके संयोग सत्तावन ५७ हैं और कल्पना करके त्रेसठ ६३ जानने ।

तद्यथा ।

षट्पंचकाःषट्पृथग्रसाःस्युश्चतुर्द्विकौपंचदशप्रकारौ ।
भेदास्त्रिकाविंशतिरेकमेवद्रव्यंषडास्वादमितित्रिषष्टिः ॥

अर्थ-पॉच पॉच रसके मिलनेसे छः भेद होतेहैं, और छः अलग अलग रस हैं और चार चार रसोंके मिलनेसे पंद्रह भेद होते हैं और दोदोके मिलनेसेभी पंद्रहभेद होतेहैं और तीनतीन रसोंके संयोगसेभी वीस भेद होते हैं और छहोंरसोंका स्वादवाला एक ऐसे त्रेसठ ६३ भेद कहे हैं ।

दोदोके संयोगसे १५	पांचपांचके संयोगसे ६
चारचारके संयोगसे १५	पृथक् २ रस ६
तीनतीनके संयोगसे २०	एकमे छहोंमिलेहुवे १

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होतेहैं।

अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है।

रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यंत्र लिखते हैं।

१ मधुराम्लौ	२ मधुरलवणौ	३ मधुरतिक्तौ
४ मधुरकटुकौ	५ मधुरकषायौ	६ अम्ललवणौ
७ अम्लतिक्तौ	८ अम्लकटुकौ	९ अम्लकषायौ
१० लवणतिक्तौ	११ लवणकटुकौ	१२ लवणकषायौ
१३ तिक्तकटुकौ	१४ तिक्तकषायौ	१५ कटुकषायौ
१६ मधुराम्ललवणाः	१७ मधुराम्लतिक्ताः	१८ मधुराम्लकटुकाः
१९ मधुराम्लकषायाः	२० मधुरलवणतिक्ताः	२१ मधुरलवणकटुकाः
२२ मधुरलवणकषायाः	२३ मधुरतिक्तकटुकाः	२४ मधुरतिक्तकषायाः
२५ मधुरकटुकषायाः	२६ अम्ललवणतिक्ताः	२७ अम्ललवणकटुकाः
२८ अम्ललवणकषायाः	२९ अम्लतिक्तकटुकाः	३० अम्लतिक्तकषायाः
३१ अम्लकटुकषायाः	३२ लवणतिक्तकटुकाः	३३ लवणतिक्तकषायाः
३४ लवणकटुकषायाः	३५ तिक्तकटुकषायाः	३६ मधुराम्ललवणतिक्ताः
३७ मधुराम्ललवणकटुकाः	३८ मधुराम्ललवणकषायाः	३९ मधुरलवणतिक्तकटुकाः
४० मधुरलवणतिक्तकषायाः	४१ मधुरलवणकटुकषायाः	४२ मधुरतिक्तकटुकषायाः
४३ मधुराम्लतिक्तकटुकाः	४४ मधुराम्लतिक्तकषायाः	४५ मधुराम्लकटुकषायाः
४६ अम्ललवणतिक्तकटुकाः	४७ अम्ललवणकटुकषायाः	४८ अम्लतिक्तकटुकषायाः
४९ अम्ललवणतिक्तकषायाः	५० लवणतिक्तकटुकषायाः	५१ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५२ मधुराम्ललवणतिक्तकषा०	५३ मधुराम्ललवणकटुकषा०	५४ मधुराम्लतिक्तकटुकषायाः
५५ मधुरलवणतिक्तकटुकषा०	५६ अम्ललवणतिक्तकटुकषा०	५७ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५८ मधुरः	५९ अम्लः	६० लवणः
६१ तिक्तः	६२ कटुः	६३ कषायः

मित्ररसौ ।

अन्योन्यंमधुराम्लौलवणाम्लौकटुतिक्तकौचरसौ ।

कटुलवणौचस्यातांमित्ररसेतिक्तलवणौच ॥

अर्थ-मधुर और अम्लरस आपसमें मित्रहैं लवण और अम्लरस मित्र हैं, कटु और तिक्तरस मित्र हैं, कटु और लवणरस मित्र हैं, तिक्त और लवणरस मित्र है ।

परस्परविरुद्धरसौ ।

लवणमधुरौविरुद्धावथकटुमधुरौचतिक्तमधुरौच

साधारणःकषायःसर्वत्रसमानतांधत्ते ॥

अर्थ-लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुर रस विरुद्ध हैं, तिक्त और मधुररसभी विरुद्ध हैं, और कषेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे वर्त्ताव करे है ।

अथ गुणाः ।

गुरुर्लघुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । भूनभोवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाःस्मृताः ॥ गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच । लघुपथ्यंपरंप्रोक्तंकफघ्नंशीघ्रपाकिच ॥ स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम् । रूक्षंसमीरणकरंपरंकफहरंमतम् ।तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायोलेखनंकफवातनुत् ॥

अर्थ-गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण, ये क्रमसे भूमि, आकाश, जल, वायु और अग्निके गुणहैं । तहां गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और देरमें पचैहै । लघुपदार्थ अत्यंत पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचैहै । स्निग्धपदार्थ वातहारक, कफहारक, वीर्य और बलको बढावैहै। रूक्षपदार्थ वातकारक और कफहारकहै । तीक्ष्णपदार्थ लेखन और कफवातनाशक हैं ।

सुश्रुतेतुगुणाएतेविंशतिर्नात्रदर्शिताः[1] ।

अर्थ-इसीप्रकार सुश्रुतमेंभी बीस गुण कहेहैं, वह यहाँ ग्रंथ बढनेके भयसे नहीं दिखाये ।

१ शीतोष्णस्निग्धरूक्षमदतीक्ष्णगुरुलघुपिच्छिलविशदश्लक्ष्णपरुषकठिनमृदुद्रवसान्द्रस्थिरसरस्थूलसूक्ष्माविंशतिः ।

॥ अथ गुणप्रस्तावाद्दीपनादयोगुणाः ॥

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनंतद्यथामिसिः । पचत्यामंनवह्निंच कुर्याद्यत्तद्धिपाचनम् ॥ नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः । नशोधयतियद्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि ॥समीकरोतिविषमान्शमनंतद्यथाऽमृता । कृत्वापाकंमलानांच भित्त्वाबंधमधोनयेत् ॥ तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ताहरीतकी । पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् ॥ नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकम् । मलादिकमबद्धं यद्बद्धंवापिंडितंमलैः ॥ भित्त्वाऽधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा । विपक्कंयदपक्कंवामलादिद्रवतांनयेत् ॥ रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा । अपक्कंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् ॥ वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा । स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसंचयम्॥देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा । दीपनंपाचनंयत्स्यादुष्णत्वादवशोषकृत् ॥ ग्राहीतच्चयथाशुंठीजीरकंगजपिप्पली । रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् ॥ वातकृत्स्तंभनंतत्स्याद्यथावत्सकटुंटुकौ । श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् ॥ छेदनंतद्यथाक्षारामरिचानिशिलाजतु । धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् ॥ लेखनंतद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः । यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजिकरंहितत् ॥ यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी । यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंहितदुच्यते ॥ यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् । दुग्धंमाषाश्चभल्लात फलमज्जामलानिच॥एतानिजनकानिस्यूरेचकानिचरेतसः । प्रवर्त्तिनीस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ॥ जातीफलं

स्तंभकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच। रसायनंतुतज्ज्ञेयंयज्जरा व्याधिनाशनम्॥ यथाहरीतकीदंतीगुग्गुलुश्वशिलाजतु। पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकंचगच्छति॥ व्यवायितद्यथा भंगाफेनंचाहिसमुद्भवम्। संधिवंधांस्तुशिथिलान्यःकरोति विकाशितत्॥ विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ। बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते॥ तमोगुणप्रधानंचय-थामद्यंसुरादिकम्। व्यवायिचविकाशिस्याच्छ्लेष्मच्छेदिम-दावहम्॥ आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम्॥ निज वीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम्।निरस्यतिप्रमाथिस्या-त्तद्यथामरिचंवचा॥ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुद्ध्वारसवहाः शिराः। धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि॥ विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्यात्तथातृषाम्। हृदिदाहंचजनयेत्पाकं गच्छतितच्चिरात्॥ गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणा-न्। पच्यमानंयथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादिः॥

अर्थ—अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोंके लक्षण कहतेहैं। जो पदार्थ आम (कच्चे) को पकावै नही परंतु अग्निको प्रदीप्त करे वह दीपन कहाताहै जैसे कि—सौंफ। जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं करे उसको पाचन कहतेहैं। जैसे कि—नागकेशर। जो अग्निको दीपन करताहै और कच्चेको पकाताहै उसको दीपन पाचन कहतेहैं। जैसे कि—चीता। जो पदार्थ तीनों दोषोंको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊंचे तथा नीचे मार्गमें नहीं लेजासक्ता समान दोषोंको बढाता नहीं और विषम हुए दोषोंको सम करताहै वह पदार्थ शमन कहाताहै। जैसे कि, गिलोय। जो पदार्थ कच्चे वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजा-ताहै अर्थात् मलोंको गिरा देता है वह पदार्थ अनुलोमन कहाताहै जैसे कि—हरड। जो पदार्थ कोठेमें चिपटे हुए पकानेयोग्य मल, कफ और पित्तहैं उनको विना पकायेही नीचे लेजाय वह स्रंसन कहाताहै जैसे कि—अमलतास। जो वातादि दोषोंसे बँधेहुये मल मूत्रको अलग अलग करके गुदद्वारसे

बाहर निकाले उसको भेदन कहतेहैं । जैसे कि, कुटकी । जो पदार्थ अधपके अथवा कच्चे मलको द्रवरूप (पतला) करै और नीचेको गेरै वह पदार्थ रेचन कहाताहै जैसे कि-निसोथ । जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाताहै जैसे कि, मैनफल । जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ देहशोधन कहाताहै जैसे कि-देवदाली । जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला, कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे द्रवतारूप (गीलेपन) को सुखानेवालाहै वह द्रव्यग्राही कहाताहै जैसे कि-सोंठ, जीरा और गजपीपल जो पदार्थ रूक्ष, शीतल, कषेला और लघुपाकी होनेसे वायुको उलटा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाताहै जैसे कि, कुडा और सोनापाठा । यह नीचे जानेवाले मलादिकको रोककर रखताहै इसलिये स्तम्भक कहाताहै । जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफादिकदोषोंको बलात्कारसे उखाडडाले वह पदार्थ छेदन कहाताहै जैसे कि-जवाखार, आदिखार, कालीमिरच और शिलाजीत । जो पदार्थ देहके धातुओंको अथवा मलको सुखाकर दुर्बल करै वह पदार्थ-लेखन है जैसे कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजौ । जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे स्त्रीके साथ रमनेका उत्साह होय वह द्रव्य वाजीकरण कहाता है जैसे कि-असगन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर । जिस द्रव्यसे वीर्य्यकी वृद्धि होय वह द्रव्य शुक्रल कहाताहै जैसे कि, नागबला आदि और कौंछके बीज । दूध, उडद, भिलावेंकी मींग और आमले ये अपने प्रभावसे, शीघ्रही रसादिकको उत्पन्न करके वीर्य्यको प्रकट करतेहैं और वीर्य्यकी अधिकता होनेपर उसकी प्रवृत्ति करतेहैं । स्त्रीवीर्यको प्रवर्त्तानेवाली, कटेरीका फल वीर्य्यका रेचक, जायफल वीर्य्यका स्तम्भन करनेवाला और तरबूज (इन्द्रजौ) वीर्य्यका क्षय करतेहैं । स्त्रीका स्मरण कीर्त्तन, दर्शन, संभाषण स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियाएँ वा एकही क्रिया वीर्य्यको प्रवर्त्ताने (निकालने) वालीहैं । जो पदार्थ जरा और व्याधिका नाश करनेवाला होय वह पदार्थ रसायन कहाता है जैसे कि, हरड, दंती, गूगल और शिलाजीत । जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पश्चात् पाक अवस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यवायी कहाताहै जैसे कि, भांग और अफीम । अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण-करतेहैं और व्यवायी द्रव्य तो कच्चेही अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकतेहैं। जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करतेहैं। उनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों। जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाताहै जैसे कि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवायी, विकाशी, कफ नष्ट करनेवाला, मद करनेवाला, अग्निका अधिक अंशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह पदार्थ विष कहाताहै जैसे कि, वत्सनाभ और शङ्कुक आदि। वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवायी हैं। ओजको सुखाकर संधियोंके बंधनोंको शिथिल करनेवालेहैं इसलिये विकाशी हैं। तमोगुणका भाग अधिक होनेसे बुद्धिका नाश करके मद करनेवालाहै, अग्निका अधिक अंशयुक्तहै और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणोंको ग्रहण करनेवाला होनेसे योगवाहीभीहै। जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाताहै जैसे कि, मिरच और वच। जो पदार्थ रसको वहानेवाली शिराओंको पिच्छिल और भारीपनसे रोककर शरीरमें भारीपन करताहै वह पदार्थ अभिष्यन्दी कहाताहै जैसे कि, दही। जिस द्रव्यके खानेसे खट्टी डकार आवैं, प्यास लगे, हृदयमें दाह होय वह पदार्थ विदाही कहाताहै, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होताहै। जो द्रव्य अपने साथ मिली हुई वस्तुओंके गुणोंको ग्रहण करै वह पदार्थ योगवाही कहाताहै जैसे कि, सहत, तेल, घी, पारा और लोहा आदि।

अथ वीर्यम्।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम्।
वीर्य्यमष्टविधंप्राहुःशीतोष्णंद्विविधंपरे ॥

अर्थ-मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इन भेदोंसे वीर्य्य आठ प्रकारका है और किसी किसीके मतसे उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य्य दो प्रकारका है।

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणानाह।

उष्णःपित्तकरोबल्योवातश्लेष्महरोलघुः।
शीतलःपित्तहाबल्यःकफवातकरोगुरुः ॥

अर्थ-उष्णवीर्य्य-पित्तकारक, बलवर्द्धक, वातकफनाशक और हलका है। शीतवीर्य्य-पित्तनाशक, बलकारक, कफकारक और भारी है।

अन्यच्च।

यच्छीतवीर्य्यंगुरुपित्तहारिद्रव्यंनृणांवातकरंतदुक्तम्। यदुष्णवीर्य्यंलघुवातहारिश्लेष्मापहंपित्तकरंचतत्स्यात्॥

अर्थ-जो द्रव्य शीतवीर्य्य हैं वह सब भारी, पित्तहारी और वातको करनेवाले हैं, जो द्रव्य उष्णवीर्य्य हैं वह सब हलके, वातविनाशक, कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे हैं।

रसानांवीर्य्यभेदमाह।

रसाःकट्वम्ललवणाउष्णवीर्यायथोत्तरम्। तिक्तकषायमधुराःशीतवीर्य्यायथोत्तरम्॥

अर्थ-कटु, अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य्य हैं अर्थात् चरपरे रससे खट्टा रस और खट्टे रससे लवण रस अधिक उष्णवीर्य्य है, तिक्त, कषाय और मधुर यह तीनों रस यथाक्रमसे शीतवीर्य्य हैं अर्थात् तिक्तरससे कषेला रस और कषेले रससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य हैं।

अथ विपाकः।

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसांतरम्। रसानांपरिणामान्तेसविपाकइतिस्मृतः॥ विपाकस्तुत्रिधाप्रोक्तःस्वाद्वम्लकट्वात्मकः। मिष्टःपटुश्चमधुरोऽम्लोम्लंपच्यतेरसः॥ कषायकटुतिक्तानांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः। श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः॥ अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः। कटुःकरोतिपवनंकफंपित्तंचनाशयेत्॥ विशेषएषरसतोविपाकानांनिदर्शितः।

अर्थ-जठराग्निकरके जो रस उत्पन्न हो और फिर उस रसके पकनेपर जो परिणाम होताहै उसको 'विपाक' कहतेहैं। विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, नमकीन और अम्ल, मधुर और अम्ल रसवाले पदार्थोंका विपाक मधुरही होताहै, अम्लपदार्थोंका अम्ल होताहै. तथा कटु, तिक्त और कषेले रसोंका विपाक चर्पराही होताहै, मधुर विपाकवाले द्रव्य कफको उत्पन्न

करे हैं और वातपित्तको दूर करे हैं । अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे हैं और वातकफको हरे हैं । और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उत्पन्न करेहैं और कफपित्तको दूर करे हैं । विशेषकरके यह विपाक रसोंसे दर्शाया है ।

प्रभाव ।

रसादिसाम्येयत्कर्मविशिष्टंतत्प्रभावजम् । दन्तीरसाद्यैस्तु-
ल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधूकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीर-
स्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥
समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं
कर्मकुर्यात्प्रभावतः । ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा ॥

अर्थ-औषधीके रस, गुण, वीर्य और विपाकमें जो गुण होवैं उनसे अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करै उसका नाम प्रभाव है, जैसे दन्ती और चीता दोनों रस वीर्यविपाकादिमें समानभी हैं, किन्तु दन्ती रेचक है और चीता नहीं, इसको प्रभाव कहतेहैं । जैसे महुआ और दाख रसादिकमें समान हैं, पर दाख दस्तावर है । दूध और घी रसादिकमें समान हैं, परन्तु घी अग्निको दीपन करेहै । आमला और बडहर गुणोंमें तुल्य हैं, किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कहीं कहीं केवल द्रव्य प्रभावसेही कार्य करता है, जैसे सहदेवीकी जडको मस्तकमें बांधनेसे ज्वर दूर होताहै, ये प्रभावज गुण जानने ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽनूपादिवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मेमुहूर्तेउत्तिष्ठेत्सुस्थोरक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तांनिर्वर्त्यमैत्रंकर्म्मसमाचरेत् ॥

अर्थ-सुस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्त्तमें उठे, फिर शरीरसम्बन्धीय चिन्ता (मलमूत्रादित्याग) से निर्वर्त्य अर्थात् निवटकर हितको करनेवाले कार्य्योंको विचारे ।

स्वभावतःप्रवृत्तानांमलादीनांजिजीविषुः ।
नवेगान्धारयेद्धीरःकामादीनान्तुधारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिके वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे संसारके रोगोंसे छूटकर उत्तम सुख (मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यंपवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणांशौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अर्थ-दोनों पाँव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढतीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

उषःपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् ।येचान्ये वातपित्तक्षयजकफकृताव्याधयःसन्तिजन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके खाँसी, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, सूजन, गल, मस्तक, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते हैं ।

नासिकया जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि ।सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्र्यतुल्योवलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ–जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और वलीपलित-रहित होजाते हैं तथा सब रोगोंसे छूटजाते हैं।

दन्तधावनविधिः।

प्रातर्भक्त्वाचमृद्वग्रंकषायकटुतिक्तकम्।
भक्षयेद्दन्तधवनंदन्तमांसान्यबाधयन्॥

अर्थ–प्रातःकालमें कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इस प्रकार दतौंन करै कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ।

मतान्तरम्।

केप्यत्रकरवीरार्ककरञ्जबकुलासनान्।
दन्तकाष्ठार्थमन्येतुसर्वान्कंटकिनोविदुः॥

अर्थ–कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करंज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौंन करना चाहिये ऐसा कहते हैं। और कोई कोई सर्व प्रकारके काँटोंवाले वृक्षोंकी दतौंन करनी चाहिये ऐसा कहतेहैं।

निषिद्धं यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैःकेतकीमतैः।
नारिकेलेनताडचाचनकुर्य्याद्दन्तधावनम्॥

अर्थ–सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोंकी दतौंन नहीं करनी चाहिये।

दन्तधावने दिङ्निर्णयः।

मृत्युःस्याद्दक्षिणास्येनपश्चिमास्येनचामयः।
पूर्वास्येनोत्तरास्येनसम्पदोदन्तधावनात्॥

अर्थ–दक्षिणकी ओर मुख करके दतौन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौंन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुखकरके दतौंन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है।

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः।

अर्दितीकर्णशूलीचदन्तरोगीनवज्वरी।
शोषीकासीचमूर्च्छार्त्तोदन्तकाष्ठंविवर्जयेत्॥

स्वभावतःप्रवृत्तानांमलादीनांजिजीविषुः ।
नवेगान्धारयेद्धीरःकामादीनान्तुधारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिके वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे संसारके रोगोंसे छूटकर उत्तम सुख (मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यंपवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणांशौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अर्थ-दोनों पाँव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ़ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढतीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

उषःपानगुणाः ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् । येचान्ये वातपित्तक्षयजकफकृताव्याधयःसन्तिजन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके खाँसी, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, सूजन, गल, मस्तक, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते हैं ।

नासिकया जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि । सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्यतुल्योवलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ-जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और वलीपलित-रहित होजाते हैं तथा सब रोगोंसे छूटजाते हैं।

दन्तधावनविधिः।

प्रातर्भक्त्वाचमृद्वग्रंकषायकटुतिक्तकम्।
भक्षयेद्दन्तधवनंदन्तमांसान्यबाधयन्॥

अर्थ-प्रातःकालमें कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इस प्रकार दतौंन करै कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ।

मतान्तरम्।

केप्यत्रकरवीरार्ककरञ्जबकुलासनान्।
दन्तकाष्ठार्थमन्येतुसर्वान्कंटकिनोविदुः॥

अर्थ-कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करंज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौंन करना चाहिये ऐसा कहते हैं। और कोई कोई सर्व प्रकारके कॉंटोंवाले वृक्षोंकी दतौंन करनी चाहिये ऐसा कहतेहैं।

निषिद्धं यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैःकेतकीमतैः।
नारिकेलेनताडयाचनकुर्य्याद्दन्तधावनम्॥

अर्थ-सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोंकी दतौंन नहीं करनी चाहिये।

दन्तधावने दिङ्निर्णयः।

मृत्युःस्याद्दक्षिणास्येनपश्चिमास्येनचामयः।
पूर्वास्येनोत्तरास्येनसम्पदोदन्तधावनात्॥

अर्थ-दक्षिणकी ओर मुख करके दतौंन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौंन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुखकरके दतौंन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है।

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः।

अर्दितीकर्णशूलीचदन्तरोगीनवज्वरी।
शोषीकासीचमूर्च्छार्त्तोदन्तकाष्ठंविवर्जयेत्॥

अर्थ-अर्दितरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शोषरोगवाला, कासरोगी और मूर्च्छारोगवाले मनुष्योंको दतौन नहीं करनी चाहिये।

जिह्वालेखनगुणाः।

जिह्वानिर्लेखनंरौप्यंसौवर्णताम्रमायसम्। तन्मलापहरंशस्तंमृदुश्लक्ष्णंदशांगुलम्॥ निहन्तिवक्त्रवैरस्यंजिह्वादन्ताश्रितामयम्। आरोग्यंरुचिमाधत्तेसद्योदन्तविशोधनम्॥

अर्थ-चांदी, सोना, तांबा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दशअंगुल लंबी जीभी बनाकर उसके द्वारा जिह्वाको घिसै; इसप्रकार करनेसे मुखकी विरसता, सर्वप्रकारके जिह्वा और दन्तरोग नाश होते हैं। आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होतीहै दन्त शुद्ध होजाते हैं।

चक्षुर्धावनविधिः।

दन्तमूर्ध्वमधोघृष्ट्वाप्रातःसिञ्चेच्चलोचने।
तोयपूर्णमुखस्तेनदृष्टिराशुप्रसीदति।

अर्थ-प्रथम दांतोंके ऊर्ध्व और अधोभाग घिसकर फिर मुखमें जल भरकर उस जलसे नेत्रोंको सींचै इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता उत्पन्न होतीहै।

गण्डूषगुणाः।

गण्डूषमपिकुर्वीतशीतेनपयसामुहुः। कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम्॥ सुखोष्णोदकगंडूषःकफारुचिमलापहः। दंतजाड्यहरश्चापिमुखलाघवकारकः॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानांशोषिणांरक्तपित्तिनाम्। कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणांसनशस्यते॥

अर्थ-तदनन्तर ठंढे पानीसे कुल्ले करे, इससे कफ, तृषा और मुखका मल दूर होजाता है एवं भीतरसे मुख शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा कुल्ले करनेसे कफ, अरुचि, मल और दांतोंकी जडता दूर होतीहै। विष, मूर्च्छा और मदसे व्याकुल हुए, शोष रोगवाले, रक्तपित्तरोगी, नेत्ररोगी, जिनका मल क्षीण होगयाहो और रूखेशरीरवाले मनुष्योंको कदापि गरमपानीके द्वारा कुल्ले नहीं करने चाहिये।

मुखप्रक्षालनगुणाः।

मुखप्रक्षालनंशीतपयसारक्तपित्तजित्। मुखस्यपिडिका-
शोषनीलिकाव्यंगनाशनम्॥ कुर्य्यादापिकदुष्णेनपयसा-
स्यविशोधनम्। कफवातहरंस्निग्धंमुखशोषविनाशनम्॥

अर्थ-शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त, मुखकी पिडिका, मुखशोष, नीलिका और व्यंग (झांई) दूर होती है। कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध करे इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्न होतीहै और मुखशोष दूर होताहै।

अंजनधारणगुणानाह।

नेत्रमंजनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम्।
दृष्टिर्निराकुलाभातिनिर्मलश्चन्द्रमायथा॥

अर्थ-नेत्रोंमें अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते हैं अर्थात् आँखों के तारे साफ होजाते हैं, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है।

रात्रौजागरितःश्रान्तश्छर्दितोभुक्तवांस्तथा।
ज्वरातुरःशिरःस्नातःकदाचिन्नतदाचरेत्॥

अर्थ-रातमें जागाहो, थकाहुआहो जिसको वमन हुईहो, ज्वरसे व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो, इतने मनुष्योंको कदापि अंजन नहीं लगाना चाहिये।

कंकतीगुणाः।

कंकतीकान्तिजननीकण्डूघ्नीमूर्द्धरोगजित्।
केशप्रसादनीकेश्यारजोजन्तुमलापहा॥

अर्थ-कंकती-कंघी, कंघा आदिसे बालोंको काढना कान्तिजनक, कण्डूरोगको हरनेवाला, शिरोरोगको दूर करनेवाला तथा रज, जुर्य और केशोंके मलको दूर करेहै, केशोंको बढानेवाली और केशोंको हितकारी है।

उष्णीषधारणगुणाः।

उष्णीषंशिरसाधार्य्यंप्रभातेलघुनित्यशः।
केश्यंचक्षुष्यमायुष्यंरजःशीतोष्णवारणम्॥

अर्थ-प्रतिदिन प्रभातके समय वारीक वस्त्रकी हलकी पगडी धारण करे पगडी-वालोंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गरमीको दूर करती है ।

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत् ।
पौष्टिकंबल्यमायुष्यंशौचंरूपविराजनम् ॥
केशश्मश्रुनखादीनांकृन्तनंसंप्रसादनम् ।

अर्थ-पांच पांच दिनके पश्चात् नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवातारहै अर्थात् हजामत बनवातारहै । बाल, डाढी, मूँछ और नखादिको कतरनेसे शरीर कांतिवान् होता है, पुष्टि, धन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै ।

उत्पाटयेत्तुलोमानिनासायांनकदाचन ।
तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत् ।

अर्थ-नाकके वालोंको कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके वाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है ।

प्रभातद्रष्टव्याः ।

वैद्यःपुरोहितोमंत्रीदैवज्ञोऽत्रचतुर्थकः ।
प्रभातकालेद्रष्टव्यानित्यंस्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मंत्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निसेवनगुणाः ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः ॥

अर्थ-अग्निको सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द नाशको प्राप्त होते हैं तथा रक्तपित्त कुपित होते हैं ।

धूमहिमगुणाः ।

धूमःपित्तानिलौकुर्यादवश्यायःकफानिलौ ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात वढती है ।

शिशिरगुणाः ।

शिशिरंशीतलंरूक्षंवृष्यंवातप्रकोपनम् ।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुज्झटिगुणाः ।

रूक्षातमोगुणप्रायाकुज्झटिःकफपित्तला ॥

अर्थ-कुज्झटिका (कौल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाह ।

छत्रंवर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।
वर्ण्यदृष्टिकरंबल्यंगुप्त्यावरणशंकरम् ॥

अर्थ-छत्र-छाता वा छत्री-वर्षा, धूप, धूल, वायु और ओसको दूर करे हैं तथा वर्ण और दृष्टिको वढानेवाली, वलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाह ।

वृष्टिर्निष्यंदिनीशीतानिद्राश्लेष्मबलप्रदा ॥
मलापहारिणीवायुदायिनीवह्निवारिणी ॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली, शीतल, निद्रा, श्लेष्म और वलको वढानेवाली है, मलनाशक, वायुवर्द्धक और मन्दाग्निकारक है ।

आतपगुणानाह ।

आतपःकटुकोरूक्षःस्वेदमूर्च्छातृषावहः ।
दाहवैवर्ण्यजननोनेत्ररोगप्रकोपनः ॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाह ।

छायादाहश्रमस्वेदहरामधुरशीतला ॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है ।

अन्यच्च ।

छायातमोऽस्रपित्तार्त्तिंनिहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतोवटच्छायाबलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है स्निग्ध और शीतल है विशेषकरके वडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतःसंप्रतिष्ठानंशत्रूणाञ्चविरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यंभयघ्नंदण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत् ।
रक्षःसर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरेमतम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकके भयको दूर करेहै, एवं वुढापेमें हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामोहिसदापथ्योबलिनांस्निग्धभोजिनाम् । सचशीते वसन्तेचतेषांपथ्यतमोमतः ॥ सर्वेष्वृतुषुसर्वैर्हिमर्त्यैरात्महितार्थिभिः । शक्त्यर्द्धेनचकर्त्तव्योव्यायामोहंत्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौललाटेग्रीवायांयदाघर्मःप्रवर्त्तते । शक्त्यर्द्धंतंविजानीयाद्यावदुच्छासमेवच ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यंस्थैर्यंक्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायामंकुर्वतोनित्यंविरुद्धमपिभोजनम् । विदग्धमपिदग्धंवानिर्दोषंपरिपच्यते ॥ नचव्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । नचव्यायामिनंमर्त्यंमर्दयन्त्यरयोबलात् ॥ नचैनं सहसाक्रम्यजरासमधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्यप-

व्यासुद्वर्तितस्यच ॥ व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः ।
वयोबलंशरीरंचदेशंकालमथापिच ॥ समीक्ष्यकुर्य्योद्व्या-
यामंयुक्त्याशक्त्याचबुद्धिमान् । रक्तपित्तीक्षयीशोषीका-
सीश्वासीक्षतातुरः ॥ भुक्तवान्स्त्रीषुचक्षीणोव्यायामंपरिवर्ज-
येत् । वातपित्तामयीबालोवृद्धोजीर्णीचतंत्यजेत् ॥ अति-
व्यायामतःकासोरक्तपित्तप्रतानकः । श्रमःक्लमःक्षयस्तृ-
ष्णाज्वरश्छर्दिश्चजायते ॥

अर्थ–स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारीहै परन्तु अपना हित चाहनेवाले मनुष्य सब ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै। आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे। कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै । दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले वह सब दोषरहित होकर पक जातीहै, स्थूलताका नाश करनेकेलिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता । जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिये कि, आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभांतिसे विचारकर कसरत करै रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और व्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करैं । वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये । अत्यंत कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं ।

अपिच ।

सामर्थ्यंसकलक्रियासुलघुतामंगेषुदीप्तिंपरामग्नेःपाटवमिन्द्रियेषुलघुतांछेदंपरंमेदसः ।उत्साहंमनसःशरीरदृढतांशान्तिबलाढ्यापदांव्यायामःशिशिरेवसन्तसमयेकुर्याद्धिमेसेवनम्॥वातामयःपित्तरुजान्वितश्चबालोतिवृद्धोतिकृशोतिजीर्णः । मन्दानलःस्निग्धरसान्नवर्ज्योव्यायामकालेषुविवर्जनीयाः ॥ स्थाल्यां यथानावरणाननायांनघट्टितायांनचसाधुपाकः । अनाप्तनिद्रस्य तथानरेन्द्रव्यायामहीनस्यनचान्नपाकः ॥

अर्थ—व्यायाम (कसरत) का करना सब कार्य्योंमें सामर्थ्य, शरीरमें हलकापन, देहमें प्रकाश, अग्निको दीपन, इन्द्रियोंमें लघुता, मेदाका नाश, मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता, दुःखोंकी शान्ति और बलको करे है । व्यायाम—शिशिर और वसन्तऋतुमें करनी चाहिये । वात और पित्तरोगी, बालक, अत्यंत वृद्ध, अत्यंत कृश और अधिक जीर्ण हुई मन्दाग्निवाला और स्निग्ध भोजन न करनेवाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये । जिस प्रकार बटलोईके मुखपर पात्र नहीं ढकनेसे तथा उसको करछीसे नहीं चलानेसे अन्न अच्छेप्रकारसे नहीं पकता है उसी प्रकार हे राजन्! निद्रा और व्यायाम रहितका अन्न अच्छे प्रकार नहीं पकता है ।

अंगमर्द्दनगुणानाह ।

संवाहनंश्रमहरंवृष्यंनिद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वंकुर्याद्वातकफापहम् ॥

अर्थ—शरीरको मर्द्दन करना—श्रमनाशक, धातुओंको पुष्ट करने वाला; निद्रा और सुखको देनेवाला, मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफनाशक है ।

शरीरघर्षणगुणमाह ।

उद्धर्षणंदृष्टिकरंकण्डूकोष्ठविनाशनम् ।
तेजनंत्वग्गतस्याग्नेःशिरासुखविरेचनम् ॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि वढती है तथा कण्डू और कोष्ठरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और शिराओंमें सुखकी वृद्धि होती है।

पथभ्रमणगुणमाह।

अध्वामेदःकफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशनः।

अर्थ-पथभ्रमण करनेसे मेद,कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है।

अतिभ्रमणगुणाः।

यत्तुचंक्रमणंनातिदेहपीडाकरंभवेत्।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम्॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न न होवै उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है।

पादुकाधारणगुणाः।

पादत्रधारणंवृष्यमौजस्यंचक्षुषोर्हितम्।
सुखप्रचारमायुष्यंबल्यंपादरुजापहम्॥

अर्थ-पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पॉवोंकी पीडाको दूर करे है।

अधारणेदोषायथा।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यांनृणांचंक्रमणंसदा।
अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिकृत॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नंगे पॉवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है।

हस्त्यादिगमनगुणाः।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणंवातकोपनम्।
स्थितीकरणमंगानांबल्यंवह्निविवर्द्धनम्॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोलाआदिमें चढकर भ्रमण करनेसे वात कुपित होती है, सम्पूर्ण अंग स्थिर होते हैं, बल वढता है और जठराग्नि वढती है।

विश्रामगुणाः ।

विश्रामोबलकृत्स्वेदश्रमनुत्सौस्थ्यदःशुभः ॥

अर्थ-विश्राम अर्थात् आराम करना-बलकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुस्थता तथा मंगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनंप्रादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनंवृष्यंरौक्ष्यघ्नंप्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पाँवोंको धोनेसे पैरोंका मैल, पैरोंका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिशक्तिको प्रसन्न करे है, वीर्य्यवर्द्धक, रूक्षतानाशक और प्रीतिवर्द्धक है ।

प्राग्वातगुणानाह ।

प्राग्वातोमधुरःक्षारोवह्निमांद्यकरोगुरुः । वैरस्यगौरवोष्णाशाग्निकरोप्स्वौषधीषुच ॥ भग्नेऽपीष्टःक्षताद्येषुस्रावश्वयथुरोगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥ कोपयेदामवातश्चघनसंघातकारकः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन अर्थात् पुरवाई हवा-मधुर, खारी, मन्दाग्निकारक, भारी, औषधि और जलमें विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली, भग्न और क्षतादि रोगोंमें हितकारी, नासास्राव, सूजन, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वचाके विकार, बवासीर, विष, कृमि और आमवातादि रोगोंको बढाने-वाली और मेघको संचय करे है ।

तथाच ।

शीतोऽतिमाधुर्य्यगुणःप्रयुक्तोवातप्रकोपीबलकृद्विशेषात् ।
वाताधिकानांव्रणशोफिनांचप्राचीप्रवृत्तःपवनोनशस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन-शीतल, अत्यंत मधुरतायुक्त, वातको कुपित करनेवाली, बलकारक यह वायु जिनके शरीरमें वात अधिकतर होवे तथा व्रण शोफरोगवालोंको अहितकारी है ।

आग्नेयपवनगुणाः ।

किञ्चित्सतिक्तोमधुरान्वितःस्यात्कफःसमीरोद्भवरोगकारी।
सुशीतलःशोफवतांव्रणानांशस्तोनचाग्नेयसमीरणश्च ।

अर्थ-अग्निकोणकी पवन-कुछ २ कडवी, मधुररसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली, शीतल और सूजन युक्त व्रणोंको अहितकारी है।

दक्षिणमारुतगुणाः ।

दाक्षिणोमारुतोबल्यश्चक्षुष्यःसस्यघातकः। मधुरश्चविदाहीचकषायान्तरसोलघुः ॥ रक्तपित्तप्रशमनोनचमारुतकोपनः। गण्डूपदादिकीटानांजनकः प्राणकारकः ॥

अर्थ-दक्षिणदिशाकी पवन-बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कषेले रसको उत्पन्न करनेवाली, हलकी, रक्तपित्तनाशक, परंतु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीडोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है।

ग्रन्थान्तरे ।

तिक्तःकषायोमधुरोतिमन्दःसुगंधसंशीतगुणैःप्रकृष्टः ।
वदन्तिसंज्ञांमलयानिलेतिप्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्यप्रकरोमरुत्स्यात्कफोद्भवःसम्भवतिप्रचारः ।
नचातिशीतोनतथोष्णकोवाशुभश्चयाम्यांप्रभवःसमीरः ॥

अर्थ-दक्षिण दिशाकी पवन-कडवी, कषेली, मधु, अत्यन्त मंद, सुगंध, शीतल, मलयानिलसंज्ञक अर्थात् मलयाचलकी पवन स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफसे उत्पन्नहुये रोगोंको करने वाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभहै।

नैर्ऋत्यमारुतगुणाः ।

रूक्षोष्णवातप्रशमःसमीरःकट्वम्लपित्तासृजिदोषकारी ॥
प्रशोषणोदेहबलस्यवायुःकफान्वितोनैर्ऋतिकःसमीरः ॥

अर्थ-नैर्ऋत्यकोणकी पवन-रूखी, गरम, वातको शांत करनेवाली, चरपरी, खट्टी, पित्त और रुधिरको कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके बलको शोषणकर्त्ता और कफसंयुक्त है।

पश्चिमपवनगुणाः ।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णबलारोग्यविवर्द्धनः । कषायःशोषणः स्वच्छोरोचनोविशदोलघुः ॥ अपांलघुत्ववैशद्यशैत्यवैम-

ल्यकारकः । सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत् ॥ व्रणसंरोपणस्त्वच्योदाहशोथतृषापहः ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यताको बढानेवाली है, कषेली, शोषण, स्वरको सुधारनेवाली, रुचिकारक, विशद, हलकी, निर्मल जलमें लघुता, श्वेतवर्णता, शीतलता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योंमें व्यक्तप्रभाव रस और वीर्य्यजनक है व्रणको सुखानेवाली, त्वचाको सुंदर करनेवाली तथा दाह, सूजन और तृषाको हरनेवाली है ।

वायव्यपवनगुणाः ।

वायव्यजातोमरुतःप्रशस्तःकषायसंशुष्कगुणप्रसन्नः ।
करोतिवातस्यवशंनराणांशस्तोनानिंद्योव्रणशोफिनाञ्च ॥

अर्थ-वायव्यकोणकी पवन-श्रेष्ठहै, कषेली और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योंको पवनके वश करतीहै, व्रणशोफवालोंको हितकारी है, निंदित नहीं है ।

उत्तरवायुगुणाः ।

औत्तरोमारुतःस्निग्धोमृदुर्मधुरएवच । कषायान्नरसःशीतः
सर्वदोषप्रकोपनः॥क्षीणक्षतविषार्त्तानांहितोदाहतृषापहः ।

अर्थ-उत्तरदिशाकी पवन-स्निग्ध, मृदु, मधुर, अन्न और जलमें कषायरसको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, सर्वदोषोंको कुपित करनेवाली तथा क्षीण, क्षत और विषसे पीडित मनुष्योंको हितकारी, दाह और तृषाको हरनेवाली है ।

मतान्तरम् ।

स्वादुःकषायश्चकफप्रकोपीवायुःकुबेरस्यदिशःप्रवृत्तः ।
करोतिमेघागमनंजलस्यशीतोनचोष्णोनचनिन्द्यएषः ॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादिष्ठ, कषेली, कफको कुपित करनेवाली, सजलमेघोंको लानेवाली, शीतल, न निन्द्य और न गरम है ।

ऐशानवायुगुणाः ।

शीतोतिगौल्यःकफवातकोपंकरोतिचैशानदिशःप्रवृत्तः ।
शस्तश्चनासोव्रणशोफकासक्षयेतथाश्वासविकारिणाञ्च ॥

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल अत्यन्तगौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोंको हितकारक नहीं है ।

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः ।

शीताधिकःसनीहारःसविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुषार अथवा वर्फ-विजली और मेघसंयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है ।

विष्वग्वायुगुणाः ।

विष्वग्वायुरनायुष्यःप्राणिनांनैकदोषकृत् ।
सर्वर्त्तुलिंगकोहन्ताहृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमताहुआ वबूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सवऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है ।

व्यजनानिलगुणाः ।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नोव्यजनानिलः ॥

अर्थ-पंखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है ।

तालपत्रवायुगुणाः ।

तालपत्रकरम्भायादलस्यव्यजनोहिमः । मधुरोऽतिश्रमघ्नः स्यादार्द्रत्वात्कफकोपनः ॥ निद्राकरःप्रीतिकरःशोकरोग-विकारहा । दाहपित्तश्रमग्लानिनाशनोभ्रमशान्तिकृत् ॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोंके पंखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूरकरनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमनोलघुः ॥

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोपनाशक और हलकी है ।

वंशव्यजनवायुगुणाः ।

वंशव्यजनजोवातोरूक्षोष्णोवातपित्तदः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

वैणवंव्यजनंतन्द्रानिद्राकरणमेवच ।
रूक्षोऽतिकषायरसोनचवातप्रकोपनः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करेहै, रूखी, अत्यंत कषेली और वातको कुपितकरनेवाली नहीं है ।

उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ।

उशीरमूलरचितंव्यजनंशिखिपिच्छकैः ।
व्यजनेनसुगंधःस्यान्मन्दशीतगुणात्मकः ॥
ग्लानिमूर्च्छाभ्रमशोषविसर्पविषदर्पहा ।

अर्थ-खस और मोरके परोंसे बनायेहुए पंखेकी पवन-सुगंधिकारक, मंद, शीतल तथा ग्लानि, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, विसर्प, विष इनको दूर करे है ।

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमौजस्यंमक्षिकादीन्व्यपोहति ॥

अर्थ-चमरचमगी आदिकी वायु ओजवर्द्धक और मक्खीआदिको दूर करे है ।

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरावस्त्रजावैत्रावातादोषत्रयापहाः ॥

अर्थ-मोरके पक्ष, वस्त्र और वेंतके पंखेकी पवन, त्रिदोषनाशक है ।

ऋतुविशेषेवायुगुणाः ।

शिशिरेपूर्वकुद्वायुराग्नेयोहेमन्तेमरुत् । वसन्तेदक्षिणोवायुर्ग्रीष्मेनैर्ऋत्यकस्तथा ॥वर्षासुपश्चिमोवायुर्वायव्यःशरदिस्मृतः । शिशिरेचहेमन्तेचकथितश्चोत्तरोऽनिलः ॥ अपराह्णेवर्षावदन्तिनिपुणास्तस्मिन्निशीथेशरत्प्रोक्तःशैशिरिकस्ततोहिमऋतुःसूर्योदयादग्रतः । मध्याह्नेचतथावदन्तिनिपुणाग्रीष्मोऋतुःस्यात्ततो वासन्तःकथितोऋतुस्तुमुनिभिःपूर्वापराह्णेसदा ॥

अर्थ-शिशिरऋतुमें पूर्वकी पवन उत्तम है, वसंतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैर्ऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमें पश्चिमकी पवन और शरद ऋतुम वायव्यकोणकी पवन उत्तम है । शिशिर और वसंतऋतुमें उत्तरकी पवनभी श्रेष्ठ है । दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरदृऋतु, आधीरातके पश्चात्को शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमंतऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसन्तऋतु कहते हैं ।

अभ्यंगगुणाः ।

वातव्याधिंहरतिकुरुतेसर्वगात्रेषुपुष्टिंदृष्टिंमन्दामपिवितनुतेवैनतेयोपमांच । निद्रांसौख्यंजनयतिजरांहंतिशक्तिंविधत्तेधत्तेकांतिंकनकसदृशींनित्यमभ्यंगयोगात् ॥

अर्थ-सदैव शरीरमें तेलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और सुख उत्पन्न होता है, बुढापा दूर होता है, शरीरमें शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है ।

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यंगोऽथनिद्राकृच्चक्षुष्यःपादरोगहा । चक्षुषिप्रतिरंध्रेद्वेशिरेपादगतेनृणाम् ॥ अतश्चक्षुःप्रसादार्थीपादाभ्यंगंसमाचरेत् ।

अर्थ-पांवोमें तेलको मलना-निद्राजनक नेत्रांको हितकारी, पांवोंके रोगोंको हरनेवाला है । नेत्रोंके दोनो छिद्रोंमें जो दो शिरा हैं वह दोनों शिरा पावोंमें लगीहुई है इसकारण पावोंमें तेलको मलना नेत्रोंको हितकारी है अतएव नेत्रोंका हित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोंमें तेलका मर्दन करें ।

अभ्यंगवर्जितजनाः ।

वर्ज्योऽभ्यंगःकफग्रस्तस्नानसंशुद्धाजीर्णिभिः ॥

अर्थ-कफग्रस्त, स्नानादिसे शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तैलादिका मर्द्दन करना निषेध हैं ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहनेयुक्तःशरीरेबलमाहरेत् ॥

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमें डूबकर स्नानकरनेसे शरीरमें बल उत्पन्न होता है ।

तैलमर्दनविधिः।

शिखामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलको मले कि, जिससे बालोंकी जडमें रोमकूपोंमें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय।

शिरश्चितैलमर्दनगुणाः।

नित्यंस्नेहार्द्रशिरसःशिरःशूलंनजायते।नखालित्यंनपालित्यंनकेशाःप्रपतन्तिच॥दृढमूलाश्चकृष्णाश्चभवन्तिचघनायताः। इन्द्रियाणिप्रसीदन्तिसुदृग्भवतिलोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलतेहैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, तथा केशोंकी अल्पता पक्कता और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते हैं इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है।

कर्णतैलपूरणगुणाः।

कर्णप्रपूरणान्नित्यंनमन्यानहनुग्रहाः।
नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंनकर्णेवातजारुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्नहुए कर्णरोग नहीं होतेहैं।

उद्वर्त्तनगुणाः।

उद्वर्त्तनंवातहरंकफमेदोनिलापहम्। स्थिरीकरणमंगानांत्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ उद्वर्त्तनंहरिद्राद्यैःकण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित्। तिलेनोद्वर्त्तनंकण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करैहै, शरीरमें स्थिरता और त्वचामें निर्मलता करैहै, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती है और तिलोंके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते हैं।

अन्यच्च।

स्यादुद्वर्त्तनमंगकांतिजनकंमेदःकफालस्यजित्।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करै है ।

मुखप्रलेपगुणाः ।

मुखलेपाद्दृढंचक्षुःपीनोगंडस्तथाननम् ।
कान्तमव्यंगपिडकंभवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसंयुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाताहै ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानंपवित्रमायुष्यंश्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानंकेश्यमोजस्करंपरम् ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मैल दूर होता है, बल बढताहै, केशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्यपरिषेकःसुखावहः । तेनैवतूत्तमाङ्ग-
स्यबलघ्नंकेशचक्षुषोः॥विनिहन्तिशिरःस्नानंतृष्णाताल्वा-
स्यशोषणम्।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्चपित्तजान्॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष, कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाच ।

नैर्मल्यंवपुषःकरोतिकुरुतेनिष्पापमूर्त्तिपरां पुण्यंवर्द्धयति
त्वचंरच्चयतेवर्णप्रभांकोमलाम् । कंडूंहन्तिरतिश्रमंवि-
घटयत्यंगेषुसौख्यप्रदं शुक्रौजोबलवर्द्धनंरतिकरंस्नानंसु-
खोष्णांभसा ॥

अर्थ-सुखसहित उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता है, पाप

दूर होताहै, पुण्यकी वृद्धि होतीहै, त्वचाका रंग उत्तम होताहै, वर्ण, कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै, खुजली दूर होतीहै, रतिका श्रमनाश होताहै, अंगोंमें सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और बलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होतीहै ।

द्रव्यविशेषेणस्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैःस्नानंपित्तघ्नंतिमिरापहम् ।
स्नानंवचाघनैरिष्टंश्लेष्मघ्नंतिमिरापहम् ॥
स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-मुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिर-रोग नाश होताहै, काले तिलोंको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताहै ।

स्नानस्यविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्यशरीरस्यउष्मासर्वांगगोचरम् ।
स्नानेनैकत्वमायातितेनदीप्यतिपावकः ॥

अर्थ-नहीं स्नानकरनेसे-अग्न्याशयमें स्थित अग्नि सर्वांगमें फैल जातीहै, वही अग्नि स्नानके द्वारा एकत्रितहोकर मनुष्योंकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्नाननिषिद्धजनाः ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित, नेत्र, मुख और कर्णरोगमें, अतीसार, आध्मान, पीनस, अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अंतमें स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यंगौरवंकण्डूंकच्छूंमलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतांहन्तिशरीरपरिमार्ज्जनम् ॥

अर्थ-वस्त्रादिकसे शरीरको मार्ज्जन करनेसे-दुर्गंधता, भारीपन, खुजली कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

वस्त्रधारणगुणाः ।

कौशेयौर्णिकवस्त्रंचरक्तवस्त्रंतथैवच । वातश्लेष्महरंतत्तुशी-

तकालेविधारयेत् ॥ मेध्यंसुशीतंपित्तघ्नंकषायंवस्त्रमुच्यते ।
तद्धारयेदुष्णकालेतत्रापिलघुशस्यते ॥ शुक्लंतुशुभदंवस्त्रं
शीतातपनिवारणम् ।नचोष्णंनचवाशीतंतत्तुवर्षासुधारयेत् ।
यशस्यंकाम्यमायुष्यंश्रीमदानन्दवर्द्धनम् । त्वच्यंवशीकरं
रुच्यंनवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापिनजनैःसद्भिर्धार्य्यंमलि-
नमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरंग्लान्यलक्ष्मीकरंपरम् ॥

अर्थ-रेशमी, ऊनी और लाल रंगके वस्त्र-वात और कफको दूर करे हैं इस कारण इनको शीतकालमें पहिरना चाहिये । लाल, पीले आदि मिश्रित रंगके वारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे हैं इनको ग्रीष्म-कालमे पहिरे इनमें जहांतक होसके वहुत महिने पहिरे। सफेद वस्त्र-मंग-लकारक, शीत और धूपको दूर करनेवालेहैं । न यह गरमहैं और न यह शीतलहैं इस कारण वर्षाऋतुमें धारण करना चाहिये । नवीन और निर्मल वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको वढानेवाले, आयुको वढानेवाले, लक्ष्मीको देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले वशीकरण और रुचिका-रक हैं । श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्रोंको नहीं पहिने, क्योंकि इनको पहिननेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता आती है ।

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यंमाङ्गल्यमायुष्यंश्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणंकाम्यमौजस्यंरत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण-धन, मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है । व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है ।

गुर्वादेरर्चनगुणाः ।

स्वर्ग्यंयशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धनधान्यकरंनित्यंगुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

अर्थ-गुरु और देवादिका पूजन-स्वर्ग, यश और आयुको देनेवाला है । अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है ।

दर्पणगुणाः ।

दर्पणंश्रीमदायुष्यंपापोपशमनंपरम् ।

अर्थ-दर्पणमें मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है ।

अनुलेपनगुणाः ।

प्रीत्योजोवर्द्धनंवृष्यंस्वेददौर्गंध्यनाशनम् ।
तन्द्रातापोपशमनंश्रमघ्नमनुलेपनम् ॥

अर्थ-शरीरमें सुगंधादि वस्तुओंका लेप करनेसे-हर्ष, ओज और वीर्य्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गंध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंधस्वेददाहजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥
सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहितः ॥

अर्थ-चंदनादिका लगाना, तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंध, पसीना और दाहको दूर करे है, सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चंदनादिकाभी लगाना निषेध है ।

पुष्पादिधारणगुणाः ।

सुगंधिपुष्पपत्राणांधारणंकांतिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरंकामदंश्रीविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पपत्रादिका धारण-कांतिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहबाधाको दूरकरनेवाला, कामोद्दीपन और लक्ष्मीको बढानेवाला है ।

भोजनाग्रेलवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः ।

भोजनाग्रेसदापथ्यंजिह्वाकंठविशोधनम् ।अग्निसंदीपनंहृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥ आयुर्घृतेगुडेरोगोमृत्युलीनोविदाहिषु । आरोग्यंकटुतिक्तेषुबलंमांसेपयःसुच ॥

अर्थ-भोजनसे पहिले सेंधवनिमकके साथ-अद्रखका खाना सदैव पथ्यहै, जिह्वा और कंठको शुद्ध करैहै, हृदयको हितकारी और अग्निप्रदीपक है । भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होतीहै, गुड खानेसे रोग उत्पन्न होतेहैं, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होतीहै, कटु और तिक्तरसके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होतीहै, मांस और दूध खानेस बलकी वृद्धि होतीहैं ।

क्रमादन्नादीनां गुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणंपिष्टंपिष्टादष्टगुणंपयः ।
पयसोऽष्टगुणंमांसंमांसादष्टगुणंघृतम् ॥
घृतादष्टगुणंतैलंमर्द्दनान्नतुभक्षणात् ।

अर्थ–अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मांस, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक हैं अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिट्ठीमें हैं, पिट्ठीसे आठगुण अधिक दुग्धमें हैं, दुग्धसे आठ गुण अधिक मांसमें हैं, और मांससे आठगुण अधिक घृत खानेमें हैं और घीकी अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें हैं, परन्तु तेलमें आठ गुण अधिक मर्द्दन करनेमें हैं खानेमें नही ।

आहारगुणाः ।

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारकः ।

अर्थ–आहार-तृप्तिकारक, तत्काल बलजनक और देहकी रक्षा करनेवाला है ।

आहारे दिङ्निर्णयः ।

आयुष्यंप्राङ्मुखोभुंक्तेयशस्यंदक्षिणामुखः ।
श्रियंप्रत्यङ्मुखोभुंक्तेऋतंभुंक्तेह्युदङ्मुखः ॥

अर्थ–पूर्वकी ओर मुखकरके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि, दक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे संपदाकी प्राप्ति होतीहै । उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होतीहै । इसकारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करै ।

भक्षणविषयेअन्नादीनांपरिमाणमाह ।

कुक्षावन्नेनभागौद्वावेकंपानेनपूरयेत् ।
वायोःसंचरणार्थञ्चचतुर्थमवशेषयेत् ॥

अर्थ–आहारके समय–उदरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनेकी वस्तुओंसे भरे और वाकीका एकभाग वायुके विचरनेके लिये रहने देवे ।

आचमनगुणाः ।

दन्तान्तरगतश्चान्नंशौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतंतद्धिमुखस्यानिष्टगंधताम् ॥

अर्थ-भोजन करनेके समय जो अन्न दाँतोंमें घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकालदेवे, जो आचमनके द्वारा दाँतोंसे अन्न वाहिर नहीं निकालते उनके मुखमें दुर्गंध आने लगतीहै ।

भोजनान्ते कर्त्तव्यता ।

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते ।
अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥

अर्थ-भोजनके अंतमें हाथमें हाथ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे वह जल नेत्रोंके तिमिररोगको दूर करैहै ।

भुक्त्वाचम्यकरंवामंदत्त्वाकुक्षौततःपठेत् । भुक्तंमाहेन्द्रहस्ते-नवैश्वानरमुखेनच ॥ गंडूरस्यचकंठेनसमुद्रस्यचवह्निना । वातापिर्भक्षितोयेनपीतोयेनमहोदधिः॥यन्मयाखादितंपी-तंतदगस्त्योजरिष्यति ।

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमें वामहाथ धरके "भुक्तं माहेन्द्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढे तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है ।

सुखासीनःक्षणंतिष्ठेद्यावन्नलभतेसुखम् ।

अर्थ-फिर थोडी देरतक आराम करे जब तक सुख न हो ।

भुक्त्वापादशतंगत्वावामपार्श्वेणसंविशेत् ।
एवञ्चाधोगतंचान्नंसुखंतिष्ठतिजीर्य्यति ॥

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर बाँई करवटसे सोरहै तो अन्न पाकस्थानमें जाकर जीर्ण होजाता है ।

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणाः ।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दंशयानस्यवपुर्भवेत् ।
आयुश्चंक्रममाणस्यमृत्युर्धावतिधावतः ॥

अर्थ-भोजनके अंतमें उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे धीरे चलनेसे आयुकी वृद्धि और दौडनेसे मृत्यु होतीहै ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलंकटुतिक्तमुष्णमधुरंक्षारंकषायान्वितं

वातघ्नंकृमिनाशनंकफहरंदुःखस्यविच्छेदनम् ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणंधृतिकरंकामाग्निसंदीपनं
ताम्बूलेनिहितास्त्रयोदशगुणाःस्वर्गेपितेदुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, क्षारगुणयुक्त, मधुर, कषेला, वात-विनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दुःखोंको दूर करनेवाला, स्त्रीसंभाषणके विषय आभूषण, धारणशक्ती और कामको बढानेवाला है, यह १३ गुण पानमें विद्यमान हैं सो स्वर्गमेंभी दुर्लभ है ।

पूगफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरंपूगंकषायंमधुरंपरम् ।
पक्वन्तुवातलंरूक्षंभेदनंकफनाशनम् ॥
गुर्वभिष्यंदिमधुरंतोयधृग्वह्निनाशनम् ।

अर्थ-सूखी सुपारी-अग्निवर्द्धक, कषेली और मधुरयुक्त है । पक्की सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक । कच्चीसुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और मंदाग्निकारक है ।

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रंतीक्ष्णोष्णंकटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्रंसनंवृष्यंवह्निकृद्वस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र-तीक्ष्ण, गरम, चरपरा, वात-कफनाशक, पित्तकारक, स्रंसन, वीर्य्यवर्द्धक अग्निजनक और वस्तिशोधक है ।

पर्णमूलादिगुणाः ।

पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसम्भवः ।
जीर्णपर्णंहरेदायुःशिरावह्निंविनाशयेत् ॥

अर्थ-पानकी जडको खानेसे-नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं,-पानके अग्रभागको भक्षण करनेसे पाप उत्पन्न होता है और जीर्णपानको भक्षण करनेसे आयु क्षीण होती है और शिरा अग्निका विनाश करती है ।

चूर्णगुणाः ।

चूर्णंसमीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ।

अर्थ-चूना-वात, कफ और मेदनाशक हैं ।

शंखचूर्णगुणाः ।

शंखचूर्णंकटुक्षारमुष्णंकृमिहरंपरम् ।

अर्थ-शंखका चूना-चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है ।

खदिरगुणाः ।

खदिरःकुष्ठवीसर्पमेहपित्तकफापहः ।

अर्थ-कत्था-कोढ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है ।

एलागुणाः ।

एलामूत्रविबन्धघ्नीतृट्छर्दिकफवातजित् ।

अर्थ-इलायची-मूत्रविबन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है ।

लवंगगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्नंलवंगंपाचनंलघु ।

अर्थ-लौंग-अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हलकी है ।

जातीफलगुणाः ।

जातीफलंतृषाछर्दिशूलघ्नंवातपित्तजित् ।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है ।

जातीकोषगुणाः ।

जातीकोषोलघुस्तृष्णातोददौर्गन्ध्यजिन्मतः ।

अर्थ-जावित्री-हलकी-तृषा, वेदना और दुर्गंधको दूर करे है ।

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरंशीतलंपाकेचक्षुष्यंकफनाशनम् ।
पक्वकर्पूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ॥

अर्थ-कपूर-पचनेमें शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है । पक्के कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है ।

पूगस्य बाल्यमध्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौपूगंविषंघोरंद्वितीयेभेदिदुर्जरम् ।
तृतीयादिषुपातव्यंसुधातुल्यंरसायनम् ॥

अर्थ-कच्चीसुपारी-विषके समान अहितकारी है, मध्यम अवस्थाकी सुपारी-भेदक और दुर्जर है और सूखी सुपारी-अमृतकी समान हितकारी

और रसायन है, इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीको त्यागकर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिये ॥

ताम्बूलभक्षणनिषेधः ।

ताम्बूलमहितंप्रोक्तंशरीरेरूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषेपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-रूक्ष, दुर्बल, ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये ।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छ्लेष्मापित्तानिलान्वितः
देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥

अर्थ-ताम्बूल नहीं खानेसे-मनुष्योंके कफ-पित्त और वातका कोप होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनादिगुणाः ।

सतताध्ययनंवादःपरतंत्रविलोकनम् ।
सद्विद्याचार्यसेवाचबुद्धिमेधाकरोगणः ॥

अर्थ-निरंतर शास्त्रका अध्ययन-शास्त्रार्थ, उत्तमशास्त्रोंका दर्शन, सद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह सब मनुष्योंकी बुद्धि और मेधाको बढाते हैं ।

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषाश्रवणंचैवग्रहणंधारणंतथा ।
ऊहापोहोर्थविज्ञानंतत्त्वज्ञानंचधीगुणाः ॥

अर्थ-गुरुजनोंकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनोंको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कका मीमांसाजनक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण हैं ।

सद्योमांसादिगुणाः ।

सद्योमांसंनवान्नंचबालास्त्रीक्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकंचैवसद्यःप्राणकराणिषट् ॥

अर्थ-तत्कालका मांस-नवीनअन्न-बालास्त्री-क्षीरभोजन-घृत और उष्णजल, ये छः तत्काल प्राणजनक हैं ।

पूतिमांसादिगुणाः ।

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धाबालार्कस्तरुणंदधि ।
प्रभातेमैथुनंनिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥

अर्थ-दुर्गंधितमांस-वृद्धास्त्री भादों-और क्वारकी धूप-पांच दिनका दही-प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक हैं ।

वयोभेदे नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेतिगीयतेनारीयावत्षोडशवत्सरम् । तस्मात्परंतुतरुणीयावत्स्यात्रिंशतंभवेत् ॥ ततऊर्ध्वंभवेत्प्रौढायावत्पंचाशतंपुनः । वृद्धाततःपरंज्ञेयासुरतोत्सववर्ज्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं । वृद्धनारी रतिक्रियामें वर्जित है ।

बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ।

बालातुप्राणदाप्रोक्तातरुणीप्राणधारिणी ।
प्रौढाकरोतिवृद्धत्वंवृद्धामरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णयः ।

निदाघशरदोर्बालाप्रौढावर्षावसंतयोः ।
हेमन्तेशिशिरेयोग्यानवृद्धाक्वापिशस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद्ऋतुमें बालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन करैं, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न करैं ।

मैथुननिषेधः ।

नर्त्तेचषोडशाद्वर्षात्सप्तत्याःपरतोनच ।
आयुष्कामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्त्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाली स्त्रीसे मैथुन नहीं करैं

मैथुनकालनिर्णयः।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्चसेवेतप्रमदांनरः।
सर्वेष्वृतुषुग्रीष्मेतुपक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मैथुन करै और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करै।

अतिमैथुनगुणाः।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यंधात्विन्द्रियबलक्षयः।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्याजायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ-अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमें ग्लानि, कम्प घुटनोंमें दुर्बलता होती है। धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदंशादिरोग उत्पन्न होते हैं।

सन्तानोत्पत्तिकालंनिर्दिशन्नाह।

पंचपञ्चाशतोनारीसप्तसप्ततितःपुमान्।
द्वावेतौनप्रसूयेतेप्रसूयेतेव्यतिक्रमात् ॥

अर्थ-पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजमें और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमें सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं।

सुखशय्याशनगुणाः।

सुखशय्याशनंसेव्यंनिद्रापुष्टिधृतिप्रदम्।
श्रमानिलहरंवृष्यंविपरीतमतोन्यथा ॥

अर्थ-सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन-निद्रा, पुष्टि और धीरजको बढाते हैं, श्रम और वातनाशक तथा वीर्य्यजनक हैं और इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक हैं।

भूमिशय्यागुणाः।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नीबृंहणीशुक्रवर्द्धिनी।

अर्थ-पृथ्वीमें सोना-वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है।

खट्वापटशय्ययोर्गुणाः ।

खट्वातुवातलाप्रोक्तापटोरूक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ-खाटपर सोनेसे वात बढती है और पटशय्यापै सोनेसे रूक्षता और वात बढतीहै ।

ज्योत्स्नागुणाः ।

ज्योत्स्नाकषायमधुरादाहासृक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ-ज्योत्स्ना (चांदनी) कसेली और मधुर, तथा दाह और रक्तपित्त-नाशक है ।

अन्धकारगुणाः ।

तमोभयावहंतिक्तंदृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ-अन्धकार-भयकारक, कडवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवालाहै।

मैथुनगुणाः ।

व्यवायोधात्वपचयंकुरुतेरत्यपत्यदः ।

अर्थ-मैथुन-धातुनाशक, रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमैथुनगुणाः ।

अतिव्यवायाज्जायन्तेश्वासकासज्वरादयः ।

अर्थ-अत्यंत मैथुन करनेसे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

मैथुनाकरणगुणाः ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्चमार्दवम् ।

अर्थ-मैथुन नहीं करनेसे-प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मंदाग्नि उत्पन्न होती है।

परिमितमैथुनगुणाः ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिकानाशुजरसोभवन्तिस्त्रीषुसंयताः ॥

अर्थ-नियमानुसार मैथुन करनेसे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु, आरोग्य, पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और बल इनकी वृद्धि होतीहै और नियमानुसार मैथुन करनेवाला मनुष्य शीघ्र वृद्धताको नहीं प्राप्त होता है ।

निद्रागुणाः ।

निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम् ।

पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिंकरोतिच ॥

अर्थ–नियमानुसार निद्रा लेनेसे–धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होतीहै ।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौजागरणंरूक्षंस्निग्धंप्रस्वपनंदिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानांरात्रौजागरणंहितम् ॥
दिवास्वप्नंचतृट्छूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ–रात्रिमें जागनेसे शरीरमें रूक्षताकी वृद्धि और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धताकी वृद्धि होतीहै, इस कारण दिनमें सोना और रात्रिमें जागना अनुचित है । किन्तु कफ, मेद और विषग्रस्तरोगियोंको रात्रिमें जागना हितकारक है, तथा तृष्णा, शूल, हिक्का, अजीर्ण और अतिसाररोगवालोंको दिनमें सोना हितकारकहै ।

दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतातुयैः ।
नतेषांस्वपतांदोषोजाग्रतांवाविधीयते ॥

अर्थ–जिनको दिनमें निद्रा लेनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यासहै उनको दिनमें निद्रा और रात्रिमें जागनाही उचितहै ।

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीतेशीतानिलस्पर्शसंरुद्धोबलिनांबली । पक्ताभवतिहेमन्तेमात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ सयदानेन्धनंयुक्तंलभतेदेहजंतदा । रसंनिहंत्यतोवायुःशीतःशीतेप्रकुप्यति ॥ तस्मात्तुषारसमयेस्निग्धाम्ललवणान्रसान् । उदकानूपमांसानांमेध्यानामुपयोजयेत् ॥ बिलेशयानांमांसानिप्रसहानांभृतानिच । भक्षयेन्मदिरांसीधुंमधुचानुपिबेन्नरः ॥ गोरसानिक्षुविकृतीर्वसांतैलंनवौदनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्नहीयते ॥ अभ्यंगोत्सादनंमूर्ध्नितैलंजेन्ताकमातपम् । भजेद्भूमिगृहञ्चोष्णमुष्णंगर्भगृहंतथा ॥ शीतेषुसंवृतंसेव्यंयानंशयनमासनम् । प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरू-

ष्णवासादिग्धाङ्गोगुरुणाऽगुरुणासदा । शयनेप्रमदांपीनां विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिंग्यागुरुदिग्धाङ्गींसुप्यात्समदमन्मथः । प्रकामञ्चनिषेवेतमैथुनंशिशिरागमे ॥ वर्ज्जयेदन्नपानानिलघूनिवातलानिच । प्रवातंप्रमिताहारमुदमन्थंहिमागमे ॥ हेमन्तेशिशिरेतुल्येशिशिरेऽल्पंविशेषणम् । रौक्ष्यमादानजंशीतंमेघमारुतवर्षजम् ॥ तस्माद्धैमन्तिकःसर्वःशिशिरेविधिरिष्यते । निवातमुष्णन्त्वधिकंशिशिरेगृहमाश्रयेत् ॥ कटुतिक्तकषायाणिवातलानिलघूनिच । वर्ज्जयेदन्नपानानिशिशिरेशीतलानिच ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता बाहर नहीं निकलती इसकारण इस ऋतुमें बलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ हो जातीहै, ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है, रसक्षयके हेतुसे शीतल वायु कुपित होनेके कारण,इस ऋतुमें स्निग्ध,द्रव्य,अम्ल और नमकीन पदार्थ, पवित्र जल, अनूप देशके जीवोंका मांस और प्रसहजातिके जीवोंका मांस भक्षण करे तथा सीधुनामक मदिराको पीकर फिर सहत पीवे हेमन्तऋतुमें दूध, इक्षुविकार, वसा, तेल और नवीन चावलोंका भात भक्षण करना चाहिये । हेमन्त ऋतुमें गरम करके जल पीवे, इससे मनुष्योंकी आयु नष्ट नहीं होती है । इस ऋतुमें अभ्यंग, उत्सादन (हलदी आदिका मलना) जेन्ताक (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । ईंटोंके अथवा मृत्तिकाके बनेहुए उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमें वासकरना चाहिये । इस ऋतुमें कम्बल, चर्म्म (पोस्तीन आदि) रेशमीन प्रवेणी और विचित्र कम्बलआदिसे भलीभाँति ढकीहुई सवारी (अश्वादि) सेज और आसनको व्यवहार करे । सदैव मोटा और गरम कपडा पहिने, अगरको घिसकर गाढा लेप करे । शयन करनेके समय मद पीकर कामयुक्त चित्तसे मोटी ताजी, उठेहुवे स्तनवाली, अगर आदि सुगन्धियें जिसके शरीरमें लगरही हैं, ऐसी तरुणी स्त्रीके साथ लेटकर आलिंगन करे और

इच्छानुसार मैथुन करके फिर सोरहै । इस ऋतुमें हलके, वातवर्द्धक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, अल्प आहार और उदमन्थ (जलमें घोले हुवे सत्तू) त्यागदेवे । हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनों समानहैं, अंतर केवल इतनाहीहै कि, शिशिर ऋतुमें आदान जात (इस ऋतुमें सूर्य्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जातेहैं) रूखापन, मेघवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होताहै, इसकारण हेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमें आचरण करे । इस ऋतुमें वायु-रहित उष्ण गृहमें रहना चाहिये और चरपरे कडवे, कसेले रसवाले द्रव्य, वातको वढानेवाले द्रव्य, हलके द्रव्य और ठंडे खानेके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे ।

वसन्तकृत्यम् ।

हेमन्तेनिचितःश्लेष्मादिनकृद्भाभिरीरितः । कायाग्निंबाधतेरोगांस्ततःप्रकुरुतेबहून् ॥ तस्माद्वसन्तेकर्म्माणिवमनादीनिकारयेत् । गुर्वम्लस्निग्धमधुरंदिवास्वप्नञ्चवर्जयेत् ॥ व्यायामोद्वर्त्तनंधूमंकवलग्रहमंजनम् । सुखाम्बुनाशौचविधिंशीलयेत्कुसुमागमे ॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गोयवगोधूमभोजनः । शारभंशाशमैणेयंमांसंलावकपिंजलम् ॥ भक्षयेन्निगदंसीधुंपिबेन्माध्वीकमेववा । वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणांकाननानांचयौवनम् ॥

अर्थ–हेमन्तऋतुमें संचित हुवा कफ सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर देहकी अग्निको मंद करता है इसकारण वसन्त ऋतुमें बहुत-प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं, अतएव वसन्तऋतुमें कफके दूर करनेको वमनादि क्रियाकरे । इसऋतुमे भारी, खट्टी, तथा मधुर रसवाली वस्तु और दिनमें सोना छोडदेवे । व्यायाम, उवटन, धूमपान, कवलग्रहण (अदरख आदिके रसके कुल्ले करना) ऑखोंमें अंजन लगाना, कुछेक गरम जलसे शौचादि क्रियाकरना, यव, गोधूम, शरभका मांस, खरगोशका मांस हिरनका मांस, लवेका मांस, और चातकका मांस भक्षण करना, और सीधु तथा माध्वीक नामक मदको पीना ठीकहै इसऋतुमें वनोंकी और स्त्रियोंके यौवनकी सुन्दरता वढती है ।

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतःसारंग्रीष्मेपेपीयतेरविः । स्वादुशीतंद्रव्यस्निग्धमन्नपानंतदाहितम् ॥ शीतंसशर्करंमन्थंजाङ्गलान्मृगपक्षिणः । घृतंपयःसशाल्यन्नंभजन्ग्रीष्मेनसीदति ॥ मद्यमल्पंनवापेयमथवासुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानिव्यायामञ्चात्रवर्जयेत् । दिवाशीतगृहेनिद्रांनिशिचन्द्रांशुशीतले ॥ भजेच्चन्दनदिग्धाङ्गःप्रवातेहर्म्यमस्तके । व्यजनैःपाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः ॥ सेव्यमानोभजेतास्यांमुक्तामणिविभूषितः । काननानिचशीतानिजलानिकुसुमानिच ॥ ग्रीष्मकालेनिषेवेतमैथुनाद्विरतोनरः ।

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमें सूर्य्यकी किरणोंसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जातेहैं इसकारण इस ऋतुमें स्वादिष्ठ, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये । इसऋतुमें बूरा मिलाहुवा तक्र, जंगली पशु और जंगली पक्षियोंका मांस, सांठीके चावलोंका भात खावे दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यासहै वह थोडीसी या बहुतसा जल मिली हुई मदिरा पीवें परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमें मदिरापान अयोग्यहै ग्रीष्मऋतुमें लवण, खट्टे और चरपरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोडदें । शरीरमें चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमें और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोंसे संयुक्त छत्तपर शयन करे । जब दुपहरको प्रचंडसूर्य्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडककर शीतल वयारसे और दासदासियोंका हाथ छूनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये । फिर मैथुनसे निवटकर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुगन्धियुक्त पुष्पोंका व्यवहार करे ।

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बलेदेहेपक्ताभवतिदुर्बलः । सवर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यतेपुनः ॥ भूबाष्पान्मेघनिस्पन्दात्पाकादम्ला-

जलस्यच। वर्षास्वग्निबलेक्षीणेकुप्यन्तिपवनादयः॥तस्मा-
त्साधारणःसर्वोविधिर्वर्षासुचेष्यते ।उदमन्थंदिवास्वप्नमव-
श्यायंनदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैवव्यवायञ्चात्रवर्जये-
त्। पानभोजनसंस्कारान्प्रायःक्षौद्रान्वितान्भजेत्।व्यक्ता-
म्ललवणस्नेहंवातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीतेभोक्तव्यंव-
र्षास्वनिलशान्तये। अग्निसंरक्षणवतायवगोधूमशालयः॥
पुराणाजांगलैर्मांसैर्भोज्यायूषैश्चसंस्कृतैः । पिबेत्क्षौद्रान्वि-
तंचाल्पंमाध्वीकारिष्टमम्बुवा॥ माहेन्द्रंतप्तशीतंवाकौपंसा-
रसमेववा। प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरोभवेत्॥ लघु-
शुद्धाम्बरंस्थानंभजेदक्लेदिवार्षिकम् ।

अर्थ–आदान कालमें देहकी दुर्वलताके हेतुसे अग्निभी दुर्वल होजाती है, यह दुर्वलाग्नि वर्षाकालमें वातादि दोषोंकरके अधिक दुर्वल होजाती है इसऋतुमें पृथ्वीमेंसे वाफ उठतीहै, मेघ गरजतेहैं जलका अम्ल पकजाताहै और अग्निका वल न्यूनहोनेसे त्रिदोष कुपित होतेहैं इस कारण इसऋतुमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिये वर्षाकालमें मट्ठेमें जल मिलाकर पीना, दिनमें सोना, हिम और नदीके जलको सेवनकरना, कसरत करना, धूपमें वैठना और मैथुन करना, यह सव छोडना चाहिये इसऋतुमें पानी और भोजनमें सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनमें अत्यंत शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करै । अग्निकी रक्षा करनेको पुराने जौ, गेहूं, सांठीकें चावल और जंगली पशुओंके मांसका भक्षण, शोधित यूष, मधु-युक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा अथवा अरिष्ट पान करै मेघजल वा तप्तशीतल जल (जो जल गरम होकर शीतल किया होय,) या कूपजल या सरो-वरका जल पान करै, इस ऋतुमें शरीरका घर्षण, उवटन, स्नान, चंदनादि सुगंधित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्रका पहरना और क्लेदरहित स्थानमें वास करना चाहिये ।

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचितांगानांसहसैवार्करश्मिभिः । तप्तानामाचितं

पित्तंप्रायःशरदिकुप्यति॥तत्रान्नपानंमधुरंलघुशांतंसतिक्तकम् । पित्तप्रशमनंसेव्यंमात्रयासुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्राञ्छरभाञ्छशान् । शालीन्यवांश्चगोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये ॥ तिक्तस्यसर्पिषःपानंविरेकोरक्तमोक्षणम् । धराधरात्ययेकार्यमातपस्यचवर्ज्जनम् ॥ वसांतैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम् । क्षारंदधिदिवास्वप्नं प्राग्वातश्चात्रवर्जयेत् ॥ दिवासूर्यांशुसंतप्तंनिशिचंद्रांशुशीतलम् । कालेनपक्वंनिर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमितिख्यातंशारदंविमलंजलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यतेतद्यथामृतम् ॥ शारदानिचमाल्यानिवासांसिविमलानिच । शरत्कालेप्रशस्यंतेप्रदोषेचेन्दुरश्मयः ॥

अर्थ-वर्षाकालमें उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे संतापितहो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते हैं) कुपित होताहै इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर, शीतल, हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर,) एण (कालाहरिण) मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोंका मांस, साँठीके चावलोंका भात और जौ, गेहूं खावै। पित्तको शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पंचतिक्त घृतादि,) पीना चाहिये जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त शान्त न होवै तो जुल्लावकी औषधियोंको सेवनकर पित्तको शान्त करे। फिर इससेभी शान्त न होवै तो रक्तमोक्षण (फस्त) कराना चाहिये। इस ऋतुमें शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरवी) तेल, हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार, दही, दिनका सोना और प्रवल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोडदेना चाहिये। वर्षाके समय मेघ वर्षनेसे जल नवीन होजाते हैं। वह इस जलके साथ विषेले पदार्थ मिलजाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद् ऋतुमें यह जल स्वभावसे पकजावे और अगस्त्यके उदयसे विषरहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमें और रातभर चंद्रमाकी किरणोंमें रखकर शीतल करे इसजलको 'हंसोदक' कहते हैं । शरद् ऋतुमें स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोंकी माला तथा निर्मल वस्त्रोंको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चंद्रमाकी किरणोंको सेवन करना चाहिये ।

अथ ग्रंथकर्तुर्वंशवर्णनम् ।

चन्द्रान्वयेमाथुरवैश्यवर्य्यंआह्लादगोत्रोद्विजवृन्दसेवी ।दान्तः सुशीलःशिवभक्तियुक्तोविद्यानिधिःसर्वकलाप्रवीणः ॥ आसीत्पुराधर्म्मविदांवरिष्ठःश्रीबालमुकुन्दःकरुणाकरश्च । यस्यप्रतापीबहुपुण्यकारीबभूवगोवर्द्धनदासपुत्रः ॥ हरियशराजोहरिजनभक्तःसुजनसुधर्म्मीविदितसुपुत्रः । गोपालदासस्तनयोबभूवयोमेश्वरस्तस्यकुलेमहात्मा ॥ विज्ञानयुक्तःप्रथितप्रबोधो महाजनःसर्वगुणैकसिन्धुः । तस्यसुतः पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुतःकथितोगुणशीलः ॥ कोविदरत्नमहाजनसेवीसज्जनसंगरतोबिनयीच । मोतीरामइतिख्यातस्तनयस्तस्यधार्म्मिकः॥तत्सुतःपद्मनेत्रोभूत्समृद्धोधार्म्मिकोवशी।घनश्यामदासनामातस्यपुत्रोगुणाग्रणीः। सीतारामश्चविख्यातस्तस्यपुत्रःप्रतावान्। विनिर्मितोयस्यविशालकूपःप्रवर्ततेपट्टरगंजमध्ये।अशीतिहस्तस्यमुखंविलोक्यमतिर्भवत्येवनुदीर्घिकायाः ॥ नतत्समोन्यःकूपोस्तिमुरादाबादपत्तने।अद्भुतोदर्शनीयश्चकीर्तिर्जागर्त्तिभूतले॥ तस्यपुत्रास्त्रयश्रेष्ठादिल्सुखरायमहर्द्धिमान् । मध्यमोरामजीरामोहरिभक्तोमहाशयः ॥ कनीयान्सत्यवान्वाग्म्यानंदरूपश्चविश्रुतः।तस्यपुत्रोमहानग्रःशालिग्रामोऽभ्यजायत॥तेनासौनिर्म्मितोग्रन्थोभिषजानांसुखावहः।सर्वलोकोपकारायज्ञा-

नायचशुभाशुभम्॥ शाकेवसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्देआ-षाढशुक्लविमलातिथिपञ्चदश्याम् । वारेभृगोसमगमत्प-रिपूर्णतां वै ग्रन्थोनिघण्टुशिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ-चन्द्रवंशीय माथुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमें अनेक सज्जन हुए, उनमें ब्राह्मणोंके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोंमें प्रवीण, धर्म्मज्ञजनोंमें श्रेष्ठ, करुणासिन्धु श्रीबालमुकुन्दजी पहिले हुए, जिनके बडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोंके भक्त हरियशराय हुए, जो बडे महात्मा और मनुष्योंमें धर्म्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो बडे विज्ञानी सब बातोंके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोंके सागर थे उनके सुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पंडितोंमें रत्न, महात्माओंके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्म्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्म्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुये, उनके पुत्र गुणियोंमें अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए, उनके पुत्र संसारमें विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्होंने पट्परगंजमें बहुत बडा कुआ बनाया, जिसके ८० हाथके मुखका विस्तार देखकर यह जान पडता है कि, यह कोई बडा सरोवर है मुरादाबादमें इस कुएकी समान दूसरा कुवा नहीं है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही (यह चौडे कुवेके नामसे प्रसिद्ध) है उन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदास, जो बडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र मैं शालिग्राम

---

१ आनन्दरूप जो खुशालरायनामसे विख्यातहुए उनका वृत्तान्त यह है, संवत् १८६० मे एक मीरखां नामक म्लेच्छ अपनी चतुरंगिनी सेनासहित मुरादाबादपर चढ आया, उस समय चौधरी खुसालराय (जो कि, बडे तेजस्वी और प्रतापवान् मुरादाबादमें मुख्य थे) उन्होंने अनेक प्रकारके भोजन सम्पूर्ण सेनाके वास्ते और अश्वादिकके लिये दाना, घास इत्यादि सामग्री पहुँचाई और नगरको लूटसे बचाया, उस समय मेरे पिता आनन्दरूपजीकी १९ वर्षकी अवस्था थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्न-आदि सामग्री मीरखांको भेंट की, उस समय मेरे पिताजीसे लोक कहने लगे कि, आपने भी खुसालकी समता करी तुमभी दूसरे खुसालरावहो उस दिनसे सब नगरनिवासी खुसालराय कहने लगे, इस कारण वह खुसालरायनामसे विख्यात हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको ३ सुख देनेवाला सर्व संसारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रंथ बनाया है शके १८१८ आषाढ सुदी पूर्णमासी शुक्रवारको यह "निघण्टुभूषण" समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमाथुरवैद्यवंशोद्भवकविकुलकुमुदकलानिधिशालिग्रामवैश्यकृते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे उत्तरार्द्धे मिश्रवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।



श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।



मायाफलनामानि ।

मायाफलंमाइफलंचमाइकाछिद्राफलंमायिचपंचनामकम् ।

अर्थ–मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केशरञ्जन, शिशुभेषज)

संस्कृतभाषामें	मायाफल ।
हिन्दीभाषामें	माजूफल ।
वंगभाषामें	माइफल ।
गुजरातीभाषामें	मांयां ।
मराठीभाषामें	मायफळ ।
इंग्रेजीभाषामें	गाल्लनट् । Gallant
लैटिन्भाषामें	करकस् इन्फेक्टोरिया । Quarcus infectoria
फारसीभाषामें	माजुस् ।
अरबीभाषामें	आप्स समरतुल तुरफा ।

मायाफलगुणाः ।

मायुकंशीतलंरूक्षंकषायंलघुदीपनम् ।
विपाकेकटुकंग्राहिकफपित्तहरंपरम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ–माजूफल–शीतल, रूखा, कसेला, हलका, अग्निप्रदीपक, पचनेमें चरपरा, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

उष्णंमायफलंप्रोक्तन्तीक्ष्णंशैथिल्यनाशकम् ।
प्रशस्तंवातहृत्प्रोक्तंपूर्वैर्नैघण्टकारकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ–माजूफल–गरम, तीक्ष्ण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मायाफलंवातहरंकटूष्णकंशैथिल्यसंकोचककेशकार्ष्ण्यदम् ।

अर्थ–माजूफल–वातनाशक, चरपरा, गरम, शिथिलताको संकुचित करनेवाला और केशोंको काला करनेवालाहै । (रा० नि०)

विवरण। माजूके वृक्ष वनोंमें होते हैं, आकृति सरूकी समान होती है, इसके फलोंमें मक्खीकी समान नीले रंगके कीडे घुसजाते हैं और उन फलोंका रस निकालकर फलोंको खुक्ल कर देते हैं उसमें अपने बच्चे रखते हैं, जिसप्रकार अंडेमें जीव बढताहै उसीप्रकार इसमें जीव बढता है, पूर्ण होनेपर निकल जाताहै, इसकारण सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमें मराहुआ जीव निकलता है। यह वास्तवमें फल नहीं होता किन्तु वृक्षमेंही फलसे दीखतेहैं इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते।

समुद्रफलनामानि।

समुद्रनामप्रथमंपश्चात्फलमुदाहरेत्।
समुद्रफलमित्यादिनामवाच्यंभिषग्वरैः॥

अर्थ-समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल) इत्यादि।

संस्कृतभाषामें	समुद्रफल।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफल।
मराठीभाषामें	समुद्रफळ।
गुजरातीभाषामें	समदरफल।
कर्णाटकीभाषामें	समुद्रकरकाया।
तैलिङ्गीभाषामें	ब्यारंगचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	ब्यारंगटोनिया- एक्युटंग्युला। Barringtonia Acutangula
	ब्या०.रेसिमोसा। B racemosa

समुद्रफलगुणाः।

फलंसमुद्रस्यकटूष्णकारिवातापहंभूतनिरोधकारि।
त्रिदोषदावानलदोषहारिकफामयभ्रान्तिविरोधकारि। (रा०)

अर्थ-समुद्रफल-चरपरा, गरम, वातविनाशक, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग और भ्रान्तिको हरनेवालाहै।

अन्यच्च।

समुद्रस्यफलंचोष्णंतिक्तंचैवत्रिदोषजित्। वातंचभूतबाधांचकफंभ्रान्तिशिरोरुजम्॥ दोषंदावानलाख्यंचनाशयेदितिकीर्त्तितम्।जलेनघृष्ट्वापीतंचेत्कृमिनाशकरंपरम्॥ नि०र०)

अर्थ-समुद्रफल-गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतबाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषोंको दूर करे है । इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है ।

विवरण । इसके वृक्ष कोंकणदेशकी ओर अधिकतासे होतेहैं, इस वृक्षपर डोरे आते हैं उन डोरोंमेंसे तीन धारवाले बडी इलायचीके समान फल निकलते हैं । उनको समुद्रफल कहते हैं ।

ब्रह्मदण्डीनामानि ।



ब्रह्मदण्डचजदण्डीचकण्टपत्रफलाचसा ॥

अर्थ-ब्रह्मदंडी, अजदंडी, कण्टपत्रफला ।

संस्कृतभाषामें	ब्रह्मदण्डी ।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मदंडी, (उटकटारा) ।
वंगभाषामें	छागलदाँडी, वामनदाँडी ।
मराठीभाषामें	ब्रह्मदंडी ।
गुजरातीभाषामें	ब्रह्मदंडी, तलकंटो ।
कर्णाटकीभाषामें	ब्रह्मदंडी ।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल । Thistle
लैटिन्भाषामें	ट्रिकोलीपीस्ग्लेबररिना । Tricholapsis glaberrina

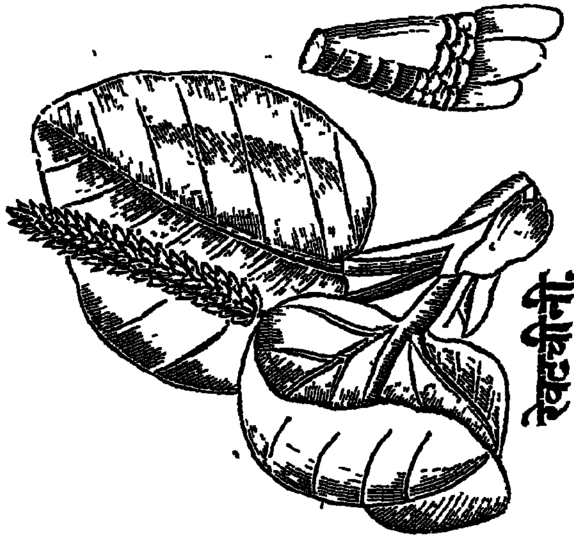
ब्रह्मदण्डीगुणाः ।

ब्रह्मदंडीभवेदुष्णातिक्ताकफविनाशनी ।
वातरोगश्चशोफंचनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-ब्रह्मदंडी-गरम, कडवी, कफनाशक तथा वातरोग और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसके पत्ते और फलोंपर काँटे होते हैं यह प्रायः जंगलमें अधिकतासे होती है ।

रेवट्चीनीनामानि ।



रेवट्चीनीचपीताचगंधिनीपीतमूलिका ।

अर्थ–रेवट्चीनी, पीता, गंधिनी पीतमूलिका (पीतमूली) ।

संस्कृतभाषामें	पीतमूली ।
हिन्दीभाषामें	रेवत (ट्) चीनी ।
वंगभाषामें	रेउचीनी ।
मराठीभाषामें	रेवाचीनी ।
इंग्रेजीभाषामें	रुबर्ब ।
लैटिन्भाषामें	रेइरेदिक्स ।
फारसीभाषामें	रेवन ।
अरबीभाषामें	रावन ।

रेवट्चीनीगुणाः ।

रेवट्चीनीकटुस्तिक्ताबल्यासामृदुरेचनी ॥
दन्त्यजीर्णमतीसारंवह्निमांद्यमरोचकम् ॥
विट्संगंशीतपित्तश्चदुष्टव्रणविरोहिणी ।

अर्थ-रेवद्चीनी-चरपरी, कडवी, बलकारक, मृदुरेची तथा अजीर्ण, अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्टव्रणको दूर करे हैं।

विवरण। रेवद्चीनीका क्षुप होताहै, जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवद्चीनी कहते हैं। इसके सत्त्वको उझारे देवन कहते हैं।

चाहनामानि।



चाहंतुचविकाचाहाद्वितीयातूष्णपत्रिका। जायतेदक्षिणेदेशेसाचाहेतिप्रकीर्त्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रापरद्वीपादिहागता। अपरातृणचाहेतितृणरूपासुराष्ट्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा। यह नाम चाहके हैं। दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि है। चाह दक्षिणदेशमें उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोंकी समान होते हैं और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्थानमें नहीं होतीथी। और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमें तृणचाह, तृणरूपा और सुराष्ट्रजा कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	चाह।
हिन्दीभाषामें	चाः।
वंगभाषामें	चाह।
मराठीभाषामें	चहा।
गुजरातीभाषामें	चा।
इंग्रेजीभाषामें	टी। Tea
लैटिन्भाषामें	थियाचीनेनसीस्। Theachinensis
फारसीभाषामें	चाखताई।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णातुवराचाहादीपनीपाचनीलघुः । कफपित्तहरी चैवकिंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीयातृणरूपायासुसुगंधासुराष्ट्रजा। ज्वरघ्नीपाचनीहृद्याकफकासनिबर्हणी ॥

अर्थ–चाह–तीक्ष्ण, गरम, कषेली, अग्निको दीपन करनेवाली पाचक, हलकी, कफपित्तनाशक और कुछेक वातको कुपित करनेवाली है । दूसरी तृणरूप, सुगंधित और सुराष्ट्रदेशमें जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरनाशक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

विवरण । चाहा-पहिले चीन आदि देशोंसे आतीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोंमें चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है । हमारे भारतवासियोंको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक वढने लगाहै ।

तमाखुनामानि ।



तमाखुःक्षारपत्राचकृमिघ्नीधूम्रपत्रिका ।

अर्थ–तमाखु, क्षारपत्रा, कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका (वज्रभृङ्गी, ताम्रकुट्टिक)

संस्कृतभाषामें	क्षारपत्रा ।
हिन्दीभाषामें	तमाखु ।
वंगभाषामें	तमाकू ।
मराठीभाषामें	तम्बाखु ।
गुजरातीभाषामें	तमाकु ।

इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटोबाको । Indian tabacco
लैटिन्भाषामें	नैकोटिनाटोबाकं । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामें	तम्बाकु ।
अरबीभाषामें	तम्बाक ।

तमाखुगुणाः ।

तमाखुःपित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णोवस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तोदृष्टिमांद्यकरःसरः ॥ वामकःकटुकोरुच्योवातस्यानुविलोमकः।कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीञ्जयेत् ॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजोलिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविषंशोथंनाशयेदितिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-तमाखु-पित्तकारक, तीक्ष्ण, गरम, वस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा, दृष्टिको मंद अर्थात् कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक, वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिकआदिका विष और सूजनको दूर करेंहै ।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्व देशोंमें होते हैं ।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलंस्निग्धबीजंश्लक्ष्णजीरश्चकीर्त्तितः ॥

अर्थ-ईषद्गोल, स्निग्धबीज, श्लक्ष्णजीर (स्निग्धजीरक, श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें	ईषद्गोल ।
हिंदीभाषामें	ईसबगोल ।
मराठीभाषामें	इसवगोल ।
गुजरातीभाषामें	उथमुंजीरुं ।
तैलङ्गीभाषामें	हस्पगुल ।
इंग्रेजीभाषामें	ईस्पगुलसीड । Isphagl Seed
लैटिनभाषामें	प्लेन्टेंगोईस्पगुल । Plantango isphagula
फारसीभाषामें	इस्पगुंल ।
अरबीभाषामें	बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणाः ।

ईषद्गोलंपरंवृष्यंमधुरंग्राहिशीतलम् ।

पिच्छिलंतुवरंकिंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत् ॥
रक्तातीसारास्रपित्तंनाशयेदितिकीर्त्तितम् ।

अर्थ–ईसवगोल–अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है ।

विवरण । ईसवगोल खेतोंमें बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेहैं, ईसवगोल किसीप्राचीन ग्रंथमें नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघंटुसंग्रहमें लिखाहै मालूम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकोंमेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि ।

अमृताजीवनीजीवासुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदाप्राणभृत्प्रोक्तावीरकंदामताबुधैः ॥

अर्थ–अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकंदा ।

संस्कृतभाषामें	सुधामूली ।
हिन्दीभाषामें	सालममिश्री ।
मराठीभाषामें	सालंमिश्री ।

सुधामूलीगुणाः ।

दीपनीतुसुधामूलीशुक्रकृद्बलवर्द्धनी । रक्तदोषहरीहृद्याकामसंजननीपरा ॥ रसायनीपरंवृष्यावयःस्थापुष्टिदामता ।(आ.सं.)

अर्थ–सालममिश्री–अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोषनिवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक और पुष्टिकारकहै ।

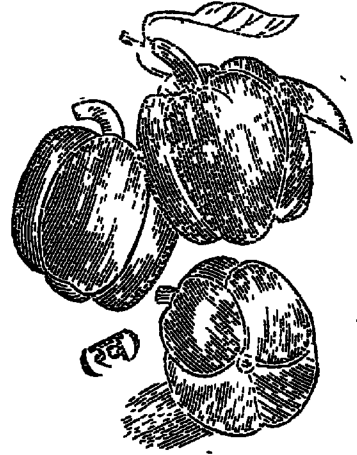
विवरण । सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतोंपर उत्पन्न होती है कन्द सपेदरंगका होता है । दूसरी सालममिश्री काबुल–बलख बुखारा आदि देशोंसे आती है । और अनेक धूर्त्त आलू, प्याज, लसुन, अरवी आदि कंदोंके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते हैं ।

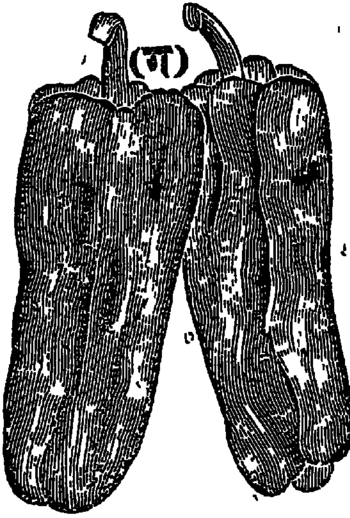
रक्तमरिचनामानि ।

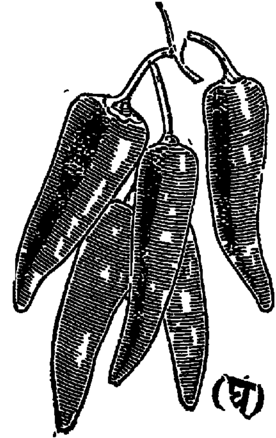
कटुवीरोज्ज्वलातीक्ष्णातीव्रशक्त्यजडेतथा ॥

अर्थ-कटुवीरा, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति, अजड़ा (कुमरिच, रक्तमरिच)









संस्कृतभाषामें	कटुवीरा ।
हिन्दीभाषामें	लालमिरच ।
वंगभाषामें	लंकामरिच, झाल ।
मराठीभाषामें	लालमिरची ।
औत्कलीभाषामें	नोकोमरिच ।
इंग्रेजीभाषामें	कायन्नपेपर ।
लैटिन्‌भाषामें	काप्सिंवाक्से ।
फारसीभाषामें	फिल्‌फिलेसुर्ख ।

कटुवीरागुणाः।

कटुवीराग्निजननीबलासघ्नीचदाहिनी । हन्त्यजीर्णविषूचीश्चव्रणंक्लिन्नंसुदारुणम्।तन्द्रांमोहंप्रलापश्चस्वरभेदमरोचकम् ॥

अर्थ-लालमिरच-अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विषूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करैहै।

विवरण। लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते हैं, फूल सुफेद रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले होकर लाल होजाते हैं। मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है।

वनकुलत्थनामानि।

कुलत्थाद्दक्प्रसादाचप्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलानीलोचनहिताचक्षुष्याकुम्भकारिका ॥

अर्थ-कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलानी, लोचनहिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुल्माष, कुरुविल्वक, काननोत्था, चिपिटा)

संस्कृतभाषामें	कुलत्था।
हिन्दीभाषामें	वनकुलथी, चाक्षु।
वंगभाषामें	वनकुलथी।
मराठीभाषामें	रानकुळीथ, रानहुलगे।
गुजरातीभाषामें	चमेडच, आंख्यनुभरण।
कर्णाटकीभाषामें	कएणकुटकीनवीज।
इंग्रेजीभाषामें	फोरलीव्डकेशिया। Four leved cassia
लैटिन्भाषामें	केशियाएवसस्। Cassmasbus
फारसीभाषामें	चश्मक्।
अरबीभाषामें	चश्मिझज़ तश्मीज।

अस्य गुणाः।

वन्योद्भवःकुलित्थस्तुकटुस्तिक्तश्चशीतलः।व्रणरोपणकारीचचक्षुष्योऽर्शविनाशकः ॥ कफशूलविषस्फोटकंडूहिक्काविनाशकः। नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानंचविनाशयेत् ॥

(नि० र०)

अर्थ-चाक्षु (कुलित्थ)-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, बवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, स्फोट, कण्डू, हिक्का, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगको हरनेवालीहै।

विवरण। वनकुल्थीके क्षुप वनमें होतेहैं। फूल कोयलके समान लगतेहैं इसके ऊपर फली आती हैं दूसरे प्रकारकी वनकुल्थीका क्षुप छत्तासा होताहै।

माहाराष्ट्रीनामानि।



महाराष्ट्रयांचराष्ट्रीचतीक्ष्णामरहट्टिकामता ॥

अर्थ-महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्णा, मरहट्टिका।

संस्कृतभाषामें	महाराष्ट्री।
हिन्दीभाषामें	मरेठी।
मराठीभाषामें	मराठी।
गुजरातीभाषामें	मरेठी।
इंग्रेजीभाषामें	पेनिरोयल Pennyroyal
लैटिन्भाषामें	मेन्थाप्युलेजियं MenthaPulegium
फारसीभाषामें	बाबुनेगाउ.।
अरबीभाषामें	उकहोवान।

महाराष्ट्रीगुणाः।

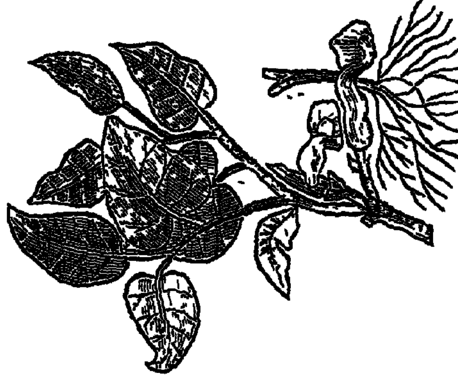
महाराष्ट्रीकटुस्तीक्ष्णासोष्णावातकफार्त्तिहृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मरेठी-चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करैहै।

विवरण। मरेठीके बडे २ क्षुप होतेहैं, पत्ते तुलसीके समान और इसमें पीले तथा लाल रंगके डोरे लगतेहैं यह अकरकरेके समान होतीहै।

कीटमारीनामानि ।

कीडामारी



कीटारिःकीटमारीचभृंगीकीटकहातथा ॥

अर्थ-कीटारि, कीटमारी भृंगी, कीटकहा ।

संस्कृतभाषामें	कीटमारी ।
हिन्दीभाषामें	कीडामारी ।
मराठीभाषामें	किडामार ।
गुजरातीभाषामें	कीडामारी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गीरीदागुटापा ।
इंग्रेजीभाषामें	वेक्टीएटेडबर्थवर्ट Bracteab Birthwort
लैटिन्भाषामें	एरिष्टोलोचियाब्रेकटीका Aristoloehia bracteata

अस्या गुणाः ।

वातश्लेष्मज्वरहरासंध्यस्थिनिप्रसारिणी ॥

अर्थ-कीडामारी-वातकफज्वरनाशक, तथा संधि और अस्थियोंको फैलानेवालीहै ।

विवरण । कीटमारीके क्षुप होतेहैं विशेष करके खेतोंमें उत्पन्न होजातीहै, इसपर डोरे आतेहैं, वह डोरे कच्ची अवस्थामें हरे रंग और रेखायुक्त होतेहैं । पकनेपर उनमेंसे अपने आप फटकर काले रंगके बीज निकलतेहैं ।

सर्पदंष्ट्रानामानि ।

सर्पदंष्ट्रापीतपुष्पागुच्छपत्राविषापहा ॥

अर्थ-सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विषापहा ।



संस्कृतभाषामें	सर्पदंष्ट्रा ।
हिन्दीभाषामें	सिताव ।
मराठीभाषामें	सताप ।
गुजरातीभाषामें	सताब ।
इंग्रेजीभाषामें	कोमनरु Commonrne
लैटिन्भाषामें	रुटाग्रेवियोलेन्स Ruta Graveeolans
फारसीभाषामें	इस्पंद ।
अरबीभाषामें	हरमल ।

सर्पदंष्ट्रागुणाः ।

सर्पदंष्ट्रासराचोष्णातिक्ताकफविनाशिनी ।
वातनाशकरीप्रोक्ताविचारज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ–सिताव–सारक, गरम, कडवी, कफनाशक और वातको हरनेवाली है ।

विवरण । सितावके क्षुप बाग, पुष्पवाटिका और घरगमलोमें मनुष्य लगालेते हैं । सिवाय निघण्टुरत्नाकरके और किसी प्राचीन ग्रंथमें सिताव नहीं है ।

उष्ट्रकंटनामानि ।

उष्ट्रकंटोथकण्टालुःकरमादनएवसः ॥

अर्थ–उष्ट्रकण्ट, कण्टालु, करमादन (उत्कंटक, कंटफल, शृगाल, शुनकाशन, तीक्ष्णाग्र, वृत्तगुच्छ, मुखदंतरुजापह, उत्कटोत्कट)

संस्कृतभाषामें	उष्ट्रकंट ।

हिंदीभाषामें	ऊँटकटीरा।
मराठीभाषामें	उटकटारा, उतांटी।
गुजरातीभाषामें	उत्कंटो, शूलियो।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल। Thistle
लैटिन्‌भाषामें	एकिनोप्स एकीनटस्। Echinops echinatus

अस्या गुणाः।

उत्कण्टकःकटुस्तिक्तःकफवातहरोलघुः।
तन्मूलपानतःस्त्रीणांशीघ्रप्रसवकारकः॥ (शो०नि०)

अर्थ-ऊँटकटीरा-चरपरा, कडवा, कफवातनाशक, हलका, इसकी जडको जलमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंके शीघ्रप्रसव होजाता है।

अन्यच्च।

उत्कंटारुचिदाचोष्णातिक्तावृष्याप्युदाहृता।मूत्रकृच्छ्रंपित्त-वातंमेहंतृष्णांचहृद्रुजम्॥विस्फोटकंनाशयतिबीजमस्यास्तु शीतलम्। वृष्यंतृप्तिपरंचैवमधुरंचप्रकीर्त्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-ऊँटकटीरा-रुचिकारक, गरम, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, हृदयरोग और विस्फोटकको दूर करे है। इसके वीज-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर हैं।

विवरण। ऊंटकटेरीके क्षुप होते हैं, इसके पत्ते और फलोंमें कांटे होते हैं। इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले कांटेयुक्त डोरे लगते हैं। हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानासी कटेरीकोही ऊंटकटीरा गातें हैं।

नखरञ्जकनामानि।

तिमिरःकोकदंताचद्विवृन्तोनखरंजकः।

अर्थ-तिमिर, कोकदंता, द्विवृन्त, नखरंजक (मेंदिका, रागगर्भा, रंजका, नखरंजिनी, सुगंधपुष्पा, रागांगी, यवनेष्टा)।

संस्कृतभाषामें	नखरंजक।
हिंदीभाषामें	मेहदी।
वंगभाषामें	मेदी।
मराठीभाषामें	मेंदी।
गुजरातीभाषामें	मेदी।

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटम् ।
इंग्रेजीभाषामें	हेना । Henna
लैटिन्भाषामें	लॉंझोनिया आल्बा । Lansonia alba
फारसीभाषामें	हिना ।
अरबीभाषामें	हिन्नाअकान्न काफलयुन ।

अस्या गुणाः ।

रक्तरंगादाहहन्त्रीवान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्याग्राहकंतुशोषकंचप्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणांदोषंचज्वरंचैवविनाशयेत् ।

अर्थ-मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है। इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे हैं।

विवरण। मेंदीके वृक्ष बागोंमें बोएजाते हैं, पत्ते छोटे छोटे होते हैं, मेंदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगंधियुक्त होते हैं इसके पत्तोंको पीसकर हाथपांवपर लगानेसे लाल होजाते हैं तथा गरमी और हाथपांवादिकी दाह दूर होजाती है। कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं।

अन्धपुष्पीनामानि ।

अंधपुष्पीचरोमालुगोलोमीदार्विकापिच ।
अधोमुखाधेनुजिह्वाअधःपुष्पीचसप्तधा ॥

अर्थ-अंधपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अधःपुष्पी (अवाकपुष्पी, सुरसा, गंधपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अंधपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अंधाहुली, औंधाहुली ।
वंगभाषामें	चोरहुली ।
मराठीभाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	उंधाफुली ।
लैटिन्भाषामें	ट्राईकोडेस्माइंडिकं । Trichodesma indicum

अन्या गुणाः ।

अन्धपुष्पीचचक्षुष्यागूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ-अंधाहुली-नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है ।

विवरण-अंधाहूलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है ।

दण्डोत्पलनामानि ।

दण्डोत्पलेसहदेवाविषमज्वरनाशिनी । दण्डोत्पलात्रिधा प्रोक्तापुष्पवर्णप्रभेदतः । गोवन्दनीदेवसहापीतदंडोत्पलं स्मृतम् । रक्तदण्डोत्पलाप्राहुर्विश्वदेवातथापरा ॥ श्वेतदंडोत्पलंप्रोक्तंदंडोत्पलाचदेविका ।

अर्थ-दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है । पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गंधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं । विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं । दंडोत्पला, देविका यह सफेद दंडोत्पलके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दंडोत्पला ।	
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका ।	
वंगभाषामें	डानिपोलाडानकुनी, दंडकलस ।	
मराठीभाषामें	ओसारी ।	
गुजरातीभाषामें	शेदरडी ।	(Ageratum (Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियासाई निरिया	Vernonia Cineria

त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः ।

दण्डोत्पलंक्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ-तीनों प्रकारके दंडोत्पल-क्षय, श्वास और खाँसीको दूर करे हैं तथा अग्निको दीपन करे हैं ।

विवरण । दण्डोत्पलके क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सफेद, पीला, लाल और किसी किसीपै कालेरंगकाभी आताहै, पत्ते रानतुलसीकी

समान होतेहैं, दण्डोत्पलकी टोपी वनाकर शिरपै धारण करनेसे ज्वर दूर होता है ।

रुदन्तीनामानि ।

स्याद्रुदंतीस्रवत्तोयासंजीवन्यमृतस्रवा ।
रोमांचिकामहामांसीचणपत्रीमधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदंती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका, महामांसी चणपत्री, मधुस्रवा (सुधास्रवा)

संस्कृतभाषामें	रुदन्ती ।
हिन्दीभाषामें	लाणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।
मराठीभाषामें	रुदन्ती, ।
गुजरातीभाषामें	पलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अङ्गुणि ।
लैटिन्भाषामें	क्रेसाक्रेटिका Cressa Cretica

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्तीकटुतिक्तोष्णाक्षयक्रिमिविनाशिनी ।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारीरसायनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-रुदन्ती-चरपरी, कडवी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहनाशक है ।

अन्यच्च ।

रुदन्तीवह्निकृद्वृष्यापित्तघ्नीचरसायनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है ।

विवरण । रुदन्तीके बहुत छोटे २ क्षुप होते हैं, यह क्षुप प्रायः खारी भूमि और जलके समीप उत्पन्न होते हैं, पृथ्वीपर फैल जाते हैं, पत्ते चनोंके पत्तोंकी समान होते हैं इसपै ओस पडनेसे जलके विन्दु टपकते हैं उन जलके विन्दुओंसे नीचेकी पृथ्वी भीगी रहती है इसकारण इसको रुदंती कहते हैं ।

चिरपोटानामानि ।

चिरपोटादीर्घपत्राकुंतलीतिक्तकामता ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुंतली, तिक्तका (पपोटी, रक्तहंत्री, फलाम्ला, ज्वरकारिणी)

संस्कृतभाषामें चिरपोटा ।
हिंदीभाषामें पनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (प०)
मराठीभाषामें चिरपोटाणी ।
गुजरातीभाषामें पर्पोटी ।
लैटिन्भाषामें फाईसेलिस् मिनीमा Physalis Minima P Indica
अरबीभाषामें काकनुज् ।
अरबीभाषामें इबुलुबुहल्याहुदहवअल्काकद ।

अस्या गुणाः ।

चिरपोटाहिमारूक्षाभेदिनीश्वासकासजित् ।

अर्थ–पनसोखा–शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पर्पोटीपानलेपाभ्यांरक्तविद्राविणीध्रुवम् ।
तस्याःपक्वफलंपित्तश्लेष्मलंज्वरकारिच ॥

अर्थ–चिरपोटेके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे रक्तद्रावण होता है, इसके पके फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले हैं ।

विवरण। इसके क्षुप होते हैं, इसमें वडे २ वोदने लगते है उनके भीतर सफेद रंगके फल होतेहैं वह फल कच्ची अवस्थामें कडवे और पकनेपर खट्टे तथा मीठे होजाते हैं ।

कुरण्डिकानामानि ।

कुरण्डिकाक्षेत्रभूषाकुरण्टीक्षेत्रनाशिनी ॥

अर्थ–कुरण्डिका, क्षेत्रभूषा, कुरंटी, क्षेत्रनाशिनी (विकट, सकुरण्ड)
संस्कृतभाषामें कुरण्डिका ।
हिन्दीभाषामें कुरंडवृक्ष (दादमारि० दे०)
मराठीभाषामें लघुकुरंडिका, थोरकुरण्डिका ।
गुजरातीभाषामें नानोआगियो, मोटोआगियो ।
लैटिन्भाषामें एमानियावेसिकेटोरिया । Ammania Vesicatoria

कुरण्डिकागुणाः ।

कुरण्डिकासरारुच्यागुर्वीचाग्निप्रदीपनी। नाशिनीकफवा-
तानांवैद्यैस्तुपरिकीर्त्तिता ॥ बृहत्कुरंडिकाशीतापाकेमा-

घ्वीकटुःस्मृता। तिक्ताक्षाराचरूक्षाचसरावृष्याजडामता॥ वातलापित्तलावस्तौवातकारिकफापहा । रक्तदोषंमूत्रकृच्छ्रंनाशयेदितिकीर्त्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-कुरंड-सारक, रुचिकारक, भारी अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है। बडा कुरंड-शीतल पचनेमें मधुर, चरपरा कडवा, क्षार, रूखा, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, जड, वातकारक पित्तजनक, वस्तिमें वातकरनेवाला तथा कफ, रुधिरविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है।

विवरण। कुरण्ड प्रायः घरबाहर खेतबागोंमें अधिकतासे होताहै फूल सुफेदरंगका आता है।

कुम्भिकानामानि।

कुम्भिकावारिपर्णीचवारिमूलीखमूलिका ।
आकाशमूलीकुतृणंकुमुदाजलवल्कलम् ।

अर्थ-कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका, आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (श्वेतपर्णा, अश्वकुम्भी, पानीयपृष्ठज, कुम्भी, वारिमूली, खलीं, पर्णी, पृश्नी, वारिकर्णिका, दलाढक, वारिकर्णि)।

संस्कृतभाषामें	कुम्भिका, वारिपर्णी।
हिन्दीभाषामें	जलकुम्भी, कुम्भी (काई)।
वंगभाषामें	पाना, टोकापाना।
मराठीभाषामें	जलमंडवी
गुजरातीभाषामें	जलकुम्भी।
कर्णाटकीभाषामें	हांवलं।
तैलिङ्गीभाषामें	तुटिकूर।

कुम्भिकागुणाः।

वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्वाद्वीसराकटुः ।
दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् ॥

अर्थ-जलकुम्भी-शीतल, कडवी, हलकी, स्वादिष्ठ, सारक, चरपरी, त्रिदोषनाशक रूखी तथा रुधिरविकार और ज्वरको दूर करे है।

विवरण। जलकुम्भी अर्थात् काई प्रायः वडे छोटे सब तालावोंमें जलके-ऊपर हरे पीले रंगकी पडी होती है।

शैवालनामानि ।

शैवालंजलनीलीस्याच्छैवलंजलजंचतत् ॥

अर्थ-शैवाल, जलनीली, शैवल, जलज, (शेपान, शेवाल, शिवल, शेपाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मंजुल, सैवाल, शेवाल, वारिचामर. सलिलकुण्डल, हठपर्णी, अम्बुताल, जलशूक, जलाश्वन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामें	शैवाल ।
हिन्दीभाषामें	सिवार ।
वंगभाषामें	शेओयाला ।
मराठीभाषामें	शेवाळ ।
गुजरातीभाषामें	शेवाल, लील ।
तैलिङ्गीभाषामें	नासु ।
कर्णाटकीभाषामें	हांवळ ।
लैटिन्भाषामें	सिरेटोफाईलं सवमर्स । Senatophyllum Submersum
फारसीभाषामें	पशमदरा, जामेंगूक, जवाल ।
अरबीभाषामें	तुहलव ।

शैवालगुणाः ।

शैवालंशीतलंस्निग्धंसन्तापव्रणनाशनम् ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शैवालःशीतलःस्निग्धस्तिक्तःस्वादुर्लघुःपटुः ।
सरःसन्तापव्रणजिज्ज्वरपित्तत्रिदोषहा ।
रक्तदोषस्यशमनोविज्ञेयश्चचिकित्सकैः ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध, कडवी, स्वादिष्ठ, हलकी, नमकीन, सारक, तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

विवरण । सिवारभी जलके ऊपर वालोंसी आच्छादित रहतीहै । यह कईक प्रकारकी होतीहै सिवार इस देशमें, चीनी साफकरनेमें विशेष करके काममें लीजातीहै ।

अत्यम्लपर्णीनामानि ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाचकण्डूरावल्लिसूरणा ।

वल्लीकरवडादिश्चवनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, बल्लिसूरणा, करवडवल्ली, बनस्था, अरण्यवासिनी ।

संस्कृतभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	रामचना (खटुआ)
मराठीभाषामें	कडमडवल्ली, आवटवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खटूववेल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गोली ।
लैटिन्‌भाषामें	वाईटीस पेंडाफाईल। Vitis pentaphylla

अस्या गुणाः ।

अत्यम्लपर्णीतीक्ष्णाम्लाप्लीहशूलविनाशिनी ।
वातहृद्दीपनीरुच्यागुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करै है ।

विवरण-बडी बेल होतीहै, पत्ते जिमीकंदकी समान एक डंडीमें पाँच पाँच होतेहैं, फल करोंदेकी समान झुमकोंमें लगते हैं इस बेलके पत्ते डंडी सब खट्टी होतीहै ।

मखान्ननामानि ।

मखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें	मखान्न ।
हिंदीभाषामें	मखाना ।
वंगभाषामें	मखाना ।
मराठीभाषामें	मखाणे ।
गुजरातीभाषामें	मखाना ।
दे०	गीलागिच ।
लैटिन्‌भाषामें	युर्यलोफेरोक्स । Euryeli ferox

मखान्नगुणाः ।

मखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान हैं।

विवरण–मखाने कमलगट्टोको भूनकर बनाये जातेहैं इस कारण इसके गुण कमलगट्टेकी समान जानने।

मर्यादवल्लीनामानि।



मर्य्यादामारवल्लीचसागरामन्मथापिच।
युग्मपत्रारक्तपुष्पातथासागरमेखला॥

अर्थ–मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला।

संस्कृतभाषामे	मर्य्यादालता।
हिंदीभाषामे	मरजादवेल।
दक्षिणीभाषामे	दोपार्चालता।
वंगभाषामें	छगलंकुरी (ढा०)।
कोकणीभाषामें	मर्य्यादावेल।
गुजरातीभाषामें	मरजादवेलय।
लैटिन्भाषामे	आईपोमिया विलोव। Ipomoea biloba

अस्य गुणाः।

मर्य्यादवल्लिकाशीताग्राहिणीसारकागुरुः।
पाककालेचोषणास्याद्वातलागर्भकर्षिणी॥
विषूचिकांचशूलंचवान्तिंचामंचनाशयेत्। (नि०र०)

अर्थ-मरजादवेल-शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विषूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है।

विवरण। मरयादवेल प्रायः अनूपदेशमें अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते अश्मन्तकवृक्षकी समान दो दो एकत्र होते हैं, फूल लाल होता है।

झिल्लनामानि।

झिल्लोरक्तापहोनीलःसुझिल्लोमृदुपत्रकः ॥

अर्थ-झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक।

संस्कृतभाषामें	झिल्ल।
हिन्दीभाषामें	झिल।
मराठीभाषामें	मुरकुट।
गुजरातीभाषामें	झिल्य।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफोरा पोसिफ्लोरा। Indigofera pausiflora

अस्य गुणाः।

झिल्लोवातास्रकंहन्तिशितवीर्य्योग्निदीपनः।

अर्थ-झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और अग्निको दीपन करनेवाला है।

विवरण-झिलका क्षुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते वहुत छोटे होते हैं, फूल लाल होता है, फली छोटी होतीहै।

एकवीरनामानि।

एकवीरोमहावीरःसकृद्वीरःसुवीरकः।

एकादिवीर्य्यपर्य्यायोवीरश्चपङ्क्तिधाह्वयः ॥

अर्थ-एकवीर, महावीर, सकृद्वीर, सुवीरक, एकादिवीर्य्यपर्य्याय, वीर।

संस्कृतभाषामें	एकवीर।
हिन्दीभाषामें	एकवीर।
मराठीभाषामें	असाणा।
गुजरातीभाषामें	एकलकंटो।
कर्णाटकीभाषामें	गंडुविक्क।
लैटिन्भाषामें	ब्रायोडेलियामोण्टेना। Briodelia montana

एकवीरगुणाः ।

एकवीरास्मृतातिक्ताचात्युष्णावातहामता ।
पक्षाघातंपृष्ठकटीशूलंचैवविनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ–एकवीर वृक्ष–कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पक्षाघात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै ।

विवरण–एकवीरके जंगलमें बडे बडे वृक्ष होते हैं, इसमें बडा, मोटा और अलग २ एक एक कॉंटा होताहै, पत्ते पाखरकी समान होते हैं, फल छोटे छोटे और झुमखोंमें लगते हैं ।

कंथारीनामानि ।

कंथारीकंथरीकंथादुर्धर्षातीक्ष्णकण्टका ।
तीक्ष्णगंधाक्रूरगंधादुःप्रवेशाद्यधाभिधा ॥

अर्थ–कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा (अहिस्रा, जालि, गृध्रनखी, कंथारिका, क्रूरकर्म्मा, वक्रकंटकी, कन्था, कपालकुलिका, अम्लफला, गुच्छगुल्मिका)

संस्कृतभाषामें	कंथारी ।
हिन्दीभाषामें	कंथारी, कंतार ।
मराठीभाषामें	कंथार ।
गुजरातीभाषामें	कंथार ।
कर्णाटकीभाषामें	कांतम ।
लेटिन्भाषामें	केपेरिस सिपिएरिया ।

अस्या गुणा ।

कंथारीदीपनीरुच्याकटूष्णातिक्तकामता ।
रक्तदोषंकफंवातंरुक्रोगंचनाशयेत् ॥
स्नायुरोगंचशोफंचनाशयेदितिकीर्तिता ।(नि०र०)

अर्थ–कंथारी–अग्निदीपक, रुचिकारक, चरपरी, गरम, कडवी तथा रुधिरविकार, कफ वात, अस्थिरोग, स्नायुरोग और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । कंथारी तीन चार जातिकी होतीहै एक हरी डंडीकी होतीहै उसके पत्ते गोल होतेहैं, फूल सुफेद रंगके और सुफेद केसरयुक्त होतेहैं, फल छोटे छोटे चनेके बराबर होते हैं ।

आरिनामानि ।

आरिःसंदानिकोद्दालाज्ञेयाखदिरपत्रिका ॥

अर्थ-आरि, संदानिका, उद्दाला, और खदिरपत्रिका (वल्लिखदिर, खादिरवल्लरी)।

संस्कृतभाषामें	आरि ।
हिंदीभाषामें	आरी खैरबेल ।
मराठीभाषामें	आरई वेल्याखेर आराटी ।
कर्णाटकीभाषामें	सीगुरी ।
गुजरातीभाषामें	खेरवेल्य ।
लैटिन्भाषामें	एकेश्यापिनेटा । Acacia penata

अस्या गुणाः ।

आरिःकषायकटुकातिक्तारक्तार्त्तिपित्तजित् ।
त्रिदोषघ्नीरसेपाकेचाम्लोष्णानिलकासहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-आरी-कषेली, चरपरी, कडवी रस और पाकमें अम्ल गरम, तथा रुधिरविकार, पित्त, त्रिदोषवात और खांसीको दूर करे है ।

विवरण । आरीकी वेल होती है, इसपै-कांटे होते हैं, पत्ते छोटे छोटे खैरकी समान होते हैं, फली चपटी नीली रंगकी होती है, फूल तन्तुयुक्त कीकरके फूलकी समान होते हैं ।

भ्रमरच्छल्लीनामानि ।

भृंगाह्वाभ्रमराह्वाचक्षीरद्रुर्भृंगमूलिका ।
उग्रगंधाचभृंगत्वक्छल्लीभ्रमरछल्लिका ॥

अर्थ-भृंगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृंगमूलिका. उग्रगंधा, भृंगत्वक्, छल्ली, भ्रमरछल्लिका ।

संस्कृतभाषामें	भ्रमरछल्ली ।
हिंदीभाषामें	भमरछल्ली ।
मराठीभाषामें	भ्रमरसाली ।
गुजरातीभाषामें	भमरछाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	उप्पुशके ।
लैटिन्भाषामें	हाईमोनोडिक्टियं एक्सेलसं Hyruonodictyom Axoel (Sum)

अस्या गुणाः ।

भृंगाह्वाकटुकाचोष्णातिक्तारुच्याग्निदीपनी ।
कण्ठ्याचसर्वदोषघ्नीप्रोक्तापूर्वैर्भिषग्वरैः ॥ (नि०र०)

अर्थ–भमरछल्ली–चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाली, कण्ठको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण । भ्रमर, छालीके वृक्ष वडे २ जंगलमें होतेहै, पत्ते बादामके समान होतेहैं, फली अत्यन्त पतली आतीहै इसकी लकडी सफेद रंगकी और अत्यन्त श्रेष्ठ होतीहै प्रायः इसकी लकडीके तलवारके म्यान वनाये जातेहैं ।

अजगधानामानि ।



अजगंधाबस्तगंधाखरपुष्पासुगंधिका ।
कावरीबर्बरागंधातुंगीपूतिमयूरिका ॥

अर्थ–अजगंधा, वस्तगंधा, खरपुष्पा, सुगंधिका, कावरी, वर्वरागंधा, तुंगी, पूतिमयूरिका, (अविगंधा, अविगंधिका, ब्रह्मगर्भा. ब्राह्मी)

संस्कृतभाषामें	अजगंधा ।
हिंदीभाषामें	तिलवन ।
मराठीभाषामे	कानफोडी ।
गुजरातीभाषामें	तलवणी ।
कर्णाटीभाषामें	नीलवणी ।
तैलङ्गीभाषामें	वामिंटा, अजगंधि ।
मला०	कावेला, पावका ।
तैलङ्गीभाषामें	जिनेन्ड्रोप्सीसपेंटाफिला Gynandropsis pentaphylla

अजगंधागुणाः ।

अजगंधाकटूष्णास्याद्वातगुल्मोदरापहा ।
कर्णव्रणार्तिशूलघ्नीपीताचेदंजनेहिता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तिलवन-चरपरी, गरम, तथा वात, गुल्म, उदररोग, कर्णरोग, व्रण और शूलको दूर करे है । इसमें पीली तिलवन अंजनमें हितकारी है ।

विवरण । तिलवन वनबाग जंगल आदिमें होतीहै यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आतेहैं दोनोंमें फली आतीहैं बीज काले रंगके निकलते हैं ।

वृद्धदारुकनामानि ।

वृद्धदारुकआवेगीजन्तुकोदीर्घवल्लरी ।
वृद्धाःकोटरपुष्पीस्यादजांत्रीछगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दीर्घवल्लरी, वृद्ध, कोटरपुष्पी, अजांत्री, छगलांत्रिका (ऋक्षगंधा, छगलांत्री, जुंग, ऋष्यछगलांत्री, छगला अंत्री, जुंगा, छगली, जुंगक, श्याम, वृष्यगंधा, दीर्घवालुका, छागलांत्रिका वृद्धकोठरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीयास्याज्जीर्णाफंजीसुपुष्पिका ।
अजरासूक्ष्मपत्राचविज्ञेयाचषडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फंजी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें	वृद्धदारु, जीर्णदारु ।
हिन्दीभाषामें	विधारा, कालाविधारा ।
वंगभाषामें	वितारक, वीजतारक, विद्धडक ।
मराठीभाषामें	श्वेतवरधारा ।
गुजरातीभाषामें	वरधारो ।
लैटिन्भाषामें	रोरियासेंटेलोइ डाशि । Roureasantaloi (Des)
कर्णाटकीभाषामें	एरडुसुष्टे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंद्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणाः ।

वृद्धदारुद्वयंगौल्यंपिच्छिलंकफवातहृत् ।
बल्यंकासामदोषघ्नंद्वितीयंस्वल्पवीर्य्यदम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–दोनों विधारे–गौल्य, पिच्छिल, कफवातनाशक, बलकारक, तथा खाँसी और आमदोषको दूर करे हैं। इनमें दुसरा विधारा अल्पवीर्य्यवाला है।

अन्यच्च ।

साधारणोवृद्धदारुःकटुस्तिक्तःकषायकः । रसायनोष्णो
मधुरोमेध्यःस्वर्य्यःसरोग्निदः ॥ कान्तिधातुकरोबल्योरु-
च्यःपुष्टिकरोलघुः । उपदंशंपांडुरोगंक्षयंकासंप्रमेहकम् ॥
वातरक्तंचामवातंवातंशोफंकफंजयेत् । (नि०र०)

अर्थ–विधारा–चरपरा, कडवा, कषेला, रसायन, गरम, मधुर, मेधाजनक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, धातुजनक, बलकारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हलका (तथा उपदंश, पांडुरोग, क्षय, खाँसी, प्रमेह, वातरक्त, आमवात, वात, सूजन और कफको दूर करनेवाला है।

विवरण–विधारा समुद्र शोषकी समान जानपडता है क्योंकि, समुद्रशोष और विधारेके फूल, पत्ते, बेल, काण्ड आदिमें कुछभी अन्तर नहीं दीखता। इसी कारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोषको एकही मानतेहैं। विधारा दो प्रकारका होताहै एक वृद्धदारु, दूसरा जीर्णदारु, जीर्णदारुको फंजी कहतेहैं फंजीके गुणदोष आगे लिखेहैं।

समुद्रशोषगुणाः ।

समुद्रशोषःसम्प्रोक्तोवातलोग्राहकोमतः ।
अतिपित्तकरश्चैवकफकृच्चमतोबुधैः ॥ (नि०र०)

अर्थ–समुद्रशोष–वातकारक, ग्राही, अत्यन्त, पित्तकारक और कफको उत्पन्नकरनेवाला है।

समुद्रपुष्पगुणाः ।

समुद्रपुष्पंतुवरंमधुरंशीतलंमतम् ।
रक्तदोषंकफंपित्तंकामलांचविनाशयेत् ॥
गर्भिणीकष्टशमनंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-समुद्रफूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ, पित्त, कामला और गर्भिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोनों विधारेका ही भेद हैं ।

फंजिकानामगुणाश्च ।

फज्यांतुफंजिकापद्माह्यजांत्रीचापराजिता । फंजीतुशीत-लावृष्याग्राहकातुवराकटुः ॥ ऊषणामधुराबल्यास्निग्धा कफकरागुरुः । विष्टम्भकारिणीवातपित्तहृद्रोगकासहा ॥ क्लेशामदोषशमनी इतिपूर्वेभिषग्वराः । (नि०र०).

अर्थ-फंजी-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, कषेली, चरपरी, गरम, मधुर, वलकारक, स्निग्ध, कफकारक, भारी, विष्टम्भकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, खाँसी, क्लेश और आमदोषको दूर करे है ।

विवरण । फंजीकी वेल खेतकी वागपर लगादेते हैं, फल समुद्रशोषकी समान होते हैं,। पत्तेभी समुद्र शोषकी समान किन्तु कुछ छोटे होतेहैं इसके पत्तोंके पतोडे बनाते हैं ।

संस्कृतभाषामें	फंजी, फंजिका, पद्मा, अजांत्री, अपराजिता ।
हिन्दीभाषामें	फंजी ।
मराठीभाषामें	फांजी ।
गुजरातीभाषामें	फांग्य ।
लैटिन्भाषामें	ह्विविया ओर्नेटा ।

वेल्लतरुनामानि ।

वेल्लतरुर्दीर्घमूलोवीरद्रुर्बहुवारकः ॥

अर्थ-वेल्लतरु, दीर्घमूल, वीरद्रु, वहुकारक । (क्षुधाकुशलसंज्ञक, वीरवृक्ष, कृच्छ्रारि)

संस्कृतभाषामें	वेल्लतरु ।
हिन्दीभाषामें	वरवेल, बिल्वान्तर
मराठीभाषामें	वेल्लतूर ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेणुतुरुचेट्टु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओडंडू ।
तामिलीभाषामें	विडात्तर ।
लैटिन्भाषामें	डेस्मान्थस् सिनेरियस् ।

अस्य गुणाः ।

वेल्लतरुस्तुकटुकःपथ्यश्चोष्णोग्निदीपनः । रसेपाकेचतिक्तः स्याद्ग्राहकोवातरोगहा ॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीसंधिशूलघ्नोयोनिरोगहा । मूत्राघातस्यशमनऋषिभिःपरिकीर्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ—वेलंतर—चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमें कडवा, मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधिशूल, योनिरोग और मूत्राघातरोगको दूर करे है ।

विवरण । वेलन्तरके वृक्ष मारवाडदेशमें तथा नर्मदानदी और चर्म्मण्वती आदि नदियोंके तटपर होते हैं, इसपर कांटे होतेहैं, पत्ते छोंकरके समान छोटे २ होते हैं, फूल पांचो रंगके आते हैं ।

कर्कटनामानि ।

कर्कटःकार्कटःकर्कःक्षुद्रधात्रीसमःस्मृतः ।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्चप्रोक्तःकर्कफलश्चषट् ॥

अर्थ—कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्री, क्षुद्रामलकसंज्ञ, कर्कफल, (गांगेरुक, कर्कटक, मृगलेंडक, तोदन, कृन्दन, मृगविट्सदृश)

संस्कृतभाषामें	कर्कटफल ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरुवा, काठआमला ।
वंगभाषामें	काट आमला ।
मराठीभाषामें	कुडकां काकणां ।
गुजरातीभाषामें	करपटां ।
कर्णाटकीभाषामें	वालिगे ।
लैटिन्भाषामें	गेरुगा पिनेटा । Garugapindatta

अस्या गुणाः ।

तोदनंग्राहकंचाम्लंलघूष्णंचाग्निदीपकम् । पित्तलंचफलंचास्याःपक्वन्तुमधुरंमतम् ॥ स्निग्धंचतुवरंप्रोक्तंकफवातहरं स्मृतम् । गांगेरुकंतुतुवरमम्लंचोष्णंगुरुस्मृतम् ॥ रक्तपित्तकफकरंसारकंवातहारकम् । पक्वंगांगेरुकफलंरुचिरंच गुरुस्मृतम् ॥ वातरक्तहरंपित्तनाशकंमुनयोजगुः ॥ (नि०र०)

अर्थ-काठआमला-मलरोधक, खट्टा, हलका, गरम, अग्निप्रदीपक और पित्तकारक है। इसके पक्केफल-मधुर, स्निग्ध, कषेले और कफवातनाशक हैं दूसरे प्रकारका काठआमला-कषेला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक, कफकारक, सारक, वातविनाशक है। इसके पक्के फल-रुचिकारी, भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं।

विवरण। काठआमलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर अधिकतासे होते हैं, पत्ते पंक्तिवार होते हैं, फल आमलेकी समान बहुत छोटे २ होते हैं।

किंकिणीनामानि।

किंकिणीव्याघ्रघंटीचगोविंदीकटुकन्दरी ॥

अर्थ-किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविंदी, कटुकंदरी, (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वर्त्तल, व्याघ्रनखी, कृशांगी, कंटकलता, कारंभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषामें	किंकिणी।
हिंदीभाषामें	किंकिणी।
मराठीभाषामें	वाघंटी।
गुजरातीभाषामें	वागाटी।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नीकेपरब्रश। Thorny caperbrush
लैटिन्भाषामें	केपेरिस् होरिडा। Gappsris Aorrida

अस्या गुणाः।

किंकिणीतुवरातिक्तापित्तश्लेष्महराहिमा।
तत्फलंवातलंत्वामंपक्वंस्वादुत्रिदोषजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-किंकिणी-कषेली, कडवी, पित्तकफनाशक और शीतल है। इसके कच्चे फल-वादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च।

व्याघ्रघंटापित्तलोष्णारुच्याविषकफापहा।
फलंचास्यास्तुतिक्तोष्णंविषूचीकफवातजित्।
त्रिदोषहारिणीप्रोक्तावैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-किंकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है। इसके फल-कडवे, गरम तथा विषूचिका, कफ, वात और त्रिदोषनाशक हैं।

विवरण । किंकिणीके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर वेरीके समान वांके कांटे होते हैं, फल लम्बे, गोल और वीचमे गांठदार होते है फलका मध्यमभाग हिंगोटकी समान होता है ।

गोरक्षीनामानि ।

गोरक्षीसर्पदंडीचदीर्घदंडीसुदंडिका ।
चित्रलागंधबहुलागोपालीपंचपर्णिका ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदंडी, दीर्घदंडी, सुदंडिका, चित्रला, गंधबहुला, गोपाली, पंचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामे	गोरक्षी ।
हिन्दीभाषामे	गोरखइमली ।
मराठीभाषामें	गोरखचिंच ।
गुजरातीभाषामें	रुखडो ।
लैटिन्भाषामे	एडन्सोनिया डिजिटेट ।
अरबीभाषामें	हवहबु ।

अस्या गुणाः ।

गोरक्षीमधुरातिक्ताशिशिरादाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गोरखइमली-मधुर, कडवी, शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट, वमन, अतीसार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है एक डण्डीमें सेमलकी समान पांच २ पत्ते होते है, फूल वडा और सफेद कमलकी समान होता है, फल तोंवी अथवा तोरईकी समान आते हैं ।

पातालतुम्बीनामानि ।

गर्त्तालावुचभूतुम्बीदेवीवल्मीकसम्भवा ।
दिव्यतुम्बीनागतुम्बीशक्रचापसमुद्भवा ॥

अर्थ-गर्त्तालावु, भूतुम्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुम्बी, नागतुम्बी, शक्रचापसमुद्भवा ।

संस्कृतभाषामें	पातालतुम्बी ।
हिन्दीभाषामे	पातालतोम्बी ।

गुजरातीभाषामें	पातालतुम्बडी ।
मराठीभाषामें	नागतुम्बी ।
लैटिन्भाषामें	वोविस्टास्पिसिस् । Bovista sp eieces

भूतुम्बीगुणाः ।

भूतुम्बीकटुकातिक्ताविषदोषविनाशिनी ।प्रसूतिकादोषसम्भूतातिसारहरापरा ॥ दंतबंधंज्वरंशोथंसस्वेदंसप्रलापकम् । जयेदात्मप्रभावेणह्यचिंत्यावस्तुशक्तयः ॥

अर्थ-भूतुम्वी-चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका अतिसार, दाँतोंकी जडता और सूजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । पातालतुम्बी खेतोंमें और कैरोंमें होतीहै इसपर बहुत वारीक और पीले रंगके छींटेवाले विच्छूके डंकके समान कांटे होते हैं, फांदेके बीचमें तोम्बीकी समान पातालतुम्बी होती है । इसमें अनेक चमत्कारिक गुणहैं जो कि, अन्य औषधियोंमें नहीं देखे जाते ।

हेरंबनामानि ।

हेरम्बःखरपत्रःस्यात्कंटकीदंतधावनः ।

अर्थ-हेरम्ब, खरपत्र, कंटकी, दंतधावन ।

संस्कृतभाषामें	हेरम्व ।
हिंदीभाषामें	हेरंव-वज्रदंती ।
मराठीभाषामें	दातूणी, हेरंववृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	वज्रदंती ।
लैटिन्भाषामें	एपिकार्पस ओरीएण्टेलीस । EpiearpusOrientalis

अस्य गुणाः ।

हेरम्बवृक्षःकफहावातनाशकरोमतः ।
हेरम्बवृक्षमूलंतुप्रोक्तंवांतिकरंवुधैः ॥

अर्थ-हेरम्बवृक्ष-कफनाशक और वातको दूर करे है । हेरंब वृक्षकी जड वमनकारक है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते बेरीकी समान होतेहैं, इसकी दतोन करते हैं ।

वृश्चिकानामानि।

वृश्चिकानखपर्णीचपिच्छिलाप्यलिपत्रिका।

अर्थ–वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुस्पर्शा, धूम्रपुष्पा, दहना, नक्रदंष्ट्रिका, सर्पदंष्ट्री, विषघ्नी, सूतवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	वृश्चिका।
हिन्दीभाषामें	बिछवाघास।
बंगभाषामें	बिछुटी।
मराठीभाषामें	आग्या, विचवा।
कर्णाटीभाषामें	इंगुले, माससा, होत्रगोत्रे।
तामिलीभाषामें	कायचोरी।
तैलिंगीभाषामें	दुलगाद।
तु०	पत्रीरंगी।
मल०	कोसादुवा।
गुजरातीभाषामें	खाजवणी।
लैटिन्भाषामें	जिरार्डिनिया हिटरोफाईला Gyrardinia heterophylla

अस्या गुणाः।

वृश्चिकापिच्छिलाम्लास्यादंत्रवृद्ध्यादिदोषनुत्॥ (रा०नि०)

अर्थ–बिछवा–पिच्छिल, खट्टी और अंत्रवृद्ध्यादि दोषनाशक है।

अन्यच्च।

वृश्चिकालीतुबल्यास्यात्तिक्ताकटीविबन्धनुत्।
हृद्याचोष्णावंस्तिशुद्धिकारिणीरक्तपित्तहा॥
अरोचकंनाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः।

अर्थ–बिछवा–बलकारक, कडवी, चरपरी, विबन्धनाशक, हृदयको हितकारी, गरम, वस्तिशोधक, रक्तपित्त और अरुचिको दूरकरेहै।

विवरण। बिछवा कईप्रकारका होताहै, इसके बेल क्षुप और वृक्ष होतेहै। इसपर कौंछकी समान रुंआ होताहै।

तुवरनामानि।

तुवरःसागरोद्भूतःकुष्ठहाऽलसकापहः॥

अर्थ–तुवर, सागरोद्भूत, कुष्ठहा, अलसकापहा।

संस्कृतभाषामें	तुवर ।
हिंदीभाषामें	तवरक ।
मराठीभाषामें	तीमर ।
गुजरातीभाषामें	तवरियां चेरियां ।
लैटिनभाषामें	एविसिनीया टामेंटासा Avicenia tomentosa

तुवरगुणाः ।

तुवरस्तुवरश्चोष्णोरसेपाकेचतिक्तकः ।
कफव्रणकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशनः ॥
आनाहमर्शशोफंचनाशयेदितितेजसुः । (नि०र०)

अर्थ-तुवर-कषेला, गरम, रसमें और पचनेमें कडवा, तथा कफ व्रण, कृमि, प्रमेह, ज्वर, आनाह, ववासीर और सूजनको दूर करे है ।

विवरण । इसके वृक्ष समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक वढ जाताहै ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।



एरण्डचिर्भिटोवृक्षश्चिर्भिटानालिकाफलः ।
वातकुम्भफलःप्रोक्तःसचैवपुष्टिकर्ता ॥

अर्थ-एरण्डचिर्भिटवृक्षको चिर्भिटा और नलिकादल कहते हैं। इसके फलोंको वातकुम्भफल और मधुकर्कटी कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	वातकुम्भ।
हिन्दीभाषामें	अंडखरबूजा पोपैया।
मराठीभाषामें	पोपैया।
गुजरातीभाषामें	पोपयो, एरंडकांकडी, झाडचीभडी।
तैलिङ्गीभाषामें	पोपडचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	पेपो। Papaw
लैटिन्‌भाषामें	केरिकापापैया। Caricapapaya
कर्णाटकीभाषामें	पप्पलसु।
तुर्कीमें	वप्पागाई।
तैलिङ्गीभाषामें	वोप्पई।
मला०	पप्पायम्‌
तामिलीभाषामें	पप्पाई।

अस्य गुणाः।

वातकुम्भफलंग्राहिकफवातप्रकोपनम्‌।
तत्पक्वंमधुरंरुच्यंपित्तनाशकरंगुरु॥

अर्थ-अंडखर्बूजा-मलरोधक, कफ और वातको कुपित करे है, पक्का अण्डखर्बूजा-मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

मध्वेरण्डफलंपक्वंकिंचित्तिक्तमाधुरम्‌।
वृष्यंकफकरंहृद्यमुन्मादस्यविनाशकम्‌॥
वर्मरोगहरंचैवस्निग्धंवातविनाशनम्‌।

अर्थ-पक्का अंडखर्बूजा-किंचित्, कडवा, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हरनेवाला, वर्म्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है।

विवरण। अंडखर्बूजेके वृक्ष प्रायः अंडके समान होते हैं। वल्कि यह अंडकाही भेद है। पत्तेभी अंडकेसे होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होते हैं। फल बडे २ लम्बे और गोल तीन चार एकत्र लगते हैं।

क्षुद्रवादामनामगुणाश्च ।

बदामःक्षुद्रसंज्ञस्तुक्षुद्रबीजोम्लमाधुरः ।
तुवरोग्राहिपित्तघ्नःशिशिरःकफशुक्रकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रबादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशी बादामके हैं ।

देशीबादाम-खट्टा, मधुर, कषेला, मलरोधक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है ।

विवरण । देशीबादामके वृक्ष प्रायः बाग और वन सर्वत्र होते हैं, पत्ते बराबर शाखाओंमें दोनों ओर होते हैं, फल अपक्क अवस्थामें हरे और खानेमें कषेले तथा खट्टे होते हैं और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते हैं ।

संस्कृतभाषामें	क्षुद्रबादाम ।
वंगभाषामें	क्षुद्रबादाम ।
हिन्दीभाषामें	देशीबादाम ।
मराठीभाषामें	हिरवा बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम लीली ।
कर्णाटकीभाषामें	नतवदं ।
तैलिङ्गीभाषामें	वदम ।
इंग्रेजीभाषामें	आमण्ड । Almond
लैटिन्भाषामें	टरमिनेलियाकेटापा । Termmanalia catappa

काम्बोजीनामगुणाश्च ।

कांबोजिन्यांचकाम्बोजीबहुपुष्पाबहुप्रजा ।
काम्बोजीग्राहिणीवातशोफरक्तविभेदकृत् ॥

अर्थ-कांबोजिनी, काम्बोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम हैं ।

काम्बोजी-मलरोधक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्तोंकी समान होते हैं, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होतीहैं. फल गोल और अपक्क अवस्थामें हरे होते हैं और पकनेपर काले होजातेहैं ।

संस्कृतभाषामें	काम्वोजी ।
हिन्दीभाषामें	कम्वोई ।
वंगभाषामें	काम्वोजी ।
मराठीभाषामें	चिफली ।
गुजरातीभाषामें	खेडा कम्वोई ।
लैटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् मलटीफ्लोरम् । Phylanthus Multi Florus
	फाइलेन्थस् रेक्टिक्युलेटस् । Phylanthus Recticuletus

अथ निर्विषीनामानि ।

निर्विषापविषाचैवविविषाविषहापरा ।
विषहंत्रीविषाभावाह्यविषाविषवैरिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषहंत्री, विषाभावा, अविषा और विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	निर्विषी ।
हिन्दीभाषामे	निर्विषीघास ।
वंगभाषामें	निर्विषीघास ।
मराठीभाषामें	निर्विषी कचऱ्या सारखें झाड असतें ।
गुजरातीभाषामें	निर्विषी ।
कर्णाटकीभाषामें	निर्विषी ।
फारसीभाषामें	जद्वार ।
लैटिन्भाषामें	डेल्फिनियं डिनुडेटं Delphineum Denudatum

अस्या गुणाः ।

निर्विषीकटुकाशीताव्रणरोपणकारिणी ।
कफवातंरक्तदोषंविषंचैवविनाशयेत् ॥

अर्थ-निर्विषी-कटु, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिर-विकार और विषको नष्ट करे है ।

विवरण । निर्विषीघास मोथेकी समान होती है यह प्रायः हिमालय, मलयाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होती

है, इसका कंद अतीसकी समान होता है. यह सांप विच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोंको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहौचनागजिह्वाख्यातिक्तपत्राक्षितौक्षुपः ।
कृमिहृत्क्षारकर्म्माचतथामभिजकःस्मृतः ॥

अर्थ-नाहु, नागजिह्वा, तिक्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत्, क्षारकर्म्मा और मभिजक यह नागजिह्वाके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	छोटा किरायता ।
वंगभाषामें	नागजिह्वा ।
मराठीभाषामें	तानवडीचें झाड ।
गुजेरातीभाषामें	मामेजवो ।
लैटिन्‌भाषामें	हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण-नागजिह्वा (छोटा किरायता)-कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । छोटे किरायतेके प्रायः चौमासेमें अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते हैं, फल छोटे छोटे गोल आते हैं ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दीबहुमूलाचमादिनीगंधमूलिका । एकविंशतिमूली चश्यामलागिरिकंदका ॥ मायिनीगिरिवर्य्याचगिरिमध्या गिरिप्रिया ।वराहेष्टागिरिमतीवर्त्तीचतुर्दशाभिधा॥(रा०नि०)

अर्थ-माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ती यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	माकन्दी ।
हिन्दीभाषामें	माईमूल ।
वंगभाषामें	माद्राणी ।
मराठीभाषामें	मायमूले माईनी-मोगिनी-मायिणी ।

गुजरातीभाषामें गरमर।
कर्णाटकीभाषामें मागिणी।
लैटिन्भाषामें कोलेन्सवोर्वटस्। Colens Bor Brutus

अस्या गुणाः।

माकन्दीमधुरातिक्ताकटुकादीपनीपरा।
रुच्याल्पवातकृत्पथ्याजठरामयनाशिनी॥

अर्थ–माकन्दी–मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

मायिनीतिक्तकातीक्ष्णामधुराग्निप्रदीपनी। रुच्याबलकरी चैवप्लीहवातकफान्जयेत्॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरीमता। कन्दस्तुपाकेमधुरोनिकाशीपाण्डुशोफजित्॥ कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शजित्॥ (नि०र०)

अर्थ–माई–तिक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, वलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करेहै। इसका कन्द–पाकमें मधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सूजनको दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और ववासीरको दूर करेहै।

विवरण। माकंदी–खेत और वागोंमें वोई जाती है, इसके क्षुप होतेहैं, नीचे अंगुलीकी समान जड होती है, इसकी डंडी और कन्दी दोनोंका शाक वनातेहैं।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च।

झुल्लपुष्पेज्वलत्पुष्पःकृच्छ्रहालघुवृक्षकः।
पीतपुष्पःपंक्तिपत्रस्तथालज्जालुकःस्मृतः॥
झुल्लपुष्पःस्पृष्टमूत्रोमूत्रकृच्छ्रहरःपरः।

अर्थ–झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुवृक्षक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लज्जालुक यह संस्कृत नाम हैं।

संस्कृतभाषामें जलपुष्प।
वंगभाषामें झलई।

मराठीभाषामें झरेर।

गुजरातीभाषामें झरेर।

लैटिन्भाषामें वाईओफिटंसेन्सेटिवम्। ByophytnmSensationm

गुण-जलपुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करेहै।

विवरण। इसका छोटा क्षुप होताहै, फूल पीला आताहै; लज्जावंतीकी समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काल सिकुड जातेहैं।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च।

ओखराड्यांभिस्सटाचतडागमृत्तिकोद्भवा।
भिस्सटाभस्मतैलेनसंयुतामरिचैर्युता॥
मस्तकेपरितोलेपाद्व्रणान्हन्तिचिरोत्थितान्।

अर्थ-ओखराडी भिस्सटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नामहैं।

संस्कृतभाषामें ओखराडी।

वंगभाषामें ओषड।

मराठीभाषामें ओखराड्य।

गुजरातीभाषामें आखराड्य।

लैटिन्भाषामें मोल्युगोहिटी। Mollu Gohirta

गुण-इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचोंके चूर्णके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके व्रण दूर होजाते हैं।

विवरण। इसके छत्ते होतेहैं, विशेषकरके जिस नदी या तालावका जल सूख जाताहै उसमें यह अधिकतासे होताहै, इसमें बीज अधिक होतेहैं, यह अनेक प्रकारके रोगोंमें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाताहै, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारीहै, इसको पीसकर शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद, शोष और व्रण दूर होजातेहैं।

झावुकनामगुणाश्च।

झावुकःपिचुलोझावुरफलोबहुग्रन्थिकः।
झावुकःकटुकस्तिक्तःमूत्रकृच्छ्रविनाशकः॥

अर्थ-झावुक, पिचुल, झावू, अफल और बहुग्रन्थिक यह झाऊके संस्कृत नाम हैं।

संस्कृतभाषामें झावुक।

हिन्दीभाषामें	झाऊका वृक्ष ।
वंगभाषामें	झाऊगाछ ।
मराठीभाषामें	झावू, तिलच्यावृक्षभेद ।
गुजरातीभाषामें	झावू ।

विवरण–झाऊके वृक्ष–प्रायः नदियोंकी रेतीमें होतेहैं, पत्ते सरूकी समान होतेहैं, किन्तु सरूकी माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झांदेदार होतेहैं, इसकी लकडी बहुत गांठदार और दृढ होतीहै, इसमें छोटे २ अनेक फल होतेहैं ।

राजाद्रिनामगुणाश्च ।

राजाद्रिःस्याद्राजगिरिर्ज्ञातव्याराजशाकिनी ॥

संस्कृतभाषामें	राजाद्रि, राजागिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं ।
हिंदीभाषामें	कलगाघास ।
वंगभाषामें	राजशाक, कलईशाक ।
मराठीभाषामें	राजगिरा ।
गुजरातीभाषामें	राजगरो ।
कर्णाटकीभाषामें	डोलगेदो निएरड्डु ।
फारसीभाषामें	अंगोझा ।
अरवीभाषामें	हमाहम ।

गुणाः ।

लघुराजगिरःप्रोक्तःकफकृत्सारकोगुरुः । निद्रालस्यकरः पथ्यःसारकश्चेतिशीतलः ॥ मलावष्टम्भकरणोरुचिदोतिगुरुःस्मृतः । पित्तनाशकरश्चैवऋपिभिःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ–छोटा राजगिर–कफकारक, सारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक, रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है ।

विवरण । इसके वडे २ क्षुप होतेहैं, इसकी डंडी मोटी होतीहै, इसके कच्चे पत्तोंका शाक वनातेहैं इसके वीजोंका फलाहार करतेहैं ।

सप्तपुत्री (कोशातकी) नामानि ।

लघुकोशातकीग्राम्यासप्तपुत्रीस्मृताबुधैः ॥

अर्थ–लघुकोशातकी, ग्राम्या और सप्तपुत्री यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सप्तपुत्री ।
हिन्दीभाषामें	सतपुतीतोरई ।
वंगभाषामें	सातपुती ।
मराठीभाषामें	सातपुती ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडां ।

अस्या गुणाः ।

सप्तपुत्रीशीतलास्याद्धृद्यापाकेकटुःस्मृता ।
स्निग्धापित्तविषंकासंज्वरंवातञ्चनाशयेत् ॥

अर्थ-सतपुतीतोरई-शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमें कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खाँसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुती तोरईकी वेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहैं, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलकी समान गुच्छोंमें सात सात लगतेहैं ।

वनप्सानामानि ।

वनप्सासूक्ष्मपत्राचनीलपुष्पाज्वरापहा ॥

अर्थ-वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
हिन्दीभाषामें	गुलवनप्सा ।
वंगभाषामें	वानप्सा ।
मराठीभाषामें	वनप्सा ।
गुजरातीभाषामें	वनप्सा ।

अस्या गुणाः ।

वनप्साकटुतिक्तोष्णाशीतज्वरनिवारणी ।
कासश्वासहराबल्यावातपित्तकफापहा ॥

अर्थ-वनप्सा-कटु, तिक्त, गरम, शीतज्वरनाशक, खाँसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करेहै ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतोंपर होतीहै, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रंगके होतेहैं, फूल सपेद और नीलेरंगके आतेहैं । कितनेक वैद्य त्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो त्रायमानलता और वनप्साकी कुछभी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकंस्वादुकन्दश्चम्लेच्छकन्दंसुकन्दकम् ।

अर्थ-आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नामहैं ।

संस्कृतभाषामे	आलुक ।
हिंदीभाषामे	आलू ।
वं०-गु-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः "आलू" इसी नामसे प्रसिद्धहै ।
इंग्रेजीभाषामे	पुटैटो । Potato

अस्य गुणाः ।

आलुकंस्निग्धमुष्णञ्चवृष्यंवातकफापहम् ।
दीपनंरुचिदंहृद्यंमधुरंग्राहिशोथनुत् ॥

अर्थ-आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य,वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करैहै ।

विवरण-आलू अर्वाचीन कन्दहै, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए, अनुमान एकसौ वीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोमें आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होतीहै, यह सपेद और लाल इन भेदोसे दो प्रकारका है। पर्वतोंपर आलू बहुत बडा और अधिक स्वादिष्ठ होताहै ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभीस्वादुशाकामध्यपुष्पाबृहद्दला ॥

अर्थ-पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके हैं ।

संस्कृतभाषामें	पुष्पगोभी ।
हिंदीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी ।
वंगभाषामे	गोभी ।
मराठीभाषामें	गोभी ।
इंग्रेजीभाषामें	कालीफ्लावर । Cauli flaweer

अस्या गुणाः ।

पुष्पगोभीगुरुस्वाद्वीवातशोफप्रकोपनी ।
मधुराग्राहिणीबल्यावह्निमांद्यकरीमता ॥

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित करनेवाली मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकरेहै ।

पत्रगोभीगुणाः ।

पत्रगोभीसरारुच्यावातलामधुरागुरुः ।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी है ।

ग्रन्थिगोभीगुणाः ।

ग्रन्थिगोभीमहाबल्यादुर्जराग्राहिशीतला ।

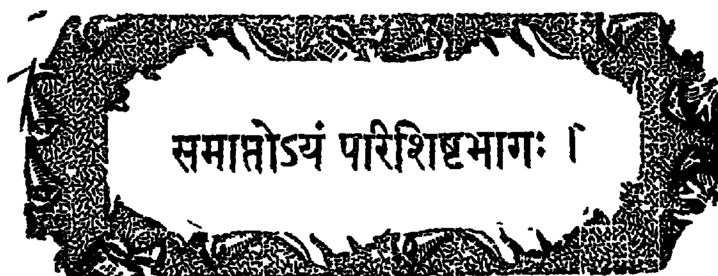
अर्थ-गांठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है ।

विवरण । गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशोंमें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगीहै । अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमें आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए । पहले जब गोभी भारतमें आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकोंमें गिनी जाती है ।

फूलगोभी, मूत्रगोभी (वंदगोभी, करम कल्ला) और गांठगोभी इन भेदोंसे यह तीन प्रकारकी होतीहै ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः ।

श्रीशंकरः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.